सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता महाशास्त्र प्रत्यक्ष मू

प्रारम्भः

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर।

मूक प्रश्न बताने की रीति

यह मूक प्रश्न कहने की बहुत उत्तम क्रिया अङ्क विद्या से निर्माण की है इससे प्रश्न ज्यों का त्यों मिल जाता है इस क्रिया में ६४ प्रश्न लिखे हैं इनके बताने में ८ पत्रे ऊँ के और ८ श्री के जिनके एक एक पत्रे में आठ २ प्रश्न हैं ऐसे ही उन आठ २ पत्रों में चौंसठ २ प्रश्न हैं जिनमें देवनागरी और उर्दू अक्षरों में लिखे हैं ऐसे सब सोलह पत्रे हैं और एक प्रश्नचक्र है उस प्रश्नचक्र में ऊँ और श्री दोनों पत्रों के ऊपर अंक लिखे हैं और उसके ६४ कोष्ठों में ६४ प्रश्न हैं अब इन सोलह पत्रे और प्रश्नचक्र से प्रश्न बताने की रीति लिखते हैं इस पुस्तक से प्रश्न बताने की यह रीति है कि जब प्रच्छक प्रश्न बूझने आवे तब उसके हाथमें ८ पत्रों को देकर कहे कि इन ८ पत्रों में संसारिक व्यवहार के चौंसठ प्रश्न हैं सो जिस पत्रे में आपका प्रश्न हो वह प्रश्न देखकर पत्रा अपने पास रखलो जब वह प्रच्छक ऐसा कर चुके तब उसको दूसरे ८ पत्रे श्री के देकर कहो कि जो प्रश्न तुमने उन ८ पत्रों में देखा है वही इनमें भी देखलो कि कौनसे पत्रे में है जब वह प्रश्न देखकर अपने प्रश्न के दोनों पत्रे अलग निकालले तब बतलाने वाले को चाहिये कि अपनी बुद्धिमानी और चतुराई के साथ उसके प्रश्न के दोनों पत्रों के अंक ज्ञात होजांय तब प्रश्नचक्र में देखो कि कौनसे अंकका कोठा ऊँ का है और कौनसे अंक का श्री का है बस जो कुछ उन दोनों के कोष्ठों की सीध में आवे वही प्रच्छकका प्रश्न समझो और अपनी चतुराई से बताओ कि आपका प्रश्न अमुक विषय का है अमुक अनुष्ठान करने से कार्य की सिद्धि होगी अमुक रीतिसे करो इत्यादि वार्ता अन्य मतों से बुद्धिमानी से कहो ।

आपका शुभचिंतक—पं० श्यामभरोसे गङ्गाशरण, ज्ञानसागर प्रेस, महाजनपाड़ा मेरठ सिटी ।

	ॐ १	ॐ २	ॐ ३	ॐ ४	ॐ ५	ॐ ६	ॐ ७	ॐ ८
श्री १	रोजगार के विषय में	मुकदमे के विषय में	करज देना	यात्रा से प्राप्ति	घर में तकलीफ है	देगा या नहीं	एक आदमी कुछ लेकर भाग गया	मकान का झगड़ा
श्री २	चोरी होने के विषय में	जमीन के झगड़े के विषय में	धन के विषय में	तीर्थ यात्रा के विषय में	चित्त भ्रम के विषय में	परदेश में बीमार है सो कैसे है	बदली होना चाहते हैं	खोटे स्वप्न दीखे हैं
श्री ३	संतान के विषय में	लड़ाई के विषय में	गुप्त चिंता के विषय में	दुकान खोलने के विषय में	जीव की चिंता के विषय में	मनोर्थ सिद्ध होगा या नहीं	एक चीज़ खोई गई	रंडी के विषय में
श्री ४	लड़का होगा या लड़की	जीव चला गया	बेमारी को कब आराम होगा	भूत चुड़ैल प्रेत के विषय में	इम्तहान में पास होंगे या नहीं	एक आदमी फंस गया	हमारी जेब में क्या है	जिंदा है या मर गया
श्री ५	बदली नहीं चाहते हैं	आमदनी के विषय में	खेती के विषय में	मकान बनाने के विषय में	तरक्की होगी या नहीं	मुकदमे की अपील	गड़ा धन कहां गुप्त है	कारखाना जारी करने के विषय में
श्री ६	सगाई के विषय में	जिन्स से नफा होगा या टोटा	नौकरी के विषय में	कुआं बनवाने के विषय में	आसामी मिलेगी या नहीं	सवारी के विषय में	दस्तकारी विद्या का	राजदरबार के विषय में
श्री ७	विवाह के विषय में	विद्या के विषय में	स्त्री की मुलाकात का	बाग लगाने के विषय में	हमने क्या खाया है	चौपाये से लहना होगा	यह काम हम पै आभी जायगा	ईश्वर की भक्ती के विषय में
श्री ८	माशूक के विषय में	करज लेने के विषय में	मित्र की मुलाकात का	वो चीज मिलेगी या नहीं	जीतेंगे या हारेंगे	हमारे पास रहेगी या नहीं	दिन कब तक नाकिस हैं	रसायन के विषय में

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ १ ॥ (۱) اوم

प्रश्न.रोज़गार के विषय में	سوال روزگار کی بابت۔
प्रश्न.चोरी होने के विषय में	سوال چوری ہونے کی بابت۔
प्रश्न.मन्तान के विषय में	سوال سنتان کی بابت۔
प्रश्न.लड़का होगा या लड़की	سوال لڑکا ہوگا یا لڑکی۔
प्रश्न.बदली नहीं चाहते	سوال بدلی نہیں چاہتے۔
प्रश्न.सगाइ के विषय में	سوال سگائی کی بابت۔
प्रश्न.ब्याह के विषय में	سوال بیاہ کی بابت۔
प्रश्न.माशूक के विषय में	سوال معشوق کی بابت۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ओं २ ॥ ओम(२)

प्रश्न.मुक़द्दमे के विषय में	سوال مقدمہ کی بابت:-
प्रश्न.ज़मीन के झगड़े के विषय में	سوال زمین کے جھگڑے کی بابت -
प्रश्न.लड़ाई के विषय में	سوال لڑائی کی بابت -
प्रश्न.कोई जीव चला गया है	سوال کوئی جیو چلا گیا ہے -
प्रश्न.आमदनी के विषय में	سوال آمدنی کی بابت -
प्रश्न.जिन्स में नफा होगा या टोटा	سوال جنس میں نفع ہوگا یا ٹوٹا
प्रश्न.विद्या के विषय में	سوال ودیا کی بابت -
प्रश्न.क़रज लेने के विषय में	سوال قرض لینے کی بابت -

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ऊँ ३ ॥ اوم (۳)

प्रश्न. करज़ देने के विषय में	سوال قرض دینے کی بابت۔
प्रश्न. धन के विषय में	سوال دھن کی بابت۔
प्रश्न. गुप्त चिन्ता के विषय में	سوال گپت چنتا کی بابت۔
प्रश्न. बीमारी को कब आराम होगा।	سوال بیماری کو کب آرام ہوگا۔
प्रश्न. खेती के फायदे के विषय में	سوال کھیتی میں نفع کی بابت۔
प्रश्न. नौकरी के विषय में	سوال نوکری کی بابت۔
प्रश्न. स्त्री की मुलाकात के विषय में	سوال استری کی ملاقات کا۔
प्रश्न. मित्र से मुलाकात के विषय में	سوال مترسے ملاقات کی بابت۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ उों ४ ॥ اوم (۴)

प्रश्न. यात्रा से प्राप्ति के विषय में	سوال یاترا سے پراپتی کی بابت ۔
प्रश्न. तीर्थ यात्रा के विषय में	سوال تیرتھ یاترا کی بابت ۔
प्रश्न. दुकान खोलने के विषय में	سوال دوکان کھولنے کی بابت ۔
प्रश्न. भूत चुरैल प्रेत के विषय में	سوال بھوت چڑیل پریت کی بابت ۔
प्रश्न. मकान बनाने के विषय में	سوال مکان بنانا ۔
प्रश्न. कुवां बनाने के विषय में	سوال کنواں بنانے کی بابت ۔
प्रश्न. बाग लगाने के विषय में	سوال باغ لگانے کی بابت ۔
प्रश्न. वो चीज़ मिलेगी या नहीं	سوال وہ چیز ملے گی یا نہیں ۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ५ ॥ اوم (۵)

प्रश्न. घरमें तकलीफ़ है	سوال گھر میں تکلیف ہے۔
प्रश्न. चित्त भ्रम के विषय में	سوال چت بھرم کی بابت۔
प्रश्न. जीव की चिन्ता के विषय में	سوال جیو کی چنتا کی بابت۔
प्रश्न. इम्तहान में पास होगा या नहीं	سوال امتحان میں پاس ہونگے یا نہیں۔
प्रश्न. तरक्की होगी या नहीं	سوال ترقی ہوگی یا نہیں۔
प्रश्न. असामी मिलेगी या नहीं	سوال اسامی ملے گی یا نہیں۔
प्रश्न. हमने क्या खाया है	سوال ہم نے کیا کھایا ہے۔
प्रश्न. जीतेंगे या हारेंगे	سوال جیتینگے یا ہارینگے۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ९ ॥ [illegible](१)

प्रश्न.जीवेगा या मरेगा	سوال جئے گا یا مرے گا۔
प्रश्न.परदेश में बीमार है सो कैसे है	سوال پردیس میں بیمار " کیسے ہے۔
प्रश्न.मनोर्थ सिद्ध होगा या नहीं	
प्रश्न.एक आदमी फँस गया है	سوال ایک آدمی پھنس گیا ہے۔
प्रश्न.मुक़द्दमे के अपील के विषय में	سوال مقدمہ کے اپیل کی بابت۔
प्रश्न.सवारी के विषय में	سوال سواری کی بابت۔
प्रश्न.चौपाये से लहना भी होगा	سوال چوپائے سے لہنا بھی ہوگا
प्रश्न.हमारे पास रहेगी या छूट जावेगी	سوال ہمارے پاس رہیگی یا چھوٹ جاویگی۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ॐ ७ ॥ ([illegible])

प्रश्न. एक आदमी कुछ लेकर भाग गया है	سوال ایک شخص کچھ لیکر بھاگ گیا ہے۔
प्रश्न. बदली होना चाहते हैं	سوال بدلی ہونا چاہتے ہیں۔
प्रश्न. एक चीज़ खोई गई है	سوال ایک چیز کھوئی گئی ہے۔
प्रश्न. हमारी जेब में क्या है	سوال ہماری جیب میں کیا ہے۔
प्रश्न. गढ़े हुवे धन के विषय में	سوال گڑے ہوے دھن کی بابت۔
प्रश्न. दस्तकारी विद्या के विषय में	سوال دستکاری ودیا کی بابت۔
प्रश्न. यह काम हमपै आभी जावेगा	سوال یہ کام ہمپے آبھی جاوے گا۔
प्रश्न. दिन कब तक नाकिस हैं	سوال دن کب تک ناقص ہیں

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ ऊँ ८ ॥

प्रश्न.मकान के झगड़े के विषय में	سوال مکان کا جھگڑا۔
प्रश्न.खोटे सुपने दीखतेहैं	سوال خراب خواب کا۔
प्रश्न.रंडी के मामले का	سوال رنڈی کے معاملے کا۔
प्रश्न.ज़िन्दा है या मरगया	سوال زندہ ہے یا مرگیا۔
प्रश्न.कारखाना जारी करनेके विषयमें	سوال کارخانہ جاری کرنے کی بابت۔
प्रश्न.राजदरबार के विषय में	سوال راج دربار کی بابت۔
प्रश्न.ईश्वर की भक्ति के विषय में	سوال ایشور کی بھگتی کی بابت۔
प्रश्न.रसायन के विषय में	سوال رسائن کی بابت۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री १ ॥ (۱) سری

प्रश्न. रोज़गार के विषय में	سوال روزگار کی بابت۔
प्रश्न. मुक़द्दमे के विषय में	سوال مقدمہ کی بابت۔
प्रश्न. करज़ देने के विषय में	سوال قرض دینے کی بابت۔
प्रश्न. यात्रा से प्राप्ति के विषय में	سوال یاترا سے پراپتی کی بابت۔
प्रश्न. घर में तकलीफ है	سوال گھر میں تکلیف ہے۔
प्रश्न. जीवेगा या मरेगा	سوال جیئے گا یا مرے گا۔
प्रश्न. एक आदमी कुछ लेकर भाग गया है	سوال ایک شخص کچھ لیکر بھاگ گیا ہے۔
प्रश्न. मकान के झगड़े के विषय में	سوال مکان کا جھگڑا۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री २ ॥ نمبری (۲)

प्रश्न. चोरी होने के विषय में	سوال چوری ہونے کی بابت۔
प्रश्न. ज़मीन के झगड़े के विषय में	سوال زمین کے جھگڑے کی بابت۔
प्रश्न. धन के विषय में	سوال دھن کی بابت۔
प्रश्न. तीर्थयात्रा के विषय में	سوال تیرتھ یاترا کی بابت۔
प्रश्न. चित्त भ्रम के विषय में	سوال چت بھرم کی بابت۔
प्रश्न. परदेश में बीमार है सो कैसे है	سوال پردیس میں بیمار کیسے ہے۔
प्रश्न. बदली होना चाहते हैं	سوال بدلی ہونا چاہتے ہیں۔
प्रश्न. खोटे सुपने दीखते हैं	سوال خراب خواب کا۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ३ ॥ (۳) سری

प्रश्न.सन्तान के विषय में	سوال سنتان کی بابت۔
प्रश्न.लड़ाई के विषय में	سوال لڑائی کی بابت۔
प्रश्न.गुप्त चिंता के विषय में	سوال گپت چنتا کی بابت۔
प्रश्न.दुकान खोलने के विषय में	سوال دوکان کھولنے کی بابت۔
प्रश्न.जीव की चिन्ता के विषय में	سوال جیو کی چنتا کی بابت۔
प्रश्न.मनोर्थ सिद्ध होगा या नहीं	سوال منورتھ سدھ ہوگا یا نہیں۔
प्रश्न.एक चीज़ खोई गई है	سوال ایک چیز کھوئی گئی ہے۔
प्रश्न.रंडी के मामले का	سوال رنڈی کے معاملے کا۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ४ ॥ (ہ) سری

प्रश्न.लड़का होगा या लड़की	سوال لڑکا ہوگا یا لڑکی۔
प्रश्न.कोई जीव चला गया है	سوال کوئی جیو چلا گیا ہے۔
प्रश्न.बीमारी को कब आराम होगा	سوال بیماری کو کب آرام ہوگا۔
प्रश्न.भूत चुरैल प्रेत के विषय में	سوال بھوت چڑیل پریت کی بابت۔
प्रश्न.इम्तहान में पास होगा या नहीं	سوال امتحان میں پاس ہونگے یا نہیں۔
प्रश्न.एक आदमी फंस गया है	سوال ایک آدمی پھنس گیا ہے۔
प्रश्न.हमारी जेब में क्या है	سوال۔ ہماری جیب میں کیا ہے۔
प्रश्न.ज़िन्दा है या मरगया	سوال زندہ ہے یا مر گیا۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ५ ॥ (۵ سری

प्रश्न. बदली नहीं चाहते	سوال بدلی نہیں چاہتے۔
प्रश्न. आमदनी के विषय में	سوال آمدنی کی بابت۔
प्रश्न. खेती के फायदे के विषय में	سوال کھیتی میں نفع کی بابت۔
प्रश्न. मकान बनाने के विषय में	سوال مکان بنانا۔
प्रश्न. तरक्की होगी या नहीं	سوال ترقی ہوگی یا نہیں۔
प्रश्न. मुकदमे के अपील के विषय में	سوال مقدمہ کے اپیل کی بابت۔
प्रश्न. गढ़े हुए धन के विषय में	سوال گڑے ہوے دھن کی بابت۔
प्रश्न. कारखाना जारी करने के विषयमें	سوال کارخانہ جاری کرنے کی بابت۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ६ ॥ (۲) بسری

प्रश्न. सगाई के विषय में	سوال مںگائی کی بابت۔
प्रश्न. जिन्स में नफा होगा या टोटा	سوال جنس میں نفع ہوگا یا ٹوٹا
प्रश्न. नौकरी के विषय में	سوال نوکری کی بابت۔
प्रश्न. कुवां बनाने के विषय में	سوال کنواں بنانے کی بابت۔
प्रश्न. असामी मिलेगी या नहीं	سوال اسامی ملے گی یا نہیں۔
प्रश्न. सवारी के विषय में	سوال سواری کی بابت۔
प्रश्न. दस्तकारी विद्या के विषय में	سوال دستکاری ودّیا کی بابت۔
प्रश्न. राजदर्बार के विषय में	سوال راج دربار کی بابت۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ७ ॥ (فہرست)

प्रश्न. ब्याह के विषय में	سوال بیاہ کی بابت۔
प्रश्न. विद्या के विषय में	سوال ودیا کی بابت۔
प्रश्न. स्त्री की मुलाकात के विषय में	سوال استری کی ملاقات کا:
प्रश्न. बाग लगाने के विषय में	سوال باغ لگانے کی بابت۔
प्रश्न. हमने क्या खाया है	سوال ہم نے کیا کھایا ہے۔
प्रश्न. चौपाये से लड़ना भी होगा	سوال چوپائے سے لڑنا بھی ہوگا
प्रश्न. यह काम हमपै आ भी जावेगा	سوال یہ کام ہمپے آبھی جاوے گا۔
प्रश्न. ईश्वर की भक्ती के विषय में	سوال ایشور کی بھگتی کی بابت۔

अथ प्रत्यक्ष मूक प्रश्न क्रिया ॥ श्री ८ ॥ نمبری (۸)

प्रश्न. माशूक के विषय में	سوال معشوق کی بابت۔
प्रश्न. करज़ लेन के विषय में	سوال قرض لینے کی بابت۔
प्रश्न. मित्र से मुलाकात के विषय में	سوال مترسے ملاقات کی بابت
प्रश्न. वो चीज़ मिलेगी या नहीं	سوال وہ چیز ملے گی یا نہیں۔
प्रश्न. जीतेंगे या हारेंगे	سوال جیتینگے یا ہارینگے۔
प्रश्न. हमारे पास रहेगी या छूट जावेगी	سوال ہمارے پاس رہیگی یا چھوٹ جاویگی
प्रश्न. दिन कब तक नाकिस हैं	سوال دن کب تک ناقص ہیں
प्रश्न. रसायन के विषय में	سوال رسائن کی بابت۔

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिल... का पता :—

...भृगुसंहिता महाशास्त्र

Acc 4023

समाप्त...

पं० ...सभरोसे गंगा... ...सागर प्रेस, मेरठ शहर।

Acc 4023

4023

अथ ...साहितान्तरगत पत्रिकाणि सम्बत्सरस्य पृष्टांका अनुक्रमणिका ॥

सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टांक	सम्बत्	पृष्टा
१९६१	१	१९७१	२२	१९८१	४३	१९९१	६३	२००१	८३	२०११	१०३	२०२१	१२३				
	२		२३		४४		६४		८४		१०४		१२४				
१९६२	३	१९७२	२४	१९८२	४५	१९९२	६५	२००२	८५	२०१२	१०५						
	४		२५		४६		६६		८६		१०६	२०२२	१२५				
१९६३	५		२६	१९८३	४७	१९९३	६७	२००३	८७	२०१३	१०७		१२६				
	६	१९७३	२७		४८		६८		८८		१०८						
१९६४	७		२८	१९८४	४९	१९९४	६९	२००४	८९	२०१४	१०९						
	८	१९७४	२९		५०		७०		९०		११०	२०२३	१२७				
	९		३०	१९८५	५१	१९९५	७१	२००५	९१	२०१५	१११		१२८				
१९६५	१०	१९७५	३१		५२		७२		९२		११२						
	११		३२	१९८६	५३	१९९६	७३	२००६	९३	२०१६	११३	२०२४	१२९				
१९६६	१२	१९७६	३३		५४		७४		९४		११४		१३०				
	१३		३४	१९८७	५५	१९९७	७५	२००७	९५	२०१७	११५						
१९६७	१४	१९७७	३५		५६		७६		९६		११६	२०२५	१३१				
	१५		३६	१९८८	५७	१९९८	७७	२००८	९७	२०१८	११७		१३२				
१९६८	१६	१९७८	३७		५८		७८		९८		११८						
	१७		३८	१९८९	५९	१९९९	७९	२००९	९९	२०१९	११९						
१९६९	१८	१९७९	३९		६०		८०		१००		१२०						
	१९		४०	१९९०	६१	२०००	८१	२०१०	१०१	२०२०	१२१						
१९७०	२०	१९८०	४१		६२		८२		१०२		१२२						
	२१		४२														

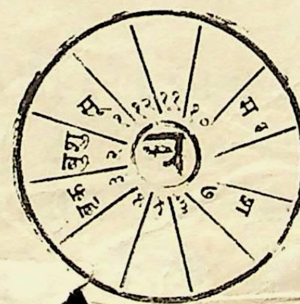
कुण्डली मिलाने की सुगम रीति

यह महाशास्त्र कुंडलियों का समुद्र है इसमें कुंडली ढूंढकर निकालना भी कुछ सुगम न था अत्यन्त कठिन समझा जाता था परन्तु हमने बहुत कुछ विचार करनेपर ऐसी सुगम क्रिया निकाली है कि कुछ बहुत परिश्रम और देर न लगे तुरन्त कुंडली मिल जाय वह यह है कि प्रथम संवत के पृष्ठों को अनुक्रमणिका में देखो जैसे किसी का जन्म सम्वत २०११ का है अब अनुक्रमणिका में संवत् २०११ के सामने पृष्ठांक देखे तो १०३-१०४ पाये बस समझ लीजिए कि सम्वत २०११ के जन्म वाले की इन्हीं दोनो पत्रों में मिलेगी बस कुंडलियोंके सूचीपत्रके इन्हीं दोनों पत्रोंमें देखो कुंडली अवश्य मिलेगी कुंडली मिलानेका क्रम यहहै कि प्रथम जौन राशिपर शनिश्चर बैठाहो वह राशि कुंडलियोंमें देखे जब शनिश्चर मिलजाय तो फिर राहू बृहस्पति मिलावे फिर मंगल सूर्य बुध शुक्र आदि मिलावे ऐसे समस्त ग्रह मिल जानेपर जो कुंडली सिद्धहो उसीके प्रष्ठांकों में फलित निकालकर देखलो यदि कुछ फरक रहे तो एक एक फलित पत्र उसके आगेपीछे के पढ़लो

सं० २०११ उदाहरण कुण्डली ।

अब मालूम हवा पृष्ठांक १०३-१०४ में कुण्डली मिलेगी पुनः शनिश्चर देखा तो दोनों पत्रोंमें मिल गया फिर सूर्य देखा तो १०३ पृष्ट में मिला पुनः मंगल बुध शुक्र सब मिलाये मिलाते २ ...ग्रह सुफे १०३की कुण्डलीमें मिले जिसकेऊपर ...नंबरहै बस उसी नंबरके पृष्ठफलित देखो

५४५
५४६



अब यह कुण्डली मिली है ऐसे ही सर्वत्र मिलाना चाहिये ।

(घ) सुफे में फल सुनाने की बहुत सुगम दूसरी रीति लिखी है ।

नोटः—जिस किसी का जन्म पत्र न हो और वह भृगुसंहिता से अपनी अवस्था... कथा सुनना चाहे तो... मिलाकर इसी रीति से...

...ज्योतिष महाशास्त्र की कुण्डलियों का सूचीपत्र ॥

सूचना—... प्राचीन और अजीर्ण हमको बड़ी कठिनता से रुपया व्यय करके पंडितों से नकल करनेको मिला ... था सब अस्तव्यस्त और फटा हुआथा श्लोक भी कहीं के कहीं हो रहे थे सो हमने अपनी बुद्धि अनुसार संशोधन किया और पंडित सुजानसिंह जो भृगुशास्त्री, जो इस विद्यामें बड़े निपुणथे, तिनसे शुद्ध कराकर लिखवाया सो हमारे इस ग्रन्थ की नकल राज नियमानुसरजिस्ट्री होगई है इस लिये कोई सज्जन बिना प्रकाशक की आज्ञा न छापें ॥

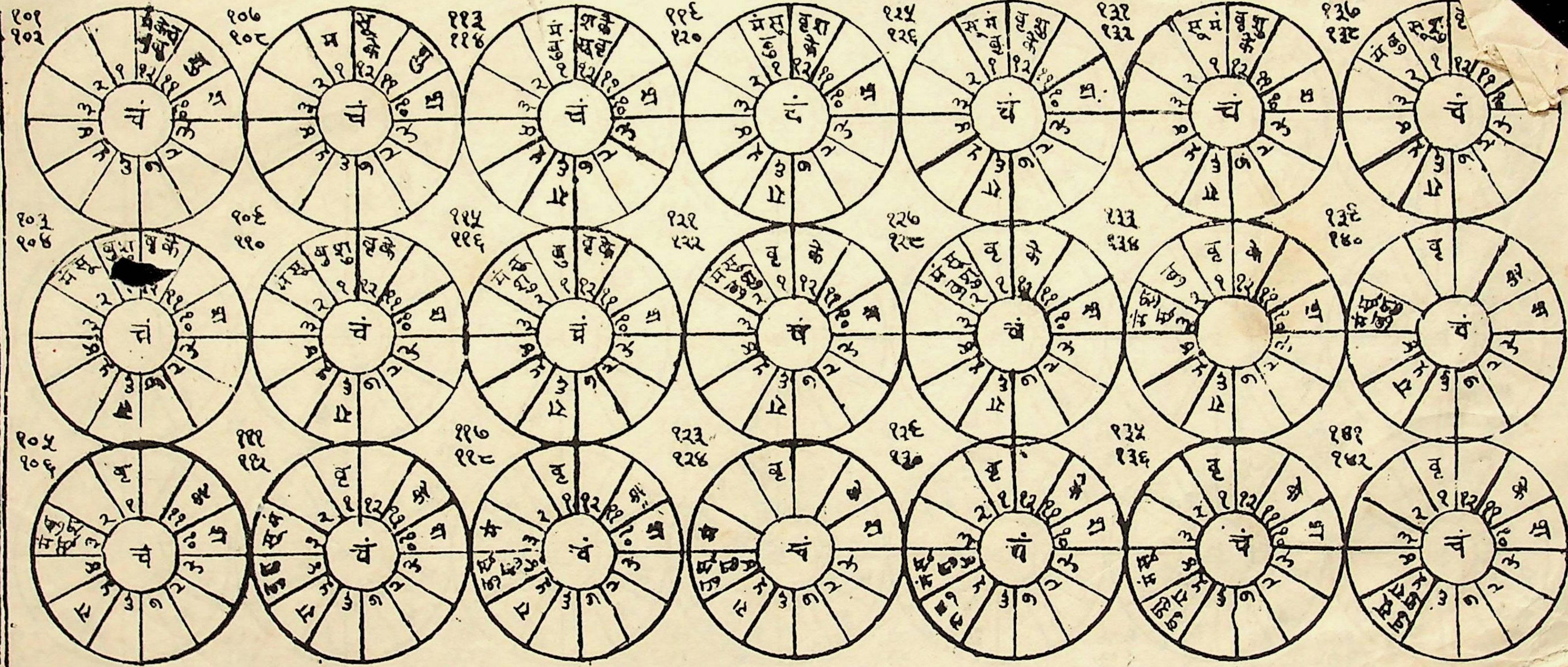
भृ०सं०

क

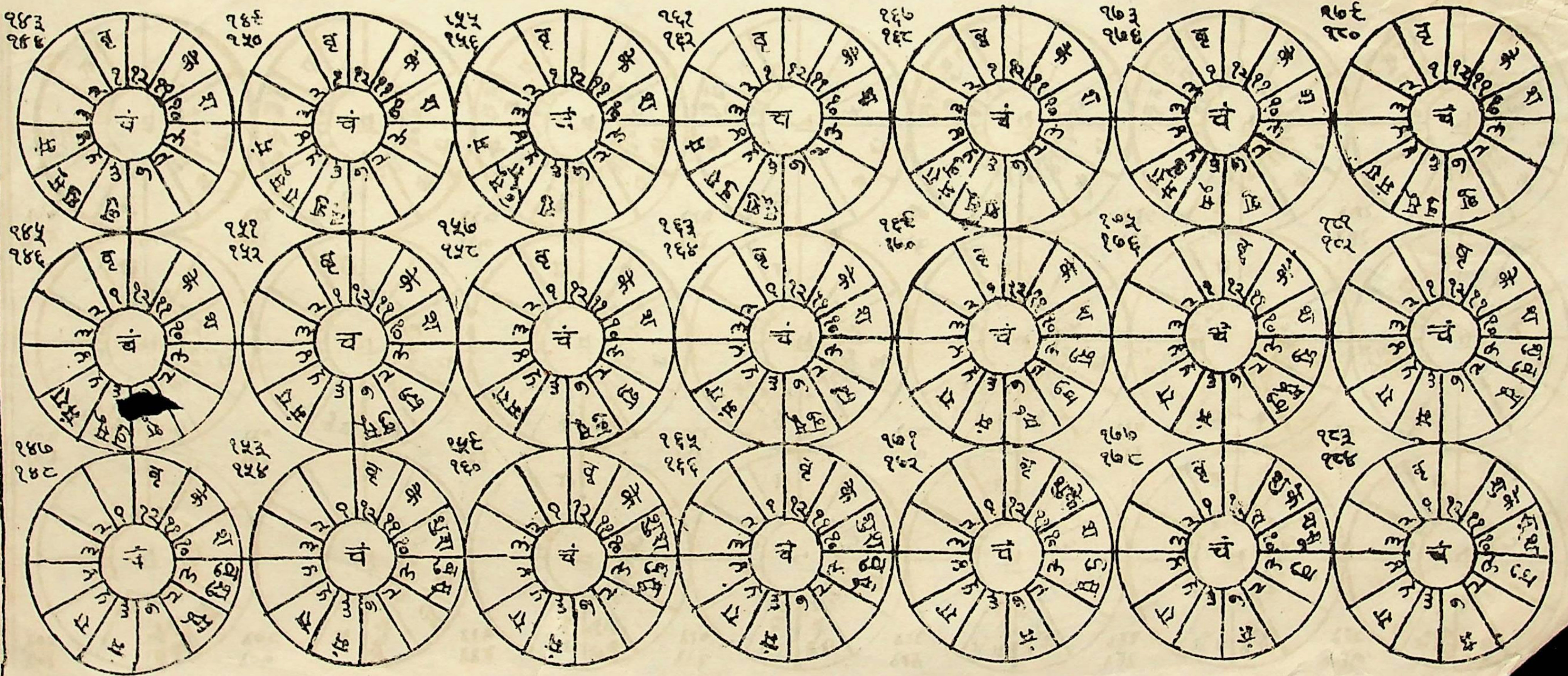
पंडितों के भाग्य उदय होने को पुस्तक

इस पुस्तक से ईश्वर चाहे तो थोड़ासा पढ़ा पंडितभी हजारों रुपये फल सुनाने में और जन्मपत्र की नकल देने में प्राप्तकर सकता है और कर लिये तथा कर रहे हैं इस सूचीपत्र जिससे सुगमता से मालूम होता है कि फलाने सम्बतकी कुण्डली फलाने (पृष्ठ) सुफेमें मिलेगी अतः कुण्डली मिलजाने पर फिर देखो जो कुण्डली सूचीपत्रमें मिलीहै उसके ऊपर अङ्क संख्या क्याहै यानी किस नम्बर की कुण्डली है जो अंक संख्या कुण्डली के ऊपर लिखा है उसी अंकका पृष्ठ आगे फलित खंड में पढ़ो उसका वही फल होगा और जो फल कम मिले तो उससे पहिला पत्र और अगले पत्र का भी फल पढ़ो क्यों कि शायद बूझने वाले की कुण्डली के लग्न में कुछ फरक न हो बहुत सी कुण्डली ऐसी ऐसी भ्रम की भी होती हैं कि जन्म पत्र लिखवाते वक्त स्त्रियोंसे बालक के जन्म का वक्त बूझने में घड़ी आध घड़ी का फर्क लग्न की संधि में हो जाता है क्यों कि बहुधा वक्त का निर्णय होना अति कठिन होता है पंडितों को चाहिये कि अपनी विद्या बुद्धि का जोर भी लगावें और विशेष फल जातक प्रकर्ण से विस्तार पूर्वक लिख कर सुनावें ॥

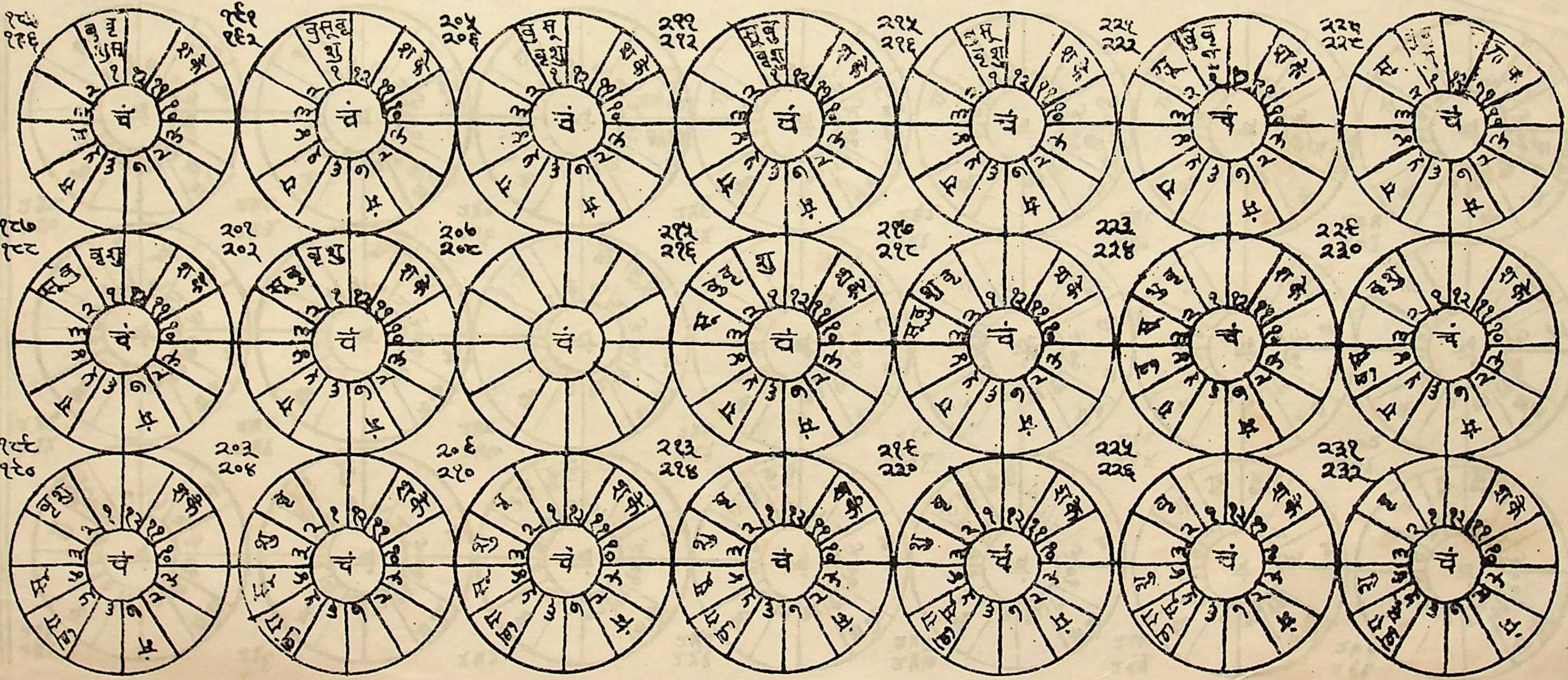
कृ०ख०
मु०सं०
१


१०१
१०२
१०७
१०८
११३
११४
११९
१२०
१२५
१२६
१३१
१३२
१३७
१३८
१०३
१०४
१०९
११०
११५
११६
१२१
१२२
१२७
१२८
१३३
१३४
१३९
१४०
१०५
१०६
१११
११२
११७
११८
१२३
१२४
१३५
१३६
१४१
१४२

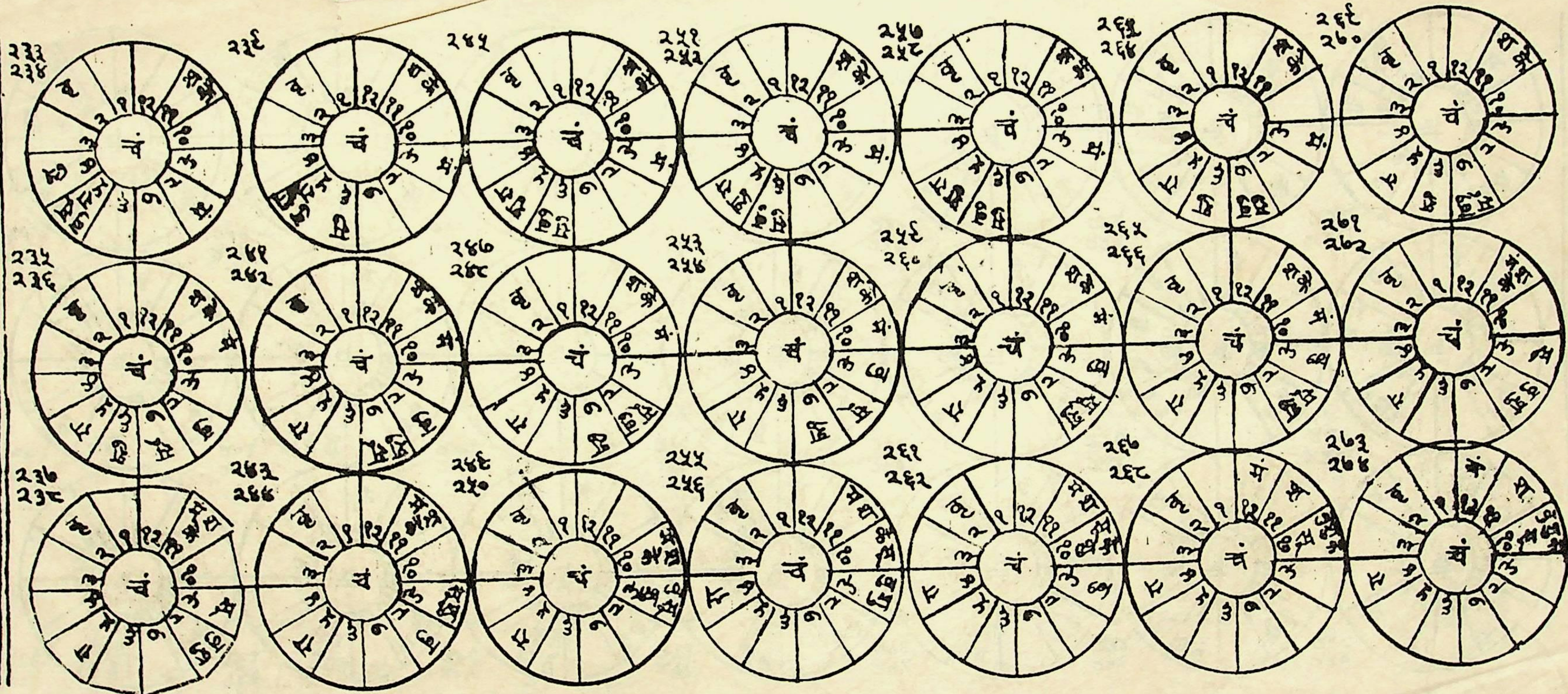
कुं० खं०
मू० सं०
२

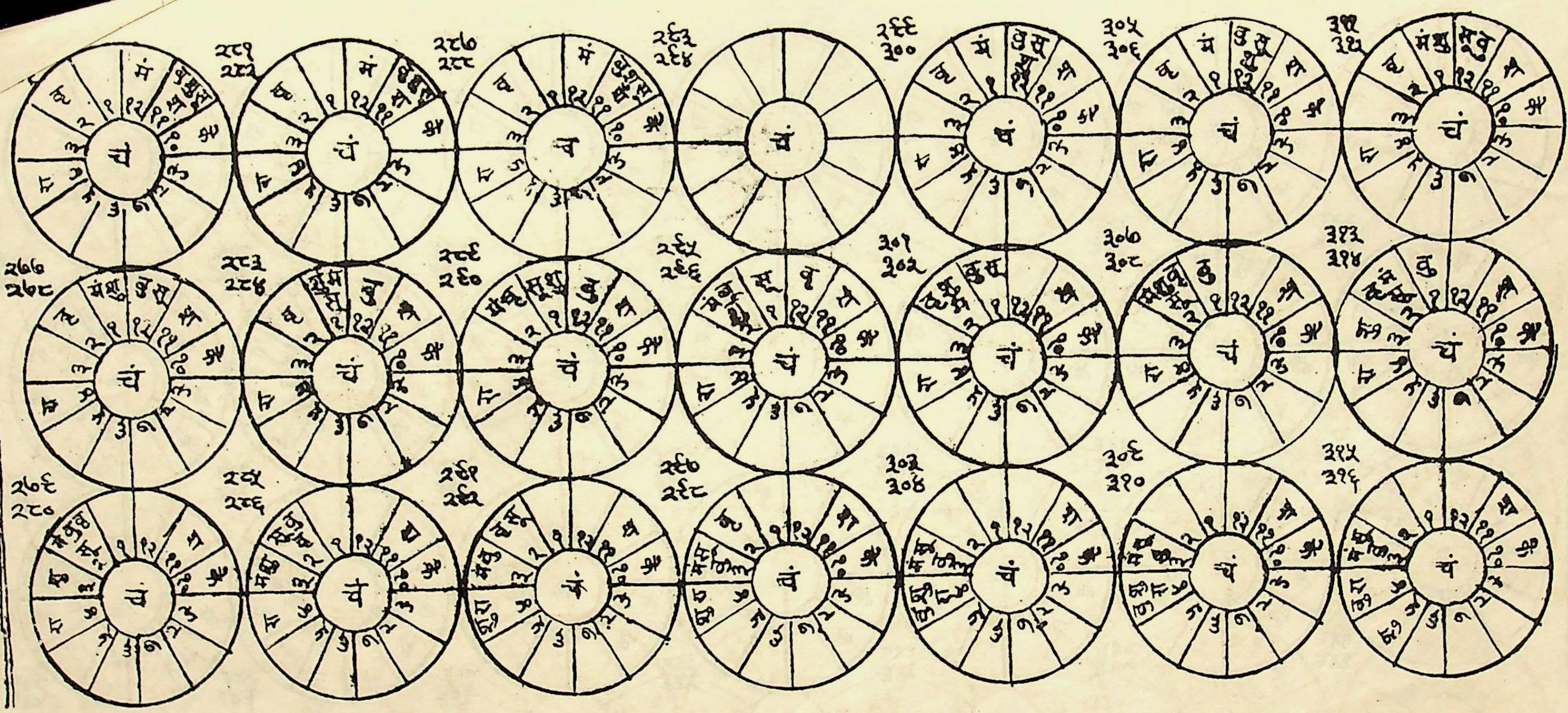


कुं० ख०
मु० सं०
३

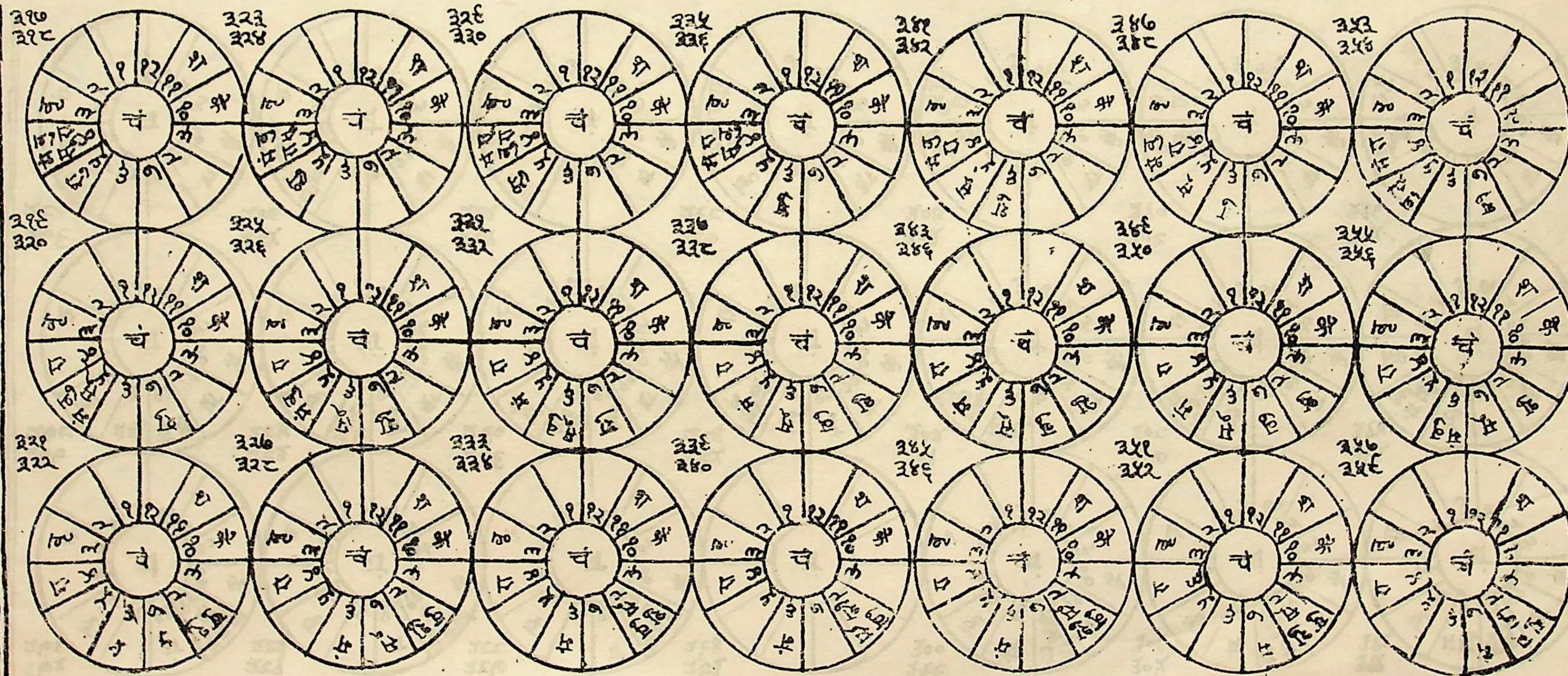


कु० सं०
मू० सं०
५



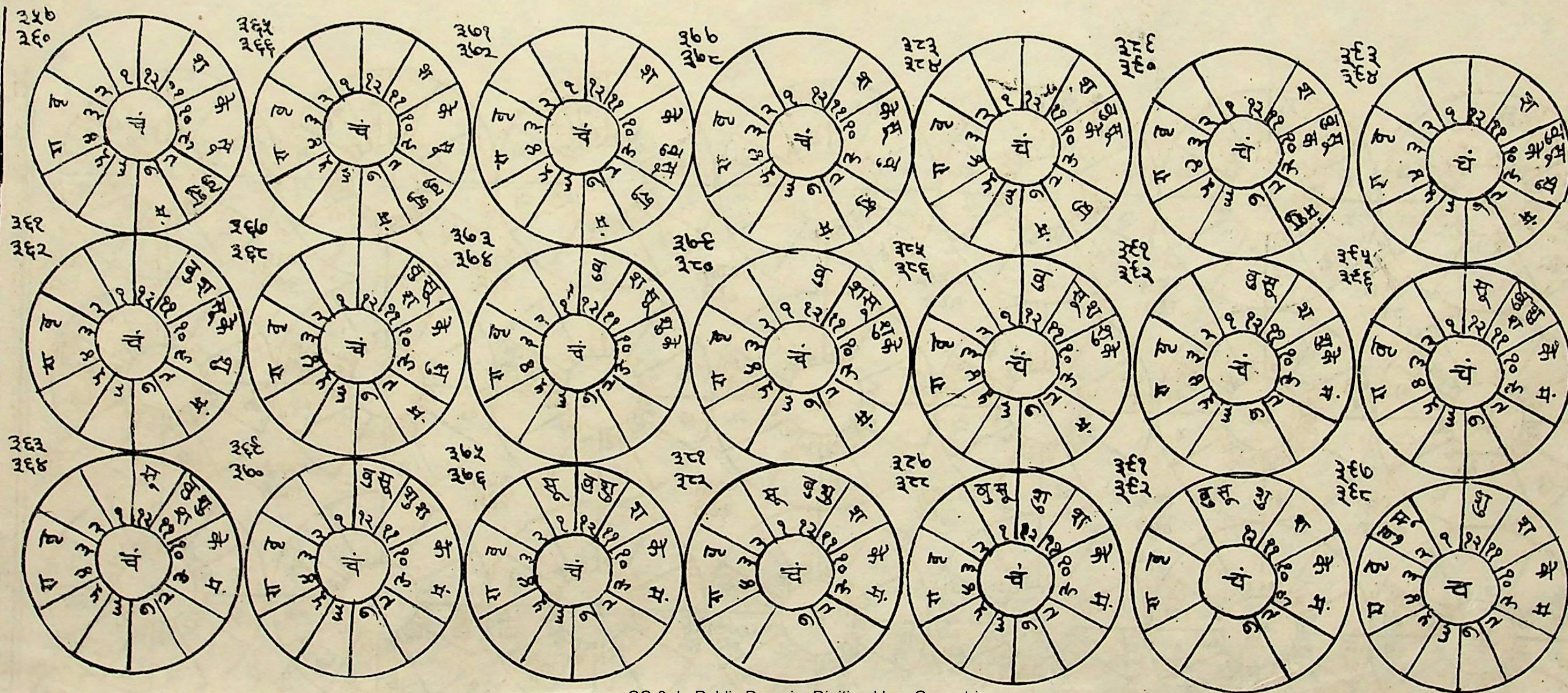


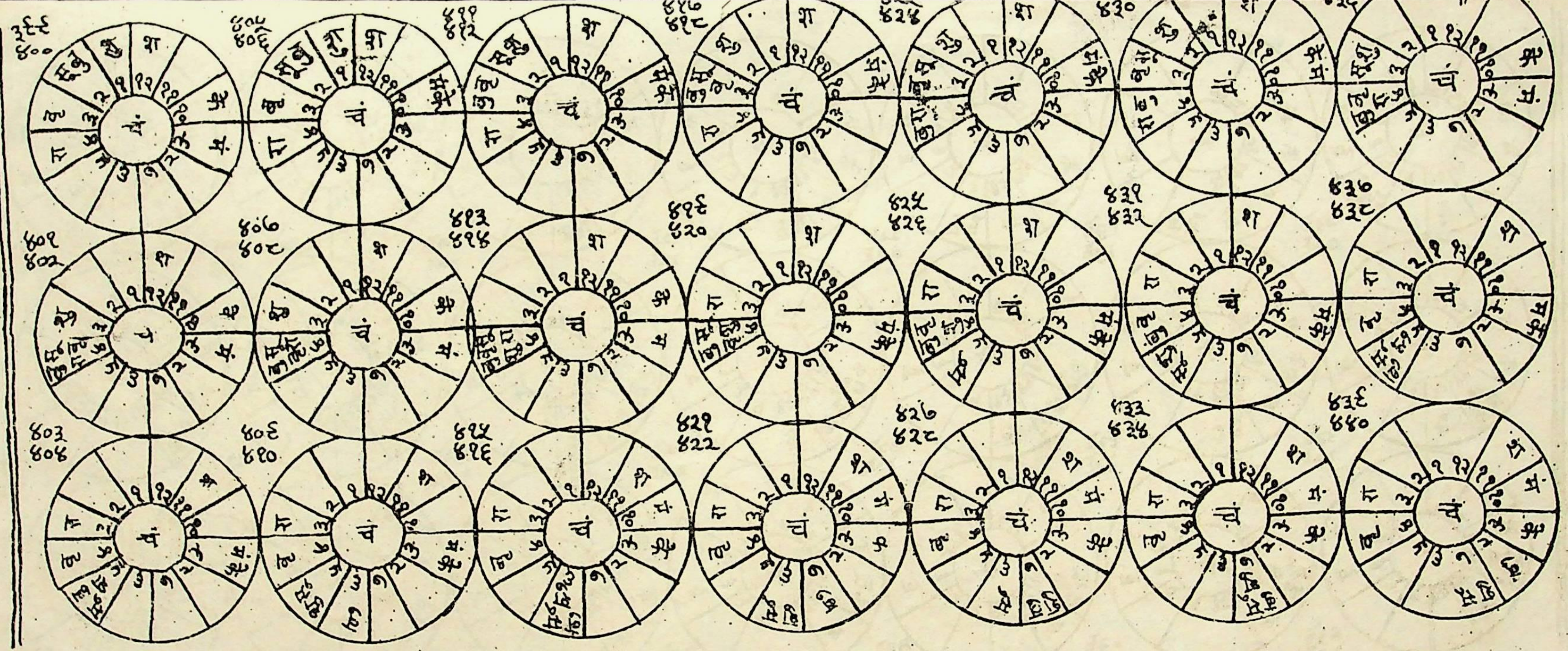
कुं० ख०
मू० सं०
६



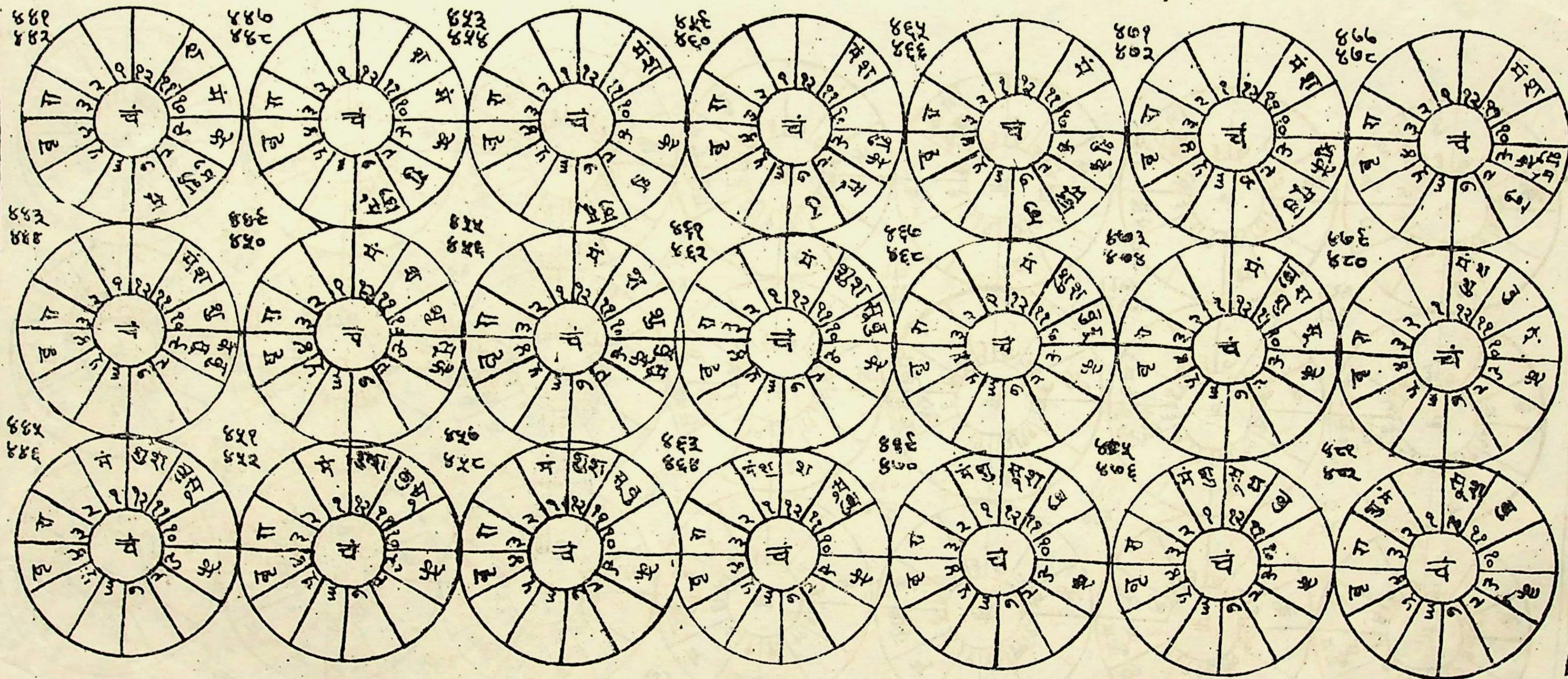
३१७
३१८
३२३
३२४
३२९
३३०
३३५
३३६
३४१
३४२
३४७
३४८
३५३
३५४
३१९
३२०
३२५
३२६
३३१
३३२
३३७
३३८
३४३
३४४
३४९
३५०
३५५
३५६
३२१
३२२
३२७
३२८
३३३
३३४
३३९
३४०
३४५
३४६
३५१
३५२
३५७
३५८

कुं० ख०
मू० सं०
७

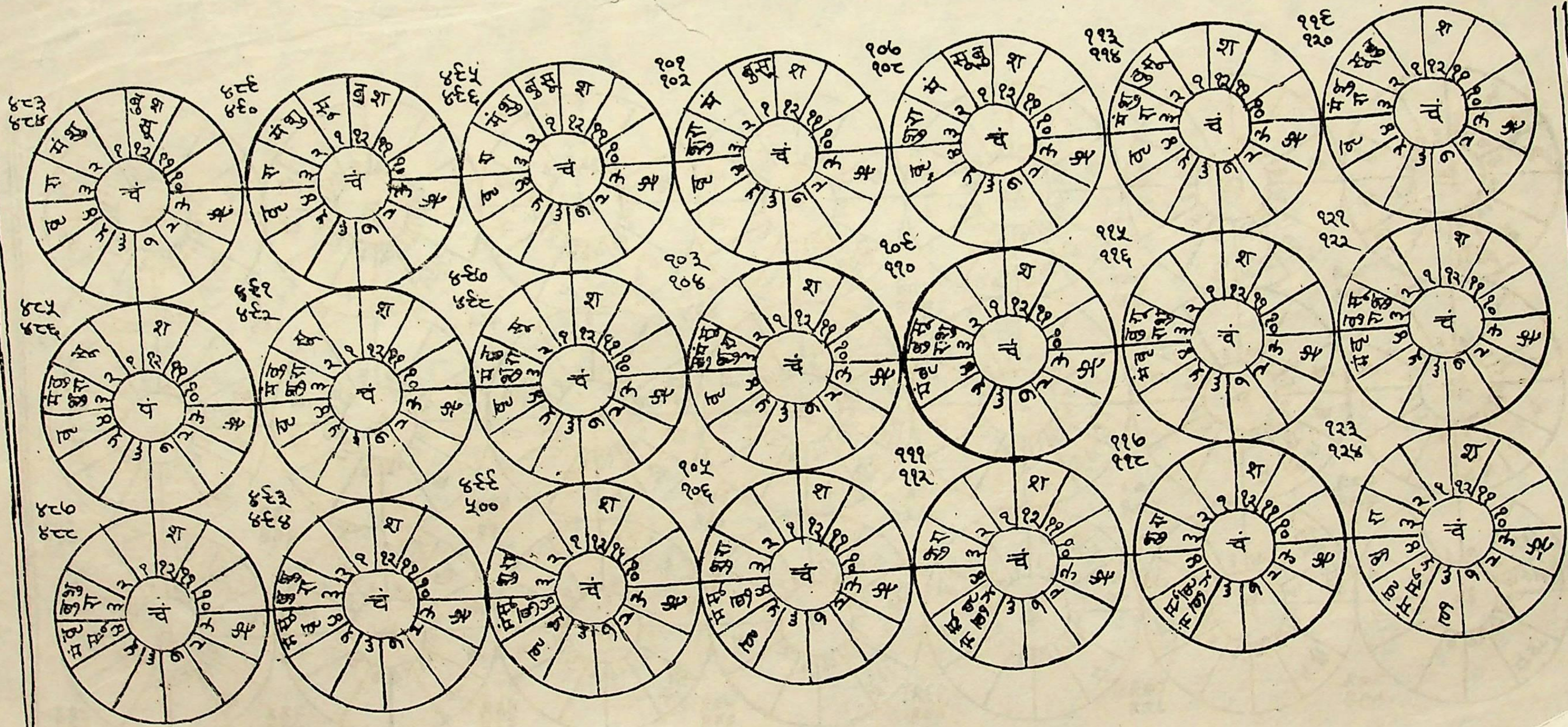


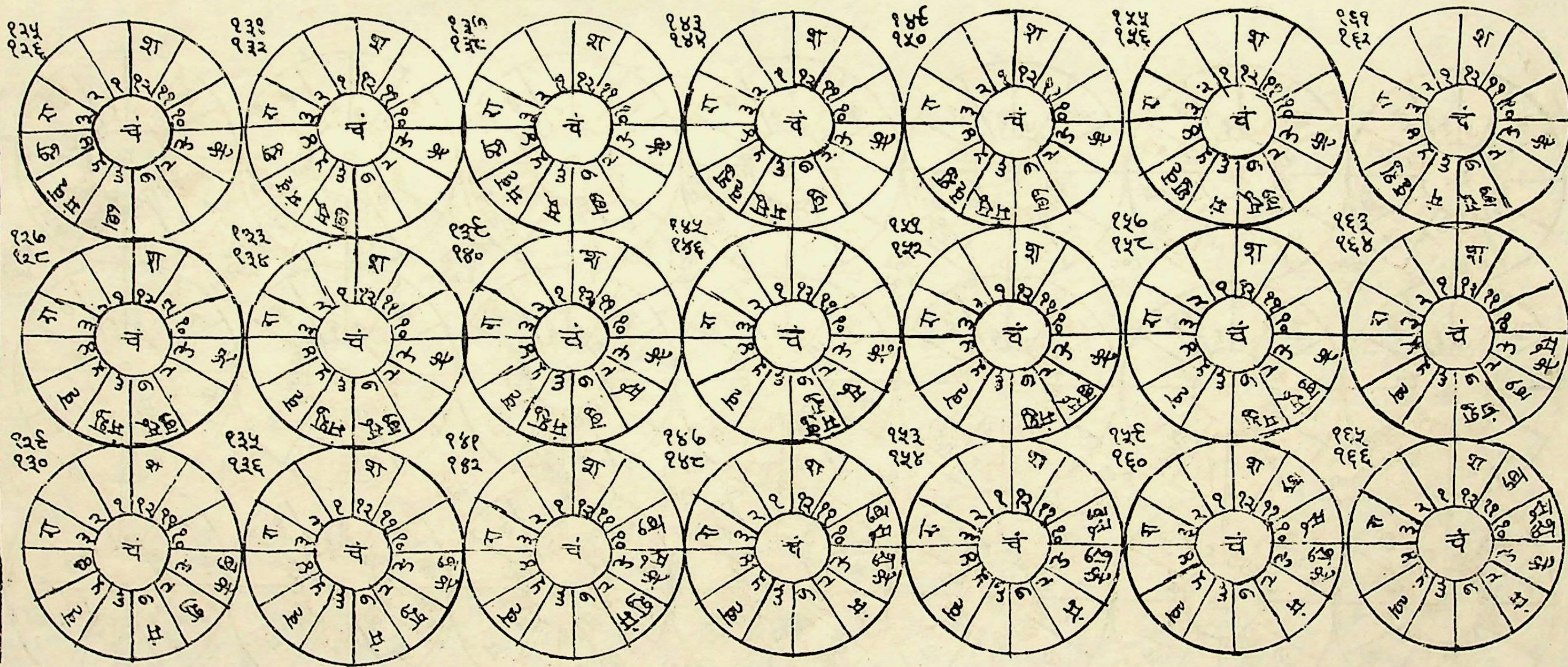


कु० ख०
मू० सं०
५



कुं० ख०
मु० सं०


४८३
४८४
४८९
४९०
४९५
४९६
१०१
१०२
१०७
१०८
११३
११४
११९
१२०
४८५
४८६
४९१
४९२
४९७
४९८
१०३
१०४
१०९
११०
११५
११६
१२१
१२२
४८७
४८८
४९३
४९४
४९९
५००
१०५
१०६
१११
११२
११७
११८
१२३
१२४

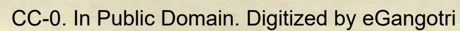


कुं० खं०
मू० सं०
८

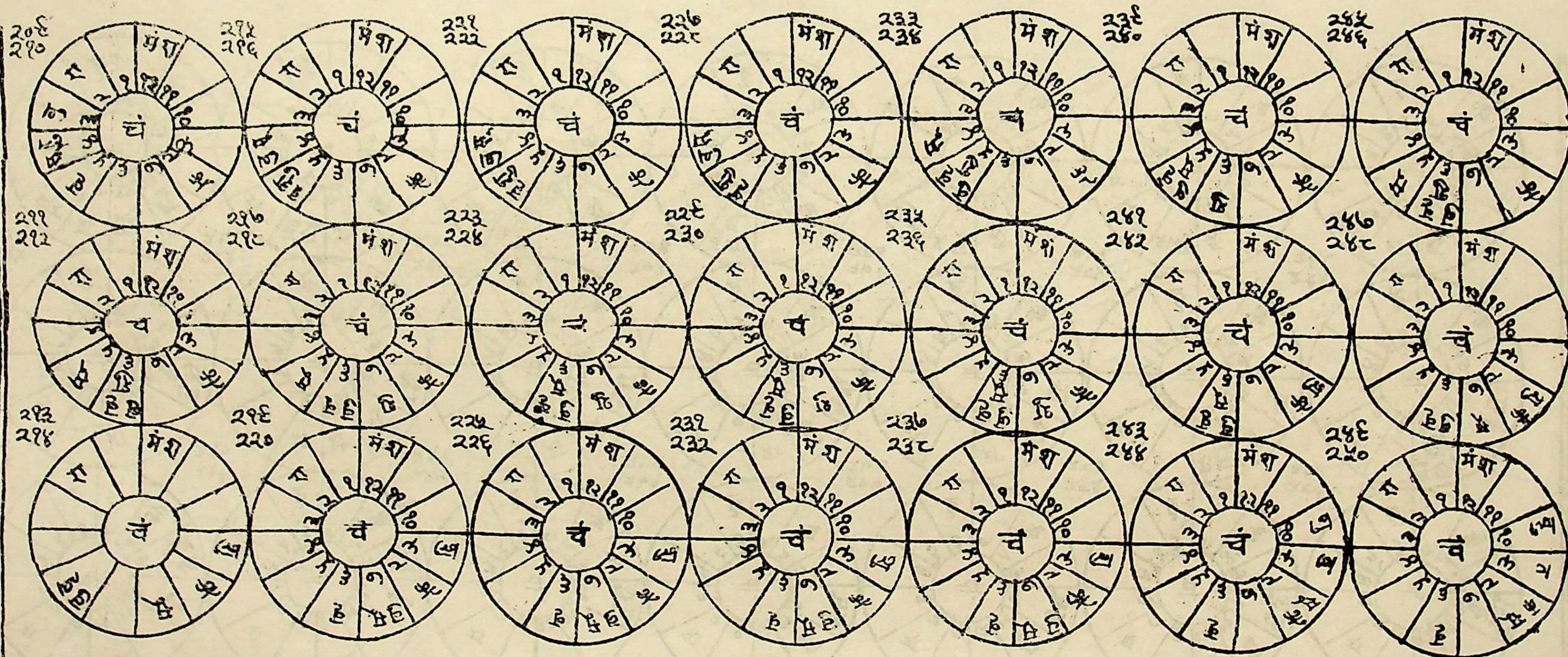
१६७ १६८ | १७३ १७४ | १७९ १८० | १८५ १८६ | १९१ १९२ | १९७ १९८ | २०३ २०४

१६९ १७० | १७५ १७६ | १८१ १८२ | १८७ १८८ | १९३ १९४ | १९९ २०० | २०५ २०६

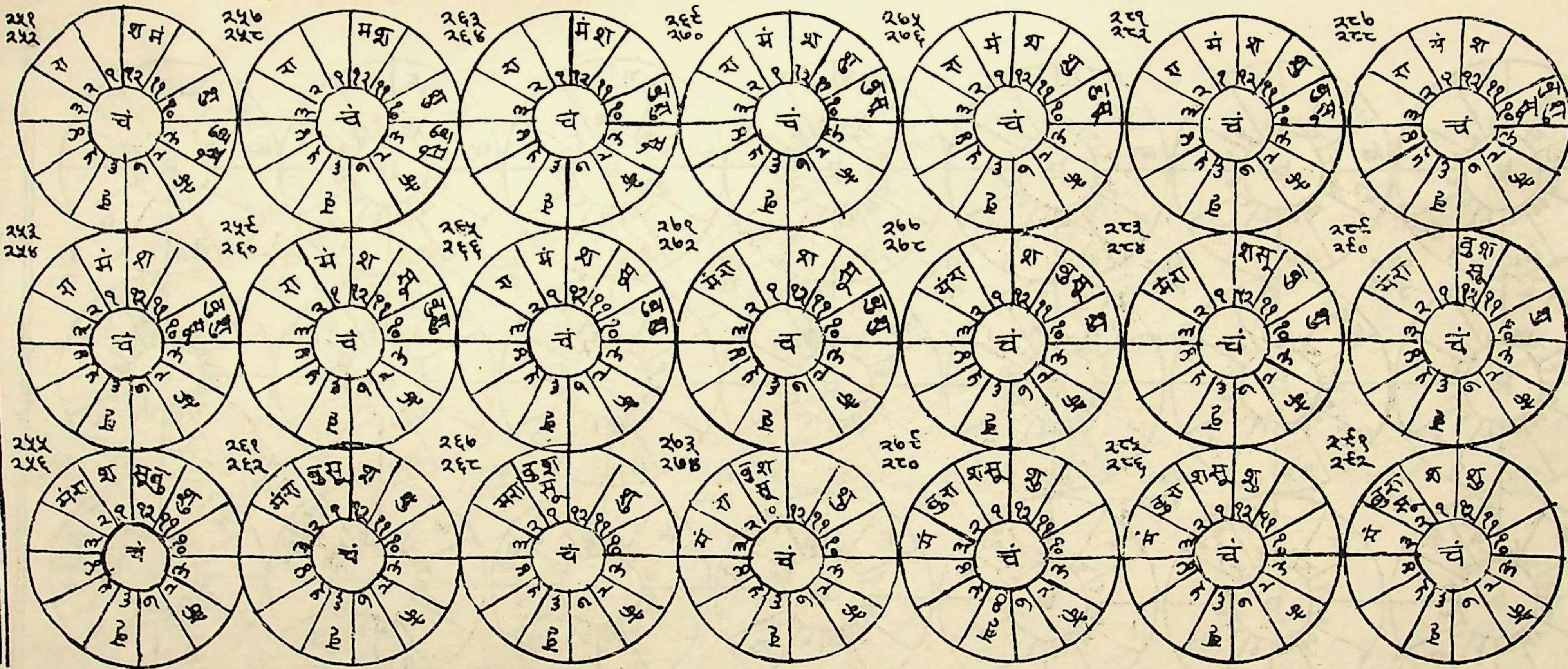
१७१ १७२ | १७७ १७८ | १८३ १८४ | १८९ १९० | १९५ १९६ | २०१ २०२ | २०७ २०८

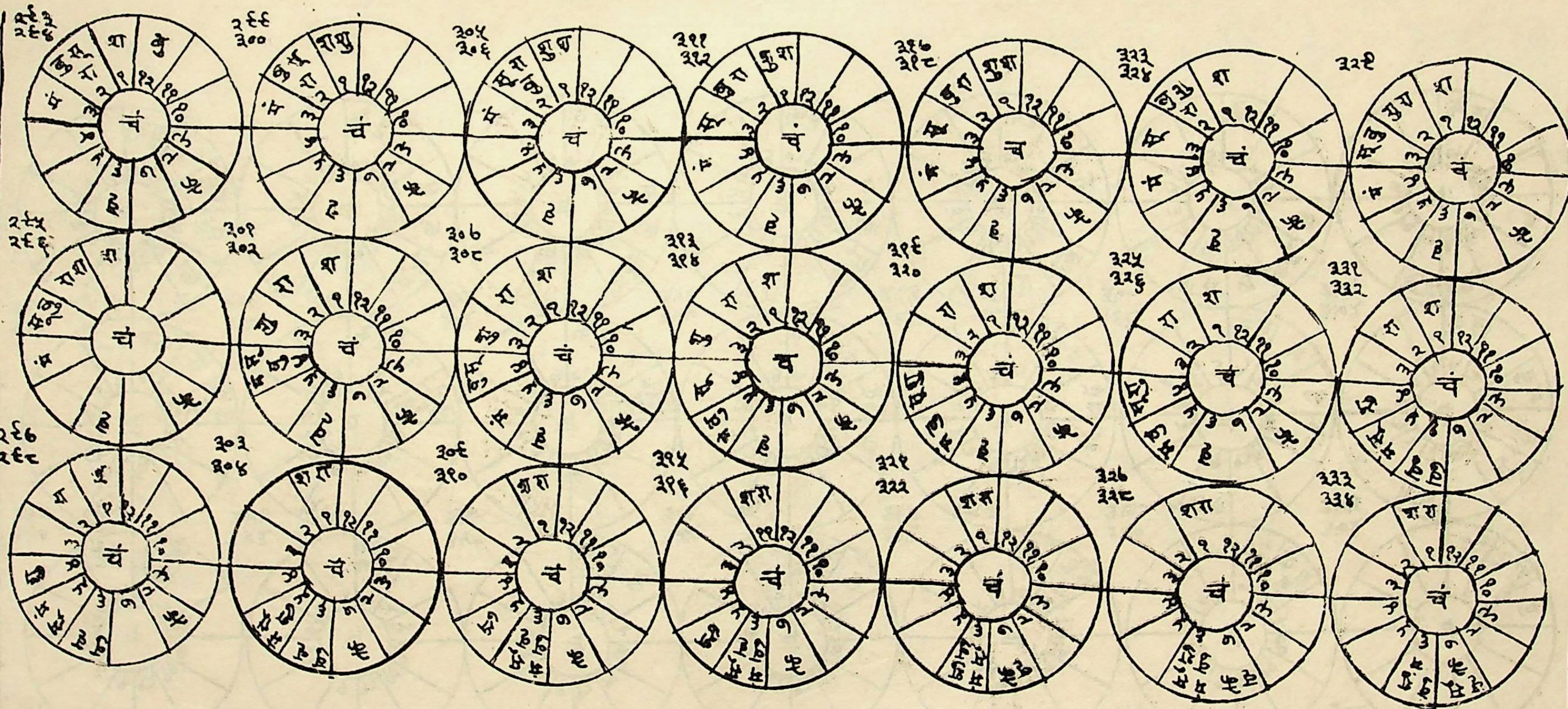


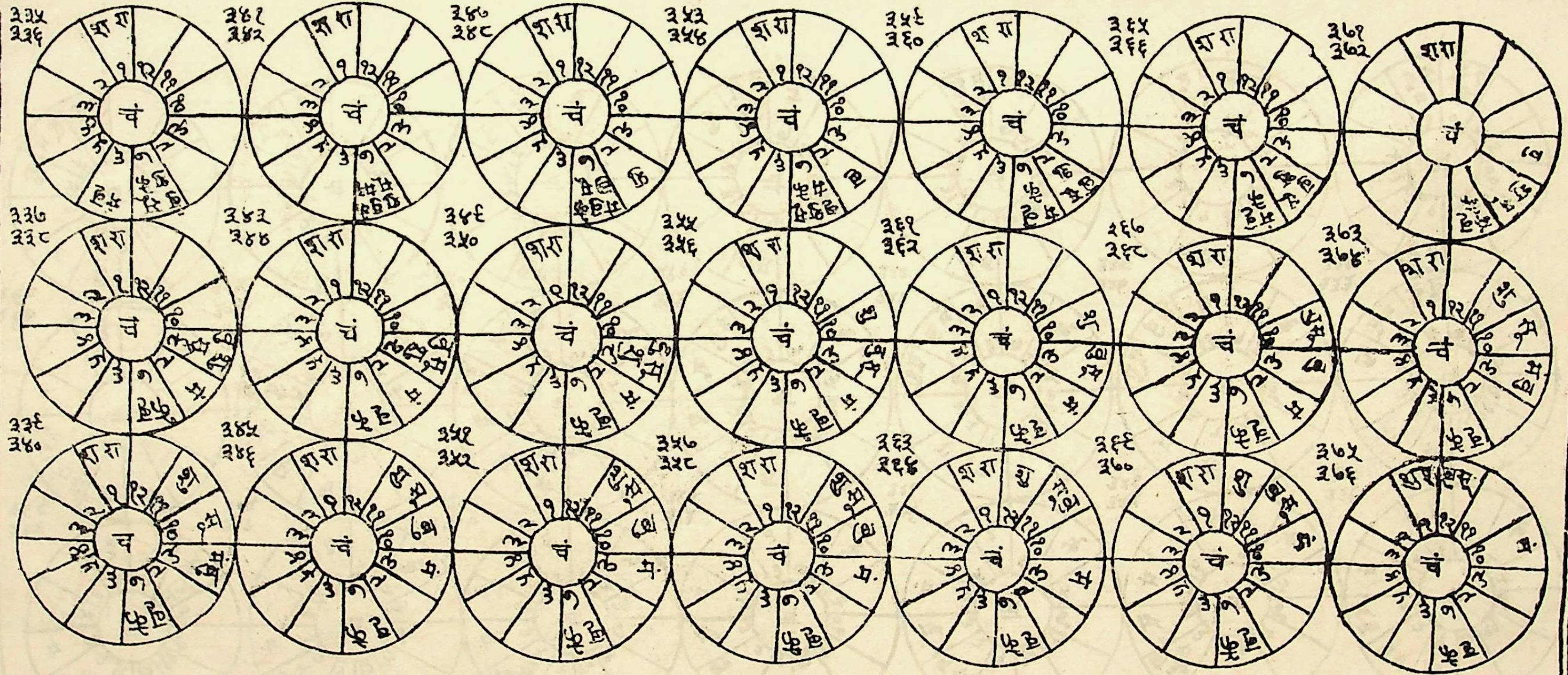
कुं० सं०
मू० सं०
१३

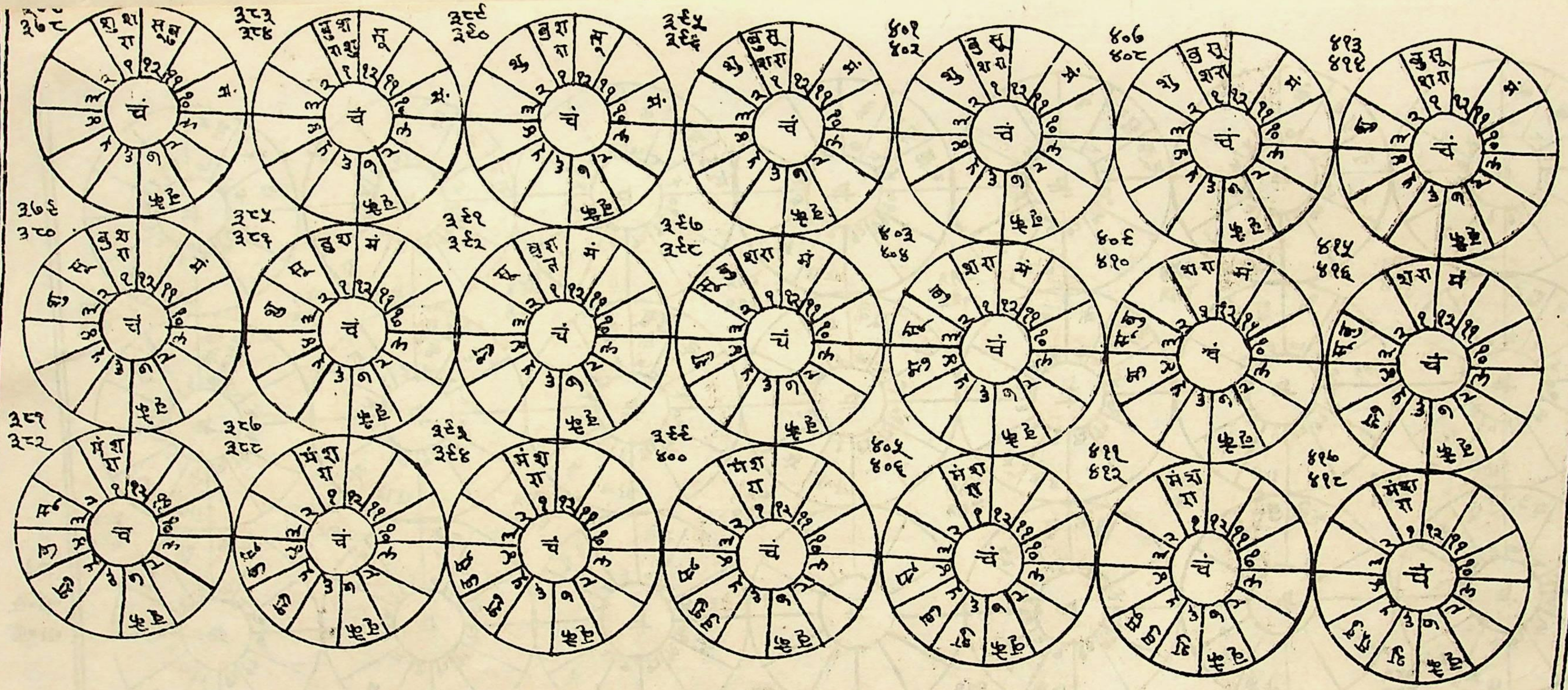

२०९
२१०
२१५
२१६
२२१
२२२
२२७
२२८
२३३
२३४
२३९
२४०
२४५
२४६
२११
२१२
२१७
२१८
२२३
२२४
२२९
२३०
२३५
२३६
२४१
२४२
२४७
२४८
२१३
२१४
२१९
२२०
२२५
२२६
२३१
२३२
२३७
२३८
२४३
२४४
२४९
२५०

कु० स
मु०सं०
१५

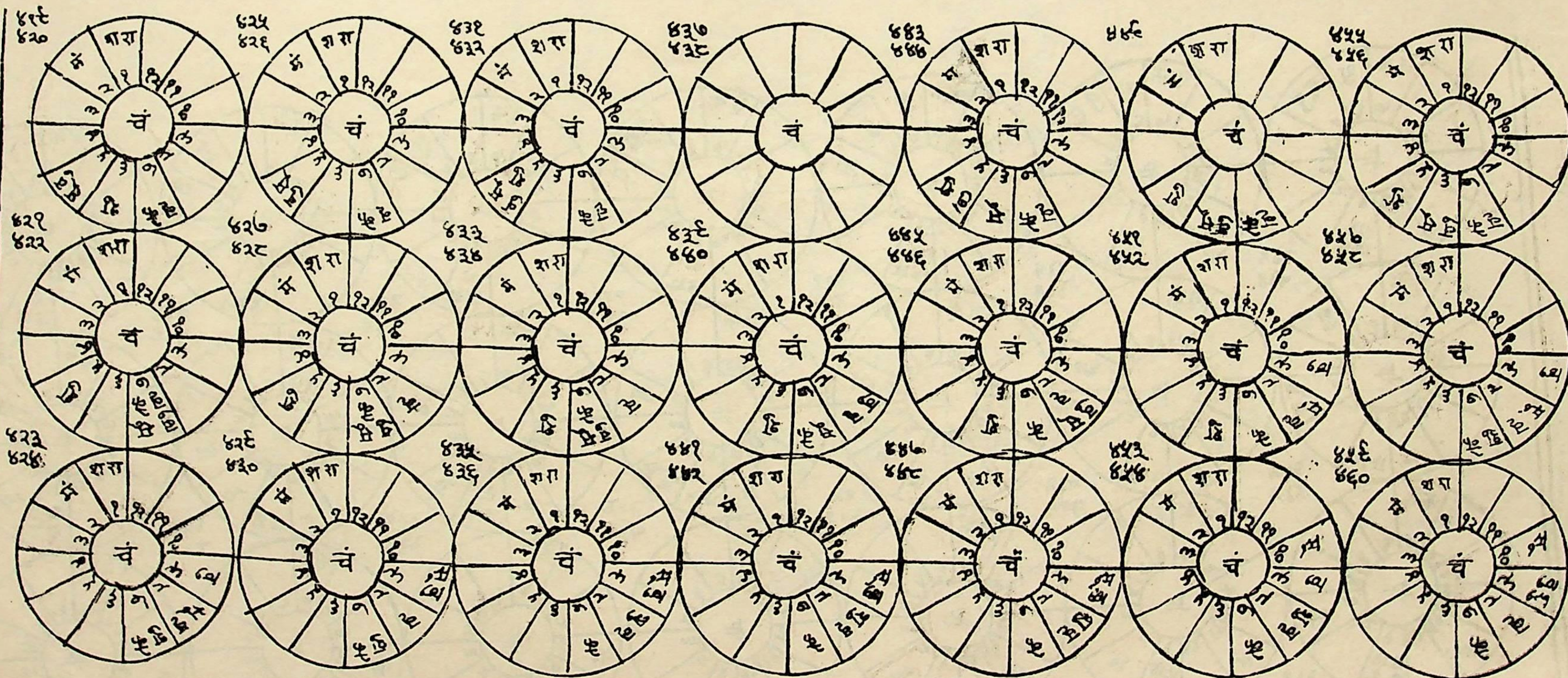


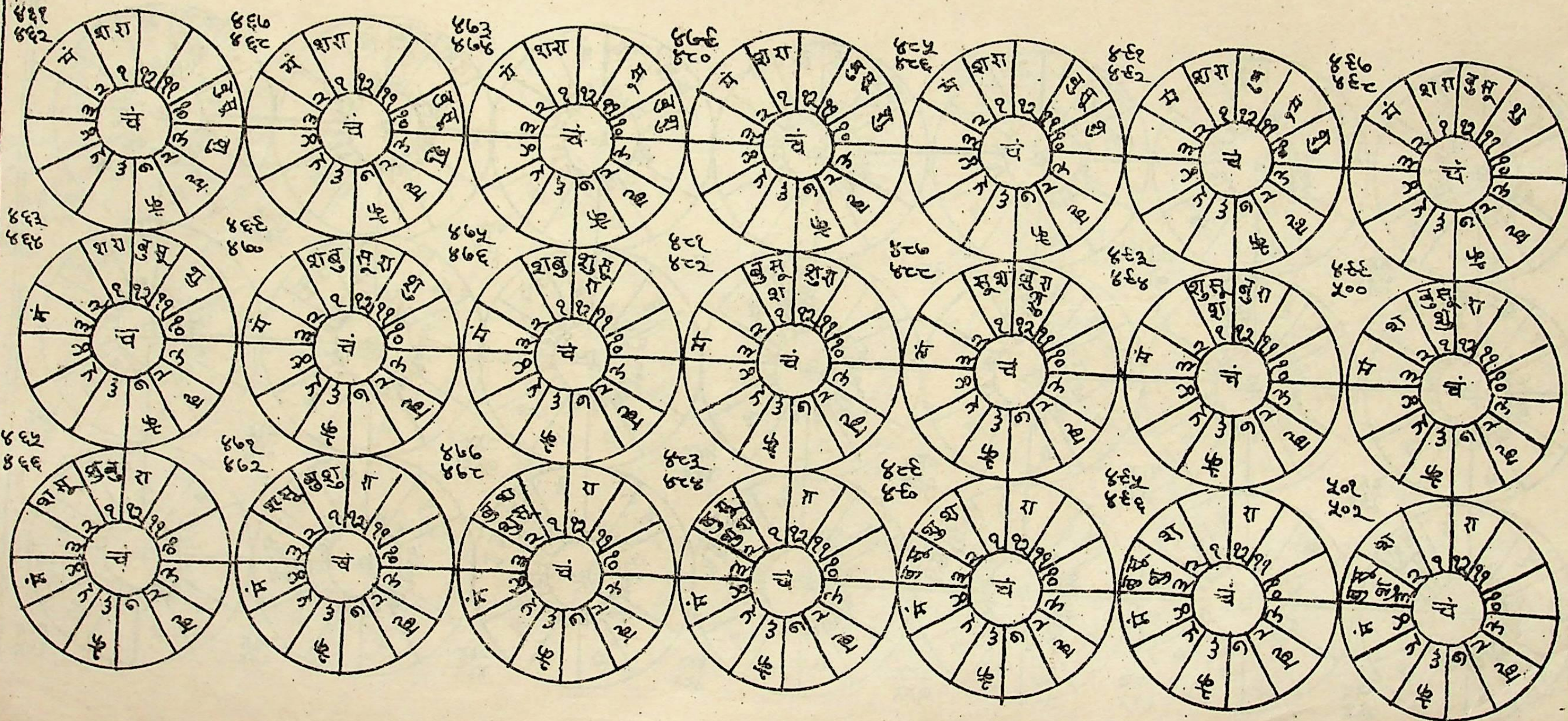




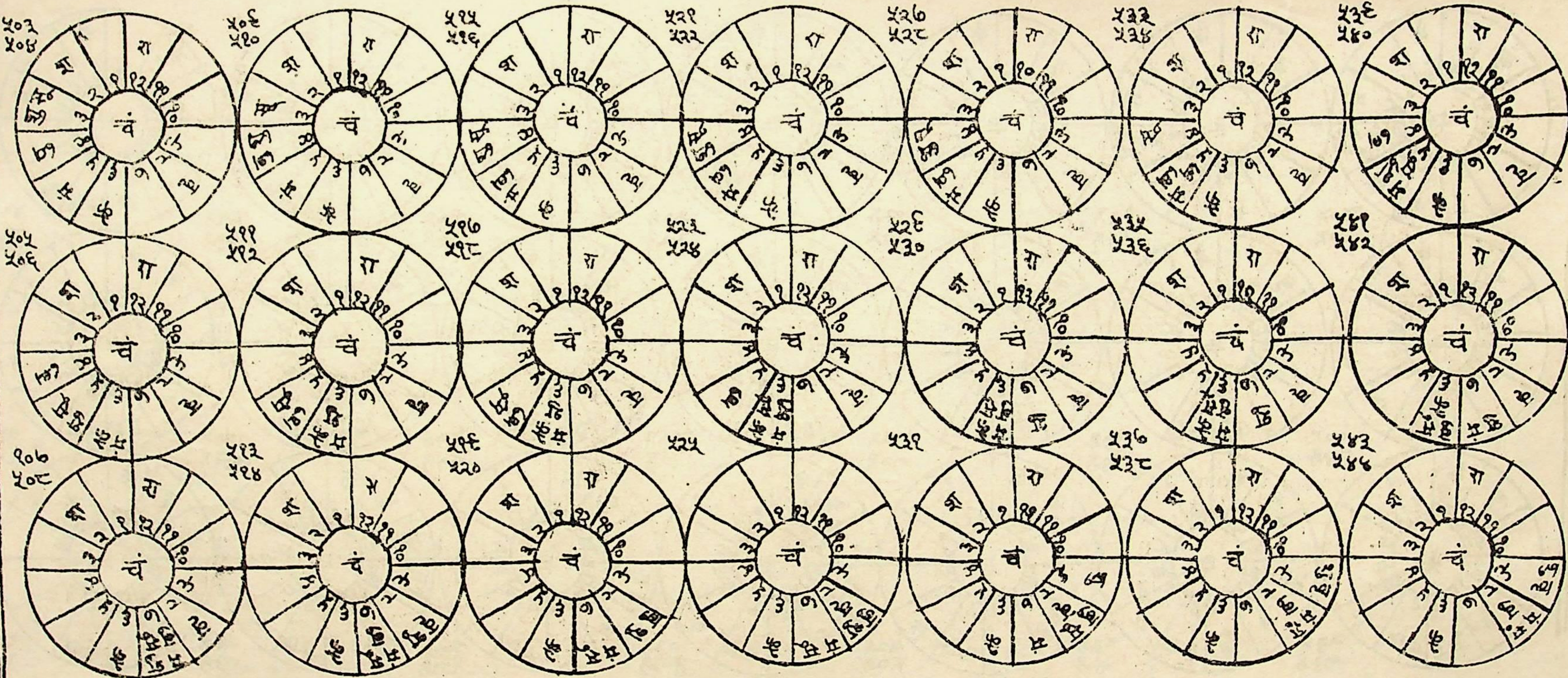


कुं० स०
भू० सं०
१८

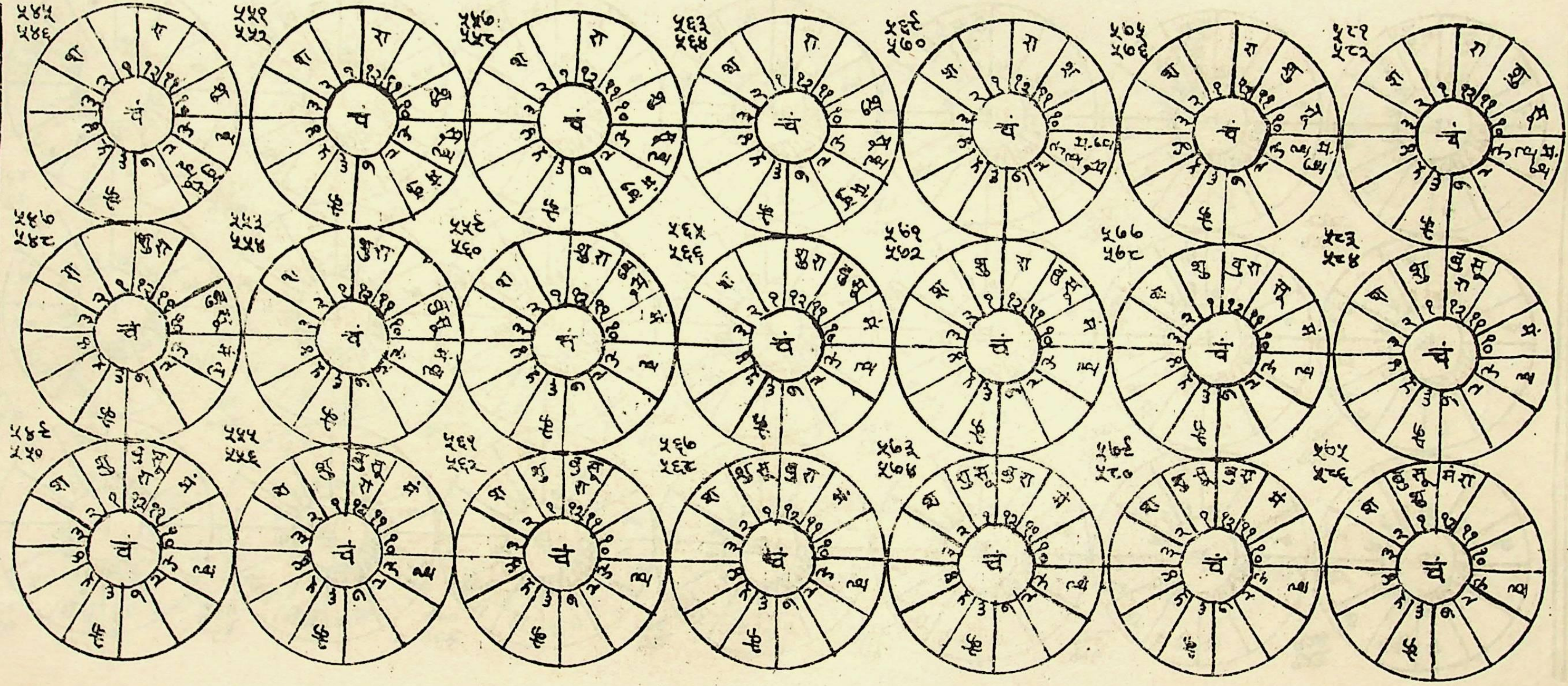




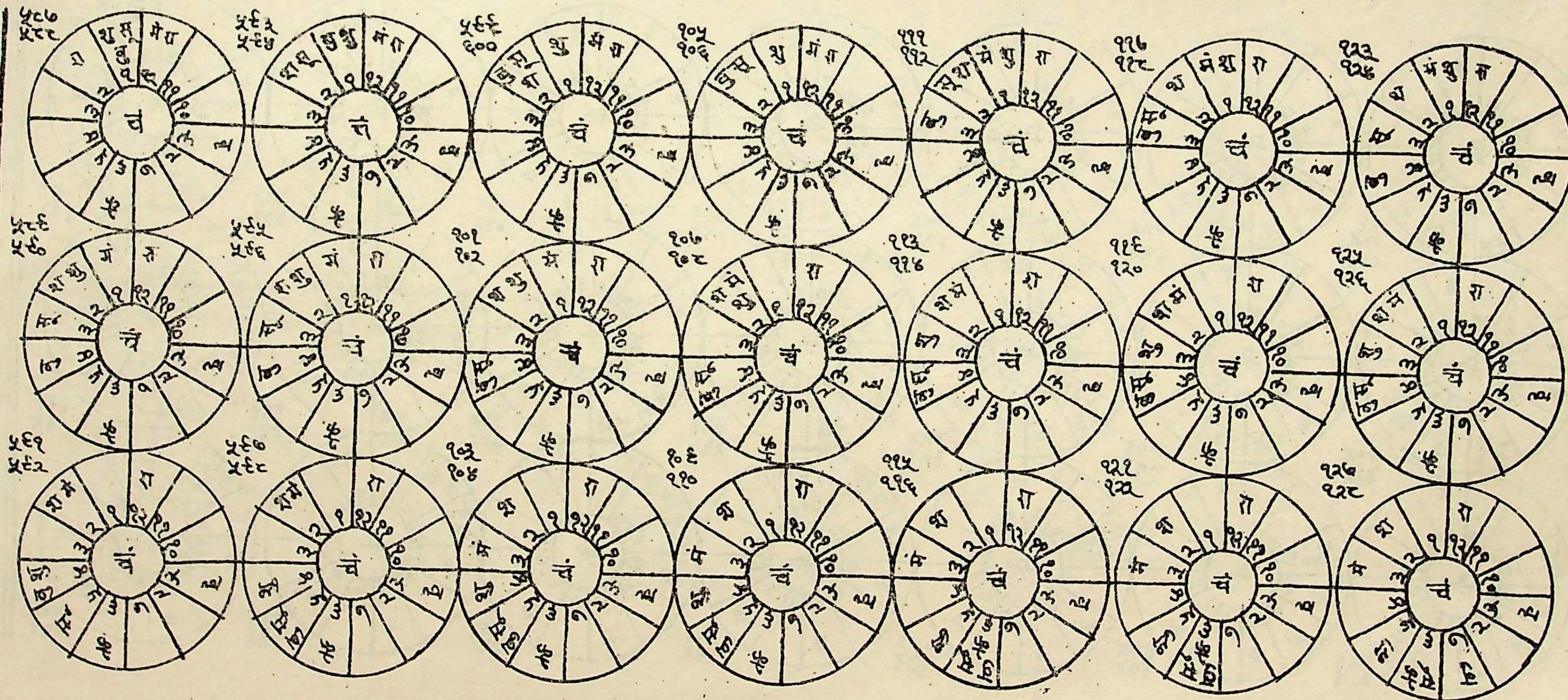
कुं०सं०
मू०सं०
२०



कुं० सं०
मृं० सं०
२१



कुं० सं०
मृ० सं०
२२



कुं० ख०
मुं० सं०
२३

१२९
१३०

१३५
१३६

१४१
१४२

१४७
१४८

१५३
१५४

१५९
१६०

१६५
१६६

१३१
१३२

१३७
१३८

१४३
१४४

१४९
१५०

१५५
१५६

१६१
१६२

१६७
१६८

१३३
४

१३९
१४०

१४५
१४६

१५१
१५२

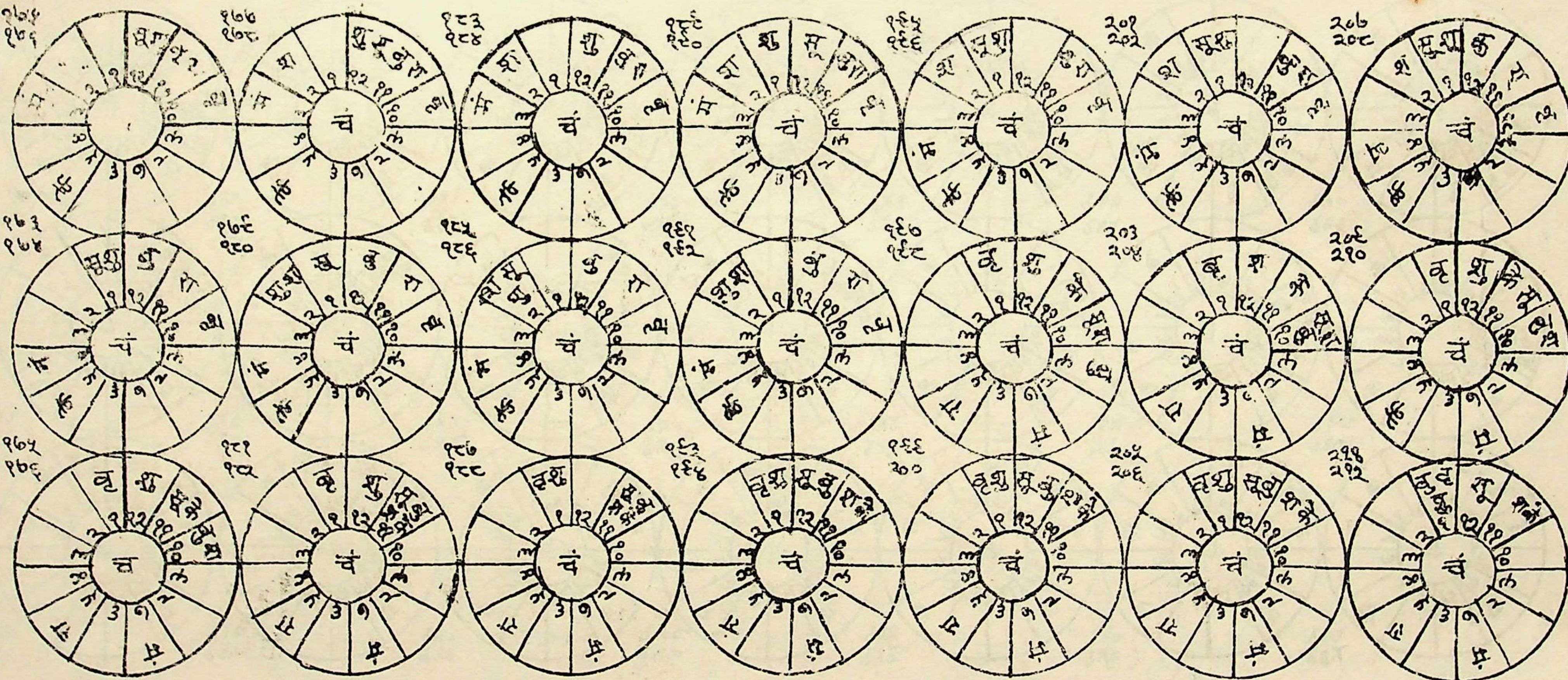
१५७
१५८

१६३
१६४

१६९
१७०

कु० सं०

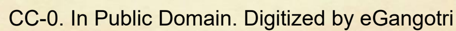
मू० सं०



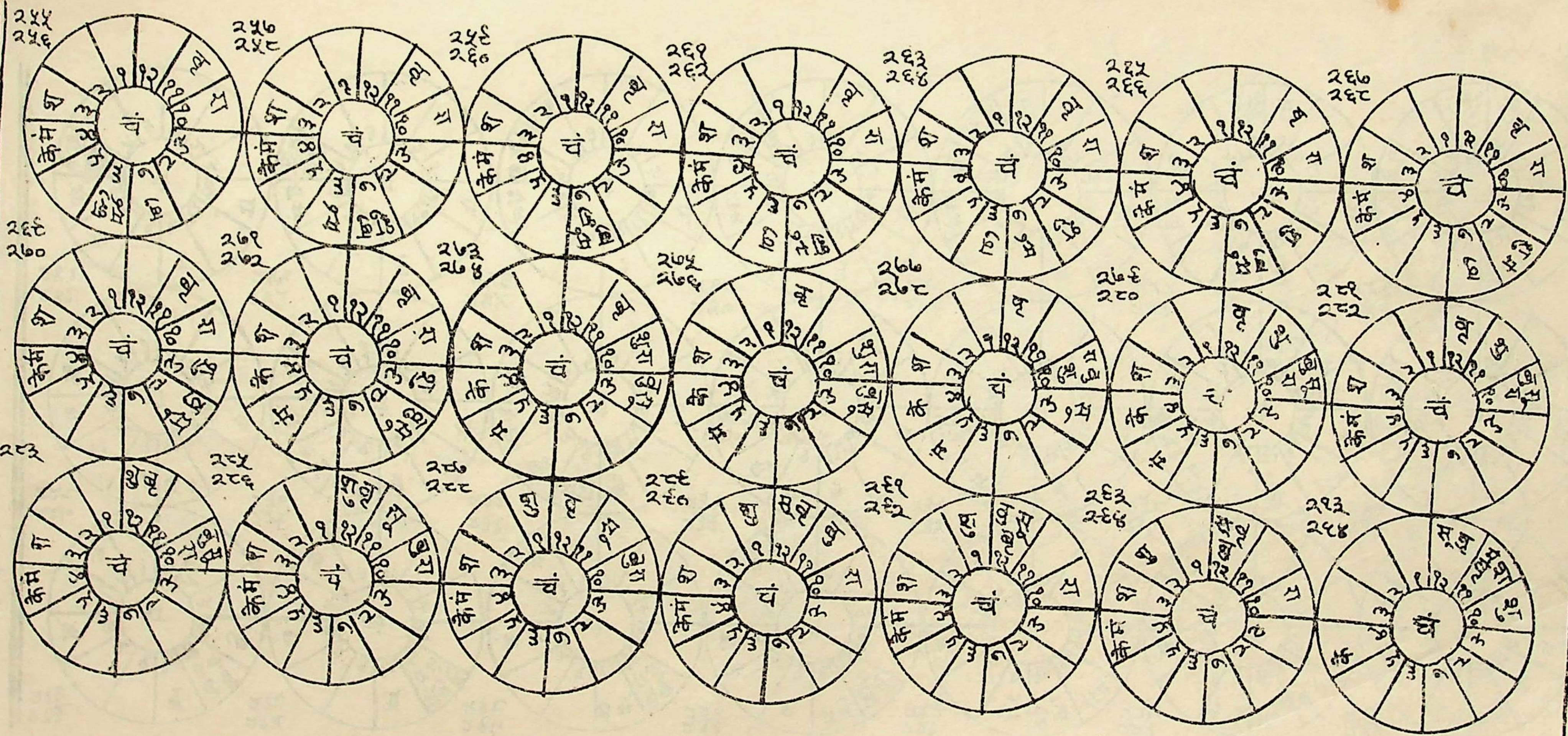
२१३ २१४ | २१५ २१६ | २१७ २१८ | २१९ २२० | २२१ २२२ | २२३ २२४ | २२५ २२६

२२७ २२८ | २२९ २३० | २३१ २३२ | २३३ २३४ | २३५ २३६ | २३७ २३८ | २३९ २४०

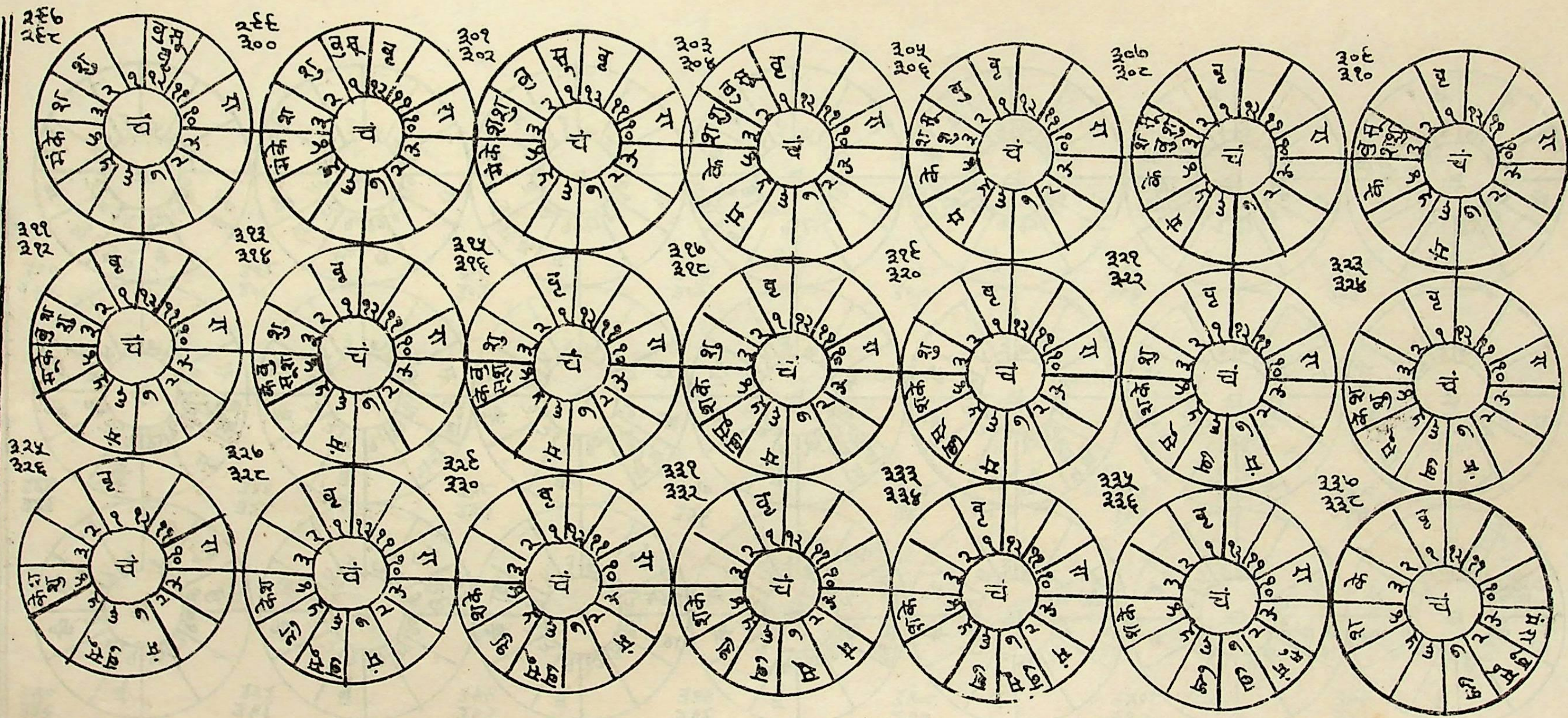
२४१ २४२ | २४३ २४४ | २४५ २४६ | २४७ २४८ | २४९ २५० | २५१ २५२ | २५३ २५४



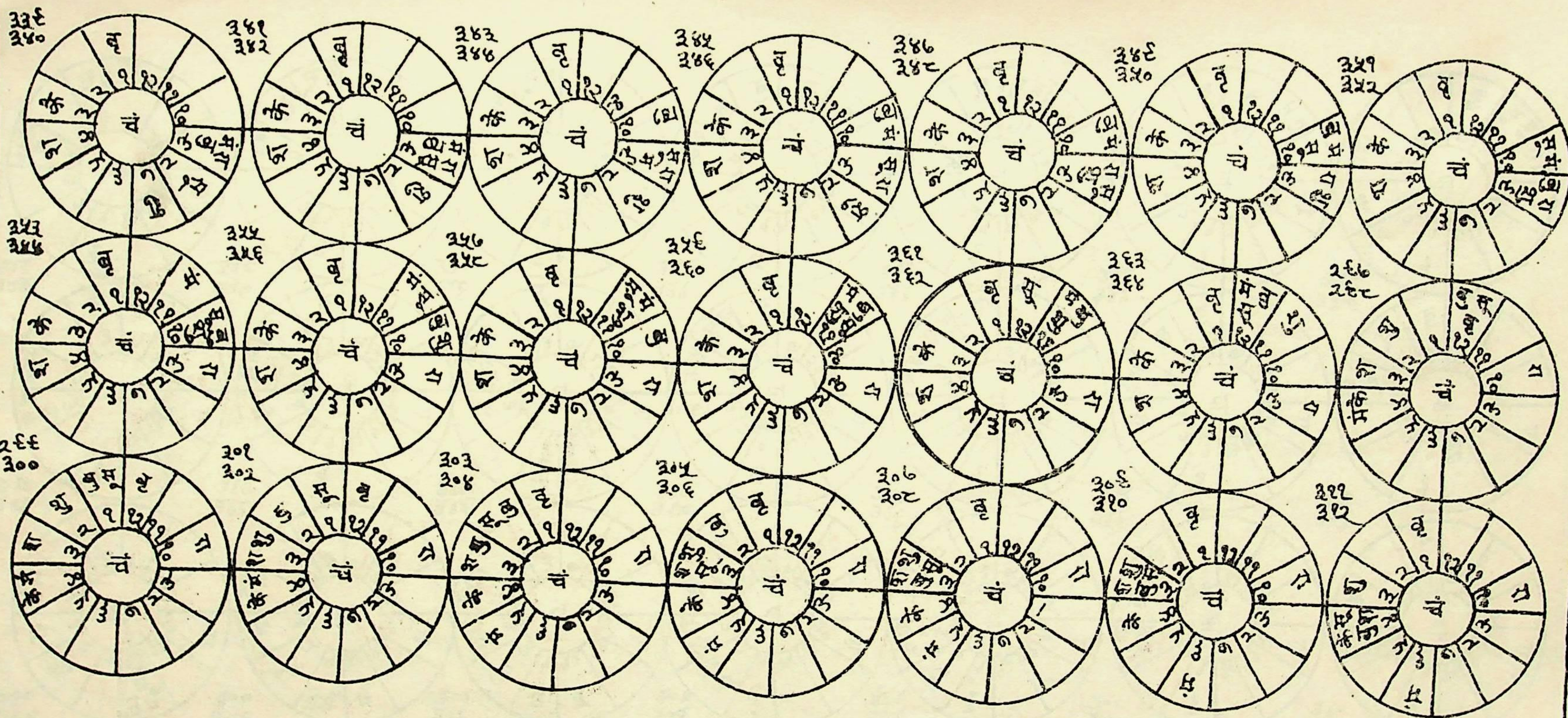
कुं० ख०
मू० सं०
२६



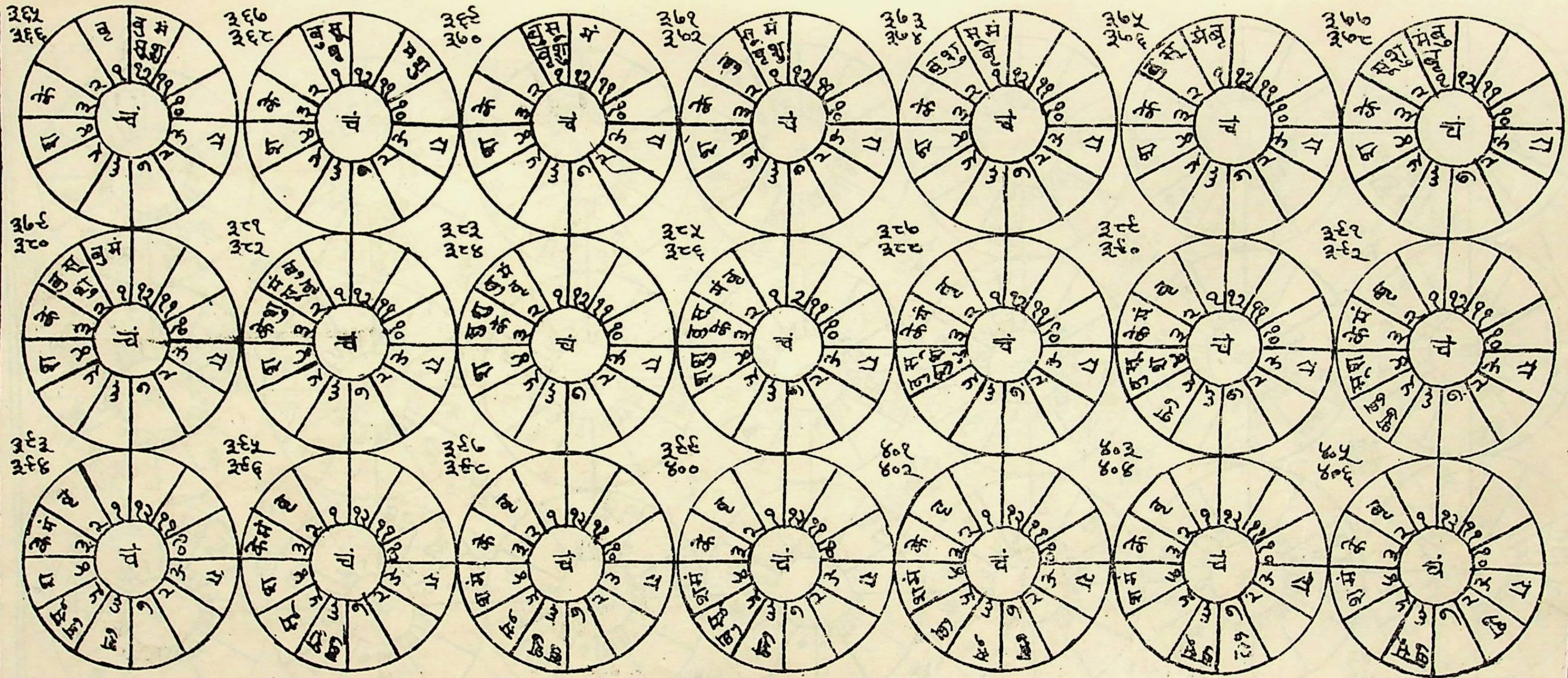
कुं० ख०
मू० सं०
२७


२९७
२९८
२९९
३००
३०१
३०२
३०३
३०४
३०५
३०६
३०७
३०८
३०९
३१०
३११
३१२
३१३
३१४
३१५
३१६
३१७
३१८
३१९
३२०
३२१
३२२
३२३
३२४
३२५
३२६
३२७
३२८
३२९
३३०
३३१
३३२
३३३
३३४
३३५
३३६
३३७
३३८

कुं०ख०
मु०सं०
२८

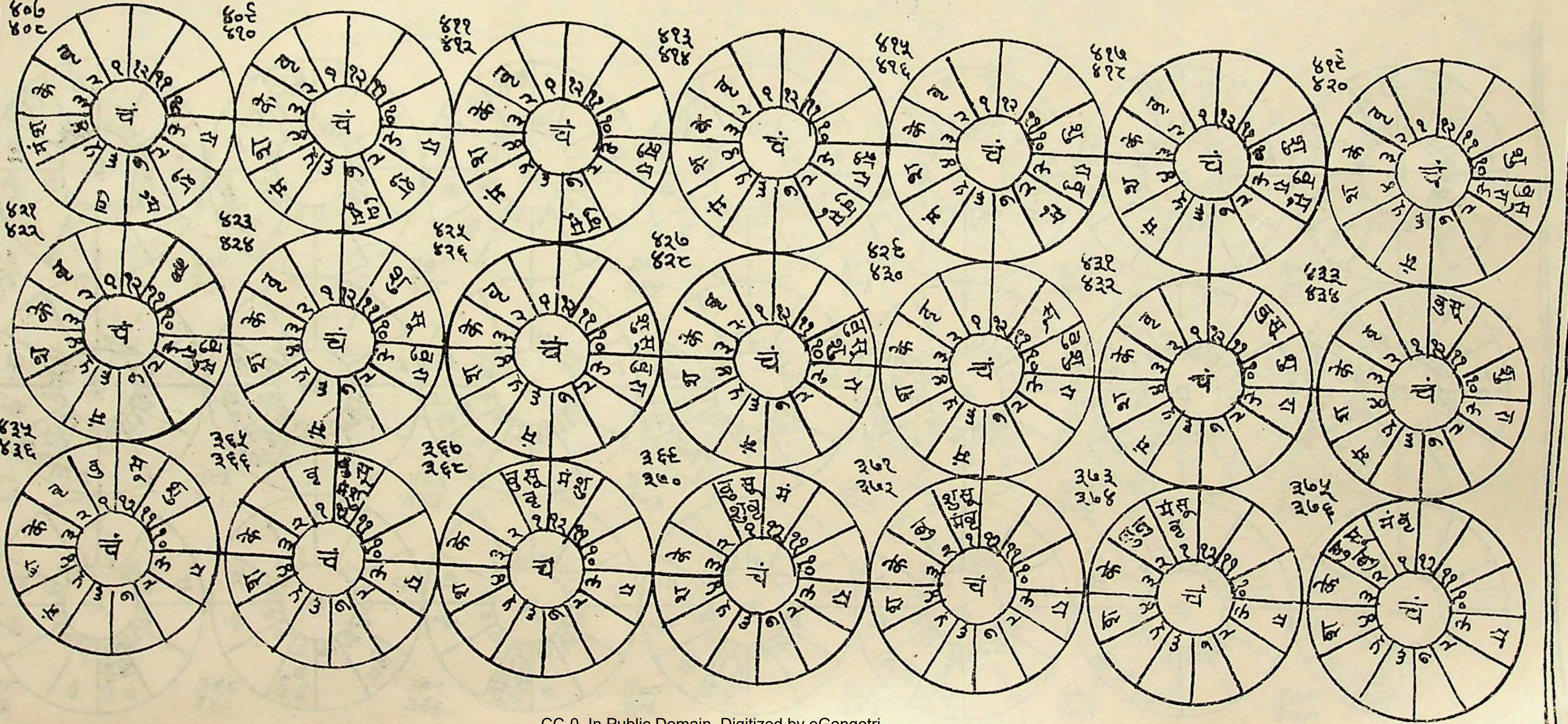


कुं०ख०
मू०सं०
२९

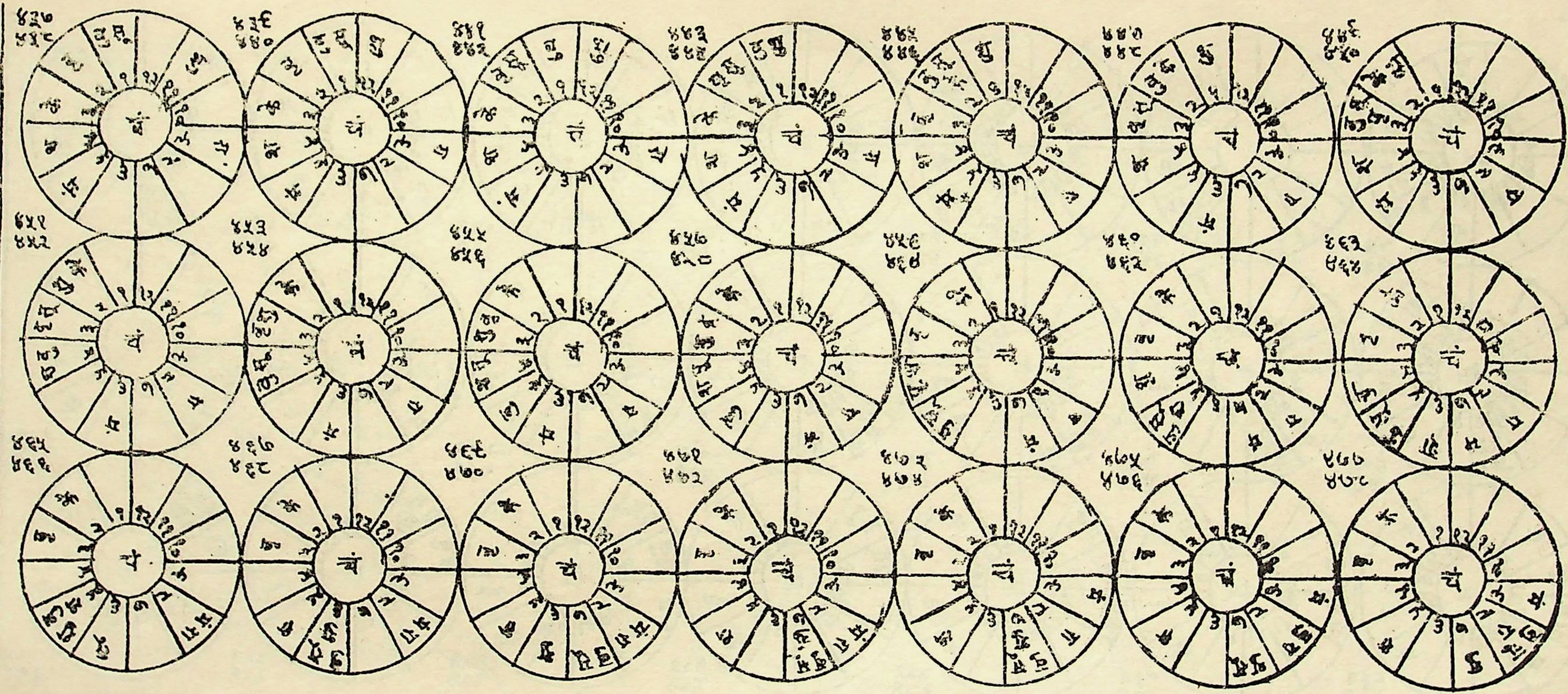


३६५
३६६
३६७
३६८
३६९
३७०
३७१
३७२
३७३
३७४
३७५
३७६
३७७
३७८
३७९
३८०
३८१
३८२
३८३
३८४
३८५
३८६
३८७
३८८
३८९
३९०
३९१
३९२
३९३
३९४
३९५
३९६
३९७
३९८
३९९
४००
४०१
४०२
४०३
४०४
४०५
४०६

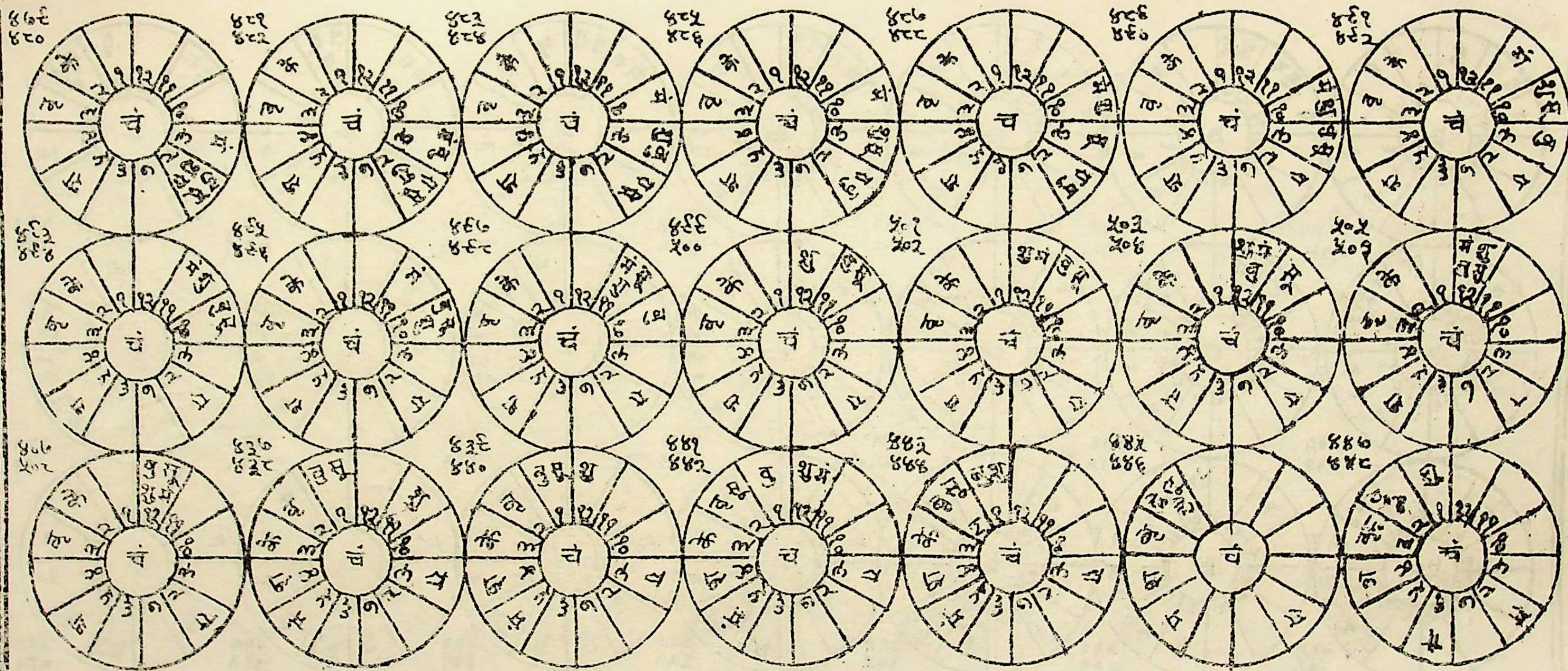
कुं० सं०
मू० सं०
३०

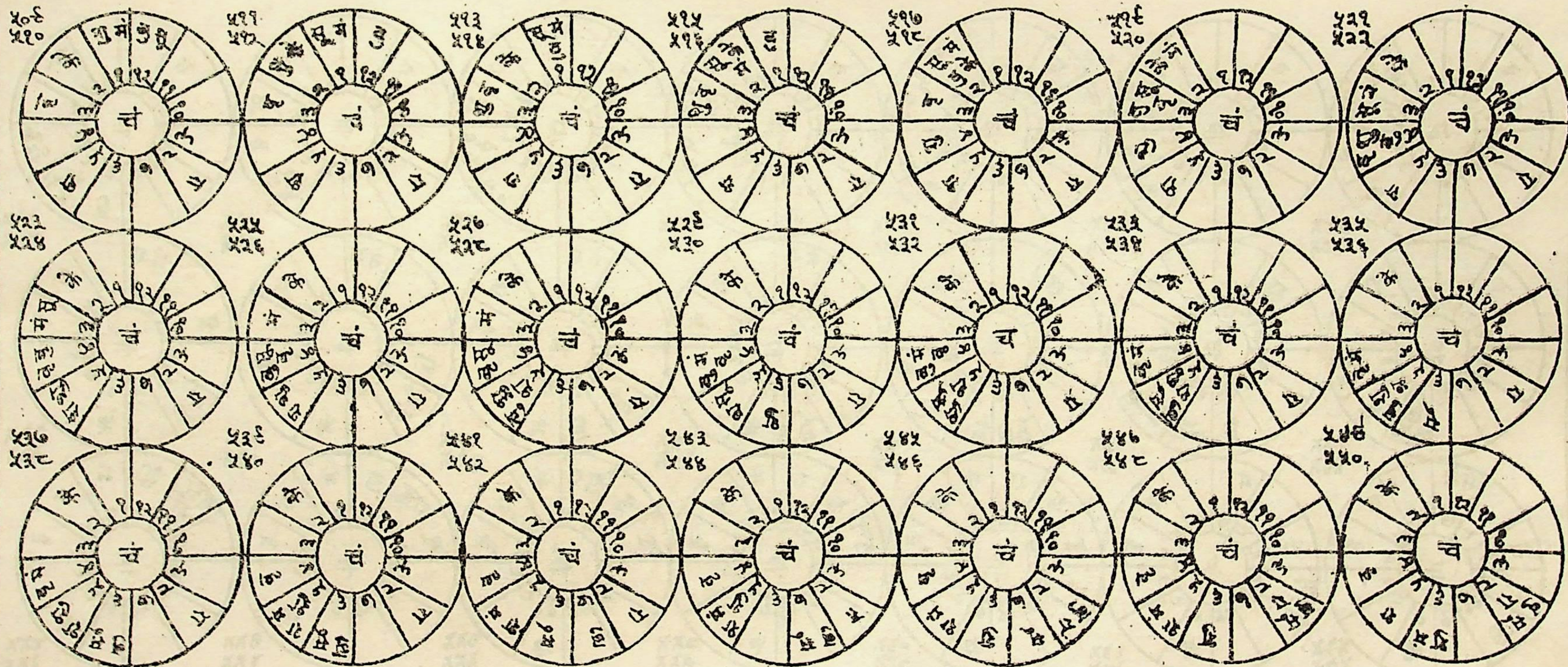


४०७
४०८
४०९
४१०
४११
४१२
४१३
४१४
४१५
४१६
४१७
४१८
४१९
४२०
४२१
४२२
४२३
४२४
४२५
४२६
४२७
४२८
४२९
४३०
४३१
४३२
४३३
४३४
४३५
४३६

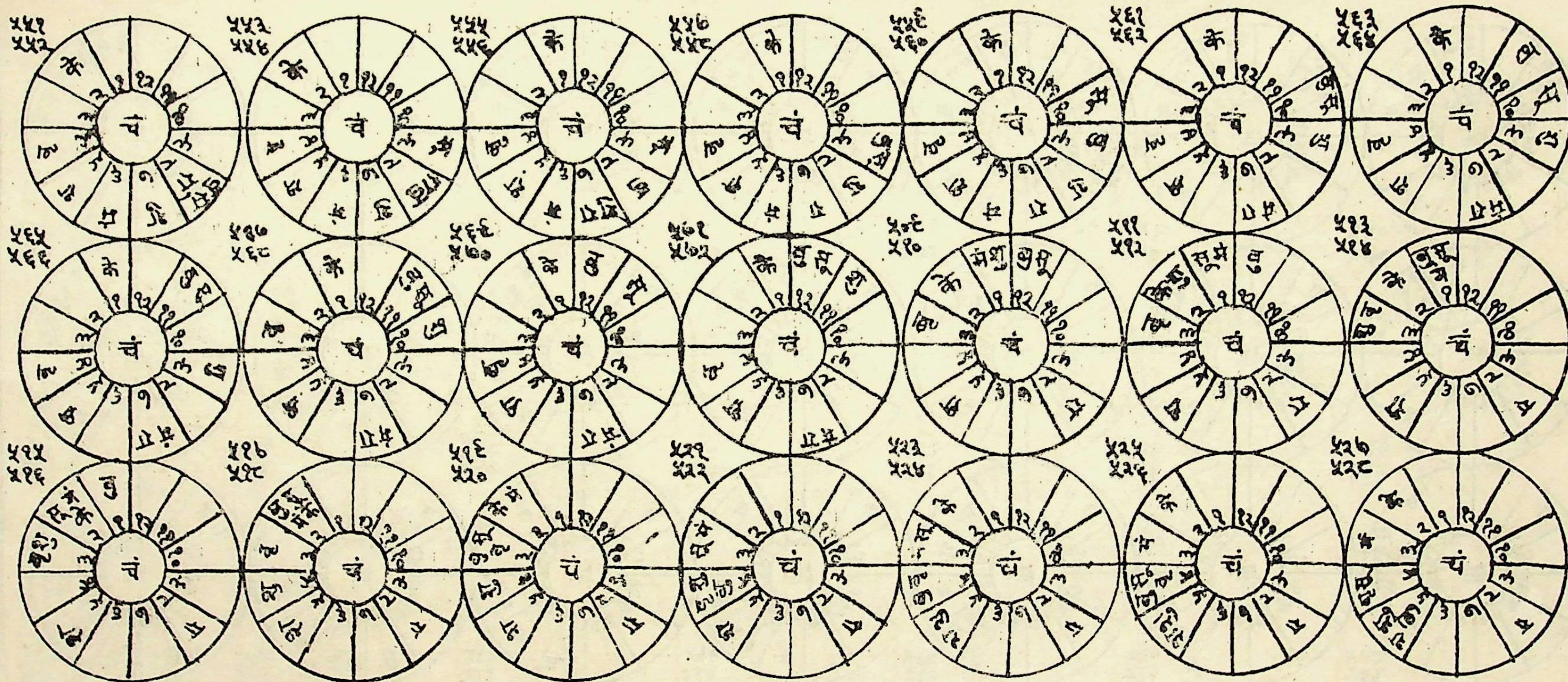


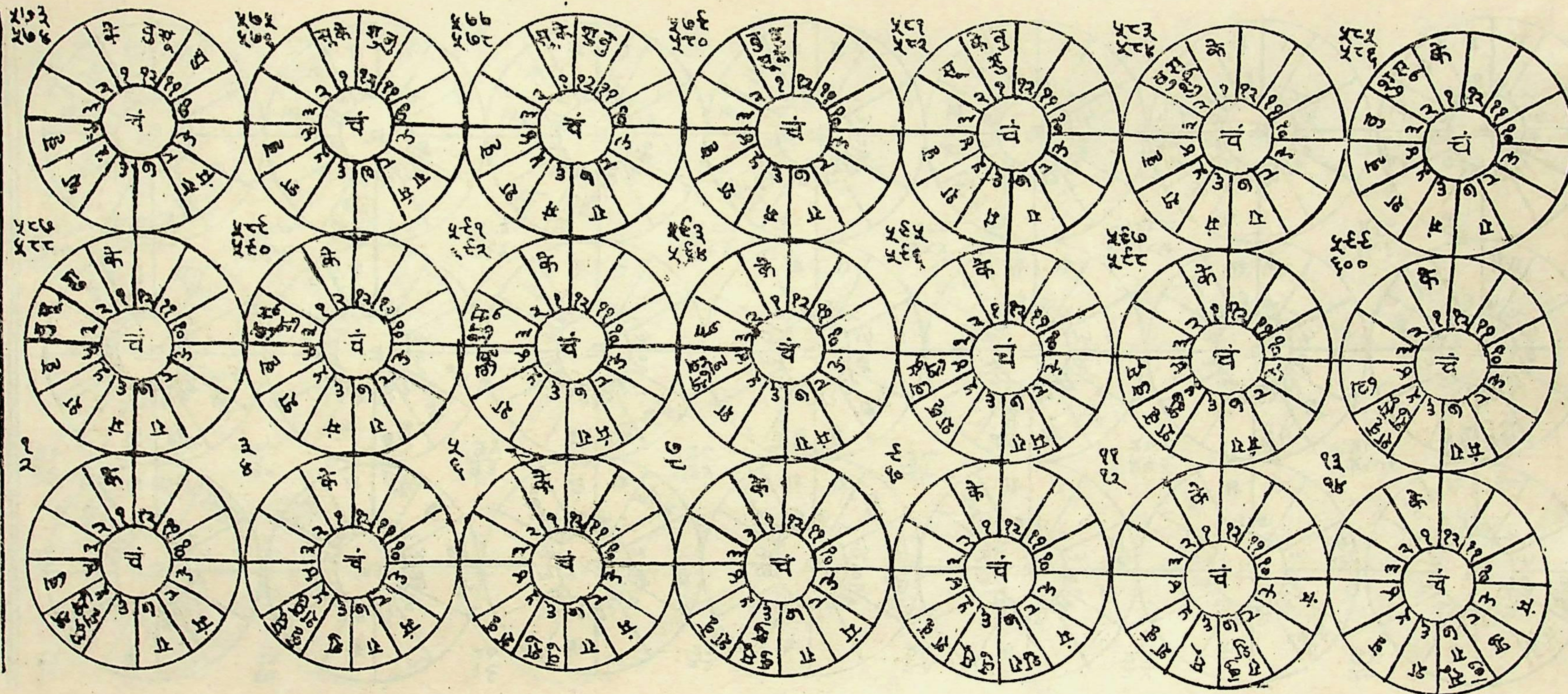
कुं० सं०
मू० सं०
३२



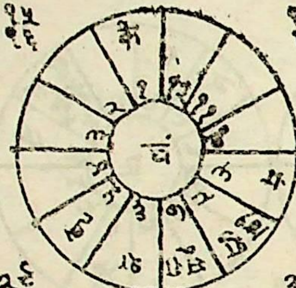
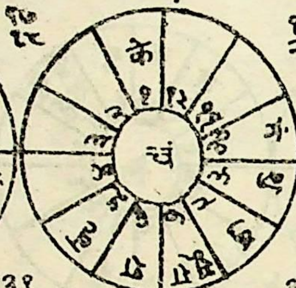
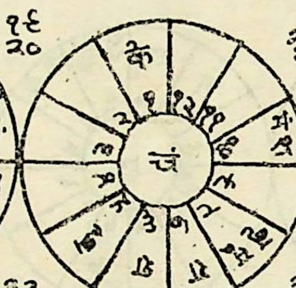
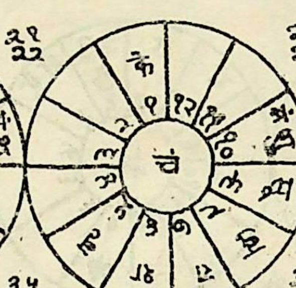
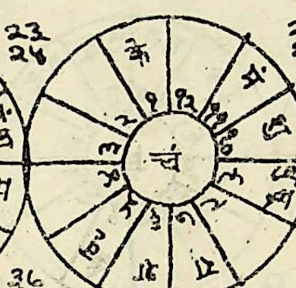
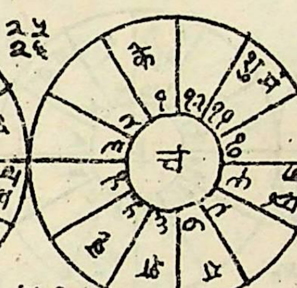
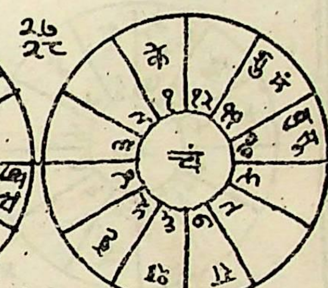
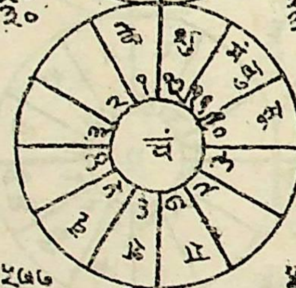
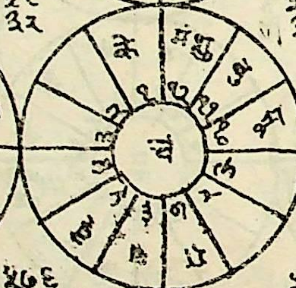
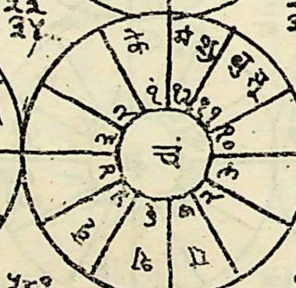
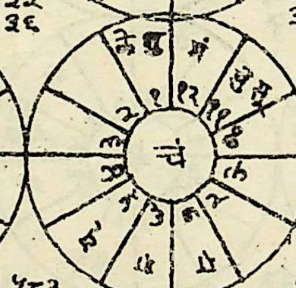
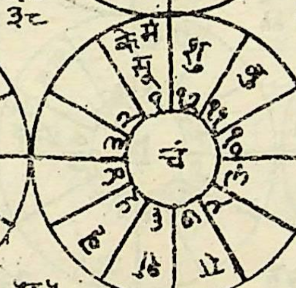
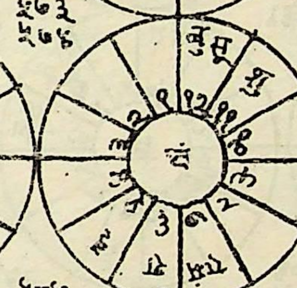
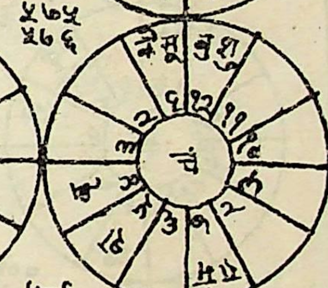
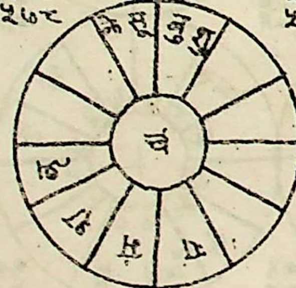
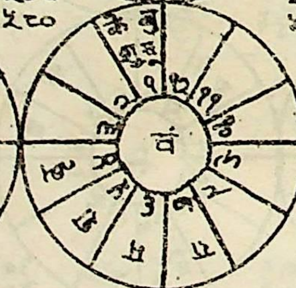
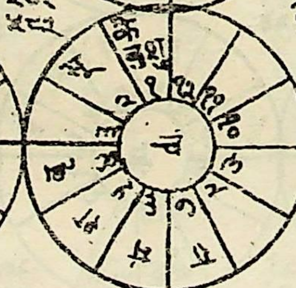
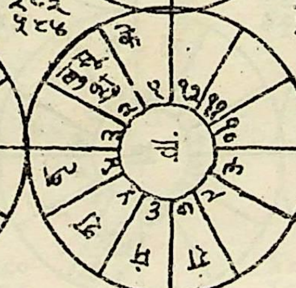
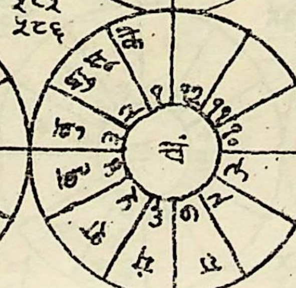
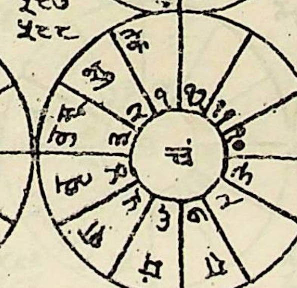
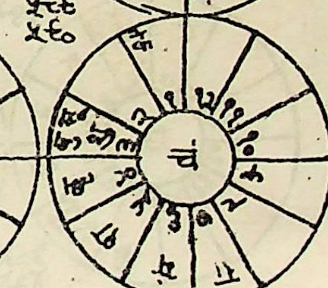


कुं० प्र०
मू० सं०
३५

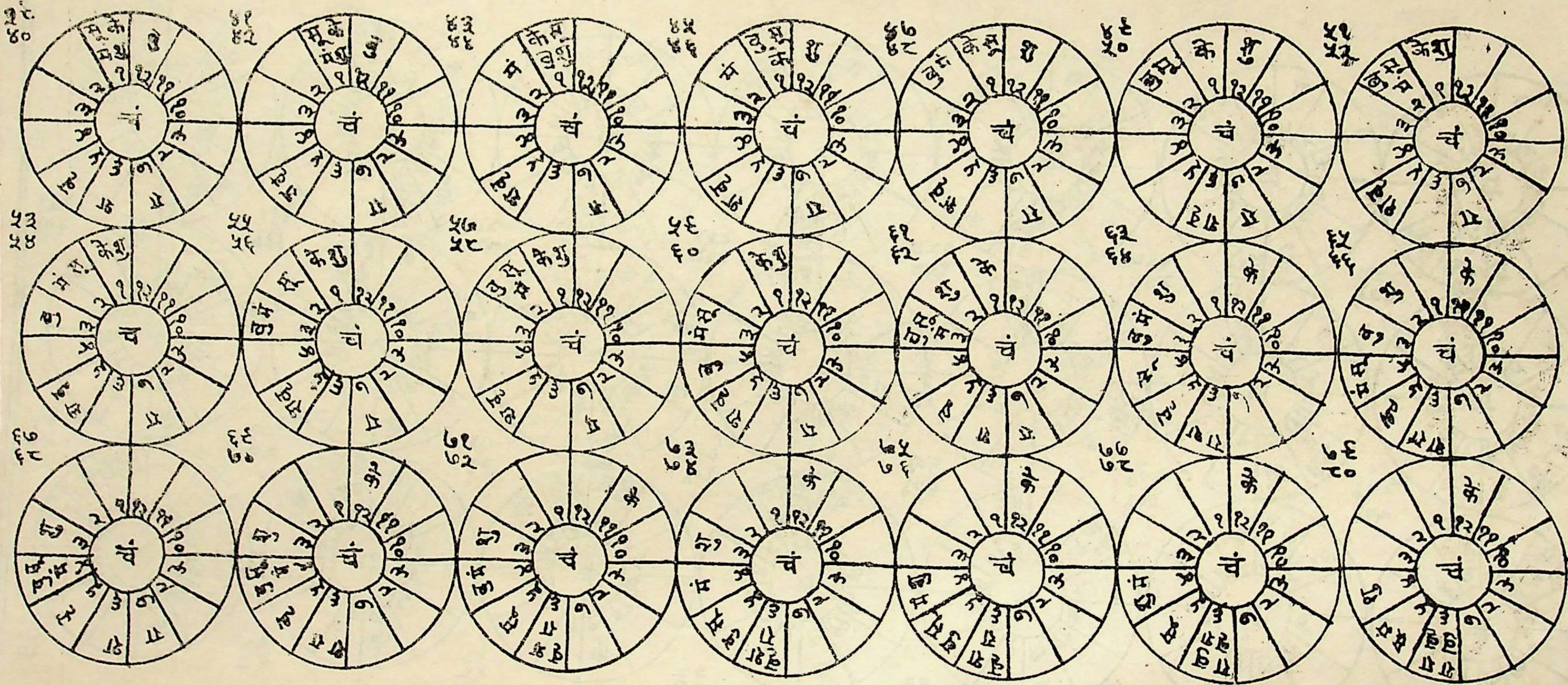




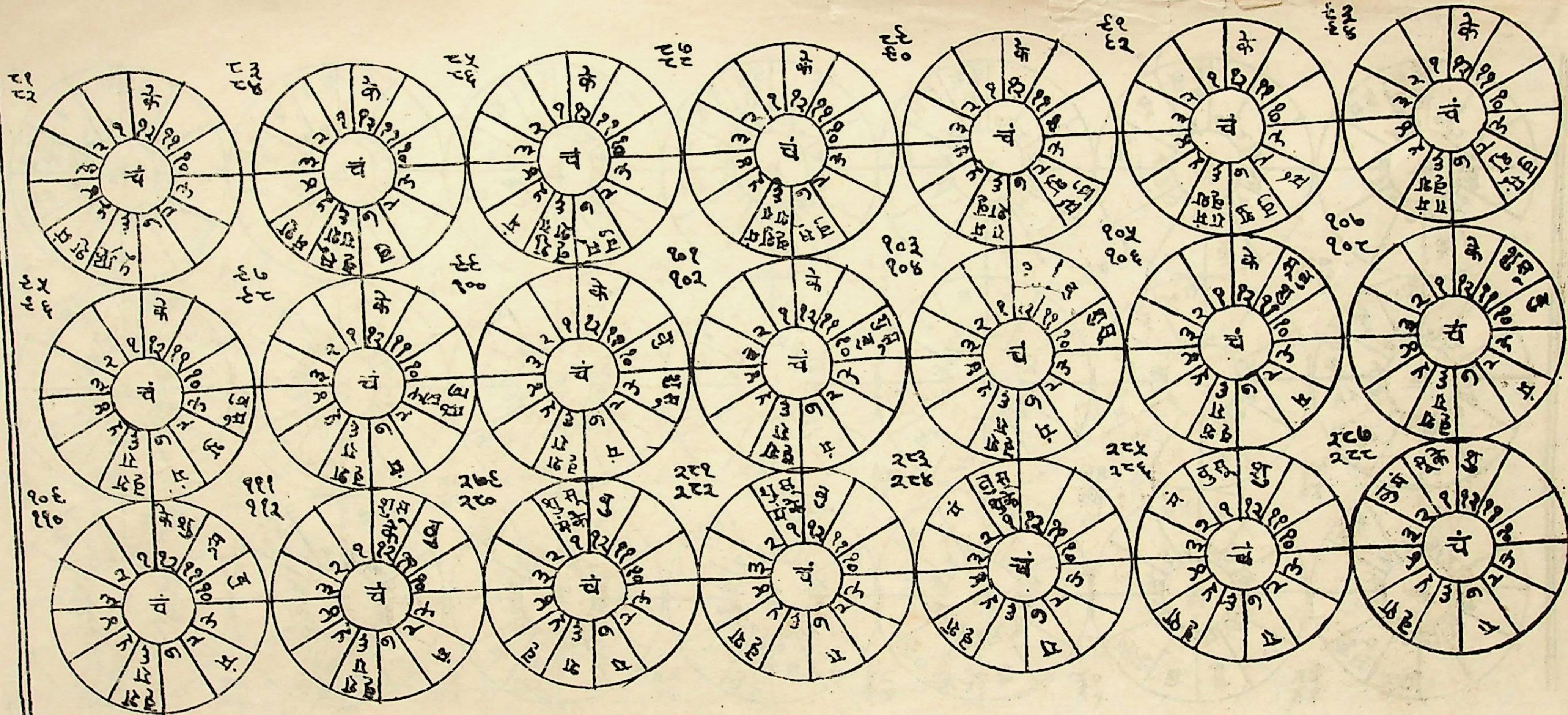
कुं० लं०
मं० सि०
३६

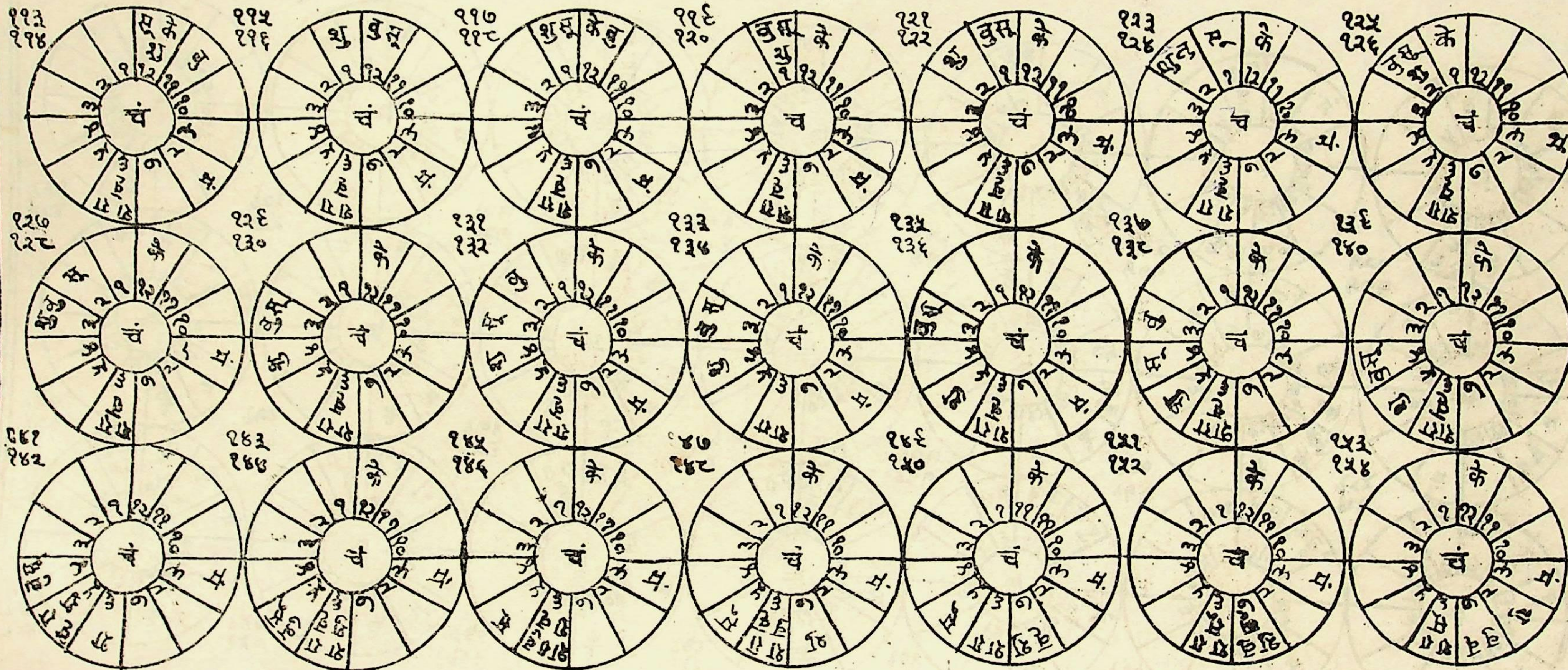
कुं० ख०
मू० स०
३८



कु० ख०
मू० सं०
३८

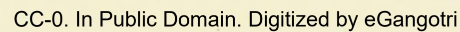


कुं० खं०
मू० सं०
३६

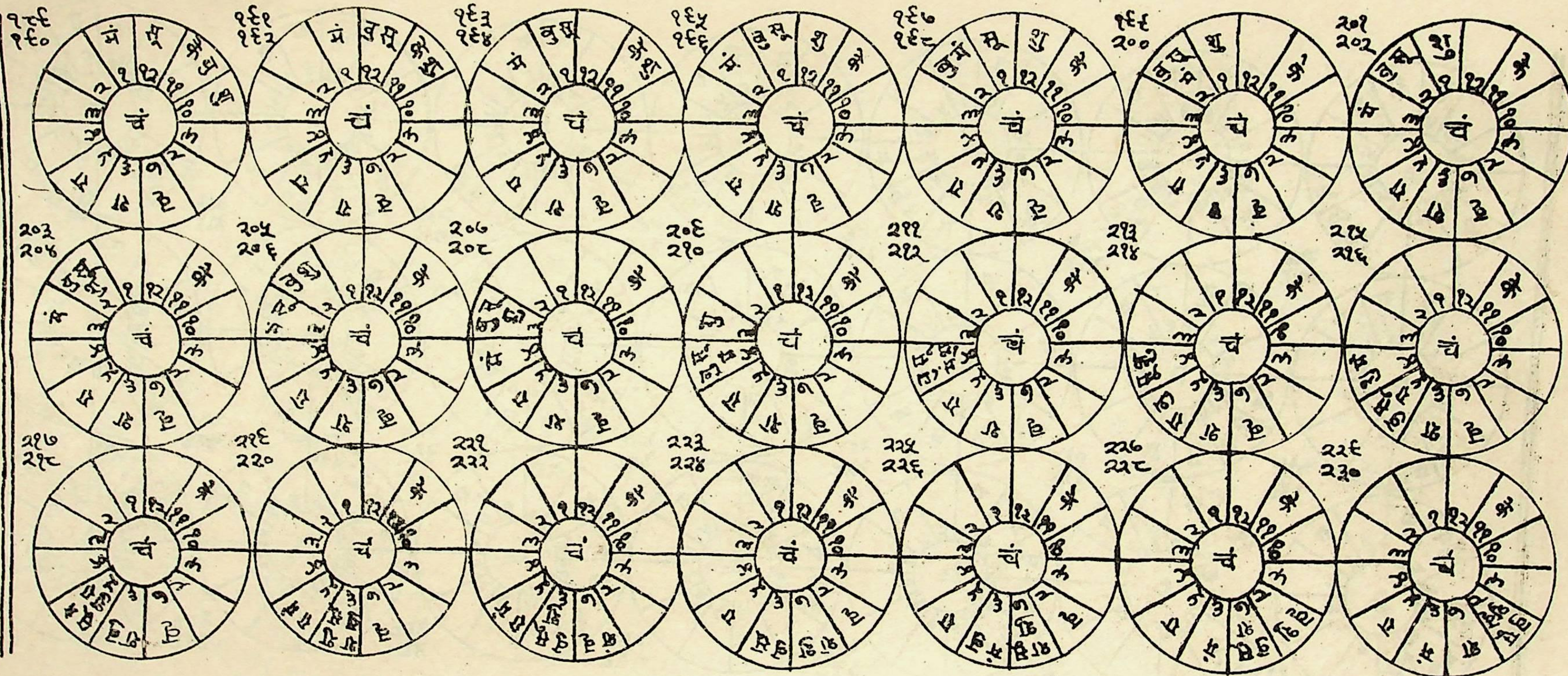


११३ ११४
११५ ११६
११७ ११८
११९ १२०
१२१ १२२
१२३ १२४
१२५ १२६
१२७ १२८
१२९ १३०
१३१ १३२
१३३ १३४
१३५ १३६
१३७ १३८
१३९ १४०
१४१ १४२
१४३ १४४
१४५ १४६
१४७ १४८
१४९ १५०
१५१ १५२
१५३ १५४

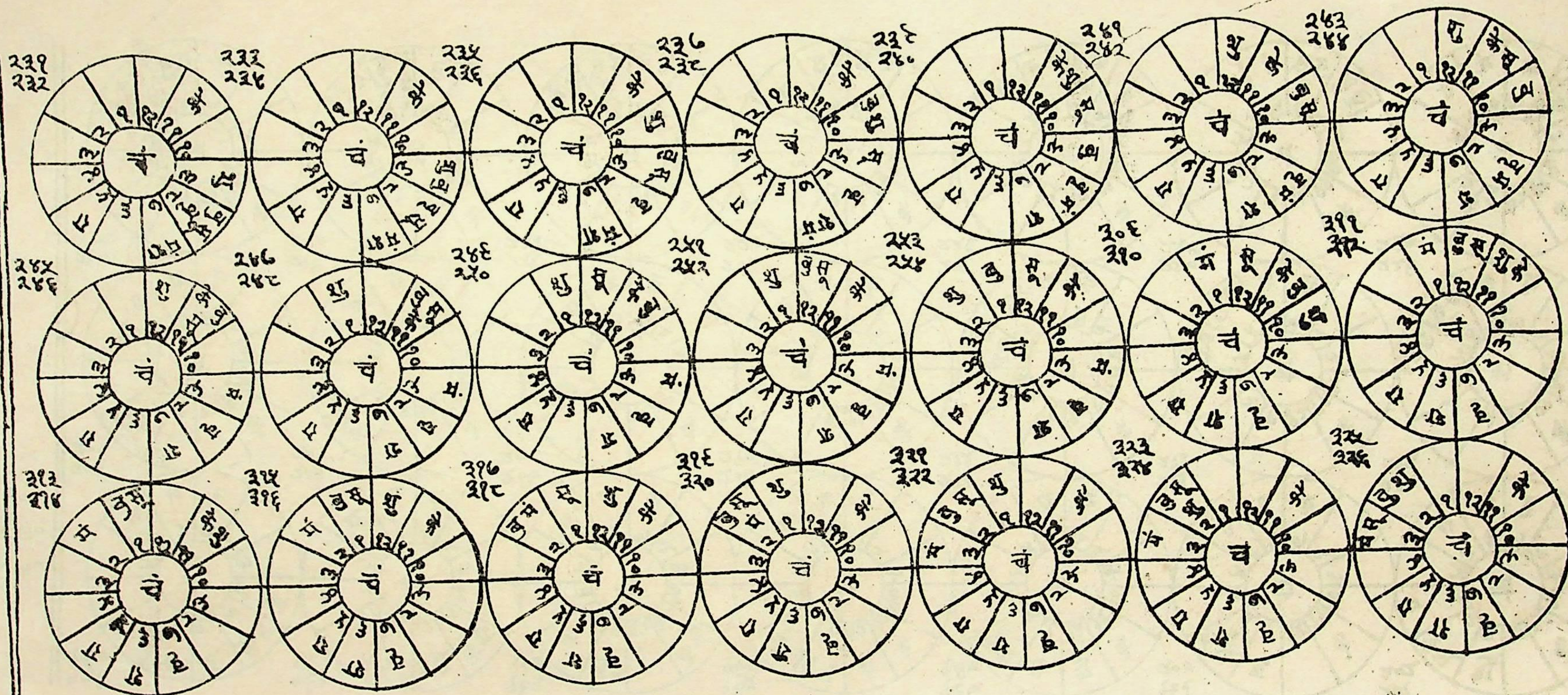
कुं० ख०
मृ० सं०
८०



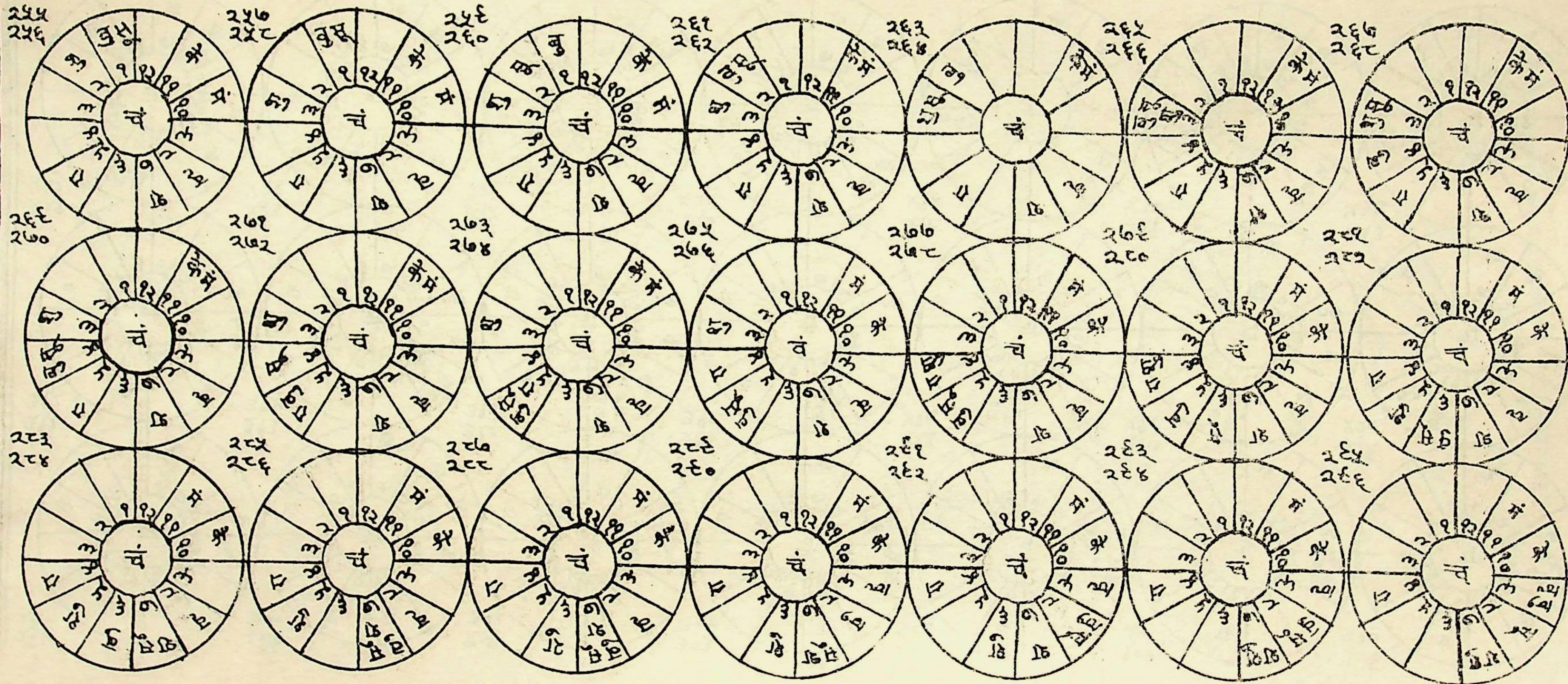
कुं० ख०
मू० सं०
४१


१८९ १९०
१९१ १९२
१९३ १९४
१९५ १९६
१९७ १९८
१९९ २००
२०१ २०२
२०३ २०४
२०५ २०६
२०७ २०८
२०९ २१०
२११ २१२
२१३ २१४
२१५ २१६
२१७ २१८
२१९ २२०
२२१ २२२
२२३ २२४
२२५ २२६
२२७ २२८
२२९ २३०

कुं० सं०
मं० सं०
५२



कुं०सं०
मू०सं०
४३

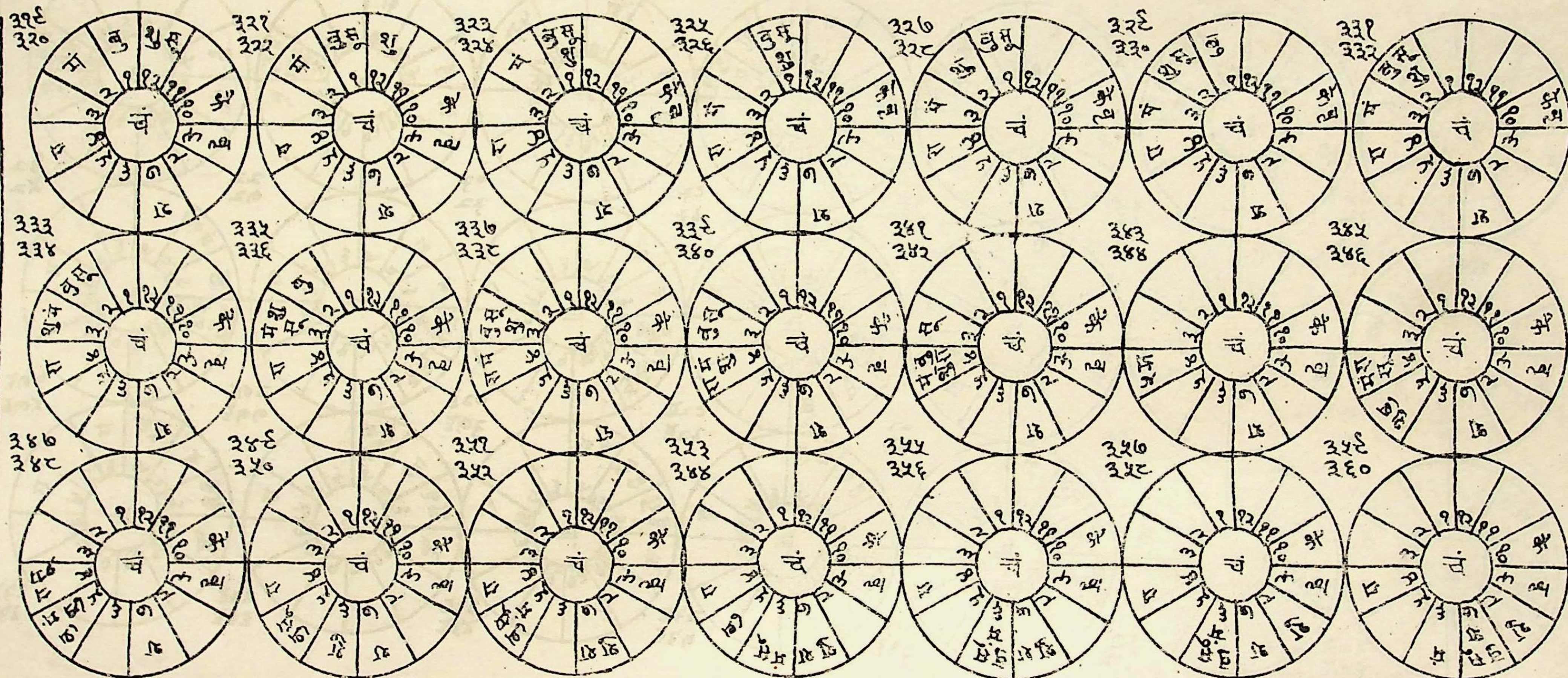

२५५ २५६
२५७ २५८
२५९ २६०
२६१ २६२
२६३ २६४
२६५ २६६
२६७ २६८
२६९ २७०
२७१ २७२
२७३ २७४
२७५ २७६
२७७ २७८
२७९ २८०
२८१ २८२
२८३ २८४
२८५ २८६
२८७ २८८
२८९ २९०
२९१ २९२
२९३ २९४
२९५ २९६

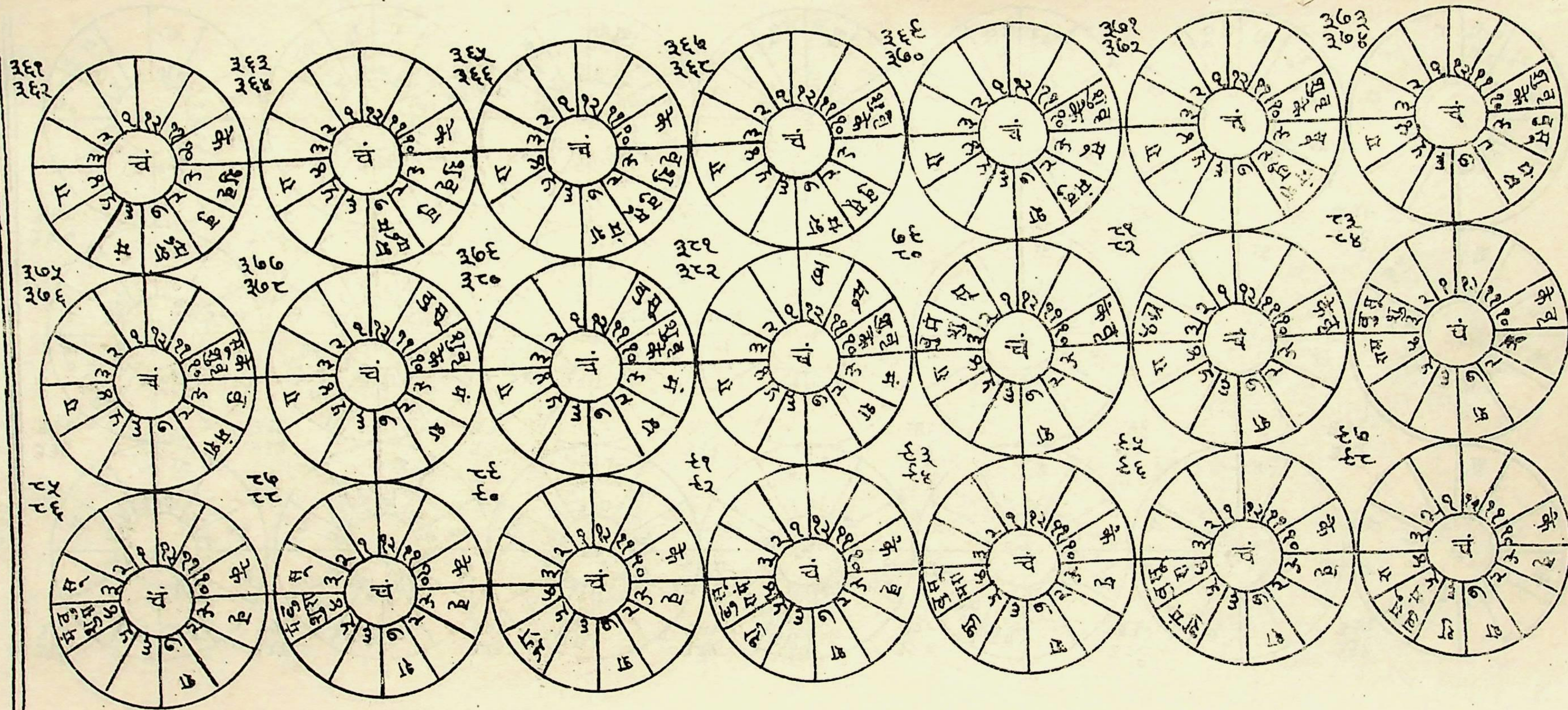
कुं० लं०
मृ० सं०
४४

२९७ २९८ | २९९ ३०० | ३०१ ३०२ | ३०३ ३०४ | ३०५ ३०६ | ३०७ ३०८ | ३०९ ३१०

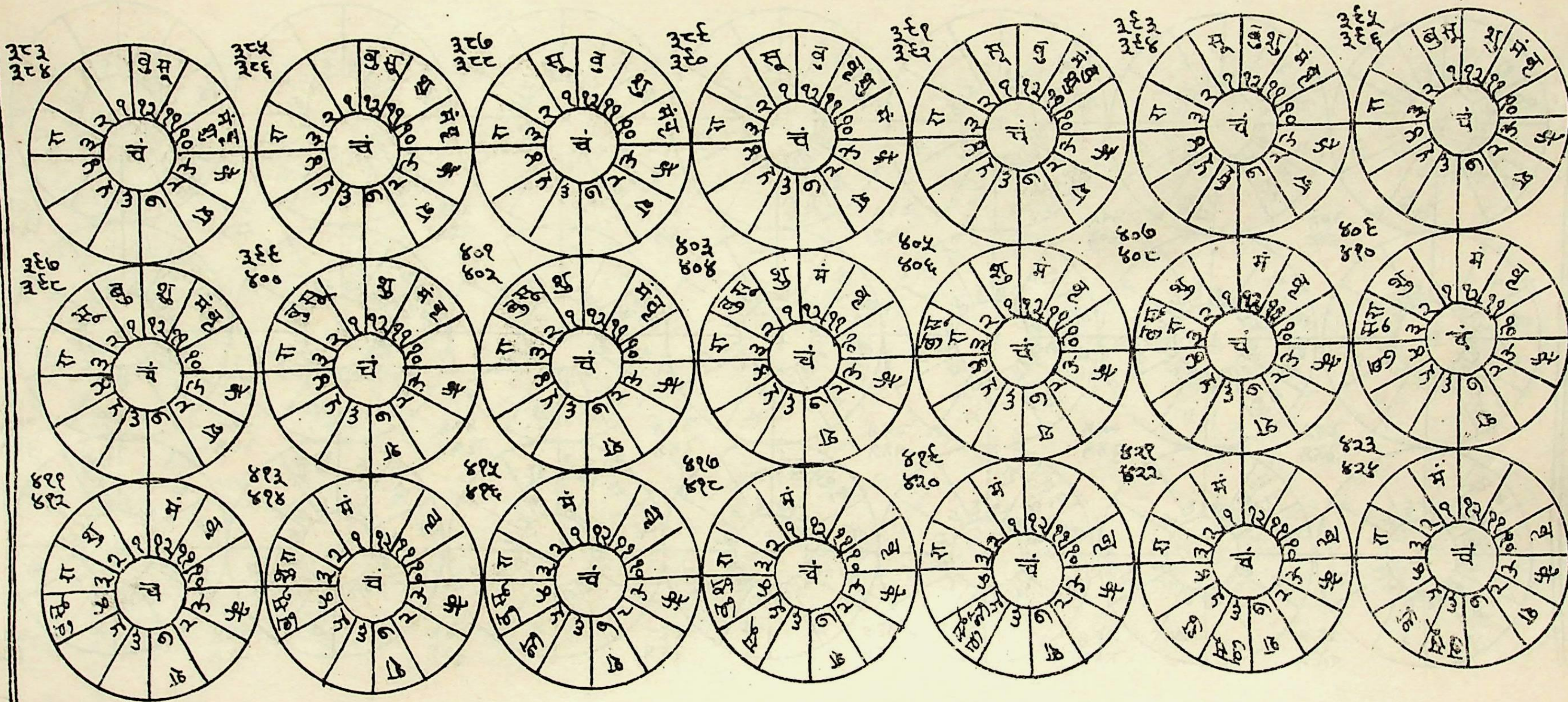
३११ ३१२ | ३१३ ३१४ | ३१५ ३१६ | ३१७ ३१८ | ३१९ ३२० | ३२१ ३२२ | ३२३ ३२४

३२५ ३२६ | ३२७ ३२८ | ३२९ ३३० | ३३१ ३३२ | ३३३ ३३४ | ३३५ ३३६ | ३३७ ३३८

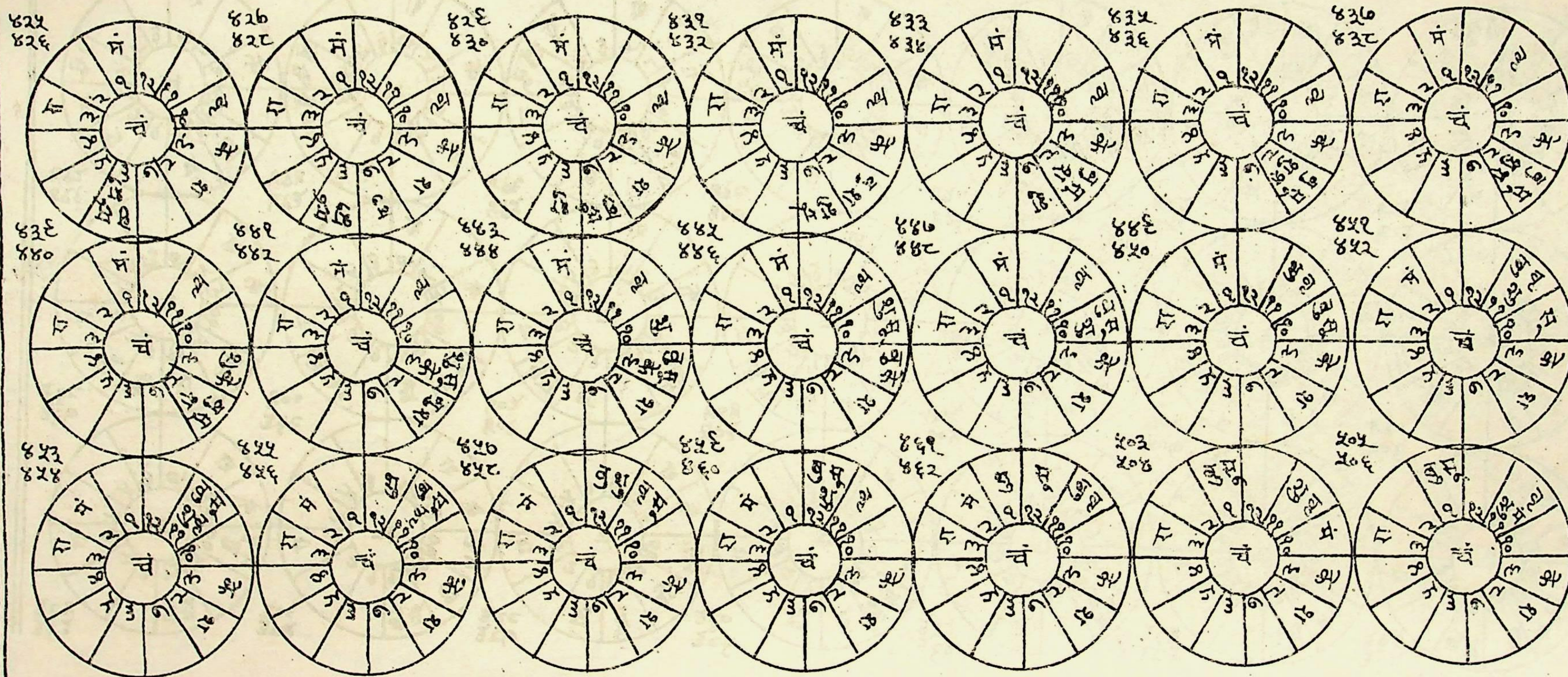

३१९
३२०
३२१
३२२
३२३
३२४
३२५
३२६
३२७
३२८
३२९
३३०
३३१
३३२
३३३
३३४
३३५
३३६
३३७
३३८
३३९
३४०
३४१
३४२
३४३
३४४
३४५
३४६
३४७
३४८
३४९
३५०
३५१
३५२
३५३
३५४
३५५
३५६
३५७
३५८
३५९
३६०



कुं०च०
मू०स०



कुं०स्व०
मू०सं०
४८



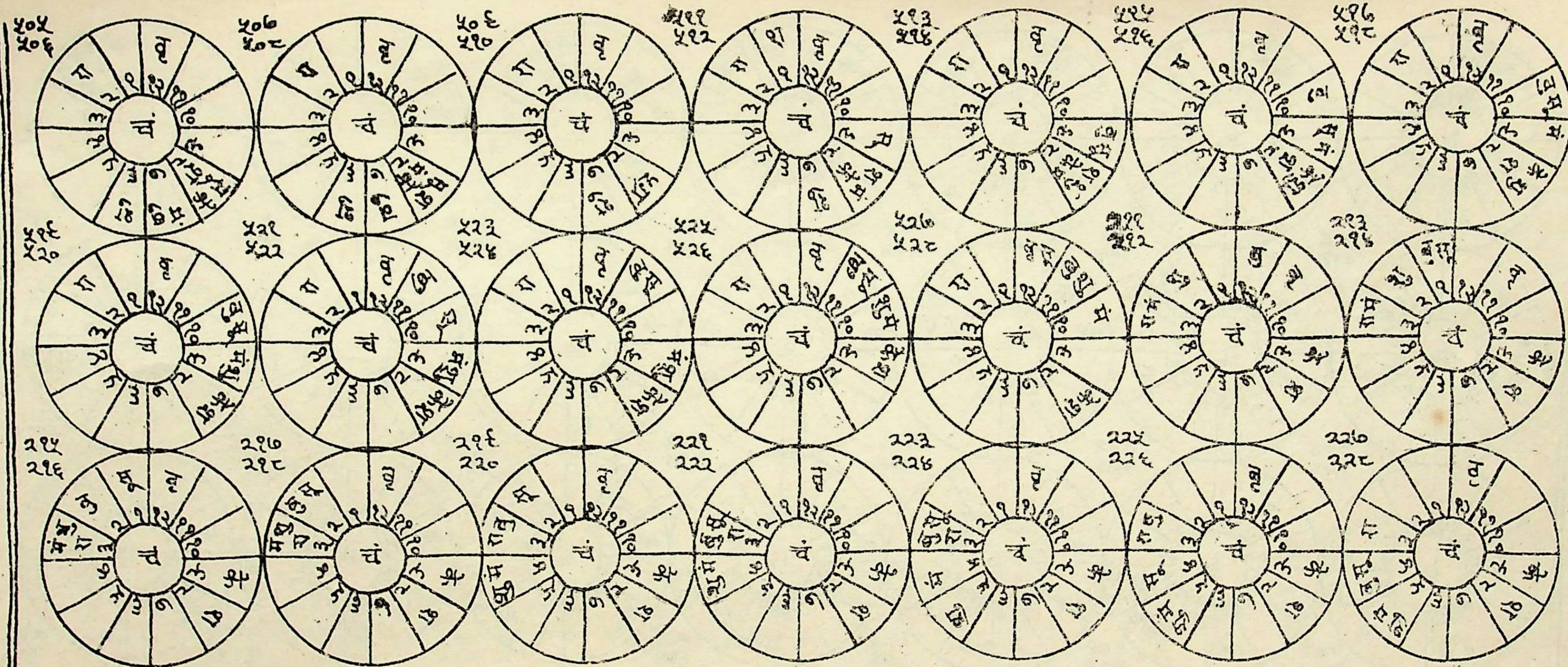
कुं० स्व०
मु० स०
४६

४६३ ४६४ | ४६५ ४६६ | ४६७ ४६८ | ४६९ ४७० | ४७१ ४७२ | ४७३ ४७४ | ४७५ ४७६

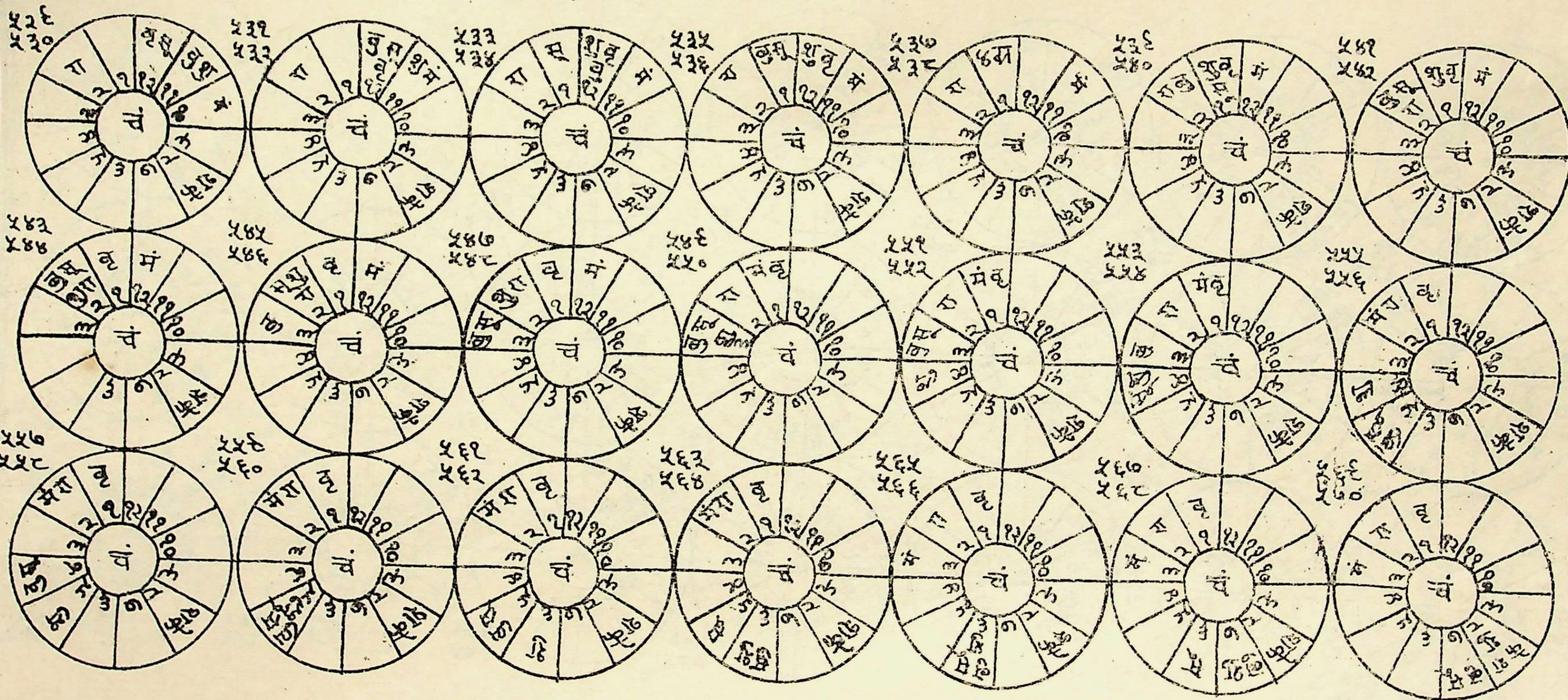
४७७ ४७८ | ४७९ ४८० | ४८१ ४८२ | ४८३ ४८४ | ४८५ ४८६ | ४८७ ४८८ | ४८९ ४९०

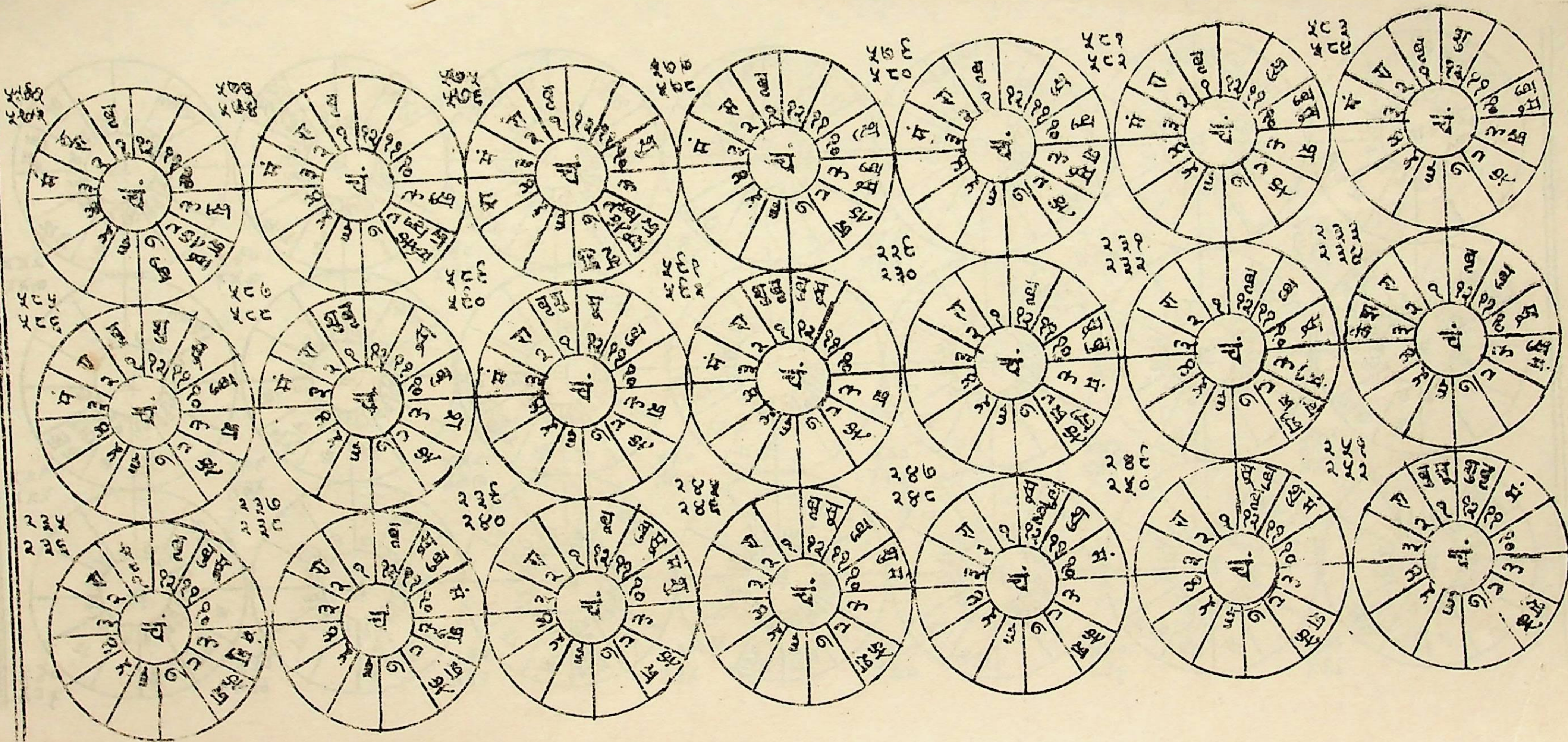
४९१ ४९२ | ४९३ ४९४ | ४९५ ४९६ | ४९७ ४९८ | ४९९ ५०० | ५०१ ५०२ | ५०३ ५०४

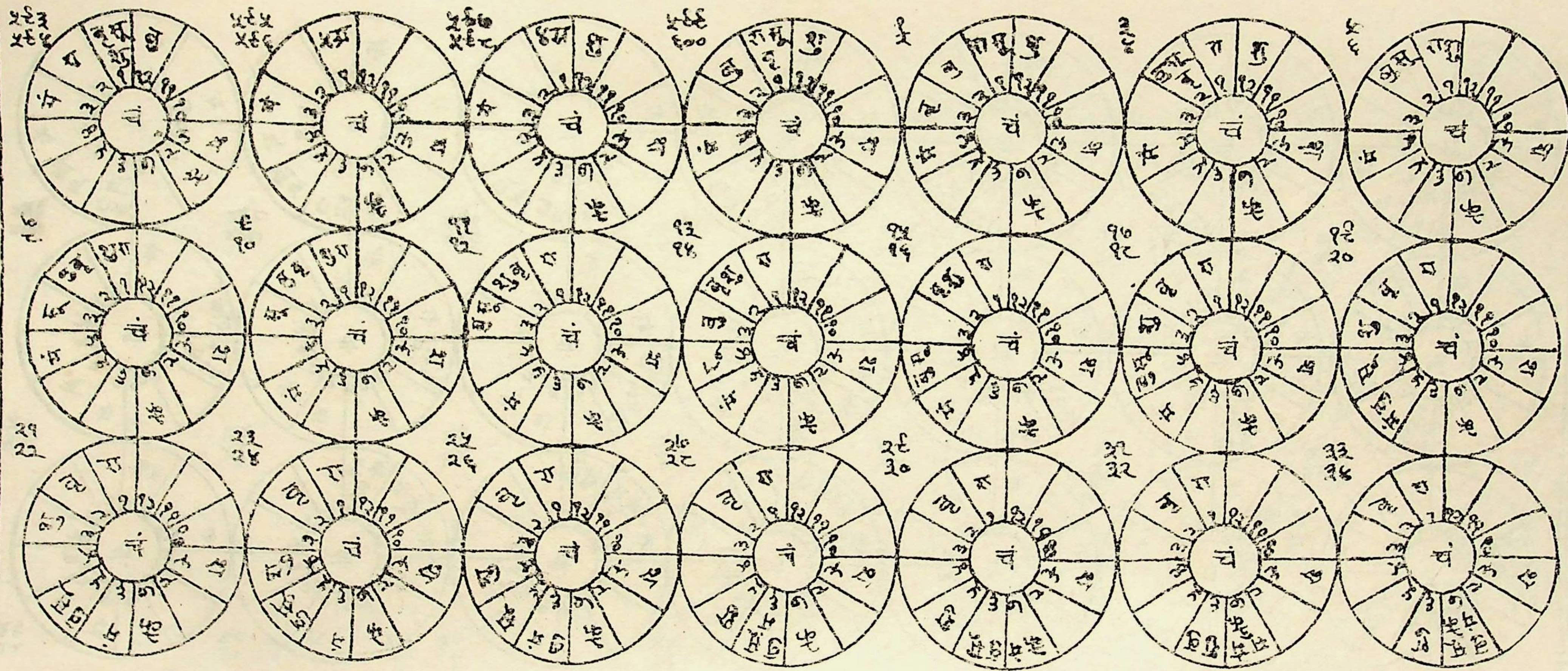
कुं० ख०
पृ० सं०
७

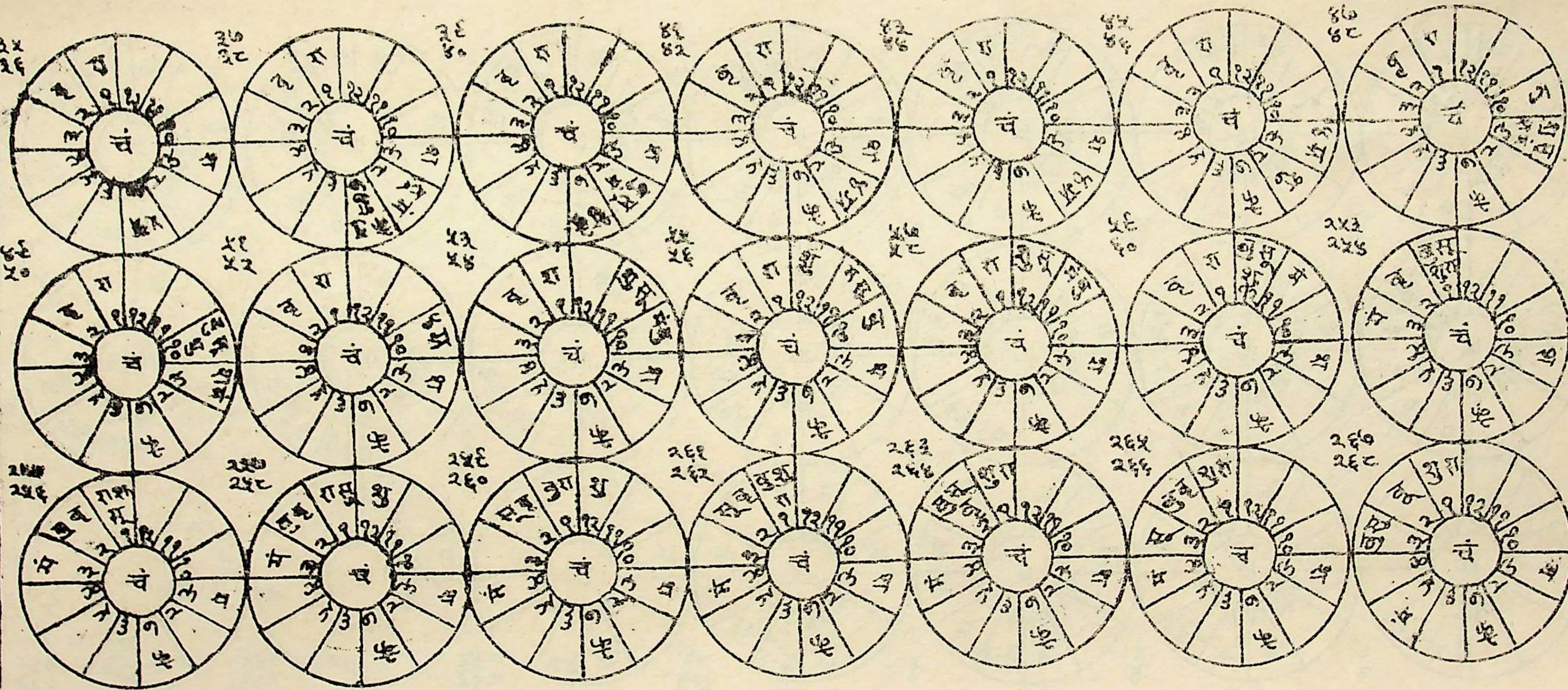


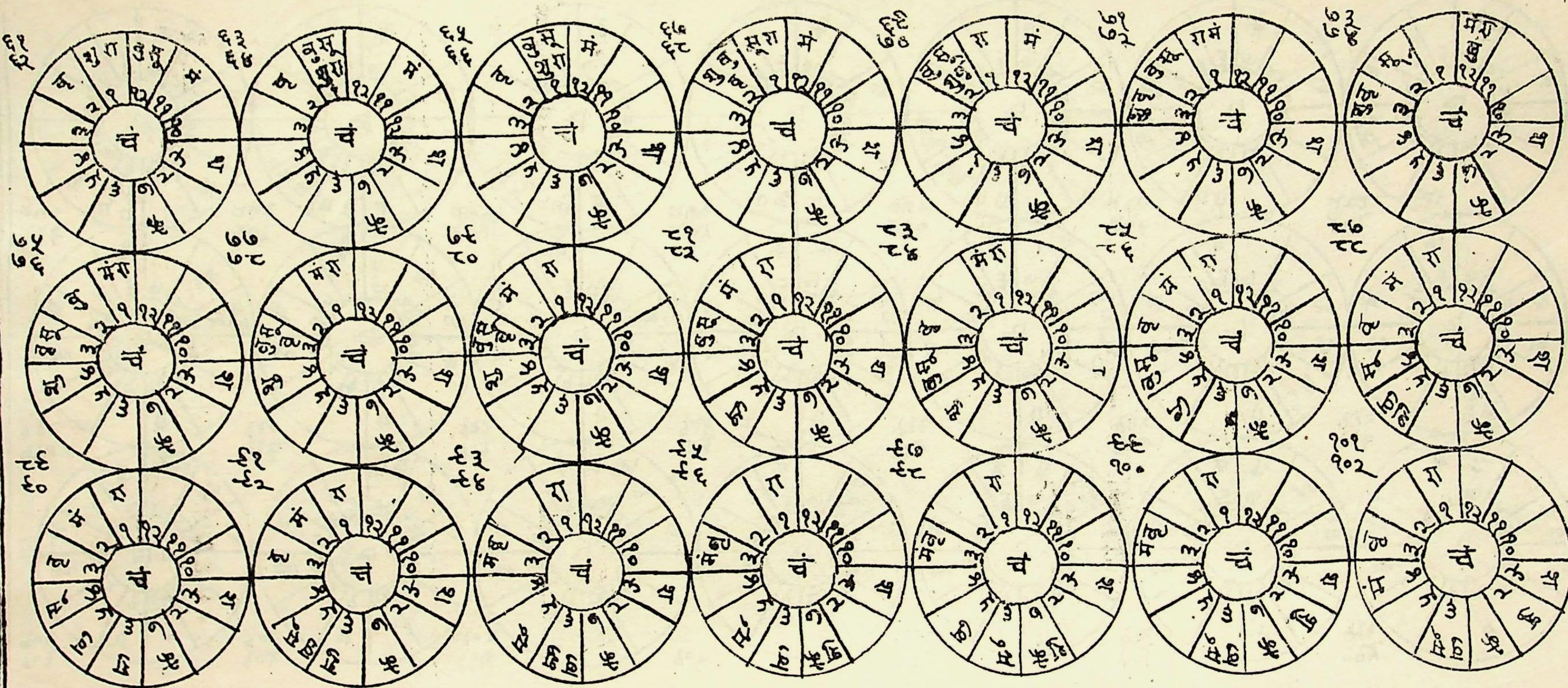
कुं० ख०
मू० स०
५१



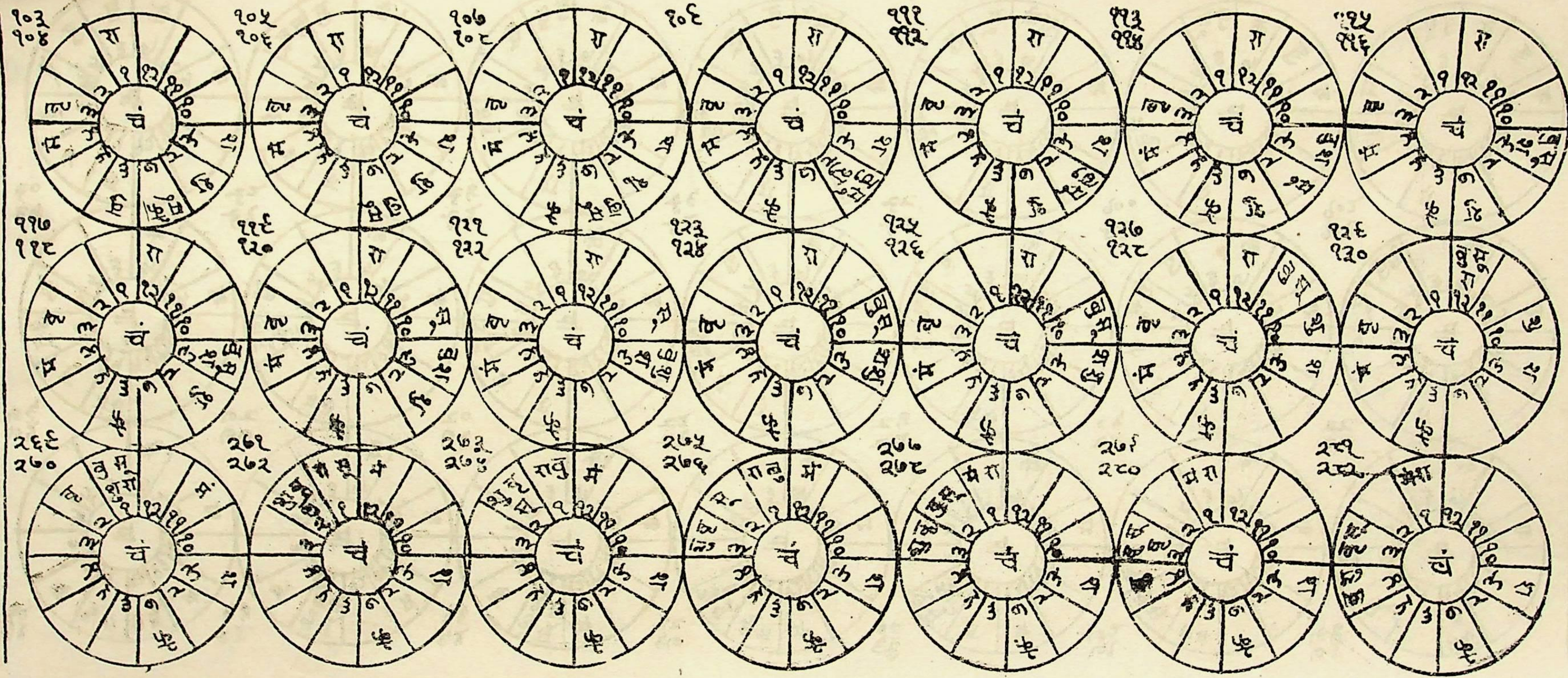




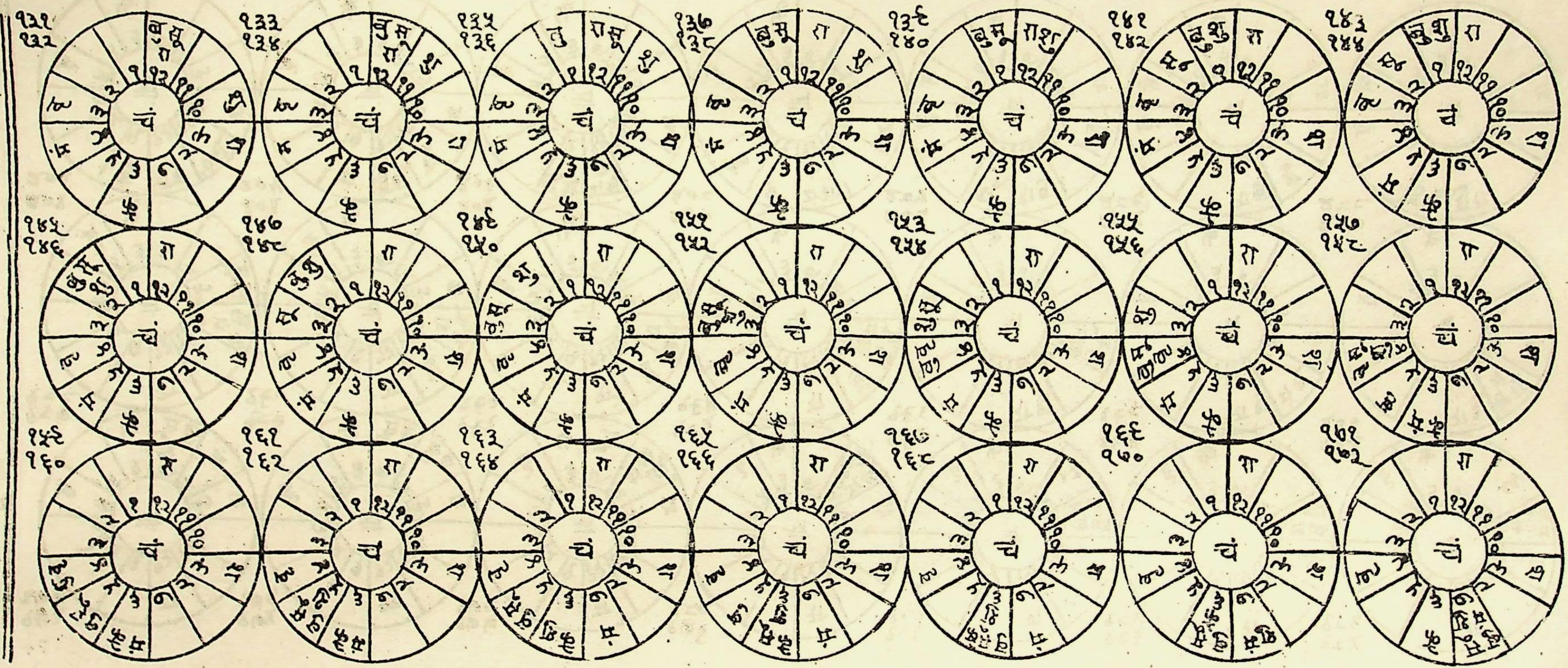




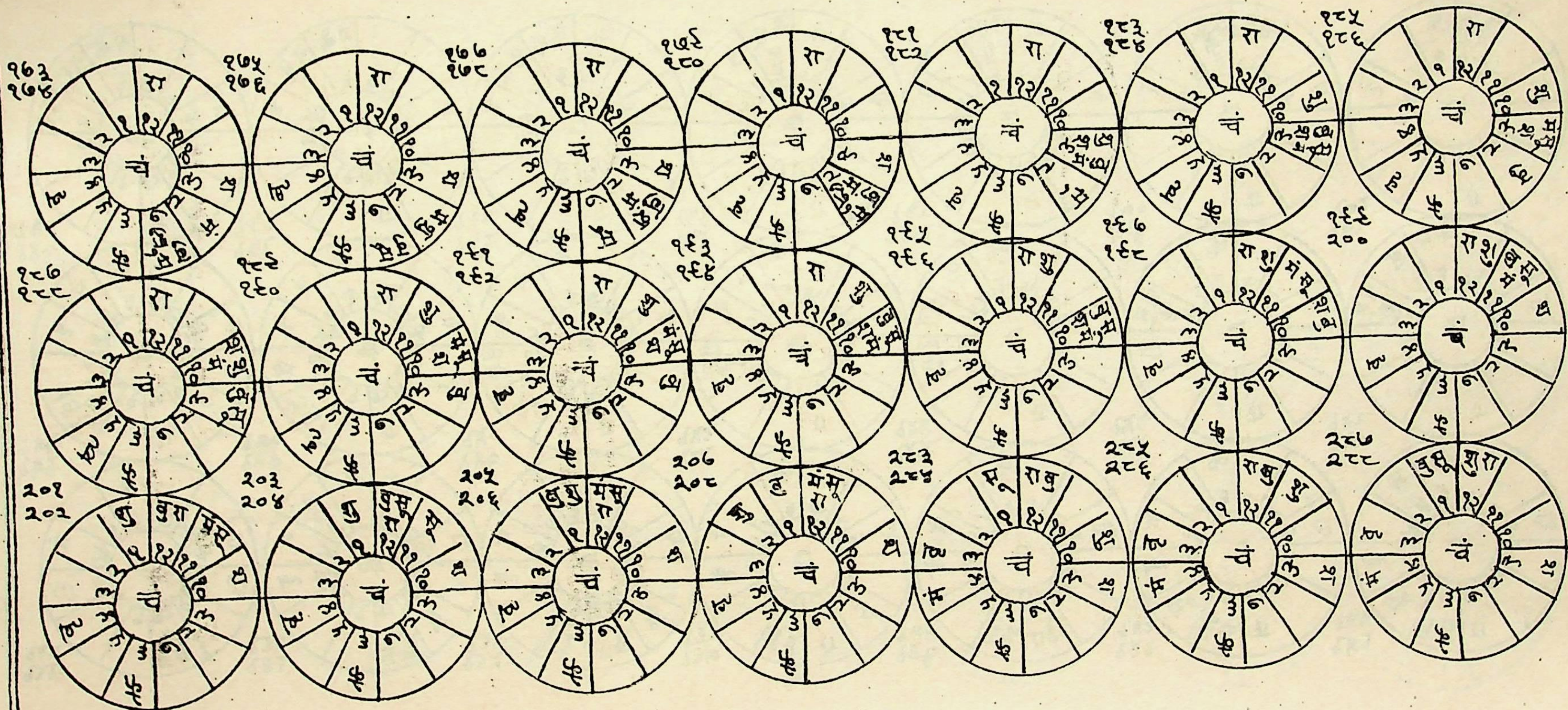
कुं० ख०
मू० सं०
५६



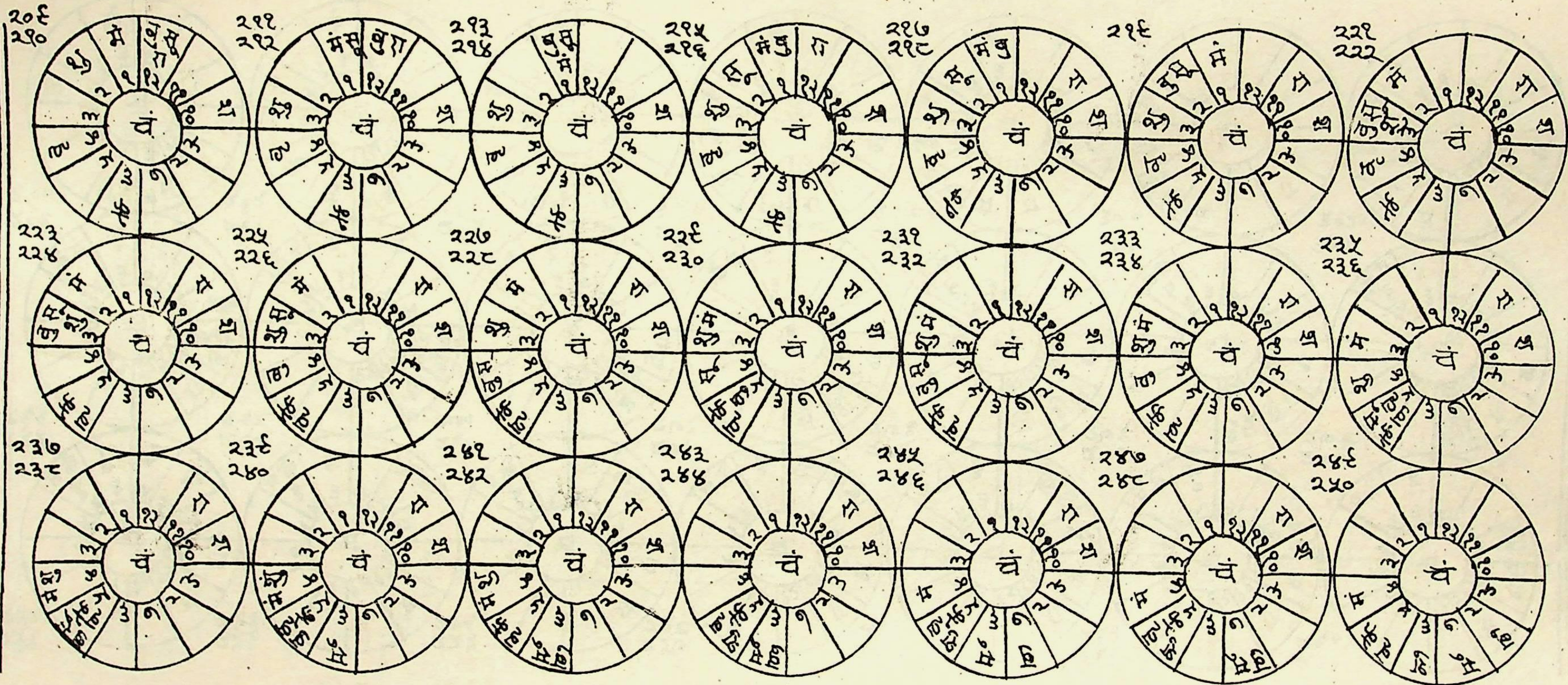
कु० ख०
मू० सं०
५८

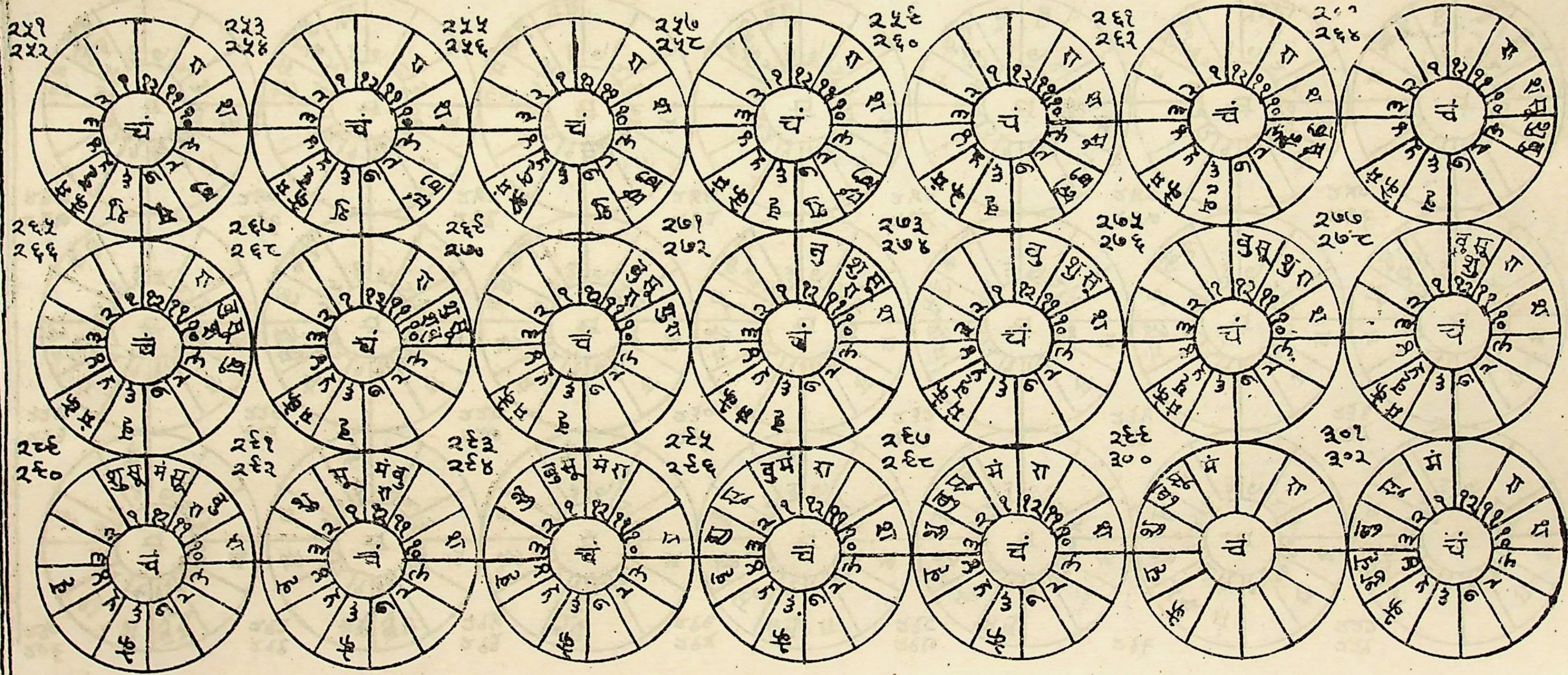


कुं० रव०
मृं० सं०
५८

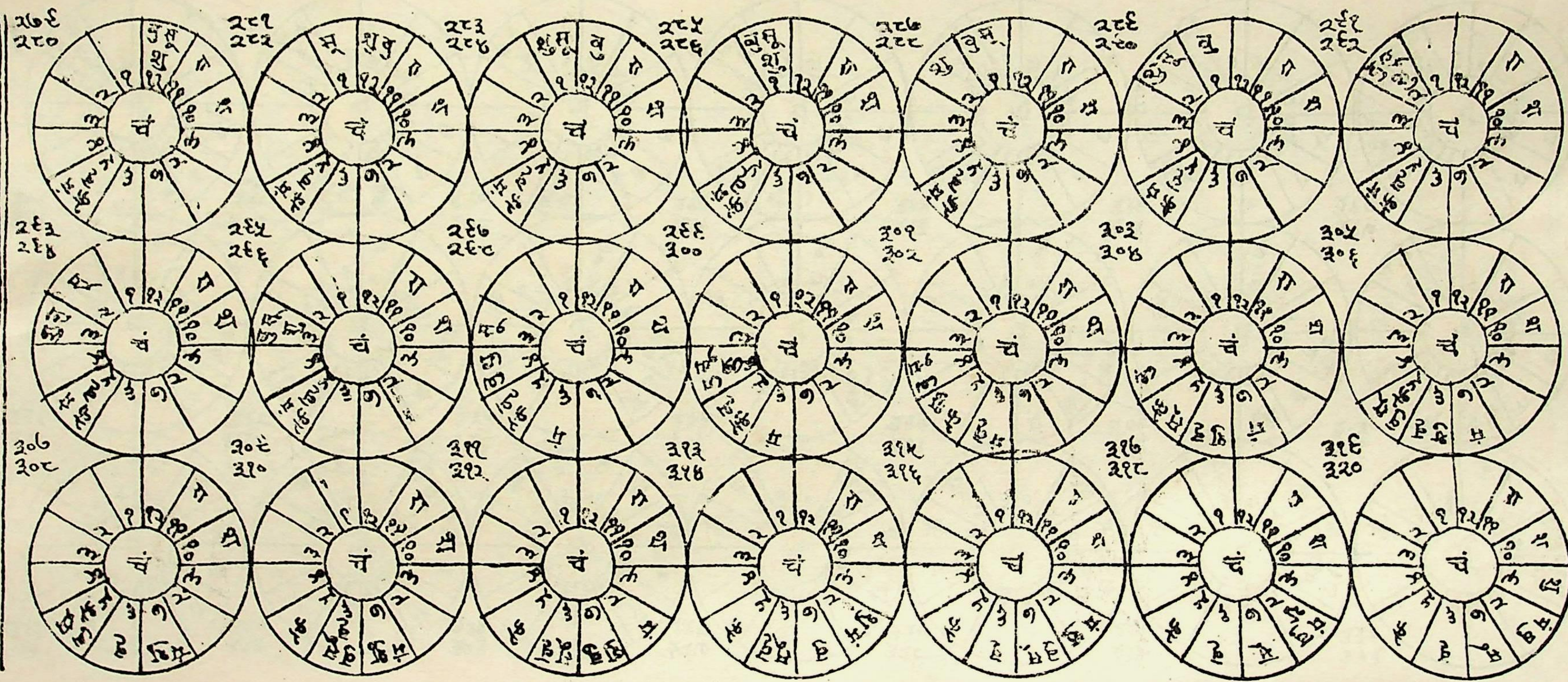


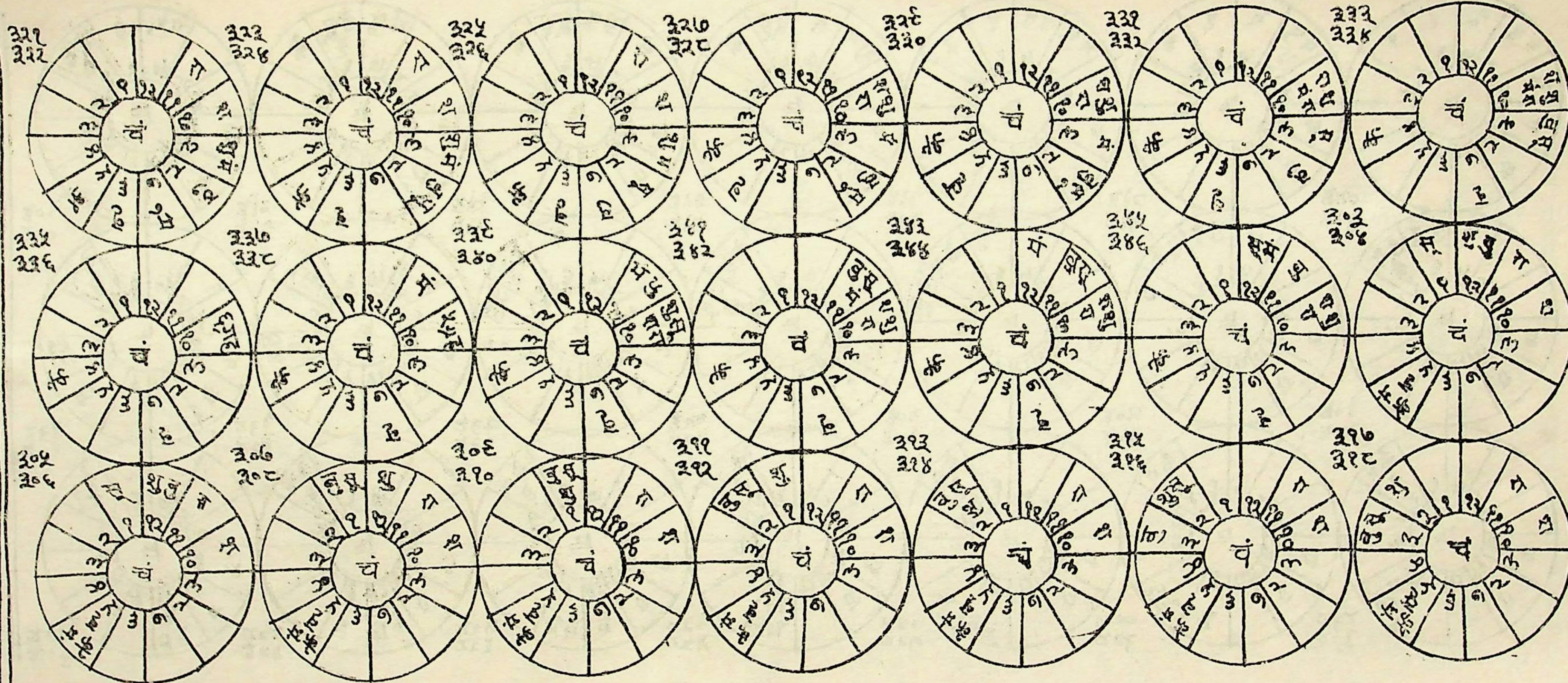
कुं०ख०
मृ०स०
५६

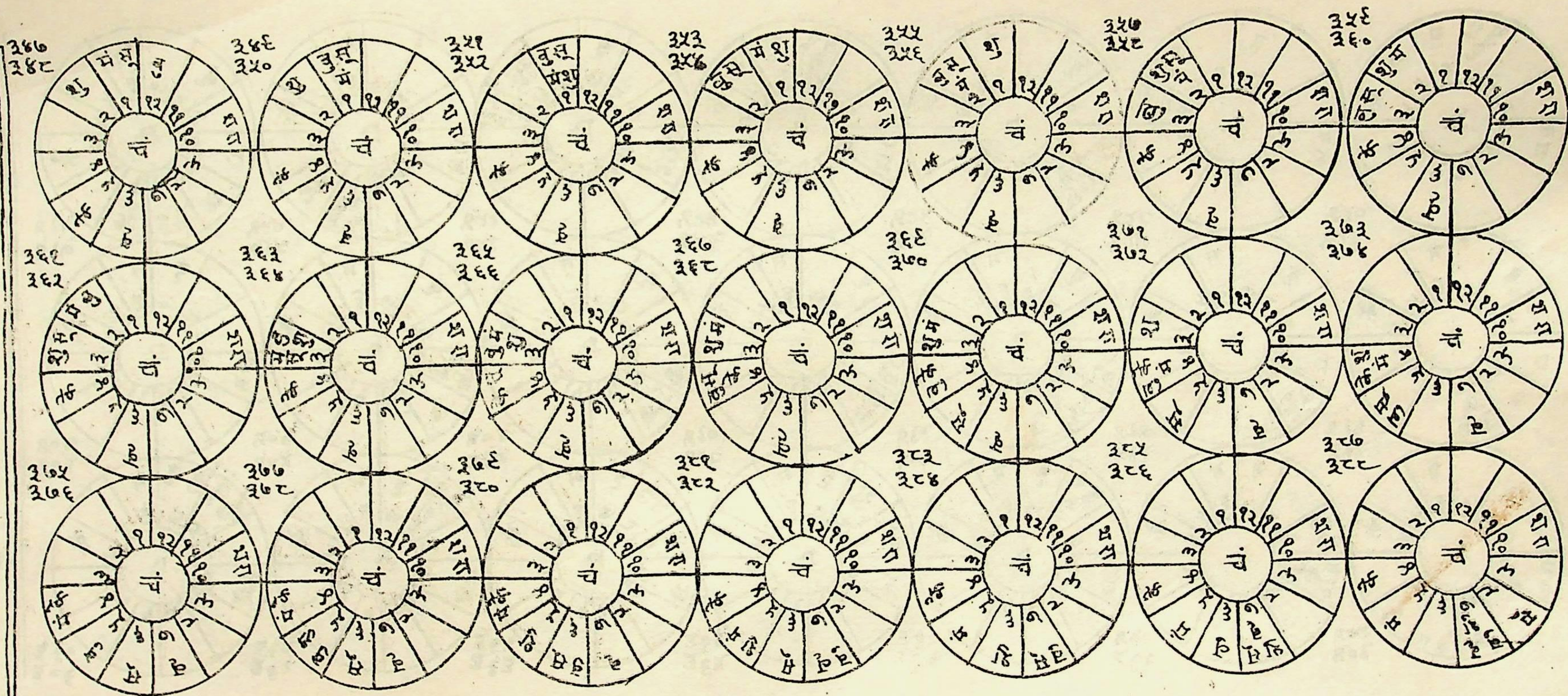

२०९ २१०
२११ २१२
२१३ २१४
२१५ २१६
२१७ २१८
२१९
२२१ २२२
२२३ २२४
२२५ २२६
२२७ २२८
२२९ २३०
२३१ २३२
२३३ २३४
२३५ २३६
२३७ २३८
२३९ २४०
२४१ २४२
२४३ २४४
२४५ २४६
२४७ २४८
२४९ २५०

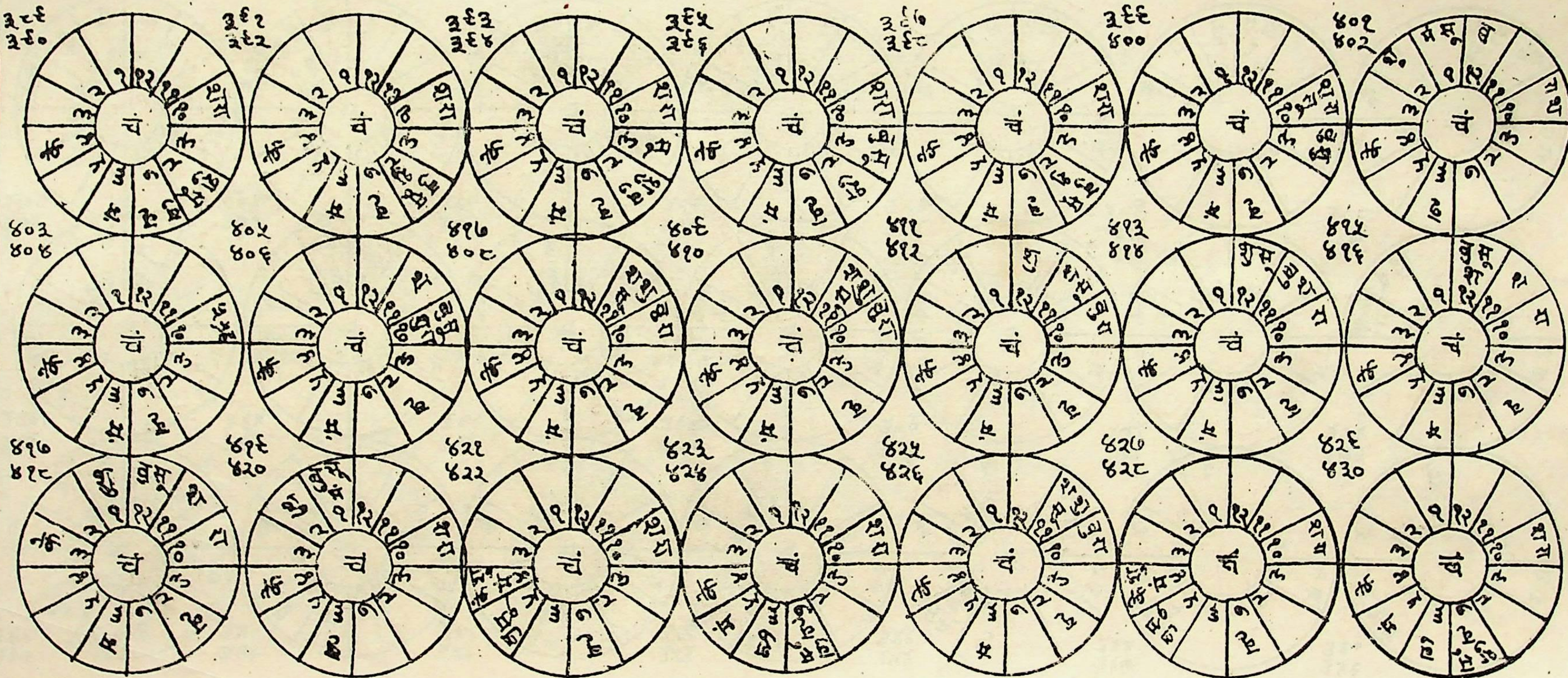


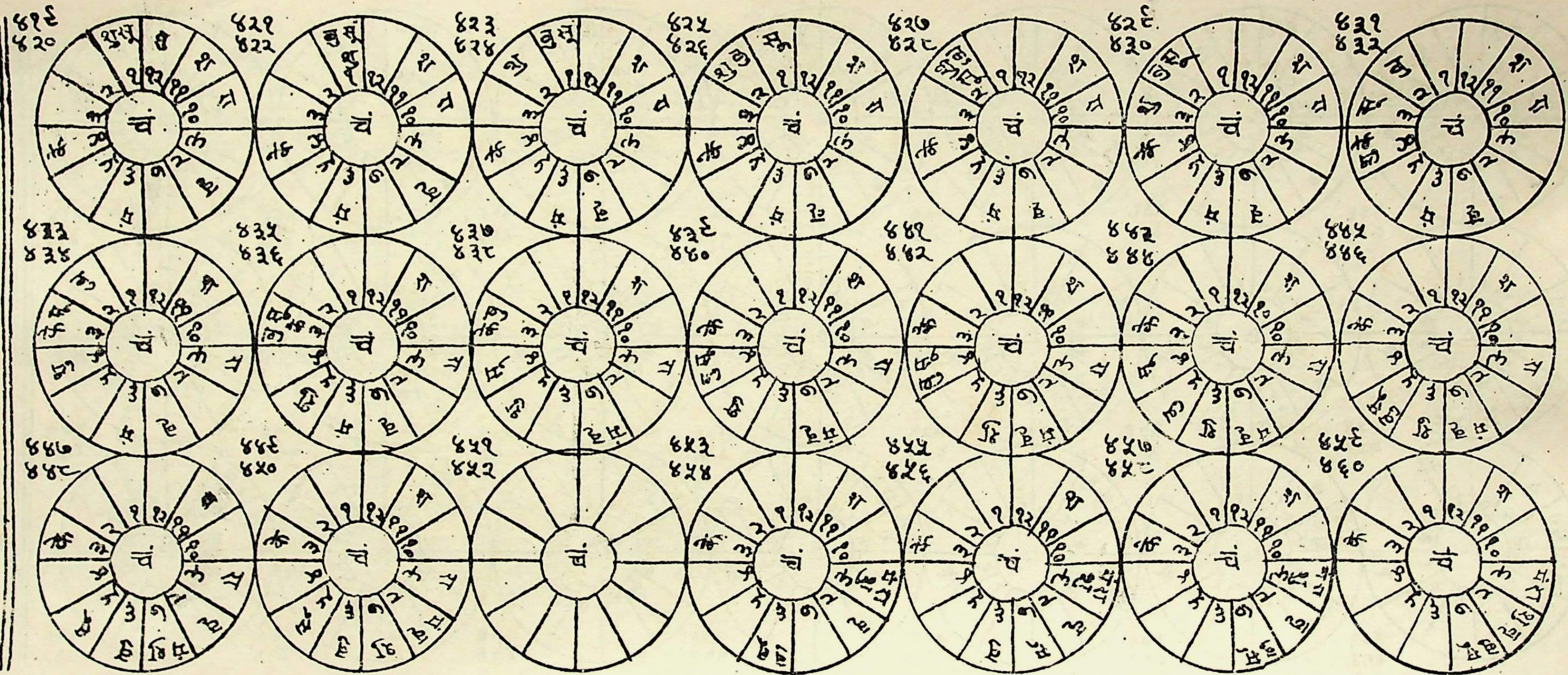
कुं०खं०
मू०स०
६१



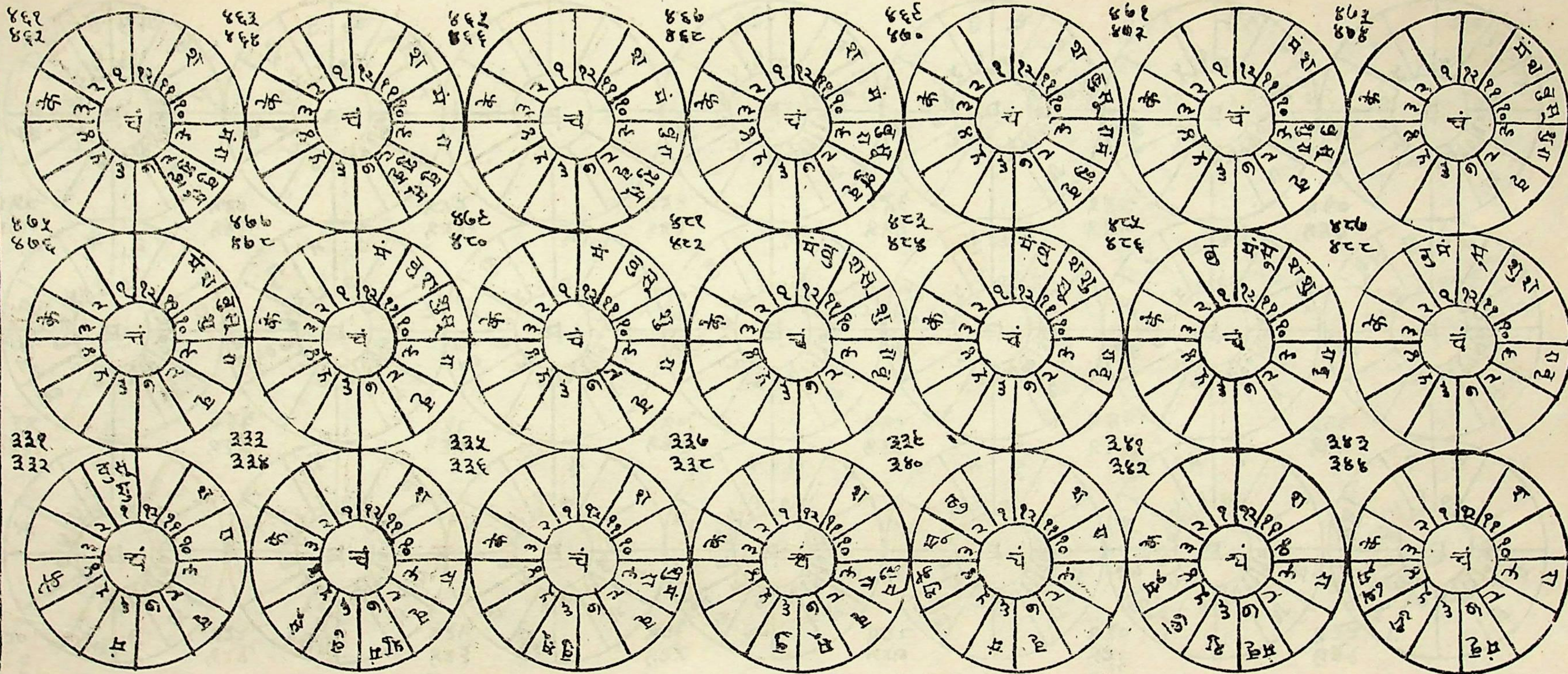


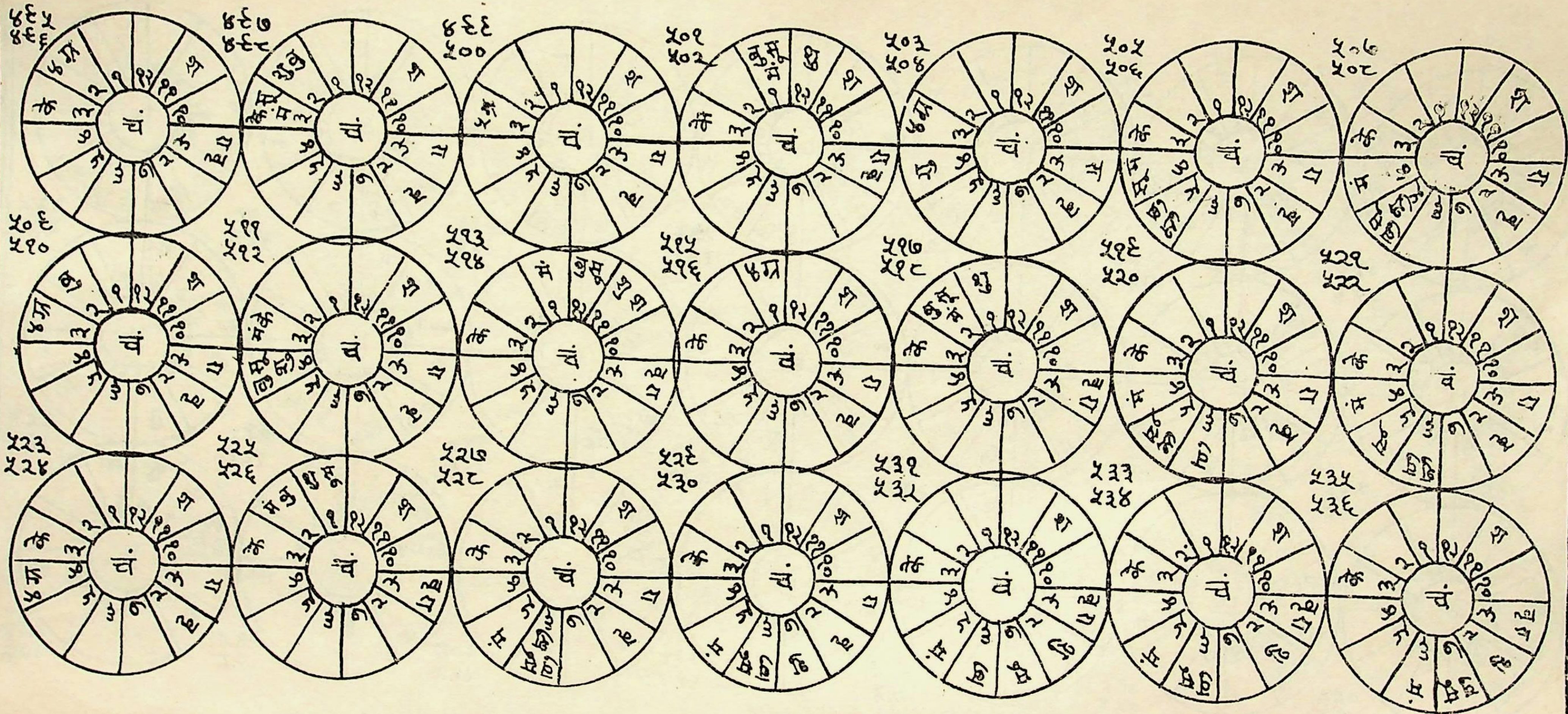


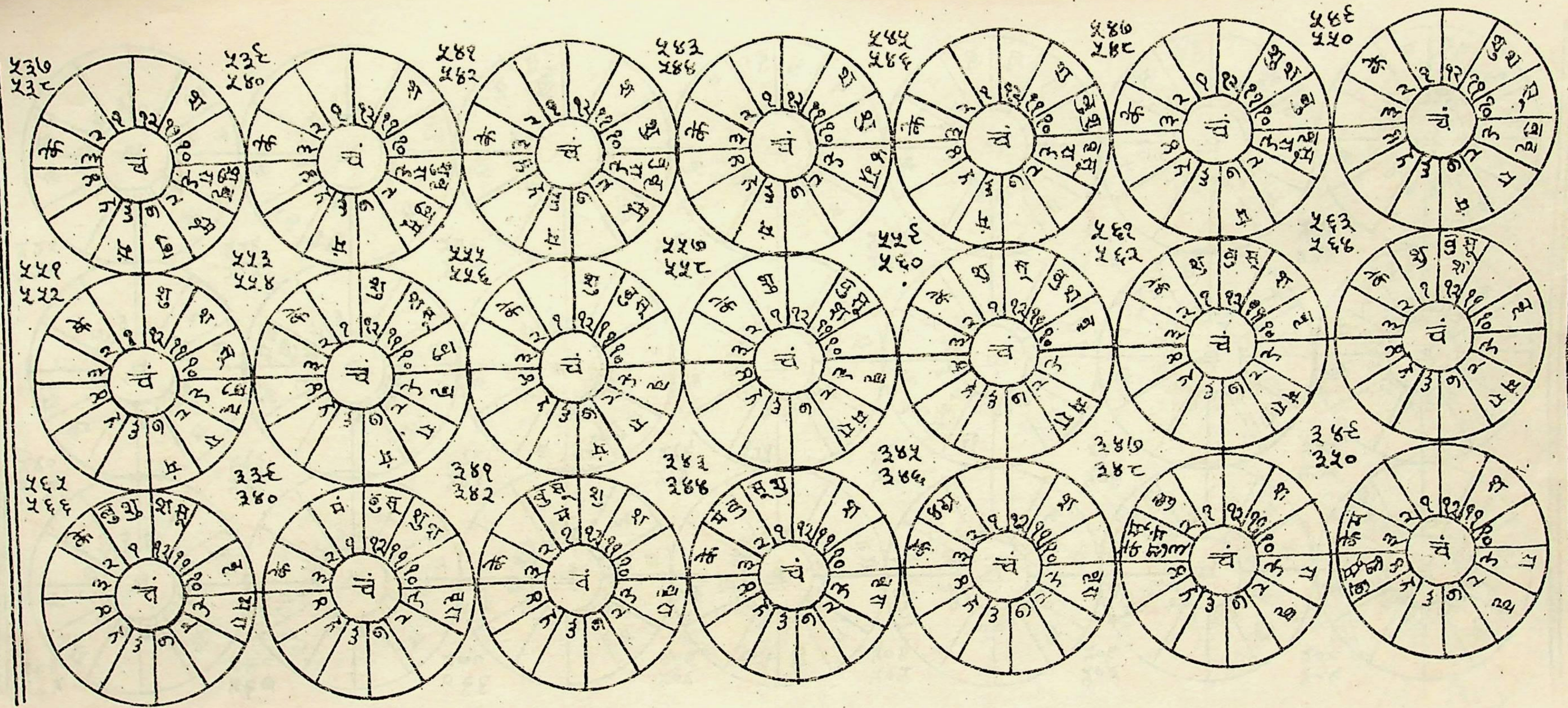




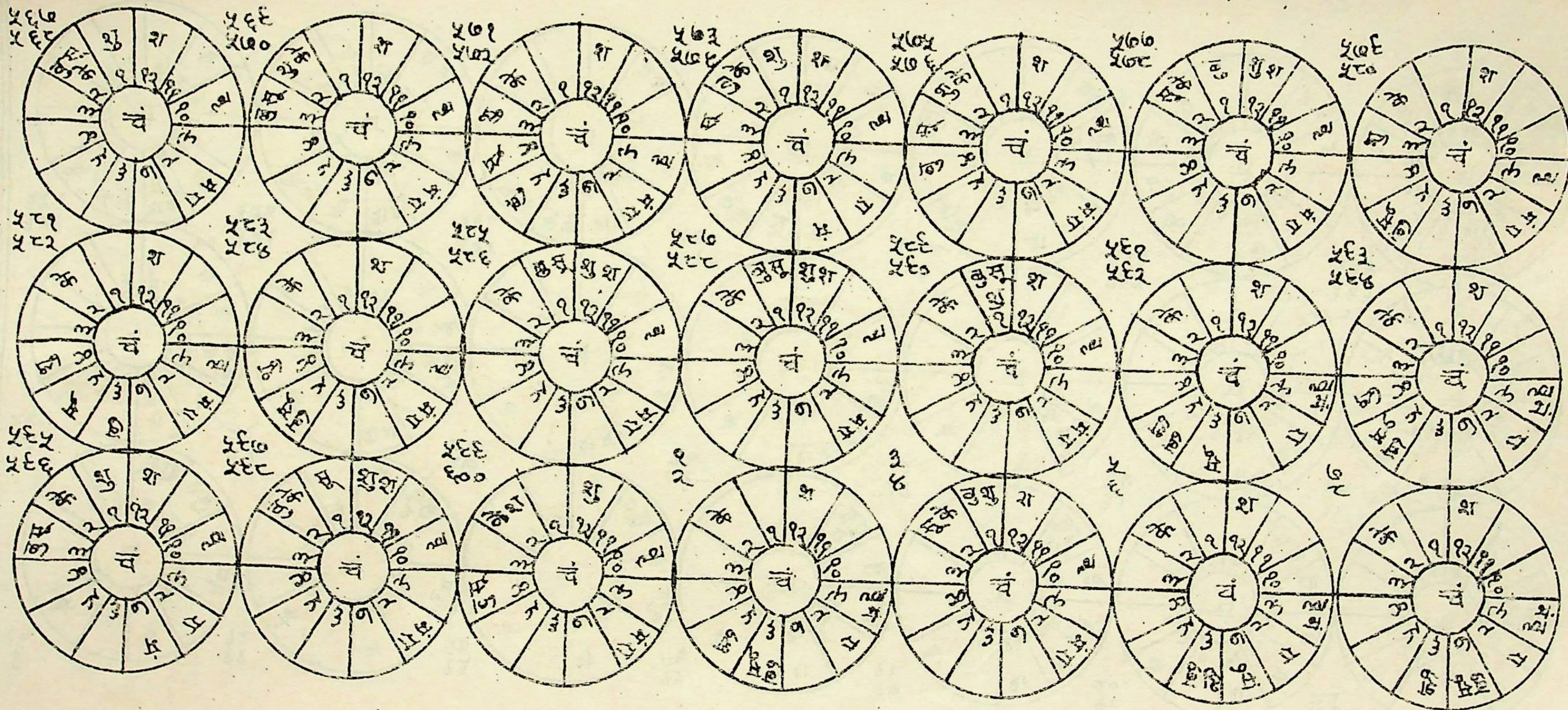
कुं० ल०
मृ० प्र०
६६



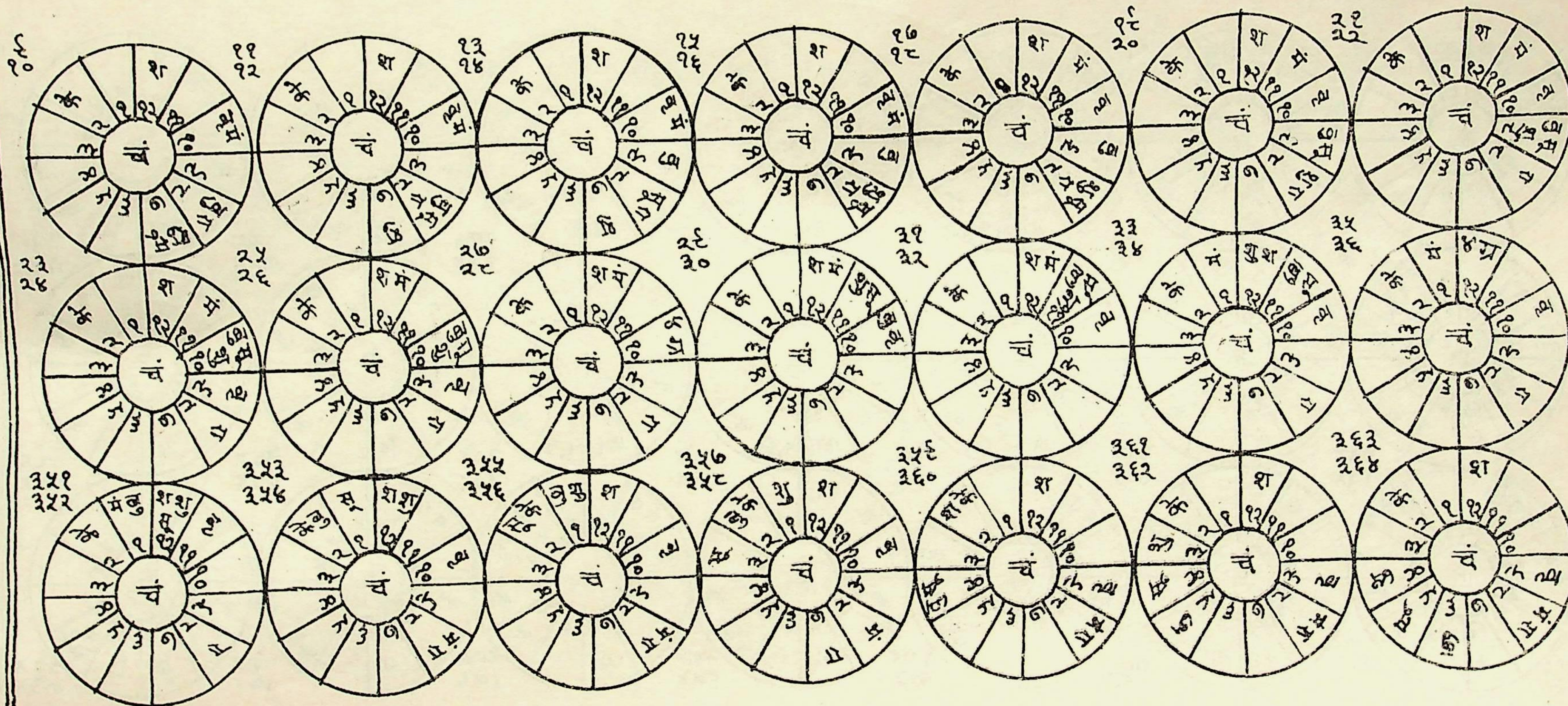

४९५ ४९६
४९७ ४९८
४९९ ५००
५०१ ५०२
५०३ ५०४
५०५ ५०६
५०७ ५०८
५०९ ५१०
५११ ५१२
५१३ ५१४
५१५ ५१६
५१७ ५१८
५१९ ५२०
५२१ ५२२
५२३ ५२४
५२५ ५२६
५२७ ५२८
५२९ ५३०
५३१ ५३२
५३३ ५३४
५३५ ५३६

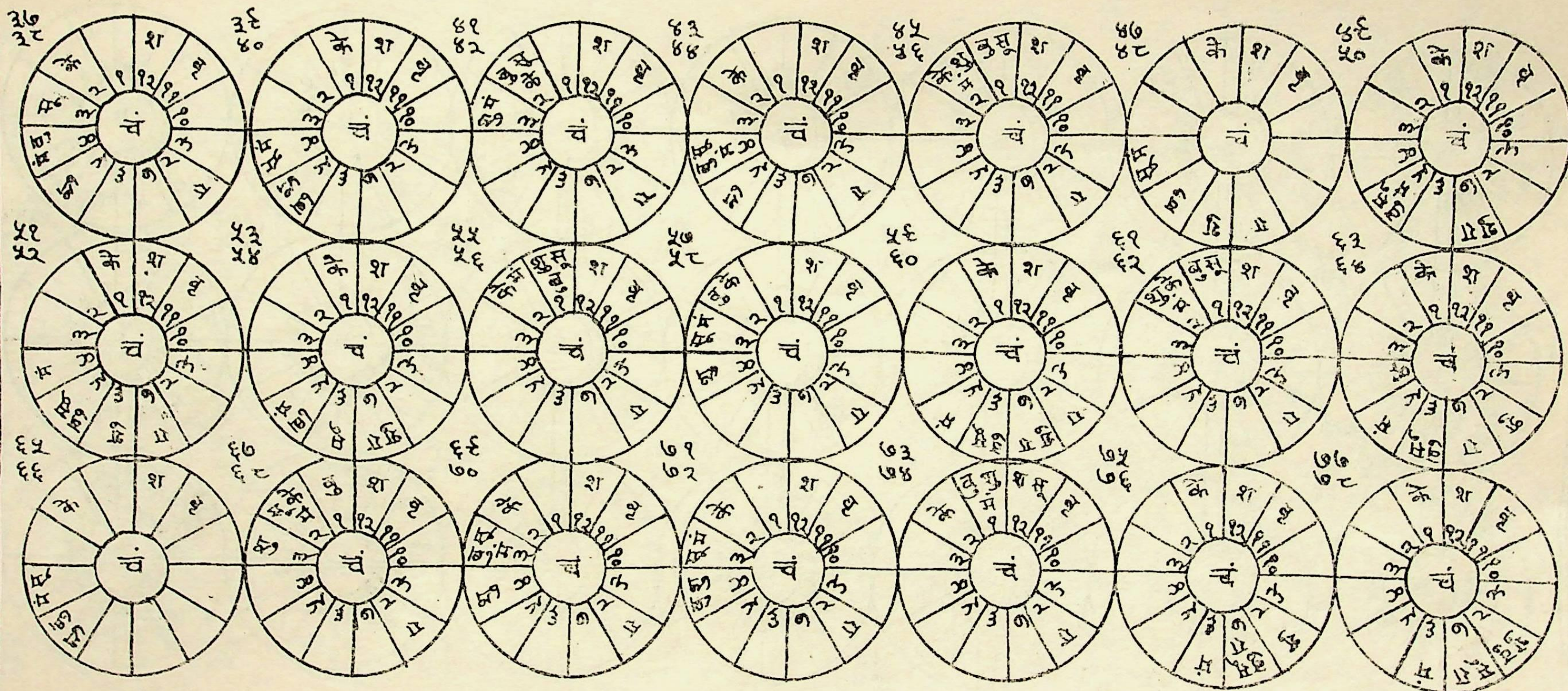

कुं० ख०
मृ० स०
६८
५३७
५३८
५३९
५४०
५४१
५४२
५४३
५४४
५४५
५४६
५४७
५४८
५४९
५५०
५५१
५५२
५५३
५५४
५५५
५५६
५५७
५५८
५५९
५६०
५६१
५६२
५६३
५६४
५६५
५६६
३३९
३४०
३४१
३४२
३४३
३४४
३४५
३४६
३४७
३४८
३४९
३५०

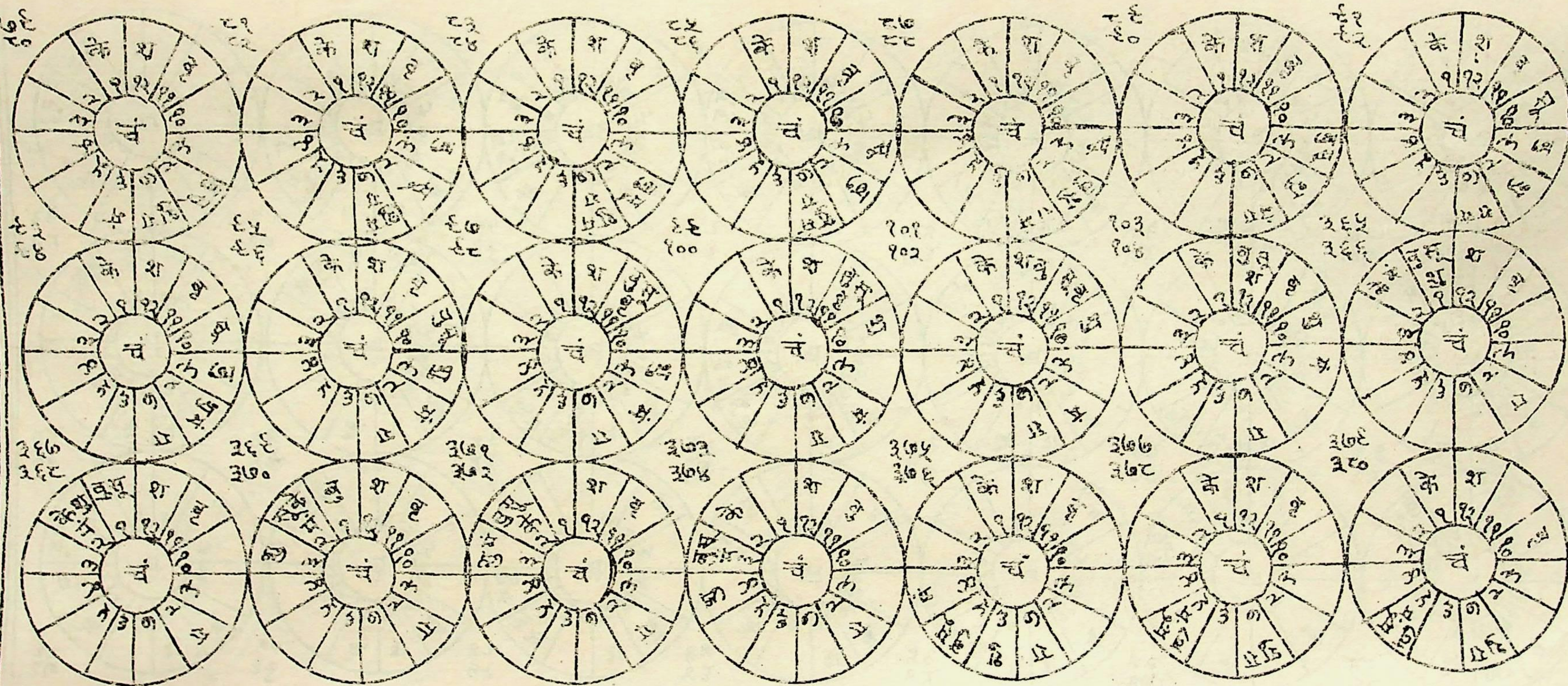
कुं० ख०
मू० म०
६९

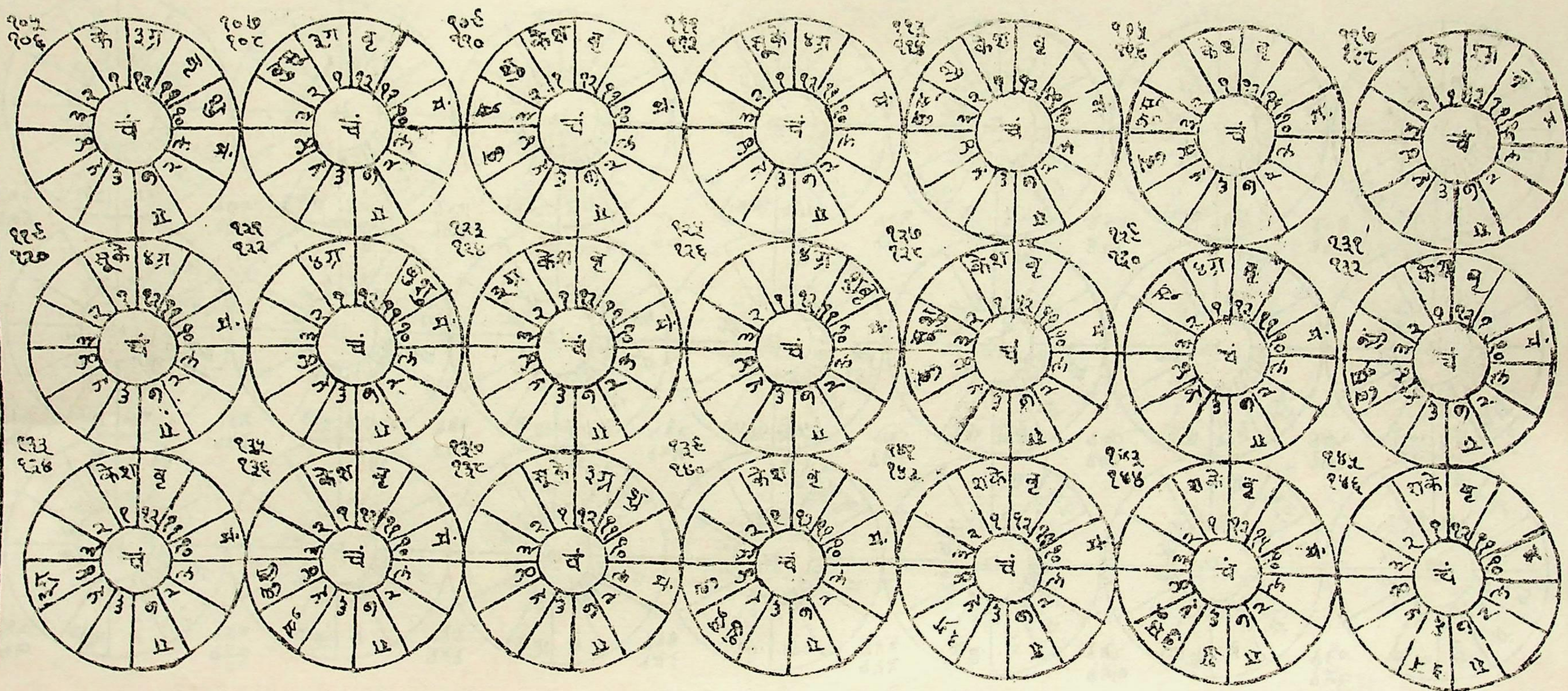


कुं०ख०
मृ०सं०
७०

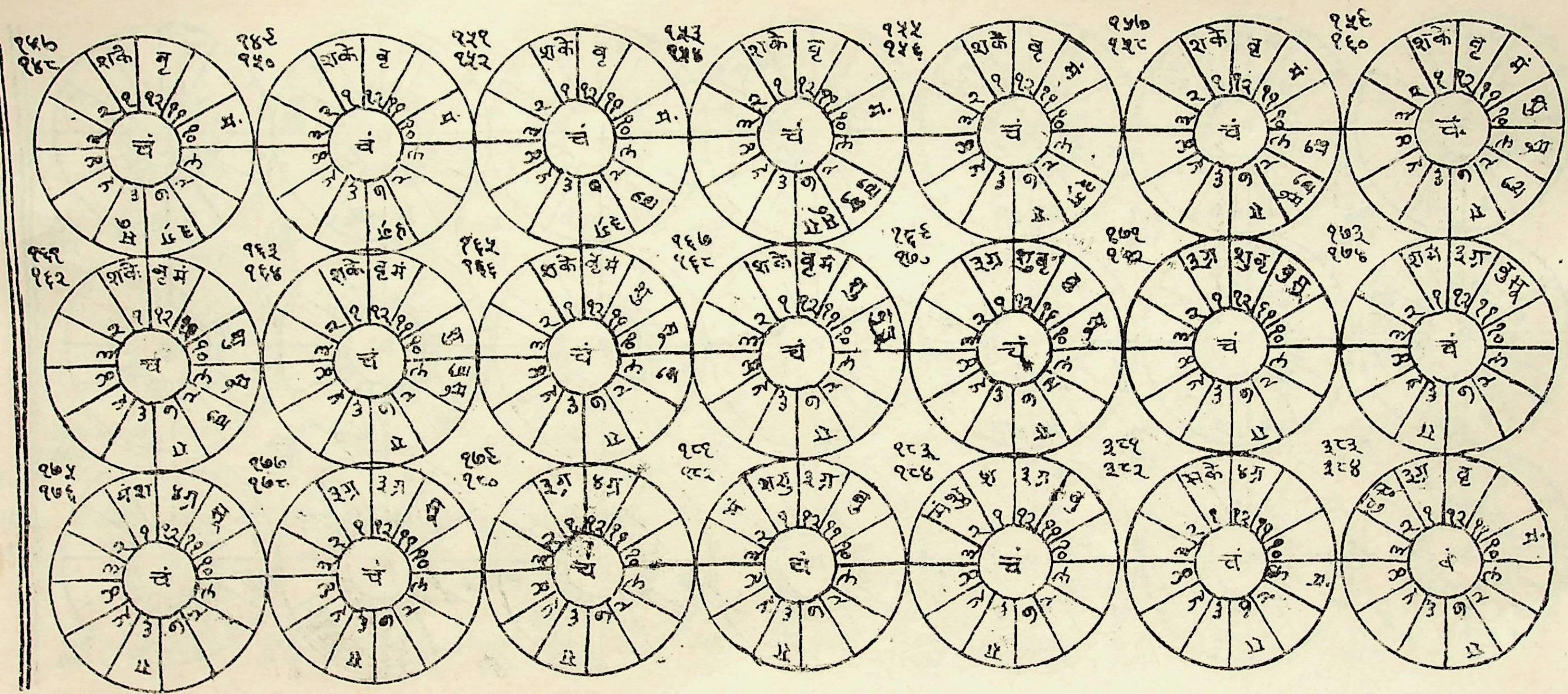




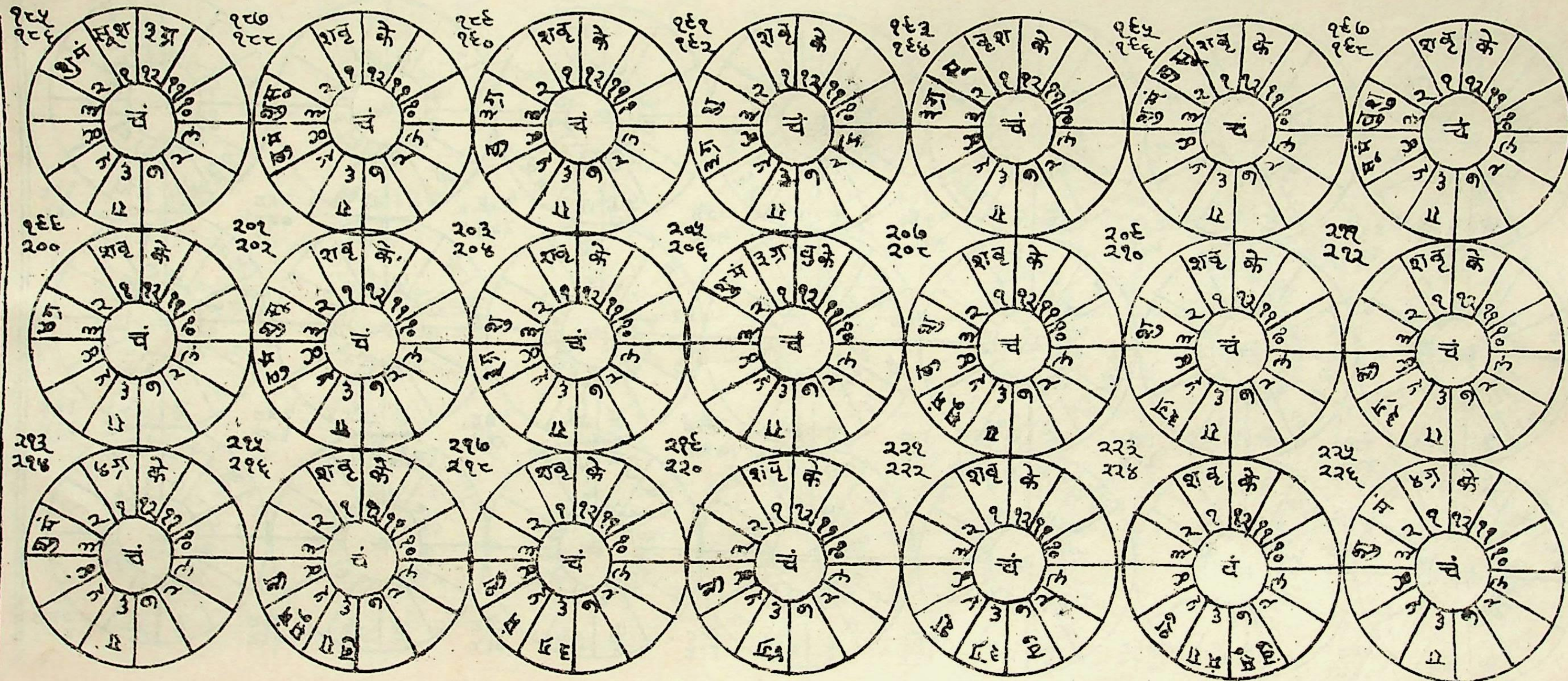




कुं०ख०
मु०स०
७४



कुं०ख०
मृ०स०
७५



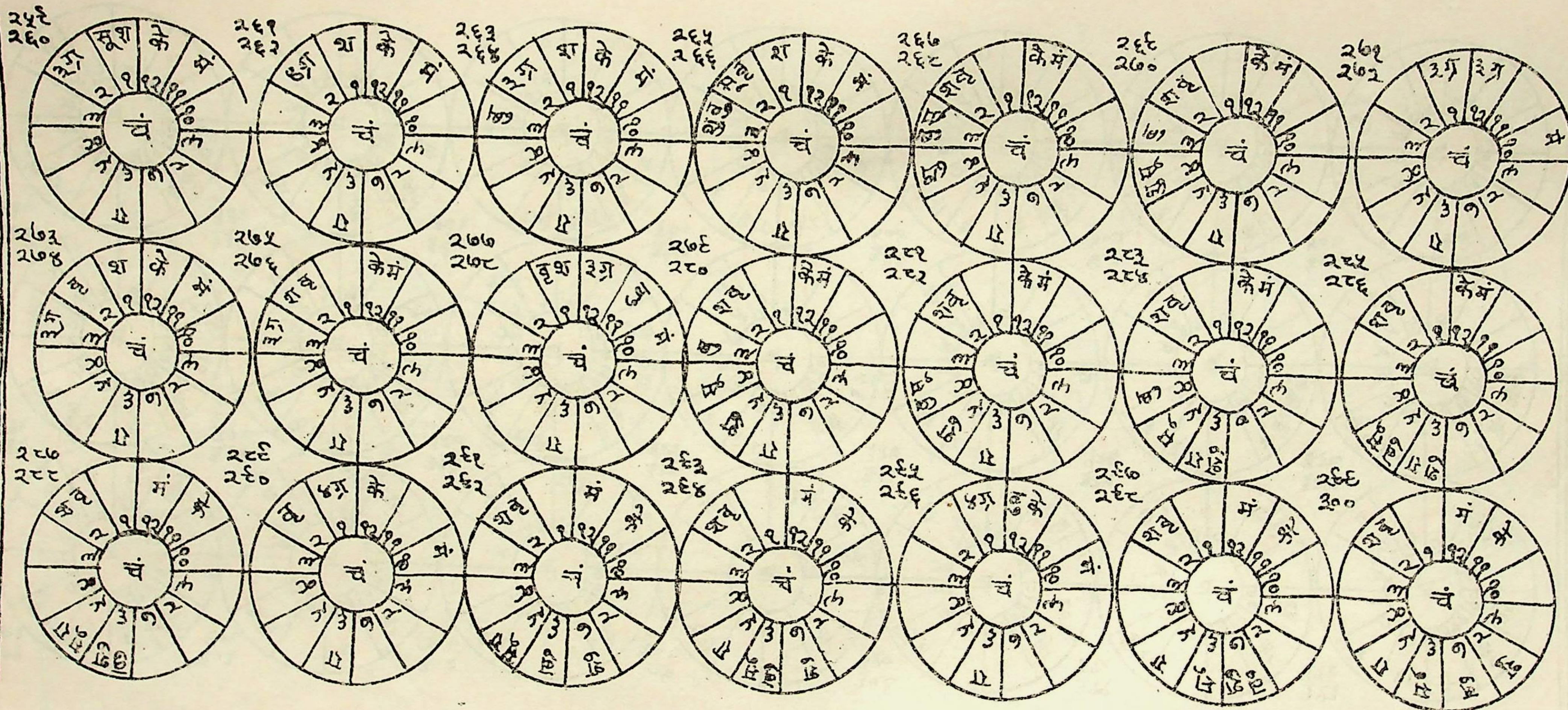
कुं० ख०
प० स०
७४

२२७ २२८ | २२९ २३० | २३१ २३२ | २३३ २३४ | २३५ २३६ | २३७ २३८ | २३९ २४०

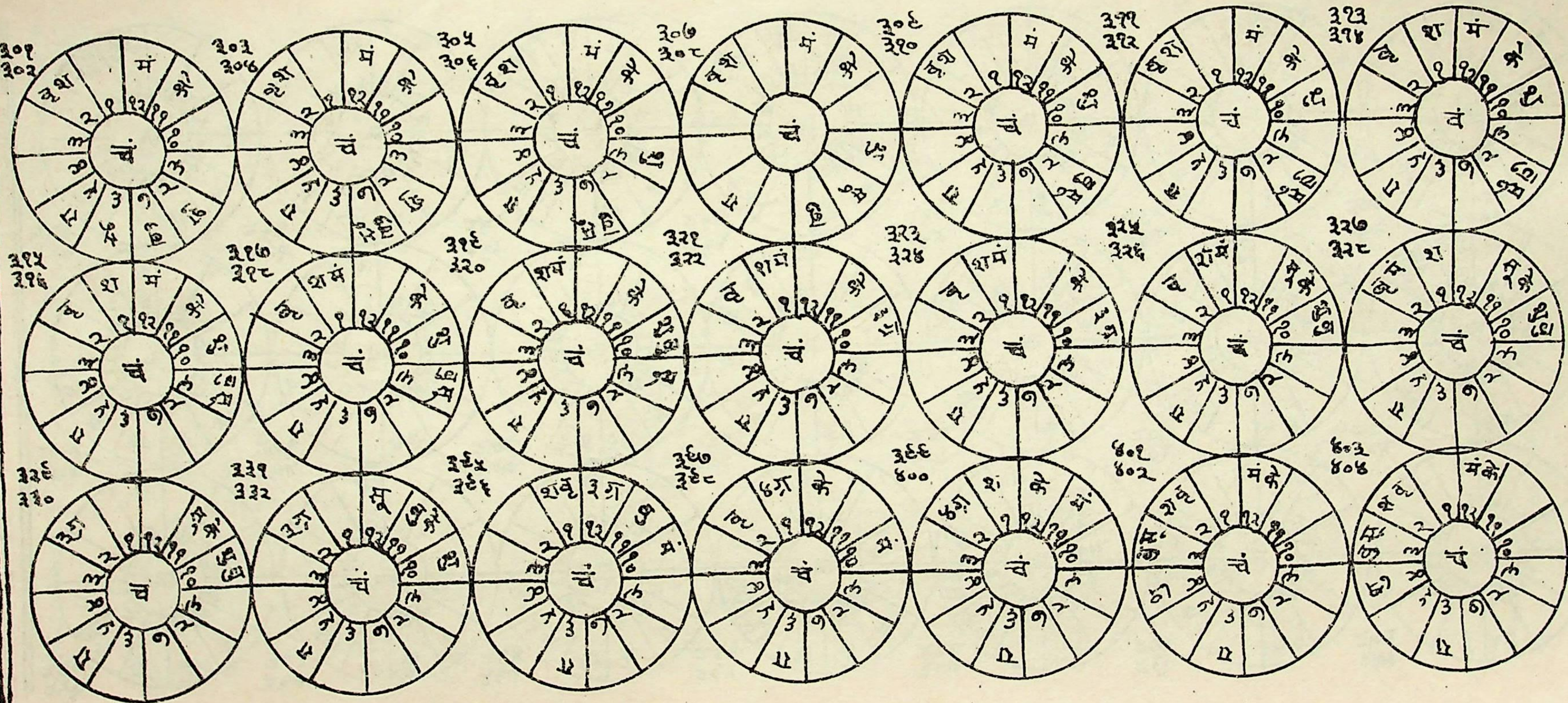
२४१ २४२ | २४३ २४४ | २४५ २४६ | २४७ २४८ | २४९ २५० | २५१ २५२ | २५३ २५४

२५५ २५६ | २५७ २५८ | २५९ २६० | २६१ २६२ | २६३ २६४ | २६५ २६६ | २६७ २६८

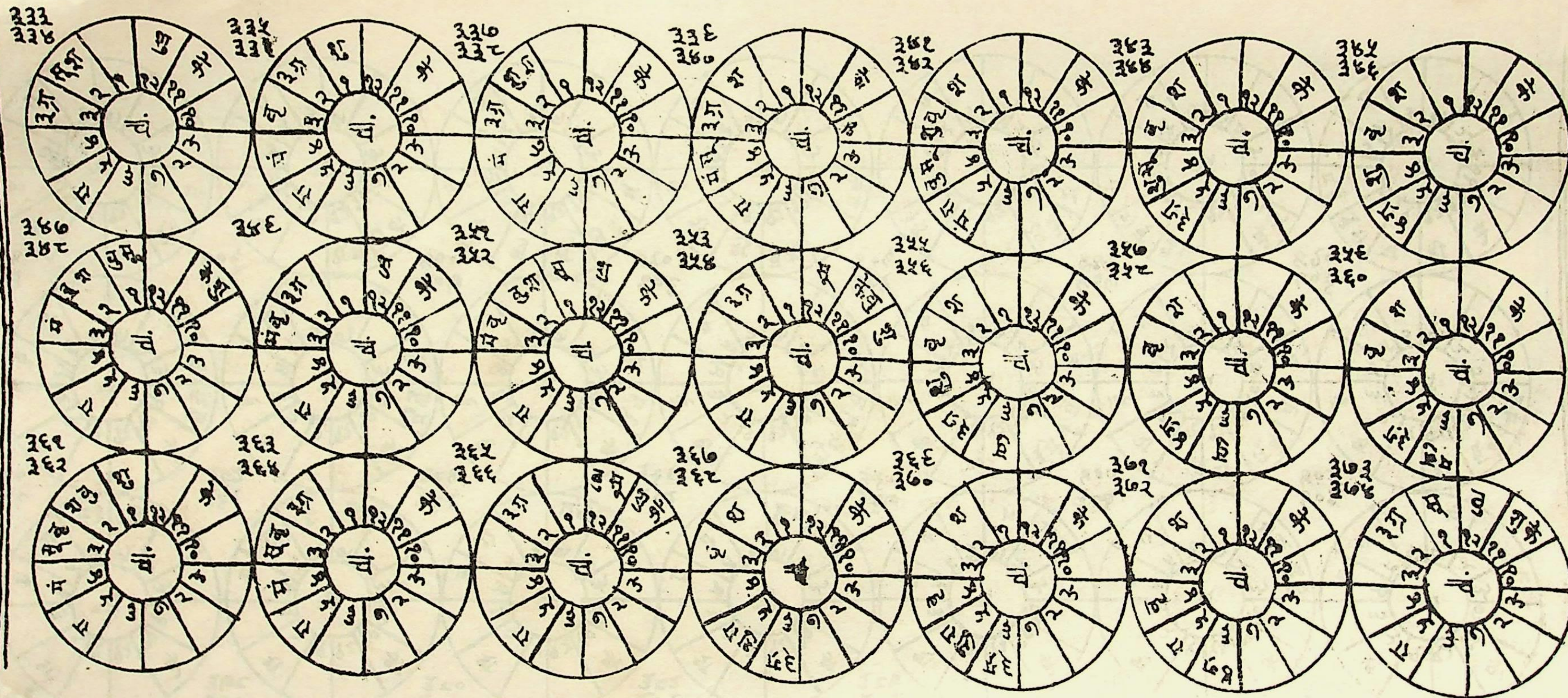
कुं०ख०
मू०स०
७७



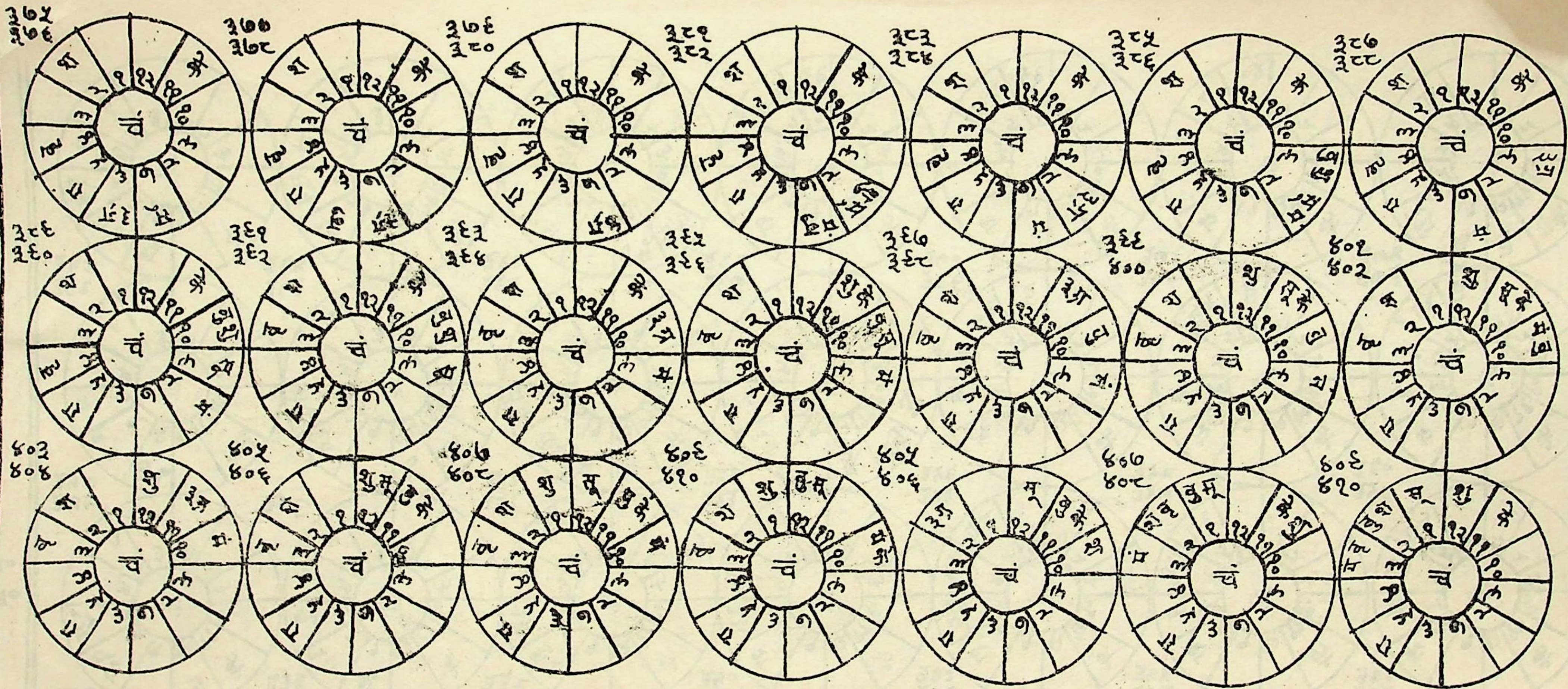
कुं० शि०
पृ० सं०
७८

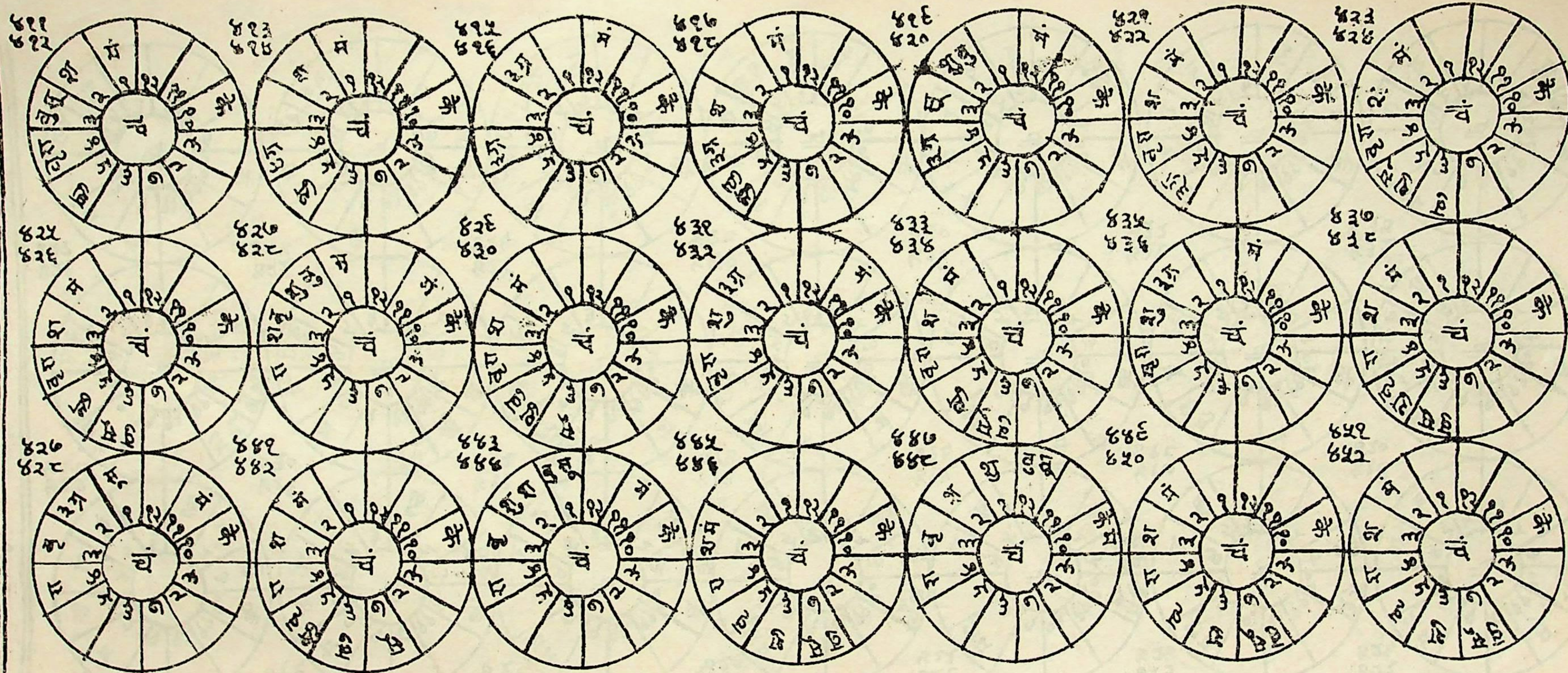


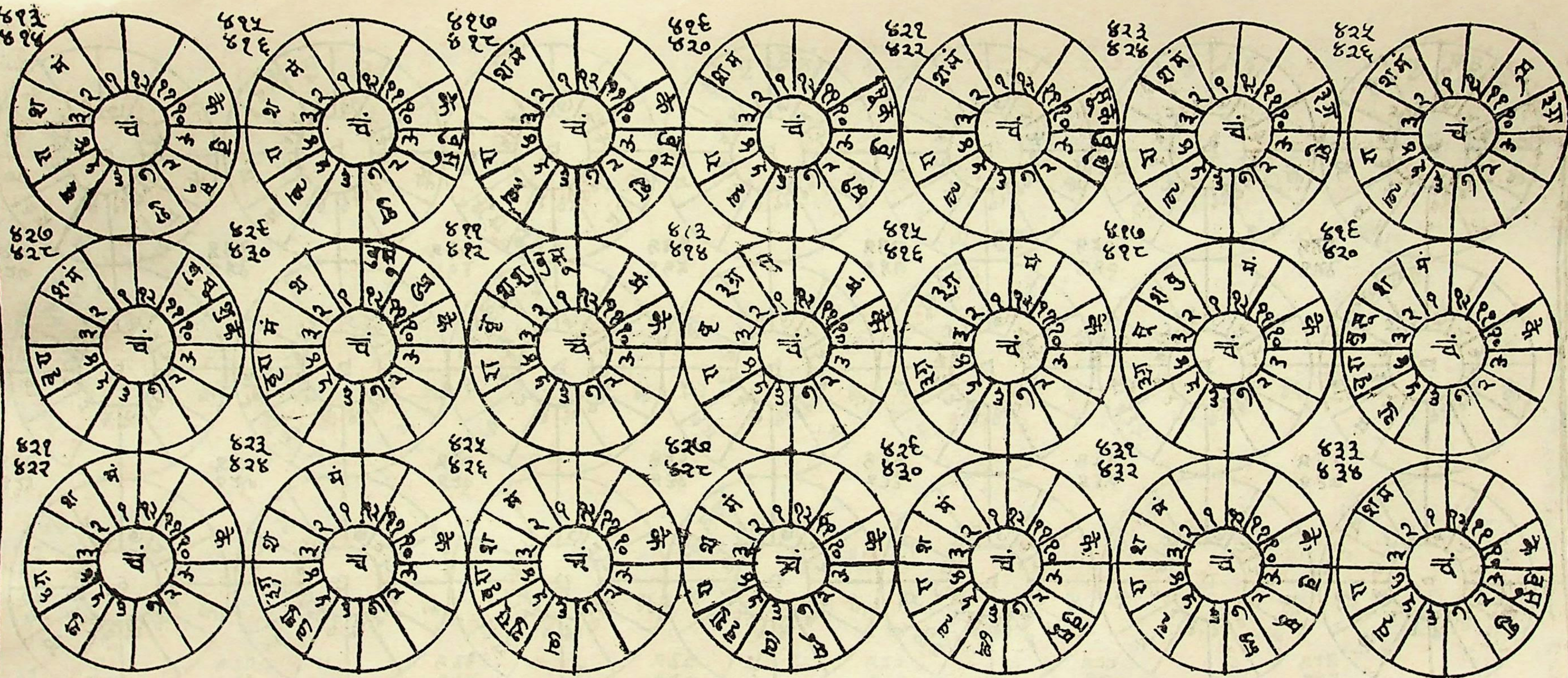
३०१ ३०२
३०३ ३०४
३०५ ३०६
३०७ ३०८
३०९ ३१०
३११ ३१२
३१३ ३१४
३१५ ३१६
३१७ ३१८
३१९ ३२०
३२१ ३२२
३२३ ३२४
३२५ ३२६
३२७ ३२८
३२९ ३३०
३३१ ३३२
३९५ ३९६
३९७ ३९८
३९९ ४००
४०१ ४०२
४०३ ४०४



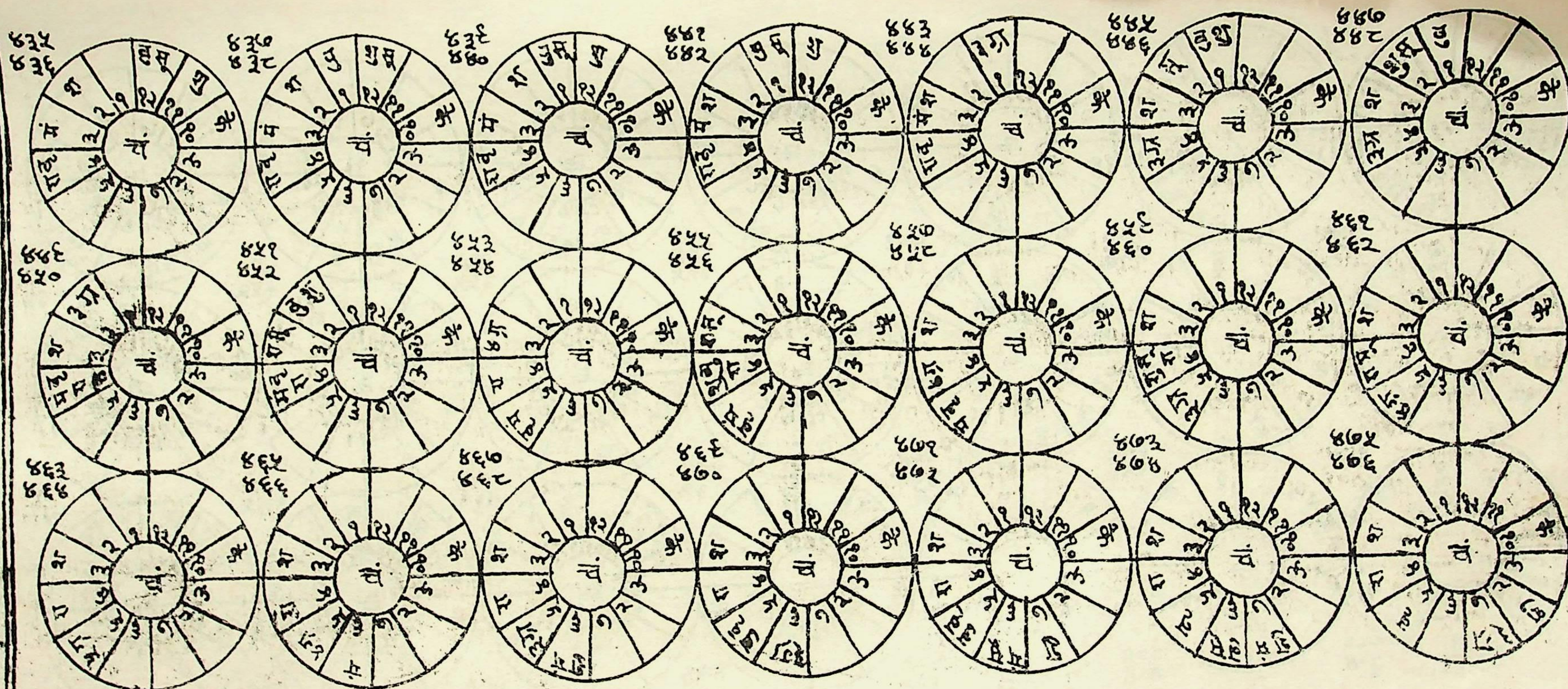
कुं० ख० मृ० स०
८०

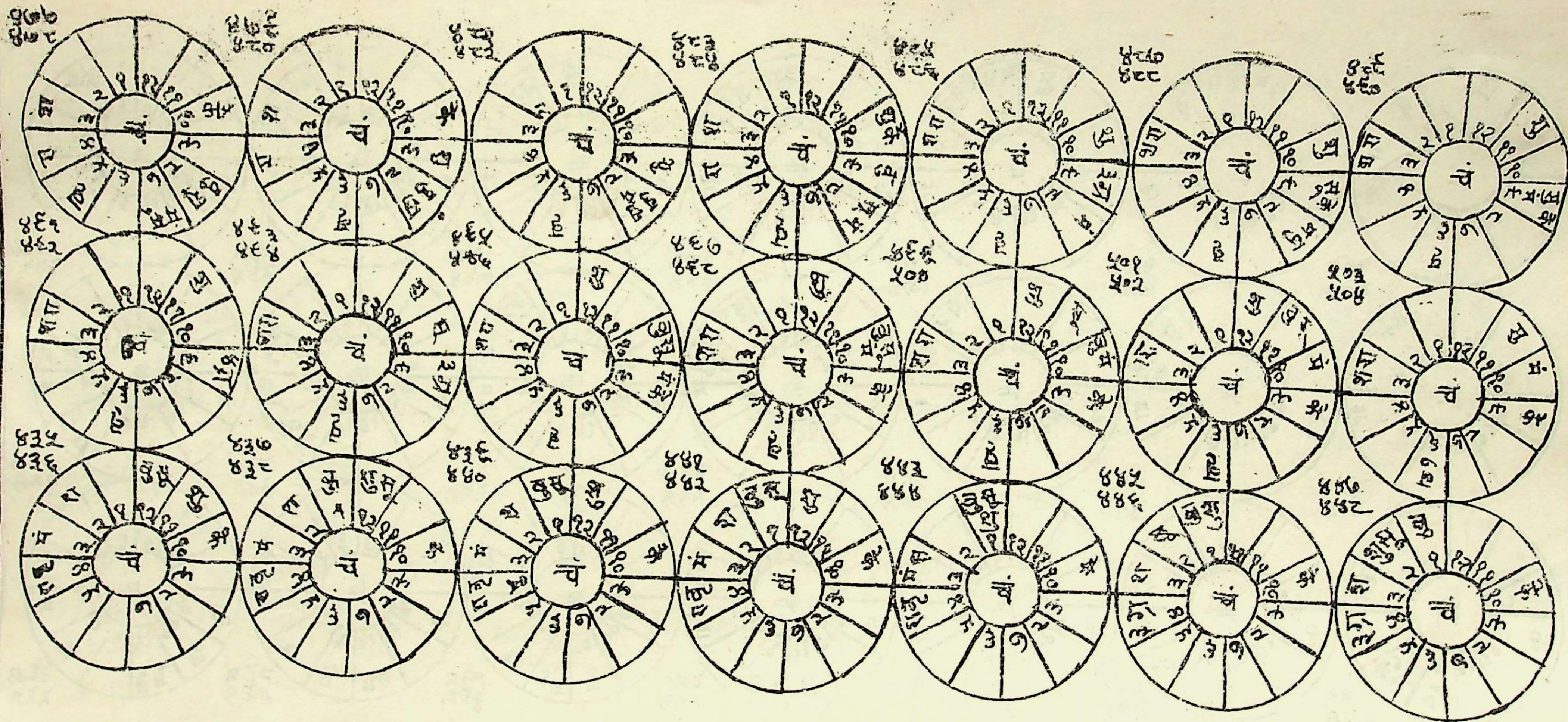


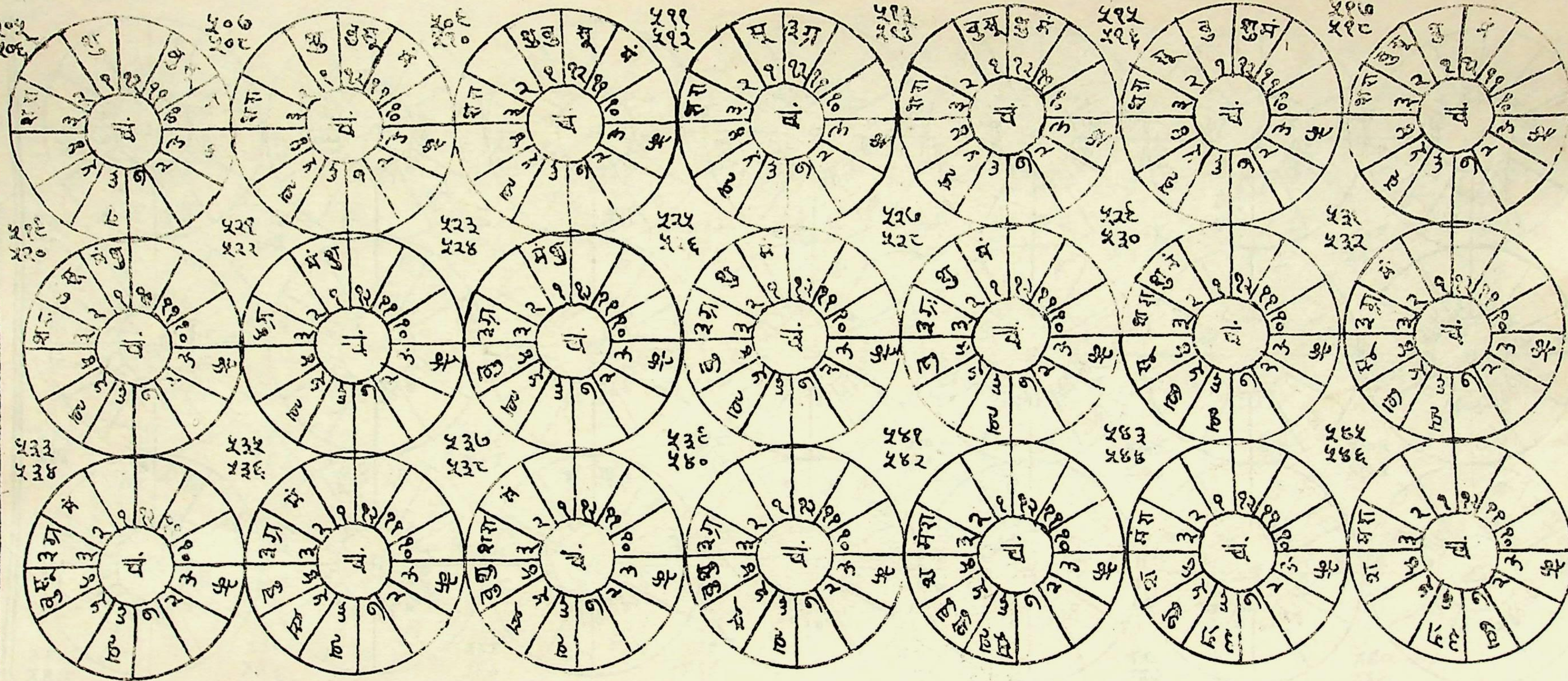

४११
४१२
४१३
४१४
४१५
४१६
४१७
४१८
४१९
४२०
४२१
४२२
४२३
४२४
४२५
४२६
४२७
४२८
४२९
४३०
४३१
४३२
४३३
४३४
४३५
४३६
४३७
४३८
४२७
४२८
४४१
४४२
४४३
४४४
४४५
४४६
४४७
४४८
४४९
४५०
४५१
४५२



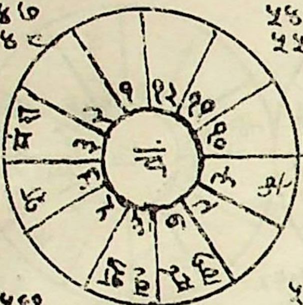
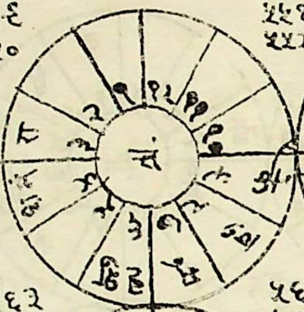
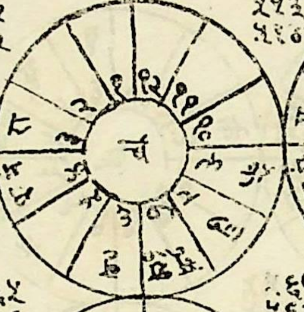
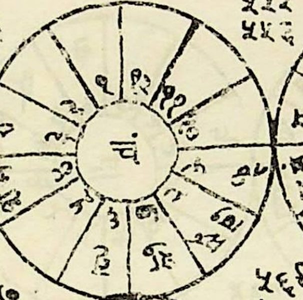
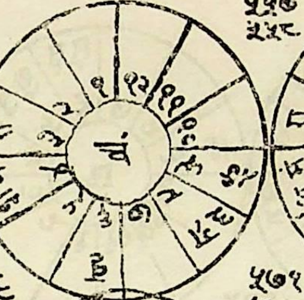
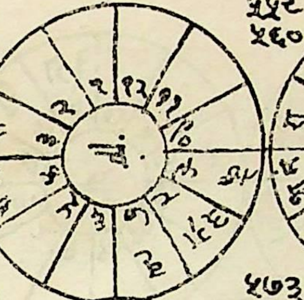
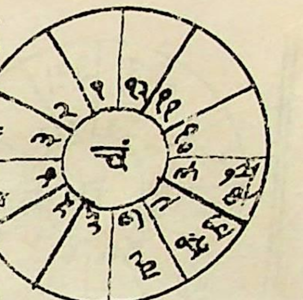
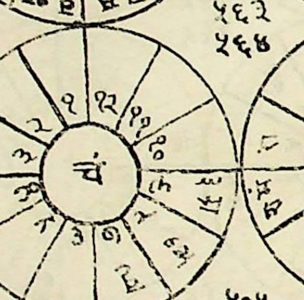
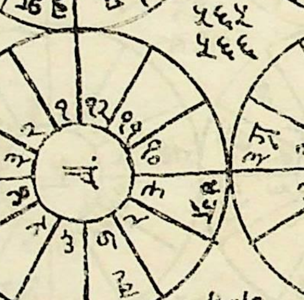
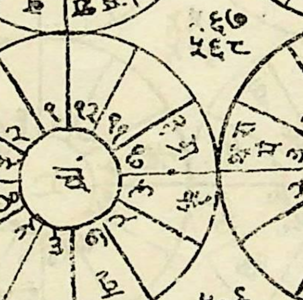
कुं० ख०
भू० स०
८३

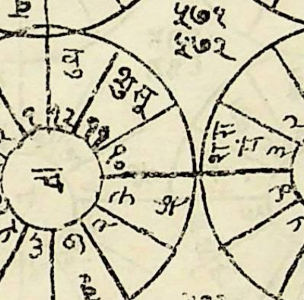
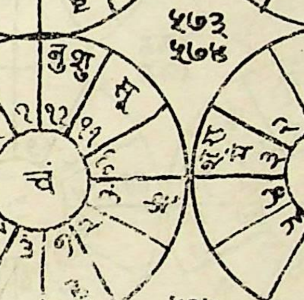


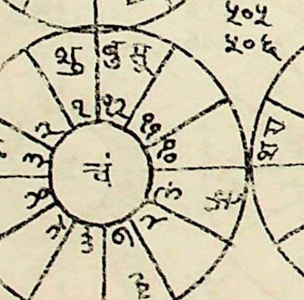
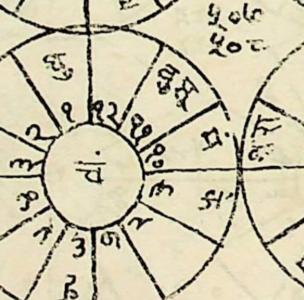


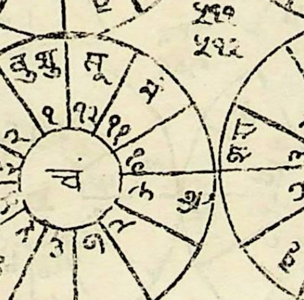
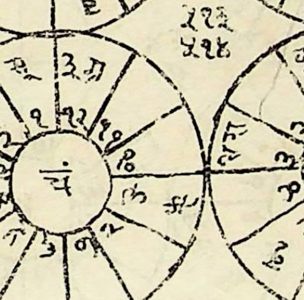
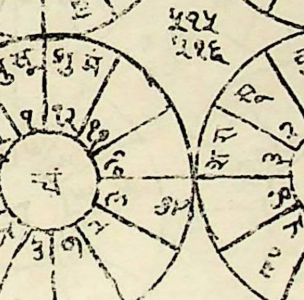
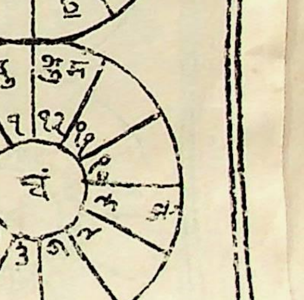

५०५ ५०६
५०७ ५०८
५०९ ५१०
५११ ५१२
५१३ ५१४
५१५ ५१६
५१७ ५१८
५१९ ५२०
५२१ ५२२
५२३ ५२४
५२५ ५२६
५२७ ५२८
५२९ ५३०
५३१ ५३२
५३३ ५३४
५३५ ५३६
५३७ ५३८
५३९ ५४०
५४१ ५४२
५४३ ५४४
५४५ ५४६

कुं० सं०
मू० सं०
८६

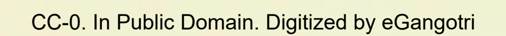



कुं० ५ ख०
मू० सं०
९८

५७७ ५७८ | ५६९ ५७० | ५८१ ५८२ | ५८३ ५८४ | ५८५ ५८६ | ५८७ ५८८ | ५८९ ५९०

५९१ ५९२ | ५९३ ५९४ | ५९५ ५९६ | ५९७ ५९८ | ५९९ ६०० | १ २ | ३ ४

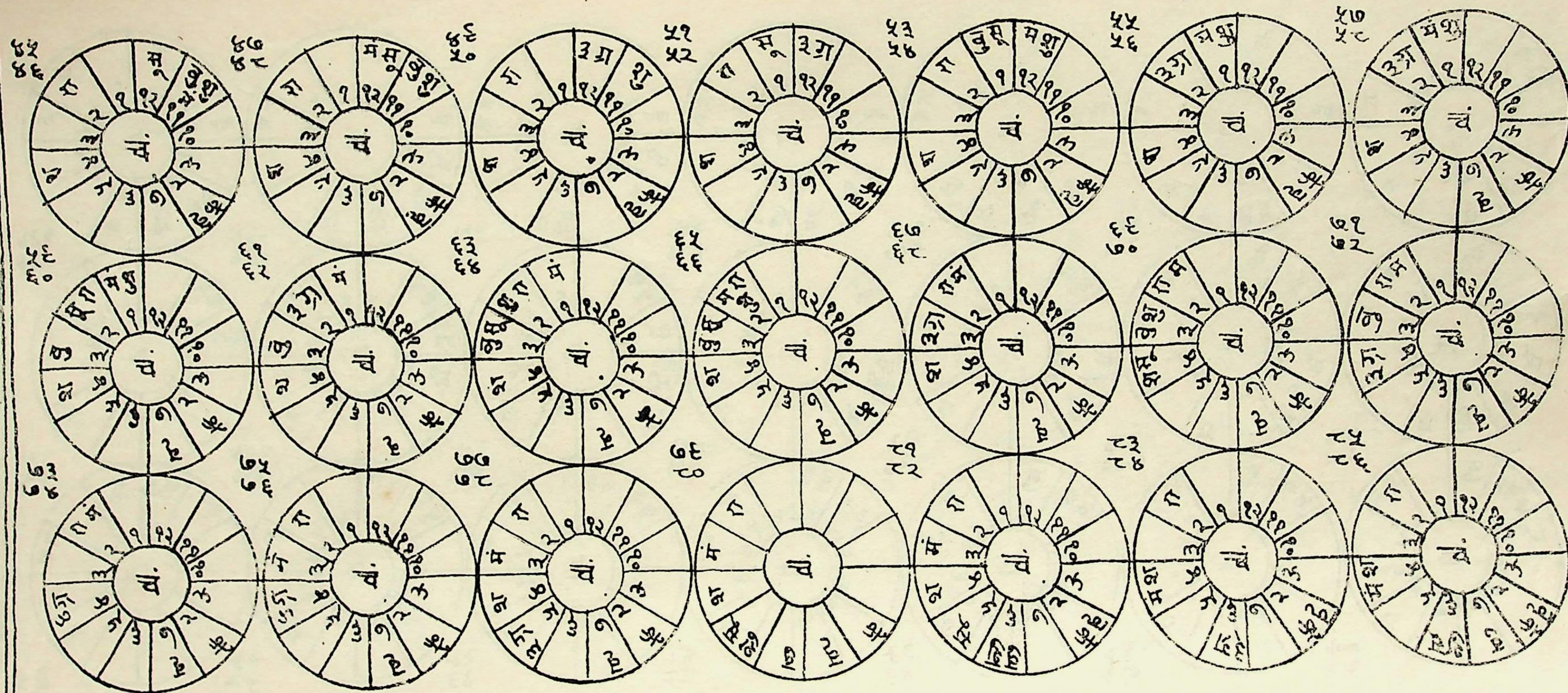


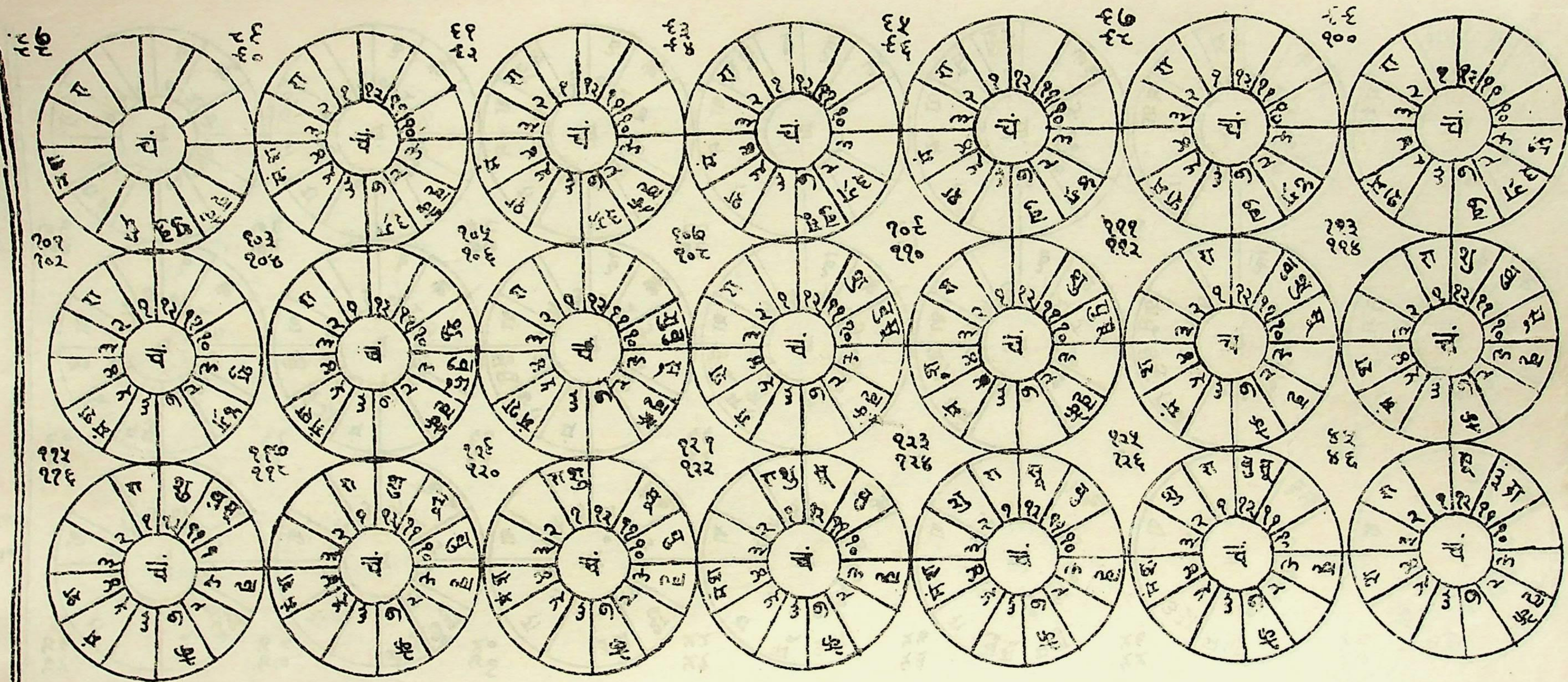
कुं० खं०
भू० सं०
८८

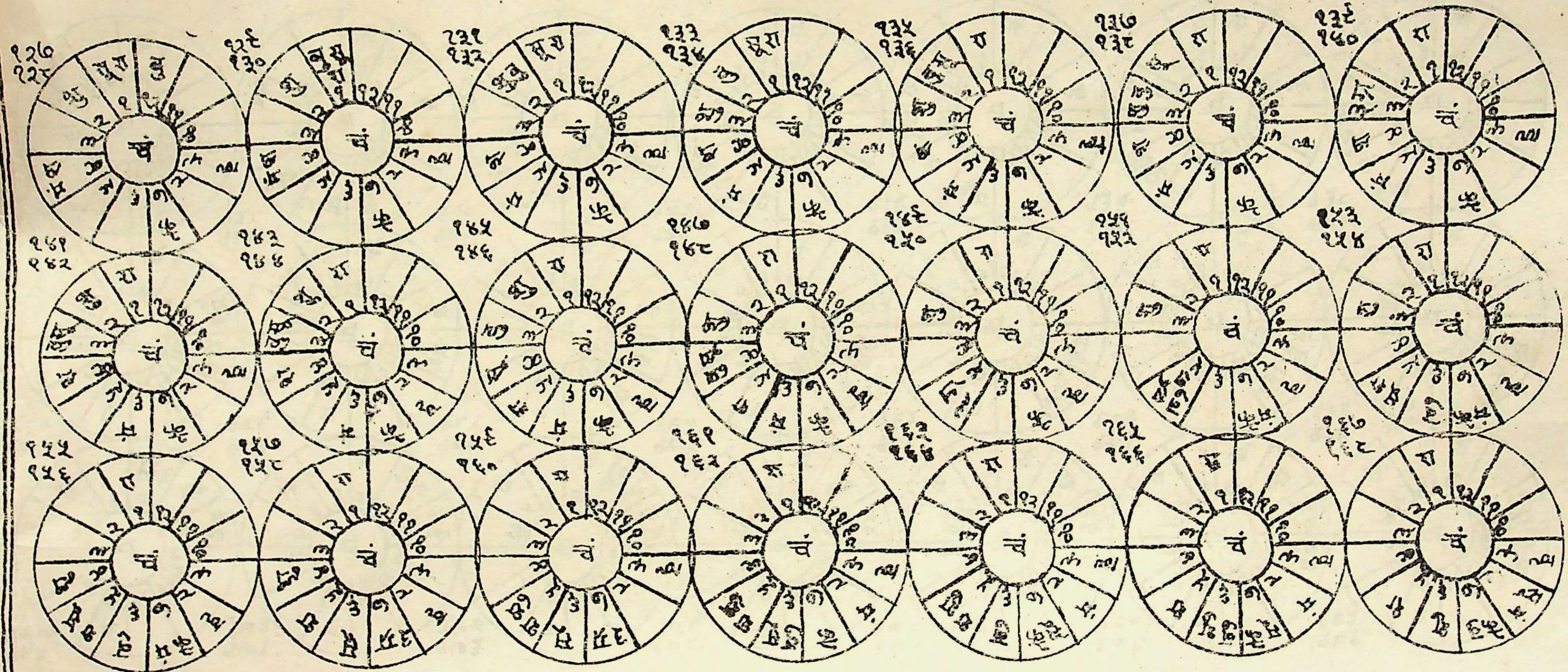
१९ २० | २१ २२ | २३ २४ | २५ २६ | २७ २८ | २९ ३० | ३१ ३२

३३ ३४ | ३५ ३६ | ३७ ३८ | ३९ ४० | ४१ ४२ | ५७७ ५७८ | ५७९ ५८०

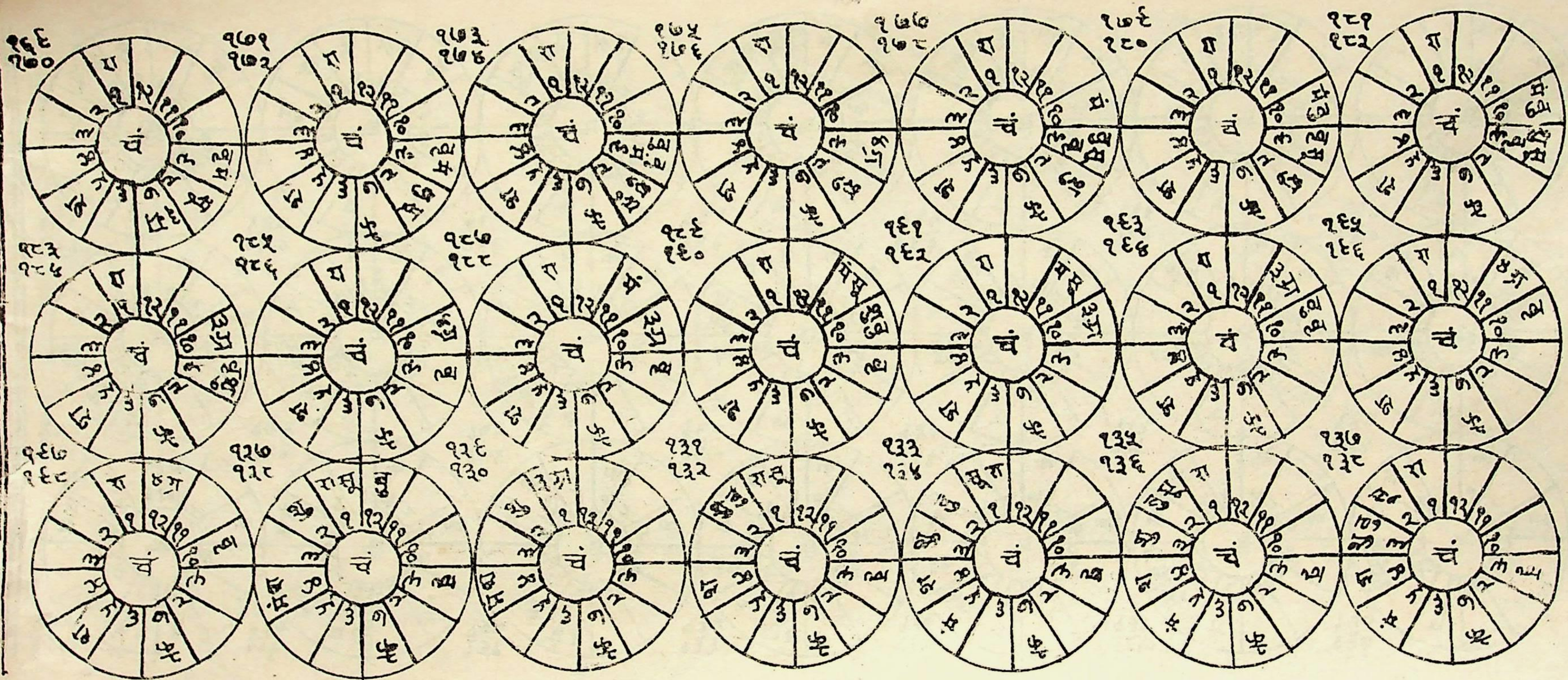
५८१ ५८२ | ५८३ ५८४ | ५८५ ५८६ | ५८७ ५८८ | ५८९ ५९० | ५९१ ५९२ | ५९३ ५९४



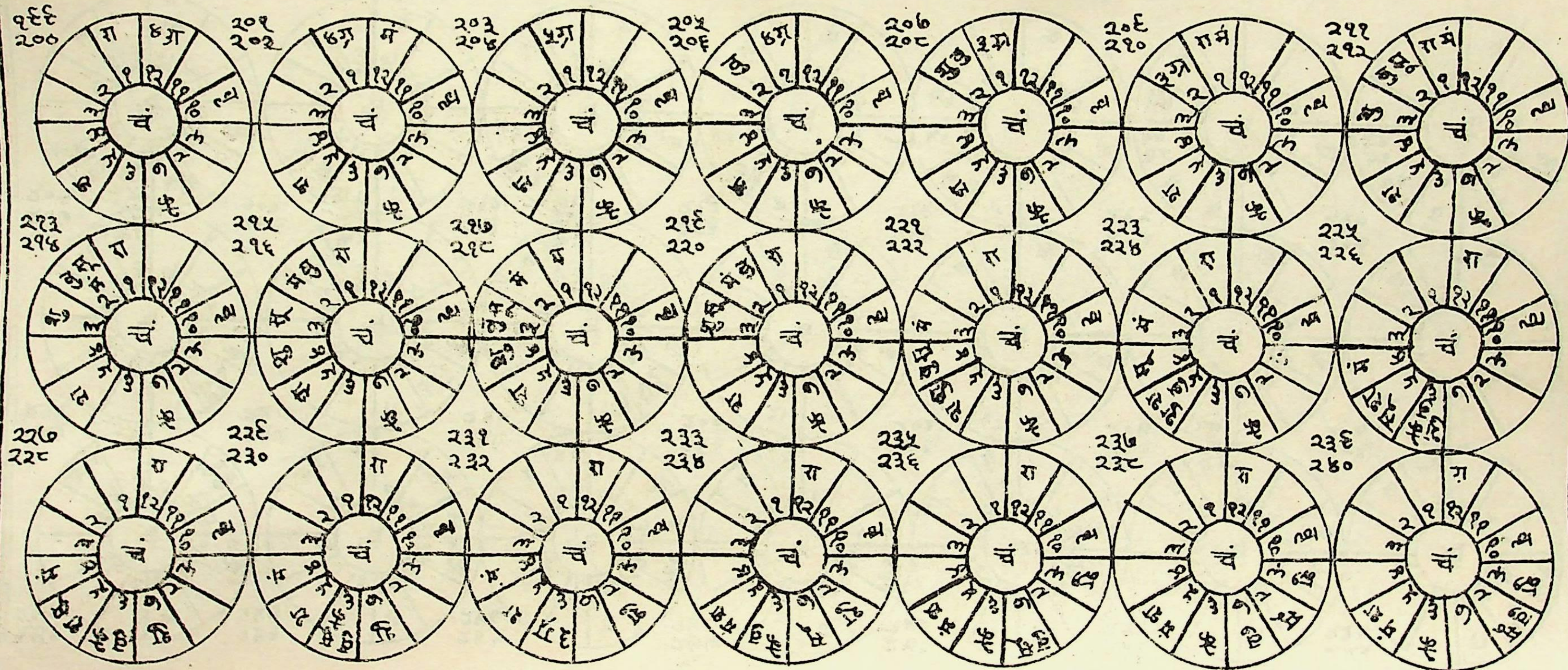


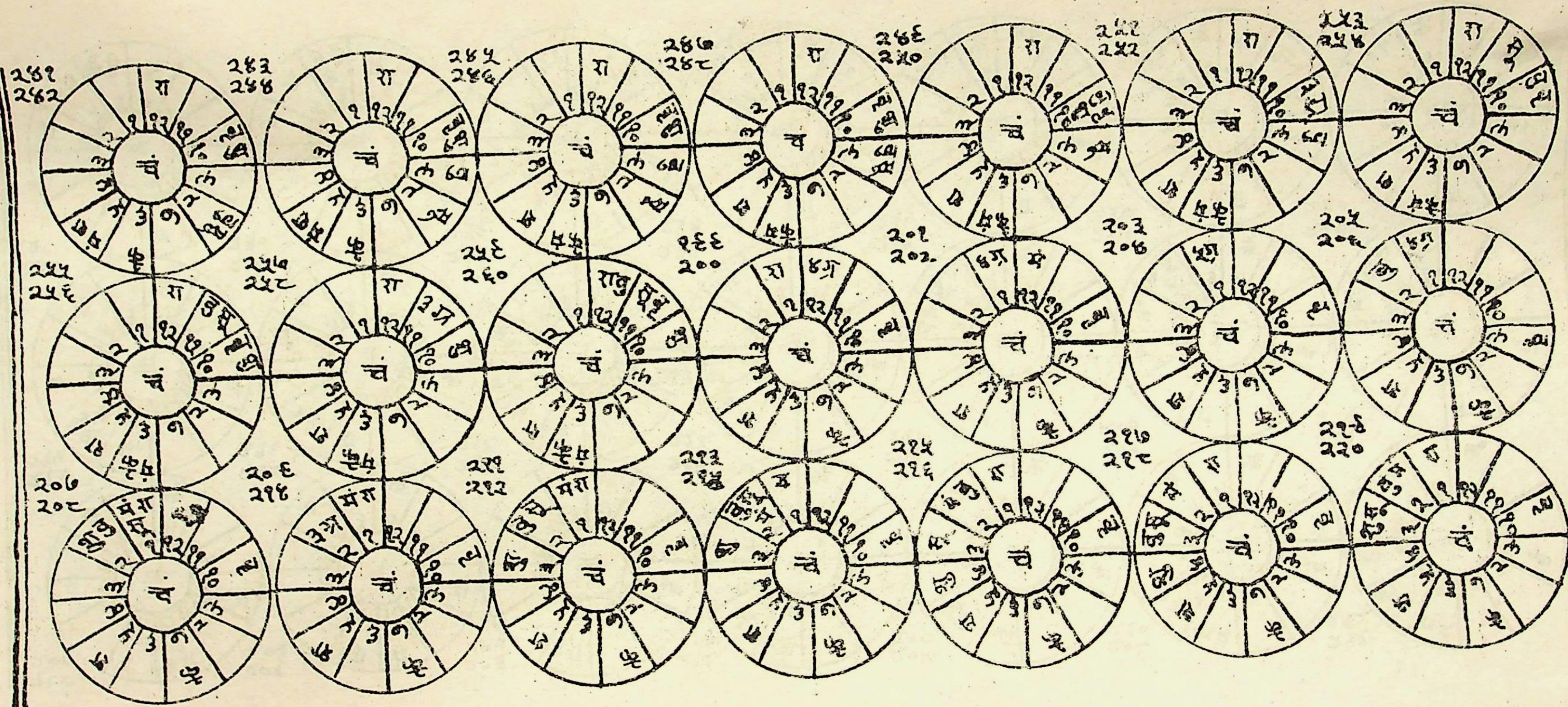


रख०
पृ०सं०
६२

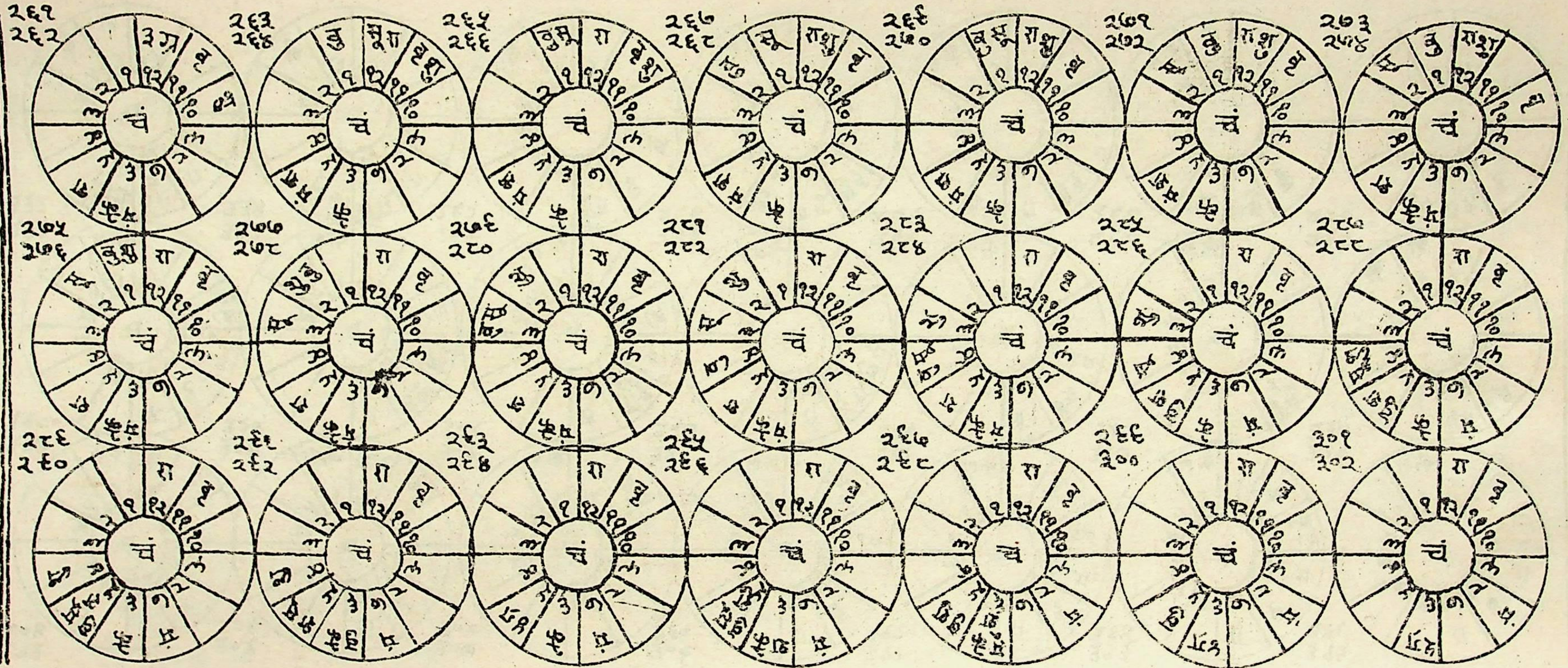


कुं०ख० मृ०ख० ६३

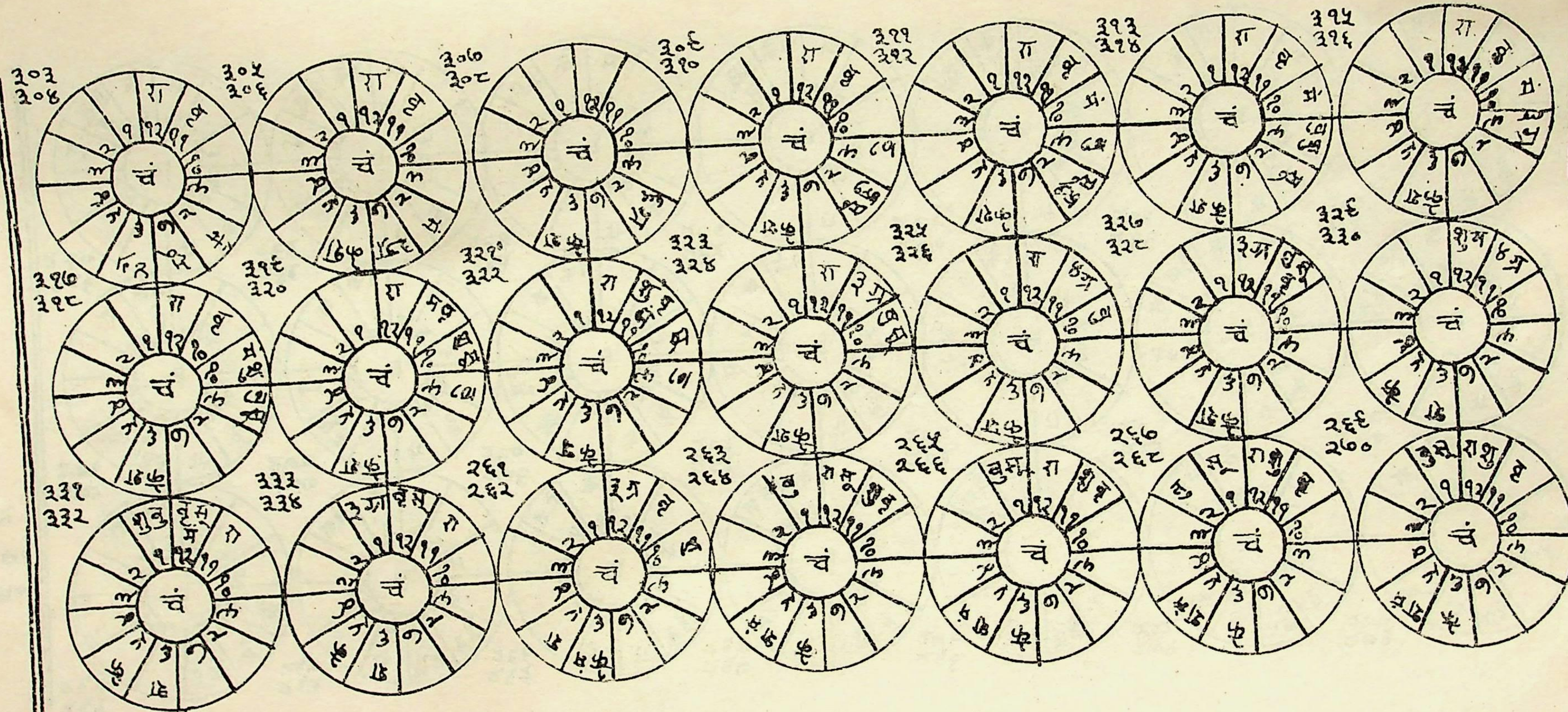


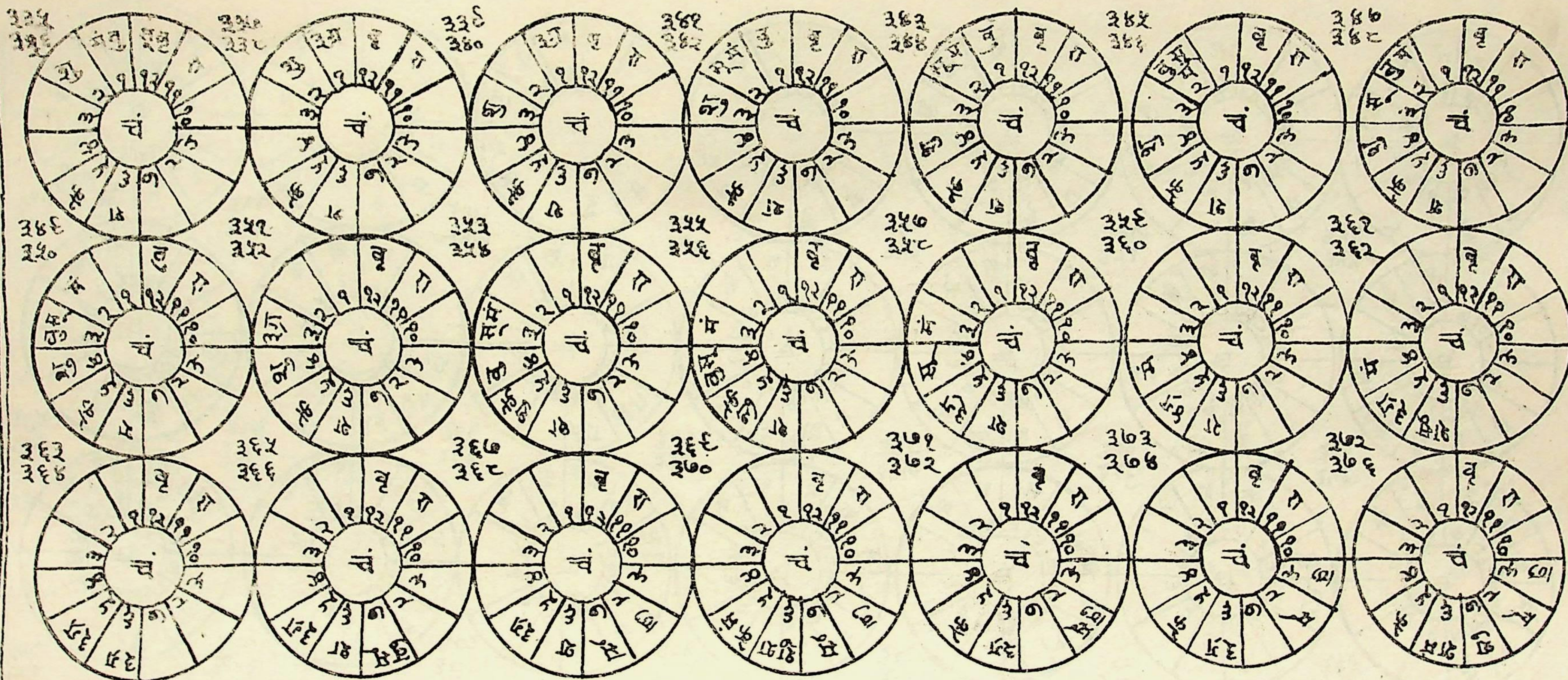


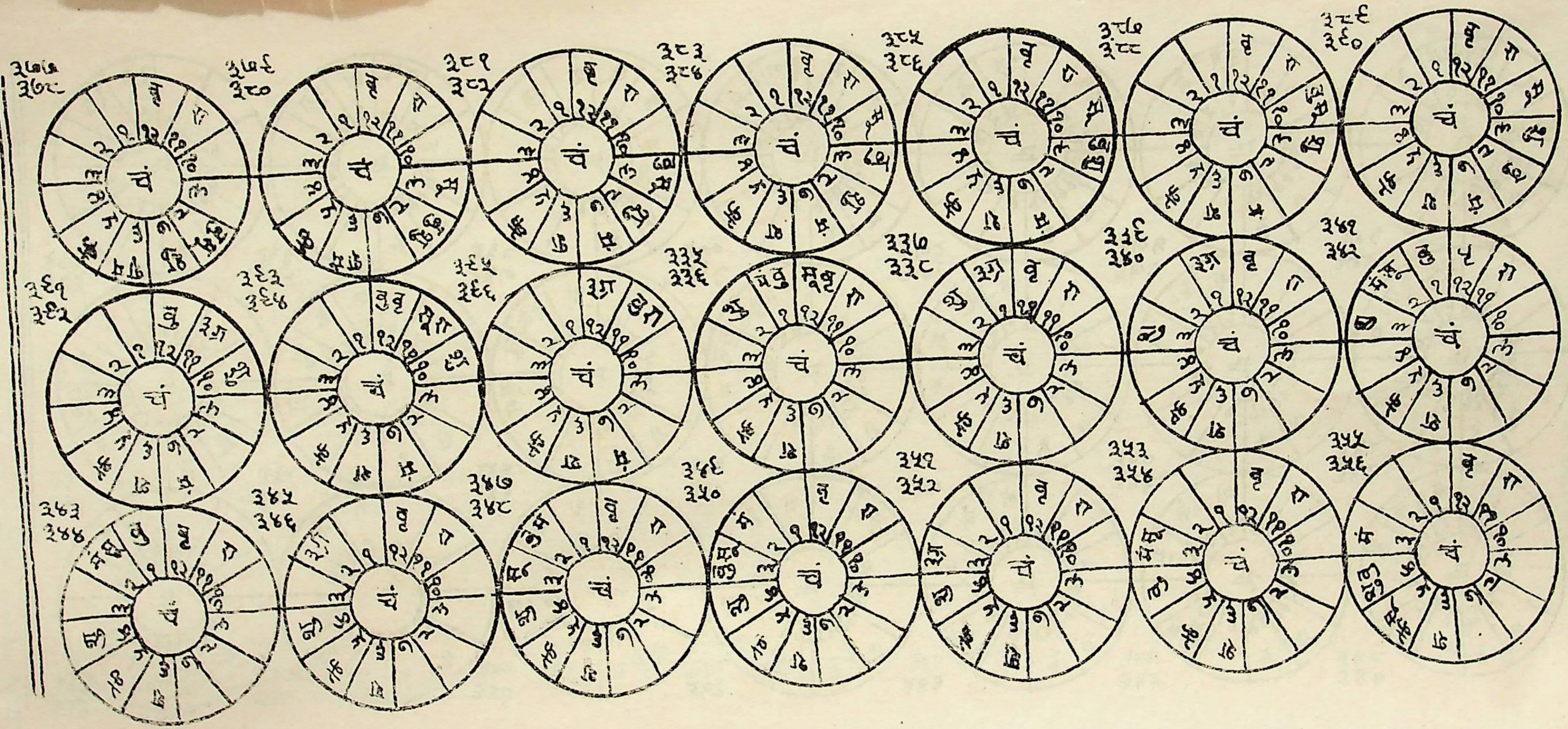
कुं०ख०
मृ०स०
६५


२६१ २६२
२६३ २६४
२६५ २६६
२६७ २६८
२६९ २७०
२७१ २७२
२७३ २७४
२७५ २७६
२७७ २७८
२७९ २८०
२८१ २८२
२८३ २८४
२८५ २८६
२८७ २८८
२८९ २९०
२९१ २९२
२९३ २९४
२९५ २९६
२९७ २९८
२९९ ३००
३०१ ३०२

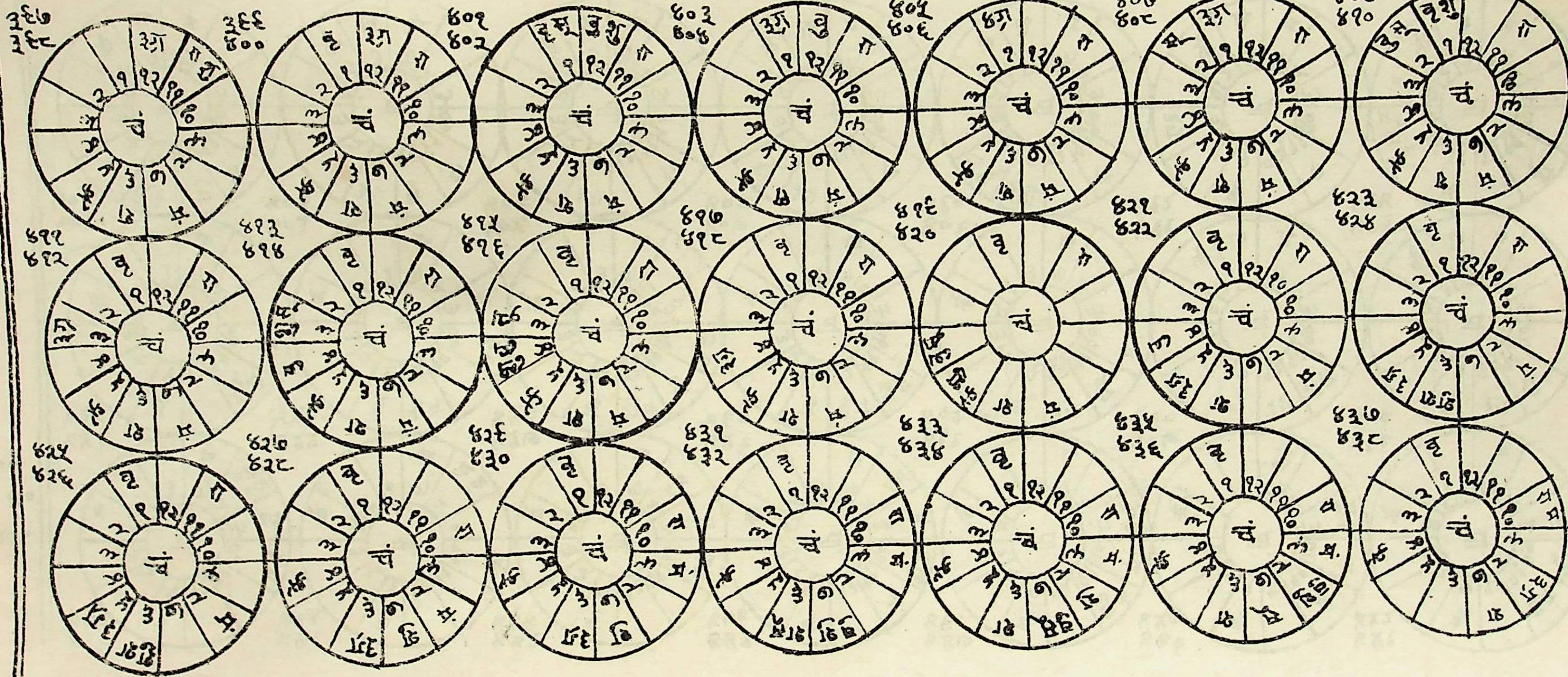
कुं०ख०
मृ०स०
६६

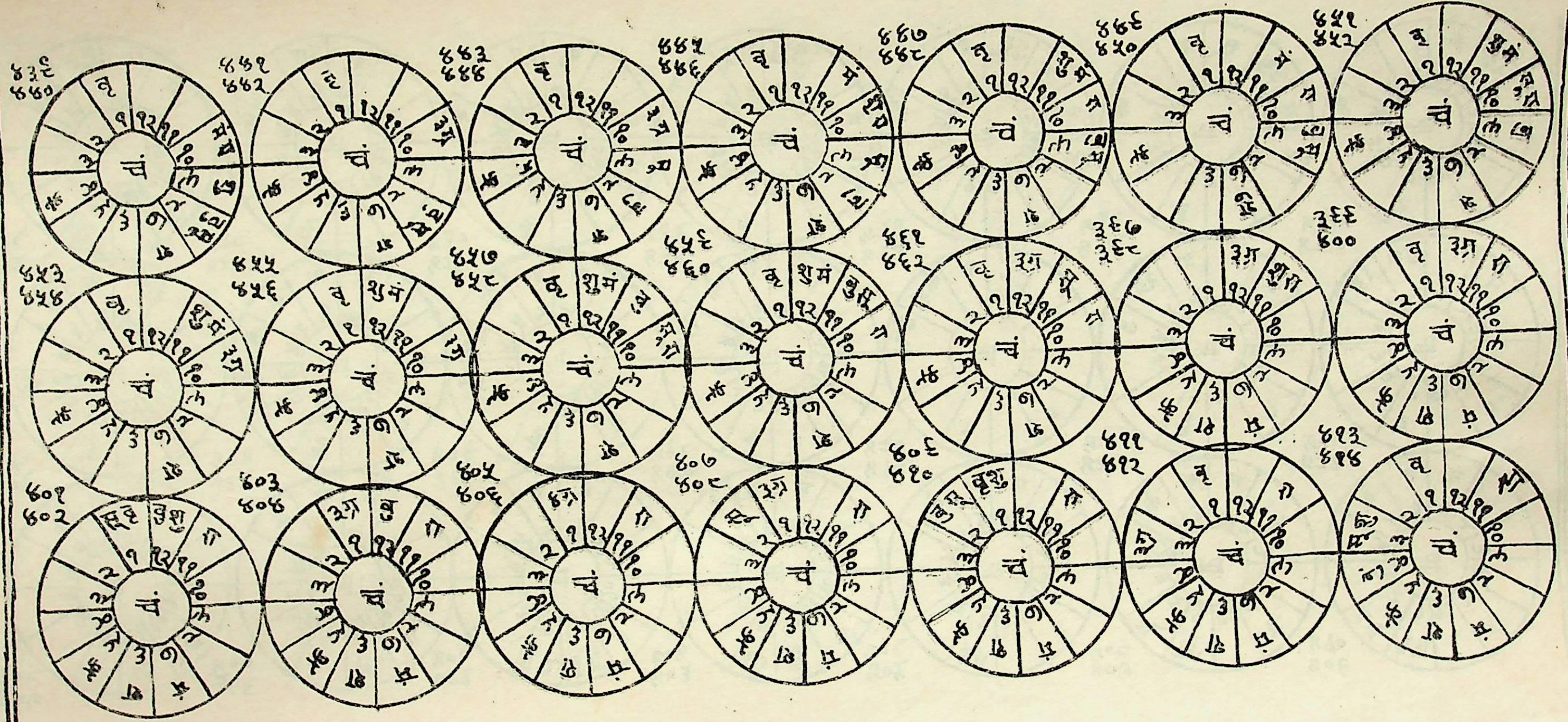



३३५ ३३६
३३७ ३३८
३३९ ३४०
३४१ ३४२
३४३ ३४४
३४५ ३४६
३४७ ३४८
३४९ ३५०
३५१ ३५२
३५३ ३५४
३५५ ३५६
३५७ ३५८
३५९ ३६०
३६१ ३६२
३६३ ३६४
३६५ ३६६
३६७ ३६८
३६९ ३७०
३७१ ३७२
३७३ ३७४
३७५ ३७६

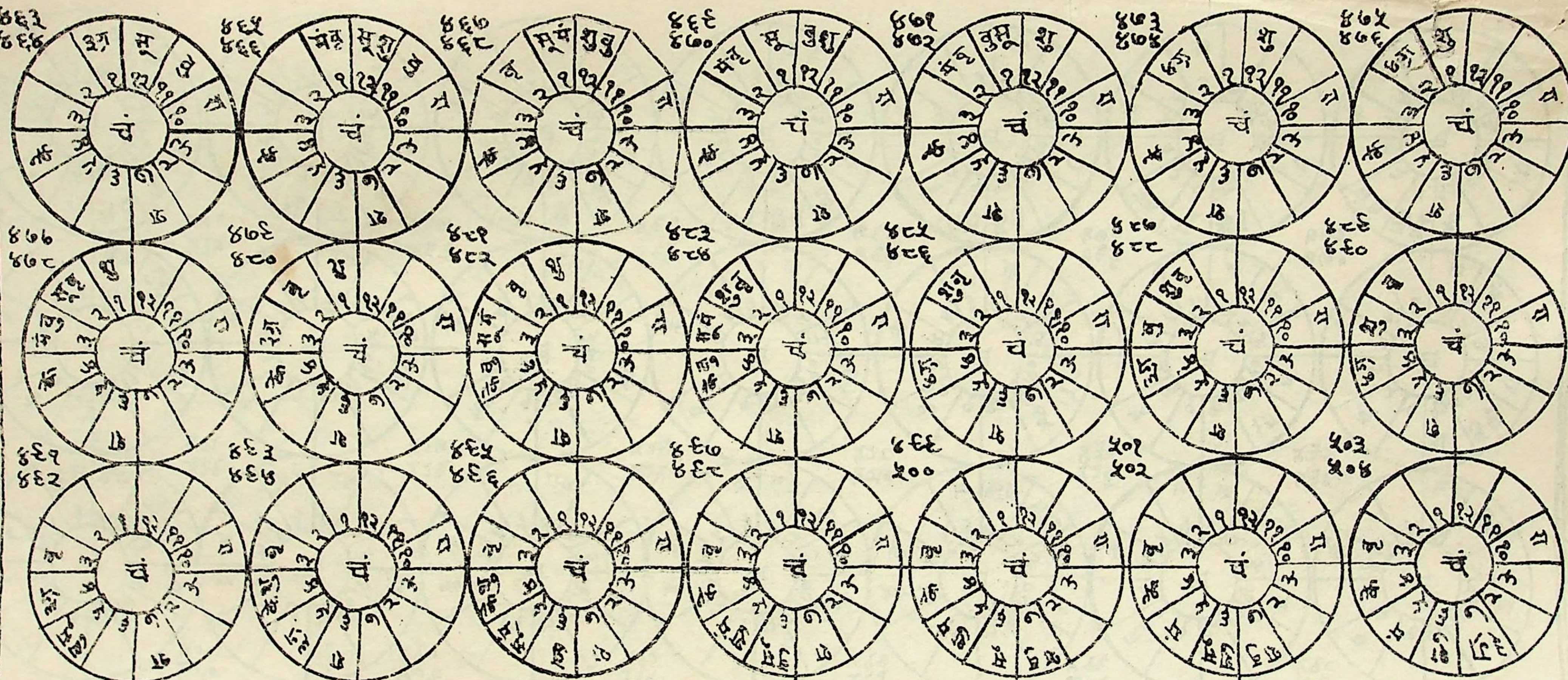


कुं० खं०
मू० स०
६६

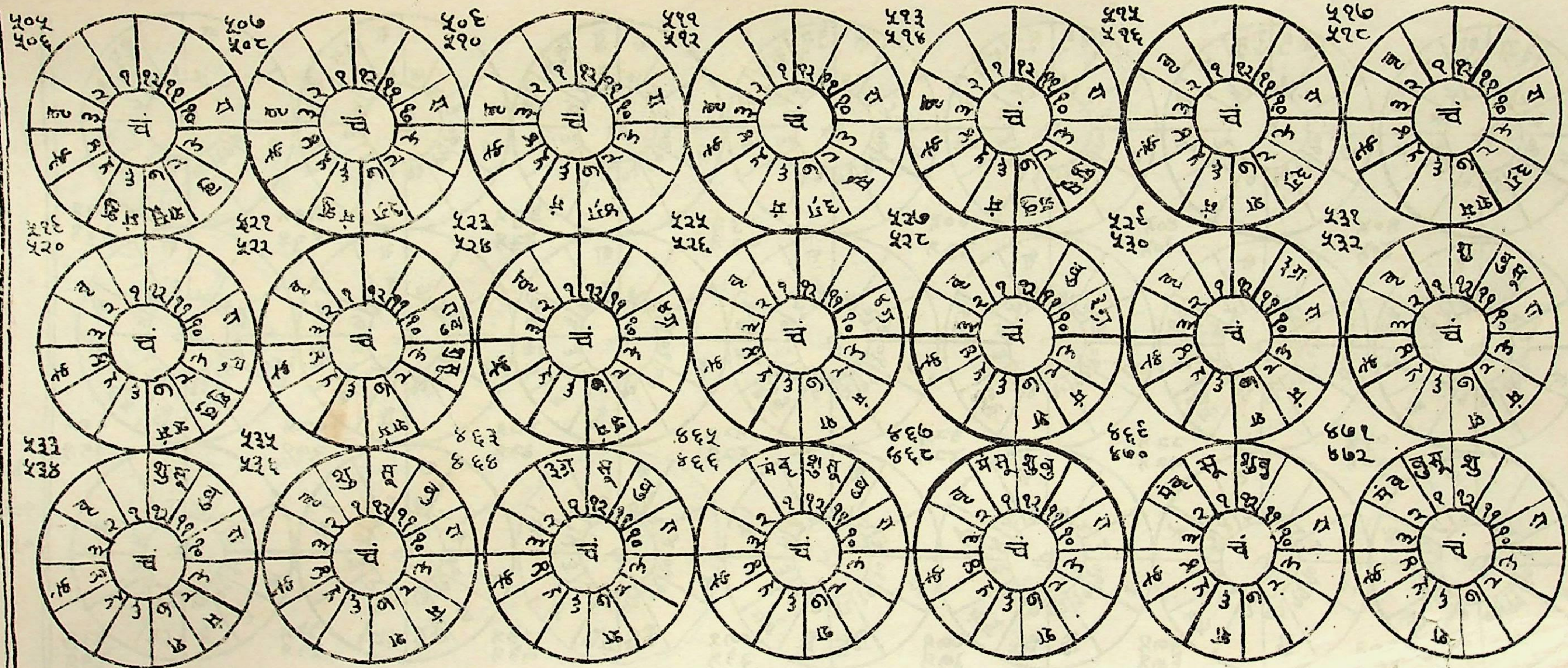

३९७ ३९८
३९९ ४००
४०१ ४०२
४०३ ४०४
४०५ ४०६
४०७ ४०८
४०९ ४१०
४११ ४१२
४१३ ४१४
४१५ ४१६
४१७ ४१८
४१९ ४२०
४२१ ४२२
४२३ ४२४
४२५ ४२६
४२७ ४२८
४२९ ४३०
४३१ ४३२
४३३ ४३४
४३५ ४३६
४३७ ४३८

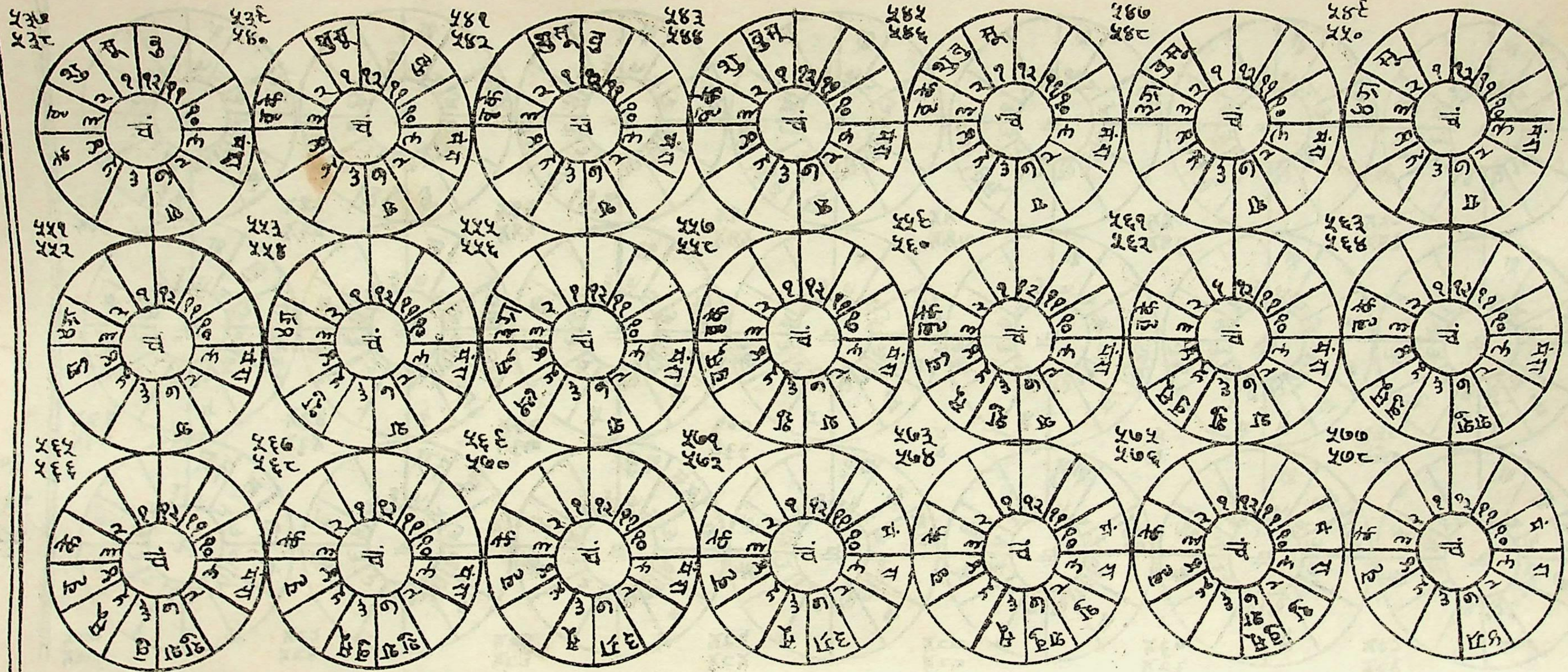


कुं० ख०
मृ० सं०
१०१

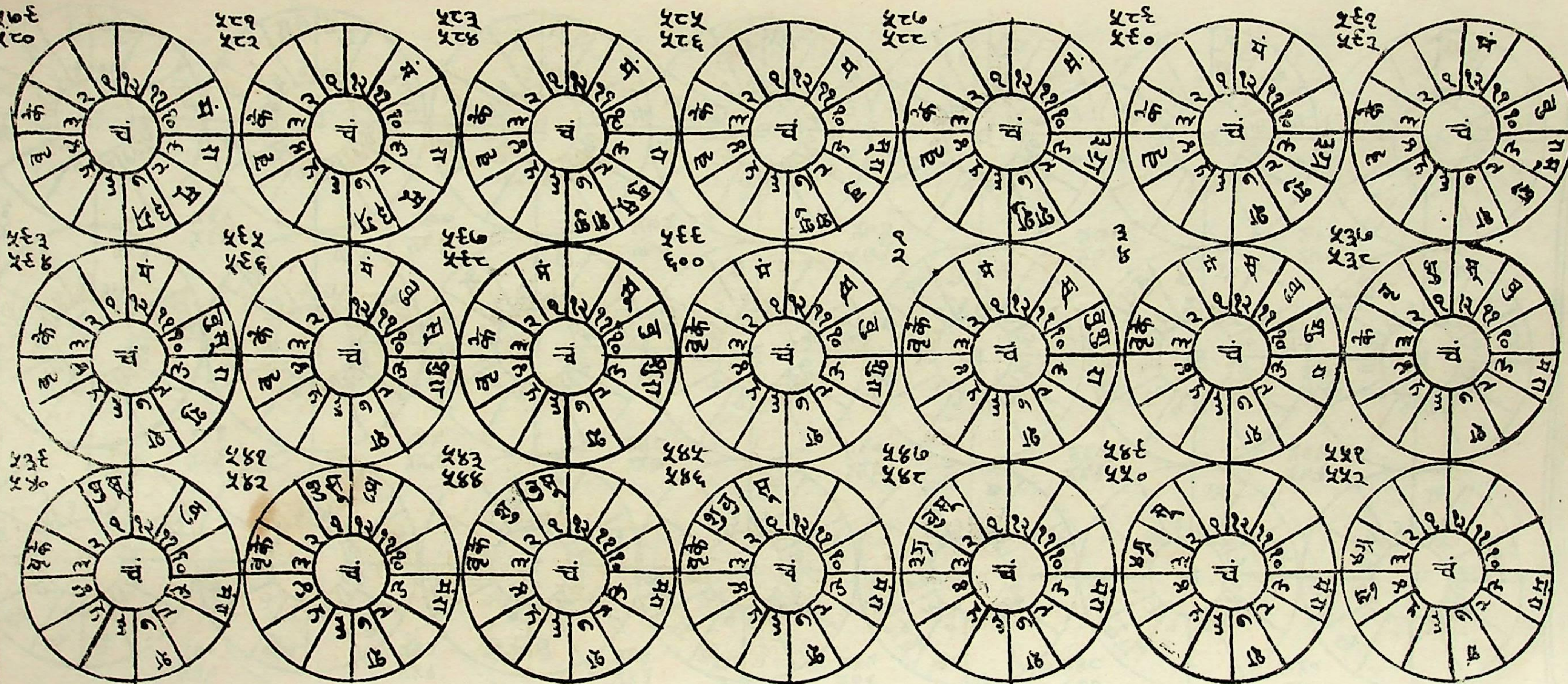


कुं०खं०
मू०सं०
१०२

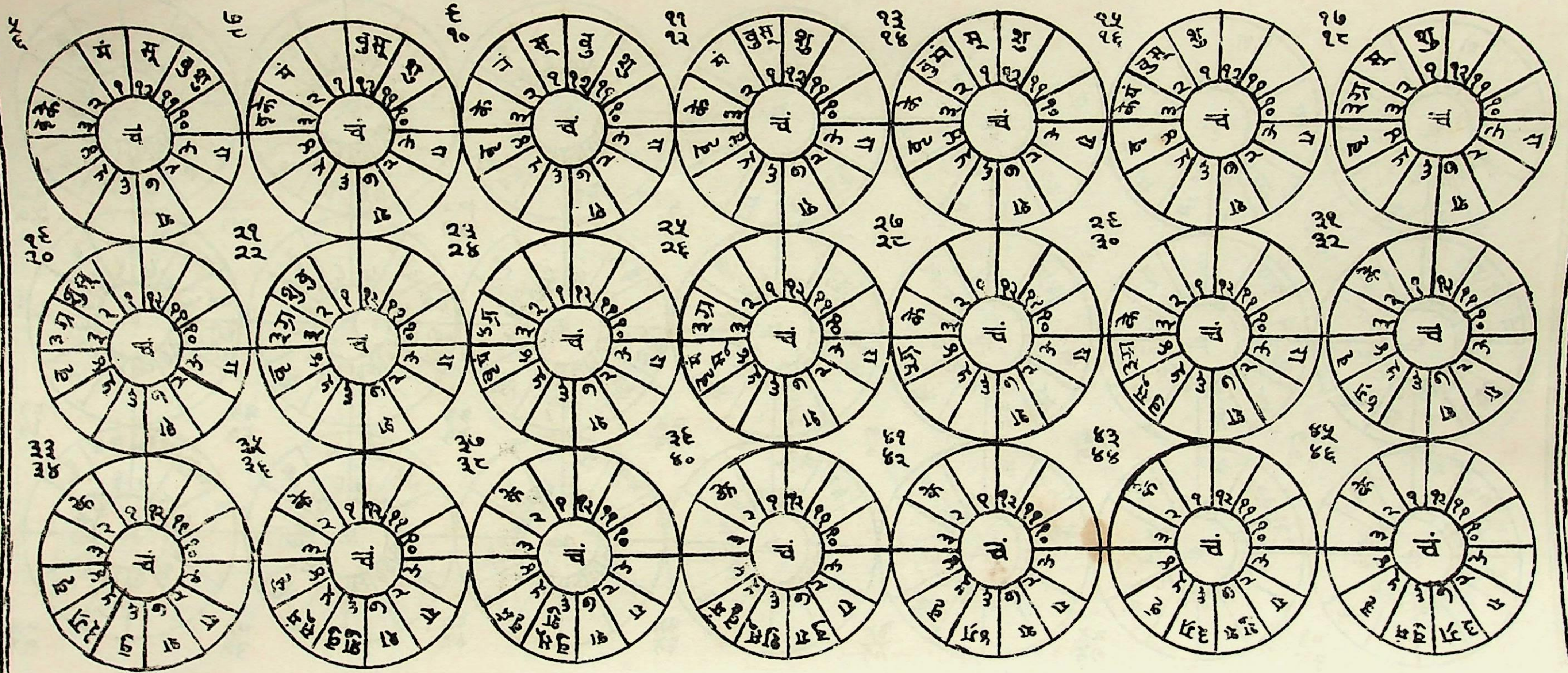


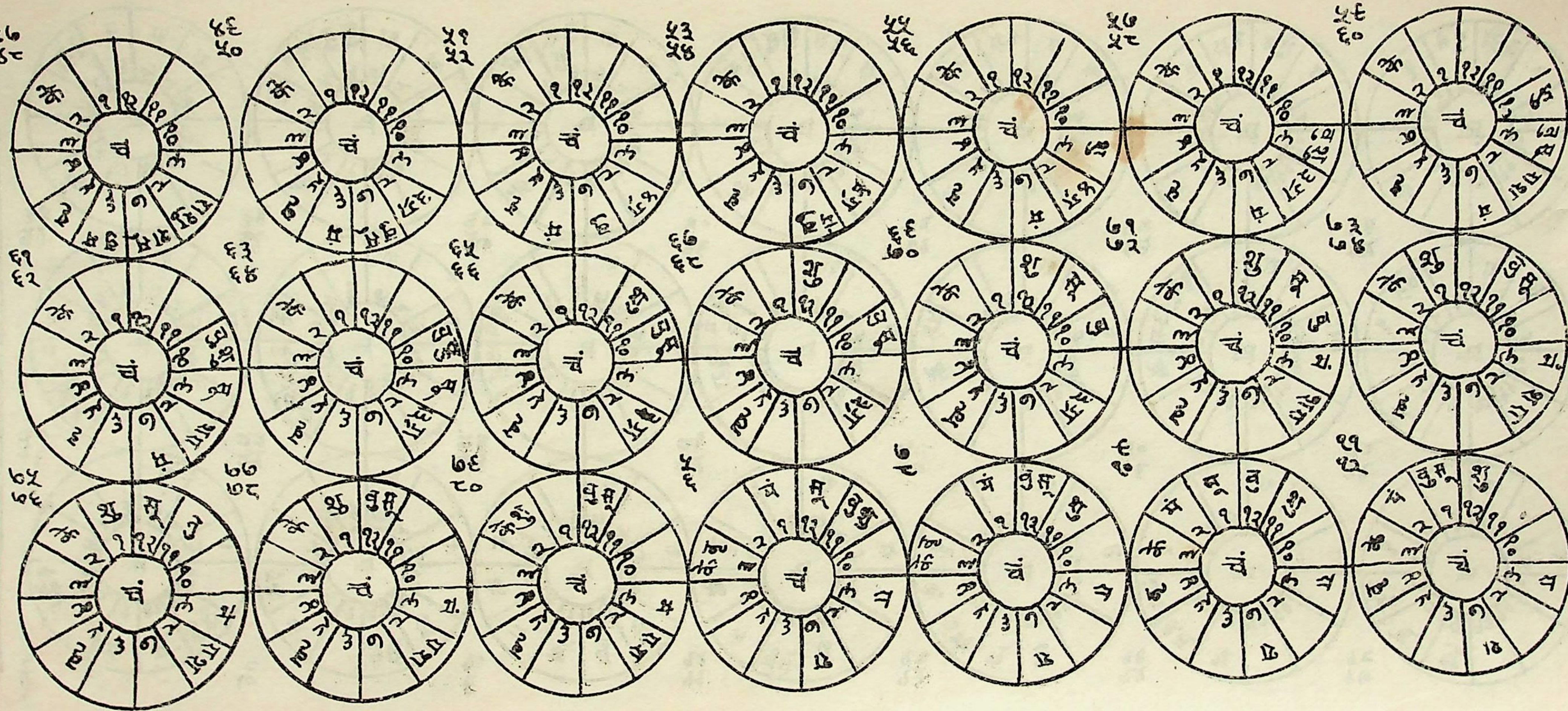


कुं० नं०
पृ० सं०
१०४

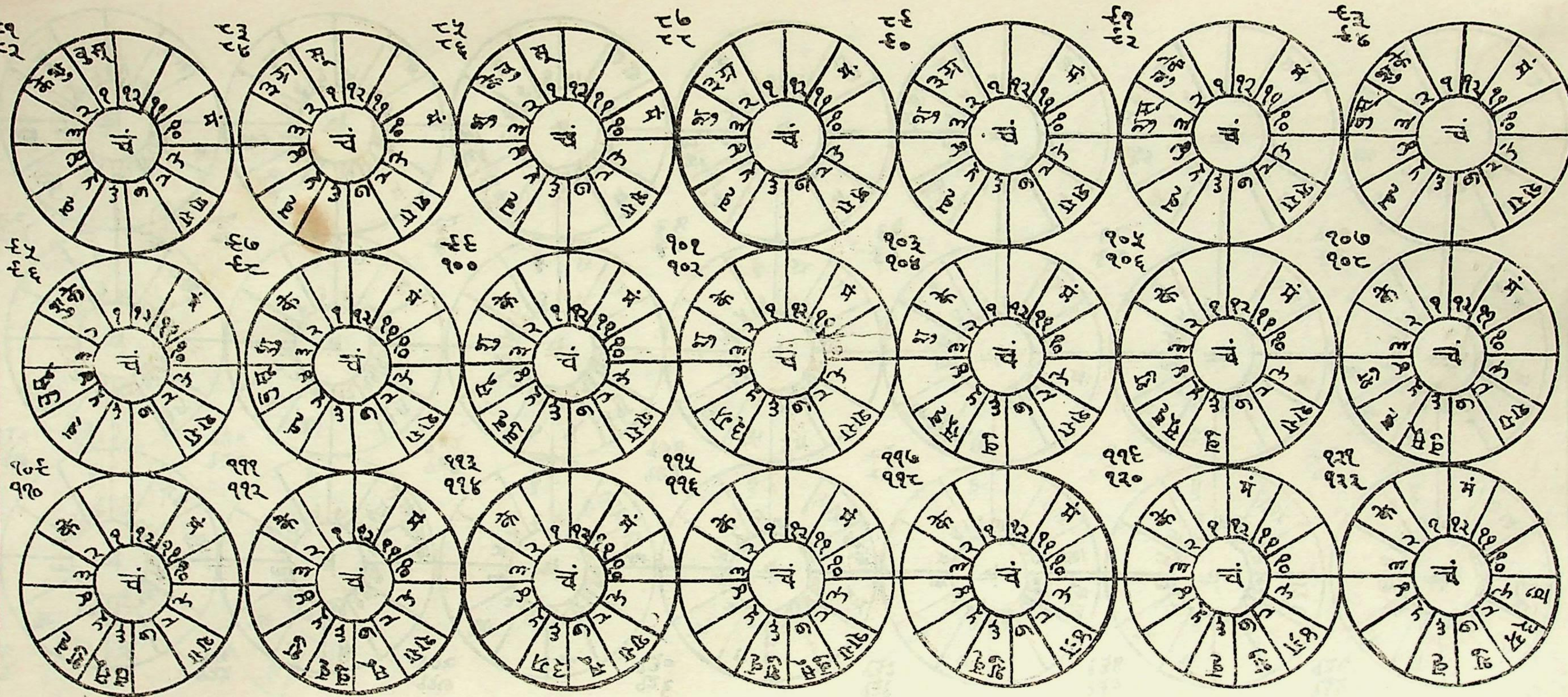


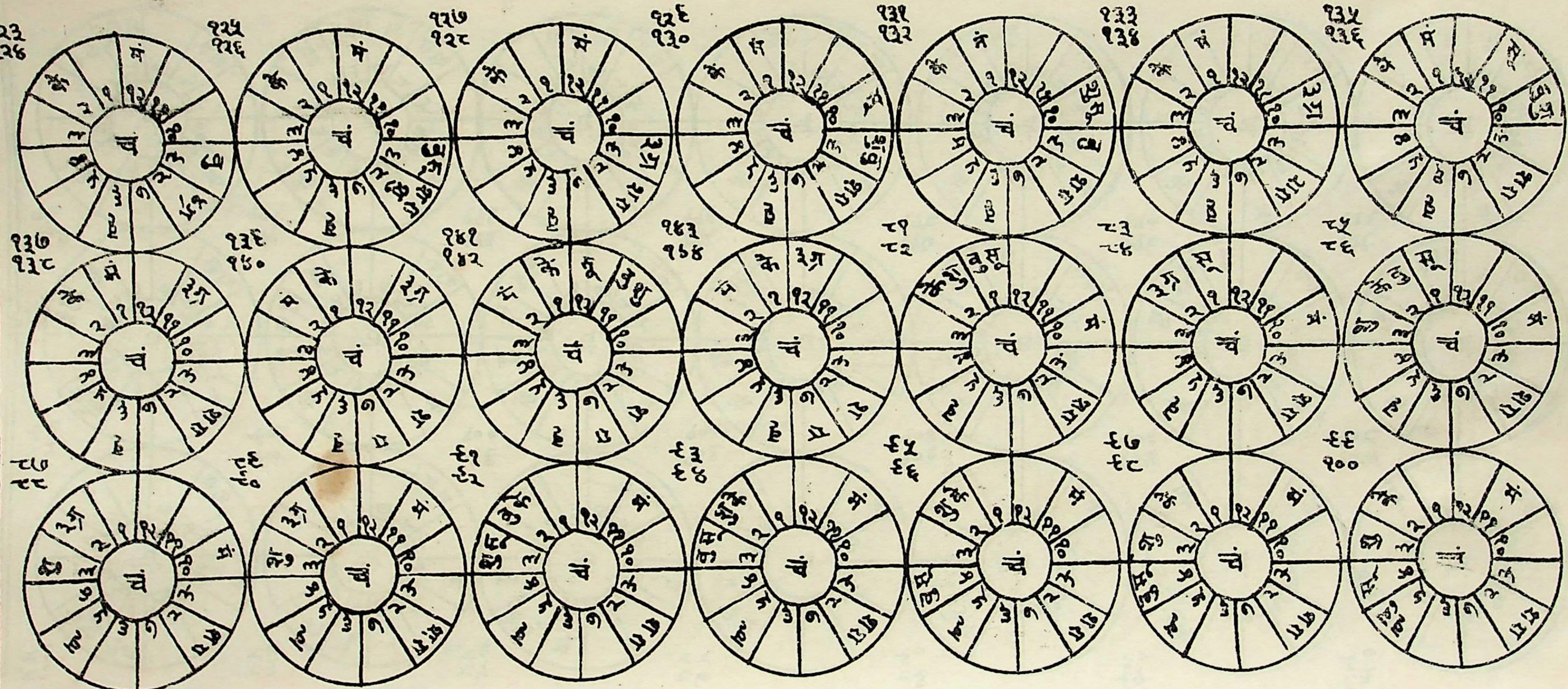
कुं०सं०
मु०सं०
१०५



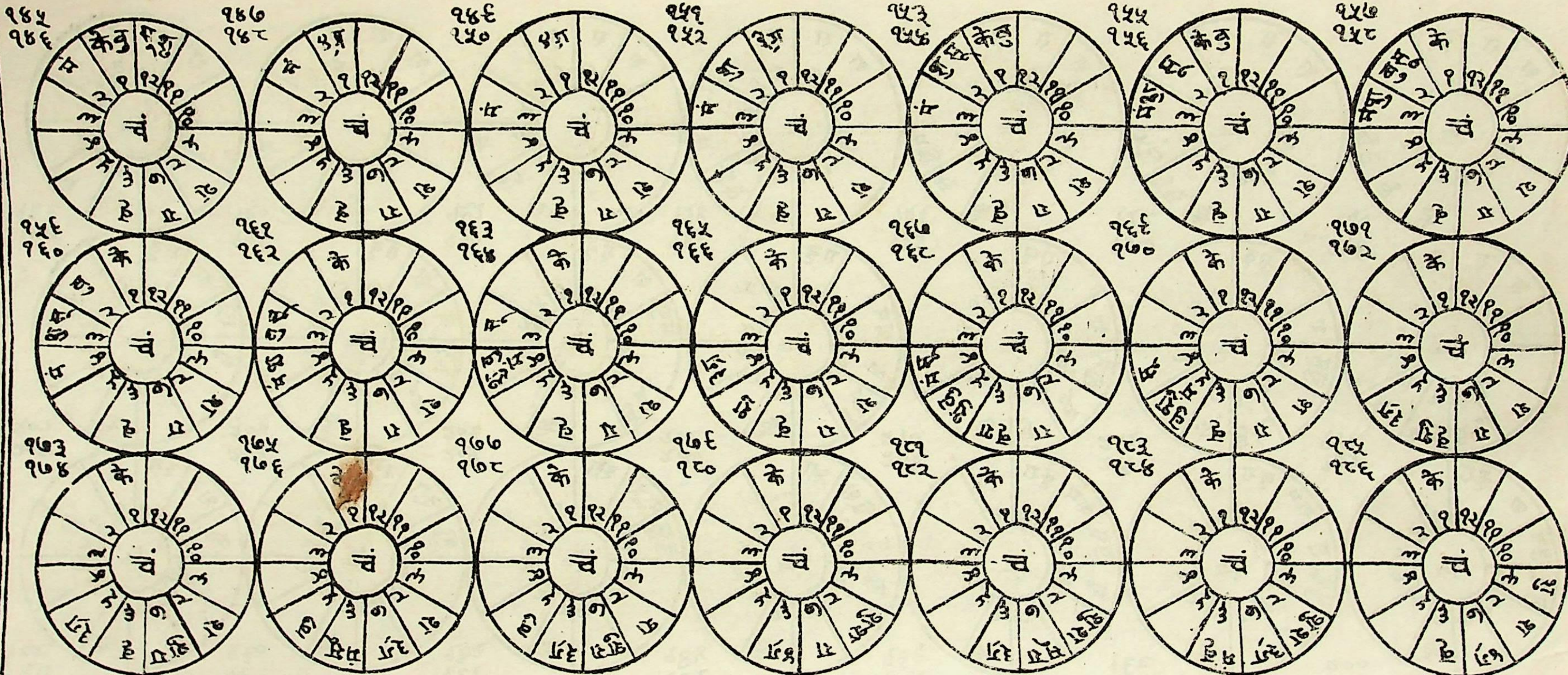


कुं०ख०
मु०सं०
१०७

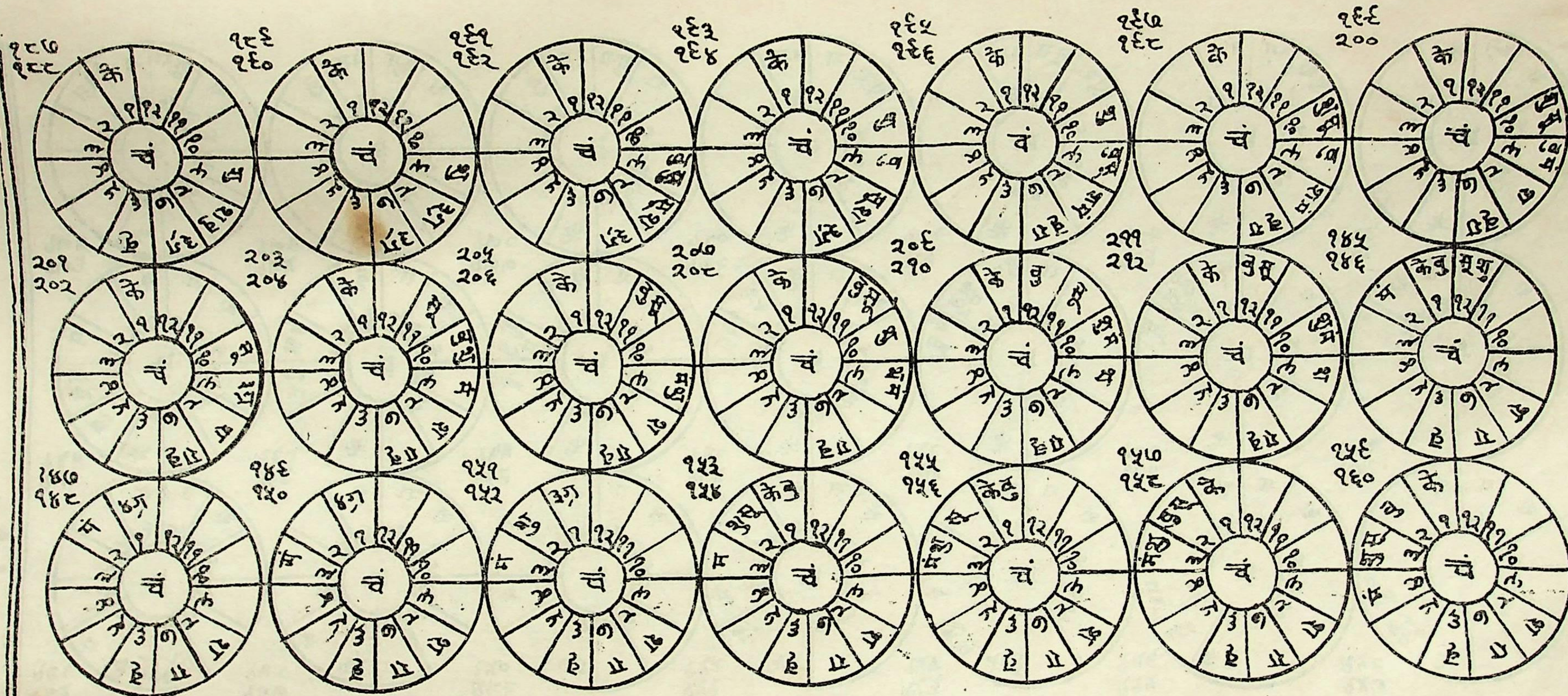




कुं० ख०
भू० सं०
१०६

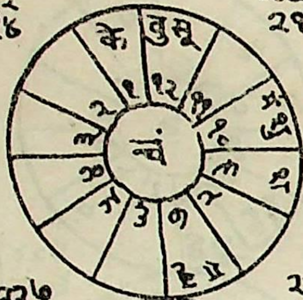


कं०ख०
मृ०मी०
११०



कुं०ल०
मृ०सं०
१११

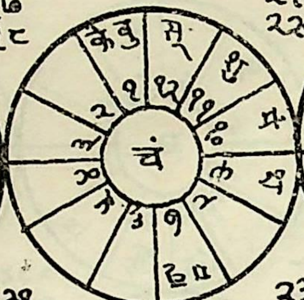
२१३
२१४



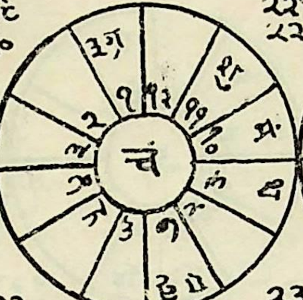
२१५
२१६



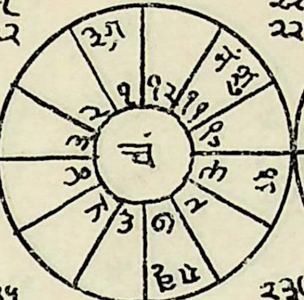
२१७
२१८



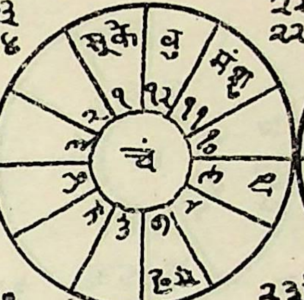
२१९
२२०



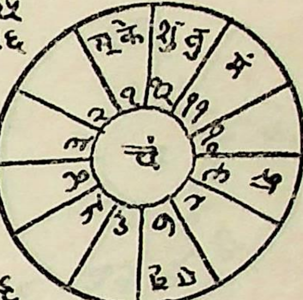
२२१
२२२



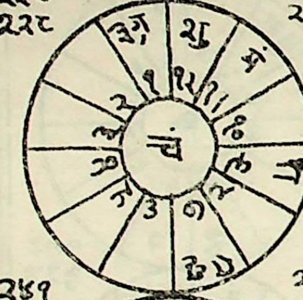
२२३
२२४



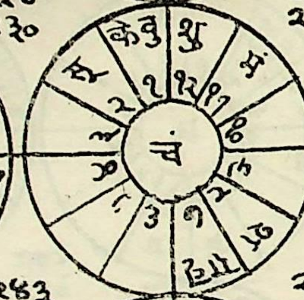
२२५
२२६



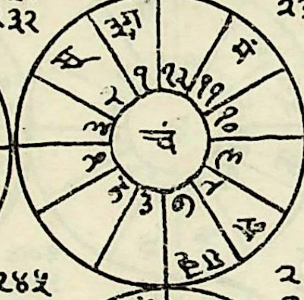
२२७
२२८



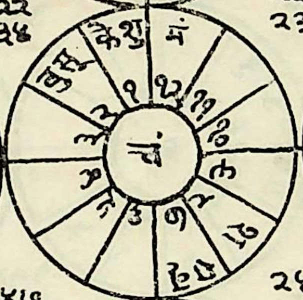
२२९
२३०



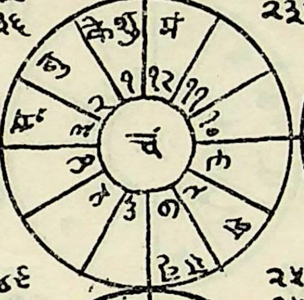
२३१
२३२



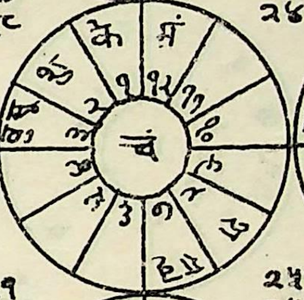
२३३
२३४



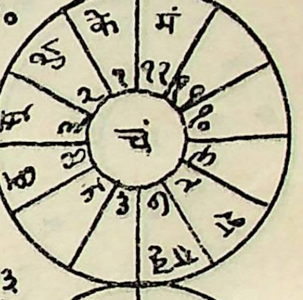
२३५
२३६



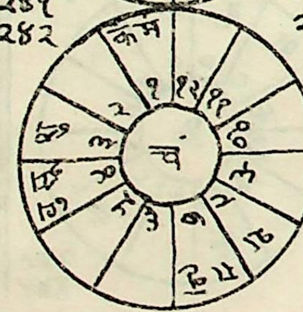
२३७
२३८



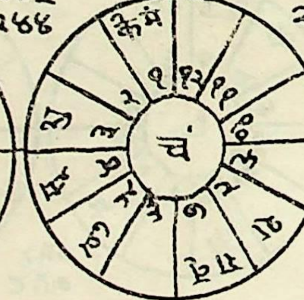
२३९
२४०



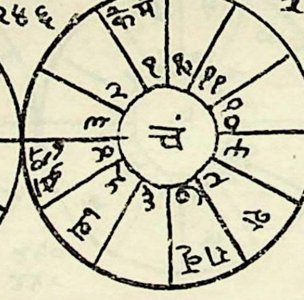
२४१
२४२



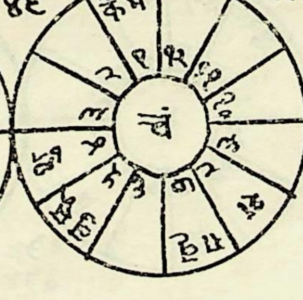
२४३
२४४



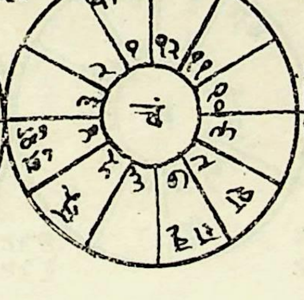
२४५
२४६



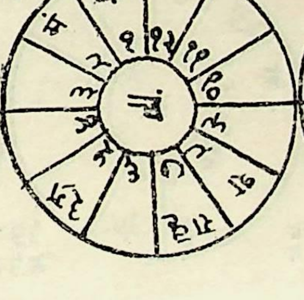
२४७
२४८



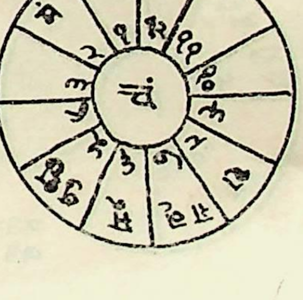
२४९
२५०



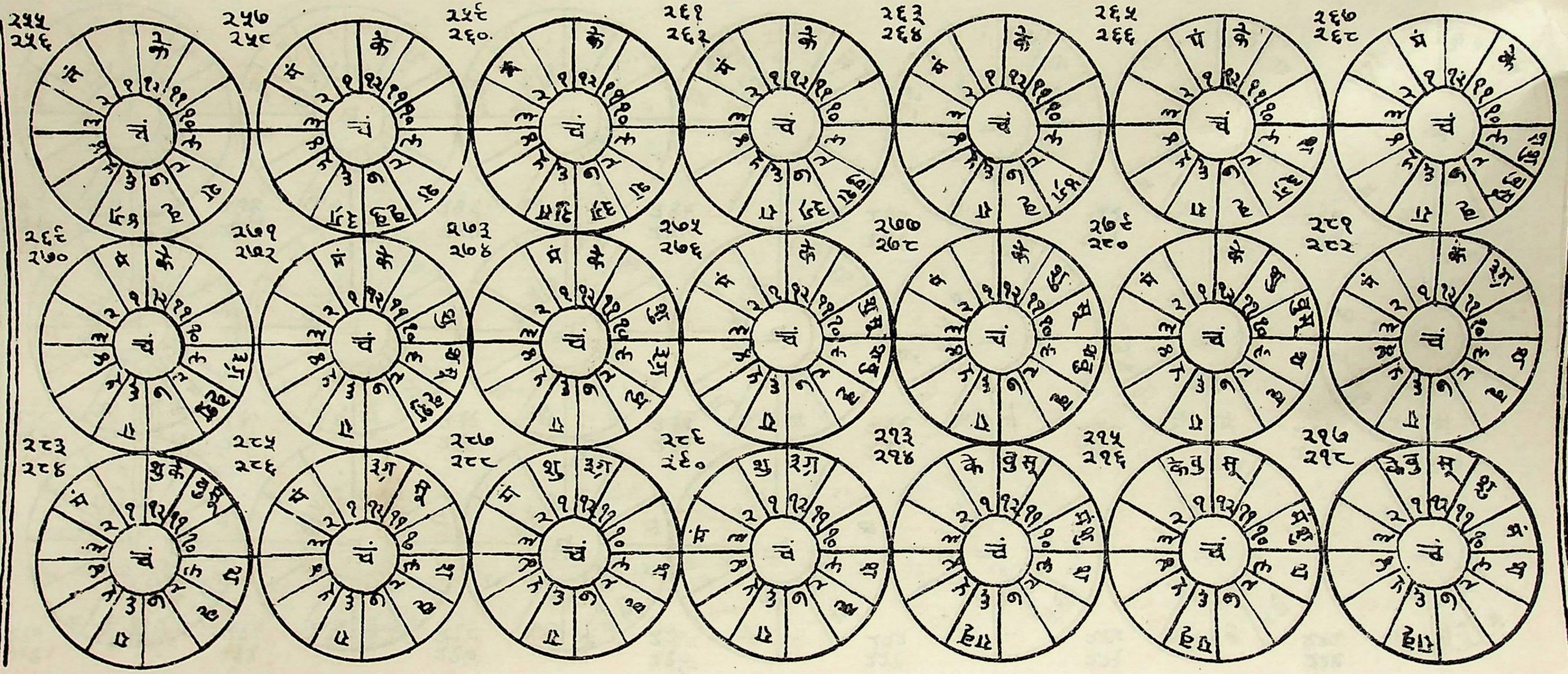
२५१
२५२



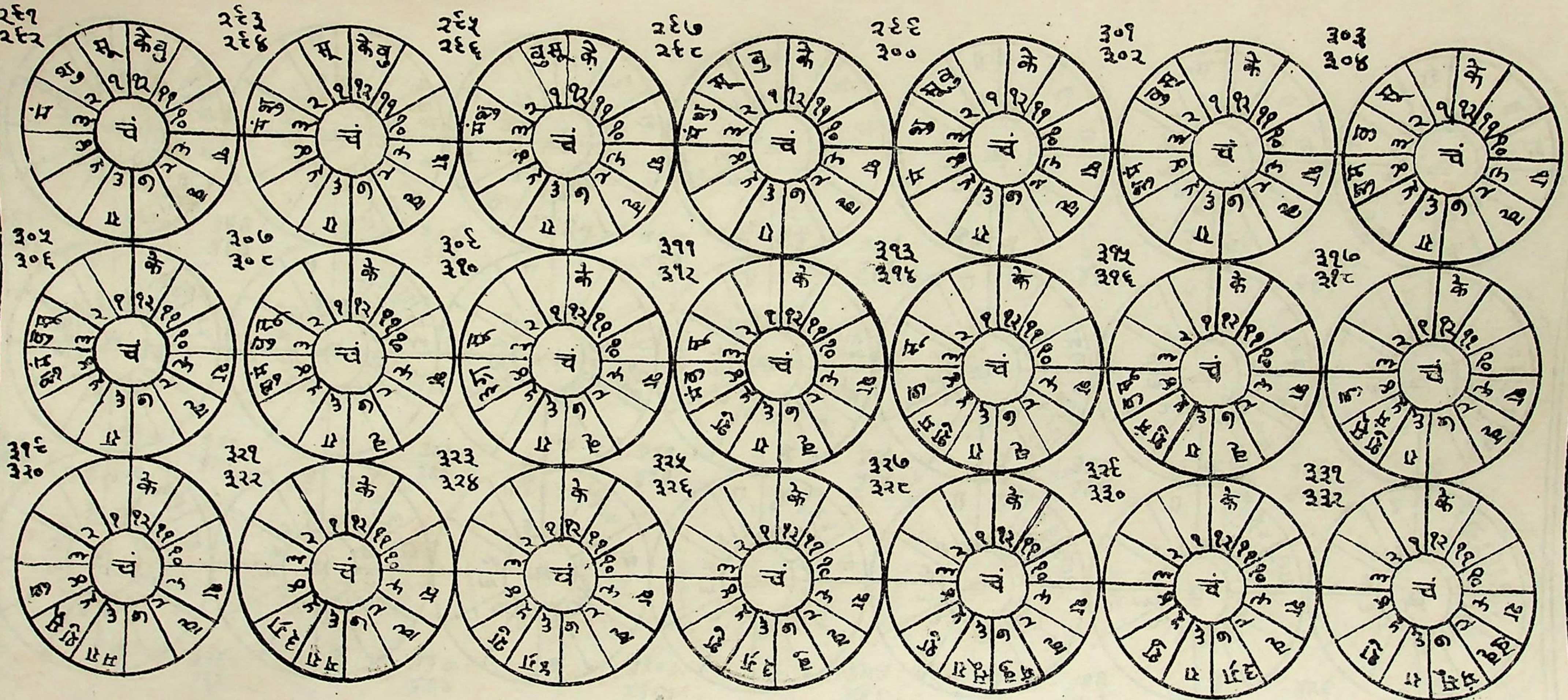
२५३
२५४



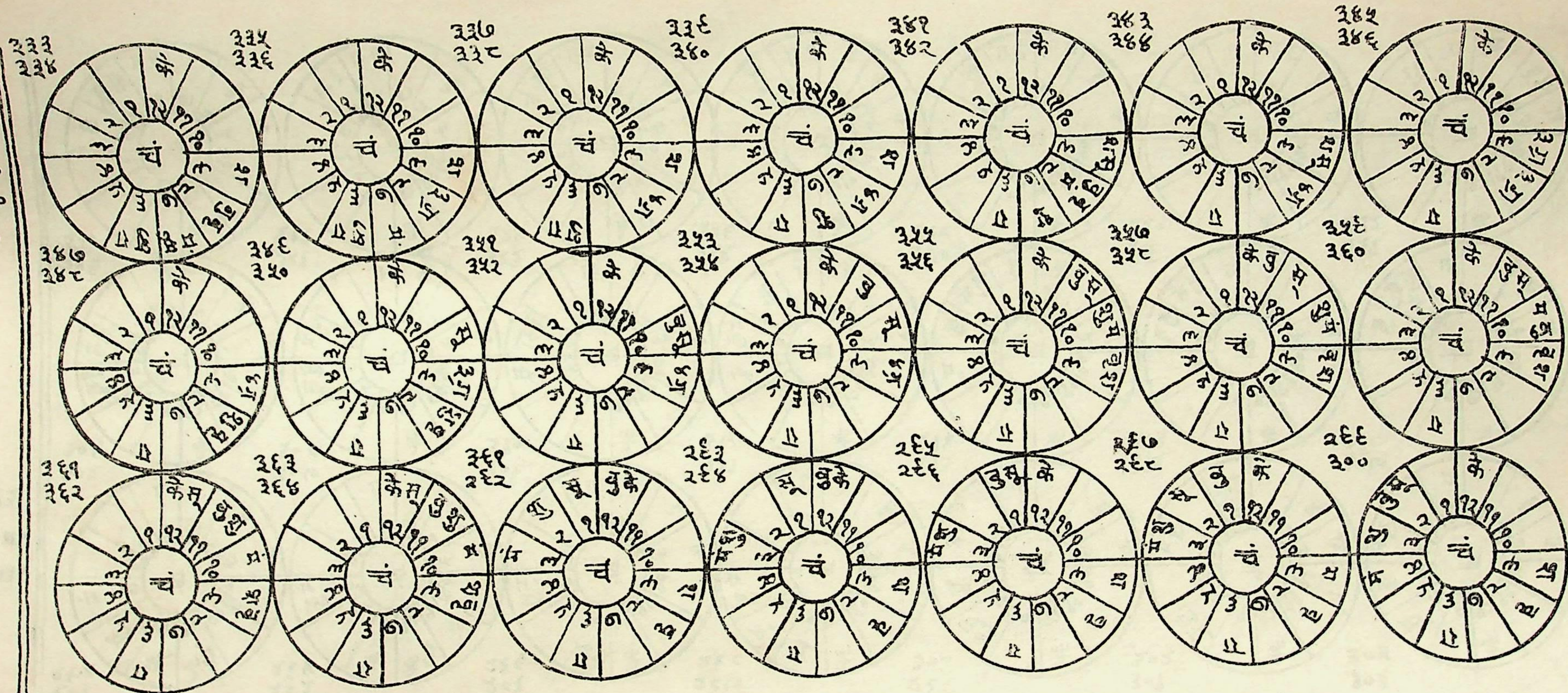
कुं०भा०
मू०सं०
११२

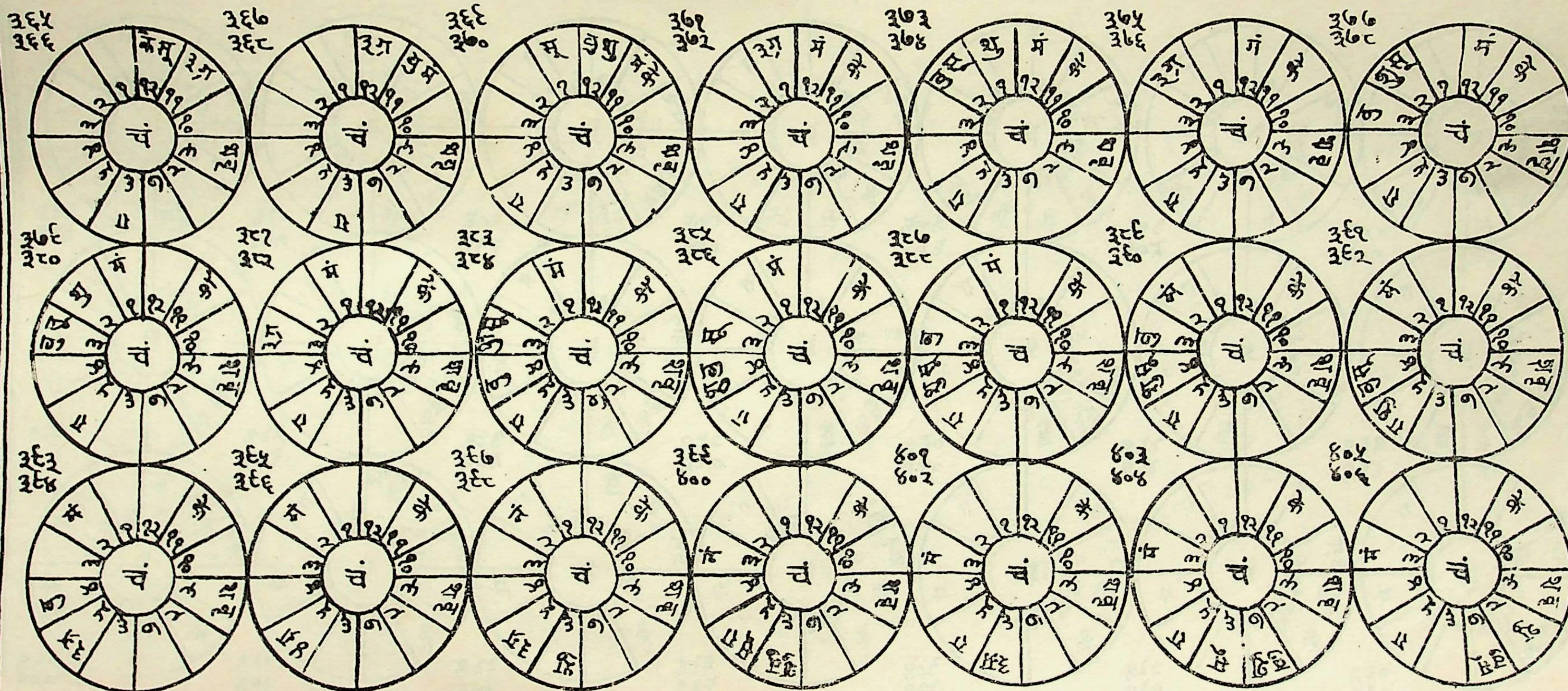


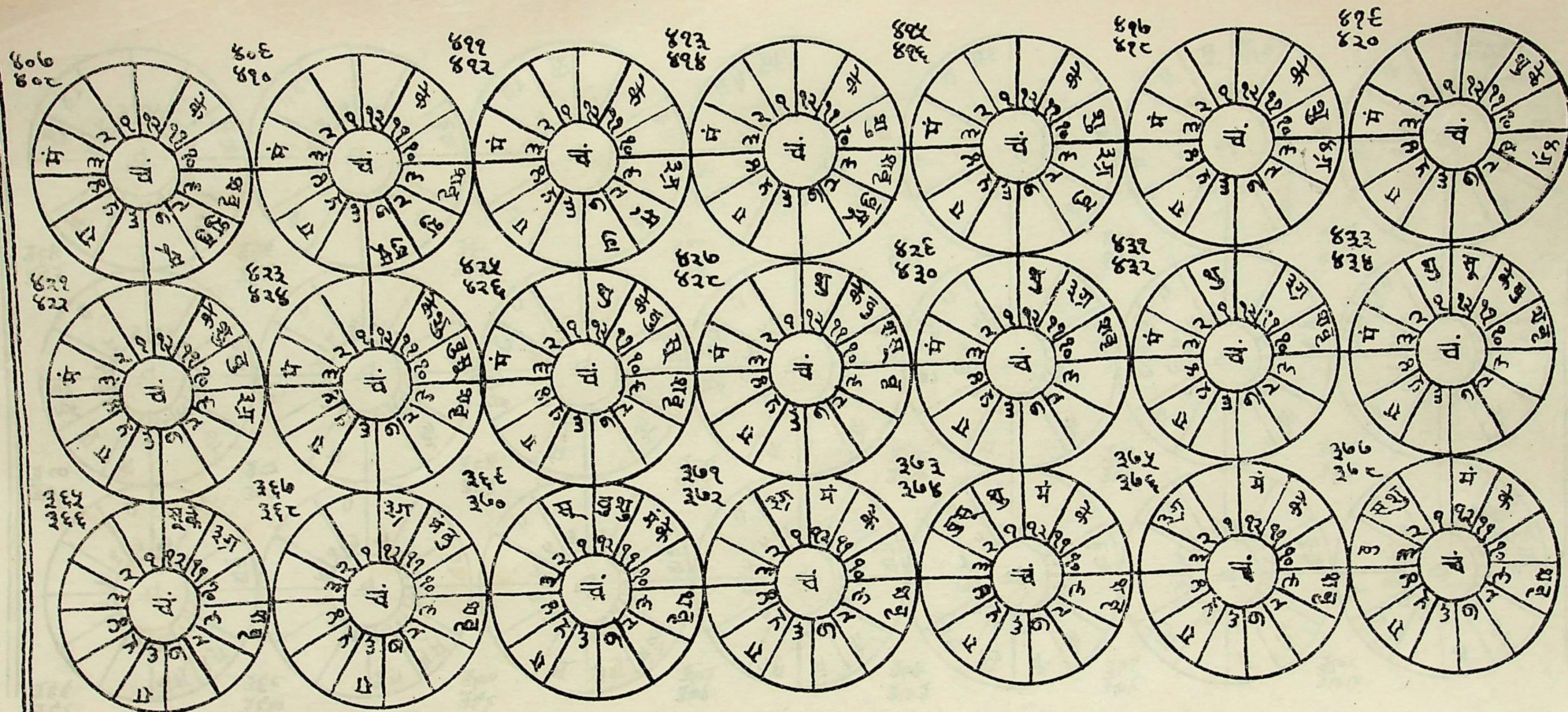
कुं० ल०
मू० म०
११३



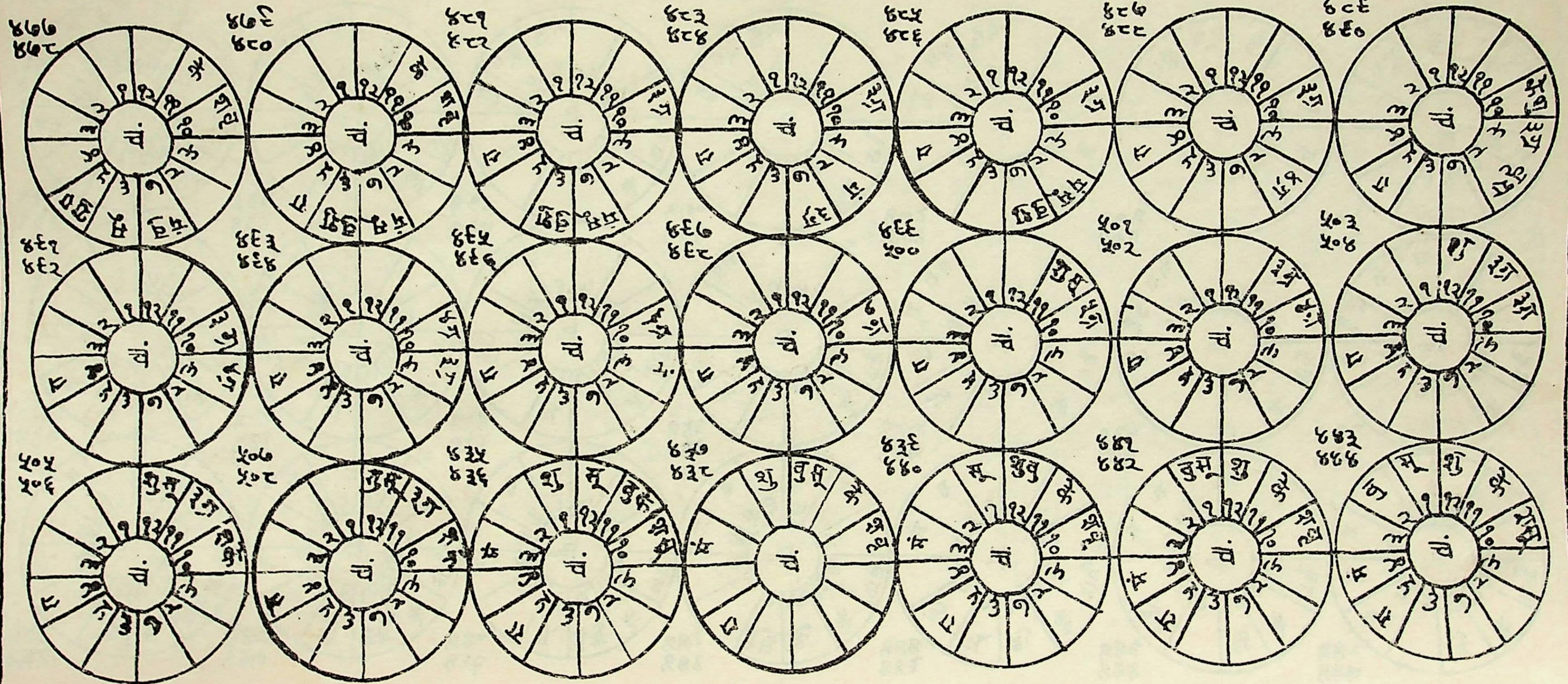
कुं०सं०
मू०सं०
११४

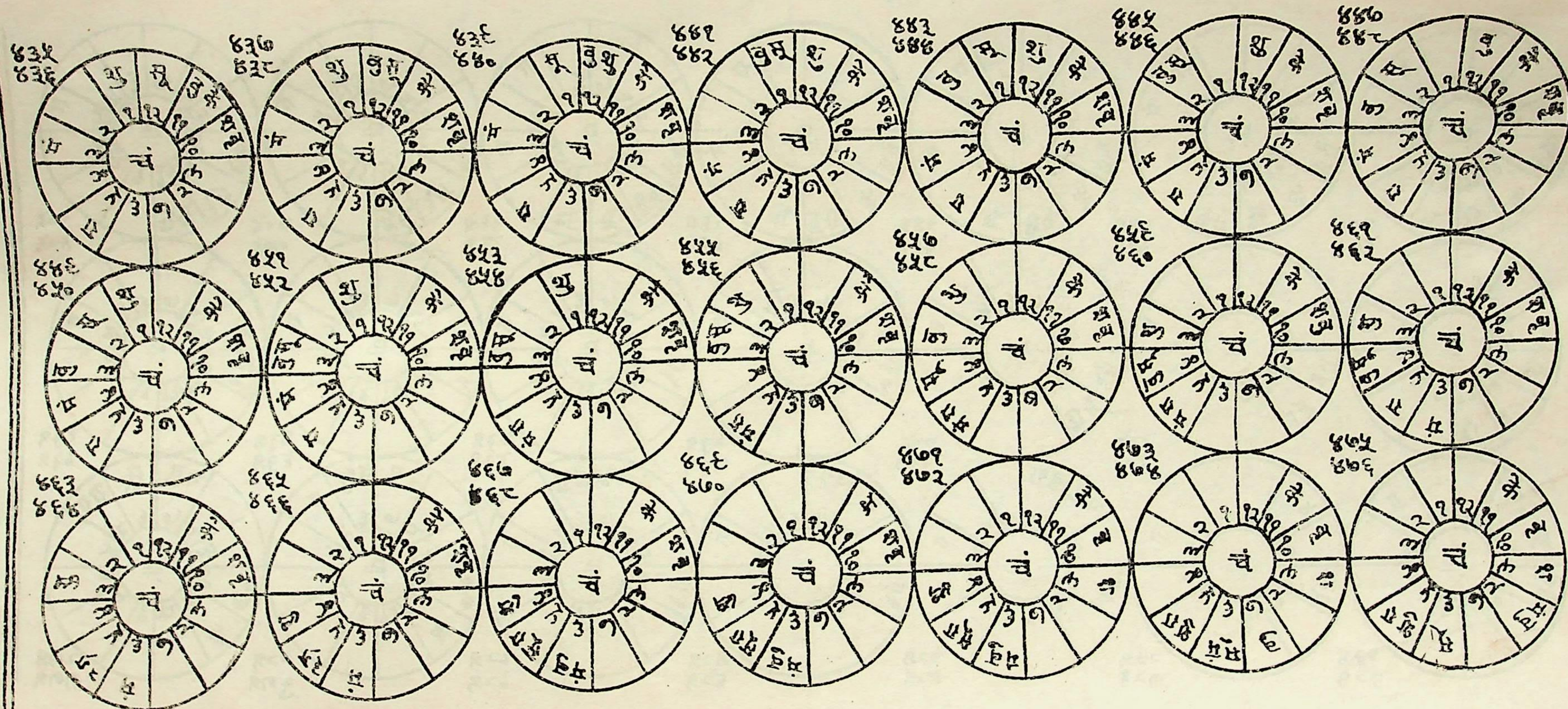


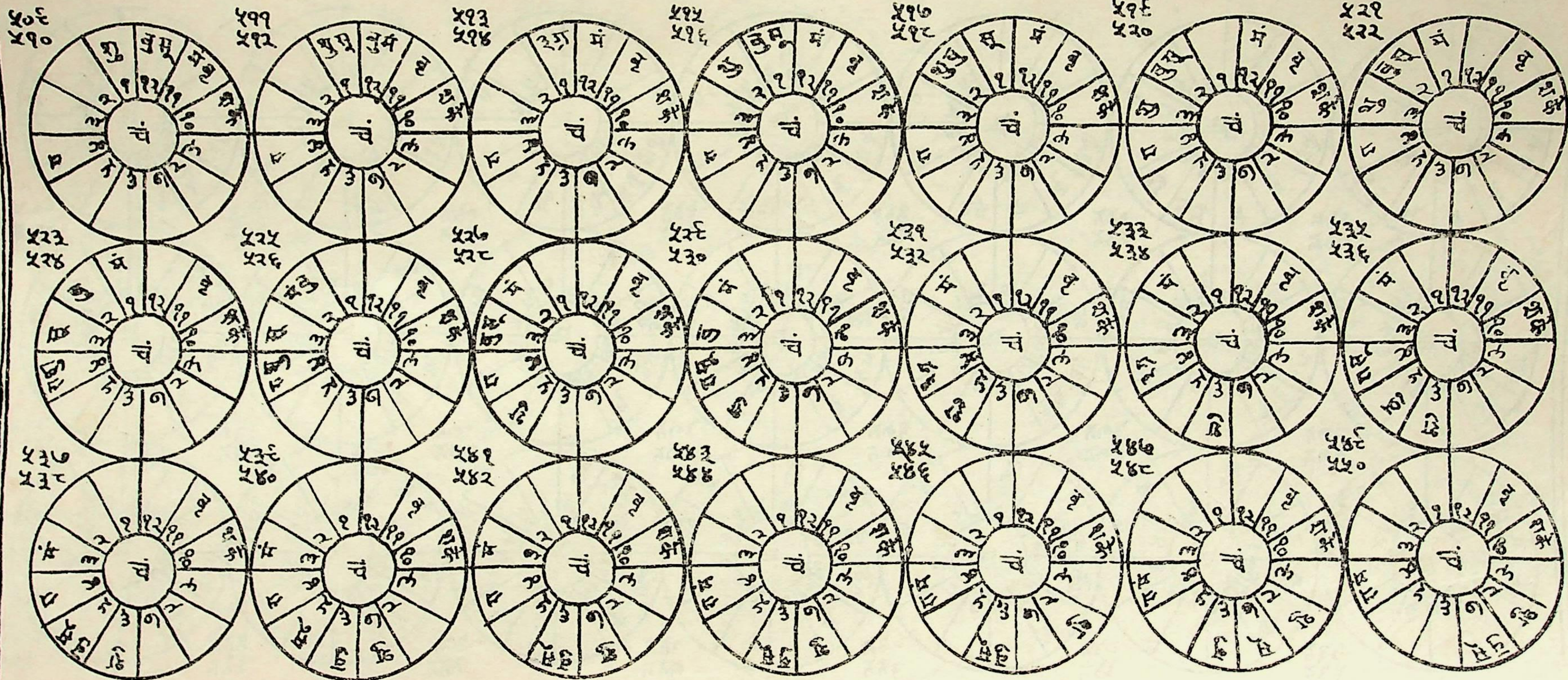



४०७
४०८
४०९
४१०
४११
४१२
४१३
४१४
४१५
४१६
४१७
४१८
४१९
४२०
४२१
४२२
४२३
४२४
४२५
४२६
४२७
४२८
४२९
४३०
४३१
४३२
४३३
४३४
३६५
३६६
३६७
३६८
३६९
३७०
३७१
३७२
३७३
३७४
३७५
३७६
३७७
३७८

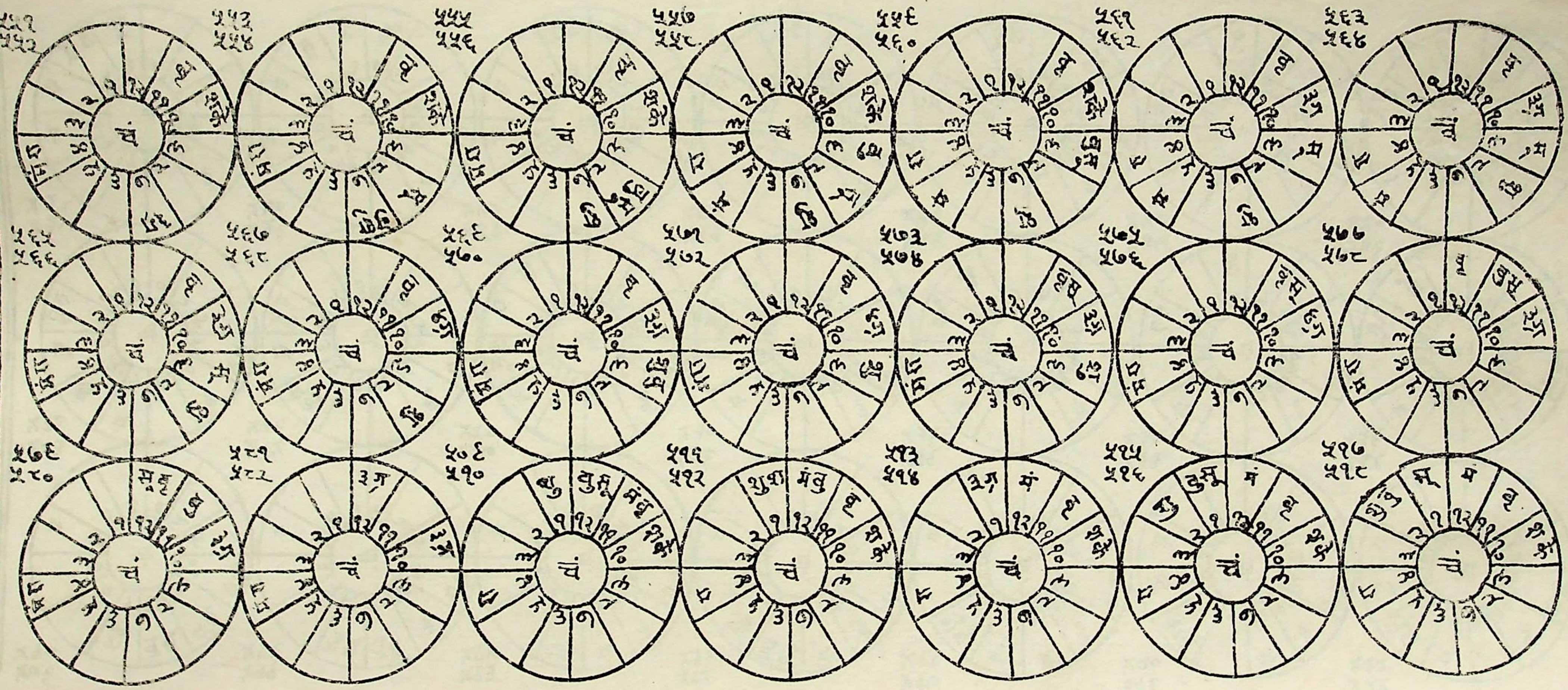
कुं०ख०
मू०सं०
११८



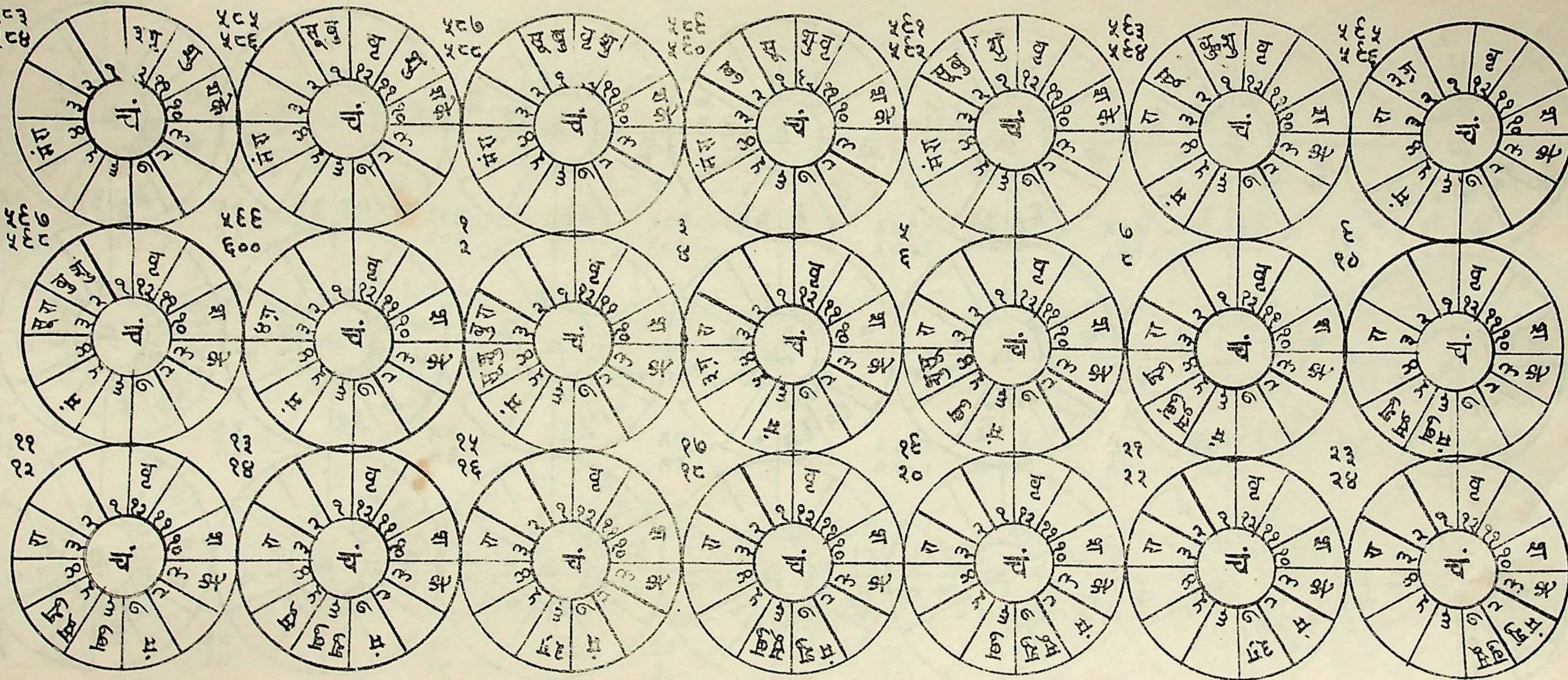



५०९ ५१०
५११ ५१२
५१३ ५१४
५१५ ५१६
५१७ ५१८
५१९ ५२०
५२१ ५२२
५२३ ५२४
५२५ ५२६
५२७ ५२८
५२९ ५३०
५३१ ५३२
५३३ ५३४
५३५ ५३६
५३७ ५३८
५३९ ५४०
५४१ ५४२
५४३ ५४४
५४५ ५४६
५४७ ५४८
५४९ ५५०

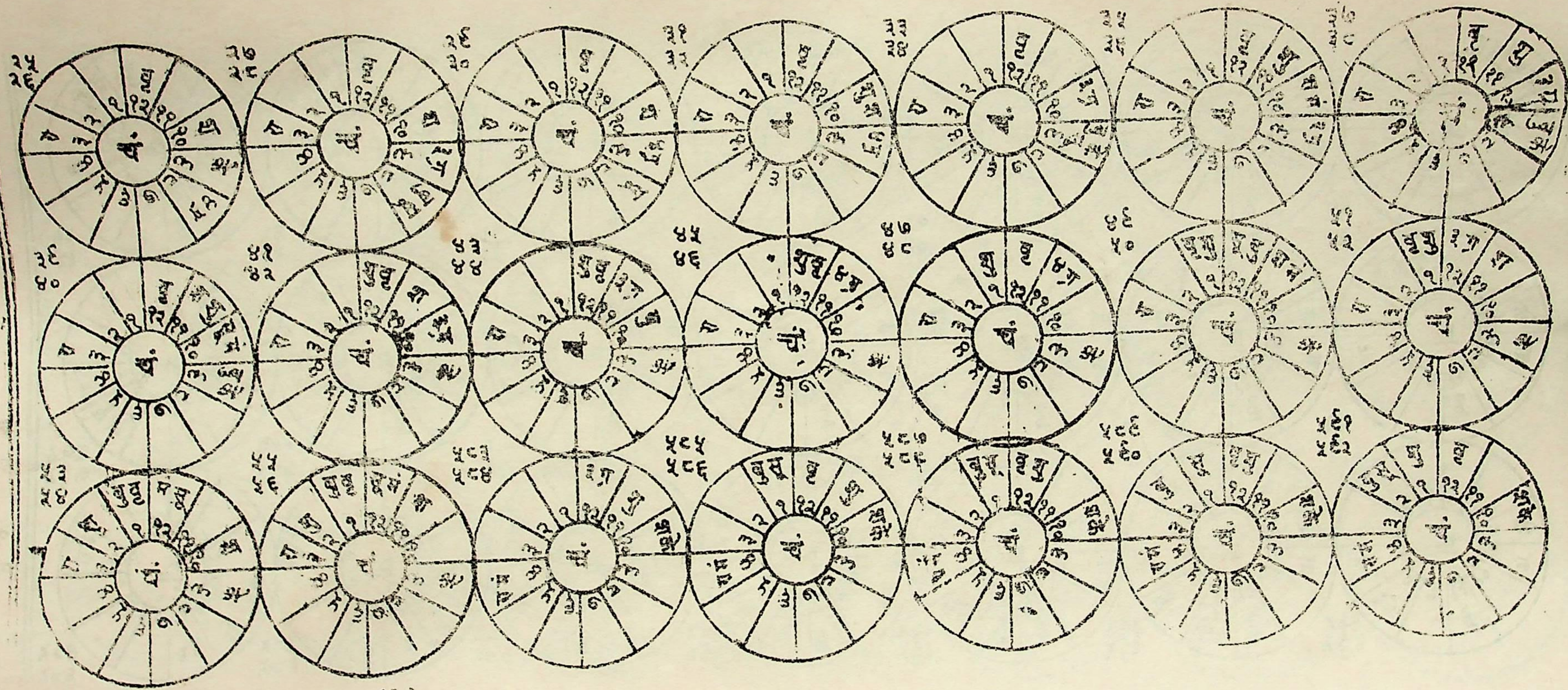
कुं०ब०
मृ०स०
१२०



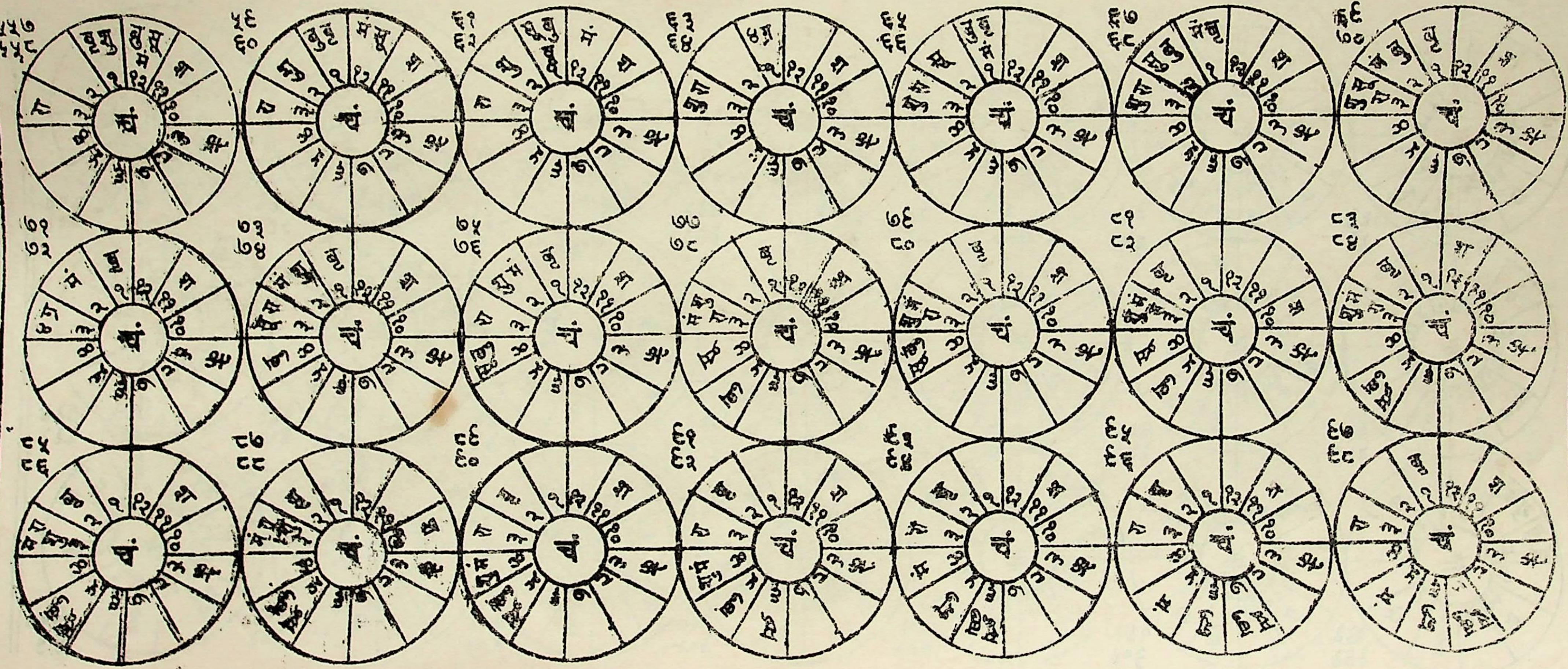
कुं०खं०
भृ०सं०
१२१

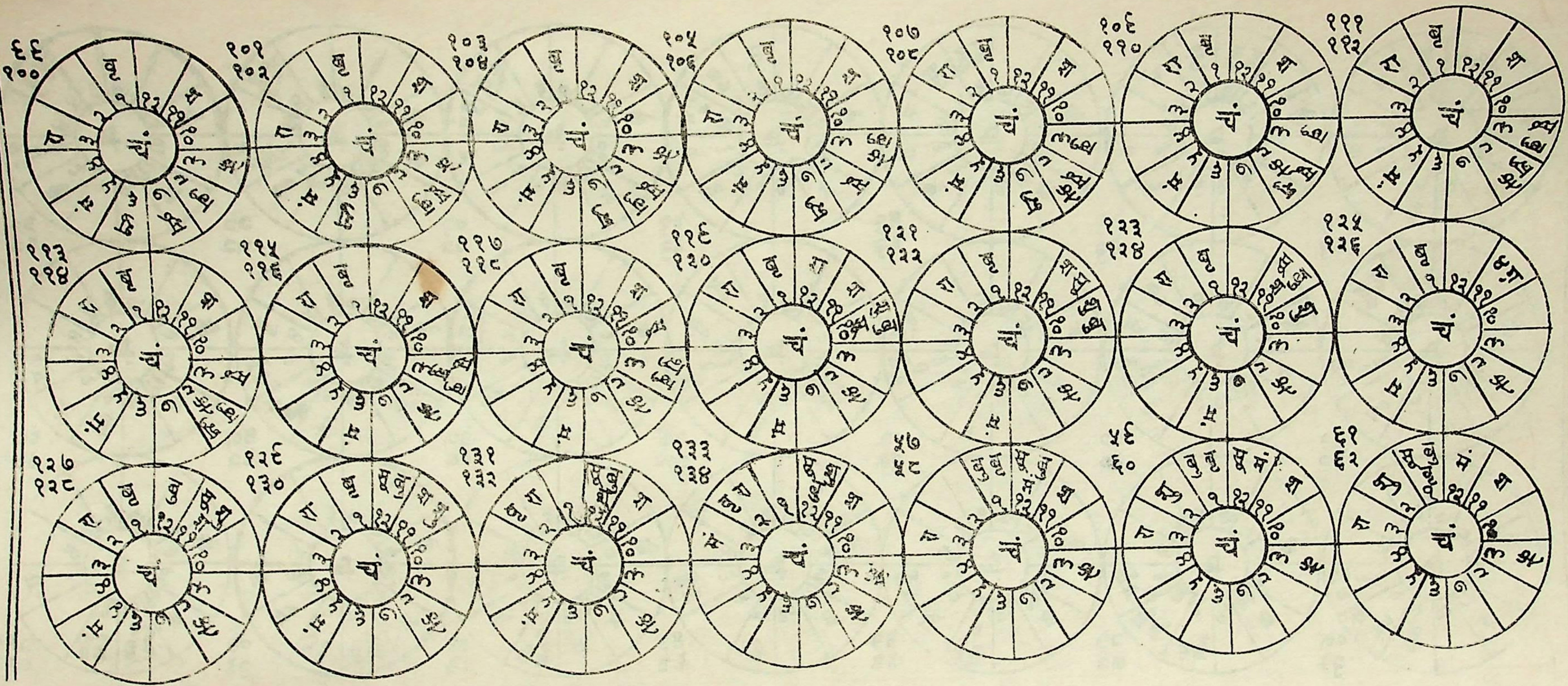


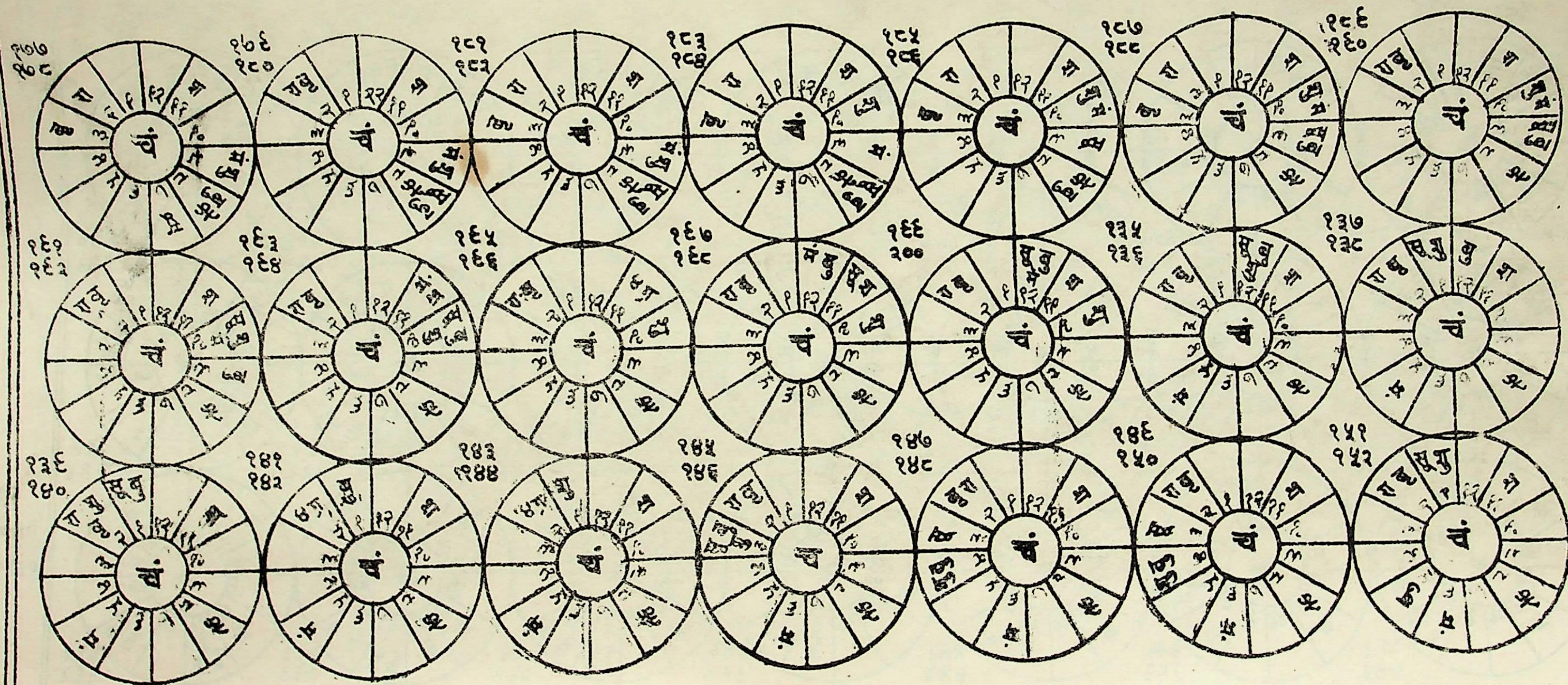
कुं०ख०
मू०सं०
१२२



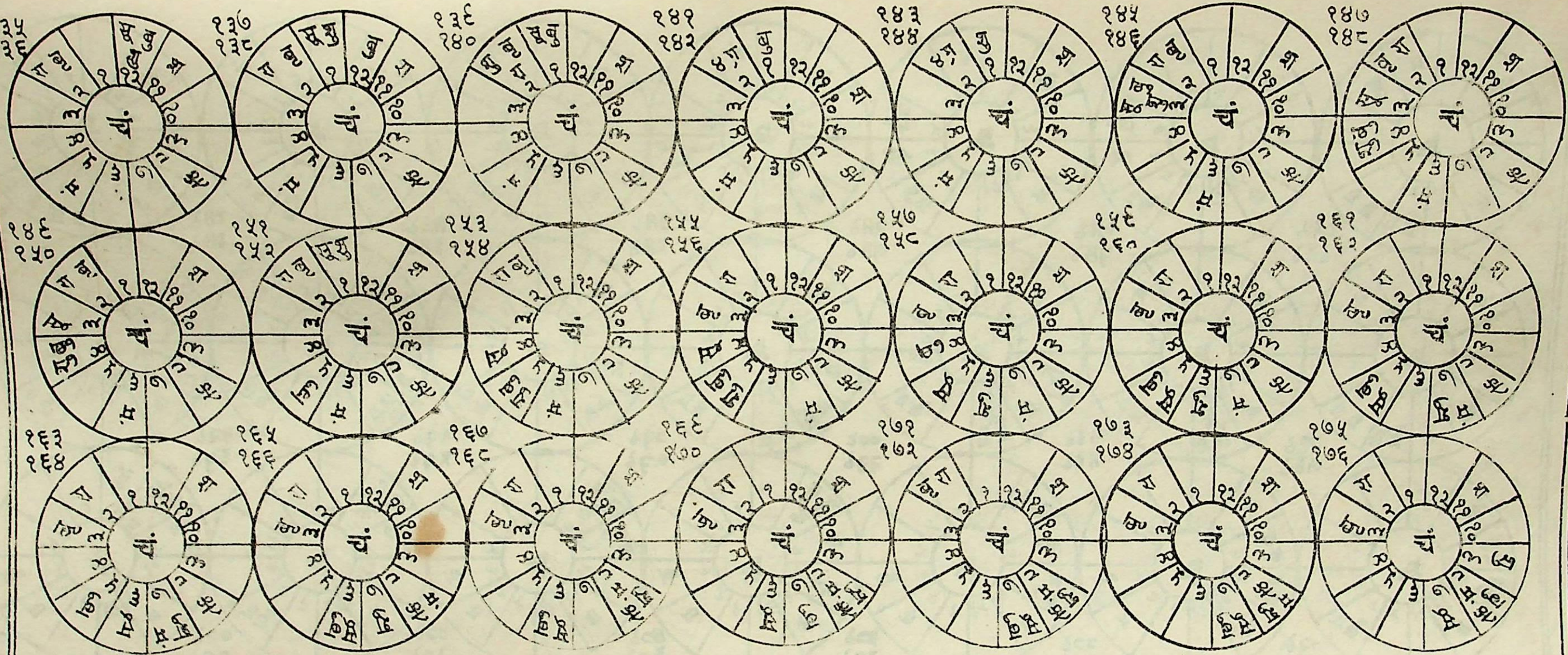
कृ०खं०
पू०सं०
१२३

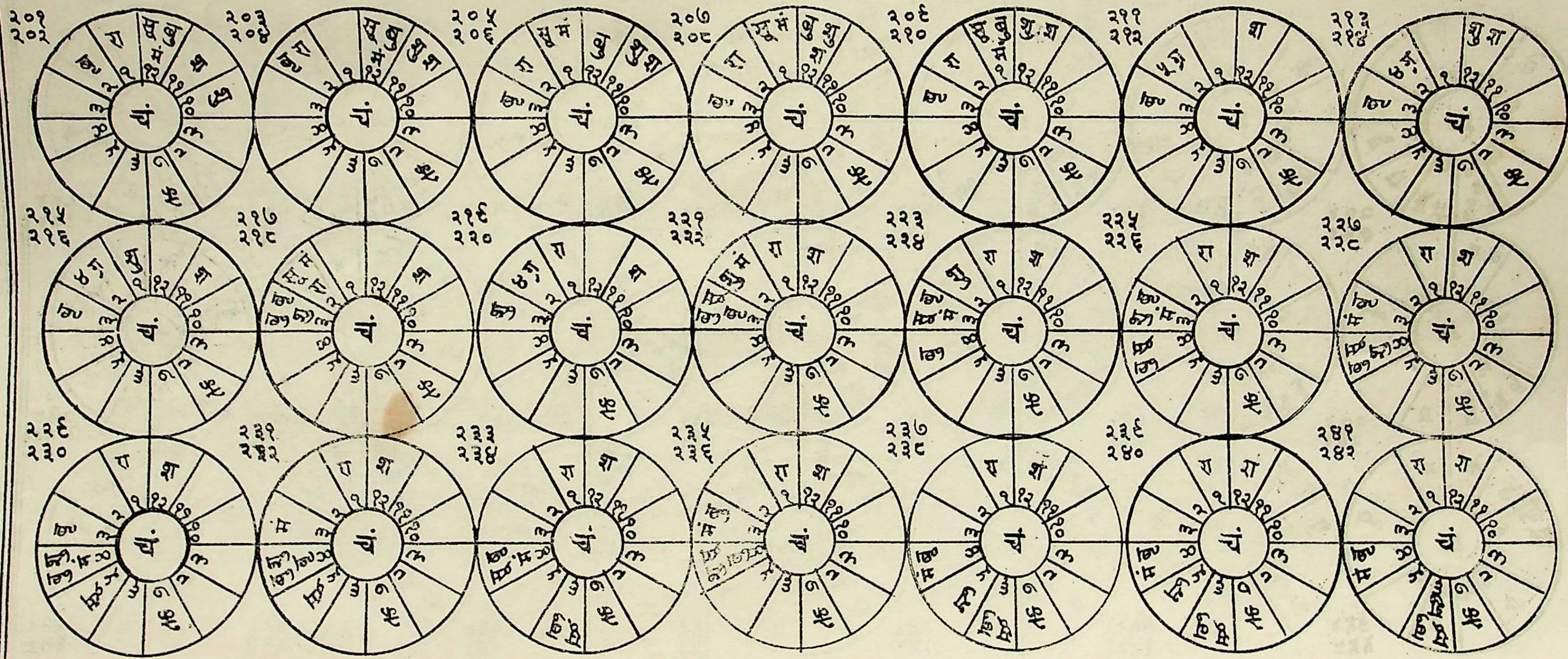


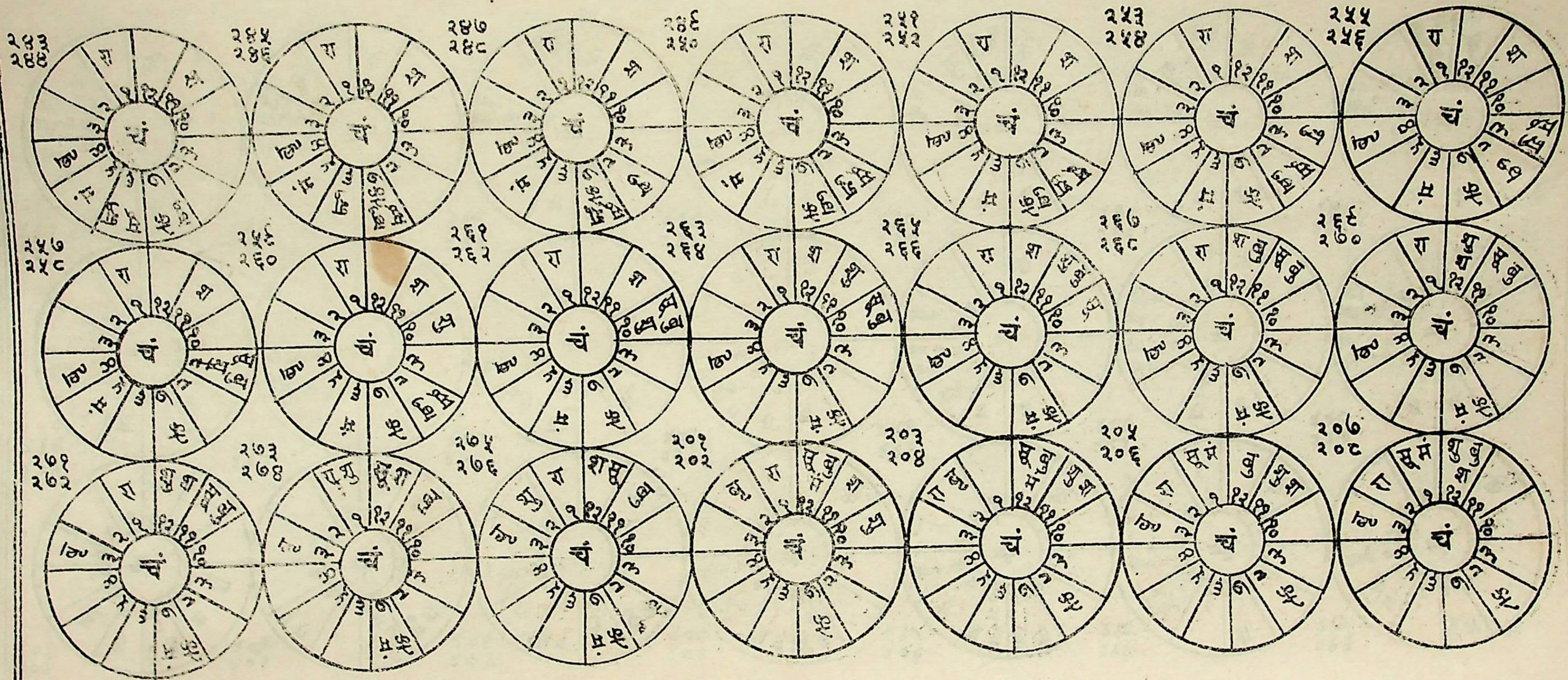



१७७ १७८
१७९ १८०
१८१ १८२
१८३ १८४
१८५ १८६
१८७ १८८
१८९ १९०
१९१ १९२
१९३ १९४
१९५ १९६
१९७ १९८
१९९ २००
१३५ १३६
१३७ १३८
१३९ १४०
१४१ १४२
१४३ १४४
१४५ १४६
१४७ १४८
१४९ १५०
१५१ १५२

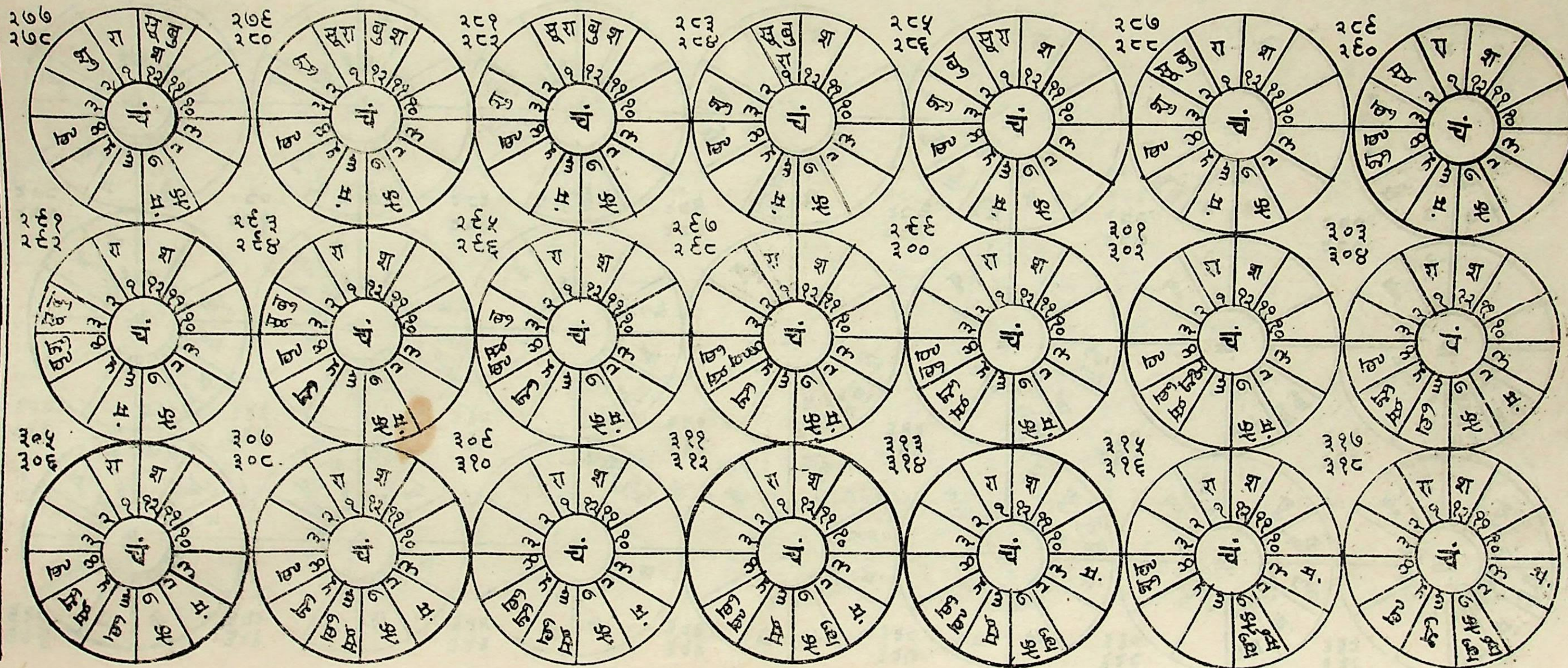
कुं०ख०
भू०सं०
१९५





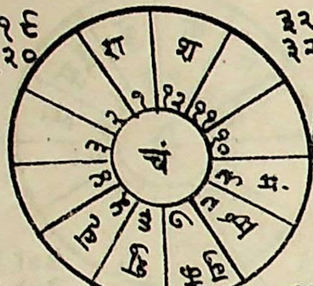


कुं०ख०
भू सं०
१२९

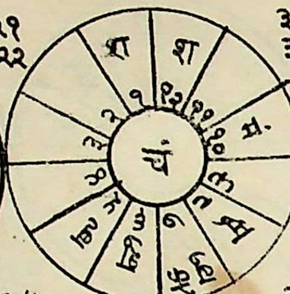

२७७ २७८
२७९ २८०
२८१ २८२
२८३ २८४
२८५ २८६
२८७ २८८
२८९ २९०
२९१ २९२
२९३ २९४
२९५ २९६
२९७ २९८
२९९ ३००
३०१ ३०२
३०३ ३०४
३०५ ३०६
३०७ ३०८
३०९ ३१०
३११ ३१२
३१३ ३१४
३१५ ३१६
३१७ ३१८

कुं०खं०
मू०सं०
१३०

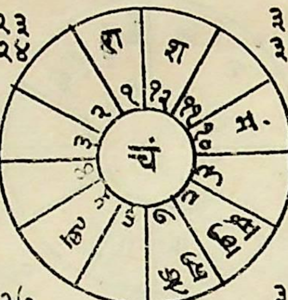
३१९
३२०



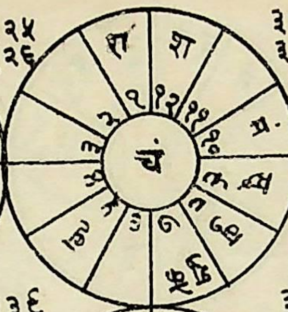
३२१
३२२



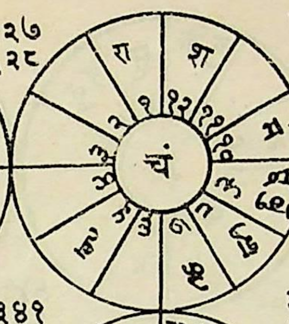
३२३
३२४



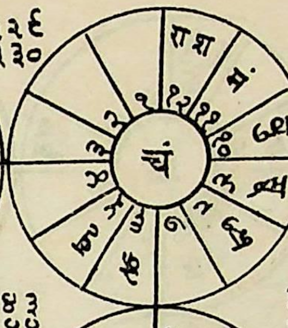
३२५
३२६



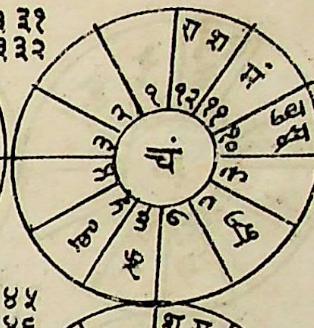
३२७
३२८



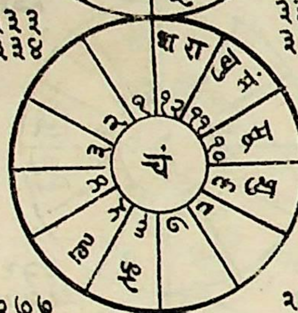
३२९
३३०



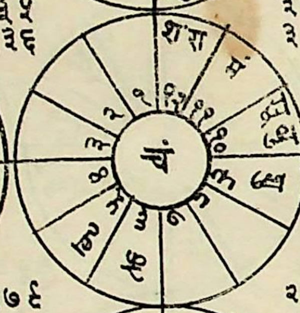
३३१
३३२



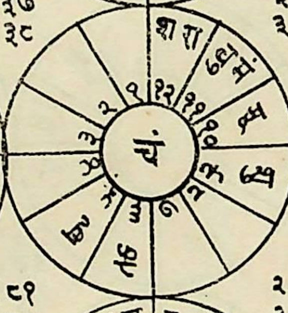
३३३
३३४



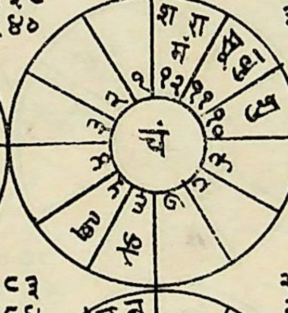
३३५
३३६



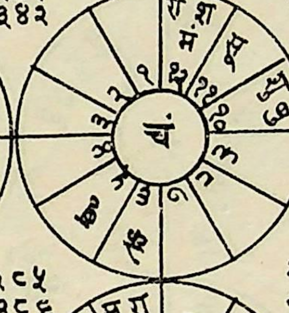
३३७
३३८



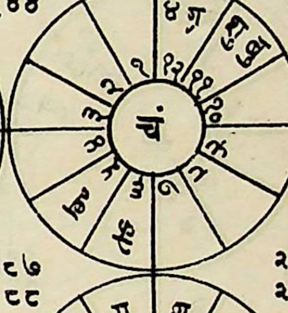
३३९
३४०



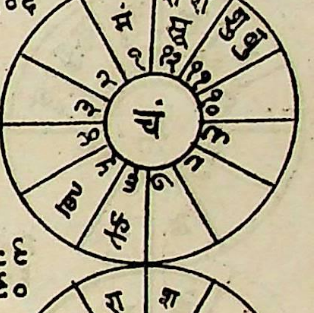
३४१
३४२



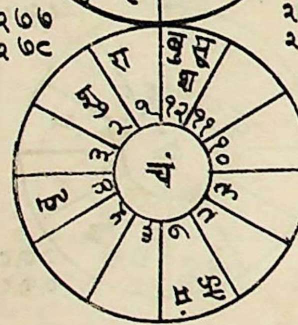
३४३
३४४



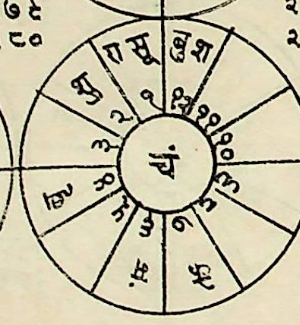
३४५
३४६



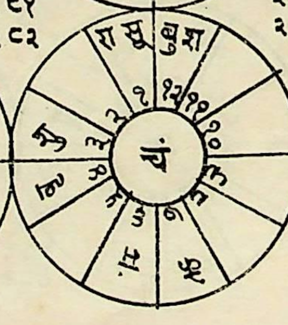
२७७
२७८



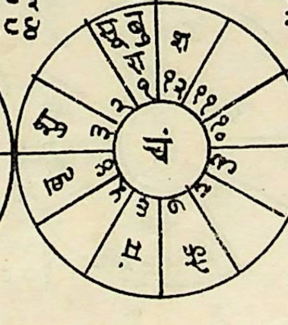
२७९
२८०



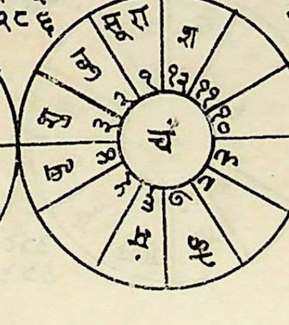
२८१
२८२



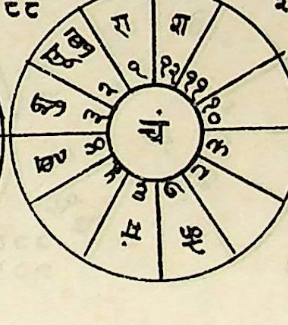
२८३
२८४



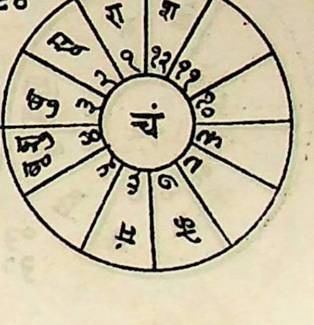
२८५
२८६

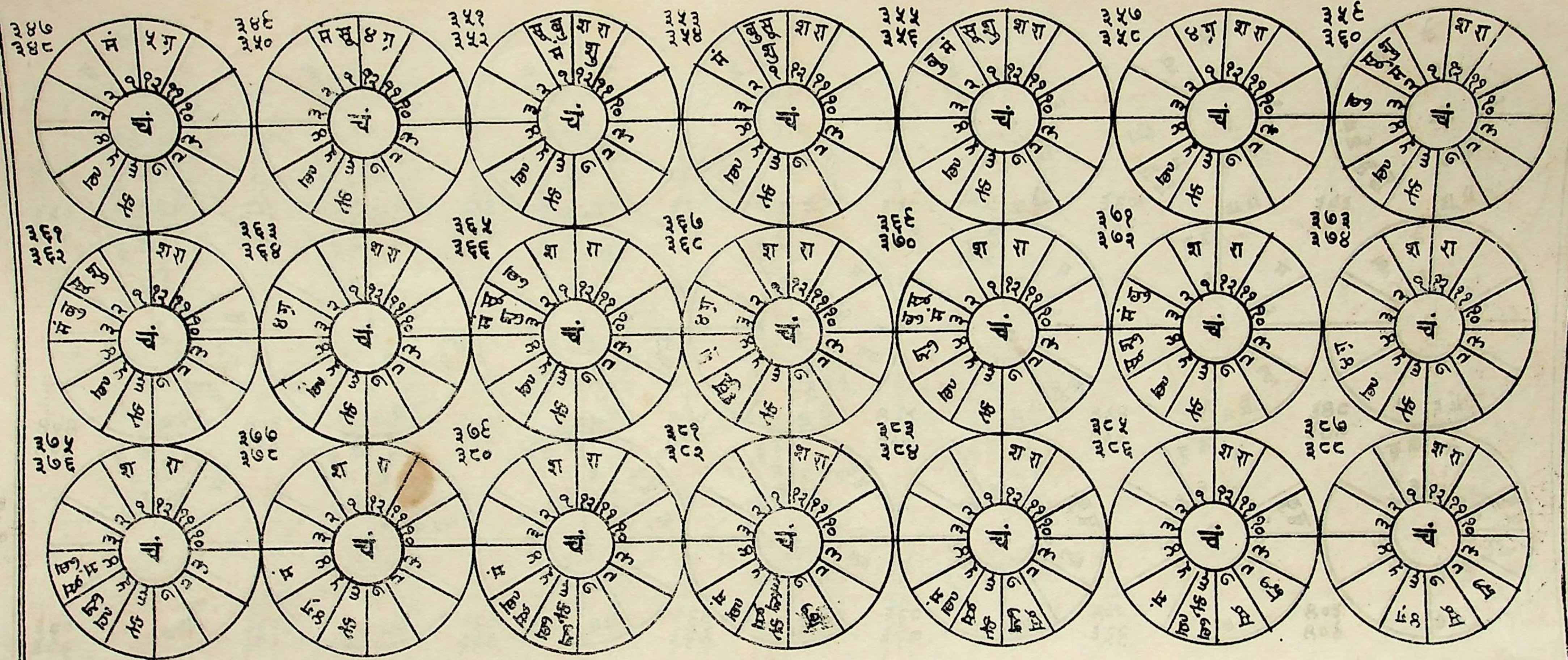


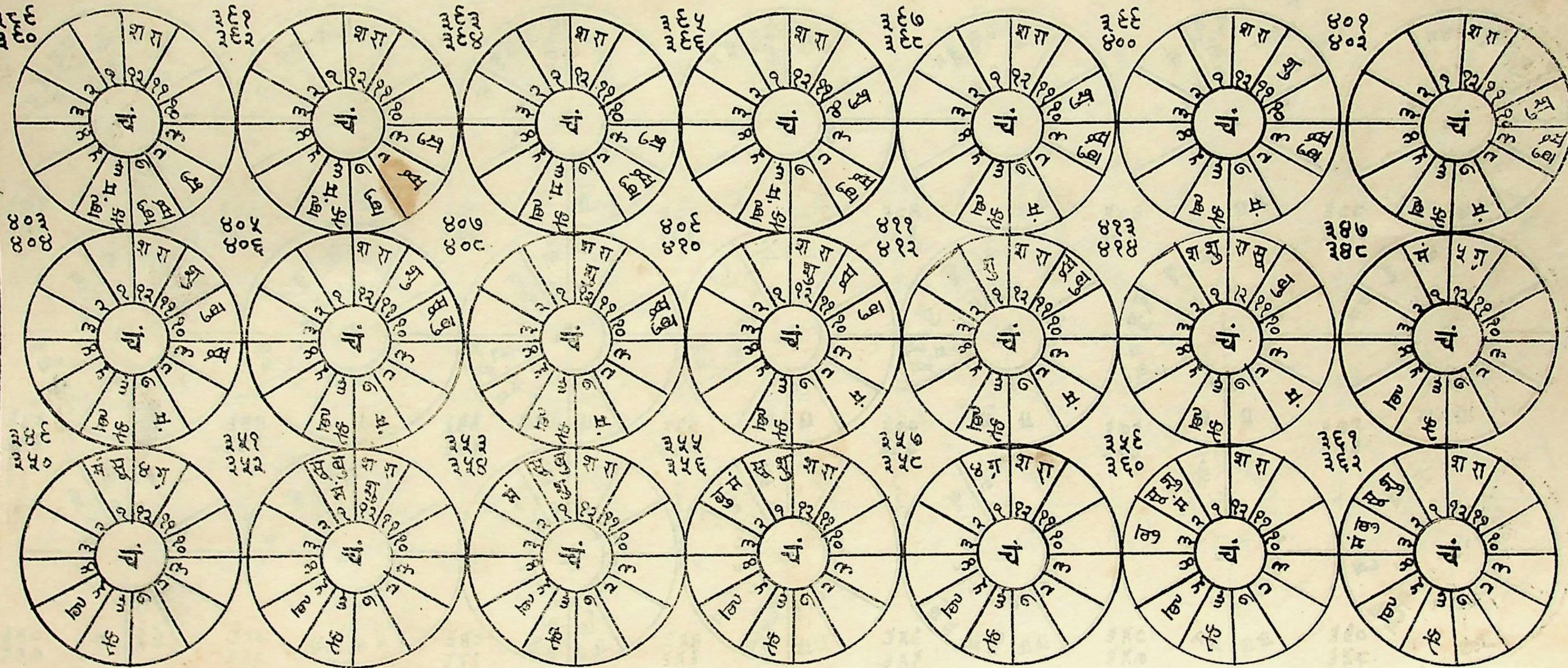
२८७
२८८

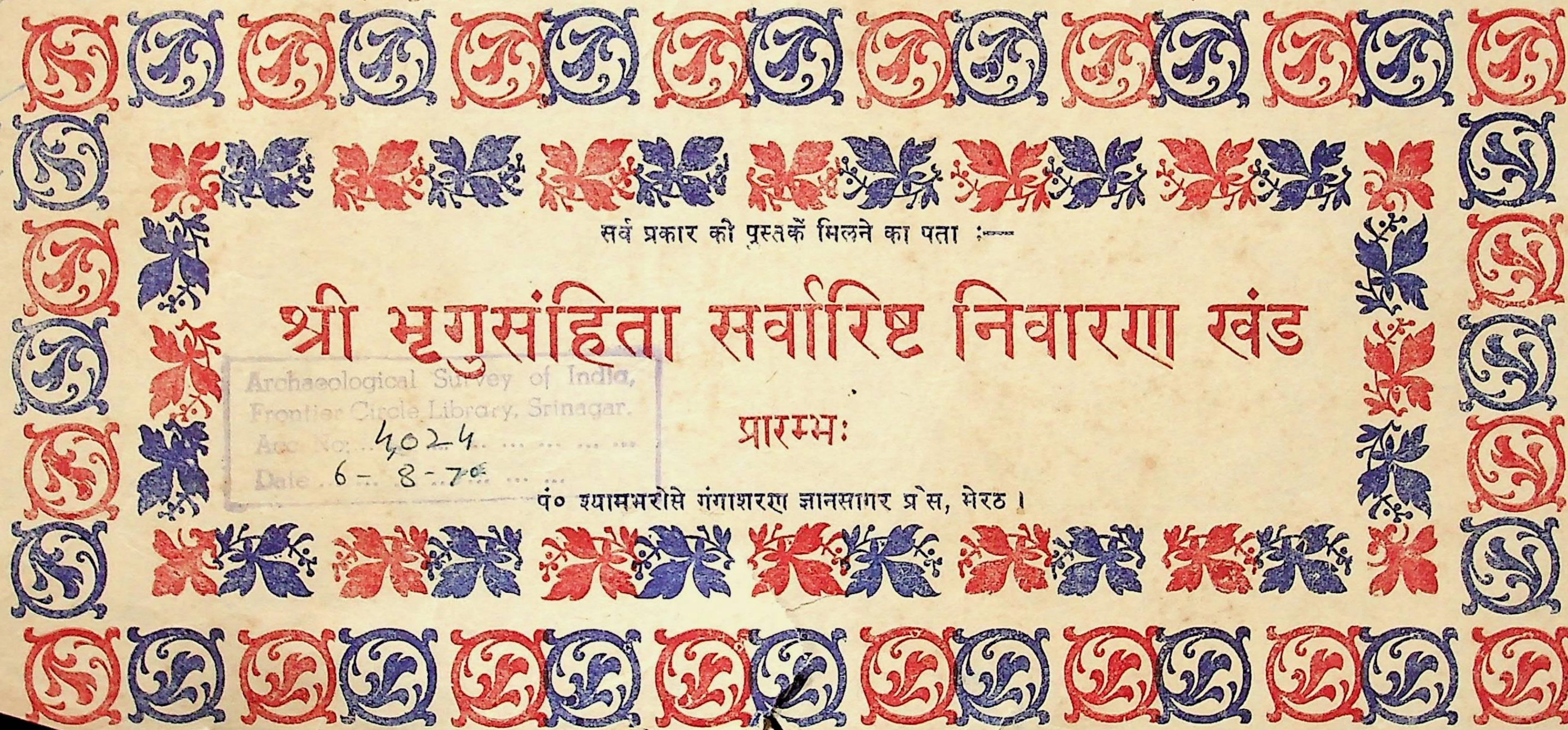


२८९
२९०




३४७ ३४८
३४९ ३५०
३५१ ३५२
३५३ ३५४
३५५ ३५६
३५७ ३५८
३५९ ३६०
३६१ ३६२
३६३ ३६४
३६५ ३६६
३६७ ३६८
३६९ ३७०
३७१ ३७२
३७३ ३७४
३७५ ३७६
३७७ ३७८
३७९ ३८०
३८१ ३८२
३८३ ३८४
३८५ ३८६
३८७ ३८८


३८९
३९०
३९१
३९२
३९३
३९४
३९५
३९६
३९७
३९८
३९९
४००
४०१
४०२
४०३
४०४
४०५
४०६
४०७
४०८
४०९
४१०
४११
४१२
४१३
४१४
३४७
३४८
३४९
३५०
३५१
३५२
३५३
३५४
३५५
३५६
३५७
३५८
३५९
३६०
३६१
३६२



सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता सर्वारिष्ट निवारण खंड

प्रारम्भः

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ।

श्री भृगुसंहिता ज्योतिष महाशास्त्र के समस्त खंड हमारे यहां मिलते हैं ॥

अथ श्री भृगुसंहिता सर्वारिष्ट निवारण खंड
पाठ चालीसा सिद्ध मंत्र प्रारम्भः

श्रीगणेशायनमः नमस्ते जगदानन्दं दायकं लोक नायकं सर्व रोग विनाशार्थं
सिद्ध मंत्र मुदा हृतं ॥ एकस्मिन्नवसरे काले शुक्रगत्वा पितामति प्रणम्य दंड
वन्द्भूमौ प्रोवाच वचनं मुदा ॥ शुक्रोवाच ॥ यानिकानि मनुष्यानि तप्यंति
भुवि मंडले नाना रोग समायुक्ता कथमुद्धारणं भवेत् ॥ शुक्रस्य वचनं श्रुत्वा
प्रोवाच मुनिसादरं प्रश्नमैं तत्वया वत्सपरा नुग्रह कांक्षया ॥ तेषामुद्धार
णार्थाय सिद्धमन्त्र वदा म्यहं गोपनीयं गोपनीयं पुनः पुनः ॥ अ
स्मैकस्मै नदातव्यं दापयेग्दुरु भक्तयो सर्वरोग प्रशमनं सर्व व्याधि निवारणं
पितृ पीड़ा प्रेतबाधा नश्यंति नात्र संशयः तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन क
स्यापि प्रकाषयेत् तिथि वारंच नक्षत्रं योगकर्ण मेवच सर्वेशुभ समालो
क्य कूर्मचक्र विचारयेत ॥ हस्तंदत्वा शिरोगानि यत्रकुत्र प्रपीडनं रोगी

ख

मुख भवेत्पूर्वं मंत्रीमुत्त्तो मुखः ॥ मंत्रांतेचमुखाद्वायु कारयेद्यत्नते बुधः
शिखिपक्षे तदापुत्र सप्तवार प्रक्षयेत ॥ तत्रांतशांति वाक्यंच वारस्त्रयः
मुवाचयेत पुनःपाठ समारभ्य पूर्ववद्र क्षयेत्पुनः ॥ एवंव्योम चतुःपुत्र मंत्र
पाठजपेत्बुधः एकान्हे तृतियान्हेवा सप्ताद्यैकादशोदिने ॥ यदि कष्ट महदज्ञेयं
एकविंश दिनंपठेत् महद्महथवा कष्टं व्योम वेद दिनं जपेत् ॥ महत्कष्ट
विनाशस्य नान्यथावचनंमम: ॥ मंत्राय भोजनंदद्या दक्षिणा मुद्रकाददेत्
लक्षयत्नोपिएकत्र एतत्दानमहाफलं ॥ सून्य वेद कृतेपाठं सर्व पद्रव नष्टकं

भाषा—एक समय के बीच में भृगुजी महाराज के पुत्र शुक्र देवता जी महाराज ने दण्डवत प्रणाम करके अपने पिता भृगुजी महाराज के प्रति प्रश्न किया कि हे पिता कोई यत्न रोगियों के अरिष्ट निवारण का कहो जिन प्रत्यक्ष मंत्र जंत्रो के पाठ करने से रोग शीघ्र नष्ट हो तब अपने पुत्र शुक्र देवता की वाणी सुनकर भृगुजी ने मन में बड़े प्रसन्न होकर के कहा हे पुत्र तुमने अच्छा प्रश्न किया हम ऐसे सिद्ध मंत्र सर्वारिष्ट निवारण खण्ड कहेंगे जिन मंत्रों के

चालीस पाठ करने से पृथ्वी पर कोटों रोगियों के रोग का नाश हुआ है और प्रत्यक्ष फल के देने वाला है ॥
(शुकोवाच) हे पिता उन मंत्रों का जो आरिष्ट निवारण खण्ड में हैं तिन को विधि पूर्वक कहो किस विधि से पाठ करना
चाहिये (भृगुवाच) हे पुत्र जिस रोगी के वास्ते करे प्रथम श्रेष्ट मुहुर्त तिथि वार और नक्षत्र चन्द्रमा रोगी के
नाम मे देखे चौथा आठवां बारवां त्याग के और सब उत्तम है और कूर्म चक्र की विधि से निश्चय करे और प्रथम
नवग्रहों के विधि पूर्वक श्रद्धामात्र वित्त समान दान करावे फिर रोगी के अङ्ग पर दाहिना हाथ रक्खे
ज्वर आदि हो तो छाती पर या जहां अङ्ग में दर्द पीड़ा हो वहां हाथ धर कर और जो स्त्री को कष्ट हो तो मनुष्य के
यानी करता को उसके अङ्ग पै हाथ धरना उचित न हो तो किसी कन्या से उसके अंग पर हाथ रखवादे और
पंडित सर्वारिष्ट निवारण के पाठों का आरम्भ करे जब पाठ पूर्ण हो सात बार मयूर पक्षी के पंखों का मोरछल
सिरसे चर्णों की तरफ को फेरे ७ फूंक मारे और उससे पूंछे कि कुछ शांति है जो शांति कहे तो हाथ हटा कर पाठ
किये जावे जब पाठ पूर्ण हो ७ बेर मोरछल फेरे और ८ फूंक मारे इसी तरह सम्पूर्ण पुस्तक के ४० चालीस
दिन पाठ नित्य प्रति करे १ एक दिन अथवा ७ अथवा ११ दिन अथवा २१ दिन अथवा ४० दिन दीर्घ
कष्ट भी ४० दिवस में नष्ट हो जाता है ॥ नित्य प्रति पाठ करता को भोजन और मुद्रिका दक्षिणा दे ये
सूक्षम दक्षिणा है न्यून अधिक लेना पाठ करता पंडित के आधीन है और यह भी जानना चाहिये कि इस
पुस्तक के मन्त्रों का पाठ बहुत शुद्धि पवित्रता के साथ करे रोग की शांति हो जावे अर्थात मनो कामना
पूर्ण हो जावे तब श्रद्धा प्रमाण ब्राह्मणों को भोजन करवावे और दक्षिणा देकर प्रसन्न करे ॥

॥ १ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षां कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्यायनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षां कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ २ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरू कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्यं तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा माम्ना पुरा दक्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्दृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिस्संशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥
यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्मं तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वात्रिंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शाघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

ॐ गणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षां कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐ जगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्यायनमः ॐ चंद्राय नमः ॐ भौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षां कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं स्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भुवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतक्रतो असुरान् हन्थ इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ११ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यद्वा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्ठति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वात्रिंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

उँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: उँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उँ बलभद्राय नमः उँ श्री रामाय नमः उँ हनुमते नमः उँ शिवाय नमः उँ जगतनाथाय नमः उँ बद्री नारायणाय नमः उँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः उँ सूर्या यनमः उँ चंद्राय नमः उँ भौमाय नमः उँ बुधाय नम उँ गुरुवे नम उँ भृगु वेनमः उँ शनिश्चराय नमः उँ राहुवे नम उँ पुच्छनायकायनमः उँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेपुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंवीक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ १४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कुष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नैं हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिस्संशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समृख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रीं ठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीं ठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐ जगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐ भौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षां कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूविवेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ २० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२ स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राजद्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ २१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाह्निकं द्व्याह्निकं त्र्याह्निकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैष्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहो संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यंगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ २३॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यतनबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समरूयायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ २५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उों गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः उों गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उों बलभद्राय नमःउों श्री रामाय नमः उों हनुमते नमःउों शिवाय नमः उोंजगतनाथाय नमः उों बद्री नारायणाय नमःउों श्रीदुर्गादेव्यैनमः उों सूर्या यनमः उों चंद्राय नमः उोंभौमाय नमःउों बुधाय नम उों गुरुवे नम उों भृगु वेनमः उों शनिश्चराय नमः उों राहुवे नम उों पुच्छनायकायनमः उों नव ग्रह रक्षां कुरु २ नमः उों मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्टा द्रष्टेषयेषुत्त्हदय यं त्वयतोषमति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ २६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदाधिकं

॥ २७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ २६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समाख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ३० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रोंठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ३१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: उँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उँ बलभद्राय नमः उँ श्री रामाय नमः उँ हनुमते नमः उँ शिवाय नमः उँजगतनाथाय नमः उँ बद्री नारायणाय नमः उँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः उँ सूर्याय नमः उँ चंद्राय नमः उँभौमाय नमः उँ बुधाय नम उँ गुरुवे नम उँ भृगुवेनमः उँ शनिश्चराय नमः उँ राहुवे नम उँ पुच्छनायकायनमः उँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ३२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँों नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा उँों भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उँों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उँों नमो भगवते वासुदेवाय नमः उँों नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ३३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अर्जीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ३४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैष्णवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिस्संशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ३५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ३६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ३७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्यायनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ३८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा
उँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
उँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ३९ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ४० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैशनवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ४१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥
यदि्वा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥
उॉं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उॉं भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोब्राहारि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उॉं ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥४२॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महस्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ४३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ४४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२ स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२ स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरू कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ४५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय २ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्यं ताराादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ४६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठः ठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मान्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिस्संशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ४७॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भ

वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि

खद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करो

तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति

धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्वं शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी

भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः

डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि

रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ४८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु ॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ४६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ओं गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ओं गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ओं बलभद्राय नमःओं श्री रामाय नमः ओं हनुमते नमःओं शिवाय नमः ओंजगतनाथाय नमः ओं बद्री नारायणाय नमःओं श्रीदुर्गादेव्यैनमः ओं सूर्या यनमः ओं चंद्राय नमः ओंभौमाय नमःओं बुधाय नम ओं गुरुवे नम ओं भृगु वेनमः ओं शनिश्चराय नमः ओं राहुवे नम ओं पुच्छनायकायनमः ओं नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ओं मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ५० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा
उँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोंदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
उँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ५१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्यं तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ५२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ५३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उक्षशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ५४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्ये शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु ॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ५५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्टा द्रष्टेषयेपुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहराति नाथ भ

॥ ५६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु२ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ५७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य ताराविभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ५८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंकतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ५६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ६० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु ॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ६१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपतं नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमः ऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनाथकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षां कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

 सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ६४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मामना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ६५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्ठंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधो याति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ६६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ६७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उॉं गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: उॉं गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उॉं बलभद्राय नमः उॉं श्री रामाय नमः उॉं हनुमते नमः उॉं शिवाय नमः उॉंजगतनाथाय नमः उॉं बद्री नारायणाय नमः उॉं श्रीदुर्गादेव्यैनमः उॉं सूर्या यनमः उॉं चंद्राय नमः उॉंभौमाय नमः उॉं बुधाय नम उॉं गुरुवे नम उॉं भृगु वेनमः उॉं शनिश्चराय नमः उॉं राहुवे नम उॉं पुच्छनायकायनमः उॉं नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उॉं मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्व्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ६८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उौं नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा उौं भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उौं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उौं नमो भगवते वासुदेवाय नमः उौं नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ७० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा नाम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वा सर्व रक्षां करोतु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्ठंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समाख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ७२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घात जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ७३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उों गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: उों गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उों बलभद्राय नमःउों श्री रामाय नमः उों हनुमते नमःउों शिवाय नमः उोंजगतनाथाय नमः उों बद्री नारायणाय नमःउों श्रीदुर्गादेव्यैनमः उों सूर्या यनमः उों चंद्राय नमः उोंभौमाय नमःउों बुधाय नम उों गुरुवे नम उों भृगु वेनमः उों शनिश्चराय नमःउों राहुवे नम उों पुच्छनायकायनमः उों नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उों मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्टा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंवीक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ७४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु२ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ७५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ७६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठः ठः ॐ ह्रां ह्रीं ह्रदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा मान्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्थ इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिस्संशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ७७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्र्रधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ७८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ७९ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमः ऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमः ऊँ शिवाय नमः ऊँ जगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमः ऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँ भौमाय नमः ऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमः ऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षां कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्टा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमंति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ८० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ८१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ८२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मामना पुरा दत्त्कं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्ट विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ८३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां यांति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्मं तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्वं शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समूख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ८४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सांत सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ८५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिमा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमः ऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमः ऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमः ऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमः ऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमः ऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्टा द्रष्टेषयेषुत्व्हदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ८६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२ स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२ स्वाहा: ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्योहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहा: ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ८७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय २ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ८९ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वा सर्व रक्षां करो
तु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्ठति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समृख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ६० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महस्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ६१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंवीक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ६२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ९३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ६४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा नाम्ना पुरा दक्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं मंतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ९५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ९६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रौंठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ६७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनोहरति नाथ भ

॥ ६८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा उँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः उँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ ६६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १०० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा मान्ना पुरा दत्तं शतंकतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवीं नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं संक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंनन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करो
तु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥
उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १०८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्रीं भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्राति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १०३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमः ऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमः ऊँ शिवाय नमः ऊँ जगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमः ऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्यायनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमः ऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगुवेनमः ऊँ शनिश्चराय नमः ऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ठा दृष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंवीक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

॥ १०४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भव्यं कुरु२ स्वाहा
ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १०५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघ्री सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १०६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मान्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इतवतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिमंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विध्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १०८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांबरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १०६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ ११० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि डों नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा

डों भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्

सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः डों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार

णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार

भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज

द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय

अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २

स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ डों नमो भगवते वासुदेवाय नमः

डों नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १११ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ११२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैष्णवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ११२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ ११४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ११५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐ जगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्याय नमः ॐ चंद्राय नमः ॐ भौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवे नमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकाय नमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्स्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ ११६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा उँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहा: उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहा: ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः उँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्यं तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ११८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा म्नाम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वान्हीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिमंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ ११६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्णशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वा सर्व रक्षां करोतु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ओं भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ओं ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १५० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खँड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कुब्जिका देव्यै ह्रीं ठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीं ठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वत्यै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ २८१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ठा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंवीक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ १२२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ओं नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा
ओं भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय नमः
ओं नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ मममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विग्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मामना पुरा दक्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इतवतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्मं तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १२६॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १८७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐ जगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐ भौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवद्दष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्व्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भम्यं कुरु२ स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्योहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुरागिनवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नैं हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य ताराद्दिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १३० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंकतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिमंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १३१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥१३८॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सातं सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः बस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

वानतरेऽपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भव्यं कुरु२स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १३५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

 सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मान्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैष्णवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिमंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १३७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्मं तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाबिंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी डों ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥१३८॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महस्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १३९ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ १४० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १४१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य ताराादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १४? ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ॐ ह्रां ह्रीं ह्रदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा म्नामना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्दृष्टि विषंचैव नदेयं भक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिमंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १४३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदि वा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उक्षशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबद्धवा सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबद्धवा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥१४४॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १४५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: उँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उँ बलभद्राय नमः उँ श्री रामाय नमः उँ हनुमते नमः उँ शिवाय नमः उँ जगतनाथाय नमः उँ बद्री नारायणाय नमः उँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः उँ सूर्या यनमः उँ चंद्राय नमः उँ भौमाय नमः उँ बुधाय नम उँ गुरुवे नम उँ भृगु वेनमः उँ शनिश्चराय नमः उँ राहुवे नम उँ पुच्छनायकायनमः उँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२ स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २, व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाह्निकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १४८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा म्नाम्ना पुरा दत्तं शतंकतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिस्मंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विध्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १४६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुरुयायां स्वाहांतोबाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥१५०॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्लींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रोंठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १५१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्यायनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगुवेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

॥ १५२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ओं नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा ओं भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्योहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ओं नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १५४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मान्मा पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १५५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥
यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वा सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥
डों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं डों भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी डों ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥१५६॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्रीं भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १५७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः उँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उँ बलभद्राय नमःउँ श्री रामाय नमः उँ हनुमते नमःउँ शिवाय नमः उँजगतनाथाय नमः उँ बद्री नारायणाय नमःउँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः उँ सूर्या यनमः उँ चंद्राय नमः उँभौमाय नमःउँ बुधाय नम उँ गुरुवे नम उँ भृगु वेनमः उँ शनिश्चराय नमःउँ राहुवे नम उँ पुच्छनायकायनमः उँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदयं यं त्वयतोषमेति किंवीक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ १५८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अर्जीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १६० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दह्दह रक्षां कुरु २ ऊँ नमो भगवते ऊँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ऊँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मामना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिमंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १६१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ उों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उों भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उों ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १६२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १६२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्याय नमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

वानतरोपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहा: ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहा: ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १६५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघ्री सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १६६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १६७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १६८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कञ्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १६९ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमः ऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमः ऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमः ऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमः ऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमः ऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भुवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १७१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १७२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा म्नाम्ना पुरा दत्तं शतक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैष्णवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सङ्कमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वा सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्मं तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १७४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १७५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ १७६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा
ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १७७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष मंजय मंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंमय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघ्री सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १७८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौंरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मना तस्यसर्वानहो संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १७६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुञ्जनतां याति उष्णशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवद्ध्वा सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवद्ध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १८१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिमा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐ जगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्यायनमः ॐ चंद्राय नमः ॐ भौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

॥ १८२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भम्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य ताराद्विभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ १८४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मना तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्ट विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यांदेवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भ
वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लि
खेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करो
तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति
धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी
भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समृख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः
डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि
रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १८६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १८७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहा: ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्यायनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगुवेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ उँ नमो भगवते उँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः उँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा साम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्ववतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैइनवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ क्रिमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ १६१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यांदेवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां यांति उक्षशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाबिंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १६२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ १६३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

उँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः उँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः उँ बलभद्राय नमः उँ श्री रामाय नमः उँ हनुमते नमः उँ शिवाय नमः उँ जगतनाथाय नमः उँ बद्री नारायणाय नमः उँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः उँ सूर्या यनमः उँ चंद्राय नमः उँभौमाय नमः उँ बुधाय नम उँ गुरुवे नम उँ भृगु वेनमः उँ शनिश्चराय नमः उँ राहुवे नम उँ पुच्छनायकायनमः उँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः उँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेपुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा
ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियोग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ १६५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुरागिनवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विग्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघ्री सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा नाम्ना पुरा दत्तं शतक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभा ग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र संन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उष्नशीत मयो भ वेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ १९८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु माते सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्त्हदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ २०० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहा: ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहा: ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ २०१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य ताराादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ऊँ नमो भगवते ऊँ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ऊँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा नाम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वान्हि संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र संन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यांदेवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समृख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्वबाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २०४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ २०५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

वानतरेपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्योहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अर्जीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय २ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ २०८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं क्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ऊँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ऊँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रि रायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २१० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कब्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः बस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ ३११ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमःॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमःॐ शिवाय नमः ॐजगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमःॐ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐभौमाय नमःॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमःॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ २१२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेऽपि ॐ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ॐ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॐ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाह्निकं द्व्याहिकं त्र्याहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ २१४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा माम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैष्णवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं संक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य नजायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ २१५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यांदेवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां यांति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करो तुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्मं तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उच्छिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २१६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रोंठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ २१७ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ॐ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ॐ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ॐ बलभद्राय नमः ॐ श्री रामाय नमः ॐ हनुमते नमः ॐ शिवाय नमः ॐ जगतनाथाय नमः ॐ बद्री नारायणाय नमः ॐ श्री दुर्गादेव्यैनमः ॐ सूर्या यनमः ॐ चंद्राय नमः ॐ भौमाय नमः ॐ बुधाय नम ॐ गुरुवे नम ॐ भृगु वेनमः ॐ शनिश्चराय नमः ॐ राहुवे नम ॐ पुच्छनायकायनमः ॐ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ॐ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ २१८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि ऊँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भम्यं कुरु२ स्वाहा ऊँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्योहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ऊँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विग्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे वाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केंचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघ्री सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ २२० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशाय वशाय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ऊँ नमो भगवते ऊँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ऊँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा मामना पुरा दक्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उक्षशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वा सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २२२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खँड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सार्ति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु ॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा ।

॥ २२३ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ठा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ २२४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजित भद्रे भभ्यं कुरु२ स्वाहा
उँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात्
सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार
णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार
भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज
द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय
अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २
स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः
उँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ २२५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय २ उच्चाटय २ विद्वषय २ स्तंभय २ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ २२६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा याम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चचाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानही संतीयत्रद्रष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्रष्टि विषंचैव नदेयं सक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वां सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टंति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरघोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ६ ॥ उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं उँ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगीभेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी उँ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २२८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्लींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रींठः स्वाहाः शारिका भेदा महामाया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ २२६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमःऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमःऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमःऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमःऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमःऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा द्रष्टेषयेषुत्त्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहराति नाथ भ

॥ २३० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वान्तरेपि ओं नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे भभ्यं कुरु२स्वाहा ओं भुर्भुव स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात् सर्वविध्न शांत कुरु२स्वाहाः ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरू कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ओं नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

॥ २३१ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुराग्निवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्रहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन पराविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्युन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याधी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ३९२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ॐ नमो भगवते ॐ नमो नारायण हुंफट स्वाहा: ठ:ठ: ॐ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषाविद्या महा मामना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वाश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ य: पुमान पठते नित्य वैश्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रद्रष्टीमतं विषं ॥ २ ॥ अन्यद्राष्ट विषंचैव नदेयं मक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र संन्देहो नान्यथा न दिने भवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

॥ २३२ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उक्षशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखेद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोबध्वां सर्व रक्षां करोतु मे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेबध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्मं तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्रुरघोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोवाहरि ॐ उछिष्ट देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २३४ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु सति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायै विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

॥ २३५ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मंत्र ॥

ऊँ गगणपते नमः सर्वविघ्न विनाशनाय सर्वारिष्ट निवारणाय सर्व सौख्य प्रदाय बालानां बुद्धि प्रदाय नाना प्रकार धन वाहन भूमि प्रदाय मनो वांछित फल प्रदाय रक्षा कुरु २ स्वाहाः ऊँ गुरुवे नमः श्री कृष्णाय नमः ऊँ बलभद्राय नमः ऊँ श्री रामाय नमः ऊँ हनुमते नमः ऊँ शिवाय नमः ऊँजगतनाथाय नमः ऊँ बद्री नारायणाय नमः ऊँ श्रीदुर्गादेव्यैनमः ऊँ सूर्या यनमः ऊँ चंद्राय नमः ऊँभौमाय नमः ऊँ बुधाय नम ऊँ गुरुवे नम ऊँ भृगु वेनमः ऊँ शनिश्चराय नमः ऊँ राहुवे नम ऊँ पुच्छनायकायनमः ऊँ नव ग्रह रक्षा कुरु २ नमः ऊँ मन्येवरं हरिहरादय एवदृष्ट्वा दृष्टेषयेषुत्हृदय यं त्वयतोषमेति किंविक्षतेन भवता भूवियेन नान्य कश्चिन मनाहरति नाथ भ

॥ २३६ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालिसा सिद्ध मन्त्र ॥

वानतरेपि उँ नमो श्रीमाणभद्रे जय विजय पराजिते भद्रे मभ्यं कुरु२स्वाहा उँ भुर्भुव स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयो योन प्रचोदयात सर्वविघ्न शांत कुरु२स्वाहाः उँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धार णाय महानस्याम स्वरूपाय दीर्घारिष्ट विनाशाय विनाशाय नानाप्रकार भोगप्रदाय यजमानस्य सर्वारिष्ट हनहन पचपच हरहर कचकच राज द्वारे जयं कुरु २ व्यौहारे लाभं वृद्धिवृद्धि रणे शत्रु विनाशाय विनाशाय अन पत्तियाग निवारय निवारय संतति उत्पत्ति कुरु २ पूर्ण आयु कुरु २ स्त्री प्राप्ति कुरु कुरु हुमफट स्वाहाः ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः उँ नमो भगवते विश्वमूर्तये नारायणाय श्री पुरुषोत्तमाय रक्ष २ युष्मदधिकं

प्रत्यक्षपरोक्षंवा अजीर्ण पचपच विश्वमूर्तिकान हनहन एकाहिकं द्वाहिकं त्राहिकं चतुर्थिक ज्वरं नाशय नाशय चतुरागिनवातान अष्टादश क्षयान रोगान अष्टादश कष्टान हनहन सर्वदोष भंजय भंजय तत्सर्वं नाशय २ शोषय २ आकर्षय २ ममशत्रु मारय२ उच्चाटय २ विद्वेषय २ स्तंभय२ निवारय २ विघ्नै हनहन दहदह पचपच मथमथ विध्वंसय २ विद्रावय २ चक्रं ग्राहित्वा शीघ्रमागच्छा गच्छचक्रेण हनहन परविद्या छेदय छेदय चौरासी चेटक विस्फोटक नाशय नाशय वातशूल दृष्टि सर्प सिंह व्याघ्र द्विपद चतुष्पद अपरे बाह्य तारादिभि भव्यं तरिक्ष अन्यान्यपि केचिद्देशकाल स्थान सर्वान हनहन विद्यन्मेघनदीपर्वत अष्टव्याघी सर्वस्थानानि रात्रि दिन

॥ ३९८ ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

पथ चौरान् वशय वशय सर्वोपद्रव नाशय नाशय परसैन्यं विदारय २ परचक्र निवारय २ दहदह रक्षां कुरु २ ऊँ नमो भगवते ऊँ नमो नारायण हुंफट स्वाहाः ठःठः ऊँ ह्रां ह्रीं हृदय स्वदेवता ॥ एषविद्या महा म्नाम्ना पुरा दत्तं शतंक्रतो असुरान् हन्य इत्वतान सर्वांश्चबाल दानवान ॥ १ ॥ यः पुमान पठते नित्य वैष्नवी नियतात्मनां तस्यसर्वानहीं संतीयत्रदृष्टीगतं विषं ॥ २ ॥ अन्यदृष्टि विषंचैव नदेयं संक्रमे ध्रवं ॥ संग्रामे धारयेत्यगे उत्पाता जनिसंशय ॥ ३ ॥ सौभाग्यं जायतेतस्य परमं नात्र संशय द्रुतसद्यं जयंतस्य विघ्नतस्य न जायते ॥ ४ ॥ किंमंत्रबहुनोक्तेन सर्वसौभाग्य सम्पदा ॥ लभते नात्र नसंन्देहो नान्यथा न दिनेभवेत् ॥ ५ ॥ ग्रहीतो

यदिवा यत्नबालानां विविधैरपि ॥ शीतञ्च मुश्नतां याति उश्नशीत मयो भवेत ॥ ६ ॥ नान्यथा श्रुतये विद्या यः पठेत कथितं मया ॥ भोजपत्रे लिखद्यत्र गोरोचन मयेनच ॥ ७ ॥ इमां विद्यां शिरोवध्वा सर्व रक्षां करोतुमे ॥ पुरषस्याथवानारी हस्तेवध्वा विचक्षण ॥ ८ ॥ विद्रवंति प्रणश्यति धर्म तिष्टति नित्यशः ॥ सर्व शत्ररधोयांति शीघ्रंतेच पलायतां ॥ ९ ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भुवनेश्वर्याः श्रीं ॐ भैरवायनमोनम अथ श्री मातंगी भेदाः द्वाविंशाक्षरो मन्त्र समुख्यायां स्वाहांतोबाहरि ॐ उछिष्टं देव्यै नमः डाकनी सुमुखी देव्यै महापिशाचनी ॐ ऐं ह्रीं ठः ठः द्वाविंशत ॐ चक्रिरायां अहं रक्षां कुरुकुरु सर्ववाधा हरणी देव्यै नमोनमः सर्व प्रकार बाधा

॥ २४० ॥ सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मन्त्र ॥

शमनं आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु फट श्रीं ॐ कन्जिका देव्यै ह्रींठः स्वाहाः शीघ्र आरिष्ट निवारणं कुरुकुरु देवी शांवरी क्रीठः स्वाहाः शारिका भेदा महम्माया पूर्ण आयु कुरुः हेमवती मूलरक्षा कुरु चामुंडायैदेव्यै शीघ्र विघ्न सर्ववायु कफ पितरक्षां कुरु भूत प्रेत पिशाच घाल जादू टोना शमनं कुरु साति सरस्वतै कंठिका देव्यै गलविस्फोटकायैं विक्षिप्त शमनं महान ज्वर क्षय कुरु स्वाहाः सर्व सामग्री भोग सप्तदिवस देहु देहु रक्षां कुरु २ क्षणक्षण आरिष्ट निवारण दिवस प्रति प्रति दिवस दुखहरण मंगल करण कार्यसिद्धि कुरुकुरु॥ हरि ॐ श्रीरामचंद्रायनमः हरि ॐ भुः भुः वस्वः चंद्रतारा नवग्रह शेषनाग पृथ्वी देव्यै आकाशनी सर्वारिष्ट कुरुकुरु स्वाहा।

श्री भृगुसंहिता ज्योतिष महाशास्त्र के समस्त खंड हमारे यहां मिलते हैं ॥

अथ श्री भृगुसंहिता सर्वारिष्ट निवारण खंड पाठ चालीसा सिद्ध मंत्र समाप्त

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता सर्वारिष्ट निवारण खंड

समाप्तम्

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ ।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता संतान उपाय खंड

प्रारम्भ

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर।

इस ग्रन्थ से संतान कष्टियों की पत्री देखी जाती हैं

श्री भृगुसंहिता महाशास्त्र संतानउपाय खंड प्रारम्भः

पं० श्यामभरोसे गङ्गाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर ।

आवश्यक सूचना

पंडित जन इस विषयका सकोच न करें कि भृगुसंहिता में तो उसे पूर्वजन्म
में क्षत्री लिखाहै और मृग का श्राप कहाहै और संतानउपाय खण्ड से पूर्व
जन्ममें वैश्य या ब्राह्मण लिखा और गऊका शाप कहा है तो कारण यह है
कि श्राप तो कई जन्म तक फल करेहैं पिछले सात जन्मोंमेंसे किसी जन्म
की कुछ उत्पत्ति और श्राप जानो इस पुराचीन पुस्तक के श्लोकों का अर्थ
प्रथम बहुत कठिन था विद्वान् पंडित ही समझ सकते थे इस कारण हमने
इस ग्रन्थके श्लोक भी बहुत सुगम कराकर भाषा सहित छापकर प्रकाशित
किया जिसमे कि भली प्रकार सब की समझ में आजावे ॥ ॥ ॥ ॥

जन्मपत्र दिखलाने वाले को उचित है कि शुद्ध चित्त होकर

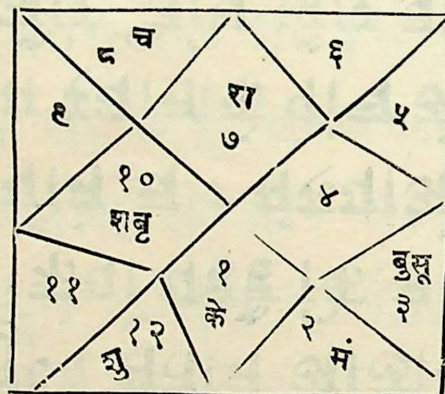
फलफूल मिष्टान दक्षिणा पंडित को भेट करे

जो मनुष्य संतान औलाद के वास्ते जन्मपत्र दिखलावे तो इस ग्रन्थ से देखनेकी क्रिया यहहै कि जन्म समय के इष्टकी घड़ी, पल, तिथि, वार चारोंकी एकत्रित याने चार संख्याओं को जोडे और संतान के देखनेका स्थान पांचवा है तो पंचम स्थान के पांच और मिलावे अब सब संख्या पांच हुई इष्टकी घड़ी और पल और तिथि और वार पंचम स्थान के पांच अब पांचो संख्या जुड़के जो संख्या हुई याने जो अंक हुवे उन्हीं अंकों का सुफा पुस्तक में पढ़ो याने वही सुफा दोनों तरफसे पढ़ो प्रच्छक का सर्व संतान का और पूर्व जन्म के पाप का प्रायश्चित पावेगा उपाय करने से ईश्वर चाहेतो निश्चय संतान होकर जीवें।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ शुभ सम्बत् १९५९ मासानाम मासोत्तमे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां गुरुवासरे ५७।२४ ऽनुराधा मे. २५ । १८ इष्ट घड़ी ३८ पल ४५

॥ अथ लग्न चक्रम् ॥



जिस संतान कष्टीके पास जन्मपत्री नहीं हो तो उसीवक्त प्रश्न पत्र बनवाकर इसी रीति से देखो तो भी ठीक विध मिलेगा

॥ उदाहरण ॥

जैसे कि यह जन्म पत्री सन्तान भाव दिखाने लाया तो इष्ट की घड़ीं ३८ पल ४५ तिथि चतुर्दशी १४ वार गुरु के ५ सन्तान स्थान स्थान पञ्चम के ५ अब सब संख्या पांच हैं ॥

इष्ट की घड़ी	३८
पल	४५
तिथि चतुर्दशी	१४
वार गुरु	५
पञ्चम स्थान के	५
	१०७

पांचों संख्या जुड़के एकसौ सात हुवे अब आगे पुस्तक का १०७ सुफा दोनों तरफ से पढ़ो जहांसे कथा आरम्भ हुई है

सं०उ०
७

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादो भवेत्वालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रमादाप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिर्दीघ आयुस्याद मत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तयाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्यो आगत्वा सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चन्द्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राक्षय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ बृणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अल्पगर्भोव खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिंता महानकं पित्रश्च देवपुजाच नेकयत्नश्च कारयेत ॥ सुतःसुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ **भाषा** ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित की वृति आशक्ती हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रोंके ध्यानमें दुखीरहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव मा सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रृणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापवाण गटीद्धार गवनखेटानु सारिणः मयूरोसहितेवाल बनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापन ॥ मयूरो कंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र महाशोकं सहजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलन गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तू भी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं मयूरो श्रापकंनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चार्ण मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देतो निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

स०उ०

८

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा क्रियतेफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनञ्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जन बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रञ्च सिद्धति ॥ अष्टमेष्टादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भञ्च स्थित्वां अल्पजीवीच बालकः ॥ आदर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ वामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन को प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता [illegible] समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

स०३०

६

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्ण भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप सुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक वारंवार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुसुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र करंतथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमेतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशन ग्रतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनष्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नर्मदेहो विंद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकृत्वा धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्यापठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्तस्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथयन्तमुनि सत्तमः

सं०उ०
११

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठया ॥ लोकेलक्ष प्रतिख्यातो बहुदासी निजकृत्यये इटवा अन्न व्यापारं अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च आगते वैश्यति क्रोधकं कृत्वा ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत ॥
सं०उ० भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कगले अन्न के अर्थ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के
१२ पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतके देखे सो हाहाकार विह्वल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुक्खकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्त्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणाच्च संकल्पब्राह्मणांददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तिनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेके कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मैष्ठिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

सं०उ०
१३

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेल्लोक आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोहंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवानज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिना ॥ राजद्वाराधनप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेच सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नोविभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥ वाहनादिसुखंजाते तत्पतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त मुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनेप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधनी बहुपीडा मनोद्वेग बंधुवर्गत्र क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आसक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्रीको पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख अवस्था पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीनरः चापवाण कृतेधारण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विह्वलं ॥ साधुशापमुखंदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनरांशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभुषणंदानंयुग्मबालश्च मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वक ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

भ॰उ॰

१४

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रग्रल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविधा नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीग्रकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥ संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणांभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा दीर्घकष्टंविजानीयात औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्तं ग्रर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् प्रथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे ग्रभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहै एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरी स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से विवाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

भृ० उ०

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संततवंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहे ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवकुरुरक्षा वैश्यलक्षप्रहारकं नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येरामबीजञ्च रक्तचन्दनम्रलिखेत् ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पंददेतिविप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प का मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपन्नवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्ठया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये पितृपीडाग्रहेनित्यं मातृदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥ बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महंप्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय कास्मन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधनुलोकमा व्याव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृष्टयः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणार्थनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नंदृष्टयः ॥

सं०३० १७

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुलं की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की वंध्या हो है और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीवबधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जीवें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नश्चसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्ते अथवा तीर्थतालकं रामांकितंददेत्ग्रासं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधाथा मासेमासेसुखगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमं व्रणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्चविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति कार्यकृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्ठोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने देहकष्टभयघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशभविष्यंति वशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धंति भूमिर्लाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चश्रापार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरी स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगश्चप्रासये ॥ अश्वपतिराजग्रामोत्र बहुसर्वीनरोभवेत परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी ॥ द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् शत्रुपक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यश्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदकर छीनला और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमत्रकिंजापकं पूर्वपापविनश्यति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतविधिपूर्वक रक्तचदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य शुभमूर्तिप्रवेशण सङ्कल्पंददेद्विप्र गायत्रीमत्रजापकं मंत्रसंतानगोपाल अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवन ॥ भाषा ॥ हे पुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण में बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर शुभ मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपरावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिन्कालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकुलज्ञश्च बहुसेवी नरोभवेत प्रथम आयुधनंन्यूनं पश्चात्पुष्कलंसदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्तात्र पर[illegible]दा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्धनसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्त पूर्वपापश्चदुखिता[illegible] [illegible]स्वायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीत्र शत्रुवर्गस्यतेसदा ॥ अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिचापिभूतले ॥ नानासौख्यलभेजीव भजनानन्दमर्वदा पितुद्रव्य विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम ॥ कस्मिन्कालगतशुक्र अकस्मात्अतिचिंतया व्ययदोषधनदान दुखचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालाके आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टमयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीर्घपापप्रभावेण अश्ववशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त कर और दयावान् भोक्ता पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से करे अतिज्ञानी शूरवार हो संतोषी बृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहै दुश्मन सदाजलते रहें पाप ग्रहों की शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पोड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मञ्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापञ्चकारणः
कायस्थञ्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यति धनधान्योभविष्यति राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
बहुपक्षोत्रधनञ्च दयाहीनश्चदुष्टय: तितरोचित्रकंपक्षी बृक्षोजीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
पुत्रसुखविनष्यति भाषा ॥ हेपुत्र यह जाव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुनाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेमंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मयानघः त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिर्वृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जीवचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः यत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचितावलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके असत्यवचनब्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचिंत्य सुस्थिरंनविपर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुशांति कान्ताद्वौगुरु वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्तचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुक्खश्चप्राप्नोति गुप्तचिंताद्वामकं ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षण देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक सम्पूर्ण काम हों

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै त्राम देखे ॥ शुकोवाच ॥ केन मंप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मश्चगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकीर्तिभविष्यति ॥ कमट्ठाचमृतिकाअंड हस्थनित्यश्चधारणा बहुपक्षिविशेजीव बारम्बार भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षो बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुलों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्ठा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुकोवाच ! किंयत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्यंते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मण भोजनंदानं कुर्वंतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षश्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तये: दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ॥ सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेनित्यं सुकीर्तिचभयानकं व्ययोदीर्घसमायात सर्वकार्यचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखश्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥ युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणां पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकार्णम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

सं०३०
२५

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्येतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गई ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्नदानमंत्रमंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजदतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

स०उ० २७

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः ग्रहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयान्वितः ॥ सुन्दरश्चश्चलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमोसुप्रीतिंच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशासुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादोविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रयल्पमहाकष्टं प्राणभातिश्चचिंतनम् श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ सुसलाभविशेषेण अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपोच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणाकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः त्रणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखंविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार के पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरवीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पूजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहे दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से प्राप्ती खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओं से विवाद हो सर्व

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्व पूर्वपापश्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्टया
बहुजीववधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणाकुरुधारण गवनखेटातुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इस कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं सकल्पंददेत्विप्र पूर्वपापश्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

म०७० २८

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्टपत्रंग्रहाकाव्य दीर्घमान्योप्रतिष्टतः पुत्रदारादिसंचिंत्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं सुलोन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलंकार्यं जायतेचमहोत्सवम मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयर्तादिनेदिने ॥ जलंपशुभयंशुक्र तनकष्टम्पपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलवधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रग्रल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुश्चततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ मुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

सं०३०

२९

स०३०
३०

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपनाथ अहमदासकुरुदया पूर्वपापञ्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मञ्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घपापंकुरुजीव शृणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्त कुलेजन्म बहुभागोप्रधान राजद्वारकंन्यायम् उच्चःदशीअप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यकं ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनंभेत् प्राणादण्डददेत्विप्र मुद्राशूद्र कलमेत् तातपुत्रमृत्युदस्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदी सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥ ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्ममुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दुलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापञ्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ नाटिकामद्रयानञ्च विपाकेधन वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवानांसुखलघु कवित्वमतिसंजाते मिष्टभोज्य मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधञ्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतेसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरेच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीस्तरितम्शुको भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणोभय विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक पृथ्वीपर आनंद कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

सं०उ०

१३

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअपणक्कत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र धनददेत् श्रुणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविंह्हल धनचिंताशरीरेच कृश्यदहदुर्बलम् ॥ तणकालगतेकाव्य ऋषी ऋतंतथा मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविंह्हलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक्र प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन से आया तब लोभ के वशिभूत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रस्यकारकं ताम्रपात्रघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेतविप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीबटुकभैरवाय शाप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बच्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखस्यप्राप्नोते वंशवृद्धिर्दिनेदिन ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ।

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननीयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ने दानमन्त्रव्रतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानञ्चमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखश्चंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमेद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं शुभ्भविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचशुभ्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये शुभप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम मितेतथा ॥ दीर्घलाभनसंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानकं ॥ वैद्योंपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णाआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् पुत्रदुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्टा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से सतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पिता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रृणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहूसेवीनरोभवेत राजमुद्राददेत्कुर्मी लक्ष्योवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंवद्धो सत्याजन उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति वृक्षडालगृहपक्षी बालोकोटमृतंतथा ॥ पक्षोशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजीवितं ॥

सं०उ० भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा

३४ को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो में घोंसले बना रखे थे सो बन कई योजन में का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहूअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे२ पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्ठदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंताविचितो भवेत चित्तश्चचमलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतेप्राज्ञ पुनर्दीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चांतेचिंतनंकृतः ॥ नारीचिंताहहेशुकः शत्रुमित्रवदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेसत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि सिद्धति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च अमत्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचित्य कामाशक्तोपिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वंअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक जिस जन्मपत्री में ऐसे गृह आनकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नआवे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहै और जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित हुवाकरे सत्यसे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला कहैं कई अलाआवें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक पृथ्वीपै यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देख सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं शृणुपुत्रति
ध्य नक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मअहीरक ॥ मिष्टन्नेत्रञ्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचभक्षये चद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥
अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिकं युग्मसर्पमहान्दोर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूड गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीत्र
लोभा मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजोवगुडोभक्ष प्राणोवगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं
पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत
बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले विषियर कड़ाह
में आन पड़े सो गिरतेहो मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन
लोभ वश नहीं किया मरे हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिस
जीव ने खाया वही मृत्यु को प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को भटके है ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमत्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
श्रद्धा मात्रमात्रक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनञ्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥
दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापश्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो
सर्पोंको मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दान करे और यज्ञ हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
३६

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये बलान्वितःविलासांच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसांसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेतिमित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ शुग्मग्रल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयजीव वृणचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति नसदेहो आशक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकंरचना ऋणभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह आन के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नहीं २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते आसपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्ठवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तितथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशामार्गे अन्धकारेपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकत्वा अन्यपुर्षोपिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रुणुशब्द अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णौपिमृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सहजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम् मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥ दीर्घवज्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुहमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेद्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं वटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावें तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

सं०७०

२८

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोनात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ यदोज्ञात्वामहदुखं पुनरंतोश्यमाप्नुयात् छलच्छिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णश्च बुद्धि वानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत् ॥ सत्यमार्गशुकृत्यश्च स्वकुलपोषणोरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचउक्तता ॥ अकस्मात्महादुखं भयभीतोचप्राणक शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक इस जींव कीं पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्रीं भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥ पशुश्चंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीत्रालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

स०३० ३६

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनमलिखेत ॥ पक्षीबालकम्प्रकारम् लिख्यतेविधि पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥ दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थ पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥ मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात नेत्रपीडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्ठमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचितानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्ठोवा भूमिलाभ भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्लिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्व पूर्वपापश्चकारण

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रासिंहवधोबाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविह्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर हाहाकार कर के विह्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥

शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप से पू का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजञ्च स्वर्णोशुद्धमाद्रसेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिचकारकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र जापकं ॥ वस्त्रभोजनदानं संकल्पंब्राह्मणददेत वब्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

सं०३० ४२

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोवातपीडिनं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रश्चसिद्धाति ॥ बुद्धिमंतोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीन्नरः ॥ चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभस्तथैवच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चितं जायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनजन्ममन्यते ॥ पुनरंतेसुखंप्राप्य आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं यक्ताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकार्य रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गातवाद्यतस्सदा सुन्दरंमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी सर्वसुक्खञ्चप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र के सी नित्य नई तरंग

उठैं एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक्र पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥
शुक्रोवाच ॥ केनपापञ्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपूर्वकथंतात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुलञ्चप्राप्नोति वामपुत्रश्चविव्हलं
पुत्रप्राप्तिनदृश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म
कुरुक्षेत्रनिवासयो दीर्घदानञ्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक्र तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन
करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरेहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ
दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण
जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सोउसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया
कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुक्रजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा
हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा
यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्रीमंत्रजापकं वस्त्रआभूषणसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥
इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल
चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्ततव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षंचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्टत्त ॥ यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥ क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट प्रभावेण अकस्मालाभसंभव ॥ कुवेद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचरणयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणाचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रम्हाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नाकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है सब सुख देखे परन्तु बिना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्म कथाकथ्यं शृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणहस्तकंसाय मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के बिलाप देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकम् पूर्वशापविनश्यति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवश्चाशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंखुस्थिरंलोके चञ्चलोचित्तविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृष्यन्ते विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपीड्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राप्ति आनन्दंभूमिमण्डले ॥

पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नींक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात् महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भाग्यवान् हो प्रसन्न रहै एक जीवको आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई वार्ता सोचता रहै गुप्त चितासी हो जाया करे नये नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहै लाभेश और पञ्चमेश को पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पैं आनन्द और पितृ पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात् चिंता हो जाय गायत्री मंत्र जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रुणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रुणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥ गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणगवनं गौश्रापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनष्यंति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता था सो रात्री को गौ और उसका बचा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वंशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल रक्तचंदनं गौबच्छतिआकारं तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः सुखउच्चार्णमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्रस्वर्ण के पत्र परगौके बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे प्रशमिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्त उद्यमेणधनास्यः ॥ कुलश्रेष्टसुभाषीच सर्वेषांतोषणेरत दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ त्रिलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धकत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥ विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापूज्य पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहल्लाभं भाग्योदयदिनेदिने अतयायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चिंतवन करे एक समय बुद्धि श्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्टा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथम् पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

पाप इस जीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रतिध्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥ गौवच्छत्रणाभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेत ॥ दारुणादुखददेत्विप्र अग्रजन्मचभोक्तया पुत्रसुखंविनश्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और उसका बचा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापक पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पूजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुकमंत्रकृतेजापम् पूर्वशापविनश्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीऽस्यफलश्चेदं विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभग्निचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणचिन्हशरीरञ्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बंधुरक्षविरोधता ॥ अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति कार्यनाश्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात् व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रश्चल्पमहादुक्खं नर्वानोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपुर्वोगा भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगञ्च खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रञ्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्री से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त बीमारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

स० ७०
२१

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्रासि भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखञ्चप्राप्नोति संततिर्वंशविनाशकः ॥ भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रूहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूर्व जन्मकी कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं अश्वश्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचरणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यंते हाहाकारविह्वलं ॥ क्रोधोशापमुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणाशंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणांददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ठ ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

१०७० ५२

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलंश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापीच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घश्चायुसुयत्नेन बृहत्योफलप्राप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अते विद्याविसार्जनम् ॥ बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभग्निसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच सूरवीरमहोन्नरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवनं पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः चौरभीतिविजानीयात गुप्तशत्रुमहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भीं प्रींत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणु पुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा ग्रथवावाहनोदिपः वहूविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट वासकं ॥ वृषभदोर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविह्वल ॥ राजपुत्रददेतशापं ग्रतिक्रोधोपिब्रुडनं पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अन्धाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमन्त्रंकिंजापकम् द्विजशापप्रणश्यति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणु पुत्रमहादानं वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रग्रगुप्तया गायत्री मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्पंपदर्तविप्र लीनपात्रद्विजोतमः वस्त्रआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में प्रवेशकरे विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

सं० ८०
५४

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादी भवेत्वालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रमादोप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीर्घ आयुस्याद् मत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तयाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्वो सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चन्द्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्नुय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ बृणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अल्पगर्भोच खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिंता महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःसुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित की बृति आसक्ती हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रोंके ध्यानमें दुखीरहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव ना सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

स० ३०

५५

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशक: पूर्वगाथाकथंतात श्रुणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापवाण गटीद्धार गवनखेटानु सारिण: मयूरासहितेवाल बनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापन ॥ मयूरोशापकंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुण: ममपुत्र महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किमन्त्रं किंजापकं मयूरो शापकंनष्ट: सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चारणं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैर वाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देतो निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

स०७०

५६

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ १ क्रूर ग्रहापूजा क्रियतफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्थप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनञ्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रञ्च सिद्धति ॥ अष्टमेष्टादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तचधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भञ्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रा... किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उच्चारण विधिपूर्वक ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्ण भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप सुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में

स०३० जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और

५८ उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगा सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुसुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णास्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र करंतथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीत्वप्राप्तय ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशन अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्त याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनष्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नमंदेहो विद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवोनो कार्यकंकृत्वा धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोक विद्याण्ठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखञ्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहत हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्तस्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तमुनि सत्तमः

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठया ॥ लोकंलक्ष पतिख्यातो
बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं
कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत ॥

भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का

व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कंगले अन्न के अ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के
पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता
ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विह्वल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक
पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ क्रियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुक्खकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रञ्च घृतमध्ये स्वर्णमूर्ति
प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणञ्च संकल्पब्राह्मणंददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेके
कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मेष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेलोके आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोर्हंता मध्यभागोसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवान्ज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्रमोदिता ॥ राजद्वाराधनंप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेयं सुखंगता: ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥ वाहनादिसुखंजाते तस्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुर्भक्त मुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधनी बहुपीडा मनोद्वेगं बंधुवर्गच क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित मे सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्री को पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

सं०उ०

६१

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीन्नरः चापबाण कृतेधारण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विव्हलं ॥ साधुशापमुखदत्वा त्रिय जन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानंयुग्मबालश्च मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वक ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह बस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतवंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रअल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीअकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥ संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा दीर्घकष्टंविजानीयात औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्तं अर्थप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् प्रथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहे एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से विवाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

सं०उ०

६३

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संततवंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवकुरुरक्षा वैश्यलक्ष्महारकं नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाश्चैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनमलिखेत ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत संकल्पंददेविप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प की मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्टया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये पितृपीडाग्रहेनित्यं मातदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥ बहुयत्नश्चकर्तव्यम् पुत्रसुखंनदृश्यंते महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय कास्मन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीत्रप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृष्टयः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणर्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नंदृष्टयः ॥

स० ३० ६५

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जीवें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नवसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्ते अथवा तीर्थतालकं रामांकितंददेत्ग्रामं मीनदीर्घचभोजनं स्वर्णचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

सउ०
६७

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमं वृणाव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्चावनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चंद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति कार्यकृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशभविष्यंति वशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धंति भूमिलाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चशापार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगश्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी ॥ द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् शत्रुपक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यञ्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतविधिपूर्वक रक्तचदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्टविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवो नरोभवेत प्रथमआयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्ते पूर्वपापश्चदुक्खिता ॥ अल्पायुद्दश्यतेलोके सुकर्मसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीच शत्रुवःतप्यतेसदा ॥ अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्य सुकीर्तिचापिभूतन ॥ नानासौख्यलभेजोव भजनानंदसर्वदा पितुद्रव्य विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतशुक्र अकस्मात्‌अतिचिंतया व्ययदीर्घवनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालोके आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीर्घपापप्रभावेण अन्नवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त करे और दयावान् भोक्ता पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाच पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से करे अतिज्ञानी शूरवीर हो संतोषी वृत्ति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहे दुश्मन सदाजलते रहें पाप ग्रहों की शांति कराता रहे श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

स०उ०

६९

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मश्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापञ्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति· राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥

सं०उ०

७०

बहुपक्षोत्रधनञ्च दयाहीनश्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी बृक्षोर्जीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जाव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुनाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणाश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मयानघ: त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिर्वृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जीवचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ग्रयत्नेनैवभोक्ताव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचितावलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके ग्रसत्यवचनंव्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षणा ॥ ईशभक्तिसुसंचित्य सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंवेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुशांति कान्ताद्वौगुरु वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्नचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निंदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुक्खश्चप्राप्नोति गुप्तचिंताश्चवामक ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं ग्रनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि श्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षणा देवता में कुछ भक्ति ग्रल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व ग्रायु सुख, मध्यम ग्रायु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहे हेशुक सम्पूर्ण काम हों

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकाना बनीरहै त्राम देखे ॥ शुकोवाच ॥ केन मेंपभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मश्चगाथायो श्रृणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घग्रघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकीर्तिभविष्यति ॥ कमट्ठाचस्मृतिकाअंड हस्थनित्यश्चधारण बहुपक्षिविशोजीव बारम्बार भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षी बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुलों से जीव मारने का वहुत ग्रभ्यास था कमट्ठा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था ग्यौर उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुकोवाच ॥ कियत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्‍ते वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो ग्यौर इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वंतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंग्रन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं ग्रर्धलक्षश्चजापकं ग्रनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री ग्यौर ग्रर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे ग्यौर ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे ग्यौर पक्षियों को नित्य प्रति रोज ग्रन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तयेः दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसर्जिता ॥

सं०३० सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेंनित्य सुकीर्तिचभयानकं

७३ व्ययोदार्घसमायात सर्वकार्यचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखश्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥ युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मश्रकारणम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छो शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उतरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥ शुकोवाच ॥ किंयत्नदानमंत्रमंत्रस्य किविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजदंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पुत्रसुखंनसंदेहो वशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०

७४

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वंखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचितः ॥ सुन्दरश्चबलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुकीर्तिंच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनम् श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं ॥ मनेच्छापुजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार के पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरवीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पुजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से प्राप्ती खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओं से विवाद हो सर्व

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्टया बहुजीववधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणाकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इन कारण पूर्व जन्म का सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं सकल्पंददेत्विप्र पूर्वपापश्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

स०३०

७६

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्टपत्रंग्रहाकाव्य दीर्घमान्योप्रतिष्टतः पुत्रदारादिसंचिंत्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं सुखीन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलकार्यं जायतेचमहोत्सवम् मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयंतिदिनेदिने ॥ जलंपशुभयंशुक्र तनकष्टम्पपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अंतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रअल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीघायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ मुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान, की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

ब०उ०

७७

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपानाथ अहम्दासस्कुरुदया पूर्वपापञ्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मञ्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घंपापंकुरुजीव श्रृणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुभागोप्रवानक राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनलभेत् प्राणदण्डददेत्विप्र मुद्राशूद्र कलभेत् तातपुत्रमृत्युदृश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदो सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥ ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्ममुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापञ्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
७९

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेधन वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवानासुखलघु कवित्वमतिसजाते मिष्टभोज्य मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः अतिवल्लभमूर्तिश्च भूवनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानश्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः दवतागुरु भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीकलेशितमृशुक्रो भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणभय विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरश्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै विनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनंद कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअर्पणकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र धनददेत श्रृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रवविंव्हल धनचिंताशरीरेच कृशयदेहदुर्बलम ॥ तथाकालगतेकाव्य ऋषी ऋमृतंतथा मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविंव्हलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन से आया तब लोभ के वशिभूत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमत्र किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रस्वकारकं ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेत्विप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींबटुकभरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बञ्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखमवाप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

स०उ०
८०

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननीयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ते दानमंत्रव्रतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानश्चमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखअंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये गुप्तप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम मितेतथा ॥ दीर्घलाभनमंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षट्सप्ताङ्केवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् पुत्रदुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ व के लग

सं०३०
८१

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् राजमुद्राददेत्कुर्मी लक्षयोवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति वृक्षडालगृहपक्षी बालोकीटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजीवितं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णान करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालों में घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन म का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखस्वप्नप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रञ्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णञ्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहुअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छेर पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंताविवतोभवेत चित्तश्चचञ्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतेप्राज्ञ पुनर्दीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेच्चितनंकृतः ॥ नारीचिंताहदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत जीवचिंताविशेयेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेनेमत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपिसिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च ग्रमन्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ

विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोणिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वग्रल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च

सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो ग्रल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जन्मपत्री में ऐसे गृह ग्रानकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नग्रावे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका ग्रागमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहे ग्रौर जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक्र पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे ग्रौर यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित हुवाकरे सत्यसे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे ग्रकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला कहैं कई ग्रलाग्रावें नयाजन्महो फिर ग्रायु पूर्णभोगे हेशुक्र पृथ्वीपै यहजीव ग्रनेकतरहके ग्रानन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं श्रृणुपुत्रति ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मग्रहीरक ॥ मिष्टत्तेत्रश्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचप्राप्तये चन्द्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहान्दीर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूडं गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजीवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले वषियर कड़ह में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मर हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिस जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को सटके है ॥ शुकोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रमाशक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनश्चदानञ्च कुर्वीतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापश्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो सर्पोंकी मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मनिष्ठ ब्राह्मणको दानकरे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
८५

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये बलान्वितःविलासोच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसीसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेत्मित्रं सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मअल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति नसंदेहो आशक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकरचना अथभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह आन के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्टवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तिथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविश्चास्तानिशामार्गे अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकत्वा अन्यपुर्षोपिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रुणुशब्द अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णोपिमृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम् मृत्युसर्पंलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥ दीर्घवस्त्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावें तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

सं०३० ८७

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोन्नात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ यदौज्ञात्वामहद्दुखं पुनर्दंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौश्रापिवर्णश्च बुद्धिवानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत् ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलेपोषणेरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महद्दुखं भयभीतोचप्राणाक शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतिपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्धप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥ पशुश्चंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीजालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनमूलिखेत ॥ पक्षीबालकमुकारम् लिख्यतेविधि पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पमब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥ दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थ पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥ मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात् नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्ठमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचिंतानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात् गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्ठोवा भूमिलाभ भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्लिष्ट औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारण

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रासिंहवधोवाण द्विजपुत्रचमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविव्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया वड़ा भारी धनवान् था सो एक समय धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर हाहाकार कर के विव्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप से पू का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजञ्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिश्चकोरकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणददेत वत्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

स० ३०
६०

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि नरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमो शरीरोबातपीडिनं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रञ्चसिद्धात ॥ बुद्धिमंतोविशेषेण सुज्ञाताचतुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुनसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीनरः ॥ चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभस्तथैवच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चित्तं जायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनजन्ममन्यते ॥ पनःतेसुखंप्राप्य आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं यत्कृताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकार्य रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंभृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी सर्वंसुखलक्षप्राप्नोति पुत्रप्रातिउपायक ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामने देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र के सी नित्य नई तरंग

म०७० ९१

उठें एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक्र पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥
शुक्रोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपुर्वकथंतात श्रृणुत्वंममबांछया ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति वामपुत्रश्चविह्वलं
पुत्रप्राप्तिनदृश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म
कुरुक्षेत्रचवासयो दीर्घदानञ्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक्र तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन
करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरेहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ
दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण
जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सो उसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया
कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच
किंमत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुक्रजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा
हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा
यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्री मंत्रजापकं वस्त्रआभूषणांसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥
इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रकी मूर्ति लाल
चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
९२

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्तव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहूत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्टत ॥ यदामध्यदशायाव मध्यलाभोतिचित्तनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥ क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुवेद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणाचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रम्हाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पुरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की बृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नोकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है सब सुख देखे परन्तु बिना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्म कथाकथ्यं शृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणेहस्तकंशाव मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापसुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकम् पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखभविस्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

सं०७०
९५

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके चञ्चलोचितविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृष्यन्ते विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपीड्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राति आनन्दंभुमिमण्डले ॥ पितृपीड़ाग्रहयुक्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात् महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोभाग्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो प्रसन्न रहै एक जीवको आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई वार्ता सोचता रहे गुप्त चिंतासी हो जाया करे नये नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और पञ्चमेश को पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पै आनन्द और पितृ पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात चिंता हो जाय गायत्री मंत्र जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ शृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनष्यति ॥
भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रोतिध्यानक ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौबच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणगवनं गौश्चापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनष्यंति
सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
था सो रात्री को गौ और उसका बच्चा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमंत्रंकिंजापकं पूर्वंशापविनम्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौबच्छतिआकारं तांदुलस्तेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः सुखउच्चार्णमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पुर्वशापविनश्वति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्रस्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचितातिमन्यते ॥ श्रमोपिज.यतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचितकः परकृत्यरतोप्रेमी जनास्सर्वे प्रशंसिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्त उद्यमेणधनाप्तयः ॥ कुलश्रेष्ठसुभार्षीच सर्वेषांतोषणोरत दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभस्य अर्द्धकृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्ठपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥ विशेषोजायतेलाभस्य मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापूज्य पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहल्लाभं भाग्योदयदिनेदिने अतन्त्रायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनहश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ठ हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चितवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥ शुकोवाच ॥ श्रुणुतातकृपानाथम् पूर्वगाथावक्ष्यसे केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे

सं० ३० ९७

पाप इस जीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥
भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रतिध्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥ गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं
बच्छोपिप्राणगवनं गौशापसुखंददेत ॥ दारुणादुखददेत्विप्र अप्तजन्मचभोत्तया पुत्रसुखविनश्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और
उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा
विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म
तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापक पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी
महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो
और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं
तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउचार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनश्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक
भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके
बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पुर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्थफलश्चेदं विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभग्निचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणाचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बंधुपक्षविरोधता ॥ अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात् व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रअल्पमहादुक्खं नवीनोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगञ्च खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रञ्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता भी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्रा से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त बामारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

सं०७०

९९

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखञ्चप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः ॥ भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रूहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूर्व जन्मकी कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं अश्वञ्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचरणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यंते हाहाकारविव्हलं ॥ क्रोधोशापसुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणंददेत् ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ठ ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

स०३०
१००

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापीच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घआयुसुयत्नेन वृहत्योफलप्राप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम् ॥ बहूविद्यानमाप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभगिनसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच सूरवीरमहान्नरः पत्नीभीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवं पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः चौरभीतिविजानीयात गुप्तशत्रुमहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्टा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

सं०उ०
१०१

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवावाहनोदिपः बहुविप्रसहित्पुत्रो कावेरीतट वासकं ॥ नृपमदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविव्हल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपिबूडनं पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकम् द्विजशापप्रणश्यति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणु त्रमहादान वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रञ्चयुक्तया गायत्री मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्पंपदर्तविप्र लीनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रआभूषणांदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में प्रवेशकरे विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

सं० ७०

१०२

सं०३० १०३

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादो भवेत्वालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रमादाप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीघ आयुस्याद सत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तयाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्वो सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चन्द्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राक्षय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ बृणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अल्पगर्भोत्र खराडतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिंता महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःसुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुराडली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित की बृति आशक्तो हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि मे आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रोंके ध्यानमें दुखीरहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव पर सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रुणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविश्यति अश्वपति गजग्रामीच उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापबाण गटीद्धार गवनखेटानु सारिणः मयूरोसहितेबाल बनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापनं ॥ मयूरोशापकंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्रं किंजापकं मयूरो शापकंनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चार्णं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैर वाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देता निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

सं०उ०
१०४

स०उ०
१०५

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा क्रियतेफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनश्च विद्यायां अन्तविद्या विसर्जनं बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्च सिद्धति ॥ अष्टमेष्टादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयाव छत्रचिंतान्न प्राप्तये ॥ गुप्तचधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भश्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ मादहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणाणरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उचारण विधिपूर्वक ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमात। देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्ण भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो वड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगा सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं मस्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मुर्ति गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र कं तथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

सं०उ०
१०६

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनश्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नसंदेहो विद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकृत्वा धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्याप्ठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखञ्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंचो पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्त स्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तमुनि सत्तमः

स०उ०
१०७

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठया ॥ लोकेलक्ष पतिख्यातो बहुदासी निजकृत्यये इटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणोपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत ॥

भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कंगले अन्न के अर्थ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विव्हल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुखकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्त्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणाश्च संकल्पब्राह्मणांददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तिनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ मासे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेके कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मैष्टिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालवृद्धि भवेलोके आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोहंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवान्ज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिता ॥ राजद्वाराधनंप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेवें सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥ वाहनादिसुखंजाते तप्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त सुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधनी बहुपीडा मनोद्वेगं बंधुवर्गत्र क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित स सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्री को पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख प्रथ्वी पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुधीनरः चापबाण कृतेशरण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विव्हलं ॥ साधुशापमुखदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रयाभूषणंदानंयुग्मबालश्च सूर्नये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वक ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके बचों की लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

न० ३०
१११

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः। पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रअल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीअकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥ संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा दीर्घकष्टविजानीयात् औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्त अर्थप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुखश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् प्रथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहे एक जीव से विशेष ध्यान रहे चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से विवाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहे पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहे ॥

शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संतत्वंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में, कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापश्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदवक्षुरुरक्षा वैश्यलप्रहारकं नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत ॥ भाषा ॥ तब शुकजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुराय यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देख ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनमुलिखेत ॥ वस्त्रआभुषणंदानं षटरसअन्नकंददेत संकल्पददेतिव गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प की मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्टया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये पितृपीडाग्रहेनित्यं मातृदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥ बहुयत्नश्चकर्तव्यस् पुत्रसुखंनदृश्यंते महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ अहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय कास्मन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृष्टयः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणर्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नंदृष्टयः ॥

सं०उ०

११३

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुकदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहे और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिष्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में

यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव

का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जावें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रनेखधनंददेत् बहुअन्नसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्ते अथवा तीर्थतालकं रामांकितंददेत्प्राप्ं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीयंदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधाथा मासमासेसुखंगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रम बृणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगञ्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देचविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगञ्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चंद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले ताततलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति का कृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्ठोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशभविष्यंति वंशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यञ्चसिद्धंति भूमिलाभभविष्यति गुप्तञ्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापञ्चश्रापार्थ अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो पृथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

सउ० ११५

सत्तरसे अधिक हो हेशुक सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगञ्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् श पक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यञ्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥

स०उ० ११६

भाषा ॥ हेपुत्र ऐक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतेविधिपूर्वकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठवि ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवे ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवो नरोभवेत प्रथम आयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीव्रतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाढ्यसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्त पूर्वपापश्चदुखिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीत्र शत्रुवःतप्यतेसदा ॥ अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिचविभूतन नानान सौख्यलभेजीव भजनानदसर्वदा पितुद्रव्य विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतेशुक्र अकस्मातअतिचिंतया व्ययदीघवनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालोक आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीघपापप्रभावेण अप्रवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त कर और दयावान् भोका पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी स आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से करे अतिज्ञानी शूरवीर हो संतोषी वृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहै दुश्मन सदाजलते रहैं पाप ग्रहों की शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मश्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापश्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥
बहुपक्षोबधनञ्च दयाहीनश्चदुष्टयः ततरोचित्कंपक्षी बृक्षोजीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण
पुत्रसुखविनष्यति भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुनाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रमन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०

११८

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता म॰॰॰वः विग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जो॰चिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ग्रयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेर्दीर्घ लाभचितावलीयसी प्रमे॰ोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके ग्रसत्यवचनंत्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचित्य सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटवेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं ग्रत्यपापकुरुणाति कान्ताद्वौगुरु वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्तचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निदतोमति जीवंध्यानञ्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुखखञ्चप्राप्नोति गुप्तचिंताश्चवामक ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं ग्रनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षण दवता में कुछ भक्ति ग्रल्पस्थिर न हो कामदव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व ग्रायु सुख, मध्यम ग्रायु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक सम्पूर्ण काम हों

स०उ०
११९

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै नाम देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ केन मेपप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मअगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकीर्तिभविष्यति ॥ कमट्ठाचसूतिकाअंड हस्थनित्यअधारण बहुपक्षिविशोजीव बारम्बार भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षी बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुल्लों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्ठा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुक्रोवाच ॥ किंयत्नअकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्यते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वीतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षअजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तये: दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसाजिता ॥ सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेन्नित्य सुकीर्तिचभयानकं व्ययोदीर्घसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखश्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥ युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकारणम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छो शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उबरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

स०उ० १०१

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेणः वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसत्तिविप्र गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंयत्नदान मंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजरंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वंखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयान्वितः ॥ सुन्दरश्चबलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुकीर्तिंच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनम् श्रेष्टकर्माश्रयोभुत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्दनूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंपत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार के पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरबीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पुजा दान से वंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से भाग्यी खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओ से विवाद हो सर्व

१०३०
१२३

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख (देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकमानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्टया
बहुजीववधकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इन कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिभविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं सकंल्पंददेत्विप्र पूर्वपापश्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
१२४

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्टपत्रंग्रहाकाव्य दोर्घमान्योप्रतिष्ठतः पुत्रदारादिमंचिंत्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धं सुखीन्नरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलकार्यं जायतेचमहोत्सवम् मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मातभयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयतिदिनेदिने ॥ जलपशुभयंशुक्र तनकष्टमुपपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलवधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रयल्पमहाभयं ॥ सुयत्नं रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ सुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्टा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान, की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भयं हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

न०७०
१२५

॥ शुकोवाच ॥ भोतातःकृपोनाथ अहमदासकुरुदया पूर्वपापश्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मश्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घपापंकुरुजीव श्रुणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुग्रामोप्रधानक राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनलभेत् प्राणदण्डददेत्विप्र सुद्राशूद्र कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदृश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदी सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥

॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्मसुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापश्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पूत्र होकर जीवें ॥

म० ३०
१२९

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामद्रयानञ्च विपाकेधन वर्धन जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवानांसुखलघु कवित्वमतिसजातं मिष्टभोज्य मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः अतिवल्लभमूर्तेश्च भूवनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीक्लेशितम्शुक्रो भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीण्याधिक्यचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणोभय विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरक्षपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्‌हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतेरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै बिनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनंद कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

स०उ०
१२७

शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्योहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिर्ख्यातो वहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअपणाकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्शयागत्वा ऋषीपुत्र धनददेत श्रृणुवाक्यधनासुख्य ऋषीपुत्रचविव्हल धनचिंताशरीरेच कृश्यदेहदुर्बलम ॥ तणकालगतेकाव्य ऋषी पुत्रमृतंतथा मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविव्हलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन मे आया तब लोभ के वशिभुत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रस्वकारकं ताम्रपात्रघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेतविप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख मे कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींवटुकभैरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ वचदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखप्राप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

स० ३० १२८

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननायप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ने दानमन्त्रतोषित ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानदमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखअंतयोशुक भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलंममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये गुमप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम मितेतथा ॥ दीर्घलाभनसंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानकं ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् युत्रदुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्टा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

स० ३०

१२९

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकाता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापप्रकारणं कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहूसेवीनरोभवेत राजमुद्रादददेत्कुर्मी लक्षयोवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालोकीटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजीवितं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बन हैं सो सुनो राजा को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो में घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन में का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहूअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे२ पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंतावि तोभवेत चित्तश्चचश्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतप्राज्ञ पुनर्दीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचितनंकृतः ॥ नारीचिंताहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेनेमत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि सिद्धति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च अमन्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोण्गिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जन्मपत्री में ऐसे गृह आनकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नआवे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचितारहै और जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक्र पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित हुवाकरे सत्यमे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला कहैं कई अलाआवें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक्र पृथ्वीपै यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

किसी पूर्व जन्मम बन है जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं श्रुणुपुत्रति ध्यानक ग्वालवशकुलेजन्म कृषीकर्मअहीरक ॥ मिष्टत्तत्रञ्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचभासये चंद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहान्दीर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूड गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजोवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले विषियर कड़ह में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मरे हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिम जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को सटके है ॥ शुकोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णास्यप्रतिमाकार्या श्रद्धमात्रमाशुक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनञ्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापप्रशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो सर्पोंकी मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दान करे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

भृ० उ०
१३२

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये ग्रलान्वितःविलासोच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसोसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेतिमित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मग्रल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति नसंदेहो आशक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकंरचना अशुभभयभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह ग्रान के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो ग्रल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्टवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तितथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविग्रास्तानिशामार्गे अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकृत्वा अन्यपुर्षांपिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रुणुशब्द अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णोपिसृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम् मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् वीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥ दीर्घवस्त्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रंददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेमन्त निश्चयपुत्रजीवितं पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावैं तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

सं०३० १३५

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलतिदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोन्नात्रसंशयः ॥ युवावस्था तदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ यदोज्ञात्वामहद्दुखं पुनरंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधोश्चापिवर्णश्च बुद्धिवानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलेपोषणोरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुक्षता ॥ अकस्मात्महादुखं भयभीतोचप्राणाक शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥ पशुश्चंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीत्रालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनमलिखेत ॥ पक्षीबालकमाकारम् लिख्यतेविधि पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणांददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥ दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थ पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥ मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेंतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचिंतानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंक्षिप्त औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहै एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीब से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारण

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रासिंहवधोवाण द्विजपुत्रश्चमृत्युदा ॥ चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविव्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुःखी ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर हाहाकार कर के विव्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥

शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप से पूर्व का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामबीजश्च स्वर्णोशुद्धमाद्रशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिश्चकारकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणाददेत वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेद एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोवातपीडिनं वहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ बुद्धिंतोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखंविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीन्नरः ॥ चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभस्तथैवच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चितं जायतेबहुनूतन अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनंजन्ममन्यते ॥ पुनंतेसुखंप्राप्य आयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं यक्रुताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकाय रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंभृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र क सी नित्य नई तरंग

उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक्र पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपूर्वकथंतात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति वामपुत्रश्चविव्हलं पुत्रप्राप्तिनहश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म कुरुक्षेत्रनिवासयो दीर्घदानश्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक्र तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरैहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रका स्वर्णकाआभूषण जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सो उसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुक्रजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्री मंत्रजापकं वस्त्रआभूषणंसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥ इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रकी मूर्ति लाल चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ० १४१

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्तव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षंचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्टत ॥ यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचित्तनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥ कलत्रपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुबेरद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चित्य परनिंदाविनिर्मुखः कदाचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यश्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रम्हाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नोकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो॥ फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है सब सुख देखे परन्तु विना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्म कथाकथ्यं श्रुणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणेहस्तकंप्राप मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहानकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकम् पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेदानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवश्चाशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके
चञ्चलोचित्वविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुद्रष्यन्ते
विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपीड्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपुजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं
फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहलाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राति आनन्दंभूमिमण्डले ॥
पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात्
महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेदीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण
कुलबंधुचहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो
प्रसन्न रहै एक जीवकी आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चितासीं हो जाया करे नये
नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और
पञ्चमेश की पुजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पैं आनन्द और पितृ
पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात् चिंता हो जांय गायत्री मंत्र
जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

सं०३० १४२

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुकोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रोतिध्यानक ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥ गौबच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणागवनं गौश्चापमुखंददेत ॥ दारुणादुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनष्यंति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता था सो रात्री को गौ और उसका बचा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वंशापविनश्यंति पुत्रसुखञ्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक जी ने कहा हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल रक्तचंदनं गौबच्छतिआकारं तांदुलस्येतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्वति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक स्वर्ण के पत्र परगौ के बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे प्रशसिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनासयः ॥ कुलश्रेष्ठसुभाषीच सर्वेषांतोषणोरत दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धकृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्ठपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥ विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापकूरगृहापुज्य पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र सुपुण्येन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहलाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चितवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्टा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने कीं चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक्र सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रुयतांतकृपानाथम् पूर्वगाथावक्ष्यसे केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

पाप इसजीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रतिष्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥ गोवच्छग्रणामक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेतिविप्र अग्रजन्मचभोक्तया पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैने मेरे बछड़े को मारा और मैने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपुजाच किंमत्रंकिंजापक पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखअप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुकजी महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पूजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र्रालिपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं तांदुलस्तेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेतिविप्रः मुखउच्चार्णमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक स्वर्ण के पत्र पर गौके बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चे विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीशुभागोच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभगिनिचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणाचिन्हशरीरच वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बन्धुपक्षविरोधता ॥ अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रकल्पमहादुक्खं नवोनोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनदभूमिमण्डले सर्वसुखं प्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता भी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्री से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त बीमारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्रासि भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखश्चप्राप्नोति संततिर्वंशविनाशकः ॥
भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मचभोतात पुर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रुहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता
पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूव जन्मकी कथा कहो ॥
भृगुवाच ॥ सूर्यवंशससुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं
अश्वश्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचरणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यंते हाहाकारविव्हलं ॥
क्रोधोशापमुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था
हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री
कासमय कुछ अभिमानमें अधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को
प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंक क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमंत्रंकिंजापकं पुर्वशापप्रणाश ति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप
नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणंददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह
जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ठ ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

सं०७० १४८

न० ७०

१४९

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलेश्रेष्ट मध्यमयोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापश्च बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुयोलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घधायुसुयत्नेन वृहत्योफलप्राप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम् ॥ बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभग्निसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच सूरवीरमहान्नरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवं पत्नीशुभमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः चौरभीतिविजानीयात् गुप्तशत्रुप्रहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान को चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म को कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापप्रकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्धिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवावाहनोदिपः बहुविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट वासक ॥ नृपमदीर्घ चरंमाग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविव्हल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपिव्रडनं पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमन्त्रंकिंजापकम् द्विजशापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौन से दान जाप कराये जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ शृणु पुत्रमहादानं वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रप्रगुप्तया गायत्री मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ सङ्कल्पंपदेतविप्र लीनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्राआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण पत्रपर रक्त चदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में प्रवेशकरे विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एन योगे नवीजन्म आदं भूमिमंडने सत्यवादी भवेत्वालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीर्घ आयुस्याद मत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तयाचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्वा सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालशांतये चद्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्तय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ बृणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अल्पगर्भोत्र खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिंता महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःदुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित्त की वृत्ति आसक्ती हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बढ़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रोंके ध्यानमें दुखारहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव मा पुत्र देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

स०उ०
१५१

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अग्रवंशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रुणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलवंश कुलेजन्म धनधान्या भविस्यति अश्वपति गजग्रामीच उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापबाण गटीद्धार गवनखेटानु सारिणः मयूरासहितेवाल बनखंडा किलोलकं ॥ प्रधानोजटिलं चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापन ॥ मयूरोशापकंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच्च किंमन्त्रं किंजापकं मयूरो श्रापकंनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रकंकार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चारणं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैर वाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे संकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देतो निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

सं०७०

१५२

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री सुखीनरः सुदशा फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा क्रियतेफल प्राप्नुयात् भाग्यवृद्धि विशेषेण मनवांछित फलप्रदा ॥ ग्रहापूजा नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति आनन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनञ्च विद्यायां अन्तविद्या विसार्जनं बहूविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रञ्च सिद्धति ॥ अष्टमेष्टादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्य विवाहोत्सव मंगलम ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् औषधि प्रतिशांतये गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भञ्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ आदहर्ष विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ बामचिंता महाक्लेशं भृगुणाणरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का मन्त्रजाप कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों से भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक भाग्य की वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर आयु पूर्ण ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्राचल। किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

स०उ०
१५३

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उचारण विधिपूर्वक ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीच बन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीच बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्ण भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनष्टक ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्तिं गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्रो मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रमन्तानगोपालं श्रद्धामात्र कं तथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमेतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटंक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

सं०३० १५८

श्रीगणेशायनमः ॥ पञ्चस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनष्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधनं शुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं पत्नीप्राप्ति नसंदेहो विद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चितनंकृते जलंपशु भयंलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकत्वा धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोके विद्याण्ठनंपाठनं बन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखञ्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित्त स्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों के काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तेमुनि सत्तमः

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र कथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्टया ॥ लोकंलक्ष पतिख्यातो बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददेत ॥

भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कंगले अन्न के अ॰ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विव्हल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुखकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जाव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णश्चप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकं द्विजपुत्रलिखेन्मूर्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणश्च संकल्पब्राह्मणांददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेके कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मनिष्ठिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालबुद्धि भवेल्लोक आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्याच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोर्हंता मध्यभागीसुखान्वितः ॥ भलापीशीलवान्ज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिना ॥ राजद्वाराधनंप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेवे सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःमवें हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचितान्वितोभवेत् ॥ वाहनादिसुखंजाते तस्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठश्चनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त सुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधर्नो बहुपीडा मनोद्वेग बंधुवर्गच क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरबीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्री को पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख अथवा पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

स०उ०

१९१

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित आनके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीन्नरः चापवाण कृतेधारण गवनखेटानुसारेण ॥ मृगबाण बधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतकपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विह्वलं ॥ साधुशापमुखदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक्र यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धिमान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जंगल में जाकर दूर से देखा तो मृग दृष्टी में पड़ा सो इसने तीर मारा हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दिया हुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ वस्त्रआभूषणंदानंयुग्मबालश्च मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वकं ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके बचोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

स०३०

१५८

सं०उ०
१५६

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः । पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपत्तेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रग्रलपविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतेविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनसंशयः उपद्रवीऋकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥ संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवंश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयंपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा दीर्घकष्टविजानीयात् औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्त अर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाला गुणवान् शीलवान् प्रथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहे एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या बहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से ववाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना बहुत कठिन है भटकता रहै ॥

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संतत्वंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहै ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदनकुरक्षा वैश्यलष्टप्रहारकं नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में २ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनप्रलिखेत् ॥ वस्त्राभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पंददेत्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प की मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवान्जीवो सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्टया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये पितृपीडाग्रहेनित्यं मातदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंताति व्याकुलः ॥ बहुयत्नश्चकर्तव्यश्च पुत्रसुखंनदृश्यंते महन्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय कास्मिन्कालेमहल्लाभ भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्थदृष्टयः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शापार्थंनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुत्सुखस्वप्नदृष्टयः ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे वंध्या योग गर्भ खडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की वंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

सं०उ०

१६१

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्म विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिहिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में

यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जावें जो वंश की वृद्धिहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नश्चसंग्राही गोधूमश्चचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारीकुशावर्ते अथवा तीर्थतालकं रामांकितंददेत्प्राप्तं मीनदीर्घचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीर्घदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाब पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

सउ०
१६३

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधाथा मासेमासेसुखंगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमं वृणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्चाविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चंद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनष्यति कार्यकृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा नवीनोक्तकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशर्भाविष्यंति वंशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सवे कार्यश्चसिद्धंति भूमिर्लाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चश्रापार्थं अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान योग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहै यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो पृथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगश्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् श पक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यञ्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णञ्च लिख्यतेविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशश्च संकल्पंददेद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जीवनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवो नरोभवेत प्रथम आयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीप्रवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाढ्यसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्त पूर्वपापश्चदुःखिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीच शत्रुवःतप्यतेसदा ॥ अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतंनित्यं सुकीर्तिच पिभूतन ननानसौख्यलभेजीव भजनानन्दसर्वदा पितुद्रव्य विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतशुक्र अकस्मात्यतिचिंतया व्ययदीर्घधनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालोके आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुःखश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्ननदर्शनं दीर्घपापप्रभावेण अभवशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त कर और दयावान् भोका पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये कार्य मन से कर अतिज्ञानी शूरवीर हो संतोषी वृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहै दुश्मन सदाजलते रहैं पाप ग्रहों की शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है
शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मञ्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी
जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्वं पूर्वपापञ्चकारणः
कायस्थश्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति· राजद्वारमहलाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥

बहुपक्षीबधनञ्च दयाहीनश्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी बृक्षोजीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण

पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा
चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे
तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों में दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुलाया करता था इस पाप के
प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥
भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रमन्तान
गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत
पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे
ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चांटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मनीषः त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जीवचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचिंताबलीयसी प्रमेहोपीडितंगुह्य मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके असत्यवचनंत्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षणा ॥ ईशभक्तिसुसंचित्य सुस्थिरंनविपर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुशांति कान्ताद्वौगुरु वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्तचैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निंदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुखश्चप्राप्नोति गुह्यचिंताचवामक ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षणा देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक्र सम्पूर्ण काम हों

स०उ०
१६७

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीरहै ग्राम देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ केन मंपथावेण पुत्रस्वप्नन दृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्रो पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मस्यगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकार्तिभविष्यति ॥ कमट्टाचसूतिकाग्रंड हस्थनित्यञ्चधारणा बहुपक्षिविरोजीव बारम्बार भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षो बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुलों से जीव मारने का बहुत अभ्यास था कमट्टा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहे क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुक्रोवाच ! कियत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचहर ते वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापक ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वीतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपाले अर्धलक्षञ्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यते ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तये: दीयतेसुमतिंसर्वं दुष्टकर्मविसार्जिता ॥

सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेनित्य सुकीर्तिचभयानकं

व्ययोदीर्घसमायात सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नीचउत्पन्न अल्पसुखश्चलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥ युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मश्चपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते प्रथ्वीजन्मअकार्णम् ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उबरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक्र जो दुनियां के सुख हैं सब

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण: वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभश्चदीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्योतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥ शुकोवाच ॥ किंयत्नदान मंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजरंतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयान्वितः ॥ सुन्दरश्चबलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुकीर्तिंच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनम् श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णासुखीनरः ॥ गुप्तलाभविशेषेण अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यबलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंरत्समायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनसुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः व्रणपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार क पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित्त बहुत रहा करे यह जीव सूरबीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पूजा दान से बंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहै दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से भारी खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओ से विवाद हो सर्व

स०उ०
१७१

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्ठया
बहुजीवबधकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणाकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तिहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इस कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तंचशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वपापञ्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रेष्ठपत्रेग्रहाकाव्य दीर्घमान्योप्रतिष्ठतः पुत्रदारादिसंचित्य भृगुणापरिभाषितः ॥ मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्ध सुखीनरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलकार्यं जायतेचमहोत्सवम् मध्यसौख्याधिकारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयतिदिनेदिने ॥ जलपशुभयंशुक्र तनकष्टमपपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रअल्पमहाभयं ॥ सुयत्न रक्षितोप्राण नूतनंजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ सुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ठ हैं बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु यह जीव और इसकी स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूंठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपानाथ अहमदासकुरुदया पूर्वपापअवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मअगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घपापंकुरुजीव श्रृणुपुत्रातिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुमानीप्रधानक राजद्वारकंन्यायम् उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युच विप्रदोषअसत्यक ॥ राजद्वारकृतेन्यायं न्यायकर्ताधनजभेत् प्राणदण्डददेत्विप्र मुद्राशूद्र

कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदरय न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम का रिश्वत देदो सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥ ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्ममुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापअनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पूत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ नाटिकामद्रयानञ्च विपाकेयन
वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवानासुखलघु कवित्यमतिसजाते मिष्टभोज्य
मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतेसदा ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः
ग्रतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः दवतागुरु
भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीक्लेशितसुशुक्रो
भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचितकाले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रग्रलपनसंदेहो प्राणोभय
विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र ग्रानंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै ग्रौर इसजीवको
रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो
ग्रौर कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे ग्रपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेग्रादमीभी ग्रादरकरे शत्रु
जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों ग्रच्छे ग्रादमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे ग्रच्छेवस्त्र
पहरे दरिद्रीसा नरहे बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै विनाकारण भी डरत्ता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला
ग्रच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर ग्रानन्द करै यहजीव ग्रनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

सं०उ०
१७५

शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनग्रपणकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थवशिभूतकं दर्शनपर्शयागत्वा ऋषीपुत्र धनददेत शृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविह्वल धनचिंताशरीरेच कृशयदेहदुर्बलम् ॥ तथाकालगतेकाव्य ऋषी त्रमृतंतथा मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविह्वलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन से आया तब लोभ के वशिभुत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रप्रकारकं ताम्रपात्रघृतंमध्ये शुभमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभुषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेविप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीबटुकभैरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बत्रदानकृतेदंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखमप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें शुभरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

स०३०
१७७

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननोयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्न दानमन्त्रव्रतोपिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणपप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानप्रभंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखअंतयोशुक भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमद्वादशेव बालक्रीड़ाकिलोलकं शुभमविद्याचअभ्यासं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जोवनंसुफलममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात औषधीप्रतिशांतये शुभप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम मितेतथा ॥ दीर्घलाभननमंदेहो उच्चपदवीप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमिंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् पुत्रदुखप्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पिता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत राजमुद्रादद्देत्कुर्मी लद्दयोवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीवासकं जंगलुपवनंबद्धो मत्याजन उद्यानकं ॥ जीवआनंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालोकोटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजावितं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा को मुद्रा देकर बड़े भारी बन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो मे घौंसले बना रखे थे सो बन कई योजन मे का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनदद्देत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहुअन्नंदद्देत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्रो जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंताभि तोभवेत चित्तश्चचञ्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतेप्राज्ञ पुनदीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनकृतः ॥ नारीचिंताहदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत् जीवचिंताविशेयेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेसत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च ग्रमन्याक्रोधसभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोपिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वग्रल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो ग्रल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक जिस जन्मपत्री में ऐसे गृह ग्रानकर पडें सोमध्यम दशाभी देखेहै ग्रौर श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नग्रावे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका ग्रागमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहे ग्रौर जीवको चिताक्लेश बनीरहै हेशुक पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे ग्रौर यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित हुवाकरे सत्यमे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे ग्रकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला करैं कई ग्रलाग्रावें नयाजन्महो फिर ग्रायु पूर्णभोगे हेशुक पृथ्वीप यहजीव ग्रनेकतरहके ग्रानन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जाव से

स०उ०
१७६

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश देख सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं शृणुपुत्रति ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मअहीरक ॥ मिष्टन्तेत्रञ्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचप्राप्तये चद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिक युग्मसर्पमहान्दोर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूडं गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजोवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेती का कृत्य करे था ईख बहुत बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले विषियर कड़ह में आन पड़े सो गिरतेही मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मर हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिस जीव ने खाया वही मृत्यु को प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को भटके है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजान किंमत्रं किंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धमात्रमाशक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनञ्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेनत पूर्वपापञ्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो सर्पोंका मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दानकरे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

स०उ०
१८०

स०उ०
१८१

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये कलान्वितःविलासांच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचगुप्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसांसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेत्मित्र सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मअल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा मुक्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति नसंदेहो ध्याराक्तंचित्तगुप्तत नवीनोमन्द्रकरंचना अथभवभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता वशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह आन के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नहीं २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते त्रासपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रुणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्र ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत अश्वपतिगजग्रामीच तेजस्वीप्रतिष्ठवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

सं०ड० १८२

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तितथापितेयात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविअस्तानिशामार्गे अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवनंकृत्वा अन्यपुर्षापिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रुणुशब्द अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्णौपिमृत्युदा ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम् मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकृत्वाविधिपूर्वकम् ॥ दीर्घवस्त्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रसन्तान गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवित पूर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनदिने ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावें तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

सं०उ०
१८३

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलंविदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोत्रात्रसंशयः ॥ युवावस्था यदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेच्चापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ यदोज्ञात्वामहदुखं पुनरंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णश्च बुद्धिवानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत ॥ सत्यमार्गश्चकृत्यश्च स्वकुलंपोषणोरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ नसंशयः ॥ श्रेष्टकृत्यविजानियां गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महादुखं भयभीतोचप्राप्नोक शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशगमनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिर्भविष्यति ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक्र इस जीव की पत्री में श्रेष्ट ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्री भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्ण पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत् ॥ पशुअंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीग्रालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्चापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैंकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥

शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दियो हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥

भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनम्लिखेत ॥ पक्षीत्रालकम्प्रकारम् लिख्यतेविधि पूर्वकम् षटरसआदिसामग्री संकल्पब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥ दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और मुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थं पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥ मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिभविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

स०ज० १८४

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात् नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति नवीनोवार्तायाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचिंतानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात् गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ भविष्यति ॥ पुत्रचिंताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंलिप्त औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः अर्धआयुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता वारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कैड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण

सं०३० १८६

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवनंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रासिंहवधोबाणा द्विजपुत्रवमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविव्हलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
हाहाकार कर के विव्हल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पू का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णास्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजश्च स्वर्णाशुद्धमाद्रशेव ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिश्चकारकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणददेत वस्त्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

न०३०

१८७

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थित्वाग्रहावेदं एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीड्यन्ते विद्याभ्यासेपिमगलं तातद्रव्यंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोबातपीडिनं बहुविधानप्राप्यन्ते कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ बुद्धि तोविशेषेण सुज्ञाताचतुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखंविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीनरः ॥ चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभस्तथैवच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चित्तं जायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनंजन्ममन्यते ॥ पुनःतेसुखंप्राप्य आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं भक्तताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकाय रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंमृगुवाक्षीच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणी सर्वसुक्खचप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की बृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से बड़ा प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहै और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र क सी नित्य नई तरंग

उहैं एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥
शुकोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुखमवाप्नोति वामपुत्रश्चविंह्लतं पुत्रमासिनदृश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म कुरुक्षेत्रचवासयो दीर्घदानश्चप्रदत्तं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक तुम चित्तदेकर सुनो हम प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरैहैं सो यह प्रथममें प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सोउसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुकजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्रीमंत्रजापकं वस्त्रआभूषणसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥ इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवैं ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्तव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापुजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षंचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्ठत ॥ यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्वोपिजायते ॥ क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुवोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चित्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रमहाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नाकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

सं० ३०।
१८९

सं०३०

१८०

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव को पञ्चम स्थान पूजनीक है सब सुख देवे परन्तु विना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्म कथाकथ्यं श्रृणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ मृगीपुत्र विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणेहस्तकंसाव मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहानकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रं किंजापकम् पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवआशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके चञ्चलोचित्तविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृष्यन्ते विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपाव्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुरायं फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुत्रचिंतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राप्ति आनन्दंभूमिमराडले ॥ पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात् महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेदीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबंधुप्रहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वशापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहे भागवान् हो प्रसन्न रहै एक जीवकी आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चितासी हो जाया करे नये नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और पञ्चमेश की पूजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पै आनन्द और पितृ पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात चिंता हो जाय गायत्री मंत्र जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पूर्वपाप और शाप

८०३०
१९१

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनष्यति ॥
भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों
को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृपीकर्मोपिकृत्यया ॥
गौवच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणगवनं गौश्रापसुखंददेत ॥ दारुणादुखददेत्विप्र अग्रजन्मश्चभोक्तया पुत्रसुखविनष्यंति
सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता
था सो रात्री को गौ और उसका बच्चा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा
गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से
दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल
रक्तचंदनं गौबच्छतिआकारं तांदुलस्वेतगुप्तया ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चारणंमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरु२स्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र स्वर्ण के पत्र परगौ के
बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी
श्रेष्ट ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

सं०४० १९३

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ श्रमोपिजायतेदीर्घ श्रहद्रव्यञ्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे प्रशमिता ॥ जीवचिंताविशेषेण मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाप्तयः ॥ कुलश्रेष्टसुभाषीच सर्वेषांतोषणेरत दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम अर्द्धकृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥ विशेषोजायतेलाभम मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापुज्यं पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र प्रभावेन मनेच्छासर्वपूजता ॥ सर्वावस्थामहलाभं भाग्योदयदिनेदिने अतश्चायुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चितवन करे एक समय बुद्धि श्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्टा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक्र सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रुतुतातकृपानाथम् पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

पाप इसजीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रतिध्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्म्मासुकृत्यया ॥ गोवच्छत्रयाभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेतिविप्र अग्रजन्मनभोक्तया पुत्रसुखविनश्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्री को गौ और उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बछड़े को मारा और मैंने बछड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपुजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखप्रप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रोलपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं तांदुलस्वेतपुष्पया ॥ संकल्पंददेतिविप्रः मुखउचार्यामंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनश्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके बछड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चै विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागोच चित्तचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभगिनिचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच बन्धुपक्षविरोधता ॥ अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेण महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति का मानसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात व्ययदोर्घोनसंशय ॥ चन्द्र अल्पमहादुक्खं नवीनोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रीमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णवांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपूज्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है गृह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो भग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्रा से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त बीमारी हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा का श्रद्धा मात्र उपाय भी

न० ३०
१९५

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षैसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखश्चप्राप्नोति संततिर्वंशविनाशकः ॥
भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रु हि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता
पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूर्व जन्मकी कथा कहो ॥
भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनंकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं
अश्वश्चजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छं अश्वचरणातिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यते हाहाकारविह्वलं ॥
क्रोधोशापमुखंदत्वा त्रयजन्मोमतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था
हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री
कासमय कुछ अभिमानमें अंधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को
प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंक क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतक पुत्रोंको भटकेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमंत्रंकिंजापक पूर्वशापप्रणश्यति वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप
नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणंददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह
जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपुर्वक श्रेष्ट ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

सं०७०
१९६

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलंश्रेष्ट मध्यमयोगश्चप्रादये तेजस्वीचप्रतापाच बुद्धिशानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घआयुसुयत्नेन बृहत्योफलमाप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम ॥ बहूविद्यानमाप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभग्निसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच सूरवीरमहानरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः चौरभीतिविजानीयात गुप्तशत्रुप्रहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति गुप्तप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्ठा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक्र यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाद्रिभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवावाहनोदिपः बहुविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट वासकं ॥ वृषभदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रभयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविह्वल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिकोधोपिबुडनं पुत्रक्लेशमहाशोक सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटा दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकम् द्विजशापप्रणाश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ शृणु पुत्रमहादान वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रप्रयुक्तया गायत्री मंत्रजाप्यंवे चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ संकल्पंदेविप्र लीनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण पत्रपर रक्त चदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में बैठकर विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
१९९

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगे नरोजन्म आनंदं भूमिमंडले सत्यवादी भवेत्बालो भृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयो प्रेमादीप्रसवःपुमान् देवद्विजरतोनित्यं मानकीर्तिविशेषतः ॥ बुद्धिदीर्घ आयुस्याद सत्कीर्ति कुलवर्द्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोवार्तशचितः ॥ चन्द्रमित्रपरमप्रीति चित्तवृत्ति आशक्तया दीर्घकार्योपि आगत्यो सर्वसुखंव्यतीततः ॥ अकस्मात् उपद्रोवा कस्मिन् कालरांतये चन्द्रअल्प नसन्देहो नवीनोजन्म प्राप्तय ॥ कुलबन्धु महाचिंता प्राणोभय भविश्यति दान मन्त्रश्चकर्तव्यं औषधी प्रतिशांतये ॥ व्रणव्याधी शरीरेच चिन्हदेहोपिदृश्यते युवाआयु नसन्देहो धनप्राप्तिभविष्यति ॥ अतितेज प्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धि दिनेदिने वामचिंता महाक्लेशं अलपगर्भोत्र खण्डतः वंशवृद्धि नदृश्यंते गुप्तचिता महानकं पित्रश्च देवपूजाच नेकयत्नश्च कारयेत् ॥ सुतःसुक्ख विनश्यन्ति भृगुवाक्यं नचान्यथा सर्वानन्द भोक्तव्यम् वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र इस जीव की कुण्डली में ग्रह श्रेष्टहैं सत्यबोलने वाला परमार्थी पराये काम मनसे करे सबका प्यारा देव ब्राह्मणों का मानने वाला इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे विद्या से बुद्धि विशेष हो श्रेष्ठ कुल वाला सुन्दर नई २ बात सोचे एक मित्र से प्रीति हो चित्त की वृत्ति आशक्तपी हो जाय लाभ मध्यमहो परन्तु बड़े २ काम खर्च के आवें सब आनन्द से पूरे उतरें एक समय अकस्मात उपद्रव हो एक अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो कुलबंधु चिंता कुछ विरोध प्राणका भय हो मंत्र औषधि से आरामहो फोड़ेका चिन्हहो युवा अवस्था में धन प्राप्तहो प्रतिष्ठा बड़े भाग्य की वृद्धिहो स्त्रीको क्लेश चिंता पुत्रांक ध्यानमें दुखारहे पुत्र नहो जोहो तो अल्प जीवी हो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सो हे शुक्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखसे रहित रहे ॥

भृगुवाच ॥ केनकर्मविपाकेन अप्रवशविनाशकः पूर्वगाथाकथंतात श्रृणुत्वंमनवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव के पूर्व जन्म की कथा वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ जटिलबंश कुलेजन्म धनधान्या भविस्यति अश्वपति गजग्रामीच उच्चपदवी प्रधानक ॥ चापवाण गटीद्धार गवनखेटानु सारिणः मयूरोसहितेवाल बनखंडा किलोत्नकं ॥ प्रधानोजटिलं चाप बाण संधानकंक्रिया मयूरोपुत्रकं बद्धो हाहाकार विलापनं ॥ मयूरोशापकंदत्वा अतिक्लेश दुखदारुणः ममपुत्र

स०७० महाशोकं सप्तजन्मत्वयाप्रभो ॥ भाषा ॥ हेशुक्र जाट वंशमें यह जीव प्रथम एक जन्ममें उत्पन्न हुवा था भाग्यवान

२०० धनवान हाथी घोड़े गांव सब थे उच्चपदवी वाला प्रधान था सो शिकार खेलने गया जंगल में मोरके बच्चे मारे मोरने बच्चों की मृत्यु देख शापदिया कि चौधरी प्रधान जैसे मुझे बच्चे का दुख दिया तैसे तूभी सात जन्म पुत्रोंका दुख देख ॥ शुकोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किमन्त्र किंजापकं मयूरो श्रापकनष्टः सुपुत्रो भूमिमंडले ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमंत्र जाप करानेसे पूर्वजन्मका पापनष्टहो और पुत्रों के सुख यह जीव देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्र लिपिकृत्वा युग्ममुद्राप्रमाणकं मयूरोपुत्रककार चित्रंतेविधिपूर्वकं ॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजलस्नानकं षटरसदानसहितो गायत्री मूलमंत्रकं ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन श्रद्धामंत्रजापकम् पठितविप्रददेत्दानं मुखउच्चार्णं मंत्रकं ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवार्णार्थं स्वर्णमयूरदान कुरुकुरु स्वाहा ॥ इदंदानं कृतेसन्त मनवांछित फलप्रदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्ण का पत्र दो मुद्रा प्रमाण बनावे फिर उस पर रक्त चंदन से मोर की मूर्ति लिख गायत्री लक्ष प्रमाण जपवावे सकल्प करके पढ़े हुवे श्रेष्ठ ब्राह्मण को देता निश्चय कर के पुत्रों के सुख देखेगा ॥

सं०३० २०१

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहा विराजत्वा श्रेष्ठपत्री **सुखीनरः सुदशा** फलप्राप्नोति भृगुणा परिभाषितः ॥ पापक्रूर ग्रहापूजा कियतफल प्राप्नुयात भाग्यवृद्धि विशेषण मनवांछित **फलप्रदा** ॥ **ग्रहापूजा** नकर्तव्यम अर्धप्राप्ति नसंशयः चन्द्रस्त्री महाप्रीति श्रानन्द अति ध्यानकं ॥ आदिपठनञ्च विद्यायां **अन्तविद्या विसर्जनं** बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रञ्च सिद्धांत ॥ अष्टमेशादशे वर्षे बालवृद्धि दिने दिने तातधन शुभकार्थ **विवाहोत्सव मंगलम** ॥ सप्तचन्द्र मितेवर्षे सून्यराम मितेतथा भाग्यवृद्धि विशेषेण धनप्राप्तिनसंशयः ॥ देहकष्ट विजानीयात् **औषधि प्रतिशातये** गुप्तचिंता शरीरेच शत्रुपक्ष विरोधता ॥ युग्म अल्पगतेकाव्य पूर्णआयु नसंशयः व्ययदीर्घ विजानीयात छत्रचिंतान प्राप्तये ॥ गुप्तधन प्राप्नोति कस्मिन् कालेन संशयः पत्नीगर्भञ्च स्थित्वा अल्पजीवीच बालकः ॥ **आदहर्ष** विजानीयात पश्चाते शोकबूडनं सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रसुख विनश्यति ॥ वामचिंता महाक्लेशं भृगुणापरिभाषितः ॥ **भाषा** ॥ भगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जीव की कथा सुनो पत्र श्रेष्ठ है स्वदशा में फल अच्छा करेंगे पाप और क्रूर ग्रहों का **मन्त्रजाप** कराना श्रेष्ठ है भाग्य की वृद्धि होगी मन इच्छा पूर्ण होगी इतने पाप ग्रहों के दान मन्त्र न बनेंगे अधूरी लाभ होगी यह जीव बुद्धिवान् अक्लमन्द सूरमा दूसरे की बात को तोले सत्य झूठ को पहचाने धीरज धारी विद्यापूर्ण नहो परन्तु पढ़ों **से** भी ज्यादे प्रतिष्ठा हो ८ वर्ष से १८ तक विवाह स्त्री प्राप्त तात का धन शुभ काम में खर्च हो १७ वर्ष से ३० तक **भाग्य की** वृद्धि हो धन की प्राप्ति हो शरीर में कुछ खेद हो औषधि से आराम हो शत्रु पक्ष से विरोध हो कष्ट अल्प भुगत कर **आयु पूर्ण** ७२ वर्ष की हो खर्च विशेष हो छत्रचिंता किसी समय गुप्तधन की प्राप्ति हो पत्नीगर्भ धारण करे अल्पजीवी बालक हो माता पिता को दुख दिखावे हे शुक्र इस जीव को पृथ्वी पर

सुख हो परन्तु पुत्रोंके सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनपाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथा कथ्यं उचारण विधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ ठाकुरवंश कुलेजन्म बहुसेवी नरोभवेत् कोटपति गजग्रामीत्र बन्धुकुल विरोधता ॥ ज्येष्ठभ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागीत्र बालकः तातमृत्यु भवेल्लोके सुमाता देवपूजनं ॥ ठाकुरं लोभकं कार्णं भ्रात पुत्रश्चमृत्युदा माताच देवमन्द्रस्य दीर्घशाप मुखंददेत् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस जीव का पूर्व एक समय में ठाकुर वंश में जन्म हुवा था सो हाथी घोड़े ग्राम बड़ा धनवान था सो बड़ा भ्रात एक पुत्र छोड़ के मृत्यु को प्राप्त हुवा और उसकी स्त्री देवताओं के मन्द्र में पूजा करने लगी सो उस ठाकुर का आपस में हिस्सा बांटने में बहुत विवाद बढ़ गया आखीर अन्त में ठाकुर ने अपने बड़े भ्रात के पुत्र को नष्ट करा दिया तो उसकी माता ने देवमन्द्र में जाय के बहुत रुदन किया और शाप दिया कि तूभी सात जन्म तक बारंबार भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानं कस्यपूजाच किंमन्त्र किंजापकं बन्धुमुखंशापं सर्वपापश्चनष्टकं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दानमन्त्र जाप कराने से पूर्वजन्म का पापनष्ट हो और यह पुत्रोंके सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकारं सप्तटंकप्रमाणकं नराकारोलिखेन्मूर्ति गंगाजल स्नानकं ॥ गायत्री मन्त्रकंजापं अर्धलक्ष प्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालं श्रद्धामात्र कं तथा ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते देहिमेतनयंकृष्ण त्वामहंशरणंगतः ॥ श्रेष्ठविप्रददेत्दानं सर्वशापविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा है पुत्र स्वर्ण का पत्र सातटक प्रमाण बनवावे तिसपर नर आकार मूर्ति चन्दन से लिखे तिसे विधि पूर्वक संकल्प करावे और मंत्र गायत्री ५१ हजार और संतान गोपाल बहुतसा श्रद्धा प्रमाण जपवावे तो पुत्र होकर जीवें आनन्द भोगे ॥

सं०उ०
२०२

श्रीगणेशायनमः ॥ पञ्चस्थित्वा ग्रहाचेदं बलवीर्य समन्वितः उद्यमेन धनंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः ॥ मध्यभागी सुखीलोके धनप्राप्तिपरिश्रमः कार्यकृत्यविशेषेण उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ पूर्वपाप ग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं अतस्तेषां तुशांतिश्च कर्तव्याहि विनिश्चितम् ॥ अनुष्ठान महादान सर्वसौख्य प्रदसदा गुप्तचिंता विनश्यन्ति मनिच्छा पूरितंततः ॥ विद्यामध्यमाप्रीति बाल क्रीड़ा किलोलकं मित्रपक्ष परंप्रीति आनन्द भूमिमण्डले ॥ तातधन शुभकार्यं विवाहोत्सव मगलं पत्नीप्राप्ति नसंदेहो विंद्यादीर्घप्राप्तये ॥ सत्यवादी प्रवक्ताच नवीनो चिंतनंकुते जलंपशु मर्यलोके शत्रुपक्ष विरोधता ॥ नवीनो कार्यकंकत्वा धनलाभ भविष्यति युवावस्थाच प्राप्नोति आनन्दभूमि मंडले ॥ पत्नीप्रीत सुखीलोक विद्याण्ठनंपाठनं वन्ध्यायोगश्च प्राप्नोति अल्पगर्भोपि खण्डतः ॥ वामचिंता विशेषेण पुत्रसुखंनदृश्यते पूर्वपाप प्रभावेण वंशवृद्धि विनश्यति ॥ सर्वसुखश्च भोक्तव्यं सुतरहितोनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव परिश्रमी और पुरुषार्थी हो भाग्यश्रेष्ठ मध्यम हो अच्छे काम करे नीचसे ऊंची पदवी पावे परन्तु पापक्रूर ग्रहोंके कारण किसी समय में गुप्तचिंता बुद्धिभ्रम चित स्थिर नरहे सोचे और होय और अधूरालाभ हो ग्रहोंके उपायसे मनोकामना पूर्णहो चिंताका नाशहो विद्याकी उन्नति मित्रसे प्रीत बहुत बनी रहे एक जीवकी आशामें मनरहे पिताका धन शुभकाम में खर्चहो स्त्री श्रेष्ठकुल की हो पुत्र के सुख को भटके हे शुक्र यह जीव बड़े २ मामले देखे बहुतों क काम निकाले दयावान प्रेमप्रीत करने वाला किसी का बुरा न चाहे सबका भला चाहे अल्प आवे सो नया जन्महो फिर आयु पूर्णहो परन्तु इतने पूर्व पापके उपाय न बने इतने हे शुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पुत्रका सुख स्वप्न मात्र नहो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति पूर्वजन्म कथासर्वं कथ्यन्तमुनि सत्तमः

स०७०
२०३

भाषा ॥ हे पिता कौन से कर्म करे हैं इस जीव ने जो सारे सुख दुःख देखे और पुत्रों के सुख से रहित रहे सो वर्णन करो ॥
भृगुवाच ॥ शृणुपुत्र यथासर्वं कथ्यन्ते विधिपूर्वकम् वैश्यवंश कुलेजन्म अतितेजो प्रतिष्ठया ॥ लोकलक्ष पतिख्यातो बहुदासी निजकृत्यये हटवा अन्न व्यापारे अकालो दीर्घभूमिक ॥ क्षुधातुर ब्रह्मणपुत्र अन्नलब्धश्च प्राप्तये वैश्यति क्रोधकं कृत्या ब्रह्मपुत्रश्च ताडयेत् ॥ लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विजपुत्रश्च मृत्युदा पुत्रमृत्यु दृश्यंतात कठिन शापिकंददत ॥

स०उ० २०४

भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्र प्रथम एक जन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा धनवान् था अन्न का व्यापार बहुत करता था एक समय अतिकाल पड़ा सो सहस्रों कगले अन्न के अर्थ फिरते थे इसकी दूकान पर दो ब्राह्मण के पुत्र याचना करने आये उससे विवाद हुवा इस वैश्यने क्रोधवशहो दोनोको मारा धक्के मुक्के में उनके प्राणगये तब उनके पिता ब्राह्मण ने दो पुत्र मृतक देखे सो हाहाकार विव्हल होगया और वैश्यको शाप दिया कि तूभी बारम्बार तीन जन्म तक पुत्रों का दुःख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ कियत्ने कुरुतात पूर्वशाप निवार्णं जाप्य पूजा महादानं क्रियते पुत्र सुक्खकं
भाषा ॥ हे पिता कौन से यत्न करे जो पूर्व शाप नष्टहो और दान मंत्र पूजा उपाय करने से पुत्रों का इस जीव को सुख प्राप्त हो
भृगुवाच ॥ स्वर्णकप्रतिमांचैव अष्टमाशाप्रमाणकी द्विजपुत्रलिखेन्मूर्ति गंगाजलस्नानकं ॥ ताम्रपात्रश्च घृतंमध्ये स्वर्णमूर्ति प्रवेशकं मध्यकालप्रमाणश्च संकल्पब्राह्मणांददेत ॥ श्रेष्ठविप्रपठंतिविद्या शुभदानोफलप्रदा पुत्रप्राप्तनसन्देहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्णका पत्र ८ माशे प्रमाण बनवावे ब्राह्मणके पुत्रोंकी मूर्ति रक्त चन्दनसे लिखे तिस को तांबेक कलशमें घृत भर कर गुप्त प्रवेश करे संकल्प करके श्रेष्ठब्राह्मण कर्मनिष्ठिकोकोदे गायत्री मन्त्र जपवावेतो पुत्रोंकी प्राप्तिहो शाप नष्टहो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अस्यखेटानुसारेण नरोजन्म भुवितले बालबुद्धि अवेलोक आदिक्रीडा यथाक्रमम् ॥ कालानुसारविद्यांच मन्त्रौषधीचकारयेत् तीक्ष्णबुद्धिरिपोहंता मध्यमार्गोसुखान्वितः ॥ प्रलापीशीलवाञ्ज्ञेयो विवलश्चकलिप्रियः सुन्दरश्चपलोबाल यस्य जन्मश्चमोदिता ॥ राजद्वाराधनप्राप्ति विद्याभूषणभूषितः रूपवान्गुणसंपन्नो मासेवें सुखंगताः ॥ सवलंदीर्घदेहश्च तमोगुणविशेषतः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नोर्विभूषितः ॥ सकामश्चपलोबाल सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्ता रिपुद्रोही गुप्तचिंतान्वितोभवेत् ॥ वाहनादिसुखंजाते तप्यतेरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्च बुद्धिश्रेष्ठसुनिर्मलः ॥ श्रेष्ठग्रहोपिजन्मश्च सिंहतुल्यपराक्रमः बहुभृत्य समायुक्तो सुकार्यकुशलंलभेत ॥ मातृपितृगुरुभक्त सुपवद्राजतेनर द्विजदेवार्चनोप्रीति रिपोपिदासवच्चरेत ॥ भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातभूतले ॥ धनपूर्णो तृषायुक्त सुशीलश्चतुरोधर्मा बहुपीडा मनोद्वेगं बंधुवर्गत्व क्लेशता ॥ चन्द्रमित्र महाप्रीतिः आशक्तोतिमोहितम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस जन्म पत्री में जो ग्रह विराजमान हैं तिनका फल कहता हूँ सोतू चित से सुन यह जीव विद्यावान् चतुर मंत्र औषधी भी करता रहै तीक्ष्णबुद्धि हो शत्रुओं को जीते मध्य भागी सुखी हो शीलवान् भोला अल छल न जाने राजद्वार से भी प्राप्तिहो रूपवान् गुणवान् हो अच्छे वस्त्र आभूषण भी जावें चञ्चल काम देव के जोर में उन्मत्त हो जाया करे मीठा बोलने वाला श्रेष्ठकुल एक मित्र से प्रीत गुप्त हो मगन रहै सूरवीर पराक्रमी बहुत से कारबार करे धन पैदा करे बड़े २ उद्योग करतारहै कष्ट बीमारीहो परन्तु आयु पूर्ण हो एक जीवका दुख देखे स्त्रीको पुत्रकी चिंता क्लेश बनारहै प्रथमतो होने कठिन जो होयतो माता पिता को भटकता छोड़ जाय सब सुख अध्वा पर देखे परन्तु पुत्रों का सुख खण्डित है

स०उ० २०५

शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रयोगश्चखंडितः पूर्वजन्मकथंतातः कथ्यतेविधिपूर्वकम् ॥ भाषा ॥ शुक्र देवताने प्रार्थना करी हे पिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म किए हैं जो पुत्रोंका योग खंडित ग्रानके पड़ा सो विधि पूर्वक कहो भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्नो राजमंत्रीमहाधनी ॥ लोकश्चधेनुविख्यातो अतिसूरोसुखीनरः चापवाण कृतेधारण गवनलेदानुसारेण ॥ मृगवाण वधोक्षत्री साधुपुत्रश्चमृत्युदा मृतःपुत्र दृश्यंतात हाहाकार विव्हलं ॥

साधुशापसुखदत्वा त्रियजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेशुक यह जीव क्षत्री कुलमें एक जन्म में जन्मा था सो बड़ा बुद्धि मान् धनवान् राजमंत्रीथा सो शिकार खेलने गया इसने जगल में जाकर दूर से देखा तो मृग हथी में पड़ा सो इसने तीर मारा हिरन तो बच गया एक साधु दो बालकों को साथ लिये जाता था सो क्षत्री के बाण से दोनों साधु के शिष्य मृत्यु को प्राप्त हुवे तब पश्चात् साधुने मृतक बालक देख बड़ा दुख माना और क्षत्री को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं साधुशापविनिर्मुक्तो पुत्रजीवीनसंशय ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा कौनसे दान मंत्र जाप करनेसे पूर्व जन्मका दियाहुवा साधुका शाप नष्टहो और पुत्रों की प्राप्तिहो तब भृगुजी ने कहा ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाचैव युग्ममुद्राप्रमाणकं रक्तचन्दनमिश्राधि गङ्गाजलस्नानक ॥ वस्त्रयाभूषणंदानंयुग्मबालश्च मूर्तये संकल्पश्चददेत्विप्र पूज्यंतोविधिपूर्वकं ॥ इददानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिर्नसंशय ॥ भाषा ॥ हेपुत्रस्वर्णके पत्रपर दो मूर्ति साधुके बच्चोंकी लिखे और स्वर्णका पत्र दो मुद्राभर प्रमाणसे हो वह वस्त्र आभूषण सहित दानकरे तो निश्चय करके पुत्रोंके सुखदेखे ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पुत्रस्थितग्रहाएते भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यकरोबालः भृगुणापरिभाषितः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति आनंदभूमि मंडले विचित्रोवार्तयाकथ्यं कामक्रीडाकिलोलकृत ॥ भ्रातभग्नीचउत्पन्न अंतबंधुविरोधता भूमिलाभनसंदेहो गुप्तचिंताशरीरजा ॥ मित्रपक्षेपरंप्रीति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रकल्पविजानीयात् नवीनोजन्मप्राप्तये ॥ आदौपठश्चविद्यायाः अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्या नप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ द्विभार्यायोप्राप्नोति गुप्तप्रीतिनिसंशयः उपद्रवीश्चकस्माश्च भयचिंताविशेषतः ॥ संतोषीधैर्यधारीच ज्ञानवांश्चसुखीनरः कस्मिन्कालभोकाव्य प्राणंभयतिचिंतया ॥ जलोपशुभयपुत्र भृगुवाक्यंनचान्यथा दीर्घकष्टविजानीयात औषधीमंत्रशांतये ॥ छत्रचिंताभविष्यंति धनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतिचपराजयः ॥ नवीनोवार्तयाचित्त अर्धप्राप्तिचदृश्यते सर्वसुक्खश्चदृश्यते पुत्रसुखंविनश्यति ॥ अतिक्लेशमहाचिंता पत्नीकष्टविशेषतः ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र यह जीव भाग्यवान् सुन्दर पिता की सम्मति वाली गुणवान् शीलवान् पृथ्वी पर आनंद देखे तरह २ की बात ध्यान से सोचे मित्रों से प्रीत, और भाई बहन भी हो परन्तु पीछे अभाव शत्रुतासी हो जाय भूमि से लाभ हो गुप्त चिंता बनी रहै एक जीव से विशेष ध्यान रहै चित्त दुख माने एक समय नया जन्म हो प्राण बचे दूसरा स्त्री से भी प्यार हो विद्या वहुत पूर्ण तो नहो परन्तु कार्य मात्र बहुत हो संतोषी धीरज धारण करने वाला ऋण का जोग होय खर्च विशेष छत्र की चिंता बड़ेकी मृत्यु हो शत्रुओं से ववाद होजाया करे शरार में पीड़ा हो जाया करे पितृ पीड़ा का उपाय करता रहै पुत्र के वास्ते स्त्री यत्न करे परन्तु पूर्व पाप के कारण पुत्र का सुख देखना वहुत कठिन है भटकता रहै ॥

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन संतत्वंशविनाशकः पूर्वजन्मकथंतात उच्चारयाममप्रति ॥ भाषा ॥ शुक्र जी बोले हेपिता इस जीव ने पहले जन्म में कौन से पाप किए जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटकता रहे ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वंपापञ्चकथ्यते वैश्यवंशकुलेजन्म रसत्यागीचवाणियो त्रियसर्पगृहवासं तातपुत्रोतिनागकं ॥ गृहदेवकुरुरक्षा वैश्यलक्षमहारकं नागपुत्रद्वयंमृत्यु अतिक्रोधोउपद्रवं ॥ सर्पशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र तूसुन मैं इस जीव की एक पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ यह वैश्यकुल रसत्योगी बणिया था सो इसके घर में ३ सर्प पिता पुत्र रहते थे सो बणिया बहुत साहुकार था देवता के नाम के दूध पेड़े वस्त्र पहरात था फिर एक दिन दो सर्प के बच्चे वहीं इसके रसोई के चौके में फिरते थे इसने किसी की सम्मति से दोनों को लट्ठों से मार दिया तब सर्प ने दोना बच्चे मरे देख वैश्य को शाप दिया कि तुम भी सात जन्म तक पुत्रों के त्रास भुगतोगे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच्च किंमंत्रकिंजापकं सर्पशापविनश्यंति वैश्यपुत्रसुखंलभेत् ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजीने कहा हेपिता कौनसे दान पुण्य यत्न करने से इस जीवका पूर्व शाप दिया हुवा नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्य पतिमाचैव तृयमुद्रा प्रमाणकं तन्मध्येकामबीजञ्च रक्तचन्दनसुलिखेत् ॥ वस्त्रआभूषणंदानं षटरसअन्नकंददेत् संकल्पंददेत्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं ॥ सर्पशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका पत्र तीन मुद्राभर प्रमाणका बनवावे लाल चन्दन से दो सर्प का मूर्ति विधिपूर्वक लिखे वस्त्र आभूषण षटरस अन्न दान करे तो शाप नष्ट हो और पुत्र हो कर जीवें ॥

व० उ०

२०८

श्रीगणेशायनमः ॥ पञ्चेग्रहाःस्थिताएवं दीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहो चित्तोदारसुपुत्रवान् ॥ यशस्वीगुणवानजीवो सत्कीर्तिसुतनष्टकं अल्पविद्याचप्राप्नोति बुद्धिवांश्चविशेषतः ॥ गुप्तचिंताचप्राप्नोति चतुरोवामश्रेष्ठया भागवान्गुणसंपन्नो पत्नीप्रीतो भविष्यति ॥ अकस्मातउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः प्रमेहव्याधिकंदेहं शीघ्रोवीर्यस्यखंडकः ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधिप्रतिशांतये पितृपीडाग्रहेनित्यं मातदेवश्चपूजनं ॥ वंशवृद्धिनदृश्यंते गर्भअल्पश्चखंडतः वंध्यायोगश्चप्राप्नोति सुतचिंतातिव्याकुलः ॥ बहुयत्नश्चकर्तव्यव् पुत्रसुखंनदृश्यंते महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभप्रीति दिनेदिने ॥ ग्रहकष्टशरीरेच रेचनंव्याधिरक्तय कास्मन्कालेमहल्लाभं भाग्यवृद्धिनसंशयः ॥ उच्चपदवीचप्राप्नोति प्रसिद्धोधेनुलोकमा व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यदृष्टयः ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा शाणर्थेनपुत्रंतात पूर्वपापमहानकं ॥ सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति सुतसुखस्वप्नदृष्टयः ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज शुक्रदेवता से कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी कथा वर्णन करते हैं सो सुनो यह जीव भाग्यवान् होय चित्त उदार हो सन्तान से रहित होय कीर्तिवान् हो गुणवान् हो और विद्यावान् भी हो परन्तु विद्या से बुद्धि विशेष हो गुप्त चिंता किसी समय में हो जाया करे इसकी स्त्री भाग्यवान् चतुर श्रेष्ठ कुल की हो प्रीति करने वाली शुद्ध चित्तहो एक समय अति विघ्न हो उसमें कुछ हानहो और किसी काल में शरीरके बीच में प्रमेह व्याधि हो शीघ्र वीर्य खंडतहो उपाय करने से औषधियों से आराम हो जाय घर में पितृ पीड़ा हो माता सीतला देवताओं के निमित्त सब कुछ करे परन्तु पुत्र का सुख नहो वा होके दुख देजावे बंध्या योग गर्भ खंडत उत्पन्न होके जाता रहै कई प्रकार की बंध्या हो हैं और आगे को सारी उमर लाभ प्राप्ति

अच्छी हो परन्तु पुत्र का सुख स्वप्न में भी न हो हे पुत्र इस जीव ने पूर्व जन्म में दीर्घ पाप करे हैं ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्म विपाकेन पूर्वजन्मनिकथ्यते पुत्रक्लेशभविष्यंति श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हे पिता इस जीव ने कौन से खोटे कर्म प्रथम जन्म में करे हैं जो पुत्रों से क्लेशित रहै और वंश न चले सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकथाकथ्यं श्रुणुपुत्रतिध्यानक शूद्रवंशकुलेजन्म मीनकरोतिकृत्यया ॥ जलजीववधोनित्यं मच्छकृत्यंधनंलभेत तिष्टिपापफलंप्राप्ति पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हे शुक पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वंश में उत्पन्न हुवा और मछली जलचर जीवों को जाल में फांसकर लाता नगर में बेचता था सो लक्षों जीव का विध्वंस किया और बहुत सा धन प्राप्त किया परन्तु भूखों को अन्न बहुत बांटता था तिस कारण अच्छे कुल में उत्पन्न होकर पुत्रों का दुख देखे । शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्णपापप्रणश्यंति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मंत्र जाप से ऐसे महापाप की शांति हो और पुत्र होकर जावें जो वंश की वृद्धि हो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ रामनाम लिपिकृत्वा विप्रलेखधनंददेत् बहुअन्नअसंग्राही गोधूमअन्नचूर्णकं चंद्रलक्षप्रमाणेन गुटिकारामअंकितः हरिद्वारोकुशावर्ते अथवा तीर्थतालक रामांकितंददेत्ग्रासं मीनदीर्घंचभोजनं स्वर्णंचदक्षिणाविप्रो बहुमिष्टान्नभोजनं दीवदानकुरुजीव पुत्रसुखंभविष्यति ॥ ॥ भाषा ॥ तब भृगुजी महाराज ने कहा हे पुत्र बहुत सा अन्न गेहूं लाकर पिसवावे और एक लक्ष प्रमाण रामनाम की गोली बनवाकर हरिद्वार या कुशाघाट या तीर्थ तालाव पर जहां कहीं बहुत सी मच्छी हों तहां रामनाम उच्चारण हर गोलीके साथ कहता जाय जल में प्रवेश करता जाय और ब्राह्मणों को जिमाया करे कुछ दक्षिणा स्वर्ण की देतो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजाता सुकुलंमानवर्द्धनं जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगत ॥ दंतव्याधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतये नेत्रवर्षयथापश्च बालक्रीड़ायथाक्रम वृणव्याधीमहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये ॥ भ्रातयोगश्चप्राप्नोति भृगुणापरिभाषितः अष्टमद्वादशेवर्षे षोडशाब्देर्धविनाशकः तातंधनंशुभंकार्यं विवाहादिचमंगलं विद्यायोगश्चप्राप्नोति पत्नीप्रीतिःचप्राप्तये ॥ चद्रमित्र महाप्रीति आनंदम्भूमंडले तातलाभव्ययदीर्घं गुप्तचिताभविष्यति ॥ अल्पगर्भमहाकष्टं पुत्रसुखविनश्यति कार्यकृत्यनसंदेहो लाभंभवतिनान्यथा चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यरामामितेतथा नवीनोकृतकृतेजीव उच्चपदवीचप्राप्तये अतितेजप्रतिष्टोवा भाग्यवृद्धिदिनेदिने देहकष्टभयंघोरं औषधिमंत्रशांतये ॥ वामक्लेशभविष्यंति वंशवृद्धिनदृश्यते आयुपूर्णश्चदृश्यंते शून्यसप्ताब्दिकेतथा सर्वकार्यश्चसिद्धति भूमिलाभभविष्यति गुप्तश्चधनंप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा मासवर्षेसुखंप्राप्ति आनन्दम्भूमिमंडले पूर्वपापश्चशापार्थं अग्रवंशनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस जीव की पत्री का फल कहता हूँ सुनो अच्छे कुल में जन्मे माता को कुछ कष्ट दांतों की पीड़ा दस्त रेचन व्रण व्याधी यत्न से शांति बहन भाई का योग सात वर्ष से अथवा आठ वर्ष से १२ १६ २० वर्ष तक शुभ कामों में पिताका धन खर्च, विद्या का योग, पत्नीकी प्राप्ति दूसरा स्त्री भी प्रीत रक्खे एक मित्र ऐसा हो चित्त एक शरीर दो पिता को लाभ खर्च विशेष हो अल्प गर्भ संतान थोग खंडत इस जीव को और स्त्रीको संतान का खयाल बहुत बनारहे यत्नभी बहुतसे करे लाभ आमदनी अच्छीहो २१ ३० वर्ष तक नया कृत्य करे ऊंची पदवीपावे बड़ाई पावे तेज प्रतापी हो इज्जत प्रतिष्ठा बढ़े एक कष्ट बहुत भारी हो मंत्र औषधी से आराम हो प्रथ्वी से लाभ गुप्त धनका लाभ आयुपूर्ण

सत्तरसे अधिक हो हेशुक्र सर्व सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के अर्थ पुत्रों को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनस्यति पूर्वगाथाकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं ठाकुरवंशकुलेजन्म राजयोगश्चप्राप्तये ॥ अश्वपतिराजग्रामीच बहुसेवीनरोभवेत् परस्त्रीमहाप्रीति कुमार्गीदुष्टपापिनी द्विजपुत्रप्रथमप्रीति त्याज्यंराज वामकम् श पुक्षप्रतिराजन् असत्यवाणिभाषणं ॥ कारागारद्विजपुत्र विषराज्यश्चमृत्युदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविहिनकं ॥

भाषा ॥ हेपुत्र एक जन्ममें यह ठाकुरवंशमें राजाथा पर स्त्रीगामी एकस्त्री ब्राह्मणके पुत्रकी बहुत सुन्दरथी तिसको लोभदेकर छीनला

और स्त्री के असत्य बचन सुनकर ब्राह्मण पुत्रको कारागार भेजदिया और उसे विष दिवाकर मरवादिया तिस पापके कारण पुत्र का सुख नहीं हुवा ब्राह्मणका शाप लगा हुवाहै कि अगले जन्ममें तूभी पुत्रों के दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमापत्र पञ्चटंकप्रमाणकं अथवा अर्धस्वर्णश्च लिख्यतेविधिपूर्वक रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकम् ताम्रकलशघृतंमध्य गुप्तमूर्तिप्रवेशण संकल्पंददद्विप्र गायत्रीमंत्रजापकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्ष प्रमाणकं ॥ श्रेष्ठविप्र ददेद्दानं विद्यापाठ नपानं इदंदान कृतेसंत पुत्रप्राप्ति च जावनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र स्वर्ण का पत्र पांच टंक अथवा इससे आधा प्रमाण से बनवावे तिस पर चंदन से ब्राह्मण के पु की मूर्ति लिखे और एक कलश में घृत भरकर गुप्त मूर्ति प्रवेश कर विधि पूर्वक दान करे उत्तम ब्राह्मण विद्यावान् कुटुम्बी कोदे और गायत्री मंत्र जाप करावे और ५१ सहस्र संतान गोपाल का मंत्र जपवावे तो पूर्व का दिया हुवा शाप नष्टहो और पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः कस्मिनकालगतेशुक्र बहुऐश्वर्यप्राप्तये ॥ दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवो नरोभवेत प्रथम आयुधनंन्यूनं पश्चातेसुखसंपदा ॥ बालआयुगतेकाव्य आनन्दभूमिमण्डले तातकष्टविजानीयात् भृगुणापरि भाषितः ॥ सत्यवादीभवक्ताच परकार्यकरःसदा अतिज्ञानीमहाशूरो संतोषीवृतिधारणम् ॥ आज्ञाकारीसुतभृत्य नृपाद्भयसमन्वितः दुष्टकर्मेणपीड्यन्त पूर्वपापश्चदुखिता ॥ अल्पायुदृश्यतेलोके सुकर्मेसुखसंभवः बंधुवर्गापवादीच शत्रुवःतप्यतेसदा ॥

अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगतेनित्यं सुकीर्तिच विभूतन न नान सौख्यलभेजोव भजनानंदसर्वदा पितुद्रव्य विनाशश्च सुयत्नेनविवर्द्धनम् ॥ कस्मिन्कालगतेशुक्र अकस्मात्यतिचिंतया व्ययदीघवनदान गुप्तचिंताशरीरकं ॥ मित्रप्रीति महालाके आशक्तचितमाहित पत्नीकष्टभयघोरं सुतदुक्खश्चप्राप्तये ॥ रात्रिदिनमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनं दीघपापप्रभावेण अश्ववंशविनाशकं ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं जिस जीव की पत्री में ऐसा योग पड़े सो जीव भाग्यवान् और बड़ा ऐश्वर्य प्राप्त करे और दयावान् भोका पुरुष हो प्रथम तो थोड़ा ऐश्वर्य हो फिर विशेष बढ़ जाय बाल आयु आनन्द में बाचे पिता को कष्ट हो औषधी से आराम हो जाय सत्यवादी पराये काय मन से करे अतिज्ञानी शूरवीर हो संतोषी वृति धारण करे दुष्टकर्म से पीड़ा हो पूर्व करनी के कारण थोड़ी आयु में सुकर्म करे परन्तु कुल बन्धुओं से शत्रुता विवाद रहे दुश्मन सदाजलते रहें पाप ग्रहों को शांति कराता रहै श्रेष्ठ फल हो आनन्द भोगे भजन आनन्द करे पिता का धन जाय परन्तु कुछ सुकर्म बने किसी समय में अतिचिंता हो खर्च हो मित्र से बहुत प्रीति चित्त उस तरफ

विशेष रहै पत्नी को सन्तान का कष्ट रहै पित पीड़ा हो सारे सुख दुख देखे परन्तु पुत्र का सुख प्राप्त होना कठिन है शुक्रोवाच ॥ किंपापपूर्वजन्मञ्च वंध्यापुत्रविहीनक जीवसर्वगाथायां कथ्यतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने पूर्व किसी जन्म में क्या पाप करे हैं जो वंशकी वृद्धि बंद होगई सो पूर्व कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथांसर्व पूर्वपापञ्चकारणः कायस्थञ्चकुलेजन्म चित्रगुप्तोतिवंशक ॥ यवनविद्याभविष्यंति धनधान्योभविष्यति राजद्वारमहल्लाभं उच्चपदवीचप्राप्तये ॥ बहुपक्षोबधनञ्च दयाहीनञ्चदुष्टयः ततरोचित्रकंपक्षी बृक्षोजीवभक्षणम् ॥ उपवनंगवनंजीव दीमकोजीवभक्षणम् इदंपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव प्रथम एक जन्म में कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा सो चित्र गुप्त वंशी था सो बड़ा चतुर विद्यावान था बहुत सा धन राजदरबार से पैदा किया पुण्य भी करता था परन्तु तीतर नाम और बहुत से पक्षी थे तिन को अपने साथ बागको ले जाता था और वृक्षों मं दीमक नाम जन्तु होते हैं तिन को खुलाया करता था इस पाप के प्रभाव से सन्तान कष्टी रहा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रकिंजापकं पूर्वपापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से उपाय करने से यह जीव पुत्रों के सुख देखे सो दान मन्त्र पूजा जाप कहो ॥ भृगुवाच ॥ मन्त्रसन्तान गोपाल चंद्रलक्षप्रमाणकं अन्नमिष्टान्नकंभोजन यज्ञदानकरस्तथा ॥ पक्षीअन्नददेज्जीव मूर्गानित्यभोजनम् इदंदानकृतेसंत पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पिछले पाप की निवृत्ति के अर्थ यज्ञ करे दान करे अच्छी सामग्री बनवावे ब्राह्मणों को तृप्त करे और पक्षियों को अन्न डाला करे और चींटीनाल नेम करके देतो निश्चय करके पुत्र होकर जीवें ॥

स०उ०

२१४

स०उ०
२१५

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थितत्राग्रहाचेदं फलप्रोक्ता मगानवः त्रिग्रहाफलदंश्रेष्ठं नानालाभसमागमः । भूमिमन्द्रश्चप्राप्नोति कीर्तिवृद्धो धरातले क्रूरपापग्रहापूजा दानंचैवप्रयत्नतः ॥ जोधचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अयत्नेनैवभोकाव्य बुद्धिनःसुस्थिरभवः ॥ उद्योगोकुरुतेदीर्घ लाभचिंताबलीयसी प्रमेहोपीडिनंगुप्त मित्रशत्रुवदाचरेत् ॥ प्रीतिकृत्वाकृतेघातं सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्ता सुखीलोके असत्यवचनंत्रजेत ॥ सुकीर्तिप्राप्तेलोके उद्यमेपोष्यतेकुलः परोपकारकरताच बुद्धिवंतोसुलक्षण ॥ ईशभक्तिसुसंचिंत्य सुस्थिरंनविसर्जन कामीकुतुहलीचैव कुटंबेप्रीतिवत्सलः ॥ पूर्वमायुसुखीजीव मध्येचसुखमध्यमं अत्यपापकुरुशांति कान्ताद्वौगुरु वत्सलः ॥ सुयत्नेसर्वथासौख्यं नात्रकार्यविचारणा कामवेगेनचोन्मत्तो चिन्चैवोपिविभ्रमः बुद्धिवन्तोयशीसौख्यी नकश्चि न्निदतोमति जीवंध्यानश्चसंमग्नः यौवनंरूपचिंतनं ॥ श्रेष्ठकर्मरतोचापी बहुबाधाचशांतये सर्वसुखश्चप्राप्नोति गुप्तचिंताद्वामक ॥ पुत्रकांक्षानसंदेहो भृगुवाक्यनचान्यथा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं इस पत्र में तीन ग्रह बहुत उत्तम पड़े हैं अनेक प्रकार के लाभ हों भूमि मंद्र कीर्ति पृथ्वी बढ़े क्रूर पाप ग्रहों का पूजा दान यत्न करना श्रेष्ठ है इतने न्यून ग्रहों का दान मन्त्र जाप न हो चिंता बुद्धि भ्रम लाभ मध्यम उद्योग बहुत करे फायदा मर्जी माफिक न हो गुप्त प्रमेह की पीड़ा मित्र से शत्रुता प्रीत के बदले हानि पहुंचावे यह जीव सत्य को पसन्द करे झूठ से बचे कीर्ति बढ़े पराये उपकार करने वाला बुद्धिमान सुलक्षण देवता में कुछ भक्ति अल्पस्थिर न हो कामदेव की उन्मत्तता, मित्रों से प्रीति, पूर्व आयु सुख, मध्यम आयु मध्यम सुख दो स्त्री से प्यार सुकर्म से सदा सुख मिले एक जीव के ध्यान में मग्न रहै हेशुक सम्पूर्ण काम हों

परन्तु मुख्य सुख पुत्रका है सो तिसकी भटकना बनीहै त्राम देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ केन पापप्रभावेण पुत्रस्वप्ननदृश्यते पूर्वगाथा कथातात श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव की पिछले जन्मों की कथा कहो ऐसे कौन से पाप दीर्घ करे हैं जो स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मकगाथायो श्रुणुपुत्रतिध्यानकं शूद्रवंशकुलेजन्म दीर्घअघकुरुतथा ॥ पापकर्मधनंप्राप्ति उच्चपदवीचप्राप्तये लोकेलक्षपतिख्यातो मानकार्तिभविष्यति ॥ कमट्ठाचमृतिकाअंड हस्थनित्यश्चधारणा बहुपक्षिविशोजीव बारम्बार भक्षणं ॥ विध्वंसचग्रहंपक्षी बच्चोभोजनंतथा दीर्घपापप्रभावेण पुत्रसुखविहीनकं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र इस जीव की पूर्व जन्म की कथा कहता हूँ सो तुम ध्यान से सुनों पूर्व एक जन्म में यह जीव शूद्र वंशमें उत्पन्न हुवा था सो बड़ा धनवान् था इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु गुल्लों से जीव मारने का वहुत अभ्यास था कमट्ठा हाथ में लेकर बीसियों जीव पक्षी मार लाता था और उनके घौंसले तोड़ कर निकाल लाता था तिस पाप के प्रभाव से पुत्रों के सुख से हीन रहै क्यों कि पक्षियों का शाप लगा हुवा है शुक्रोवाच ! किंयत्नश्चकरतव्यं पक्षीशापविनाशनं पुत्रप्राप्तिचदृश्‍ते वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे यत्नकरनेसे पक्षियों का दिया हुवा शाप नाशकोप्राप्तहो और इसजीवको पुत्रोंका सुखमिले ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ब्राह्मणं भोजनंदानं कुर्वंतिविधिपूर्वकं पक्षीभोजनंअन्नम् नित्यप्रतिनित्यनेमकं मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षञ्चजापकं अनुष्ठानकृतेसन्त पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे पुत्र एक लक्ष प्रमाण गायत्री और अर्ध लक्ष मन्त्र सन्तान गोपाल जपवावे और ब्राह्मणों को स्वर्ण दक्षिणा दे और पक्षियों को नित्य प्रति रोज अन्न डाल कर जिमावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

स०उ०
२१६

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेसमुत्पन्न युवाश्रेष्ठफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीच प्राप्यतेधननिश्चितं ॥ कदापिसमयेवत्स स्वकुटम्ब विरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते ॥ स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभदृश्यते मध्यविद्यान्वितोपुन्स बुद्धिवंतो विशेषतः ॥ अतितेजप्रतिष्ठोवा सुजनोमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातिलोकस्मिन् ईशस्यचिंतनंकृतः ॥ पत्नीश्रेष्ठकुलोप्राप्ति पुत्रचिंता महानकं नेकयत्नकृतेपुत्र सुखस्वप्नेनदृश्यत ॥ दीर्घकष्टविजानीयात नवीनोजन्मप्राप्तयेः दीयतेसुमतिसर्वं दुष्टकर्मविसाजिता ॥ सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोदारनसंशयः हीनवार्त्तानकर्तव्या गुप्तचिंताचव्याप्तये ॥ सुकीर्तिचिंतयेंनित्य सुकीर्तिचभयानकं व्ययोदायसमायात सर्वकार्यचसिद्धति ॥ भ्रातृभग्नाचउत्पन्न अल्पसुखंचलोकमा कस्मिन्कालेमहत्प्राप्ति धनधान्यसमागमः ॥ युग्मजीवमहान्प्रीति सुन्दरमूर्तिसुलक्षणं पूर्वजन्मकृतपापार्थं वामचिंतामहानकं ॥ पुत्रसुखनदृश्यंते पृथ्वीजन्मप्रकार्णय ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक इस जीवकी पत्रीका फल सुख दुख आदि वर्णन करते हैं सो तुम सुनो युवा अवस्था में बहुतसे काम करे और बड़े २ मनुष्यों से काम पड़े धन प्राप्त करे विद्यावान् हो किसी समय में कुटंब घर में विरोधसा हो धन खर्च हो शत्रु नुकसान पहुंचाना चाहे परन्तु श्रेष्ठ दशा में थोड़े परिश्रम से अकस्मात् लाभ खुशी हो विद्या से बुद्धि विशेष इज्जत प्रतिष्ठा वाला अच्छी शिक्षा देने वाला ईश्वर की तरफ ध्यान रखने वाला स्त्री श्रेष्ठ कुल की पुत्र को चिंता रहै यत्न भी करे परन्तु पूर्व जन्मों के पाप के अर्थ पुत्रों से रहित रहै शरीर पै पीड़ा कष्ट भारी आवे सो नया जन्म हो नई २ वार्ता का विचार करे बड़े बड़े ख के काम आवें सो पूर्ण उबरें भाईयों से थोड़ा सुखहो जीवोंसे प्रीत लगी रहे हेशुक जो दुनियां के सुख हैं सब

प्राप्त हों परन्तु पुत्रों के सुख को यह जीव और इसकी स्त्री भटकते रहैं ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथाकथ्यं उच्चारणविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ हेपिता इस जीव ने कौन से पाप पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इस की स्त्री पुत्रों को भटके हैं सो विधि पूर्वक वर्णन करो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वजन्मनिकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न धनधान्यभविष्यति ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् अश्वपतिगजग्रामीच भूमिलाभबदीर्घयो ॥ निजस्थानवसतिविप्र गृहभूमिउपाधकं लष्टमुष्टप्रहारेण द्विजस्थानभस्मकम् ॥ युग्मपुत्रत्रयंकन्या ग्रहमध्येतमृत्युदा तेनपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनाशनं ॥ भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव पहले एक जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया सो बड़ा भाग्यवान् लक्षाधीश हाथी घोड़े ग्राम थे इसकी जमीन में एक ब्राह्मण कुटंब सहित रहता था सो उससे किराए भाड़े के ऊपर बहुत विवाद हुवा यहां तक की उसको बहुत पिटवाया और उसके घर में आग देदी सो उसके दो छोटे पुत्र और तीन कन्या जल कर भस्म हो गईं ॥ शुकोवाच ॥ किंयत्नदान मंत्रस्य किंविधानेतिजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हेपिता क्या यत्न करे और कौन से दान मन्त्र जाप करवावे जो पूर्व जन्म के शापसे छूटे और पुत्रों के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे और पुत्र जीवें सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्थानदानकुरुजीव गायत्रीमन्त्रजापकं स्वर्णस्यप्रतिमापत्रं द्विजसुतमूर्तिलिख्यते ॥ सर्वदानविधानेच संकल्पंब्राह्मणददेत् द्विजरतुष्टकर्तव्यं पूर्वश्रापविनाशनं ॥ पत्रसुखंनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेपत्र यह जीव दान करे गायत्रीमन्त्र जपवावे स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र कन्याओं की मूर्ति लिखे ब्राह्मण को दे तो पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदानरः बृहत्वंफलमादाय आनन्दंभूमिमण्डले ॥ बहुकृत्याधिकारीच सर्वेशां शुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीति नूतनंवार्तयाचितः ॥ सुन्दरश्चबलोधीरः प्रतापोशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छं पूजनात्सुखवर्द्धनं ॥ अतिप्रेमीसुप्रीतिच भृगुणापरिभाषितः पञ्चमेशंसुसंपूज्य वंशवृद्धिशुभप्रदा ॥ गोविप्ररक्षकोधीमान् सत्यवादीविचक्षणः कालानुकूल विद्याच पर्यटनंप्रियसदा ॥ चंद्रअल्पमहाकष्टं प्राप्नोतिश्चचितनम् श्रेष्ठकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः ॥ सुखलाभविशेषेण अकस्माज्जायतेकदा भूमिलाभविशेषेण रचनामन्दिरंनूतनं ॥ मनेच्छापूजितोवत्स अनुष्ठानंसुयत्नतः राजद्वाराधनंप्राप्य निजकृत्य फलप्रदः ॥ पिताधिक्यप्रकोपीच कामाधिक्यवलान्वितः सुशीलश्चपलोपुन्स रिपुणांकष्टदायकः ॥ निष्ठुरंवचनंवक्ता कुमतिश्च उदारधी सर्वसंतसमायुक्तो अंगनाप्रीतिकारकः ॥ जन्माद्धनयुतपुन्स गीतनादपरंप्रियः वृषपीड़ासमुत्पन्नो निजांगेनात्रसंशयः ॥ सर्वकार्याणिसिध्यंति पुत्रसुखंविनश्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे शुक्र जिसकी जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं सो पैदा होकर अनेक प्रकार के पृथ्वी पर आनन्द देखे बहुत से काम बढें और उसके शुभचिंतक बहुत हों नवीन विचित्र बातों में मन रहै एक जीव में चित बहुत रहा करे यह जीव सूरबीर प्रतापी धीर बंधाने वाला दूसरे की बात को तोले गुरु भौम केतु का पूजन श्रेष्ठ है भृगुजी कहते हैं पञ्चमेश की पूजा दान से बंश की वृद्धि हो पूर्व जन्म के पाप के कारण पुत्रों से रहित रहैं दुख देखे स्त्री क्लेश माने और यह जीव विद्यावान् हो भ्रमण करने को चित्त चाहा करे एक समय अचानक में एक बार कष्ट भय हो अल्प भोग कर आयु पूरी हो राजद्वार से भारी खुशी रहै भूमि से धन प्राप्त हो शत्रुओं से विवाद हो सर्व

सम्पत हों परन्तु पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात श्रुणुत्वंममवांछया ॥
भाषा ॥ हेपिता इस जीवकी प्रथम जन्म की कथा कहो ऐसे कौन से पाप इस जीवने किये ये जो यह पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥
भृगुवाच, ॥ श्रुणोपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकारणः यवनवंशकुलेजन्म आनन्दभूमिमण्डले ॥ लोकंलक्षपतिख्यातो अतितेजोप्रतिष्टया
बहुजीववधंकृत्वा निजभक्षोपिकारणं ॥ चापबाणकुरुधारण गवनखेटानुसारेण तेहिपापप्रभावेण वंशवृद्धिविनश्यति ॥
भाषा ॥ हे पुत्र इस जीव से प्रथम जन्म में बहुत पाप बने हैं प्रथम जन्म में यह जीव यवन जाति में उत्पन्न हुवा था नित्य
प्रति शिकार खेलने जाता था और अनेक जीव मारकर लाता था और तिन्हें भक्षण करता था इन कारण पूर्व जन्म का
सात जन्म को शाप लगा हुवा है तिस कारण सन्तान का सुख कठिन है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजा च किंमंत्रकिंजापकं
पूर्वशापविनश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से पूर्व जन्म का शाप नष्ट हो जो
पुत्रों के सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या सप्तटंकप्रमाणकं विष्णुधेनुलिखेन्मूर्ति शुद्धचित्तप्रशांतये रक्तचन्दन
मिश्राणि गंगाजलस्नानकं सकल्पंददेत्विप्र पूर्वपापञ्चशांतये ॥ चन्द्रलक्ष प्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं ॥ भाषा ॥ हे पुत्र सप्तटंक
प्रमाण से स्वर्ण का पत्र बनवावे तिस पर विष्णु भगवान की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और गंगाजल से
स्नान करावे तिसके आगे एक लक्ष गायत्री मंत्र जाप करावे और (मुंह से यह मन्त्र कहता जाय) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
विष्णु भगवान मम कार्य सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॥ फिर वह मूर्ति ब्राह्मण को संकल्प करके दे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

सं० ७०
२२०

श्रीगणेशायनमः ॥ अ पत्रेग्रहाकाव्य दोषअन्योप्रतिष्ठतः पुत्रदारादिसंचित्य ...परिभाषितः ॥ मान... विशेषेण सुप्रसिद्ध सुखीनरः रूपयौवनसंपन्नो सुमित्रश्चारुभाषितः ॥ नानामंगलंकार्यं जायतेचमहात्सवम् मध्यसौख्य...कारीच विलासीमति मान्नरः ॥ गुप्तशोकविशेषेण अकस्मात्भयमागमः दीर्घद्रव्यव्ययोचापि चिंतयर्तिदिनेदिने ॥ जलपशु...भयंसुक तनकष्टमुपपाथयः शत्रुपक्षविरोधश्च कुलबंधुविप्रीतये ॥ चिंतयेदीर्घकार्याणि अंतसौख्यसमायुतः द्वयोकष्टविशेषेण चद्रयरूपमहाभयं ॥ सुयत्नं रक्षितोप्राण नूतनजन्ममन्यते ॥ दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनस्थितः असत्योदोषकंप्राप्त शत्रुपक्षविरोधता ॥ व्ययदीर्घ सुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः अल्पजीवीचबालोयं अथवागर्भखंडतः ॥ पत्नीकष्टविशेषेण पुत्रचिन्ताचव्याकुलः द्विभार्यायोग प्राप्यंते किंवान्यत्रस्त्रीप्रीतया ॥ बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षणः सर्वऐश्वर्यप्राप्नोति वंशवृद्धिनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस पत्र के ग्रह श्रेष्ट हैं बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु यह जीव और इसको स्त्री संतान की चिंता में रहै मान कीर्ति बढ़े लोक में प्रसिद्ध हो सुन्दर स्वरूप मित्रों से प्रीति करने वाला अच्छे वचन बोलने वाला नाना प्रकार के सुख पृथ्वी पर देखे परन्तु गुप्त शोक सन्तान का रहै अकस्मात चित्त पर भय सा रहै बहुत खर्च हो जल से पशु से भय हो या कहीं से गिर कर चोट आवे शत्रु पंक्ष से विरोध हो कुल बन्धुओं से विप्रीत हो चिंता क्लेश हो कर फिर अन्त में सुख प्राप्त हो दो कष्ट हों एक में प्राणों का भय हो फिर आयु पूर्ण हो किसी समय में झूठा दोष लगे इलजाम का भय हो जाय पुत्र होने बहुत कठिन जो होय तो माता और पिता को भारी दुःख देकर बड़े बड़े तरसाव दिखा कर चले जांय ॥

॥ शुक्रोवाच ॥ भोतातःकृपानाथ अहमुदासकुरुदया पूर्वपापञ्चवक्तव्यम् पुत्रस्वप्नेनपश्यति ॥ भाषा ॥ हे पिता मुझ पर कृपा करके कहो इस जीवने ऐसे कौन से पाप किये हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहै ॥ ॥ भृगुवाच ॥ आदजन्मञ्चगाथायां कथ्यंतेविधिपूर्वकं दीर्घपापंकुरुजीव श्रुणुपुत्रतिध्यानकं ॥ चित्रगुप्तकुलेजन्म बहुभागीधनः राजद्वारकंन्यायम् उच्चदवीचप्राप्तये ॥ द्विजशूद्रउपाधीच लष्टमुष्टप्रहारकं निजकरशूद्रमृत्युत्र विप्रदोषश्चमत्यक ॥ राजकृतेन्याव न्यायकर्तावनजभेत् प्राणदण्डदद्देत्विप्र मुद्राशूद्र कंलभेत् तातपुत्रमृत्युदश्य न्यायाधीशोश्रापकम् ॥ भाषा ॥ हे पुत्र प्रथम जन्म में यह जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में बड़े ओहदे पर था मुकदमे में न्याय किया करता था सो एक शूद्र बूढ़े ने अपने हाथ से अपना अपघात कर लिया उस शूद्र के वारिसों ने ब्राह्मण को फांस लिया और हाकिम को रिश्वत देदी सो न्यायाधीश ने ब्राह्मण के पुत्र को प्राण दण्ड की आज्ञा दी सो ब्राह्मण ने श्राप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों का सुख न देखे ॥ ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्य पूजाच किंमंत्रकिंजापकं ब्रह्मश्रापप्रणश्यंत पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हे पिता कौन से दान पुण्य मन्त्र जाप से पूर्व जन्म का ब्राह्मण का दिया हुवा शाप नष्ट हो और पुत्र होकर जीवें ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या युग्मसुद्राप्रमाणकं ब्रह्मपुत्रलिखेन्मूर्ति गायत्रीमंत्रजापकं ॥ तान्दूलंयथाशक्ति गुप्तमूर्तिप्रवेशकं संकल्पंददेत्विप्र पूर्वश्रापञ्चनष्टकं ॥ इदंदानकृतेसंत पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र स्वर्ण के दो मुद्रा प्रमाण भर के पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे और चावलों में गुप्त रख कर दान करे ब्राह्मण को दे गायत्री मन्त्र जाप करावे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

स०३० २२३

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मकालइतिषेटा सर्वत्रास्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजाया ग्रहसौख्यसुयत्नतः ॥ वाटिकामंद्रयानञ्च विपाकेयन वर्धनं जीवोसत्यमान्श्रीमान् उपकारीविचक्षणः ॥ मित्रकृत्यघ्नतांयाति बांधवानांसुखलघु कवित्वमतिसजातं मिष्टभोज्य मतिप्रिय ॥ स्वभुजेनधनंप्राप्ते पंडितोनृपपूजितः विरोधश्चकुटम्बेन शत्रुवःतप्यतेसदाः ॥ देवविद्यामहाप्रीति गुणग्राहिभवेन्नरः अतिवल्लभमूर्तिश्च भूवनवर्धतेगृह नानाचतुस्यदानञ्च धनकीर्तिविवर्धनः ॥ स्वजनेसुखभोक्तव्या धनरत्नानिसञ्चयः देवतागुरु भक्तश्च सौम्यमूर्तिसुखीनरः ॥ दिव्यवस्त्रसदाधारी स्वजातिमानवर्धनं गुप्तचिंताशरीरच पुत्रसुखनदृश्यते ॥ पत्नीक्लेरितम्शुक्रो भाग्यवृद्धिचन्यूनता विद्याबुद्धिविशेषेण भृगुणापरिभाषितः ॥ इन्द्रीव्याधिकचित्काले शीघ्रवीर्यखंडनं चंद्रअल्पनसंदेहो प्राणोभय विनाशनं ॥ युग्मकष्टगतेशुक्र आनंदंभूमिमंडले पशुभयजलंप्राप्त उपरञ्चपपाथयः ॥ सर्वसुखञ्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदृश्यते ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जीवकी पत्रीमें ऐसे गृहपड़ें सोजीव कन्या पुत्र स्त्रीके सुखका यत्नउपाय करता रहै और इसजीवको रास्तेमेंसे या मंद्रमेंसे धनकीप्राप्ति किसीकालमेंहो सत्यबातको पसंदकरनेवाला परोपकारी मित्रसे बंधुवोंसे किसी समयमें विपरीतताहो और कुछ कविता गानेसुन्नेका भी शौकहो मिष्ट भोजन प्यारालगे अपने पुरुषार्थसे पैदाकरे विद्यावान्हो बड़ेआदमीभी आदरकरे शत्रु जलतरहैं गुणग्राहीहो देवविद्यामें प्रीतहो सुन्दरस्वरूप भूमिसेलाभ चौपायेभीहों अच्छे आदमियोंसे लेनदेन ऐश्वर्य पैदाकरे अच्छेवस्त्र पहरे दरिद्रीसा नरहै बिरादरी में इज्जतहो गुप्तचिंता रहै विनाकारण भी डरता रहै इज्जतका ध्यान रखनेवाला भलेबुरेको परखनेवाला अच्छी शिक्षा देनेवाला हेशुक्र पृथ्वीपर आनन्द कर यहजीव अनेक प्रकारके सुख दुःख देखे परन्तु पुत्रोंके सुखको भटकता रहै ॥

शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रचिंताभविष्यति पूर्वजन्मक तात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ हेपिता कौन कर्म इस जीवने पूर्व जन्म में करे हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख न देखें ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रगतेजन्म कथ्यंतेविधिपूर्वकं मैथुलदेश कुलेजन्म अग्रवालोतिश्रेष्ठया ॥ व्यौहानधनप्राप्नोति धनधान्यसमागमः लोकंलक्षपतिख्यातो बहुसेवीनरोभवेत् ॥ ऋषीपुत्रजगन्नाथ तीर्थदेवदर्शनम् धनिधनअपणकृत्वा आगत्वाददेतममः ॥ अग्रवालोधनीपश्चात लाभार्थंवशिभूतकं दर्शनपर्शआगत्वा ऋषीपुत्र धनददेत शृणुवाक्यधनामुख्य ऋषीपुत्रचविह्वल धनचिंताशरीरेच कृशयदेहदुर्बलम ॥ तणकालगतेकाव्य ऋषी पुत्रमृतंतथा मृतकपुत्रलखंतात हाहाकारविह्वलं ॥ ऋषीशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहीनकं ॥ भाषा ॥ हेशुक्र प्रथम एक जन्म में एक ऋषी का पुत्र जगन्नाथ आदि देवदर्शन करने गया तिस के पास जो कुछ धन था अग्रवाल धनी सेठ तिस के पास धर गया जब दर्शन से आया तब लोभ के वशिभुत हो कर मुकर गया इसी चिंता में ऋषी के पुत्र ने प्राण दिये तब पुत्र को मृतक देख ऋषी पिता ने धनी को शाप दिया कि सात जन्म तक पुत्रों के सुख न देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानकस्यपूजाच किमत्रं किंजापकं ऋषीशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिर्दिनेदिने ॥ स्वर्णपत्रलिखेन्मूर्ति ऋषीपुत्रअकारकं ताम्रपात्रघृतंमध्ये शुभमूर्तिप्रवेशकं ॥ वस्त्रआभुषणंदानं श्रद्धामात्रप्रमाणकं संकल्पंददेत्विप्र श्रधांतेविधिपूर्वकं (मुख से कहे) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रींवटुकभरवाय आप दुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमंत्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ बव्रदानकृतेरांत पुत्रप्राप्तिनसंशयः सर्वसुखअप्राप्नोति वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ हे पुत्र यह जीव स्वर्णपत्रपर ऋषी पुत्रकी मूर्ति लिखे घृतभरे तांबेके कलशमें गुप्तरख ब्राह्मणको दान करे तो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेनरोजन्म माननीयप्रतिष्ठता पञ्चमेशोपिपूज्यन्ते दानमन्त्रव्रतोषिता ॥ विद्याबुद्धिविशेषेण पश्चातो सुखपुत्रकं पूर्वणापप्रभावेण पुत्रसुखविनश्यति ॥ पूजादानश्चमंत्रेण पूर्वशापविनश्यति सुतसुखअंतयोशुक्र भृगुणापरिभाषितः ॥ अष्टमद्वादशेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं युग्मविद्याचअभ्यामं भृगुणापरिभाषितः ॥ धनव्ययशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं तातमात महासुखं जीवनंसुफलंममः ॥ त्रियोदशेषोडशवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा बहुविद्याचप्राप्नोति पत्नीप्रीतचयुग्मकं ॥ देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये युग्मप्रीतिअन्यजीवो नान्यथावचनंममः ॥ जीवचिंताचप्राप्नोति अल्पगर्भोपिखंडतः चंद्रनेत्रमितेवर्षे सून्यराम मितेतथा ॥ दीर्घलाभनमंदेहो उच्चपदवीचप्राप्तये महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने ॥ तातधनशुभंकार्यं विवाहोत्सव मंगलं अचानकंउपद्रोवा ग्रहकष्टमहानकं ॥ वैद्योपायकंकृत्वा औषधीप्रतिशांतये चद्रअल्पगतेकाव्य पूर्णआयुनसंशयः ॥ षष्टसप्ताद्धकेवर्षे आनन्दभूमिमंडले सर्वानन्दभोक्तव्यम् युत्रदुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव मध्यम भागवाला प्रतिष्ठा पावेविद्या बुद्धि विशेष हो पञ्चम स्थान के पूजा दान से पुत्रों के सुख देखे पूर्व जन्म के पाप के प्रभाव से संतान का दुख देखे परन्तु पाप निवारण का मन्त्र दान जाप करावे तो अन्त में पुत्र हो कर जीवें और आठवें बारवें सोलवें वर्ष तक विद्या प्राप्ति स्त्री प्राप्ति पता का धन शुभ काम में खर्च हो प्रथम माता पिता को खुशी हो जीवन सुफल माने दे कष्ट हों औषधी से आराम हो दूसरी स्त्री से प्रीत हो परन्तु अल्प गर्भ खंडत हो या बंध्या हो और रोजगार उत्तम हो उच्च पदवी पावे २१, ३० वर्ष तक फिर ऊपर अनेक प्रकार के सुख दुःख देखे आयु पूर्ण हो ७६ वर्ष के लग

भग आनंद देखे परन्तु पुत्रों को भटकता रहै ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मगतेजन्म पुत्रसुखविनश्यति विधिपूर्वकथंतात श्रुणुत्वं ममवांछया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण कुर्मीवंशकुलेजन्म धनधान्यभविष्यति ॥ दाताभोक्ता कृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् राजमुद्रादददेत्कुर्मी लद्योवृक्षविनष्यति ॥ कोमलपातलतावृक्षे कोटोपक्षीबासकं जंगलुपवनंबद्धो सत्याजन उद्यानकं ॥ जीवश्रानंदभोक्तव्यं सर्वजीवविनष्यति बृक्षडालगृहपक्षी बालो कीटमृतंतथा ॥ पक्षीशापमहादीर्घ पुत्रस्वप्नेनजावितं ॥

भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र पूर्व जन्म की कथा इस जीवकी वर्णन करते हैं जो कुछ पाप इस जीवसे बने हैं सो सुनो राजा को मुद्रा देकर बड़े भारी वन काटने का ठेका लिया सो वह बन हरा भरा जहां अनगिनत जीव आराम पाते थे और भोजन फल फूल खाते थे और बृक्षों की डालो मे घोंसले बना रखे थे सो बन कइ योजन मे का था इस धनवान् कुर्मी ने सब बन को काट कर विध्वंस कर दिया तिस कारण पुत्रों के सुख स्वप्न में भी होने दुर्लभ हैं ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुक्खश्चप्राप्तये ॥ भृगुवाच ॥ चंद्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्रजापकं श्रेष्ठविप्रश्चकर्मेष्टि इच्छा भोजनददेत् स्वर्णश्चदक्षिणांचैव प्रसन्नात्मसंतुष्टयः बहुअन्नंददेत्पक्षी नितप्रतिकीटभोजनम् ॥ मंत्रसंतानगोपालं अर्धलक्षप्रमाणकम् विधिपूर्वअनुष्ठानं पुत्रप्राप्तिचजीवितः ॥ सुतप्राप्तिनसंदेहो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव पक्षियों के पाप निमित्त एक लक्ष गायत्री जपवावे श्रेष्ठ ब्राह्मण कर्मेष्टि बैठावे तिन्हें अच्छे पदार्थ जिमावे स्वर्ण की दक्षिणा दे और बहुत सा अन्न पक्षियों को जंगल या कोठे पर डाला करे और नित्य प्रति चींटीनाल जिमावे तो पुत्र होकर जीवें वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभागमब्रवन मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितेसुमनोरथा ॥ पापग्रहप्रभावेण दीर्घचिंताऽवि
तोभवेत चित्तश्चचञ्चलोनित्यं लाभविघ्नसमुद्भवः ॥ विलम्बोजायतेप्राज्ञ पुनदीर्घधनागमः हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृतः ॥
नारीचिंतानाहृदेगुप्तः शत्रुमित्रवदाचरेत जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशयः ॥ प्रायश्चितकृतेसत पुत्रसौख्यनसंशयः लाभकृत्योपि
सिद्धंति बृहत्वोधनमागमः ॥ सत्यवक्तासुशीलश्च ग्रमन्याक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः ॥ दानीबुद्धिमतोप्राज्ञ
विभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्य कामाशक्तोणिगुप्तता ॥ दानमन्त्रजपंपुण्य सर्वदानन्दसंभवः सर्वंअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्च
सुखावहं ॥ मनेच्छापूजितेचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसोख्यं इष्टदेवस्यपूजनम् ॥ सुन्दरमृदुवाणीच धनसंयुक्तकौशलः
वाणिज्यश्चधनदीर्घ भृगुणापरिभाषितः पुत्रजन्मनसंदेहो अल्पजीवीचमृत्युदा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र जिस जन्मपत्री में
ऐसे गृह ग्रानकर पड़ें सोमध्यम दशाभी देखेहै और श्रेष्ठदशाभी देखेहैं मनकी इच्छा सब पूर्ण होय परन्तु पापग्रहोंके प्रभाव करके
दीर्घचिंता होय लाभमें विघ्नग्रावे लाभ होता २ रुक जावे फिर बहुतसे धनका आगमनहो हीनकार्यकरके पछतावे स्त्रीको गुप्तचिंतारहे
और जीवको चिंताक्लेश बनीरहै हेशुक्र पूर्व पापका प्रायश्चित करनेसे पुत्रोंका सुख देखे और यहजीव झूंठीवार्ता सुनकर क्रोधित
हुवाकरे सत्यसे प्रसन्नरहै साहसी पुरुषार्थी दानीसुकर्मी बुद्धिमान् कभी बुद्धिभ्रमसी होजावे अकलसे नवीन बात निकाले मनुष्य भला
कहैं कई अलाग्रावें नयाजन्महो फिर आयु पूर्णभोगे हेशुक्र पृथ्वीप यहजीव अनेकतरहके आनन्ददेखे परन्तुपुत्रके सुखसे रहितरहै
शुक्रोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण वंशवृद्धिनदृश्यते पूर्वजन्मकथंतात उच्चारणममप्रति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से कर्म इस जीव से

किसी पूर्व जन्ममें बने हैं जो वंशकी वृद्धि नहो और पुत्रोंके क्लेश दख सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वजन्मनिपापार्थं शृणुपुत्रति ध्यानक ग्वालवंशकुलेजन्म कृषीकर्मग्रहीरक ॥ मिष्टक्षेत्रश्चउत्पत्ति गुड़खड़वाचप्राप्तये चंद्रदिवसोपिहोतव्यं दीर्घपापंचभागिकं ॥ अग्निमन्द्रमहाज्वाला लोहपात्ररसाधिकं युग्मसर्पमहान्दीर्घं भाविवशप्रवेशकं ॥ विषयरोरसाबूडं गुडमिष्टान्नमेलनं ग्वालवंशीच लोभार्थं मेलिकाकृत्यविक्रय ॥ बहुजीवगुडोभक्ष प्राणोचगवनंतथा दीर्घपापप्रभावेण वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ अतिक्लेशमहादुक्खं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक यह जीव पूर्व जन्म में ग्वाल वंशी अहीर था और खेतो का कृत्य करे था ईख बहुत बोवेथा मिष्टान बनाता था सो कोल्हू में भट्टी पर रस पक रहा था भावी के वश दो सर्प बड़े २ मोटे जहरीले वषियर कड़ह में आन पड़े सो गिरतेहो मृत्यु हो गई तो इस ग्वाल वंशी ने सब होतव्य अपनी दृष्टी से देखा परन्तु उस रस का त्यागन लोभ वश नहीं किया मरे हुवे सर्पों को निकाल कर फेंक दिया और उस कड़ाह के पाक का गुड़ बनवा कर बेचा वो गुड़ जिस जीव ने खाया वही मृत्यु का प्राप्त हुवा सो बड़े पाप का भागी है इस कारण वंश की वृद्धि नहीं होती और पुत्रों को मटके है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वपापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रमाशक युग्मसर्पलिखेन्मूर्ति गायत्रीमन्त्रजापकं ॥ यज्ञहवनश्चदानञ्च कुर्वंतिविधिपूर्वकं संकल्पंददेत्विप्र सहितोवस्त्रभूषणं ॥ दानमन्त्रकृतेसत पूर्वपापश्चशांतये पुत्रसुखनसंदेहो वंशवृद्धिभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धामात्र स्वर्ण पर दो सर्पोंकी मूर्ति बनावे और वस्त्र भूषण सहित विधिपूर्वक कर्मेष्टि ब्राह्मणको दान करे और हवन करे तो अवश्य पुत्र होकर जीवें ॥

सं०उ०
२२८

सं०३० २२९

श्रीगणेशायनमः ॥ एषग्रहस्थितपत्री बहुविद्याचप्राप्तये बलान्वितःविलासांच विमलःसर्वकार्यकृत ॥ मतिमानचारुशीलश्च भृगुणापरिभाषितः जन्मश्रेष्ठकुलेयातो बहुभागीचलोकमा परोपकारकर्ताच चित्तचिंताचयुक्तता मित्रपक्षमहाप्रीति सर्वसुखंचप्राप्तये ॥ साहसांसन्मानीश्च दीर्घव्ययनसंशयः श्रेष्ठशिक्षाददेत्मिन्न सूरवीरोपराक्रमः ॥ युग्मस्वल्पमहापीडा नवीनोजन्मप्राप्तये जलग्नि भयजीव वृथाचिन्होतिदृष्यते ॥ कस्मिनकालउपद्रोवा गुप्तचिंताभविष्यति लाभप्राप्तिविशेषेण अतितेजोप्रतिष्ठया ॥ स्त्रीप्रीति नसंदेहो आरक्तंचित्तयुक्त नवीनोमन्द्रकरंचना अथभवभृगुसनमः ॥ सर्वसुखचप्राप्नोति पुत्रदुखनसंशयः पत्नीक्लेशमहाचिंता वंशवृद्धिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ हेशुक जिस जीव की पत्री में ऐसे गृह थान के पड़े हैं सो भागवान् विद्यावान् सूरवीर श्रेष्ठ कार्य करने वाला परोपकारी पहली अवस्था से अन्त में सुख विशेष खर्च विशेष रहै श्रेष्ठ शिक्षा देने वाला इज्जत पैदा करे जल अग्नि भय होय किसी काल में उपद्रव हो फिर शांत हो दो अल्प भुगत कर आयू पूर्ण हो स्त्री से मित्र से प्रीत नई २ लाभ की वार्ता सोचा करे पुत्रों का दुख देखे स्त्री को क्लेश रहे सब सुख हों परन्तु पाप के कारण पुत्रों का दुख हो ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन वंशवृद्धिनदृश्यते आसपुत्रश्चभोक्तव्यं पत्नीक्लेशोपिदीर्घता ॥ पूर्वगाथाइदंजीव श्रृणुत्वंममवांछया केनपापप्रभावेण सुतानन्दनदृश्यति ॥ भाषा ॥ शुक ज कहते हैं हेपिता कौन से पाप कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणः आद्यजन्मांतरंगाथा कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ ग्वालवंशसमुत्पन्न बहुसेवानरोभवेत अश्वपतिगजग्रामाच तेजस्वीप्रतिष्ठवान् ॥ अरजुनधेनुविख्यातो

शिवपुरग्रामवासकम् बहुदानीप्रधानजीव आनन्दभूमिमंडले ॥ हस्तिथापितेथात्रा स्नानेहरिद्वारकम् रविश्रास्तानिशामार्गे अन्धकारोपिगच्छति ॥ कुमार्गोगवर्नंकत्वा अन्यपुर्षापिवर्जयेत् पशुसर्पइदंमार्गे पगडंडीनगच्छति ॥ यात्रीमंदश्रुणुशब्द अंगिकारनकृत्यया सर्पंचसहितपुत्रो गजचर्योपिमृत्युदा ॥ सर्पशापसुखंदत्वा सप्तजन्मअपुत्रवान् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र प्रथम एक जन्म में यह जीव ग्वाल वंश था हरिद्वार गङ्गा स्नान करने जाता था सो रात्रि के समय अन्य मनुष्यों ने मना किया कि इस रास्ते में सर्प बहुत पड़े रहते हैं रात्री में मत जाओ सो यह न माना बहुत से सर्प आदि जीवों का विध्वंस हुवा तो पाप का भागी हुवा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रकिंजापकम् सर्पशापविनश्यंति पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौनसे दान मंत्रसे पुत्रों के सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाःकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकम् मृत्युसर्पलिखेन्मूर्ति रक्तचन्दनकारकम् ॥ गंगाजलेनसंशुद्धो धूपीदपंचचन्दनम् बीजमन्त्रश्चगायत्री लिपिकत्वाविधिपूर्वकम् ॥ दीर्घवज्रकृतेदानं मन्त्रश्रद्धाप्रमाणकम् ताम्रकुम्भघृतमध्ये शुभमूर्तिप्रवेशकम् ॥ अन्नवस्त्रददेत्दानं जापंचविधिपूर्वकम् मंत्रमन्तान गोपालं चन्द्रलक्षप्रमाणम् ॥ देवकीसुतगोविंद दूसरामन्त्र उच्चारण करे ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय पूर्वशापनिवारणार्थं दानमन्त्रकुरुकुरुस्वाहा ॥ मन्त्रदानकृतेसन्त निश्चयपुत्रजीवितं पुर्वशापविनिर्मुक्तो वंशवृद्धिदिनेदिने ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं स्वर्ण पत्र पर सर्पों की मूर्ति बनाय गंगाजल से शुद्ध कर विधिपूर्वक दान करे ऊपर लिखा मन्त्र पढ़ता जाय और एक लक्ष सन्तान गोपालका मन्त्र विद्वान् पंडित से जपवावें तो निश्चय पुत्र होकर जीवें इसमें कुछ संशय नहीं है ॥

स०७०
२३१

श्रीगणेशायनमः ॥ एवंसर्वग्रहस्थित्वा कुण्डलीस्यफलस्त्विदं मनेच्छापूजितेलोके विलम्बोनात्रसंशयः ॥ युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषतः द्रव्यलाभंभवेचापि स्वकृत्यकुशलोगुणी ॥ बहुकार्यरतोनित्यं सुमित्रलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् माननीयोविशेषतः ॥ छंदोज्ञात्वामहद्दुखं पुनरंतोश्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितं नतुष्यतिकदाचनः ॥ गोधौम्रापिवर्णाश्च बुद्धिवानोविशेषतः द्विभार्यागेहेप्राप्नोति अथवामंगलंत्यजेत ॥ सत्यमार्गसुकृत्यश्च स्वकुलंपोषणोरतः प्रतिष्ठावर्धतेलोके भूमिलाभ नसंशयः ॥ श्रेष्ठकृत्यविजानिया गुप्तचिंताचप्राप्तये मानसीविविधाचिंता देहपीडाचगुप्तता ॥ अकस्मात्महाद्दुखं भयभीतोचप्राणक शत्रुपक्षविरोधश्च पश्चांतेपराजयम् ॥ प्रदेशोगवनंकृत्वा नान्यथावचनंमम शुभकार्येधनव्ययं अर्थप्राप्तिभविष्यति ॥ सर्वसुखश्च प्राप्नोति पुत्रशोकनसंशयः ॥ भाषा ॥ हेशुक इस जीव की पत्री में श्रेष्ठ ग्रह पड़े हैं परन्तु फल देर से करेंगे अन्त अच्छा हो अच्छे लाभ के काम करे राजद्वार से लाभ हो बहुतों का काम निकले गुप्त प्रीत रहै दूसरी स्त्रीं भी प्यार करे सूरवीर किसी के छल में न आवे सगाई हो के छूटे या द्विभार्या योग हो सत्य बोलने वाला दूसरे की बात को तोले बड़े बड़े मामले देखे स्त्री पुत्रों का क्लेश चिंता रहै सब सुख देखे परन्तु पूर्व पाप के प्रभाव से पुत्रों के शोक देखे ॥ शुकोवाच ॥ किंकर्मानुसारेणा पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मकथंतात कथ्यंतेविधिपूर्वकं ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता कौनसे ऐसे कर्म इस जीवने पूर्वजन्म में करे हैं जो पुत्रोंके सुखसे रहित रहा ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारणं यवनवंशकुलेजन्म षटकर्मापिवर्जयेत ॥ पशुश्चंडश्चभोजनाय बहुजीवविनाशनं नित्यउपवनंगत्वा पक्षीरालभक्षणं ॥ सहस्रोजीवश्रापार्थं पुत्रसुखविनश्यति ॥

भाषा ॥ हेपुत्र यह जीव एक पूर्व जन्म में यवन वंश में उत्पन्न हुवा था सो अपने षटकर्म से रहित रहा और नित्य प्रति बागों में जाकर सैकड़ों पक्षियों के अंडे लाकर के भक्षण किया करता था और बड़ा धनवान् था बाग जमीन अनेक तरह की सवारी थी परन्तु षटकर्म से रहित था और अपने आनन्द भोगे था सो सैंकड़ों पक्षियोंका शाप लगा हुवा है ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् पक्षीशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखंभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान मन्त्र जाप कराने से इस जीव को पूर्व का दिया हुवा शाप नष्ट हो जो पुत्र के सुख देखे और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या चन्द्रलक्षप्रमाणकी गायत्रीमूलमन्त्रस्य रक्तचन्दनम्लिखेत ॥ पक्षीबालकमाकारम् लिख्यतेविधि पूर्वकम् षटरसद्यादिसामग्री संकल्पम्ब्राह्मणंददेत ॥ गायत्रीमूलमंत्रस्य चंद्रलक्षप्रमाणकं मन्त्रसन्तानगोपालम् श्रेष्ठविप्रजपंतथा ॥ दान करते समय श्रद्धा और भक्ति पूर्वक विष्णुभगवान् का ध्यान करे और सुख से यह मन्त्र उच्चारण करता जाय ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायण विष्णुभगवान् पूर्वशापनिवारणार्थं पुत्रसुखनिमित्यर्थं दान मन्त्र जाप करूं हूं सो ग्रहण करो ॥ मंत्रदानकृतेसन्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशय वंशवृद्धिर्भविष्यति भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण का पत्र एक मुद्रा प्रमाण बनवावे और उसके ऊपर गङ्गा जल मिश्रित लाल चन्दन में मूल मन्त्र लिखे और पक्षियों का आकार बनवा कर और षटरस आदिका संकल्प करा कर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को दे और मन्त्र सन्तान गोपाल और गायत्री मन्त्र लक्ष प्रमाण जपवावे हवन यज्ञ करेतो निश्चय पुत्र होकर जीवें और धन संतानकी वृद्धिहो और जीवन सुफल माने हर प्रकारके आनंद हों ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ इदंग्रहपत्रइस्थित्वा बहुभागीचबालकः साहसीचप्रतापीच विनीतश्चतुरोगुणी ॥ मंत्रतंत्रविजानीयात शिवभक्तिचमध्यमा दृष्टीन्यूनविजानीयात नेत्रपाडानसंशयः ॥ अंगरोगकचित्काले औषधिप्रतिशांतये मित्रश्रेष्टमहाप्रीति नवीनोवार्तयाचितः ॥ अल्पकष्टभयंशुक्र नवीनोजन्मप्राप्तये मिष्टवाक्यप्रियवाणी धनचितानसंशयः ॥ महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने कटुवाक्यउपाधीच शत्रुपक्षविरोधता ॥ चौरभय विजानीयात गुप्तशत्रुचप्राप्तये राजद्वारप्रतिष्टोवा भूमिलाभ भविष्यति ॥ पुत्रचिताविशेषेण पत्नीशोकबूडनं प्रमेहोव्याधिकंलिप्त औषधीप्रतिशांतये ॥ कस्मिन्कालेउपद्रोवा शीघ्रोवीर्यखंडतः अर्धयायुगतेशुक्र भाग्योदयदिनेदिने ॥ पुर्वपापप्रभावेण पुत्रसुखविनष्यति ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेपुत्र इस जीव की पत्री में ग्रह श्रेष्ट हैं इज्जत पावे चतुर बुद्धिमान् मन्त्र यन्त्र का भी कभी शौक हो शिव भक्ति करे मध्यम श्रद्धा से कभी आंख दुखनी आवें दृष्टि मध्यम सी होवे एक मित्र से प्रीत बनी रहे चित्त उसकी तरफ विशेष रहे एक कष्ट अल्प समय हो फिर औषधी से शांति हो श्रेष्टवार्ता बारम्बार सोचे किसी काल में क्रोध विशेष आया करे कड़ा बोले शत्रु जला करें मार्ग में या और कहीं चोर का भय हो स्त्री से प्रीत हो राजद्वार और भूमि से लाभ पुत्रों के दुख देखे स्त्री को औलाद की चिंता रहे अनेक यत्न करे पूर्व पाप के कारण निष्फल जाय हेपुत्र यह जीव सर्व सुख देखे परन्तु पुत्र सुख न हो ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनष्यति पुर्वजन्मकथाकथ्यं श्रृणुत्वममवांछया ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता पहले किसी जन्म में कौन से पाप इस जीव से बने हैं जो यह और इसकी स्त्री पुत्रों के सुख को भटके ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापश्चकारण

स०उ०
२३३

क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनखेटानुसारणः ॥ उपवनंगवर्नंकृत्वा सन्मुखोसिंहदृष्टयः क्षत्रोसिंहवधोबाण द्विजपुत्रश्चमृत्युदा ॥
चन्द्रपुत्रसुखीविप्र क्षत्री शविनाशनं द्विजदृष्टिकृतेपुत्र हाहाकारविह्वलं ॥ विप्रशापमुखंदत्वा सप्तजन्मसुतदुःखी ॥
भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र यह जीव एक पूर्व जन्म क्षत्री वंश में उत्पन्न होता भया बड़ा भारी धनवान् था सो एक समय
धनुषबाण लेकर शिकार खेलने गया तहां सिंह दृष्टिमें आयातो क्षत्रीने तीरमारा सिंह तो बच गया एक ब्राह्मणका पुत्र सन्मुखसे
आवे था सो क्षत्री के बाणों से उसके प्राणों का नाश हुवा तो ब्राह्मण के यह एक ही पुत्र था सो उसका मृतक शरीर देख कर
हाहाकार कर के विह्वल हुवा और क्षत्री को ब्राह्मण ने शाप दिया कि तू भी सात जन्म तक पुत्रों को भटकता रहेगा ॥
शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकम् विप्रशापविनिर्मुक्तो पुत्रसुखभविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौन से दान
मन्त्र जाप से पू॰ का दिया हुवा ब्राह्मण का शाप छूटे जो इस जीव को पुत्रों का सुख हो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या
चन्द्रटंकप्रमाणकी तन्मध्येकामवीजश्च स्वर्णोशुद्धमादृशेत ॥ रक्तचन्दनमिश्राणि द्विजमूर्तिंयकारकम् चन्द्रलक्षप्रमाणेन गायत्रीमंत्र
जापकं ॥ वस्त्रभोजनंदानं संकल्पंब्राह्मणददेत वज्रदानविनिर्मुक्तो पुत्रप्राप्तिनसंशयः ॥ वंशवृद्धिनसंदेहो भाग्योदयदिनेदिने ॥
भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र एक टंक प्रमाण स्वर्ण का पत्र बनवा कर तिस के ऊपर रक्त चन्दन और
अनार के कलम से द्विज के पुत्र की मूर्ति लिखे और वस्त्र भोजन सहित सब सामग्री संकल्प कर के ब्राह्मण को दे
एक लक्ष गायत्री मन्त्र जपवावे हवन यज्ञ करे ब्राह्मण को दक्षिणा देकर तृप्त करे तो अवश्य पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्थितग्रहाचेदं एवंसाकुण्डलीफलं आदौभाग्यञ्चमध्योपि पुनरंतेविशेषता ॥ बालवस्थाचक्रीडन्ते विद्याभ्यासेपिमंगलं तातद्रव्यंशुभंकार्य विवाहादिमहोत्सवः ॥ भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेनात्रसंशयः वारिभीतोथवावन्हि चतुष्पादेन पीडितम् ॥ उच्चस्थेपतितोभूमौ शरीरोबातपीडिनं बहुविद्यानप्राप्यन्ते कार्यमात्रश्चसिद्धति ॥ बुद्धि तोविशेषेण सुज्ञाताचसुलक्षणः युवावस्थासुखंप्राप्य पुत्रसुखविनश्यति ॥ व्ययलाभविशेषेण कीर्तिवंतोप्रतिष्ठत भाग्यवंतोधनाध्यक्ष सुप्रसिद्धंसुखीनरः ॥ चंद्रमित्रपरंप्रीति सर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिताद्वयोजीव प्राप्यतेशोकसंयुतं ॥ कदाचकष्टरोगार्तो बहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारे धनागम्य भूमिलाभस्त वच ॥ बरङ्गोसिंधुवच्चितं जायतेबहुनूतन स्वल्पोदीर्घभयंप्राप्य नूतनंजन्ममन्यते ॥ पन तेसुखंप्राप्य आयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूज्यं पकृताभाग्यमन्दता ॥ दानमन्त्रविधानेन मनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्यविशेषेण परकाय रतोनरः ॥ दयालुसुविचारश्च गीतवाद्यतस्सदा सुन्दरंभृगुवाक्यैच धनसंयुक्तकौशल ॥ सत्यवक्ताप्रतापीच विनितश्चतुरोगुणा सर्वसुक्खमप्राप्नोति पुत्रप्राप्तिउपायकं ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ हो प्रथम मन्द भाग हो पश्चात् में विशेष भाग की वृद्धि हो बाल्यावस्था में बालक्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में खर्च हो बहन भाई का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय हो या कहीं से गिरे विद्या कार्य मात्र हो चतुर दाना युवा वस्था में बड़े काम और मामने देखे लाभ खर्च बहुत हो प्रतिष्ठा पावे एक मित्र से खुब प्रीति विशेष हो उससे मन की बात कहे और एक जीव का क्लेश बहुत माने कई बीमारियों में खर्च हो राजद्वार तथा भूमि से लाभ हो चित्त में समुद्र क सी नित्य नई तरंग

२३५

रहैं एक कल्प मारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो हेशुक पूर्व जन्मों के कारण पुत्रों के सुख से रहित रहै ॥ शुकोवाच ॥ केनपापश्चकर्तव्यं पूर्वजन्मनिकथ्यते विधिपूर्वकथंतात श्रृणुत्वंममवांछया ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति वामपुत्रश्चविव्हलं पुत्रप्राप्तिनदृश्यंते जन्मतेसुतमृत्युदा ॥ हेपिता इसजीवने पूर्वजन्ममें कौनसेपाप किएहैं सोकहो ॥ भृगुवाच ॥ ब्रह्मवंशकुलेजन्म कुरुक्षेत्रचवासयो दीर्घदानश्चग्रहणं यात्रापुत्रविनाशनं ॥ हेशुक तुम चित्तदेकर सुनो इस प्रथम जन्मसे पहले जन्मकी कथा वर्णन करते हैं क्योंकि शापतो सातजन्म तकभी फलकरैहैं सो यह प्रथमसे प्रथम जन्ममें ब्रह्मकुलमें कुरुक्षेत्रमें पराडाथे इन्होंने बहुत कुछ दानलिये परंतु एकदुष्टकी सम्मतिमें आनके एकयात्री जोसाथमें स्त्रीपुत्रकोलिए इनकेस्थानपरठहराथा उसकेपुत्रको स्वर्णकाआभूषण जड़ाऊ और सच्चेमोतियोंकी माला उतारकर उसके सोतेहुवे पुत्रको कूपमेंडालदिया सो उसयात्रीने अतिदुखीहो वहींतीर्थपर शापदिया कि जिसने मेरे पुत्रकी यहगतकी उसके सात जन्म तक पुत्रका सुख नहो और दुखित रहै ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं यात्रीशापविनिर्मुक्तो सुखसंतानवर्द्धनः ॥ यहकथा सुनकर तिनके पुत्र शुकजीने भृगुजीसे प्रार्थना करके पूछा हेपिता कौनसे दानमंत्रजाप करानेसे इसजीवका शापनष्टहो औरपुत्रोंका सुखदेखे सोवर्णनकरो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा यात्रीमूर्तिपुत्रकं रक्तचंदनमिश्राणि गङ्गाजलस्नानकं ॥ तीर्थदानददेविप्र गायत्रीमंत्रजापकं वस्त्रआभूषणंसहितं संकल्पश्रेष्ठविप्रयो ॥ इदंदानकृतेजीव पूर्वशापनष्टकं पुत्रसुखनसंदेहो मनवांछितफलप्रदा ॥ भाषा ॥ हेशुक यहजीव स्वर्णपत्रपर यात्री पुत्रको मूर्ति लाल चंदनसे लिखे गंगाजलसे स्नान कराय तीर्थ पर जाय श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरे गायत्रीमंत्र जपवावैतो निश्चय पुत्र होकर जीवें ॥

सं० ७०

२३६

श्रीगणेशायनमः ॥ एतद्योगोद्भवेकाल ग्रहाश्रेष्ठबलान्वितः फलपूर्णनकर्तव्या त्रिग्रहाअधमस्थिता ॥ कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते भौमपुच्छेरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित ॥ विशेषोलाभसंजातं भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोके सर्वतोदिशि मंगलं ॥ अयत्नेनतदाकाव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमंत्रसुपुण्येन बहुत्वोलाभसंभवा ॥ आनन्दमंगलाचारं जीवहर्षंचमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन् दीर्घमान्योप्रतिष्ठत ॥ यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते ॥ क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पजन्मनूतनम् सुयत्नंदानमन्त्रेण सर्वकार्यंचसिद्धति ॥ पुत्रचिंताभविष्यन्ति पत्नीक्लेशविव्हलं दशाश्रेष्ट प्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव ॥ कुवेद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयुतोजीव सर्वेषांशुभचिंतकः ॥ नकस्याअशुभ चित्य परनिंदाविनिर्मुखः व्रणाचिन्हशरीरोपि शत्रुपक्षविरोधता ॥ तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्यप्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणः पत्नीपुत्रम्हाचिंता भृगुणापरिभाषितः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं इस कुण्डली का फल बहुत उत्तम श्रेष्ठ था परन्तु पूरा फल देर से हो तीन ग्रह हानि कारक हैं सूर्य, मंगल और केतु इनका दान मन्त्र उपाय करने से लाभ विशेष हो और भाग्य की वृद्धि होगी और यह जीव बड़ी इज्जत और प्रतिष्ठा पावे परन्तु इतने नाकिस ग्रहों का यत्न न हो मध्यम फल हो और यत्न उपाय करने से अनेक प्रकार के लाभ हों और आनन्द मंगलाचार हों जीव की खुशी हो और यह जीव बड़ी इज्जत कीर्ति पैदा करे मध्यम दशा में मध्यम लाभ और गुप्त चिंता अनेक प्रकार के खर्च एक अल्प से बच कर नया जन्म हो और कहीं से अकस्मात लाभ हो यह जीव सब का भला चाहै एक मित्र से मिल कर लाभ हो

ऊंची पदवी पावे शत्रु उपाय करे घर में क्लेश सा हो फिर मनोकामना पूरी हो हेशुक इस जीव का पञ्चम स्थान पूजनीक है सब सुख देखे परन्तु बिना उपाय पुत्रों के सुख से रहित रहे ॥ शुकोवाच ॥ केनकर्मानुसारेण पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्म कथाकथ्यं श्रुणुत्वंममवांछया ॥ भाषा ॥ शुकजी कहते हैं हेपिता ऐसे कौन से खोटे कर्म इस जीव ने पूर्व जन्म में किये हैं जो पुत्रों के सुख प्राप्त नहीं ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापञ्चकथ्यते क्षत्रीवंशसमुत्पन्न गवनसंटानुसारयः ॥ मृगीपुत्र विलोकस्य क्षत्रीचापधारणम् दक्षिणहस्तकंसाव मृगीपुत्रश्चमृत्युदा ॥ हाहाकारमृगकृत्वा पुत्रशोकोपिबूडनं मृगशापसुखंदत्वा सप्तजन्मसुतहानकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र पूर्व जन्म की कथा इस जन्म पत्र वाले जीव की तुम सुनो क्षत्री वंश में पूर्व से पूर्व जन्म में उत्पन्न हुवा सो शिकार खेलने गया तो इसने मृग का बच्चा मारा सो मृग ने दुखी हो शाप दिया कि सात जन्म तक तुझे पुत्र का सुख नहो और पुत्रों के विलाप देखेगा ॥ शुकोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्र किंजापकस पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखभविश्यति ॥ भाषा ॥ शुकजी महाराज ने कहा हेपिता यह जीव कौन से दान मंत्र और जाप करावे जो इस जीव को पूर्वका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र होकर जीवें और स्त्री गोद भर भर खिलावे ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णंचप्रतिमाकारः मृगमूर्तिलिपिकृतः ताम्रपात्रघृतंमध्ये गुप्तमूर्तिप्रवेशकं ॥ श्रद्धामात्रददेहानं अर्धरात्रप्रमाणकम् ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हेपुत्र स्वर्णका बनवावे तिसपर मृगकी मूर्ति रक्तचन्दनसे लिखे और शुद्ध करके घृतके भरे कलश में मूर्ति गुप्त प्रवेश कर अर्धरात्रि प्रमाण दान करा कर श्रेष्ठ विप्रको देतो पुत्रका सुख निश्चय हो और मनोकामना पूर्ण होय ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ पत्रस्येदंफलंदृश्य यथाभाग्यादिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मा जीवत्राशाविनिर्मुखः ॥ चिंतनंसुस्थिरंलोके चञ्चलोचितविशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चजायते ॥ नूतनंवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुद्रव्यन्ते विलम्बोजायतेपुनः ॥ क्लेशरोगेनपाव्यन्ते पुत्रशोकोपिचिंतनं लाभेशोपंचमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता ॥ फलश्रेष्ठसुखंप्राप्य सुपुण्यं फलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण पुर्णाचतानसंशयः ॥ बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानन्दवर्द्धन मित्रपक्षपरंप्राप्ति आनन्दंभूमिमण्डले ॥ पितृपीड़ाग्रहगुप्त अकस्माद्भयदायकः पत्नीक्लेशनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः ॥ बंधुक्लेशविरोधश्च चंद्रपीड़ाविशेषतः अकस्मात् महाचिंता नान्यथावचनंमम ॥ गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधि तेनसौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं ॥ द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलबंधुवहर्षिता मध्यविद्याचप्राप्नोति भाग्यवृद्धिविशेषतः ॥ गुप्तलाभनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने पू शापप्रभावेण पुत्रसुखनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र इस पत्र का फल सुनो यह जीव ज्ञानवान् चतुर हो सब का भला चाहै भागवान् हो प्रसन्न रहै एक जीवकी आस लगी रहै चित्त चलाय मानसा रहै और नई नई बार्ता सोचता रहे गुप्त चिंतासी हो जाया करे नये नये लाभहों कार्य की सिद्धि में विलम्बसा हो जाया करे और क्लेश पीड़ा होकर आनन्द हो पुत्रकी चिंता लगी रहे लाभेश और पञ्चमेश की पुजा दान से फल श्रेष्ठ और मनोकामना पूर्ण हो कृत्य में लाभ और मित्रों से प्रीत पृथ्वी पैं आनन्द और पितृ पीड़ा का भय हो स्त्री को क्लेशसा हो किसी समय बन्धु या और शत्रुओं से विवाद हो अकस्मात् चिंता हो जाय गायत्री मंत्र जाप करानेसे मन इच्छा पूर्णहो विद्या मध्यम और चतुर विशेषहो कहींसे गुप्त लाभहो बहुतसी प्राप्तिहो हेशुक्र पुर्वपाप और शाप

८०७०
२३९

के कारण पुत्र का सुख नदेखे ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रृणुतातकृपानाथ पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापं पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी ने कहा हेपिता कौन से पाप इस जीवने पूर्वजन्म में किये हैं जो पृथ्वी पर सब सुख देखे और पुत्रों के दर्शनों को भटकता रहे सो कृपा कर कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते श्रृणुपुत्रोतिध्यानकं ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मोपिकृत्यया ॥ गौबच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं बच्छोपिप्राणगतनं गौश्चापम्रुखंददेत ॥ दारुणदुखददेत्विप्र अग्रजन्मन्नभोक्तया पुत्रसुखविनश्यंति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्म कुल में उत्पन्न हो कर खेती करता था सो रात्री को गो और उसका बचा खेती में आघुसे तो बड़ा मोटा लट्ठ बछड़े के मारा सो वह बछड़ा मृत्यु को प्राप्त हुवा गौ ने विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे मैंने बछड़ेका दुख देखा तैसे तूभी सातजन्मतक पुत्रों का दुख देखेगा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनश्यंति पुत्रसुखश्चप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्र जी ने कहा हे पिता कौन से दान मंत्र जाप कराने से गौ का दिया हुवा शाप नष्ट हो संतान का सुख देखे सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रलिपिकृत्वा गंगाजल रक्तचंदनं गौबच्छतियाकारं तांदुलस्वेतगुप्तवा ॥ संकल्पंददेत्विप्रः मुखउच्चार्यमंत्रकं बटुकमंत्रकृतेजापं पूर्वशापविनश्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुरु स्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी ने कहा हे शुक्रस्वर्ण के पत्र परगौ के बछड़े की मूर्ति रक्तचन्दन और गंगाजल से लिखे चावल का थाल भरकर उसमें मूर्ति गुप्त प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण कोदे और ऊपर लिखे मंत्र का श्रद्धा प्रमाण जाप करावे गायत्री मंत्र जपवावे तो पुत्र होकर जीवें मनोकामना पूर्णहो

स०७० २४१

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डलीस्यफलश्चेदं यथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्या चितचिंतातिमन्यते ॥ भ्रमोपिजायतेदीर्घ अद्द्रव्यश्चन्यूनता विद्यावंतोसुबुद्धिश्च सर्वावस्थाप्रतिष्ठतः ॥ सत्यवक्तासुखीलोके नकश्चितहानिचिंतकः परकृत्यरतोप्रेमी जनासर्वे प्रशंसिता ॥ जीवचिंताविशेषश्च मित्रप्रीतिबृहत्वया नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाप्तयः ॥ कुलश्रेष्ठसुभाषीच सर्वेषांतोषणोरत दशान्यूनमहाचिंता उद्यमेश्रमनिष्फलम् ॥ विलम्बोजायतेलाभम् अर्द्धनत्यवसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्य पदउच्चमुपस्थितः ॥ विशेषोजायतेलाभम् मानकीर्तिविवर्द्धनम् पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रस्वप्नेनदर्शनः ॥ पापक्रूरगृहापुज्यं पञ्चमेशोप्रयत्नतः दानमंत्र सुपुराणेन मनेच्छासर्वपूजिता ॥ सर्वावस्थामहलाभं भाग्योदयदिनेदिने अतआयुमहासुखं भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ सर्वसुखञ्च प्राप्नोति पुत्रप्राप्तिनदृश्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस जीवकी पत्री में गृह श्रेष्ट हैं लाभ खर्च विशेष हो लाभ के वास्ते नई नई बात का चितवन करे एक समय बुद्धि भ्रमसी हो घर में द्रव्य की न्यूनता प्रतीत पड़े विद्यावान् बुद्धिवान् हो इज्जत प्रतिष्टा पावे सत्य बोलने वाला गुप्त चिंता सी हो जाया करे पराए काम सुधारने वाला लोग प्रशंसा करें मित्रसे प्रीत विशेष रहे नई नई बात का ध्यान धन की प्राप्ति का परिश्रम उद्यम करे न्यूनदशा में परिश्रम निष्फल हो अधूरा लाभ हो एक समय अकस्मात् लाभ विशेष हो उच्च पदवी पावे मान कीर्ति बढ़े स्त्री को पुत्र के न होने की चिंता लगी रहे और अन्त आयु सुख मिले हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्रों के सुख को भटकता रहे ॥ शुक्रोवाच ॥ श्रुणुतातकृपानाथम् पूर्वगाथाचकथ्यते केनकर्ममहापापम् पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ शुक्रजी कहते हैं हेपिता कौनसे

पाप इसजीवने पूर्व जन्ममें किये हैं जो पृथ्वीपर सब सुख देखे और पुत्रोंके दर्शनको भटकता रहे सो कृपाकर मुझसे कहो ॥ भृगुवाच ॥ पूर्वगाथाचकथ्यंते शृणुपुत्रतिष्यानकम् ब्रह्मवंशकुलेजन्म कृषीकर्मासुकृतयया ॥ गावच्छत्रणभक्षोवा रात्रिलष्टप्रहारकं वच्छोपिप्राणगवनं गौशापमुखंददेत ॥ दारुणदुखददेतिप्र अप्रजन्मचभोक्तया पुत्रसुखविनष्यति सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र पहले जन्म में यह जीव ब्रह्मकुलमें उत्पन्न होकर खेती करताथा सो रात्रीं को गौ और उसका बच्चा इसकी खेती में आघुसे तो इसने बड़ा मोटा लट्ठ बच्छड़े के मारा सो वह मृत्यु को प्राप्त हुवा तब उस गौने बड़ा विलाप किया और शाप दिया कि हे ब्राह्मण जैसे तैंने मेरे बच्छड़े को मारा और मैंने बच्छड़े का दुख देखा तैसे तूभी सात जन्म तक पुत्रों का दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापविनष्यंति पुत्रसुखश्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ शुक्रजी महाराज ने कहा हेपिता कौन से दान से और कौन से मंत्र जाप पुजा से पूर्व का गौ का दिया हुवा शाप नाश को प्राप्त हो और यह जीव पुत्रोंका सुख देखे सो विधि पूर्वक कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रांलपिकृत्वा गङ्गाजलरक्तचंदनं गौवच्छोतिआकारं तांदुलस्वेतयुतया ॥ संकल्पंददेतिप्रः मुखउच्चार्यमंत्रकम् बटुक त्रकृतेजापम् पूर्वशापविनष्यति ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गौशापशांतिकुरुकुरुस्वाहा ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण के पत्र पर गौके बच्छड़े की मूर्ति रक्त चन्दन से लिखे और चावल का थाल भर कर उसमें मूर्ति रख प्रवेश करे और संकल्प करके किसी श्रेष्ट ब्राह्मण को दे और फिर ऊपर लिखे मन्त्र का श्रद्धा प्रमाण भक्ति पूर्वक जाप करावे तो निश्चय पुत्र हो कर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कुण्डली ४८फलश्चे विशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभागीच चिचचिंताविशेषतः ॥ व्ययलाभविशेषेण सर्वावस्थासुमोदिता मात्रभगिनिचप्राप्नोति अल्पसुखनसंशयः ॥ व्रणाचिन्हशरीरश्च वायुखेदश्चपीडिका कस्मिन्कालउपाधीच व बुपक्षविरोधता ॥ अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरेच महत्प्राप्तिमहोत्साहो लाभोभवतिनान्यथा ॥ युग्मविद्याचप्राप्नोति कार्यमाऽश्चसिद्धति मध्यप्राप्तिविजानीयात व्ययदीर्घोनसंशय ॥ चन्द्रऽल्पमहादुक्खं नवीनोजन्मप्राप्तये आयुभोगंचपूर्वोगा भृगुणापरिभाषितः ॥ चन्द्रस्त्रोमहाप्रीति आनंदंभूमिमण्डले सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखविनश्यति ॥ पत्नीक्लेशमहाचिंता पुत्रयोगश्च खण्डत मानसीविविधाचिंता भृगुवाक्यनचान्यथा ॥ पूर्वपापप्रभावेण पूर्णावांछानदृश्यते पितृपीड़ाग्रहमध्ये श्रद्धामात्रश्चपूज्यते ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेशुक इस कुण्डली का फल श्रेष्ठ है ग्रह बलवान् पड़े हैं लाभ कारी और खर्च विशेष हो नग्नी और भ्राता का सुख मध्यम हो श्रेष्ट दशा में लाभ बहुत हो कीर्ति बढ़े शरीर में व्रण का चिन्ह कभी दर्द पीड़ा हो जाया करे और मित्र या बन्धु भ्रात से उपाधी हो अकस्मात् उपद्रव सा उठे शत्रुपक्ष से विरोध हो गुप्त चिंता सी हो जाय फिर बहुत सी प्राप्ति हो और इज्जत प्रतिष्ठा पावे दो विद्या का मध्यम योग हो ऊंचादर्जा पावे लाभ मध्यम हो किसी समय में खर्च विशेष हो एक अल्प आयु से बच कर उमर पूर्ण हो एक स्त्रा से महा प्रीत हो कर एक जीव का ख्याल बना रहे हेशुक सब सुख हो परन्तु पुत्र की महा चिंता क्लेश स्त्री को रहा करे पूर्व पाप के प्रभाव के कारण पुत्रों का सुख कठिन है पितृ पीड़ा घर में हो गुप्त बागारो हो अनेक प्रकार की चिंता हो सब सुख प्राप्त हों परन्तु पुत्रों का योग खंडत है पितृ पीड़ा को श्रद्धा मात्र उपाय भी

करावे परंतु इच्छा पूर्ण विलंब से हो ॥ भृगुवाच ॥ मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भृगुणापरिभाषितः सर्वसुखंचप्राप्नोति संततिवंशविनाशकः ॥

भाषा ॥ सूर्य वंश ऋषी पुत्र भृगुजी महाराज ने कहा हेपुत्र यह जीव सब सुख देखे परन्तु पुत्रों के सुख से क्लेशित रहे ॥

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मंचप्रभोतात पूर्वजन्मनिकथ्यते सर्वंचविस्तराद्ब्रूहि पुत्रसुखविनश्यति ॥ भाषा ॥ तब शुक्रजी ने कहा हेपिता पूर्व जन्म में इस जीवने कौनसे पाप कर्म करे हैं जो सब सुख देखे और पुत्रोंके सुखसे रहित रहे सो पूव जन्मकी कथा कहो ॥

भृगुवाच ॥ सूर्यवंशसमुत्पन्न बहुसेवीनरोभवेत अश्वपतिगजग्रामी मानदीर्घोनसंशय ॥ तीर्थयात्रागवनकृत्वा मार्गेमध्यउपद्रवं अश्वचजीवइस्थित्वा अर्धरात्रिप्रमाणकम् ॥ ऋषिसुतवाटिकागच्छ अश्वचरणतिमृत्युदा ऋषिपुत्रश्चदृश्यते हाहाकारविव्हलं ॥ क्रोधोशापसुखंदत्वा त्रयजन्मोप्रसुतहीनक ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र प्रथम जन्ममें यहजीव सूर्यवंशीथा और बड़ाभागवान्था हाथी घोड़े ग्रामथे तीर्थयात्रा करने जाताथा रुपयापायके अभिमान् बहुत बढ़गया अर्धरात्रीको घोड़ेपर सवार होकर जाताथा रात्री कासमय कुछ अभिमानमें अधाहुवा जाताथा सोमार्गमें एक ऋषीका पुत्र खेलताथा उसके ऊपर घोड़ेका चरणआया तुरंत मृत्यु को प्राप्तहुवा तब ऋषीने देखकर विलाप किया और शाप दिया किजैसेमें पुत्रोंके क्लेशमेंहुवा तैसे तूभी तीन जन्मतकपुत्रोंको भटकेगा ॥

शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमंत्रंकिंजापकं पूर्वशापप्रणश्यंति वंशवृद्धिर्भविष्यति ॥ भाषा ॥ हेपिता कौनसे दान जापसे शाप नष्टहो सो कहो ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकं ऋषिपुत्रलिखेन्मूर्ति संकल्पंब्राह्मणंददेत ॥ भाषा ॥ हेशुक्र यह जीव श्रद्धाप्रमाण स्वर्णपत्र बनवाय उसपर ऋषीपुत्र की मूर्ति लिखाय विधिपूर्वक श्रेष्ट ब्राह्मणको दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ जन्मपत्रफलंश्रेष्ट मध्ययोगश्चप्राप्तये तेजस्वीचप्रतापाच बुद्धिवानविशेषतः ॥ मध्यलाभनसंदेहो लाभईशपूजनं दीर्घज्ञानसमायुक्तो सुशीलोजीवदर्शनं ॥ दीर्घआयुसुयत्नेन बृहत्योफलमाप्नुयात् आदपठनश्चविद्यायां अंते विद्याविसार्जनम् ॥ बहूविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति कस्मिन्कालेमहापीड़ा औषधिप्रतिशांतये ॥ पशुजलभयजीव नवीनोजन्मप्राप्तये भाग्यवृद्धि विशेषेण आनन्दंभूमिमण्डले ॥ शत्रुपक्षविरोधीच गुप्तचिंताशरीरजं भ्रातभग्निसमायुक्तो भृगुणापरिभाषितः ॥ तेजस्वीप्रतापीच सूरवीरमहानरः पत्नीप्रीतिनसंदेहो बुद्धिचितचलायनं ॥ पुत्रहेतुकृतेयत्न दुर्लभसुतजीवः पत्नीगुप्तमहाक्लेश भृगुणापरिभाषितः चौरभीतिविजानीयात् गुप्तशत्रुप्रहारकं धनव्ययविशेषेण अन्तशत्रुविनाशनं ॥ महाप्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्ष महाप्रीति शुभप्रीतिचलोकमा ॥ सर्वसुखश्चप्राप्नोति पुत्रसुखनदर्शन ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हेपुत्र इस पत्र का फल श्रेष्ट है और मध्यम योग है यह जीव इज्जत प्रतिष्टा वाला ज्ञानवान और सूरवीर, तथा सोच समझ कर बात कहने वाला मध्यम लाभ हो लाभेश के पूजन से विशेष प्राप्तिहो विद्या कार्य मात्र हो एक समय अल्प से नया जन्म हो पशु या जलका भय हो शत्रु पक्ष से विरोध गुप्त चिंता हो जाय बहन वा भाई का योग हो घर में कभी क्लेश गुप्त पीड़ा हो पुत्र के वास्ते यत्न करे परन्तु जीव ने दुर्लभ हों घर में स्त्री सुशील श्रेष्ट खान दान की चतुर हो दूसरी स्त्री से भी प्रीत हो एक समय गुप्त शत्रु और चोर का भयहो हानि पहुंचावे परन्तु अन्तमें शत्रु का नाशहो भागकी वृद्धिहो लाभ विशेषहो मित्रोंसे प्रीतहो शुभ काम में धन खर्चहो भाग्य दिनदिन उदयहोय हेशुक यहजीव पूर्व पापके कारण पुत्रोंको भटकता रहे पश्चात्में दान मंत्र उपायसे हो कर जीवें

१०७०
२४५

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्रसुखविनश्यति पूर्वजन्मांतरंतात गाथाकथ्यंममप्रति ॥ भाषा ॥ इस जीव ने कौन से पाप कर्म किये हैं जो यह पुत्रों का सुख न देखे इस जीव के पूर्व जन्म की कथा कहो ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वं पूर्वपापस्यकारणः राजपुत्रकुलेजन्म लक्षाढ्यभुविमण्डले ॥ हरिद्वारगवनंकृत्वा अथवावाहनोदिपः बहुविप्रसहितपुत्रो कावेरीतट वासकं ॥ वृषभदीर्घ चरंमार्ग द्विजपुत्रश्वयंवधो मृत्युपुत्रदशाविप्र हाहाकारविह्वल ॥ राजपुत्रददेतशापं अतिक्रोधोपविष्टनं पुत्रक्लेशमहाशोकं सप्तजन्मपुनःपुनः ॥ भाषा ॥ भृगुजी महाराज कहते हैं हे पुत्र यह जीव एक जन्म में राज पुत्र था सो बड़ा अभिमानी था हरिद्वार पै जाय पराई स्त्रियों को खोटी दृष्टी से देखता था सो रथ में बैठ के गया गङ्गाजी के किनारे बहुत से ब्राह्मण स्त्री पुत्र सहित बात करते थे सो अंधाधुन्ध रथ भगाया सो एक ब्राह्मण के दो पुत्र बाल अवस्था के रथ के पईये के नीचे आन कर मृत्यु को प्राप्त हुवे सो ब्राह्मण पुत्रों की मृत्यु देख राज पुत्र को शाप दिया कि तूभी अगले सात जन्म तक पुत्रों के दुख देखे ॥ शुक्रोवाच ॥ किंदानंकस्यपूजाच किंमन्त्रंकिंजापकर्म द्विजशापप्रणश्यंति पुत्रपौत्रसुखावहं ॥ भाषा ॥ हेपिता यह जीव कौन से दान जाप करावे जो पूर्व जन्म का ब्राह्मणका दिया हुवा शाप नाशको प्राप्तहो और पुत्र पोतेके सुख देखे ॥ भृगुवाच ॥ शृणु पुत्रमहादानं वंशवृद्धिचकारयेत स्वर्णपत्रमहाश्रेष्ठ कावेरीजलशुद्धयो ॥ रक्तचंदनमिश्राणि घृतपात्रश्चशुभ्रया गायत्री मंत्रजाप्यंते चंद्रलक्षप्रमाणकं ॥ सकर पदेत्विप्र लीनपात्रद्विजोत्तमः वस्त्रआभूषणंदानं निश्चयपुत्रप्राप्तये ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हेशुक्र स्वर्ण पत्रपर रक्त चंदनसे ब्राह्मणके दोपुत्रों की मूर्ति लिखे घृतभरे कलश में वेशकर विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करे तो पुत्र होकर जीवें ॥

शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाके ... पूर्वजन्मा
पाप कर्म किये ... जीव
पूर्वपापप्रकारश्च ... हले
वासक ... मदा
पुत्रक ... शोक स

१४६

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगुसंहिता संतान उपाय

समाप्त

पं० श्यामभरोसे गंगाशरण ज्ञानसागर प्रेस, मेरठ शहर

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगु संहिता महाशास्त्र स्त्री फलितखंड

प्रारम्भः

पं० लक्ष्मी भूषण शिवभरोसे ज्ञान सागर प्रेस, ५२, महाजन पाड़ा मेरठ शहर।

❁ स्त्री फलित खंड के देखने तथा स्त्रियों का फल जानने की रीति ❁

जब किसी स्त्रीका फल देखना होतो उसके जन्म पत्र या प्रश्न पत्र की कुंडली को यथा नियम इस पुस्तक के कुंडली खंड के कुंडली चक्रों में मिलावे बस जिस चक्र में कुगडली ठीक २ मिल जाय उसी चक्र की अङ्क संख्या में जन्म या प्रश्न के तिथिवार नक्षत्र लग्न आदि सबकी अङ्क संख्या मिलाय इष्टकी घड़ी भी उसी में जोड़दे इन सबका जो एक योग फलहो उसमें इस फलित पत्रकी संख्या १०० का भागदे जो अङ्क शेष बचे उसी अङ्क के फलित पत्र में ठीक २ फल देखे और विचार पूर्वक सुनावे । यदि फलित में कुछ फरक जान पड़े तो इधर उधर के एक दो फलित पत्र में विचार पूर्वक सब फल देखकर बतावे और विशेष बातें अपनी विद्या बुद्धि के अनुकूल सोच समझकर भली प्रकार करना चाहिये ॥

दूसरा प्रकार—जिसे किसीका जन्मपत्र व प्रश्नपत्र प्राप्त न होसके या कुगडली प्रकर्ण में कुगडली न मिले तो उस स्त्री के नाम के अक्षरों के जितने अङ्क हों उनको साठ गुणाकरे सबमें श्री भृगुजी महाराज के नाम के ८ अक्षर जोड़े और सब योगफल में वही पूर्वोक्त फलितपत्र की संख्या १०० का भागदे जो शेष रहे उसी अङ्क के फलित पत्रमें फल देखे ॥

फलित की पूरी २ विध मिलाने में बहुधा पंडित बड़ी भारी चातुर्यता करते हैं और हर किसी के फलित की विध ऐसी ठीक २ मिला देते हैं कि प्रच्छक का मन मोहित हो जाता है । यह सब जो इस विद्या के रहस्य हैं सो इस पुस्तक का पाठ और साधन करने से स्वयं ईश्वरकी कृपा से ध्यान में आजाते हैं और विलक्षण फल कहने का मार्ग दीख जाता है ॥

पुस्तक मिलने का पता—पं० लक्ष्मीभूषण शिवभरोसे 'ज्ञानसागर' प्रेस, मेरठ-सिटी

सर्वखेटे मानेनबालिकामंदभागिनो श्यामवर्णास्थूलदेहा रुचिरांगी सुकामिनी तातमातमहविता जायतेचास्यजन्मनि वहुविघ्नसुराधिश्च तातकष्टप्रदो महान् गृहेद्रव्यनद्रस्यन्तिलाभयोगोपिमन्दता मासेवर्षेविवर्द्धति पूर्वपापेणपीड्यति बालक्रीड़ारतश्चापि मंदबुद्धिभयप्रदा पतनादरुणोकष्ट रुजोद्वेगा वितप्यति तातस्वल्पसुखेज्ञोके भ्रातृक्लेशभयमहत् दानमत्रादितोर्नूनं पूर्वपापक्षशातये सर्वसौख्यागमोलोके विस्तृतिंपुरायवैभवाः पतिपुत्रात्मजादीणां भाग्यवृद्धिश्चसर्वदा द्रव्यलाभविशेषेण सर्वेच्छानित्यपूजिता अयत्नेविपरीत्यंहीक्लिश्यतिपापकर्मणा मानहानिभयचिन्ता नोयशंप्राप्यतिमहान् पति पुत्रात्मदव्येणदुक्खितापित्री जन्मनि कष्टव्याधिविशेषेण त्रिरत्यंदारुणोभयम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सु र्थोयत्नमाचरेत व्रतदानसुपुण्येण ईश्वरंभक्ति भावतः पूर्वपापक्षयोकाव्यः सर्वदामोदवर्द्धनं कीर्तिश्चनिर्मंनी भूयात्पतिप्रेमविवर्द्धनी शुक्रोवाच पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वमहामुने येनक्लेशाश्रयो नारी दुक्खितामंदभागिनी भृगुवाच श्रृणुपुत्रसमासेण कथायाःपूर्वजन्मनि पुराजन्मभवेद्वामा दासीयंनृपगोहणी रूपयौवनसम्पन्ना भूपप्रेमविवर्द्धनी सर्वसौख्यान्वितोभूयाद्भाग्यस्यपरमोदयम् राजसेवारतोनित्यं मोदमानंगरीयसी राज्ञोवमानसंप्राप्य गर्विताविदुराबृता कदाचिद्यज्ञराज्ञोसौ कृत्वाविभव विस्तरात तत्रागतंगुरुर्देवःवेदज्ञाताद्विजोत्तमः दासीयंसंस्थितोकार्ये गुरुरेवविवादिती हास्यंकृत्वाभवेद्विघ्नं विप्ररोषान्वितोमहत् दुक्खितोशापितस्तेन रेघमादुष्टकर्मिणी देवकार्यकृतेविघ्नं गर्विंतापापरूपिणी अतस्त्वंक्लेशितोर्नूनं त्रिजन्मेषुपुनःपुनः पतिपुत्रात्मद्रव्येण दुक्खितापिमुहूर्मुहः द्विजशाप श्रुतंदासीघोररूपोतिदुस्तरम् नैवशांतिक्षमायत्नं साभिमानेनमोहिता तेनपापाश्रयोभूया देतज्जन्मेऽतिदुक्खिता स्वर्णपत्रकृत्योतत्रः यथाश्रद्धासु भक्तितः लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेद्द्विजभिरसह लेख्यतुशपहबीज पीतपट्टेणवेष्टित. संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः विष्णुयज्ञक्रमादितः पूजियेद्भक्तिभावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायणो सर्वपापहराय पूर्वजन्मद्विजशापशमनाय रक्षां कुरु कुरु सर्वसौख्यं प्रकाशयः स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्ष साविित्रीतत्प्रमाणतः हवनंविप्रभोज्यश्च अनुष्ठानशुचिस्थले कृत्वासर्वसुखंलोके बामा पुन्याश्रयेसदा मंगलंजायतेनित्यं प्रजावृद्धिसहोत्सवाः पतिपुत्रात्मद्रव्येण सफलंमानुषीतनं भोगाप्यवैभवोवृद्धियशमान प्रशंसिता नश्यतेकलहारिष्टं सुखंसर्वत्रदृश्यति ईश्वरभक्तिभावेण

व्रतदानसुखोत्सवा रोगार्तप्रथमेवर्षे द्वितीयेदन्तपीड़िता तृतीयेवन्हिभीतिश्च उच्चस्थेपतितोथवा बृणवातविकारेणापीड्यतिचतुराद्धके पञ्चमेषष्ठमेसप्तेऽप्या
लवर्षचनन्दके दिनेदिनेपिसावृद्धाबालिकाशुचिलक्षणा स्वकृत्यकुशलासौम्या क्रीडनेमतिनित्यशः धावनात्पादकष्टश्चकदाचिद्दन्ततोदरि विवाहोवाच
तस्यापितातचिंतागरीयसी मंगलंजायतेगेहो तातलाभसुखप्रदा दानमन्त्रसुयत्नेन कन्यकागेहभूषणं कुलवृत्तिप्रभावेण राजतेपुण्यसंपदा सूर्न्यसोम
गतेवर्षेयावद्वेदनिशाकरे पतिप्राप्तिर्निसंदेहोपितुर्द्रव्यव्ययंमहत् कष्टव्याधिविनश्यति सुपुण्यंफलदोमहान् भयभीताहृदेगुप्तकदाचिच्चिन्तनंमहत् प्राप्ते
पंचदशेवर्षेयावन्नेत्रद्वयोतथा क्रीड़तिविविधैश्वर्य्यं दानमंत्रसुभक्तितः देवदर्शनतीर्थेषुसरनद्यामतिप्रियः पतिप्रेमविशेषेणामोदितोनात्रसंशयः प्रजासु
भोगबृद्धिश्चमंगलंविविधैरपि गृहकार्य्यसुकुशलाभाग्यवृद्धिदिनेदिने पापाश्रयोमहद्दुःखचिंतनंच नेशतत्परो तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशान्तिसुखंलभेत्
वन्हिपक्षाद्धमारभ्यमुनिनेत्रसुवत्सरे सुतापुत्रसुखास्सर्वे गार्हस्थंसाधनेमति सुकार्येसुस्थिराबुद्धिःप्रीतिभिस्सुसखिस्सह प्रतापभोगमैश्वर्य्यशोभितादि
शुभाङ्गनामंगलंविविधोगेहेपुण्याच्छ्रेयोहिनित्यशः व्यालविंशतिगेकाव्यः रामरामसुवत्सरे भाग्यवृद्धिविशेषेणासर्वसौख्यवसुन्धरेविवाहोमंगलंकार्यं
गौरवंप्राप्यतेस्त्रियः कीर्तिश्चनिर्मलीभूता गुप्ताशतीहितप्यते व्ययलाभमहत्वेणादम्पत्योर्चिन्तनंकदा स्वकुलंसुप्रकाश्यंतिबनितापुण्यरूपिणीवेदराम
गतेवर्षेनगरामांतरोनथा विस्तृवंशजंनित्यंसुपुण्यंफलदोमहान् सर्वबाधाविनश्यंतिरुजांक्लेशह्युपद्रवाःव्ययोतत्राधिकंभूयविवाहेतीर्थमन्दिरे गुप्त
चिन्ताविनश्यन्ति सर्वेशत्रुरधोगता पतिश्चिंतान्वितोभूयः न्यूनकष्टञ्चशांतये व्यालवह्निसमारभ्य नेत्रचत्वारिमध्यगे भूमिप्राप्तिविशेषेण महोत्साहप्रवर्तते
चित्तोह्यानन्दतापिस्याद् ब्रह्मलाभप्रभावतः अद्ययानन्दगृहेचैव साफल्यंसर्ववैभवं वेदवेदगतेवर्षे नगवेदावधिततः चिंतयेन्नूतनोकार्यं देवतीर्थेषुदर्शनः
अकस्माज्जायतेकष्टं प्राणभीतोतिचिंतनं छायापात्रतुलादानंमहामृत्युञ्जयोजपेत् अनुष्ठानविधानेनआयुर्वृद्धिसुयत्नतः दानमन्त्रसुपुण्येन नभनागाद्ध
जीवति कुलकीर्तिकराः पुत्राः पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रहाश्चदुष्टविनश्यन्ति मनेच्छासर्वपूरिता भगवद्भिक्तभावेण पुण्यात्रीप्रसिद्धिता इन्दुव्यालाद्ध
मारभ्य. जायतेदारुणंरुजं अनायासेतनंत्यजत्वा पुत्रपौत्रैर्विभूषिता पुनर्नृपकुलेजाता भूयाद्राज्ञीशुभानना एवंपुण्यपरंतत्वा ज्ञातव्यामोक्षसाधनं

स्त्री

२

एतद्योगोद्भवाबाला मध्यभागिनीसुन्दरी शुभलक्षणासंपन्ना मध्यरूपाप्रियम्बदा सुस्वभावसुशीलाच कदाचिद्रोषमोहिता जन्मतःमातृकष्टोपि तातचिंता
गरीयसी दिनेदिनेपिसावृद्धो मासेवर्षेपुखंगता कष्टञ्चमहतोभूयात्पूर्वकर्म्मविपाकजं सुयत्नेरक्षितस्यापि पूर्णायुसुखसम्पदा दशाश्रेष्टधनंदीर्घः वस्त्रा
भर्णैस्सुशोभिता भोगमैश्वर्यसंयुक्ता मानकीर्तिश्चनिर्मला केचित्कालेमनोद्वेग जीवाशक्तिविचिन्तता चित्तचिंतान्वितोगुप्ता अनायासेभयंमहत हर्ष
सौख्यान्वितोत्रामा अनित्यंभोगतत्परा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेशोकाल्पजंभयम् दुःखिताविविधोनारी पतिपुत्रेणक्लिश्यति पूर्वजन्मान्तरोगाथा समा
सेणवदाम्यहम् ब्रह्मवंशोद्भवावामा सुस्वरूपासुलक्षणा सर्वसौख्यसमायुक्ता मोदितापुण्यरूपिणीतत्ररत्नधनंबव्ही स्थाप्यमस्यगृहेतदा गुरुपत्नियतंगत्वा
तीर्थदेवादिदर्शनैः चरंतौदेवतीर्थेषु मुनिमासगतस्तदा स्वगेहेपुनरागत्यः याच्यंरत्नधनंहिसा हत्वातदांतरेनारी दिव्यरत्नसुशोभनम् नदृष्ट्वारत्नतत्रैव
याचितंहिपुनःपुनः देयादन्यधनंसर्वं नदेयाद्रत्नवादिता वादावादेणक्रुद्धोसौ गुरुपत्नियुतंमहत त्यक्त्वातत्रधनंसर्वं सापंदत्वापुनःपुनः पुनस्तीर्थेगंतव्या
तीर्थेवनिवसोसदा तेनपापाश्रयोबामा नैवयत्नंचकारयेत दानपुण्यविशषेण सुगेहेजन्मजायतः नैवशांतिर्भवेद्धत्सः गुरुशापोतिदुस्तरम तेनप पाश्रयो
नारीक्लिश्यतिविविधोमहान् शुकोवाच तद्यत्नंब्रूहिमेतातः जनानांसुखहेतवे भृगुवाच अनुष्ठानमहादानं स्वर्गेमर्त्येषुदुर्लभाः तवस्नेहांमयावत्सः प्रकाश
क्रियतेधुना स्वर्णपत्रेप्रकर्तव्या यथाशक्तिशुचिस्थले लेखयेद्रक्तगंधेण गुरुभार्यायुतंक्मात वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि ईश्वरंभक्तिभावेण
पूजयेत्सुविधिर्यथा तदग्रेमंत्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्त्रकम् मंत्रओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीशं ओं नमोनारायणाय सर्वाधिपतयेगुरुशक्तिरूपायपूर्वजन्म कृतशापपापं
नाशयः २ ममापराधशमं कुरु२ मनेच्छितंबरदायः सर्वं स्वाहा ओं शंश्रींक्लीं ह्रीं ऐं ओं स वित्रीतत्प्रमाणेन धनदस्यतदर्द्धकम् जापयेत्सुविधानेन ब्रह्मचर्य
रतोद्विजा तदांतेमुर्तिसंकल्पंशैयादान विधिर्यथा आचार्यायप्रदातव्यं विप्रभोज्यसुदक्षणा यज्ञांते पूर्णपात्रञ्चगुरुरत्नधनादय गृहदानविधानेन दीयतांप.प
नश्यति सर्वसौख्यततोलोके वनितापुन्यरूपिणी विस्तृततिर्वंशजादीर्घ सौभाग्यंपरमोदयम् नानाकार्यप्रबंधेण मानकीर्तिप्रशंसिता मनेच्छापूजितोनित्यं
वस्त्राभर्णधनाद्विजा पुत्रपौ. समाविष्टोपतिरत्यंतबल्लभा मोदितेमानमाधिकं साफल्यंसर्ववैभवा अयत्नेपीड़ितेपापं सुखेशोकसमागमा परंगोप्यमतमेतत्

तथाग्रभृगुणाभार्गव जन्माद्वह्निवर्षांतंतयोर्मध्येक्रमादित ता तमातसुखासर्वे कन्यकाशुभलक्षणा दंतपीड़ाज्वरोतातं रचनादिप्रपीड्यति कृश्यदेहविजानी
यादभूतछायाश्चगुप्तता किंचिद्दानादिमन्त्रेण भगवद्भक्तिभावत श्रेशोमानंप्रतिष्ठाच प्रकाशोपिदिनेदिने तातलाभविशेषेण मंगलंविविधोगृहे दृष्टि
हास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी भ्रातजन्ममहोत्साहोमासेवर्षे सुखं ता चतुर्थेपञ्चमाब्देषुषष्टंवर्षादिसप्तमे बालक्रीड़ाविशेषेण मोदमानंगरीयसी प्राण
शंकाभयोद्वेगंकृत पीड़ातिदारुणाम् प्रायश्चित्तादियत्नेनसर्वशांतिसुखंलभेत भाग्यश्चमहतोभूयात्सुशर्यिमतिनित्यश गृहकार्यरताबाला सर्वत्रैवप्रशंसिता
व्यालवर्षे प्रसंप्राप्यावन्नेत्रनिशाकरे तावत्कालावधिर्नेनं भाग्यवृद्धिस्सुयत्नत उद्वाहंजायतेचास्य तातमानविवर्द्धनम् कुलकीर्तिविशेषेण व्ययलाभमह
त्यपि दिव्यांबरंभूषणाश्च प्राप्यंतिहिसुशोभना प्रतिष्ठामानमधिकं जायतेचदिनेदिने त्रयोदशाष्टचंद्राब्दे पतिप्रेमविवर्द्धिनी भोगाश्चवैभवोवृद्धि जायते
चदिनेदिने रूपयवौनसंपन्ना वनितापुण्यभाजिनी गृहकार्येषुकुशला पतिभक्तिपरायणा पुण्ययत्नादितोनित्यंसर्वकष्टविनश्यति ऊनविंशाद्धविंशेचशर
विंशतिकेतथा सर्वेच्छापूजितोपुण्यं पतिपुत्राधनादिजा प्रजावृद्धिमहोत्साहो कष्टशांतिस्सुमंगलम् ऋतुपक्षाद्धत्रिंशेत्र तयोर्मध्येमहत्सुखंभपु त्रकन्यांसमा
विष्टासाफल्यंसर्ववैभवा व्ययलाभमहत्वेन मंगलंविविधोमहान् प्रकाशोविपिर्णाभूया द्रव्यनागेहसुन्दरम् प्रायश्चित्तमहादानं सर्वसिद्धिकरंपरं अयत्ने
विपरीत्यंही प्राप्यतिकर्मजंफलं इन्दुरामगतेवर्षे चत्वारिंशावधिःतथा दानमंत्रादितोनूनं पर्णाभाग्योदयंभवेत उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धिनी
नानाकार्यप्रबंधेण राजतेपुण्यसंपदा सर्वाबाधाविनश्यंति पूर्वमेवसुरक्षिता भयचिंताविनिर्मुक्ता देवतीर्थेसुखोत्सवम् सोमचत्वाषरिवर्षाणि व्योमभलाद्ध
मध्यमा सुकीर्तिर्वर्द्धतेपुण्यं जायते कुलभूषणा वृहलाभप्रभावेणाविविधोत्साहमंगलम् न सुखंसुस्थिरोभूया यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानैः सुखेच्छा
सर्वपूजिता चन्द्रबाणाद्धमारभ्य सून्यषष्टाद्धगेतदा पौत्रजन्ममहोत्साहो कुलवृद्धिदिनेदिने ब्रतदानरतश्चापि साफल्यंमानुषीवपु ईश्वरं भक्तिभावेण
पुण्येच्छासर्वपूजिता नगषष्टगतेवर्षे पूर्णायुकथितोमुनि चैत्रस्यपूर्वपक्षेतु भरण्यांनिधनंभवेत प्रायश्चित्तंसुपुण्येण अग्रजन्मेषुनिश्चित महत्वंसुकले
जाता सुप्रसिद्धापिपूजिता ईशभक्तिसुरंगेण महत्वंसुपदाधिपा गतिरेवसुप्राप्यंति पुण्यरूपासुसद्व्रता एतत्सर्वसुज्ञातव्या सुपुण्यंसुखसाधनम् ॥

३

एत ोगोद्भवाकाव्य: कन्यकाशुचिलक्षणा पतिदेवसुभक्तश्च ि वित्रोवाक्यमब्र ुवन् साभिमानिनीसद्रूपा दिव्यालंकारभूषितम् पूर्वपापप्रभावेण सुखे
दुःखसमागमः चिन्तातुरोनित्यंरिपुरोगद्य ूपद्रवा पतिपुत्रात्मजाक ंटं नैवपूर्णधनीसुखी दानमन्त्रसुपुरायेण तस्यशान्ति प्रयत्नतः कृत्वासद्यसुखसर्वे
प्राप्स्यतिनात्र संशयम् नानाकार्यप्रबंधेण राजतिसुखसंपदा मानेनमहताविष्टा यशभूरिमहितले संपदाविस्तृतोगेहं सौम्यसाध्वीप्रियम्बदा पतिपुत्रात्म
द्रव्येण सर्वत्रसुख संपदा भूमिप्राप्तिविशेषेण नूतनोमन्दिरंसुखं शुभकार्येव्ययोद्रव्य मुद्राहादिमहोत्सवे देवपुण्येसुतीर्थेच रमयन्तिजलाश्रये पूर्वयात्रा
महोत्साहो पतिप्रेमविवर्द्धिनी केचिज्जीवहरं चितं रूपयौवनगर्भिता कामक्रीडामनोद्वेगं कलंकभयमागतः ईश्वरंभक्तिभावेण सुसंगाच्चमहत्यशः सर्वा
बाधेतिमंत्रेणसर्वंकष्टविनश्यति पूर्वपीपेणपीड्यन्ति यावद्यत्नपापहम् संक्षेपात्तंप्रवक्ष्यामि कथायाःपूर्वजन्मनि वैश्यवंशसमुत्पन्ना सर्वसौख्यसमायुता
शुचिसाध्वीसुसद्रूपा पुण्यात्माचदयामयी एकदापतिसंयुक्ता तीर्थयात्रागतोहिसा तदा धेनुसवत्सांच विस्मृतोगेहबन्धनम् क्षुधातृषातुरोनित्यं विलपन्ति
मुहुर्मुहुः धेनुवत्सस्मृतोतत्रः पश्चोकंगृहमागतः पतिदृष्टापितद्वृतं क्रोधितोशापीतमहत् तेनभूयो महत्पापं नारीदुःखाश्रयोभवेत् क्लिश्यतिविविधो
नित्यं त्रिजन्मंहिपुनःपुनः तद्यत्नंसंप्रवक्ष्यामि पापशांतिसुखलभेत शुद्धस्वर्णकृतोपत्र विस्तृतिसुनागांगुलम् शरांगुलतथैवंहि कारयेच्चसुशोभनम्
लेखयेद्रक्तगन्धेण धेनुवत्ससुमूर्तिमान् शुद्धस्थानेशुभेलग्ने कूर्यातन्त्रमुदारधिः ताम्रकुम्भघृतेगुप्त हेममूर्तिसुशोभनम् वेष्टितांरक्तपट्टेण पूजयेद्भक्ति
भावतः मन्त्रजाप्यसुयत्नेन प्रायश्चित्तविधिर्यथा मंत्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गं गोपालाय गोपीजनवल्लभाय जगद्रक्षणे महापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मकृतगोपाय
तापशमनं कुरु कुरु सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा इन्दुबाणसहस्राणि सावित्रीमन्त्रसंयुतम् ईश्वरभक्तिभावेण जपेदेकाग्रमानसः द्विजेभ्योतोषितंनित्य
मनुष्टानव्रतेनतः कुम्भदानविधानेन आचार्याय: प्रयदापयेत हवनंविप्रभोज्यञ्च कारयेत्सुविधिर्यथा एतद्यत्नप्रभावेण सर्वपापैर्विमुच्यति सर्वदुःख
विनिर्मुक्ता सौभाग्यं परमोदयम् स्वामिपुत्रधनादिनां तुष्यतिसुख भाजनी भोगाप्रवै भवोवृद्धि शुक्लेन्दो यथाशशिः गृहक्लेश विनश्यंति
वनितापुण्यरूपिणी कुलकीर्तिविशेषेण महोत्साहं दिनेदिने प्रतापभोग मैश्वर्यं वस्त्राभर्णैः सुतुष्यतिएवं पुण्य परंतत्वं साफल्यं जन्म भूतले

स्त्री०

४

जन्माद्यंमातृकष्टोपितातोत्साहविमन्दता मनश्चिन्तागृहेतस्तोबालिकाक्लेशकारिणी प्रथमेद्वितीयाब्देही शिशुवृद्धिर्यथाक्रमः दिवेमासेसुखंजातं रोग
तस्तोभयान्विता दानमंत्रादितोर्नूनंसर्वसौख्यमवाप्नुयात तातलाभसुखोत्साहोवृद्धद्भाग्यीप्रशंसिता तृतीयेपंचमाब्देहीसुखवृद्धिर्यथाक्रमःदंतपीड़ादिजं
कष्टं बृणविस्फोटकादय पतनादिभयंसर्वं नश्यतेपुण्यकर्मणा भगवद्भक्तिभावेण गृहेमंगलनित्यंश पितुयत्नादितोर्नूनं सर्वावस्थासुखंभजेत् मृदुवाक्य
सुहास्यञ्च शिशुक्रीड़ामनोहरा भोगाप्रवैभवोवृद्धि जायतेनित्यनूतनम् ऋतुवर्षसमायातः तथाचदिशिवत्सरे पुण्योत्साहसुखंनित्यं भ्रातसौख्यसुमंगलम्
विवाहोचर्चयागेहे वरंश्रेष्टनिवारयेत यद्रोगंदारुणोकष्टं सर्वशांतिःसुयत्नतः विद्याभ्यासरतोबाला गृहकार्येषुतत्परा प्राप्यंचैकादशेवर्षे शरसोमाद्ध
मध्यमा तातचिंतातुरोगुप्तंव्ययोपिबहुद्रश्ये उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति वर्द्धितापिलतेवसा दिव्याम्बरंभूषणञ्च प्राप्यति
मानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः जायतेनुयथाक्रमः सुभक्तितुष्यतेसर्वाः माननीयासुसद्व्रता रूपयौवनसम्पन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी षोडशाब्देतुसंजातं
व्योमनेत्रावधिक्रमात सर्वैश्वर्यसमायुक्ता पुण्यरूपासुलक्षणा सुतजन्ममहोत्साहो मंगलंकुलवर्द्धनः नानाकार्यप्रबन्धेण सुखैश्वर्यप्रकाशिणी छाया
पात्रान्नदानञ्च महामृत्युञ्ज जपेतसर्वाऋक्षयोनित्यं मंगलंहिदिनेदिने प्रायश्चित्तंसुपुण्येण सर्वाभिष्टफलंलभेत त्रिंशवर्षावधिर्नूनं सुखेच्छासर्वपूजिता
पतिप्रेमाविशेषेण प्रतापगुणगौरवं मंगलंविविधोत्साहो सुतापुत्रधनादिजा पापपीड्यत्ययत्नेन सुखविघ्नमहद्भयम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुसंगात्पुण्य
सञ्चयः त्रिंशैकोपञ्चत्रिंशाब्दे तयोरन्तमहोत्सवाः उद्वाहेप्रचुरंद्रव्यं व्ययंकीर्तिश्चनिर्मला प्रकाशितेवसर्वं पुण्यैश्वर्यदिनेदिने ऋतुरामाद्धमारभ्यव्योम
वेदाङ्केतथा महत्वमधिकंलोके साफल्यंमानुषीतनं रोगशोकाकुलंपापात्सर्वशांतिसुयत्नतः भूमिप्राप्तीमहत्पुण्यं दासदासिचवाहनम् देवदर्शनतीर्थेषु
पवित्रंक्रियांततनम गृहक्लेशविवादञ्चसुस्वभावेणशांतयेत ईश्वरंभक्तिभावेणसर्वत्रैवप्रशंसिता इंदुचत्वारिवर्षाणिव्योमभल्लांतरेवहीं प्रजावृद्धिविशेषेण
विविधोत्साहमंगलम् इंदुभल्लाद्धगेवत्सः पौत्रजन्ममहोत्सवाः तदांतेव्योमषष्ठांतंपुत्रभाग्योदयंमहत् व्रतदानरताप्राज्ञी तीर्थयात्रासुखेरता प्रकाशो
विपणीभूयात्पुत्रपौत्रधनादिजा व्यालषष्टाद्धमायुष्यंपुण्यरूपाप्रशंसिता सुगतिप्राप्यपुण्येणस्वर्गलोकाधिकारिणी यावद्यत्नकृतेनैवंनिजपापाद्धधोगता

एतद्योगोद्भवावालामध्यभागी सुलक्षणा मध्यपादकरोर्नूनंमध्मांगीसुकोमला क्रोधेणतप्यतिक्रूराप्रसन्नात्मादयामयी गृहकार्येषुकुशलापतिप्रेमविव
द्धिनी सुस्वभावंसुपुण्येणसुविख्याताप्यमानिनी रूपयौवनसंपन्नासर्वसौख्याधिकारिणी पीड्यतिपूर्वपापेण अल्पायुश्चवितप्यति पतिपुत्रमहदुक्ख तात
क्लेशभयंमहत् अल्पमृत्युभयंसर्वेसर्वसौख्यविभक्षणी प्रायश्चित्तमहादानंकृत्वासर्वसुखागमः पुण्ययत्नादितोर्नूनंसर्वाभिष्टफलंलभेत् धनसंतानयानश्च
कुटुम्बेसुखवर्द्धिनी महोत्साहंगृहेचास्यमंगलंहिदिनेदिने नानाकार्यप्रबधेणविमलाभाग्यदर्शनः महर्घभूषणोवस्त्रंप्राप्यतिपतिवल्लभा सर्वसंपत्समायुक्ता
पुत्रपौत्रैसुसेविता ईश्वरंभक्तिभावेणसफलंमानुषीतनम् तीर्थयात्राजप पुण्यव्रतदानसुखेरता प्रतापभोगमैश्वर्यजायतेनित्यंनूतनम् भूमिलाभमहत्वेण
रचनागेहसुन्दरम् याद्यत्नंनकर्तव्याविविधंदुःखभोजनी पूर्वजन्मसमासेणकथयामित्वयाऽधुना नृपवंशोद्भवावामापुराजन्ममहत्तपा सर्वसौख्या
न्वितोलोके रूपयौवनगर्विता स्वामिन्याज्ञानमन्यंति विचरन्तियथारुचि व्यभिचाररतोगुप्तं तीर्थयात्रासुखेरति दानधर्मप्रभावेण बहुकालसुखंगता
पुनरन्तेप्रकाश्योपि तद्दुराचारत्तिलक्षणम् स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोशितोशापितमहत रेपापात्मादुराचारी त्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि नैवराजकुलेजन्मः
दुक्खितापिमुहुर्मुहः तेनपापाश्रयोभूया दिहजन्मसमुद्भवः दानपुण्यदितोर्नूनं प्राप्नुयाज्ञानुषितनम् पतिपुत्रात्मपापेण क्लिश्यतिविविधोहान् नसुखं
सुस्थिरोभूयाद्यावद्यत्ननपापहम् पापशांतिः सुयत्नेनकृत्वासर्वंसुखागमः स्वर्णपत्रकृतोतत्रः वाणांगुलनगांगुलम् लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्त
चन्दनम् पतिचित्रमधोभागेनृपचिन्हैरलंकृता रक्षाम्बरवीजाढ्यं पीतपट्टेणवेष्टितम् संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः पूजयेत्सुविधियथा तदग्रेमन्त्रमाराध्यः
भक्तियुक्तेनप्रार्थितम् । मन्त्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायणाय पतिदेवायनमः पूर्वजन्मान्तराजित पापनाशय२ तज्जनितसर्वकष्टं विदारय२
सर्वसौख्यं प्रकाशय स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्ष बटुकस्यतदात्मकं शैयादानविधानेन मूर्तिदानसमाचरेत हवनंविप्रभोज्यादि विष्णुयज्ञ
क्रमादितः एवंकृत्वासुपुण्येण सर्वपापैर्विमुच्यति सुखसौभाग्यसंपन्ना वनितापुण्यरूपिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण संतुष्यति दिनेदिने भोगाप्रवै
भवोवृद्धि सुप्रसिद्धप्रशंसिताः सर्वेच्छापूजितापुण्य दानमन्त्रमहत्फलम् विवादकलहोदुक्खं रिपुरागविनश्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञात्वानित्यसुखप्रदं

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंता भूतछायाप्रपीड्यति किंचिच्छोकागोमगेहे सर्वशान्तिसुयत्नतः नेत्राब्देयह्विवर्षेच तयोर्मध्ये
यथाक्रमः दिनेदिनेविवर्द्धति कन्यकाशुचिलक्षणा दशनोत्पतिजाव्याधी ज्वरत्तप्तविरेचनम् बृणाविस्फोटकोव्याधी दानमन्त्रैसुखागमः सर्वकष्टविन
श्यन्ति बालक्रीड़ादिनेदिने क्रीडतिविविधोनित्यं तातमातसुखंलभेत दानमन्त्रंसुपुण्येण तातलाभसुखप्रदा रसाब्देनन्दवर्षेत्र मासेमासेसुखंलभेत्
भोगाप्रवैभवोबृद्धिः गृहकार्यरताभवेत विद्याभ्यासरता किंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंति विवाहार्थेविचिन्तया सम्बन्धोमंगलंप्राप्य दृष्टि
हास्यमनोहरा सर्वकष्टक्षयोनित्यं दानपुण्यसुखप्रदा दशमैकादशेवर्षे तथापंचदशान्तरे व्ययलाभमहत्तातो हर्षवृद्धिसुखंलभेत विवाहोजायतेतस्य्
पतिप्राप्तिःसुशोभिता नवाम्बरंभूषणाश्च प्राप्यतिमानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः गृहकार्येसुकौशला प्रायश्चित्तसुपुण्येण सुखंसर्वत्रभूतले कामक्रोड़ा
रतश्चापि भोगांभुक्तोयथेप्सितान् द्रव्यप्राप्तीविशेषेण मनेच्छासुखपूजितम् प्राप्यतेषोडशेवर्षे नभनेत्रंचमध्यगे दंपत्योःसुखमेधत्तो प्रजावृद्धिसुखोत्सवम्
स्वकृत्यकुशलामौम्या पतिप्रेमविंवर्द्धिनी प्राप्यतिपूर्वपापेण रुजकष्टह्युपद्रवाः दानमन्त्रसुपुण्येण प्रतियत्नसुखंमहत चैकविंशत्रिविशाब्दे शरविंशतिके
तथा भाग्यवृद्धिभवेलोके दशाश्रेस्करीमुदा सर्वसौख्यंसयत्नेन पतिपुत्रधनादिजा बन्धुवर्गापवादेण क्लिश्यतिचाप्रयत्नतः पूर्वपापबलियन्ते सुखेशोक
समागमः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तसुयत्नतः सर्वसौख्यान्वितोगेहे मनेच्छातत्रपूजिता रसविंशतिवर्षाणि व्योमरामतथान्तरे नानालाभव्ययोत्साहं
यशभूरिमहीतले दंपत्योरल्पजंकष्ट दानमंत्रसुखप्रदा उद्वाहादिमहोत्माहो मंगलंविविधोमहान् इन्दुरामगतेवर्षे यावद्वाणगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नूनं
पूर्णभाग्यदयंदशः मानेनमहतांविष्टा प्रजावृद्धिसुखोत्सवा स्वयत्नेविपरीतयंदी मृतवत्साहीदुःखिता एतस्मात्कारणात्तत्र कूर्यातन्त्रमुदारधि व्योमबाणा
वधिवत्स सर्वेच्छासुखपूजिता रामबाणगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् आपदुद्धारजाप्येण सर्वकष्टक्षयोभवेत मासेवर्षेसुखंजात पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् लाभश्च
विविधोनित्यंयावच्छून्यरसाद्धके देवतोर्थेपरंप्रीतीदानधर्मेषुतत्परा आयुवृद्धिसुपुण्येण भूयानंदरसाद्धकी पुण्याद्भाग्यमहत्वेण स्वकुलेसुप्रशंसिताजायति
सुकुलपुण्या तथैवाग्रः जन्मनि अजराशिगतेभानु पूर्वपत्नेतनंत्यजेत गतिश्रेष्टसुप्राप्यति सर्वसौख्याधिकारणी एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्योसुखसाधनम्

सर्वखेटेष्टमानेन भूयाद्भाग्यगतीसती स्वामिवाक्यप्रपाल्यन्ति कठोरमर्नानाश्रता पाकविद्यासुनिपुणा गृहकार्येहितरति सर्वकार्येसुकुशला विनि तापिशुभानना सात्विकीराजसीचैव तामसीवृत्तिसंयुक्ता नकश्चिद्ददायतेतापं सुमतिर्वाग्विचक्षणा कृतज्ञनीधनाध्यक्षा हेमरत्नविभूषिता स्वामिसेवानु रक्तश्च कुटुम्बसुखवर्द्धिनी पतिपुत्रात्सुपुण्येण प्राप्यतिभूधनंसुखम् सर्वसंपत्समायुक्ता सौभाग्येण सुमोदिता वस्त्राभर्णैः सुसम्पन्ना नानाद्रव्याधि कारिणी क्लिश्यतिपूर्वपापेण हानिचिंताभयंरुजम् आयुसौभाग्यरेखाच त्रुटितापापरूपतः प्रायश्चित्तंसुयत्नेन पूर्णायुःसुखसम्पदा सुसंगात्सुलभासर्वे सुमूर्तिप्रियभाषिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यं सुखेदुक्खसमागमः शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कथयस्वप्रसादतः येनक्लेशाश्रयोनारी दुक्खितापापरूपिणी भृगुवाच राजवंशसमुत्पन्ना राज्ञीवंपूर्वंन्जमनि दानपुण्यदितोनित्यं निजकीर्तिहितेरता दर्पितासाभिमानेन विषयाशक्तसुन्दरी कदाचिज्जाह्नवीतीरे गतंयज्ञसमारभेत् आयातंयाचकाबन्ही सन्यासीविप्रसाधवाः ब्रह्मचारिश्चतत्रैकं कामरूपोसमागतः कामबाणेनपीड्यन्ति तस्यरूपविमोहिता तत्रैव रमतानित्यं कामपूजाद्वयोरतिः गुरुज्ञात्वादयोर्वृत्ता सुभयोशापितंमहत तेनपापाश्रयोभूयान्नारीयपूर्वजन्मनि क्लिश्यतिविविधोतापं वैधव्यञ्चमहद्भयम् प्रजाद्रव्यशरीरादि सुखेविघ्नभवन्तिहो दानपुण्यविशेषेण सर्वसौख्यसमागमः न सुखंसुस्थिरोभूया द्यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानं नित्यंनव सुखप्रदा स्वर्णपत्रकृतातत्रः शुद्धश्रद्धा सुभक्तितः प्रायश्चित्तप्रकर्तया सुतीर्थेपिशुचिस्थले आचार्य्यंसुद्विजंकार्य्यः ममशास्त्रस्यकोविदः सुयत्नरक्त गन्धेणा विष्णुप्रतिलिखेद्विजः वेष्टितांस्वेतपट्टेण संस्थाप्य कलशोपरि वस्त्राभर्णैसुशोभन्ते पुष्पमाल्यादिवेष्टितम् पूजयेत्सुविधानेन ईश्वरभक्ति भावतः तदग्रेमन्त्रमाराध्यःलक्षमेकाग्रमानसः मन्त्र ओं ऐं ह्रीं क्लींश्रींशंनं नमोनारायणाय सर्वेश्वरायसर्वपापहरायतज्जनितसर्वकष्टं वारय२ श्रेयोमे देहि स्वाहा सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतानास्तिपातकं हवनंविप्रभोज्यादि मूर्तिदानंसुयत्नतः एवंकृत्वासुपुण्येण ईश्वराराधनेमतिः सर्वसौख्यागमोगेहे भूयश्चापिसुलक्षणा प्रजासुभोगवृद्धिश्च सौभाग्यंपरमसुखम् गृहक्लेशविनश्यन्ति स्वामिरेवोपितद्वशे प्रतापमानमधिक मनेच्छानित्यपूजिता नानाकार्य प्रबंधेणकुलकीर्तिकरस्त्रियः अयनेक्लेशिताबालात्रिजन्महिपुनःपुनः एतस्मात्कारणान्नित्यंपुण्यसर्वसुखाश्रयः तेनश्रेयोहिसौभाग्यंप्राप्यतिपरमंगति

स्त्री
६

जन्माब्दं क्लिष्टं च तयोरन्तर्यथाक्रमः दिवेमासे सुखंजातं तातप्राप्तिसुमंगलम् दशनोत्पत्तिजाकष्टं कृशयभूनकलेवरः पुण्ययत्नादितोनूनमल्पमृत्युश्चय
सुखम् बालक्रीड़ाक्रमेणैव दृष्टिहास्यमनोहरा वेदाब्देपंचमेकष्टे नगवर्षावधिक्रमात सुसंगाचसुपुण्येण सर्वारिष्टविनाशनम् शुचौपक्षेयथाचन्द्रबाला
तद्वतमवर्द्धिती भ्रातसौख्यविशेषेण तातमातसुखोत्सवा उद्वाहोचिंतनंचाम्य वरंश्रेष्ठविचिन्तयेत गृहकार्यरताकिंचि द्दोलिकाशुचिसुन्दरी व्यालवर्षञ्च
नंदाब्दे यावद्वर्षदिवाकरे तावत्कालावधिर्नूनं बृहद्भागीप्रशंसिता द्रव्यलाभमहत्तीतो उद्वाहंसुमहोत्सवम् कुलकीर्तिमहत्वेण यशसौख्यविवर्द्धिनी
भूषिताबहुभिपुण्य दिव्यलंकारभूषणं सर्वचिन्ताविनश्यंति तातमातसुखंलभेत् भोगमैश्वर्यसंज्ञा माननीयासुसद्व्रता सुस्वरूपाप्रियःसर्वा रूभयोगेह
भूषणा गुणसोममितेवर्षे विशवर्षान्त तथा मासेवर्षेसुखंनित्यं भोगमैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविवर्द्धन्ति पुण्यरूपाप्रियंवदा ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वत्रैव
प्रशंसिता सुतापुत्रसमायुक्ता कष्टशांतिः सुमंगलम् गृहक्लेशविवादश्च सुस्वभावेणमोदिता सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धिप्रकाशिणी इन्दुपक्षाब्दमारभ्य
शरविंशति मध्यमा धनधान्य समृद्धिश्च पुत्रकन्या समावृता विंतयापरमाविष्टो पतिकष्ट भयंकरम् पूर्वयत्नादितोपुण्यं नित्यंसौभाग्य रूपिणी
रसपक्षाद्ध मारभ्य व्योमराम तथान्तरे व्ययलाभमहत्वेण क्वचिच्छोक प्रदादशा पुण्येण पुनरानन्दं मंगलंविविधोत्सवाः व्योमचत्वारिवर्षान्तं
सर्वेच्छासुख पूजिता दम्पत्योरल्पजंकष्टं सुपुन्याच्छान्तिनित्यशः तीर्थयात्रा जप ध्यं सर्वानन्द विवर्द्धिनी उद्वाहादि महोत्साहो सुप्रसिद्धप्रशंसिता
अयत्नेविपरीतपही भोक्तव्यं कर्मजंफलं तस्मात्सर्व प्रयत्नेन सुखसाधन माचरेत व्योमवाणगतेवर्षे पौत्रजन्म महोत्सवा सर्वैश्वर्य समायुक्ता
मतिधर्मेस्थितंयदा एतत्कालान्तरोवत्सः महत्वसुधनाधिपा ग्रामभूमि महल्लाभं दासदासिश्च वाहनम् ईश्वरा राधनेप्रीती पुन्यैश्वर्य विवर्द्धिनी
अपुत्रणाचवैधव्यं पूर्वयत्नविनिर्मुक्ता तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कृत्वातन्त्र मुदान्विः द्रव्याद्धमायुष्यं दुःखशांतिः सुखंलभेत् पुत्रपौत्र प्रपौत्रश्च
धनधान्यादिकंमहत प्रकाशितवरुर्वत्रं पुन्यैश्वर्यं सुदुर्लभा महत्कर्मादिकंलोके सर्वत्रैवप्रशंसिता ज्येष्टमासेतमोपक्षेपंचम्यां निधनंदिवे दानमन्त्रा
दितोनूनं प्रसिद्धकुलवर्द्धिनी पुनरग्रेप्रमुत्पन्ना नृपवंशेसुसद्व्रता पतिव्रतासुधर्म्मात्मा पदोच्चश्चसुसद्गतिः ईश्वराराधनेपुन्यं स्वर्गलोके पुनर्गता ॥

एतद्योगोद्भवाःबालासुस्वरूणासुलक्षणा जन्मतःमातृकष्टोपिनातचिन्तातिगुप्तता दिवेमासेपिसावृद्धा शुक्लसोमकलायथा नातिगौरीनष्णांगी मध्य
देहसुलोचना गोधूमाकारवद्रूपाशुचिसाध्वीमनोहरा चारुहास्यकराशुभ्राऋचिरांगीमनोहरिः पतिप्रेमकरासाध्वीकोमलांगीशुभानना गृहकार्येसुकुशला
सर्वसौख्याधिकारिणी क्लिश्यंतिपूर्वपापेण पतिप्रीतिर्विन्यूनता विवादकलहंगेहेहोगुप्तकष्टह्यु पद्रवाः पतिपुत्रादिद्रव्याणि नसुखंपुस्थिरोमति बहुकार्य
मनोद्वेगंवस्त्राभर्ण न्यूनता एवंहिविविधोदुःखंप्राप्यतेपूर्वपापजं पुराजन्ममिदंबालाद्विजवंशसमुद्भवाः सौम्यसाधुसुप्राज्ञश्चपतिदेवसमंलभेत् गृहाश्रमं
सुपालयन्तेनिर्द्धनसतपोधनम् द्रव्याभावेणकुद्धयन्ति नारीयकलहंकरा बहुमूल्यवस्त्राभर्णं नित्येच्छापतिधर्षितम् अतिवादेणकुद्धोसौ महात्मासुव्रतेरति
भार्यात्यक्त्वावनेगत्वा ब्रह्मव्रतपरायणं सर्वावस्थातपस्तप्त गतोब्रह्म रेद्विजः नरीयंक्लिश्यतिगेहे कालेणमृतिस्तदा पतिपुण्यशतांशेणप्राप्नुयाज्ञानु
षीतनम् सुकुलंसुगृहेजन्मः इहजन्मयथाक्रमः ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पत्यपमानपापेण दुःखितोपिस्वकर्मणा यावद्यत्नंनकर्तव्या
सुखेविघ्नभवन्तिही यत्नंचास्यपरंगोप्यं कृत्वासर्वसुखंलभेत् शुद्धस्वर्णाकृतोपत्रं यथावित्तंसुभक्तितः लेखयेद्रक्तगन्धेण गौरीमूर्तिसुमन्त्रयुत् मन्त्र ।
ॐ ऐंह्रींक्लीं सर्वेश्वरीमहागौरींसर्वसौभाग्यदायिनी पतिद्वेषमहापापंविध्वंसयनमाम्यहम् श्रींक्लींह्रींऐंॐ वेष्टितांरक्तपट्टेणसंस्थाप्यं कलशोपरिपूजयेभक्ति
भावेणयथाविभवविस्तरे सावित्रीसंपुटदत्वापूर्वमन्त्रजपेत्पुनः इन्दुषष्टसहस्राणिजपतोनास्तिपातकम् आचार्य्यायप्रदातव्यापरंगोप्यंसुयत्नतः सोसर्व
विधिवत्कुर्याद्दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वसौख्यलभेन्नित्यपतिपुत्रधनादयः मनेच्छापूर्जितोनित्यंमोदतेबहुविस्तरात् अथात्रसमासेणकथासर्वयथाक्रमात्
प्रथमेद्वितियेवर्षेतातमातसुखावहं शरीरेजायतकष्टंसर्वशांतिसुयत्नतः तृतीयेवेदबाणाब्देक्रीड्यन्तिहोदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी
शिशुणांसंगमेप्रीती क्रियतेप्रेमवर्द्धिनी बालक्रीडाविशेषेण मोदमानगरीयसी यद्रोगज्ञायतेल्पंही नित्यंपुण्येणनश्यति रसाब्देव्यालवर्षातं प्रतियत्न
महोत्सवा गृहकार्यैरतिर्नित्यंतत्रजश्चपलोमति संबंधश्चर्चयागेहेह्रोव्ययदोर्घविचिंतनम् पूर्वयत्नकृतेकाव्यविस्तृतिसर्ववैभवाः सौभाग्यमहतोपुण्यंबुद्धिरे
विवर्द्धनं तातमानतथालाभंवर्द्धतेनित्यनूतनं ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेवर्द्धयंतियथाक्रमः उद्वाहोचर्चयागेहेमंगलंमहदागतः महोत्साहश्चतत्रैवमोदमानंगरीयसी

सुभाग्यमहतोपुण्यंपतिप्राप्यमनोहरम् तातकीर्तिविशेषेण सर्वकार्यंसुसिद्धति विविधाभूषणोवस्त्रंभाग्यपात्रोसुशोभिता मानेनमहताविष्टोद्वयोगेहप्रकाशिनी गृहकार्याणिसर्वाणि बुद्धिरेवविवर्द्धनम् प्रकाशोविपणीभूयात्प्रियहास्यविलासिनी प्रायश्चित्तमहादानं नित्यंसर्वसुखप्रदा गुणचेन्दुगतेवर्षे ऋतुचन्द्राद्धकेतथा पतिप्राप्तिविशेषेण सर्वसाफल्यवैभवाः शरीरेजायतेकष्टं औषधिप्रतिशांतये पतिप्रीतिहृदेगुप्तंप्रत्यक्षश्चदिनेदिने सुस्वरूपाप्रियसर्वेमंगलंमोदवर्द्धनः अयत्नेक्लेशितोर्नूनं विपाकेहानिसंभवाः भगवद्भक्तिभावेन पूर्वपुण्येसुखंभजेत् नगसोममितेब्देतुव्योमपक्षावधिक्रमात् मासेवर्षेसुखंनित्यं पतिप्रेमपरायणाः कष्टश्चमहतोभूयात्पुनरप्याहिमोदितं सर्वसौख्यान्वितोभूयद्वानिरन्तेस्वकर्मणा दानमन्त्रसुपुण्येणसर्वसौख्यसमागमः सुतापुत्रादिजासर्वैःमोदितंपतिभिस्सह इन्दुपक्षमितेद्वेतुशरपक्षाद्धकेतथा भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेबहुनूतनम् महत्वमाधिकंलोकेसुखयुग्यत्नसाधितः दम्पत्योरल्पजंकष्टंशान्तितत्रैवयत्नतः नसुखंलभतेपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् नानाचिंताभनोद्वेगंदुःखिताचमुहुर्मुहुः कुलेविघ्नमुपाधिश्च भर्तारंतप्यतोतथा किंचिद्दानादिमंत्रेणसुखंसर्वासुयत्नतः ऋतुनेत्रगतेवर्षेव्योमरामसुचान्तरे पूर्वयत्नंसुपुण्येण भर्तारंसुखसर्वदा बृहद्वागोसुतप्राप्यसाफल्यंजन्मभूतले सर्वारिष्टक्षयोनित्यं पुण्येसर्वमंगलम् चत्वारिंशावधितत्रः मनेच्छासर्वपूजिता विवाहामंगलंकार्य्यं जायतेविविधंगृहे कीर्तिश्चनिर्मलीभूयात्कुलंतेनप्रकाशिता कुलवृद्धिविशेषेणसुप्रतिष्टोयशस्विनी अनुष्ठानमहादानंपूर्वसंरक्षयेद्यदि सुखंसर्वाणिरत्नसूयवसुन्धरा चन्द्रचत्वारिवर्षाणितथाव्योमशरान्तरे सद्वयपोषिधनंधान्यंसुविख्याताप्यमानिनी धर्ममार्गेगताप्रज्ञा सर्वसौख्याधिकारिणी द्विपुत्रोचन्द्रकन्याच भर्तारंहिमहत्सुखम् जन्मसाफल्यमाप्नोति विस्तृतिंसर्ववैभवाः नानालाभसुखासर्वे सौभाग्यंमहतोत्सवम् सर्वेप्सितंफलंप्राप्यः पूजनीयोमहत्यशा शरपञ्चतथाब्देहि पौत्रजन्ममहोत्सवम् तीर्थदेवालयेप्रीतीदानधर्मादितत्परः शरीरेकष्टसम्पन्नो मृत्युरेवसमोमहत छायापात्रान्नदानेन सर्वशांतिसुयत्नतः महादानादितोपूर्वं हर्षवृद्धिदिनेदिने मंगलंमहच्चोयावीकष्टापत्तौरुजक्षयम् राजितंसुप्रबंधेण रमा शिवविवर्द्धिनी पौत्रजन्मविशेषेण महोत्साहोप्रशंसिता इन्दुषष्टाद्धमायुष्यं किम्वावेदरसाद्धकी ईश्वरंभक्तिभावेण प्राप्नुयात्परमांगतिः अथाग्रेसुकुलोत्पन्नं पुण्यपात्रीमहत्पदम् स्वयत्नेविपरीत्यंहि त्रिजन्मंपापपीडितः दानमंत्रमहोत्साहो सर्वसौभाग्यदायकः

एतद्योगोद्भवोकन्यासुस्वरूपाचसुन्दरी पतिप्रेमकराप्राज्ञीसुशीलाचप्रियंवदा नातिगौरीनकृष्णांगीगोधूमाकारवत्तनुम मध्यपादकरदेहोचारुहास्यावला
सिना मातृकष्टप्रदोषि द्वित्तातचिंताप्रदायिणी गृहकार्येसुकुशलापुनरानंदवर्द्धिना कोमलांगीसुप्राज्ञिश्चमध्योष्ठीचारुनासिका सुनयनाभूतिशुभ्रारुचिरांगी
नितम्बिणी पूर्वावस्थावशेषेणरमंतोसखिभिस्सह लक्षणाश्चशुभासर्वे किंचित्पापाद्रधोगतः भ्रातभगनीसमायुक्तभूयसेपिस्वकर्मणा पूर्वावस्थासुखंदीर्घः
मध्यावस्थाचमध्यमम् अन्तेदुक्खाश्रयोनारीक्लेशितंप पर्मणा कल्पयंतिमहच्चितासर्वसौख्याविकारिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यादुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः नसुखं
लभतेपूर्णपतिपुत्रात्मजादयः वियोगकलहोदुःखंहानिरेवदिनेदिने पुराविप्रकुलेजातासुस्वरूपातिसुन्दरी सर्वसौख्यान्वितोभूयात्सुमतिर्वाग्विलासिनी
दानधर्मेमतिःस्वल्पाःदूषितविप्रसाधवा गेहेविवादितोनित्यंनिंदंतिस्वसुरादयः क्लिश्यतेतेनभर्तारंकुमार्गीभूयसेपिसा कदाचिद्दैवयोगेणगृहेक्लेशोति
दारुणम् वादावादकुवाक्येण क्रोधावेशमहत्यपि तत्रचेदंगृहत्यक्त्वा कूपेपततिदुःखता आत्माघातमहापापं कर्तव्यंसाद्य पस्थिता दैवेणरक्षितस्ततः नैव
मृत्युवशंगतः दुक्खितंतेनविविधंभर्तारंरोषितोमहान् पितृमातृसमायुक्तंशापितविविधंतया नसुखंप्राप्नुयाद्धामात्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि एतस्मात्कारणा
द्धत्समानुषीपापमाश्रयः एतज्जन्मत्रिजन्मानिदुक्खितापापकर्मिणी क्लिश्यतिविविधोगेहंपतिपुत्रादिसर्वयोः नसुखंलभतेपूर्णायाद्यत्नंनपापहम् स्वर्णपत्र
कृतोतत्रयथावित्तंसुश्रद्धया नगांगुलंसुविस्तीर्णांत्रागांगुलतथैवच तस्योपरिलिखेत्तत्रंविष्णुमुद्रायथाक्रमः सस्थाप्यविधिवत्कुंभेवेष्टितांपीतपट्टतः तदग्रे
मंत्रमाराध्यपूजनंभक्तिभावतः तत्रमंत्र ॐऐंह्रींक्लींश्री शं सर्वेश्वरायसर्वरूपायविश्वरक्षणेमहापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापंनाशयर तज्जनित
सर्वकष्टंविदारयर मनोभिलाषितसौख्यं प्रकाशयर स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ एतन्मंत्रजपेत्प्राज्ञः नंदव्यालसहस्रकम् सावित्रीतत्प्राणेनबटुकाराधनंततः
पुरुषंसूक्तमुच्चार्यश्रीसूक्तश्चसुभक्तितः शुद्धस्थानेक्रमेणैवकुर्यातत्रमुदारधि आचार्यायप्रदातव्यमूर्तिसंकल्पयेत्पुनः ईश्वरभक्तिभावेणआशिर्वादश्चग्राहयेत
प्रतियत्नसुखंवृद्धि मोदतेभक्तिभावतः पतिपुत्रसुखंसर्वजन्मःक्लेशनाशनम् प्रजोपभोगवृद्धिश्च राजतेसर्वसम्पदा पति ममहत्वेण सुखंजन्मनिजन्मनि
महत्वमधिकंलोकेसाफल्यंसर्ववैभवाः परंगोप्यमतंवत्सः पुण्यामार्गसुखप्रदा कथयामिसमासेण अथाग्रेश्रृणुभार्गवः प्रथमेद्वितीयाब्देतु रामवें यथाक्रमम्

स्त्री० ८

मासेमासेत्रिवर्द्धतिबालिकाशुचिलक्षणा तातमातसुखंनित्यंगृहेमंगलमेवच शरीरेकष्टसंपन्नोभूतछायाश्चविव्हलाः किंचिद्दानादिमंत्रेणश्रेयमानासुयत्नत
दंतवाधापुनःपीडयंज्वरतसविरेचनम् छायापात्रान्नदानेनश्रेयवृद्धिरुजनशे। चान्येपितंभवोकष्टंसुयत्नंशांतिनित्यशः चतुर्थेपञ्चमाब्देतुषष्टंवर्षादिसप्तमे
शिशुक्रीड़ारतोनित्यंचञ्चलश्चपलामतिः मंगलंजायतेगेहोकुलकीर्तिविवर्द्धनम् भ्रातजन्ममहोत्साहोकन्यकासुखरूपिणी यद्रोगंजायतेकष्टंयत्नेनशांति
मेततः अष्टमेद्वादशेवर्षेपतियोगोथमङ्गलम् गृहकार्येसुकुशलाकन्यारूपवतीसती क्रीड़तिविविधंबाला मोदितंसखिभिसह विवाहमहतोत्साहोपतिरेव
सुप्राप्नुयात तातकीर्तिविशेषेणवर्द्धतेचलतेवसः विविधाभूषणोवस्त्रंप्राप्यनेपिवरानना त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दोमध्येमहत्सुखम् स्वकृत्यकुशलोबामा
मोदितापतिभिसह भयभीताहृदेगुप्तंकदाचिच्चिन्तनोमहत् भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेपुण्यकर्मणा ऊनविंशतथाविंशेशरनेत्राद्धमध्यगे घ्यानंदसंप्लवेलीन
भोगामैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविशेषेणपुण्यादानन्दसर्वदा कुलवृद्धिप्रभावेणप्राप्नुयाज्ज्ञानमुत्तमम् पूर्वपुण्यंसुयत्नेनपतिपुत्रधनादिजा सर्वसौख्यान्विता
भूयान्मोदितागेहभूषणा शरीरेसंभवोकष्टं सुयत्नेशांतिसर्वदा मंगलंविविधोत्साहो कुलवृद्धिप्रकाशिता ऋतुनेत्रगतेवर्षे यावनभत्रिंशाद्धके दानमन्त्रं
सुपुण्येणपतिपुत्रात्मजंसुखम् नोचेद्विलोमकंप्रत्तभोक्तव्यहीस्वकर्मणा यावद्यत्नेनकर्तव्यासुखेशोकसमागमः त्रिंशेकोपञ्चत्रिंशाब्देशून्यचत्वारिमध्यमा
त्रिवाहोमंगलंकार्यं जायतेशुचियत्नतः प्रकाशोविपणीभूयाद्दानमन्त्रमहत्फलम् पूर्णभाग्योदयंभूयाद्यशसौख्यविवर्द्धते नानाकार्यप्रबन्धेण राजते
पुन्यसम्पदा पूर्वयत्नादितोनिन्यं पतिभक्तिपरायणा मनेच्छापूजितंलोके सुखंसर्वत्रवर्तते शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाद्धमध्यगे सुप्रसिद्धाः
सुनारीणां पतिप्रेमविवर्द्धिनी सुतापुत्रसुखाविष्टो पौत्रजन्ममहोत्सवम् व्ययलाभमहत्वेण सर्वेच्छासुखपूजिता पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले
शशिपञ्चशरेपञ्च तथासून्यरसान्तरे ईश्वराराधनेप्रीति तीर्थमन्द्रादिसेवनम् व्रतनेमरतश्चापि दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वेप्सितंफलंप्राप्यः पुण्यपात्री
सुमानुषी किंचिच्छोकोगभोगेहे गृहाशक्तापिक्लिश्यति ईश्वराराधनेप्रीति सर्वसिद्धिप्रदोभवेत् देवपुण्योत्सवेतस्य व्ययंकीर्तिसुनिर्मला वेदषष्टाद्ध
मायुष्यं किंवाशररसाद्धकी स्वगृहेनिधनंचास्य प्रशंसापुण्यतोभुविः पुनरुच्चकुलेजातं दानधर्मादियत्नतः सर्वसौख्यसमायुक्तं प्राप्यतेपरमांगतिः

सर्वखेटेष्टमानेनयोगोयंसुखवर्द्धन धनधान्यान्वितोभूयाद्राग्यपात्रीसुमोदिता जन्माद्धनयुतोबाला तातमातसुखप्रदा मिष्टभाषीसुशीलाच गीतवाद
परप्रियः महर्घभूषणौवस्त्रंप्राप्यतेश्वहमानिनी रूपहास्यसुसंपन्नामध्यमाङ्गीसुलोचना पीडितंपूर्वपापेणसर्वसौख्याधिकारिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण वामा
क्लेशमवाप्नुयात शोकातोविविधंचिन्ताविभ्रमोव्याकुलंकदा नसुखंलभतेपूर्णं यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येण नित्यंसौभाग्यरूपिणी प्रतियत्न
सुखंवृद्धि मनेच्छासर्वपूजिता सुकार्यसुसभेषु पत्थरत्यन्तवल्लभाः कुलकीर्तिकरासाध्वी सतिसौम्यप्रियम्बदा मानेनमहताविष्टो यशंभूरिसुकर्मणा
पूर्वजन्मनियत्पापं कथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुःखिताः पापरूपिणी वैश्यवंशोद्भवोकाव्यः नारीयंपूर्वजन्मनाः निजगेहेश्वरीभूयाद्धनपुत्रेण
दर्पिता दानधर्मरतोनित्यं व्रतयज्ञसमाचरेत दासवाहनजैर्नित्यं गर्विताःपुण्यरूपिणी साकदाजाह्नवीतीरे संस्थितादिवसरसे अग्निकांडेनतत्रैवव्याल
वंशक्षयंकरः तेनपापाश्रयोभूयाददुःखिताइहजन्मनि कुलवृद्धिनदृश्यंतेपतिक्लेशोतिदारुणम् अतस्तंशांतिहेत्यर्थंकृत्वातन्त्रशुचिस्थले निजवित्त नु
सारेणस्वर्णपत्रकृतस्तदा लेखयेद्रक्तगधेण व्यालमूर्तिकुलान्वितः संस्थाप्यकलशेपूज्य रक्तपट्टेनवेष्टितम् सुविप्रोमन्त्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्रकम्
। तत्रमन्त्रः । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशंनमः शङ्करायशिवाय सर्वदुःखहर्ताय पूर्वजन्मव्यालवंशक्षय पापशमनाय सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ
सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या आचार्यायप्रदापयेत वस्त्राभूषणंदत्वा दानमानैसुतोषितम् नित्यपुण्याश्रयोवामा
एतद्यत्नसुखप्रदा सौभाग्यंसंततिसर्वाः मोदितागेहभामिनी जन्मकाल समारभ्यः यावज्जीवतिभूतले तावत्कालीयजगाथा कथयामिसमासतः
जन्माब्देद्वितियेवर्षेतथावेदेशरान्तरे तातमातमहच्चिताबालिकागेहभूषणा शरीरेजायतेकष्टंस्वयमेवविनश्यति भ्रातजन्ममहोत्साहो मंगलंजायतेगृहे
तातमातमहामोदं साफल्यसर्ववैभवा ज्वरोविरेचनपीड्य उच्चस्थपतनाद्भयम् बृणविस्फोटकोव्याधि सर्वयत्नेनशांतय मृदुवाक्यमनोरम्य दृष्टिहास्य
मनोहरी तातप्राणेषुसन्देहोपुण्यात्सवसुखागमः रसाब्देव्यालवर्षेवतयोरन्तर्यथाक्रमः चंचलश्चपलोसाम्याक्राडतिसखिभिसह तातलाभविशेषेण
प्राप्यतिमानमुत्तमम् गृहक्लेशोपदाभव सुयत्नेशांति नित्यशः नातिधनी भवेत्तातः नातिनिर्द्धन मेतथा मध्यमापिसुशीलोश्च लाभवृद्धिक्रमेणवै

ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेरारम्भोमङ्गमादितः मंगलंकार्ययोगोपिमासेमासेसुखागमः तातमातमहच्चिताव्ययोगमहत्यपि उद्वाहो गलंदिव्यंकुलकीर्तिप्रशंसिता
महर्घभूषणोवस्त्रं प्राप्यतेननूतनम् अन्नदानादितोनित्यं श्रेयवृद्धिश्चसर्वदा सुगेहोसुपतिप्राप्यः सुपुण्याद्भाग्यभाजिनी सर्वापत्तौक्षयोनित्यंपूर्वयत्नेसु
रक्षणम् पतिप्रेमविवर्द्धंतिविस्तृतोरूपयौवनम् मासेवर्षेसुखंजातंकष्टशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षेविंशवर्षावधिततः सर्वसंपत्समायुक्ता ग्रहकार्ये
सुकौशला पतिप्रमविकरावामारमयन्तिसुमोदिता विद्याबुद्धिविशेषेण सुसंगाच्चयशंमहत् भाग्योदयंभवेन्नित्यं संतद्योगोभिजायते मानकीर्तिमहोत्साहो
महदानंदवर्द्धिनी बंपत्तोरल्पजंकष्टंपुण्यात्शांतिसुखागमः दानधर्मेसुखंनित्य मिष्टदेवसुपूजनात् चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिकेतथा पतिभक्ति
सुपुण्येणमनेच्छाबहूपूजिता प्रीतिरेवसुनारीणांसुखक्लेशप्रकाशिनी मंगलंचर्चयागेहो पुत्रकन्यासमायुता सर्वकार्येसुकुशला पतिरानंदवर्द्धिनी सुस्व
रूपाप्रियसर्वाः सुभगासुविचक्षणा त्रिंशवर्षावधिर्नूनं शुचिशौख्यान्विताभवेत् भाग्यवृद्धिःसुयत्नेन विलीयंतेपिशत्रवा मंगलंविविधोकार्यं जायतेनित्य
नूतनम् शशिरामाद्धमारभ्यशरवह्नितथांतरे सुतापुत्रसमायुक्तामोदितापतिभिसह वृहल्लाभप्रभावेणसर्वदामंगलंभवेत् विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्तिं
प्रकाशिणी मानेनमहतात्रिष्टो राजतेतर्वसम्पदा अकस्माच्चमहल्लाभं व्ययोपिबहुसाधिता सर्वसौख्यागमोगेहे कष्टचिन्ताविनष्यति त्वयत्नेविपरीतयंही
भोक्तव्यापापजंफलम् नेत्रवेदाद्वगेवत्समहच्छोकप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेनपूर्वसंरक्षितायदि सर्वोपिमानदोमान्यवनितापुण्यरूपिणी वह्निवेदगतेवर्षे
व्योमबाणसुध्यगे देवदर्शनतीर्थेषुसाफल्यंमानुषीतनम् नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेपुण्यसम्पदा प्रकाशोविपिणीभूयात्कुलवृद्धिमहोत्सवाः पूर्वयत्नप्रभा
वेणप्राप्यतेपरमंसुखं अतःपरिसुपुण्येणयावद्व्योमरसाद्धके तावत्कालोवधिर्नूनमनेच्छासर्वपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहोस्वगेहेसुप्रतिष्ठिता नृत्यगीतोत्सवै
र्गेहंशोभितेबहुविस्तरात् भूमिलाभविशेषेणरचनागेहनूतनं गुप्तद्रव्यगृहेतस्यधर्मकार्येव्ययोमहत् साधितंसर्वकार्याणिपुण्यपात्रीसुशोभिता रामसप्ताब्द
मायुष्यंपूर्वपापेसुरक्षणम् अयत्नेक्लेशितानित्यं वैधव्यंपापरूपिणी त्रिजन्मंपीडितोपापं नित्यक्लेशाधिकारिणी दानधर्मरतोनित्यंतस्मात्सर्वसुखार्थये
पापशांतिप्रभावेणपुण्यात्सर्वसुखंसदा सकालेमृयतिश्चापिसर्वत्रैवप्रशंसिता इहजन्मसुखासर्वेतथैवात्रत्रिजन्मनि सर्वेच्छापूजितापुण्यंनित्यंपापाद्धधोगता

स्त्री०

६

रुर्वखेटेष्टमानेन धनाध्यक्षासुभामिनी सुस्वरूपाप्रियासर्वे चारुहास्यविलासिनी सुप्रसिद्धाःचधर्मात्मा गृहकार्यहितेरताः मध्यमांगीसुमतिमान् पतिप्रेम विवर्द्धिनी भोगमैश्वर्यसंपन्नावस्त्राभर्णैसुशोभिता धनपुत्रसुखंसर्वदासदासिश्ववाहनम् सर्वैश्वर्यसमायुक्तापुनःपापाद्रधोगता पतिपुत्रात्मकष्टे क्लिश्यति त्रिविधोमहान् आपतौचविशेषेण जायतेपूर्वपापतः चिन्तयेद्द्विविधोबामा मानहानिभयमहत धनहानिविशेषेण गृहेक्लेशह्युपद्रवाः तामसंक्रोधवेगेण कार्यहानीभवेन्नत्रम् विमुखोयातिभर्तारंवैधव्यान्तेमहद्भयम् प्रार्यश्चित्तंसुपुण्येणपापशांतिसुखागमः ईश्वराराधनेप्रीतीमनेच्छाबहुपूजिता मानकीर्ति विशेषेण पुण्यंसाफल्यवैभवाः अतःपरिसुखाःसर्वे अग्रजन्मपुनःपुनः राजयोगभवेत्पूर्णा नानारत्नैःसुशोभिता ईश्वरंकृपयादामाप्राप्यतिपरमांगतिः पापशांतिःयदानैवक्लिश्यतिसाधमामतिः पूर्वजन्मनित्यपापंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुक्खितातिमुहुमुहुः शूद्रवंशोद्भवापूर्वेसाधुसेवा सुतत्परा ईश्वराराधनेप्रीती दासीचैवातिनिर्द्धना नित्यंद्विजगृहेसेवा स्वोदरंपालयतिसदा साधुसेवाप्रभावेण ईश्वराराधनेनवै बहुपुण्याश्रयोशूद्री भूयसिभाग्यभाजिनी कदाचिददैवयोगेण द्विजगेहेमहद्धनम् दृष्ट्वातुस्वपतिंत्रियालोभग्रस्ताधनामतिः हृतंद्विजधनंसर्वमुभयो पापमाश्रयः नदृष्ट्वा स्वधनंविप्रः शापंदत्वातिदुक्खितम् तेनपापप्रभावेण इहजन्ममहद्भयम् साधुसेवासुपुण्येण उत्तमेकुलसम्भवाः रूपलक्षणपन्ना कोमलांगीशुभानना आदौपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पुनःपापोदयंभूयात्पतिबुद्धिविनाशनम् वैश्यागामीमदोन्मत्तः सर्वद्रव्यक्षयंकरः क्लिश्यतित्रिविधोतेन शरीरेदारुणभयम् कुलकीर्तिक्षयसर्वं गृहेशोकसमागमः एवंहिविविधोदुक्खं त्रिजन्मंजायतेमहान् तस्यशांतिःप्रवक्षामि येनचाग्रेसुखंलभेत ताम्रपात्रे घृतंयुक्तः स्वर्णद्रव्यसुश्रद्धया वेष्टितांपीनपट्टे पुष्पमाल्यादिभूषितम् द्विजभार्यान्वितो मूर्ति स्वर्णपत्रसुलेखयेत् संस्थाप्यकलशेतोतः पूजनंभक्तिभावतः आचार्यायःप्रदातव्यं तद्दानंसुविधिर्यथा शशिव्यालसहस्राणि मन्त्रमेतज्जपेत्तदा ॥ मन्त्र ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं श्री सर्वेश्वरी भगवतीदेवीं पूर्वजन्मकृत शापपापशमनं कुरुकुरु सर्वसौख्यप्रदायिनी स्वाहा हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति पुनःसर्वसुखंलोके धनपुत्रादिजैरपि पतिराज्ञाप्रपाल्यन्ते शोभितागेहभूषणा सर्वसौख्यान्वितोबामा पुनश्चैवाग्रजन्मनि ग्रामभूमिधनंप्राप्यः सुपुण्यात्मादयामयी पुण्येच्छापूजितासर्वे त्ययत्नेक्लेशभाजन

जन्मतःप्रथमेवर्षेवह्निवर्षेषुयत्क्रमः तातमातहृदेचिताबालिकाप्रेमवर्द्धिनी शरीरेकष्टसंपन्नोज्वरानतिसारादयः दन्तपीड़ावितप्यन्तिशांतिरेवंसुयत्नतः
वृहद्दरीतिकीचैवलक्षणांश्यामसंयुता देयात्शांतिप्रजायंतेशरीरारोग्यवर्द्धनम् अन्नदानादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते दानमंत्रसुयत्नेनपापशांतिःमहोत्सवा
शुचौपत्तेयथासोमःयोगस्तद्वत्प्रवर्द्धते वेदाब्देपञ्चमेवर्षेष्टवर्षादिसप्तमे बालासुभोगमैश्वर्यंवर्द्धितेपुण्यकर्मणा वृणंविस्फोटकोव्याधिःसर्वशांतिसुकर्मणा
क्रीड़तेमतिसंजातंगेहकार्येसुतत्पराः ततचिंतामनोद्वेगंसंबंधस्यविचर्चितम् मातृकष्टविशेषेणभ्रातजन्मसुखोत्सवम् व्यालवर्षनभेदुश्चनेत्रचंद्राद्धमध्यगे
गृहकार्यरताबालाविवाहोमंगलंमहत व्ययद्रव्यमहतातोमोनकीर्तिश्चनिर्मला पतिरेवसुप्राप्यंतिवस्त्राभर्णामनोहरा सुखेणमहताविष्टोपुण्यैश्वर्यविवर्द्धनम्
अयत्नेपापजंकर्मविपाकेदुःखदोमहान् त्रयोदशोद्वसंप्राप्ते ष्टादशमितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणराजतेपुण्यसंपदा मनेच्छापूजितोनित्यंचित्तचितायदाकदा
दानधर्मादितोनित्यंसर्वैश्वर्यदिनेदिने ऊनविंशेचविंशाब्देपञ्चविंशतिमध्यमा स्वगेहेसुप्रतिष्टोपिवनितापुण्यरूपिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यासुखेविघ्नमहद्भयम्
प्रायश्चित्तंसुपुण्येण आयुवृद्धिमहत्सुखं पुत्रकन्यासमायुक्तापतिप्रेमविवर्द्धिनी नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसम्पदाः रसविंशमितेवर्षेव्योमरामक्रमादितः
महोत्साहश्चतत्रैवमंगलंमहदागतशरीरेजायतेकष्टंदंपत्योरल्पजंभयम् छायापात्रान्नदानादिसुखयुद्यत्नसाधितः दासवाहनजैर्नित्यंभोगमैश्वर्यसर्वयोग्ययत्ने
विपरीत्यंहीपतिपुत्रेणक्लिश्यति इन्दुरामाद्धमारभ्यःचत्वारिंशावधिततः वांछापूर्तिप्रजायेतःपूर्वयत्नेसुरक्षिता विवाहादिमहोत्साहोकुलकीतिमहत्यपि
मंगलंविविधोनित्यंप्रजावृद्धिवृहद्यशः ईश्वरभक्तिभावेणसाफल्यंसर्ववैभवा तुष्यतिविविधोनित्यपतिपुत्रात्मजादयः कार्यवृद्धिविशेषेणकष्टचिंताक्षयंसदा
अनुष्ठानमहादानंसद्यःसर्वसुखप्रदा सर्वपापविमुक्तापुण्यरूपासुमानिनी पुण्यपापोश्रयोनित्यंसुखदुक्खादिसर्वयो शशिवेदगतेवर्षेभलवेदाद्धमध्यमा
शरीरेजायतेकष्टंमहादानसुखप्रदा देवतीर्थाटनेप्रीतिशताद्धवत्सरावधिः रामबाणमितेब्देतुपौत्रजन्मेप्सितप्रदं मंगलंविविधोत्साहोयशसाधननित्यशः
प्राप्तेवेदशराब्दे तुव्योमषष्टक्रमादितः दानधर्मरतानित्यमग्रजन्मसुखार्थये देवदर्शनतीर्थेषुपवित्रंमानुषीतनम् सर्वत्रैवप्रकाशयंतिपूर्वयत्नेसुरक्षिता त्वयत्ने
क्लिश्यतिबामा वैधव्यंपापरूपिणी पूर्णायुरष्टषष्टाब्दे पञ्चतत्वप्रथग्भवेत् सुपुण्योदग्रजन्मेच सर्वसौख्याधिकारिणी वैश्यवंशसमुत्पन्नं वनितागेहभूषणा

स्त्री० १०

सर्वयोगविचारेणयोगोयंसुहृद्दर्शकः सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुण्यरूपासुभामिनी जन्मतःमातृकष्टोपितातचिन्ताचगुप्तता जन्मकालात्प्रवर्द्धंतःसंपदा
पितृवेश्मनी यथादेहप्रवर्द्धेतः भोगमैश्वर्यनूतनम् मध्यभागोसुशीलश्चवस्त्राभर्णैःशुशोभिता दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ासुचञ्चला गुप्तचिन्तामनोद्वेग
क्रोधेणतप्यतिकदा चिंतयंतिविशेषेणस्वकार्यसाधनेमति तातमातसुखासर्वेंभ्रातजन्ममहोत्सवं मध्यरूपाशुभांगीचसुनयनाशुभ्राशुचिः मनेच्छापूजिता
बव्हीदशाश्रेष्टसुखप्रदा उद्वाहाहिमहोत्साहो तातकीर्तिसुखप्रदा पतिप्रेमकरान्या गृहकार्यविचक्षणा पीड्यतिपूर्वपापेण सुखेशोकह्युपद्रवा विजश्यति
विविधोद्वेगंस्वल्पायुरल्पजंभयम विवादकलहंगेहोनिमग्नाःशोकसागरे पतिपुत्रात्मजादिणांसुखेविघ्नंहिपापजम् नसुखंसुस्थिरोलोकेयावद्यत्नंनपापहम्
प्रायश्चित्तमहादानंसर्वसौख्यदिनेदिनेमंगलंविविधोत्साहोसुतापुत्रविवर्द्धनम् नित्यंपरायाश्रयोलोकेसफलंमानुषीतनम् तथैवोदुक्खदंपापारितिज्ञात्वासुनि
श्चितम् । शुक्रोवाच । पूर्वपापकथंतातःकथयस्वप्रसादतः येनदुक्खलभेन्नारीतस्ययत्नकथंभवेत् । भृगुवाच । पूर्वजन्मकथावत्सःप्रवक्षामिसमासतःवैश्य
वंशसमुत्पन्नानारीयंधनगर्विता व्रतदानरतोभूयादंतर्ज्ञानाभिमानिनी तत्रैकसमयेवत्सव्रतोद्यापनमाचरेत यज्ञञ्चकारयामासःयशेतेसाधनेमति यज्ञस्थले
शुचौतीर्थेगुरुरेवविवादिति स्वामिग्राज्ञानमर्चयंति त्यज्यतिस्वगुरूतदा रुष्टंतस्यापमानेन विप्रेन्द्रोशापितंमहत् रेदुष्टात्मादुराचारी दर्पितापापरूपिणी
निजकृत्यफलंलोकेत्रिजन्मंदुक्खितोमहान् पतिपुत्रात्मजाक्लेशंशरीरेदारुणोरुजम् प्राप्नुयाद्विविधोद्वेगंगृहेक्लेशह्युपद्रवाः तेनपापप्रभावेणनारीयंदुक्ख
माश्रयः प्रायश्चित्तंविधानेनकथयामित्वयाधुना एतज्जन्मकृतेकार्व्यःसर्वसौख्यसमृद्धिमान् यस्मिन्कस्मिन्दिनेभूयाच्छ्रद्धाभक्तिसमन्वितम् स्वर्णस्यप्रतिमा
कार्यःयथाविभवविस्तरात विष्णुनारायणोमूर्ति लेखयेद्रक्तचन्दनम् शापदातागुरुमूर्ति तन्निकटेसुविधिर्यथा लिपित्वाशापहंबीजं सर्वञ्चसुविधानतः
संस्थाप्यंकलशेप्राज्ञःवेष्टितांपोतपट्टतः पूजयेद्भक्तिभावेण विष्णुयज्ञक्रमादितः तदग्रेजापयेन्मंत्रंशशिलेक्षञ्चवार्द्धकम ॥ मंत्र ॥ ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय
सर्वपापशमनायभद्रं कुरु२नमः स्वाहा सावित्रीतत्प्रमाणेनशापहंबीजसंपुटम् शैयादानविधानेनमूर्तिदानंसमाचरेत् हवनंविप्रभोज्यञ्चसर्वपापैर्विमुच्यति
नित्यंपुण्याश्रयोलोकेएतद्यत्नप्रभावतः सर्वंसौख्यागमोगेहेवनितापुण्यरूपिणी मानकीर्तिमहोत्साहोसुखंसर्वत्रवर्तते पतिपुत्रात्मद्रव्याणिसफलंजन्मभूतले

प्रथमेद्वितियेवर्षेवह्निवर्षाश्चपञ्चमे दन्तबाधाज्वरंपीड्यः व्रणांविस्फोटकादयः रुदन्तौविव्हलाक्रन्दांभूतछायाप्रपीड्यति किंचिद्दानादिमंत्रेण औषधिसेवने
नवै श्रेयोमानंसुखासर्वे क्रीडतिविविधैरपि भ्रातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमेवत्र अल्पमृत्युभयंघोरं द्वितियोजन्मगण्यते पुनरानन्दसंप्राप्य प्रायश्चित्तं
सुयत्नतः रसवर्षगतेवत्सव्योमचन्द्रादनन्तरम् बालिकावर्द्धतिनित्यंशुचौपक्षेनिशेशवत भोगाप्रवैभवोवृद्धिः वस्त्राभर्णैःसुशोभिता गृहकार्यरतोबाला
बादहास्यपरंप्रियः छायापात्रान्नदानेन सर्वारिष्टनिवारणम् विवाहोत्सर्चयातस्य तातचिन्तागरीयसी चञ्चलश्चपलाबाला शिशुक्रीड़ामनोहरा मंगलं

स्त्रा० ११

विविधोगेहे मासेवर्षेसुखंगताः शशिसोमगतेवर्षे शरसोमतथान्तरे विबाहोमंगलंदिव्यं कुलकीर्तिप्रशंसिता पतिसौख्यनसन्देहो दानमन्त्रफलप्रदा
दिव्याम्बरंभूषणाञ्च शोभितापिशुभानना गृहकार्येसुकुशलाभोगमैश्वर्यंनूतनम् रसेन्दुविंशवर्षाणिपतिप्रेमविवर्द्धिनी भाग्यवृद्धिर्नसंदेहोसुखंतत्रप्रवर्तते
शरीरेजायतेकष्टसर्वशान्तिःसुयत्नतः नवाम्बरंभूषणञ्चप्राप्यतिविविधोतदा मासेवर्षेसुखंजातंसुपुण्यात्पूर्णवैभवाः इन्दुनेत्रगतेवर्षे पञ्चयुग्माङ्ककेतथा
शरीरेजायतेकष्टंपुत्रजन्ममहोत्सवम् पतिप्राप्तिविशेषेणयथालाभतथाव्ययम् सुतापुत्रसुखंलोकेमानवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितोनित्यंदानमंत्रसुयत्नत
रसनेत्राद्धत्रिंशेच तयोर्मध्ये महोत्सवम् अयत्नेविविधोचिन्ता पापादुक्ख महद्भयम् तेभ्यः सरक्षितस्यापि पूर्णायुः सुखसंपदा नानाकार्यप्रबन्धेण
सुप्रसिद्धापिभामिनी पुत्रकन्यासुखाविष्टो पूजयन्तिमनोरथा अनादरस्तुशत्रुणांपतिप्रीतिविशेषतः शशित्रिंशत्रित्रिंशेच शररामान्तरेतथा विवाहो
मंगलंकार्यंव्ययलाभमहत्यपि शरीरेजायतेकष्टमन्नदानात्ततःसुखम् षष्टवह्निगतेवर्षे व्योमवेदावधिःक्रमात् मनेच्छापूजितोसर्वाः नूतनंसंभवेपुत्रः
पुण्यकर्माश्रयोलोके किंकिंसौख्यनलभ्यति भूमिमन्द्रधनंप्राप्यः रजितंस्वर्णभूषणं देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रीक्रियतितनुम् आज्ञाकारी सुताभृत्याः
प्रजावृद्धि महोत्सवाः वेदबाणाद्धमारभ्यः पौत्रजन्मसुतुष्यति प्रकाशोविपणीभूयाल्लाभोभवति पुष्कलम् अतःपरिसुखासर्वे रामसप्तान्तरावधिः
सर्वसौख्योपिभुञ्जोता सफलजन्ममानुषी ईश्वराराधनेप्रीती दानादिमतितत्पराः स्वासकासादिजंपीड्यः अन्तकालह्युपस्थिता पञ्चतत्वप्रथग्भूयात्
सप्तमीचाश्विनेतमे प्राप्यतिसुगतिश्चापि पूर्वपुण्यंसुयत्नतः अथाग्रे सुभवेद्राज्ञी सुपण्यात्स्वर्ग गामिनी पुण्याश्रये सुखासर्वाः स्वर्गमोक्षैव कारणम्

एतद्योगेसमुत्पन्ना बालाबुद्धिमतीसती दाताभोक्तासुधर्मात्मा स्वकुलेसुप्रतिष्ठिता हीनगेहेभवेज्जन्म: स्वामिनीस्वोच्चगेहगी जन्मकालसमारभ्य:
यावज्जीवतिभूतले नानाकर्मकृतालोके सुखदुःखसमायुता चिन्ततिविविधोकार्यं मध्यरूपासुलक्षणा नातिगौरीनकृष्णांगी मध्यमांगीसुलोचना
शुक्लपक्षे यथाचन्द्र: योगस्तद्वत्प्रवर्द्धते संपदासंचयेत्स्वामी वस्त्राभर्णै सुशोभिता धर्ममार्गे गताप्रज्ञा सुप्रसिद्धा प्रशंसिता धर्मेणैव सहायेण
परमेश्वर्यसर्वदा पापकर्म कृतेवाधा योगोशाति मलीनता यदापाप गताप्रज्ञा सर्वकार्ये भयप्रदा पूर्णसौख्य नप्राप्यति निमग्नश्चिन्तनार्णवे
तनुकष्टीचाल्पजीवी विविधक्लेशभाजिनी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापशांतिसुभक्तित: वंशवृद्धिमहत्वेण सौभाग्यंपरमंसुखम् सुतापुत्रादिजासर्वै:
मनेच्छापूजितोभुवि: सर्वापत्तौविनश्यन्ति पूर्णायुसुखभाजिनी मंगलंविविधोगेहे विवाहादिमहोत्सवे त्वयत्नेपापकर्मेण क्लिश्यतिदुःखरूपिणी
शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कृतंतद्योरकर्मिणी येनक्लेशाश्रयोभूयाद् दुःखितापिसुगेहणी ॥ भृगुवाच ॥ विप्रवंशोद्भवापूर्वे धनपुत्रान्वितोभवेत्
पूर्वपापेणवैधव्यं देवतीर्थाटनेमति: ईश्वराराधनेप्रीती ज्ञानध्यानसुतत्परा सर्वद्रव्यव्ययंतीर्थे भूयसितातिनिर्धना देवतीर्थाटनेप्रीती नित्यंभ्रमति
भूतले चौरकर्मरतोभूयात्तथाचव्यभिचारिणी बहुवस्तुहृतोदेवा: महत्पापंदुराबृति: पुण्यपापाश्रयोभूयो तस्मिन्कालेसुब्राह्मणी कालेनमृयतिश्चापि
किंचित्पुण्यफलेणैवै समुत्पन्नाथभूमागे सुन्दरीमानुषीतनम् दिनेदिनेपिसांवृद्धा संपन्नापूर्वलक्षणै पापशान्ति:प्रकर्तव्या ताततज्जन्मकालके सर्वाश्चेष्ट
क्षयोनित्यं विस्तृतिंसर्ववैभवा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेविघ्नभवन्तिहि तद्यत्नंसंप्रवक्षामि येनसौख्यदिनेदिने स्वर्णपत्रकृतोतत्र: वह्निकोणनगांगुलम्
पंचगव्येणसंस्नात्वा शुद्धितंजाह्नवीजले लेखयेद्रक्तगंधेण विष्णुमूर्ति:सुशोभनं वेष्टितांपीतपट्टेण संस्था यंकलशोपरि पूजयेत्सुविधानेन विष्णुयज्ञ
यथाक्रम: तदग्रजापितोमन्त्रं विष्णुव्रतरतोद्विजा: । मन्त्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय सर्वपापविध्वंसनाय भक्तानुप्रतिपालकाय विष्णुरूपायभगवते
वासुदेवायतेनम:पूर्वजन्मकृतपापताप शमनंकुरु स्वाहा शशिलक्षप्रमाणेनजाप्यमेकाग्रमानस: हरिवर्मपठेन्नित्यंजपान्तेदानमाचरेत् आचार्याय:
प्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेत्सुधि: हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंसर्वसुखाविष्टो सौभाग्यमक्षयंभवेत् सर्वेप्सितंवरंप्राप्य: वनितापुण्यरूपिणी

प्रथमाब्देद्वितियेवशरीरेजा तेसुखम् विचिच्छायादिरोगेणपीड्यतितातचिन्तनम् रुदन्तौभयमाक्रांतः कन्यकाप्रेमवर्द्धिनी दानमंत्रसुपुण्येणघूटिका
सेवनेनवैः सर्वकष्टविनश्यन्तिबालावृद्धिक्रमादितः तातसौख्यविशेषेणमहोत्साहंदिनेदिने रामाब्देवेदवर्षेचबाणवर्षावधिक्रमम् मातृकष्टभयंचिन्तापुनरा
न दमगलम् वृणवातोद्भवंकष्टं दशनोत्वतिजारुजम् तातलाभभविष्यंति कार्यसिद्धिताचगुप्तता पुण्ययत्नादितोनूनं सौभाग्यंपरमादयम् नवाम्बरंभूषणाञ्च
प्राप्यतिमानमुत्तमम् रसाब्दंव्यालवर्षेश्वशिशुक्रीड़ाविमोदिती पतनाद्दारुणोकष्टंभयंचाल्पभयंकरम् गृहेक्लेशविवादश्चस्वतःशांतिप्रजायते तातैतज्जन्म

कालान्तं प्रायश्चित्तेसुरक्षिता नानाकार्यंसुखंवृद्धि सुताचैतत्सुखप्रदा मानकीर्तिमहत्वेण नित्यमानन्दवर्द्धिनी त्वयत्नेविपरीत्यंही विपाकेपापजंफलम्

प्राप्यतेनन्दवर्षेतु सूर्याब्देचयथाक्रयः नानाकार्यप्रबन्धेणपुण्यात्सर्वसुखागमः उद्वाहश्चमहोत्साहोपतिरेवंसुप्राप्नुयात् तातमातसुखंसर्वं भ्रातबंधुसमायुता
दिव्याम्बर भूषणाञ्चप्राप्यत्यतिसुशोभनो कुलवेदप्रकाश्यतिग्रहकार्येषुसद्वरा प्रकाशोवर्द्धतेनित्यंषोडशाद्धावधिततः पतिप्रेमविवर्द्धतिरूपयौवनगर्भिता
किंचित्कष्टशरीरेपिज्वरार्त्तमुदरव्यथा पुनरानंदपुण्येणवर्द्धतेशशिवत्कला प्राप्यत्यद्धनगेंदुश्चविंशवर्षावधिक्रमात् भोगमैश्वर्यसंपन्नापुत्रजन्ममहोत्सवा
प्रसवेदारुणोकष्टंपुण्येपूर्णसुखागमः सुतापुत्रमहेश्वर्य साफल्यंमानुषीवपुः पञ्चविंशगतेवर्षे भाग्यस्यपरमोदयम् विवादकलहोदुक्खा शान्तिरेवंसुयत्नतः
नेत्रत्रिंशावधिवत्सः पूर्णपुण्यफलंभजेत विवाहादिमहोत्साहो यशमानविवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धप्रतिदिता रामरामाद्धमारभ्यचत्वारिंशगते
तथा तीर्थदेवालयेगताव्रतदानमहोत्सवाः चाल्पमृत्युभयंघोरंसुपुण्यात्सर्वशांतये ततिप्रेमकराबामाधर्ममूर्तिसुलक्षणा अयत्नेक्लेशितोनूनंबालकंकाल
वक्रगः दम्पत्योर्चिन्तनंबन्ध्वीह्यापत्तौमहदागतः एतस्मातकारणान्नित्यं पापशांतिसुखंलभेत् शशिभल्लमितेवर्षे पौत्रजन्मसुखप्रदा भूमिद्रव्याधिकंप्राप्ती
रचनागेहसुन्दरम् सर्वकार्यविनिश्चित्यः षष्टोषष्टसुवत्सरे तीर्थयात्राजपंपुण्यमीश्वराराधनेमतिः सर्वेच्छापूजितंलोकेनिर्बलत्वंदिनेदिने नेत्रसप्तावधिकाव्य
निर्बलत्वञ्चक्लेशिता दानधर्मविशेषेण अग्रजन्मस्यहेतवे मनेच्छापूजितंसर्वा पुत्रपौत्रधनादिजा पुत्रभाग्यविशेषेण माननीयामहत्यपि व्योमव्यालसु
वर्षाणिआयुपूर्णभविष्यति मार्गशीर्षेशुचोपक्षे पंचम्यांनिधनंनिशि अग्रजन्मसुपुण्येण राज्ञीवंसुगृहोद्भवा प्रकाशोविपिणीभूयाद्दानमंत्रमहत्फलं ॥

एतद्योगोद्भवाबालामध्यभाग्येन्सुन्दरी विद्याबुद्धिभवेन्न्यूनमीश्वराराधनेमतिः कुलवृत्तिप्रभावेणप्राप्यतेमानमुत्तमम् भाग्यवृद्धिर्महोत्साहोमासेवर्षेसुखा गमः नानाकार्यप्रबंधेणराजतिगेहभूषणा मनेच्छापूजितोनित्यंकार्यसिद्धौविलम्बता पूर्वपापप्रभावेणचिंतनीयामहत्यपि मृतवत्सातथावन्ध्याभूयात्पुत्र विवर्जिता त्रिरत्पंदारुणंकष्टंप्राणविनातिदुस्तरम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगंरतिदुक्खमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुयत्नेनपापशांतिसुखंलभेत् प्रजासुभोगवृद्धिश्च वाञ्छापूर्तिःसुकर्मणा सर्वचिन्ताविनश्यन्ति दम्पत्योर्प्रेमवर्द्धनम् विवाहोमंगलंकार्यं देवपुण्योत्सवेव्ययम् देवदर्शनजाप्रीतिः ईश्वराराधनेमतिः वपुरेवक्षमाफल्यं सुखंजन्मनिजन्मनि प्रतापोवृद्धिमाप्नोति शत्रुर्वैदासवच्चरेत् संपदाविस्तृतोगेहे वस्त्राभरणैसुशोभिता क्लिश्यतिपापरूपेण यावद्यत्नं नपापहम् एतस्मात्कारणात्पापं ज्ञात्वायत्नसमाचरेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ किमस्यादारुणोपापं मानुषीदुक्खकारणम् पूर्वजन्मकथंभूतात्सासर्वंकथयप्रभो: भृगुवाच ॥ श्रुणुवत्ससमासेणपूर्वजन्मकथाधुना क्षत्रीवंशसमुत्पन्नानृपवामासुधार्मिका सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुत्रप्राप्तिर्विलम्बता द्वयोर्ग्राहंप्रकर्तव्या पतिवास्यसुतार्थये किंचित्कालगतेवत्स अयंवामासुतंलभेन तदांतेचन्द्रवर्षेच द्वयोर्भार्यासुतंजनत् नृपप्रेमद्वयोर्बामा तुल्यमेवनसंशयः ईर्षातस्य कर्तव्यो नित्यंतप्यातिचान्तरे कदाचिद्दैवसन्नार्यां तस्यपुत्रविषंददेत् तेनमृत्युर्भवेद्बालः नारीयंपापमाश्रयः तस्यमातृमहत्क्लेशं शापंदत्वापुनःपुन तेनपापप्रभावेण त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् यावद्यत्नंनकर्तव्या पुत्रसौख्यविनिर्मुक्ता गृहेक्लेश विवादश्च नानाचिन्तापिवेदना तस्ययत्नंप्रवक्ष्यामि येनसर्वसुखागमः स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या शुद्धश्रद्धासुभक्तितः वह्निकोणंशुद्धहेमः परितोपिनगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण बालचित्रमनोहरम् वेष्टितां पीतपट्टेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा संस्थाप्यकलशेवत्सः तदग्रमन्त्रमाचरेत ॥ मंत्र ॥ ॐऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गंगोपालाय सर्वपापशमनाय विष्णुरूपायतेनमः पूर्वजन्मकृतशापपापंनाशयः सर्वकामनापूजयः पुत्रसौख्यंदेहि स्वाहा एतन्मंत्रजपेल्लक्षं गोपालस्तोत्र पाठकम् पूजयेत्सुविधानेन तस्यदानं समाचरेत अनुष्ठानविधानेन कृत्वापापैर्विमुच्यति सर्वसौख्यंलभेन्नित्यं पुण्यकर्मेणमानुषी भोगमैश्वर्यसम्पन्ना सफलंजन्मभूतले विवाहोमंगलंदिव्य मनेच्छासर्वपूजिता विस्तृतिर्वंशजादीर्घः प्रकाशोपुण्यकर्मणा दानपुण्यप्रभावेण सुखंजन्मनिजन्मनि मोदतेत्रिविधोनित्यं दम्पत्योः धर्मतत्पराः ॥

प्रथमाब्दोदरोऽव्याधि द्वितीयेदन्तपीडनम् मासेमासेसुखंजातं दानमन्त्रंसुयत्नतः तृतीयाब्देचतुर्थेच वृणावातेनतप्यति शिशुक्रीड़ाक्रमेणैव चञ्चला
प्रियवादिनी पुण्यरत्नादितोनूनं गृहमेवप्रकाशिता पतनाज्जायतेकष्टम् यत्नाच्चमहद्भयम् तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमोदिता पञ्चमेसप्तमेवर्षे
पितुलाभप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेन यद्रोगंजायतेभयम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि वस्त्राभर्णै सुशोभिता उद्वाहोमंगलंचिन्ता तातमातविचर्चिता
ग्रहकार्य्यरताबाला महत्वञ्चदिनेदिने अष्टमेद्वादशाब्देही तयोरत्नक्रमेणवै भाग्योदयंसुपुण्येण तातलाभमहत्यपि उद्वाहञ्चमहोत्साहो कुलकीर्ति
विवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति पूर्वयत्नादितःशुचिः दिव्याम्बरं भूषणंच बहुमूल्यमनोहरा भोगमैश्वर्यसंपन्ना प्राप्यतिनात्रसंशयः त्रियोदशाष्टचन्द्राब्दे
सुखसौभाग्यवर्द्धनम् रुपयौवनसंपन्ना पुण्यमेवप्रकाशिता मासेवर्षेसुखंजातं नूतनंसुखवर्द्धते ईश्वरंभक्तिभावेण पतिप्रेमविवर्द्धनी कष्टव्याधिमहत्वेण
सुताजन्मसुमंगलम् प्रतापभोगमैश्वर्य सुपुण्येसुप्रशंसिता नन्दसोमाद्बमारभ्यः वेदपक्षाद्बमध्यमा पुत्रकन्यासमायुक्ता पतिप्रेमविवर्द्धनी गृहक्लेश
विवादञ्च सर्वशांतिःसुयत्नतः शरविंशतिवर्षाणियावन्नभृगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नित्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी ममवाक्यश्रयेपुण्यं सर्वकष्टविनाशनम्
मंगलंविविधोत्साहोभाननीयासुसद्व्रता नानाकार्यंप्रबंधेणराजतिपुण्यवैभवाः इन्दुरामाद्बमारभ्यः चत्वारिंशावधिततः उद्वाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
महत्यपि वृहल्लाभप्रभावेण दम्पत्योर्मानवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला महत्वञ्चपदेपदे कष्टचिन्ताविनश्यन्ति पुण्योत्साहसुमन्दिरे देवदर्शनजाप्रीती
पवित्रंक्रियतिवपुः इन्दुवेदगतेवर्षे तथास्याद्बयोमभल्लके मासेवर्षेसुखंजातं भूमिलाभोतिगौरवम् प्रतागोवृद्धिमाप्नोति पुत्रभाग्योदयंभवेत व्ययलाभ
महत्वेण बहुकार्येप्रशंसिता सुप्रसिद्धधनाध्यक्षा गेहेवित्तंनभूरिशः पापकर्मकृतेबाधा विविधोदुक्खक्लिश्यति एतस्मात्कारणात्पुण्यं सुखार्थोयत्न
माचरेत येनसर्वसुखंलब्ध्वा अग्रजन्मेमहत्पदम् मुनिव्योलमितेवर्षे पूर्णायुसुसुखंभजेत् पुत्रपौत्रप्रगोत्रञ्च प्रजावृद्धिधनान्विता सर्वेच्छासुयुज्यन्ति
साफल्यंमानुषीतनं आश्विनेकृष्णपक्षेच नवम्यांनिधनंदिनं अनायासेतनंत्यक्त्वा यत्रकुत्रप्रशंसिता गतिरेवसुप्राप्यंति सुपुण्यादग्रजन्मनि पतिभक्ति
प्रभावेण संभवाचोत्तमेकुले महाराज्ञीत्वसाभूयाद्दयारुपासुसद्व्रता ध्यायेत्सत्यपदंदेवं शुचिसाध्वीपतिव्रता सत्यलोकेगमिश्यंति पुण्यतत्वंब्रवीमिते

एतद्योगोद्भवाबालासुस्वरूपासुलक्षणा। तातमातसुखासर्वामासेवेंसुमंगलम् पतिप्रतिष्ठितंचापिस्वसुरंकीर्तिविस्तरात् धनधान्यसमृद्धिश्चगृहकार्येसुकौशला बाल्यावस्थासुक्रीड्यंतिपितुर्हर्षसुखप्रदा मंगलंविविधोत्साहोकुलकीर्तिसुविस्तृतम् युवावस्थाविशेषेणभोगमैश्वर्यसंपदा पतिप्रीतिविशेषेणसर्वेच्छासुखपूजिता धनधान्यसमृद्धिश्चनेत्रगेहसुखाकरी सुस्वभावंसुयत्नेनपुण्यैश्वर्यप्रशंसिता मंगलंविविधोगेहेकुल कीर्तिप्रकाशिणी मानेनमहताविष्टामहत्वंसुपदाधिपा तीर्थयात्राव्रतंपुण्यंवृद्धावस्थासुतुष्यति पुत्रपौत्रादिजंसर्वंपुण्यैश्वर्यंसुदुर्लभा सर्वावस्थासुखंजातं माननीयासुसद्व्रता: शुचौपक्षेयथाचन्द्र: योगस्तद्वत्महत्पदम् चञ्चलश्चपलाप्राज्ञाकोमलांगीदयामयी कदाचित्क्रोधवेगेणतप्यत्यापिदुराग्रति: पूर्वपापप्रभावेणसुखेविघ्नपदेपदे आयुरेखाकरेचास्यखंडिताबाणरूपत: तातमातमहद्दुक्खमल्पायुश्चमहद्भयम् स्वामिशोकेविसंतप्तागृहेक्लेशमहत्यपि विवादकलहंचैवरिपुरुत्पद्यतेबहु: रोगशोकैर्वितप्यंति सुखेविघ्नपदेपदे अग्रजन्मेमहदु:खमेतज्जन्मादधोगता: शुकोवाचकिमसौदारुणोपापंजायतेपूर्वजन्मनि येनसर्वसुखेविघ्नंक्लिश्यतिविविधंस्त्रिया भृगुरुवाच श्रुणुवत्सपरगोप्यंरहस्यकथयाम्यहम् विचित्रमिदमाख्यानंकथायापूर्वजन्मनि पुराविप्रकुलोत्पन्नासुसद्रूपागुणान्विता शुभलक्षणसंपन्नानिवसत्तीर्थमाश्रमे धर्मकर्मरतानित्यंलोभाशक्ताविमंदधि: यात्रीतत्रेंदुनिवसञ्चास्यरूपविमोहिता तस्यद्रव्यहरंसर्वंप्राणांहत्वाकुकर्मिणी तेनतेषुगृहेक्लेशंपत्नीपुत्रोतिविव्हला तस्मात्पापाश्रयोनारीत्रिजन्मंहीपुन:पुन: पतिपुत्रात्मद्रव्येण क्लिश्यतिनात्रसंशयम् अल्पमृत्युभयंचादौ वैधव्यञ्चमहद्भयम् पूर्णसौख्यनप्राप्यंतिसुपुत्रंक्लिश्यतिमहान् तस्यशांति:प्रवक्षामि येनसर्वसुखंमहत् स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाविभववित्तरात् लक्ष्मीनारायणोमूर्ति यात्रीचित्रसमन्वितम् लेखयेद्रक्तगंधेणवेष्टितांपीतपट्टत: संस्थाप्यविधिवत्कुंभेपूजयेत्सुविधानत: तदग्रेमंत्रमाराध्यशशिलक्षसुभक्तित: । तत्रमंत्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं सर्वेश्वरायरमारमेशायतेनम: पूर्वजन्मांतरार्जितपापंनाशय२रक्षांकुरु२स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ आपदुद्धारकोमंत्रंधनस्यतदात्मकम् जपांतेहवनंकृत्वासावित्रीवीर्यसंपुटम् मूर्तिदानंतत:कृत्वाशैयादानादिभियुतंब्रह्मभोज्यंसुयत्नेनआशिर्वादश्चग्राहयेत् एवंकृत्वासुयत्नेनश्रद्धाभक्तिणरायणानित्यंसर्वसुखाविष्टाभाग्यवृद्धिमहत्यपि सर्वेच्छापूजितंलोकेनित्यंपुण्याश्रयेमति:अयत्नेक्लिश्यतिपापंभोक्तव्यंकर्मजंफलंतस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रद्धाभक्तिसमायतंव्रतदानरतश्चापियेनसर्वसुखागमम्

प्रथमेद्वितियेवर्षे दन्तबाधाविरेचनम् शरीरेदारुणोकष्टंसद्यःशांतिःसुयत्नतः मासेमासेविवर्द्धन्ति बालिकाशुचिलक्षणा तातलाभभविष्यन्ति गृहेमंगल
मेवच तृतीयेपञ्चमेवर्षेव्रणरोगेणपीड्यति मातृकष्टभयंचिन्तापुनरानन्दवर्द्धनम् क्रीड़तिविविधाबालाबादहास्यमनोहरा धावनात्पादकष्टञ्चस्वतःशान्तिः
प्रजायते षष्टमेचाष्टमेवर्षे तयोरन्तर्यथाक्रमः दानमंत्रसुपुण्येण भाग्यवृद्धि दिनेदिने तातप्राप्तिमहोत्साहो सर्वसौख्यसमागमः बालाप्रीतिकृतेक्रीड़ाचञ्चला
श्चपलामति भ्रातभगनीसमायुक्तागृहेद्रव्यव्ययंमहत् नन्दवर्षसमारभ्यःयावदद्धेचद्वादशे प्रतिष्ठामानविभवाः वर्द्धतेपुण्यकर्मणा तातमातमहच्चिंताविवाहो
मंगलंशुभम् नवांबरंभूषणञ्चबहुमूल्यमनोहरा प्राप्यतिकन्यकाशुभ्रामानेनमहतावृता त्रयोदशाष्टचंद्राब्देमध्यगाथासमासतः गृहकार्येसुकुशलावस्त्रभर्णौ
सुशोभिता रूपयौवनसंपन्नापतिप्रेमविवर्द्धिनी सर्वसौख्यागमोनित्यंकष्टचिन्ताविनश्यति भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेसुखनूतनम् ऊनविंशाद्धविंशेचशरने
त्राद्धमध्यगे पूर्वपापकृतेबाधाहानिशोकविचिंतनम् नसुखप्राप्यतिपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् सुयत्नेसर्वसौख्याणिपतिपुत्रधनादिजाः धर्मवृत्तिप्रभावेणयश
कीर्तिश्चनिर्मला शरीरेसंभवोकष्टंपुनःशांतिःभवेत्सुखम् रसपक्षगतेवर्षेयावत्सून्यत्रयाद्धके विवाहोमंगलंकार्यव्ययंतत्रमहद्धनम् मानेनमहताविष्टा यशं
भूरिसुकर्मणा पतिकीर्तिविशेषेणलाभवृद्धियथाक्रमः त्वयत्नेविपरीत्यंहीं निस्फलंजन्मपत्रिका शशिवह्निमतेवर्षे रसरामान्तरोतथा पतिसौख्यविशेषेण
पुण्यपात्रासुभानुषा सुयात्रामंगलंकार्यं पुण्यदेवोत्सवेव्ययम् मुनिवैश्वानरेवर्षे रामवेदावधितथा प्रकाशोविपणीभूयात्पापाच्छोकमहद्भयम् ईशभक्ति
सुपुण्येण सर्वैश्वर्यंसुसम्पदा नित्यंसर्वसुखाविष्टा वर्द्धितापिल वसा वेदचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणक्रमादितः भूमिलाभविशेषेण रचनागेहसुन्दरम्
पुत्रभाग्यमहत्वेण कुलेकीर्तिप्रशंसितो सोमभल्लाद्धमारभ्यः शरबाणसुवत्सरे पौत्रसौख्यविशेषेण मोदयन्तीसुभामिनाः सुशोभितेकुलतेन कल्याणी
प्रियवादिनो विशेषोमंगलंनित्य पुण्यपात्रिःप्रशंसिता दानमंत्रमहत्पुण्यं सर्वापत्तिक्षयंकराः यावन्नभररसेवर्षे तावत्पूर्णसुखभजेत् मनेच्छापूजितापूर्वे
व्रतदानहितेरताः तीर्थदेवालयेप्रीतीपुण्योत्साहसुखंसदा दीनानांपालनेपुण्याद्रिपुरोगविनाशनम् तीर्थयात्राविशेषेणनिर्बलावातपीड्यति किंचित्कष्ट
शरीरेच पुत्रपौत्रःसुसेविता श्रावणेशुक्लपञ्चम्यां निधनंचास्यनिश्चितम् अग्रजन्मसुपुण्येण दिव्यदेहासुलक्षणा महाराज्ञीवसाभूयात्पुण्यैश्वर्यंसुसर्वदा ।

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखदोभवः एतद्योगोद्भवाबाला चारुहास्यविलासिनी शुभकर्मरता नित्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता तातकीर्तिकराशुभ्रा कोमलांगीसु लक्षणा मानेनमहता विष्टोमोदितिपुण्यकर्मणा तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवाः मानेनमहता विष्टायशसाधनतत्परा पतिपुत्रात्मद्रव्येणासाफल्यंसर्व वैभवाः सुखेशोकप्रदारेखासंभवोपूर्वपापजम् तस्यशांतिःसुयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत् पतिपुत्रान्वितोभूयात्सफलंजन्मभूतले बातरोगेणपीड्यन्तिप्रसवं कष्टदारुणम् आयुरेखाकरेचास्य त्रुटिताबाणरूपतः तत्रदैवाल्पसंधिश्च अल्पजीवित्वदोषदम् दानमन्त्रंसुपुण्येण पूर्णायुःसुखसंपदा चन्द्रजीवपरंप्रीती चिन्ततिविविधैरपि पूर्वकर्मविपाकेणनसुखंप्राप्यतिध्रुवम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगाः पतिपुत्रात्मजादयः पापशांतिःप्रकर्तव्यासर्वेच्छासुखपूजिता शुक्रोवाच पूर्वजन्मसुपाख्यानंकथयस्वमहामते किमसौदारुणोपापंनारीदुःखश्रयोमहान् भृगुवाच श्रृणुत्वंमुनियत्पापंपूर्वजन्मकथाधुना विप्रवंशोद्भवावामासर्व लक्षणासुन्दरी तीर्थाश्रमेनिवसतिपतिपुत्रादिभिर्युता ईश्वराराधनेप्रीतीगृहकार्यरताभवेत् सर्वद्रव्यव्ययंलोकेनिर्द्धनात्वतिक्लिश्यति प्रतिष्टामानमधिकं द्रव्यसून्यविचिंतया यात्रीतत्रैकतद्गेहेनिवसद्रव्यपूरितम् तस्यद्रव्यहरंसर्वलोभग्रस्ताधनामतिः निशाभोज्यविषंदत्वाजनघातश्चकारयेत् तेनपापाश्रयो भूयाददुःखितात्रेत्रिजन्मनि कालेनमृयतिस्तत्र पुण्यात्पापाश्रयोमहान् किंचिद्दानादिमंत्रेणइश्वरंभक्तिभावतः संभवाचोत्तमेगेहे पुनःपापाद्रधोगता पतिणाप्यतिक्लिश्यंतिदारिद्रंभयविह्वलाः बाल्पमृत्युभयंघोरंविविधोद्वेगतप्यति नसुखंसुस्थिरोनारीयावद्यत्नंनपापहम् शुक्रोवाच कस्मिन्यत्नकृतेतात महापापैर्विमुच्यति कथयस्वप्रसादेण कृपास्तियदितेमयि । भृगुवाच । श्रृणुवत्ससमासेण परंगोप्यमतंहियत् यस्याश्रये सुखासर्वाः प्राप्यतिविविधांगना कांश्यपात्रेघृतंपुष्टः प्रचुरंद्रव्यभूषणम् आच्छादितंस्वेतपट्टैराचार्यायःप्रदापयेत मन्त्रजाप्यतदर्थेवै दानपात्रादिजोत्तमः । तत्रमंत्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं शंकराय सर्वापतिहरायः श्रीशिवायतेनमः ममयजमानस्यपूर्वजन्मकृतघोरपापतापंनाशयः २ सर्वसुखसिद्धिप्रदाय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐइन्दुलक्ष प्रमाणेन अनुष्ठानविधिर्यथा शुचिस्थानेजपेद्भक्त्याः सर्वपापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेणसर्वसौख्यसमागमः सर्वकार्योपिसिद्धयन्तिमनेच्छाबहूपूजितम् दानमंत्रादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते मंगलंविविधोत्साहाधनपुत्रादिजैरपि गृहक्लेशविनश्यन्तिपत्यरत्यन्तवल्लभा दिनेदिनेमहत्तेजोसुपुण्यात्सर्वसम्पदा

जन्माब्देद्वितियेवर्षे वा नावृद्धिदिने दशनोत्वतिजाकष्टं रुदन्तौभयविह्वला पुनश्शांतिसुयत्नेन तातमातसुखंलभेत् भ्रात जन्ममहोत्साहो तातपुण्येण
भूतले भोगाप्रवैभवोवृद्धिवस्त्राभर्णौसुशोभिता बालक्रीडाविशेषेणसुहास्यश्चरुरोदितीवह्निःषष्ठवेदाब्देऋतुवर्षावधिक्रमात् मासेमासेसुखंजातं भोगमैश्वर्यं
नूतनम् तात । महत्वेण सुपुण्यंफलदोमहान् मंगलंचर्चयागेहो नित्यमेवप्रकाशिता शरीरेजायतेकष्टं ज्वरतस्तृणादयः पुण्याच्छांतिसुखंनित्यंविस्तृतिं
सर्ववैभवाः नगाब्देव्योमचन्द्रेतुगृहकार्यविचिन्तनम् विद्याभ्यासरताकिंचिच्चञ्चलाश्चपलामतिः शिशुणांसंगमेप्रीतीक्रोधेणातप्यतिस्वयम् पतनाज्जायते
कष्टंज्वरार्तोवारिजभयम् सर्वमेवसुयत्नेन शांतिभूयातसुखंलभे । सुसंगाद्दानपंत्रेण भाग्यपात्रीप्रशंसिता इन्दुसोमाद्धमारभ्यः शरचन्द्रांतरेतथा उद्वाहं
सुमहोत्साहो कुलकीर्तिमहत्त्वंपि रूपयौवनसंपन्ना वस्त्राभर्णौसुशोभिता भोगाप्रवैभवोवृद्धि पतिप्रेमविवर्द्धिनी स्वकृत्यकुशलाबाला महेश्वर्यप्रकाशिणी
नानाकार्यप्रबंधेणशोभितागेहभूषणा रसचन्द्रगताब्देतुविंशवर्षावधिक्रमात पुण्येच्छापूजितोनित्यंपतिपुत्रात्मजादयः मंगलंविविधोत्साहोगृहंयेनप्रका
शिता मानकीर्तिविशेषेणमहत्वञ्चपदेपदे सर्वकष्टक्षयंनित्यंसुपुण्यंलाभदोमहान् प्रतापभोगमैश्वर्यं सर्वमेवप्रशंसिता शशिपक्षगतेवर्षे व्यालपक्षक्रमादितः
सुतापुत्रसमायुक्ता पत्यरत्यंतवल्लभा दम्पत्योरल्पजकष्टं दानमन्त्रेणशांतये पूर्णायुसुखमेधत्तौ भाग्यवृद्धिसुयत्नतः नन्दनेत्राद्धसंप्राप्यः वेदरामसुवत्सरे
तयोरन्तमहोत्साहोउद्वाहादिव्ययोमहान् कुलकीर्तिमहत्वेण सद्व्रतासुप्रशंसिता विवादकलहारिष्टंविविधोदुःखकारणं वैधव्यादिमहादोषंसुयत्नेनक्षयं
सदा पौत्रजन्ममहोत्साहो शताद्धंवत्सरावधिः तीर्थयात्राव्रतंपुण्यं कृत्वासर्वार्थसिद्धिदम् महत्वमधिकंलोके प्राप्यतिपुण्यमाश्रये भूमिलाभविशेषेणप्रजा
वृद्धिसुविस्तरात् मुनिपक्षाद्धमारभ्यः ज्ञात्वाप्राणहरिदशा तेभ्यःसंरक्षितस्यापि नदाध्यायविधानतः छायापात्रान्नदानेन सर्वाबाधाविनश्यति पुत्रपौत्रोदय
सर्वाराज्ञाकारीसुखप्रदा महेश्वर्यप्रतापेणसाफल्यंमानुषीवपुः त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंनिस्फलंजन्मपत्रिका ह्य तस्मात्कारणात्पूर्वेपापहंपुण्यमाचरेत प्रतियत्न
सुखोत्साहोनंदव्यालाद्धजीवती प्रपौत्रंजन्मतोलोकेकुलेच्छापिनिवृत्तती मासेभाद्रपदेशुक्लेनिधनंसर्वपूजिताकुलेप्रशंसिताचापिप्राप्यतिहीशुभांगतिपति
व्रतासुधर्मात्मावरंसर्वेप्सितंलभेत् ईश्वरंकृपयात्काव्यमहाराज्ञीवसाभवेत् पुनःस्वर्गगताबामापुण्येकिंचिन्नदुर्लभम् एवंपुण्यपरंतत्वंसुज्ञातव्योहीनिश्चितम्

स्त्री० १५

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखकारकः एतद्योगोद्भवाबाला सर्वसौख्याधिकारिणी शुभलक्षणसम्पन्ना सुपुण्यात्मादयामयी कोमलांगोसुसद्रूपा दिव्या लंकारभूषिता सर्वकार्यसुकुशला स्वगृहसुप्रशंसिता तातमातपरंप्रीती पतिभक्तिपरायणा नानाकार्यप्रबंधेण राजतेगेहसम्पदा पूर्वपापाद्भवोकष्टं अल्पमृत्युमहद्भयम् पुत्रसौख्यमहाविघ्नं पतिरत्यंतक्लेशिता प्रायश्चित्तमहादानं सुपुण्याद्रक्षणंसदा तेनसर्वसुखनित्यं राज्ञीवंसर्ववैभवाः प्रकाशो विपणीभूयाद्धासदाभिश्रमोदिता यत्रदृष्टिगतंतत्रः सुखसौभाग्यदर्शितम् सिद्धंतिसर्वकार्याणि दिव्यरत्नैःसुवेष्टिताप्सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा अयत्नेपापजंकष्ट भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा ।। शुक्रोवाच ।। कथयस्वमहायोगिन पूर्वपापस्यकारणम् येनक्लेशाश्रयोलोकेवनितापुण्यरूपिणी ।।भृगुवाच।। श्रृणुपुत्रसुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम पूर्वजन्मान्तरोगाथा येनदुःखाधिकारिणी पुराप्रिकुलेवत्सः जातोयंपुण्यभाजिनी दानधर्मप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत कुसंगाद्विशयाशक्ता मतिकामेणमोहिता पतिराज्ञानमण्यंति गृहत्यक्त्वादुराग्रत्ति तीर्थयात्राविशेषेण नित्यंकृत्वामनेच्छितम् सर्वद्रव्यक्षयंकृत्वा पतिरत्यंतदुक्खदा क्लेशितंशापितस्तेन त्रिजन्मदुक्खितोमहान् तेनपापाश्रयोनारी एतजन्मेतिदुक्खिता प्राप्यतिविविधंक्लेश पुण्याभावेहिभूरिशः तद्यत्नसप्रवक्षामि प्रायश्चितक्रमेणवै शुद्धहेमकृतोपत्रंविस्तृतंसुनगांगुलम् शुद्धितंसुविधानेन रामकोणमनोहरम् लेखयेद्रक्तगंधेण पतिदेवसुमूर्तिमान् शांकरीमुद्रयायुक्तो स्वेतपट्टेणवेष्टितम् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे महेशंभक्तिभावतः पूज्येत्सुविधानेन यथाविभवविस्तरात् तदग्रे जापितामंत्रं शशिलक्षसुभक्तितः ।। तत्रमन्त्रः ।। ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ह नमः शंकराय पूर्वजन्मान्तराजित शापपापंहराय सर्वसौख्यंवरदाय पतिदेव प्रसन्नायभद्रंकुरु२स्वाहा हंशंश्रीक्लींहीऐंओं सावित्रीजापयेद्भक्त्या आपदुद्धारकंतथो आवाह्य सर्वदेवाणां पूज्यंविभवविस्तरात् यज्ञान्तेमूर्तिसंकल्पं शैयादानादियत्क्रमः आचार्यायःप्रदातव्या आशिर्वादश्चग्राहयेत ईश्वरंभक्तिभावेण विप्रभोज्यंसुयत्नतः एवंसर्वविधानेन कृत्वातन्त्रमुदारधिः सर्व पापविनिर्मुक्ता वनिताभाग्यभाजिनी नित्यंसर्वसुखंलब्धवा पतिपुत्रधनादयः सिद्धन्तिःसर्वकार्याणि प्रकाशंपुण्यजोमहान् राज्ञीवंराजिताभूमौ सफलं जन्मभूतले पुत्रभाग्य महत्वेण सुप्रसिद्धाः सुपूजिता एवंपुण्या श्रयेनित्यं फलंसर्वेप्सितंभजेत अथाद्यश्च समासेण कथायाः श्रृणुभार्गवः

जन्माब्देनेत्रवर्षान्तंदिवेमासेसुखंगता शरीरेजायतेकष्टंभूतछायाश्चविह्लला किंचिद्दानादियत्नेनश्रेयोमानंसुखोत्सवम् रामाब्देत्रागावर्षेचबालावृद्धिर्यथा
क्रमः वादहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ामनोहरा व्रणविस्फोटकोव्याधी दन्तबाधाविरेचनम् तातजन्ममहोत्साहोकुलेवृद्धमृतोत्सवम् पुण्ययत्नादितोनित्यं
सर्वकष्टविनाशनम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि तातमातसुखाकरी ऋतुवर्षेचनन्दाब्दे तयोरन्तसुखागमः गृहकार्यरताबाला क्रीडतिविविधंतथा व्ययोतात
महच्चिंताकुलकीर्तिविमोदिता पूर्वंयत्नसुपुण्येण कृत्वाभाग्योदयंमहत् व्योमेन्दुवर्षमारभ्य यावद्वेदनिशाकर तावत्कालावधिःपुण्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी
स्त्री० दिनेदिनेमहत्तेजो रूपयौवनमावृता भोगमैश्वर्यसंपन्ना नेत्रगेहप्रकाशिणी ज्वरार्तमुदरव्याधी सुपुण्याच्छांतिसर्वदा गतेपञ्चदशेवर्षेविंशवर्षावधिततः
१६ सर्वेप्सितंसुखंलब्ध्वा पुत्रजन्मविमोदिता मानकीर्तिसुखोत्साहो विस्तृतिसर्वसम्पदा यावद्यत्नंनकर्तव्यापापादुःखैर्वितप्यति अतस्तंशांतिपुण्येण सर्व
सौख्यप्रदोमहान् शशिपक्षाद्धमारभ्य शरपक्षाद्धमेवही पुत्रकन्यासुखाविष्टो धनधान्यैसुपूरिता प्रकाशोविपणींभूयात्स्वकुलेसुप्रशंसिता दिनेदिनेमहोत्सा
होऽव्ययलाभमहत्यपि रसनेत्रसुवर्षाणि व्योमरामक्रमादितः दानमंत्रसुपुण्येण भगवद्भक्तिभावतः सर्वाऋष्टक्षयंनित्यं मंगलंविविधोमहान् उद्वाहादि
महत्वेणकीर्तिरेवंसुविस्तरात् गृहेक्लेशविवादश्च सर्वशांतिसुयत्नतः सोमत्रिंशाद्धगेकाव्य बाणत्रिंशाद्धमेवही प्रजाद्रव्याधिकंगेहे नारीपुण्यप्रकाशिणी
दम्पत्योरल्पजंकष्टंसुखेविघ्नभयप्रदा महामृत्युञ्जयोजाप्यमापदुद्धारसंपुटम् स्वर्णमूर्तिमहादानंसप्तअन्नतुलान्विता मुक्तकष्टसुखाविष्टा कृत्वातन्त्रमुदारधि
पूर्णायुःसुखमेधावीमोदमानंगरीयसी रसरामाद्धगेकाव्यः चत्वारिंशावधिततः मनेच्छापूजितोनित्यं शुचिसाध्वीसुखाकरी तीर्थयात्राजपंपुण्यं कृत्वा
चापिदयामयी सुखैश्वर्यप्रकाश्यंति सुतभाग्योदयंमहत सर्वेच्छापूजितंलोके वर्षेव्योमशरावधिः पतिकार्यप्रबंधेण राजतेपुवैभवा विस्तृतिर्वंशजंलोके
महेश्वर्यंसुविस्तरात् भयंकष्टविनश्यंति गृहशोभासुनूतनम् शशिपञ्चगतेवर्षे व्योमषष्टांतरावधिः पुत्रपौत्रैर्महत्वेण विमलंभाग्यशालिनी दासबाहनजैनित्यं
सुखंसर्वेप्सितंलभेत् दानधर्म्मरतानित्यम अजन्मस्यहेतवे तदान्तेवन्हिव्यालाब्दे पूर्णायुःकथ्यतोमुनिः धनपुत्रप्रपौत्रैश्चसुकीर्तिख्यातिनिर्मलं दानधर्म्मा
दितोनूनंगारेवसुसत्तमा अथाग्रेसुकुलोत्पन्नानृपसौख्याधिकारिणी सर्वेप्सितंवरंलब्ध्वा दानधर्मैःसुसद्व्रता इतिग्रंनिश्चितंपुण्यं चान्यथानोदिसुखम्

एतद्योगप्रभावेण बालसौम्यसुखाकरी द्विमासेसुखंजातं विस्तृतिंसर्ववैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण राजितागेहसम्पदा रूपयौवनसंपन्ना सुखसौभाग्यमा
करी तातमातसुखास्सर्वेपतिप्रेमविवर्द्धनी सिद्धन्तिःसर्वकार्याणिवस्त्राभर्णैःसुशोभना शरीरेजायतेकष्टं रामग्रल्पभयप्रदा पतनाद्दारुणोकष्टंपूर्वपापैर्वि
तप्यति तेभ्यसंरक्षितापुरायं पूर्णायुसुखसर्वदा धनधान्यान्वितोलोके पुत्रकन्यासमावृता पतिभाग्यमहत्वेण शुचिसाध्वीप्रशंसिता कीर्तिश्चनिर्मलोभूता
उद्वाहादिव्ययोमहान् ईश्वरंभक्तिभावेण साफल्यंमानुषीतनम् अनुष्ठानमहादानं सर्वपापैर्विमुच्यति धनसंतानयानश्च कुटुम्बेसुखसर्वयो क्लिश्यतिनात्र
संदेहोयावद्यत्नंनपापहम् पतिपुत्रात्मद्रव्येण नसुखंसुस्थिरागृहे ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं कृयतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयोलोके शुचिसौभाग्य
रूपिणी ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिप्रमाणेण पूर्वजन्मकथाधुना येनदुक्खाश्रयोनारी सुखेशोकंभयाकरी पुरान्नृपकुलेजाता ग्रामरामधनाधिपा महेश्वर्य
प्रतापेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता मानेनमहताविर्थाक्रियतिग्रामसाशनम् चैकोद्विजवरोतत्रः रूपयौवनसुन्दरम् धर्मव्रतरतोनित्यं निवसदेवमन्दिरे कामबाण
मनोद्वेगंतेनरूपविमोहिता दानपुरायकृताराज्ञी द्विजलोभगृहागतः द्वयोप्रीतिमहत्वेण तेनविप्रधनीभवेत बहुकालसुखंभुक्त्वा नारीयंप्रेमबन्धनम् विप्र
चान्यस्त्रियप्रीतितस्यरूपेणविव्हलः ज्ञात्वायं सर्ववृत्तान्तंनृपवामातिरोषिता विप्रप्राणहरंतत्रतेनपापाश्रयोमहान् दानधर्म्मरतापूर्वंतेनसौख्याधिकारिणी
द्विजघातमहापापं त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् एतज्जन्मंसुपुरायेण पापशांतिःसुखंभजेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्यप्रसादेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा पूर्वपापैर्वि
मुच्यंति येनसर्वसुखागमः ॥ भृगुवाच ॥ जाह्नवीतीरगोभूत्वाशुचितीर्थस्थललेथवा हेमपत्रप्रकर्तव्योवाणमुद्रासुशोभनम् लेखयेद्रक्तगंधेणद्विजचित्रमनो
हरम् वष्णावामुद्रयायुक्तोसर्ववीर्यमलक्रुतम् वेष्टितांपीतपट्टेणसंस्थाप्यकलशोपरि तदग्रेमंत्रमाराध्यः पुजयेत्सुविधिर्यथा भगवद्भक्तिभावेण प्रायश्चित्तरतो
द्विजाः जाप्यमंत्रमिदम् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वरायविष्णुरूपाय, महापुरुषायतनमः पूर्वजन्मकृतमहापापतापशमनायरक्षांकुरु२ स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ
इतिमंत्रजपेलक्षगायत्रीसंपुटंकृता बटुकोमंत्रमाराध्यंसवदेवैसुपूजिता हवनंविप्रभोज्यश्चकृत्वाविभवविस्तरात शैयादानादिकंसर्वंमूर्तिसंकल्पमाचरेत् एवं
सर्वद्विजंतोष्यः आशर्वादंसुग्राहिता एतद्यत्नप्रभावेणसर्वपापविनाशनम् पूर्णायुसुखमेशावी पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यमहत्वेणपुरायंसर्वेप्सितःप्रदम्

आद्याब्देवह्निवर्षान्तंबालावृद्धिदिनेदिने मासेमासेमहोत्साहोगृहेमंगलमोदिता शरीरेकष्टसंपन्नादंतवाधाविरेचनम् सर्वशान्तिसुयत्नेन तातलाभसुख
प्रदम् वेदवर्षसमारम्भमुनिवर्षान्तरेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चबालिकासुप्रियंसदा शिशुक्रीड़ामहत्वेणदृष्टिहास्यमनोहरा बृणवातोद्भवोकष्टंपतनाद्दारुणो
भयम् पुण्ययत्नादिनोनित्यं सर्वशान्तिसुखंलभेत् तातमातपरंप्रीती वस्त्राभरणैसुशोभिता गृहकार्येसुकुशला पुण्यरूपासुशोभना व्यालवर्षेवसंप्राप्य
नेत्रसोमतथान्तरे तातमातमहच्चिन्ता व्ययलाभविवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो गृहेमंगलमेवच कीर्तिश्चनिर्मलीयुता कुलंतेनप्रकाशिता दिव्याम्बरं
भूषणाश्चप्राप्यतियपरंप्रिया पुण्ययत्नादितोनूनं प्रकाशोविपणीभवः सुयोग्यंपतिप्राप्यं गृहेसर्वसुखंलभेत् त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमम्
भोगमैश्वर्यसम्पन्ना प्रकाशपुण्यजोमहान् नानाकार्यप्रबंधेण गृहसम्पद्विवर्द्धनी सर्वकार्येसुकुशला पतिरत्यन्तवल्लभा ऊनविंशेचविंशाब्दे शरनेत्र
तथान्तरे सर्वसौख्यसमृद्धिश्चभोगमैश्वर्यनूतनम् पुत्रकन्यासमाविष्टो दम्पत्योप्रेमवर्द्धनः मंगलंविविधोगेहे जायतेनित्यनूतनम् प्रकाशोविविधंनित्यं
यशमानविवर्द्धनम् सर्वशांतिःसुयत्नेन यद्रोगंदारुणोभयम् रसलक्षगतेवर्षे नभरामतथान्तरे सर्वेच्छापूजितंलोके पूर्वपुण्येणभूतले मंगलमहदागम्य
महत्वमधिककुले व्ययलाभमहोत्साहो वनितापुण्यरूपिणी नसुखंप्राप्यतिपूर्णं यायद्यत्नंनपापहम् इन्दुरामाद्धमारभ्यः चत्वारिंशा वर्धिततः
पुण्ययत्नादितोनूनं विविधोमगलमहान् उद्वाहादि महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशंसिता दम्पत्यरलजंकष्टं पुनरन्ते महद्भयम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं
सप्तग्रन्तुलातथा कृत्वासवसुखंलोके परमैश्वर्य दुर्लभाः शरीरेदाह्न संप्राप्यः व्योममल्लाद्धकेतया तयोरन्त विशेषेण भाग्यंसुमहतोदयम्
पतिलाभ महन्नित्यं रचनागेह सुन्दरम् पौत्रजन्म महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशंसिता प्रतापमानमधिकं नित्यवैधर्म्म तत्पराः देवदर्शन तीर्थेषु
पवित्रंमानुषीतनम् पुत्रपौत्रसुखाःसर्वे नित्यवैधर्म्म कर्म्मणी रताः परिसुखंनित्यं नभषष्ठान्तराद्धके सुकीर्तिख्यातिपुण्येण सर्वेच्छा सुखपूजिता
व्यालषष्टाद्धमायुष्यं क्रियानेत्रनगाद्धकौ प्राप्यति सुगतिर्भवा अनायासेतुनंत्यजेत् पुनर्द्विजकुलोत्पन्ना सतिसाध्वीपरंतया पुण्यैश्वर्यं लभेत्सर्वाः
सत्यलोके गमिष्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्यो मुनिदुर्लभः अयत्नेक्लिश्यतिपापं निस्फलं जन्मपत्रिका मद्राश्रयस्य परंतत्वं पुण्यमेव सुनिश्चितं

एवंग्रहेष्टमोनेन दिव्यभागासुलक्षणा मध्यमांगीसुसद्रूपा गौरवर्णामनोहरा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता तातमातसुखप्रदा नानाकार्यप्रबन्धेण राजतेबहुसम्पदा दासवाहनजैर्नित्यं मनेच्छाबहुपूजिता पूर्वपापेणसंतप्ता सर्वसौख्याधिकारिणी रोगशोकेणक्लिश्यंति अल्पमृत्युमहद्भयम् नानाचिंतातुरोभूमौ पतिपुत्रात्म चिन्तनम् नसुखंसुस्थिरोनित्य यावद्यत्नंनपापहम्पतनाद्दारुणोकष्टं विविधंदुक्खमाजिनी प्रायश्चित्तमहादानं मंत्रजाप्यंसुभक्तितः पापशान्तिःसुयत्नेन कृत्वासर्वसुखंभजेत् यावद्यत्ननकर्तव्या भोक्तव्यंकर्मजंफलम् ॥शुक्रोवाच॥ पूर्वपापकथंतातः कथयस्वप्रसादतः केनशांतिः भवेत्तस्य श्रवणस्यममेच्छया ॥भृगुवाच॥ शृणुवत्सममासेण सर्वमेतद्वदाम्यहम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्ना नारीयंपूर्वजन्मनि शुभलक्षणसंपन्ना दिव्यरूपामनोहरा पूर्वपुण्यप्रभावेण राज गेहाधिकारिणी तन्नृपस्यद्वयोभार्या पुत्रकन्यासमावृता नित्यधर्मरतासाध्वी पतिभक्तिपरायणा मदोन्मत्तोपिसःसज्ञो चास्यरूपविमोहिता पत्नीपुत्र महत्क्लेशंदत्वायंनित्यतुष्यति तेनप्राप्यमहदुक्खधर्म्मभार्यामृतिंगता तस्यपुत्रोविताड्यंतिनारीयंपापमाश्रयः त्रिजन्मक्लिश्यतिनूनंएतज्जन्मेवितप्यति पापशांतिःनकर्तव्या सुखेविघ्नमहत्यपि गृहेक्लेशविवादश्च पतिपुत्रात्मदुक्खिता अन्यैश्चविविधोदुक्खाः प्राप्यतिपापमाश्रयः तस्यशान्तिरनुष्ठानं कथयामित्वयाधुना स्वर्णपत्र विधानेन कृत्याविभव विस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुद्धस्थाने सुभक्तितः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तंसमारभेत् विष्णुशक्तियुतचित्र लेखयेद्रक्तचन्दनम् तत्रैवराजपत्निश्च रामपुत्रान्वितं लिखेत् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे प्रायश्चित्तविधानतः पूजयेद्भक्तिभावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत् ॥ तत्रमन्त्र ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवानाय आदिशक्तिसहिताय सर्वजगद्रक्षणायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जित पापं हरहररक्षां कुरु कुरु स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ इतिमंत्रजपेलक्षं सर्वदेवैः सुपूजनम् सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिक्षयंकरः कृतिदान ततः कृत्वा शैय्यादानादिभिर्युताः हवनंविप्रभोज्यश्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंपुण्याश्रयोलोके पुनः सर्वसुखंभजेत् पतिपुत्रात्मजादीणां मनेच्छासर्वपूजिता शुचौपक्षेयथाचन्द्र योगस्तद्वत्महत्फलम् मंगलंविविधोनित्यं पूर्णायुः सुखसर्वदा प्रतिष्ठामानविभवाः सुप्रसिद्धाप्रशंसिता त्वयत्नेविपरीत्यंहि पापरूपेणदुःखजम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेत् शुचिसुन्दरीसौभाग्यी रूपलंजनममानुषी

आद्याब्देबालवर्षांतंबालक्रीडायथाक्रमं मासेमासेसुखंजातं शरीरेकष्टसंभवाः रुदन्तिभयमाक्रान्ता भूतछायावितप्यति घृणवातोदरःव्याधी दन्तपीड़ा
विरेचनम् सर्वशांतिसुयत्नेन पतनाद्दारुणोभयम् पूर्वपापक्षयोकाव्यः तातलाभप्रदोमहान् भ्रातजन्ममहोत्साहो कन्यकाभाग्यभाजनी चञ्चलाश्चपलाबाला
दृष्टिहास्यमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति तातमातपरंप्रिया रसाब्देव्योमचंद्राब्दे तयोरन्तसु मंगलं भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यं भोगमैश्वर्यसंपदा तातचिंताहृदेगुप्तं
कुलवधुविरोधिता किंचिद्दानादिमंत्रेण भगवद्भक्तिभावतः श्रेयोमानंप्रतिष्ठाच मंगलंमहदागतः गृहकार्येसुकुशला कन्यकाशुचिलक्षणा इन्दुचन्द्राब्द
मारम्यः शरचंद्राब्दमेवही भोगाप्रवेभवोवृद्धिवस्त्राभर्णैसुभूषिता रूपयौवनसंपन्नासर्वसौभाग्यरूपिणी पतिप्रेमविवर्द्धतिगृहकार्येसुकौशला यद्रोगंजायते
देहोसर्वशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिततः पुण्यैश्वर्यमहत्वेण मनेच्छावहूपूजिता कष्टश्चमहतोभूयात्पुनरानन्दमंगलम् पुत्रकन्यासुखा
विष्टं दम्पत्योप्रेमवर्द्धते गृहक्लेशविनश्यति लाभवृद्धिःसुयत्नतः अयत्नेक्लिश्यतिबामा सुखेशोकसमागमः एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेद्
विंशैकोपञ्चविंशाब्देसुपुण्याद्भाग्यभाजनी पतिपुत्रात्मद्रव्येणतुष्यतिविविधंगृहे विस्तृतिर्वंशजंनित्यंसुप्रकाश्यंतिभूतले मंगलंविविधोत्साहोयशमानवि
वर्द्धनम् अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् रसनेत्राब्दत्रिंशेतुपतिलाभविवर्द्धनम् कुलकीर्तिवृहन्नित्यंरिपुवोदासवच्चरेत् तुष्यतिमिष्टवाक्येणपितरंविप्र
साधवाः तीर्थयात्राजपपुण्यदंपत्योमोक्षसाधनम् शशिरामाब्दसंजातंशररामतथांतरे उद्वाहादिमहोत्साहोकुलंचातिप्रशंसिता अयत्नेविपरीत्यंहीपूर्वकर्म
विपाकजम् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसुखार्थोपुण्यमाचरेत वांच्छापूर्तिप्रजायेत तपतेजोमहत्यशः रसेवन्हिसुवर्षाणिव्योमचत्वारिवत्सरे तयोरन्तर्महत्वेणसफलं
मानुषीतनम् मनेच्छापूजितासवैंकुलवृद्धाप्रशंसिता रामवेदगतेवर्षे गौत्रजन्ममहोत्सवं पूर्वयत्नेनकर्तव्यानिस्फलंजन्मपत्रिका सून्यपञ्चावधिकाव्यपुण्यतीर्थे
व्ययोमहान् अल्पमृत्युभयंघोरंवर्षेरामशरांतरे तेभ्यःसंरक्षितापुण्यंदीर्घायुःतत्रमानुषी शरषष्टमवर्षाणिप्रपौत्रंजन्मभूतले ग्रामभूमिधनास्तिश्चबलहानिरुज
क्षयम् मंददृष्टिभवेद्रात्रौहरिभक्तिसुतत्परा पुत्रपौत्रमहाभागीसतोष्यंवृत्तिशातलः नगव्यालगतेवर्षेपूर्णायुःकथितोमुनिः निधनजायतेतस्यमाघमासेशुचौ
दले सद्गतिप्राप्यतिवामासुप्रसिद्धप्रशंसिता अग्रजन्मेसमुत्पन्नानृपगेहेसुधर्मिणी धर्मेणैवप्रभावेणयशमानमहत्पदम् एवंसर्वसुखनित्यज्ञातव्योपुण्यकारणाम्

स्त्री०
१८

सर्वखेदेष्वमानेन कन्यकासौम्यसुन्दरी गृहकार्येसुकुशला सत्यवृत्तिसुलक्षणा तातमातपरंप्रीती पतिप्रेमविवर्द्धनी नानाकार्यप्रबंधेण सुखसौभाग्य रूपिणी प्रकाशोविपणीभूयात्महवञ्चपदेपदे भोगमैश्वर्यसम्पन्ना दासदासिश्चवाहनम् दिव्याम्बरधरोबामा भूषणंविविधोमहान् प्रजावृद्धिसुखंनित्यं पुण्यारिष्टविनाशनम् मंगलंविविधोत्साहो जायतेनित्यनूतनम् कुलवृद्धमहत्कार्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वेच्छापूजितोभुवि: यन्त्र दृष्टिगतंतत्र: विजयोलाभभूरिश: पुत्रकन्यासमायुक्ता विमलंभाग्यदर्शना पापकर्म्मकृतेवाधा सुखेविघ्नमहत्यपि कुलेविघ्नमुपाधिश्च पतंतिशोकसागरे कष्टापत्तौविशेषेण भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा नसुखंसुस्थिरोपूर्णं यावद्यत्ननपापहम् ॥ शुकोवाच ॥ कथंतदारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयो नारी कथयस्वमहामते ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिसमासेण विचित्रंकर्म्मकारणम् विप्रवंशोद्भवापूर्वे वनितापुण्यरूपिणी सुप्रसिद्धप्रसन्नात्मा पतिरत्यन्त वल्लभा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दासदासिश्चवाहनम् युवावस्थाविशेषेण विषयाशक्तमानुषो किंकरैर्जायतेप्रीती कामेणहतचेतसा बहुकालरति:सौख्यं रमतिपापमाश्रय: स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोषितंशापितोमहत् नैवशांति:भवेत्तत्र: शापपापदुराक्षदम् यावच्छान्ति:नकर्तव्या एतज्जन्मेभयप्रदा क्लिश्यतिविविधोवामा सुखेविघ्नभवन्तिहो ॥ शुकोवाच ॥ केनशांति:भवेत्पापं पतिशापोतिदुस्तरम् कथयस्वमहायोगिन्यदितेकृपयामपि ॥ भृगुवाच ॥ व्रतदानमहत्पुण्यं शापपापक्षयंकरा तवस्नेहात्प्रकाश्यामि यत्नंसर्वसुखप्रदा हेमपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने प्रायश्चित्तं समारभेत लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्तचंदनम् तत्रैवपतिमूर्तिश्च शापहंत्रीजयंत्रितम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि विष्णुपीठविधानेन पूजयेद्भक्तिभावत: तदान्तेमन्त्रमाराध्य: द्विजा:सत्यव्रतेरता: इन्दुलक्षप्रमाणेन जपेदेकाग्रमानसम् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वराय महापुरुषाय सर्वपाप हरायतेनम. स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥ इतिमन्त्र ॥ सावित्रीसंपुटंनित्यं जपेदेकाग्रमानसम् यज्ञान्तेमूर्तिदातव्यं शैयादानादि भियुता ईश्वराराधनेप्रीती नित्यंधर्म्मपरायणा सर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नप्रभावत: प्रकाशंविविधोत्साहो मंगलंहीदिनेदिने आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिनिवारणम् दानमन्त्रव्रतेनैव नित्यंसर्वसुखागम: अयत्नेपापजंदुक्खं क्लिश्यतिनात्रसंशय: सर्वेप्सित: प्रदोपुण्यं तत्वमेतत्परंसुखम् ॥

जन्मवर्षसमारभ्यः रामवर्षांतरेक्रमात कन्यकावृद्धिमाप्नोतिगृहेमंगलनूतनम् शरीरेकष्टसंभूताचाल्पमृत्युमहद्भयम् दानमंत्रसुयत्नेनसर्वशांतिःसुखंलभेत
तातलाभमहोत्साहोविस्तृतिपुण्यवैभवाः वेदाब्देमुनिवर्षांतंशिशुक्रीड़ासुखप्रदा किंचित्कष्टमनोद्वेगंशिशुप्रीतिविवर्द्धिता चञ्चलश्चपलाबालावादहास्यपरं
प्रिया मंगलंविविधोगेहेमासेवर्षेसुखंगता व्यालवर्षसमारभ्यः यावद्वषञ्चद्वादशे भोगाप्रवैभवोवृद्धिगृहकार्येसुचञ्चला वस्त्राभर्णैःसुशोभंतिपितुलाभव्ययो
महान् कुलकीर्तिवृहन्नित्यंउद्वाहेसुप्रशंसिता यद्रोगं जायतेकष्टंसर्वशांतिसुयत्नतः त्रयोदशाष्टचन्द्राब्देपुण्यसौभाग्यरूपिणी सर्वकार्यसुकुशलागृहसौख्य
विवर्द्धिनी रूपयौवनसंपन्नाराजतिगेहभूषणा पतिप्रेमविवर्द्धंतिभाग्यमैश्वर्यसंपदा ऊनविंशतथाविंशेतथास्यात्पञ्चविंशके विस्तृवंशजंपुण्यपुत्रकन्यासमा
वृता नानाकार्यप्रबंधेणगेहेतुसफलीकृता सर्वसौख्यसमायुक्तासुपुण्यैश्वर्यभाजनी त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंयत्कृतंपूर्वजन्मनि ऋतुपक्षाब्दमारभ्यः व्योमवन्हि
तथान्तरे पूर्वंयत्नादितःपुण्यंसर्वसौभाग्यमाकरी व्ययलाभमहत्कार्येसुप्रसिद्धश्चभामिनी प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वंजायतेकुले अल्पमृत्युभयंकष्टं आप
दुद्धारणं जपेत अन्नदानमहादानं सर्वारिष्टविनाशनम् शशिवन्हिसुवर्षाणि शररामाब्दचांतरे उद्वाहोमंगलंकार्ये विविधंकीर्तिविस्तरात प्रतिष्ठायादृशितत्र
गेहेवित्तंनतादृशि व्योमवेदावधिर्वामा सर्वेच्छासुखपूजिता देवदर्शनजाप्रीती पवित्रक्रियतितनम् प्रतापमानमधिकं जायतेबहुविस्तरात सर्वकार्याणि
सिद्धंति भूमिलाभसुनूतनम् अतःपरिसुखंनित्यं शताद्धवत्सरावधिः पौत्रजन्ममहत्वेण सफलंजन्ममण्यति दानधर्म्मरताप्राज्ञी मंगलंविविधो
महान् गुणपञ्चगतेवर्षे पतिकष्टभयंकरम् सर्वारिष्टहरंयत्नं महादानैःसुखंलभेत वेदबाणगतेवर्षे तथाव्यालशराब्दके सर्वेच्छापूजितोपुण्यम् यत्ने
निस्फलंभवेत शरीरेजायतेकष्टं मृत्युरेवभयंमहत् सप्तअन्नतुलादानं महामृत्युञ्जयोजपेत औषधीदानमन्त्रेण सर्वव्याधिविनाशनम् ईश्वरंभक्तिभावेण
आयुवृद्धिसुखंततः ग्रहपञ्चमवर्षाणि ऋतुषष्टमगेतथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च सर्वेच्छातत्रपूजिता ईश्वराराधनंपुण्यमग्रजन्मस्यहेतवे कृत्वातेनसुपूज्यंति
महज्ज्ञान्यपदाधिपा नेत्रलोकाब्दपर्यन्त पूर्णायुःतस्यनिर्णिता अनायासेतुनंत्यक्त्वा पूर्वपक्षेषुकार्तिके कुलकीर्तिविशेषेण महोत्साहंगृहेतदा महत्पुण्यं
सुयत्नेन चाग्रजन्मेच्छितंपदं प्राप्यतिनात्रसंदेहो सत्यलोकाधिकारिणी एवंपुण्यपरंतत्वं पुण्येकिंचिन्नदुर्लभं पुण्याश्रयेसुखंसर्वे पापकर्माद्धधोगतिः

सर्वक्षेटेष्टमानेन योगस्यास्यफलंशुभं शुभलक्षणसंपन्ना कन्यकाशुचिसुन्दरी गौरवर्णविशालाक्षी स्वल्पापत्याकृषोदरी सुस्वभावसुशीलाच सुभाम
मिष्टभाषणी सर्वसौख्यसमायुक्ता क्रोधेणकलहंकरा तातमातपरंप्रीती पतिरत्यंतवल्लभा यथादेहप्रवर्द्धेत: मोदमानंगरीयसी चञ्चलश्चपलावाला
गृहकार्येसुकौशला धनधान्यसमृद्धिश्च विविधंभोगतत्परा रूपयौवनसंपन्ना दृष्टिहास्यमनोरमा पूर्वपापकृतेबाधा विविधोद्वेगचिंतनम् सुखेविघ्न
मुपस्थित्य कलहंवादमन्दिरे क्लिश्यतिकष्टपीड्यन्ति बाणल्पंदारुणाभयम् पतिपुत्रात्मजाद्रव्यं नैवपूर्णसुखंभजेत् यावद्यत्नंनकर्तव्या पूर्वपापैर्वितप्यति
प्रायश्चित्तमहादानं कृत्त्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसम्पत्सुखाकरी पूर्णायुपुण्यमेधावी फलंसर्वेप्सितंलभेत अयत्नेविविधापत्तौ भोक्तव्यंही
स्वकर्मणा ॥ शुक्रोवाच ॥ पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वप्रसादतः कथंशान्तिर्भवेत्तस्य श्रवणस्ममेच्छया ॥ भृगुवाच ॥ शृणुवत्ससमासेण कथाया:
परमाद्भुतम् तवस्नेहात्प्रवक्षामी गोपनीयमतंमहत् पुराविप्रकुलेजाता विमलंभाग्यभाजनी सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दानपुण्यंसुखेच्छिता तीर्थयात्राव्रतं
धर्मंद्विजदेवै:सुतुष्यति एकदासुमहापर्वे व्रतंयज्ञसमारभेत् तत्रैकोविप्रमायतः तपस्वीपुण्यभाजनम् दृष्ट्वाद्विजगृहेयज्ञ उपविश्यक्षुधातुरः बहुविप्र
समाधात येषांयज्ञनिमन्त्रणम् भुञ्जीतास्वगृहंजग्मुरतिथियंविनिर्मुख. यज्ञान्तेयाचनंकृत्वा तयोवादमभून्महत क्षुधातृषातुरोतप्तं दुर्वाक्येणातिक्लेशिता
तेनशापप्रभावेण नारीयंपापमाश्रय: भूयसेपिमहत्पापमतिथिविप्रनिर्मुखः नैवयत्नकृतावत्सः तत्रपापानुत्तये कालेनमृयतिश्चापि पुरास्वर्गसुखंभजेत्
समुत्पन्नाथभूभाग पुन:पुण्यावसानके पूर्वपापैर्वितप्यंति सर्वसौख्याधिकारिणी तस्यशातिमहादान कथयामिविधिर्यथा तत्रहेममयोपत्र कृत्वाविभव
विस्तरात शुद्धितसुविधानेनद्विजचित्रसुलेखयेत् वेष्टितांपीतपट्टेणस्थाप्यंकुम्भघृतेश्वनम् पूजयेत्सुविधानेनमंत्रमाराध्यभक्तितः॥ मंत्र ॥ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
सःसर्वापच्चिहराय ब्रह्मरूपायनमः सर्वेप्सितंवरदाय ह्रां हूं श्रींसः स्वाहा इतिमंत्रजपेल्लक्षं गायत्रीशापहंपुटम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या पात्रविप्रायधीमतां
सर्वविप्रैः सुसंतोष्यं मंत्रदीक्षां समर्पयेत् एवंसर्व विधिकृत्वा पूर्वपाप विनाशनम् कुम्भमूर्ति महादानं मन्त्रसर्वार्थ सिद्धिदम् एतद्यत्न प्रभावेण
सर्वैश्वर्य समावृताः यत्रदृष्टि गतंतत्रसुखसर्वत्र भूरिशः पुत्रपौत्र प्रपौत्रञ्च धनधान्यैः सुपूरिता इतियंनिश्चितंपुण्यं सर्वसौभाग्य कारण

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातचिंताहृदेगुप्तं लाभयोगविमन्दता नेत्राब्देवह्निवर्षान्तं दिवेमासेसुखंगता तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगल
मेवच शरीरेजायतेकष्टं दन्तपीडाविरेचनम् ज्वरार्तमुदरव्याधी सर्वशांतिःसुयत्नतः चतुर्थेपञ्चमाब्देतु ऋतुवर्षावधिक्रमात् बालक्रीडारतोनित्यं
कन्यकाशुभलक्षणा दानमंत्रंसुयत्नेन सर्वसौख्यक्रमादितः व्रणविस्फोटकोव्याधी स्वयमेवोविशान्तये गृहकार्यरतोनित्यं बालिकाप्रियवादिनी
मुनिवर्षेगतेकाव्यः व्योमचन्द्रान्तरेतथा मासेवर्षेमहोत्साहो पुण्यात्सर्वसुमंगलम् स्वकृत्यकुशलाबाला तातमातसुखप्रदा मंगलंचर्चयागेहो उद्वाहादि
विचिन्तनम् पतनादिभयंकष्टं सुपुण्याच्छान्तिः सर्वदा इन्दुचन्द्राद्बमारभ्यः यावद्बाणनिशाकरे तावत्कालावधिर्नूनं सुखयुग्यत्नसाधिता भाग्यवृद्धि
महत्वेण प्रकाशोविस्तृतिसदा मानेनमहताविष्टा भर्तारंसुखवर्द्धनी दिव्याम्बरधरोवामां नानाभर्णैर्विभूषिता प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिःक्रमात्
रूपयौवनसंपन्नासर्वभोगसुखाकरी गर्भबाधामहत्कष्टं बालजन्मश्चमोदिता प्रकाशोदैवजोनित्यं पूर्वपुण्यफलप्रदा विशेकोपञ्चविंशाब्द तयोरन्तर्के
मोदितः भोगाप्रवैभवोवृद्धिः पुत्रकन्यासमावृता मंगलंविविधोत्साहो गृहयेनप्रकाशितम् अल्पायुर्दुःखदंयोगं पूर्वयत्नाद्विनश्यति महत्वंचाधिकंतत्रः
मोदमान गरीयसी ऋतुनेत्राद्बत्रिंशेच सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्चप्रजावृद्धिसुविस्तरात् क्लेशकष्टागमोगेहे संशयाविष्टमानसं दानपुण्योप
चारेण सर्वशान्तिसुखागमः इन्दुरामगतेवर्षे शरवन्हितथान्तरे उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिसुविस्तरात् कुलेविघ्नमुपाधिश्च शान्तवृत्तिःप्रशंसिता
चत्वारिंशावधिर्वत्सः मनेच्छासर्वपूजिता व्ययलाभमहन्नित्यं गृहनूतनसुन्दरम् तीर्थयात्राव्रतंदानं वनितापुण्यरूपिणी छायापात्रान्नदानञ्च कुलेसर्व
सुखप्रदा सोमचत्वारिवर्षाग्नि व्योमभलाद्बकेतथा मासेवर्षेसुखंजातं गृहेचापिसुपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहो सफलंजन्ममण्यति सर्वैश्वर्यसुयत्नेन
मोदितापतिभिस्सह अयत्नेपापजंक्लेशं भोक्तव्याचाल्यजीवती तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूर्वपुण्यंसुभक्तितः कृत्वापापविनिर्मुक्ता नित्यंधर्माश्रयेसुखोः
कीर्तिश्चनिर्मलीभूता रामव्यालाद्बमायुषम् प्रपौत्रंजन्मतोलोके विमलंभाग्यदर्शना ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौभाग्यरूपिणी अनायासेतनंत्यज्यः
मधुमासेशुचौदले सुकीर्तिविस्तृतालोके प्राप्यतिचोत्तमार्गतिः अग्रजन्मसुपुण्येण जायतिमहतांकुले लोकेच्छापूजितापुण्यं सुराज्ञीपरमांगतिः

एतद्योगोद्भवावामा श्यामवर्णासुलोचना कोमलांगीसुललना मध्यरूपापतिप्रिया हीनगेहोपिजायन्ति सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्च पुत्र कन्यासमावृता नानाकार्यप्रबंधेण राजतिगेहसम्पदा प्रकाशोविपणीभूयात्प्रतापेगुणगौरवम् मानकीर्तिमहत्वेण प्राप्यंतिहीदिनेदिने सर्वैश्वर्यसमायुक्ता सुप्रसिद्धप्रशंसिता उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् दासदासीसमायुक्ता वस्त्राभर्णैःसुशोभित्ता केचिज्जीवपरंप्रीती गुप्ताशक्तविचिन्तनम् पुण्यात्सर्वसुखंनित्यं विस्तृतिंपूर्णवैभवाः पूर्वपापप्रभावेण आद्यन्तेदुःखसंभवाः वियोगोतातजंदुःखं वैधव्यंतिमहद्भयम् क्लिश्यतिविविधंलोके रोग शोकेणपीडिता सुखेदुक्खप्रदारेखा पूर्वपापेणदुस्तरम् यावद्यत्नंनकर्तव्या त्रिजन्मंतप्यतिमहा दानमंत्रैसुपुण्येण नित्यंसर्वसुखंलभेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्वप्रसादेण पूर्वपापस्यकारणम् केनक्लेशाश्रयोनारी आद्यन्तेदुःखभाजनो ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम् पुराधर्म रताप्राज्ञी वैश्यवंशसमुद्भवाः व्रतदानादितोनित्यं द्विजदेवान्सुतोष्यति महत्वमधिकंलोके बहुद्रव्येणगर्विता साकदाचिन्महापूर्वं तीर्थयात्राञ्च कारयेत् तत्रस्नानमहादानं स्वपुण्येणतिगर्विता निशायांस्वगृहंगन्ती तन्मार्गमुनिराश्रमम् तत्रैतद्रथचक्रेण गवीशोघातमृत्युदा तेनभूयोमहत्पापं नैवशांतिश्चकारयेत् तस्मात्पापाश्रयोभूया देतज्जन्मेतिदुक्खिता दानपुण्यव्रतेणैवः दिव्यांगीसुकुलोद्भवाः सर्वसौख्यान्वितालोके पूर्वंपापाद्भयमजेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनशान्तिभवेन्नाथः गवीशोपापदुस्तरम् कथयस्वप्रसादेण यदितेक्रूपयामपि ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिमहाभागः यत्नञ्चास्य सुखंकरः हेमपत्रप्रकुर्वीतः रामकोणादिगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण भागार्द्धेपूर्वशंकरम् शेषार्द्धेसुक्रमेणैवः गवीशोचित्रशोभनम् वेष्टितांस्वेतपट्टेण प्रायश्चितविधिर्यथा संस्थाप्यकलशंपूज्यः भक्तियुक्तेनचेतसा मंत्रागर्घ्यंसुयत्नेन नन्दनन्दसहस्रकम् आपदुद्धारणंजाप्यः सावित्रीवीर्ययंत्रिता ॥ मंत्र ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय भूतानामधिपतयेनमः पूर्वजन्मांतरोर्जित वृषभदोषं हर हर स्वाहा शं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ हवन मार्जनादिक्यं कृत्वासर्वविधिर्यथा मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या माचार्य्यायः प्रदापयेत यथाशक्तिद्विजंतोष्यः आशिर्वादश्चग्राहता एवंपुण्याश्रयो नित्यं सर्वपापैर्विमुच्यति मनेच्छापूजितावह्नी पूर्णसौख्याग्रजन्मनि धनसंतानयानञ्च कुटुम्बेसुखवर्द्धनम् अयत्नेविपरीत्यंही अथाग्रेश्रुणुभार्गवः

जन्मवर्षोदर:व्याधी द्वितीयेदशनंरुजं रामाब्देवेदवर्षेच पीड्यातरुधिर:व्यथा दानमंत्रंसुयत्नेन भगद्भक्तिभावत: सर्वारिष्टक्षयोनित्यं मासेवर्षसुखंगता
शिशुक्रीडारतोबाला तातमातसुखप्रदा शराब्दव्यालवर्षान्तं तयोरन्तमहोत्सवम् मंगलंजायतेगेहो विस्तृतिसर्ववैभवा: भ्रातबंधुसमायुक्ता पितुलाभ
विवर्द्धनम् गृहकार्यरताकिंचिद्वस्त्राभर्णै:सुशोभिता नन्दाब्दबाणचन्द्राब्द सुखसौभाग्यवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्ति:सुनिर्मला माननीया
सुसद्रूपाबहुभूषणभूषिता प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वञ्चपदेपदे महादानादिमंत्रेणपूर्वपापैर्विमुच्यति अल्पमृत्युभयापतौसर्वव्याधिविनाशनम् ऋतुचंद्राद्ध
मारभ्य: विंशवर्षाववधिततः महत्वमधिकंप्राप्य रूपयौवनमावृता पतिप्रेमविवर्द्धन्ति निजकार्येसुकौशला पुत्रजन्ममहोत्साहो कष्टचिंतासुखंलभेत्
पतिलाभप्रभावेण सर्वकार्येसुआगम: कलहारिष्टसंतप्ता यावद्यत्नेनपापहं चाल्पमृत्युभयंघोरं पतिपुत्रेणक्लेशिता इन्दुपक्षाद्धसंजातं शरपक्षाद्धमेवही
विस्तृतिर्वंशजंपुण्य पूर्वयत्नेसुरक्षिता धनधान्यसमृद्धिश्च भोगमैश्वर्यनूतनम् कुलेविघ्नमुपाधिश्च क्षत्रभंगविचिंतनम् ईश्वरंभक्तिभावेण सुपुण्यंलाभदो
महान् रसनेत्रमितेवर्षे व्योमरामान्तरेतथा व्ययलाभवृहन्नित्यं विवाहोमंगलंमहत् सर्वकार्याणिसिद्धंति महत्वंसुपदाधिपो कुलकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्ध
प्रशंसिता पतिपुत्रात्मजकष्टं सुपुण्याच्छान्तिसर्वदा शशिवह्निसुवर्षाणि शररामांद्धमेवही उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेविविधंतदा चत्वारिंशावधिर्वत्स
सुखेच्छासर्वपूजिता देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रंक्रियतेतनम् दानमन्त्रमहादानैर्सुखंसर्वैप्सितंलभेत् युगवेदमितेवर्षे पुत्रभाग्योदयंभवेत् दासवाहनजैर्नित्यं
प्रकाशोपुण्यजोमहान् पौत्रजन्मोत्सवंगेहे कुलतेनप्रकाशिता सर्वसौख्याद्धवोनित्यं यावद्रोमशरांद्धके नानाकार्यप्रबंधेण गृहशोभासुविस्तरात् शरीरे
दारुणोकष्टंमुनिपञ्चमवत्सरे तत्रलोडमयेपत्रे कालमूर्तिसुपूजनम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं महादानञ्चकारयेत् छायापात्रान्नदानेन सर्वारिष्टनिवारणम् पुन:
सर्वसुखंलोके शरव्यालाद्धमायुषम् रामनामजपेनित्य दानधर्मेमतिस्थयेत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रैश्च वांछापूर्तिप्रजायते पापकर्मकृतेबाधा पुण्येविघ्नमुपस्थिता
तेनक्लेशाश्रयोनारी पूर्वपापेणपीडिता अतस्तांनियम्याय शान्तयेत्सुखमिच्छति पूर्णायु: सुखसर्वाणि सुप्रसिद्धप्रशंसिता स्वल्पश्रमेतनंत्यक्त्वा
प्राप्यति गतिरुत्तमा पुण्याद्भाग्य महत्वेण सर्वत्रैव प्रशंसिता कर्माधीनं भवेत्सर्वं फलंयच्च शुभाशुभं एवंज्ञात्वा सुतत्वज्ञो सुखंचैवात्र जन्मनि ॥

स्त्री०

२१

एतद्योगोद्भवाबाला शुचिसाध्वीमनोहरा शुभलक्षणसंपन्ना गृहकार्येसुकौशला कोमलांगीसौम्यरूपा मध्यभागाप्रियंवदा धर्मेणैवसहायेण सर्वसौख्या
धिकारिणी यथादेहप्रवर्द्धेतःविस्तृतिसर्ववैभवाः मासवर्षेमहोत्साहो तातशीतिवृहत्यपि विस्तृतिर्वंशजलोके सुविख्यातायमानिनी अल्पमृत्युभयंकष्टं
सर्वशांतिःसुयत्नतः दिव्याम्बरैसुशोभंति बहुभूषणभूषिता नानाकार्यप्रबंधेण स्वकुलेसुप्रशमिता रूपयौवनसंपन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी पुत्रपौत्रसुखासर्वे
दासदासिप्रमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन पूर्वपापोविशान्तये सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेशोकविचिंतनम् क्लिश्यति
विविधोवामा पूर्वपाण्दुरत्यया ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि कथयस्वप्रसादेण दुस्तरोकर्मजंकथा ॥ भृगुवाच ॥ विचित्रांमद
माख्यानं श्रुणुवत्ससमासतः पूर्वजन्मान्तरोवामा शूद्रवंशसमुद्भवा द्विजसेवारतोनित्य बहुकालसुखगता युवावस्थामदोन्मत्ता लोभेणहतचेतसा
केचिन्मत्रपरंप्रीती सर्ववार्ताप्रकाशयति द्विजगेहेमहद्रव्यं भूषणाविविधानिच दृष्ट्वातेषुहरंयत्नंचिंतयेद्बहुनित्यशः कदाचिद्दैवयोगेण सकुटुम्बाद्विजो
हिसा तीर्थयात्रासुगतव्या दासीयगेहसंस्थिता सर्वद्रव्यहरंतस्य पूर्वमित्रसमायुता दूरदेशेगमिश्यंति यत्रकोपिनविद्यते द्विजतीर्थागतोगेहे शापं
दत्वातिदुखिता तेनपापाश्रयोलोके नारीविश्वासघातनी पुण्यमार्गेव्ययोद्रव्य ईश्वराराधनेमति भोगमैश्वर्यसंयुक्ता कचित्कालेसुखंभजेत् पुनः
पापाश्रयोलोके एतज्जन्मेतिदुःखता ईश्वराराधनंपुण्यं सर्वलक्षणसुन्दरी सुखसौभाग्यसंपन्ना पूर्वपापैर्वितप्यति अतस्तत्शान्तिहेत्यर्थं प्रायश्चित्त
वदाम्यहम् पूर्वपापक्षयंनित्यं येनसर्वसुखागमः हेमपत्रप्रकर्तव्या शुचिशुद्धमनोहरा लखयेद्रक्तगंधेण द्विजमूर्तिसुशोभनम् ताम्रकुम्भेघृतंगुप्तो यथा
श्रद्धामहद्धनम् मूर्तितत्रैवसंस्थाप्यः पीतपट्टेणवेष्टिता पूजयेद्भक्तिभावेण वस्त्राभर्णैरलंकृतम् एतन्मंत्रमुखोच्चार्यः विधिवद्दानमाचरेत ॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रां
ह्रीं ह्रूं व्यूं नमोब्रह्मणेभूतानामधिपतये पूर्वजन्मान्तरार्जित शापपापं हर हर स्वाहा व्यूं ह्रूं ह्रीं ह्रां ॐ सावित्रीजाप्येलक्षं मंत्रमे तत्तदर्द्धकम्
तदर्द्धं वटुकोमंत्रं तदर्द्धं धनस्यच जाप्यदान मिदंसर्वं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्ति भावेण सर्वसौख्य समागमः कार्याण्यपिच सिद्धन्ति
विस्तृतिं सर्ववैभवा पतिपुत्रात्म द्रव्येण तुष्यतिविविधोत्सवाः कष्टचिन्ता भयंसर्वं विलीयन्तेपि शत्रुवाः महत्वमधिकंलोके पुण्यतत्व ब्रवीमिते

प्रथमाब्देमहोत्साहो मंगलंगेहमाहगतः तातमातमहोत्साहो प्रपितुश्चततोधिकम् ज्वरार्तमुदरव्याधी भूतछायाश्चविव्हला ततःशांतिःसुयत्नेन कन्यका
वृद्धिमाप्नुयात् द्वित्रिवर्षान्तरोकाव्यः सुखदासर्वमंगलम् दशनोत्वतिजाकष्टं ज्वरान्नासारकादयः छायापात्रान्नदानेन सद्यसौख्यमवाप्नुयात तातचिंता
समायुक्तोग्रीष्मेलाभसुखप्रदा मातृकष्टान्वितोभूयात्पुनरन्तेसुमंगलम् चतुर्थेपञ्चमेषष्टेमुनिवर्षावधिःक्रमात् लाभश्चविविधोतातः गृहेमंगलचर्चिता शिशु
क्रीड़ारतोबाला निजकृत्यसुकौशला वृणाबातेनपीड्यंति पतनाच्चमहद्भयम् मंगलंकामयोगोपि संबंधेनप्रशंसिता वस्त्राभर्णैसुशोभंति मोदमानंदिनेदिने

स्त्री
२२

दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वसौख्यसमागमम् सर्पवर्षसमारभ्यः यावद्वर्षञ्चद्वादशे भोगाश्चवैभवोनित्यं वर्द्धतेपिनिशेषवत् गृहकार्येसुकुशला सर्वसौख्यविवर्द्धनी
उद्वाहोजायतेचास्यमोदवृद्धियथाक्रमः सुपुण्याच्चसुखंनित्यंकुसगात्क्लेशभाजनीईश्वरंभक्तिभावेणमनेच्छासर्वपूजितागुणसोमाद्धमारभ्यरष्टादशसुवत्सरे
स्वकृत्यकुशलावामा बुद्धितस्यप्रकाशिता पतिप्रीतिविशेषेण कामक्रीड़ामनोरमा सुखश्चविविधोपुण्यं जायतेतत्रदीर्घता ऊनविंशतथाविंशे वह्निविंशाद्ध
मध्यमा मंगलंविविधोगेहे सुतापुत्रसमुद्भवं विदेशोगमनंभूयाद्दशाश्रेष्टफलप्रदा वेदविंशगतेवर्षे व्यालेपक्षतथान्तरे गृहलाभविशेषेण प्रजावृद्धिसुखप्रदा
सुप्रबंधसुयत्नेन सुखसर्वत्रवर्तते पापाच्छोकागमोगेहे पतिपीड़ाभयप्रदा औषधिदानमंत्रेण पुनःशांतिःसुखागमः स्वशरीरेमहाकष्टं प्रसूतंप्राणजायते
पूर्वयत्नमहादानं सुपुण्याच्छ्रेयभाजनी मंगलंविविधोनित्यंमानकीर्तिसुनिर्मला नंदनेत्रश्चात्रशाब्देवेदवह्निनथान्तरे व्ययलाभमहच्चापिउद्वाहादिमहोत्सव
सुशोभितेकुलंतेन गृहंचातिमनोहरो शरत्रिंशतिवर्षाणि व्योमचत्वारिमध्यमा चित्तचिंतातुरोभूयात्पुण्यंशांतिःसुखप्रदा स्वयत्नेविपरीत्यंही फलमेतद्धि
जायते नेत्रवेदगतेवर्ष पौत्रजन्मसुयत्नतः सुखवृद्धिमहोत्साहो मासेवर्षेसुखागमं व्योमबाणावधिवत्ससर्वेच्छासुखपूजिता आनन्दंक्लेशकार्यञ्च जातंकर्मा
श्रयोसदा ऋतुबाणगतेवर्षे पतिप्राणहरीदशा व्यालपञ्चाद्धमारभ्यः जायतेगेहविग्रहं द्विजदेवसुहृत्पूज्यं दशाश्रेयस्करीसदा चित्तचिंताविनश्यंति
दानधर्माश्रयेमतिः अतःपरिसुखासर्वेरसषष्टाद्धमध्यमम् रामनामजपेन्नित्यं दानादिमतितत्परा प्रतापमानमधिकं सर्वदासुखसम्पदा व्योमपक्षाद्धगर्किंवा
मुनिव्यालाद्धजीवति ईश्वरंकृपयात्पुण्यं फलंसर्वेसितंलभेत अग्रजन्मेसमुत्पन्ना सुप्रसिद्धधनाधिपा राज्ञीवराजतिभूमौ पुण्यतेजोमहत्यशाम्

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंलाभदाभवः भोगमैश्वर्यसंयुक्ता सुकीर्तिख्यातिभूतले विप्रदेवार्चनेप्रीती तीर्थदेवालयेरति व्रतनेमरतावामाशुचिसाध्वीपतिव्रता
सुशीलारूपसंपन्ना सबलाचमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति स्वजातिमीनवर्द्धना सरुजंपीड्यतिपापं पुण्ययत्नात्सुखाकरी आलस्यंजायतेदेहो अंगबातेन
पीडिता प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रसुभक्तितः सर्वत्रसुखदोकाव्यः मनेच्छातेनपूजिता अयत्नेमानसीचिंता नसुखंप्राप्यतिध्रवम् पीड्यतिबहुपापेणयत्कृतं
पूर्वजन्मनि पतिपुत्रात्मकष्टश्च नैवपूर्णसुखागमः रिपुवोक्लेशितानूनं हानिचिंतावलायसी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुखसाधनमाचरेत् सर्वावस्थासुखंनित्यं
विस्तृतिंसर्ववैभवाः पतिपुत्रतथापौत्रं प्रजावृद्धिधनागमः पूर्णायुःसुखमधावीसर्वापत्तौविनश्यति सौभाग्यंमहतोभूयात्पुण्ययोगधनाधिपा प्रायश्चित्तम
भावेणनिस्फलंजन्मपत्रिका ॥ शुकोवाच ॥ किमसौदारुणोशापंजायतेपूर्वजन्मनि प्रायश्चित्तान्वितोसर्वंकथयस्वप्रमादतः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुवत्सप्रवक्षामि
परंगोप्यमतहियत् अन्तरप्रभवोगेहेनारीयंपूर्वजन्मनि सर्वसौख्यान्वितालोकेदानधर्मपरायणा मानकीर्तिसमायुक्ताक्रोधेणतप्यतिकदा कदाचिद्दैव
योगणतीर्थस्नानेगमिष्यति तदाचसुमहापर्वे पतिगेहमुपस्थिता धर्मव्रतरतोभूयाद्धेनुदानञ्चकारयेत स्नानंकृत्वा ततःतीर्थान्नारीयंगेहमागता धेनुवत्स
नदृष्टंश्च येषांप्रेमसुपाल्यति क्रोधेणतप्यतिवामो श्रु ततद्दानकारणम् विप्रगेहगमिष्यति कुत्राक्येणातिधर्षिता धेनुवत्सागतागेहे धर्मवार्तानमण्यति
ममधनुकथंदानंपतिरत्यतवादिता शापपापाश्रयोतेनएतज्जन्मेदुखावृता अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् कथयानिसमासेणविधितस्ययथाक्रमम्
स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथावित्तसुविस्तगत धेनुवत्सान्वितोचित्रं द्विजभर्तासुशोभनम् वेष्टितारक्तपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि प्रायश्चित्तविधानेन पूजयेत्सु
विधिर्यथा लक्षमंत्रजपेद्विप्राहरिभक्तिपरायणा ॥मंत्र॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय सर्वपापंहराय महेशायशिवातेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापं
हरहरश्रेयोमांदेहिस्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ गोपालस्तोत्रपठितंपावित्रोजाप्यसंयुता कुम्भमूर्तिप्रदातव्यावस्त्राभर्णैःसुशोभिताः एवंदानमहादानैराचार्याय
सुतोषिता आशिर्वादंलभेत्तेन सर्वसौख्यप्रदोमहान् पूर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नंसुभक्तितः पुनःसर्वसुखंलोके विस्तृतिंपुण्यवैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण
सर्वसौभाग्य रूपिणी पुत्रपौत्रात्मजादीनां सर्वसाफल्यवैभवा प्रतापमानमधिकं सुकीर्तिख्यातिभूरिशः एवंपुण्याश्रयेनित्यं विमलंभाग्यभाजिनी

स्त्री
२३

जन्माब्देवह्निवर्षान्तं मातकष्टसुखोत्सवम् मंगलंजायतेगेहोमासेमासेसुखंगता दन्तपीड़ाज्वरोत्पत्ते जायतेचविरेचनम् शरीरेकष्टसंपन्ना कन्यकादुःख
रूपणी किंचिद्दानादियत्नेन भगवद्भक्तिभावतः सर्वकष्टक्षयंलोके मोदमानेंदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यं बालक्रीड़ासुचञ्चला तातलाभमहोत्साहो
सुखसौभाग्यवर्द्धनी वेदाब्देव्यालवर्षान्तं विस्तृतिंसर्ववैभवाः गृहकार्यरताबाला वस्त्राभर्णैसुशोभिता उद्वाहंचर्चयागेहे तातमातविचिंतनम् रुजं
चाल्पभयंसर्वं नित्यंशांतिसुयत्नतः पुण्ययत्नादितोर्नूनं विमलंभाग्यवर्द्धनी नन्दाब्देवेदचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमः भाग्यवृद्धिमहत्वेण विवाहोमंगलं
महान् वस्त्राभर्णैसुतोष्यंति कुलकीर्तिसुविस्तरात् पतिप्रीतिविवर्द्धन्ति रूपयौवनसंभवाः भोगाप्रवैभवोवृद्धि निजकृत्यसुकौशला प्रतापमानमैश्वर्यं
जायतेचदिनेदिने शरसोमाब्दमारभ्यः विंशवर्षावधिःतथा कुलवृत्तिप्रभावेण सुखसौभाग्यवर्द्धनम् अल्पमृत्युभयंघोरं पुण्ययत्नाद्विनश्यति प्रकाशो
विपणीभूयात्प्रजावृद्धिसुमंगलम् सुशोभितंगृहंतेन विमलंभाग्यशालिनो सोमपक्षगतेवर्षे शरपक्षाद्धमध्यमा कुलवृद्धिसुपुण्येण पुत्रकन्यासमायुता
व्ययज्ञाभमहोत्साहो गृहेद्रव्यनसुस्थिरः पूर्वयत्नादितोर्नूनं पुण्येश्वर्यविवर्द्धनम् दंपत्योरल्पजंकष्ट नश्यतेपिसुकर्मणा ऋतुपक्षाद्धत्रिंशेच तयोरन्तक्रमा
दितः किंचिच्छोकागमोगेहे पुण्योच्छान्तिर्हिनित्यशः मंगलंविविधोनित्यं जायतेबहुनूतनम् मासेवर्षेसुखजातं पतिलाभविवर्द्धनम् इन्दुरामगतेवर्षे
चत्वारिंशाद्धकेतथा कुलकीर्तिवृहन्नित्य मुद्वाहादि व्ययोमहान् धर्मवृत्ति प्रभावेण सुप्रसिद्ध प्रशंसिता मनेच्छा पूजितंलोके पुण्यपात्री सुपूजिता
राजतिसुप्रबंधेण पतिसंगेसुखाकरी सोमचत्वारिवर्षाणि व्योमभलाद्धमवही पतिपुत्रात्मद्रव्येण विविधंनित्यतुष्यति पौत्रजन्म विशेषेण सफलं
जन्ममणयति महत्वंजायतेगेहो कुलवृद्ध प्रशंसिता ग्रामभूमि धनंलब्ध्वा पुण्यात्सर्व सुवैभवाः सोमपञ्चमवर्षाणि यावद्वयोम रसाद्धके तावत्पुण्य
सुखासर्वे मनेच्छा सर्वपूजितं अयत्नेविपरीत्यंहो भोक्तव्य कर्म्मजंफलम् तस्मात्सर्व प्रयत्नेन यत्नंकृत्वा सुखेच्छिता शतजीवी भवेद्वामा पूर्वपुण्येण
भूतले पुत्रपौत्र प्रपौत्रञ्च दिव्यरत्न धनादयः लोकेच्छा पूजितासर्वे रत्नसूय वसुन्धरा अन्तेकृश्यतनंवृद्धा पुण्यपात्री सुपूजिता अनायासेतनं
त्यज्यः सर्वत्रैव प्रशंसिता अग्रजन्म सुपुण्येण चोत्तमकुलसंभवाः महाराज्ञीवसोवाला फलंसर्वेप्सितंलभेत् एवंसर्व सुखंलोके ज्ञात्वापुण्याश्रयोकृते

एवंसर्वग्रहायत्रः फलंतत्रविनिश्चितम् सौम्यसाध्वीसुसद्रूपा बालिकाशुचिसुन्दरी सर्वैश्वर्यसुसंपन्ना कोमलांगीदयान्विता गृहकार्येसुकुशला तातमात परंप्रिया वस्त्राभर्णैसुशोभन्ति वनितापुण्यरूपिणी दानमंत्रंसुयत्नेन पूर्वसंरक्षितायदि प्रकाशोविपणीभूयात्पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यप्रबंधेण नित्यंसौख्यसमागमः राज्ञीवंराजिताभूमौ हेमरत्नविभूषिता राजतिसुप्रबन्धेण पतिप्रेमविवर्द्धनी सर्वापत्तौविनश्यंति यद्रोगश्चमहद्भयम् दासवाहन जैर्नित्यं दम्पत्योर्मोदवर्द्धनः भूमिलाभविशेषेण गृहंचातिसुशोभनं नैववाक्यस्मृतिर्यत्रः नैवयत्नंभविष्यति कष्टंभोक्तव्यपापेण यत्कृतंपूर्वजन्मनि नानाकष्टागमोगेहेविविधोद्वेगपीडिता प्रजावृद्धिर्वितर्यंतिरल्पायुसुखखंडिता पापादुक्खाश्रयोभूयात्सर्वसौख्याधिकारिणी॥ शुक्रोवाच॥ कथंतद्दारुणो पापंवनिताक्लेशकारकः पूर्वजन्मभवेत्तातः कथयस्वक्रमादितः ॥ भृगुवाच ॥ संक्षेपात्तेनिगदितं पूर्वपापस्यकारणम् परंगोप्यमतमेतत्सज्जनानन्दहेतवे पुरानृपकुलेजातं मानुषीशुभलक्षणा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दिव्यरूपाधराधिपा राजतिस्वप्रबन्धेण पतिहीनयुवावयं कामोद्वेगेणतप्यति चिन्तयन्ति महत्यपि दानधर्म्मंव्रतंपुण्यं कृत्वाकामेणपीड्यति द्विजपुत्रैर्भवेत्प्रीती कामाशक्तपरस्परम् रमंतौविविधंक्रीड्य रुभयोप्रेमवर्द्धनम् गर्भपातमहत्पापं कृत्वातत्र महत्यपि तेनपापाश्रयोलोके कष्टगात्रीत्रिजन्मनि क्षीणायुदुक्खसंतप्ता यावद्यत्नविनिर्मुखाः अतस्तंशान्तिहेत्यर्थं कृत्वातन्त्रसुभक्तितः ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुचितीर्थेशुभस्थले स्वर्णपत्र प्रकर्तव्या शुद्धं विभव विस्तरात् लक्ष्मीनारायणोमूर्तिं लेखयेत्सुविधिर्यथा बालचित्रलिखेत्पृष्टे पद्मगर्भसुशोभनम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशेततः पूजयेद्भक्ति भावेण प्रायश्चित्तविधानतः मन्त्रमाराध्ययत्नेन भगवद्भक्ति परायणम् ॥ तत्रमंत्रः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं नं नारायणाय आदिशक्तिसहितं स्वभक्तान्प्रतिपालकाय सर्वेश्वरायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जित सर्वपापं हर हर क्लीं शं कं हं स्वाहा इतिमन्त्रजपेलक्षं सावित्रीसंपुटंकृता हवनंविप्र भोज्यञ्च विधिवत्मंत्र दक्षिणा मूर्तिदानं प्रकर्तव्या वस्त्राभर्णैं सुश्रद्धया आचार्य्याय प्रदातव्या तोष्यंतिही सुसद्व्रता आषिशं ग्राहयेत्तात्रः सर्वपाप क्षयंभवेत् नित्यंसर्वसुखागम्य विस्तृतिं पूर्णवैभवाः दानमन्त्रं सुपुण्येण रत्नमूर्यवसुन्धरा सर्वसौख्य प्रदोयत्नं गोपनीयं परंतपः सर्वविघ्नक्षयंपुण्य मीश्वराराधनेमतिः तवस्नेहात्प्रवक्षामि स्वर्गलोकेषुदुर्लभम्

प्रथमेद्वितीयाब्देषुकिंचित्कष्टैःप्रतप्यति उरुपीडासमुद्भुतदंतरोगप्रजायते मातृचिंतान्वितोभूयात्कष्टशांतिःसुयत्नतः तृतीयेपञ्चमेवर्षे तातयोगमहोत्सवम्
मातृकष्टंविजानीयाद्दानपुण्येणशांतये वृणत्राधाप्रपीड्यति अकस्माच्चमहद्भयं दानमंत्रंसुपुण्येणसद्यशांतिःसुखंलभेत रसाब्देनंदवर्षेतत्तयोर्मध्येयथाक्रमः
विद्याभ्यासरताकिंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंतिविवाहार्थेचचिंतया सबंधोमंगलंप्राप्यपितुरंधर्मतत्परा दशमैकादशेवर्षेतातलाभव्ययोमहान्
हर्षवृद्धिसुखोत्साहोक्रीड्यतिसखीभिस्सह प्रारंभेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशांतरे कामेच्छाप्रबलोयांतिपतियोगेसुचिंतनम् रूपयौवनसपन्नावस्त्राभर्णेसुभूषिता
प्रायश्चित्तंसुयत्नेनसुखंसर्वत्रभूतले द्रव्यलाभविशेषेणमनेच्छाबहुपूजिता प्राप्यतेषोडशेवर्षेव्ययोमनेत्राद्धमध्यगे दंपतिसुखमेधत्ते प्रजावृद्धिसुमंगलं स्वकृत्य
कुशलात्रामामोदमानंदिनेदिने व्ययश्चमहतोगेहेक्षत्रमंगस्यचिंतनं चैकविंशत्रिविंशाब्देपञ्चविंशतिकेतथा भाग्यवृद्धिभवेत्पुण्यं दशाश्रेयस्करीभवेत् सर्व
सौख्यसुयत्नेनणतिपुत्रात्मजादयः रसविंशतिवर्षाणिव्ययोमवह्निनथांतरे नानालाभव्ययोनित्यंसुखिनीतापतिप्रिया मंगलंविविधोकाव्यःसुखसाधनतत्परा
देवतीर्थेपरंप्रीतीपवित्रमानुषीतनम् इन्दुरामगतेवर्षेयावत्पञ्चगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नून मोदतिवहुविस्तरात मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिमहोत्सवम्
उद्वाहोमंगलंकार्ये यशेतसाधनेपतिः संपदासव्ययेनित्यंसुकार्येव्ययस्तथा कुलकीर्तीविशेषेणमाननीयामहज्जनैः ईश्वरंभक्तिभावेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता
व्यालवह्निगतेवर्षेजायतेश्चैकविग्रहं आलराशिमनुक्रम्य यावद्घटगतेरविः सर्वापत्तौविनिर्मुक्ता दानमंत्रसुभक्तितःमासेवर्षेसुखंनित्यं रामचत्वारिवत्सरे
ऋतुवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् अजाद्धणिजगेभानुः पुत्रकष्टचकोमतः आपदुद्धारणोजाप्य सर्वकष्टविनश्यति अन्यमासेसुखंनित्यं बनिता
भाग्यभाजनी लाभश्चविविधोगेहे यावच्छून्यरसाद्धके धनसंतानयानंच पुत्रपौत्रसुखाकरी मनेच्छापूजितंसर्वे पुनरप्याहिनूतनम् धर्मवार्तासदावृत्ति
साधुसेवासुतत्परा नगषष्टगतेवर्षे परवैराग्यचिंतनं प्रपौत्रंजन्मतोगेहे सर्वेच्छालोकपूजिता यावन्नंदरसाब्देतु वातबाधाप्रपीड्यति पुनःकष्टंविनश्यंति
भजनानंदसर्वदा आयुवृद्धिःसुपुण्येण भूयान्नन्दनगाद्धकी अजराशिगतेभानुः निधनंपूर्वपक्षके महोत्साहंगृहेतत्रः सर्वत्रैवप्रशंसिता पुण्याद्भाग्य
महत्वेण गतिरेवसुनिर्मलम् जन्मतिमुकुलंपुण्योत्तथैवाग्रेद्विजन्मनि सर्वेप्सितंलब्ध्वा सर्वसौख्याधिकारिणी मानेनमहताविष्टा पुण्यतत्वमहत्पदम्

६ी
२४

मर्वक्लेटेष्टमानेन नारीबुद्धिमतीसती विद्याविनयवान्साध्वीदाताभोक्तासुकौशला गृहकार्य्येरतोनित्यंसुखरूपासुलक्षणायथादेहप्रवद्धेतः धनसंपत्समृद्धिमान्भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेनित्यनूतनम् कामक्रीडाविशेषेणरमयन्तिपतिस्सह पितुप्रतिष्ठितंचापिमानकीर्तिमहत्सुखम् चन्द्रजीवपरंप्रीतीकदाचिच्चिन्तनमहत नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसम्पदा पतिपुत्रसुताद्रव्यंसर्वसौख्याधिकारिणी दिव्याम्बरधरोबालाबहुभूषणभूषिता सुखेशोकप्रदारेखासंभवोपूर्वपापतः नानाचिंतातुरोभूयातमनस्तस्यक्लेशिता धनपुत्रसुभर्तारंनसुखंसुस्थिरोगृहे वियोगकलहोदुक्खविवादंस्वजनैस्सह स्वसंकल्पविकल्पोपि ब विघ्नह्युपद्रवाः प्रजावृद्धिनदृश्यतेगुप्तारातिश्चलोकमा चाल्यमृत्युभयंघोरविभवोनैवसास्वतः पापशांतिः प्रयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत सर्वेच्छापूजितंलोके दानमंत्रमहत्फलम ग्रामभूमिधनंप्राप्यः भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वजन्ममुपाख्यानंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुक्खितापापरूपिणी नृपवंशोद्भवापूर्वेबामासौभाग्यरूपिणी दानधर्मरतोनित्यं मंत्रज्ञानाभिमानिनी कदाचिद्दैवयोगेणसाधुद्वारेसमागतः यज्ञार्थेयाचितोद्रव्यंबादाबादमवेत्तदा क्रोधतश्चतदाराज्ञीभृत्येणसाधुताड़िता दुक्खितोशापितस्तेनअग्रजन्मेत्वयाधमः पतिपुत्रात्मद्रव्येणक्लिश्यतिविविधोमहान् त्रिजन्मेतप्यत्युदरंविव दकलहंगृहेएवंहीशापितोसाधुतपार्थविपिनेगता नैवयत्नकृतस्तेनतत्रपापापनुत्तये तेनपापाश्रयोभूयाइहजन्मनिक्लेशिता यावद्यत्नंनकर्तव्यादुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः तस्यशांतिः प्रवक्षामिपरंगोप्यमतंहीयत कृत्वासर्वसुखलोकेवामाप्राप्यतिनित्यशः स्वर्णपत्रकर्तव्यावह्निकोणानगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेणसाधुचित्रमनोहरा रसनाशापद्मंवीजंपादयो शर्मदलिखेत्भुजद्वयेप्रवंधश्चकामबीजसुमस्तके हृदयेप्रणवंबीजंनाभ्यां श्रीबीजमेवच ताम्रकुम्भेघृतंगुप्तः द्रव्यंश्रद्धायथाभवः वेष्टितांपीतपट्टेण मूर्तिस्थाप्यंतदोपरिः पूजनंभक्तिभावेणयथाविभवविस्तरैः तदग्रेमंत्रमाराध्य इन्दुलक्षसुभक्तितः मन्त्रओंऐंह्रींक्लीं श्रींनमोनारायणायविश्वरूपायसर्वशापपापंशमनायभद्रंकुरु२ स्वाहा श्रींक्लींह्रींऐंओं इन्दुवाणसहस्राणिसावित्रीजापितंतदा आचार्याप्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेततः हवनंविप्रभोज्यश्च शुद्धस्यामेयथाविधिः कृत्वासर्वसुखंप्राप्यः मानुषीपुण्यरूपिणी पुत्रपौत्रादिजासर्वे सौभाग्यंपरमोदयं गृहक्लेशविनश्यंति महोत्साहोपिमगलं दिनेदिनेमहत्तेजोराजतेपुण्यसंपदा पूर्णायुःसुखमेधत्तोमनेच्छाबहुपूजिता एवंपुण्यपरंतत्वंकथयामित्वयाकृते

जन्मतः प्रथमेवर्षेशरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंताञ्रोलिकाशुचिलक्षण द्वयाद्ब दशनोव्याधिः तृतीयेब्रणपीडनम् किंचिद्दानादिमंत्रणाभगवद्भक्ति भावतः श्रेयोमानंसुखंनित्यंसर्वकष्टविनाशनम् तृतीयेपंचमाब्देषुषष्ट वर्षादिसप्तमे तातमानप्रतिष्ठाचवद्ध तेनात्रसंशयः भोगाप्रवैभवोवृद्धिबालक्रीड़ा सुततत्परा भ्रातसौख्यमहोत्साहोमासेवर्षेसुखंगता तृषबाधाज्वरोतस रेचनादिप्रपीड्यतिपतनाद्दारुणाकष्ट सर्वशांतिसुयत्नतः नानाकार्यप्रबंधेणराजते गेहसंपदा संबंधश्चर्चयागेहोतातमातविचिंतनम् नन्दाब्देदिशिवे च द्वादशाब्दंक्रमादितः गृहकार्येसुकुशला बादहास्यमनोहरा पितुप्राप्तिमहल्लाभं मातृप्रेमविवर्द्धनम् उद्वाहंजायतेचास्यप्रकाशोविपिणीभवः कीर्तिश्चनिर्मलीभूतातातमातप्रशंसिता वह्निसोमान्तरेकाव्यरष्टचन्द्राद्धकेतथा भोगाप्रवै भवोवृद्धियुग्मगेहप्रकाशिणी सर्वसौख्योद्भवोनित्यंदानमंत्रमहत्फलम् रूपयौवनसंपन्नावस्त्राभर्णैसुशोभिता पतिप्रेमविवर्द्धतिभाग्यमेन्नविवर्द्ध नम् यद्रोगं जायतेकष्ट सर्वशांतिसुयत्नतः ऊनविंशाब्दविंशेच नेत्रविंशतिकेतथा पतिलाभविशेषेण सुखेच्छाबहुपूजिता गर्भबाधामहत्कष्ट सुतजन्मसुमंगलम् हर्षवृद्धिमहोत्साहोमानकीर्तिश्च निर्मला पापशांतिः सुपुण्येण प्रकाशोविपणीभवः प्रजावृद्धिभवेन्नित्यमनेच्छापूजितंसदा रामपक्षमितेवर्षेऋतुनेत्राद्ध मध्यगे पुत्रकन्यासमाविष्टामोदितापतिभिस्सह मंगलंविविधोत्साहोमहत्वश्चपदेपदे जायतेदारुणाकष्ट कुलस्त्रीचविवादिता सर्वशांतिसुपुण्येणदानमंत्र महत्फलम् मुनिविंशतिवर्षाणिवेदरामावधिक्रमात् मासेवर्षेमहोत्साहोबहुद्रव्यसमागमः सर्वचिंताविनश्यंतिविवाहादिमहोत्सवम् दंपतिसुखमेधत्तेप्रताप गुणगौरवं कीर्तिश्चनिर्मलीभूता स्वकुलेसुप्रशंसिता शरवह्निमितेब्देतु चत्वारिंशावधिक्रमातपूर्वयत्नोदितः पुण्यंसौभाग्यंपरमोदयम् पतिसेवानुरक्तश्च गृहकार्येसुकौशला सुशोभितागृहंतेनमाननीयकुलांगना मगलंविविधोत्साहोजायतेनित्यनूतनम् त्वयत्नेक्लिश्यतिबामापतिपुत्रात्मजाधनं चन्द्रचत्वा रिवर्षेचव्योमबाणक्रमादितः पुण्येच्छापूजितासर्वे देवतीर्थाटनंसुखम् पौत्रजन्ममहोत्साहोकुलवृद्धिदिनेदिने नानाकार्यप्रबंधेणराजितागेहभूषणा शशि षंचगतेवर्षेव्योमषष्टांतरावधिः सर्वेच्छापूजितेलोकेनिर्बलाचप्रपीड्यति व्रतदानरतोनित्यंसाफल्यंमानुषीतनं मंगलंविविधोगेहेपूर्वयत्नादितः सदा इन्दु षष्टाब्दमारभ्ययावन्नेत्रनगाब्दके सर्वपुण्यंफलंभुक्त्वाआयुपूर्णोपिजायते अश्विनेपूर्वपक्षेसप्तम्यांनिधनोनिशिः पुनर्न्पकुलोत्पन्नाजाह्नवोपश्चिमेतटे

सर्वखेटे मानेनबालिकामंदभागिनी श्यामवर्णास्थूलदेहा रुचिरांगी पुकामिनी तातमातमहचिता जायतेचास्यजन्मनि वहुविघ्नमुपाधिश्च तातकष्टप्रदो
महान् गृहेद्रव्यनद्रश्यन्तिलाभयोगोपिमन्दता मासेवर्षेविवर्द्धति पूर्वपापेणपीड्यति बालक्रीड़ारतश्चापि मंदबुद्धिभयप्रदा पतनादारुणोकष्टं रुजोद्वेगा
त्रितप्यति तातस्वल्पसुखंलोके मातृक्लेशभयंमहत् दानमादितोर्नूनं पूर्वपापणशांतये सर्वसौख्यागमोलोके विस्तृतिपुण्यवैभवाः पतिपुत्रात्मजादीणां
भाग्यवृद्धिश्चसर्वदा द्रव्यलाभविशेषेण सर्वैश्चनित्यपूजिता अयत्नेविपरीत्यंहीक्लिश्यतिपापकर्मणा मानहानिभयचिन्ता नोयशंप्राप्स्यतिमहान् पति
पुत्रात्मद्रव्येणदुःखिताप्तिरी जन्मनि कष्टव्याधिविशेषेण त्रिरल्यंदारुणोभयम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोयत्नमाचरेत् व्रतदानसुपुण्येण ईश्वरभक्ति
भावतः पूर्वपापक्षयोकाव्यः सर्वदामोदवर्द्धनं कीर्तिश्चनिर्मली भूयात्पतिप्रेमविवर्द्धनी शुक्रोवाच पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वमहामुने येनक्लेशाश्रयो
नारी दुःखितामंदभागिनी भृगुरुवाच शृणुपुत्रसमासेण कथायाःपूर्वजन्मनि पुराजन्मभवेद्रामा दासीयंनृपगोहणी रूपयौवनसम्पन्ना भूपप्रेमविवर्द्धनी
सर्वसौख्यान्वितोभूयाद्भाग्यस्यपरमोदयम् राजसेवारतोनित्यं मोदमानंगरीयसी राज्ञोत्रमानसंप्राप्य गविनापिदुराचृत कदाचिद्यज्ञराज्ञोसी कृत्वाविभव
विस्तरात तत्रागतंगुरुर्देवःवेदज्ञाताद्विजोत्तमः दासीयंसंस्थितोकार्ये गुरुरेवविवादिती हास्यंकृत्वाभवेद्विघ्नं विप्ररोषान्धितोमहत् दुःखितोशापितस्तेन
रेधमादुष्टकर्मिणी देवकार्यकृतेविघ्नं गर्वितापापरूपिणी अतस्त्वंक्लेशितोर्नूनं त्रिजन्मेषुपुनःपुनः पतिपुत्रात्मद्रव्येण दुःखितापिमुहुर्मुहः द्विजशाप
श्रुतंदासीघोररूपोतिदुस्तरम् नैवशांतिक्षमायत्नं साभिमानेनमोहिता तेनपापाश्रयोभूया देतज्जन्मेऽतिदुःखिता स्वर्णपत्रकृत्योतत्रः यथाश्रद्धासु
भक्तितः लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेद्विजभिरसह लेख्यतुशपहंबीज पीतपट्टेणावेष्टित. संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः विष्णुयज्ञक्रमादितः पूजियेद्भक्तिभावेण
तदग्रेमन्त्रमाचरेत ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायणो सर्वपापहराय पूर्वजन्मद्विजशापशमनाय रक्षां कुरु कुरु सर्वसौख्यं प्रकाशयः स्वाहा
श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्ष सावित्रीतत्प्रमाणतः हवनंविप्रभोज्यञ्च अनुष्ठानशुचिस्थले कृत्वासर्वसुखंलोके बामा पुन्याश्रयेसदा मंगलंजायतेनित्यं
प्रजावृद्धिमहोत्सवाः पतिपुत्रात्मद्रव्येण सफलंमानुषीतनं भोगाप्यवैभवोवृद्धियशमान प्रशंसिता नश्यतेकलहारिष्टं सुखंसर्वत्रदृश्यति ईश्वरभक्तिभावेण

व्रतदानसुखोत्सवा रोगार्तंप्रथमेवर्षे द्वितीयेदन्तपीड़िता तृतीयेवन्हिभीतिश्च उच्चस्थेपतितोथवा बृणावातविकारेणापीड्यतिचतुराद्धके पञ्चमेषष्टमेसप्तेव्या
लवर्षं चनन्दके दिनेदिनेपिसावृद्धाबालिकाशुचिलक्षणा स्वकृत्यकुशलासौम्या क्रीडनेमतिनित्यशः धावनात्पादकष्टञ्चकदाचिद्व्रतोदरि विवाहोबाच
तस्यापितातचिंतागरीयसी मंगलंजायतेगेहो तातलाभसुखप्रदा दानमन्त्रसुयत्नेन कन्यकागेहभूषणं कुलवृद्धिप्रभावेण राजतेपुण्यसंपदा सून्यसोम
गतेवर्षेयावद्वेदनिशाकरे पतिप्राप्तिर्नसंदेहोपितुर्द्रव्यव्ययंमहत् कष्टव्याधिविनश्यंति सुपुण्यंफलदोमहान् भयभीताहृदेगुप्तकदाचिन्तनंमहत् प्राप्ते
पंचदशेवर्षेयावन्नेत्रद्वयोतथा क्रीड़तिविविधैश्वर्य्य दानमंत्रंसुभक्तितः देवदर्शनतीर्थेषुसरनद्यामतिप्रियः पतिप्रेमविशेषेणमोदितोनात्रसंशयः प्रजासु
भोगवृद्धिश्चमंगलंविविधैरपि गृहकार्य्यसुकुशलाभाग्यवृद्धिदिनेदिने पापाश्रयोमहद्दुक्खचिंतनंक्लेशतत्परो तस्मात्सर्वंप्रयत्नेनपापशान्तिसुखंलभेत्
वन्हिपक्षाद्धमारभ्यमुनिनेत्रसुवत्सरे सुतापुत्रसुखास्सर्वे गार्हस्थ्यंसाधनेमति सुकार्यसुस्थिराबुद्धिःप्रीतिश्चिस्सुसखिस्सह प्रतापभोगमैश्वर्य्यशोभितादि
शुभाङ्गनामंगलंविविधोगेहेपुण्यच्छ्रेयोहिनित्यशः व्यालविंशतिगेकाव्यः रामरामसुवत्सरे भाग्यवृद्धिविशेषेणसर्वंसौख्यवसुन्धरेविवाहोमंगलंकार्यं
गौरवंप्राप्यतेस्त्रियः कीर्तिश्चनिर्मलीभूता गुप्तारातीहितप्यते व्ययलाभमहत्वेणदम्पत्योश्चिन्तनंकदा स्वकुलंसुप्रकाशयंतिवनितापुण्यरूपिणीवेदराम
गतेवर्षेनगरामांतरोतथा विस्तृवंशजंनित्यंसुपुण्यंफलदोमहान् सर्वाबाधाविनश्यंतिरुजाक्लेशह्युपद्रवाःव्ययोतत्रोधिकंभूयविवाहेतीर्थमन्दिरे गुप्त
चिन्ताविनश्यन्ति सर्वेशत्रुरधोगता पतिचिंतान्वितोभूयः न्यूनकष्टञ्चशांतये व्यालवह्निसमारभ्य नेत्रचत्वारिमध्यगे भूमिप्राप्तिविशेषेण महोत्साहप्रवर्तते
वित्तोद्यानन्दतापिस्याद् ब्रह्मलाभप्रभावतः अत्यानन्दमृहेत्तेन साफल्यंसर्ववैभवं वेदवेदगतेवर्षे नगवेदावधिततः चिंतयेन्नूतनोकार्यं देवतीर्थेषुदर्शनः
अकस्माज्जायतेकष्टं प्राणभीतोतिचिंतनं छायागात्रतुलादानंमहामृत्युञ्जयोजपेत् अनुष्ठानविधानेनआयुर्वृद्धिसुयत्नतः दानमन्त्रसुपुण्येन नभनागाद्ध
जीवति कुलकीर्तिकराः पुत्राः पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रहाश्चष्टविनश्यन्ति मनेच्छासर्वपूजिता भगवद्भक्तिभावेण पुण्यात्रीप्रसिद्धिता इन्दूव्यालाद्ध
मारभ्य. जायतेदारुणांरुजं अनायासेतनंत्यक्त्वा पुत्रपौत्रैर्विभूषिता पुनर्नृपकुलेजाता भूयाद्राज्ञीशुभानना एवंपुण्यपरंतत्वा ज्ञातव्यामोक्षसाधनं

एतद्योगोद्भवाबाला मध्यभागिनीसुन्दरी शुभलक्षणासंपन्ना मध्यरूपाप्रियम्बदा सुस्वभावसुशीलाच कदाचिद्रोषमोहिता जन्मतःमातृकष्टोपि तातचिंता
गरीयसी दिनेदिनेपिसाबृद्धो मासेवर्षेसुखंगता कष्टञ्चमहतोभूयात्पूर्वकर्म्मविपाकजं सुयत्नेरक्षितस्यापि पूर्णायुसुखसम्पदा दशाश्रेष्टधनंदीर्घः वस्त्रा
भर्णैस्सुशोभिता भोगमैश्वर्यसंयुक्ता मानकीर्तिश्चनिर्मला केचित्कालेमनोद्वेग जीवाशक्तिविचिन्तता चित्तचिंतान्वितोगुप्ता अनायासेभयंमहत हर्ष
सौख्यान्वितोवामा अनित्यंभोगतत्परा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेशोकाल्पजंभयम् दुक्खिताविविधोनारी पतिपुत्रेणक्लिश्यति पूर्वजन्मान्तरोगाथा समा
सेणवदाम्यहम् ब्रह्मवंशोद्भवावामा सुस्वरूपासुलक्षणा सर्वसौख्यसमायुक्ता मोदितापुण्यरूपिणीतत्ररत्नधनंब्रह्मी स्थाप्यमस्यगृहेतदा गुरुपत्नियतंगत्वा
तीर्थदेवादिदर्शनैः चरंतीदेवतीर्थेषु मुनिमासगतस्तदा स्वगेहेपुनरागत्यः याच्यंरत्नधनंहिसा हत्वातदांतरेनारी दिव्यरत्नसुशोभनम् नदृष्ट्वारत्नतत्रैव
याचितंहिपुनःपुनः देयादन्यधनंसर्वं नदेयाद्रत्नवादिता वादावादेणकुद्धोसौ गुरुपतनियुतंमहत त्यक्त्वातत्रधनंसर्वं सापंदत्वापुनःपुनः पुनस्तीर्थेवगंतव्या
तीर्थेवनिवसोसदा तेनपापाश्रयोवामा नैवयत्नंचकारयेत दानपुण्यविशषेण सुगेहेजन्मजायतः नैवशांतिर्भवेद्वत्सः गुरुशापोतिदुस्तरम तेनपापाश्रयो
नारीक्लिश्यतिविविधोमहान् शुकोवाच तद्यत्नंब्रूहिमेतातः जनानांसुखहेतवे भृगुवाच अनुष्ठानमहादानं स्वर्गेमर्त्येषुदुर्लभाः तवस्नेहांमयावत्सः प्रकाश
क्रियतेधुना स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाशक्तिशुचिस्थले लेखयेद्रक्तगंधेण गुरुभार्यायुतंक्रमात वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि ईश्वरंभक्तिभावेण
पूजयेत्सुविधिर्यथा तदग्रेमंत्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्त्रकम् मंत्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ओं नमोनारायणाय सर्वाधिपतयेगुरुशक्तिरूपायपूर्वजन्मकृतशापपापं
नाशयः २ ममापराधशमं कुरु२ मनेच्छितंबरदायः सर्वं स्वाहा ओं शंश्रींक्लीं ह्रीं ऐं ओं स वित्रीतत्प्रमाणान धनदस्यतदर्द्धकम् जापयेत्सुविधानेन ब्रह्मचर्य
रतोद्विजा तदांतेमुर्तिसंकल्पंशैयादान विधिर्यथा आचार्यायप्रदातव्यं विप्रभोज्यसुदक्षणा यज्ञांते पूर्णपात्रञ्चगुरुरत्नधनादय गुरुदानविधानेन दीयतांपाप
नश्यति सर्वसौख्यततोलोके वनितापुन्यरूपिणी विस्तृततिर्वंशजादीर्घ सौभाग्यंपरमोदयम् नानाकार्यप्रबंधेण मानकीर्तिप्रशंसिता मनेच्छापूजितोनित्यं
वस्त्राभर्णधनाद्विजा पुत्रपौ- समाविष्टोपतिरत्यंतबल्लभा मोदितेमानमाधिकं साफल्यंसर्ववैभवा अयत्नेपीड़ितेपापं सुखेशोकसमागमा परंगोप्यमतमेतत्

स्त्री०

२७

यथाग्रश्रुणुभार्गव जन्माद्धेवह्निवर्षांतंतयोर्मध्येक्रमादित त.तमातसुखासर्वे कन्यकाशुभलक्षणा दंतपीड़ाज्वरोतातं रचनादिप्रपीडयति कृश्यदेहविजानी
यादभूतछायाश्चगुप्तता किंचिद्दानादिमन्त्रेण भगवद्भक्तिभावत श्रेयोमानंप्रष्ठिाच प्रकाशोपिदिग्दिनें तातलाभविशेषेण मंगलंविविधोगृहे दृष्टि
हास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी भ्रातजन्ममहोत्साहोमासेवर्षे सुखं ता चतुर्थेपञ्चमाब्देषुषष्टंवर्षादिसप्तमे बालक्रीड़ाविशेषेण मोदमानंगरीयसी प्राण
शंकाभयोद्वेगंव्रणपीड़ातिदारुणाम् प्रायश्चित्तादियत्नेनसर्वशांतिसुखंलभेत भाग्यञ्चमहतोभूयात्सुखार्येमतिनित्यश गृहकार्यरताबाला सर्वत्रैवप्रशंसिता
व्यालवर्षेरसंप्राप्यावन्नेत्रनिशाकरे तावत्कालावधिर्ननं भाग्यवृद्धिस्सुयत्नत उद्वाहंजायतेचास्य तातमानविवर्द्धनम् कुलकीर्तिविशेषेण व्ययलाभमह
त्यपि दिव्यांबरंभूषणाञ्च प्राप्यंतिहिसुशोभना प्रतिष्ठामानमधिकं जायतेचदिनेदिने त्रयोदशाष्टचंद्राब्दे पतिप्रेमविवर्द्धिनी भोगाप्रवैभवोवृद्धि जायते
चदिनेदिने रूपयवौनसंपन्ना वनितापुण्यभाजिनी गृहकार्येषुकुशला पतिभक्तिपरायणा पुण्ययत्नादितोनित्यंसर्वकष्टविनश्यति ऊनविंशाद्वविंशेचशर
विंशतिकेतथा सर्वेच्छापूजितोपुण्यं पतिपुत्राधनादिजा प्रजावृद्धिमहोत्साहो कष्टशांतिस्सुमंगलम् ऋतुपक्षाद्वत्रिंशेच तयोर्मध्येमहत्सुखभपु त्रकन्यासमा
विष्टासाफल्यंसर्ववैभवा व्ययलाभमहत्वेषा मंगलविविधोमहान् प्रकाशोविपिणीभूया द्रचनागेहसुन्दरम् प्रायश्चित्तमहादानं सर्वसिद्धिकरंपरं ग्रयत्ने
विपरीत्यंही प्राप्यतिकर्मजंफलं इन्दुरामगतेवर्षे चत्वारिंशावधिःतथा दानमंत्रादितोनूनं पर्णभाग्योदयंभवेत उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धिनी
नानाकार्यप्रबंधेण राजतेपुण्यसंपदा सर्वाबाधाविनश्यंति पूर्वमेवसुरक्षिता भयचिंताविनिर्मुक्ता देवतीर्थेसुखोत्सवम् सोमचत्वाषरिवर्षाणि व्योमभलाद्व
मध्यमा सुकीर्तिवर्द्धतेपुण्यं जायते कुलभूषणा वृहलाभप्रभावेणाविविधोत्साहमंगलम् न सुखंसुस्थिरोभूया द्यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानैः सुखेच्छा
सर्वपूजिता चन्द्रबाणाद्धमारभ्य सून्यषष्टाद्धगेतदा पौत्रजन्ममहोत्साहो कुलवृद्धिदिनेदिने व्रतदानरतश्चापि साफल्यंमानुषीवपु ईश्वरं भक्तिभावेण
पुण्येच्छासर्वपूजिता नगषष्टगतेवर्षे पूर्णायुकथितोमुनि चैत्रस्यपूर्वपक्षोतु भरण्यांनिधनंभवेत प्रायश्चित्तंसुपुण्येण ग्रग्रजन्मेषुनिश्चित महत्वंसुकले
जाता सुप्रसिद्धापिपूजिता ईशभक्तिसुयोगेण महत्वंसुपदाधिपा गतिरेवसुप्राप्यंति पुण्यरूपासुसद्व्रता एतत्सर्वंसुज्ञातव्या सुपुण्यंसुखसाधनम् ॥

एत गोगोद्भवाकाव्यः कन्यकाशुचिलक्षणा पतिदेवसुभक्तश्च विचित्रोवाक्यमत्र वन् साभिमानिनीसद्रूपा दिव्यालंकारभूषितम् पूर्वपापप्रभावेण सुखे
दुःखसमागमः चिन्तातुरोनित्यंरिपुरोगह्य पूद्रवा पतिपुत्रात्मजाकष्टं नैवपूर्णधनीसुखी दानमन्त्रसुपुण्येण तस्यशान्तिप्रयत्नतः कृत्वासद्यसुखसर्वे
प्राप्यतिनात्रसंशयम नानाकार्यप्रबंधेण राजतिसुखसंपदा मानेनमहताविष्टा यशभूरिमहितले संपदाविस्तृतोगेहं सौम्यसाध्वीप्रियम्वदा पतिपुत्रात्म
द्रव्येण सर्वत्रसुखसंपदा भूमिप्राप्तिविशेषेण नूतनोमन्दिरंसुखं शुभकार्येव्ययोद्रव्य मुद्वाहादिमहोत्सवे देवपुण्येसुतीर्थेच रमयन्तिजलाश्रये पूर्वयात्रा
महोत्साहो पतिप्रेमविवर्द्धिनी केचिज्जीवहरंचित्तं रूपयौवनगर्विता कामक्रीड़ामनोद्वेगं कलंकभयमागतः ईश्वरंभक्तिभावेण सुसंगाच्चमहत्यशः सर्वां
वाधेतिमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति पूर्वपीपेणपीड्यन्ति यावद्यत्नपापहम संक्षेपात्तप्रवक्ष्यामि कथायाःपूर्वजन्मनि वैश्यवंशसमुत्पन्ना सर्वसौख्यसमायुता
शुचिसाध्वीसुसद्रूपा पुण्यात्माचदयामयी एकदापतिसंयुक्ता तीर्थयात्रागतोहिसा तदाधेनुसवत्संच विस्मृतोगेहबन्धनम् क्षुधातृषातुरोनित्यं विलपन्ति
मुहुर्मुहुः धेनुवत्समृतोतत्रः पश्चात्कंगृहमागतः पतिदृष्ट्वापितद्वृत्तं क्रोधितोशापीतमहत तेनभूयो महत्पापं नारीदुःखाश्रयोभवेत् विलश्यतिविविधो
नित्यं त्रिजन्मंहिपुनःपुनः तद्यत्नंसंप्रवक्ष्यामि पापशांतिसुखलभेत शुद्धस्वर्णकृतोपत्र विमृतिसुनागांगुलम् शरांगुलतथैवंही कारयेच्चसुशोभनम्
लेखयेद्रक्तगन्धेण धेनुवत्ससमूर्तिमान् शुद्धस्थानेशुभेलग्ने कुर्यातन्त्रमुदारधिः ताम्रकुम्भघृतेगुप्त हेममूर्तिसुशोभनम् वेष्टितांरक्तपट्टेण पूजयेद्भक्ति
भगवतः मन्त्रजाप्यसुयत्नेन प्रायश्चित्तविधिर्यथा मंत्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गं गोपालाय गोपीजनवल्लभाय जगद्रक्षणे महापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मकृतगोपाय
तापशमनं कुरु कुरु सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा इन्दुबाणसहस्राणि सावित्रीमन्त्रसंयुतम् ईश्वरभक्तिभावेण जपेदेकाग्रमानसः द्विजेभ्योतोषितंनित्य
मनुष्ठानव्रतेगताः कुम्भदानविधानेन आचार्याय:प्रयदापयेत् हवनंविप्रभोज्यश्च कारयेत्सुविधिर्यथा एतद्यत्नप्रभावेण सर्वपापैर्विमुच्यति सर्वदुःख
विनिर्मुक्ता सौभाग्यं परमोदयम् स्वामिपुत्रधनादिनां तुष्यतिसुख भाजनी भोगाप्रवै भवोवृद्धि शुक्लपक्षो यथाशशिः गृहक्लेश विनश्यंति
वनितापुण्यरूपिणी कुलकीर्तिविशेषेण महोत्साहं दिनेदिने प्रतापभोग मैश्वर्यं वस्त्राभर्णैः सुतुष्यतिएवं पुण्य परंतवं साफल्यं जन्म भूतले

जन्माद्यंमातृकष्टोपितातोत्साहविमन्दता मनश्चिन्तागृहेतष्टोबालिकाक्लेशकारिणी प्रथमेद्वितीयाब्देही शिशुवृद्धियथाक्रमः दिवेमासेसुखंजातं रोग
तष्टोभयान्वितो दानमंत्रादितोर्नूनंसर्वसौख्यमवाप्नुयात तातलाभसुखोत्साहोवृहद्भाग्यीप्रशंसिता तृतीयेपंचमाब्देहीसुखवृद्धियथाक्रमःदंतपीड़ादिजं
कष्टं बृणाविस्फोटकादय पतनादिभयंसर्वं नश्यतेपुण्यकर्मणा भगवद्भक्तिभावेण गृहेमंगलनित्यश पितुयत्नादितोर्नूनं सर्वावस्थासुखंभजेत मृदुवाक्य
सुहास्यञ्च शिशुक्रीड़ामनोहरा भोगाप्रवंभवोवृद्धि जायतेनित्यनूतनम् ऋतुवर्षसमायातः तथाचदिशिवत्सरे पुण्योत्साहसुखंनित्यं भ्रातसौख्यसुमंगलम्
विवाहोचर्चयागेहे वरंश्रेष्टनिवारयेत यद्रोगंदारुणोकष्टं सर्वशांतिःसुयत्नतः विद्याभ्यासरतोबाला गृहकार्येषुतत्परा प्राप्यंचैकादशेवर्षे शरसोमाद्व
मध्यमा तातचिंतातुरोगुप्तंव्ययोपिबहुद्रश्ये उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिनिवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति वर्द्धितापिलतेवसा दिव्याम्बरंभूषणञ्च प्राप्यति
मानमुत्तमम् भोगाप्रवंभवोवृद्धिः जायतेनुयथाक्रमः सुभक्तितुष्यतेसर्वाः माननीयासुसद्व्रता रूपयौवनसम्पन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी षोडशाब्देतुसंजातं
व्योमनेत्रावधिक्रमात सर्वैश्वर्यसमायुक्ता पुण्यरूपासुलक्षणा सुतजन्ममहोत्साहो मंगलंकुलवर्द्धनः नानाकार्यप्रवन्धेण सुखैश्वर्यप्रकाशिणी छाया
पात्रान्नदानञ्च महामृत्युञ्ज जपेतसर्वान्त्रष्टक्षयोनित्यं मंगलंहिंदिनेद्विने प्रायश्चित्तंसुपुण्येण सर्वाभिष्टफलंलभेत त्रिशवर्षावधिर्नूनं सुखेच्छासर्वपूजिता
पतिप्रेमावशेषेण प्रतापगुणगौरवं मंगलंविविधोत्साहो सुतापुत्रधनादिजा पापपीड्यत्ययत्नेन सुखेविघ्नमहद्भयम् एतस्मात्कारणानित्यं सुसंगात्पुण्य
सञ्चयः त्रिशैवोपञ्चत्रिशाब्दे तयोरन्तर्महोत्सवाः उद्वाहेप्रचुरंद्रव्यं व्ययंकीर्तिश्चनिर्मला प्रकाशितेवसर्व पुण्यैश्वर्यदिनेदिने ऋतुरामाद्वमारभ्यव्योम
वेदाद्बकेतथा महत्वमधिकंलोके साफल्यंमानुषीतनं रोगशोकाकुलंपापात्सर्वशांतिसुयत्नतः भूमिप्राप्तीमहत्पुण्यं दासदासिचवाहनम् देवदर्शनतीर्थेषु
पवित्रंक्रियातितनम गृहक्लेशविवादश्चसुस्वभावेणशांतयेत ईश्वरंभक्तिभावेणसर्वत्रैव प्रशंसिता इंदुचत्वारिवर्षाणिव्योमभल्लांतरेवही प्रजावृद्धिविशेषेण
विविधोत्साहमंगलम् इंदुभल्लाद्वगेवत्सः पौत्रजन्ममहोत्सवाः तदांतेव्योमषष्टांतंपुत्रभाग्योदयंमहत व्रतदानरताप्राज्ञी तीर्थयात्रासुखेरता प्रकाशो
दिपणीभूयात्पुत्रपौत्रधनादिजा व्यालषष्टाद्वमायुष्यंपुण्यरूपाप्रशंसिता सुगतिप्राप्यपुण्येणस्वर्गलोकाधिकारिणी यावद्यत्नंकृतेनैवंनिजपापाद्रधोगता

एतद्योगोद्भवावालामध्यभागी सुलक्षणा मध्यपादकरोर्नूनंमध्मांगीसुकोमला क्रोधेणतप्यतिक्रूराप्रसन्नात्मादयामयी गृहकार्येसुकुशलापतिप्रेमविव
र्द्धिनी सुस्वभावंसुपुण्येणसुविख्याताप्यमानिनी रूपयौवनसंपन्नासर्वसौख्याधिकारिणी पीड्यतिपूर्वपापेण अल्पायुश्चवितप्यति पतिपुत्रमहदुक्ख तात
क्लेशभयंमहत् अल्पमृत्युभयंसर्वेसर्वसौख्यविभक्षणी प्रायश्चित्तमहादानंकृत्वासर्वसुखागमः पुण्ययत्नादितोर्नूनंसर्वाभिष्टफलंलभेत् धनसंतानयानश्च
कुटुम्बेसुखवर्द्धिनी महोत्साहंगृहेह्यस्यमंगलंहिदिनेदिने नानाकार्यप्रबधेणविमलाभाग्यदर्शनः महर्घभूषणोवस्त्रंप्राप्यतिपतिवल्लभा सर्वसंपत्समायुक्ता
पुत्रपौत्रैसुसेविता ईश्वरंभक्तिभावेणसफलंमानुषीतनम् तीर्थयात्राजपं पुण्यंव्रतदानसुखेरता प्रतापभोगमैश्वर्यंजायतेनित्यंनूतनम् भूमिलाभमहत्वेण
रचनागेहसुन्दरम् याद्यत्नंनकर्तव्याविविधंदुःखभोजनी पूर्वजन्मसमासेणकथयामित्वयाऽधुना नृपवंशोद्भवावामापुराजन्ममहत्तपा सर्वसौख्या
न्वितोलोके रूपयौवनगर्विता स्वामिग्राज्ञानमण्यंति विचरन्तियथारुचि व्यभिचाररतोगुप्तं तीर्थयात्रासुखेरति दानधर्मप्रभावेण बहुकालसुखंगता
पुनरन्तेप्रकाश्योपि तद्दुराचृत्तिलक्षणम् स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोशितोशापितंमहत् रेपापात्मादुराचारी त्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि नैवराजकुलेजन्मः
दुक्खितापिमुहुर्मुहः तेनपापाश्रयोभूया दिहजन्मेसमुद्भवः दानपुण्यदितोर्नूनं प्राप्नुयाज्ञानुषितनम् पतिपुत्रात्मपापेण क्लिश्यतिविविधोहान् नसुखं
सुस्थिरोभूयाद्यावद्यत्नंनपापहम् पापशांतिः सुयत्नेनकृत्वासर्वसुखागमः स्वर्णपत्रकृतोतत्रः बाणांगुलनगांगुलम् लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्त
चन्दनम् पतिचित्रमधोभागेनृपचिन्हैरलंकृता रक्षाप्रवरवीजाढ्यं पीतपट्टेण्स्थितम् संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः पूजयेत्सुविधियंथा तदग्रेमन्त्रमाराध्यः
भक्तियुक्तेनप्रार्थितम् । मन्त्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायणाय पतिदेवायनमः पूर्वजन्मान्तराजित पापनाशय२ तज्जनितसर्वकष्टं विदारय२
र्वसौख्यं प्रकाशय स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेल्लक्षं बटुकस्यतदात्मकं शैयादानविधानेन मूर्तिदानसमाचरेत् हवनंविप्रभोज्यादि विप्राणुयज्ञ
क्रमादितः एवंकृत्वासुपुण्येण सर्वपापैर्विमुच्यति सुखसौभाग्यसंपन्ना वनितापुण्यरूपिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण संतुष्यति दिनेदिने भोगाप्रवै
भवोवृद्धि सुप्रसिद्धप्रशंसिताः सर्वेच्छापूजितापुण्य दानमन्त्रमहत्फलम् विवादकलहोदुक्खं रिपुरागविनश्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञात्वानित्यसुखप्रदं

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंता भूतछायाप्रपीड्यति किंचिच्छोकागोमगेहे सर्वशान्तिसुयत्नतः नेत्राब्देवह्निवर्षेच तयोर्मध्ये यथाक्रमः दिनेदिनेविवर्द्धति कन्यकाशुचिलक्षणा दशनोत्पतिजाव्याधी ज्वरतप्तविरेचनम् बृणविस्फोटकोव्याधी दानमन्त्रैसुखागमः सर्वकष्टविन श्यन्ति बालक्रीड़ादिनेदिने क्रीडतिविविधोनित्यं तातमातसुखंलभेत दानमन्त्रंसुपुण्येण तातलाभसुखप्रदा रसाब्देनन्दवर्षेच मासेमासेसुखंलभेत् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः गृहकार्यरताभवेत विद्याभ्यासरता किंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंति विवाहार्थैविचिन्तया सम्बन्धोमंगलंप्राप्य दृष्टि हास्यमनोहरा सर्वकष्टक्षयोनित्यं दानपुण्यसुखप्रदा दशमैकादशेवर्षे तथापंचदशान्तरे व्ययलाभमहत्तातो हर्षवृद्धिसुखंलभेत विवाहोजायतेतस्य् पतिप्राप्तिःसुशोभिता नवाम्बरंभूषणाश्च प्राप्यतिमानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः गृहकार्येसुकौशला प्रायश्चित्तंसुपुण्येण सुखंसर्वत्रभूतले कामक्रीड़ा रतश्चापि भोगांमुक्तोयथेप्सितान् द्रव्यप्राप्तीविशेषेण मनेच्छासुखपूजितम् प्राप्यतेषोडशेवर्षे नभनेत्रंनमध्यगे दंपत्योःसुखमेधत्तो प्रजावृद्धिसुखोत्सवम् स्वकृत्यकुशलासौम्या पतिप्रेमविवर्द्धिनी प्राप्यतिपूर्वपापेण रुजकष्टह्यु पद्रवाः दानमन्त्रसुपुण्येण प्रतियत्नसुखंमहत चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिके तथा भाग्यवृद्धिभवेल्लोके दशाश्रेस्करीमुदा सर्वसौख्यंसुयत्नेन पतिपुत्रधनादिजा बन्धुवर्गापवादेण क्लिश्यतिचाप्रयत्नतः पूर्वपापबलियन्ते सुखेशोक समागमः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तंसुयत्नतः सर्वसौख्यान्वितागेहे मनेच्छातत्रपूजिता रसविंशतिवर्षाणि व्योमरामतथान्तरे नानालाभव्ययोत्साहं यशभूरिमहीतले दंपत्योरल्पजंकष्ट दानमंत्रसुखप्रदा उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् इन्दुरामगतेवर्षे यावद्वाणगुणान्तरे तावत्कालावधिर्न्नूनं पूर्णभाग्यदयंदृशः मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिसुखोत्सवा त्वयत्नेविपरीत्यंही मृतवत्साहीदुःखिता एतस्मात्कारणातत्र कूर्यातन्त्रमुदारधि व्योमबाणा वधिवत्स सर्वेच्छासुखपूजिता रामबाणगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् आपदुद्धारजाप्येण सर्वकष्टक्षयोभवेत मासेवर्षेसुखंजात पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् लाभश्च विविधोनित्यंयावच्छून्यरसाद्धके देवतीर्थेपरंप्रीतीदानधर्मेषुतत्परा आयुवृद्धिसुपुण्येणभूयानंदरसाद्धकी पुण्याद्भाग्यमहत्वेण स्वकुलेसुप्रशंसिताजायति सुकुलपुण्या तथैवाग्निः जन्मनि अजराशिगतेभानु पूर्वपक्षेतनंत्यजेत गतिश्रेष्टसुप्राप्यति सर्वसौख्याधिकारणी एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्योसुखसाधनम्

सर्वखेटेष्टमानेन भूयाद्भाग्यगतीसती स्वामिवाक्यप्रपाल्यन्ति कठोरमनानाश्रता पाकविद्यासुनिपुणा गृहकार्यहितरति सर्वकार्येसुकुशला विनि तापिशुभानना सात्विकीराजसीचैव तामसीवृत्तिसंयुता नकश्चिद्ददायतेतापं सुमतिर्वाग्विचक्षणा कृतज्ञनीधनाभ्यक्षा हेमरत्नविभूषिता स्वामिसेवानु रक्तश्च कुटुम्बसुखवर्द्धिनी पतिपुत्रात्सुपुण्येण प्राप्यतिभूधनंसुखम् सर्वसंपत्समायुक्ता सौभाग्येण सुमोदिता वस्त्राभर्णैः सुसम्पन्ना नानाद्रव्याधि कारिणी क्लिश्यतिपूर्वपापेण हानिचिंताभयंरुजम् आयुसौभाग्यरेखाच त्रुटितापापरूपतः प्रायश्चित्तंसुयत्नेन पूर्णायुःसुखसम्पदा सुसंगात्सुलभासर्वै सुमूर्तिप्रियभाषिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यं सुखेदुक्खसमागमः शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कथयस्वप्रसादतः येनक्लेशाश्रयोनारी दुक्खितापापरूपिणी भृगुवाच राजवंशसमुत्पन्ना राज्ञीवंपूर्वंन्जमनि दानपुण्यदितोनित्यं निजकीर्तिहितेरता दर्पितासाभिमानेन विषयाशक्तसुन्दरी कदाचिज्जाह्नवीतीरे गतंयज्ञसमारभेत् आयातंयाचकाबन्ही सन्यासीविप्रसाधवाः ब्रह्मचारिश्चतत्रैकं कामरूपोसमागतः कामबाणेनपीड्यन्ति तस्यरूपविमोहिता तत्रैव रमतानित्यं कामपूजाद्वयोरतिः गुरुज्ञात्वादयोत्र त्ता सुभयोशापितंमहत् तेनपापाश्रयोभूयान्नारीयपूर्वजन्मनि क्लिश्यतिविविधोतापं वैधव्यञ्चमहद्भयम् प्रजाद्रव्यशरीरादि सुखेविघ्नभवन्तिहो दानपुण्यविशेषेण सर्वसौख्यसमागमः न सुखंसुस्थिरोभूया यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानं नित्यं व सुखप्रदा स्वर्णपत्रकृतातत्रः शुद्धश्रद्धा सुभक्तितः प्रायश्चित्तप्रकर्तया सुतीर्थेपशुचिस्थले आचार्य्यसुद्धिजंकार्य्यः ममशास्त्रस्यकोविदः सुयत्नरक्त गन्धेण विष्णुप्रतिलिखेद्विजः वेष्टितास्वेतपट्टेण संस्थाप्य कलशोपरि वस्त्राभर्णैसुशोभन्ते पुष्पमाल्यादिवेष्टितम् पूजयेत्सुविधानेन ईश्वरभक्ति भावतः तदग्रमन्त्रमाराध्यःलक्षमेकाग्रमानसः मन्त्र ओं ऐं ह्रीं क्लीश्रींशनं नमोनारायणाय सर्वेश्वरायसर्वपापहरायतज्जनितसर्वकष्टं वारयर श्रेयोमे देहि स्वाहा सावत्रीतत्प्रमाणेन जपतानास्तिपातकं हवनंविप्रभोज्यादि मूर्तिदानंसुयत्नतः एवंकृत्वासुपुण्येण ईश्वराराधनेमतिः सर्वसौख्यागमोगेहे भूयसिसुलक्षणा प्रजासुभोगवृद्धिश्च सौभाग्यंपरमसुखम् गृहक्लेशविनश्यन्ति स्वामिरेवोपितद्वशे प्रतापमानमधिक मनेच्छानित्यपूजिता नानाकार्यं प्रवधेणकुलकीर्तिकरस्त्रियः अयं नेवलेशिताबालात्रिजन्महिपुनःपुनः एतस्मात्कारणान्नित्यंपुण्यसर्वसुखाश्रयः तेनश्रेयोहिसौभाग्यंप्राप्यतिपरमंगति

जन्माब्दं क्लि र्यं च तयोरन्तर्यथाक्रमः द्विवेमासेसुखंजातं तातप्राप्तिसुमंगलम् दशनोत्पत्ति नाकष्टं कृशयभूतकलेवरः पुण्ययत्नादितोर्नूनमल्पमृत्युक्षय सुखम् बालक्रीडाक्रमेणैव दृष्टिहास्यमनोहरा वेदाब्दे पं मेषष्टे नगवर्षाद्विधिक्रमात सुसंगाच्चसुपुण्येण सर्वारिष्टविनाशनम् शुचौपक्षेयथाचन्द्रबाला तद्वतमवर्द्धिती भ्रातसौख्या शेषेण तातमातसुखोत्सवा उद्वाहोचिंतनंचास्य वरंश्रेष्टविचिन्तयेत गृहकार्यरताचैव द्वोलिकाशुचिसुन्दरी व्यालवर्षश्च नंदाब्दे यावद्वर्षदिवाकरे तावत्कालावधिर्नूनं बृहद्भागीप्रशंसिता द्रव्यलाभमहत्तातो उद्वाहंसुमहोत्सवम् कुलकीर्तिमहत्वेण यशसौख्यविवर्द्धिनी भूषिताबहुभिपुण्य दिव्यलंकारभूषणं सर्वचिन्ताविनश्यंति तातमातसुखंलभेत् भोगमैश्वर्यसं त्रा माननीयासुसद्व्रता सुस्वरूपाप्रियःसर्वा रुभयोगेह भूषणा गुणसोममितेवर्षे विंशवर्षान्ततेतया मासेवर्षेसुखंनित्यं भोगमैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविवर्द्धन्ति पुण्यरूपाप्रियंसदा ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वत्रैव प्रशंसिता सुतापुत्रसमायुक्ता कष्टशांतिःसुमंगलम् गृहक्लेशविवादश्च सुखभावेणमोदिता सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धिप्रकाशिणी इन्दुपक्षाब्दमारभ्य शतविंशति मध्यमा धनधान्य समृद्धिश्च पुत्रकन्या समावृता चिंतयापरमाविष्टो पतिकष्ट भयंकरम् पूर्वयत्नादितोपुण्यं नित्यंसौभाग्य रूपिणी रसपक्षाद्व मारभ्य व्योमराम तथान्तरे व्ययलाभमहत्वेण क्वचिच्छोक प्रदादशा पुण्येण पुनरानन्दं मंगलंविविधोत्सवाः व्योमचत्वारिवर्षान्तं सर्वेच्छासुख पूजिता दम्पत्योरल्पजं कष्टं सुपुन्याच्छान्तिनित्यशः तीर्थयात्रा जप यं सर्वानन्द विवर्द्धिनी उद्वाहादि महोत्साहो सुप्रसिद्धप्रशंसिता अयत्नेविपरीतयही भोक्तव्यं कर्मजंफलं तस्मात्सर्व प्रयत्नेन सुखसाधन माचरेत व्योमवाणगतेवर्षे पौत्रजन्म महोत्सवा सर्वैश्वर्य समायुक्ता मतिधर्मेस्थितंयदा एतत्कालान्तरोवत्सः महत्वंसुधनाधिपा ग्रामभूमि महल्लाभं दासदासिश्च वाहनम् ईश्वरा राधनेप्रीती पुन्यैश्वर्य विवर्द्धिनी अपुत्राणांचवैधव्यं पूर्वयत्नविनिर्मुखा तस्मात्सर्वप्रदानेन कृत्वातत्र मुदान्विः दद्याद्वमायुष्यं दुःखशांतिः सुखंलभेत् पुत्रपौत्र प्रपौत्रश्च धनधान्यादिकंमहत प्रकाशितवसुर्वत्र पुन्यैश्वर्यं सुदुर्लभा महत्कर्मांकि लोके सर्वत्रेप्रशंसिता ज्येष्टमासेतमोपक्षेपंचम्यां निधनंदिवे दानमन्त्रा दितोर्नूनं प्रसिद्धकुलवर्द्धिनी पुनरग्रेसमुत्पन्ना नृपवंशेसुसद्व्रता पतिव्रतासुधर्म्मात्मा पदोच्चश्चसुसद्गतिः ईश्वराराधनेपुन्यं स्वर्गलोके पुनर्गता ॥

स्त्री
२०

एतद्योगोद्भवाःबालासुस्वरूपासुलक्षणा जन्मतःमोतृकष्टोपिनातश्चिन्तातिगुप्तता दिवेमासेपिसावृद्धा शुक्लसोमकलायथा नातिगौरोनकृष्णांगी मध्य देहसुलोचना गोधूमाकारवद्रूपाशुचिसाध्वीमनोहरा चारुहास्यागशुभ्रारुचिरांगीमनोहरिः पतिप्रेमकरासाध्वीकोमलांगीशुभानना गृहकार्येसुकुशला सर्वसौख्याधिकारिणी क्लिश्यंतिपूर्वपापेण पतिप्रीतिर्विन्यूनता श्वाशुकलहंगेहोगुप्तकष्टह्युपद्रवाः पतिपुत्रादिद्रव्याणि नसुखंसुस्थिरोमति बहुकार्य मनोद्वेगंवस्त्राभर्ण न्यूनता एवंहिविविधोदुःखंप्राप्यतेपूर्वपापजं पुराजन्ममिदंवालाद्विजवंशसमुद्भवाः सौम्यसाधुसुप्राज्ञश्चपतिदेवसमंलभेत् गृहाश्रमं सुपत्यक्तेनिर्द्धनसतपोधनम् द्रव्याभावेणकुद्धयन्ति नारीयंकलहंकरा बहुमूल्यवस्त्राभर्णं नित्येच्छापतिधर्षितम् अतिवादेणकुद्धोसौ महात्मासुव्रतेरति भार्यात्यक्त्वावनेगत्वा ब्रह्मव्रतपरायणं सर्वावस्थातपस्तप्त गतोब्रह्म रेद्विजः नरीयंक्लिश्यतिगेहे कालेणमृतिस्तदा पतिपुरायशतांशेणप्राप्नुयाज्ञानु षीतनम सुकुलंसुगृहेजन्मः इहजन्मयथाक्रमः ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पत्यपमानपापेण दुःखितोपिस्वकर्मणा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेविघ्नभवन्तिही यत्नंचास्यपरंगोप्यं कृत्वासर्वसुखंलभेत् शुद्धस्वर्णकृतोपत्रं यथावित्तंसुभक्तितः लेखयेद्रक्तगन्धेण गौरीमूर्तिसुमन्त्रयुत् मन्त्र । ऊँ एँह्रींक्लीं सर्वेश्वरीमहागौरीसर्वसौभाग्यदायिनी पतिद्वेषमहापापविध्वंसायनमाम्यहम् श्रींक्लींह्रींऐंऊँ वेष्टितांरक्तपट्टेणासंस्थाप्यंकलशोपरिपूजयेभक्ति भावेणयथाविभवविस्तरे सावित्रीसंपुटंदत्वापूर्वमन्त्रजपेत्पुनः इन्दुषष्टसहस्राणिजपतोनास्तिपातकम् आचार्य्यायप्रदातव्यापरंगोप्यंसुयत्नतः सोसर्व विधिवत्कूर्याद्दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वसौख्यलभेन्नित्यंपतिपुत्रधनादयः मनेच्छापूजितोनित्यंमोदतेबहुविस्तरात् अथाद्यसमासेणकथासर्वंयथाक्रमात प्रथमेद्वितियेवर्षेतातमातसुखावहं शरीरेजायतेकष्टंसर्वशांतिसुयत्नतः तृतीयेवेदबाणाब्देक्रीड्यन्तिहीदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी शिशुणांसंगमेप्रीती क्रियतेप्रेमवर्द्धिनी बालक्रीडाविशेषेण मोदमानगरीयसी यद्रोगञ्जायतेल्पंही नित्यंपुरायेणनश्यति रसाब्देव्यालवर्षांतं प्रतियत्न महोत्सवा गृहकार्यैरतिर्नित्यंचञ्चलश्चपलोमति संबंधश्चर्चयागेहोव्ययदीर्घविचिंतनम् पूर्वयत्नकृतेकाव्यविस्तृतिसर्ववैभवाः सौभाग्यमहतोपुरायंबुद्धिरे विवर्द्धनं तातमानतथालाभंवर्द्धतेनित्यनूतनं ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेवर्द्धयतियथाक्रमः उद्वाहोचर्चयागेहेमंगलंमहदागतः महोत्साहश्चतत्रैवमोदमानंगरीयसी

सुभाग्यमहतोपुण्यंपतिप्राप्यमनोहरम् तातकीर्तिविशेषेण सर्वकोर्थसुसिद्धति विविधाभूषणोवस्त्रंभाग्यपात्रासुशोभिता मानेनमहताविष्टोद्वयोगेहप्रका
शिनी गृहकार्याणिसर्वाणि बुद्धिरेवविवर्द्धनम् प्रकाशोविपणीभूयात्प्रियहास्यविलासिनी प्रायश्चित्तमहादानं नित्यंसर्वसुखप्रदा गुणचेन्दुगतेवर्षे ऋतु
चन्द्राब्धकेतथा पतिप्राप्तिविशेषेण सर्वसाफल्यवैभवाः शरीरेजायतेकष्टं औषधिप्रतिशांतये पतिप्रीतिहृदेगुप्तंप्रत्यक्षञ्चदिनेदिने सुस्वरूपाप्रियसर्वमंगलं
मोदवर्द्धनः अयत्नेक्लेशितोर्नूनं विपाकेहानिसंभवाः भगवद्भक्तिभावेण पूर्वपुण्येसुखंभजेत् नगसोममितेब्देतुव्योमपक्षावधिक्रमात् मासेवर्षेसुखंनित्यं
पति मपरायणाः कष्टञ्चमहतोभूयात्पुनरप्याहिमोदितं सर्वसौख्यान्वितोभूयहानिरन्तेस्वकर्मणा दानमन्त्रसुपुण्येणसर्वसौख्यसमागमः सुतापुत्रादिजा
सवःमोदितंपतिभिस्सह इन्दुपक्षमितेब्देतुशरपक्षाब्धकेतथा भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेबहुनूतनम् महत्त्वमाधिकंलोकेसुखयुग्यत्नसाधितः दम्पत्योरल्पजं
कष्टंशान्तितत्रैवयत्नतः नसुखंलभतेपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् नानाचिंताभनोद्वेगंदुःखिताचमुहुर्मुहुः कुलेविघ्नमुपाधिश्च भर्तारंतप्यतोतथा किंचिद्दाना
दिमंत्रेणासुखंसर्वाणुयत्नतः ऋतुनेत्रगतेवर्षेव्योमरामसुचान्तरे पूर्वयत्नंसुपुण्येण भर्तारंसुखसर्वदा वृद्धागोसुतप्राप्यसाफल्यंजन्मभूतले सर्वारिष्टक्षयो
नित्यंपुण्येसर्वमंगलम् चत्वारिंशावधिंतत्रः मनेच्छासर्वपूजिता विवाहामंगलंकार्य्यं जायतेविविधंगृहे कीर्तिश्चनिर्मलीभूयात्कुलंतेनप्रकाशिता कुल
वृद्धिविशेषेणसुप्रतिष्ठोयशस्विनी अनुष्ठानमहादानंपूसंरक्षयेद्यदि सुखंसर्वाणिरत्नसूयवसुन्धरा चन्द्रचत्वारिवर्षाणितथाव्योमशरान्तरे सद्वयपो
पिधनंधान्यंसुविख्याताप्यमानिनी धर्ममार्गेगताप्रज्ञा सर्वसौख्याधिकारिणी द्विपुत्रोचन्द्रकन्याच भर्तारंहिमहत्सुखम् जन्मसाफल्यमाप्नोति विस्तृतिंसर्व
वैभवाः नानालाभसुखासर्वे सौभाग्यंमहतोत्सवम् सर्वेप्सितंफलंप्राप्यः पूजनीयोमहत्यशा शरपञ्चतथाब्दंहि पौत्रजन्ममहोत्सवम् तीर्थदेवालयेप्रीती
दानधर्मादितत्परः शरीरेकष्टसम्पन्नो मृत्युरेवसमोमहत छायापात्रान्नदानेन सर्वशांतिसुयत्नतः महादानादितोगूवं हर्षवृद्धिदिनेदिने मंगलंमहत्त्वोयावी
कष्टापत्तौरुजक्षयम् राजित्तंसुप्रबधेण रमा शविवर्द्धिनी पौत्रजन्मविशेषेण महोत्साहोप्रशंसिता इन्दुषष्टाब्धमायुष्यं किम्वावेदरसाब्धकी ईश्वरंभक्ति
भावेण प्राप्नुयात्परमांगतिः अथाग्रेसुकुलोत्पन्नं पुण्यपात्रीमहत्पदम् त्वयत्नेविपरीतंहि त्रिजन्मंपापपीडितः दानमंत्रमहोत्साहो सर्वसौभाग्यदायकः

स्त्री०

३१

एतद्योगोद्भवोकन्यासुस्वरूपाचसुन्दरी पतिप्रेमकराप्राज्ञीसुशीलाचप्रियंवदा नातिगौरीनकृष्णांगीगोधूमाकारवत्तनुम मध्यपादकरदेहोचारुहास्यावला
सिना मातृकष्टप्रदोनि चित्तातचिंताप्रदायिणी गृहकार्येसुकुशलापुनरानंदवर्द्धिना कोमलांगीसुप्राज्ञिश्चमध्योष्टीचारुनासिका सुनयनाभूतिशुभ्रारुचिरांगी
नितम्बिणी पूर्वावस्थाविशेषेणरमंतोसखिभिस्सह लक्षणाश्चशुभासर्वे किंचित्पापाद्रधोगतः भ्रातभग्नीसमायुक्तभूयसेपिस्वकर्मणा पूर्वात्रस्थासुखंदीर्घः
मध्यावस्थाचमध्यमम् अन्तेदुक्खाश्रयोनारीक्लेशितंप प कर्मणा कल्पयंतिमहच्चिंतासर्वसौख्याविकारिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यादुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः नसुखं
लभतेपूर्णापतिपुत्रात्मजादयः वियोगकलहोदुःखंहानिरेवदिनेदिने पुराविप्रकुलेजातासुस्वरूपातिसुन्दरी सर्वसौख्यान्वितोभूयात्सुमतिर्वाग्विलासिनी
दानधर्मेमतिःस्वल्पाःदूषितविप्रसाध्वा गेहेविवादितोनित्यंनिंदंतिस्वसुरादयः क्लिश्यतेतेनभर्तारंकुमार्गीभूयसेपिसा कदाचिद्दैवयोगेणगृहेक्लेशोति
दारुणम् वादावादकुवाक्येण क्रोधावेशमहत्यपि तत्रचेदंगृहंत्यक्त्वा कूपेपततिदुष्टता आत्माघातमहापापं कर्तव्यंसाद्यु पस्थिता दैवेणरक्षितस्तत्रः नैव
मृत्युवशंगतः दुक्खितंतेनविविधंभर्तारंरोषितोमहान् पितृमातृसमायुक्तंशापितविविधंतया नसुखंप्राप्नुयाद्धामात्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि एतस्मात्कारणा
द्वत्समानुषीपापमाश्रयः एतज्जन्मत्रिजन्मानिदुक्खितापापकर्मिणी क्लिश्यतिविविधोगेहंपतिपुत्रादिसर्वयोः नसुखंलभतेपूर्णायाद्यत्नंनपापहम् स्वर्णपत्र
कृतोतत्रयथावित्तंसुश्रद्धया नगांगुलंसुविस्तीर्णात्रागांगुलतथैवच तस्योपरिलिखेचत्रंविष्णुमुद्रायथाक्रमः सस्थाप्यविधिवत्कुंभेवेष्टितांपीतपट्टतः तदग्रे
मंत्रमाराध्यपूजनंभक्तिभावतः तत्रमंत्र ओंऐंह्रींक्लीं श्री शं सर्वेश्वरायसर्वरूपायविश्वरक्षणेमहापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापंनाशय२ तज्जनित
सर्वकष्टंविदारय२ मनोभिलाषितसौख्यं प्रकाशय२ स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंओं एतन्मंत्रजपेत्प्राज्ञः नंदव्यालसहस्रकम् सावित्रीतत्प्राणेनबटुकाराधनंततः
पुरुषंसूक्तमुच्चार्यश्रीसूक्तञ्चसुभक्तितः शुद्धस्थानेक्रमेणैवकूर्यातंत्रमुदारधि आचार्यायप्रदातव्यमूर्तिसंकल्पयेत्पुनः ईश्वरभक्तिभावेणाशिर्वादश्चग्राहयेत्
प्रतियत्नसुखंवृद्धि मोदतेभक्तिभावतः पतिपुत्रसुखंसर्वजन्मःक्लेशनाशनम् प्रजोपभोगवृद्धिश्च राजतेसर्वसम्पदा पति ेममहत्वेण सुखंजन्मनिजन्मनि
महत्वमधिकंलोकेसाफल्यंसर्ववैभवाः परंगोप्यमतंवत्सः पुण्यामार्गसुखप्रदा कथयामिसमासेण अथाग्रेश्रुणुभार्गवः प्रथमेद्वितीयाब्देतु रामव यथाक्रमम्

मासेमासेत्रिवर्द्धतिचालिकाशुचिलक्षणा तातमातसुखंनित्यगृहेमंगलमेवच शरीरेकष्टसंपन्नोभूतछायाश्वविह्वलोः किंचिद्दानादिमंत्रेणश्रेयमानासुयत्नत
दंतवाधापुनःपीडयंज्वरतप्तविरेचनम् छायापात्रान्नदानेनश्रेयवृद्धिरुजनशे । चान्येपिरांभवोकष्टंसुयत्नंशांतिनित्यशः चतुर्थेपञ्चमाब्देतुषष्टवर्षादिसक्षमे
शिशुक्रीड़ारतोनित्यंचञ्चलश्चपलामतिः मंगलंजायतेगेहोकुलकीर्तिविवर्द्धनम् भ्रातजन्ममहोत्साहोकन्यकासुखरूपिणी यद्रोगंजायतेकष्टंयत्नेनशांति
भेततः अष्टमेद्वादशेवर्षेपतियोगोथमङ्गलम् गृहकार्येसुकुशलाकन्यारूपवतीसती क्रीड़तिविविधंवाला मोदितंमखिभिसह विवाहमहतोत्साहोपतिरेव
स्त्रा० सुप्राप्नुयात तातकीर्तिविशेषेणवर्द्धतेचलतेवसः विविधाभूषणोवस्त्रेप्राप्यनेपिवरानना त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दे मध्येमहत्सुखम् स्वकृत्यकुशलोबामा
३२ मोदितापतिभिसह भयभीताहदेगुप्तंकदाचिच्चिन्तनोमहत् भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेपुण्यकर्मणा ऊनविंशतथाविंशेशरनेत्राद्धमध्यगे आनंदंसंप्लवेलीन
भोगामैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविशेषेणपुण्यादानन्दसर्वदा कुलवृद्धिप्रभावेणप्राप्नुयाज्ञानमुत्तमम् पूर्वपुण्यंसुयत्नेनपतिपुत्रधनादिजा सर्वसौख्यान्विता
भूयान्मोदितागेहभूषणा शरीरेसंभवोकष्टं सुयत्नेशांतिसर्वदा मंगलंविविधोत्साहो कुलवृद्धिप्रकाशिता ऋतुनेत्रगतेवर्षे यावनभत्रियाद्धके दानमन्त्रं
सुपुण्येणपतिपुत्रात्मजंसुखम् नोचेद्विलोमकंवृत्तंभोक्तव्यहीस्वकर्मणा यावद्यत्नेनकर्तव्यासुखेशोकसमागमः त्रिंशेकोपञ्चत्रिंशाब्देशून्यचत्वारिमध्यमा
विवाहोमंगलंकार्यं जायतेशुचियत्नतः प्रकाशोविपणीभूयाद्दानमन्त्रमहत्फलम् पूर्णभाग्योदयंभूयाद्यशसौख्यविवर्द्धते नानाकार्यप्रबन्धेण राजते
पुन्यमम्पदा पूर्वयत्नादितोनित्यं पतिभक्तिपरायणा मनेच्छांपूजितंलोके सुखंसर्वत्रवर्तते शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाद्धमध्यगे सुप्रसिद्धाः
सुनारीणां पतिप्रेमविवर्द्धिनी सुतापुत्रसुखाविष्टो पौत्रजन्ममहोत्सवम् व्ययलाभमहत्वेण सर्वेच्छासुखपूजिता पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले
शशिपञ्चशरेपञ्च तथासून्यरसान्तरे ईश्वराराधनेप्रीति तीर्थमन्द्रादिसेवनम् व्रतनेमरतश्चापि दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वेप्सितंफलंप्राप्यः पुण्यपात्री
सुमानुषी किंचिच्छोकोगभोगेहे गृहाशक्तापिक्लिश्यति ईश्वराराधनेप्रीति सर्वसिद्धिप्रदोभवेत् देवपुण्योत्सवेतस्य व्ययंकीर्तिसुनिर्मला वेदषष्टाद्ध
मायुष्यं किंवाशररसाद्धकी स्वगृहेनिधनंचास्य प्रशंसापुण्यतोभुविः पुनरुच्चकुलेजातं दानधर्मादियत्नतः सर्वसौख्यसमायुक्तं प्राप्यतेपरमांगतिः

सर्वखेटेष्टमानेनयोगोयंसुखवर्द्धन धनधान्यान्वितोभूयाद्राग्यपात्रीसुमोदिता जन्माद्धनयुतोबाला तातमातसुखप्रदा मिष्टभाषीसुशीलाच गीतवाद
परंप्रियः महर्घभूषणौवस्त्रंप्राप्यतेग्रहमानिनी रूपहास्यसुसंपन्नामध्यमाङ्गीसुलोचना पीडितंपूर्वपापेणसर्वसौख्याधिकारिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण वाभा
क्लेशमवाप्नुयात शोकातोविविधंचिन्ताविभ्रमोव्याकुलंकदा नसुखंलभतेपूर्णं यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येण नित्यंसौभाग्यरूपिणी प्रतिफलन
सुखंवृद्धि मनेच्छासर्वपूजिता सुकार्यसुस्वभेण पत्यरतमन्तवल्लभा: कुलकीर्तिकरासाध्वी सतिसौम्यप्रियम्बदा मानेनमहताविष्टो यशंभूरिसुकर्मणा
पूर्वजन्मनियत्पापं कथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुःखिवतापापरूपिणी वैश्यवंशोद्भवोकाव्यःनारीयंपूर्वजन्मनाः निजगेहेश्वरीभूयाद्धनपुत्रेण
दर्पिता दानधर्मरतोनित्यं व्रतयज्ञसमाचरेत दासवाहनजैर्नित्यं गर्वितापुण्यरूपिणी साकदाजाह्नवीतीरे संस्थितादिवसेरसे अग्निकांडेनतत्रैवव्याल
वंशक्षयंकरः तेनपापाश्रयोभूयाददुःखिवताइहजन्मनि कुलवृद्धिनदृश्यंतेपतिक्लेशोतिदारुणम् अतस्तंशांतिहेत्यर्थंकृत्वातन्त्रशुचिस्थले निजवित्त नु
सारेणस्वर्णपत्रकृतस्तदा लेखयेद्रक्तगधेण व्यालमूर्तिकुलान्वितः संस्थाप्यकलशेपूज्य रक्तपट्टेणवेष्टितम् सुविप्रोमन्त्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्रकम्
। तत्रमन्त्रः। ॐऐंह्रींक्लींश्रींशंनमः शङ्करायशिवाय सर्वदुःखहर्ताय पूर्वजन्मव्यालवंशक्षय पापशमनाय सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ
सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या आचार्यायप्रदापयेत् वस्त्रआभूषणंदत्वा दानमानैसुतोषितम् नित्यपुण्याश्रयोवोमा
एतद्यत्नसुखप्रदा सौभाग्यंसंततिसर्वाः मोदितागेहभामिनी जन्मकाल समारभ्यः यावज्जीवतिभूतले तावत्कालीयजगाथा कथयामिसमासतः
जन्माब्देद्वितियेवर्षंतथावेदेशरान्तरे तातमातमहच्चिंताबालिकागेहभूषणा शरीरेजायतेकष्टंस्वयमेवविनश्यति भ्रातजन्ममहोत्साहो मंगलंजायतेगृहे
तातमातमहामोदं साफल्यसर्ववैभवा ज्वरोविरेचनंपीड्य उच्चस्थपतनाद्भयम् बृणंविस्फोटकोव्याधि सर्वयत्नेनशांतय मृदुवाक्यमनोरम्य दृष्टिहास्य
मनोहरी तातप्राणेषुसन्देहोपुण्यात्सवसुखागमः रसाब्देव्यालवर्षेत्रतयोरन्तर्यथाक्रमः चंचलश्चपलोसाम्याकाडतिसखिभिसह तातलाभविशेषेण
प्राप्यतिमानमुतमम् गृहक्लेशोपदावव सुयत्नेशांति नित्यशः नातिधनी भवेत्तातः नातिनिर्द्धन मेतथा मध्यमापिसुशीलाश्च लाभवृद्धिक्रमेणवै

ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेशरसोमक्रमादितः मंगलंकार्ययोगोपिमासेमासेसुखागमः तातमातमहच्चिंताव्ययोगमहत्यपि उद्वाहो गलंदिव्यंकुलकीर्तिप्रशंसिता
महर्घभूषणोवस्त्रं प्राप्यतेननूतनम् अन्नदानादितोनित्यं श्रेयवृद्धिश्चसर्वदा सुगेहोसुखप्राप्यः सुपुत्रयाद्बोग्यभाजिनी सर्वापत्तौक्षयोनित्यंपूर्वयत्नेसु
रक्षणम् पतिप्रेमविवर्द्धेतिविस्तृतोरूपयौवनम् मासेवर्षेसुखंजातंकष्टशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षेविंशवर्षावधिततः सर्वसंपत्समायुक्ता ग्रहकार्ये
सुकौशला पतिप्रेमविकरावामारमयन्तिसुमोदिता विद्याबुद्धिविशेषेण सुसंगाच्चयशंमहत भाग्योदयंभवेन्नित्यं संतद्योगोभिजायते मानकीर्तिमहोत्साहो
महदानंदवर्द्धिनी बंपत्तेरल्पजंकष्टपुण्यात्शांतिसुखागमः दानधर्मेसुखंनित्य मिष्टदेवसुपूजनात् चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिकेतथा पतिभक्ति
सुपुण्येणमनेच्छाबहूपूजिता प्रीतिरेवसुनारीणांसुखक्लेशप्रकाशिनी मंगलंचर्चयागेहो पुत्रकन्यासमायुता सर्वेकार्येसुकुशला पतिरानंदवर्द्धिनी सुस्व
रूपाप्रियसर्वाः सुभगासुविचक्षणा त्रिंशवर्षावधिर्नूनं शुचिशौख्यान्विताभवेत् भाग्यवृद्धिःसुयत्नेन विलीयंतेपिशत्रवा मंगलंविविधोकार्यं जायतेनित्य
नूतनम् शशिरामाद्बमारभ्यशरवह्नितथांतरे सुतापुत्रसमायुक्तामोदितापतिभिसह वृहल्लाभप्रभावेणसर्वदामंगलंभवेत विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
प्रकाशिणी मानेनमहताश्रेष्ठो राजतेतर्वसम्पदा अकस्माच्चमहल्लाभं व्ययोपिबहुसाधिता सर्वसौख्यागमोगेहे कष्टचिन्ताविनष्यति स्वयत्नेविपरीयही
भोक्तव्यापापजफलम् नेत्रवेदाब्दगेवत्समहच्छोकप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेनपूर्वसंरक्षितायदि सर्वोपिमानदोमान्यवनितापुण्यरूपिणी वह्निवेदगतेवर्षे
व्योमबाणसुध्यगे देवदर्शनतीर्थेषुसाफल्यंमानुषीतनम् नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेपुण्यसम्पदा प्रकाशोविपिणीभूयात्कुलवृद्धिमहोत्सवाः पूर्वयत्नप्रभा
वेणप्राप्यतेपरमंसुखं अतःपरिसुपुण्येणयावद्ध्योमरसाब्दके तावत्कालावधिर्नूनमनेच्छासर्वपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहोस्वगेहेसुप्रतिष्ठिता नृत्यगीतोत्सवै
र्गेहंशोभितेबहुविस्तरात भूमिलाभविशेषेणरचनागेहनूतनं गुप्तद्रव्यगृहेतस्यधर्मकार्येव्ययोमहत् साधितंसर्वकार्याणिपुण्यपात्रीसुशोभिता रामसप्ताब्द
मायुष्यंपूर्वरापयेसुरक्षणम् अयत्नेक्लेशितानित्यं वैधव्यंपापरूपिणी त्रिजन्मंपीडितोपापं नित्यक्लेशाधिकारिणी दानधर्मरतोनित्यंतस्मात्सर्वसुखार्थये
पापशांतिप्रभावेणपुण्यात्सर्वसुखंसदा सकालेमृयतिश्चापिसर्वत्रैवप्रशंसिता इहजन्मसुखासर्वेतथैवाग्रत्रिजन्मनि सर्वेच्छापूजितापुण्यंनित्यंपापाद्रधोगता

सर्वखेटेष्टमोनेन धनाध्यक्षासुभामिनी सुस्वरूपाप्रियासर्वे चारुहास्यविलासिनी सुप्रसिद्धा:चधर्मात्मा गृहकार्यहितेरता: मध्यमांगीसुमतिमान् पतिप्रेम
विवर्द्धिनी भोगमैश्वर्यसंपन्नात्रस्त्राभर्णैसुशोभिता धनपुत्रसुखंसर्वदा सदासिश्चवाहनम् सर्वैश्वर्यसमायुक्तापुन:पापाद्रधोगता पतिपुत्रात्मकष्टेणक्लिश्यति
त्रिविधोमहान् आपतौचविशेषेण जायतेपूर्वपापत: चिन्तयेद्विविधोबामा मानहानिभयमहत् धनहानिविशेषेण गृहेक्लेशह्युपद्रवा: तामसंक्रोधवेगेण
कार्यहानीभवेध्रुवम् विमुखोयातिभर्तारंवैधव्यान्तेमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येणपापशांतिसुखागम: ईश्वराराधनेप्रीतीमनेच्छाबहुपूजिता मानकीर्ति
विशेषेण पुण्यंसाफल्यवैभवा: अत:परिसुखा:सर्वे अग्रजन्मपुन:पुन: राजयोगभवेत्पूर्णा नानारत्नै:सुशोभिता ईश्वरंकृपयाद्वामाप्राप्स्यतिपरमांगति:
पापशांति:यदानैवक्लिश्यतिसाधमामति: पूर्वजन्मनित्यपापंकथयामिसमासत: येनक्लेशाश्रयोनारीदुक्खितातिमुहुर्मुहु: शूद्रवंशोद्भवापूर्वंसाधुसेवा
सुतत्परा ईश्वराराधनेप्रीती दासीचैवातिनिर्द्धना नित्यंद्विजगृहेसेवा स्वोदरंपाल्यतिसदा साधुसेवाप्रभावेण ईश्वराराधनेनवै बहुपुण्याश्रयोशूद्री
भूयसिभाग्यभाजिनी कदाचिद्दैवयोगेण द्विजगेहेमहद्धनम् दृष्ट्वातुस्वपतिब्रूयाल्लोभग्रस्ताधनामति: हृतंद्विजधनंसर्वमुभयो पापमाश्रय: नदृष्ट्वा
स्वधनंविप्र: शापंदत्वातिदुक्खितम् तेनपापप्रभावेण इहजन्ममहद्भयम् साधुसेवासुपुण्येण उत्तमेकुलसम्भवा: रूपलक्षण पन्ना कोमलांगीशुभानना
आदौपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुन:पापोदयंभूयात्पतिबुद्धिविनाशनम् वैश्यागामीमदोन्मत्त: सर्वद्रव्यक्षयकर: क्लिश्यतिविविधोतेन
शरीरेदारुणभयम् कुलकीर्तिक्षयसर्वं गृहेशोकसमागम: एवंहिविविधोदुक्खं त्रिजन्मंजायतेमहान् तस्यशांति:प्रवक्षामि येनचाग्रेसुखंलभेत् ताम्रपात्रे
घृतंयुक्त: स्वर्णद्रव्यसुश्रद्धया वेष्टितांपीतपट्टेणपुष्पमाल्यादिभूषितम् द्विजभार्यान्वितोमूर्ति स्वर्णपत्रसुलेखयेत् संस्थाप्यकलशेतोत: पूजनंभक्तिभावत:
आचार्याय:प्रदातव्यं तद्दानंसुविधिर्यथा शशिव्यालसहस्राणि मन्त्रमेतज्जपेत्तदा ॥ मन्त्र ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं श्री सर्वेश्वरी भगवतीदेवीं पूर्वजन्मकृत
शापपापशमनं कुरुकुरु सर्वसौख्यप्रदायिनी स्वाहा हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति पुन:सर्वसुखंलोके धनपुत्रादिजैरपि पतिराज्ञाप्रपाल्यन्ते
शोभितागेहभूषणा सर्वसौख्यान्वितोबामा पुनश्चैवाग्रजन्मनि ग्राममूमिधनंप्राप्य: सुपुण्यात्मादयामयी पुण्येच्छापूजितासर्वे त्ययत्नेक्लेशभाजन

जन्मतःप्रथमेवर्षेवह्निवर्षेषुयत्क्रमः तातमातहृदेचिंताबालिकाप्रेमवर्द्धिनी शरीरेकष्टसंपन्नोज्वरानतिसारादयः दन्तपीड़ावितप्यन्तिशांतिरेवंसुयत्नतः
वृहद्वरीतिकीचैवलक्षणांश्यामसंयुता देयात्शांतिप्रजायंतेशरीरारोग्यवर्द्धनम् अन्नदानादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते दानमंत्रंसुयत्नेनपापशांतिःमहोत्सवा
शुचौपत्तेयथासोमःयोगस्तद्वत्प्रवर्द्धते वेदाब्देपञ्चमेवर्षे ऽष्टंवर्षादिसप्तमे बालासुभोगमैश्वर्यंवर्द्धितेपुण्यकर्मणा वृणंविस्फोटकोव्याधिःसर्वशांतिसुकर्मणा
क्रीड़तेमतिसंजातंगेहकार्येसुतत्पराः तातचिंतामनोद्वेगंसंबंधस्यविचर्चितम् मातृकष्टविशेषेणभ्रातजन्मसुखोत्सवम् व्यालवर्षनभेंदुश्चनेत्रचंद्राद्वमध्यगे
गृहकार्यरताबालाविवाहोमंगलंमहत् व्ययद्रव्यमहतातोमानप्रीतिश्चनिर्मला पतिरेवसुप्राप्यंतिवस्त्राभर्णमनोहरा सुखेणमहताविष्टापुण्यैश्वर्यविवर्द्धनम्
अयत्नेपापजंकर्मविपाकेदुःखदोमहान् त्रयोदशाद्वसंप्राप्ते अष्टादशमितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणराजतेपुण्यसंपदा मनेच्छापूजितोनित्यंचित्तचितायदाकदा
दानधर्मादितोनित्यंसर्वैश्वर्यदिनेदिने ऊनविंशेचविंशाब्देपञ्चविंशतिमध्यमा स्वगेहेसुप्रतिष्ठोपिवनितापुण्यरूपिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यासुखेविघ्नमहद्भयम्
प्रार्याश्चित्तंसुपुण्येण आयुवृद्धिमहत्सुखं पुत्रकन्यासमायुक्तापतिप्रेमविवर्द्धिनी नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसंपदाः रसविंशमितेवर्षेव्योमरामक्रमादितः
महोत्साहश्चतत्रैवमंगलंमहदागतशरीरेजायतेकष्टंदंपत्योरल्पजंभयम् छायापात्रान्नदानादिसुखयुद्यत्नसाधितः दासवाहनजैर्नित्यंभोगमैश्वर्यसर्वयोग्यत्ने
विपरीत्यंहीपतिपुत्रेणक्लिश्यति इन्दुरामाद्वमारभ्यःचत्वारिंशावधिततः वांछापूर्तिप्रजायेतःपूर्वयत्नेसुरक्षितो विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्तिमहत्यपि
मंगलंविविधोनित्यंप्रजावृद्धिवृहद्यशः ईश्वरभक्तिभावेणसाफल्यंसर्ववैभवा तुष्यतिविविधोनित्यपतिपुत्रात्मजादयः कार्यवृद्धिविशेषेणकष्टचिंताक्षयंसदा
अनुष्ठानमहादानंसत्रःसर्वसुखप्रदा सर्वपापविमुक्तापुण्यरूपासुमानिनी पुण्यपापाश्रयोनित्यंसुखदुक्खादिसर्वयो शशिवेदगतेवर्षेमल्लवेदाद्वमध्यमा
शरीरेजायतेकष्टंमहादानसुखप्रदा देवतीर्थाटनेप्रीतिशताद्धवत्सरावधिः रामबाणमितेब्देतुपौत्रजन्मेच्छितप्रदं मंगलंविविधोत्साहोयशसाधननित्यशः
प्राप्तेवेदशराब्दे तुव्योमषष्टक्रमादितः दानधर्मरतानित्यमग्रजन्मसुखार्थये देवदर्शनतीर्थेषुपवित्रंमानुषीतनम् सर्वत्रैवंप्रकाशयंतिपूर्वयत्नेसुरक्षिता त्वयत्ने
क्लिश्यतिवामा वैधव्यंपापरूपिणी पूर्णायुरष्टषष्टाब्दे पञ्चतत्वप्रथग्भवेत् सुपुण्योदग्रजन्मेच सर्वसौख्याधिकारिणी वैश्यवंशसमुत्पन्नं वनितागेहभूषणा

स्त्री० ३४

सर्वयोगविचारेणयोगोयंसुखदर्शकः सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुण्यरूपासुभामिनी जन्मतःमातृकष्टोपितातचिन्ताचगुप्तता जन्मकालात्प्रवर्द्धतःसंपदा
पितृवेश्मनी यथादेहप्रवर्द्धतः भोगमैश्वर्यनूतनम् मध्यभागीसुशीलश्चवस्त्राभर्णैःसुशोभिता दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ासुचञ्चला गुप्तचिन्तामनोद्वेग
क्रोधेणतप्यतिकदा चिंतयंतिविशेषेणस्वकार्यसाधनेमति तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवं मध्यरूपाशुभांगीचसुनयनाशुभ्राशुचिः मनेच्छापूजिता
बव्हीदशाश्रेष्ठसुखप्रदा उद्वाहादिमहोत्साहो तातकीर्तिसुखप्रदा पतिप्रेमकरारन्या गृहकार्यविचक्षणा पीड्यतिपूर्वपापेण सुखेशोकद्यु पद्रवा क्लिश्यति
त्रिविधोद्वेगंस्वल्पायुरल्पजंभयम् विवादकलहंगेहोनिमग्नाःशोकसागरे पतिपुत्रात्मजादिणांसुखेविघ्नंहिपापजम् नसुखंसुस्थिरोलोकेयावद्यत्नंनपापहम्
प्रायश्चित्तमहादानंसर्वसौख्यदिनेदिनेमंगलत्रिविधोत्साहोसुतापुत्रविवर्द्धनम् नित्यंपुण्याश्रयोलोकेसफलंमानुषीतनम् तथैवोदुक्खदंपापारितिज्ञात्वासुनि
श्चितम् । शुक्रोवाच । पूर्वपापकथंतातःकथयस्वप्रसादतः येनदुक्खलभेन्नारीतस्ययत्नकथंभवेत् । भृगुवाच । पूर्वजन्मकथावत्सःप्रवक्षामिसमासतःवैश्य
वंशसमुत्पन्नानारीयंधनगर्विता व्रतदानरतोभूयादंतर्ज्ञानाभिमानिनी तत्रैकसमयेवत्सव्रतोद्यापनमाचरेत यज्ञश्चकारयामासःयशेतेसाधनेमति यज्ञस्थले
शुचौतीर्थेगुरुरेवविवादिति स्वामिआज्ञानमन्यंति त्यज्यतिस्त्रगुरुतदा रुष्टंतस्यापमानेन विप्रेन्द्रोशापितंमहत् रेदुष्टात्मादुराचारी दर्पितापापरूपिणी
निजकृत्यफलंलोकेत्रिजन्मंदुक्खितोभहान् पतिपुत्रात्मजाक्लेशंशरीरेदारुणोरुजम् प्राप्नुयाद्विविधोद्वेगंगृहेक्लेशद्यु पद्रवाः तेनपापप्रभावेणनारीयंदुक्ख
माश्रयः प्रायश्चित्तंविधानेनकथयामित्वयाधुना एतज्जन्मकृतेकाव्यःसर्वसौख्यसमृद्धिमान् यस्मिन्कस्मिन्दिनेभूयाच्छ्रद्धाभक्तिसमन्वितम् स्वर्णस्यप्रतिमा
कार्यःयथाविभवविस्तरात विष्णुनारायणोमूर्ति लेखयेद्रक्तचन्दनम् शापदातागुरुमूर्ति तन्निकटेसुविधिर्यथा लिपित्वाशापहंबीजं सर्वञ्चसुविधानतः
संस्थाप्यंकलशेप्राज्ञःवेष्टितांपोतपट्टतः पूजयेद्भक्तिभावेण विष्णुयज्ञक्रमादितः तदग्रेजापयेन्मंत्रंशशिलक्षञ्चवार्द्धकम् ॥ मंत्र ॥ ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय
सर्वपापशमनायभद्रं कुरु२नमः स्वाहा सावित्रीतत्प्रमाणेनशापहंबीजसंपुटम् शैयादानविधानेनमूर्तिदानंसमाचरेत् हवनंविप्रभोज्यञ्चसर्वपापैर्विमुच्यति
नित्यंपुण्याश्रयोलोके२तद्यत्नप्रभावतः सर्वसौख्यागमोगेहेवनितापुण्यरूपिणी मानकीर्तिमहोत्साहोसुखंसर्वत्रवर्तते पतिपुत्रात्मद्रव्याणिसफलंजन्मभूतले

प्रथमेद्वितियेवर्षेत्रह्निवर्षाच्चपञ्चमे दन्तशाखाज्वरंपीड्य: वृणांविस्फोटकादय: रुदन्तीविव्हलाकन्यांभूतछायाप्रपीड्यति किंचिद्दानादिमंत्रेण औषधिसेवने
नवै श्रेयोमानंसुखासर्वे क्रीडतिविविधैरपि भ्रातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमेवच अल्पमृत्युभयंघोरं द्वितियोजन्ममरायते पुनरानन्दसंप्राप्य प्रायश्चित्तं
सुयत्नत: रसत्रयगतेवत्सव्योमचन्द्रादनन्तरम् बालिकावर्द्धतिनित्यंशुचौपत्तेनिशेशवत भोगाप्रवैभवोवृद्धि: वस्त्राभर्णै:सुशोभिता गृहकार्यरतोबाला
बादहास्यपरंप्रिय: छायापात्रान्नदानेन सर्वाकष्टनिवारणम् विवाहोन्चर्चयातस्य तातचिन्तागरीयसी चञ्चलश्चपलाबाला शिशुक्रीडामनोहरा मंगलं
विविधोगेहे मासेवर्षेसुखंगता: शशिसोमगतेवर्षे शरसोमतथान्तरे विवाहोमंगलंदिव्यं कुलकीर्तिप्रशंसिता पतिसौख्यनसन्देहो दानमन्त्रफलप्रदा
दिव्याम्बरंभूषणञ्च शोभितापिशुभानना गृहकार्येसुकुशलाभोगमैश्वर्यनूतनम् रसेन्दुविंशवर्षाणिपतिप्रेमविवर्द्धिनी भाग्यवृद्धिर्नसंदेहोसुखंतत्रप्रवर्तते
शरीरेजायतेकष्टंसर्वशान्ति:सुयत्नत: नवाम्बरंभूषणञ्चप्राप्यतिविविधोतदा मासेवर्षेसुखंजातंसुपुण्यात्पूर्णवैभवो: इन्दुनेत्रगतेवर्षे पञ्चयुग्माङ्ककेतथा
शरीरेजायतेकष्टंपुत्रजन्ममहोत्सवम् पतिप्राप्तिविशेषेणयथालाभतथाव्ययम् सुतापुत्रसुखंलोकेमानवृद्धिर्दिनेदिने मनेच्छापूजितोनित्यंदानमंत्रसुयत्नत
रसनेत्राङ्कत्रिंशेच तयोर्मध्ये महोत्सवम् अयत्नेविविधोचिन्ता पापादुक्ख महद्भयम् तेभ्य: संरक्षितस्यापि पूर्णायु: सुखसंपदा नानाकार्यप्रबन्धेण
सुप्रसिद्धापिभामिनी पुत्रकन्यासुखाविष्टो पूजयन्तिमनोरथा अनादरस्तुशत्रुणांपतिप्रीतिविशेषत: शशित्रिशत्रित्रिंशेच शररामान्तरेतथा विवाहो
मंगलंकार्यंव्ययलाभमहत्यपि शरीरेजायतेकष्टमन्नदानात्तत:सुखम् षष्टवह्निगतेवर्षे व्योमवेदावधि:क्रमात् मनेच्छापूजितोसर्वा: नूतनंसंभवेपुत्न:
पुण्यकर्माश्रयोलोके किंकिंसौख्यनलभ्यति भूमिमन्द्रधनंप्राप्य: रजितंस्वर्णभूषणं देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रीक्रियतितनुम् आज्ञाकारी सुताभृत्या:
प्रजावृद्धि महोत्सवा: वेदबाणाङ्कमारभ्य: पौत्रजन्मसुतुष्यति प्रकाशोविपणीभूयाल्लाभोभवति पुष्कलम् अत:परिसुखासर्वे रामसप्तान्तरावधि:
सर्वसौख्योपिभुञ्जोता सफलंजन्ममानुषी ईश्वराराधनेप्रीती दानादिमतितत्परा: स्वासकासादिजंपीड्य: अन्तकालह्युपस्थिता पञ्चतत्वप्रथग्भूयात्
सप्तमीचाश्विनेतमे प्राप्यतिसुगतिश्चापि पूर्वपुण्यंसुयत्नत: अथाग्रे सुभवेद्राज्ञी सुपुण्यात्स्वर्गगामिनी पुण्याश्रये सुखासर्वा: स्वर्गमोक्षैव कारणम्

स्त्री०

३५

एतद्योगेसमुत्पन्ना बालाबुद्धिमतीसती दाताभोक्तासुधर्मात्मा स्वकुलेसुप्रतिष्ठिता हीनगेहेभवेज्जन्मः स्वामिनीस्वोच्चगेहणी जन्मकालसमारभ्यः
यावज्जीवतिभूतले नानाकर्मकृतालोके सुखदुक्खसमायुता चिन्ततिविविधोकार्यं मध्यरूपासुलक्षणा नातिगौरीनकृष्णांगी मध्यमांगीसुलोचना
शुचौपक्षे यथाचन्द्रः योगस्तद्वत्प्रवर्द्धते संपदासंचयेत्स्वामी वस्त्राभर्णैं सुशोभिता धर्ममार्गे गताप्रज्ञा सुप्रसिद्धा प्रशंसिता धर्मेणैव सहायेण
परमैश्वर्यसर्वदा पापकर्म कृतेबाधा योगोयाति मलीनता यदापाप गताप्रज्ञा सर्वकार्ये भयप्रदा पूर्णसौख्य नप्राप्यति निमग्नश्चिन्तनार्णवे
तनुकष्टीचाल्पजीवी विविधक्लेशभाजिनी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापशांतिसुभक्तितः वंशवृद्धिमहत्वेण सौभाग्यंपरमंसुखम् सुतापुत्रादिजासर्वैः
मनेच्छापूजितोभुविः सर्वापत्तौविनश्यन्ति पूर्णायुसुखभाजिनी गलंविविधोगेहे विवाहादिमहोत्सवे त्वयत्नेपापकर्मेण क्लिश्यतिदुक्खरूपिणी
शक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कृतंतद्घोरकर्मिणी येनक्लेशाश्रयोभूयाद् दुक्खितापिसुगेहणी ॥ भृगुवाच ॥ विप्रवंशोद्भवापूर्वे धनपुत्रान्वितोभवेत्
पूर्वपापेणवैधव्यं देवतीर्थाटनेमतिः ईश्वराराधनेप्रीती ज्ञानध्यानसुतत्परा सर्वद्रव्यव्ययंतीर्थे भूयसितस्तिनिर्धना देवतीर्थाटनेप्रीती नित्यंभ्रमति
भूतले चौरकर्मरतोभूयात्तथाचव्यभिचारिणी बहुवस्तुहृतोदेवाः महत्पापंदुराबृतिः पुण्यपापाश्रयोभूयो तस्मिन्कालेसुब्राह्मणी कालेनमृयतिश्चापि
किंचित्पुण्यफलेनवै समुत्पन्नाथभूभागे सुन्दरीमानुषीतनम् दिनेदिनेपिसांवृद्धा संपन्नापूर्वलक्षणैं पापशान्तिःप्रकर्तव्या तात्तज्जन्मकालके सर्वाश्चष्ट
क्षयोनित्यं विस्तृतिसर्ववैभवा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेविघ्नभवन्तिहि तद्यत्नंसंप्रवक्षामि येनसौख्यदिनेदिने स्वर्णपत्रकृतोतत्रः वह्निकोणनगांगुलम्
पंनगव्येणासंस्नात्वा शुद्धितंजाह्नवीजले लेखयेद्रक्तगंधेण विष्णुमूर्तिःसुशोभनं वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यकलशोपरि पूजयेत्सुविधानेन विष्णुयज्ञ
यथाक्रमः तदग्रजापितोमन्त्र विष्णुव्रतरतोद्विजाः । मन्त्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय सर्वपापविध्वंसनाय भक्तानुप्रतिपालकाय विष्णुरूपायभगवते
वासुदेवायतेनमःपूर्वजन्मकृतपापताप शमनंकुरु स्वाहा शशिलक्षप्रमाणेनजाप्यमेकाग्रमानसः हरिवंमपठेन्नित्यंजपान्तेदानमाचरेत् आचार्यायः
प्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेत्सुधिः हवनंविप्रभोज्यश्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंसर्वसुखाविष्टो सौभाग्यमक्षयंभवेत् सर्वेप्सितवरंप्राप्यः वनितापुण्यरूपिणी

स्त्रा० ३६

प्रथमाब्देद्वितियेचशरीरेजा-तेसुखम् विंचिच्छायादिरोगेणपीड्यतितातचिन्तनम् रुदन्तौभयमाक्रान्तः कन्यकाप्रेमवर्द्धिनी दानमंत्रसुपुण्येणघूटिका
रुवनेनवै सर्वकष्टविनश्यन्तिबालावृद्धिक्रमादितः तातसौख्यविशेषेणमहोत्साहदिनेदिने रामाब्देवेदवर्षे चबाणवर्षावधिक्रमम् मातृकष्टभयंचिन्तापुनरा
नंदमंगलम् वृणवातोद्भवंकष्टं दशनोत्वतिजारुजम् तातलाभभविष्यंति कार्यचिंताचगुप्तता पुण्ययत्नादितोनूनं सौभाग्यंपरमादयम् नवाम्बरंभूषणञ्च
प्राप्स्यतिमानमुत्तमम् रसाब्देव्यालवर्षेचशिशुक्रीड़ाविमोदिती पतनाद्दारुणोकष्टंभयंचाल्पभयंकरम् गृहेक्लेशविवादश्चस्वतःशांतिप्रजायते तातैतज्जन्म
कालान्तं प्रायश्चित्तेसुरक्षिता नानाकार्यसुखंवृद्धि सुताचैतत्सुखप्रदा मानकीर्तिमहत्वेण नित्यमानन्दवर्द्धिनी त्वयत्नेविपरीत्यंही विपाकेपापजंफलम्
प्राप्यतेनन्दवर्षेतु सूर्याब्देचयथाक्रयः नानाकार्यप्रबन्धेणपुण्यात्सर्वसुखागमः उद्वाहश्चमहोत्साहोपतिरेवंसुप्राप्नुयात् तातमातसुखंसर्वभ्रातबंधुसमायुता
दिव्याम्बर भूषणञ्चप्राप्स्यत्यतिसुशोभनो कुलवेदप्रकाश्यंतिग्रहकार्येषुसद्वरा प्रकाशोवर्द्धतेनित्यंषोडशाद्यावधिततः पतिप्रेमविवर्द्धतिरूपयौवनगर्भिता
किंचित्कष्टशरीरेपिज्वरार्त्तमुदरव्यथा पुनरानंदपुण्येणवर्द्धतेशशिबत्कला प्राप्स्यत्यद्भनगेंदुश्चविंशवर्षावधिक्रमात् भोगमैश्वर्यसंपन्नापुत्रजन्ममहोत्सवा
प्रसवेदारुणोकष्टंपुण्येपूर्णासुखागमः सुतापुत्रमहैश्वर्य साफल्यंमानुषीवपुः पञ्चविंशगतेवर्षे भाग्यस्यपरमोदयम् विवादकलहोदुक्खा शान्तिरेवंसुयत्नतः
नेत्रत्रिंशावधिवत्सः पूर्णापुण्यफलंभजेत विवाहादिमहोत्साहो यशमानविवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धप्रतिदिता रामरामाद्यमारभ्यचत्वारिंशगते
तथा तीर्थदेवालयेगताव्रतदानमहोत्सवाः चाल्पमृत्युभयंघोरंसुपुण्यात्सर्वशांतये ततिप्रेमकराबामाधर्ममूर्तिसुलक्षणा अयत्नेक्लेशितोनूनंबालकंकाल
वक्रगः दम्पत्योश्चिन्तनंबव्हीह्यापत्तौमहदागतः एतस्मातकारणान्नित्यं पापशांतिसुखंलभेत् शशिभल्लमितेवर्षे पौत्रजन्मसुखप्रदा भूमिद्रव्याधिकंप्रासी
रचनागेहसुन्दरम् सर्वकार्यविनिश्चित्यः षष्टोषष्टसुवत्सरे तीर्थयात्राजपंपुण्यमीश्वराराधनेमतिः सर्वेच्छापूजितंलोकेनिर्बलत्वंदिनेदिने नेत्रसप्तावधिकाव्य
निर्बलत्वञ्चक्लेशिता दानधर्मविशेषेण अग्रजन्मस्यहेतवे मनेच्छापूजितंसर्वा पुत्रपौत्रधनादिजा पुत्रभाग्यविशेषेण माननीयामहत्यपि व्योमव्यालसु
वर्षाणिआयुपूर्णभविष्यति मार्गशीर्षेशुचोपक्षे पंचम्यांनिधनंनिशि अग्रजन्मसुपुण्येण राज्ञीवंसुगृहोद्भवा प्रकाशोविपिणीभूयाद्दानमंत्रमहत्फलं ॥

एतद्योगोद्भवाबालामध्यभाग्येन्सुन्दरी विद्याबुद्धिभवेन्यूनमीश्वराराधनेमतिः कुलवृत्तिप्रभावेणप्राप्यतेमानमुत्तमम् भाग्यवृद्धिर्महोत्साहोमासेवर्षेसुखा
गमः नानाकार्यप्रबंधेणराजतिगेहभूषणा मनेच्छापूजितोनित्यंकार्यसिद्धौविलम्बता पूर्वपापप्रभावेणचिंतनीयामहत्यपि मृतवत्सातथावन्ध्याभूयात्पुत्र
निवर्जिता त्रिरत्पंदारुणंकष्टंमार्गार्निनातिदुस्तरम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगंगतिदुक्खमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुयत्नेनपापशांतिसुखंलभेत् प्रजासुभोगवृद्धिश्च
वाञ्छापूर्तिःसुकर्मणा सर्वचिन्ताविनश्यन्ति दम्पत्योर्प्रेमवर्द्धनम् विवाहोमंगलंकार्यं देवपुण्योत्सवेव्ययम् देवदर्शनजाप्रीतिः ईश्वराराधनेमतिः
वपुरेवनपाकृत्यं सुखंजन्मनिजन्मनि प्रतापोवृद्धिमाप्नोति शत्रुर्वैदासवच्चरेत् संपदाविस्तृतागेहे वस्त्राभरणैसुशोभिता क्लिश्यतिपापरूपेण यावद्यत्नं
नपापहम् एतस्मात्कारणात्पापं ज्ञात्वायत्नसमाचरेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ किमस्यादारुणोपापं मानुषीदुक्खकारणम् पूर्वजन्मकथंभूतात्सासर्वंकथयप्रभोः
भृगुवाच ॥ श्रुणुवत्ससमासेणपूर्वजन्मकथाधुना क्षत्रीवंशसमुत्पन्नानृपवामासुधार्मिका सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुत्रप्राप्तिर्विलम्बता द्वयोव्राहंप्रकर्तव्या
पतिचास्यसुतार्थये किंचित्कालगतेवरप अयंवामासुतंलभेत तदांतेचन्द्रवर्षेच द्वयोभार्यासुतंजनत् नृपप्रेमद्वयोवामा तुल्यमेवनसंशयः ईर्षातस्य
कर्तव्यो नित्यंतप्यांतचान्तरे कदाचिद्दैवसञ्जायां तस्यपुत्रविषंददेत् तेनमृत्युभवेद्बालः नारीयंपापमाश्रयः तस्यमातृमहत्क्लेशं शापंदत्वापुनःपुन
तेनपापप्रभावेण त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् यावद्यत्नंनकर्तव्यो पुत्रसौख्यविनिर्मुक्ता गृहेक्लेश विवादश्च नानाचिन्तापिवेदना तस्ययत्नंप्रवक्षामि
येनसर्वसुखागमः स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या शुद्धश्रद्धासुभक्तितः वह्निकोणंशुद्धहेमः परितोपिनगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण बालचित्रमनोहरम् वेष्टितां
पीतपट्टेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा संस्थाप्यकलशेवत्सः तदग्रमन्त्रमाचरेत ॥ मंत्र ॥ ॐऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गंगोपालाय सर्वपापशमनाय विष्णुरूपायतेनमः
पूर्वजन्मकृतशापपापंनाशयः सर्वकामनापूजयः पुत्रसौख्यंदेहि स्वाहा एतन्मंत्रजपेलक्षं गोपालस्तोत्र पाठकम् पूजयेत्सुविधानेन तस्यदानं
समाचरेत अनुष्ठानविधानेन कृत्वापापैर्विमुच्यति सर्वसौख्यंलभेन्नित्यं पुण्यकर्मेणमानुषी भोगमैश्वर्यसम्पन्ना सफलंजन्मभूतले विवाहोमंगलंदिव्य
मनेच्छासर्वपूजिता विस्तृतिर्वंशजादीर्घः प्रकाशोपुण्यकर्मणा दानपुण्यप्रभावेण सुखंजन्मनिजन्मनि मोदतेतिविशेषेनित्यं दम्पत्योः धर्मतत्पराः ॥

प्रथमाद्बोदरोऽव्याधि द्वितीयेदन्तपीडनम् मासेमासेसुखंजातं दानमन्त्रंसुयत्नतः तृतीयाब्देचतुर्थेच वृणावातेनतप्यति शिशुक्रीडाक्रमेणैव चञ्चला
प्रियवादिनी पुण्यय‌त्नादितोनूनं गृहमेवप्रकाशिता पतनाज्जायतेकष्टम् यत्नाच्चमहद्भयम् तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमोदिता पञ्चमेसप्तमेवर्षे
पितुलाभप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेन यद्रोगंजायतेभयम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि वस्त्राभर्णैं सुशोभिता उद्वाहोमंगलंचिन्ता तातमातविचर्चिता
गृहकार्य्यरताबाला महत्वञ्चदिनेदिने अष्टमेद्वादशाब्देही तयोरत्नक्रमेणवै भाग्योदयंसुपुण्येण तातलाभमहत्यपि उद्वाहञ्चमहोत्साहो कुलकीर्ति
विवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्स्यंति पूर्वयत्नादितःशुचिः दिव्याम्बरं भूषणंच बहुमूल्यमनोहरा भोगमैश्वर्यसंपन्ना प्राप्यतिनात्रसंशयः त्रियोदशाष्टचन्द्राब्दे
सुखसौभाग्यवर्द्धनम् रूपयौवनसंपन्ना पुण्यमेवप्रकाशिता मासेवर्षेसुखंजातं नूतनंसुखवर्द्धते ईश्वरंभक्तिभावेण पतिप्रेमविवर्द्धनी कष्टव्याधिमहत्वेण
सुताजन्मसुमंगलम् प्रतापभोगमैश्वर्यं सुपुण्येसुप्रशंसिता नन्दसोमाद्भमारभ्यः वेदपक्षाद्भमध्यमा पुत्रकन्यासमायुक्तं पतिप्रेमविवर्द्धनी गृहक्लेश
विवादञ्च सर्वशांतिःसुयत्नतः शरविंशतिवर्षाणियावज्जभृगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नित्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी ममवाक्यश्रयेपुण्यं सर्वकष्टविनाशनम्
मंगलंविविधोत्साहोमाननीयासुसद्व्रता नानाकार्यप्रबंधेणराजतिपुण्यवैभवाः इन्दुरामाद्भमारभ्यः चत्वारिंशावधिततः उद्वाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
महत्यपि बृहल्लाभप्रभावेण दम्पत्योर्मानवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला महत्वञ्चपदेपदे कष्टचिन्ताविनश्यन्ति पुण्योत्साहसुमन्दिरे देवदर्शनजाप्रीती
पवित्रंक्रयतिवपुः इन्दुवेदगतेवर्षे तथास्याद्वयोमभल्लके मासेवर्षेसुखंजातं भूमिलाभोतिगौरवम् प्रतापेवृद्धिमाप्नोति पुत्रभाग्योदयंभवेत व्ययलाभ
महत्वेण बहुकार्येप्रशसिता सुप्रसिद्धधनाध्यक्षा गेहेवित्तंनभूरिशः पापकर्मकृतेबाधा विविधोदुक्खक्लिश्यति एतस्मात्कारणात्पुण्यं सुखार्थोयत्न
माचरेत येनसर्वसुखंलब्ध्वा अग्रजन्मेमहत्पदम् मुनिव्योलमितेवर्षे पूर्णायुसुसुखंभजेत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्च प्रजावृद्धिधनान्विता सर्वेच्छासुपूज्यन्ति
साफल्यंमानुषीतनं आश्विनेकृष्णपक्षेच नवम्यांनिधनंदिनं अनायासेतनंत्यक्त्वा यत्रकुत्रप्रशंसिता गतिरेवसुप्राप्स्यंति सुपुण्यादग्रजन्मनि पतिभक्ति
प्रभावेण संभवाचोत्तमेकुले महाराज्ञीवसाभूयाद्दयारूपासुसद्व्रता ध्यायेत्सत्यपदंदेवं शुचिसाध्वीपतिव्रता सत्यलोकेगमिश्यंति पुण्यतत्वंब्रवीमिते

०स्त्रा
३७

एतद्योगोद्भवाबाला सुस्वरूपा सुलक्षणा तातमातसुखोसर्वामासेवं सुमंगलम् पतिप्रतिष्ठितं चापिस्वसुरं कीर्तिविस्तरात् धनधान्यसमृद्धिश्च गृहकार्येसुौक
ला बाल्यावस्थासुक्राड्यंतिपितुर्हर्षसुखप्रदा मंगलंविविधोत्साहोकुलकीर्तिसुविस्तृतम् युवावस्थाविशेषेणभोगमैश्वर्यसंपदा पतिप्रीतिविशेषेणसर्वेच्छा
सुखपूजिता धनधान्यसमृद्धिश्चनेत्रगेहसुखाकरी सुस्वभावंसुयत्नेनपुण्येश्वर्यप्रशंसिता मंगलंविविधोगेहेकुल कीर्तिप्रकाशिणी मानेनमहताविष्टामहत्वं
सुपदाधिपा तीर्थयात्राव्रतंपुण्यंवृद्धावस्थासुतुष्यति पुत्रपौत्रादिजंसर्वंपुण्यैश्वर्यसुदुर्लभा सर्वावस्थासुखंजातं माननीयासुसद्व्रता: शुचौपक्षेयथाचन्द्र:
योगस्तद्वत्महत्पदम् चञ्चलश्चपलाप्राज्ञीकोमलांगीदयामयी कदाचित्क्रोधवेगेनतथ्यत्यापिदुराकृति: पूर्वपापप्रभावेणसुखेविघ्नपदेपदे आयुरेखाकरेचास्य
खंडिताबाणरूपत: तातमातमहद्दुःखमल्पायुश्चमहद्भयम् स्वामिशोकेविसंतप्तागृहेक्लेशमहत्यपि विवादकलहंचैवरिपुरुत्पद्यतेबहु: रोगशोकैर्वितप्यंति
सुखेविघ्नपदेपदे अग्रजन्मेमहदुःखमेतज्जन्माद्धयोगता: शुक्रोवाचकिमसौदारुणोपापंजायतेपूर्वजन्मनि येनसर्वसुखेविघ्नंक्लिश्यतिविविधंस्त्रिया भृगुरुवाच
श्रुणुवत्सपरगोप्यंरहस्यंकथयाम्यहम् विचित्रमिदमाख्यानंकथायांपूर्वजन्मनि पुराविप्रकुलोत्पन्नासुसद्रूपागुणान्विता शुभलक्षणसंपन्नानिवसत्तीर्थमाश्रमे
धर्मकर्मरतानित्यंलोभाशक्ताविमंदधि: यात्रीतत्रेंदुनिवसत्तस्यरूपविमोहिता तस्यद्रव्यहरंसर्वंप्राणांहत्वाकुकर्मिणी तेनतेषुगृहेक्लेशंपत्नीपुत्रोतिविह्वला
तस्मात्पापाश्रयोनारीत्रजन्मंहीपुन:पुन: पतिपुत्रात्मद्रव्येण क्लिश्यतिनात्रसंशयम् अल्पमृत्युभयंचादा वैधव्यञ्चमहद्भयम् पूर्णसौख्यनप्राप्यंतिसुपुत्रं
क्लिश्यतिमहान् तस्यशांति:प्रवक्षामि येनसर्वसुखंमहत स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात लक्ष्मीनारायणोमूर्ति यात्रीचित्रसमन्वितम् लेखयेद्रक्त
गंधेन वेष्टितांपीतपट्टत: संस्थाप्यविधिवत्कुंभेपूजयेत्सुविधानत: तदग्रेमंत्रमाराध्यशशिलक्षसुभक्तित: । तत्रमंत्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं सर्वश्वरायरमारमे
शायतेनम: पूर्वजन्मांतरार्जितपापंनाशय२रक्षांकुरु२स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ आपदुद्धारकोमंत्रंधनस्यतदात्मकम् जपांतेहवनंकृत्वासावित्रीवीर्यसंपुटम्
मूर्तिदानंतत:कृत्वाशैयादानादिभियुतंब्रह्मभोज्यंसुयत्नेनआशिर्वादञ्चग्राहयेत्एवंकृत्वासुयत्नेनश्रद्धाभक्तिपरायणानित्यंसर्वसुखाविष्टाभाग्यवृद्धिमहत्यपि
सर्वेच्छापूजितंलोकेनित्यंपुण्याश्रयेमति:अयत्नेक्लिश्यतिपापंभोक्तव्यंकर्मजंफलंतस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रद्धाभक्तिसमायतंव्रतदानरतश्चापियेनसर्वसुखागमम्

प्रथमेद्वितियेवर्षे दन्तबाधाविरेचनम् शरीरेदारुणोकष्टंसद्यः शांतिःसुयत्नतः मासेमासेविवर्द्धन्ति बालिकाशुचिलक्षणा तातलाभभविष्यन्ति गृहेमंगल
मेवच तृतीयेपञ्चमेवर्षेवृणरोगेणपीड्यति मातृकष्टभयंचिन्तापुनरानन्दवर्द्धनम् क्रीड़तिविविधाबालाबादहास्यमनोहरा धावनात्पादकष्टञ्चस्वतःशान्तिः
प्रजायते षष्टमेचाष्टमेवर्षे तयोरन्तर्यथाक्रमः दानमंत्रसुपरायेण भाग्यवृद्धिदिनेदिने तातप्राप्तिमहोत्साहो सर्वसौख्यसमागमः बालाप्रीतिकृतेक्रीड़ाचञ्चला
अपलामति भ्रातभगीसमायुक्तागृहेद्रव्यव्ययंमहत् नन्दवर्षसमारभ्यःयावदद्धेचद्वादशे प्रतिष्ठामानविभवाः वर्द्धतेपुण्यकर्मणा तातमातमहचिंताविवाहो
मंगलंशुभम् नवांबरंभूषणञ्चवहुमूल्यमनोहरा प्राप्यतिकन्यकाशुभ्रामानेनमहतावृता त्रयोदशाष्टचंद्राब्देमध्यगाथासमासतः गृहकार्यसुकुशलावस्त्रभर्णैं
सुशोभिता रूपयौवनसंपन्नापतिप्रेमविवर्द्धिनी सर्वसौख्यागमोनित्यंकष्टचिन्ताविनश्यति भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेसुखनूतनम् ऊनविंशाद्धविंशेचशरने
त्राद्धमध्यगे पूर्वपापकृतेबाधाहानिशोकविचिंतनम् नसुखप्राप्यतिपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् सुयत्नेसर्वसौख्यानिपतिपुत्रधनादिजाः धर्मवृत्तिप्रभावेणयश
कीर्तिश्चनिर्मला शरीरेसंभवोकष्टंपुनःशांतिःभवेत्सुखम् रसपक्षगतेवर्षेयावत्सून्यत्रयाद्धके विवाहोमंगलंकार्यंव्ययंतत्रमहद्धनम् मानेनमहताविष्टा यशं
भूरिसुकर्मणा पतिकीर्तिविशेषेणलाभवृद्धिर्यथाक्रमः त्वयत्नेविपरीत्यंहीं निस्फलंजन्मपत्रिका शशिवह्निमितेवर्षे रसरामान्तरोतथा पतिसौख्यविशेषेण
पुण्यपात्रासुमानुषा सुयात्रामंगलंकार्यं पुण्यदेवोत्सवेव्ययम् मुनिवैश्वानरेवर्षे रामवेदावधिंतथा प्रकाशोविपणीभूयात्पापाच्छोकमहद्भयम् ईशभक्ति
सुपुण्येण सर्वैश्वर्यंसुसम्पदा नित्यंसर्वसुखाविष्टा वर्द्धितापिल वसा वेदश्चत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाक्रमादितः भूमिलाभविशेषेण रचनागेहसुन्दरम्
पुत्रभाग्यमहत्वेण कुलेकीर्तिप्रशंसितो सोमभल्लाद्धमारभ्यः शरबाणसुवत्सरे पौत्रसौख्यविशेषेण मोदयन्तीसुभामिनाः सुशोभितेकुलतेन कल्याणी
प्रियवादिनो विशेषोमंगलंनित्य पुण्यपात्रिःप्रशंसिता दानमंत्रमहत्पुण्यं सर्वापत्तिक्षयंकराः यावन्नभररसेवर्षे तावत्पूर्णसुखभजेत् मनेच्छापूजितापूर्वे
व्रतदानहितेरताः तीर्थदेवालयेप्रीतीपुण्योत्साहसुखंसदा दीनानांपालनेपुण्याद्रिपुरोगविनाशनम् तीर्थयात्राविशेषेणनिर्बलावातपीड्यति किंचित्कष्ट
शरीरेच पुत्रपौत्रःसुसेविता श्रावणेशुक्लपञ्चम्यां निधनंचास्यनिश्चितम् अग्रजन्मसुपरायेण दिव्यदेहासुलक्षणा महाराज्ञीवसाभूयात्पण्यैश्वर्यंसुसर्वदा

स्त्रा० ३८

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखदोभवः एतद्योगोद्भवाबाला चारुहास्यविलासिनी शुभकर्मरता नित्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता तातकीर्तिकराशुभ्रा कोमलांगीसु
लक्षणा मानेनमहताविष्टोमोदितिपुण्यकर्मणा तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवाः मानेनमहताविष्टायशसाधनतत्परा पतिपुत्रात्मद्रव्येणसाफल्यंसर्व
वैभवाः सुखेशोकप्रदारेखासंभवोपूर्वपापजम् तस्यशांतिःसुयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत् पतिपुत्रान्वितोभूयात्सफलंजन्मभूतले भ्रातरोगेणपीड्यन्तिप्रसवं
कष्टदारुणम् आयुरेखाकरेचास्य त्रुटिताबाणरूपतः तत्रदैवाल्पसंधिश्च अल्पजीवित्वदोषदम् दानमन्त्रंसुपुण्येण पूर्णायुःसुखसंपदा चन्द्रजीवपरंभीती
चिन्ततिविविधैरपि पूर्वकर्मविपाकेणनसुखंप्राप्यतिध्रुवम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगाः पतिपुत्रात्मजादयः पापशांतिःप्रकर्तव्यासर्वेच्छासुखपूजिता शुक्रोवाच
पूर्वजन्मसुपाख्यानंकथयस्वमहामते किमसौदारुणोपापंनारीदुःखश्चयोमहान् भृगुवाच श्रृणुत्वंमुनियत्पापंपूर्वजन्मकथाधुना विप्रवंशोद्भवावामासर्व
लक्षणसुन्दरी तीर्थाश्रमेनिवसतिपतिपुत्रादिभियुता ईश्वराराधनेप्रीतीगृहकार्यरताभवेत् सर्वद्रव्यव्ययंलोकेनिर्द्धनात्वतिक्लिश्यति प्रतिष्ठामानमधिकं
द्रव्यसून्यविचिंतया यात्रीतत्रैकतद्गेहेनिवसद्रव्यपूरितम् तस्यद्रव्यहरंसर्वंलोभग्रस्ताधनामतिः निशाभोज्यविषंदत्वाजनघातश्चकारयेत् तेनपापाश्रयो
भूयाददुःखितश्चत्रिजन्मनि कालेनमृयतिस्तत्रः पुण्यात्पापाश्रयोमहान् किंचिद्दानादिमंत्रेणइश्वरंभक्तिभावतः संभवाचोत्तमेगेहे पुनःपापाद्धयोगता
पतिणाप्यतिक्लिश्यंतिदारिद्रंभयविव्हलाः चाल्पमृत्युभयंघोरंविविधोद्वेगतप्यति नसुखंसुस्थिरोनारीयावद्यत्नंनपापहम् शुक्रोवाच कस्मिन्यत्नकृतेतात
महापापैर्विमुच्यति कथयस्वप्रसादेण कृपास्तियदितेमयि । भृगुवाच । श्रृणुवत्ससमासेण परंगोप्यमतंहियत् यस्याश्रये सुखासर्वाः प्राप्यतिविविधांगना
कांश्यपात्रेघृतंयुक्तः प्रचुरंद्रव्यभूषणम् आच्छादितंस्वेतपट्टैरोचार्यायःप्रदापयेत मन्त्रजाप्यतदर्थंवै दानपात्राद्दिजोत्तमः । तत्रमंत्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं
शंकराय सर्वापतिहरायः श्रीशिवायतेनमः ममयजमानस्यपूर्वजन्मकृतघोरपापतापंनाशयः २ सर्वसुखसिद्धिप्रदाय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐइन्दुलक्ष
प्रमाणेन अनुष्ठानविधिर्यथा शुचिस्थानेजपेद्धस्त्याःसर्वपापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेर सर्वसौख्यसमागमः सर्वकार्योपिसिद्धयन्तिमनेच्छाबहूपूजितम्
दानमंत्रादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते मंगलंविविधोत्साहोधनपुत्रादिजैरपि गृहक्लेशविनश्यन्तिपत्यरत्यन्तवल्लभा दिनेदिनेमहत्तेजोसुपुण्यात्सर्वसम्पदा

जन्म.ब्देद्वितियेवर्षे चा नावृद्धिदिने दशनोत्वतिजाकष्टं रुदन्तौभयविह्वला पुनश्शांतिसुयत्नेन तातमातसुखंलभेत् भ्रातजन्ममहोत्साहो तातपुण्येण
भूतले भोगाप्रवैभवोवृद्धिवस्त्रणाभर्णौसुशोभिता बालक्रीड़ाविशेषेणसुहास्यञ्चरुरोदितीवह्नि:षञ्चवेदाब्देऋतुवर्षावधिक्रमात् मासेमासेसुखंजातं भोगमैश्वर्यं
नूतनम् तात: । नमहत्वेण सुपुण्यंफलदोमहान् मंगलंवर्चयागेहो नित्यमेवप्रकाशिता शरीरेजायतेकष्टं ज्वरतस्रवृणादय: पुण्याच्छांतिसुखंनित्यंविस्तृतिं
सर्ववैभवा: नगाब्देव्योमचन्द्रेतुगृहकार्यविचिन्तनम् विद्याभ्यासरताकिंचिच्चञ्चलाश्चपलामति: शिशुणांसंगमेप्रीतीक्रोधेणतप्यतिस्वयम् पतनाज्जायते
कष्टंज्वरार्तोवारिजभयम् सर्वमेवसुयत्नेन शांतिभूयातसुखंलभेत् सुसंगाद्दानपंत्रेण भाग्यपात्रीप्रशंसिता इन्दुसोमाद्वमारभ्य: शरचन्द्रांतरेतथा उद्वाहं
सुमहोत्साहो कुलकीर्तिमहत्वापि रूपयौवनसंपन्ना वस्त्राभर्णौसुशोभिता भोगाप्रवैभवोवृद्धि पतिप्रेमविवर्द्धिनी स्वकृत्यकुशलाबाला महेश्वर्यप्रकाशिणी
नानाकार्यप्रबंधेणशोभितागेहभूषणा रसचन्द्रगताब्देतुविंशवर्षावधिक्रमात पुण्येच्छापूजितोनित्यंपतिपुत्रात्मजादय: मंगलंविविधोत्साहोगृहंयेनप्रका
शिता मानकीर्तिविशेषेणमहत्वञ्चपदेपदे सर्वकष्टक्षयंनित्यंसुपुण्यंलाभदोमहान् प्रतापभोगमैश्वर्यं सर्वमेवप्रशंसिता शशिपक्षगतेवर्षे व्यालपक्षक्रमादित:
सुतापुत्रसमायुक्ता पतपरत्यंतवल्लभा दम्पत्योरल्पजकष्टं दानमन्त्रेणशांतये पूर्णायुसुखमेधत्तौ भाग्यवृद्धिसुयत्नत: नन्दनेत्राद्वसंप्राप्य: वेदरामसुवत्सरे
तयोरन्तमहोत्साहोउद्वाहादिव्ययशोमहान् कुलकीर्तिमहत्वेण सद्व्रतासुप्रशंसिता विवादकलहारिष्टंविविधोदु:खकारणं वैधव्यादिमहादोषंसुयत्नेनक्षयं
सदा पौत्रजन्ममहोत्साहो शतार्द्धंवत्सरावधि: तीर्थयात्राव्रतंपुण्यं कृत्वासर्वार्थसिद्धिदम् महत्वमधिकंलोके प्राप्यतिपुण्यमाश्रये भूमिलाभविशेषेणप्रजा
वृद्धिसुविस्तरात् मुनिपञ्चाद्वमारभ्य: ज्ञात्वाप्राणहरिदशा तेभ्य:संरक्षितस्यापि नदाध्यायविधानत: छायापात्रान्नदानेन सर्वाबाधाविनश्यति पुत्रपौत्रोदय
सर्वाराज्ञाकारीसुखप्रदा महेश्वर्यप्रतापेणसाफल्यंमानुषीवपु: त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंनिस्फलंजन्मपत्रिका ह्य तस्मात्कारणात्पूर्वेपापहंपुण्यमाचरेत् प्रतियत्न
सुखोत्साहोनंदव्यालाद्वजीवती प्रपौत्रंजन्मतोलोकेकुलेच्छापिनिवृत्तती मासेभाद्रपदेशुक्लेनिधनंसर्वपूजिताकुलेप्रशंसिताचापिप्राप्यतिहीशुभांगतिपति
व्रतासुधर्मात्मावरंसर्वेप्सितंलभेत् ईश्वरंकृपयात्काव्यमहाराज्ञीवसाभवेत् पुन:स्वर्गगताबामापुण्येकिंचिन्नदुर्लभम् एवंपुण्यपरंतत्वंसुज्ञातव्योहीनिश्चितम्

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखकारकः एतद्योगोद्भवाबाला सर्वसौख्याधिकारिणी शुभलक्षणसम्पन्ना सुपुण्यात्मादयामयी कोमलांगोसुसद्रूपा दिव्या लंकारभूषिता सर्वकार्यसुकुशला स्वगृहसुप्रशंसिता तातमातपरंप्रीती पतिभक्तिपरायणा नानाकार्यप्रबंधेण राजतेगेहसम्पदा पूर्वपापाद्भवोकष्टं अल्पमृत्युमहद्भयम् पुत्रसौख्यमहाविघ्नं पतिरत्यंतक्लेशिता प्रायश्चित्तमहादानं सुपुण्याद्रक्षणंसदा तेनसर्वसुखंनित्यं राज्ञीवंसर्ववैभवाः प्रकाशो विपणीभूयाद्दासद सिश्रमोदिता यत्रदृष्टिगततत्रः सुखसौभाग्यदर्शितम् सिद्धंतिसर्वकार्याणि दिव्यरत्नैःसुवेष्टिताः सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा अयत्नेपापजंकष्ट भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा ।। शुक्रोवाच ।। कथयस्वमहायोगिन पूर्वपापस्यकारणम् येनक्लेशाश्रयोलोकेवनितापुण्यरूपिणी ।।भृगुवाच।। श्रृणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम् पूर्वजन्मान्तरोगाथा येनदुःखाधिकारिणी पुरात्रिप्रकुलेवत्सः जातोयंपुण्यभाजिनी दानधर्मप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत् कुमार्गाद्विशयाशक्ता मतिकामेणमोहिता पतिराज्ञानमण्यंति गृहत्यक्त्वादुराग्रुत्ति तीर्थयात्राविशेषेण नित्यंकृत्वामनेच्छितम् सर्वद्रव्यक्षयंकृत्वा पतिरत्यंतदुक्खदा क्लेशितंशापितस्तेन त्रिजन्मदुक्खितोमहान् तेनपापाश्रयोनारी एतजन्मेतिदुक्खिता प्राप्यतिविविधंक्लेश पुण्याभावेहिभूरिशः तद्यत्नसप्रवक्षामि प्रायश्चितक्रमेणवै शुद्धहेमकृतोपत्रेविस्तृतंसुनगांगुलम् शुद्धितंसुविधानेन रामकोणमनोहरम् लेखयेद्रक्तगंधेण पतिदेवसुमूर्तिमान् शांकरीमुद्रयायुक्तो स्वेतपट्टेणवेष्टितम् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे महेशंभक्तिभावतः पूज्येत्सुविधानेन यथाविभवविस्तरात् तदग्रे जापितामंत्र शशिलक्षसुभक्तितः ।। तत्रमन्त्रः ।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ह नमः शंकराय पूर्वजन्मांन्तरार्जित शापपापंहराय सर्वसौख्यंवरदाय पतिदेव प्रसन्नायभद्रंकुरु२स्वाहा हंशंश्रीक्लींह्रीऐंॐ सावित्रीजापयेद्भक्त्या आपदुद्धारकंतथा आवाह्य सर्वदेवाणां पूज्यंविभवविस्तरात् यज्ञान्तेमूर्तिसंकल्पं शैयादानादियत्क्रमः आचार्यायःप्रदातव्या आशिर्वादश्चग्राहयेत ईश्वरंभक्तिभावेण विप्रभोज्यंसुयत्नतः एवंसर्वविधानेन कृत्वातन्त्रमुदारधिः सर्व पापविनिर्मुक्ता वनिताभाग्यभाजिनी नित्यंसर्वसुखंलब्धवा पतिपुत्रधनादयः सिद्धन्तिःसर्वकार्याणि प्रकाशंपुण्यजोमहान् राज्ञीवंराजिताभूमौ सफलं जन्मभूतले पुत्रभाग्य महत्वेण सुप्रसिद्धाः सुपूजिता एवंपुण्या श्रयेनित्यं फलंसर्वेप्सितंभजेत अथाद्यञ्च समासेण कथायाः श्रृणुभार्गवः

जन्माब्देनेत्रवर्षान्तंदिवेमासेसुखंगता शरीरेजायतेकष्टंभुतछायाश्चविह्वला किंचिद्दानादियत्नेनश्रेयोमानंसुखोत्सवम् रामाब्देत्राणवर्षेचबोलावृद्धिर्यथा
क्रमः वादहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ामनोहरा वृणाविस्फोटकोव्याधी दन्तवाधाविरेचनम् तातजन्ममहोत्साहोकुलेवृद्धमृतोत्सवम् पुण्ययत्नादितोनित्यं
सर्वकष्टविनाशनम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि तातमातसुखाकरी ऋतुवर्षेचनन्दाब्दे तयोरन्तसुखागमः गृहकार्यरताबाला क्रीडतिविविधंतथा व्ययोतात
महच्चिंताकुलकीर्तिविमोदिता पूर्वंयत्नसुपुण्येण कृत्वाभाग्योदयंमहत् व्योमेन्दुवर्षमारभ्य यावद्वेदनिशाकर तावत्कालावधिःपुण्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी
दिनेदिनेमहत्तेजो रूपयौवनमावृता भोगमैश्वर्यसंपन्ना नेत्रगेहप्रकाशिणी ज्वरार्तमुदरव्याधी सुपुण्याच्छांतिसर्वदा गतेपञ्चदशेवर्षेविंशवर्षावधिंततः

स्त्री०

सर्वप्सितंसुखंलब्ध्वा पुत्रजन्मविमोदिता मानकीर्तिसुखोत्साहो विस्तृतिसर्वसम्पदा यावद्यत्नंनकर्तव्यापापादुःखैर्वितप्यति अतस्तंशांतिपुण्येण सर्व

४०

सौख्यप्रदोमहान् शशिपक्षाद्धमारभ्य शरपक्षाद्धमेवही पुत्रकन्यासुखाविष्टो धनधान्यैसुपूरिता प्रकाशोविपणीभूयात्स्वकुलेसुप्रशंसिता दिनेदिनेमहोत्सा
होऽययलाभमहत्यपि रसनेत्रसुवर्षाणि व्योमरामक्रमादितः दानमंत्रसुपुण्येण भगवद्भक्तिभावतः सर्वान्कष्टक्षयंनित्यं मंगलंविविधोमहान् उद्वाहादि
महत्वेणकीर्तिरेवंसुविस्तरात् गृहेक्लेशविवादश्च सर्वशांतिसुयत्नतः सोमत्रिंशाद्धगेकाव्य बाणत्रिंशाद्धमेवही प्रजाद्रव्याधिकंगेहे नारीपुण्यप्रकाशिणी
दम्पत्योरल्पजंकष्टंसुखेविघ्नभयप्रदा महामृत्युञ्जयोजाप्यमापदुद्धारसंपुटम् स्वर्णमूर्तिमहादानंसप्तअन्नतुलान्विता मुक्तकष्टसुखाविष्टा कृत्वातन्त्रमुदारधि
पूर्णायुःसुखमेधावीमोदमानंगरीयसी रसरामाद्धगेकाव्यः चत्वारिंशावधिततः मनेच्छापूजितोनित्यं शुचिसाध्वीसुखाकरी तीर्थयात्राजपंपुण्यं कृत्वा
चापिदयामयी सुखैश्वर्यंप्रकाश्यंति सुतभाग्योदयंमहत् सर्वेच्छापूजितंलोके वर्षेव्योमशरावधिः पतिकार्यप्रबंधेण राजतेपुवैभवा विस्तृतिर्वंशजंलोके
महेश्वर्यंसुविस्तरात् भयंकष्टविनश्यंति गृहशोभासुनूतनम् शशिपञ्चगतेवर्षे व्योमषष्टांतरावधिः पुत्रपौत्रैर्महत्वेण विमलंभाग्यशालिनी दासवाहनजंनित्यं
सुखंसर्वेप्सितंलभेत् दानधर्म्मरतानित्यम अजन्मस्यहेतवे तदान्तेवन्हिव्यालाब्दे पूर्णायुःकथ्यतोमुनिः धनपुत्रप्रपौत्रैश्चसुकीर्तिख्यातिनिर्मलं दानधर्म्मा
दितोनूनंगांरेवसुसत्तमा अथाग्रेसुकुलोत्पन्नानृपसौख्याधिकारिणी सर्वेप्सितंवरंलब्ध्वा दानधर्मैःसुसद्व्रता इतिग्रंनिश्चितंपुण्यं चान्यथानोदिसुखम्

एतद्योगप्रभावेण बालसौम्यसुखाकरी दिवेमासेसुखंजातं विस्तृतिंसर्ववैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण राजितागेहसम्पदा रूपयौवनसंपन्ना सुखसौभाग्यमा
करी तातमातसुखास्सर्वेपतिप्रेमविवर्द्धनी सिद्धन्तिःसर्वकार्याणिवस्त्राभर्णैःसुशोभना शरीरेजायतेकष्टं रामग्रल्पभयप्रदा पतनाद्दारुणोकष्टंपूर्वपापैर्वि
तप्यति तेभ्यसंरक्षितापुण्यं पूर्णायुसुखसर्वदा धनधान्यान्वितोलोके पुत्रकन्यासमावृता पतिभाग्यमहत्वेण शुचिसाध्वीप्रशंसिता कीर्तिश्चनिर्मलोभूता
उद्वाहादिव्ययोमहान् ईश्वरंभक्तिभावेण साफल्यंमानुषीतनम् अनुष्ठानमहादानं सर्वपापैर्विमुच्यति धनसंतानयानञ्च कुटुम्बेसुखसर्वयो क्लिश्यतिनात्र
संदेहोयावद्यत्नंनपापहम् पतिपुत्रात्मद्रव्येण नसुखंसुस्थिरागृहे ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणंपापं कृयतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयोलोके शुचिसौभाग्य
रूपिणी ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिप्रमाणेण पूर्वजन्मकथाधुना येनदुक्खाश्रयोनारी सुखेशोकंभयाकरी पुरानृपकुलेजाता ग्रामरामधनाधिपा महेश्वर्यं
प्रतापेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता मानेनमहतावित्थोक्रियतिग्रामसाशनम् चैकोद्विजवरोतत्रः रूपयौवनसुन्दरम् धर्म्मव्रतरतोनित्यं निवसदेवमन्दिरे कामबाणा
मनोद्वेगंतेनरूपविमोहिता दानपुण्यकृताराज्ञी द्विजलोभगृहागतः द्वयोप्रीतिमहत्वेण तेनविप्रधनीभवेत् बहुकालसुखंभुक्त्वा नारीयंप्रेमबन्धनम् विप्र
चान्यस्त्रियप्रीतितस्यरूपेणविव्हलः ज्ञात्वायंसर्ववृत्तान्तंनृपवामातिरोषिता विप्रप्राणहरंतत्रतेनपापाश्रयोमहान् दानधर्म्मरतापूर्वंतेनसौख्याधिकारिणी
द्विजघातमहापापं त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् एतज्जन्मंसुपुण्येण पापशांतिःसुखंभजेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्वप्रसादेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा पूर्वपापैवि
मुच्यंति येनसर्वसुखागमः ॥ भृगुवाच ॥ जाह्नवीतीरगोभूत्वाशुचितीर्थस्थललेथवा हेमपत्रप्रकर्तव्योबाणमुद्रासुशोभनम् लेखयेद्रक्तगंधेणद्विजचित्रमनो
हरम् वष्णवामुद्रयायुक्तोसर्ववीर्यमलंकृतम् वेष्टितांपीतपट्टेणसंस्थाप्यकलशोपरि तदग्रेमंत्रमाराध्यः पूजयेत्सुविधिर्यथा भगवद्भक्तिभावेण प्रायश्चित्तरतो
द्विजाः जाप्यमंत्रमिदम् ॐ एं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वरायविष्णुरूपाय महापुरुषायतनमः पूर्वजन्मकृतमहापापतापशमनायरक्षांकुरु२ स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ
इतिमंत्रजपेलक्षगायत्रीसंपुटंकृता बटुकोमंत्रमाराध्यंसवदेवैसुपूजिता हवनंविप्रभोज्यञ्चकृत्वाविभवविस्तरात् शैयादानादिकंसर्वंमूर्तिसंकल्पमाचरेत् एवं
सर्वद्विजंतोष्यः आशर्वादंसुग्राहिता एतद्यत्नप्रभावेणसर्वपापविनाशनम् पूर्णायुसुखमेधावी पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यमहत्वेणपुण्यंसर्वेप्सितःप्रदम्

आद्याब्देवह्निवर्षान्तंबालावृद्धिदिनेदिने मासेमासेमहोत्साहोगृहेमंगलमोदिता शरीरेकष्टसंपन्नादंतबाधाविरेचनम् सर्वशान्तिसुयत्नेन तातलाभसुख
प्रदम् वेदवर्षसमारम्भमुनिवर्षान्तरेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चबालिकासुप्रियंवदा शिशुक्रीड़ामहत्वेणदृष्टिहास्यमनोहरा बृणवातोद्भवोकण्टपतनाद्दारुणो
भयम् पुण्ययत्नादितोनित्यं सर्वशान्तिसुखंलभेत तातमातपरंप्रीती वस्त्राभर्णैसुशोभिता गृहकार्येसुकुशला पुण्यरूपासुशोभना व्यालवर्षेचसंप्राप्य
नेत्रसोमतथान्तरे तातमातमहच्चिन्ता व्ययलाभविवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो गृहेमंगलमेवच कीर्तिश्चनिर्मलोभूता कुलंतेनप्रकाशिता दिव्याम्बरं
भूषणाञ्चप्राप्यतियपरंप्रिया पुण्ययत्नादितोनूनं प्रकाशोविपणीभवः सुयोग्यंपतिप्राप्यं गृहेसर्वसुखंलभेत त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमम्
भोगमैश्वर्यसम्पन्ना प्रकाशंपुण्यजोमहान् नानाकार्यप्रबंधेण गृहसमृद्धिवर्द्धनी सर्वकार्येसुकुशला पतिरत्यन्तवल्लभा ऊनविंशेचविंशाब्दे शरनेत्र
तथान्तरे सर्वसौख्यसमृद्धिश्चभोगमैश्वर्यनूतनम् पुत्रकन्यासमाविष्टो दम्पत्योप्रेमवर्द्धनः मंगलंविविधोगेहे जायतेनित्यनूतनम् प्रकाशोविविधंनित्यं
यशमानविवर्द्धनम् सर्वशांतिःसुयत्नेन यद्रोगंदारुणोभयम् रसलक्षगतेवर्षे नभरामतथान्तरे सर्वेच्छापूजितंलोके पूर्वपुण्येणभूतले मंगलमहदागम्य
महत्वमधिकंकुले व्ययलाभमहोत्साहो वनितापुण्यरूपिणी नसुखंप्राप्यतिपूर्णं यायद्यत्नंनपापहम् इन्दुरामाद्भमारम्भः चत्वारिंशा वधितंततः
पुण्यत्नादितोनूनं विविधोमंगलमहान् उद्वाहादि महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशंसिता दम्पत्यरक्तजंकष्टं पुनरन्ते महद्भयम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं
सप्तग्रन्नतुजातथा कृत्वासर्वसुखंलोके परमैश्वर्य दुर्लभाः शरिवेदाद्ध संप्राप्यः व्योमभल्लाद्धकेतथा तयोरन्त विशेषेण भाग्यंसुमहतोदयम्
पतिलाभ महन्नित्यं रचनागेह सुन्दरम् पौत्रजन्म महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशंसिता प्रतापमानमधिकं नित्यवैधर्म्म तत्पराः देवदर्शन तीर्थेषु
पवित्रंमानुषीतनम् पुत्रपौत्रसुखाःसर्वे नित्यवैधर्म्म कर्म्मणी अतः परिसुखंनित्यं नभषष्टान्तराद्धके सुकीर्तिख्यातिपुण्येण सर्वेच्छा सुखपूजिता
व्यालषष्टाद्धमायुष्यं किंवानेत्रनगाद्धकं प्राप्यति पुगतिर्भवा अनायासेतुनंतयजेत् पुनर्द्विजकुलोत्पन्ना सतिसाध्वीपरंतया पुण्यैश्वर्यं लभेत्सर्वाः
सत्यलोके गमिष्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्यो मुनिदुर्लभः अयत्नेक्लिश्यतिपापं निस्फलं जन्मपत्रिका मद्वाक्यस्य परंतत्वं पुण्यमेव सुनिश्चितं

एवंग्रहेष्टमोनेन दिव्यभागासुलक्षणा मध्यमांगीसुसद्रूपा गौरवर्णामनोहरा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता तातमातसुखप्रदा नानाकार्यप्रबन्धेण राजतेबहुसम्पदा दासवाहनजैर्नित्यं मनेच्छाबहुपूजिता पूर्वपापेणसंतप्ता सर्वसौख्याधिकारिणी रोगशोकेणक्लिश्यंति अल्पमृत्युमहद्भयम् नानाचिंतातुरोभूमौ पतिपुत्रात्म चिन्तनम् नसुखंसुस्थिरोनित्य यावद्यत्नंनपापहम्पतनाद्दारुणोकष्टं विविधंदुक्खभाजिनी प्रायश्चित्तमहादानं मंत्रजाप्यंसुभक्तितः पापशान्तिःसुयत्नेन कृत्वासर्वसुखंभजेत् यावद्यत्ननकर्तव्या भोक्तव्यंकर्मजंफलम् ।।शुक्रोवाच।। पूर्वपापकथंतातः कथयस्वप्रसादतः केनशांतिः भवेत्तस्य श्रवणास्यममेच्छया ।।भृगुवाच।। शृणुवत्ससमासेण सर्वमेतद्वदाम्यहम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्ना नारीयंपूर्वजन्मनि शुभलक्षणासंपन्ना दिव्यरूपामनोहरा पूर्वपुण्यप्रभावेण राज गेहाधिकारिणी तन्नृपस्यद्वयोभार्या पुत्रकन्यासमावृता नित्यधर्म्मरतासाध्वी पतिभक्तिपरायणा मदोन्मत्तोपिसःसज्ञो चास्यरूपविमोहिता पत्नीपुत्र महत्क्लेशंदत्वायंनित्यतुष्यति तेनप्राप्यमहद्दुक्खधर्म्मभार्यामृतिंगता तस्यपुत्रोविताड्यंतिनारीयंपापमाश्रयः त्रिजन्मक्लिश्यतिनूनंएतज्जन्मेवितप्यति पापशांतिःनकर्तव्या सुखेविघ्नमहत्यपि गृहेक्लेशविवादश्च पतिपुत्रात्मदुक्खिता अन्यैश्चविविधोदुक्खाः प्राप्यतिपापमाश्रयः तस्यशान्तिरनुष्ठानं कथयामित्वयाधुना स्वर्णपत्र विधानेन कृत्वाविभव विस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुद्धस्थाने सुभक्तितः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तंसमारभेत विष्णुशक्तियुतचित्र लेखयेद्रक्तचन्दनम् तत्रैवरा जपत्निश्च रामपुत्रान्वितं लिखेत संस्थाप्यविधिवत्कुंभे प्रायश्चित्तविधानतः पूजयेद्भक्ति भावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत ।। तत्रमन्त्र ।। ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवानाय आदिशक्तिसहिताय सर्वजगद्रक्षणायतेनमः पूर्वजन्मान्तराजित पापं हरहररक्षां कुरु कुरु स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्षं सर्वदेवैः सुपूजनम् सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिक्षयंकरः मूर्तिदान ततः कृत्वा शैय्यादानादिभिर्युताः हवनंविप्रभोज्यश्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंपुण्याश्रयोलोके पुनः सर्वसुखंभजेत् पतिपुत्रात्मजादीणां मनेच्छासर्वपूजिता शुचौपक्षेयथाचन्द्र योगस्तद्वत्महत्फलम् मंगलंविविधोनित्यं पूर्णायुः सुखसर्वदा प्रतिष्ठामानविभवाः सुप्रसिद्धाप्रशंसिता त्वयत्नेविपरीत्यंहो पापरूपेणदुःखजम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेत शुचिसुन्दरीसौभाग्यी सफलंजन्ममानुषी

स्त्री० ४२

आद्याब्देबाणवर्षातंत्राणाक्रीड़ायथाक्रमं मासेमासेसुखंजातं शरीरेकष्टसंभवाः रुदन्तिभयमाक्रान्ता भूतछायावितप्यति वृणाबातोदरःव्याधी दन्तपीड़ा
विरेचनम् सर्वशांतिसुयत्नेन पतनाद्दारुणाभयम् पूर्वपापक्षयोकाव्यः तातलाभप्रदोमहान् भ्रातजन्ममहोत्साहो कन्यकाभाग्यभाजनी चञ्चलाश्चपलाबाला
दृष्टिहास्यमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति तातमातपरंप्रिया रसाब्देव्योमचंद्राब्दे तयोरन्तसु मंगलं भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यं भोगमैश्वर्यसंपदा तातचिंताहृदेगुप्तं
कुलबधुविरोधिता किंचिद्दानादिमंत्रेण भगवद्भक्तिभावतः श्रेयोमानंप्रतिष्ठाच मंगलंमहदागतः गृहकार्येसुकुशला कन्यकाशुचिलक्षणा इन्दुचन्द्राद्ध
मारभ्यः शरचंद्राद्धमेवही भोगाप्रवेभवोवृद्धिवस्त्राभर्णैसुभूषिता रूपयौवनसंपन्नासर्वसौभाग्यरूपिणी पतिप्रेमविवर्द्धतिगृहकार्येसुकौशला यद्रोगंजायते
देहोसर्वशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षाविधिततः पुण्यैश्वर्यमहत्वेण मनेच्छाबहूपूजिता कष्टञ्चमहतोभूयात्पुनरानन्दमंगलम् पुत्रकन्यासुखा
विष्टं दम्पत्योप्रेमवर्द्धते गृहक्लेशविनश्यति लाभवृद्धिःसुयत्नतः अयत्नेक्लिश्यतिबामा सुखेशोकसमागमः एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेद्
विंशैकोपञ्चविंशाब्देसुपुण्याद्भाग्यभाजनी पतिपुत्रात्मद्रव्येणतुष्यतिविविधंगृहे विस्तृतिर्वंशजंनित्यंसुप्रकाश्यंतिभूतले मंगलंविविधोत्साहोयशमानवि
वर्द्धनम् अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् रसनेत्राद्धत्रिंशेतुपतिलाभविवर्द्धनम् कुलकीर्तिवृहन्नित्यंरिपुवोदासवचरेत् तुष्यतिमिष्टवाक्येणपितरंविप्र
साधवाः तीर्थयात्राजपपुण्यदंपत्योमोक्षसाधनम् शशिरामाद्धसंजातंशररामतथांतरे उद्वाहादिमहोत्साहोकुलंचातिप्रशंसिता अयत्नेविपरीत्यंहीपूर्वकर्म
विपाकजम् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसुखार्थोपुण्यमाचरेत् वांच्छापूर्तिप्रजायेत तपतेजोमहत्यशः रसेवन्हिसुवर्षाणिव्योमचत्वारिवत्सरे तयोरन्तर्महत्वेणसफलं
मानुषीतनम् मनेच्छापूजितासर्वेकुलवृद्धाप्रशंसिता रामवेदगतेवर्षे गौत्रजन्ममहोत्सवं पूर्वयत्नेनकर्तव्यानिस्फलंजन्मपत्रिका सून्यपञ्चावधिकाव्यपुण्यतीर्थे
व्ययोमहान् अल्पमृत्युभयंघोरंवर्षेरामशरांतरे तेभ्यःसंरक्षितापुण्यंदीर्घायुःतत्रमानुषी शरषष्टमवर्षाणिप्रपौत्रंजन्मभूतले ग्रामभूमिधनासिञ्चबलहानिरुज
क्षयम् मंदहृष्टिभवेद्रात्रौहरिभक्तिसुतत्परा पुत्रपौत्रमहाभागीसतोष्यंवृचिशातलः नगव्यालगतेवर्षेपूर्णायुःकथितोमुनिः निधनजायतेतस्यमाघमासेशुचौ
दलेसद्गतिप्राप्यतिवामासुप्रसिद्धप्रशंसिता अग्रजन्मेसमुत्पन्नान्नृपगेहेसुधर्मिणी धर्मेणैवप्रभावेणयशमानमहत्पदम् एवंसर्वसुखनित्यज्ञातव्योपुण्यकारणम्

सर्वखेटेष्ठमानेन कन्यका सौम्यसुन्दरी गृहकार्येसुकुशला सत्यवृत्तिसुलक्षणा तातमातपरंप्रीती पतिप्रेमविवर्द्धनी नानाकार्यप्रबंधेण सुखसौभाग्य रूपिणी प्रकाशोविपणीभूयात्महवश्चपदेपदे भोगमैश्वर्यसम्पन्ना दासदासिश्चवाहनम् दिव्याम्बरधरोबामा भूषणंविविधोमहान् प्रजावृद्धिसुखंनित्यं पुण्यारिष्टविनाशनम् मंगलंविविधोत्साहो जायतेनित्यनूतनम् कुलवृद्धमहत्कार्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वेच्छापूजितोभुविः यन्त्र दृष्टिगतंतत्रः विजयोलाभभूरिशः पुत्रकन्यासमायुक्ता विमलंभाग्यदर्शना पापकर्म्मकृतेबाधा सुखेविघ्नमहत्यपि कुलेविघ्नमुपाधिश्च पतंतिशोकसागरे कष्टापत्तौविशेषेण भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा नसुखंसुस्थिरोपूर्णं यावद्यत्ननपापहम् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतंदारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयो नारी कथयस्वमहामते ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिसमासेण विचित्रंकर्म्मकारणम् विप्रवंशोद्भवापूर्वे वनितापुण्यरूपिणी सुप्रसिद्धप्रसन्नात्मा पतिरत्यन्त वल्लभा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दासदासिश्चवाहनम् युवावस्थाविशेषेण विषयाशक्तमानुषो किंकरैर्जायतेप्रीती कामेणहतचेतसा बहुकालरतिःसौख्यं रमतिपापमाश्रयः स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोषितंशापितोमहत नैवशांतिःभवेत्तत्रः शापपापदुरासदम् यावच्छान्तिःनकर्तव्या एतज्जन्मेभयप्रदा क्लिश्यतिविविधोवामा सुखेविघ्नभन्तिही ॥ शुक्रोवाच ॥ केनशांतिःभवेत्पापं पतिशापोतिदुस्तरम् कथयस्वमहायोगिन्यदितेकृपयामपि ॥ भृगुवाच ॥ व्रतदानमहत्पुण्यं शापपापक्षयंकरा तवस्नेहात्प्रकाश्यामि यत्नंसर्वसुखप्रदा हेमपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने प्रायश्चित्तं समारभेत लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्तचंदनम् तत्रैवपतिमूर्तिश्च शापहंवीजयंत्रितम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि विष्णुपीठविधानेन पूजयेद्भक्तिभावतः तदान्तेमन्त्रमाराध्यः द्विजाःसत्यव्रतेरताः इन्दुलक्षप्रमाणेन जपेदेकाग्रमानसम् ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वराय महापुरुषाय सर्वपाप हरायतेनमः स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं ॥ इतिमन्त्र ॥ सावित्रीसंपुटंनित्यं जपेदेकाग्रमानसम् यज्ञान्तेमूर्तिदातव्यं शैयादानादि भियुता ईश्वराराधनेप्रीती नित्यंधर्म्मपरायणा सर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नप्रभावतः प्रकाशंविविधोत्साहो मंगलंहोदिनेदिने आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिनिवारणम् दानमन्त्रव्रतेणैव नित्यंसर्वसुखागमः अयत्नेपापजंदुक्खं क्लिश्यतिनात्रसंशयः सर्वेप्सितः प्रदोपुण्यं तत्वमेतत्परंसुखम् ॥

जन्मवर्षसमारभ्यः रामवर्षांतरेक्रमात् कन्यकावृद्धिमाप्नोतिगृहेमंगलनूतनम् शरीरेकष्टसंभूताचाल्पमृत्युमहद्भयम् दानमंत्रंसुयत्नेनसर्वशांतिःसुखंलभेत्
तातजाममहोत्साहोविस्तृतिपुण्यवैभवाः वेदाब्देमुनिवर्षांतंशिशुक्रीडासुखप्रदा किंचित्कष्टमनोद्वेगंशिशुप्रीत्तिविवर्द्धिता चञ्चलश्चपलाबालावादहास्यपरं
प्रिया मंगलंविविधोगेहेमासेवर्षेसुखंगता व्यालवर्षसमारभ्यः यावद्वर्षञ्चद्वादशे भोगाप्रवैभवोवृद्धिगृहकार्येसुचञ्चला वस्त्राभर्णैःसुशोभंतिपितुलाभव्ययो
महान् कुलकीर्तिवृहन्नित्यं उद्वाहेसुप्रशंसिता यद्रोगंजायतेकष्टंसर्वशांतिसुयत्नतः त्रयोदशाष्टचन्द्राब्देपुण्यसौभाग्यरूपिणी सर्वकार्यसुकुशलागृहसौख्य
विवर्द्धिनी रूपयौवनसंपन्नाराजतिगेहभूषणा पतिप्रेमविवर्द्धंतिमागमश्वर्यसंपदा ऊनविंशतथाविंशेतथास्यात्पञ्चविंशके विस्तृवंशजपुण्यपुत्रकन्यासमा
वृता नानाकार्यप्रबंधेणगेहेतुसफलीकृता सर्वसौख्यसमायुक्तासुपुण्यैश्वर्यभाजनी त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंयत्कृतंपूर्वजन्मनि ऋतुपक्षाद्धमारभ्यः व्योमवन्हि
तथान्तरे पूर्वयत्नादितःपुण्यंसर्वसौभाग्यमाकरी व्ययलाभमहत्कार्येसुप्रसिद्धश्चभामिनी प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वंजायतेकुले अल्पमृत्युभयंकष्टं आप
दुद्धारणं जपेत् अन्नदानमहादानं सर्वारिष्टविनाशनम् शशिवन्हिसुवर्षाणि शररामाद्धचांतरे उद्वाहोमंगलंकार्ये विविधंकीर्तिविस्तरात् प्रतिष्टायाद्दशितत्र
गेहेवित्तंनताद्दशि व्योमवेदावधिर्वामा सर्वेच्छासुखपूजितो देवदर्शनजाप्रीती पवित्रक्रियतितनम् प्रतापमानमधिकं जायतेबहुविस्तरात् सर्वकार्याणि
सिद्धंति भूमिलाभसुनूतनम् अतःपरिसुखनित्यं शताद्धंवत्सरावधिः पौत्रजन्ममहत्वेण सफलंजन्ममण्यति दानधर्म्मरताप्राज्ञी मंगलंविविधो
महान् गुणपञ्चगतेवर्षे पतिकष्टभयंकरम् सर्वारिष्टहरंयत्नं महादानैःसुखंलभेत् वेदबाणगतेवर्षे तथाव्यालशराद्धके सर्वेच्छापूजितोपुण्यम् यत्ने
निष्फलंभवेत् शरीरेजायतेकष्टं मृत्युरेवभयंमहत् सप्तअन्नतुलादानं महामृत्युञ्जयोजपेत् औषधीदानमन्त्रेण सर्वव्याधिविनाशनम् ईश्वरंभक्तिभावेण
आयुवृद्धिसुखंततः ग्रहपञ्चमवर्षाणि ऋतुषष्टमगेतथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च सर्वेच्छातत्रपूजिता ईश्वराराधनंपुण्यमग्रजन्मस्यहेतवे कृत्वातेनसुपूज्यंति
महज्ञान्यपदाधिपा नेत्रलोकाद्धपर्यन्त पूर्णायुःतस्यनिर्णिता अनायासेतुनंत्यक्त्वा पूर्वपक्षेषुकार्तिके कुलकीर्तिविशेषेण महोत्साहंगृहेतदा महत्पुण्यं
सुयत्नेन चाग्रजन्मेच्छितंपदं प्राप्यतिनात्रसंदेहो सत्यलोकाधिकारिणी एवंपुण्यपरंतत्वं पुण्येकिंचिन्नदुर्लभं पुण्याश्रयेसुखंसर्वे पापकर्माद्धधोगतिः

स्त्री०
४३

सर्वखेटेक्ष्यमानेन योगस्यास्यफलंशुभं शुभलक्षणसंपन्ना कन्यकाशुचिसुन्दरी गौरवर्णविशालाक्षी स्वल्पापत्याकृषोदरी सुस्वभावसुशीलाच सुभा
मिष्टभाषणी सर्वसौख्यसमायुक्ता क्रोधेणकलहंकरा तातमातपरंप्रीती पतिरत्यंतवल्लभा यथादेहप्रवर्द्धेत: मोदमानंगरीयसी चञ्चलश्चपलावाला
गृहकार्येसुकौशला धनधान्यसमृद्धिश्च विविधंभोगतत्परा रूपयौवनसंपन्ना दृष्टिहास्यमनोरमा पूर्वपापकृतेवाधा विविधोद्वेगचिंतनम् सुखेविघ्न
मुपस्थित्य कलहंवादमन्दिरे क्लिश्यतिकष्टपीड्यन्ति बाणाल्पंदारुणोभयम पतिपुत्रात्म जाद्रव्यं नैवपूर्णसुखंभजेत यावद्यत्नंनकर्तव्या पूर्वपापैर्वितप्यति
प्रायश्चित्तमहादानं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसम्पत्सुखाकरी पूर्णायुपुण्यमेधावी फलंसर्वेप्सितंलभेत अयत्नेविविधापत्तौ भोक्तव्यंही
स्वकर्मणा ॥ शुक्रोवाच ॥ पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वप्रसादत: कथंशान्तिर्भवेत्तस्य श्रवणस्ममेच्छया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुवत्ससमासेण कथाया:
परमाद्भुतम् तवस्नेहात्प्रवक्षामी गोपनीयमतंमहत् पुराविप्रकुलेजाता विमलंभाग्यभाजनी सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दानपुण्यंसुखेच्छिता तीर्थयात्राव्रतं
धर्म्मद्विजदेवै:सुतुष्यति एकदासुमहापर्वे व्रतंयज्ञसमारभेत् तत्रैकोविप्रमायत: तपस्वीपुण्यभाजनम् दृष्ट्वाद्विजगृहेयज्ञं उपविश्यक्षुधातुर: बहुविप्र
समायात येषांयज्ञेनिमन्त्रणम् भुञ्जीतास्वगृहंजग्मुरतिथियंविनिर्मुख. यज्ञान्तेयोचनंकृत्वा तयोवादमभून्महत क्षुधातृषातुरोतप्तं दुर्वाक्येणातिक्लेशिता
तेनशापप्रभावेण नारीयंपापमाश्रय: भूयसेपिमहत्पापमतिथिविप्रनिर्मुख: नैवयत्नकृतावत्स: तत्रपापानुत्तये कालेनम्रयतिश्चापि पुरास्वर्गसुखंभजेत्
समुत्पन्नाथभूभाग पुन:पुण्यावसानके पूर्वपापैर्वितप्यंति सर्वसौख्याधिकारिणी तस्यशांतिमहादान कथयामिविधिर्यथा तत्रहेममयोपत्र कृत्वाविभव
विस्तरात शुद्धितसुविधानेनद्विजचित्रसुलेखयेत् वेष्टितांपीतपट्टेणस्थाप्यंकुम्भघृतेयनम् पुजयेत्सुविधानेनमंत्रमाराध्यभक्तित: ॥ मंत्र ॥ उों ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
स:सर्वापत्तिहराय ब्रह्मरूपायनम: सर्वेप्सितंवरदाय ह्रां ह्रूं श्रींस: स्वाहा इतिमंत्रजपेल्लक्षं गायत्रीशापहंपुटम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या पात्रविप्रायधीमतां
सर्वविप्रै: सुसंतोष्यं मंत्रदीक्षां समर्पयेत् एवसर्व विधिकृत्वा पूर्वपाप विनाशनम् कुम्भमूर्ति महादानं मन्त्रसर्वार्थ सिद्धिदम् एतद्यत्न प्रभावेण
सर्वैश्वर्य समावृता: यत्रदृष्टि गतंतत्रसुखसर्वत्र भूरिश: पुत्रपौत्र प्रपौत्रश्च धनधान्यै: सुपूरिता इतियंनिश्चितंपुण्यं सर्वसौभाग्य कारण

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातचिंताहृदेगुप्तं लाभयोगविमन्दता नेत्राब्देवह्निवर्षान्तं दिवेमासेसुखंगता तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगल
मेवच शरीरेजायतेकष्टं दन्तपीड़ाविरेचनम् ज्वरार्तमुदरव्याधी सर्वशांतिःसुयत्नतः चतुर्थेपञ्चमाब्देतु ऋतुवर्षावधिक्रमात् बालक्रीड़ारतोनित्यं
कन्यकाशुभलक्षणा दानमंत्रसुयत्नेन सर्वसौख्यक्रमादितः व्रणविस्फोटकोव्याधी स्वयमेवोविशान्तये गृहकार्यरतोनित्यं बालिकाप्रियवादिनी
मुनिवर्षंगतेकाव्यः व्योमचन्द्रान्तरेतथा मासेवर्षेमहोत्साहो पुण्यात्सर्वंसुमंगलम् स्वकृत्यकुशलाबाला तातमातसुखप्रदा मंगलंचर्चयागेहो उद्वाहादि
विचिन्तनम् पतनादिभयंकष्टं सुपुण्याच्छान्तिः सर्वदा इन्दुचन्द्राद्धमारभ्यः यावद्बाणनिशाकरे तावत्कालावधिर्नूनं सुखयुग्यत्नसाधिता भाग्यवृद्धि
महत्वेण प्रकाशोविस्तृतिसदा मानेनमहताविष्ठा भर्तारंसुखवर्द्धनी दिव्याम्बरधरोवामां नानाभर्णैर्विभूषिता प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिक्रमात्
रूपयौवनसंपन्नासर्वभोगसुखाकरी गर्भबाधामहत्कष्टं बालजन्मश्चमोदिता प्रकाशोदैवजोनित्यं पूर्वपुण्यफलप्रदा विंशेकोपञ्चविंशाब्द तयोरन्तर्क
मोदितः भोगाप्रवैभवोवृद्धिः पुत्रकन्यासमाव्रता मंगलंविविधोत्साहो गृहयेनप्रकाशितम् अल्पायुदुःखदंयोगं पूर्वयत्नाद्विनश्यति महत्वंचाधिकंतत्रः
मोदमाः गरीयसी ऋतुनेत्राद्धत्रिंशेच सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्चप्रजावृद्धिसुविसरात क्लेशकष्टागमोगेहे संशयाविद्यमानसं दानपुण्योप
चारेण सर्वशान्तिसुखागमः इन्दुरामगतेवर्षे शरवन्हितथान्तरे उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिसुविस्तरात् कुलेविघ्नमुपाधिश्च शान्तवृत्तिःप्रशंसिता
चत्वारिंशावधिर्वत्सः मनेच्छासर्वपूजिता व्ययलाभमहन्नित्यं गृहनूतनसुन्दरम् तीर्थयात्राव्रतंदानं वनितापुण्यरूपिणी छायापात्रान्नदानञ्च कुलेसर्व
सुखप्रदा सोमचत्वारिवर्षाग्नि व्योमभल्लाद्धकेतथा मासेवर्षेसुखंजातं गृहेचापिसुपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहो सफलंजन्ममण्यति सर्वैश्वर्यसुयत्नेन
मोदितापतिभिस्सह अयत्नेपायजंक्लेशं भोक्तव्याचाल्पजीवती तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूर्वपुण्यंसुभक्तितः कृत्वापापविनिर्मुक्ता नित्यंधर्म्माश्रयेसुखोः
कीर्तिश्चनिर्मलीभूता रामव्यालाद्धमायुषम् प्रपौत्रंजन्मतोलोके विमलंभाग्यदर्शना ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौभाग्यरूपिणी अनायासेतनंत्यज्यः
मधुमासेशुचौदले सुकीर्तिविस्तृतालोके प्राप्यतिचोत्तमागतिः अग्रजन्मसुपुण्येण जायतिमहतांकुले लोकेच्छापुजितापुण्यं सुराज्ञीपरमांगतिः

स्त्री०

४४

एतद्योगोद्भवावामा श्यामवर्णासुलोचना कोमलांगीसुललना मध्यरूपापतिप्रिया हीनगेहोपिजायन्ति सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्च पुत्र
कन्यासमावृता नानाकार्यप्रबंधेण राजतिगेहसम्पदा प्रकाशोविपणीभूयात्प्रतापेगुणगौरवम् मानकीर्तिमहत्वेण प्राप्यंतिहीदिनेदिने सर्वैश्वर्यसमायुक्ता।
सुप्रसिद्धप्रशंसिता उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् दासदासीसमायुक्ता वस्त्राभर्णैःसुशोभिता केचिज्जीवपरंप्रीती गुप्ताशक्तविचिन्तनम्
पुण्यात्सर्वसुखंनित्यं विस्तृतिंपूर्णवैभवाः पूर्वपापप्रभावेण आद्यन्तेदुःखसंभवाः वियोगोतातजंदुःखं वैधव्यातेमहद्भयम् क्लिश्यतिविविधंलोके रोग
शोकेणपीडिता सुखेदुक्खप्रदारेखा पूर्वपापेणदुस्तरम् यावद्यत्नंनकर्तव्या त्रिजन्मंतप्यतिमहा दानमंत्रंसुपुण्येण नित्यंसर्वंसुखंलभेत् ॥ शुक्रोवाच ॥
कथयस्वप्रसादेण पूर्वपापस्यकारणम् केनक्लेशाश्रयोनारी आद्यन्तेदुःखभाजनी ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमादभुतम् पुराधर्म
रताप्राज्ञी वैश्यवंशसमुद्भवाः ब्रतदानादितोनित्यं द्विजदैवान्सुतोष्यति महत्वमधिकंलोके बहुद्रव्येणगर्विता साकदाचिन्महापूर्वे तीर्थयात्राञ्च
कारयेत् तत्रस्नानमहादानं स्वपुण्येणतिगर्विता निशायास्वगृहंगन्ती तन्मार्गमुनिराश्रमम् तत्रैतद्रथचक्रेण गवीशोघातमृत्युदा तेनभूयोमहत्पापं
नैवशांतिश्चकारयेत तस्मात्पापाश्रयोभुया देतज्जन्मेतिदुक्खिता दानपुण्यव्रतेणैवः दिव्यांगीसुकुलोद्भवाः सर्वसौख्यान्वितालोके पूर्वंपापाद्भयभजेत्
॥ शुक्रोवाच ॥ केनशान्तिभवेन्नाथः गवीशोपापदुस्तरम् कथयस्वप्रसादेण यदितेकृपयामपि ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिमहाभागः यत्नचास्य
सुखंकरः हेमपत्रप्रकुर्वीतः रामकोणादिगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण भागार्द्धेपूर्वशंकरम् शेषार्द्धेसुक्रमेणैवः गवीशोचित्रशोभनम् वेष्टितांस्वेतपट्टेण
प्रायश्चितविधिर्यथा संस्थाप्यकलशंपूज्यः भक्तियुक्तेनचेतसा मंत्रागध्यंसुयत्नेन नन्दनन्दसहस्रकम् आपदुद्धारणंजाप्यः सावित्रीवीर्ययंत्रिता
॥ मंत्र ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय भूतानामधिपतयेनमः पूर्वजन्मांतरोजित वृषभदोषं हर हर स्वाहा शं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ
हवन मार्जनादिक्यं कृत्वासर्वविधिर्यथा मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या माचार्य्यायः प्रदापयेत यथाशक्तिद्विजंतोष्यः आशिर्वादश्चग्राहता एवंपुण्याश्रयो
नित्यं सर्वपापैर्विमुच्यति मनेच्छापूजितावह्नी पूर्णसौख्याग्रजन्मनि धनसंतानयानञ्च कुटुम्बेसुखवर्द्धनम् अयत्नेविपरीत्यंही अथाग्रेश्रृणुभार्गवः

जन्मवर्षोदरःव्याधी द्वितीयेदशनंरुजं रामाब्देवेदवर्षेच पीड्यातरुधिरःव्यथा दानमंत्रंनुयत्नेन भगद्भक्तिभावतः सर्वारिष्टक्षयोनित्यं मासेवर्षसुखंगता
शिशुक्रीड़ारतोबाला तातमातसुखप्रदा शराब्दव्यालवर्षान्तं तयोरन्तमहोत्सवम् मंगलंजायतेगेहो विस्तृतिंसर्ववैभवाः भ्रातबंधुसमायुक्ता पितुलाभ
विवर्द्धनम् गृहकार्यरताकिंचिद्वस्त्राभर्णैःसुशोभिता नन्दाब्दव्राणचन्द्राब्द सुखसौभाग्यवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिःसुनिर्मला माननीया
सुसद्रूपाबहुभूषणभूषिता प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वञ्चपदेपदे महादानादिमंत्रेणपूर्वपापैर्विमुच्यति अल्पमृत्युभयापत्तौसर्वव्याधिविनाशनम् ऋतुचंद्राद्ध
मारभ्यः विंशवर्षावेधिततः महत्वमधिकंप्राप्य रूपयौवनमावृता पतिप्रेमविवर्द्धन्ति निजकार्येसुकौशला पुत्रजन्ममहोत्साहो कथंचितासुखंलभेत्
पतिनामप्रभावेण सर्वकार्येसुखागमः कलहारिष्टसंतप्ता यावद्यत्नंनपापहं चाल्पमृत्युभयंघोरं पतिपुत्रेणक्लेशिता इन्दुपक्षाद्धसंजातं शरपक्षाद्धमेवही
विस्तृतिर्वंशजंपुण्य पूर्वयत्नेसुरक्षिता धनधान्यसमृद्धिश्च भोगमैश्वर्यनूतनम् कुलेविघ्नमुपाधिश्च क्षत्रभंगविचिंतनम् ईश्वरंभक्तिभावेण सुपुण्यंलाभदो
महान् रसनेत्रमितेवर्षे व्योमरामान्तरेतथा व्ययलाभग्रहन्नित्यं विवाहोमंगलंमहत् सर्वकार्याणिसिद्धंति महत्वंसुपदाधिपो कुलकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्ध
प्रशंसिता पतिपुत्रात्मजकष्टं सुपुण्याच्छान्तिसर्वदा शशिवह्निसुवर्षाणि शररामाद्धमेवही उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेविविधंतदा चत्वारिंशावधिर्वत्स
सुखेच्छापर्वपूजिता देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रंक्रियतेतनम् दानमन्त्रमहादानैर्सुखंसर्वैप्सितंलभेत् युगवेदमितेवर्षे पुत्रभाग्योदयंभवेत् दासवाहनजैर्नित्यं
प्रकाशोपुण्यजोमहान् पौत्रजन्मोत्सवंगेहे कुलतेनप्रकाशिता सर्वसौख्याद्भवोनित्यं यावद्रोमशराद्धके नानाकार्यप्रवंधेण गृहशोभासुविस्तरात् शरीरे
दारुणोकष्टंमुनिपञ्चमवत्सरे तत्रलोहमयेपत्रे कालमूर्तिसुपूजनम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं महादानञ्चकारयेत् छायापात्रान्नदानेन सर्वारिष्टनिवारणम् पुनः
सर्वसुखंलोके शरव्यालाद्धमायुषम् रामनामजपेनित्य दानधर्मेमतिस्थयेत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रैश्च वांछापूर्तिप्रजायते पापकर्मकृतेवाधा पुण्येविघ्नमुपस्थिता
तेनक्लेशाश्रयोनारी पूर्वपापेणपीडिता अतस्तानिनियम्याय शान्तयेत्सुखमिच्छति पूर्णायुः सुखसर्वाणि सुप्रसिद्धप्रशंसिता स्वल्पश्रमेतनंत्यक्त्वा
प्राप्यति गतिरुत्तमा पुण्याद्भाग्य महत्वेण सर्वत्रैव प्रशंसिता कर्माधीनं भवेत्सर्वं फलंयच्च शुभाशुभं एवंज्ञात्वा सुतत्वज्ञो सुखंचैवात्र जन्मनि ॥

स्त्री०

४५

एतद्योगोद्भवाबाला शुचिसाध्वीमनोहरा शुभलक्षणसंपन्ना गृहकार्येसुकौशला कोमलांगीसौम्यरूपा मध्यभागाप्रियंवदा धर्मेणैवसहायेण सर्वसौख्या धिकारिणी यथादेहप्रवर्द्धेत:विस्तृतिसर्ववैभवा: मासवर्षेमहोत्साहो तातप्रीतिबृहत्यपि विस्तृतिर्वंशजलोके सुविख्यातात्यमानिनी अल्पमृत्युभयंकष्टं सर्वशांति:सुयत्नत: दिव्याम्बरैसुशोभंति बहुभूषणभूषिता नानाकार्यप्रबंधेण स्वकुलेसुप्रशासिता रूपयौवनसंपन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी पुत्रपौत्रसुखासर्वे दासदासिश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन पूर्वपापोविशान्तये सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेशोकविचिंतनम् क्लिश्यति विविधोवामा पूर्वपापदुरत्यया ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि कथयस्वप्रसादेण दुस्तरोकर्मजंकथा ॥ भृगुवाच ॥ विचित्रांमद माख्यानं श्रुणुवत्ससमासत: पूर्वजन्मान्तरोवामा शूद्रवंशसमुद्भवा द्विजसेवारतोनित्यं बहुकालसुखगता युवावस्थामदोन्मत्ता लोभेणहृतचेतसा केचिन्मत्रपरंप्रीती सर्ववार्ताप्रकाशयति द्विजगेहेमहद्द्रव्यं भूषणविविधानिच दृष्ट्वातेषुहरंयत्नं चिंतयेद्बहुनित्यश: कदाचिद्दैवयोगेण सकुटुम्बाद्विजो हिसा तीर्थयात्रासुगतव्या दासीयगेहसंस्थिता सर्वद्रव्यहरंतस्य पूर्वमित्रसमायुता दूरदेशेगमिश्यति यत्रकोपिनविद्यते द्विजतीर्थागतोगेहे शापं दत्वातिदुखिता तेनपापाश्रयोलोके नारीविश्वासघातनी पुण्यमार्गेव्ययोद्रव्य ईश्वराराधनेमति भोगमैश्वर्यसंयुक्ता कचित्कालेसुखंभजेत् पुन: पापाश्रयोलोके एतज्जन्मेतिदु:खता ईश्वराराधनंपुण्यं सर्वलक्षणसुन्दरी सुखसौभाग्यसंपन्ना पूर्वपापैर्विनश्यति अतस्तशान्तिहेत्यर्थं प्रायश्चित्त वदाम्यहम् पूर्वपापक्षयंनित्यं येनसर्वसुखागम: हेमपत्रप्रकर्तव्या शुचिशुद्धमनोहरा लखयेद्रक्तगंधेण द्विजमूर्तिसुशोभनम् ताम्रकुम्भेघृतंगुप्तो यथा श्रद्धामहद्धनम् मूर्तितत्रैवसंस्थाप्य: पीतपट्टेणवेष्टिता पूजयेद्भक्तिभावेण वस्त्राभर्णैरलंकृतम् एतन्मंत्रमुखोच्चार्य: विधिवद्दानमाचरेत ॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रां ह्रीं हूं व्यूं नमोब्रह्मणेभूतानामधिपतये पूर्वजन्मान्तरार्जित शापपापं हर हर स्वाहा व्यूं हूं ह्रीं ह्रां ॐ सावित्रीजापयेलक्षं मंत्रमे तत्तदर्द्धकम् तदर्द्धं वटुकोमंत्रं तदर्द्धं धनस्यच जाप्यदान मिदंसर्वं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्ति भावेण सर्वसौख्य समागम: कार्याण्यपिच सिद्धन्ति विस्तृतिं सर्ववैभवा पतिपुत्रात्म द्रव्येण तुष्यतिविविधोत्सवा: कष्टचिन्ता भयंसर्वं विलीयन्तेपि शत्रुवा: महत्त्वमधिकंलोके पुण्यतत्त्व ब्रवीमिते

प्रथमाब्देमहोत्साहो मंगलंगेहमाहगतः तातमातमहोत्साहो प्रपितुश्चततोधिकम् ज्वरार्तमुदरव्याधी भूतछायाश्चविव्हला ततःशांतिःसुयत्नेन कन्यका
वृद्धिमाप्नुयात् द्वित्रिवर्षान्तरोकाव्यः सुखदासर्वमंगलम् दशनोत्वतिजाकष्टं ज्वरान्नासारकादयः छायापात्रान्नदानेन सद्यसौख्यमवाप्नुयात् तातचिंता
समायुक्तोग्रीष्मेलाभसुखप्रदा मातृकष्टान्वितोभूयात्पुनरन्तेसुमंगलम् चतुर्थेपञ्चमेषष्टेमुनिवर्षावधिःक्रमात् लाभश्चविविधोतातः गृहेमंगलचर्चिता शिशु
क्रीड़ारतोबाला निजकृत्यसुकौशला वृणाबातेनपीड्यंति पतनाच्चमहद्भयम् मंगलंकामयोगोपि संबंधेनप्रशसिता वस्त्राभर्णैसुशोभंति मोदमानंदिनेदिने
दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वसौख्यसमागमम् सप्तवर्षसमारभ्यः यावद्वर्षञ्चद्वादशे भोगाप्रवैभवोनित्यं वर्द्धतेपिनिशेषवत् गृहकार्येसुकुशला सर्वसौख्यविवर्द्धनी
उद्वाहो जायतेचास्यमोदवृद्धियथाक्रमः सुपुण्याच्चसुखंनित्यंकुसंगात्क्लेशभाजनीईश्वरंभक्तिभावेणमनेच्छासर्वपूजितागुणासोमाद्धमारभ्यष्टादशसुवत्सरे
स्वकृत्यकुशलावामा बुद्धितस्यप्रकाशिता पतिप्रीतिविशेषेण कामक्रीड़ामनोरमा सुखश्चविविधोपुण्यं जायतेतत्रदीर्घता ऊनविंशतथाविंशे वह्निविंशाद्ध
मध्यमा मंगलंविविधोगेहे सुतापुत्रसमुद्भवं विदेशोगमनंभूयाद्दशाश्रेष्टफलप्रदा वेदविंशगतेवर्षे व्यालपक्षतथान्तरे गृहलाभविशेषेण प्रजावृद्धिसुखप्रदा
सुप्रबंधसुयत्नेन सुखसर्वत्रवर्तते पापाच्छोकागमोगेहे पतिपीड़ाभयप्रदा औषधिदानमंत्रेण पुनःशांतिःसुखागमः स्वशरीरेमहाकष्टं प्रभूतंप्राणजायते
पूर्वयत्नमहादानं सुपुण्याच्छ्रेयभाजनी मंगलंविविधोनित्यंमानकीर्तिसुनिर्मला नंदनेत्रश्चात्रशाब्देवेदवह्निनथान्तरे व्ययलाभमहच्चापिउद्वाहादिमहोत्सव
सुशोभितेकुलंतेन गृहंचातिमनोहरा शरत्रिंशतिवर्षाणि व्योमचत्वारिमध्यमा चित्तचितातुरोभूयात्पुण्यंशांतिःसुखप्रदा त्वयत्नेविपरीत्यंही फलमेतद्धि
जायते नेत्रवेदगतेवर्ष पौत्रजन्मसुयत्नतः सुखवृद्धिमहोत्साहो मासेवर्षेसुखागमं व्योमबाणावधिवत्ससर्वेच्छासुखपूजिता आनन्दंक्लेशकार्यञ्च जातंकर्मा
श्रयोसदा ऋतुबाणगतेवर्षे पतिप्राणहरीदशा व्यालपश्चाद्धमारभ्यः जायतेगेहविग्रहं द्विजदेवसुहृत्पूज्यं दशाश्रेयस्करीसदा चित्तचिंताविनश्यंति
दानधर्माश्रयेमतिः अतःपरिसुखासर्वेरसषष्टाद्धमध्यमम् रामनामजपेन्नित्यं दानादिमतितत्परा प्रतापमानमधिकं सर्वदासुखसम्पदा व्योमसप्ताद्धगकिंवा
मुनिव्यालाद्धजीवति ईश्वरंकृपयात्पुण्यं फलंसर्वेसितंलभेत अग्रजन्मेसमुत्पन्ना सुप्रसिद्धधनाधिपा राज्ञीवराजतिभूमौ पुण्यतेजोमहत्यशम्

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंलाभदाभवः भोगमैश्वर्यसंयुक्ता सुकीर्तिख्यातिभूतले विप्रदेवार्चनेप्रीती तीर्थदेवालयेरति व्रतनेमरतावामाशुचिसाध्वीपतिव्रता सुशीलारूपसंपन्ना सवलाचमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति स्वजातिर्मानवर्द्धना सरुजंपीड्यतिपापं पुरायत्नात्सुखाकरी आलस्यंजायतेदेहो अंगवातेन पीडिता प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रसुभक्तितः सर्वत्रसुखदोकाव्यः मनेच्छातिनपूजिता अयत्नेमानसीचिंता नसुखंप्राप्यतिध्रुवम् पीड्यतिबहुपापेणय कृतं पूर्वजन्मनि पतिपुत्रात्मकष्टश्च नैवपूर्णसुखागमः रिपुवोक्लेशितानूनं हानिचिंतावलायसी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुखसाधनमाचरेत् सर्वावस्थासुखंनित्यं विस्तृतिंसर्ववैभवाः पतिपुत्रतथापौत्रं प्रजावृद्धिधनागमः पूर्णायुःसुखमधावीसर्वापत्तौविनश्यति सौभाग्यंमहतोभूयात्पुण्ययोगधनाधिपा प्रायश्चित्तम भावेणनिस्फलंजन्मपत्रिका ॥ शुक्रोवाच ॥ किमसौदारुणोपापंजायतेपूर्वजन्मनि प्रायश्चित्तान्वितोसर्वंकथयस्वप्रसादतः ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुवत्सप्रवक्षामि परंगोप्यमतहियत् अन्तरप्रभवोगेहेनारीयंपूर्वजन्मनि सर्वसौख्यान्वितालोकेदानधर्मपरायणा मानकीर्तिसमायुक्ताक्रोधेणतप्यतिकदा कदाचिद्दैव योगेणतीर्थस्नानेगमिष्यति तदाचसुमहापर्वे पतिगेहमुपस्थिता धर्मव्रतरतोभूयाद्धेनुदानञ्चकारयेत स्नानंकृत्वाततःतीर्थान्नारीयंगेहमागता धेनुवत्स नदृष्टव्या येषांप्रेमसुपाल्यति क्रोधेणतप्यतिवामो श्रुततद्दानकारणम् विप्रगेहगमिष्यति कुवाक्येणातिधर्षिता धेनुवत्सागतागेहे धर्मवार्तानमण्यति ममधनुकथंदानंपतिरत्यतवादिता शापपापाश्रयोतेनएतज्जन्मेदुखावृता अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् कथयानिसमासेणविधितस्ययथाक्रमम् स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथावित्तसुविस्तरात धेनुवत्सान्वितोचित्रं द्विजभर्तासुशोभनम् वेष्टितारक्तपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि प्रायश्चित्तविधानेन पूजयेत्सु विधिर्यथा लक्षमंत्रजपेद्विप्राहरिभक्तिपरायणा ॥ मंत्र ॥ ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय सर्वपापंहराय महेशायशिवातेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापं हरहरश्रेयोमांदेहिस्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंऊँ गोपालस्तोत्रपठितंसावित्रीजाप्यसंयुता कुम्भमूर्तिप्रदातव्यावस्त्राभर्णै.सुशोभिताः एवंदानमहादानैराचार्याय सुतोषिता आशिर्वादंलभेत्तेन सर्वसौख्यप्रदोमहान् पूर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नंसुभक्तितः पुनःसर्वसुखंलोके विस्तृतिंपुण्यवैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण सर्वसौभाग्य रूपिणी पुत्रपौत्रात्मजादीनां सर्वसाफल्यवैभवा प्रतापमानमधिकं सुकीर्तिख्यातिभूरिशः एवंपुण्याश्रयेनित्यं विमलंभाग्यभाजिनी

जन्माब्देवह्निवर्षान्तं मातकष्टसुखोत्सवम् मंगलं जायतेगेहो मासेमासे सुखंगता दन्तपीड़ाज्वरोतप्ते जायतेचविरेचनम् शरीरेकष्टसंपन्ना कन्यकादुःख रूपणी किंचिद्दानादियत्नेन भगवद्भक्तिभावतः सर्वकष्टक्षयं लोके मोदमानं दिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यं बालक्रीड़ासुचञ्चला तातलाभमहोत्साहो सुखसौभाग्यवर्द्धनी वेदाब्देव्यालवर्षान्तं विस्तृतिंसर्ववैभवाः गृहकार्यरतावाला वस्त्राभर्णेसुशोभिता उद्वाहंचर्चयागेहे तातमातविचिंतनम् रुजं चाल्पभयंसर्वं नित्यंशांतिसुयत्नतः पुण्ययत्नादितोर्नूनं विमलंभाग्यवर्द्धनी नन्दाब्देवेदचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमः भाग्यवृद्धिमहत्वेण विवाहोमंगलं महान् वस्त्राभर्णेसुतोष्यंति कुलकीर्तिसुविस्तरात् पतिप्रीतिविवर्द्धन्ति रूपयौवनसंभवाः भोगाप्तवैभवोवृद्धि निजकृत्यसुकौशला प्रतापमानमैश्वर्यं जायतेचदिनेदिने शरसोमाब्दमारभ्यः विंशवर्षावधिःतथा कुलवृत्तिप्रभावेण सुखसौभाग्यवर्द्धनम् अल्पमृत्युभयंघोरं पुण्ययत्नाद्विनश्यति प्रकाशो विपणीभूयात्प्रजावृद्धिसुमंगलम् सुशोभितंगृहंतेन विमलंभाग्यशालिनो सोमपक्षगतेवर्षे शरपक्षाद्बमध्यमा कुलवृद्धिसुपुण्येण पुत्रकन्यासमायुता व्ययलाभमहोत्साहो गृहेद्रव्यमसुस्थिरः पूर्वयत्नादितोर्नूनं पुण्येश्वर्यविवर्द्धनम् दंपत्योरल्पजंकष्ट नश्यतेपिसुकर्मणा ऋतुपक्षाद्बत्रिंशेच तयोरन्तक्रमा दितः किंचिच्छोकागमोगेहे पुण्याच्छान्तिर्हिनित्यशः मंगलंविविधोनित्यं जायतेबहुनूतनम् मासेवर्षेसुखजात पतिलाभविवर्द्धनम् इन्दुरामगतेवर्षे चत्वारिंशाद्बकेतथा कुलकीर्तिवृहन्नित्य मुद्वाहादि व्ययोमहान् धर्म्मवृत्ति प्रभावेण सुप्रसिद्ध प्रशंसिता मनेच्छा पूजितंलोके पुण्यपात्री सुपूजिता राजतिसुप्रबंधेण पतिसंगेसुखाकरी सोमचत्वारिवर्षाणी व्योमभलाद्बमवहो पतिपुत्रात्मद्रव्येण विविधंनित्यतुष्यति पौत्रजन्म विशेषेण सफलं जन्ममण्यति महत्वंजायतेगेहो कुलवृद्ध प्रशंसिता ग्रामभूमि धनंलब्ध्वा पुण्यात्सर्वं सुवैभवाः सोमपञ्चमवर्षाणि यावद्व्योम रसाद्बके तावत्पुण्य सुखासर्वे मनेच्छा सर्वपूजितं अयत्नेविपरीत्यंहो भोक्तव्य कर्म्मजंफलम् तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन यत्नंकृत्वा सुखेच्छिता शतजीवी भवेद्रामा पूर्वपुण्येण भूतले पुत्रपौत्र प्रपौत्रश्च दिव्यरत्न धनादयः लोकेच्छा पूजितासर्वे रत्नसूय वसुन्धरा अन्तेकृश्यतनंवृद्धा पुण्यपात्री सुपूजिता अनायासेतनं त्यज्यः सर्वत्रैव प्रशंसिता अग्रजन्म सुपुण्येण चोत्तमकुलसंभवाः महाराज्ञीवसोवाला फलंसर्वेप्सितंलभेत् एवंसर्व सुखंलोके ज्ञात्वापुण्याश्रयोकरे

एवंसर्वग्रहायत्र: फलंतत्रविनिश्चितम् सौम्यसाध्वीसुसद्रूपा बालिकाशुचिसुन्दरी सर्वैश्वर्यसुसंपन्ना कोमलांगीदयान्विता गृहकार्येषुकुशला तातमात
परंप्रिया वस्त्राभरणैसुशोभन्ति वनितापुण्यरूपिणी दानमंत्रंसुयत्नेन पूर्वसंरक्षितायदि प्रकाशोविपणीभूयात्पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यप्रबंधेण
नित्यंसौख्यसमागमः राज्ञीवंराजिताभूमौ हेमरत्नविभूषिता राजतिसुप्रबन्धेण पतिप्रेमविवर्द्धनी सर्वापत्तौविनश्यंति यद्रोगश्चमहद्भयम् दासवाहन
जैर्नित्यं दम्पत्योर्मोदवर्द्धनः भूमिलाभविशेषेण गृहंचातिसुशोभनं नैववाक्यस्मृतिर्यत्रः नैवयत्नंभविष्यति कष्टंभोक्तव्यपापेण यत्कृतंपूर्वजन्मनि
नानाकष्टागमोगेहेविविधोद्वगपीडिता प्रजावृद्धिर्वितयतिरल्पायुसुखखंडिता पापादुक्खाश्रयोभूयात्सर्वसौख्याधिकारिणी॥ शुकोवाच॥ कथंतद्दारुणो
पापंवनिताक्लेशकारकः पूर्वजन्मभवेत्तातः कथयस्वक्रमादितः ॥ भृगुवाच ॥ संक्षेपात्तेनिगदितं पूर्वपापस्यकारणम् परंगोप्यमतमेतत्सज्जनानन्दहेतवे
पुरानृपकुलेजातं मानुषीशुभलक्षणा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दिव्यरूपाधराधिपा राजतिस्वप्रबन्धेण पतिहीनयुवावयं कामोद्वेगेणतप्यति चिन्तयन्ति
महत्यपि दानधर्म्मव्रतपुण्यं कृत्वाकामेणपीड्यति द्विजपुत्रैर्भवेत्प्रीती क्रमाशक्तपरस्परम् रमंतौविविधंक्रीड्य रुभयोप्रेमवर्द्धनम् गर्भपातमहत्पापं
कृत्वातत्र महत्यपि तेनपापाश्रयोलोके कष्टपात्रीत्रिजन्मनि क्षीणायुदुक्खसंतप्ता यावद्यत्नविनिर्मुखाः अतस्तंशान्तिहेत्यर्थं कृत्वातन्त्रसुभक्तितः
ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुचितीर्थेशुभस्थले स्वर्णपत्र प्रकर्तव्या शुद्ध विभव विस्तरात् लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेत्सुविधिर्यथा बालचित्रलिखेत्पृष्टे
पद्मगर्भसुशोभनम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशेततः पूजयेद्भक्ति भावेण प्रायश्चित्तविधानतः मन्त्रमाराध्ययत्नेन भगवद्भक्ति परायणम्
॥ तत्रमंत्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं नं नारायणाय आदिशक्तिसहितं स्वभक्तान्प्रतिपालकाय सर्वेश्वरायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जित सर्वपापं हर हर
क्लीं शं कं हं स्वाहा इतिमन्त्रजपेलक्षं सावित्रीसंपुटंकृता हवनंविप्र भोज्यञ्च विधिवत्मंत्र दक्षिणा मूर्तिदानं प्रकर्तव्या वस्त्राभरणै सुश्रद्धया
आचार्य्याय प्रदातव्या तोष्यंतिहि सुसद्व्रता आशिषं ग्राहयेत्तत्रः सर्वपाप क्षयंभवेत् नित्यंसर्वसुखागम्य विस्तृतिं पूर्णवैभवाः दानमन्त्रं
सुपुण्येण रत्नसूर्यवसुन्धरा सर्वसौख्य प्रदोयत्नं गोपनीयं परंतपः सर्वविघ्नक्षयंपुण्य मीश्वराराधनेमतिः तवस्नेहात्प्रवक्षामि स्वर्गलोकेषुदुर्लभम्

स्त्री

४८

प्रथमेद्वितीयाब्देषुकिंचित्कष्टैःप्रतप्यति उरुपीड़ासमुद्भुतदंतरोगप्रजायते मातृचिंतान्वितोभूयात्कष्टशांतिःसुयत्नतः तृतीयेपञ्चमेवर्षे तातयोगमहोत्सवम्
मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येणशांतये वृणाबाधाप्रपीड्यति अकस्माच्चमहद्भयं दानमंत्रंसुपुण्येणसद्यशांतिःसुखंलभेत रसाब्देनंदवर्षेचतयोर्मध्येयथाक्रमः
विद्याभ्यासरताकिंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंतिविवाहार्थेचचिंतया संबंधोमंगलंप्राप्यपितुरंधर्मतत्परा दशमैकादशेवर्षेतातलाभव्ययोमहान्
हर्षवृद्धिसुखोत्साहोक्रीड्यतिसखीभिस्सह प्रारंभेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशांतरे कामेच्छाप्रवलोयांतिपतियोगेसुचिंतनम् रूपयौवनसपन्नावस्त्राभर्णौसुभूषिता
प्रायश्चित्तंसुयत्नेनसुखंसर्वत्रभूतले द्रव्यलाभविशेषेणमनेच्छाबहुपूजिता प्राप्यतेषोडशेवर्षेव्ययोमनेत्राद्धमध्यगे दंपतिसुखमेधत्त प्रजावृद्धिसुमंगलं स्वकृत्य
कुशलात्रामामोदमानंदिनेदिने व्ययश्चमहतोगेहेक्षत्रभंगस्यचिंतनं चैकविंशत्रिविंशाब्देपञ्चविंशतिकेतथा भाग्यवृद्धिभवेत्पुण्यं दशाश्रेयस्करीभवेत् सर्व
सौख्यसुयत्नेनणतिपुत्रात्मजादयः रसविंशतिवर्षाणिव्ययोमवह्निनथांतरे नानालाभव्ययोनित्यंसुखि.. तापतिप्रिया मंगलंविविधोकाव्यःसुखसाधनतत्परा
देवतीर्थेपरंप्रीतीपवित्रभानुषीतनम् इन्दुरामगतेवर्षेयावत्पञ्चगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नूनं मोदतिबहुविस्तरात मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिमहोत्सवम्
उद्वाहोमंगलंकार्ये यशेतसाधनेमतिः संपदासंचयेनित्यंसुकार्येचव्ययस्तथा कुलकीर्तीविशेषेणमाननीयामहज्जनैः ईश्वरंभक्तिभावेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता
व्यालवह्निगतेवर्षेजायतेश्चैकविग्रहं यालराशिमनुक्रम्य यावद्घटगतेरविः सर्वापत्तौविनिर्मुक्ता दानमंत्रसुभक्तितःमासेवर्षेसुखंनित्यं रामचत्वारिवत्सरे
ऋतुवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् अजाद्वणिजगेभानुः पुत्रकष्टचकोमतः आपदुद्धारणोजाय्य सर्वकष्टविनश्यति अन्यमासेसुखंनित्यं बनिता
भाग्यभाजनी लाभश्चविविधोगेहे यावच्छून्यरसाद्धके धनसंतानयानंच पुत्रपौत्रसुखाकरी मनेच्छापूजितंसर्वे पुनरप्याहिनूतनम् धर्मवार्तासदावृत्ति
साधुसेवासुतत्परा नगषष्टगतेवर्षे परवैराग्यचिंतनं प्रपौत्रंजन्मतोगेहे सर्वेच्छालोकपूजिता यावन्नंदरसाब्देतु बातबाधाप्रपीड्यति पुनःकष्टविनश्यंति
भजनानंदसर्वदा आयुवृद्धिःसुपुण्येण भूयान्नन्दनगाद्धकी अजराशिगतेभानुः निधनपूर्वपक्षके महोत्साहंगृहेतत्रः सर्वत्रैवप्रशंसिता पुण्याद्भाग्य
महत्वेण गतिरेवसुनिर्मलम् जन्मतिमुकुलंपुण्योत्तथैवाग्रेद्विजन्मनि सर्वेप्सितंलब्ध्वा सर्वसौख्याधिकारिणी मानेनमहताविष्टा पुण्यतत्वमहत्पदम्

एतद्योगोद्भवोकन्यासुस्वरूपाचसुन्दरी पतिप्रेमकराश्राज्ञीसुशीलाचप्रियंवदा नातिगौरीनकृष्णांगीगोधूमाकारवत्तनुम मध्यपादकरदेहोचारुहास्यावला
सिना मातृकष्टप्रदोकिंचित्तातचिंताप्रदायिणी गृहकार्येसुकुशलापुनरानंदवर्द्धिना कोमलांगीसुप्राज्ञिश्चमध्योष्ठीचारुनासिका सुनयनाभूतिशुभ्रारुचिरांगी
नितम्बिणी पूर्वावस्थाविशेषेणरमंतोसखिभिस्सह लक्षणाश्चशुभासर्वे किंचित्पापाद्रधोगतः भ्रातभगनीसमायुक्तभूयसेपिस्वकर्मणा पूर्वावस्थासुखंदीर्घः
मध्यावस्थाचमध्यमम् अन्तेदुक्खाश्रयोनारीक्लेशितंप कर्मणा कल्पयंतिमहचिंतासर्वसौख्याधिकारिणी यावद्यत्नंनकर्तव्योदुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः नसुखं
लभतेपूर्णापतिपुत्रात्मजादयः वियोगकलहोदुःखंहानिरेवदिनदिने पुराविप्रकुलेजातासुस्वरूपातिसुन्दरी सर्वसौख्यान्वितोभूयात्सुमतिर्वाग्विलासिनी
दानधर्मेमतिःस्वल्पाःदूषितविप्रसाधवा गेहेविवादितोनित्यंनिंदंतिस्वसुरादयः क्लिश्यतेतेनभर्तारंकुमार्गीभूयसेपिसा कदाचिद्दैवयोगेणगृहेक्लेशोति
दारुणम् वादावादकुवाक्येण क्रोधावेशमहत्यपि तत्रचेदंगृहत्यक्त्वा कूपेपततिदुःता आत्माघातमहापापं कर्तव्यंसाद्यु पस्थिता दैवेणरक्षितस्तत्रः नैव
मृत्युवशंगतः दुक्खितंतेनविविधंभर्तारंरोषितोमहान् पितृमातृसमायुक्तंशापितविविधंतया नसुखंप्राप्नुयाद्धामात्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि एतस्मात्कारणा
द्वत्समानुषीपापमाश्रयः एतज्जन्मत्रिजन्मानिदुक्खितापापकर्मिणी क्लिश्यतिविविधोगेहंपतिपुत्रादिसर्वयोः नसुखंलभतेपूर्णायाद्यत्नंनपापहम् स्वर्णपत्र
कृतोतत्रयथावित्तंसुश्रद्धया नगांगुलंसुविस्तीर्णाबाणांगुलतथैवच तस्योपरिलिखेचत्रंविष्णुमुद्रायथाक्रमः सस्थाप्यविधिवत्कुंभेवेष्ठितांपीतपट्टतः तदग्रे
मंत्रमाराध्यपूजनंभक्तिभावतः तत्रमंत्र ओंऐंह्रींक्लींश्रां शं सर्वेश्वरायसर्वरूपायविश्वरक्षणेमहापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापंनाशयर तज्जनित
सर्वकष्टंविदारयर मनोभिलाषितसौख्यं प्रकाशयर स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंओं एतन्मंत्रजपेत्प्राज्ञः नंदव्यालसहस्रकम् सावित्रीतत्प्रागेनबटुकाराधनंततः
पुरुषसूक्तमुच्चार्यश्रीसूक्तश्चसुभक्तितः शुद्धस्थानेक्रमेणैवकूर्यातंत्रमुदारधि आचार्यायप्रदातव्यमूर्तिसंकल्पयेत्पुनः ईश्वरभक्तिभावेणाआशिर्वादश्चग्राहयेत्
प्रतियत्नसुखंवृद्धि मोदतेभक्तिभावतः पतिपुत्रसुखंसर्वजन्मःक्लेशनाशनम् प्रजोपभोगवृद्धिश्च राजतेसर्वसम्पदा पतिप्रेममहत्वेण सुखंजन्मनिजन्मनि
महत्वमधिकंलोकेसाफल्यंसर्ववैभवाः परंगोप्यमतंवत्सः पुण्यामार्गसुखप्रदा कथयामिसमासेण अथाग्रेश्रृणुभार्गवः प्रथमेद्वितीयाब्देतु रामव यथाक्रमम्

मासेमासेविवर्द्धतिबालिकाशुचिलक्षणा। तातमातसुखंनित्यंगृहेमंगलमेवच शरीरेकष्टसंपन्नोभूतछायाश्चविव्हलो: किंचिद्दानादिमंत्रेणश्रेयमानासुयत्नत
दतबाधापुन:पीडयज्वरतसविरेचनम् छायापात्रान्नदानेनश्रेयवृद्धिरुजनशेत् चान्येपिसंभवोकष्टंसुयत्नंशांतिनित्यश: चतुर्थेपञ्चमाब्देतुषष्टंवर्षादिसक्षमे
शिशुक्रीड़ारतोनित्यंचञ्चलश्चपलामति: मंगलंजायतेगेहोकुलकीर्तिविवर्द्धनम् भ्रातजन्ममहोत्साहोकन्यकासुखरूपिणी यद्रोगंजायतेकष्टंयत्नेनशांति
भेततः अष्टमेद्वादशेवर्षेपतियोगोथमङ्गलम् गृहकार्येसुकुशलाकन्यारूपवतीसती क्रीड़तिविविधंबाला मोदितंसखिभिसह विवाहंमहतोत्साहोपतिरेव
सुप्राप्नुयात तातकीर्तिविशेषेणवर्द्धतेचलतेवसः विविधाभूषणोवस्त्रंप्राप्यतेपिवरानना त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दोर्मध्येमहत्सुखम् स्वकृत्यकुशलोबामा
मोदितापतिभिसह भयभीताहृदेशुप्तंकदाचिच्चिन्तनोमहत् भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेपुण्यकर्मणा ऊनविंशतथाविंशेशरनेत्राद्वमध्यगे आनंदसंप्लवेलीन
भोगामैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविशेषेणपुण्यादानन्दसर्वदा कुलवृत्तिप्रभावेणप्राप्नुयाज्ञानमुत्तमम् पूर्वपुण्यंसुयत्नेनपतिपुत्रधनादिजा सर्वसौख्यान्वितो
भूयान्मोदितागेहभूषणा शरीरेसंभवोकष्टं सुयत्नेशांतिसर्वदा मंगलंविविधोत्साहो कुलवृद्धिप्रकाशिता ऋतुनेत्रगतेवर्षे यावनभत्रियाद्धके दानमन्त्रं
सुपुण्येणपतिपुत्रात्मजंसुखम् नोचेद्विलोमकंभ्रत्तंभोक्तव्यहीस्वकर्मणा यावद्यत्नेनकर्तव्यासुखेशोकसमागम: त्रिंशेकोपञ्चत्रिंशाब्देशून्यचत्वारिमध्यमा
विवाहोमंगलंकार्यं जायतेशुचियत्नत: प्रकाशोविपणीभूयाद्दानमन्त्रमहत्फलम् पूर्णभाग्योदयंभूयाद्यशसौख्यविवर्द्धते नानाकार्यप्रबन्धेण राजते
पुन्यसम्पदा पूर्वयत्नादितोनिन्यं पतिभक्तिपरायणा मनेच्छापूजितंलोके सुखंसर्वत्रवर्तते शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाद्वमध्यगे सुप्रसिद्धा:
सुनारीणां पतिप्रेमविवर्द्धिनी सुतापुत्रसुखाविष्टो पौत्रजन्ममहोत्सवम् व्ययलाभमहत्वेण सर्वेच्छासुखपूजिता पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले
शशिपञ्चशरेपञ्च तथाशून्यरसान्तरे ईश्वराराधनेप्रीति तीर्थमन्द्रादिसेवनम् व्रतनेमरतश्चापि दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वेप्सितफलंप्राप्य: पुण्यपात्री
सुमानुषी किंचिच्छोकोगभोगेह गृहाशक्तापिक्लिश्यति ईश्वराराधनेप्रीति सर्वसिद्धिप्रदोभवेत् देवपुण्योत्सवेतस्य व्ययंकीर्तिसुनिर्मला वेदषष्टाद्ध
मायुष्यं किंवाशररसाद्धकी स्वगृहेनिधनंचास्य प्रशंसापुण्यतोभुवि: पुनरुच्चकुलेजातं दानधर्मादियत्नत: सर्वसौख्यसमायुक्तं प्राप्यतेपरमांगति:

स्त्रा० ४६

सर्वखेटेष्टमानेनयोगोयंसुखवर्द्धन धनधान्यान्वितोभूयाद्राग्यपात्रीसुमोदिता जन्माद्धनयुतोबाला तातमातसुखप्रदा मिष्टभाषीसुशीलाच गीतवाद
परा॥यः महर्घभूषणौवस्त्रंप्राप्यतेवहमानिनी रूपहास्यसुसंपन्नामध्यमाङ्गीसुलोचना पीडितंपूर्वपापेणसर्वसौख्याधिकारिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण वामा
क्लेशमवाप्नुयात शोकातोविविधंचिन्ताविभ्रमोव्याकुलंकदा नसुखलभतेपूर्ण यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येण नित्यंसौभाग्यरूपिणी प्रतियत्न
सुखंवृद्धि मतेच्छासर्वपूजिता सुकार्यसुस्वभेण पत्यरत्यन्तवल्लभा: कुलकीर्तिकरासाध्वी सतिसौम्यप्रियम्वदा मानेनमहताविष्टो यशंभूरिसुकर्मणा
पूर्वजन्मनियत्पापंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुःखितापापरूपिणी वैश्यवंशोद्भवोकाव्यःनारीयंपूर्वजन्मनाः निजगेहेश्वरीभूयाद्धनपुत्रेण
दर्पिता दानधर्मरतोनित्यं व्रतयज्ञसमाचरेत दानवाहनजैर्नित्यं गर्विता:पुण्यरूपिणी साकदाजाह्नवीतीरे संस्थितादिवसेरसे अग्निकांडेनतत्रैवस्याल
वंशक्षयंकरः तेनपापाश्रयोभूयाददुःखिताइहजन्मनि कुलवृद्धिनदृश्येतपतिक्लेशोतिदारुणम् अतस्तंशांतिहेत्यर्थंकृत्वातन्त्रशुचिस्थले निजवित्तानु
सारेणस्वर्णपत्रकृतस्तदा लेखयेद्रक्तगंधेण व्यालमूर्तिकुलान्वितः संस्थाप्यकलशेपूज्य रक्तपट्टेणावेष्टितम् सुविप्रोमन्त्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्रकम्
। तत्रमन्त्र:। ॐऐंह्रींक्लींश्रींशंनमः शङ्करायशिवाय सर्वदुःखहर्ताय पूर्वजन्मव्यालवंशक्षय पापशमनाय सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ
सावित्रीततमाणेन जपतोनास्तिपातकम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या आचार्यायप्रदापयेत वस्त्रयाभूषणंदत्वा दानमानैसुतोषितम् नित्यपुण्याश्रयोवामा
एतद्यत्नसुखप्रदा सौभाग्यसंततिसर्वाः मोदितागेह भामिनी जन्मकाल समारभ्यः यावज्जीवतिभूतले तावत्कालीयजगाथा कथयामिसमासतः
जन्माब्देद्वितियेवर्षेतथावेदेशरान्तरे तातमातमहचिंताबालिकागेहभूषणा शरीरेजायतेकष्टंस्वयमेवविनश्यति भ्रातजन्ममहोत्साहो मंगलजायतेगृहे
तातमातमहामोदं साफल्यसर्ववैभवा ज्वरोविरेचनपीड्य उच्चस्थपतनाद्भयम् वृणविस्फोटकोव्याधि सर्वथत्नेनशांतय मृदुवाक्यमनोरम्य दृष्टिहास्य
मनोहरी तातप्राणेषुमन्देहोपुण्यात्सवसुखागमः रसाब्देव्यालवर्षेवतयोरन्तर्यथाक्रमः चंचलश्चपलासौम्याक्रोडतिसखिभिसह तातलाभविशेषेण
प्राप्यतिमातमुत्तमम् गृहक्लेशोपदासर्व सुयत्नेशांति नित्यराः नातिधनी भवेत्तातः नातिनिर्द्धन मेतथा मध्यमापिसुशीलाश्च लाभवृद्धिक्रमेणवै

ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेशरसोमक्रमादितः मंगलंकार्ययोगोपिमासेमासेसुखागमः तातमातमहच्चिंताव्ययोगमहत्यपि उद्वाहो मंगलंदिव्यंकुलकीर्तिप्रशंसिता महर्घभूषणोवस्त्रं प्राप्यतेननूतनम् अन्नदानादितोनित्यं श्रेयवृद्धिश्चसर्वदा सुगेहोसुपतिंप्राप्यः सुपुण्याद्भाग्यभाजिनी सर्वापत्तौक्षयोनित्यंपूर्वयत्नेसु रक्षणाम् पतिप्रेमविवर्द्धेतिविस्तृतोरूपयौवनम् मासेवर्षेसुखंजातंकष्टशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षेविंशवर्षावधिततः सर्वसंपत्समायुक्ता ग्रहकार्ये सुकौशला पतिप्रेमविकरावामारमयन्तिसुमोदिता विद्याबुद्धिविशेषेण सुसंगाच्चयशंमहत् भाग्योदयंभवेन्नित्यं संतद्योगोभिजायते मानकीर्तिमहोत्साहो महदानंदवर्द्धिनी बंपत्तोरल्पजंकष्टंपुण्यात्शांतिसुखागमः दानधर्मेसुखंनित्य मिष्टदेवसुपूजनात् चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिकेतथा पतिभक्ति सुपुण्येणमनेच्छावहूपूजिता प्रीतिरेवसुनारीणांसुखक्लेशप्रकाशिनी मंगलंचर्चयागेहो पुत्रकन्यासमायुता सर्वकार्येसुकुशला पतिरानंदवर्द्धिनी सुस्व रूपाप्रियसर्वाः सुभगासुविचक्षणा त्रिंशवर्षावधिर्नूनं शुचिशौख्यान्वितामवेत् भाग्यवृद्धिःसुयत्नेन विलीयंतेपिशत्रवा मंगलंविविधोकार्यं जायतेनित्य नूतनम् शशिरामाद्वमारभ्यशरवह्नितथांतरे सुतापुत्रसमायुक्तामोदितापतिभिसह वृहल्लाभप्रभावेणसर्वदामंगलंभवेत विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति प्रकाशिणी मानेनमहतात्रिष्टो राजतेतर्वसम्पदा अकस्माच्चमहल्लाभं व्ययोपिबहुसाधिता सर्वसौख्यागमोगेहे कष्टचिन्ताविनष्यति त्वयत्नेविपरीतंयदी भोक्तव्यापापजंफलम् नेत्रवेदाद्वगेवत्समहच्छोकप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेनपूर्वसंरक्षितायदि सर्वोपिमानदोमान्यवनितापुण्यरूपिणी वह्निवेदगतेवर्षे व्योमबाणसुध्यगे देवदर्शनतीर्थेषुसाफल्यंमानुषीतनम् नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेपुण्यसम्पदा प्रकाशोविपिणीभूयात्कुलवृद्धिमहोत्सवाः पूर्वयत्नप्रभा वेणप्राप्यतेपरमंसुखं अतःपरिसुपुण्येणयावद्व्योमरसाद्वके तावत्कालावधिर्नूनमनेच्छासर्वपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहोस्वगेहेसुप्रतिष्ठिता नृत्यगीतोत्सवै गेंहंशोभितेबहुविस्तरात भूमिलाभविशेषेणरचनागेहनूतनं गुप्तद्रव्यगृहेतस्यधर्मकार्येव्ययोमहत् साधितंसर्वकार्याणिपुण्यपात्रीसुशोभिता रामसप्ताब्द मायुष्यंपूर्वरापयेसुरक्षणम् अयत्नेक्लेशितानित्यं वैधव्यंपापरूपिणी त्रिजन्मंपीडितोपापं नित्यक्लेशाधिकारिणी दानधर्मरतोनित्यंतस्मात्सर्वसुखार्थये पापशांतिप्रभावेणपुण्यात्सर्वसुखंसदा सकालेमृयतिश्चापिसर्वत्रैवप्रशंसिता इहजन्मसुखासर्वेतथैवाग्रत्रिजन्मनि सर्वेच्छापूजितापुण्यंनित्यंपापाद्रधोगता

स्त्री०
५०

मर्वस्रेटेष्टमानेन नारीबुद्धिमतीमती विद्याविनयवान्साध्वीदाताभोक्तासुकौशला गृहकार्य्यैरतोनित्यंसुखरूपासुलक्षणायथादेहप्रवर्द्धेतः धनसंपत्समृ
द्धिमान्भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेनित्यनूतनम् कामक्रीडाविशेषेणरमयन्तिपतिस्सह पितुप्रतिष्ठितंचापिमानकीर्तिमहत्सुखम् चन्द्रजीवपरंभीतीकदा
चिच्चिन्तनमहत नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसम्पदा पतिपुत्रसुताद्रव्यंसर्वसौख्याधिकारिणी दिव्याम्बरधरोबालाबहुभूषणभूषिता सुखेशोकप्रदा
रेखासंभवोपूर्वपापतः नानाचिंतातुरोभूयात्मनस्तत्रश्चक्लेशिता धनपुत्रसुभर्तारंनसुखंसुस्थिरोगृहे वियोगकलहोदुक्खविवादंस्वजनैस्सह स्वसंकल्प
विकल्पोपि ब[illegible]विघ्नद्यु पद्रवाः प्रजाबृद्धिनदृश्यंतेगुप्तारातिश्चलोकमा चाल्यमृत्युभयंघोर विभवोनैवसास्वतः पापशांतिः प्रयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत
सर्वैच्छ्रापूजितंलोके दानमंत्रमहत्फलम् ग्रामभूमिधनंप्राप्य्यः भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वजन्ममुपाख्यानंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारांदुक्खिता
पापरूपिणी नृपवंशोद्भवापूर्वेबामासौभाग्यरूपिणी दानधर्मरतोनित्यमंतर्ज्ञानाभिमानिनी कदाचिद्दैवयोगेणसाधुद्वारेसमागतः यज्ञार्थेयाचितोद्रव्यं
बादाबादभवेत्तदा क्रोधतश्चतदाराज्ञीभृत्येणसाधुताड़िता दुक्खितोशापितस्तेनयग्रजन्मत्वयाधमः पतिपुत्रात्मद्रव्येणक्लिश्यतिविविधोमहान् त्रिजन्मे
तप्यत्युदरंविव.दकलहगृहेएवंहीशापितोसाधुतपार्थविपिनेगता नैवयत्नकृतस्तेनतत्रपापापनुत्तये तेनपापाश्रयोभूयाइहजन्मनिक्लेशिता यावद्यत्नंन
कर्तव्यादुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः तस्यशांतिः प्रवक्षामिपरंगोप्यमतंहीयत कृत्वासर्वसुखलोकेवामाप्राप्यतिनित्यशः स्वर्णपत्रप्रकर्तव्यावह्निकोणानगागुलम्
लेखयेद्रक्तगंधेणसाधुचित्रमनोहरा रसनाशापहंवीजपादयो. शर्मदलिखेतभुजद्वयेप्रबंधश्चकामबीजसुमस्तके हृदयेप्रणवंबीजंनाभ्यां श्रीबीजमेवच ताम्र
कुम्भेघृतंगुप्तः द्रव्यंश्रद्धायथाभवः वेष्टितांपीतपट्टेण मूर्तिस्थाप्यंतदोपरिः पूजनंभक्तिभावेणयथाविभवविस्तरै तदग्रेमंत्रमाराध्य इन्दुलक्षसुभक्तितः
मन्त्रओंऐंह्रींक्लीं श्रींनमोनारायणायविश्वरूपायसर्वशापपापंशमनायभद्रंकुरुर स्वाहा श्रींक्लींह्रींऐंओं इन्दुबाणसहस्राणिसावित्रीजापितंतदा आचार्या
प्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेततः हवनंविप्रभोज्यश्च शुद्धस्थानेयथाविधिः कृत्वासर्वसुखंप्राप्यः मानुषीपुण्यरूपिणी पुत्रपौत्रादिजासर्वे सौभाग्यंपरमोदयं
गृहक्लेशविनश्यंति महोत्साहोपिमगलं दिनेदिनेमहत्तेजोराजतेपुरासंपदा पूर्णायुःसुखमेधत्तोमनेच्छाबहुपूजिता एवंपुण्यपरंतत्वंकथयामित्वयाकवे

जन्मतः प्रथमेवर्षेशरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंताञोलिकाशुचिलक्षणा द्वयाद्वे दशनोव्याधिः तृतीयेब्रणपीडनम् किंचिद्दानादिमंत्रेण भगवद्भक्ति
भावतः श्रेयोमानंसुखंनित्यंसर्वकष्टविनाशनम् तृतीयेपंचमाब्देषुषष्टं वर्षादिसप्तमे तातमानप्रतिष्ठाचवद्धं तेनात्रसंशयः भोगाप्रवैभवोवृद्धिबालक्रीड़ा
सुततत्परा भ्रातसौख्यमहोत्साहोमासेवर्षेसुखंगता तृषाबाधाज्वरोतप्त रेचनादिप्रपीड्यतिपतनाद्दारुणोकष्टं सर्वशांतिसुयत्नतः नानाकार्यप्रबंधेणराजते
गेहसंपदा संबंधश्चर्चयागेहोतातमातविचिंतनम् नन्दाब्देदिशिवे च द्वादशाब्दंक्रमादितः गृहकार्येसुकुशला बादहास्यमनोहरा पितुप्राप्तिमहल्लाभं
मातृप्रेमविवर्द्धनम् उद्वाहंजायतेचास्यप्रकाशोविपिणीभवः कीर्तिश्चनिर्मलीभूतातातमातप्रशंसिता वह्निसोमान्तरेकाव्यरष्टचन्द्राद्धकेतथा भोगाप्रवै
भवोवृद्धियुग्मगेहप्रकाशिणी सर्वसौख्योद्भवोनित्यंदानमंत्रमहत्फलम् रूपयौवनसंपन्नावस्त्राभर्णैसुशोभिता पतिप्रेमविवर्द्धतिभाग्यमेनविवर्द्धनम् यद्रोगं
जायतेकष्टं सर्वशांतिसुयत्नतः ऊनविंशाब्दविंशेच नेत्रविंशतिकेतथा पतिलाभविशेषेण सुखेच्छाबहुपूजिता गर्भवाधामहत्कष्टं सुतजन्मसुमंगलम्
हर्षवृद्धिमहोत्साहोमानकीर्तिश्च निर्मला पापशांतिः सुपुण्येण प्रकाशोविपणीभवः प्रजावृद्धिभवेन्नित्यमनेच्छापूजितंसदा रामपक्षमितेवर्षेऋतुनेत्राद्ध
मध्यगे पुत्रकन्यासमाविष्टमोदितापतिभिस्सह मंगलंविविधोत्साहोमहत्वश्चपदेपदे जायतेदारुणोकष्टं कुलस्त्रीचविवादिता सर्वशांतिसुपुण्येणदानमंत्र
महत्फलम् मुनिविंशतिवर्षाणिवेदरामावधिक्रमात् मासेवर्षेमहोत्साहोवहुद्रव्यसमागमः सर्वचिंताविनश्यंतिविवाहादिमहोत्सवम् दंपतिसुखमेधत्तेप्रताप
गुणगौरवं कीर्तिश्चनिर्मलीभूता स्वकुलेसुप्रशंसिता शरवह्निमितेब्देतु चत्वारिंशावधिक्रमातपूर्वयत्नोदितः पुण्यंसौभाग्यंपरमोदयम् पतिसेवानुरक्तश्च
गृहकार्येसुकौशला सुशोभितागृहंतेनमाननीयकुलांगना मंगलंविविधोत्साहोजायतेनित्यनूतनम् स्वयत्नेक्लिश्यतिबामापतिपुत्रात्मजाधनं चन्द्रचत्वा
रिवर्षेचव्योमबाणक्रमादितः पुण्येच्छापूजितासर्वे देवतीर्थाटनंसुखम् पौत्रजन्ममहोत्साहोकुलवृद्धिदिनेदिने नानाकार्यप्रबंधेणराजितागेहभूषणा शशि
षंचगतेवर्षेव्योमषष्टांतरावधिः सर्वेच्छापूजितेलोकेनिर्बलाचप्रपीड्यति व्रतदानरतोनित्यंसाफल्यंमानुषीतनं मंगलंविविधोगेहेपूर्वयत्नादितः सदा इन्दु
षष्टाब्दमारभ्ययावन्नेत्रनगाब्दके सर्वपुण्यंफलंभुक्त्वाआयुपूर्णोपिजायते अश्विनेपूर्वपक्षेसप्तम्यांनिधनोनिशिः पुनर्नृपकुलोत्पन्नाजाह्नवीपश्चिमेतटे

सर्वखेटे मानेनवांलिकामंदभागिनी श्यामवर्णास्थूलदेहा रुचिरांगी सुकामिनी तातमातमहत्त्विता जायतेचास्य जन्मनि वहुविघ्नमुपाधिश्च तातकष्टप्रदो महान् गृहेद्रव्यनद्रश्यन्तिलाभयोगोपिमन्दता मासेवर्षेविवर्द्धति पूर्वपापेणपीड्यति बालक्रीड़ारतश्चापि मंदबुद्धिभयप्रदा पतनादारुणोकष्टं रुजोद्वेगा न्वितप्यति तातस्वल्पसुखंलोके मातृक्लेशभयंमहत् दानमंत्रादितोर्नूनं पूर्वपापक्षशांतये सर्वसौख्यागमोलोके विस्तृतिपुण्यवैभवाः पति पुत्रात्मजादीणां भाग्यवृद्धिश्चसर्वदा द्रव्यलाभविशेषेण सर्वेषानित्यपूजिता ग्रयत्नेविपरीत्यंहीक्लिश्यतिपापकर्मणा मानहानिभयंचिन्ता नोयशंप्राप्यतिमहान् पति पुत्रात्मद्रव्येणदुःखितापित्री जन्मनि कष्टव्याधिविशेषेण त्रिरत्नंदारुणोभयम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोयत्नमाचरेत् व्रतदानसुपुण्येण ईश्वरंभक्ति भावतः पूर्वपापक्षयोकार्यः सर्वदामोदवर्द्धनं कीर्तिश्चनिर्मलाभूयात्पतिप्रेमविवर्द्धिनी शुक्रोवाच पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वमहामुने येनक्लेशाश्रयो नारी दुःखितामंदभागिनी भृगुरुवाच श्रृणुपुत्रसमासेन कथायाःपूर्वजन्मनि पुराजन्मभवेद्वामा दासीयंनृपगोहणी रूपयौवनसम्पन्ना भूपप्रेमविवर्द्धनी सर्वसौख्यान्वितोभूयाद्भाग्यस्यपरमोदयम् राजसेवारतोनित्यं मोदमानंगरीयसी राज्ञोत्रमानसंप्राप्य गर्वितापिदुराव्रत कदाचिद्यज्ञराज्ञोसी कृत्वाविभव विस्तरात तत्रागतंगुरुर्देवःवेदज्ञाताद्विजोत्तमः दासीयंसंस्थितोकार्ये गुरुरेवविवादिती हास्यंकृत्वाभवेद्विघ्नं विप्ररोषान्धितोमहत् दुःखितोशापितस्तेन रेधमादुष्टकर्मिणी देवकार्यकृतेविघ्नं गर्वितापापरूपिणी अतस्त्वंक्लेशितोर्नूनं त्रिजन्मेषुपुनःपुनः पतिपुत्रात्मद्रव्येण दुःखितापिमुहूर्मुहः द्विजशाप श्रुतंदासीघोररूपोतिदुस्तरम् नैवशांतिक्षमायत्नं सोभिमानेनमोहिता तेनपापाश्रयोभूया देतज्जन्मेऽतिदुःखिता स्वर्णपत्रकृत्योतत्रः यथाश्रद्धासु भक्तितः लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेद्विजभिरसह लेख्यतुशपहंबीज पीतपट्टेणावेष्टित. संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः विष्णुयज्ञक्रमादितः पूजियेद्भक्तिभावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायणो सर्वपापहराय पूर्वजन्मद्विजशापशमनाय रक्षां कुरु कुरु सर्वसौख्यं प्रकाशयः स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेल्लक्ष सावित्रीतत्प्रमाणतः हवनंविप्रभोज्यश्च अनुष्ठानशुचिस्थले कृत्वासर्वसुखंलोके बामा पुन्याश्रयेसदा मंगलंजायतेनित्यं प्रजावृद्धिमहोत्सवाः पतिपुत्रात्मद्रव्येण सफलंमानुषीतनं भोगाप्रवैभवोवृद्धियशमान प्रशंसिता नश्यतेकलहारिष्टं सुखंसर्वत्रदृश्यति ईश्वरभक्तिभावेण

श्री
५२

व्रतदानसुखोत्सवा रोगार्तंप्रथमेवर्षे द्वितीयेदन्तपीड़िता तृतीयेवन्हिभीतिश्च उच्चस्थेपतितोथवा बृणाबातविकारेणापीड्यतिचतुराब्दके पञ्चमेषष्टमेसप्तेव्या
लवर्षचनन्दके दिनेदिनेपिमावृद्धाबालिकाशुचिलक्षणा स्वकृत्यकुशलासौम्या क्रीडनेमतिनित्यशः धावनात्पादकष्टश्चकदाचिद्दन्ततोदरि विवाहोबाच
तस्यापितातचिंतागरीयसी मंगलंजायतेगेहो तातलाभसुखप्रदा दानमन्त्रसुयत्नेन कन्यकागेहभूषणं कुलवृत्तिप्रभावेण राजतेपुण्यसंपदा सून्यसोम
गतेवर्षेयावद्धे दनिशाकरे पतिप्राप्तिर्नसंदेहोपितुद्रव्यव्ययंमहत् कष्टव्याधिविनश्यंति सुपुण्यंफलदोमहान् भयभीताहृदेगुप्तकदाचिन्तनंमहत् प्राप्ते
पंचदशेवर्षेयावन्नेत्रद्वयोतथा क्रीड़तिविविधैश्वर्य्यं दानमंत्रंसुभक्तितः देवदर्शनतीर्थेषुसरनद्यामतिप्रियः पतिप्रेमविशेषेणामोदितोनात्रसंशयः प्रजासु
भोगवृद्धिश्चमंगलंविविधैरपि गृहकार्य्यसुकुशलाभाग्यवृद्धिदिनेदिने पापाश्रयोमहद्दुक्खचिंतनंकनेशतत्परो तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशान्तिसुखंलभेत्
वन्हिपक्षाद्धमारभ्यमुनिनेत्रसुवत्सरे सुतापुत्रसुखास्सर्वे गार्हस्थ्यंसाधनेमति सुकार्यसुस्थिराबुद्धिःप्रीतिभिस्सुसखिस्सह प्रतापभोगमैश्वर्य्यशोभितादि
शुभाङ्गनामंगलंविविधोगेहेपुण्याच्छ्रेयोहिनित्यशः व्यालत्रिंशतिगेकाव्यः रामरामसुवत्सरे भाग्यवृद्धिविशेषेणासर्वसौख्यवसुन्धरे विवाहोमंगलंकार्यं
गौरवंप्राप्यतेस्त्रियः कीर्तिश्चनिर्मलीभूता गुप्तारातीहितप्यते व्ययलाभमहत्वेणदम्पत्योश्चिन्तनंकदा स्वकुलंसुप्रकाशयंतिवनिता पुण्यरूपिणीवेदराम
गतेवर्षेनगरामांतरोतथा विस्तृवंशजंनित्यंसुपुण्यंफलदोमहान् सर्वाबाधाविनश्यंतिरुजांक्लेशाद्युपद्रवाःव्ययोतत्राधिकंभूयविवाहेतीर्थमन्दिरे गुप्त
चिन्ताविनश्यन्ति सर्वेशत्रुरधोगता पतिचिंतान्वितोभूयः न्यूनकष्टश्चशांतये व्यालवह्निसमारभ्य नेत्रचत्वारिमध्यगे भूमिप्राप्तिविशेषेण महोत्साहप्रवर्तते
चित्तोद्यानन्दतापिस्याद् बहलाभप्रभावतः अत्यानन्दगृहेत्तेन साफल्यंसर्ववैभवां वेदवेदगतेवर्षे नगवेदावधिततः चिंतयेन्नूतनोकार्यं देवतीर्थेषुदर्शनः
अकस्माज्जायतेकष्टं प्राणभीतोतिचिंतनं छायापात्रतुलादानंमहामृत्युञ्जयोजपेत् अनुष्ठानविधानेनआयुर्वृद्धिसुयत्नतः दानमन्त्रसुपुण्येन नभनागाद्ध
जीवांत कुलकीर्तिकराः पुत्राः पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रहाक्रष्टविनश्यन्ति मनेच्छासर्वपूजिता भगवद्भक्तिभावेण पुण्यात्रीप्रसिद्धिता इन्दुव्यालाद्ध
मारभ्य. जीवतेदारुणंरुजं यनाथासेतनंत्यक्त्वा पुत्रपौत्रैर्विभूषिता पुनर्नृपकुलेजाता भूयाद्राज्ञीशुभानना एवंपुण्यपरंतत्वा ज्ञातव्यामोक्षसाधनं

एतद्योगोद्भवाबाला मध्यभागिनीसुन्दरी शुभलक्षणासंपन्ना मध्यरूपाप्रियम्बदा सुस्वभावसुशीलाच कदाचिद्रोषमोहिता जन्मतःमातृकष्टोपि तातचिंता
गरीयसी दिनेदिनेपिसावृद्धो मासेवर्षेसुखंगता कष्टश्चमहतोभूयात्पूर्वकर्म्मविपाकजं सुयत्नेरक्षितस्यापि पूर्णायुसुखसम्पदा दशाश्रेष्टधनंदीर्घः वस्त्रा
भर्णैस्सुशोभिता भोगमैश्वर्यसंयुक्ता मानकीर्तिश्चनिर्मला केचित्कालेमनोद्वेग जीवाशक्तिविचिन्तता वित्तचिंतान्वितोगुप्ता अनायासेभयंमहत हर्ष
सौख्यान्वितोबामा अनित्यंभोगतत्परा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेशोकाल्पजंभयम् दुःखिताविविधोनारी पतिपुत्रेणक्लिश्यति पूर्वजन्मान्तरोगाथा समा
सेणवदाम्यहम् ब्रह्मवंशोद्भवावामा सुस्वरूपासुलक्षणा सर्वसौख्यसमायुक्ता मोदितापुण्यरूपिणीतत्ररत्नधनंबह्वी स्थाप्यमस्यगृहेतदा गुरुपत्नियतंगत्वा
तीर्थदेवादिदर्शनैः चरंतोदेवतीर्थेषु मुनिमासंगतस्तदा स्वगेहेपुनरागत्यः याच्यंरत्नधनंहिसा हत्वातदांतरेनारी दिव्यरत्नसुशोभनम् नदृष्ट्वारत्नतत्रैव
याचितंहिपुनःपुनः देयादन्यधनंसर्व नदेयाद्रत्नवादिता बादाबादेणक्रुद्धोसौ गुरुपत्नियुतंमहत त्यक्त्वातत्रधनंसर्व सापंदत्वापुनःपुनः पुनस्तीर्थेवगंतव्या
तीर्थेवनिवसोसदा तेनपापाश्रयोबामा नैवयत्नंचकारयेत दानपुण्यविशेषेण सुगेहेजन्मजायतः नैवशांतिर्भवेद्वत्सः गुरुशापोतिदुस्तरम् तेनपापाश्रयो
नारीक्लिश्यतिविविधोमहान् शुकोवाच तद्यत्नंब्रूहिमेतातः जनानांसुखहेतवे भृगुवाच अनुष्ठानमहादानं स्वर्गेमर्त्येषुदुर्लभाः तवस्नेहांमयावत्सः प्रकाश
क्रियतेधुना स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाशक्तिशुचिस्थले लेखयेद्रक्तगंधेण गुरुभार्यायुतंक्रमात बेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि ईश्वरंभक्तिभावेण
पूजयेत्सुविधिर्यथा तदग्रेमंत्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्त्रकम् मंत्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ॐ नमोनारायणाय सर्वाधिपतयेगुरुशक्तिरूपायपूर्वजन्म कृतशापपापं
नाशयः २ ममापराधशमं कुरु२ मनेच्छितंबरदायः सर्वं स्वाहा ॐ शंश्रींक्लीं ह्रीं ऐं ॐ सवित्रीतत्प्रमाणान धनदस्यतदर्द्धकम् जापयेत्सुविधानेन ब्रह्मचर्य
रतोद्विजा तदांतेमुर्तिसंकल्पंशैयादान विधिर्यथा आचार्यायप्रदातव्यं विप्रभोज्यसुदक्षणा यज्ञांते पूर्णपात्रश्चगुरुरत्नधनादय गुरुदानविधानेन दीयतांपाप
नश्यति सर्वसौख्यततोलोके वनितापुन्यरूपिणी बिस्तृततिर्वंशजादीर्घ सौभाग्यंपरमोदयम् नानाकार्यप्रबंधेण मानकीर्तिप्रशंसिता मनेच्छापूजितोनित्यं
वस्त्राभर्णधनाद्विजा पुत्रपौत्रसमाविष्टोपतिरत्यंतबल्लभा मोदितेमानमाधिकं साफल्यंसर्ववैभवा अयत्नेपीड़ितेपापं सुखेशोकसमागमा परंगोप्यमतमेतत्

पथाश्रश्रृणुभार्गव जन्माद्वेवह्निवर्षांतंतयोर्मध्येक्रमादित ता तमातसुखासर्वे कन्यकाशुभलक्षणा दंतपीड़ाज्वरोतातं रेचनादिप्रपीड्यति कृशयदेहविजानी
यादभूतछायाश्चगुप्तता किंचिद्दानादिमन्त्रेण भगवद्भक्तिभावत श्रेयोमानंप्रष्ठिाच प्रकाशोपिदिने दिने तातलाभविशेषेण मंगलंविविधोगृहे दृष्टि
हास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी भ्रातजन्ममहोत्साहोमासेवर्षे सुखं ता चतुर्थेपञ्चमाब्देषुषष्टंवर्षादिसप्तमे बालक्रीड़ाविशेषेण मोदमानागरीयसी प्राण
शंकाभयोद्वेगंत्राण पाड़ातिदारुणाम् प्रायश्चित्तादियत्नेनसर्वशांतिपुखंलभेत भाग्यञ्चमहतोभूयात्सुकार्यमतिनित्यश गृहकार्यरताबाला सर्वत्रैव प्रशंसिता
व्यालवर्षे ससंप्राप्यावन्नेत्रनिशाकरे तावत्कालावधिर्नूनं भाग्यवृद्धिस्सुयत्नत उद्वाहंजायतेचास्य तातमानविवर्द्धनम् कुलकीर्तिविशेषेण व्ययलाभमह
त्यपि दिव्यांबरंभूषणाञ्च प्राप्यंतिहिसुशोभना प्रतिष्ठामानमधिकं जायतेचदिनेदिने त्रयोदशाष्टचंद्राब्दे पतिप्रेमविवर्द्धिनी भोगप्रवैभवोवृद्धि जायते
चदिनेदिने रूपयवौनसंपन्ना वनितापुण्यभाजिनी गृहकार्येसुकुशला पतिभक्तिपरायणा पुण्ययत्नादितोनित्यंसर्वकष्टविनश्यति ऊनविंशाद्वविंशेचशर
विंशतिकेतथा सर्वेच्छापूजितोपुण्यं पतिपुत्राधनादिजा प्रजावृद्धिमहोत्साहो कष्टशांतिस्सुमंगलम् ऋतुपक्षाद्वत्रिंशेच तयोर्मध्येमहत्सुखभपु त्रकन्यासमा
विष्टासाफल्यंसर्ववैभवा व्ययलाभमहत्वेण मंगलविविधोमहान् प्रकाशोविपिणीभूया द्रव्यनागेहसुन्दरम् प्रायश्चित्तमहादानं सर्वसिद्धिकरंपरं अयत्ने
विपरीत्यंही प्राप्यतिकर्मजंफलं इन्दुरामगतेवर्षे चत्वारिंशावधिःतथा दानमंत्रादितोनूनं पर्णभाग्योदयंभवेत उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धिनी
नानाकार्यप्रबंधेण राजतेपुण्यसंपदा सर्वाबाधाविनश्यंति पूर्वमेवसुरक्षिता भयचिंताविनिर्मुक्ता देवतीर्थेसुखोत्सवम् सोमचत्वाषरिवर्षाणि व्योमभलाद्ध
मध्यमा सुकीर्तिवर्द्धतेपुण्यं जायते कुलभूषणा बृहलाभप्रभावेणविविधोत्साहमंगलम् न सुखंसुस्थिरोभूया द्यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानैः सुखेच्छा
सर्वपूजिता चन्द्रबाणाद्वमारभ्य सून्यषष्टाद्वगेतदा पौत्रजन्ममहोत्साहो कुलवृद्धिदिनेदिने व्रतदानरतश्चापि साफल्यंमानुषीवपु ईश्वरं भक्तिभावेण
पुण्येच्छासर्वपूजिता नगषष्टगतेवर्षे पूर्णायुकथितोमुनि चैत्रस्यपूर्वपक्षोतु भरण्यांनिधनंभवेत प्रायश्चित्तांसुपुण्येण अग्रजन्मेषुनिश्चित महत्वंसुकले
जाता सुप्रसिद्धापिपूजिता ईशभक्तिसुयोगेण महत्वांसुपदाधिपा गतिरेवसुप्राप्यंति पुण्यरूपासुसद्व्रता एतत्सर्वंसुज्ञातव्या सुपुण्यंसुखसाधनम् ॥

एत गोगोद्भवाकाव्यः कन्यकाशुचिलक्षणा पतिदेवसुभक्तश्च चित्रोवाक्यमबुवन् साभिमानिनीसद्रूपा दिव्यालंकारभूषितम् पूर्वपापप्रभावेण सुखे
दुःखसमागमः चिन्तातुरोनित्यंरिपुरोगह्युपद्रवा पतिपुत्रात्मजाकष्टं नैवपूर्णधनीसुखी दानमन्त्रसुपुण्येण तस्यशान्तिप्रयत्नतः कृत्वासद्यसुखसर्वे
प्राप्स्यतिनात्रसंशयम नानाकार्यप्रबंधेण राजतिसुखसंपदा मानेनमहताविष्टा यशभूरिमहितले संपदाविस्तृतोगेहं सौम्यसाध्वीप्रियम्वदा पतिपुत्रात्म
द्रव्येण सर्वत्रसुखसंपदा भूमिप्राप्तिविशेषेण नूतनोमन्दिरंसुखं शुभकार्येव्ययोद्रव्य मुद्राहादिमहोत्सवे देवपुण्येसुतीर्थेच रमयन्तिजलाश्रये पूर्वयात्रा
महोत्साहो पतिप्रेमविवर्द्धिनी केचिज्जीवहरंचित्तं रूपयौवनगर्भिता कामक्रीड़ामनोद्वेगं कलंकभयमागतः ईश्वरंभक्तिभावेण सुसंगाच्चमहत्यशः सर्वा
वाधेतिमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति पूर्वपापेणपीड्यन्ति यावद्यत्नपापहम संक्षेपात्तंप्रवक्ष्यामि कथायाःपूर्वजन्मनि वैश्यवंशसमुत्पन्ना सर्वसौख्यसमायुता
शुचिसाध्वीसुसद्रूपा पुण्यात्माचदयामयी एकदापतिसंयुक्ता तीर्थयात्रागतोहिसा तदाधेनुसवत्सांच विस्मृतोगेहबन्धनम् क्षुधातृषातुरोनित्यं विलपन्ति
मुहुर्मुहुः धेनुवत्सम्मृतोतत्रः पश्चोकंगृहमागतः पतिदृष्ट्वापितामृत क्रोधितोशापीतमहत् तेनभूयोमहत्पापं नारीदुःखाश्रयोभवेत् क्लिश्यतिविविधो
नित्यं त्रिजन्मंहिपुनःपुनः तद्यत्नंसंप्रवक्ष्यामि पापशांतिसुखलभेत शुद्धस्वर्णकृतोपत्र विमृतिसुनागांगुलम् शरांगुलतथैवंही कारयेच्चसुशोभनम्
लेखयेद्रक्तगन्धेण धेनुवत्ससुमूर्तिमान् शुद्धस्थानेशुभेलग्ने कुर्यातन्त्रमुदारधिः ताम्रकुम्भघृतेगुप्त हेममूर्तिसुशोभनम् वेष्टितांरक्तपट्टेण पुजयेद्भक्ति
भगवतः मन्त्रजाप्यसुयत्नेन प्रायश्चित्तविधिर्यथा मंत्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गं गोपालाय गोपीजनवल्लभाय जगद्रक्षणे महापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मकृतगोपाय
तापशमनं कुरु कुरु सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा इन्दुबाणसहस्राणि सावित्रीमन्त्रसंपुटतम ईश्वरभक्तिभावेण जपेदेकाग्रमानसः द्विजेभ्योतोषितंनित्य
मनुष्टानव्रतेऽन्ताः कुम्भदानविधानेन आचार्याय: प्रयदापयेत् [illegible]नंविप्रभोज्यश्च कारयेत्सुविधिर्यथा एतद्यत्नप्रभावेण सर्वपापैर्विमुच्यति सर्वदुःख
विनिर्मुक्ता सौभाग्यं परमोदयम स्वामिपुत्रधनादिनां तुष्यतिसुख भाजनी भोगाभवै भवोवृद्धि शुभोपचो यथाशशिः गृहक्लेश विनश्यंति
वनितापुण्यरूपिणी कुलनीतिविशेषेण महोत्साहं दिनेदिने प्रतापभोग मैश्वर्य वस्त्राभर्णैः सुतुष्यतिएवं पुण्य परंतत्वं साफल्यं जन्म भूतले

जन्माद्यंमातृकष्टोपितातोत्साहविमन्दता मनश्चिन्तांगृहेतक्षोबालिकाक्लेशकारिणी प्रथमेद्वितीयाब्देही शिशुवृद्धियथाक्रमः दिवेमासेसुखंजातं रोग
तक्षोभयान्विता दानमंत्रादितोनूंनंसर्वसौख्यमवाप्नुयात तात्तलाभसुखोत्साहोवृद्धद्भाग्यीप्रशंसिता तृतीयेपंचमाब्देहीसुखवृद्धियथाक्रमःदंतपीड़ादिजं
कष्टं बृणाविस्फोटकादय पतनादिभयंसर्वं नश्यतेपुण्यकर्मणा भगवद्भक्तिभावेण गृहेमंगलनित्यश पितुयत्नादितोनूनं सर्वावस्थासुखंभजेत् मृदुवाक्य
सुहास्यञ्च शिशुक्रीड़ामनोहरा भोगाप्रवैभवोवृद्धि जायतेनित्यनूतनम् ऋतुवर्षसमायातः तथाचदिशिवत्सरे पुण्योत्साहसुखंनित्यं भ्रातसौख्यसुमंगलम्
विवाहोचर्चयागेहे वरंश्रेष्ठंनिवारयेत् यद्रोगंदारुणोकष्टं सर्वशांतिःसुयत्नतः विद्याभ्यासरतोबाला गृहकार्येषुतत्परा प्राप्यंचैकादशेवर्षे शरसोमाद्ध
मध्यमा तातचिंतातुरोगुप्तंव्ययोपिबहुद्रश्ये उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति वर्द्धितापिलतेवसा दिव्याम्बरंभूषणाञ्च प्राप्यति
मानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः जायतेनुयथाक्रमः सुभक्तितुष्यतेसर्वाः माननीयासुसद्व्रता रूपयौवनसम्पन्ना पतिप्रेमाविवर्द्धनी षोडशाब्देतुसंजातं
व्योमनेत्रावधिक्रमात सर्वैश्वर्यसमायुक्ता पुण्यरूपासुलक्षणा सुतजन्ममहोत्साहो मंगलंकुलवर्द्धनः नानाकार्यप्रवन्धेषा सुखैश्वर्यप्रकाशिणी छाया
पात्रान्नदानञ्च महामृत्युञ्ज जपेतसर्वाऋक्षयोनित्यं मगलंहिदिनेदिने प्रायश्चित्तंसुपुण्येण सर्वाभिष्टफलंलभेत् त्रिशवर्षावधिर्नूनं सुखेच्छासर्वपूजिता
पतिप्रेमावशेषेण प्रतापगुणगौरवं मंगलंविविधोत्साहो सुतापुत्रधनादिजा पापपीड्यत्ययत्नेन दुखेविघ्नभहद्भयम् एतस्मात्कारणानित्यं सुसंगात्पुण्य
सञ्चयः त्रिशैवःोपञ्चत्रिशाब्दे तयोरन्तर्महोत्सवाः उद्वाहेप्रचुरंद्रव्यं व्ययंकीर्तिश्चनिर्मला प्रकाशितेवसर्व पुण्यैश्वर्यदिनेदिने ऋतुरामाद्धमारभ्यव्योम
वेदाद्धकेतथा महत्वमधिकंलोके साफल्यंमानुषीतनं रोगशोकाकुलंपापात्सर्वशांतिसुयत्नतः भूमिप्राप्तीमहत्पुण्यं दासदासिचवाहनम् देवदर्शनतीर्थेषु
पवित्रंक्रियातितनम गृहक्लेशोंविवादञ्चसुस्वभावेणशांतयेत ईश्वरंभक्तिभावेणासर्वत्रैव शंसिता इंदुचत्वारिवर्षाणिव्योमभल्लांतरेवही प्रजावृद्धिविशेषेण
विविधोत्साहमंगलम् इंदुभल्लाद्धगेवत्सः पौत्रजन्ममहोत्सवाः तदांतेव्योमषष्टांतंपुत्रभाग्योदयंमहत् ब्रतदानरताप्राज्ञी तीर्थयात्रासुखेरता प्रकाशो
विपणीभूयात्पुत्रपौत्रधनादिजा व्यालषष्टाद्धमायुष्यंपुण्यरूपाप्रशंसिता सुगतिप्राप्यपुण्येणस्वर्गलोकाधिकारिणी यावद्यत्नकृतेनैवंनिजपापाद्रधोगता

स्त्री० ५४

एतद्योगोद्भवावालामध्यभागी सुलक्षणा मध्यपादकरोर्नूनंमध्मांगीसुकोमला क्रोधेणतप्यतिक्रूराप्रसन्नात्मादयामयी गृहकार्येसुकुशलापतिप्रेमविव
द्धिनी सुस्वभावंसुपुण्येणसुविख्याताप्यमानिनी रूपयौवनसंपन्नासर्वसौख्याधिकारिणी पीड्यतिपूर्वपापेण अल्पायुश्चवितप्यति पतिपुत्रमहदुक्ख तात
क्लेशभयंमहत् अल्पमृत्युभयंदर्वेसर्वसौख्यविभक्षणी प्रायश्चित्तमहादानंकृत्वासर्वसुखागमः पुण्ययत्नादितोर्नूनंसर्वाभिष्टफललंलभेत् धनसंतानयानञ्च
कुटुम्बेसुखवर्द्धिनी महोत्साहंगृहेचास्यमंगलंहिदिनेदिने नानाकार्यप्रबधेणविमलाभाग्यदर्शनः महार्घभूषणोवस्त्रंप्राप्यतिपतिवल्लभा सर्वसंपत्समायुक्ता
पुत्रपौत्रैसुसेविता ईश्वरंभक्तिभावेणसफलंमानुषीतनम् तीर्थयात्राजपं:पुण्यंव्रतदानसुखेरता प्रतापभोगमैश्वर्यंजायतेनित्यंनूतनम् भूमिलाभमहत्वेण
रचनागेहसुन्दरम् याद्यत्नेनकर्तव्याविविधंदुःखभोजनी पूर्वजन्मसमासेणकथयामित्वयाऽधुना नृपवंशोद्भवावामापुराजन्ममहत्तपा सर्वसौख्या
न्वितोलोके रूपयौवनगर्विता स्वामिग्राज्ञानमण्यंति विचरन्तियथारुचि व्यभिचाररतोगुप्तं तीर्थयात्रासुखेरति दानधर्मप्रभावेण बहुकालसुखंगता
पुनरन्तेप्रकाश्योपि तद्दुराचारवृत्तिलक्षणम् स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोशितोशापितंमहत रेपापात्मादुराचारी त्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि नैवराजकुलेजन्मः
दुक्खितापिमुहुर्मुहः तेनपापाश्रयोभूया दिहजन्मेसमुद्भवः दानपुण्यदितोर्नून प्राप्नुयाज्ञानुषितनम् पतिपुत्रात्मपापेण क्लिश्यतिविविधोहान् नसुखं
सुस्थिरोभूयाद्यावद्यत्नेनपापहम् पापशांतिः सुयत्नेनकृत्वासर्वसुखागमः स्वर्णपत्रकृतोतत्रः वाणांगुलनगांगुलम् लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्त
चन्दनम् पतिचित्रमधोभामैनृपचिन्हैरलंकृता रक्षाप्रवरवीजाढ्यं पीतपट्टेणाच्छितम् संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः पूजयेत्सुविधिर्यथा तदग्रेमन्त्रमाराध्यः
भक्तियुक्तेनप्रार्थितम् । मन्त्र ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायणाय पतिदेवायनमः पूर्वजन्मान्तराजित पापनाशय२ तज्जनितसर्वकष्टं विदारय२
सर्वसौख्यं प्रकाशय स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ इतिमंत्रजपेलक्ष बटुकस्यतदात्मकं शैयादानविधानेन मूर्तिदानसमाचरेत हवनंविप्रभोज्यादि विष्णुयज्ञ
व्रमादितः एवंकृत्वासुपुण्येण सर्वपापैर्विमुच्यति सुखसौभाग्यसंपन्ना वनितापुण्यरूपिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येश संतुष्यति दिनेदिने भोगाप्रवे
भवोवृद्धि सुप्रसिद्धप्रशंसिताः सर्वेच्छापूजितापुण्य दानमन्त्रमहत्फलम् विवादकलहोदुक्खं रिपुरोगविनश्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञात्वानित्यसुखप्रदं

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंता भूतच्छायांप्रीच्यति किंचिच्छोकागोमगेहे सर्वशान्तिसुयत्नतः नेत्राब्देयद्धिवर्षेच तयोर्मध्ये
यथाक्रमः दिनेदिनेविवर्द्धति कन्यकाशुचिलक्षणा दशनोत्पत्तिजाव्याधी ज्वरतप्तविरेचनम् बृणाविस्फोटकोव्याधी दानमन्त्रैसुखागमः सर्वकष्टविन
श्यन्ति बालक्रीड़ादिनेदिने क्रीडतिविविधोनित्यं तातमातसुखंलभेत दानमन्त्रंसुपुण्येण तातलाभसुखप्रदा रसाब्देनन्दवर्षेच मासेमासेसुखंलभेत्
भोगाप्रवैभवोबृद्धिः गृहकार्यरताभवेत विद्याभ्यासरताकिंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंति विवाहार्थैविचिन्तया सम्बन्धोमंगलंप्राप्य दृष्टि
हास्यमनोहरा सर्वकष्टक्षयोनित्यं दानपुण्यसुखप्रदा दशमैकादशेवर्षे तथापंचदशान्तरे व्ययलाभमहत्तातो हर्षवृद्धिसुखंलभेत विवाहोजायतेतस्य्
पतिप्राप्तिःसुशोभिता नवाम्बरंभूषणाश्च प्राप्यतिमानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोबृद्धिः गृहकार्येसुकौशला प्रायश्चित्तसुपुण्येण सुखंसर्वत्रभूतले कामक्रीड़ा
रतश्चापि भोगांभुक्तोयथेप्सितान् द्रव्यप्राप्ती विशेषेण मनेच्छासुखपूजितम् प्राप्यतेषोडशेवर्षे नभनेत्रंचमध्यगे दंपत्योःसुखमेधत्तो प्रजावृद्धिसुखोत्सवम्
स्वकृत्यकुशलासौम्या पतिप्रेमविवर्द्धिनी प्राप्यतिपूर्वपापेण रुजंकष्टह्युपद्रवाः दानमन्त्रसुपुण्येण प्रतियत्नसुखंमहत् चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिके
तथा भाग्यवृद्धिर्भवेल्लोके दशाश्रेस्करीमुदा सर्वसौख्यंसयत्नेन पतिपुत्रधनादिजा बन्धुवर्गापवादेण क्लिश्यतिचाप्रयत्नतः पूर्वपापबलियन्ते सुखेशोक
समागमः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तसुयत्नतः सर्वसौख्यान्वितागेहे मनेच्छातत्रपूजिता रसविंशतिवर्षाणि व्योमरामतथान्तरे नानालाभव्ययोत्साहं
यशंभूरिमहीतले दंपत्योरल्पजंकष्ट दानमंत्रसुखप्रदा उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् इन्दुरामगतेवर्षे यावद्वाणगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नूनं
पूर्णभाग्यदयंदशः मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिसुखोत्सवा त्वयत्नेविपरीत्यंहीं मृतवत्साहीदुःखिता एतस्मात्कारणात्तत्र कुर्यातन्त्रमुदारधि व्योमबाणा
वधिवत्स सर्वेच्छासुखपूजिता रामबाणगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् आपदुद्धारजाप्येण सर्वकष्टक्षयोभवेत मासेवर्षेसुखंजात पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् लाभश्च
विविधोनित्यंयावच्छून्यरसाङ्कके देवतीर्थेपरंप्रीतीदानधर्मेषुतत्परा आयुवृद्धिसुपुण्येण भूयानदरसाङ्ककी पुण्याद्भाग्यमहत्वेण स्वकुलेसुप्रशंसिताजायति
सुकुलंपुण्या तथैवाग्रि जन्मनि अजराशिगतेभानु पूर्वपक्षेतनंत्यजेत गतिश्रेष्टसुप्राप्यति सर्वसौख्याधिकारणी एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्योसुखसाधनम्

दितीनू

सर्वखेटेष्टमानेन भूयाद्भाग्यगतीसती स्वामिवाक्यप्रपाल्यन्ति कठोरमर्नानाश्वता पाकविद्यासुनिपुणा गृहकार्यहितेरति सर्वकार्येसुकुशला विनि
तापिशुभानना सात्विकीराजसीचैव तामसीबृत्तिसंयुता नकश्चिद्दायतेतापं सुमतिर्वाग्विचक्षणा कृतज्ञनीधनाभ्यक्षा हेमरत्नविभूषिता स्वामिसेवानु
रक्तश्च कुटुम्बसुखवर्द्धिनी पतिपुत्रात्सुपुण्येण प्राप्यतिभूधनंसुखम् सर्वसंपत्समायुक्ता सौभाग्येण सुमोदिता वस्त्राभर्णैः सुसम्पन्ना नानाद्रव्याधि
कारिणी क्लिश्यतिपूर्वपापेण हानिचिंताभयंरुजम् आयुसौभाग्यरेखाच त्रुटितापापरूपतः प्रायश्चित्तंसुयत्नेन पूर्णायुःसुखसम्पदा सुसंगात्सुलभासर्वै
सुमूर्तिप्रियभाषिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यं सुखेदुक्खसमागमः शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कथयस्वप्रसादतः येनक्लेशाश्रयोनारी दुक्खितापापरूपिणी
भृगुवाच राजवंशसमुत्पन्ना राज्ञीवंपूर्वंन्जमनि दानपुण्यदितोनित्यं निजकीर्तिहितेरता दर्पितासाभिमानेन विषयाशक्तसुन्दरी कदाचिज्जाह्नवीतीरे
गतंयज्ञसमारभेत् आयातंयाचकाबव्ही सन्यासीविप्रसाधवाः ब्रह्मचारिश्चतत्रैकं कामरूपोसमागतः कामबाणेनपीड्यन्ति तस्यरूपविमोहिता तत्रैव
रमतानित्यं कामपूजाद्वयोरतिः गुरुज्ञात्वादयोर्ब्रत्तासुभयोशापितंमहत तेनपापाश्रयोभूयान्नारीयपूर्वजन्मनि क्लिश्यतिविविधोतापं वैधव्यञ्चमहद्भयम्
प्रजाद्रव्यशरीरादि सुखेविघ्नभवन्तिहो दानपुण्यविशेषेण सर्वसौख्यसमागमः न सुखंसुस्थिरोभूया यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानं नित्यंव
सुखप्रदा स्वर्णपत्रकृतातत्रः शुद्धश्रद्धा सुभक्तितः प्रायश्चित्तप्रकर्तया सुत्तीर्थेपिशुचिस्थले आचार्य्यसुद्धिजंकार्य्यं: ममशास्त्रस्यकोविदः सुयन्त्ररक्त
गन्धेण विष्णुप्रतिलिखेद्विजः वेष्टितांस्वेतपट्टेण संस्थाप्यकलशोपरि वस्त्राभर्णैसुशोभन्ते पुष्पमाल्यादिवेष्टितम् पूजयेत्सुविधानेन ईश्वरभक्ति
भावतः तदग्रेमन्त्रमाराध्यःलक्षमेकाग्रमानसः मन्त्र ॐ ऐं ह्रीं क्लींश्रींशनं नमोनारायणाय सर्वेश्वरायसर्वपापहरायतज्जनितसर्वकष्टंवारयर श्रेयोमे
देहि स्वाहा सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतानास्तिपातकं हवनंविप्रभोज्यादि मूर्तिदानंसुयत्नतः एवंकृत्वासुपुण्येण ईश्वराराधनेमतिः सर्वसौख्यागमोगेहे
भूयापिसुलक्षणा प्रजासुभोगवृद्धिश्च सौभाग्यंपरमसुखम् गृहक्लेशविनश्यन्ति स्वामिरेवोपितद्वशे प्रतापमानमधिक मनेच्छानित्यपूजिता नानाकार्यं
प्रवर्धेणाकुलकीर्तिकरस्त्रियः अथानेक्लेशिताबालात्रिजन्मनिपुनःपुनः एतस्मात्कारणान्नित्यंपुण्यसर्वसुखाश्रयः तेनश्रेयोहिसौभाग्यंप्राप्यतिपरमंगति

जन्माब्दे द्विर्षे च तयोरन्तर्यथाक्रमः द्विमासेसुखंजातं तातप्राप्तिसुमंगलम् दशनोत्पत्तिजाकष्टं कृशयभूनकलेवरः पुण्ययत्नादितोर्नूनमल्पमृत्युक्षय
सुखम् बालक्रीड़ाक्रमेणैव हष्टिहास्यमनोहरा वेदाब्देपंचमेवर्षे नगवर्षावधिक्रमात सुसंगाच्चसुपुण्येण सर्वारिष्टविनाशनम् शुचौपक्षेयथाचन्द्रबाला
तद्वतमवर्द्धिती भ्रातसौख्यविशेषेण तातमातसुखोत्सवा उद्वाहोचिंतनंचाम्य वरंश्रेष्ठविचिन्तयेत गृहकार्यरताकिंचि छालिकाशुचिसुन्दरी व्यालवर्षेच
नंदाब्दे यावद्वर्षेदिवाकरे तावत्कालावधिर्नूनं वृहद्भागीप्रशंसिता द्रव्यलाभमहत्तातो उद्वाहंसुमहोत्सवम् कुलकीर्तिमहत्वेण यशसौख्यविवर्द्धिनी
भूषिताबहुभिपुण्यैः दिव्यलंकारभूषणैः सर्वचिन्ताविनश्यंति तातमातसुखंलभेत् भोगमैश्वर्यसंज्ञा माननीयासुसद्व्रता सुस्वरूपाप्रियःसर्वा रुभयोगेह
भूषणा गुणसोममितेवर्षे विंशवर्षान्ततोतथा मासेवर्षेसुखंनित्यं भोगमैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविवर्द्धन्ति पुण्यरूपाप्रियंसदा ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वत्रैव
प्रशंसिता सुतापुत्रसमायुक्ता कष्टशांतिःसुमंगलम् गृहक्लेशविवादश्च सुस्वभावेणमोदिता सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धिप्रकाशिणी इन्दुपक्षाब्दमारभ्य
शरविंशतिः मध्यमा धनधान्य समृद्धिश्च पुत्रकन्या समावृता विंतयापरमाविष्टो पतिकष्ट भयंकरम् पूर्वयत्नादितोपुण्यं नित्यंसौभाग्य रूपिणी
रसपक्षाद्ध मारभ्य व्योमराम तथान्तरे व्ययलाभमहत्वेण क्वचिच्छोक प्रदादशा पुण्येण पुनरानन्दं मंगलंविविधोत्सवाः व्योमचत्वारिवर्षान्तं
सर्वेच्छासुख पूजिता दम्पत्योरल्पजंकष्टं सुपुन्याच्छान्तिनित्यशः तीर्थयात्रा जप ध्यं सर्वानन्द विवर्द्धिनी उद्वाहादि महोत्साहो सुप्रसिद्धप्रशंसिता
अयत्ने विपरीतयही भोक्तव्यं कर्मजंफलं तस्मात्सर्व प्रयत्नेन सुखसाधन माचरेत व्योमबाणगतेवर्षे पौत्रजन्म महोत्सवा सर्वैश्वर्य समायुक्ता
मतिधर्मेस्थितंयदा एतत्कालान्तरोवत्सः महत्वसुधनाधिपा ग्रामभूमि महल्लाभं दासदासिश्च वाहनम् ईश्वरा राधनेप्रीती पुन्यैश्वर्य विवर्द्धिनी
पक्षाचिवैधव्यं पूर्वयत्नविनिर्मुखा तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कृत्वातन्त्र मुदाधिः ददव्याद्धमायुष्यं दुःखशांतिः सुखंलभेत् पुत्रपौत्र प्रपौत्रञ्च
दिकंमहत प्रकाशितेवसर्वत्र पुन्यैश्वर्यं सुदुर्लभा महत्वमधिकंलोके सर्वत्रैवप्रशसिता ज्येष्ठमासेतमोपक्षेपंचम्यां निधनंदिवे दानमन्त्रा
वर्द्धिनी पुनरग्रेसमुत्पन्ना नृपवंशेसुसद्व्रता पतिव्रतासुधर्म्मात्मा पदोच्चसुसद्गतिः ईश्वराराधनेपुन्यं स्वर्गलोके पुनर्गता ॥

स्त्री
५६

सर्वखेटेष्टमानेनयोगोयंसुखवर्द्धन धनधान्यान्वितोभूयाद्भाग्यपात्रीसुमोदिता। जन्माद्धनयुतोबाला तातमातसुखप्रदा मिष्टभाषीसुशीलाच गीतबाद
परं प्रियः महर्घभूषणौवस्त्रंप्राप्यतेबहुमानिनी रूपहास्यसुसंपन्नामध्यमाङ्गीसुलोचना पीडितंपूर्वपापेणसर्वसौख्याधिकारिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण वामा
क्लेशमवाप्नुयात शोकातोविविधंचिन्ताविभ्रमोव्याकुलंकदा नसुखंलभतेपूर्णं यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येण नित्यंसौभाग्यरूपिणी प्रतियत्न
सुखंवृद्धि मनेच्छासर्वपूजिता सुकार्यसुसंभेण पत्यरत्यन्तवल्लभाः कुलकीर्तिकरासाध्वी सतिसौम्यप्रियम्बदा मानेनमहताविष्टो यशंभूरिसुकर्मणा
पूर्वजन्मनियत्पापं कथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुःखिताापरूपिणी वैश्यवंशोद्भवोकाव्यःनारीयंपूर्वजन्मनाः निजगेहेश्वरीभूयाद्धनपुत्रेण
दर्पिता दानधर्मरतोनित्यं व्रतयज्ञसमाचरेत दासवाहनजैर्नित्यं गर्विताापुण्यरूपिणी साकदाजाह्नवीतीरे संस्थितादिवसेरसे अग्निकाण्डेनतत्रैवव्याल
वंशक्षयंकरः तेनपापाश्रयोभूयाददुःखितााइहजन्मनि कुलवृद्धिनदृश्यंतेपतिक्लेशोतिदारुणम् अतस्तंशांतिहेत्यर्थंकृत्वातन्त्रशुचिस्थले निजवित्त नु
सारेणस्वर्णपत्रकृतस्तदा लेखयेद्रक्तगधेण व्यालमूर्तिकुलान्वितः संस्थाप्यकलशेपूज्य रक्तपट्टेणवेष्टितम् सुविप्रोमन्त्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्रकम्
। तत्रमन्त्रः । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशंनमः शङ्करायशिवाय सर्वदुःखहर्ताय पूर्वजन्मव्यालवंशक्षय पापशमनाय सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ
सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या आचार्यायप्रदापयेत् वस्त्रआभूषणंदत्वा दानमानैसुतोषितम् नित्यपुण्याश्रयोवामा
एतद्यत्नसुखप्रदा सौभाग्यंसंततिसर्वाः मोदितागेहभामिनी जन्मकाल समारभ्यः यावज्जीवतिभूतले तावत्कालीयजगाथा कथयामिसमासतः
जन्माब्देद्वितियेवर्षेतथावेदेशरान्तरे तातमातमहच्चिंताबालिकागेहभूषणा शरीरेजायतेकष्टंस्वयमेवविनश्यति भ्रातजन्ममहोत्साहो मंगलंजायतेगृहे
तातमातमहामोदं साफल्यंसर्ववैभवा ज्वरोविरेचनंपीड्य उच्चस्थपतनाद्भयम् वृणंविस्फोटकोव्याधि सर्वयत्नेनशांतय मृदुवाक्यमनोरम्य दृष्टिहास्य
मनोहरी तातप्राणेषुमन्देहोपुण्यात्सवसुखागमः रसाब्देव्यालवर्षेवतयोरन्तर्यथाक्रमः चंचलश्चपलोसाम्याक्राडतिसखिभिसह तातलाभावशेषेण
प्राप्यतिमानमुत्तमम् गृहक्लेशोपदानवं सुयत्नेशांति नित्यशः नातिधनी भवेत्तातः नातिनिर्द्धन मेतथा मध्यमापिसुशीलाश्च लाभवृद्धिक्रमेणवै

स्त्री०

५७

ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेरारसोमकमादितः मंगलंकार्ययोगोपिमासेमासेसुखागमः तातमातमहच्चिंताव्ययोगमहत्यपि उद्वाहो गलंदिव्यंकुलकीर्तिप्रशंसिता
महर्घभूषणोवस्त्रं प्राप्यतेनूतनम् अन्नदानादितोनित्यं श्रेयवृद्धिश्चसर्वदा सुगेहोसुपतिंप्राप्य: सुपुण्याद्भाग्यभाजिनी सर्वापत्तौक्षयोनित्यंपूर्वयंत्नेसु
रक्षणम् पतिप्रेमविवर्द्धतिविस्तृतोरूपयौवनम् मासेवर्षेसुखंजातंकष्टशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षेविंशवर्षावधिततः सर्वसंपत्समायुक्ता ग्रहकार्ये
सुकौशला पतिप्रमविकरावामारमयन्तिसुमोदिता विद्याबुद्धिविशेषेण सुसंगाच्चयशंमहत् भाग्योदयंभवेन्नित्यं संतद्योगोभिजायते मानकीर्तिमहोत्साहो
महदानंदवर्द्धिनी बंपत्तोरल्पजंकष्टपुण्यात्शांतिसुखागमः दानधर्मेसुखंनित्य मिष्टदेवसुपूजनात् चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिकेतथा पतिभक्ति
सुपुण्येणमनेच्छाबहूपूजिता प्रीतिरेवसुनारीणांसुखक्लेशप्रकाशिनी मंगलंचर्चयागेहो पुत्रकन्यासमायुता सर्वकार्येसुकुशला पतिरानंदवर्द्धिनी सुस्व
रूपाप्रियसर्वाः सुभगासुविचक्षणा त्रिंशवर्षावधिर्नूनं शुचिशौख्यान्विताभवेत् भाग्यवृद्धिःसुयत्नेन विलीयंतेपिशत्रवा मंगलंविविधोकार्य जायतेनित्य
नूतनम् शशिरामाद्भमारभ्यशरवह्नितथांतरे सुतापुत्रसमायुक्तामोदितापतिभिसह वृहल्लाभप्रभावेणसर्वदामंगलंभवेत् विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
प्रकाशिणी मानेनमहतात्रिष्टो राजतेतर्वसम्पदा अकस्माच्चमहल्लाभं व्ययोपिबहुसाधिता सर्वसौख्यागमोगेहे कष्टचिन्ताविनश्यति त्वयत्नेविपरीं यही
भोक्तव्यापापजफलम् नेत्रवेदाद्भगेवत्समहच्छोक प्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेनपूर्वसंरक्षितायदि सर्वोपिमानदोमान्यवनितापुण्यरूपिणी वह्निवेदगतेवर्षे
व्योमबाणसुध्यगे देवदर्शनतीर्थेषुसाफल्यंमानुषीतनम् नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेपुण्यसम्पदा प्रकाशोविपिणीभूयात्कुलवृद्धिमहोत्सवाः पूर्वयत्नप्रभा
वेणप्राप्यतेपरमंसुखं अतःपरिसुपुण्येणयावद्वयोमरमाद्भके तावत्कालोवधिर्नूनमनेच्छासर्वपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहो वगेहेसुप्रतिष्ठिता नृत्यगीतोत्सवै
र्गेहंशोभितेबहुविस्तरात् भूमिलाभविशेषेणरचनागेहनूतनं गुप्तद्रव्यगृहेतस्यधर्मकार्येव्ययोमहत् साधितंसर्वकार्याणिपुण्यपात्रीसुशोभिता रामसप्ताब्द
मायुष्यंपूर्वरापयेसुरक्षणम् अयत्नेक्लेशितानित्यं वैधव्यंपापरूपिणी त्रिजन्मंपीडितोपापं नित्यक्लेशाधिकारिणी दानधर्मरतोनित्यंतस्मात्सर्वसुखार्थये
पापशांतिप्रभावेणपुण्यात्सर्वसुखंसदा सकालेमृयतिश्चापिसर्वत्रैवप्रशंसिता इहजन्मसुखासर्वेतथैवाग्रत्रिजन्मनि सर्वेच्छापूजितापुण्यंनित्यंपापादधोगता

एतद्योगोद्भवोकन्यासुस्वरूपाचसुन्दरी पतिप्रेमकराप्राज्ञीसुशीलाचप्रियंवदा नातिगौरीनकृष्णांगीगोधूमाकारवत्तनुम मध्यपादकरदेहोचारुहास्यावला
सिना मातृकष्टप्रदोपि चित्तातचिंतामदायिणी गृहकार्येसुकुशलापुनरानंदवर्द्धिना कोमलांगीसुप्राज्ञिश्चमध्योष्ठीचारुनासिका सुनयनाभूतिशुभ्रारुचिरांगी
नितम्बिणी पूर्वावस्थाविशेषेणरमंतोसखिभिस्सह लक्षणाश्चशुभासर्वे किंचित्पापाद्रधोगतः भ्रातभगनीसमायुक्तभूयसेपिस्वकर्मणा पूर्वावस्थासुखंदीर्घः
मध्यावस्थाचमध्यमम् अन्तेदुक्खाश्रयोनारीक्लेशितंप पर्मणा कल्पयंतिमहच्चिंतासर्वसौख्याविकारिणी यावद्यत्नंनकर्तव्योदुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः नसुखं
लभतेपूर्णांगतिपुत्रात्मजादयः वियोगकलहोदुःखंहानिरेवदिनेदिने पुराविप्रकुलेजातासुस्वरूपातिसुन्दरी सर्वसौख्यान्वितोभूयात्सुमतिर्वाग्विलासिनी
दानधर्मेमतिःस्वल्पाःदूषितविप्रसाधवा गेहेविवादितोनित्यंनिंदंतिस्वसुरादयः क्लिश्यतेतेनभर्तारंकुमार्गीभूयसेपिसा कदाचिदैवयोगेणगृहेक्लेशोति
दारुणम् वादावादकुवाक्येण क्रोधावेशमहत्यपि तत्रचेदंगृहत्यक्त्वा कूपेपततिदुहता आत्माघातमहापापं कर्तव्यंसाद्य पस्थिता दैवेणरक्षितस्तत्रः नैव
मृत्युवशंगतः दुक्खितंतेनविविधंभर्तारंरोषितोमहान् पितृमातृसमायुक्तंशापितविविधंतया नसुखंप्राप्नुयाद्वामात्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि एतस्मात्कारणा
द्वत्समानुषीपापमाश्रयः एतज्जन्मत्रिजन्मानिदुक्खिताःपापकर्मिणी क्लिश्यतिविविधोगेहंपतिपुत्रादिसर्वयोः नसुखंलभतेपूर्णांयाद्यत्नंनपापहम् स्वर्णपत्र
कृतोतत्रयथावित्तंसुश्रद्धया नगांगुलंसुविस्तीर्णंत्राणांगुलतथैवच तस्योपरिलिखोचक्रंविष्णुमुद्रायथाक्रमः सस्थाप्यविधिवत्कुंभेवेष्टितांपीतपट्टतः तदग्रे
मंत्रमाराध्यपूजनंभक्तिभावतः तत्रमंत्र ओंऐंह्रींक्लींश्रांशं सर्वेश्वरायसर्वरूपायविश्वरक्षणेमहापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापंनाशय२ तज्जनित
सर्वकष्टंविदारय२ मनोभिलाषितसौख्यं प्रकाशय२ स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंओं एतन्मंत्रजपेत्प्राज्ञः नंदव्यालसहस्रकम् सावित्रीतत्प्राणोनवटुकाराधनंततः
पुरुषसूक्तमुच्चार्यश्रीसूक्तञ्चसुभक्तितः शुद्धस्थानेक्रमेणैवकूर्यातंत्रमुदारधि आचार्यायप्रदातव्यमूर्तिसंकल्पयेत्पुनः ईश्वरभक्तिभावेणाग्राशिर्वादञ्चग्राहयेत्
प्रतियत्नसुखंवृद्धि मोदतेभक्तिभावतः पतिपुत्रसुखंसर्वजन्मःक्लेशनाशनम् प्रजोपभोगवृद्धिश्च राजतेसर्वसम्पदा पति ममहत्वेण सुखंजन्मनिजन्मनि
महत्वमधिकंलोकेसाफल्यंसर्ववैभवाः परंगोप्यमतंवत्सः पुण्यामार्गसुखप्रदा कथयामिसमासेण अथाग्रेश्रृणुभार्गवः प्रथमेद्वितीयाब्देतु रामव यथाक्रमम्

मासेमासेत्रिवर्द्धतिबालिकाशुचिलक्षणा। तातमातसुखंनित्यंगृहेमंगलमेवच शरीरेकष्टसंपन्नोभूतछायाश्चविह्वलाः किंचिद्दानादिमंत्रेणश्रेयमानासुयत्नत
दंतबाधापुनःपीडयंज्वरतप्तविरेचनम् छायापात्रान्नदानेनश्रेयवृद्धिरुजनशे। चान्येपिसंभवोकष्टंसुयत्नंशांतिनित्यशः चतुर्थेप ञ्चमाब्देतुषष्टंवर्षादिसप्तमे
शिशुक्रीड़ारतोनित्यंचञ्चलश्चपलामतिः मंगलंजायतेगेहोकुलकीर्तित्रिवर्द्धनम् भ्रातजन्ममहोत्साहोकन्यकासुखरूपिणी यद्रोगंजायतेकष्टंयत्नेनशांति
भेततः अष्टमेद्वादशेवर्षेपतियोगाथमङ्गलम् गृहकार्येसुकुशलाकन्याःरूपवतीसती क्रीड़तिविविधंबाला मोदितंसखिभिसह विवाहमहतोत्साहोपतिरेव
स्त्रा० सुप्राप्नुयात तातकीर्तिविशेषेणवर्द्धतेचलतेवसः विविधाभूषणोवस्त्रंप्राप्यतेपिवरानना त्रयोदशाष्टचन्द्रा० ०ोर्मध्येमहत्सुखम् स्वकृत्यकुशलोबामा
५८ मोदितापतिभिसह भयभीताहदेगुप्तंकदाचिच्चिन्तनोमहत् भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेपुण्यकर्मणा ऊनविंशतथाविंशेशरनेत्राङ्कमध्यगे आनंदंसंप्लवेलीन
भोगामैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविशेषेणपुण्यादानन्दसर्वदा कुलवृद्धिप्रभावेणप्राप्नुयाज्ञानमुत्तमम् पूर्वपुण्यंसुयत्नेनपतिपुत्रधनादिजा सर्वसौख्यान्वितो
भूयाज्ञोदितागेहभूषणा शरीरेसंभवोकष्टं सुयत्नेशांतिसर्वदा मंगलंविविधोत्साहो कुलवृद्धिप्रकाशिता ऋतुनेत्रगतेवर्षे यावनभत्रियाद्धके दानमन्त्रं
सुपुण्येणपतिपुत्रात्मजंसुखम् नोचेद्विलोमकंश्रतंभोक्तव्यहीस्वकर्मणा। यात्नयत्नेनकृतंव्यासुखेशोकसमागमः त्रिंशेकोपञ्चत्रिंशाब्देशून्यचत्वारिमध्यमा
विवाहोमंगलंकार्यं जायतेशुचियत्नतः प्रकाशोविपणीभूयाद्दानमन्त्रमहत्फलम् पूर्णभाग्योदयंभूयाद्यशसौख्यविवर्द्धते नानाकार्यप्रबन्धेण राजते
पुन्यसम्पदा पूर्वयत्नादितोनिन्यं पतिभक्तिपरायणा मनेच्छांपूजितंलोके सुखंसर्वत्रवर्तते शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाङ्कमध्यगे सुप्रसिद्धाः
सुनारीणां पतिप्रेमविवर्द्धिनी सुतापुत्रसुखाविष्टो पौत्रजन्ममहोत्सवम् व्ययलाभमहत्वेण सर्वेच्छासुखपूजिता पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले
शशिपञ्चशरेपञ्च तथासून्यरसान्तरे ईश्वराराधनेप्रीति तीर्थमन्द्रादिसेवनम् व्रतनेमरतश्चापि दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वेप्सितंफलंप्राप्यः पुण्यपात्री
सुमानुषी किंचिच्छोकोगभोगेहं गृहाशक्तापिक्लिश्यति ईश्वराराधनेप्रीति सर्वसिद्धिप्रदोभवेत् देवपुण्योत्सवेतस्य व्ययंकीर्तिसुनिर्मला वेदषष्टाङ्क
मायुष्यं किंवाशररसाङ्कको स्वगृहेनिधनंचास्य प्रशंसापुण्यतोभुविः पुनरुच्चकुलेजातं दानधर्मादियत्नतः सर्वसौख्यसमायुक्तं प्राप्यतेपरमांगतिः

एतद्रोगोद्भवाःबालासुस्वरूणसुलक्षणा जन्मतःमातृकष्टोपिनातचिन्तातिगुप्तता दिवेमासेपिसावृद्धा शुक्लसोमकलायथा नातिगौरीनकृष्णांगी मध्य
देहसुलोचना गोधूमाकारवद्रूपाशुचिसाध्वीमनोहरा चारुहास्यकराशुभ्रारुचिरांगीमनोहरिः पतिप्रेमकरासाध्वीकोमलांगीशुभानना गृहकार्येसुकुशला
सर्वसौख्याधिकारिणी क्लिश्यंतिपूर्वपापेण पतिप्रीतिर्विन्यूनता विवादकलहंगेहेरोगुत्तकष्टह्युपद्रवाः पतिपुत्रादिद्रव्याणि नसुखंसुस्थिरोमति बहुकार्य
मनोद्वेगंवस्त्राभर्णा न्यूनता एवंहिविविधोदुखंप्राप्यतेपूर्वपापजं पुराजन्ममिदंवालाद्विजवंशसमुद्भवाः सौम्यसाधुसुप्राज्ञश्चपतिदेवसमलभेत गृहाश्रमं
सुपत्यन्तेनिर्द्धनसतपोधनम् द्रव्याभावेणक्रुद्धयन्ति नारीयंकलहंकरा बहुमूल्यवस्त्राभर्णं नित्येच्छापतिधर्षितम् अतिवादेणक्रुद्धोसौ महात्मासुव्रतेरति
भार्यात्यक्त्वावनेगत्वा ब्रह्मव्रतपरायणं सर्वावस्थातपस्तप्त गतोब्रह्म रेद्विजः नरीयंक्लिश्यतिगेहे कालेणमृतिस्तदा पतिपुण्यशतांशेणप्राप्नुयाज्ञानु
षीतनम् सुकुलंसुगृहेजन्मः इहजन्मयथाक्रमः ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पत्यपमानपापेण दुखितोपिस्वकर्मणा यावद्यत्नंनकर्तव्या
सुखेविघ्नभवन्तिही यत्नंचास्यपरंगोप्यं कृत्वासर्वसुखंलभेत् शुद्धस्वर्णकृतोपत्रं यथावित्तसुभक्तितः लेखयेद्रक्तगन्धेण गौरीमूर्तिसुमन्त्रयुत् मन्त्र ।
ॐ ऐंह्रींक्लीं सर्वेश्वरीमहागौरीसर्वसौभाग्यदायिनी पतिद्वेषमहापापविध्वसायनमाम्यहम् श्रींक्लींह्रींऐंॐ वेष्टितांरक्तपट्टेणसंस्थाप्यंकलशोपरिपूजयेभक्ति
भावेणयथाविभवविस्तरै सावित्रासंपुटंदत्वापूर्वमन्त्रजपेत्पुनः इन्दुषष्टसहस्राणिजपतोनास्तिपातकम् आचार्य्यायप्रदातव्यापरंगोप्यंसुयत्नतः सोसर्व
विधिवत्कुर्याद्दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वसौख्यलभेन्नित्यंपतिपुत्रधनादयः मनेच्छापूजितोनित्यंमोदतेबहुविस्तरात् अथाग्रेचसमासेणकथासर्वंयथाक्रमात्
प्रथमेद्वितियेवर्षेतातमातसुखावहं शरीरेजायतकष्टंसर्वशातिसुयत्नतः तृतीयेवेदबाणाब्देक्रीड्यन्तिहीदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनो
शिशुणांसंगमेप्रीती क्रियतेप्रेमवर्द्धिनी बालक्रीडाविशेषेण मोदमानगरीयसी यद्रोगजायतेल्पंही नित्यंपुण्येणनश्यति रसाब्देव्यालवर्षांतं प्रतियत्न
महोत्सवा गृहकार्यैरतिर्नित्यंचञ्चलश्चपलोमति संबंधश्चर्चयागेहेव्ययदीर्घविचिंतनम् पूर्वयत्नकृतेकाव्यविस्तृतिसर्ववैभवाः सौभाग्यमहतोपुण्यबुद्धिरे
विवर्द्धनं तातमानतथालाभंवर्द्धतेनित्यनूतनं ग्रहाब्देदादशेवर्षेवर्द्धयंतियथाक्रमः उद्वाहोचर्चयागेहेमंगलंमहदागतः महोत्साहश्चतत्रैवमोदमानंगरीयसी

सुभाग्यमहतोपुण्यंपतिप्राप्यमनोहरम् तातकीर्तिविशेषेण सर्वकार्यसुसिद्धति विविधाभूषणोवस्त्रंभाग्यपात्रासुशोभिता मानेनमहताविष्टोद्वयोगेहप्रका
शिनी गृहकार्याणिसर्वाणि बुद्धिरेवविवर्द्धनम् प्रकाशोविपणीभूयात्प्रियहास्यविलासिनी प्रायश्चित्तमहादानं नित्यंसर्वसुखप्रदा गुणाचेन्दुगतेवर्षे ऋतु
चन्द्राद्वकेतथा पतिप्राप्तिविशेषेण सर्वसाफल्यवैभवाः शरीरेजायतेकष्टं औषधिप्रतिशांतये पतिप्रीतिहृदेगुप्तंप्रत्यक्षञ्चदिनेदिने सुस्वरूपाप्रियसर्वेमंगलं
मोदवर्द्धनः अयत्नेक्लेशितोर्नूनं विपाकेह्यानिसंभवाः भगवद्भक्तिभावेण पूर्वपुण्येसुखंभजेत् नगसोममितेब्देतुव्योमपक्षावधिक्रमात् मासेवर्षेसुखंनित्यं

पति मपरायणः कष्टञ्चमहतोभूयात्पुनरप्याहिमोदितं सर्वसौख्यान्वितोभूयद्दानिरन्तेस्वकर्मणा दानमन्त्रसुपुण्येणसर्वसौख्यसमागमः सुतापुत्रादिजा

सवःमोदितंपतिभिस्सह इन्दुपक्षमितेद्वेतुशरपक्षाद्वकेतथा भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेबहुनूतनम् महत्वमाधकंलोकेसुखयुग्यत्नसाधितः दम्पत्योरल्पज
कष्टंशान्तितत्रैवयत्नतः नसुखंलभतेपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् नानाचिंताभनोद्वेगंदुःखिताचमुहुर्मुहुः कुलेविघ्नमुपाधिश्च भर्तारंतप्यतोतथा किंचिद्दाना
दिमंत्रेणसुखंसर्वासुयत्नतः ऋतुनेत्रगतेवर्षेव्योमरामसुचान्तरे पूर्वयत्नंसुपुण्येण भर्तारंसुखसर्वदा वृहद्दागोसुतप्राप्यसाफल्यंजन्मभूतले सर्वारिष्टक्षयो
नित्यंपुण्येसर्वमंगलम् चत्वारिंशावधितत्रः मनेच्छासर्वपूजिता विवाहामंगलंकार्य्यं जायतेविविधेगृहे कीर्तिश्चनिर्मलीभूयात्कुलंतेनप्रकाशिता कुल
वृद्धिविशेषेणसुप्रतिष्ठायशस्विनी अनुष्ठानमहादानंपूसंरक्षयेद्यदि सुखंसर्वाणिरत्नसूयवसुन्धरा चन्द्रचत्वारिवर्षाणितथाव्योमशरान्तरे सद्वययो
पिधनंधान्यंसुविख्याताप्यमानिनी धर्ममार्गेगताप्रज्ञा सर्वसौख्याधिकारिणी द्विपुत्रोचन्द्रकन्याच भर्तारंहिमहत्सुखम् जन्मसाफल्यमाप्नोति विस्तृतिसर्व
वैभवाः नानालाभसुखासर्वे सौभाग्यंमहतोत्सवम् सर्वेप्सितंफलंप्राप्यः पूजनीयोमहत्यशा शरपञ्चतथाब्देहि पौत्रजन्ममहोत्सवम् तीर्थदेवालयेप्रीती
दानधर्मादितत्परः शरीरेकष्टसम्पन्नो मृत्युरेवसमोमहत छायापात्रान्नदानेन सर्वशांतिसुयत्नतः महादानादितोनूवं हर्षवृद्धिदिनेदिने मंगलंमहत्तोयावी
कष्टापत्तौरुजक्षयम् राजित्तंसुप्रबंधेण रमाशविवर्द्धिनी पौत्रजन्मविशेषेण महोत्साहोप्रशंसिता इन्दुषष्टाद्वमायुष्यं किम्वावेदरसाद्वकी ईश्वरंभक्ति
भावेण प्राप्नुयात्परमांगतिः अथाग्रेसुकुलोत्पन्नं पुण्यपात्रीमहत्पदम् त्वयत्नेविपरीत्यंहि त्रिजन्मंपापपीडितः दानमंत्रमहोत्साहो सर्वसौभाग्यदायकः

सर्वखेटेष्टमोनेन धनाध्यक्षासुभामिनी सुस्वरूपाप्रियासर्वै चारुहास्यविलासिनी सुप्रसिद्धाःत्र्यधर्मात्मा गृहकार्यहितेरताः मध्यमांगीसुमतिमान् पतिप्रेम विवर्द्धिनी भोगमैश्वर्यसंपन्नावस्त्राभर्णोंसुशोभिता धनपुत्रसुखंसर्वदा सदासिश्चवाहनम् सर्वैश्वर्यसमायुक्तापुनःपापाद्रधोगता पतिपुत्रात्मकष्टेणक्लिश्यति विविधोमहान् आपतौचविशेषेण जायतेपूर्वपापतः चिन्तयेद्विविधोबामा मानहानिभयंमहत् धनहानिविशेषेण गृहेक्लेशह्यु पद्रवाः तामसंक्रोधवेगेण कार्यहानीभवेध्रवम् विमुखोयातिभर्तारंवैधव्यान्तेमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येणपापशांतिसुखागमः ईश्वराराधनेप्रीतीमनेच्छाबहुपूजिता मानकीर्ति विशेषेण पुण्यंसाफल्यवैभवाः अतःपरिसुखाःसर्वे अग्रजन्मपुनःपुनः राजयोगभवेत्पूर्णा नानारत्नैःसुशोभिता ईश्वरंकृपयाद्रामाप्राप्यतिपरमांगतिः पापशांतिःयदानैवक्लिश्यतिसाधमामतिः पूर्वजन्मनित्यपापंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुखितातिमुहुर्मुहुः शूद्रवंशोद्भवापूर्वसाधुसेवा सुतत्परा ईश्वराराधनेप्रीती दासीचैवातिनिर्द्धना नित्यंद्विजगृहेसेवा स्वोदरंपाल्यतिसदा साधुसेवाप्रभावेण ईश्वराराधनेनवै बहुपुण्याश्रयोशूद्री भूयसिभाग्यभाजिनी कदाचिद्दैवयोगेण द्विजगेहेमहद्धनम् दृष्ट्वातुस्वपतिंव्रूयाल्लोभग्रस्ताधनामतिः हृतंद्विजधनंसर्वमुभयो पापमाश्रयः नदृष्ट्वा स्वधनंविप्रः शापंदत्वातिदुखितम् तेनपापप्रभावेण इहजन्ममहद्भयम् साधुसेवासुपुण्येण उत्तमेकुलसम्भवाः रूपलक्षण पन्ना कोमलांगीशुभानना आदौपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पुनःपापोदयंभूयात्पतिबुद्धिविनाशनम् वैश्यागामीमदोन्मत्तः सर्वद्रव्यक्षयंकरः क्लिश्यतिविविधोतेन शरीरदारुणभयम् कुलकीर्तिक्षयसर्वं गृहेशोकसमागमः एवंहिविविधोदुखं त्रिजन्मंजायतेमहान् तस्यशांतिःप्रवक्षामि येनचाग्रेसुखंलभेत ताम्रपात्रे घृतंगुडः स्वर्णद्रव्यसुश्रद्धया वेष्टितांपीतपट्टेणपुष्पमाल्यादिभूषितम् द्विजभार्यान्वितोमूर्ति स्वर्णपत्रसुलेखयेत् संस्थाप्यकलशेतोतः पूजनंभक्तिभावतः आचार्य्यायःप्रदातव्यं तद्दानंसुविधिर्यथा शशिव्यालसहस्राणि मन्त्रमेतज्जपेत्तदा ॥ मन्त्र ॥ ओं ऐंह्रींक्लीं श्री सर्वेश्वरी भगवतीदेवीं पूर्वजन्मकृत शापपापशमनं कुरुकुरु सर्वसौख्यप्रदायिनी स्वाहा हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति पुनःसर्वसुखंलोके धनपुत्रादिजैरपि पतिराज्ञाप्रपाल्यन्ते शोभितागेहभूषणा सर्वसौख्यान्वितोबामा पुनश्चैवाग्रजन्मनि ग्रामभूमिधनंप्राप्यः सुपुण्यात्मादयामयी पुण्येच्छापूजितासर्वे त्ययरनेक्लेशभाजन

जन्मतःप्रथमेवर्षेवह्निवर्षेषुयत्क्रमः तातमातहृदेचिताबालिकाप्रेमवर्द्धिनी शरीरेकष्टसंपन्नोज्वरानतिसारादयः दन्तपीडावितप्यन्तिशांतिरेवंसुयत्नतः
वृहद्धरीतिकीचैवलक्षणांश्यामसंयुता देयात्शांतिप्रजायंतेशरीरारोग्यवर्द्धनम् अन्नदानादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते दानमंत्रंसुयत्नेनपापशांतिःमहोत्सवा
शुचौपत्तेयथासोमःयोगस्तद्वत्प्रवर्द्धते वेदाब्देपञ्चमेवर्षेऽष्टंवर्षादिसप्तमे बालासुभोगमैश्वर्यंवर्द्धितेपुण्यकर्मणा वृणांविस्फोटकोव्याधिःसर्वशांतिसुकर्मणा
क्रीडतेमतिसंजातंगेहकार्येसुतत्पराः ततचिंतामनोद्वेगंसंबंधस्यविचर्चितम् मातृकष्टविशेषेणभ्रातजन्मसुखोत्सवम् व्यालवर्षनभेंदुश्चनेत्रचंद्राद्धमध्यगे
गृहकार्यरताबालाविवाहोमंगलंमहत् व्ययद्रव्यमहतातोमोनकीर्तिश्चनिर्मला पतिरेवसुप्राप्यंतिवस्त्राभर्णमनोहरा सुखेणमहताविष्टोपुण्यैश्वर्यविवर्द्धनम्
अयत्नेपापजंकर्मविपाकेदुःखदोमहान् त्रयोदशोद्धसंप्राप्ते अष्टादशमितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणराजतेपुण्यसंपदा मनेच्छापूजितोनित्यंचित्तचिंतायदाकदा
दानधर्मादितोनित्यंसर्वैश्वर्यदिनेदिने ऊनविंशेचविंशाब्देपञ्चविंशतिमध्यमा स्वगेहेसुप्रतिष्ठोपिवनितापुण्यरूपिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यासुखेविघ्नमहद्भयम्
प्रायश्चित्तंसुपुण्येण आयुवृद्धिमहत्सुखं पुत्रकन्यासमायुक्तापतिप्रेमविवर्द्धिनी नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसम्पदाः रसविंशमितेवर्षेव्योमरामक्रमादितः
महोत्साहश्चतत्रैवमंगलंमहदागतशरीरेजायतेकष्टंदंपत्योरल्पजंभयम् छायापात्रान्नदानादिसुखयुद्यत्नसाधितः दासवाहनजैर्नित्यंभोगमैश्वर्यसर्वयोअयत्ने
विपरीत्यंहीपतिपुत्रेणक्लिश्यति इन्दुरामाद्धमारभ्यःचत्वारिंशावधिततः वांछापूर्तिप्रजायेतःपूर्वयत्नेसुरक्षिता विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्तिमहत्यपि
मंगलंविविधोनित्यंप्रजावृद्धिवृहद्यशः ईश्वरभक्तिभावेणसाफल्यंसर्ववैभवा तुष्यतिविविधोनित्यपतिपुत्रात्मजादयः कार्यवृद्धिविशेषेणकष्टचिंताक्षयंसदा
अनुष्ठानमहादानंसत्रःसर्वसुखप्रदा सर्वपापविमुक्तापुण्यरूपासुमानिनी पुण्यपापोश्रयोनित्यंसुखदुक्खादिसर्वयो शशिवेदगतेवर्षेमल्लवेदाद्धमध्यमा
शरीरेजायतेकष्टंमहादानसुखप्रदा देवतीर्थाटनेप्रीतिशताद्धवत्सरावधिः रामबाणमितेब्देतुपौत्रजन्मेच्छितप्रदं मंगलविविधोत्साहोयशसाधननित्यशः
प्राप्तवेदशराब्दे तुव्योमषष्टक्रमादितः दानधर्मरतानित्यमग्रजन्मसुखार्थये देवदर्शनतीर्थेषुपवित्रंमानुषीतनम् सर्वत्रैवंप्रकाश्यंतिपूर्वयत्नेसुरक्षिता त्वयत्ने
क्लिश्यतिबामा वैधव्यंपापरूपिणी पूर्णायुरष्टषष्टाब्दे पञ्चतत्वप्रथग्भवेत् सुपुण्योदग्रजन्मेच सर्वसौख्याधिकारिणी वैश्यवंशसमुत्पन्नं वनितागेहभूषणा

सर्वयोगविचारेणयोगोयंसुखदर्शकः सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुण्यरूपासुभामिनी जन्मतःमातृकष्टोपितातचिन्ताचयुक्तता जन्मकालात्प्रवर्द्धतःसंपदा पितृवेश्मनी यथादेहप्रवर्द्धतः भोगमैश्वर्यनूतनम् मध्यभागीसुशीलश्चवस्त्राभर्णैःसुशोभिता दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ासुचञ्चला गुप्तचिन्तामनोद्वेग क्रोधेणतप्यतिकदा चिंतयंतिविशेषेणस्वकार्यसाधनेमति तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवं मध्यरूपाशुभांगीचसुनयनाशुभ्राशुचिः मनेच्छापूजिता

हीदशाश्रेष्टसुखप्रदा उद्वाहाहिमहोत्साहो तातकीर्तिसुखप्रदा पतिप्रेमकरारन्या गृहकार्यविचक्षणा पीड्यतिपूर्वपापेण सुखेशोकह्युपद्रवा विजयति त्रिविधोद्वेगंस्वल्पायुरल्पजंभयम् विवादकलहंगेहोनिमग्नाःशोकसागरे पतिपुत्रात्मजादिणांसुखेविघ्नंहिपापजम् नसुखंसुस्थिरोलोकेयावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानंसर्वसौख्यदिनेदिनेमंगलत्रिविधोत्साहोसुतापुत्रविवर्द्धनम् नित्यंपरायाश्रयोलोकेसफलंमानुषीतनम् तथैवोदुक्खदंपापारितिज्ञात्वासुनि श्चितम् । शुक्रोवाच । पूर्वपापकथंतातःकथयस्वप्रसादतः येनदुक्खलभेन्नारीतस्ययत्नकथंभवेत् । भृगुवाच । पूर्वजन्मकथावत्सःप्रवक्षामिसमासतःवैश्य वंशसमुत्पन्नानारीयंधनगर्विता व्रतदानरतोभूयादंतज्ञानाभिमानिनी तत्रैकसमयेवत्सव्रतोद्यापनमाचरेत यज्ञश्चकारयामासःयशेतेसाधनेमति यज्ञस्थले शुचौतीर्थेगुरुरेवविवादिति स्वामिग्राज्ञानमन्यंति त्यज्यतिस्वगुरुतदा रुष्टंतस्यापमानेन विप्रेन्द्रोशापितंमहत् रेदुष्टात्मादुराचारी दर्पितापापरूपिणी निजकृत्यफलंलोकेत्रिजन्मंदुक्खितोमहान् पतिपुत्रात्मजाक्लेशंशरीरेदारुणोरुजम् प्राप्नुयाद्विविधोद्वेगंगृहेक्लेशह्युपद्रवाः तेनपापप्रभावेणनारीयंदुक्ख माश्रयः प्रायश्चित्तंविधानेनकथयामित्वयाधुना एतज्जन्मकृतेकाव्यःसर्वसौख्यसमृद्धिमान् यस्मिन्कस्मिन्दिनेभूयाच्छ्रद्धाभक्तिसमन्वितम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्यःयथाविभवविस्तरात विष्णुनारायणोमूर्ति लेखयेद्रक्तचन्दनम् शापदातागुरुमूर्ति तन्निकटेसुविधिर्यथा लिपित्वाशापहंबीजं सर्वञ्चसुविधानतः संस्थाप्यंकलशेप्राज्ञःवेष्टितांपोतपट्टतः पूजयेद्भक्तिभावेण विष्णुयज्ञक्रमादितः तदग्रेजापयेन्मंत्रंशशिलक्षञ्चवार्द्धकम् ॥ मंत्र ॥ ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय सर्वपापशमनायभद्रं कुरु२नमः स्वाहा सावित्रीतत्प्रमाणेनशापहंबीजसंपुटम् शैयादानविधानेनमूर्तिदानंसमाचरेत् हवनंविप्रभोज्यञ्चसर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंपुण्याश्रयोलोके।तद्यत्नप्रभावतः सर्वसौख्योगमोगेहेवनितापुण्यरूपिणी मानकीर्तिमहोत्साहोसुखंसर्वत्रवर्तते पतिपुत्रात्मद्रव्याणिसफलंजन्मभूतले

स्त्रा० ६१

प्रथमेद्वितियेवर्षेवह्निवर्षाचपञ्चमे दन्तश्राधाज्वरंपीड्य: वृणांविस्फोटकादय: रुदन्तौविव्हलाकन्याभूतछायाप्रपीड्यति किंचिद्दानादिमंत्रेण औषधिसेवने
नवै श्रेयोमानंसुखासर्वे क्रीडतिविविधैरपि भ्रातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमेवच अल्पमृत्युभयघोरं द्वितियोजन्ममरायते पुनरानन्दसंप्राप्य प्रायश्चित्तं
सुयत्नत: रसवर्षगतेवत्सव्योमचन्द्रादनन्तरम् बालिकावर्द्धतिनित्यंशुचौपक्षेनिशेशवत भोगाप्रवैभवोवृद्धि: वस्त्राभर्णै:सुशोभिता गृहकार्यरतोबाला
वादहास्यपरंप्रिय: छायापात्रान्नदानेन सर्वाऽरिष्टनिवारणम् विवाहोऽर्चयातस्य तातचिन्तागरीयसी चञ्चलश्चपलाबाला शिशुक्रीड़ामनोहरा मंगलं
विविधोगेहे मासेवर्षेसुखंगता: शशिसोमगतेवर्षे शरसोमतथान्तरे विवाहोमंगलंदिव्यं कुलकीर्तिप्रशंसिता पतिसौख्यनसन्देहो दानमन्त्रफलप्रदा
दिव्याम्बरंभूषणञ्च शोभितापिशुभानना गृहकार्येसुकुशलाभोगमैश्वर्यनूतनम् रसेन्दुविंशवर्षाणिपतिप्रेमविवर्द्धिनी भाग्यवृद्धिर्नसंदेहोसुखंतत्रप्रवर्तते
शरीरेजायतेकष्टंसर्वशान्ति:सुयत्नत: नवाम्बरंभूषणञ्चप्राप्यतिविविधोतदा मासेवर्षेसुखंजातंसुपुण्यात्पूर्णवैभवा: इन्दुनेत्रगतेवर्षे पञ्चयुग्माङ्ककेतथा
शरीरेजायतेकष्टंपुत्रजन्ममहोत्सवम् पतिप्राप्तिविशेषेणयथालाभतथाव्ययम् सुतापुत्रसुखंलोकेमानवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितोनित्यंदानमंत्रंसुयत्नत
रसनेत्राद्धत्रिंशेच तयोर्मध्ये महोत्सवम् अयत्नेविविधोचिन्ता पापादुक्ख महद्भयम् तेभ्य: सरक्षितस्यापि पूर्णायु: सुखसंपदा नानाकार्यप्रबन्धेण
सुप्रसिद्धापिभामिनी पुत्रकन्यासुखाविष्टो पूजयन्तिमनोरथा अनादरस्तुशत्रुणांपतिप्रीतिविशेषत: शशित्रिंशत्रित्रिंशेच शररामान्तरेतथा विवाहो
मंगलंकार्यंव्ययलाभमहत्यपि शरीरेजायतेकष्टमन्नदानात्तत:सुखम् षष्ठवह्निगतेवर्षे व्योमवेदावधि:क्रमात् मनेच्छापूजितोसर्वा: नूतनंसंभवेपुत्न:
पुण्यकर्माश्रयोलोके किंकिंसौख्यनलभ्यति भूमिमन्द्रधनंप्राप्य: रजितंस्वर्णभूषणं देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रीक्रियतितनुम् आज्ञाकारी सुताभृत्या:
प्रजावृद्धि महोत्सवा: वेदबाणाद्धमारभ्य: पौत्रजन्मसुतुष्यति प्रकाशोविपणीभूयलाभोभवति पुष्कलम् अत:परिसुखासर्वे रामसप्तान्तरावधि:
सर्वसौख्योपिभुञ्जोता सफलंजन्ममानुषी ईश्वराराधनेप्रीती दानादिमतितत्परा: स्वासकासादिजंपीड्य: अन्तकालह्युपस्थिता पञ्चतत्वप्रथग्भूयात्
सप्तमीचाश्विनेतमे प्राप्यतिसुगतिश्चापि पूर्वपुण्यंसुयत्नत: अथाग्रे सुभवेद्राज्ञी सुपरायात्स्वर्गगामिनी पुण्याश्रये सुखासर्वा: स्वर्गमोक्षैव कारणम्

एतद्योगेसमुत्पन्ना बालाबुद्धिमतीसती दाताभोक्तासुधर्मात्मा स्वकुलेसुप्रतिष्ठिता हीनगेहेभवेज्जन्मः स्वामिनीस्वोच्चगेहणी जन्मकालसमारभ्यः
यावज्जीवतिभूतले नानाकर्मकृतालोके सुखदुक्खसमायुता चिन्ततिविविधोकार्यं मध्यरूपासुलक्षणा नातिगौरीनकृष्णांगी मध्यमांगीसुलोचना
शुचौपक्षे यथाचन्द्रः योगस्तद्वत्प्रवर्द्धते संपदासंचयेत्स्वामी वस्त्राभर्णैं सुशोभिता धर्ममार्गे गताप्रज्ञा सुप्रसिद्धा प्रशंसिता धर्मेणैव सहायेण
परमैश्वर्यसर्वदा पापकर्म कृतेवाधा योगोशाति मलीनता यदापाप गताप्रज्ञा सर्वकार्ये भयप्रदा पूर्णसौख्य नप्राप्यति निमग्नश्चिन्तनार्णवे
तनुकष्टीचाल्पजीवी विविधक्लेशभाजिनी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापशांतिसुभक्तितः वंशवृद्धिमहत्वेण सौभाग्यंपरमंसुखम् सुतापुत्रादिजासर्वैः
मनेच्छापूजितोभुविः सर्वापत्तौविनश्यन्ति पूर्णायुसुखभाजिनी मंगलंविविधोगेहे विवाहादिमहोत्सवे त्वयत्नेपापकर्मेण क्लिश्यतिदुक्खरूपिणी
शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कृतंतद्योरकर्मिणी येनक्लेशाश्रयोभूयाद् दुक्खितापिसुगेहणी ।। भृगुवाच ।। विप्रवंशोद्भवापूर्वे धनपुत्रान्वितोभवेत्
पूर्वपापेणवैधव्यं देवतीर्थाटनेमतिः ईश्वराराधनेप्रीती ज्ञानध्यानसुतत्परा सर्वद्रव्यव्ययंतीर्थे भूयसित्वतिनिर्धना देवतीर्थाटनेप्रीती नित्यंभ्रमति
भूतने चौरकर्मरतोभूयात्तथाचव्यभिचारिणी बहुवस्तुहृतोदेवाः महत्पापंदुरावृतिः पुण्यपापाश्रयोभूयो तस्मिन्कालेसुब्राह्मणी कालेनमृयतिश्चापि
किंचित्पुण्यफलेणवै समुत्पन्नाथभूभागे सुन्दरीमानुषीतनम् दिनेदिनेपिसांवृद्धा संपन्नापूर्वलक्षणौ पापशान्तिःप्रकर्तव्या ताततज्जन्मकालके सर्वान्निष्ट
क्षयोनित्यं विस्तृतिंसर्ववैभवा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेविघ्नभवन्तिहि तद्यत्नंसंप्रवक्षामि येनसौख्यदिनेदिने स्वर्णपत्रकृतोतत्रः वह्निकोणनगांगुलम्
पंचगव्येणसंस्नात्वा शुद्धितंजाह्नवीजले लेखयेद्रक्तगंधेण विष्णुमूर्तिःसुशोभनं वेष्टितांपीतपट्टेण संस्था यंकलशोपरि पूजयेत्सुविधानेन विष्णुयज्ञ
यथाक्रमः तदग्रजापितोमन्त्रं विष्णुव्रतरतोद्विजाः । मन्त्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय सर्वपापविध्वंसनाय भक्तानुप्रतिपालकाय विष्णुरूपायभगवते
वासुदेवायतेनमःपूर्वजन्मकृतपापताप शमनंकुरु स्वाहा शशिलक्षप्रमाणेनजाप्यमेकाग्रमानसः हरिवंशंपठेन्नित्यंजपान्तेदानमाचरेत् आचार्याय
प्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेत्सुधिः हवनंविप्रभोज्यश्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंसर्वसुखाविष्टो सौभाग्यमक्षयंभवेत् सर्वेप्सितंवरंप्राप्यः वनितापुण्यरूपिणी

स्त्रा० ६२

प्रथमाब्देद्वितियेचशरीरेजा तेसुखम् विचिच्छायादिरोगेणपीड्यतितातचिन्तनम् रुदन्तौभयमाक्रान्तः कन्यकाप्रेमवर्द्धिनी दानमंत्रसुपुण्येणधूटिका रुवनेनवै सर्वकष्टविनश्यन्तिबालावृद्धिक्रमादितः तातसौख्यविशेषेणमहोत्साहंदिनेदिने रामाब्देवेदवर्चबाणवर्षावधिक्रमम् मातृकष्टभयंचिन्तापुनरा नंदमगलम् व्रणवातोद्भवंकष्टं दशनोत्वतिजारुजम् तातलाभम्भविष्यंति कार्यचिंताचगुप्तता पुण्ययत्नादितोनूनंसौभाग्यंपरमादयम् नवाम्बरंभूषणाञ्च प्राप्यतिमानमुत्तमम् रसाब्देव्यालवर्षेत्रशिशुक्रीड़ाविमोदिती पतनाद्दारुणोकष्टंभयंचाल्पभयंकरम् गृहेक्लेशवित्तादश्चस्वतःशांतिप्रजायते तातैतज्जन्म कालान्तं प्रायश्चित्तेसुरक्षिता नानाकार्यंसुखंवृद्धि सुताचैतत्सुखप्रदा मानकीर्तिमहत्वेण नित्यमानन्दवर्द्धिनी त्वयत्नेविपरीतंयंही विपाकेपापजंफलम् प्राप्यतेनन्दवर्षेतु सूर्याब्देचयथाक्रमः नानाकार्यप्रबन्धेणपुण्यात्सर्वसुखागमः उद्वाहश्चमहोत्साहोपतिरेवंसुप्राप्नुयात् तातमातसुखंसर्वभ्रातबंधुसमायुता दिव्याम्बर भूषणाञ्चप्राप्यत्यतिसुशोभनो कुलवेदप्रकाश्यंतिग्रहकार्येषुसद्वरा प्रकाशोवर्द्धतेनित्यंषोडशाब्दावधिततः पतिप्रेमविवर्द्धतिरूपयौवनगभिता किंचित्कष्टशरीरेपिज्वरार्त्तमुदरव्यथा पुनरानंदपुण्येणवर्द्धतेशशिवत्कला प्राप्यत्यद्धनगेंदुश्चविंशवर्षावधिक्रमात् भोगमैश्वर्यसंपन्नापुत्रजन्ममहोत्सवा प्रसवेदारुणोकष्टंपुण्येपूर्णसुखागमः सुतापुत्रमहेश्वर्यं साफल्यंमानुषीवपुः पञ्चविंशगतेवर्षे भाग्यस्यपरमोदयम् विवादकलहोदुक्खा शान्तिरेवंसुयत्नतः नेत्रत्रिंशावधिवत्सः पूर्णपुण्यफलंभजेत विवाहादिमहोत्साहो यशमानविवर्द्धनम् सर्वकार्येषुकुशला कुलवृद्धप्रतिदिता रामरामाब्दमारभ्यचत्वारिंशगते तथा तीर्थदेवालयेगताव्रतदानमहोत्सवाः चाल्पमृत्युभयंघोरंसुपुण्यात्सर्वशांतये ततिप्रेमकराबामाधर्ममूर्तिसुलक्षणा अयत्नेक्लेशितोनूनंबालकंकाल वक्रगः दम्पत्योर्चिन्तनंबह्वीह्यापत्तौमहदागतः एतस्मातकारणान्नित्यं पापशांतिसुखंलभेत् शशिभल्लमितेवर्षे पौत्रजन्मसुखप्रदा भूमिद्रव्याधिकंप्राप्ती रचनागेहसुन्दरम् सर्वकार्यविनिश्चित्यः षष्टोषष्टसुवत्सरे तीर्थयात्राजपंपुण्यमीश्वराराधनेमतिः सर्वेच्छापूजितंलोकेनिर्बलत्वंदिनेदिने नेत्रसप्तावधिकाव्य निर्बलत्वञ्चक्लेशिता दानधर्मविशेषेण अग्रजन्मस्यहेतवे मनेच्छापूजितंसर्वा पुत्रपौत्रधनादिजा पुत्रभाग्यविशेषेण माननीयामहत्यपि व्योमव्यालसु वर्षाणि आयुपूर्णभविष्यति मार्गशीर्षेशुचोपक्षे पंचम्यांनिधनंनिशि अग्रजन्मसुपुण्येण राज्ञीवंसुगृहोद्भवा प्रकाशोविपिणीभूयाद्दानमंत्रमहत्फलं ॥

एतद्योगोद्भवाबालामध्यभाग्येन्सुन्दरी विद्याबुद्धिर्भवेन्यूनमीश्वराराधनेमतिः कुलवृत्तिप्रभावेणप्राप्यतेमानमुत्तमम् भाग्यवृद्धिर्महोत्साहोमासेवर्षेसुखा गमः नानाकार्यप्रबंधेणराजतिगेहभूषणा मनेच्छापूजितोनित्यंकार्यसिद्धौविलम्बता पूर्वपापप्रभावेणचिंतनीयामहत्यपि मृतवत्सातथावन्ध्याभूयात्पुत्र निवर्जिता निरल्पंदारुणंकष्टंप्राणविनातिदुस्तरम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगंरतिदुक्खमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुयत्नेनपापशांतिसुखंलभेत् प्रजासुभोगवृद्धिश्च वाञ्छापूर्तिःसुकर्मणा सर्वचिन्ताविनश्यन्ति दम्पत्योर्प्रेमवर्द्धनम् विवाहोमंगलंकार्यं देवपुण्योत्सवेव्ययम् देवदर्शनजाप्रीतिः ईश्वराराधनेमतिः वपुरेवसमाकल्यंसुखंजन्मनिजन्मनि प्रतापोवृद्धिमाप्नोति शत्रुर्वैदासवच्चरेत् संपदाविस्तृतोगेहे वस्त्राभरणैसुशोभिता क्लिश्यतिपापरूपेण यावद्यत्नं नपापहम् एतस्मात्कारणात्पापं ज्ञात्वायत्नसमाचरेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ किमस्यादारुणोपापं मानुषीदुक्खकारणम् पूर्वजन्मकथंभूतात्सासर्वंकथयप्रभोः भृगुवाच ॥ श्रृणुवत्ससमासेणपूर्वजन्मकथाधुना क्षत्रीवंशसमुत्पन्नानृपबामासुधार्मिका सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुत्रप्राप्तिर्विलम्बता द्वयोर्द्वाहंप्रकर्तव्या पतिचास्यसुतार्थये किंचित्कालगतेवत्स अयंबामासुतंलभेत् तदांतेचन्द्रवर्षेच द्वयोभार्यासुतंजनत् नृपप्रेमद्वयोबामा तुल्यमेवनसंशयः ईर्षातस्य कर्तव्यो नित्यंतर्प्यातचान्तरे कदाचिद्दैवसन्नायां तस्यपुत्रविषंददेत् तेनमृत्युभवेद्बालः नारीयंपापमाश्रयः तस्यमातृमहत्क्लेशं शापंदत्वापुनःपुन तेनपापप्रभावेण त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् यावद्यत्नंनकर्तव्या पुत्रसौख्यविनिर्मुखा गृहेक्लेश विवादश्च नानाचिन्तापिवेदना तस्ययत्नंप्रवक्षामि येनसर्वसुखागमः स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या शुद्धश्रद्धासुभक्तितः वह्निकोणंशुद्धहेमः परितोपिनगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण बालचित्रमनोहरम् वेष्टितां पीतपट्टेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा संस्थाप्यकलशेवत्सः तदग्रमन्त्रमाचरेत् ॥ मंत्र ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गंगोपालाय सर्वपापशमनाय विष्णुरूपायतेनमः पूर्वजन्मकृतशापपापंनाशयः सर्वकामनापूजयः पुत्रसौख्यंदेहि स्वाहा एतन्मंत्रजपेलक्षं गोपालस्तोत्र पाठकम् पूजयेत्सुविधानेन तस्यदानं समाचरेत अनुष्ठानविधानेन कृत्वापापैर्विमुच्यति सर्वसौख्यंलभेन्नित्यं पुण्यकर्मेणमानुषी भोगमैश्वर्यसम्पन्ना सेफलंजन्मभूतले विवाहोमंगलंदिव्य मनेच्छासर्वपूजिता विस्तृतिर्वंशजादीर्घः प्रकाशोपुण्यकर्मणा दानपुण्यप्रभावेण सुखंजन्मनिजन्मनि मोदतेविविधोनित्यं दम्पत्योः धर्मतत्पराः ॥

प्रथमाब्दोदरोऽव्याधि द्वितीयेदन्तपीडनम् मासेमासेसुखंजातं दानमन्त्रंसुयत्नतः तृतीयाब्देचतुर्थेच व्रणवातेनतप्यति शिशुक्रीडाक्रमेणैव चञ्चला
प्रियवादिनी पुण्यय्त्नादितोनूनं गृहमेवप्रकाशिता पतनाज्जायतेकष्टम् यत्नाच्चमहद्भयम् तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमोदिता पञ्चमेसप्तमेवर्षे
पितुलाभप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेन यद्रोगंजायतेभयम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि वस्त्राभर्णै सुशोभिता उद्वाहोमंगलंचिन्ता तातमातविचर्चिता
ग्रहकार्य्यरताबाला महत्वञ्चदिनेदिने अष्टमेद्वादशाब्देही तयोरत्नक्रमेणवै भाग्योदयंसुपुण्येण तातलाभमहत्यपि उद्वाहञ्चमहोत्साहो कुलकीर्ति
विवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति पूर्वयत्नादितःशुचिः दिव्याम्बरं भूषणंच बहुमूल्यमनोहरा भोगमैश्वर्यसंपन्ना प्राप्यतिनात्रसंशयः त्रियोदशाष्टचन्द्राब्दे
सुखसौभाग्यवर्द्धनम् रुपयौवनसंपन्ना पुण्यमेवप्रकाशिता मासेवर्षेसुखंजातं नूतनंसुखवर्द्धते ईश्वरंभक्तिभावेण पतिप्रेमविवर्द्धनी कष्टव्याधिमहत्वेण
सुताजन्मसुमंगलम् प्रतापभोगमैश्वर्य सुपुण्येसुप्रशंसिता नन्देसोमाद्बमारभ्यः वेदपक्षाद्बमध्यमा पुत्रकन्यासमायुक्तं पतिप्रेमविवर्द्धनी गृहक्लेश
विवादञ्च सर्वशांतिःसुयत्नतः शरविंशतिवर्षाणियावन्नभृगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नित्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी ममवाक्यश्रयेपुण्यं सर्वकष्टविनाशनम्
मंगलंविविधोत्साहोमाननीयासुसद्व्रता नानाकार्यंप्रबंधेणराजतिपुण्यवैभवाः इन्दुरामाद्बमारभ्यः चत्वारिंशावधिततः उद्वाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
महत्यपि वृहल्लाभप्रभावेण दम्पत्योर्मानवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला महत्वञ्चपदेपदे कष्टचिन्ताविनश्यन्ति पुण्योत्साहसुमन्दिरे देवदर्शनजाप्रीती
पवित्रंकृयतिवपुः इन्दुवेदगतेवर्षे तथास्याद्वयोमभलके मासेवर्षेसुखंजातं भूमिलाभोतिगौरवम् प्रतागोवृद्धिमाप्नोति पुत्रभाग्योदयंभवेत व्ययलाभ
महत्वेण बहुकार्येप्रशसिता सुप्रसिद्धधनाध्यक्षा गेहेवित्तंनभूरिशः पापकर्मकृतेबाधा विविधोदुखक्लिश्यति एतस्मात्कारणात्पुण्यं सुखार्थोयत्न
माचरेत येनसर्वसुखंलब्ध्वा अग्रजन्मेमहत्पदम् मुनिव्यालमितेवर्षे पूर्णायुसुसुखंभजेत् पुत्रपौत्रप्रगौत्रञ्च प्रजावृद्धिधनान्विता सर्वेच्छासुयुज्यन्ति
साफल्यंमानुषीतनं आश्विनेकृष्णापक्षेच नवम्यांनिधनंदिनं अनायासेतनंत्यक्त्वा यत्रकुत्रप्रशंसिता गतिरेवसुप्राप्यंति सुपुण्यादग्रजन्मनि पतिभक्ति
प्रभावेण संभवाचोत्तमेकुले महाराज्ञीवसाभूयाद्दयारुपासुसद्व्रता ध्यायेत्सत्यपदंदेवं शुचिसाध्वीपतिव्रता सत्यलोकेगमिश्यंति पुण्यतत्वंब्रवीमिते

एतद्योगोद्भवाबालासुस्वरूपासुलक्षणा तातमातसुखोसर्वामासेवं सुमंगलम् पतिप्रतिष्ठितंचापिस्वसुरंकीर्तिविस्तरात् धनधान्यसमृद्धिश्चगृहकार्येसुकौशला बाल्यावस्थासुक्रीड्यंतिपितुर्हर्षसुखप्रदा मंगलंविविधोत्सवोहोकुलकीर्तिसुविस्तृतम् युवावस्थाविशेषेणभोगमैश्वर्यसंपदा पतिप्रीतिविशेषेणसर्वेच्छासुखपूजिता धनधान्यसमृद्धिश्चनेत्रगेहसुखाकरी सुस्वभावंसुयत्नेनपुण्यैश्वर्यप्रशंसिता मंगलंविविधोगेहेकुलकीर्तिप्रकाशिणी मानेनमहताविष्टामहत्वंसुपदाधिपा तीर्थयात्राव्रतंपुण्यंवृद्धावस्थासुतुष्यति पुत्रपौत्रादिजंसर्वंपुण्यैश्वर्यंसुदुर्लभा सर्वावस्थासुखंजातं माननीयासुसद्व्रताः शुचौपक्षेयथाचन्द्रः योगस्तद्वत्महत्पदम् चञ्चलश्चपलाप्राज्ञीकोमलांगीदयामयी कदाचित्क्रोधवेगेणतप्यत्यापिदुराग्रतिः पूर्वपापप्रभावेणसुखेविघ्नपदेपदे आयुरेखाकरेचास्य खंडिताबाणरूपतः तातमातमहद्दुःखमल्पायुश्चमहद्भयम् स्वामिशोकेविसंतप्तागृहेक्लेशमहत्यपि विवादकलहंचैववैरिपुरुत्पद्यतेबहुः रोगशोकैर्वितप्यंति सुखेविघ्नपदेपदे अग्रजन्मेमहद्दुःखमेतज्जन्माद्यधोगताः शुक्रोवाचकिमसौदारुणोपापंजायतेपूर्वजन्मनि येनसर्वसुखेविघ्नंक्लिश्यतिविविधंस्त्रिया भृगुवाच श्रुणुवत्सपरगोप्यंरहस्यंकथयाम्यहम् विचित्रमिदमाख्यानंकथायापूर्वजन्मनि पुराविप्रकुलोत्पन्नासुसद्रूपागुणान्विता शुभलक्षणसंपन्नानिवसत्तीर्थमाश्रमे धर्मकर्मरतानित्यंलोभाशक्ताविमंदधिः यात्रीतत्रेंदुनिवसच्चास्यरूपविमोहिता तस्यद्रव्यहरंसर्वंप्राणांहत्वाकुकर्मिणी तेनतेषुगृहेक्लेशंपत्नीपुत्रोतिविव्हला तस्मात्पापाश्रयोनारीत्रिजन्मंहीपुनःपुनः पतिपुत्रात्मद्रव्येण क्लिश्यतिनात्रसंशयम् अल्पमृत्युभयंचादौ वैधव्यञ्चमहद्भयम् पूर्णसौख्यनप्राप्यंतिसुपुत्र क्लिश्यतिमहान् तस्यशांतिःप्रवक्षामि येनसर्वसुखंमहत स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात लक्ष्मीनारायणोमूर्ति यात्रीचित्रसमन्वितम् लेखयेद्रक्तगंधेणवेष्टितांपीतपट्टतः संस्थाप्यविधिवत्कुंभेपूजयेत्सुविधानतः तदग्रेमंत्रमाराध्यशशिलक्षसुभक्तितः। तत्रमंत्र। ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं सर्वेश्वरायरमारमेशायतेनमः पूर्वजन्मांतरार्जितपापंनाशय२रक्षांकुरु२स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ आपदुद्धारकोमंत्रंधनस्यतदात्मकम् जपांतेहवनंकृत्वासावित्रीवीर्यसंपुटम् मूर्तिदानंततःकृत्वाशैय्यादानादिभियुतंब्रह्मभोज्यंसुयत्नेनआशिर्वादश्चग्राहयेत्एवंकृत्वासुयत्नेनश्रद्धाभक्तिनरायणानित्यंसर्वसुखाविष्टाभाग्यवृद्धिमहत्यपि सर्वेच्छापूजितंलोकेनित्यंपुण्याश्रयेमतिःअयत्नेक्लिश्यतिपापंभोक्तव्यंकर्मजंफलंतस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रद्धाभक्तिसमायतंव्रतदानरतश्चापियेनसर्वसुखागमम्

प्रथमेद्वितियेत्रर्षे दन्तबाधाविरेचनम् शरीरेदारुणोकष्टंसद्यःशांतिःसुयत्नतः मासेमासेविवर्द्धन्ति बालिकाशुचिलक्षणा तातलाभभविष्यन्ति गृहेमंगल
मेवच तृतीयेपञ्चमेवर्षेव्रणरोगेणपीड्यति मातृकष्टभयंचिन्तापुनरानन्दवर्द्धनम् क्रीड़तिविविधाबालाबादहास्यमनोहरा धावनात्पादकष्टश्चस्वतःशान्तिः
प्रजायते षष्टमेचाष्टमेवर्षे तयोरन्तर्यथाक्रमः दानमंत्रसुपुण्येण भाग्यवृद्धिदिनेदिने तातप्राप्तिमहोत्साहो सर्वसौख्यसमागमः बालाप्रीतिकृतेक्रीड़ाचञ्चला
श्चपलामति भ्रातभगिनीसमायुक्तागृहेद्रव्यव्ययंमहत् नन्दवर्षसमारभ्यःयावदद्धेचद्वादशे प्रतिष्ठामानविभवाः वर्द्धतेपुण्यकर्मणा तातमातमहर्चिताविवाहो
मंगलंशुभम् नवांबरंभूषणञ्चबहुमूल्यमनोहरा प्राप्यतिकन्यकाशुभ्रामानेनमहतावृता त्रयोदशाष्टचंद्राब्देमध्यगाथासमासतः गृहकार्येषुकुशलावस्त्रभर्णै

स्त्रा० ६४

सुशोभिता रूपयौवनसंपन्नापतिप्रेमविवर्द्धिनी सर्वसौख्यागमोनित्यंकष्टचिन्ताविनश्यति भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेसुखनूतनम् ऊनविंशाद्धविंशेचशरने
त्राद्धमध्यगे पूर्वपापकृतेबाधाहानिशोकविचिंतनम् नसुखप्राप्यतिपूर्णयावद्यत्नंनपापहम् सुयत्नेसर्वसौख्यानिपतिपुत्रधनादिजाः धर्मवृत्तिप्रभावेणयश
कीर्तिश्चनिर्मला शरीरेसंभवोकष्टंपुनःशांतिःभवेत्सुखम् रसपक्षगतेवर्षेयावत्सून्यत्रयाद्धके विवाहोमंगलंकार्यव्ययंतत्रमहद्धनम् मानेनमहताविष्टा यशं
भूरिसुकर्मणा पतिकीर्तिविशेषेणलाभवृद्धियथाक्रमः त्वयत्नेविपरीत्यंहि निस्फलंजन्मपत्रिका शशिवह्निमितेवर्षे रसरामान्तरोतथा पतिसौख्यविशेषेण
पुण्यपात्रासुभानुषा सुयात्रामंगलंकार्यं पुण्यदेवोत्सवेव्ययम् मुनिवैश्वानरेवर्षे रामवेदावधिंतथा प्रकाशोविपणीभूयात्पापाच्छोकमहद्भयम् ईशभक्ति
सुपुण्येण सर्वैश्वर्यंसुसम्पदा नित्यंसर्वसुखाविष्टा वर्द्धितापिल वसा वेदत्त्वारिवर्षाणि व्योमबाणक्रमादितः भूमिलाभविशेषेण रचनागेहसुन्दरम्
पुत्रभाग्यमहत्वेण कुलेकीर्तिप्रशंसिता सोमभल्लाद्धमारभ्यः शरबाणसुवत्सरे पौत्रसौख्यविशेषेण मोदयन्तीसुभामिनाः सुशोभितेकुलतेन कल्याणी
प्रियवादिनो विशेषोमगलंनित्य पुण्यपात्रिःप्रशंसिता दानमंत्रमहत्पुण्यं सर्वापत्तिक्षयंकराः यावन्नभररसेवर्षे तावत्पूर्णसुखंभजेत् मनेच्छापूजितापूर्वे
व्रतदानहितेरताः तीर्थदेवालयेप्रीतीपुण्योत्साहसुखंसदा दीनानांपालनेपुण्याद्रिपुरोगविनाशनम् तीर्थयात्राविशेषेणनिर्बलावातपीड्यति किंचित्कष्ट
शरीरेच पुत्रपौत्रःसुसेविता श्रावणेशुक्लपञ्चम्यां निधनंचास्यनिश्चितम् अग्रजन्मसुपुण्येण दिव्यदेहासुलक्षणा महाराज्ञीवसाभूयात्पुण्यैश्वर्यंसुसर्वदा

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखदोभवः एतद्योगोद्भवाबाला चारुहास्यविलासिनी शुभकर्मरता नित्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता तातकीर्तिकराशुभ्रा कोमलांगीसु
लक्षणा मानेनमहताविष्टोमोदितिपुण्यकर्मणा तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवाः मानेनमहताविष्टायशसाधनतत्परा पतिपुत्रात्मद्रव्येणसाफल्यंसर्व
वैभवाः सुखेशोकप्रदारेखासंभवोपूर्वपापजम् तस्यशांतिःसुयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत् पतिपुत्रान्वितोभूयात्सफलंजन्मभूतले घातरोगेणपीड्यन्तिप्रसवं
कष्टदारुणम् आयुरेखाकरेचास्य त्रुटिताबाणरूपतः तत्रदैवाल्पसंधिश्च अल्पजीवित्वदोषदम् दानमन्त्रंसुपुण्येण पूर्णायुःसुखसंपदा चन्द्रजीवपरंभीती
चिन्ततिविविधैरपि पूर्वकर्मविपाकेणनसुखंप्राप्यतिध्रुवम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगाः पतिपुत्रात्मजादयः पापशांतिःप्रकर्तव्यासर्वेच्छासुखपूजिता शुक्रोवाच
पूर्वजन्मसुपाख्यानंकथयस्वमहामते किमसौदारुणोपापंनारीदुःखाश्रयोमहान् भृगुवाच श्रुणुत्वंमुनियत्पापंपूर्वजन्मकथाधुना विप्रवंशोद्भवावामासर्व
लक्षणासुन्दरी तीर्थाश्रमेनिवसतिपतिपुत्रादिभिर्युता ईश्वराराधनेप्रीतीगृहकार्यरताभवेत् सर्वद्रव्यव्ययंलोकेनिर्द्धनात्वतिक्लिश्यति प्रतिष्टामानमधिकं
द्रव्यसून्यविचिंतया यात्रीतत्रैकतद्गेहेनिवसद्रव्यपूरितम् तस्यद्रव्यहरंसर्वलोभग्रस्ताधनामतिः निशाभोज्यविषंदत्वाजनघातञ्चकारयेत् तेनपापाश्रयो
भूयाददुःखितात्रिजन्मनि कालेनमृयतिस्तत्रः पुण्यात्पापाश्रयोमहान् किंचिद्दानादिमंत्रेणइश्वरंभक्तिभावतः संभवाचोत्तमेगेहे पुनःपापाद्धयोगता
पतिणाप्यतिक्लिश्यंतिदारिद्रंभयविह्वलाः चाल्पमृत्युभयंघोरंविविधोद्वेगतप्यति नसुखंसुस्थिरोनारीयावद्यत्नंनपापहम् शुक्रोवाच कस्मिन्यत्नकृतेतात
महापापैर्विमुच्यति कथयस्वप्रसादेण कृपास्तियदितेमयि। भृगुवाच। श्रुणुवत्ससमासेण परंगोप्यमतंहियत् यस्याश्रये सुखासर्वाः प्राप्यतिविविधांगना
कांश्यपात्रेघृतंगुप्तः प्रचुरंद्रव्यभूषणम् आच्छादितंस्वेतपट्टैरोचार्याय:प्रदापयेत मन्त्रजाप्यतदर्थेवै दानपात्रादिजोत्तमः। तत्रमंत्र। ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं
शंकराय सर्वापतिहरायः श्रीशिवायतेनमः ममयजमानस्यपूर्वजन्मकृतघोरपापतापंनाशयः २ सर्वसुखसिद्धिप्रदाय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐइन्दुलक्ष
प्रमाणेनअनुष्ठानविधिर्यथा शुचिस्थानेजपेद्भक्त्याःसर्वपापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेणसर्वसौख्यसमागमः सर्वकार्योपिसिद्धयन्तिमनेच्छाबहूपूजितम्
दानमंत्रादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते मंगलंविविधोत्साहोधनपुत्रादिजैरपि गृहक्लेशविनश्यन्तिपत्यरत्यन्तवल्लभा दिनेदिनेमहत्तेजोसुपुण्यात्सर्वसम्पदा

स्त्री०

६५

जन्माब्देद्वितियेवर्षे वा नान्नवृद्धिदिने दशनोत्पतिजाकष्टं रुदन्तीभयविह्वला पुनश्शांतिसुयत्नेन तातमातसुखंलभेत् भ्रातजन्ममहोत्साहो तातपुण्येण
भूतलेभोगाप्रवैभवोवृद्धिवस्त्राभरणैंसुशोभिता बालक्रीडाविशेषेणसुहास्यश्चरुरोदितीवह्नि पंचवेदाब्देऋतुवर्षावधिक्रमात् मासेमासेसुखंजातं भोगमैश्वर्य
नूतनम् तातःमहत्वेण सुपुण्यंफलदोमहान् मंगलंवर्चयागेहो नित्यमेवप्रकाशिता शरीरेजायतेकष्टं ज्वरतत्त्वृणादयः पुण्याच्छांतिसुखंनित्यंविस्तृतिं
सर्ववैभवाः नगाब्देव्योमचन्द्रेतुगृहकार्यविचिन्तनम् विद्याभ्यासरताकिंचिच्चञ्चलाश्चपलामतिः शिशुणांसंगमेप्रीतीक्रोधेणतप्यतिस्वयम् पतनाज्जायते
कष्टंज्वरार्तोवारिजभयम् सर्वमेवसुयत्नेन शांतिभूयातसुखंलभेत् सुसंगाद्दानपंत्रेण भाग्यपात्रीप्रशंसिता इन्दुसोमाद्धमारभ्यः शरचन्द्रांतरेतथा उद्वाहं
सुमहोत्साहो कुलकीर्तिमहत्वंपि रूपयौवनसंपन्ना वस्त्राभरणैःशोभिता भोगाप्रवैभवोवृद्धि पतिप्रेमविवर्द्धिनी स्वकृत्यकुशलाबाला महेश्वर्यप्रकाशिणी
नानाकार्यप्रबंधेणशोभितागेहभूषणा रसचन्द्रगताब्देतुविंशवर्षावधिक्रमात पुण्येच्छापूजितोनित्यंपतिपुत्रात्मजादयः मंगलंविविधोत्साहोगृहंयेनप्रका
शिता मानकीर्तिविशेषेण महत्वश्चपदेपदे सर्वकष्टक्षयंनित्यंसुपुण्यंलाभदोमहान् प्रतापभोगमैश्वर्य सर्वमेवप्रशंसिता शशिपक्षगतेवर्षे व्यालपक्षक्रमादितः
सुतापुत्रसमायुक्ता पत्यरत्यंतवल्लभा दम्पत्योरल्पजकष्टं दानमन्त्रेणशांतये पूर्णायुसुखमेधत्तौ भाग्यवृद्धिसुयत्नतः नन्दनेत्राद्धसंप्राप्यः वेदरामसुवत्सरे
तयोरन्तमहोत्साहोउद्वाहादिव्ययोमहान् कुलकीर्तिमहत्वेण सद्व्रतासुप्रशंसिता विवादकलहारिष्टंविविधोदुःखकारणं वैधव्यादिमहादोषंसुयत्नेनक्षयं
सदा पौत्रजन्ममहोत्साहो शताद्धंवत्सरावधिः तीर्थयात्राव्रतंपुण्यं कृत्वासर्वार्थसिद्धिदम् महत्वमधिकंलोके प्राप्यतिपुण्यमाश्रये भूमिलाभविशेषेणप्रजा
वृद्धिसुविस्तरात मुनिपश्चाद्धमारभ्यः ज्ञात्वाप्राणाहरिदशा तेभ्यःसंरक्षितस्यापि नदाध्यायविधानतः छायापात्रान्नदानेन सर्वावाधाविनश्यति पुत्रपौत्रोदय
सर्वाराज्ञाकारीसुखप्रदा महेश्वर्यप्रतापेणसाफल्यंमानुषीवपुः त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंनिस्फलंजन्मपत्रिका ह्य तस्मात्कारणात्पूर्वेपापहंपुण्यमाचरेत् प्रतियत्न
सुखोत्साहोनंदव्यालाद्धजीवती प्रपौत्रंजन्मतोलोकेकुलेच्छापिनिवृत्तती मासेभाद्रपदेशुक्लेनिधनंसर्वपूजिताकुलेप्रशंसिताचापिप्राप्यतिहीशुभांगतिपति
व्रतासुधर्मात्मावरंसर्वेप्सितंलभेत् ईश्वरंकृपयात्काव्यमहाराज्ञीवसाभवेत् पुनःस्वर्गगताबामापुण्येकिंचिन्नदुर्लभम् एवंपुण्यपरंतत्वंसुज्ञातव्योहीनिश्चितम्

सर्वखेटेष्टम.नेन योगोयंसुखकारकः एतद्योगोद्भवाबाला सर्वसौख्याधिकारिणी शुभलक्षणसम्पन्ना सुपुण्यात्मादयामयी कोमलांगोसुसद्रूपा दिव्या
लंकारभूषिता सर्वकार्यसुकुशला स्वगृहेसुप्रशंसिता तातमातपरंप्रीती पतिभक्तिपरायणा नानाकार्यप्रबंधेण राजतेगेहसम्पदा पूर्वपापाद्भवोकष्टं
अल्पमृत्युमहद्भयम् पुत्रसौख्यमहाविघ्नं पतिरत्यंतक्लेशिता प्रायश्चित्तमहादानं सुपुण्याद्रक्षणांसदा तेनसर्वसुखंनित्यं राज्ञीवंसर्ववैभवाः प्रकाशो
विपणीभूयाद्दासदासिश्चमोदिता यत्रदृष्टिगतंतत्रः सुखसौभाग्यदर्शितम् सिद्धंतिसर्वकार्याणि दिव्यरत्नैःसुवेष्टिताम्सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा
अयत्नेपापजंकष्ट भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा ॥ शुकोवाच ॥ कथयस्वमहायोगिन पूर्वपापस्यकारणम् येनक्लेशाश्रयोलोकेवनितापुण्यरूपिणी ॥भृगुवाच॥
श्रृणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम् पूर्वजन्मान्तरोगाथा येनदुःखाधिकारिणी पुराविप्रकुलेवत्सः जातोयंपुण्यभाजिनी दानधर्मप्रभावेण
सर्वसौख्यान्वितोभवेत कुसंगाद्विशयाशक्ता मतिकामेणमोहिता पतिराज्ञानमणयंति गृहत्यक्त्वादुराबृत्ति तीर्थयात्राविशेषेण नित्यंकृत्वामनेच्छितम्
सर्वद्रव्यक्षयंकृत्वा पतिरत्यंतदुक्खदा क्लेशितंशापितस्तेन त्रिजन्मदुक्खितोमहान् तेनपापाश्रयोनारी एतजन्मेतिदुक्खिता प्राप्यतिविविधंक्लेश
पुण्याभावेहिभूरिशः तद्यत्नसप्रवक्षामि प्रायश्चितक्रमेणवै शुद्धहेमकृतोपत्रंविस्तृतंसुनगांगुलम् शुद्धितंसुविधानेन रामकोणमनोहरम् लेखयेद्रक्तगंधेण
पतिदेवसुमूर्तिमान् शांकरीमुद्रयायुक्तो स्वेतपट्टेणवेष्टितम् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे महेशंभक्तिभावतः पूज्येत्सुविधानेन यथाविभवविस्तरात तदग्रे
जापितामंत्रं शशिलक्षंसुभक्तितः ॥ तत्रमन्त्रः ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ह नमः शंकराय पूर्वजन्मान्तरार्जित शापपापंहराय सर्वसौख्यंवरदाय पतिदेव
प्रसन्नायभद्रंकुरु२स्वाहा हंशंश्रींक्लींह्रीऐंओं सावित्रीजापयेद्भक्त्या आपदुद्धारकंतथो आवाह्य सर्वदेवाणां पूज्यंविभवविस्तरात यज्ञान्तेमूर्तिसंकल्पं
शैयादानादियत्क्रमः आचार्यायःप्रदातव्या आशिर्वादञ्चग्राहयेत ईश्वरंभक्तिभावेण विप्रभोज्यंसुयत्नतः एवंसर्वविधानेन कृत्वातन्त्रमुदारधिः सर्व
पापविनिर्मुक्ता वनिताभाग्यभाजिनी नित्यंसर्वसुखंलब्धवा पतिपुत्रधनादयः सिद्धन्तिःसर्वकार्याणि प्रकाशंपुण्यजोमहान् राज्ञीवंराजिताभूमौ
सफलं जन्मभूतले पुत्रभाग्य महत्वेण सुप्रसिद्धाः सुपूजिता एवंपुण्या श्रयेनित्यं फलंसर्वेप्सितंभजेत अथाद्यञ्च समासेण कथायाः श्रृणुभार्गवः

जन्माब्देनेत्रवर्षान्तंदिवेमासेसुखंगता शरीरेजायतेकष्टंमृतछायाश्चविह्वला किंचिद्दानादियत्नेनश्रेयोमानंसुखोत्सवम् रामाब्देबाणवर्षेचबालावृद्धिर्यथा
क्रमः वादहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ामनोहरा व्रणविस्फोटकोव्याधी दन्तबाधाविरेचनम् तातजन्ममहोत्साहोकुलेवृद्धमृतोत्सवम् पुण्ययत्नादितोनित्यं
सर्वकष्टविनाशनम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि तातमातसुखाकरी ऋतुवर्षेचनन्दाब्दे तयोरन्तसुखागमः गृहकार्यरताबाला क्रीड्यतिविविधंतथा व्ययोतात
महच्चिंताकुलकीर्तिविमोदिता पूर्वंयत्नसुपुण्येण कृत्वाभाग्योदयंमहत् व्योमेन्दुवर्षमारभ्य यावद्वेदनिशाकर तावत्कालावधिःपुण्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी

दिनेदिनेमहत्तेजो रूपयौवनमावृता भोगमैश्वर्यसंपन्ना नेत्रगेहप्रकाशिणी ज्वरार्तमुदरव्याधी सुपुण्याच्छांतिसर्वदा गतेपञ्चदशेवर्षेविंशवर्षावधिततः

सर्वप्सितंसुखंलब्ध्वा पुत्रजन्मविमोदिता मानकीर्तिसुखोत्साहो विस्तृत्तिसर्वसम्पदा यावद्यत्नंनकर्तव्यापापादुःखैर्वितप्यति अतस्तंशांतिपुण्येण सर्व
सौख्यप्रदोमहान् शशिपक्षाद्धमारभ्य शरपक्षाद्धमेवही पुत्रकन्यासुखाविष्टो धनधान्यैसुपूरिता प्रकाशोविपणीभूयात्स्वकुलेसुप्रशंसिता दिनेदिनेमहोत्सा
होव्ययलाभमहत्यपि रसनेत्रसुवर्षाणि व्योमरामक्रमादितः दानमंत्रसुपुण्येण भगवद्भक्तिभावतः सर्वाऋष्टक्षयंनित्यं मंगलंविविधोमहान् उद्वाहादि
महत्वेणकीर्तिरेवंसुविस्तरात् गृहेक्लेशविवादश्च सर्वशांतिसुयत्नतः सोमत्रिंशाद्धगेकाव्य बाणत्रिंशाद्धमेवही प्रजाद्रव्याधिकंगेहे नारीपुण्यप्रकाशिणी
दम्पत्योरल्पजंकष्टंसुखेविघ्नभयप्रदा महामृत्युञ्जयोजाप्यमापदुद्धारसंपुटम् स्वर्णमूर्तिमहादानंसप्तअन्नतुलान्विता मुक्तकष्टसुखाविष्टा कृत्वातन्त्रमुदारधि
पूर्णायुःसुखमेधावीमोदमानंगरीयसी रसरामाद्धगेकाव्यः चत्वारिंशावधिततः मनेच्छापूजितोनित्यं शुचिसाध्वीसुखाकरी तीर्थयात्राजपंपुण्यं कृत्वा
चापिदयामयी सुखैश्वर्यप्रकाश्यंति सुतभाग्योदयंमहत सर्वेच्छापूजितंलोके वर्षेव्योमशरावधिः पतिकार्यप्रबंधेण राजतेपुवैभवा विस्तृतिर्वंशजंलोके
महेश्वर्यसुविस्तरात् भयंकष्टविनश्यंति गृहशोभासुनूतनम् शशिपञ्चगतेवर्षे व्योमषष्टांतरावधिः पुत्रपौत्रैर्महत्वेण विमलंभाग्यशालिनी दासवाहनजैनित्यं
सुखंसर्वेप्सितंलभेत् दानधर्म्मरतानित्यम अजन्मस्यहेतवे तदान्तेवन्हिव्यालाब्दे पूर्णायुःकथ्यतोमुनिः धनपुत्रप्रपौत्रैश्चसुकीर्तिख्यातिनिर्मलं दानधर्म्मा
दितोनूनंगारेवसुसत्तमा अथाग्रेसुकुलोत्पन्नानृपसौख्याधिकारिणी सर्वेप्सितंवरंलब्ध्वा दानधर्मैःसुसद्व्रता इतिग्रंनिश्चितंपुण्यं चान्यथानोदिसुखम्

एतद्योगप्रभावेण बालसौम्यसुखाकरी दिने मासे सुखंजातं विस्तृतिंसर्ववैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण राजितागेहसम्पदा रूपयौवनसंपन्ना सुखसौभाग्यमाकरी तातमातसुखास्सर्वे पतिप्रेमविवर्द्धनी सिद्धन्तिःसर्वकार्याणिवस्त्राभर्णैःसुशोभना शरीरेजायतेकष्टं रामग्रल्पभयप्रदा पतनाद्दारुणोकष्टंपूर्वपापैर्विनश्यति तेभ्यसंरक्षितापुण्यं पूर्णायुसुखसर्वदा धनधान्यान्वितोलोके पुत्रकन्यासमावृता पतिभाग्यमहत्वेण शुचिसाध्वीप्रशंसिता कीर्तिश्चनिर्मलोभूता उद्वाहादिव्ययोमहान् ईश्वरंभक्तिभावेण साफल्यंमानुषीतनम् अनुष्ठानमहादानं सर्वपापैर्विमुच्यति धनसंतानयानश्च कुटुम्बेसुखसर्वयो क्लिश्यतिनात्र संदेहोयावद्यत्नंनपापहम् पतिपुत्रात्मद्रव्येण नसुखंसुस्थिरागृहे ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं कृयतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयोलोके शुचिसौभाग्यरूपिणी ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिप्रमाणेन पूर्वजन्मकथाधुना येनदुक्खाश्रयोनारी सुखेशोकंभयाकरी पुरानृपकुलेजाता ग्रामरामधनाधिपा महेश्वर्यप्रतापेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता मानेनमहताविर्धाक्रियतिग्रामसाशनम् चैकोद्विजवरोतत्रः रूपयौवनसुन्दरम् धर्म्मव्रतरतोनित्यं निवसदेवमन्दिरे कामबाणमनोद्वेगंतेनरूपविमोहिता दानपुण्यकृताराज्ञी द्विजलोभगृहागतः द्वयोप्रीतिमिहत्वेण तेनविप्रधनीभवेत बहुकालसुखंभुक्त्वा नारीयंप्रेमबन्धनम् विप्रचान्यस्त्रियप्रीतितस्यरूपेणविव्हलः ज्ञात्वायंसर्ववृत्तान्तंनृपवामातिरोषिता विप्रप्राणहरंतत्रतेनपापाश्रयोमहान् दानधर्म्मरतापूर्वंतेनसौख्याधिकारिणी द्विजघातमहापापं त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् एतज्जन्मंसुपुण्येण पापशांतिःसुखंभजेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्यप्रसादेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा पूर्वपापैविमुच्यंति येनसर्वसुखागमः ॥ भृगुवाच ॥ जाह्नवीतीरगोभूत्वाशुचितीर्थस्थललेथवा हेमपत्रप्रकर्तव्योबाणमुद्रासुशोभनम् लेखयेद्रक्तगंधेणद्विजचित्रमनोहरम् वष्णबाणमुद्रयायुक्तोसर्ववीर्यमलङ्कृतम् वेष्टितांपीतपट्टेणसंस्थाप्यकलशोपरि तदग्रेमंत्रमाराध्यः पूजयेत्सुविधिर्यथा भगवद्भक्तिभावेण प्रायश्चित्तरतोद्विजाः जाप्यमंत्रमिदम् ॐ एं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वरायविष्णुरूपाय महापुरुषायतनमः पूर्वजन्मकृतमहापापतापशमनायरक्षांकुरु२ स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं एं ॐ इतिमंत्रजपेल्लक्षगायत्रीसंपुटंकृता बटुकोमंत्रमाराध्यंसवदेवैसुपूजिता हवनंविप्रभोज्यञ्चकृत्वाविभवविस्तरात शैयादानादिकंसर्वंमूर्तिसंकल्पमाचरेत् एवंसर्वद्विजंतोष्यः आशिर्वादंसुग्राहिता एतद्यत्नप्रभावेणसर्वपापविनाशनम् पूर्णायुसुखमेधावी पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यमहत्वेणपुण्यंसर्वेप्सितःप्रदम्

आद्याब्देवह्निवर्षान्तंबालावृद्धिदिनेदिने मासेमासेमहोत्साहोगृहेमंगलमोदिता शरीरेकष्टसंपन्नादंतबाधाविरेचनम् सर्वशान्तिसुयत्नेन तातलाभसुख
प्रदम् वेदवर्षसमारभ्यमुनिवर्षान्तरेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चबालिकासुप्रियंवदा शिशुक्रीड़ामहत्वेणादृष्टिहास्यमनोहरा बृणावातोद्भवोकष्टंपतनाद्दारुणो
भयम् पुण्ययत्नादितोनित्यं सर्वशान्तिसुखंलभेत तातमातपरंप्रीती वस्त्राभर्णैसुशोभिता गृहकार्येसुकुशला पुण्यरूपासुशोभना व्यालवर्षेचसंप्राप्य
नेत्रसोमतथान्तरे तातमातमहच्चिन्ता व्ययलाभविवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो गृहेमंगलमेवच कीर्तिश्चनिर्मलीयुता कुलंतेनप्रकाशिता दिव्याम्बरं
भूषणाश्चप्राप्यतियपरंप्रिया पुण्ययत्नादितोनूनं प्रकाशोविपणीभवः सुयोग्यंपतिप्राप्यं गृहेसर्वसुखंलभेत त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमम्
भोगमैश्वर्यसम्पन्ना प्रकाशंपुण्यजोमहान् नानाकार्यप्रबंधेण गृहसम्पद्धिवर्द्धनी सर्वकार्येसुकुशला पतिरत्यन्तवल्लभा ऊनविंशेचविंशाब्दे शरनेत्र
तथान्तरे सर्वसौख्यसमृद्धिश्चभोगमैश्वर्यनूतनम् पुत्रकन्यासमाविष्टो दम्पत्योप्रेमवर्द्धनः मंगलंविविधोगेहे जायतेनित्यनूतनम् प्रकाशोविविधंनित्यं
यशमानविवर्द्धनम् सर्वशांतिःसुयत्नेन यद्रोगंदारुणोभयम् रसपक्षगतेवर्षे नभरामतथान्तरे सर्वेच्छापूजितंलोके पूर्वपुण्येणभूतले मंगलंमहदागम्य
महत्वमधिककुले व्ययलाभमहोत्साहो वनितापुण्यरूपिणी नसुखंप्राप्यतिपूर्णं यायद्यत्नंनपापहम् इन्दुरामाद्धमारभ्यः चत्वारिंशाब्धितः
पुण्ययत्नादितोनूनं विविधोमगलमहान् उद्वाहादि महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशंसिता दम्पत्य रत्यजंकष्टं पुनरन्ते महद्भयम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं
सप्तग्रन्तुलातथा कृत्वासर्वसुखंलोके परमैश्वर्य दुर्लभाः शरवेदाद्ध संप्राप्यः व्योमभल्लाद्धकेतया तयोरन्त विशेषेण भाग्यंसुमहतोदयम्
पतिलाभ महन्नित्यं रचनागेह सुन्दरम् पौत्रजन्म महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशसिता प्रतापमानमधिकं नित्यवैधर्म्म तत्पराः देवदर्शन तीर्थेषु
पवित्रंमानुषीतनम् पुत्रपौत्रसुखाःसर्वे नित्यवैधर्म्म कर्मणी श्रयः परिसुखंनित्यं नभषष्टान्तराद्धके सुकीर्तिख्यातिपुण्येण सर्वेच्छा सुखपूजिता
व्यालषष्टाद्धमायुष्यं किंवानेत्रनगाद्धकी प्राप्यति पुगतिःभा अनायासेतुनंत्यजेत् पुनर्द्विजकुलोत्पन्ना सतिसाध्वीपरंतया पुण्यैश्वर्यं लभेत्सर्वाः
सत्यलोके गमिष्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्यो मुनिदुर्लभः अयत्नेक्लिश्यतिपापं निस्फलं जन्मपत्रिका मद्भाग्यस्य परंतत्वं पुण्यमेव सुनिश्चितं

एवंग्रहेष्टमोनेन दिव्यभागासुलक्षणा मध्यमांगीसुसद्रूपा गौरवर्णामनोहरा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता तातमातसुखप्रदा नानाकार्यप्रबन्धेण राजतेबहुसम्पदा दासवाहनजैर्नित्यं मनेच्छाबहुपूजिता पूर्वपापेणसंतप्ता सर्वसौख्याधिकारिणी रोगशोकेणक्लिश्यंति अल्पमृत्युमहद्भयम् नानाचिंतातुरोभूमौ पतिपुत्रात्म चिन्तनम् नसुखंसुस्थिरोनित्य यावद्यत्नंनपापहम्पतनाद्दारुणोकष्टं विविधंदुक्खभाजिनी प्रायश्चित्तमहादानं मंत्रजाप्यंसुभक्तितः पापशान्तिःसुयत्नेन कृत्वासर्वसुखंभजेत् यावद्यत्ननकर्तव्या भोक्तव्यंकर्मजंफलम् ।।शुक्रोवाच।। पूर्वपापकथंतातः कथयस्वप्रसादतः केनशांतिः भवेत्तस्य श्रवणस्यममेच्छया ।।भृगुवाच।। श्रुणुवत्समसमासेण सर्वमेतद्वदाम्यहम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्ना नारीयंपूर्वजन्मनि शुभलक्षणसंपन्ना दिव्यरूपामनोहरा पूर्वपुण्यप्रभावेण राज गेहाधिकारिणी तन्नृपस्यद्वयोभार्या पुत्रकन्यासमावृता नित्यधर्म्मरतासाध्वी पतिभक्तिपरायणा मदोन्मत्तोपिसःसज्ञो चास्यरूपविमोहिता पत्नीपुत्र महत्क्लेशंदत्वायंनित्यतुष्यति तेनप्राप्यमहद्दुक्खधर्म्मभार्यामृतिंगता तस्यपुत्रोविताड्यंतिनारीयंपापमाश्रयः त्रिजन्मक्लिश्यतिनूनंएतज्जन्मेवितप्यति पापशांतिःनकर्तव्या सुखेविघ्नमहत्यपि गृहेक्लेशविवादश्च पतिपुत्रात्मदुःखिता अन्यैश्चविविधोदुक्खाः प्राप्यतिपापमाश्रयः तस्यशान्तिरनुष्ठानं कथयामित्वयाधुना स्वर्णपत्र विधानेन कृत्याविभव विस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुद्धस्थाने सुभक्तितः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तंसमारभेत् विष्णुशक्तियुतचित्र लेखयेद्रक्तचन्दनम् तत्रैवरा नपत्निश्च रामपुत्रान्वितं लिखेत् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे प्रायश्चित्तविधानतः पूजयेद्भक्तिभावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत ।। तत्रमन्त्र ।। ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवानाय आदिशक्तिसहिताय सर्वजगद्रक्षणायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जित पापं हरहररक्षां कुरु कुरु स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्षं सर्वदेवैः सुपूजनम् सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिक्षयंकरः क्षितिदान ततः कृत्वा शैय्यादानादिभिर्युताः हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंपुण्याश्रयोलोके पुनः सर्वसुखंभजेत् पतिपुत्रात्मजादीणां मनेच्छासर्वपूजिता शुचौपक्षेयथाचन्द्र योगस्तद्वत्महत्फलम् मंगलंविविधोनित्यं पूर्णायुः सुखसर्वदा प्रतिष्ठामानविभवाः सुप्रसिद्धाप्रशंसिता त्वयत्नेविपरीत्यंहि पापरूपेणदुःखजम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेत शुचिसुन्दरीसौभाग्यी रूपलंजनममानुषी

आद्याब्देबाणवर्षातंबाणाक्रीड़ायथाक्रमं मासेमासेसुखंजातं शरीरेकष्टसंभवाः रुदन्तिभयमाक्रान्ता भूतछायावितप्यति वृणबातोदरःव्याधी दन्तपीड़ा
विरेचनम् सर्वशांतिसुयत्नेन पतनाद्दारुणोभयम् पूर्वपापक्षयोकाव्यः तातलाभप्रदोमहान् भ्रातजन्ममहोत्साहो कन्यकाभाग्यभाजनी चञ्चलाश्चपलाबाला
दृष्टिहास्यमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति तातमातपरंप्रिया रसाब्देव्योमचंद्राब्दे तयोरन्तसु मंगलं भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यं भोगमैश्वर्यसंपदा तातचिंताहृदेगुप्तं
कुलबधुविरोधिता किंचिद्दानादिमंत्रेण भगवद्भक्तिभावतः श्रेयोमानंप्रतिष्टाच मंगलंमहदागतः गृहकार्येसुकुशला कन्यकाशुचिलक्षणा इन्दुचन्द्राब्द
मारभ्यः शरचंद्राब्दमेवही भोगाप्रवेभवोवृद्धिवस्त्राभर्णैसुभूषिता रूपयौवनसंपन्नासर्वसौभाग्यरूपिणी पतिप्रेमविवर्द्धतिगृहकार्येसुकौशला यद्रोगंजायते
देहोसर्वशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिततः पुण्यैश्वर्यमहत्वेण मनेच्छावहूपूजिता कष्टञ्चमहतोभूयात्पुनरानन्दमंगलम् पुत्रकन्यासुखा
विष्टं दम्पत्योप्रेमवर्द्धते गृहक्लेशविनश्यति लाभवृद्धिःसुयत्नतः अयत्नेक्लिश्यतिबामा सुखेशोकसमागमः एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेद
विंशैकोपञ्चविंशाब्देसुपुण्याद्भाग्यभाजनी पतिपुत्रात्मद्रव्येणतुष्यतिविविधंगृहे विस्तृतिर्वंशजंनित्यंसुप्रकाश्यंतिभूतले मंगलंविविधोत्साहोयशमानवि
वर्द्धनम् अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् रसनेत्राब्दत्रिंशेतुपतिलाभविवर्द्धनम् कुलकीर्तिवृहन्नित्यंरिपुवोदासवच्चरेत् तुष्यतिमिष्टवाक्येणपितरंविप्र
साधवाः तीर्थयात्राजपपुण्यदंपत्योमोक्षसाधनम् शशिरामाब्दसंजातंशररामतथांतरे उद्वाहादिमहोत्साहोकुलंचातिप्रशंसिता अयत्नेविपरीत्यंहीपूर्वकर्म
विपाकजम् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसुखार्थोपुण्यमाचरेत् वांच्छापूर्तिप्रजायेत तपतेजोमहत्यशः रसेवन्हिसुवर्षाणिव्योमचत्वारिवत्सरे तयोरन्तर्महत्वेणसफलं
मानुषीतनम् मनेच्छापूजितासर्वेकुलवृद्धाप्रशंसिता रामवेदगतेवर्षेगौत्रजन्ममहोत्सवं पूर्वयत्नेनकर्तव्यानिस्फलंजन्मपत्रिका सून्यपञ्चावधिकाव्यपुण्यतीर्थे
व्ययोमहान् अल्पमृत्युभयंघोरंवर्षेरामशरांतरे तेभ्यःसंरक्षितापुण्यंदीर्घायुःतत्रमानुषी शरषष्टमवर्षाणिप्रपौत्रंजन्मभूतले ग्रामभूमिधनास्तिञ्चबलहानिरुज
क्षयम् मंददृष्टिभवेद्रात्रौहरिभक्तिसुतत्परा पुत्रपौत्रमहाभागीसतोष्यंवृत्तिशातलः नगव्यालगतेवर्षेपूर्णायुःकथितोमुनिः निधनजायतेतस्यमाघमासेशुचौ
दलेसद्गतिप्राप्यतिवामासुप्रसिद्धप्रशंसिता अग्रजन्मेसमुत्पन्नानृपगेहेसुधर्मिणी धर्मेणेवप्रभावेणयशमानमहत्पदम् एवंसर्वसुखनित्यज्ञातव्योपुण्यकारणम्

सर्वखेटेष्ठमानेन कन्यकासौम्यसुन्दरी गृहकार्येसुकुशला सत्यवृत्तिसुलक्षणा तातमातपरंप्रीती पतिप्रेमविवर्द्धनी नानाकार्यप्रबंधेण सुखसौभाग्य रूपिणी प्रकाशोविपणीभूयात्महवज्ञपदेपदे भोगमैश्वर्यसम्पन्ना दासदासिश्चवाहनम् दिव्याम्बरधरोबामा भूषणंविविधोमहान् प्रजावृद्धिसुखंनित्यं पुण्यारिष्टविनाशनम् मंगलंविविधोत्साहो जायतेनित्यनूतनम् कुलवृद्धमहत्कार्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता दानमंत्रसुपुण्येण सर्वेच्छापूजितोभुविः यन्त्र हष्टिगतंतत्रः विजयोलाभभूरिशः पुत्रकन्यासमायुक्ता विमलंभाग्यदर्शना पापकर्म्मकृतेबाधा सुखेविघ्नमहत्यपि कुलेविघ्नमुपाधिश्च पतंतिशोकसागरे कष्टापत्तौविशेषेण भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा नसुखंसुस्थिरोगुणं यावद्यत्ननपापहम् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतदारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयो नारी कथयस्वमहामते ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिसमासेण विचित्रंकर्म्मकारणम् विप्रवंशोद्भवापूर्वे वनितापुण्यरूपिणी सुप्रसिद्धप्रसन्नात्मा पतिरत्यन्त वल्लभा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दासदासिश्चवाहनम् युवावस्थाविशेषेण विषयाशक्तमानुषी किंकरैर्जायतेप्रीती कामेणहृतचेतसा बहुकालरतिःसौख्यं रमतिपापमाश्रयः स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोषितंशापितोमहत नैवशांतिःभवेत्तत्रः शापपापदुरासदम् यावच्छान्तिर्नकर्तव्या एतज्जन्मेभयप्रदा क्लिश्यतिविविधोवामा सुखेविघ्नभन्तिही ॥ शुक्रोवाच ॥ केनशांतिःभवेत्पापं पतिशापोतिदुस्तरम् कथयस्वमहायोगिन्यदितेकृपयामपि ॥ भृगुवाच॥ व्रतदानमहत्पुण्यं शापपापक्षयंकरा तवस्नेहात्प्रकाशयामि यत्नंसर्वसुखप्रदा हेमपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने प्रायश्चित्तं समारभेत लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्तचंदनम् तत्रैवपतिमूर्तिश्च शापहंवीजयंत्रितम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि विष्णुपीठविधानेन पूजयेद्भक्तिभावतः तदोन्तेमन्त्रमाराध्यः द्विजाःसत्यव्रतेरताः इन्दुलक्षप्रमाणेन जपेदेकाग्रमानसम् ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वराय महापुरुषाय सर्वपाप हरायतेनम. स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं ॥ इतिमन्त्र ॥ सावित्रीसंपुटंनित्यं जपेदेकाग्रमानसम् यज्ञान्तेमूर्तिदातव्यं शैयादानादि भियुक्ता ईश्वराराधनेप्रीती नित्यंधर्म्मपरायणा सर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नप्रभावतः प्रकाशंविविधोत्साहो मंगलंहीदिनेदिने आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिनिवारणम् दानमन्त्रव्रतेणैव नित्यंसर्वसुखागमः अयत्नेपापजंदुक्खं क्लिश्यतिनात्रसंशयः सर्वेप्सितः प्रदोपुण्यं तत्वमेतत्परंसुखम् ॥

जन्मवर्षसमारभ्यः रामवर्षांतरेक्रमात् कन्यकावृद्धिमाप्नोतिगृहेमंगलनूतनम् शरीरेकष्टसंभूताचाल्पमृत्युमहद्भयम् दानमंत्रंसुयत्नेनसर्वशांतिःसुखंलभेत्
तातलाभमहोत्साहौविस्तृतिंपुण्यवैभवाः वेदाब्देमुनिवर्षांतंशिशुक्रीड़ासुखप्रदा किंचित्कष्टमनोद्वेगंशिशुप्रीत्तिविवर्द्धिता चञ्चलश्चपलाबालावादहास्यपरं
प्रिया मंगलंविविधोगेहेमासेवर्षेसुखंगता व्यालवर्षसमारभ्यः यावद्वषञ्चद्वादशे भोगाप्तवैभवोवृद्धिगृहकार्येसुचञ्चला वस्त्राभर्णैःसुशोभंतिपितुलाभव्ययो
महान् कुलकीर्तिवृहन्नित्यंउद्वाहेसुप्रशंसिता यद्रोगं जायतेकष्टंसर्वशांतिसुयत्नतः त्रयोदशाष्टचन्द्राब्देपुण्यसौभाग्यरूपिणी सर्वकार्यसुकुशलागृहसौख्य
विवर्द्धिनी रूपयौवनसंपन्नाराजतिगेहभूषणा पतिप्रेमविवर्द्धंतिभाग्यमश्वर्यसंपदा ऊनविंशतथाविंशेतथास्यात्पञ्चविंशके विस्तृवंशजपुण्यपुत्रकन्यासमा
वृता नानाकार्यप्रबंधेणगेहेतुसफलीकृता सर्वसौख्यसमायुक्तासुपुण्यैश्वर्यभाजनी त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंयत्कृतंपूर्वजन्मनि ऋतुपक्षाद्वमारभ्यः व्योमवन्हि
तथान्तरे पूर्वयत्नादितःपुण्यंसर्वसौभाग्यमाकरी व्ययलाभमहत्कार्येसुप्रसिद्धञ्चभामिनी प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वंजायतेकुले अल्पमृत्युभयंकष्टं आप
दुद्धारणंजपेत् अन्नदानमहादानं सर्वारिष्टविनाशनम् शशिवन्हिसुवर्षाणि शररामाद्वचांतरे उद्वाहोमंगलंकार्ये विविधंकीर्तिविस्तरात् प्रतिष्ठायाद्दशितत्र
गेहेवित्तंनताद्दशि व्योमवेदावधिर्वामा सर्वेच्छासुखपूजिता देवदर्शनजाप्रीती पवित्रक्रियतितनम् प्रतापमानमधिकं जायतेबहुविस्तरात् सर्वकार्याणि
सिद्धंति भूमिलाभसुनूतनम् अतःपरिसुखनित्यं शतार्द्धवत्सरावधिः पौत्रजन्ममहत्वेण सफलंजन्ममण्यति दानधर्म्मरताप्राज्ञी मंगलंविविधो
महान् गुणपञ्चगतेवर्षे पतिकृष्टभयंकरम् सर्वारिष्टहरंयत्नं महादानैःसुखंलभेत् वेदबाणगतेवर्षे तथाव्यालशराद्वके सर्वेच्छापूजितोपुण्यम् यत्ने
निस्फलंभवेत् शरीरेजायतेकष्टं मृत्युरेवभयंमहत् सप्तअन्नतुलादानं महामृत्युञ्जयोजपेत् औषधीदानमन्त्रेण सर्वव्याधिविनाशनम् ईश्वरंभक्तिभावेण
आयुवृद्धिसुखंततः ग्रहपञ्चमवर्षाणि ऋतुषष्टमगेतथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च सर्वेच्छातत्रपूजिता ईश्वराराधनंपुण्यमग्रजन्मस्यहेतवे कृत्वातेनसुपूज्यंति
महज्ञान्यपदाधिपा नेत्रलोकाद्वपर्यन्त पूर्णायुःतस्यनिर्णिता अनायासेतुनंत्यक्त्वा पूर्वपक्षेषुकार्तिके कुलकीर्तिविशेषेण महोत्साहंगृहेतदा महत्पुण्यं
सुयत्नेन चाग्रजन्मेच्छितंपदं प्राप्यतिनात्रसंदेहो सत्यलोकाधिकारिणी एवंपुण्यपरंतत्वं पुण्येकिंचिन्नदुर्लभं पुण्याश्रयेसुखंसर्वे पापकर्माद्वधोगतिः

स्त्री०
६६

सर्वखेटेष्टमानेन योगस्यास्यफलंशुभं शुभलक्षणसंपन्ना कन्यका शुचिसुन्दरी गौरवर्णाविशालाक्षा स्वल्पापत्याकृषोदरी सुस्वभावसुशीलाच सुभा
मिष्टभाषणी सर्वसौख्यसमायुक्ता क्रोधेणाकलहंकरा तातमातपरंप्रीती पतिरत्यंतवल्लभा यथादेहप्रवर्द्धेत: मोदमानंगरीयसी चञ्चलश्चपलावाला
गृहकार्येसुकौशला धनधान्यसमृद्धिश्च विविधंभोगतत्परा रूपयौवनसंपन्ना दृष्टिहास्यमनोरमा पूर्वपापकृतेवाधा विविधोद्वेगचिंतनम् सुखेविघ्न
मुपस्थित्य कलहंवादमन्दिरे क्लिश्यतिकष्टपीड्यन्ति बाणलंपदारुणोभयम पतिपुत्रात्मजाद्रव्यं नैवपूर्णसुखंभजेत् यावद्यत्नंनकर्तव्या पूर्वपापैर्वितप्यति
प्रायश्चित्तमहादानं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसम्पत्सुखाकरी पूर्णायुपुण्यमेधावी फलंसर्वेप्सितंलभेत अयत्नेविविधापत्तौ भोक्तव्यंही
स्वकर्मणा ॥ शुक्रोवाच ॥ पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वप्रसादत: कथंशान्तिर्भवेत्तस्य श्रवणस्ममेच्छया ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुवत्ससमासेण कथाया:
परमाद्भुतम् तवस्नेहात्प्रवक्षामी गोपनीयमतंमहत् पुराविप्रकुलेजाता विमलंभाग्यभाजनी सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दानपुण्यंसुखेच्छिता तीर्थयात्राव्रतं
धर्मद्विजदेवै:सुतुष्यति एकदासुमहापर्वे व्रतंयज्ञसमारभेत् तत्रैकोविप्रमायत: तपस्वीपुण्यभाजनम् दृष्ट्वाद्विजगृहेयज्ञं उपविश्यक्षुधातुर: बहुविप्र
समायात येषांयज्ञेनिमन्त्रणम् भुञ्जीतास्वगृहंजग्मुरतिथियंविनिर्मुख: यज्ञान्तेयाचनंकृत्वा तयोवादमभून्महत क्षुधातृषातुरोतप्तं दुर्वाक्येणातिक्लेशिता
तेनशापप्रभावेण नारीयंपापमाश्रय: भूयसंपिमहत्पापमतिथिविप्रनिर्मुख: नैवयत्नकृतावत्स: तत्रपापानुत्तये कालेनमृयतिश्चापि पुरास्वर्गसुखंभजेत्
समुत्पन्नाथभूभाग पुन:पुण्यावसानके पूर्वपापैर्वितप्यंति सर्वसौख्याधिकारिणी तस्यशांतिमहादान कथयामिविधिर्यथा तत्रहेममयंपत्र कृत्वाविभव
विस्तरात शुद्धितसुविधानेनद्विजचित्रसुलेखयेत् वेष्टितांपीतपट्टेणस्थाप्यंकुम्भघृतेवनम् पूजयेत्सुविधानेनमंत्रमाराध्यभक्तित: ॥ मंत्र ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
स:सर्वापच्चिहराय ब्रह्मरूपायनम: सर्वेप्सितंवरदाय ह्रां ह्रूं श्रींस: स्वाहा इतिमंत्रजपेल्लक्षं गायत्रीशापहंपुटम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या पात्रविप्रायधीमतां
सर्वविप्रै: सुसंतोष्यं मंत्रदीक्षां समर्पयेत् एवसर्व विधिकृत्वा पूर्वपाप विनाशनम् कुम्भमूर्ति महादानं मन्त्रसर्वार्थ सिद्धिदम् एतद्यत्न प्रभावेण
सर्वैश्वर्य समावृता: यत्रदृष्टि गतंतत्रसुखसर्वत्र भूरिश: पुत्रपौत्र प्रपौत्रश्च धनधान्यै: सुपूरिता इतियंनिश्चितंपुण्यं सर्वसौभाग्य कारण

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातचिंताहृदेगुप्तं लाभयोगविमन्दता नेत्राब्देवह्निवर्षान्तं दिवेमासेसुखंगता तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगल मेवच शरीरेजायतेकष्टं दन्तपीड़ाविरेचनम् ज्वरार्तमुदरव्याधी सर्वशांतिःसुयत्नतः चतुर्थेपञ्चमाब्देतु ऋतुवर्षावधिक्रमात् बालक्रीड़ारतोनित्यं कन्यकाशुभिलक्षणा दानमंत्रप्रयत्नेन सर्वसौख्यक्रमादितः व्रणंविस्फोटकोव्याधी स्वयमेवोविशान्तये गृहकार्यरतोनित्यं बालिकाप्रियवादिनी मुनिवर्षंगतेकाव्यः व्योमचन्द्रान्तरेतथा मासेवर्षे महोत्साहो पुण्यात्सर्वसुमंगलम् स्वकृत्यकुशलाबाला तातमातसुखप्रदा मंगलंचर्चशगेहो उद्वाहादि विचिन्तनम् पतनादिभयंकष्टं सुपुण्याच्छान्तिः सर्वदा इन्दुचन्द्राद्धमारभ्यः यावद्वाणनिशाकरे तावत्कालावधिर्नूनं सुखयुक्तनसाधिता भाग्यवृद्धि महत्वेण प्रकाशोविस्तृतिसदा मानेनमहताविष्टा भर्तारंसुखवर्द्धनी दिव्याम्बरधरोवामां नानाभर्णैर्विभूषिता प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिःक्रमात् रूपयौवनसंपन्नासर्वभोगसुखाकरो गर्भबाधामहत्कष्टं बालजन्मश्चमोदिता प्रकाशोदैवजोनित्यं पूर्वपुण्यफलप्रदा विशेकोपञ्चविंशाब्द तयोरन्तर्के मोदितः भोगाप्रवैभवोवृद्धिः पुत्रकन्यासमाव्रता मंगलविविधोत्साहो गृहयेनप्रकाशितम् अल्पायुदुःखदंयोगं पूर्वयत्नाद्विनश्यति महत्वंचाधिकंतत्रः मोदमा.गरीयसी ऋतुनेत्राद्धत्रिंशेच सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्चप्रजावृद्धिसुविस्तरात क्लेशकष्टागमोगेहे संशयाविष्टमानसं दानपुण्योप चारेण सर्वशान्तिसुखागमः इन्दुरामगतेवर्षे शरवन्हितथान्तरे उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिसुविस्तराद कुलेविघ्नमुपाधिश्च शान्तवृत्तिःप्रशंसिता चत्वारिंशावधिर्वत्सः मनेच्छासर्वपूजिता व्ययलाभमहन्नित्यं गृहनूतनसुन्दरम् तीर्थयात्राव्रतंदानं वनितापुण्यरूपिणी छायापात्रान्नदानञ्च कुलेसर्व सुखप्रदा सोमचत्वारिंवर्षाणि व्योमभल्लाद्धकेतथा मासेवर्षेसुखंजातं गृहेचापिसुपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहो सफलंजन्ममण्यति सर्वैश्वर्यसुयत्नेन मोदितापतिभिस्सह अयत्नेपापजंक्लेशं भोक्तव्यानाल्पजोवती तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूर्वपुण्यंसुभक्तितः कृत्वापापविनिर्मुक्ता नित्यंधर्म्माश्रयेसुखोः कीतिश्चनिर्मलीभूता रामव्यालाद्धमायुषम् प्रपौत्रंजन्मतोलोके विमलंभाग्यदर्शना ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौभाग्यरूपिणी अनायासेतनंतयज्यः मधुमासेशुचौदले सुकीर्तिविस्तृतालोके प्राप्यतिंचोत्तमार्गतिः अग्रजन्मसुपुण्येण जायतिमहतांकुले लोकेच्छोपूजितापुण्यं सुराज्ञीपरमांगतिः

स्त्री०

एतद्योगोद्भवावामा श्यामवर्णासुलोचना कोमलांगीसुललना मध्यरूपापतिप्रिया हीनगेहोपिजायन्ति सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्च पुत्र
कन्यासमावृता नानाकार्यप्रबंधेण राजतिगेहसम्पदा प्रकाशोविपणीभूयात्प्रतापेगुणगौरवम् मानकीर्तिमहत्वेण प्राप्यंतिहीदिनेदिने सर्वैश्वर्यसमायुक्ता
सुप्रसिद्धप्रशसिता उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् दासदासीसमायुक्ता वस्त्राभर्णैःसुशोभिता केचिज्जीवपरंप्रीती गुप्ताशक्तविचिन्तनम्
पुण्यात्सर्वसुखंनित्यं विस्तृतिंपूर्णवैभवाः पूर्वपापप्रभावेण आद्यन्तेदुःखसंभवाः वियोगोतातजंदुःखं वैधव्यातिमहद्भयम् क्लिश्यतिविविधंलोके रोग
शोकेणपीडिता सुखेदुक्खप्रदारेखा पूर्वपापेणदुस्तरम् यावद्यत्नंनकर्तव्या त्रिजन्मंतप्यतिमहा दानमंत्रंसुपुण्येण नित्यंसर्वंसुखंलभेत् ॥ शुक्रोवाच ॥
कथयस्वप्रसादेण पूर्वपापस्यकारणम् केनक्लेशाश्रयोनारी आद्यन्तेदुःखभाजनो ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम् पुराधर्म
रताप्राज्ञी वैश्यवंशसमुद्भवाः व्रतदानादितोनित्यं द्विजदैवान्सुतोष्यति महत्वमधिकंलोके बहुद्रव्येणगर्विता साकदाचिन्महापूर्वं तीर्थयात्राञ्च
कारयेत् तत्रस्नानमहादानं स्वपुण्येणातिगर्विता निशायास्वगृहंगन्ती तन्मार्गमुनिराश्रमम् तत्रैतद्रथचक्रेण गवीशोघातमृत्युदा तेनभूयोमहत्पापं
नैवशांतिश्चकारयेत तस्मात्पापाश्रयोभूया देतज्जन्मेतिदुक्खिता दानपुण्यव्रतेणैवः दिव्यांगीसुकुलोद्भवाः सर्वसौख्यान्वितालोके पूर्वंपापाद्भयभजेत्
॥ शुक्रोवाच ॥ केनशान्तिभवेन्नाथः गवीशोपापदुस्तरम् कथयस्वप्रसादेण यदितेकृपयामपि ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिमहाभागः यत्नञ्चास्य
सुखंकरः हेमपत्रप्रकुर्वीतः रामकोणादिगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण भागार्द्धेपूर्वशंकरम् शेषार्द्धेसुक्रमेणैवः गवीशोचित्रशोभनम् वेष्टितांस्वेतपट्टेण
प्रायश्चितविधिर्यथा संस्थाप्यकलशंपूज्यः भक्तियुक्तेनचेतसा मंत्रागघ्यंसुयत्नेन नन्दनन्दसहस्रकम् आपदुद्धारणंजाप्यः सावित्रीवीर्ययंत्रिता
॥ मंत्र ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय भूतानामधिपतयेनमः पूर्वजन्मांतरोर्जित वृषभदोषं हर हर स्वाहा शं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं
हवन मार्जनादिस्यं कृत्वासर्वविधिर्यथा मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या माचार्य्यायः प्रदापयेत यथाशक्तिद्विजंतोष्यः आशिर्वादश्चग्राहता एवंपुण्याश्रयो
नित्यं सर्वपापैर्विमुच्यति मनेच्छापुजितावह्नी पूर्णसौख्याग्रजन्मनि धनसंतानयानञ्च कुटुम्बेसुखवर्द्धनम् अयत्नेविपरीतंही अथाग्रेश्रृणुभार्गवः

जन्मवर्षोदरःव्याधी द्वितीयेदशनंरुजं रामाब्देवेदवर्षेच पीड्यातरुधिरःव्यथा दानमंत्रंसुयत्नेन भगद्भक्तिभावतः सर्वारिष्टक्षयोनित्यं मासेवर्षसुखंगता
शिशुक्रीडारतोवाला तातमातसुखप्रदा शराब्दव्यालवर्षान्तं तयोरन्तमहोत्सवम् मंगलंजायतेगेहो विस्तृतिसर्ववैभवाः भ्रातबंधुसमायुक्ता पितुर्लाभ
विवर्द्धनम् गृहकार्यरताकिंचिद्वस्त्राभर्णैःसुशोभिता नन्दाब्दबाणचन्द्राब्द सुखसौभाग्यवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिःसुनिर्मला माननीया
सुसद्रूपाबहुभूषणभूषिता प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वञ्चपदेपदे महादानादिमंत्रेणपूर्वपापैर्विमुच्यति अल्पमृत्युभयापत्तौसर्वव्याधिविनाशनम् ऋतुचंद्राद्ध
मारभ्यः विंशवर्षावधिततः महत्वमधिकंप्राप्य रूपयौवनमावृता पतिप्रेमविवर्द्धन्ति निजकार्येसुकौशला पुत्रजन्ममहोत्साहो कष्टचिंतासुखंलभेत्
पतिलाभप्रभावेण सर्वकार्येसुखागमः कलहारिष्टसंतप्ता यावद्यत्नंनपापहं चाल्पमृत्युभयंघोरं पतिपुत्रेणक्लेशिता इन्दुपक्षाब्दसंजातं शरपक्षाब्दमेवही
विस्तृतिर्वंशजंपुण्य पूर्वयत्नेसुरक्षिता धनधान्यसमृद्धिश्च भोगमैश्वर्यनूतनम् कुलेविघ्नमुपाधिश्च क्षत्रभंगविचिंतनम् ईश्वरंभक्तिभावेण सुपुण्यंलाभदो
महान् रसनेत्रमितेवर्षे व्योमरामान्तरेतथा व्ययलाभवृहन्नित्यं विवाहोमंगलंमहद् सर्वकार्याणिसिद्धंति महत्वंसुपदाधिपो कुलकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्ध
प्रशंसिता पतिपुत्रात्मजकष्टं सुपुण्याच्छान्तिसर्वदा शशिवह्निसुवर्षाणि शररामाब्दमेवही उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेविविधंतदा चत्वारिंशावधिर्वत्स
सुखेच्छासर्वपूजिता देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रंकिर्त्तितनम् दानमन्त्रमहादानैसुखंसर्वैप्सितंलभेत युगवेदमितेवर्षे पुत्रभाग्योदयंभवेत् दासवाहनजैर्नित्यं
प्रकाशोपुण्यजोमहान् पौत्रजन्मोत्सवंगेहे कुलतेजप्रकाशिता सर्वसौख्याब्धवोनित्यं यावद्रोमशराब्दके नानाकार्यप्रबंधेण गृहशोभासुविस्तरात् शरीरे
दारुणोकष्टंमुनिपञ्चमवत्सरे तत्रजोडमयेपत्रे कालमूर्तिसुपूजनम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं महादानञ्चकारयेत् छायापात्रान्नदानेन सर्वारिष्टनिवारणम् पुनः
सर्वसुखंलोके शरव्यालाब्दमायुषम् रामनामजपेनित्य दानधर्मेमतिस्थयेत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रैश्च वांछापूर्तिप्रजायते पापकर्मकृतेवाधा पुण्येविघ्नमुपस्थिता
तेनक्लेशाश्रयोनारी पूर्वपापेणपीडिता अतस्त्वानिनियम्याय शान्तयेत्सुखमिच्छति पूर्णायुः सुखसर्वाणि सुप्रसिद्धप्रशंसिता स्वल्पश्रमेतनंत्यक्त्वा
प्राप्यति गतिरुत्तमा पुण्याद्भाग्य महत्वेण सर्वत्रैव प्रशंसिता कर्माधीनं भवेत्सर्वं फलंयच्च शुभाशुभं एवंज्ञात्वा सुतत्वज्ञो सुखंचैवाग्र जन्मनि ॥

स्त्री०
७९

एतद्योगोद्भवाबाला शुचिसाध्वीमनोहरा शुभलक्षणसंपन्ना गृहकार्येसुकौशला कौमलांगीसौम्यरूपा मध्यभागाप्रियंवदा धर्मेणैवसहायेण सर्वसौख्या
धिकारिणी यथादेहप्रवर्द्धेतःविस्तृतिसर्ववैभवाः मासवर्षेमहोत्साहो तातकीर्तिबृहत्यपि विस्तृतिर्वंशजलोके सुविख्यातायमानिनी अल्पमृत्युभयंकष्टं
सर्वशांतिःसुयत्नतः दिव्याम्बरैसुशोभंति बहुभूषणभूषिता नानाकार्यप्रबंधेण स्वकुलेसुप्रशमिता रूपयौवनसंपन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी पुत्रपौत्रसुखासर्वं
दासदासिभ्रमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन पूर्वपापोविशान्तये सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा यावद्यत्नंनकर्तव्य सुखेशोकविचिंतनम् क्लिश्यति
त्रिविधोवामा पूर्वपापदुरत्यया ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि कथयस्वप्रसादेण दुस्तरोकर्मजंकथा ॥ भृगुवाच ॥ विचित्रांमद
माख्यानं श्रुणुवत्ससमासतः पूर्वजन्मान्तरोवामा शूद्रवंशसमुद्भवा द्विजसेवारतोनित्यं बहुकालसुखगता युवावस्थामदोन्मत्ता लोभेणहतचेतसा
केचिन्मत्रपरंप्रीती सर्ववार्ताप्रकाशयति द्विजगेहेमहद्द्रव्यं भूषणाविविधानिच दृष्ट्वातेषुहरंयत्नं चिंतयेद्बहुनित्यशः कदाचिद्दैवयोगेण सकुटुम्बाद्विजो
हिसा तीर्थयात्रासुगतव्या दासीयगेहसंस्थिता सर्वद्रव्यहरंतस्य पूर्वमित्रसमायुता दूरदेशेगमिश्यति यत्रकोपिनविद्यते द्विजतीर्थागतोगेहे शापं
दत्वातिदुखिता तेनपापाश्रयोलोके नारीविश्वासघातनी पुण्यमार्गेव्ययोद्रव्य ईश्वराराधनेमति भोगमैश्वर्यसंयुक्ता कचित्कालेसुखंभजेत् पुनः
पापाश्रयोलोके एतज्जन्मेतिदुःखता ईश्वराराधनंपुण्यं सर्वलक्षणसुन्दरी सुखसौभाग्यसंपन्ना पूर्वपापैर्वितप्यति अतस्तशान्तिहेत्यर्थं प्रायश्चित्त
वदाम्यहम् पूर्वपापक्षयंनित्यं येनसर्वसुखागमः हेमपत्रप्रकर्तव्या शुचिशुद्धमनोहरा लेखयेद्रक्तगंधेण द्विजमूर्तिसुशोभनम् ताम्रकुम्भेघृतंगुप्तो यथा
श्रद्धामहद्धनम् मूर्तितत्रैवसंस्थाप्यः पीतपट्टेणवेष्टिता पूजयेद्भक्तिभावेण वस्त्राभर्णैरलंकृतम् एतन्मंत्रमुखोच्चार्यः विधिवद्दानमाचरेत ॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रां
ह्रीं हूं व्यूं नमोब्रह्मणोभूतानामधिपतये पूर्वजन्मान्तरार्जित शापपापं हर हर स्वाहा व्यूं हूं ह्रीं ह्रां ॐ सावित्रीजापयेलक्षं मंत्रमे तत्तदर्द्धकम्
तदर्द्धं वटुकोमंत्रं तदर्द्धं धनस्यच जाप्यदान मिदंसर्वं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्ति भावेण सर्वसौख्य समागमः कार्याण्यपिच सिद्धन्ति
विस्तृतिं सर्ववैभवा पतिपुत्रात्म द्रव्येण तुष्यतिविविधोत्सवाः कष्टचिन्ता भयंसर्वं विलीयन्तेपि शत्रुवाः महत्त्वमधिकंलोके पुण्यतत्र ब्रवीमिते

प्रथमाब्देमहोत्साहो मंगलंगेहमाहगतः तातमातमहोत्साहो प्रपितुश्चततोधिकम् ज्वरार्तमुदरव्याधी भूतछायाश्चविंव्हला ततःशांतिःसुयत्नेन कन्यका
वृद्धिमाप्नुयात द्वित्रिवर्षान्तरोकाव्यः सुखदासर्वमंगलम दशनोत्वतिजाकष्टं ज्वरान्नासारकादयः छायापात्रान्नदानेन सद्यसौख्यमवाप्नुयात तातचिंता
समायुक्तोग्रीष्मेलाभसुखप्रदा मातृकष्टान्वितोभूयात्पुनरन्तेसुमंगलम चतुर्थेपञ्चमेषष्टेमुनिवर्षावधिःक्रमात् लाभश्चविविधोतातः गृहेमंगलचर्चिता शिशु
क्रीड़ारतोबाला निजकृत्यसुकौशला वृणाबातेनपीड्यंति पतनाच्चमहद्भयम् मंगलंकामयोगोपि संबंधेनप्रशसिता वस्त्राभर्णैसुशोभंति मोदमानंदिनेदिने
स्त्री दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वसौख्यसमागमम् सर्पवर्षसमारभ्यः यावद्वषश्चद्वादशे भोगाप्रवैभवोनित्यं वर्द्धतेपिनिशेषतत गृहकार्येसुकुशला सर्वसौख्यविवर्द्धनी
७२ उद्वाहोजायतेचास्यमोदवृद्धियथाक्रमः सुपुण्याच्चसुखंनित्यंकुसगात्क्लेशभाजनीईश्वरंभक्तिभावेणमनेच्छासर्वपूजितागुणसोमाद्धमारभ्यष्टादशसुवत्सरे
स्वकृत्यकुशलावामा बुद्धितस्यप्रकाशिता पतिप्रीतिविशेषेण कामक्रीड़ामनोरमा सुखश्चात्रविधोपुण्यं जायतेतत्रदीर्घता ऊनविंशतथाविंशे वह्निविंशाद्ध
मध्यमा मंगलंविविधोगेहे सुतापुत्रसमुद्भवं विदेशोगमनंभूयाद्दशाश्रेष्टफलप्रदा वेदविंशगतेवर्षे व्यालेपक्षतथान्तरे गृहलाभविशेषेण प्रजावृद्धिसुखप्रदा
सुप्रबंधसुयत्नेन सुखसर्वत्रवर्तते पापाच्छोकागमोगेहे पतिपीड़ाभयप्रदा औषधिदानमंत्रेण पुनःशांतिःसुखागमः स्वशरीरेमहाकष्टं प्रसूतंप्राणजायते
पूर्वयत्नमहादानं सुपुण्याच्छ्रेयभाजनी मंगलंविविधोनित्यंमानकीर्तिसुनिर्मला नंदनेत्रश्चात्रशाब्देवेदवह्निनथान्तरे व्ययलाभमहच्चापिउद्वाहादिमहोत्सव
सुशोभितेकुलंतेन गृहंचातिमनोहरो शरत्रिंशतिवर्षाणि व्योमचत्वारिमध्यमा चित्तचिंतातुरोभूयात्पुण्यंशांतिःसुखप्रदा स्वयत्नेविपरीत्यंहो फलमेतद्धि
जायते नेत्रवेदगतेवर्षे पौत्रजन्मसुयत्नतः सुखवृद्धिमहोत्साहो मासेवे सुखागमं व्योमबाणावधिवत्ससर्वेच्छासुखपूजिता आनन्दंक्लेशकार्यञ्च जातंकर्मा
श्रयोसदा ऋतुबाणगतेवर्षे पतिप्राणहरीदशा व्यालपञ्चाद्धमारभ्यः जायतेगेहविग्रहं द्विजदेवसुहृत्पूज्यं दशोश्रेयस्करीसदा चित्तचिंताविनश्यंति
दानधर्माश्रयेमतिः अतःपरिसुखासर्वेरसषष्टाद्धमध्यमम् रामनामजपेन्नित्यं दानादिमतितत्परा प्रतापमानमधिक सर्वदासुखसम्पदा व्योमपष्टाद्धगकिंवा
मुनिव्यालोद्धजीवति ईश्वरंकृपयात्पुण्यं फलंसर्वेसितंलभेत अग्रजन्मेसमुत्पन्ना सुप्रसिद्धधनाधिपा राज्ञीवराजतिभूमौ पुण्यतेजोमहत्यशम्

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंलाभदाभवः भोगमैश्वर्यसंयुक्ता सुकीर्तिख्यातिभूतले विप्रदेवार्चनेप्रीती तीर्थदेवालयेरति व्रतनेमरतावामाशुचिसाध्वीपतिव्रता सुशीलारूपसंपन्ना सबलाचमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति स्वजातिर्मानवर्द्धना सरुजंपीड्यतिपापं पुरायत्नात्सुखाकरी आलस्यंजायतेदेहो अंगवातेन पीडिता प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रसुभक्तितः सर्वत्रसुखदोकाव्यः मनेच्छातेनपूजिता अयत्नेमानसीचिंतानसुखंप्राप्यतिप्रवम पीड्यतिबहुपापेणाय कृतं पूर्वजन्मनि पतिपुत्रात्मकष्टञ्च नैवपूर्णसुखागमः रिपुवोक्लेशितानूनं हानिचिंतावलायसी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुखसाधनमाचरेत सर्वावस्थासुखंनित्यं विस्तृतिंसर्ववैभवाः पतिपुत्रतथापौत्रं प्रजावृद्धिधनागमः पूर्णायुःसुखमधावीसर्वापत्तौविनश्यति सौभाग्यंमहतोभूयात्पुणयोगधनाधिपा प्रायश्चित्तम भावेणनिस्फलंजन्मपत्रिका ॥ शुक्रोवाच ॥ किमसौदारुणोगापंजायतेपूर्वजन्मनि प्रायश्चित्तान्वितोसर्वकथयस्वप्रसादतः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुवत्सप्रवक्षामि परंगोप्यमतहियत् अन्तरप्रभवोगेहेनारीयंपूर्वजन्मनि सर्वसौख्यान्वितालोकेदानधर्मपरायणा मानकीर्तिसमायुक्ताक्रोधेणतप्यतिकदा कदाचिद्दुदैव योगेणतीर्थस्नानेगमिष्यति तदाचसुमहापर्वे पतिगेहमुपस्थिता धर्मव्रतरतोभूयाद्धेनुदानञ्चकारयेत स्नानंकृत्वाततःतीर्थान्नारीयंगेहमागता धेनुवत्स नष्टदुष्टथा येषांप्रेमसुपाल्यति क्रोधेणतप्यतिवामो श्रुततद्दानकारणम् विप्रगेहगमिष्यति कुवाक्येणातिधर्षिता धेनुवत्सागतागेहे धर्मवार्तानमण्यति ममधनुकथंदानंपतिरत्यतवादिता शापपापाश्रयोतेनएतज्जन्मेदुखावृता अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् कथयानिसमासेणविधितस्ययथाक्रमम् स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथावित्तसुविस्तरात धेनुवत्सान्वितोचित्रं द्विजभर्तासुशोभनम् वेष्टितारक्तपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि प्रायश्चित्तविधानेन पूजयेत्सु विधिर्यथा लक्षमंत्रजपेद्विप्राहरिभक्तिपरायणा ॥ मंत्र ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय सर्वपापंहराय महेशायशिवातेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापं हरहरश्रेयोमांदेहिस्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ गोपालस्तोत्रपठितंसावित्रीजाप्यसंयुता कुम्भमूर्तिप्रदातव्यावस्त्राभर्णै.सुशोभिताः एवंदानमहादानैराचार्याय सुतोषिता आशिर्वादंलभेत्तेन सर्वसौख्यप्रदोमहान् पूर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नंसुभक्तितः पुनःसर्वसुखंलोके विस्तृतिपुण्यवैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण सर्वसौभाग्य रूपिणी पुत्रपौत्रात्मजादीनां सर्वसाफल्यवैभवा प्रतापमानमधिकं सुकीर्तिख्यातिभूरिशः एवंपुण्याश्रयेनित्यं विमलंभाग्यभाजिनी

जन्माब्देवह्निवर्षान्तं मातकष्टसुखोत्सवम् मंगलंजायतेगेहेमासेमासेसुखंगता दन्तपीड़ाज्वरोतप्ते जायतेचविरेचनम् शरीरेकष्टसंपन्ना कन्यकादुःख
रूपणी किंचिद्दानादियत्नेन भगवद्भक्तिभावतः सर्वकष्टक्षयंलोके मोदमानंदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यं बालक्रीड़ासुचञ्चला तातलाभमहोत्साहो
सुखसौभाग्यवर्द्धनी वेदाब्देव्यालवर्षान्त विस्तृतिंसर्ववैभवाः गृहकार्यरताबाला वस्त्राभर्णैसुशोभिता उद्वाहंचर्चयागेहे तातमातविचिंतनम् रुज
चाल्पभयंसर्वं नित्यंशांतिसुयत्नत. पुण्ययत्नादितोर्नूनं विमलंभाग्यवर्द्धनी नन्दाब्देवेदचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमः भाग्यवृद्धिमहत्वेण विवाहोमंगलं
महान् वस्त्राभर्णैसुतोष्यंति कुलकीर्तिसुविस्तरात् पतिप्रीतिविवर्द्धन्ति रूपयौवनसंभवाः भोगाप्रवैभवोवृद्धि निजकृत्यसुकौशला प्रतापमानमैश्वर्यं
जायतेचदिनेदिने शरसोमाब्दमारभ्यः विंशवर्षावधिःतथा कुलवृत्तिप्रभावेण सुखसौभाग्यवर्द्धनम् अल्पमृत्युभयंघोरं पुण्ययत्नाद्विनश्यति प्रकाशो
विपणीभूयात्मजावृद्धिसुमंगलम् सुशोभितंगृहंतेन विमलंभाग्यशालिनो सोमपक्षगतेवर्ष शरपक्षाद्धमध्यमा कुलवृद्धिसुपुण्येण पुत्रकन्यासमायुता
व्ययलाभमहोत्साहो गृहेद्रव्यनसुस्थिरः पूर्वयत्नादितोर्नूनं पुण्यैश्वर्यविवर्द्धनम् दंपत्योरल्पजंकष्ट नश्यतेपिसुकर्मणा ऋतुपक्षाद्धत्रिंशेच तयोरन्तक्रमा
दितः किंचिच्छोकागमोगेहे पुण्योच्छांन्तिर्हिनित्यशः मंगलंविविधोनित्यं जायतेबहुनूतनम् मासेवर्षेसुखजातं पतिलाभविवर्द्धनम् इन्दुरामगतेवर्षे
चत्वारिंशाद्धकेतथा कुलकीर्तिवृहन्नित्य मुद्वाहादि व्ययोमहान् धर्म्मवृत्ति प्रभावेण सुप्रसिद्ध प्रशंसिता मनेच्छा पूजितंलोके पुण्यपात्री सुपूजिता
राजतिसुप्रबंधेण पतिसंगेसुखाकरी सोमचत्वारिवर्षाणी व्योमभलाद्धमेवही पतिपुत्रात्मद्रव्येण विविधंनित्यतुष्यति पौत्रजन्म विशेषेण सफलं
जन्ममण्यति महत्वंजायतेगेहे कुलवृद्ध प्रशंसिता ग्रामभूमि धनंलब्ध्वा पुण्यात्सर्व सुवैभवाः सोमपञ्चमवर्षाणि यावद्व्योम रसाद्धके तावत्पुण्य
सुखासर्वे मनेच्छा सर्वपूजितं अयत्नेविपरीत्यंहि भोक्तव्य कर्म्मजंफलम् तस्मात्सर्व प्रयत्नेन यत्नंकृत्वा सुखेच्छिता शतजीवी भवेद्वामा पूर्वपुण्येण
भूतले पुत्रपौत्र प्रपौत्रञ्च दिव्यरत्न धनादयः लोकेच्छा पूजितासर्वे रत्नसूय वसुन्धरा अन्तेकृश्यतनंवृद्धा पुण्यपात्री सुपूजिता अनायासेतनं
त्यज्यः सर्वत्रैव प्रशंसिता अग्रजन्म सुपुण्येण चोत्तमकुलसंभवाः महाराज्ञीवसोवाला फलंसर्वेप्सितंलभेत् एवंसर्व सुखंलोके ज्ञात्वापुण्याश्रयोकृते

स्त्री
७३

एवंसर्वग्रहायत्र: फलंतत्रविनिश्चितम् सौम्यसाध्वोसुसद्रूपा बालिकाशुचिसुन्दरी सर्वैश्वर्यसुसंपन्ना कोमलांगीदयान्विता गृहकार्येसुकुशला तातमात परंप्रिया वस्त्राभर्णैसुशोभन्ति वनितापुण्यरूपिणी दानमंत्रंसुयत्नेन पूर्वसंरक्षितायदि प्रकाशोविपणीभूयात्पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यप्रबंधेण नित्यंसौख्यसमागमः राज्ञीवंराजिताभूमौ हेमरत्नविभूषिता राजतिसुप्रबन्धेण पतिप्रेमविवर्द्धनी सर्वापत्तौविनश्यंति यद्रोगश्चमहद्भयम् दासवाहन जैर्नित्यं दम्पत्योर्मोदवर्द्धनः भूमिलाभविशेषेण गृहंचातिसुशोभनं नैववाक्यस्मृतिर्यत्र: नैवयत्नंभविष्यति कष्टंभोक्तव्यपापेण यत्कृतंपूर्वजन्मनि नानाकष्टागमोगेहेविविधोद्वेगपीडिता प्रजावृद्धिर्वितष्यंतिरल्पायुसुखखंडिता पापादुक्खाश्रयोभूयात्सर्वसौख्याधिकारिणी॥ शुक्रोवाच॥ कथंतद्दारुणो पापंवनिताक्लेशकारकः पूर्वजन्मभवेत्तातः कथयस्वक्रमादितः ॥ भृगुवाच ॥ संक्षेपात्तेनिगदितं पूर्वपापस्यकारणम् परंगोप्यमतमेतत्सज्जनानन्दहेतवे पुरानृपकुलेजातं मानुषीशुभलक्षणा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दिव्यरूपाधराधिपा राजतिस्वप्रबन्धेण पतिहीनयुवावयं कामोद्वेगेणातप्यति चिन्तयन्ति महत्यपि दानधर्म्मव्रतंपुण्यं कृत्वाकामेणापीड्यति द्विजपुत्रैर्भवेत्प्रीतौ कामाशक्तपरस्परम् रमंतौविविधंक्रीड्य रुभयोप्रेमवर्द्धनम् गर्भपातमहत्पापं कृत्वातत्र महत्यपि तेनपापाश्रयोलोके कष्टधात्रीत्रिजन्मनि क्षीणायुदुक्खसंतप्ता यावद्यत्नविनिर्मुखाः अतस्तंशान्तिहेत्यर्थं कृत्वातन्त्रसुभक्तितः ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुचितीर्थैशुभस्थले स्वर्णपत्र प्रकर्तव्या शुद्ध विभव विस्तरात् लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेत्सुविधिर्यथा बालचित्रलिखेत्पृष्टे पद्मगर्भसुशोभनम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशेततः पूजयेद्भक्ति भावेण प्रायश्चित्तविधानतः मन्त्रमाराध्ययत्नेन भगवद्भक्ति परायणम् ॥ तत्रमंत्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं नं नारायणाय आदिशक्तिसहितं स्वभक्तान्प्रतिपालकाय सर्वेश्वरायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जित सर्वपापं हर हर क्लीं शं कं हं स्वाहा इतिमन्त्रजपेलक्षं सावित्रीसंपुटंकृता हवनंविप्र भोज्यञ्च विधिवत्मंत्र दक्षिणा मूर्तिदानं प्रकर्तव्या वस्त्राभर्णै सुश्रद्धया आचार्य्याय प्रदातव्या तोष्यंतिही सुसद्व्रता आषिशं ग्राहयेत्तात्र: सर्वपाप क्षयंभवेत् नित्यंसर्वसुखागम्य विस्तृतिं पूर्णवैभवाः दानमन्त्रं सुपुण्येण रत्नसूर्यवसुन्धरा सर्वसौख्य प्रदोयत्नं गोपनीयं परंतपः सर्वविघ्नक्षयंपुण्य मीश्वराराधनेमतिः तवस्नेहात्प्रवक्षामि स्वर्गलोकेषुदुर्लभम्

प्रथमेद्वितीयाब्देषुकिंचित्कष्टैःप्रतप्यति उरुपीड़ासमुद्भुतदंतरोगप्रजायते मातृचिंतान्वितोभूयात्कष्टशांतिःसुयत्नतः तृतीयेपञ्चमेवर्षे तातयोगमहोत्सवम्
मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येणशांतये वृणबाधाप्रपीड्यति अकस्माच्चमहद्भयं दानमंत्रसुपुण्येणसद्यशांतिःसुखंलभेत रसाब्देनंदवर्षेचतयोर्मध्येयथाक्रमः
विद्याभ्यासरताकिंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंतिविवाहार्थेचचिंतया संबंधोमंगलंप्राप्यपितुरंधर्मतत्परा दशमैकादशेवर्षेतातलाभव्ययोमहान्
हर्षवृद्धिसुखोत्साहोक्रीड्यतिसखीभिस्सह प्रारंभेद्वादशेवर्षेनथापञ्चदशांतरे कामेच्छाप्रवलोयांतिपतियोगेसुचिंतनम् रूपयौवनसपन्नावस्त्राभर्णैसुभूषिता
प्रायश्चित्तंसुयत्नेनसुखंसर्वत्रभूतले द्रव्यलाभविशेषेणमनेच्छाबहुपूजिता प्राप्यतेषोडशेवर्षेव्ययोमनेत्राद्धमध्यगे दंपतिसुखमेधत्ते प्रजावृद्धिसुमंगलं स्वकृत्य
कुशलात्रामामोदमानंदिनेदिने व्ययश्चमहतोगेहेक्षत्रभंगस्यचिंतनं चैकविंशत्रिविंशाब्देपञ्चविंशतिकेतथा भाग्यवृद्धिभवेत्पुण्यं दशाश्रेयस्करीभवेत् सर्व
सौख्यसुयत्नेनणतिपुत्रात्मजादयः रसविंशतिवर्षाणिव्ययोमवह्निनथांतरे नानालाभव्ययोनित्यंसुचिरं ज्ञातापतिप्रिया मंगलंविविधोकाव्यःसुखसाधनतत्परा
देवतीर्थेपरंप्रीतीपवित्रमानुषीतनम् इन्दुरामगतेवर्षेयावत्पञ्चगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नून मोदतिबहुविस्तरात मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिमहोत्सवम्
उद्वाहोमंगलंकार्ये यशेतसाधनेमतिः संपदासंचयेनित्यंसुकार्येचव्ययस्तथा कुलकीर्तीविशेषेणमाननीयामहज्जनैः ईश्वरंभक्तिभावेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता
व्यालवह्निगतेवर्षेजायतेश्चैकविग्रहं आलराशिमनुक्रम्य यावद्घटगतेरविः सर्वापत्तौविनिर्मुक्ता दानमंत्रसुभक्तितःमासेवर्षेसुखंनित्यं रामचत्वारिवत्सरे
ऋतुवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् अजाद्वणिजगेभानुः पुत्रकष्टंचकोमतः आपदुद्धारणोजाप्य सर्वकष्टविनश्यति अन्यमासेसुखंनित्यं बनिता
भाग्यभाजनी लाभश्चविविधोगेहे यावच्छून्यरसाङ्कके धनसंतानयानंच पुत्रपौत्रसुखाकरी मनेच्छापूजितंसर्वे पुनरप्याहिनूतनम् धर्मवार्तासदांवृत्ति
साधुसेवासुतत्परा नगषष्टगतेवर्षे परवैराग्यचिंतनं प्रपौत्रंजन्मतोगेहे सर्वेच्छालोकपूजिता यावन्नंदरसाब्देतु बातबाधाप्रपीड्यति पुनःकष्टविनश्यंति
भजनानंदसर्वदा आयुवृद्धिःसुपुण्येण भूयान्नन्दनगाङ्ककी अजराशिगतेभानुः निधनपूर्वपक्षके महोत्साहंगृहेतत्रः सर्वत्रैवप्रशंसिता पुण्याद्भाग्य
महत्वेण गतिरेवसुनिर्मलम् जन्मतिमुकुलंपुण्योत्तथैवाग्रेद्विजन्मनि सर्वेप्सितंलब्ध्वा सर्वसौख्याधिकारिणी मानेनमहताविष्टा पुण्यतत्वमहत्पदम्

मर्वस्वेटेष्टमानेन नारीबुद्धिमतीमती विद्याविनयवान्साध्वीदाताभोक्तासुकौशला गृहकार्य्यैरतोनित्यंसुखरूपासुलक्षणायथादेहप्रवृद्धितः धनसंपत्समृद्धिमान्भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेनित्यनूतनम् कामक्रीडाविशेषेणरमयन्तिपतिस्सह पितृप्रतिष्ठितंचापिमानकीर्तिमहत्सुखम् चन्द्रजीवपरंप्रीतीकदाचिच्चिन्तनमहत नानाकार्यप्रबन्धेघोरराजतेगेहसम्पदा पतिपुत्रसुताद्रव्यंसर्वसौख्याधिकारिणी दिव्याम्बरधरोबालाबहुभूषणभूषिता सुखेशोकप्रदारेखासंभवोपूर्वपापतः नानाचिंतातुरोभूयात्मनस्तत्तश्चक्लेशिता धनपुत्रसुभर्तारंनधुखंसुस्थिरोगृहे वियोगकलहोदुक्खविवादंस्वजनैस्सह स्वसंकल्पविकल्पोपि बहुविघ्नद्युपद्रवाः प्रजावृद्धिनदृश्यंतेगुप्तारातिश्चलोकमा चाल्यमृत्युभयंघोरं विभवोनैवसास्वतः पापशांतिः प्रयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत् सर्वैश्चपूजितंलोके दानमंत्रमहत्फलम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यः भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वजन्ममुपाख्यानंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुक्खिता पापरूपिणी नृपवंशोद्भवापूर्वेबामासौभाग्यरूपिणी दानधर्मरतोनित्यंमंतज्ञानाभिमानिनी कदाचिद्दैवयोगेणसाधुद्वारेसमागतः यज्ञार्थेयाचितोद्रव्यंबादाबादभवेत्तदा क्रोधतश्चतदाराज्ञीभृत्येणसाधुताड़िता दुक्खितोशापितस्तेन ग्रग्रजन्मत्वयाधमः पतिपुत्रात्मद्रव्येणक्लिश्यतिविविधोमहान् त्रिजन्मेतप्यत्युदरं विव दकलहंगृहेएवंहीशापितोसाधुतपार्थविपिनेगता नैवयत्नकृतस्तेनतत्रपापापनुत्तये तेनपापाश्रयोभूयाइहजन्मनिक्लेशिता यावद्यत्नंनकर्तव्यादुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः तस्यशांतिः प्रवक्षामिपरंगोप्यमतंहीयत कृत्वासर्वसुखलोकेवामाप्राप्यतिनित्यशः स्वर्णपत्रंप्रकर्तव्यावह्निकोणानगागुलम् लेखयेद्रक्तगंधेणसाधुचित्रमनोहरा रसनाशापहंबीजंपादयो शर्मदलिखेत भुजद्वयेप्रबंधश्चकामबीजसुमस्तके हृदयेप्रणवंबीजंनाभ्यां श्रीबीजमेवच ताम्रकुम्भेघृतंगुप्तः द्रव्यंश्रद्धायथाभवः वेष्टितांपीतपट्टेण मूर्तिस्थाप्यंतदोपरिः पूजनंभक्तिभावेणयथाविभवविस्तरै तदग्रेमंत्रमाराध्य इन्दुलक्षसुभक्तितः मन्त्रओंऐंह्रींक्लीं श्रींनमोनारायणायविश्वरूपायसर्वशापपापंशमनायभद्रंकुरु२ स्वाहा श्रींक्लींह्रींऐंओं इन्दुवाणसहस्राणिसावित्रीजापितंतदा आचार्यप्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेततः हवनंविप्रभोज्यश्च शुद्धस्थानेयथाविधिः कृत्वासर्वसुखंप्राप्यः मानुषीपुण्यरूपिणी पुत्रपौत्रादिजासर्वे सौभाग्यंपरमोदयं गृहक्लेशविनश्यंति महोत्साहोपिमगलं दिनेदिनेमहत्तोजोराजतेपुण्यसंपदा पूर्णायुःसुखमेधत्तोमनेच्छाबहुपूजिता एवंपुण्यपरंतत्वंकथयामित्वयाकवे

जन्मतः प्रथमेवर्षेशरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिताबालिकाशुचिलक्षणा द्वयाद्बे दशनोव्याधिः तृतीयेबृणपीडनम् किंचिद्दानादिमंत्रेणभगवद्भक्ति
भावतः श्रेयोमानंसुखंनित्यंसर्वकष्टविनाशनम् तृतीयेपंचमाब्देषुषष्टं वर्षादिसप्तमे तातमानप्रतिष्ठाचवद्धं तेनात्रसंशयः भोगाप्रवैभवोवृद्धिर्बालक्रीडा
सुततत्परा भ्रातसौख्यमहोत्साहोमासेवर्षेसुखंगता तृषबाधाज्वरोतस्तं रेचनादिप्रपीड्यतिपतनाद्दारुणोकष्टं सर्वशांतिसुयत्नतः नानाकार्यप्रबंधेणराजते
गेहसंपदा संबंधश्चर्चयागेहोतातमातविचिंतनम् नन्दाब्देदिशिवे च द्वादशाब्दंक्रमादितः गृहकार्येसुकुशला बादहास्यमनोहरा पितुप्राप्तिमहल्लोभं
मातृप्रेमविवर्द्धनम् उद्वाहंजायतेचास्यप्रकाशोविपिणीभवः कीर्तिश्चनिर्मलीभूतातातमातप्रशंसिता वह्निसोमान्तरेकाव्यरष्टचन्द्राद्बकेतथा भोगाप्रवै
भवोबृद्धियुग्मगेहप्रकाशिणी सर्वसौख्योद्भवोनित्यंदानमंत्रमहत्फलम् रूपयौवनसंपन्नावस्त्राभर्णैंसुशोभिता पतिप्रेमविवर्द्धतिभाग्यमेनैविवर्द्धनम् यद्रोगं
जायतेकष्टं सर्वशांतिसुयत्नतः ऊनविंशाब्देंविंशेच नेत्रविंशतिकेतथा पतिलाभविशेषेण सुखेच्छाबहुपूजिता गर्भवाधामहत्कष्टं सुतजन्मसुमंगलम्
हर्षवृद्धिमहोत्साहोमानकीर्तिश्च निर्मला पापशांतिः सुपुण्येण प्रकाशोविपणीभवः प्रजावृद्धिभवेन्नित्यमनेच्छापूजितंसदा रामपक्षमितेवर्षेऋतुनेत्राद्ब
मध्यगे पुत्रकन्यासमाविष्टामोदितापतिभिस्सह मंगलविविधोत्साहोमहत्वश्चपदेपदे जायतेदारुणोकष्टं कुलस्त्रीचविवादिता सर्वशांतिसुपुण्येणदानमंत्र
महत्फलम् मुनिविंशतिवर्षाणिवेदरामावधिक्रमात् मासेवर्षेमहोत्साहोबहुद्रव्यसमागमः सर्व चिंताविनश्यंतिविवाहादिमहोत्सेवम् दंपतिसुखमेधत्तेप्रताप
गुणगौरवं कीर्तिश्चनिर्मलीभूता स्वकुलेसुप्रशंसिता शरवह्निमितेब्देतु चत्वारिंशावधिक्रमातपूर्वयत्नोदितः पुण्यंसौभाग्यंपरमोदयम् पतिसेवानुरक्तश्च
गृहकार्येसुकौशला सुशोभितागृहंतेनमाननीयकुलांगना मगलंविविधोत्साहोजायतेनित्यनूतनम् त्वयत्नेक्लिश्यतिबामापतिपुत्रात्मजाधनं चन्द्रचत्वा
रिवर्षेचव्योमबाणक्रमादितः पुण्येच्छापूजितासर्वे देवतीर्थाटनंसुखम् पौत्रजन्ममहोत्साहोकुलवृद्धिदिनेदिने नानाकार्यप्रबंधेणराजितागेहभूषणा शशि
षंचगतेवर्षेव्योमषष्टांतरावधिः सर्वेच्छापूजितेलोकेनिर्बलाचप्रपीड्यति व्रतदानरतोनित्यंसाफल्यंमानुषीतनं मंगलंविविधोगेहेपूर्वयत्नादितः सदो इन्दु
षष्टाब्दमारभ्ययावन्नेत्रनगाब्दके सर्व पुण्यंफलंभुक्त्वाआयुपूर्णोपिजायते अश्विनेपूर्वपक्षेसप्तम्यांनिधनोनिशिः पुनर्नृपकुलोत्पन्नाजाह्नवोपश्चिमेतटे

स्त्री०

७५

सर्वखेटे मानेनबालिकामंदभागिनी श्याम वर्णास्थूलदेहा रुचिरांगी सुकामिनी तातमातमहा चिन्ता जायतेचास्य जन्मनि बहुविघ्नमुपाधिश्च तातकष्टप्रदो महान् गृहेद्रव्यनद्रस्यन्तिलाभयोगोपिमन्दता मासेवर्षेविवर्द्धति पूर्वपापेणपीड्यति बालकोडारतश्चापि मंदबुद्धिभयप्रदा पतनादारुणोकष्ट रुजोद्वेगा चिन्तयति तातस्वल्पसुखंलोके मातृक्लेशभयमहत् दानमंत्रादितोर्नूनं पूर्वपापक्षशातये सर्वसौख्यागमोलोके विस्तृतिंपुरायवैभवा: पति पुत्रात्मजादीणां भाग्यवृद्धिश्चसर्वदा द्रव्यलाभविशेषेण सर्वैश्चानित्यपूजिता अयत्नेविपरीतंयंहीक्लिश्यंतिपापकर्मणा मानहानिभयचिन्ता नोयशंप्राप्यतिमहान् पति पुत्रात्मद्रव्येणदुखिताचपित्रीजन्मनि कष्टव्याधिविशेषेण त्रिरत्यंदारुणोभयम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सु र्थोयत्नमाचरेत व्रतदानसुपुण्येण ईश्वरभक्ति भावत: पूर्वपापक्षयोकार्य: सर्वदामोदवर्द्धनं कीर्तिश्चनिर्मलीभूयात्पतिप्रेमविवर्द्धनी शुक्रोवाच पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वमहामुने येनक्लेशाश्रयो नारी दुखितामदभागिनी भृगुरुवाच श्रृणुपुत्रसमासेण कथाया:पूर्वजन्मनि पुराजन्मभवेद्वामा दासीयंनृपगोहणी रूपयौवनसम्पन्ना भूपप्रेमविवर्द्धनी सर्वसौख्यान्वितोभूयाद्भाग्यस्यपरमोदयम् राजसेवारतोनित्यं मोदमानंगरीयसी राज्ञोत्रमानसंप्राप्य गर्विताविदुराचार कदाचिद्यज्ञराज्ञोसौ कृत्वाविभव विस्तरात तत्रागतंगुरुर्देव:वेदज्ञाताद्विजोत्तम: दासीयंसंस्थितोकार्ये गुरुरेवविवादिती हास्यंकृत्वाभवेद्विघ्नं विप्ररोषान्धितोमहत् दुखितोशापितस्तेन रेधमादुष्टकर्मिणी देवकार्यकृतेविघ्नं गर्विंतापापरूपिणी अतस्त्वंक्लेशितोर्नूनं त्रिजन्मेषुपुन:पुन: पतिपुत्रात्मद्रव्येण दुखितापिमुहूर्मुहः द्विजशाप श्रुतंदासीघोररूपोतिदुस्तरम् नैवशांतिश्चमाप्त्वं साभिमानेनमोहिता तेनपापाश्रयोभूया देतज्जन्मेऽतिदुखिता स्वर्णपत्रकृत्योतत्र: यथाश्रद्धासु भक्तित: लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेद्विजभिस्सह लेख्यतुशपहबीज पीतपट्टेणावेष्टित. संस्थाप्यकलशेप्राज्ञ: विष्णुयज्ञक्रमादित: पूजियेद्भक्तिभावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीनारायणो सर्वपापहराय पूर्वजन्मद्विजशापशमनाय रक्षां कुरु कुरु सर्वसौख्यं प्रकाशय: स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्ष सावित्रीतत्प्रमाणत: हवनंविप्रभोज्यञ्च अनुष्ठानशुचिस्थले कृत्वासर्वसुखंलोके बामा पुन्याश्रयेसदा मंगलंजायतेनित्यं प्रजावृद्धिमहोत्सवा: पतिपुत्रात्मद्रव्येण सफलंमानुषीतनं भोगाप्तवैभवोवृद्धियशमान प्रशंसिता नश्यंतेकलहारिष्टं सुखंसर्वत्रदृश्यति ईश्वरभक्तिभावेण

श्री
७६

व्रतदानसुखोत्सवा रोगार्तंप्रथमेवर्षे द्वितीयेदन्तपीड़िता तृतीयेवन्हिभीतिश्चउच्चस्थेपतितोथवा व्रणावातविकारेणापीड्यतिचतुराद्धके पञ्चमेषष्टमेसप्तेऽव्या
लवर्षंचनन्दके दिनेदिनेपिसावृद्धाबालिकाशुचिलक्षणा स्वकृत्यकुशलासौम्या क्रीडनेमतिनित्यशः धावनात्पादकष्टश्चकदाचिद्व्रतोदरि विवाहोवाच
तस्यापितातचिंतागरीयसी मंगलंजायतेगेहो तातलाभसुखप्रदा दानमन्त्रसुयत्नेन कन्यकागेहभूषणं कुलवृत्तिप्रभावेण राजतेपुण्यसंपदा सून्यसोम
गतेवर्षेयावद्वेदनिशाकरे पतिप्राप्तिर्नसंदेहोपितुर्द्रव्यव्ययंमहत् कष्टव्याधिविनश्यंति सुपुण्यंफलदोमहान् भयभीताहृदेगुप्तकदाचिन्तनंमहत् प्राप्ते
पंचदशेवर्षेयावन्नेत्रद्वयोतथा क्रीड़तिविविधैश्वर्य्य दानमंत्रसुभक्तितः देवदर्शनतीर्थेषुसरनद्यामतिप्रियः पतिप्रेमविशेषेणमोदितोनात्रसंशयः प्रजासु
भोगवृद्धिश्चमंगलंविविधैरपि गृहकार्य्यसुकुशलाभाग्यवृद्धिदिनेदिने पापाश्रयोमहद्दुखचिंतनंक्लेशतत्परो तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशान्तिसुखंलभेत्
वन्हिपक्षाद्धमारभ्यमुनिनेत्रसुवत्सरे सुतापुत्रसुखास्सर्वे गार्हस्थंसाधनेमति सुकार्यसुस्थिराबुद्धिःप्रीतिभिस्सुसखिस्सह प्रतापभोगमैश्वर्य्यशोभितादि
शुभाङ्गनामंगलंविविधोगेहेपुण्याच्छ्रेयोहिनित्यशः व्यालविंशतिगेकाव्यः रामरामसुवत्परे भाग्यवृद्धिविशेषेणसर्वसौख्यवसुन्धरेविवाहोमंगलंकार्यं
गौरवंप्राप्यतेस्त्रियः कीर्तिश्चनिर्मलीभूता गुप्तारातीहितप्यते व्ययलाभमहत्वेषादम्पत्योर्चिन्तनंकदा स्वकुलंसुप्रकाशयंतिवनितापुण्यरूपिणीवेदराम
गतेवर्षेनगरामांतरोनथा विस्तृवंशजंनित्यंसुपुण्यंफलदोमहान् सर्वाबाधाविनश्यंतिरुजाक्लेशह्युपद्रवाःव्ययोतत्राधिकंभूयविवाहेतीर्थमन्दिरे गुप्त
चिन्ताविनश्यन्ति सर्वेशत्रुरधोगता पतिचिंतान्वितोभूयः न्यूनकष्टश्चशांतये व्यालवह्निसमारभ्य नेत्रचत्वारिमध्यगे भूमिप्राप्तिविशेषेण महोत्साहप्रवर्तते
चित्तोह्यानन्दतापिस्याद् बहुलाभप्रभावतः अत्यानन्दगृहेक्षेम साफल्यंसर्ववैभवां वेदवेदगतेवर्षे नगवेदावधिततः चिंतयेन्नूतनोकार्यं देवतीर्थेषुदर्शनः
अकस्माज्जायतेकष्टं प्राणभीतोतिचिंतनं छायागात्रतुलादानंमहामृत्युञ्जयोजपेत् अनुष्टानविधानेनआयुवृद्धिसुयत्नतः दानमन्त्रसुपुण्येन नभनागाद्ध
जीवंति कुलकीर्तिकराः पुत्राः पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रहाश्चष्टविनश्यन्ति मनेच्छासर्वपूजिता भगवद्भिक्तभावेण पुण्यात्रीप्रसिद्धिता इन्दुव्यालाद्ध
मारभ्य. जायतेदारुणांरुजं अनायासेतनंत्यक्त्वा पुत्रपौत्रैर्विभूषिता पुनर्नृपकुलेजाता भूयाद्राज्ञीशुभानना एवंपुण्यपरंतत्वा ज्ञातव्यामोक्षसाधनं

एतद्योगोद्भवाबाला मध्यभागिनीसुन्दरी शुभलक्षणसंपन्ना मध्यरूपाप्रियम्वदा सुस्वभावसुशीलाच कदाचिद्दोषमोहिता जन्मतःमातृकष्टोपि तातचिंता
गरीयसी दिनेदिनेपिसावृद्धो मासेवर्षेसुखंगता कष्टञ्चमहतोभूयात्पूर्वकर्म्मविपाकजं सुयत्नेरक्षितस्यापि पूर्णायुसुखसम्पदा दशाश्रेष्ठधनंदीर्घः वस्त्रा
भर्णैस्सुशोभिता भोगमैश्वर्यसंयुक्ता मानकीर्तिश्चनिर्मला केचित्कालेमनोद्वेग जीवाशक्तिविचिन्तता वित्तचिंतान्वितोगुप्ता अनायासेभयंमहत हर्ष
सौख्यान्वितोवामा अनित्यंभोगतत्परा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेशोकाल्पजंभयम् दुःखिताविविधोनारी पतिपुत्रेणक्लिश्यति पूर्वजन्मान्तरोगाथा समा
सेणावदाम्यहम् ब्रह्मवंशोद्भवावामा सुस्वरूपासुलक्षणा सर्वसौख्यसमायुक्ता मोदितापुण्यरूपिणीतत्ररत्नधनंबव्ही स्थाप्यमस्यगृहेतदा गुरुपत्नियतंगत्वा
तीर्थदेवादिदर्शनैः चरंतोदेवतीर्थेषु मुनिमासगतस्तदा स्वगेहेपुनरागत्यः याच्यंरत्नधनंहिसा हृत्वातदांतरेनारी दिव्यरत्नसुशोभनम् नदृष्टवारत्नतत्रैव
याचितंहिपुनःपुनः देयादन्यधनंसर्वं नदेयाद्रत्नवादिता बादाबादेणक्रुद्धोसौ गुरुपत्नियुतंमहत त्यक्त्वातत्रधनंसर्वं सापंदत्वापुनःपुनः पुनस्तीर्थेवगंतव्या
तीर्थेवनिवसोसदा तेनपापाश्रयोबामा नैवयत्नंचकारयेत दानपुण्यविशषेण सुगेहेजन्मजायतः नैवशांतिर्भवेद्वत्सः गुरुशापोतिदुस्तरंभ तेनपापाश्रयो
नारीक्लिश्यतिविविधोमहान् शुकोवाच तद्यत्नंब्रूहिमेतातः जनानांसुखहेतवे भृगुवाच अनुष्ठानमहादानं स्वर्गेमर्त्येषुदुर्लभाः तवस्नेहांमयावत्सः प्रकाश
क्रियतेधुना स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाशक्तिशुचिस्थले लेखयेद्रक्तगंधेण गुरुभार्यायुतंक्रमात वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि ईश्वरंभक्तिभावेण
पूजयेत्सुविधिर्यथा तदग्रेमंत्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्त्रकम् मंत्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ओं नमोनारायणाय सर्वाधिपतयेगुरुशक्तिरूपायपूर्वजन्मकृतशापपापं
नाशयः २ ममापराधशमं कुरु२ मनेच्छितंबरदायः सर्वं स्वाहा ओं शंश्रींक्लींह्रीं ऐं ओं सावित्रीतत्प्रमाणेन धनदस्यतदर्द्धकम् जापयेत्सुविधानेन ब्रह्मचर्य
रतोद्विजा तदांतेमुतिसंकल्पंशैयादान विधिर्यथा आचार्यायप्रदातव्यं विप्रभोज्यसुदक्षणा यज्ञांते पूर्णपात्रश्चगुरुरत्नधनादय गुरुदानविधानेन दीयतांपाप
नश्यति सर्वसौख्यततोलोके वनितापुन्यरूपिणी बिस्तृततिर्वंशजादीर्घ सौभाग्यंपरमोदयम् नानाकार्यप्रबंधेण मानकीर्तिप्रशंसिता मनेच्छापूजितोनित्यं
वस्त्राभर्णधनाद्विजा पुत्रपौ समाविष्टोपतिरत्यंतवल्लभा मोदितेमानमाधिकं साफल्यंसर्ववैभवा अयत्नेपीड़ितेपापं सुखेशोकसमागमा परंगोप्यमतमेतत्

पथाग्रश्रुणभार्गव जन्माद्बेबह्निवर्षांतंतयोर्मध्येक्रमादित ततमातसुखासर्वे कन्यकाशुभलक्षणा दंतपीड़ाज्वरोतातं रचनादिप्रपीडयति क्रूरयदेहविजानी
याद्भूतछायाश्चगुप्तता किंचिद्दानादिमन्त्रेण भगवद्भक्तिभावत श्रेयोमानंप्रतिष्ठाच प्रकाशोपिदिनेदिने तातलाभविशेषेण मंगलंविविधोगृहे दृष्टि
हास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी भ्रातजन्ममहोत्साहोमासेवर्षेसुखं ता चतुर्थेपञ्चमाब्देषुषष्टंवर्षादिसप्तमे बालक्रीड़ाविशेषेण मोदमानंगरीयसी प्राण
शंकाभयोद्वेगंत्रणपाड़ातिदारुणम् प्रायश्चित्तादियत्नेनसर्वशांतिसुखंलभेत भाग्यश्चमहतोभूयात्सुकार्यमतिनित्यश गृहकार्यरताबाला सर्वत्रैव शंसिता
व्यालवर्षे रसंप्राप्यावन्नेत्रनिशाकरे तावत्कालावधिर्नेनं भाग्यवृद्धिस्सुयत्नत उद्वाहंजायतेचास्य तातमानविवर्द्धनम् कुलकीर्तिविशेषेण व्ययलाभमह
त्यपि दिव्यांबरंभूषणाश्च प्राप्यंतिहिसुशोभना प्रतिष्ठामानमधिकं जायतेचदिनेदिने त्रयोदशाष्टचंद्राब्दे पतिप्रेमविवर्द्धिनी भोगाश्चवैभवोवृद्धि जायते
चदिनेदिने रूपयौवनसंपन्ना वनितापुण्यभाजिनी गृहकार्येषुकुशला पतिभक्तिपरायणा पुण्ययत्नादितोनित्यंसर्वकष्टविनश्यति ऊनविंशाद्वविंशेचशर
विंशतिकेतथा सर्वेच्छापूजितोपुण्यं पतिपुत्राधनादिजा प्रजावृद्धिमहोत्साहो कष्टशांतिस्सुमंगलम् ऋतुपक्षाद्वत्रिंशेच तयोर्मध्येमहत्सुखमपु त्रकन्यासमा
विष्टासाफल्यंसर्ववैभवा व्ययलाभमहत्तेण मंगलविविधोमहान् प्रकाशोविपिणीभूया द्रव्ननागेहसुन्दरम् प्रायश्चित्तमहादानं सर्वसिद्धिकरंपरं अयत्ने

स्त्री०

विपरीत्यंही प्राप्यतिकर्मजंफलं इन्दुरामगतेवर्षे चत्वारिंशावधिःतथा दानमंत्रादितोनूनं पर्णभाग्योदयंभवेत उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धिनी
नानाकार्यप्रबंधेण राजतेपुण्यसंपदा सर्वाबाधाविनश्यंति पूर्वमेवसुराचिता भयचिंताविनिर्मुक्ता देवतीर्थेसुखोत्सवम् सोमदत्वाषरिवर्षाणि व्योमभलाद्व
मध्यमा सुकीर्तिश्चद्वतेपुण्यं जायते कुलभूषणा बृहलाभप्रभावेणविविधोत्साहमंगलम् न सुखंसुस्थिरोभूया ग्यावद्यत्नंनपापहम प्रायश्चित्तमहादानैः सुखेच्छा
सर्वपूजिता चन्द्रबाणाद्वमारभ्य सून्यषष्टाद्वगेतदा पौत्रजन्ममहोत्साहो कुलवृद्धिदिनेदिने व्रतदानरतश्चापि साफल्यंमानुषीवपु ईश्वरं भक्तिभावेण
पुण्येच्छासर्वपूजिता नगषष्टगतेवर्षे पूर्णायुकथितोमुनि चैत्रस्यकृष्णपक्षेतु भरण्यांनिधनंभवेत प्रायश्चित्तांसुपुण्येण अग्रजन्मेषुनिश्चित महत्वंसुकुले
जाता सुप्रसिद्धापिपूजिता ईशभक्तिसुयोगेण महत्वांसुपदाधिपा गतिरेवसुप्राप्यंति पुण्यरूपासुसद्व्रता एतत्सर्वंसुज्ञातव्या सुपुण्यंसुखसाधनम् ॥

एत गेगोद्भवाकाठ्यः कन्यकाशुचिलक्षणा पतिदेवसुभक्तश्च चित्रोवाक्यमब्रवन् साभिमानिनीसद्रूपा दिव्यालंकारभूषितम् पूर्वपापप्रभावेण सुखे दुःखसमागमः चिन्तातुरोनित्यंरिपुरोगद्युपद्रवा पतिपुत्रात्मजाकष्टं नैवपूर्णधनीसुखी दानमन्त्रसुपुरायेण तस्यशान्तिप्रयत्नतः कृत्वासद्यसुखसर्वे प्राप्यतिनात्रसंशयम नानाकार्यप्रबंधेण राजतिसुखसंपदा मानेनमहताविष्टा यशभूरिमहितले संपदाविस्तृतोगेहं सौम्यसाध्वीप्रियम्वदा पतिपुत्रात्म द्रव्येण सर्वत्रसुखसंपदा भूमिप्राप्तिविशेषेण नूतनोमन्दिरंसुखं शुभकार्येव्ययोद्रव्य मुद्गाहादिमहोत्सवे देवपुरायेसुतीर्थेच रमयन्तिजलाश्रये पूर्वयात्रा महोत्साहो पतिप्रेमविवर्द्धिनी केचिज्जीवहरंचितं रूपयौवनगर्भिता कामक्रीडामनोद्वेगं कलंकभयमागतः ईश्वरंभक्तिभावेण सुसंगाच्चमहत्यशः सर्वा बाधेतिमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति पूर्वपीपेणपीड्यन्ति यावद्यत्नपापहम संक्षेपात्तत्प्रवक्ष्यामि कथायाःपूर्वजन्मनि वैश्यवंशसमुत्पन्ना सर्वसौख्यसमायुता शुचिसाध्वीसुसद्रूपा पुरायात्माचदयामयी एकदापतिसंयुक्ता तीर्थयात्रागतोहिसा तदाधेनुसवत्सांच विस्मृतोगेहबन्धनम् क्षुधातृषातुरोनित्यं विलपन्ति मुहमुहुः धेनुवत्सस्मृतोतत्रः पश्चोकंगृहमागतः पतिदृष्ट्वापितद्वृत्तं क्रोधितोशापीतमहत तेनभूयोमहत्पापं नारीदुःखाश्रयोभवेत् क्लिश्यतिविविधो नित्यं त्रिजन्मंहिपुनःपुनः तद्यत्नंसंप्रवक्ष्यामि पापशांतिसुखलभेत शुद्धस्वर्णकृतोपत्र विस्तृतिसुनागांगुलम् शरांगुलतथवंही कारयेच्चसुशोभनम् लेखयेद्रक्तगन्धेण धेनुवत्ससुमूर्तिमान् शुद्धस्थानेशुभेलग्ने कूर्यातन्त्रमुदारधिः ताम्रकुम्भघृतंगुप्त हेममूर्तिसुशोभनम् वेष्टितांरक्तपट्टेण पूजयेद्भक्ति भावतः मन्त्रजाप्यसुयत्नेन प्रायश्चित्तविधिर्यथा मंत्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गं गोपालाय गोपीजनवल्लभाय जगद्रक्षणे महापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मकृतगोपाय तापशमनं कुरु कुरु सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा इन्दुबाणसहस्राणि सावित्रीमन्त्रसंपुटतम ईश्वरभक्तिभावेण जपेदेकाग्रमानसः द्विजेभ्योतोषितंनित्य मनुष्टानव्रतेग्ताः कुम्भदानविधानेन आचार्यायः प्रयदापयेत् हवनंविप्रभोज्यञ्च कारयेत्सुविधिर्यथा एतद्यत्नप्रभावेण सर्वपापैर्विमुच्यति सर्वदुःख विनिर्मुक्ता सौभाग्यं परमोदयम् स्वामिपुत्रधनादिनां तुष्यतिसुख भाजनी भोगाप्रवे भवोवृद्धि शुक्लपक्षो यथाशशिः गृहक्लेश विनश्यंति वनितापुरायरूपिणी कलप्रीतिविशेषेण महोत्साहं दिनेदिने प्रतापभोग मैश्वर्य वस्त्राभर्णैः सुतुष्यतिएवं पुराय परंतत्वं साफल्यं जन्म भूतले

जन्माद्यंमोतृकष्टोपितातोत्साहविमन्दता मनश्चिन्तागृहेतक्षोबालिकाक्लेशकारिणी प्रथमेद्वितीयाब्दही शिशुवृद्धियथाक्रमः दिवेमासेसुखंजातं रोग तक्षोभयान्वितो दानमंत्रादितोर्नूनंसर्वसौख्यमवाप्नुयात तातलाभसुखोत्साहोवृहद्भाग्यीप्रशंसिता तृतीयेपंचमाब्देहीसुखवृद्धियथाक्रमःदंतपीड़ादिजं कष्टं बृणाविरफोटकादय पतनादिभयंसर्वं नश्यतेपुण्यकर्मणा भगवद्भक्तिभावेण गृहेमंगलनित्यश पितुयत्नादितोर्नूनं सर्वावस्थासुखंभजेत मृदुवाक्य सुहास्यञ्च शिशुक्रीड़ामनोहरा भोगाप्रवंभवोवृद्धि जायतेनित्यनूतनम् ऋतुवर्षसमायातः तथाचदिशिवत्सरे पुण्योत्साहसुखंनित्यं भ्रातसौख्यसुमंगलम् विवाहोचर्चयागेहे वरंश्रेष्टनिवारयेत यद्रोगंदारुणोकष्टं सर्वशांतिःसुयत्नतः विद्याभ्यासरतोबाला गृहकार्येषुतत्परा प्राप्यंचैकादशेवर्षे शरसोमाद्ध मध्यमा तातचिंतातुरोगुप्तंव्ययोपिबहुद्रश्ये उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिविवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति वद्धितापिलतेवसा दिव्याम्बरंभूषणाञ्च प्राप्यति मानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः जायतेनुयथाक्रमः सुभक्तितुष्यतेसर्वाः माननीयासुसद्व्रता रूपयौवनसम्पन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी षोडशाब्देतुसंजातं व्योमनेत्रावधिक्रमात सर्वैश्वर्यसमायुक्ता पुण्यरूपासुलक्षणा सुतजन्ममहोत्साहो मंगलंकुलवर्द्धनः नानाकार्यप्रबन्धेण सुखैश्वर्यप्रकाशिणी छाया पात्रान्नदानञ्च महामृत्युञ्ज जपेतसर्वाऋष्टक्षयोनित्यं मंगलंहिदिनेदिने प्रायश्चित्तंसुपुण्येण सर्वाभिष्टफलंलभेत त्रिशवर्षावधिर्नूनं सुखेच्छासर्वपूजिता पतिप्रेमाविशेषेण प्रतापगुणगौरवं मंगलंविविधोत्साहो सुतापुत्रधनादिजा पापपीड्यंत्ययत्नेन दुखेविघ्नमहद्भयम् एतस्मात्कारणानित्यं सुसंगात्पुण्य सञ्चयः त्रिशैकोपञ्चत्रिशाब्दे तयोरन्तर्महोत्सवाः उद्वाहेप्रचुरंद्रव्यं व्ययंकीर्तिश्चनिर्मला प्रकाशितेवसर्वं पुण्यैश्वर्यदिनेदिने ऋतुरामाद्धमारभ्यव्योम वेदाद्धकेतथा महत्वमधिकंलोके साफल्यंमानुषीतनं रोगशोकाकुलंपापात्सर्वंशांतिसुयत्नतः भूमिप्राप्तिमहत्पुण्यं दासदासिचवाहनम् देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रंक्रियाततनम गृहक्लेशविवादञ्चसुस्वभावेणशांतयेत ईश्वरंभक्तिभावेणसर्वत्रैव प्रशंसिता इंदुचत्वारिवर्षाणिव्योमभल्लांतरेवही प्रजावृद्धिविशेषेण विविधोत्साहमंगलम् इंदुभल्लाद्धगेवत्सः पौत्रजन्ममहोत्सवाः तदांतेव्योमषष्टांतंपुत्रभाग्योदयंमहत ब्रतदानरताप्राज्ञी तीर्थयात्रासुखेरता प्रकाशो विपणीभूयात्पुत्रपौत्रधनादिजा व्यालषष्टाद्धमायुष्यंपुण्यरूपाप्रशंसिता सुगतिप्राप्यपुण्येणस्वर्गलोकाधिकारिणी यावद्यत्नंकृतेनैवंनिजपापाद्रधोगता

एतद्योगोद्भवाबालामध्यभागी सुलक्षणा मध्यपादकरोर्नूनंमध्यमांगीसुकोमला क्रोधेणतप्यतिक्रूराप्रसन्नात्मादयामयी गृहकार्येसुकुशलापतिप्रेमविव
र्द्धिनी सुस्वभावंसुपुण्येणसुविख्यातााप्यमानिनी रूपयौवनसंपन्नासर्वसौख्याधिकारिणी पीड्यतिपूर्वपापेण अल्पायुश्चवितप्यति पतिपुत्रमहदुक्ख तात
क्लेशभयंमहत् अल्पमृत्युभयंस्वेसर्वसौख्यविभक्षणी प्रायश्चित्तमहादानंकृत्वासर्वसुखागमः पुण्ययत्नादितोर्नूनंसर्वाभिष्टफलंलभेत् धनसंतानयानञ्च
कुटुम्बेसुखवर्द्धिनी महोत्साहंगृहेचास्यमंगलंहिदिनेदिने नानाकार्यप्रबंधेणविमलाभाग्यदर्शनः महर्घभूषणोवस्त्रंप्राप्यतिपतिवल्लभा सर्वसंपत्समायुक्ता
पुत्रपौत्रैसुसेविता ईश्वरंभक्तिभावेणसफलंमानुषीतनम् तीर्थयात्राजपंपुण्यंव्रतदानसुखेरता प्रतापभोगमैश्वर्यजायतेनित्यंनूतनम् भूमिलाभमहत्वेण
रचनागेहसुन्दरम् याद्यत्नंनकर्तव्याविविधंदुःखभोजनी पूर्वजन्मसमासेणकथयामित्वयाऽधुना नृपवंशोद्भवायामापुराजन्ममहत्तपा सर्वसौख्या
न्वितोलोके रूपयौवनगर्विता स्वामिआज्ञानमण्यंति विचरन्तियथारुचि व्यभिचाररतोगुप्तं तीर्थयात्रासुखेरति दानधर्मप्रभावेण बहुकालसुखंगता
पुनरन्तेप्रकाश्योपि तद्दुराचारित्तलक्षणम् स्वामिज्ञात्वापितद्वृत्तं रोशितोशापितंमहत रेपापात्मादुराचारी त्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि नैवराजकुलेजन्मः
दुक्खितापिमुहुर्मुहः तेनपापाश्रयोभूया दिहजन्मेसमुद्भवः दानपुण्यदितोर्नूनं प्राप्नुयाज्ञानुषितनम् पतिपुत्रात्मपापेण क्लिश्यतिविविधोहान् नसुखं
सुस्थिरोभूयाद्यावद्यत्नंनपापहम् पापशांतिः सुयत्नेनकृत्वासर्वसुखागमः स्वर्णपत्रकृतोतत्रः बाणांगुलनगांगुलम् लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्त
चन्दनम् पतिचित्रमधोभागेनृपचिन्हैरलंकृता रक्षाप्रवरवीजाढ्यं पीतपट्टेणवेष्टितम् संस्थाप्यकलशेप्राज्ञः पूजयेत्सुविधियथा तदग्रेमन्त्रमाराध्यः
भक्तियुक्तेनप्रार्थितम् । मन्त्र ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीलक्ष्मीनारायणाय पतिदेवायनमः पूर्वजन्मान्तराजित पापनाशय२ तज्जनितसर्वकष्टं विदारय२
सर्वसौख्यं प्रकाशय स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं इतिमंत्रजपेलक्ष बटुकस्यतदात्मकं शैयादानविधानेन मूर्तिदानसमाचरेत हवनंविप्रभोज्यादि विष्णुयज्ञ
क्रमादितः एवंकृत्वासुपुण्येण सर्वपापैर्विमुच्यति सुखसौभाग्यसंपन्ना वनितापुण्यरूपिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण संतुष्यति दिनेदिने भोगाप्रवै
भवोवृद्धि सुप्रसिद्धप्रशंसिताः सर्वेच्छापूजितापुण्य दानमन्त्रमहत्फलम् विवादकलहोदुक्खं रिपुरागविनश्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञात्वानित्यसुखप्रदं

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंता भूतछायाप्रभीव्यति किंचिच्छोकागोमगेहे सर्वशान्तिसुयत्नतः नेत्राब्देयहिवर्षेच तयोर्मध्ये
यथाक्रमः दिनेदिनेविवर्द्धति कन्यकाशुचिलक्षणा दशनोत्वतिजाव्याधी ज्वरत्तप्तविरेचनम् वृणाविस्फोटकोव्याधी दानमन्त्रैसुखागमः सर्वकष्टविन
श्यन्ति बालक्रीड़ादनेदिने क्रीडतिविविधोनित्यं तातमातसुखंलभेत दानमन्त्रेसुपुण्येण तातलाभसुखप्रदा रसाब्देनन्दवर्षेच मासेमासेसुखंलभेत्
भोगाप्रवैभवोवृद्धिः गृहकार्यरताभवेत विद्याभ्यासरता किंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंति विवाहार्थेविचिन्तया सम्बन्धोमंगलंप्राप्य हृष्टि
हास्यमनोहरा सर्वकष्टक्षयोनित्यं दानपुण्यसुखप्रदा दशमैकादशेवर्षे तथापंचदशान्तरे व्ययलाभमहत्तातो हर्षवृद्धिसुखंलभेत विवाहोजायतेतस्य्
पतिप्राप्तिःसुशोभिता नवाम्बरंभूषणाश्च प्राप्यतिमानमुत्तमम् भोगाप्रवैभवोवृद्धिः गृहकार्येसुकौशला प्रायश्चित्तंसुपुण्येण सुखंसर्वत्रभूतले कामक्रीड़ा
रतश्चापि भोगांभुक्तोयथेप्सितान् द्रव्यप्राप्तीविशेषेण मनेच्छासुखपूजितम् प्राप्यतेषोडशेवर्षे नभनेत्रेरमध्यगे दंपत्योःसुखमेधत्तो प्रजावृद्धिसुखोत्सवम्
स्वकृत्यकुशलासौम्या पतिप्रेमविवर्द्धिनी प्राप्यतिपूर्वपापेण रुजकष्टह्युपद्रवाः दानमन्त्रसुपुण्येण प्रतियत्नसुखंमहत चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिके
तथा भाग्यवृद्धिभवेल्लोके दशाश्रेस्कंरीमुदा सर्वसौख्यंसुयत्नेन पतिपुत्रधनादिजा बन्धुवर्गापवादेण क्लिश्यतिचाप्रयत्नतः पूर्वपापबलियन्ते सुखेशोक
समागमः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तंसुयत्नतः सर्वसौख्यान्वितागेहे मनेच्छातत्रपूजिता रसविंशतिवर्षाणि व्योमरामतथान्तरे नानालाभव्ययोत्साहं
यशभूरिमहीतले दंपत्योरत्रुजंकष्ट दानमंत्रसुखप्रदा उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् इन्दुरामगतेवर्षे यावद्बाणगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नूनं
पूर्णभाग्यदयंदशः मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिसुखोत्सवा त्वयत्नेविपरीत्यंही मृतवत्साहीदुःखिता एतस्मात्कारणात्तत्र कूर्यातन्त्रमुदारधि व्योमबाणा
वधिवत्स सर्वेच्छासुखपूजिता रामबाणगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् आपदुद्धारजाप्येण सर्वकष्टक्षयोभवेत मासेवर्षेसुखंजात पुत्रपौत्रविवर्द्धनम् लाभश्च
विविधोनित्यंयावच्छून्यरसाब्दके देवतार्थेपरंप्रीतीदानधर्मेषुतत्परा आयुवृद्धिसुपुण्येण भूयानंदरसाब्दकी पुण्याद्भाग्यमहत्वेण स्वकुलेसुप्रशंसिताजायति
सुकुलंपुण्या त्तथैवाग्रिः जन्मनि अजराशिगतेभानु पूर्वपक्षेतनंत्यजेत गतिश्रेष्टसुप्राप्यति सर्वसौख्याधिकारणी एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्योसुखसाधनम्

सर्वखेटेष्टमानेन भूयाद्भाग्यगतीसती स्वामिवाक्यप्रपाल्यन्ति कठोरमनानाश्वता पाकविद्यासुनिपुणा गृहकार्यहितरति सर्वकार्येसुकुशला विनि
तापिशुभानना सात्विकीराजसीचैव तामसीवृत्तिसंयुता नकश्चिद्ददायतेतापं सुमतिर्वाग्विचक्षणा कृतज्ञनीधनाभ्यक्षा हेमरत्नविभूषिता स्वामिसेवानु
रक्तश्च कुटुम्बसुखवर्द्धिनी पतिपुत्रात्सुपुण्येण प्राप्यतिभूधनंसुखम् सर्वसंपत्समायुक्ता सौभाग्येण सुमोदिता वस्त्राभर्णैः सुसम्पन्ना नानाद्रव्याधि
कारिणी क्लिश्यतिपूर्वपापेण हानिर्चिताभयंरुजम् आयुसौभाग्यरेखाच त्रुटितापापरूपतः प्रायश्चित्तंसुयत्नेन पूर्णायुःसुखसम्पदा सुसंगात्सुलभासर्वे
सुमूर्तिप्रियभाषिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यं सुखेदुक्खसमागमः शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कथयस्वप्रसादतः येनक्लेशाश्रयोनारी दुक्खितापापरूपिणी
भृगुवाच राजवंशसमुत्पन्ना राज्ञीवंपूर्वंन्जमनि दानपुण्यदितोनित्यं निजकीर्तिहितेरता दर्पितासाभिमानेन विषयाशक्तसुन्दरी कदाचिज्जाह्नवीतीरे
गतंयज्ञसमारभेत् आयातंयाचकाबन्ही सन्यासीविप्रसाधवाः ब्रह्मचारिश्चतत्रैकं कामरूपोसमागतः कामबाणेनपीड्यन्ति तस्यरूपविमोहिता तत्रैव
रमतानित्यं कामपूजाद्वयोरतिः गुरुज्ञात्वादयोर्व्रत्ता सुभयोशापितंमहत तेनपापाश्रयोभूयान्नारीयपूर्वजन्मनि क्लिश्यतिविविधोतापं वैधव्यश्चमहद्भयम्
प्रजाद्रव्यशरीरादि सुखेविघ्नभवन्तिहो दानपुण्यविशेषेण सर्वसौख्यसमागमः न सुखंसुस्थिरोभूया द्यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तमहादानं नित्यं व
सुखप्रदा स्वर्णपत्रकृतातत्रः शुद्धश्रद्धा सुभक्तितः प्रायश्चित्तप्रकर्तया सुत्तीर्थेपशुचिस्थले आचार्य्यसुद्विजकार्य्यः ममशास्त्रस्यकोविदः सुयत्नरक्त
गन्धेण विष्णुमूर्तिलिखेद्विजः वेष्टितास्वेतपट्टेण संस्थाप कलशोपरि वस्त्राभर्णैसुशोभन्ते पुष्पमाल्यादिवेष्टितम् पूजयेत्सुविधानेन ईश्वरभक्ति
भावतः तदग्रमन्त्रमाराध्यःलक्षमेकाग्रमानसः मन्त्र ओं ऐं ह्रीं क्लींश्रींशनं नमोनारायणाय सर्वेश्वरायसर्वपापहरायतज्जनितसर्वकष्टं बारय २ श्रेयोमे
देहि स्वाहा सावत्रीतत्प्रमाणेन जपतानास्तिपातकं हवनंविप्रभोज्यादि मूर्तिदानंसुयत्नतः एवंकृत्वासुपुण्येण ईश्वराराधनेमतिः सर्वसौख्यागमोगेहे
भूयाद्विसुलक्षणा प्रजासुभोगवृद्धिश्च सौभाग्यंपरमसुखम् गृहक्लेशविनश्यन्ति स्वामिरेवोपितद्वशे प्रतापमानमधिक मनेच्छानित्यपूजिता नानाकार्यं
प्रवधेराकुलकीर्तिकरस्त्रियः अथनेक्लेशिताबालात्रिजन्महिपुनःपुनः एतस्मात्कारणान्नित्यंपुण्यसर्वसुखाश्रयः तेनश्रेयोहिसौभाग्यंप्राप्यतिपरमंगति

जन्माब्दं द्विर्वच तयोरन्तर्यथाक्रमः दिवेमासेसुखंजातं तातप्राप्तिसुमंगलम् दशनोत्पतिजाकष्टं कृश्यभूतकलेवरः पुण्ययत्नादितोर्नूनमल्पमृत्युक्षय
सुखम् बालक्रीड़ाक्रमेणैव हर्षिहास्यमनोहरा वेदाब्देपंचमेकष्टे नगवर्षावधिक्रमात सुसंगाच्चसुपुण्येण सर्वारिष्टविनाशनम् शुचौपत्तेयथाचन्द्रबाला
तद्वतमवर्द्धिती भ्रातसौख्यविशेषेण तातमातसुखोत्सवा उद्वाहोचिंतनंचाम्य वरंश्रेष्ठविचिन्तयेत गृहकार्यरताकिंचि द्वालिकाशुचिसुन्दरी व्यालवर्षश्च
नंदाब्दे यावद्वर्षदिवाकरे तावत्कालावधिर्नूनं बृहद्भागीप्रशंसिता द्रव्यलाभमहत्तातो उद्वाहंसुमहोत्सवम् कुलकीर्तिमहत्वेण यशसौख्यविवर्द्धिनी
भूषिताबहुभिपुण्य दिव्यलंकारभूषणं सर्वचिन्ताविनश्यंति तातमातसुखंलभेत् भोगमैश्वर्यसंज्ञा माननीयासुसद्व्रता सुस्वरूपाप्रियःसर्वा रुभयगेह
भूषणा गुणसोममितेवर्षे विंशवर्षान्ततोतथा मासेवर्षेसुखंनित्यं भोगमैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविवर्द्धन्ति पुण्यरूपाप्रियंवदा ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वत्रैव
प्रशंसिता सुतापुत्रसमायुक्ता कष्टशांतिःसुमंगलम् गृहक्लेशविवादश्च सुस्वभावेणमोदिता सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धिप्रकाशिणी इन्दुपक्षाब्दमारभ्य
शरविंशति मध्यमा धनधान्य समृद्धिश्च पुत्रकन्या समावृता वितथापरमाविष्टो पतिकष्ट भयंकरम् पूर्वयत्नादितोपुण्यं नित्यंसौभाग्य रूपिणी
रसपक्षाद्ध मारभ्य व्योमराम बथान्तरे व्ययलाभमहत्वेण कचिच्छोक प्रदादशा पुण्येण पुनरानन्दं मंगलंविविधोत्सवाः व्योमचत्वारिवर्षान्तं
सर्वेच्छासुख पूजिता दम्पत्योरल्पजंकष्टं सुपुन्याच्छान्तिनित्यशः तीर्थयात्रा जप पुण्यं सर्वानन्द विवर्द्धिनी उद्वाहादि महोत्साहो सुप्रसिद्धप्रशंसिता
ग्रयत्नेविपरीतयही भोक्तव्यं कर्मजंफलं तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन सुखसाधन माचरेत व्योमबाणगतेवर्षे पौत्रजन्म महोत्सवा सर्वैश्वर्यं समायुक्ता
मतिधर्मेस्थितंयदा एतत्कालान्तरोवत्सः महत्त्वंसुधनाधिपा ग्रामभूमि महल्लाभं दासदासिश्च वाहनम् ईश्वरा राधनेप्रीती पुन्यैश्वर्यं विवर्द्धिनी
ग्रपुत्राणांचवैधव्यं पूर्वयत्नविनिर्मुक्ता तस्मात्सर्वप्रदानेन कृत्वातन्त्र मुदाधिः दिव्याद्धमायुष्यं दुःखशांतिः सुखंलभेत् पुत्रपौत्र प्रपौत्रश्च
धनधान्यादिकंमहत प्रकाशितवसर्वत्र पुन्यैश्वर्यं सुदुर्लभा महत्कर्मविकंलोके सर्वत्रैवप्रशंसिता ज्येष्टमासेतमोपत्तेपंचम्यां निधनंदिवे दानमन्त्रा
दितोर्नूनंप्रसिद्धकुलवर्द्धिनी पुनरग्नेसमुत्पन्ना नृपवंशेसुसद्व्रता पतिव्रतासुधर्मात्मा पदोच्चश्चसुसद्गतिः ईश्वराराधनेपुन्यं स्वर्गलोके पुनर्गता ॥

स्त्रो
८०

एतद्योगोद्भवाःबालासुस्वरूपासुलक्षणा जन्मतःमातृकष्टोपिनातचिन्तातिगुप्तता दिवेमासेपिसावृद्धा शुक्लसोमकलायथा नातिगौरोनष्णांगी मध्य देहसुशोभना। गोधूमाकारवद्रूपाशुचिसाध्वीमनोहरा चारुहास्यकराशुभ्राकुचिरांगीमनोहरिः पतिप्रेमकरासाध्वीकोमलांगीशुभानना गृहकार्येसुकुशला सर्वसौख्याधिकारिणी क्लिश्यंतिपूर्वपापेण पतिप्रीतिर्विन्यूनता विवादकलहंगेहोगुप्तकष्टह्यु पद्रवाः पतिपुत्रादिद्रव्याणि नसुखंसुस्थिरोमति बहुकार्य मनोद्वेगंवस्त्राभर्णं न्यूनता एवंहिविविधोदुक्खंप्राप्यतेपूर्वपापजं पुराजन्मिदंवालाद्विजवंशसमुद्भवाः मौम्यसाधुसुप्राज्ञश्चपतिदेवसमंलभेत गृहाश्रमं सुप ल्यक्तेनिर्द्धनसतपोधनम् द्रव्याभावेणक्रुद्धयन्ति नारीयकलहंकरा बहुमूल्यवस्त्राभर्णं नित्येच्छापतिधर्षितम् अतिवादेणक्रुद्धोसौ महात्मासुव्रतेरति भार्यात्यक्त्वावनेगत्वा ब्रह्मव्रतपरायणं सर्वावस्थातपस्तप्त गतोब्रह्म रेद्विजः नरीयंक्लिश्यतिगेहे कालेणमृतिस्तदा पतिपुण्यशतांशेणप्राप्नुयाद्मानु षीतनम् सुकुलंसुगृहेजन्मः इहजन्मयथाक्रमः ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पत्यपमानपापेण दुक्खितोपिस्वकर्मणा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेविघ्नभवन्तिही यत्नंचास्यपरंगोप्यं कृत्वासर्वसुखंलभेत् शुद्धस्वर्णकृतोपत्रे यथावित्तंसुभक्तितः लेखयेद्रक्तगन्धेण गौरीमूर्तिसुमन्त्रयुत् मन्त्र। ॐ ऐंह्रींक्लीं सर्वेश्वरीमहागौरीसर्वसौभाग्यदायिनी पतिद्वेषमहापापंविध्वंसायनमाम्यहम् श्रींक्लींह्रींऐंॐ वेष्टितांरक्तपट्टेणसंस्थाप्यंकलशोपरि पूजयेभक्ति भावेणयथाविभवविस्तरै सावित्रा पुटदत्वापूर्वमन्त्रजपेत्पुनः इन्दुषष्टसहस्राणिजपतोनास्तिपातकम् आचार्य्यायप्रदातव्यापरंगोप्यंसुयत्नतः सोसर्व विधिवत्कुर्याद्दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वसौख्यलभेन्नित्यपतिपुत्रधनादयः मनेच्छापूर्जितोनित्यंमोदतेबहुविस्तरात् अथाद्यश्चसमासेणकथासर्वंयथाक्रमात प्रथमेद्वितियेवर्षेतातमातसुखावहं शरीरेजायतेकष्टंसर्वश ातिसुयत्नतः तृतीयेवेदबाणाब्देक्रीड्यन्तिहीदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालिकाप्रियवादिनी शिशुणांसंगमेप्रीती क्रियतेप्रेमवर्द्धिनी बालक्रीड़ाविशेषेण मोदमानगरीयसी यद्रोगज्ञायतेल्पंही नित्यंपुण्येणनश्यति रसाब्देव्यालवर्षांतं प्रतियत्न महोत्सवा गृहकार्येरतिर्नित्यंचञ्चलश्चपलोमति संबंधश्चर्चयागेहोव्ययदोर्घविचिंतनम् पूर्वयत्नकृतेकाव्यविस्तृतिसर्ववैभवाः सौभाग्यमहतोपुण्यंबुद्धिरे विवर्द्धनं तातमानतथालाभंवर्द्धतेनित्यनूतनं ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेवर्द्धयंतियथाक्रमः उद्वाहोचर्चयागेहेमंगलंमहदागतः महोत्साहश्चतत्रैवमोदमानंगरीयसी

स्त्री०

८१

सुभाग्यमहतोपुण्यंपतिप्राप्यमनोहरम् तातकीर्तिविशेषेण सर्वकार्यसुसिद्धति विविधोभूषणोवस्त्रैभाग्यपात्रोसुशोभिता मानेनमहताविष्टोद्वयोगेहप्रका
शिनी गृहकार्याणिसर्वाणि बुद्धिरेवविवर्द्धनम् प्रकाशोविपणीभूयात्प्रियहास्यविलासिनी प्रायश्चित्तमहादानं नित्यंसर्वसुखप्रदा गुणचेन्दुगतेवर्षे ऋतु
चन्द्राद्वकेतथा पतिप्राप्तिविशेषेण सर्वसाफल्यवैभवाः शरीरेजायतेकष्टं औषधिप्रतिशांतये पतिप्रीतिहृदेगुप्तंप्रत्यक्षश्चदिनेदिने सुस्वरूपाप्रियसर्वेमंगलं
मोदवर्द्धनः अयत्नेक्लेशितोर्नूनं विपाकेहानिसंभवाः भगवद्भक्तिभावेण पूर्वपुण्येसुखंभजेत् नगसोममितेब्देतुव्योमपक्षावधिक्रमात् मासवर्षेसुखंनित्यं
पति मपरायणः कष्टश्चमहतोभूयात्पुनरप्याहिमोदितं सर्वसौख्यान्वितोभूयद्दानिरन्तेस्वकर्मणा दानमन्त्रसुपुण्येणसर्वसौख्यसमागमः सुतापुत्रादिजा
सवःमोदितंपतिभिस्सह इन्दुपक्षमितेद्वेतुशरपक्षाद्वकेतथा भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेबहुनूतनम् महत्वर्माधकंलोकेसुखयुधत्नसाधितः दम्पत्योरल्पज
कष्टंशान्तितत्रैवयत्नतः नसुखंलभतेपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् नानाचिंतामनोद्वेगंदुक्खिताचमुहुर्मुहुः कुलेविघ्नमुपाधिश्चभर्तारंतप्यतोतथा किंचिद्दाना
दिमंत्रेणसुखंसर्वासुयत्नतः ऋतुनेत्रगतेवर्षेव्योमरामसुचान्तरे पूर्वयत्नंसुपुण्येण भर्तारंसुखसर्वदा बृहद्गागोसुतप्राप्यसाफल्यंजन्मभूतले सर्वारिष्टक्षयो
नित्यंसुपुण्येसर्वमंगलम् चत्वारिंशावधिंतत्रः मनेच्छासर्वपूजिता विवाहामंगलंकार्यं जायतेविविधगृहे कीर्तिश्चनिर्मलीभूयात्कुलंतेनप्रकाशिता कुल
वृद्धिविशेषेणसुप्रतिष्टोयशस्विनी अनुष्ठानमहादानंपुंसंरक्षयेद्यदि सुखंसर्वाणिरत्नसूयवसुन्धरा चन्द्रचत्वारिवर्षाणितथाव्योमशरान्तरे सद्वयोयो
पिधनंधान्यंसुविख्यातांप्यमानिनी धर्ममार्गेगताप्रज्ञा सर्वसौख्याधिकारिणी द्विपुत्रोचन्द्रकन्याच भर्तारंहिमहत्सुखम् जन्मसाफल्यमाप्नोति विस्तृतिंसर्व
वैभवाः नानालाभसुखासर्वे सौभाग्यंमहतोत्सवम् सर्वेप्सितंफलंप्राप्य: पूजनीयोमहत्यशा शरपञ्चतथाब्देहि पौत्रजन्ममहोत्सवम् तीर्थदेवालयेप्रीती
दानधर्मादितत्परः शरीरेकष्टसम्पन्नो मृत्युरेवसमोमहत छायापात्रान्नदानेन सर्वशांतिसुयत्नतः महादानादितोनूनं हर्षवृद्धिदिनेदिने मंगलंमहत्तोयावी
कष्टापत्तौरुजक्षयम् राजित्तंसुप्रबंधेण रमा शविवर्द्धिनी पौत्रजन्मविशेषेण महोत्साहोप्रशंसिता इन्दुषष्टाद्वमायुष्य किम्वावेदरसाद्वकी ईश्वरंभक्ति
भावेण प्राप्नुयातपरमांगतिः अथाग्रेसुकुलोत्पन्नं पुण्यपात्रीमहत्पदम् त्वयत्नेविपरीत्यहि त्रिजन्मंपापपीडितः दानमंत्रमहोत्साहो सर्वसौभाग्यदायकः

एतद्योगोद्भवोकन्यासुस्वरूपाचसुन्दरी पतिप्रेमकराप्राज्ञीसुशीलाचप्रियंवदा नातिगौरीनकृष्णांगीगोधूमाकारवत्तनुम मध्यपादकरदेहोचारुहास्यावला
सिना मातृकष्टप्रदोति चित्तातचिंताप्रदायिणी गृहकार्येसुकुशलापुनरानंदवर्द्धिना कोमलांगीसुप्राज्ञिश्चमध्योष्ठीचारुनासिका सुनयनाभूतिशुभ्रारुचिरांगी
नितम्बिणी पूर्वावस्थाविशेषेणरमंतोसखिभिस्सह लक्षणाञ्चशुभासर्वे किंचित्पापाद्धोगतः भ्रातभग्नीसमायुक्तभूयसेपिस्वकर्मणा पूर्वावस्थासुखंदीर्घः
मध्यावस्थात्वमध्यमम् अन्तेदुःखाश्रयोनारीक्लेशितंप.प.र्मणा कल्पयंतिमहच्चिंतासर्वसौख्याविकारिणी यावद्यत्नंनकर्तव्योदुःखंप्राप्यमुहुर्मुहुः नसुखं
लभतेपूर्णांपतिपुत्रात्मजादयः वियोगकलहोदुःखंहानिरेवदिनेदिने पुराविप्रकुलेजातासुस्वरूपातिसुन्दरी सर्वसौख्यान्वितोभूयात्सुमतिर्वाग्विलासिनी
दानधर्मेमतिःस्वल्पाःदूषितविप्रसाधवा गेहेविवादितोनित्यंनिंदंतिस्वसुरादयः क्लिश्यतेतेनभर्तारंकुमार्गीभूयसेपिसा कदाचिद्दैवयोगेणगृहेक्लेशोति
दारुणम् वादावादकुवाक्येण क्रोधावेशमहत्यपि तत्रचेदंगृहत्यक्त्वा कूपेपततिदुष्टता आत्माघातमहापापं कर्तव्यंसाद्यु पस्थिता दैवेणरक्षितस्तत्रः नैव
मृत्युवशंगतः दुःखितंतेनविविधंभर्तारंरोषितोमहान् पितृमातृसमायुक्तंशापितविविधंतया नसुखंप्राप्नुयाद्वामात्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि एतस्मात्कारणा
द्वत्समानुषीपापमाश्रयः एतज्जन्मत्रिजन्मानिदुःखिंतापापकर्मिणी क्लिश्यतिविविधोगेहंपतिपुत्रादिसर्वथोः नसुखंलभतेपूर्णांयाद्यत्नंनपापहम् स्वर्णपत्र
कृतोतत्रयथावित्तसुश्रद्धया नगांगुलंसुविस्तीर्णंत्रागांगुलतथैवच तस्योपरिलिखेत्तत्रविष्णुमुद्रायथाक्रमः संस्थाप्यविधिवत्कुंभेवेष्टितांपीतपट्टतः तदग्रे
मंत्रमाराध्यपूजनंभक्तिभावतः तत्रमंत्र ॐऐंह्रींक्लींश्रांशं सर्वेश्वरायसर्वरूपायविश्वरक्षणोमहापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापंनाशय२ तज्जनित
सर्वकष्टंविदारय२ मनोभिलाषितसौख्यं प्रकाशय२ स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ एतन्मंत्रजपेत्प्राज्ञः नंदव्यालसहस्रकम् सावित्रीतत्प्रमाणेनवटुकाराधनंततः
पुरुषसूक्तमुच्चार्यश्रासूक्तञ्चसुभक्तितः शुद्धस्थानेक्रमेणैवकूर्यातंत्रमुदारधि आचार्यायप्रदातव्यमूर्तिसंकल्पयेत्पुनः ईश्वरभक्तिभावेणाशिर्वादञ्चग्राहयेत्
प्रतियत्नसुखंवृद्धि मोदतेभक्तिभावतः पतिपुत्रसुखंसर्वजन्मःक्लेशनाशनम् प्रजोपभोगवृद्धिश्च राजतेसर्वसम्पदा पतिप्रेममहत्वेण सुखंजन्मनिजन्मनि
महत्वमधिकंलोकेसाफल्यंसर्ववैभवाः परंगोप्यमतंवत्सः पुण्यामार्गसुखप्रदा कथयामिसमासेण अथाग्रेश्रुणुभार्गवः प्रथमेद्वितीयाब्देतु रामव यथाक्रमम्

मासेमासेविवर्द्धतिबालिकाशुचिलक्षणा तातमातसुखंनित्यंगृहेमंगलमेवच शरीरेकष्टसंपन्नोभूतछायाश्चविह्वलो: किंचिद्दानादिमंत्रेणश्रेयमानासुयत्नत
दंतवाधापुन:पीडयंज्वरतक्षविरेचनम् छायापात्रान्नदानेनश्रेयवृद्धिरुजनशे १ चान्येपिरांभवोकष्टंसुयत्नंशांतिनित्यश: चतुर्थेप ञ्चमाब्देतुषष्टंवर्षादिसप्तमे
शिशुक्रीड़ारतोनित्यंचञ्चलश्चपलामति: मंगलंजायतेगेहोकुलकीर्तिविवर्द्धनम् भ्रातजन्ममहोत्साहोकन्यकासुखरूपिणी यद्रोगंजायतेकष्टंयत्नेनशांति
भेतत: अष्टमेद्वादशेवर्षेपतियोगाथमङ्गलम् गृहकार्येसुकुशलाकन्या:रूपवतीसती क्रीड़तिविविधंबाला मोदितंसखिभिसह विवाहमहतोत्साहोपतिरेव
सुप्राप्नुयात तातकीर्तिविशेषेणवर्द्धतेचलतेवस: विविधाभूषणोवस्त्रंप्राप्यनेपिवरानना त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दोमध्येमहत्सुखम् स्वकृत्यकुशलोबामा
मोदितापतिभिसह भयभीताहृदेगुप्तंकदाचिच्चिन्तनोमहत् भोगाप्रवेभवोनित्यंवर्द्धतेपुण्यकर्मणा ऊनविंशतथाविंशेशरनेत्राद्धमध्यगे आनंदसंप्लवेलीन
भोगामैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविशेषेणपुण्यादानन्दसर्वदा कुलवृद्धिप्रभावेणप्राप्नुयाज्ञानमुत्तमम् पूर्वपुण्यंसुयत्नेनपतिपुत्रधनादिजा सर्वसौख्यान्वितो
भूयान्मोदितागेहभूषणा शरीरेसंभवोकष्टं सुयत्नेशांतिसर्वदा मंगलंविविधोत्साहो कुलवृद्धिप्रकाशिता ऋतुनेत्रगतेवर्षे यावनभत्रियाद्धके दानमन्त्रं
सुपुण्येणपतिपुत्रात्मजंसुखम् नोचेद्धिलोमकंब्रत्तंभोक्तव्यहीस्वकर्मणा यावद्यत्नेनकर्तव्यासुखेशोकसमागम: त्रिंशेकोपञ्चत्रिंशाब्देशून्यचत्वारिमध्यमा
विवाहोमंगलंकार्यं जायतेशुचियत्नत: प्रकाशोविपणीभूयाद्दानमन्त्रमहत्फलम् पूर्णभाग्योदयंभूयाद्यशसौख्यविवर्द्धते नानाकार्यप्रबन्धेण राजते
पुन्यसम्पदा पूर्वयत्नादितोनिन्यं पतिभक्तिपरायणा मनेच्छापूजितंलोके सुखंसर्वत्रवर्तते शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाद्धमध्यगे सुप्रसिद्धा:
सुनारीणां पतिप्रेमविवर्द्धिनी सुतापुत्रसुखाविष्टो पौत्रजन्ममहोत्सवम् व्ययलाभमहत्वेण सर्वेच्छासुखपूजिता पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले
शशिपञ्चशरेपञ्च तथासून्यरसान्तरे ईश्वराराधनेप्रीति तीर्थमन्द्रादिसेवनम् व्रतनेमरतश्चापि दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वेप्सितंफलंप्राप्य: पुण्यपात्री
सुमानुषी किंचिच्छोकोगभोगेहे गृहाशक्तापिक्लिश्यति ईश्वराराधनेप्रीति सर्वसिद्धिप्रदोभवेत् देवपुण्योत्सवेतस्य व्ययंकीर्तिसुनिर्मला वेदषष्ठाद्ध
मायुष्यं किंवाशररसाद्धकी स्वगृहेनिधनंचास्य प्रशंसापुण्यतोभुवि: पुनरुच्चकुलेजातं दानधर्मादियत्नत: सर्वसौख्यसमायुक्तं प्राप्यतेपरमांगति:

सर्वखेटेष्टमानेनयोगोयंसुखवर्द्धन धनधान्यान्वितोभूयाद्भाग्यपात्रीसुमोदिता जन्माद्धनयुतोबाला तातमातसुखप्रदा मिष्टभाषीसुशीलाच गीतवाद
परप्रियः महर्घभूषणौवस्त्रंप्राप्यतेबहुमानिनी रूपहास्यसुसंपन्नामध्यमाङ्गीसुलोचना पीडितंपूर्वपापेणसर्वसौख्याधिकारिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण वामा
क्लेशमवाप्नुयात शोकातोविविधंचिन्ताविभ्रमोव्याकुलंकदा नसुखंलभतेपूर्णं यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येण नित्यंसौभाग्यरूपिणी प्रतियत्न
सुखंवृद्धि मनेच्छासर्वपूजिता सुकार्यसुस्त्राभेण पत्यरत्यन्तवल्लभाः कुलकीर्तिकरासाध्वी सतिसौम्यप्रियम्बदा मानेनमहताविष्टो यशंभूरिसुकर्मणा
पूर्वजन्मनियत्पापं कथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुःखितापापरूपिणा वैश्यवंशोद्भवोकाव्यःनारीयंपूर्वजन्मनाः निजगेहेश्वरीभूयाद्धनपुत्रेण
दर्पिता दानधर्मरतोनित्यं व्रतयज्ञसमाचरेत दासवाहनजैर्नित्यं गर्वितापुण्यरूपिणी साकदाजाह्नवीतीरे संस्थितादिवसेरसे अग्निकांडेनतत्रैवव्याल
वंशक्षयंकरः तेनपापाश्रयोभूयाद्दुःखिताइहजन्मनि कुलवृद्धिनदृश्यंतेपतिक्लेशोतिदारुणम् अतस्तंशांतिहेत्यर्थंकृत्वातन्त्रशुचिस्थले निजवित्त नु
सारेणस्वर्णपत्रकृतस्तदा लेखयेद्रक्तगधेण व्यालमूर्तिकुलान्वितः संस्थाप्यकलशेपूज्य रक्तपट्टेणावेष्टितम् सुविप्रोमन्त्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्रकम्
। तत्रमन्त्रः । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशंनमः शङ्करायशिवाय सर्वदुःखहर्ताय पूर्वजन्मव्यालवंशक्षय पापशमनाय सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ
सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या आचार्यायप्रदापयेत वस्त्रआभूषणंदत्वा दानमानैसुतोषितम् नित्यपुण्याश्रयोवामा
एतद्यत्नसुखप्रदा सौभाग्यंसंततिसर्वाः मोदितागेह भामिनी जन्मकाल समारभ्यः यावज्जीवतिभूतले तावत्कालीयजगाथा कथयामिसमासतः
जन्माब्देद्वितियेवर्षंतथावेदेशरान्तरे तातमातमहाचिंताबालिकागेहभूषणा शरीरेजायतेकष्टंस्वयमेवविनश्यति भ्रातजन्ममहोत्साहो मंगलंजायतेगृहे
तातमातमहामोदं साफल्यसर्ववैभवा ज्वरोविरेचनपीड्य उच्चस्थपतनाद्भयम् बृणविस्फोटकोव्याधि सर्वयत्नेनशांतय·मृदुवाक्यमनोरम्य दृष्टिहास्य
मनोहरी तातप्राणेषुसन्देहोपुण्यात्सवसुखागमः रसाब्देव्यालवर्षेवतयोरन्तर्यथाक्रमः चंचलश्चपलोसाम्याक्राडतिसखिभिसह तातलाभविशेषेण
प्राप्यतिमानमुत्तमम् गृहक्लेशोपदानव सुयत्नेशांति नित्यशः नातिधनी भवेत्तातः नातिनिर्द्धन मेतथा मध्यमापिसुशालाश्च लाभवृद्धिक्रमेणवै

अहाब्देद्वादशेवर्षेशरसोमक्रमादितः मंगलंकार्ययोगोपिमासेमासेसुखागमः तातमातमहच्चिंताव्ययोगमहत्यपि उद्वाहो मंगलंदिव्यंकुलकीर्तिप्रशंसिता
महर्घभूषणोवस्त्रं अप्यतोननूतनम् अन्नदानादितोनित्यं श्रेयवृद्धिश्चसर्वदा सुगेहोसुपतिप्राप्यः सुपुण्याद्भाग्यभाजिनी सर्वापत्तौक्षयोनित्यंपूर्वयत्नेसु
रक्षणम् पतिप्रेमविवर्द्धतिविस्तृतोरूपयौवनम् मासेवर्षेसुखंजातंकष्टशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षेविंशवर्षावधिततः सर्वसंपत्समायुक्ता ग्रहकार्ये
सुकौशला पतिप्रमविकरावामारमयन्तिसुमोदिता विद्याबुद्धिविशेषेण सुसंगाच्चयशंमहत् भाग्योदयंभवेन्नित्यं संतद्योगोभिजायते मानकीर्तिमहोत्साहो
महदानंदवर्द्धिनी वंपत्तोरल्पजंकष्टंपुण्यात्शांतिसुखागमः दानधर्मेसुखंनित्य मिष्टदेवसुपूजनात् चैकविंशत्त्रिविंशाब्दे शरविंशतिकेतथा पतिभक्ति
सुपुण्येणमनेच्छाबहूपूजिता प्रीतिरेवसुनारीणांसुखक्लेशप्रकाशिनी मंगलंचर्चयागेहो पुत्रकन्यासमायुता सर्वकार्येसुकुशला पतिरानंदवर्द्धिनी सुस्व
रूपाप्रियसर्वाः सुभगासुविचक्षणा त्रिंशवर्षावधिर्नूनं शुचिशौख्यान्विताभवेत् भाग्यवृद्धिःसुयत्नेन विलीयंतेपिशत्रवः मंगलंविविधोकार्यं जायतेनित्य
नूतनम् शशिरामाद्ब्दमारभ्यशरवह्नितथांतरे सुतापुत्रसमायुक्तामोदितापतिभिसह वृहल्लाभप्रभावेणसर्वदामंगलंभवेत् विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
प्रकाशिणी मानेनमहतात्रिष्ठो राजतेसर्वसम्पदा अकस्माच्चमहल्लाभं व्ययोपिबहुसाधिता सर्वसौख्यागमोगेहे कष्टचिन्ताविनश्यति स्वयत्नेविपरीं यही
भोक्तव्यापापजफलम् नेत्रवेदाब्दगेवत्समहच्छोकप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेनपूर्वसंरक्षितायदि सर्वोपिमानदोमान्यवनितापुण्यरूपिणी वह्निवेदगतेवर्षे
व्योमबाणसुध्यगे देवदर्शनतीर्थेषुसाफल्यंमानुषीतनम् नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेपुण्यसम्पदा प्रकाशोविपिणीभूयात्कुलवृद्धिमहोत्सवाः पूर्वयत्नप्रभा
वेणप्राप्यतेपरमंसुखं अतःपरिसुपुण्येणयावद्वयोमरसाब्दके तावत्कालावधिर्नूनमनेच्छासर्वपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहोस्वगेहेसुप्रतिष्ठिता नृत्यगीतोत्सवै
र्गेहंशोभितेबहुविस्तरात् भूमिलाभविशेषेणरचनागेहनूतनं गुप्तद्रव्यगृहेतस्यधर्मकार्येव्ययोमहत् साधितंसर्वकार्याणिपुण्यपात्रीसुशोभिता रामसप्ताब्द
मायुष्यंपूर्वरापयेसुरक्षणम् अयत्नेक्लेशितानित्यं वैधव्यंपापरूपिणी त्रिजन्मंपीडितोपापं नित्यक्लेशाधिकारिणी दानधर्मरतोनित्यंतस्मात्सर्वसुखार्थये
पापशांतिप्रभावेणपुण्यात्सर्वसुखंसदा सकालेक्षयतिश्चापिसर्वत्रैवप्रशंसिता इहजन्मसुखासर्वेतथैवाग्रत्रिजन्मनि सर्वेच्छापूजितापुण्यंनित्यंपापाद्भयोगता

सर्वखेटेष्टमोनेन धनाध्यक्षासुभामिनी सुस्वरूपाप्रियासर्वे चारुहास्यविलासिनी सुप्रसिद्धा:स्वधर्मात्मा गृहकार्यहितेरता: मध्यमांगासुमतिमान् पतिप्रेम
विवर्द्धिनी भोगमैश्वर्यसंपन्नात्रस्त्राभर्णैसुशोभिता धनपुत्रसुखंसर्वदा मदासिश्ववाहनम् सर्वैश्वर्यसमायुक्तापुन:पापाद्वधोगता पतिपुत्रात्मकष्टेणक्लिश्यति
त्रिविधोमहान् आपत्तौचविशेषेण जायतेपूर्वपापत: चिन्तयेद्विविधोबामा मानहानिभयंमहत् धनहानिविशेषेण गृहेक्लेशह्यु पद्रवा: तामसंक्रोधवेगेण
कार्यहानीभवेध्रुवम् विमुखोयातिभर्तारंवैधव्यान्तेमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येणपापशांतिसुखागम: ईश्वराराधनेप्रीतीमनेच्छाबहुपूजिता मानकीर्ति
विशेषेण पुण्यंसाफल्यवैभवा: अत:परिसुखा:सर्वे अग्रजन्मपुन:पुन: राजयोगभवेत्पूर्णा नानारत्नै:सुशोभिता ईश्वरंकृपयादामाप्राप्यतिपरमांगति:
पापशांति:यदानैवक्लिश्यतिसाधमामति: पूर्वजन्मनित्यपापंकथयामिसमासत: येनक्लेशाश्रयोनारीदुक्खितातिमुहुर्मुहु: शूद्रवंशोद्भवापूर्वेसाधुसेवा
सुतत्परा ईश्वराराधनेप्रीती दासीचैवातिनिर्द्धना नित्यंद्विजगृहेसेवा स्वोदरंपालयतिसदा साधुसेवाप्रभावेण ईश्वराराधनेनवै बहुपण्याश्रयोशूद्री
भूयसिभाग्यभाजिनी कदाचिददैवयोगेण द्विजगेहेमहद्धनम् दृष्ट्वातुस्वपतिब्रूयाल्लोभग्रस्ताधनामति: हृतंद्विजधनंसर्वमुभयो पापमाश्रय: नदृष्ट्वा
स्वधनंविप्र: शापंदत्वातिदुक्खितम् तेनपापप्रभावेण इहजन्ममहद्भयम् साधुसेवासुपुण्येण उत्तमेकुलसम्भवा: रूपलक्षणसम्पन्ना कोमलांगीशुभानना
आदौपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत पुन:पापोदयंभूयात्पतिबुद्धिविनाशनम् वैश्यागामीमदोन्मत्त: सर्वद्रव्यक्षयंकर: क्लिश्यतित्रिविधोतेन
शरीरेदारुणभयम् कुलकीर्तिक्षयंसर्वं गृहेशोकसमागम: एवंहिविविधोदुक्खं त्रिजन्मंजायतेमहान् तस्यशांति:प्रवक्षामि येनचाग्रेसुखंलभेत ताम्रपात्रे
घृतंगुत: स्वर्णद्रव्यसुश्रद्धया वेष्टितांपीतपट्टेणपुष्पमाल्यादिभूषितम् द्विजभार्यान्वितोभूति स्वर्णपत्रसुलेखयेत् संस्थाप्यकलशेतोत: पूजनंभक्तिभावत:
आचार्याय:प्रदातव्यं तद्दानंसुविधिर्यथा शशिव्यालसहस्राणि मन्त्रमेतज्जपेत्तदा ॥ मन्त्र ॥ ॐ ऐंह्रींक्लीं श्री सर्वेश्वरी भगवतीदेवीं पूर्वजन्मकृत
शापपापशमनं कुरुकुरु सर्वसौख्यप्रदायिनी स्वाहा हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति पुन:सर्वसुखंलोके धनपुत्रादिजैरपि पतिराज्ञाप्रपाल्यन्ते
शोभितागेहभूषणा सर्वसौख्यान्वितोबामा पुनश्चैवाग्रजन्मनि ग्रामभूमिधनंप्राप्य: सुपुण्यात्मादयामयी पुण्येच्छापूजितासर्वे त्ययत्नेक्लेशभाजन

जन्मतः प्रथमेवर्षेवह्निवर्षेषुयत्क्रमः तातमातहृदेचिंताबालिकाप्रेमवर्द्धिनी शरीरेकष्टसंपन्नोज्वरानतिसारादयः दन्तपीड़ावितप्यन्तिशांतिरेवंसुयत्नतः
वृहद्धरीतकीचैवलक्षणांश्यामसंयुता देयात्शांतिप्रजायंतेशरीरारोग्यवर्द्धनम् अन्नदानादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते दानमंत्रंसुयत्नेनपापशांतिःमहोत्सवा
शुचौपत्नेयथासोमःयोगस्तद्वत्प्रवर्द्धते वेदाब्देपञ्चमेवर्षेऽष्टंवर्षादिसप्तमे बालासुभोगमैश्वर्यंवर्द्धितेपुण्यकर्मणा वृणांविस्फोटकोव्याधिःसर्वशांतिसुकर्मणा
क्रीड़तेमतिसंजातंगेहकार्येसुतत्पराः ततचिंतामनोद्वेगंसंबंधस्यविचर्चितम् मातृकष्टविशेषेणभ्रातजन्मसुखोत्सवम् व्यालवर्षनभेंदुश्चनेत्रचंद्राद्धमध्यगे
गृहकार्यरताबालात्रिवाहोमंगलंमहत् व्ययद्रव्यमहतातोमोनःकीर्तिश्चनिर्मला पतिरेवसुप्राप्यंतिवस्त्राभर्णमनोहरा सुखेणमहताविष्टोपुण्यैश्वर्यविवर्द्धनम्
अयत्नेपापजंकर्मविपाकेदुःखदोमहान् त्रयोदशाद्वसंप्राप्ते अष्टादशमितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणराजतेपुण्यसंपदा मनेच्छापूजितोनित्यंचित्तचिंतायदाकदा
दानधर्मादितोनित्यंसर्वैश्वर्यदिनेदिने ऊनविंशेचविंशाब्देपञ्चविंशतिमध्यमा स्वगेहेसुप्रतिष्ठोपिवनितापुण्यरूपिणी यावद्यत्नंनकर्तव्यासुखेविघ्नमहद्भयम्
प्रायश्चित्तंसुपुण्येण आयुवृद्धिमहत्सुखं पुत्रकन्यासमायुक्तापतिप्रेमविवर्द्धिनी नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसम्पदाः रसविंशमितेवर्षेव्योमरामक्रमादितः
महोत्साहश्चतत्रैवमंगलंमहदागतशरीरेजायतेकष्टंदंपत्योरेल्पजंभयम् छायापात्रान्नदानादिसुखयुद्यत्नसाधितः दासवाहनजैर्नित्यंभोगमैश्वर्यसर्वयोअयत्ने
विपरीत्यंहीपतिपुत्रेणक्लिश्यति इन्दुरामाद्धमारभ्यःचत्वारिंशावधिततः वांछापूर्तिप्रजायेतःपूर्वयत्नेसुरक्षिता विवाहादिमहोत्साहोकुलकीतिमहत्यपि
मंगलंविविधोनित्यंप्रजावृद्धिवृहद्यशः ईश्व भक्तिभावेणसाफल्यंसर्ववैभवा तुष्यतिविविधोनित्यपतिपुत्रात्मजादयः कार्यवृद्धिविशेषेणकष्टचिंताक्षयंसदा
अनुष्ठानमहादानंसद्यःसर्वसुखप्रदा सर्वपापविमुक्तापुण्यरूपासुमानिनी पुण्यपापाश्रयोनित्यंसुखदुःखादिसर्वयो शशिवेदगतेवर्षेमल्लवेदाद्धमध्यमा
शरीरेजायतेकष्टंमहादानसुखप्रदा देवतीर्थाटनेप्रीतिशताद्धवत्सरावधिः रामबाणमितेब्देतुपौत्रजन्मेच्छितप्रदं मंगलंविविधोत्साहोयशसाधननित्यशः
प्राप्तेवेदशराब्द तुव्योमषष्टक्रमादितः दानधर्मरतानित्यमग्रजन्मसुखार्थये देवदर्शनतीर्थेषुपवित्रंमानुषीतनम् सर्वत्रैवंप्रकाश्यंतिपूर्वयत्नेसुरक्षिता त्वयत्ने
क्लिश्यतिबामा वैधव्यंपापरूपिणी पूर्णायुरष्टषष्टाब्दे पञ्चतत्वप्रथग्भवेत् सुपुण्यादग्रजन्मेच सर्वसौख्याधिकारिणी वैश्यवंशसमुत्पन्नं वनितागेहभूषणा

सर्वयोगविचारेणायोगोयंसुखदर्शकः सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुण्यरूपासुभामिनी जन्मतःमातृकष्टोपितातचिन्ताचगुप्तता जन्मकालात्प्रवर्द्धतःसंपदा
पितृवेश्मनी यथादेहप्रवर्द्धतः भोगमैश्वर्यनूतनम् मध्यभागोसुशीलश्चवस्त्राभर्णैःसुशोभिता दृष्टिहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ासुचञ्चला गुप्तचिन्तामनोद्वेग
क्रोधेणतप्यतिक्कदा चितयंतिविशेषेणस्वकार्यसाधनेमति तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवं मध्यरूपाशुभांगीवसुनयनाशुभ्राशुचिः मनेच्छापूजित्ता
बन्हीदशाश्रेष्ठसुखप्रदा उद्वाहादिमहोत्साहो तातकीर्तिसुखप्रदा पतिप्रेमकरारन्या गृहकार्यविचक्षणा पीड्यतिपूर्वपापेण सुखेशोकह्युपद्रवा विनश्यति
विविधोद्वेगंस्वल्पायुरल्पजंभयम विवादकलहंगेहेनिमग्नाःशोकसागरे पतिपुत्रात्मजादिणांसुखेविघ्नंहिपापजम् नसुखंसुस्थिरोलोकेयावद्यत्नंनपापहम्
प्रायश्चित्तमहादानंसर्वसौख्यदिनेदिनेमंगलंविविधोत्साहोसुतापुत्रविवर्द्धनम् नित्यंपुण्याश्रयोलोकेसफलंमानुषीतनम् तथैवोदुक्खदंपापारितिज्ञात्वासुनि
श्चितम् । शुक्रोवाच । पूर्वपापकथंतातःकथयस्वप्रसादतः येनदुक्खलभेन्नारीतस्ययत्नकथंभवेत् । भृगुवाच । पूर्वजन्मकथावत्सःप्रवक्षामिसमासतःवैश्य
वंशसमुत्पन्नानारीयंधनगर्विता व्रतदानरतोभूयादंतर्ज्ञानाभिमानिनी तत्रैकसमयेवत्सव्रतोद्यापनमाचरेत यज्ञञ्चकारयामासःयशेतेसाधनेमति यज्ञस्थले
शुचौतीर्थेगुरुरेवविवादिति स्वामिआज्ञानमण्यंति त्यज्यतिस्वगुरूतदा रुष्टंतस्यापमानेन विप्रेन्द्रोशापितंमहत् रेदुष्टात्मादुराचारी दर्पितापापरूपिणी
निजकृत्यफलंलोकेत्रिजन्मंदुक्खितोमहान् पतिपुत्रात्मजाक्लेशंशरीरेदारुणोरुजम् प्राप्नुयाद्विविधोद्वेगंगृहेक्लेशह्युपद्रवाः तेनपापप्रभावेणनारीयंदुक्ख
माश्रयः प्रायश्चित्तंविधानेनकथयामित्वयाधुना एतज्जन्मकृतेकाव्यःसर्वसौख्यसमृद्धिमान् यस्मिन्कस्मिन्दिने भूयाच्छ्रद्धाभक्तिसमन्वितम् स्वर्णस्यप्रतिमा
कार्यःयथाविभवविस्तरात विष्णुनारायणोमूर्ति लेखयेद्रक्तचन्दनम् शापदातागुरुमूर्ति तन्निकटेसुविधिर्यथा लिपित्वाशापहंबीजं सर्वञ्चसुविधानतः
संस्थाप्यंकलशेप्राज्ञःवेष्टितांपोतपट्टतः पूजयेद्भक्तिभावेण विष्णुयज्ञक्रमादितः तदग्रेजापयेन्मंत्रेशशिलक्षञ्चवार्द्धकम् ॥ मंत्र ॥ ॐऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय
सर्वपापशमनायभद्रं कुरु२नमः स्वाहा सावित्रीतत्प्रमाणेनशापहंबीजसंपुटम् शैयादानविधानेनमूर्तिदानंसमाचरेत् हवनंविप्रभोज्यञ्चसर्वपापैर्विमुच्यति
नित्यंपुण्याश्रयोलोकेएतद्यत्नप्रभावतः सर्वसौख्यागमोगेहेवनितापुण्यरूपिणी मानकीर्तिमहोत्साहोसुखंसर्वत्रवर्तते पतिपुत्रात्मद्रव्याणिसफलंजन्मभूतले

प्रथमेद्वितियेत्र्वर्षेत्रह्निवर्षाचपञ्चमे दन्तत्राधाज्वरंपीड्यः वृणांविस्फोटकादयः रुदन्तौविह्वलाकन्याभूतछायाप्रपीड्यति किंचिद्दानादिमंत्रेण श्रौषधिसेवने
नवै श्रेयोमानंसुखासर्वं क्रीडतिविविधैरपि भ्रातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमेवत्र अल्पमृत्युभयंघोरं द्वितियोजन्मरायते पुनरानन्दसंप्राप्य प्रायश्चित्तं
सुयत्नतः रसवर्षगतेवत्सव्योमचन्द्रादनन्तरम् बालिकावर्द्धतिनित्यंशुचौपक्षेनिशेशवत भोगाप्रवैभवोवृद्धिः वस्त्राभर्णैःसुशोभिता गृहकार्यरतोबाला
बादहास्यपरंप्रियः छायापात्रान्नदानेन सर्वाऋष्टनिवारणम् विवाहोच्चर्चयातस्य तातचिन्तागरीयसी चञ्चलश्चपलाबाला शिशुक्रीड़ामनोहरा मंगलं
विविधोगेहे मासेवर्षेसुखंगताः शशिसोमगतेवर्षे शरसोमतथान्तरे विवाहोमंगलंदिव्यं कुलकीर्तिप्रशंसिता पतिसौख्यनसन्देहो दानमन्त्रफलप्रदा
दिव्याम्बरंभूषणाञ्च शोभितापिशुभाननां गृहकार्येसुकुशलाभोगमैश्वर्यनूतनम् रसेन्दुविंशवर्षाणिपतिप्रेमविवर्द्धिनी भाग्यवृद्धिर्नसंदेहोसुखंतत्रप्रवर्तते
शरीरेजायतेकष्टंसर्वशान्तिःसुयत्नतः नवाम्बरंभूषणाञ्चप्राप्यतिविविधोतदा मासेवर्षेसुखंजातंसुपुण्यात्पूर्णवैभवोः इन्दुनेत्रगतेवर्षे पञ्चयुग्माद्धकेतथा
शरीरेजायतेकष्टंपुत्रजन्ममहोत्सवम् पतिप्राप्तिविशेषेणयथालाभतथाव्ययम् सुतापुत्रसुखंलोकेमानवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितोनित्यंदानमंत्रंसुयत्नत
रसनेत्राद्धत्रिंशेच तयोर्मध्ये महोत्सवम् अयत्नेविविधोचिन्ता पापादुक्ख महद्भयम् तेभ्यः सरक्षितस्यापि पूर्णायुः सुखसंपदा नानाकार्यप्रबन्धेण
सुप्रसिद्धापिभामिनी पुत्रकन्यासुखाविष्टो पूजयन्तिमनोरथा अनादरस्तुशत्रुणांपतिप्रीतिविशेषतः शशित्रिंशत्रित्रिंशेच शररामान्तरेतथा विवाहो
मंगलंकार्यंव्ययलाभमहत्यपि शरीरेजायतेकष्टमन्नदानात्ततःसुखम् षष्टवह्निगतेवर्षे व्योमवेदावधिःक्रमात् मनेच्छापूजितोसर्वाः नूतनंसंभवेपुत्नः
पुण्यकर्माश्रयोलोके किंकिंसौख्यनलभ्यति भूमिमन्दधनंप्राप्यः रजितंस्वर्णभूषणं देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रीक्रियतितनुम् आज्ञाकारी सुताभृत्याः
प्रजावृद्धि महोत्सवाः वेदबाणाद्धमारभ्यः पौत्रजन्मसुतुष्यति प्रकाशोत्रिपणीभूयाल्लाभोभवति पुष्कलम् अतःपरिसुखासर्वे रामसप्तान्तरावधिः
सर्वसौख्योपिभुञ्जोता सफलंजन्ममानुषी ईश्वराराधनेप्रीती दानादिमतितत्पराः स्वासकासादिजंपीड्यः अन्तकालह्युपस्थिता पञ्चतत्वप्रथग्भूयात्
सप्तभीचाश्विनेतमे प्राप्यतिसुगतिश्चापि पूर्वपुण्यंसुयत्नतः अथाग्रे सुभवेद्राज्ञी सुपण्यात्स्वर्गगामिनी पुण्याश्रये सुखासर्वाः स्वर्गमोक्षैव कारणम्

स्त्रा०

८५

एतद्योगेसमुत्पन्ना बालाबुद्धिमतीसती दाताभोक्तासुधर्मात्मा स्वकुलेसुप्रतिष्ठिता हीनगेहेभवेज्जन्मः स्वामिनीस्वोच्चगेहणी जन्मकालसमारभ्यः
यावज्जीवतिभूतले नानाकर्मकृतालोके सुखदुक्खसमायुता चिन्ततिविविधोकार्यं मध्यरूपासुलक्षणा नातिगौरीनकृष्णांगी मध्यमांगीसुलोचना
शुचौपक्षे यथाचन्द्रः योगस्तद्वत्प्रवर्द्धते संपदासंचयेत्स्वामी वस्त्राभर्णैं सुशोभिता धर्ममार्गे गताप्रज्ञा सुप्रसिद्धा प्रशंसिता धर्मेणैव सहायेण
परमेश्वर्यसर्वदा पापकम कृतेवाधा योगोशाति मलीनता यदापाप गताप्रज्ञा सर्वकार्ये भयप्रदा पूर्णसौख्य नप्राप्यति निमग्नश्चिन्तनार्णवे
तनुकष्टीचाल्पजीवी विविधक्लेशभाजिनी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पापशांतिसुभक्तितः वंशवृद्धिमहत्वेण सौभाग्यंपरमंसुखम् सुतापुत्रादिजासर्वैः
मनेच्छापूजितोभुविः सर्वापत्तौविनश्यन्ति पूर्णायुसुखभाजिनी गलंविविधोगेहे विवाहादिमहोत्सवे त्वयत्नेपापकर्मेण क्लिश्यतिदुक्खरूपिणी
शुक्रोवाच पूर्वजन्मनिकिंपापं कृतंतद्योरकर्मिणी येनक्लेशाश्रयोभूयाद् दुक्खितापिसुगेहणी ॥ भृगुवाच ॥ विप्रवंशोद्भवापूर्वे धनपुत्रान्वितोभवेत्
पूर्वपापेणवैश्वर्यं देवतीर्थाटनेमतिः ईश्वराराधनेप्रीनी ज्ञानध्यानसुतत्परा सर्वद्रव्यव्ययंतीर्थे भूयसित्वतिनिर्धना देवतीर्थाटनेप्रीती नित्यंभ्रमति
भूतने चौरकर्मरतोभूयात्तथाचव्यभिचारिणी बहुवस्तुहृतोदेवाः महत्पापंदुरावृतिः पुण्यपापाश्रयोभूयो तस्मिन्कालेसुब्राह्मणी कालेनमृयतिश्चापि
किंचित्पुण्यफलेणवै समुत्पन्नाथभूभागे सुन्दरीमानुषीतनम् दिनेदिनेपिसावृद्धा संपन्नापूर्वलक्षणौ पापशान्तिःप्रकर्तव्या ताततज्जन्मकालके सर्वाभृष्ट
क्षयोनित्यं विस्तृतिंसर्ववैभवा यावद्यत्नंनकर्तव्या सुखेविघ्नभवन्तिहि तद्यत्नंसंप्रवक्षामि येनसौख्यदिनेदिने स्वर्णपत्रकृतोतत्रः वह्निकोणनगांगुलम्
पंचगव्येणसंस्नात्वा शुद्धितंजाह्नवीजले लेखयेद्रक्तगंधेण विष्णुमूर्तिःसुशोभनं वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थापयंकलशोपरि पूजयेत्सुविधानेन विष्णुयज्ञ
यथाक्रमः तदग्रजापितोमन्त्रं विष्णुव्रतरतोद्विजाः । मन्त्र । ओंऐंह्रींक्लींश्रीं सर्वेश्वराय सर्वपापविध्वंसनाय भक्तानुप्रतिपालकाय विष्णुरूपायभगवते
वासुदेवायतेनमःपूर्वजन्मकृतपापताप शमनंकुरुर स्वाहा शशिलक्षप्रमाणेनजाप्यमेकाग्रमानसः हरिवर्मपठेन्नित्यंजपान्तेदानमाचरेत आचार्याय:
प्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेत्सुधिः हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंसर्वसुखाविष्टो सौभाग्यमक्षयंभवेत सर्वेप्सितंवरंप्राप्यः वनितापुण्यरूपिणी

स्त्रा० ८६

प्रथमाब्देद्वितियेवशरीरेजा-तेसुखम् किचिच्छ्वायादिरोगेणपीड्यतितातचिन्तनम् रुदन्तीभयमाक्रान्तः कन्यकाप्रेमवर्द्धिनी दानमंत्रसुपुण्येणघूटिका
रुवनेनवै सर्वकष्टविनश्यन्तिबालावृद्धिक्रमादितः तातसौख्यविशेषेणमहोत्साहंदिनेदिने रामाब्देवेदवर्षेचबाणवर्षावधिक्रमम् मातृकष्टभयंचिन्तापुनरा
नंदमगलम् वृणवातोद्भवंकष्टं दशनोत्पतिजारुजम् तातलाभभविष्यंति कार्यसिद्धिताचगुप्तता पुण्ययत्नादितोनूनं सौभाग्यंपरमादयम् नवाम्बरंभूषणञ्च
प्राप्स्यतिमानमुत्तमम् रसाब्देव्यालवर्षेवशिशुक्रीड़ाविमोदिती पतनाद्दारुणोकष्टंभयंचाल्पभयंकरम् गृहेक्लेशविवादश्चस्वतःशांतिप्रजायते तातैतज्जन्म
कालान्तं प्रायश्चित्तेसुरक्षिता नानाकार्यंसुखंवृद्धि सुताचैतत्सुखप्रदा मानकीर्तिमहत्वेण नित्यमानन्दवर्द्धिनी त्वयत्नेविपरीत्यंही विपाकेपापजंफलम्
प्राप्यतेनन्दवर्षेतु सूर्याब्देचयथाक्रयः नानाकार्यप्रबन्धेणपुण्यात्सर्वसुखागमः उद्वाहश्चमहोत्साहोपतिरेवंसुप्राप्नुयात् तातमातसुखंसर्वभ्रातबंधुसमायुता
दिव्याम्बर भूषणञ्चप्राप्यत्यतिसुशोभनो कुलवेदप्रकाश्यंतिग्रहकार्येषुसद्वरा प्रकाशोवर्द्धतेनित्यंषोडशाद्वावधितत: पतिप्रेमविवर्द्धतिरूपयौवनगर्भिता
किंचित्कष्टशरीरेपिज्वरार्त्तमुदरव्यथा पुनरानंदपुण्येणवर्द्धतेशशिवत्कला प्राप्यत्यद्भनगेंदुश्चविंशवर्षावधिक्रमात् भोगमैश्वर्यसंपन्नापुत्रजन्ममहोत्सवा
प्रसवेदारुणोकष्टंपुण्येपूर्णसुखागमः सुतापुत्रमहेश्वर्य साफल्यंमानुषीवपुः पञ्चविंशगतेवर्षे भाग्यस्यपरमोदयम् विवादकलहोदुक्खा शान्तिरेवंसुयत्नतः
नेत्रत्रिंशावधिवत्सः पूर्णपुण्यफलंभजेत विवाहादिमहोत्साहो यशमानविवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला कुलवृद्धप्रतिदिता रामरामाद्धमारभ्यचत्वारिंशगते
तथा तीर्थदेवालयेगताव्रतदानमहोत्सवाः चाल्पमृत्युभयंघोरंसुपुण्यात्सर्वशांतये ततिप्रेमकराबामाधर्ममूर्तिसुलक्षणा अयत्नेक्लेशितोनूनंबालकंकाल
वक्रगः दम्पत्योर्चिन्तनंबव्हीह्यापत्तौमहदागतः एतस्मातकारणान्नित्यं पापशांतिसुखंलभेत् शशिभल्लमितेवर्षे पौत्रजन्मसुखप्रदा भूमिद्रव्याधिकंप्रासी
रचनागेहसुन्दरम् सर्वकार्यविनिश्चित्य: षष्टोषष्टसुवत्सरे तीर्थयात्राजपंपुण्यमीश्वराराधनेमतिः सर्वेच्छापूजितंलोकेनिर्बलत्वंदिनेदिने नेत्रसप्तावधिकाव्य
निर्बलत्वञ्चक्लेशिता दानधर्मविशेषेण अग्रजन्मस्यहेतवे मनेच्छापूजितंसर्वा पुत्रपौत्रधनादिजा पुत्रभाग्यविशेषेण माननीयामहत्यपि व्योमव्यालसु
वर्षाणिह्यायुपूर्णभविष्यति मार्गशीर्षेशुक्लोपक्ते पंचम्यांनिधनंनिशि अग्रजन्मसुपुण्येण राज्ञीवंसुगृहोद्भवा प्रकाशोविपिणीभूयाद्दानमंत्रमहत्फलं ॥

एतद्योगोद्भवाबालामध्यभाग्येन्सुन्दरी विद्याबुद्धिर्भवेन्यूनमीश्वराराधनेमतिः कुलवृत्तिप्रभावेणप्राप्यतेमानमुत्तमम् भाग्यवृद्धिर्महोत्साहोमासेवर्षेसुखा
गमः नानाकार्यप्रबंधेणराजतिगेहभूषणा मनेच्छापूजितोनित्यंकार्यसिद्धौर्विलम्बता पूर्वपापप्रभावेणचिंतनीयामहत्यपि मृतवत्सातथावन्ध्याभूयात्पुत्र
विवर्जिता त्रिरत्नंदारुणंकष्टंप्राणविनाशातिदुस्तरम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगंगतिदुक्खमहद्भयम् प्रायश्चित्तंसुयत्नेनपापशांतिसुखंलभेत् प्रजासुभोगवृद्धिश्च
वाञ्छापूर्तिःसुकर्मणा सर्वचिन्ताविनश्यन्ति दम्पत्योर्प्रेमवर्द्धनम् विवाहोमंगलंकार्यं देवपुण्योत्सवेव्ययम् देवदर्शनजाप्रीतिः ईश्वराराधनेमतिः
वपुरेवसाफल्यंसुखंजन्मनिजन्मनि प्रतापोवृद्धिमाप्नोति शत्रुर्वैदासवच्चरेत् संपदाविस्तृतागेहे वस्त्राभरणैसुशोभिता क्लिश्यतिपापरूपेण यावद्यत्नं
नपापहम् एतस्मात्कारणात्पापं ज्ञात्वायत्नसमाचरेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ किमस्यादारुणोपापं मानुषीदुक्खकारणम् पूर्वजन्मकथंभूतात्ससर्वंकथयप्रभोः
भृगुवाच ॥ श्रुणुवत्ससमासेणपूर्वजन्मकथाधुना क्षत्रीवंशसमुत्पन्नानृपबामासुधार्मिका सर्वसौख्यान्वितोभूयात्पुत्रप्राप्तिर्विलम्बता द्वयोर्द्वाहंप्रकर्तव्या
पतिचास्यपुत्रार्थये किंचित्कालगतेवत्स अयंबामासुतंलभेत् तदांतेचन्द्रवर्षेच द्वयोभार्यासुतंजनत् नृपप्रेमद्वयोबामा तुल्यमेवनसंशयः ईर्षातस्य
कर्तव्यो नित्यंतर्प्यातचान्तरे कदाचिदैवसन्नार्यां तस्यपुत्रविषंददेत् तेनमृत्युभवेद्बालः नारीयंपापमाश्रयः तस्यमातृमहत्क्लेशं शापंदत्वापुनःपुन
तेनपापप्रभावेण त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् यावद्यत्नंनकर्तव्यो पुत्रसौख्यविनिर्मुक्ता गृहेक्लेश विवादश्च नानाचिन्तापिवेदना तस्ययत्नंप्रवक्षामि
येनसर्वसुखागमः स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या शुद्धश्रद्धासुभक्तितः वह्निकोणंशुद्धहेमः परितोपिनगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण बालचित्रमनोहरम् वेष्टितां
पीतपट्टेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा संस्थाप्यकलशेवत्सः तदग्रमन्त्रमाचरेत् ॥ मंत्र ॥ ॐऐं ह्रीं क्लीं श्रीं गंगोपालाय सर्वपापशमनाय विष्णुरूपायतेनमः
पूर्वजन्मकृतशापपापंनाशयः सर्वकामनापूजयः पुत्रसौख्यंदेहि स्वाहा एतन्मंत्रजपेलक्षं गोपालस्तोत्र पाठकम् पूजयेत्सुविधानेन तस्यदानं
समाचरेत् अनुष्ठानविधानेन कृत्वापापैर्विमुच्यति सर्वसौख्यलभेन्नित्यं पुण्यकर्मेणमानुषी भोगमैश्वर्यसम्पन्ना सफलंजन्मभूतले विवाहोमंगलंदिव्य
मनेच्छासर्वपूजिता विस्तृतिर्वंशजादीर्घः प्रकाशोपुण्यकर्मणा दानपुण्यप्रभावेण सुखंजन्मनिजन्मनि मोदतेविविधोनित्यं दम्पत्योः धर्मतत्पराः ॥

प्रथमाद्धोदरोऽव्याधि द्वितीयेदन्तपीडनम् मासेमासेसुखंजातं दानमन्त्रेसुयत्नतः तृतीयाब्देचतुर्थेच व्रणवातेनतप्यति शिशुक्रीड़ाक्रमेणैव चञ्चला
प्रियवादिनी पुण्ययत्नादितोनूनं गृहमेवप्रकाशिता पतनाज्जायतेकष्टम् यत्नाच्चमहद्भयम् तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगलमोदिता पञ्चमेसप्तमेवर्षे
पितुलाभप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेन यद्रोगंजायतेभयम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि वस्त्राभर्णैं सुशोभिता उद्वाहोमंगलंचिन्ता तातमातविचर्चिता
ग्रहकार्य्यरताबाला महत्वञ्चदिनेदिने अष्टमेद्वादशाब्देही तयोरत्नक्रमेणवै भाग्योदयंसुपुण्येण तातलाभमहत्यपि उद्वाहञ्चमहोत्साहो कुलकीर्ति
विवर्द्धनम् पतिरेवसुप्राप्यंति पूर्वयत्नादितःशुचिः दिव्याम्बरं भूषणांच बहुमूल्यमनोहरा भोगमैश्वर्यसंपन्ना प्राप्यतिनात्रसंशयः त्रियोदशाष्टचन्द्राब्दे
सुखसौभाग्यवर्द्धनम् रूपयौवनसंपन्ना पुण्यमेवप्रकाशिता मासेवर्षेसुखंजातं नूतनंसुखवर्द्धते ईश्वरंभक्तिभावेण पतिप्रेमविवर्द्धनी कष्टव्याधिमहत्वेण
सुताजन्मसुमंगलम् प्रतापभोगमैश्वर्य सुपुण्येसुप्रशंसिता नन्दसोमाद्बमारभ्यः वेदपक्षाद्बमध्यमा पुत्रकन्यासमायुक्तं पतिप्रेमविवर्द्धनी गृहक्लेश
विवादञ्च सर्वशांतिःसुयत्नतः शरविंशतिवर्षाणियावन्नभृगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नित्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी ममवाक्यश्रयेपुण्यं सर्वकष्टविनाशनम्
मंगलंविविधोत्साहोमाननीयासुसद्व्रता नानाकार्यप्रबंधेणराजतिपुण्यवैभवाः इन्दुरामाद्बमारभ्यः चत्वारिंशावधिततः उद्वाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
महत्यपि वृहल्लाभप्रभावेण दम्पत्योर्मानवर्द्धनम् सर्वकार्येसुकुशला महत्वञ्चपदेपदे कष्टचिन्ताविनश्यन्ति पुण्योत्साहसुमन्दिरे देवदर्शनजाप्रीती
पवित्रंकुर्यतिवपुः इन्दुवेदगतेवर्षे तथास्याद्वयोमभल्लके मासेवर्षेसुखंजातं भूमिलाभोतिगौरवम् प्रतापोवृद्धिमाप्नोति पुत्रभाग्योदयंभवेत व्ययलाभ
महत्वेण बहुकार्येप्रशंसिता सुप्रसिद्धधनाध्यक्षा गेहेवित्तनभूरिशः पापकर्मकृतेबाधा विविधोदुक्खक्लिश्यति एतस्मात्कारणात्पुण्यं सुखार्थोयत्न
माचरेत येनसर्वसुखंलब्ध्वा अग्रजन्मेमहत्पदम् मुनिव्यालमितेवर्षे पूर्णायुसुसुखंभजेत पुत्रपौत्रप्रगोत्रञ्च प्रजावृद्धिधनान्विता सर्वेच्छासुपूज्यन्ति
साफल्यंमानुषीतनं आश्विनेकृष्णापक्षेच नवम्यांनिधनंदिनं अनायासेतनंत्यक्त्वा यत्रकुत्रप्रशंसिता गतिरेवसुप्राप्यंति सुपुण्यादग्रजन्मनि पतिभक्ति
प्रभावेण संभवाचोत्तमेकुले महाराज्ञीवसाभूयाद्दयारूपासुसद्व्रता ध्यायेत्सत्यपदंदेवं शुचिसाध्वीपतिव्रता सत्यलोकेगमिश्यंति पुण्यतत्वंब्रवीमिते

एतद्योगोद्भवाबालासुस्वरूपासुलक्षणा तातमातसुखासर्वामासेवैंसुमंगलम् पतिप्रतिष्ठितंचापिस्वसुरंकीर्तिविस्तरात् धनधान्यसमृद्धिश्चगृहकार्येसुक
शला बाल्यावस्थासुक्रीड्यंतिपितुर्हर्षसुखप्रदा मंगलंविविधोत्साहोकुलकीर्तिसुविस्तृतम् युवावस्थाविशेषेणभोगमैश्वर्यसंपदा पतिप्रीतिविशेषेणसर्वेच्छा
सुखपूजिता धनधान्यसमृद्धिश्चनेत्रगेहसुखाकरी सुस्वभावंसुयत्नेनपुण्यैश्वर्यप्रशंसिता मंगलंविविधोगेहेकुल कीर्तिप्रकाशिणी मानेनमहताविष्टामहत्वं
सुपदाधिपा तीर्थयात्राव्रतंपुण्यंवृद्धावस्थासुतुष्यति पुत्रपौत्रादिजंसर्वंपुण्यैश्वर्यसुदुर्लभा सर्वावस्थासुखंज्ञातं माननीयासुसद्व्रताः शुचौपक्षेयथाचन्द्रः
योगस्तद्वत्महत्पदम् चञ्चलश्चपलाप्राज्ञीकोमलांगीदयामयी कदाचित्क्रोधवेगेणतप्यत्यापिदुराकृतिः पूर्वपापप्रभावेणसुखेविघ्नपदेपदे आयुरेखाकरेचास्य
खंडिताबाणरूपतः तातमातमहद्दुःखमल्पायुश्चमहद्भयम् स्वामिशोकेविसंतप्तागृहेक्लेशमहत्यपि विवादकलहंचैवरिपुरुत्पद्यतेबहुः रोगशोकैर्वितप्यंति
सुखेविघ्नपदेपदे अग्रजन्मेमहद्दुःखमेतज्जन्माद्धयोगताः शुक्रोवाचकिमसौदारुणोपापंजायतेपूर्वजन्मनि येनसर्वसुखेविघ्नंक्लिश्यतिविविधंस्त्रिया भृगुवाच
शृणुवत्सपरगोप्यंरहस्यंकथयाम्यहम् विचित्रमिदमाख्यानंकथायापूर्वजन्मनि पुराविप्रकुलोत्पन्नासुसद्रूपागुणान्विता शुभलक्षणसंपन्नानिवसत्तीर्थमाश्रमे
धर्मकर्मरतानित्यंलोभाशक्ताविमंदधिः यात्रीतत्रैंदुनिवसच्चास्यरूपविमोहिता तस्यद्रव्यहरंसर्वंप्राणांहत्वाकुकर्मिणी तेनतेषुगृहेक्लेशंपत्नीपुत्रोतिविव्हला
तस्मात्पापाश्रयोनारीत्रजन्मंहीपुनःपुनः पतिपुत्रात्मद्रव्येण क्लिश्यतिनात्रसंशयम् अल्पमृत्युभयंचादा वैधव्यश्चमहद्भयम् पूर्णसौख्यनप्राप्यंतिसुपुत्रं
क्लिश्यतिमहान् तस्यशांतिःप्रवक्षामि येनसर्वसुखंमहत स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात लक्ष्मीनारायणोमूर्ति यात्रीचित्रसमन्वितम् लेखयेद्रक्त
गंधेनवेष्टितांपीतपट्टतः संस्थाप्यविधिवत्कुंभेपूजयेत्सुविधानतः तदग्रेमंत्रमाराध्यशशिलक्षसुभक्तितः । तत्रमंत्र । ॐऐंह्रींक्लींश्रींशं सर्वश्वरायरमारम
णायतेनमः पूर्वजन्मांतरार्जितपापंनाशयरक्षांकुरुरस्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ आपदुद्धारकोमंत्रंधनस्यतदात्मकम् जपांतेहवनंकृत्वासावित्रीवीर्यसंपुटम्
मूर्तिदानंततःकृत्वाशैयादानादिभियुतंब्रह्मभोज्यंसुयत्नेनआशिर्वादश्चग्राहयेत् एवंकृत्वासुयत्नेनश्रद्धाभक्तिपरायणानित्यंसर्वसुखाविष्टाभाग्यवृद्धिमहत्यपि
सर्वेच्छापूजितंलोकेनित्यंपुण्याश्रयेमतिः अयत्नेक्लिश्यतिपापंभोक्तव्यंकर्मजंफलंतस्मात्सर्वप्रयत्नेनश्रद्धाभक्तिसमायतंव्रतदानरतश्चापियेनसर्वसुखागमम् ।

प्रथमेद्वितियेवर्षे दन्तबाधाविरेचनम् शरीरेदारुणोकष्टंसद्यःशांतिःसुयत्नतः मासेमासेविवर्द्धन्ति बालिकाशुचिलक्षणा तातलाभभविष्यन्ति गृहेमंगल
मेवच तृतीयेपञ्चमेवर्षेव्रणरोगेणपीड्यति मातृकष्टभयंचिन्तापुनरानन्दवर्द्धनम् क्रीड़तिविविधाबालाबादहास्यमनोहरा धावनात्पादकष्टञ्चस्वतःशान्तिः
प्रजायते षष्टमेचाष्टमेवर्षे तयोरन्तर्यथाक्रमः दानमंत्रसुपुण्येण भाग्यवृद्धिदिनेदिने तातप्राप्तिमहोत्साहो सर्वसौख्यसमागमः बालाप्रीतिकृतेक्रीड़ाचञ्चला
श्चपलामति भ्रातभगनीसमायुक्तागृहेद्रव्यव्ययंमहत् नन्दवर्षसमारभ्यःयावद्वेचद्वादशे प्रतिष्ठामानविभवाः वर्द्धतेपुण्यकर्मणा तातमातमहचिंताविवाहो
मंगलंशुभम् नवांबरंभूषणञ्चबहुमूल्यमनोहरा प्राप्यतिकन्यकाशुभ्रामानेनमहतावृता त्रयोदशाष्टचंद्राब्देमध्यगाथासमासतः गृहकार्येसुकुशलावस्त्रभर्णौ
सुशोभिता रूपयौवनसंपन्नापतिप्रेमविवर्द्धिनो सर्वसौख्यागमोनित्यंकष्टचिन्ताविनश्यति भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेसुखनूतनम् ऊनविंशाद्वविंशेचशरने
त्राद्वमध्यगे पूर्वपापकृतेबाधाहानिशोकविचिंतनम् नसुखप्राप्यतिपूर्णंयावद्यत्नंनपापहम् सुयत्नेसर्वसौख्यानिपतिपुत्रधनादिजाः धर्मवृत्तिप्रभावेणयश
कीर्तिश्चनिर्मला शरीरेसंभवोकष्टंपुनःशांतिःभवेत्सुखम् रसपक्षगतेवर्षेयावत्सून्यत्रयाद्वके विवाहोमंगलंकार्यंव्ययंतत्रमहद्धनम् मानेनमहताविष्टा यशं
भूरिसुकर्मणा पतिकीर्तिविशेषेणलाभवृद्धियथाक्रमः त्वयत्नेविपरीत्यंहीं निस्फलंजन्मपत्रिका शशिवह्निमितेवर्ष रसरामान्तरोतथा पतिसौख्यविशेषेण
पुण्यपात्रासुमानुषा सुयात्रामंगलंकार्यं पुण्यदेवोत्सवेव्ययम् मुनिवैश्वानरेवर्षे रामवेदावधितथा प्रकाशोविपणीभूयात्पापाच्छोकमहद्भयम् ईशभक्ति
सुपुण्येण सर्वैश्वर्यंसुसम्पदा नित्यंसर्वसुखाविष्टा वर्द्धितापिलवसा वेदचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाक्रमादितः भूमिलाभविशेषेण रचनागेहसुन्दरम्
पुत्रभाग्यमहत्वेण कुलेकीर्तिप्रशंसितो सोमभल्लाद्वमारभ्यः शरबाणसुवत्सरे पौत्रसौख्यविशेषेण मोदयन्तीसुभामिनाः सुशोभितेकुलतेन कल्याणी
प्रियवादिनो विशेषोमंगलंनित्य पुण्यपात्रिःप्रशंसिता दानमंत्रमहत्पुण्यं सर्वापत्तिक्षयंकराः यावन्नभररसेवर्षे तावत्पूर्णसुखंभजेत् मनेच्छापूजितापूर्वे
व्रतदानहितेरताः तीर्थदेवालयेप्रीतीपुण्योत्साहसुखंसदा दीनानांपालनेपुण्याद्रिपुरोगविनाशनम् तीर्थयात्राविशेषेणनिर्बलावातपीड्यति किंचित्कष्ट
शरीरेच पुत्रपौत्रःसुसेविता श्रावणेशुक्लपञ्चम्यां निधनंचास्यनिश्चितम् अग्रजन्मसुपुण्येण दिव्यदेहासुलक्षणा महाराज्ञीवसाभूयात्पुण्यैश्वर्यंसुसर्वदा

स्त्रा०

८८

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखदोभवः एतद्योगोद्भवाबाला चारुहास्यविलासिनी शुभकर्मरता नित्यं स्वकुलेसुप्रशंसिता तातकीर्तिकराशुभ्रा कोमलांगीसु
लक्षणा मानेनमहताविष्टोमोदितिपुण्यकर्मणा तातमातसुखासर्वेभ्रातजन्ममहोत्सवाः मानेनमहताविष्टायशसाधनतत्परा पतिपुत्रात्मद्रव्येणसाफल्यंसर्व
वैभवाः सुखेशोकप्रदारेखासंभवोपूर्वपापजम् तस्यशांतिःसुयत्नेनकृत्वासर्वसुखंलभेत् पतिपुत्रान्वितोभूयात्सफलंजन्मभूतले भ्रातरोगेणापीड्यन्तिप्रसवं
कष्टदारुणम् आयुरेखाकरेचास्य त्रुटितावाणरूपतः तत्रदैवाल्पसंधिश्च अल्पजीवित्वदोषदम् दानमन्त्रसुपुण्येण पूर्णायुःसुखसंपदा चन्द्रजीवपरंप्रीती
चिन्ततिविविधैरपि पूर्वकर्मविपाकेणनसुखंप्राप्यतिध्रुवम् क्लिश्यतिविविधोद्वेगाः पतिपुत्रात्मजादयः पापशांतिःप्रकर्तव्यासर्वेच्छासुखपूजिता शुक्रोवाच
पूर्वजन्ममुपाख्यानंकथयस्वमहामते किमसौदारुणोपापंनारीदुःखश्रयोमहान् भृगुवाच श्रुणुत्वंमुनियत्पापंपूर्वजन्मकथाधुना विप्रवंशोद्भवावामासर्व
लक्षणसुन्दरी तीर्थाश्रमेनिवसतिपतिपुत्रादिभिर्युता ईश्वराराधनेप्रीतीगृहकार्यरताभवेत् सर्वद्रव्यव्ययंलोकेनिर्द्धनात्वतिक्लिश्यति प्रतिष्टामानमधिकं
द्रव्यसून्यविचिंतया यात्रीतत्रैकतद्गेहेनिवसद्रव्यपूरितम् तस्यद्रव्यंहरंसर्वलोभग्रस्ताधनामतिः निशाभोज्यविषंदत्वाजनघातश्चकारयेत् तेनपापाश्रयो
भूयाददुखिताग्रेत्रिजन्मनि कालेनमृयतिस्तत्रः पुण्यात्पापाश्रयोमहान् किंचिद्दानादिमंत्रेणईश्वरंभक्तिभावतः संभवाचोत्तमेगेहे पुनःपापाद्भवोगता
पतिणाप्यतिक्लिश्यंतिंदारिद्रंभयविव्हलाः चाल्पमृत्युभयंघोरंविविधोद्वेगतप्यति नसुखंसुस्थिरोनारीयावद्यत्नंनपापहम् शुक्रोवाच कस्मिन्यत्नकृतेतात
महापापैर्विमुच्यति कथयस्वप्रसादेण कृपास्तियदितेमयि । भृगुवाच । श्रुणुवत्ससमासेण परंगोप्यमतंहियत् यस्याश्रये सुखासर्वाः प्राप्यतिविविधांगना
कांश्यपात्रेघृतंयुक्तः प्रचुरंद्रव्यभूषणम् आच्छादितंस्वेतपट्टै राचार्यायःप्रदापयेत् मन्त्रजाप्यतदर्थवै दानपात्राद्विजोत्तमः । तत्रमंत्र । ओंऐंह्रींक्लींश्रींशं
शंकराय सर्वापतिहरायः श्रीशिवायतेनमः ममयजमानस्यपूर्वजन्मकृतघोरपापतापंनाशयः २ सर्वसुखसिद्धिप्रदाय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंओंइन्दुलक्ष
प्रमाणेन अनुष्ठानविधिर्यथा शुचिस्थानेजपेद्भक्त्याःसर्वपापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेन सर्वसौख्यसमागमः सर्वकार्योपिसिद्ध्यन्तिमनेच्छाबहुपूजितम्
दानमंत्रादितोनित्यंसुखंसर्वत्रवर्तते मंगलंविविधोत्साहोधनपुत्रादिजैरपि गृहक्लेशविनश्यन्तिपत्यरत्यन्तवल्लभा दिनेदिनेमहत्तेजोसुपुण्यात्सर्वसम्पदा

जन्मा ब्देद्वितियेवर्षे त्रा ना वृद्धिदिने दशनोत्वतिजाकष्टं रुदन्तौभयविह्वला पुनश्शांतिसुयत्नेन तातमातसुखंलभेत् भ्रात जन्ममहोत्साहो तातपुण्येण
भूतलेभोगाप्रवैभवोवृद्धिवस्त्रणाभर्णैसुशोभिता बालक्रीडाविशेषेणसुहास्यश्चरुरोदितीवह्नि षश्चवेदाब्देऋतुवर्षावधिक्रमात् मासेमासेसुखंजातं भोगमैश्वर्य
नूतनम् तात ा महत्वेण सुपुण्यंफलदोमहान् मंगलंचर्चयागेहो नित्यमेवप्रकाशिता शरीरेजायतेकष्टं ज्वरतत्ववृणादयः पुण्याच्छांतिसुखंनित्यंविस्तृतिं
सर्ववैभवाः नगाब्देव्योमचन्द्रेतुगृहकार्यविचिन्तनम् विद्याभ्यासरताकिंचिच्चञ्चलाश्चपलामतिः शिशुणांसंगमेप्रीतीक्रोधेणतप्यतिस्वयम् पतनाज्जायते
कष्टंज्वरार्तोवारिजभयम् सर्वमेवसुयत्नेन शांतिभूयातसुखंलभे त् सुसंगाद्दानपंत्रेण भाग्यपात्रीप्रशंसिता इन्दुसोमाद्धमारभ्यः शरचन्द्रांतरेतथा उद्वाहं
सुमहोत्साहो कुलकीर्तिमहत्वेपि रूपयौवनसंपन्ना वस्त्राभर्णै सुशोभिता भोगाप्रवैभवोवृद्धि पतिप्रेमविवर्द्धिनी स्वकृत्यकुशलाबाला महेश्वर्यप्रकाशिणी
नानाकार्यप्रबंधेणशोभितागेहभूषणा रसचन्द्रगताब्देतुविंशवर्षावधिक्रमात पुण्येच्छापूजितोनित्यंपतिपुत्रात्मजादयः मंगलंविविधोत्साहोगृहंयेनप्रका
शिता मानकीर्तिविशेषेणमहत्वश्चपदेपदे सर्वकष्टक्षयंनित्यंसुपुण्यंलाभदोमहान् प्रतापभोगमैश्वर्य सर्वमेवप्रशंसिता शशिपक्षगतेवर्षे व्यालपक्षक्रमादितः
सुतापुत्रसमायुक्ता पत्यरत्यंतवल्लभा दम्पत्योरल्पजकष्टं दानमन्त्रेणशांतये पूर्णायुसुखमेवत्तौ भाग्यवृद्धिसुयत्नतः नन्दनेत्राद्धसंप्राप्यः वेदरामसुवत्सरे
तयोरन्तमहोत्साहोउद्वाहादिव्ययोमहान् कुलकीर्तिमहत्वेण सद्व्रतासुप्रशंसिता विवादकलहारिष्टंविविधोदुःखकारणं वैधव्यादिमहादोषंसुयत्नेनक्षयं
सदा पौत्रजन्ममहोत्साहो शताद्धंवत्सरावधिः तीर्थयात्राव्रतंपुण्यं कृत्वासर्वार्थसिद्धिदम् महत्वमधिकंलोके प्राप्यतिपुण्यमाश्रये भूमिलाभविशेषेणप्रजा
वृद्धिसुविस्तरात मुनिपञ्चाद्धमारभ्यः ज्ञात्वाप्राणहरिदशा तेभ्यःसंरक्षितस्यापि नदाध्यायविधानतः छायापात्रान्नदानेन सर्वाबाधाविनश्यति पुत्रपौत्रोदय
सर्वाराज्ञाकारीसुखप्रदा महेश्वर्यप्रतापेणसाफल्यंमानुषीवपुः त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंनिस्फलंजन्मपत्रिका ह्यं तस्मात्कारणात्पूर्वेपापहंपुण्यमाचरेत् प्रतियत्न
सुखोत्साहोनंदव्यालाद्धजीवती प्रपौत्रंजन्मतोलोकेकुलेच्छापिनिवृत्तती मासेभाद्रपदेशुक्लेनिधनंसर्वपूजिताकुलेप्रशंसिताचापिप्राप्यतिहीशुभांगतिपति
व्रतासुधर्मात्मावरंसर्वेप्सितंलभेत् ईश्वरंकृपयात्काव्यमहाराज्ञीवसाभवेत् पुनःस्वर्गगताबामापुण्येकिंचिन्नदुर्लभम् एवंपुण्यपरंतत्वंसुज्ञातव्योहीनिश्चितम्

स्त्री०
८६

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंसुखकारकः एतद्योगोद्भवाबाला सर्वसौख्याधिकारिणी शुभलक्षणसम्पन्ना सुपुण्यात्मादयामयी कोमलांगोसुसद्रूपा दिव्या लंकारभूषिता सर्वकार्यसुकुशला स्वगृहंसुप्रशंसिता तातमातपरंप्रीती पतिभक्तिपरायणा नानाकार्यप्रबंधेण राजतेगेहसम्पदा पूर्वपापाद्भवोकष्टं अल्पमृत्युमहद्भयम् पुत्रसौख्यमहाविघ्नं पतिरत्यंतक्लेशिता प्रायश्चित्तमहादानं सुपुण्याद्रक्षणंसदा तेनसर्वसुखंनित्यं राज्ञीवंसर्ववैभवाः प्रकाशो विपणीभूयाद्दासदासिश्चमोदिता यत्रदृष्टिगततत्रः सुखसौभाग्यदर्शितम् सिद्धंतिसर्वकार्याणि दिव्यरत्नैःसुवेष्टिताम्सर्वेच्छाप्रूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा अयत्नेपापजंकष्ट भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्त्वमहायोगिन पूर्वपापस्यकारणम् येनक्लेशाश्रयोलोकेवनितापुण्यरूपिणी ॥भृगुवाच॥ श्रृणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम पूर्वजन्मान्तरोगाथा येनदुःखाधिकारिणी पुरात्रिप्रकुलेवत्सः जातोयंपुण्यभाजिनी दानधर्मप्रभावेण सर्वसौख्यान्वितोभवेत् कुसंगाद्धिशयाशक्ता मतिकामेणमोहिता पतिराज्ञानमस्यंति गृहत्यक्त्वादुराचृत्ति तीर्थयात्राविशेषेण नित्यंकृत्वामनेच्छितम् सर्वद्रव्यक्षयंकृत्वा पतिरत्यंतदुक्खदा क्लेशितंशापितस्तेन त्रिजन्मदुक्खितोमहान् तेनपापाश्रयोनारी एतजन्मेतिदुक्खिता प्राप्यतिविविधंक्लेश पुण्याभावेहिभूरिशः तद्यत्नसप्रवक्षामि प्रायश्चितक्रमेणवै शुद्धहेमकृतोपत्रंविस्तृतंसुनगांगुलम् शुद्धितंसुविधानेन रामकोणमनोहरम् लेखयेद्रक्तगंधेण पतिदेवसुमूर्तिमान् शांकरीमुद्रयायुक्तो स्वेतपट्टेणावेष्टितम् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे महेशंभक्तिभावतः पूज्येत्सुविधानेन यथाविभवविस्तरात् तदग्रे जापितामंत्रं शशिलक्षसुभक्तितः ॥ तत्रमन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं ह नमः शंकराय पूर्वजन्मान्तरार्जित शापपापंहराय सर्वसौख्यंवरदाय पतिदेव प्रसन्नायभद्रंकुरु२स्वाहा हंशंश्रीक्लींह्रीऐंॐ सावित्रीजापयेद्भक्त्या आपदुद्धारकंतथा आवाह्य सर्वदेवाणां पूज्यंविभवविस्तरात् यज्ञान्तेमूर्तिसंकल्पं शैय्यादानादियत्क्रमः आचार्यायःप्रदातव्या आशिर्वादश्चग्राहयेत ईश्वरंभक्तिभावेण विप्रभोज्यंसुयत्नतः एवंसर्वविधानेन कृत्वातन्त्रमुदारधिः सर्व पापविनिर्मुक्ता वनिताभाग्यभाजिनी नित्यंसर्वसुखंलभ्धवा पतिपुत्रधनादयः सिद्धन्तिःसर्वकार्याणि प्रकाशंपुण्यजोमहान् राज्ञीवंराजिताभूमौ सफलं जन्मभूतले पुत्रभाग्य महत्वेण सुप्रसिद्धाः सुपूजिता एवंपुण्या श्रयेनित्यं फलंसर्वेप्सितंभजेत् अथाद्यश्च समासेण कथायाः श्रृणुभार्गवः

स्त्री०

९०

जन्माब्देनेत्रवर्षान्तंदिवेमासेसुखंगता शरीरेजायतेकष्टंभूतछायाश्चविह्वला किंचिद्दानादियत्नेनश्रेयोमानंसुखोत्सवम् रामाब्देबाणवर्षेचबालावृद्धियथा
क्रमः वादहास्यमनोरम्यंबालक्रीड़ामनोहरा वृणविस्फोटकोव्याधी दन्तवाधाविरेचनम् तातजन्ममहोत्साहोकुलेवृद्धमृतोत्सवम् पुण्ययत्नादितोनित्यं
सर्वकष्टविनाशनम् भोगाप्रवैभवोवृद्धि तातमातसुखाकरी ऋतुवर्षेचनन्दाब्दे तयोरन्तसु खागमः गृहकार्यरताबाला क्रीड्यतिविविधंतथा व्ययोतात
महच्चिंताकुलकीर्तिविमोदिता पूर्वंयत्नसुपुण्येण कृत्वाभाग्योदयंमहत् व्योमेन्दुवर्षमारभ्य यावद्वेदनिशाकर तावत्कालावधिःपुण्यं सर्वसौभाग्यरूपिणी
दिनेदिनेमहत्तेजो रूपयौवनमावृता भोगमैश्वर्यसंपन्ना नेत्रगेहप्रकाशिणी ज्वरार्तमुदरव्याधी सुपुण्याच्छांतिसर्वदा गतेपञ्चदशेवर्षेविंशवर्षावधिततः
सर्वप्सितंसुखंलब्ध्वा पुत्रजन्मविमोदिता मानकीर्तिसुखोत्साहो विस्तृतिसर्वसम्पदा यावद्यत्नंनकर्तव्यापापादुःखैर्वितप्यति अतस्तंशांतिपुण्येण सर्वं
सौख्यप्रदोमहान् शशिपक्षाब्दमारभ्य शरपक्षाब्दमेवही पुत्रकन्यासुखाविष्टो धनधान्यैसुपूरिता प्रकाशोविपणीभूयात्स्वकुलेसुप्रशंसिता दिनेदिनेमहोत्सा
होव्ययलाभमहत्यपि रसनेत्रसुवर्षाणि व्योमरामक्रमादितः दानमंत्रसुपुण्येण भगवद्भक्तिभावतः सर्वाऋष्टक्षयंनित्यं मंगलंविविधोमहान् उद्वाहादि
महत्वेणकीर्तिरेवंसुविस्तरात् गृहेक्लेशविवादश्च सर्वशांतिसुयत्नतः सोमत्रिंशाब्दगेकाव्य बाणत्रिंशाब्दमेवही प्रजाद्रव्याधिकंगेहे नारीपुण्यप्रकाशिणी
दम्पत्योरल्पजंकष्टंसुखेविघ्नभयप्रदा महामृत्युञ्जयोजाप्यमापदुद्धारसंपुटम् स्वर्णमूर्तिमहादानंसप्तअन्नतुलान्विता मुक्तकष्टसुखाविष्टा कृत्वातन्त्रमुदारधि
पूर्णायुःसुखमेधावीमोदमानंगरीयसी रसरामाब्दगेकाव्यः चत्वारिंशावधिततः मनेच्छापूजितोनित्यं शुचिसाध्वीसुखाकरी तीर्थयात्राजपंपुण्यं कृत्वा
चापिदयामयी सुखैश्वर्यप्रकाश्यंति सुतभाग्योदयंमहत् सर्वेच्छापूजितंलोके वर्षेव्योमशरावधिः पतिकार्यप्रबंधेण राजतेपुवैभवा विस्तृतिर्वंशजंलोके
महेश्वर्यंसुविस्तरात् भयंकष्टविनश्यंति गृहशोभासुनूतनम् शशिपञ्चगतेवर्षे व्योमषष्टांतरावधिः पुत्रपौत्रैर्महत्वेण विमलंभाग्यशालिनी दासवाहनजैनित्यं
सुखंसर्वेप्सितंलभेत् दानधर्म्मरतानित्यम अजन्मस्यहेतवे तदान्तेवन्हिव्यालाब्दे पूर्णायुःकथ्यतोमुनिः धनपुत्रप्रपौत्रैश्चसुकीर्तिख्यातिनिर्मलं दानधर्म्मा
दितोनूनंगारेवसुसत्तमा अथाग्रेसुकुलोत्पन्नानृपसौख्याधिकारिणी सर्वेप्सितंवरंलब्ध्वा दानधर्मैःसुसद्व्रता इतिग्रंनिश्चितंपुण्यं चान्यथानोदिसुखम्

एतद्योगप्रभावेण बालसौम्यसुखाकरी दिवेमासेसुखंजातं विस्तृतिंसर्ववैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण राजितागेहसम्पदा रूपयौवनसंपन्ना सुखसौभाग्यमा करी तातमातसुखास्सर्वेपतिप्रेमविवर्द्धनी सिद्धन्तिःसर्वकार्याणिवस्त्राभर्णैःसुशोभना शरीरेजायतेकष्टं रामअल्पभयप्रदा पतनाद्दारुणोकष्टंपूर्वपापैर्वि तप्यति तेभ्यसंरक्षितापुण्यं पूर्णायुसुखसर्वदा धनधान्यान्वितोलोके पुत्रकन्यासमावृता पतिभाग्यमहत्वेण शुचिसाध्वीप्रशंसिता कीर्तिश्चनिर्मलोभूता उद्वाहादिव्ययोमहान् ईश्वरंभक्तिभावेण साफल्यंमानुषीतनम् अनुष्ठानमहादानं सर्वपापैर्विमुच्यति धनसंतानयानश्च कुटुम्बेसुखसर्वयो क्लिश्यतिनात्र संदेहोयावद्यत्नंनपापहम् पतिपुत्रात्मद्रव्येण नसुखंसुस्थिरागृहे ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं कृयतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयोलोके शुचिसौभाग्य रूपिणी ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिप्रमापेण पूर्वजन्मकथाधुना येनदुक्खाश्रयोनारी सुखेशोकंभयाकरी पुरानृपकुलेजाता ग्रामरामधनाधिपा महेश्वर्य प्रतापेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता मानेनमहताविर्थाक्रियतिग्रामसाशनम् चैकोद्विजवरोतत्रः रूपयौवनसुन्दरम् धर्म्मव्रतरतोनित्यं निवसदेवमन्दिरे कामबाणा मनोद्वेगंतेनरूपविमोहिता दानपुण्यकृताराज्ञी द्विजलोभगृहागतः द्वयोप्रीतिमहत्वेण तेनविप्रधनीभवेत् बहुकालसुखंभुक्त्वा नारीयंप्रेमबन्धनम् विप्र चान्यस्त्रियप्रीतितस्यरूपेणविव्हलः ज्ञात्वायंसर्ववृत्तान्तंनृपवामातिरोषिता विप्रप्राणहरंतत्रतेनपापाश्रयोमहान् दानधर्म्मरतापूर्वंतेनसौख्याधिकारिणी द्विजघातमहापापं त्रिजन्मंक्लिश्यतिमहान् एतज्जन्मंसुपुण्येण पापशांतिःसुखंभजेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्यप्रसादेण प्रायश्चित्तविधिर्यथा पूर्वपापैवि मुच्यंति येनसर्वसुखागमः ॥ भृगुवाच ॥ जाह्नवीतीरगोभूत्वाशुचितीर्थस्थललेथवा हेमपत्रप्रकर्तव्योबाणमुद्रासुशोभनम् लेखयेद्रक्तगंधेणद्विजचित्रमनो हरम् वष्णावासुद्रयायुक्तोसर्ववीर्यमलंकृतम् वेष्टितांपीतपट्टेणासंस्थाप्यकलशोपरि तदग्रेमंत्रमाराध्यः पूजयेत्सुविधिर्यथा भगवद्भक्तिभावेण प्रायश्चित्तरतो द्विजाः जाप्यमंत्रमिदम् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वरायविष्णुरूपाय महापुरुषायतनमः पूर्वजन्मकृतमहापापतापशमनायरक्षांकुरु २ स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ इतिमंत्रजपेल्लक्षगायत्रीसंपुटंकृता बटुकोमंत्रमाराध्यंसवदेवैसुपूजिता हवनंविप्रभोज्यञ्चकृत्वाविभवविस्तरात् शैयादानादिकंसर्वंमूर्तिसंकल्पमाचरेत् एवं सर्वद्विजंतोष्यः आशर्वादंसुग्राहिता एतद्यत्नप्रभावेणसर्वपापविनाशनम् पूर्णायुसुखमेश्रावी पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यमहत्वेणपुण्यंसर्वेप्सितःप्रदम्

ग्राद्याब्देवह्निवर्षान्तंबालावृद्धिदिनेदिने मासेमासेमहोत्साहोगृहेमंगलमोदिता शरीरेकष्टसंपन्नादंतवाधाविरेचनम् सर्वशान्तिसुयत्नेन तातलाभसुख
प्रदम् वेदवर्षसमारभ्यमुनिवर्षान्तरेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चबालिकासुप्रियंवदा शिशुक्रीड़ामहत्वेणादृष्टिहास्यमनोहरा वृणवातोद्भवोकष्टंपतनाद्दारुणो
भयम् पुण्ययत्नादितोनित्यं सर्वशान्तिसुखंलभेत तातमातपरंप्रीती वस्त्राभर्णैसुशोभिता गृहकार्येसुकुशला पुण्यरूपासुशोभना व्यालवर्षेचसंप्राप्य
नेत्रसोमतथान्तरे तातमातमहच्चिन्ता व्ययलाभविवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो गृहेमंगलमेव च कीर्तिश्चनिर्मलीयुता कुलंतेनप्रकाशिता दिव्याम्बरं
भूषणाश्चप्राप्यतियपरंप्रिया पुण्ययत्नादितोनूनं प्रकाशोविपणीभवः सुयोग्यंपतिप्राप्यं गृहेसर्वसुखंलभेत त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमम्
भोगमैश्वर्यसम्पन्ना प्रकाशंपुण्यजोमहान् नानाकार्यप्रबंधेण गृहसम्पद्विवर्द्धनी सर्वकार्येसुकुशला पतिरत्यन्तवल्लभा ऊनविंशेचविंशाब्दे शरनेत्र
तथान्तरे सर्वसौख्यसमृद्धिश्चभोगमैश्वर्यनूतनम् पुत्रकन्यासमाविष्टो दम्पत्योप्रेमवर्द्धनः मंगलंविविधोगेहे जायतेनित्यनूतनम् प्रकाशोविविधंनित्यं
यशमानविवर्द्धनम् सर्वशांतिःसुयत्नेन यद्रोगंदारुणोभयम् रसलक्षगतेवर्षे नभरामतथान्तरे सर्वेच्छापूजितंलोके पूर्वपुण्येणभूतले मंगलंमहदागम्य
महत्वमधिककुले व्ययलाभ महोत्साहो वनितापुण्यरूपिणी नपुत्रंप्राप्यतिपूर्णं यायत्नंनपापहम् इन्दुरामाद्धमारभ्यः चत्वारिंशा वधिततः
पुण्ययत्नादितोनूनं विविधोमंगलमहान् उद्वाहादि महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशंसिता दम्पत्य रत्नजंकष्टं पुनरन्ते महद्भयम् महामृत्युञ्जरोजाप्यं
सप्तग्रन्नतुलातथा कृत्वासर्वसुखंलोके परमैश्वर्य दुर्लभाः शरवेदाद्ध संप्राप्यः व्योमभल्लाद्धकेतथा तयोरन्त विशेषेण भाग्यंसुमहतोदयम्
पतिलाभ महन्नित्यं रचनागेह सुन्दरम् पौत्रजन्म महोत्साहो सर्वत्रैव प्रशसिता प्रतापमानमधिकं नित्यवैधर्म्म तत्पराः देवदर्शन तीर्थेषु
पवित्रंमानुषीतनम् पुत्रपौत्रसुखाःसर्वे नित्यवैधर्म्म कर्म्मणी श्रताः परिसुखंनित्यं नभषष्टान्तराद्धके सुकीर्तिख्यातिपुण्येण सर्वेच्छा सुखपूजिता
व्यालषष्टाद्धमायुष्यं किंवानेत्रनगाद्धकी प्राप्यति गतिशोभा अनायासेतुनंत्यजेत् पुनर्द्विजकुलोत्पन्ना सतिसाध्वीपरंतया पुण्यैश्वर्य लभेत्सर्वाः
सत्यलोके गमिष्यति एवंपुण्यपरंतत्वं ज्ञातव्यो मुनिदुर्लभः अयत्नेक्लिश्यतिपापं निस्फलं जन्मपत्रिका मद्वाक्यस्य परंतत्वं पुण्यमेव सुनिश्चितं

स्त्री०
६१

एवंग्रहेष्टमानेन दिव्यभागासुलक्षणा मध्यमांगींसुसद्रूपा गौरवर्णामनोहरा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता तातमातसुखप्रदा नानाकार्यप्रबन्धेण राजतेबहुसम्पदा दासवाहनजैर्नित्यं मनेच्छाबहुपूजिता पूर्वपापेणसंतप्ता सर्वसौख्याधिकारिणी रोगशोकेणक्लिश्यंति अल्पमृत्युमहद्भयम् नानाचिंतातुरोभूमौ पतिपुत्रात्म चिन्तनम् नसुखंसुस्थिरोनित्य यावद्यत्नंनपापहम्पतनाद्दारुणोकष्टं विविधंदुक्खभाजिनी प्रायश्चित्तमहादानं मंत्रजाप्यंसुभक्तितः पापशान्तिःसुयत्नेन कृत्वासर्वसुखंभजेत् यावद्यत्ननकर्तव्या भोक्तव्यंकर्मजंफलम् ।।शुक्रोवाच।। पूर्वपापकथंतातः कथयस्वप्रसादतः केनशांतिः भवेत्तस्य श्रवणस्यममेच्छया ।।भृगुवाच।। श्रुणुवत्ससमासेण सर्वमेतद्वदाम्यहम् क्षत्रीवंशसमुत्पन्ना नारीयंपूर्वजन्मनि शुभलक्षणासंपन्ना दिव्यरूपामनोहरा पूर्वपुण्यप्रभावेण राज गेहाधिकारिणी तन्नृपस्यद्वयोभार्या पुत्रकन्यासमावृता नित्यधर्म्मरतासाध्वी पतिभक्तिपरायणा मदोन्मत्तोपिसःसज्ञो चास्यरूपविमोहिता पत्नीपुत्र महत्क्लेशंदत्वायंनित्यतुष्यति तेनप्राप्यमहदुक्खधर्म्मं भार्यामृतिंगता तस्यपुत्रोविताब्ध्यंतिनारीयंपापमाश्रयः त्रिजन्मक्लिश्यतिनूनंएतज्जन्मेवितप्यति पापशांतिःनकर्तव्या सुखेविघ्नमहत्यपि गृहेक्लेशविवादश्च पतिपुत्रात्मदुक्खिता अन्यैश्चविविधोदुक्खाः प्राप्यतिपापमाश्रयः तस्यशान्तिरनुष्ठानं कथयामित्वयाधुना स्वर्णपत्र विधानेन कृत्याविभव विस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुद्धस्थाने सुभक्तितः ईश्वरंभक्तिभावेण प्रायश्चित्तंसमारभेत् विष्णुशक्तियुतंचित्र लेखयेद्रक्तचन्दनम् तत्रैवराजपत्निश्च रामपुत्रान्वितं लिखेत् संस्थाप्यविधिवत्कुंभे प्रायश्चित्तविधानतः पूजयेद्भक्ति भावेण तदग्रेमन्त्रमाचरेत् ।। तत्रमन्त्र ।। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवानाय आदिशक्तिसहिताय सर्वजगद्रक्षणायतेनमः पूर्वजन्मान्तराजित पापं हरहररक्षां कुरु कुरु स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ इतिमंत्रजपेलक्षं सर्वदेवैः सुपूजनम् सावित्रीतत्प्रमाणेन जपतोनास्तिपातकम् आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिक्षयंकरः मूर्तिदान ततः कृत्वा शैय्यादानादिभिर्युताः हवनंविप्रभोज्यञ्च सर्वपापैर्विमुच्यति नित्यंपुण्याश्रयोलोके पुनः सर्वसुखंभजेत् पतिपुत्रात्मजादीणां मनेच्छासर्वपूजिता शुचौपक्षेयथाचन्द्र योगस्तद्वत्महत्फलम् मंगलंविविधोनित्यं पूर्णायुः सुखसर्वदा प्रतिष्ठामानविभवाः सुप्रसिद्धाप्रशंसिता त्वयत्नेविपरीत्यंहो पापरूपेणदुःखजनम् एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेत शुचिसुन्दरीसौभाग्यी सफलंजन्ममानुषी

आद्याब्देबाणवर्षातंत्राणक्रीड़ायथाक्रमं मासेमासेसुखंजातं शरीरेकष्टसंभवाः रुदन्तिभयमाक्रान्ता भूतछायावितप्यति तृणाबातोदरःव्याधी दन्तपीड़ा
विरेचनम् सर्वशांतिसुयत्नेन पतनाद्दारुणाभयम् पूर्वपापक्षयोकाव्यः तातलाभप्रदोमहान् भ्रातजन्ममहोत्साहो कन्यकाभाग्यभाजनी चञ्चलाश्चपलाबाला
दृष्टिहास्यमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति तातमातपरंप्रिया रसाब्देव्योमचंद्राब्दे तयोरन्तसु मंगलं भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यं भोगमैश्वर्यसंपदा तातचिताहृदेगुप्तं
कुलबधुविरोधिता किंचिद्दानादिमंत्रेण भगवद्भक्तिभावतः श्रेयोमानंप्रतिष्ठाच मंगलंमहदागतः गृहकार्येसुकुशला कन्यकाशुचिलक्षणा इन्दुचन्द्राद्ब
मारभ्यः शरचंद्राद्बमेवही भोगाप्रवेभवोवृद्धिवस्त्राभर्णैसुभूषिता रूपयौवनसंपन्नासर्वसौभाग्यरूपिणी पतिप्रेमविवर्द्धतिगृहकार्येसुकौशला यद्रोगंजायते
देहेसर्वशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिततः पुण्यैश्वर्यमहत्वेण मनेच्छाबहुपूजिता कष्टञ्चमहतोभूयात्पुनरानन्दमंगलम् पुत्रकन्यासुखा
विष्टं दम्पत्योप्रेमवर्द्धते गृहक्लेशविनश्यति लाभवृद्धिःसुयत्नतः अयत्नेक्लिश्यतिबामा सुखेशोकसमागमः एतस्मात्कारणान्नित्यं सुखार्थोपुण्यमाचरेद्
विंशैकोपञ्चविंशाब्देसुपुण्याद्भाग्यभाजनी पतिपुत्रात्मद्रव्येणातुष्यतिविविधंगृहे विस्तृतिर्वंशजंनित्यंसुप्रकाश्यंतिभूतले मंगलंविविधोत्साहोयशमानवि
वर्द्धनम् अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् रसनेत्राद्बत्रिंशेतुपतिलाभविवर्द्धनम् कुलकीर्तिवृहन्नित्यंरिपुवोदासवच्चरेत् तुष्यतिमिष्टवाक्येणपितरंविप्र
साधवाः तीर्थयात्राजपपुण्यदंपत्योमोक्षसाधनम् शशिरामाद्बसंजातंशररामतथांतरे उद्वाहादिमहोत्साहोकुलंचातिप्रशंसिता अयत्नेविपरीत्यंहीपूर्वकर्म
विपाकजम् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनसुखार्थोपुण्यमाचरेत् वांच्छापूर्तिप्रजायेत तपतेजोमहत्यशः रसवन्हिसुवर्षाणिव्योमचत्वारिवत्सरे तयोरन्तर्महत्वेणसफलं
मानुषीतनम् मनेच्छापूजितासर्वैकुलवृद्धाप्रशंसिता रामवेदगतेवर्षे गौत्रजन्ममहोत्सवं पूर्वयत्नेनकर्तव्यानिस्फलंजन्मपत्रिका सूर्यपञ्चावधिकाव्यपुण्यतीर्थे
व्ययोमहान् अल्पमृत्युभयंघोरंवर्षेरामशरांतरे तेभ्यःसंरक्षितापुण्यंदीर्घायुःतत्रमानुषी शरषष्टमवर्षाणिप्रपौत्रंजन्मभूतले ग्रामभूमिधनाष्टिश्चबलहानिरुज
क्षयम् मंददृष्टिभवेद्रात्रौहरिभक्तिसुतत्परा पुत्रपौत्रमहाभागीसतोष्यंवृत्तिशातलः नगव्यालगतेवर्षेपूर्णायुःकथितोमुनिः निधनजायतेतस्यमाघमासेशुचौ
दलेसद्गतिप्राप्यतिवामासुप्रसिद्धप्रशंसिता अग्रजन्मेसमुत्पन्नानृपगेहेसुधर्मिणी धर्मेणैवप्रभावेणयशमानमहत्पदम् एवंसर्वसुखनित्यज्ञातव्योपुण्यकारणाम्

सर्वखेटेष्ठमानेन कन्यकासौम्यसुन्दरी गृहकार्येसुकुशला सत्यवृत्तिसुलक्षणा तातमातपरंप्रीती पतिप्रेमविवर्द्धनी नानाकार्यप्रबंधेण सुखसौभाग्य रूपिणी प्रकाशोविपणीभूयात्महवञ्चपदेपदे भोगमैश्वर्यसम्पन्ना दासदासिश्ववाहनम् दिव्याम्बरधरोबामा भूषणंविविधोमहान् प्रजावृद्धिसुखंनित्यं पुण्यारिष्टविनाशनम् मंगलंविविधोत्साहो जायतेनित्यनूतनम् कुलवृद्धमहत्कार्यें स्वकुलेसुप्रशंसिता दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वेच्छापूजितोभुवि: यन्त्र दृष्टिगतंतत्र: विजयोलाभभूरिश: पुत्रकन्यासमायुक्ता विमलंभाग्यदर्शना पापकर्म्मकृतेवाधा सुखेविघ्नमहत्यपि कुलेविघ्नमुपाधिश्च पतंतिशोकसागरे कष्टापत्तौविशेषेण भोक्तव्यंहीस्वकर्मणा नसुखंसुस्थिरोपूर्णं यावद्यत्ननपापहम् ।। शुक्रोवाच ।। कथंतदारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि येनक्लेशाश्रयो नारी कथयस्वमहामते ।। भृगुवाच ।। कथयामिसमासेण विचित्रंकर्म्मकारणम् विप्रवंशोद्भवापूर्वे वनितापुण्यरूपिणी सुप्रसिद्धप्रसन्नात्मा पतिरत्यन्त वल्लभा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दासदासिश्ववाहनम् युवावस्थाविशेषेण विषयाशक्तमानुषो किंकरैर्जायतेप्रीती कामेणहतचेतसा बहुकालरति:सौख्यं रमतिपापमाश्रय: स्वामिज्ञात्वायितद्वृत्तं रोषितंशापितोमहत नैवशांति:भवेत्तत्र: शापपापदुरासदम् यावच्छान्ति:नकर्तव्या एतज्जन्मेभयप्रदा क्लिश्यतिविविधोवामा सुखेविघ्नभन्तिहो ।। शुक्रोवाच ।। केनशांति:भवेत्पापं पतिशापोतिदुस्तरम् कथयस्वमहायोगिन्यदितेकृपयामपि ।। भृगुवाच ।। व्रतदानमहत्पुण्यं शापपापक्षयंकरा तवस्नेहात्प्रकाश्यामि यत्नंसर्वसुखप्रदा हेमपत्रप्रकर्तव्या यथाविभवविस्तरात् ह्यखंडितेशुभेलग्ने प्रायश्चित्तं समारभेत लक्ष्मीनारायणोचित्रं लेखयेद्रक्तचंदनम् तत्रैवपतिमूर्तिश्च शापहंवीजयंत्रितम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि विष्णुपीठविधानेन पूजयेद्भक्तिभावत: तदान्तेमन्त्रमाराध्य: द्विजा:सत्यव्रतेरता: इन्दुलक्षप्रमाणेन जपेदेकाग्रमानसम् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सर्वेश्वराय महापुरुषाय सर्वपाप हरायतेनम: स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ।। इतिमन्त्र ।। सावित्रीसंपुटंनित्यं जपेदेकाग्रमानसम् यज्ञान्तेमूर्तिदातव्यं शैयादानादि भियुक्ता ईश्वराराधनेप्रीती नित्यंधर्म्मपरायणा सर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नप्रभावत: प्रकाशंविविधोत्साहो मंगलंहीदिनेदिने आपदुद्धारकोमंत्रं सर्वापत्तिनिवारणम् दानमन्त्रव्रतेणैव नित्यंसर्वसुखागम: अयत्नेपापजंदुक्खं क्लिश्यतिनात्रसंशय: सर्वेप्सित: प्रदोपुण्यं तत्वमेतत्परंसुखम् ।।

जन्मवर्षसमारभ्यः रामवर्षांतरेक्रमात् कन्यकावृद्धिमाप्नोतिगृहेमंगलनूतनम् शरीरेकष्टसंभूताचाल्पमृत्युमहद्भयम् दानमंत्रंसुयत्नेनसर्वशांतिःसुखंलभेत्
तातलाभमहोत्साहौविस्तृतिंपुण्यवैभवाः वेदाब्देमुनिवर्षांतंशिशुक्रीडासुखप्रदा किंचित्कष्टमनोद्वेगंशिशुप्रीत्तिविवर्द्धिता चञ्चलश्चपलाबालावादहास्यपरं
प्रिया मंगलंविविधोगेहेमासेवर्षेसुखंगता व्यालवर्षसमारभ्यः यावद्वर्षञ्चद्वादशे भोगाप्रवैभवोवृद्धिर्गृहकार्येसुचञ्चला वस्त्राभरणैःसुशोभंतिपितुलाभव्ययो
महान् कुलकीर्तिबृहन्नित्यंउद्वाहेसुप्रशंसिता यद्रोगंजायतेकष्टंसर्वशांतिसुयत्नतः त्रयोदशाष्टचन्द्राब्देपुण्यसौभाग्यरूपिणी सर्वकार्यसुकुशलागृहसौख्य
स्त्री० विवर्द्धिनी रूपयौवनसंपन्नाराजतिगेहभूषणा पतिप्रेमविवर्द्धंतिभागमश्वर्यसंपदा ऊनविंशतथाविंशेतथास्यात्पञ्चविंशके विस्तृवंशजंपुण्यपुत्रकन्यासमा
८३ वृता नानाकार्यप्रबंधेणगेहेतुनफलीकृता सर्वसौख्यसमायुक्तासुपुण्यैश्वर्यभाजनी त्वयत्नेक्लिश्यतिपापंयत्कृतंपूर्वजन्मनि ऋतुपक्षाद्वमारभ्यः व्योमवन्हि
तथान्तरे पूर्वयत्नादितःपुण्यंसर्वसौभाग्यमाकरी व्ययलाभमहत्कार्येसुप्रसिद्धञ्चभामिनी प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वंजायतेकुले अल्पमृत्युभयंकष्टं आप
दुद्धारणंजपेत् अन्नदानमहादानं सर्वारिष्टविनाशनम् शशिवन्हिसुवर्षाणि शररामाद्धचांतरे उद्वाहोमंगलंकार्ये विविधंकीर्तिविस्तरात् प्रतिष्ठायादृशितत्र
गेहेवित्तंनतादृशि व्योमवेदावधिर्वामा सर्वेच्छासुखपूजितो देवदर्शनजाप्रीती पवित्रक्रियतितनम् प्रतापमानमधिकं जायतेबहुविस्तरात् सर्वकार्याणि
सिद्धंति भूमिलाभसुनूतनम् अतःपरिसुखनित्यं शतार्द्धवत्सरावधिः पौत्रजन्ममहत्वेण सफलंजन्ममण्यति दानधर्म्मरताप्राज्ञी मंगलंविविधो
महान् गुणपञ्चगतेवर्षे पतिकष्टभयंकरम् सर्वारिष्टहरंयत्नं महादानैःसुखंलभेत् वेदबाणगतेवर्षे तथाव्यालशराद्धके सर्वेच्छापूजितोपुण्यम् यत्ने
निष्फलंभवेत् शरीरेजायतेकष्टं मृत्युरेवभयंमहत् सप्तअन्नतुलादानं महामृत्युञ्जयोजपेत् औषधीदानमन्त्रेण सर्वव्याधिविनाशनम् ईश्वरंभक्तिभावेण
आयुवृद्धिसुखंततः ग्रहपञ्चमवर्षाणि ऋतुषष्टमगेतथा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च सर्वेच्छातत्रपूजिता ईश्वराराधनंपुण्यमग्रजन्मस्यहेतवे कृत्वातेनसुपूज्यंति
महज्ञान्यपदाधिपा नेत्रलोकाद्धपर्यन्त पूर्णायुःतस्यनिर्णिता अनायासेतुनंत्यक्त्वा पूर्वपक्षेषुकार्तिके कुलकीर्तिविशेषेण महोत्साहंगृहेतदा महत्पुण्यं
सुयत्नेन चाग्रजन्मेच्छितंपदं प्राप्यतिनात्रसंदेहो सत्यलोकाधिकारिणी एवंपुण्यपरंतत्वं पुण्येकिंचिन्नदुर्लभं पुण्याश्रयेसुखंसर्वं पापकर्माद्धधोगतिः

सर्वखेटेवृमानेन योगस्यास्यफलंशुभं शुभलक्षणासंपन्ना कन्यकाशुचिसुन्दरी गौरवर्णाविशालाक्षी स्वल्पापत्याकृषोदरी सुस्वभावसुशीलाच सुभा-
मिष्टभाषणी सर्वसौख्यसमायुक्ता क्रोधेणाकलहंकरा तातमातपरंप्रीती पतिरत्यंतवल्लभा यथादेहप्रवर्द्धेत: मोदमानंगरीयसी चञ्चलश्चपलावाला
गृहकार्येसुकौशला धनधान्यसमृद्धिश्च विविधंभोगतत्परा रूपयौवनसंपन्ना दृष्टिहास्यमनोरमा पूर्वपापकृतेवाधा विविधोद्वेगचिंतनम् सुखेविघ्न
मुपस्थित्य कलहंवादमन्दिरे क्लिशयतिकष्टपीड्यन्ति बाणल्पंदारुणोभयम् पतिपुत्रात्मजाद्रव्यं नैवपूर्णासुखंभजेत् यावद्यत्नंनकर्तव्या पूर्वपापैर्वितप्यति
प्रायश्चित्तमहादानं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसम्पत्सुखाकरी पूर्णायुपुण्यमेधावी फलंसर्वेप्सितंलभेत अयत्नेविविधापत्तौ भोक्तव्यंही
स्वकर्मणा ॥ शुक्रोवाच ॥ पूर्वजन्मकृतंपापं कथयस्वप्रसादत: कथंशान्तिभवेत्तस्य श्रवणस्ममेच्छया ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुवत्ससमासेण कथाया:
परमाद्भुतम् तवस्नेहात्प्रवक्षामी गोपनीयमतंमहत् पुराविप्रकुलेजाता विमलेभाग्यभाजनी सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दानपुण्यंसुखेच्छिता तीर्थयात्राव्रतं
धर्म्मद्विजदेवै:सुतुष्यति एकदासुमहापर्वे व्रतंयज्ञसमारभेत् तत्रैकोतिप्रमायत: तपस्वीपुण्यभाजनम् दृष्ट्वाद्विजगृहेयज्ञं उपविश्यक्षुधातुर: बहुविप्र
समायात येषांयज्ञेनिमन्त्रणम् भुञ्जीतास्वगृहंजग्मुरतिथियंविनिर्मुख. यज्ञान्तेयोचनंकृत्वा तयोवादमभून्महत क्षुधातृषातुरोतप्तं दुर्वाक्येणातिक्लेशिता
तेनशापप्रभावेण नारीयंपापमाश्रय: भूयसंपिमहत्पापमतिथिविप्रनिर्मुख: नैवयत्नकृतावत्स: तत्रपापानुत्तये कालेनमृयतिश्चापि पुरास्वर्गसुखंभजेत्
समुत्पन्नाथभूभाग पुन:पुण्यावसानके पूर्वपापैर्वितप्यंति सर्वसौख्याधिकारिणी तस्यशांतिमहादान कथयामिविधिर्यथा तत्रहेममयोपत्र कृत्वाविभव
विस्तरात शुद्धितसुविधानेनद्विजचित्रसुलेखयेत् वेष्टितांपीतपट्टेणस्थाप्यंकुम्भघृतेधनम् पूजयेत्सुविधानेनमंत्रमाराध्यभक्तित:॥ मंत्र ॥ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं
स:सर्वापत्तिहराय ब्रह्मरूपायनम: सर्वेप्सितंवरदाय ह्रां ह्रूं श्रींस: स्वाहा इतिमंत्रजपेलक्षं गायत्रीशापहंपुटम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या पात्रविप्रायधीमतां
सर्वविप्रै: सुसंतोष्यं मंत्रदीक्षां समर्पयेत् एवसर्व विधिकृत्वा पूर्वपाप विनाशनम् कुम्भमूर्ति महादानं मन्त्रसर्वार्थ सिद्धिदम् एतद्यत्न प्रभावेण
सर्वैश्वर्य समावृता: यत्रदृष्टि गतंतत्रसुखसर्वत्र भूरिश: पुत्रपौत्र प्रपौत्रञ्च धनधान्यै: सुपूरिता इतियंनिश्चितंपुण्यं सर्वसौभाग्य कारणा

जन्मतः प्रथमेवर्षे शरीरेजायतेसुखम् तातचिंताहृदेगुप्तं लाभयोगविमन्दता नेत्राब्देवह्निवर्षान्तं दिवेमासेसुखंगता तातजन्ममहोत्साहो गृहेमंगल
मेवच शरीरेजायतेकष्टं दन्तपीड़ाविरेचनम् ज्वरार्तमुदरव्याधी सर्वशांतिःसुयत्नतः चतुर्थेपञ्चमाब्देतु ऋतुवर्षावधिक्रमात् बालक्रीड़ारतोनित्यं
कन्यकाशुचिलक्षणा दानमंत्रंसुयत्नेन सर्वसौख्यक्रमादितः वृणांविस्फोटकोव्याधी स्वयमेवोविशान्तये गृहकार्यरतोनित्यं बालिकाप्रियवादिनी
मुनिवर्षगतेकाव्यः व्योमचन्द्रान्तरेतथा मासेवर्षेमहोत्साहो पुण्यात्सर्वसुमंगलम् स्वकृत्यकुशलाबाला तातमातसुखप्रदा मंगलंचर्चयागेहो उद्वाहादि
विचिन्तनम् पतनादिभयंकष्टं सुपुण्याच्छान्तिः सर्वदा इन्दुचन्द्राद्बमारभ्यः यावद्बाणनिशाकरे तावत्कालावधिर्नूनं सुखयुक्तत्नसाधिता भाग्यवृद्धि
महत्वेण प्रकाशोविस्तृतिसदा मानेनमहताविष्ठा भर्तारंसुखवर्द्धनी दिव्याम्बरधरोवामां नानाभर्णैर्विभूषिता प्राप्यतेषोडशेवर्षे विंशवर्षावधिक्रमात्
रूपयौवनसंपन्नासर्वभोगसुखाकरी गर्भबाधामहत्कष्टं बालजन्मश्चमोदिता प्रकाशोदैवजोनित्यं पूर्वपुण्यफलप्रदा विशेकोपञ्चविंशाब्द तयोरन्तर्के
मोदितः भोगाप्रवैभवोवृद्धिः पुत्रकन्यासमाव्रता मंगलंविविधोत्साहो गृहयेनप्रकाशितम् अल्पायुर्दुःखदंयोगं पूर्वयत्नाद्विनश्यति महत्वंचाधिकंतत्रः
मोदमानंगरीयसी ऋतुनेत्राद्बत्रिंशेच सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्चप्रजावृद्धिसुविसरात क्लेशकष्टागमोगेहे संशयाविष्टमानसं दानपुण्योप
चारेण सर्वशान्तिसुखागमः इन्दुरामगतेवर्षे शरवन्हितथान्तरे उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिसुविस्तरात कुलेविघ्नमुपाधिश्च शान्तवृत्तिःप्रशंसिता
चत्वारिंशावधिर्वत्सः मनेच्छासर्वपूजिता व्ययलाभमहन्नित्यं गृहनूतनसुन्दरम् तीर्थयात्राव्रतंदानं वनितापुण्यरूपिणी छायापात्रान्नदानञ्च कुलेसर्व
सुखप्रदा सोमचत्वारिवर्षाग्नि व्योमभ्लाद्वकेतथा मासेवर्षेसुखंजातं गृहेचापिसुपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहो सफलंजन्मगण्यति सर्वैश्वर्यसुयत्नेन
मोदितापतिभिस्सह अयत्नेपापजंक्लेशं भोक्तव्याचाल्यजोवती तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूर्वपुण्यंसुभक्तितः कृत्वापापविनिर्मुक्ता नित्यंधर्म्माश्रयेसुखाः
कीर्तिश्चनिर्मलीभूता रामव्यालाद्बमायुषम् प्रपौत्रंजन्मतोलोके विमलंभाग्यदर्शना ईश्वरंभक्तिभावेण सर्वसौभाग्यरूपिणी अनायासेतनंत्यज्यः
मधुमासेशुचौदले सुकीर्तिविस्तृतालोके प्राप्यतिचोत्तमार्गातः अग्रजन्मसुपुण्येण जायतिमहतांकुले लोकेच्छोपूजितापुण्यं सुराज्ञीपरमांगतिः

एतद्योगोद्भवावामा श्यामवर्णासुलोचना कोमलांगीसुललना मध्यरूपापतिप्रिया हीनगेहोपिजायन्ति सौभाग्यंपरमंसुखम् धनधान्यसमृद्धिश्च पुत्र कन्यासमावृता नानाकार्यप्रबंधेण राजतिगेहसम्पदा प्रकाशोविपणीभूयात्प्रतापेगुणगौरवम् मानकीर्तिमहत्वेण प्राप्यंतिहीदिनेदिने सर्वैश्वर्यसमायुक्ता सुप्रसिद्धप्रशंसिता उद्वाहादिमहोत्साहो मंगलंविविधोमहान् दासदासीसमायुक्ता वस्त्राभर्णैःसुशोभिता केचिज्जीवपरंप्रीती सुधाशक्तविचिन्तनम् पुण्यात्सर्वसुखंनित्यं विस्तृतिंपूर्णवैभवाः पूर्वपापप्रभावेण आद्यन्तेदुःखसंभवाः वियोगोतातजंदुःखं वैधव्यातिमहद्भयम् क्लिश्यतिविविधंलोके रोग शोकेणपीडिता सुखेदुक्खप्रदारेखा पूर्वपापेणदुस्तरम् यावद्यत्नंनकर्तव्या त्रिजन्मंतप्यतिमहा दानमंत्रंसुपुण्येण नित्यंसर्वसुखंलभेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ कथयस्वप्रसादेण पूर्वपापस्यकारणम् केनक्लेशाश्रयोनारी आद्यन्तेदुःखभाजनो ॥ भृगुवाच ॥ श्रुणुपुत्रमुपाख्यानं कथायाःपरमाद्भुतम् पुराधर्म रताप्राज्ञी वैश्यवंशसमुद्भवाः व्रतदानादितोनित्यं द्विजदेवान्सुतोष्यति महत्वमधिकंलोके बहुद्रव्येणगर्विता साकदाचिन्महापूर्वं तीर्थयात्राञ्च कारयेत् तत्रस्नानमहादानं स्वपुण्येणातिगर्विता निशायास्वगृहंगन्ती तन्मार्गमुनिराश्रमम् तत्रैतद्रथचक्रेण गवीशोघातमृत्युदा तेनभूयोमहत्पापं नैवशांतिश्चकारयेत् तस्मात्पापाश्रयोभूया देतज्जन्मेतिदुक्खिता दानपुण्यव्रतेणैवः दिव्यांगीसुकुलोद्भवाः सर्वसौख्यान्वितालोके पूर्वंपापाद्भयमजेत् ॥ शुक्रोवाच ॥ केनशान्तिभवेन्नाथः गवीशोपापदुस्तरम् कथयस्वप्रसादेण यदितेकृपयामपि ॥ भृगुवाच ॥ कथयामिमहाभागः यत्नचास्य सुखंकरः हेमपत्रप्रकुर्वीतः रामकोणादिगांगुलम् लेखयेद्रक्तगंधेण भागार्द्धेपूर्वशंकरम् शेषार्द्धंसुक्रमेणैवः गवीशोचित्रशोभनम् वेष्टितांस्वेतपट्टेण प्रायश्चितविधिर्यथा संस्थाप्यकलशंपूज्यः भक्तियुक्तेनचेतसा मंत्रार्घ्यंसुयत्नेन नन्दनन्दसहस्रकम् आपदुद्धारणंजाप्यः सावित्रीवीर्यंयंत्रिता ॥ मंत्र ॥ ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय भूतानामधिपतयेनमः पूर्वजन्मांतरोर्जित वृषभदोषं हर हर स्वाहा शं श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ओं हवन मार्जनादिस्यं कृत्वासर्वविधिर्यथा मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या माचार्य्यायः प्रदापयेत् यथाशक्तिद्विजंतोष्यः आशिर्वादञ्चग्राहता एवंपुण्याश्रयो नित्यं सर्वपापैर्विमुच्यति मनेच्छापूजितावह्नी पूर्णसौख्याग्रजन्मनि धनसंतानयानञ्च कुटुम्बेसुखवर्द्धनम् अयत्नेविपरीत्यंही अथाग्रेश्रुणुभार्गवः

जन्मवर्षोदरःव्याधी द्वितीयेदशनंरुजं रामाब्देवेदवर्षेच पीड्यातरुधिरःव्यथा दानमंत्रंसुयत्नेन भगद्भक्तिभावतः सर्वारिष्टक्षयोनित्यं मासेवर्षसुखंगता
शिशुक्रीड़ारतोबाला तातमातसुखप्रदा शराब्दव्यालवर्षान्तं तयोरन्तमहोत्सवम् मंगलंजायतेगेहो विस्तृतिसर्ववैभवाः भ्रातबंधुसमायुक्ता पितुलाभ
विवर्द्धनम् गृहकार्यरताकिंचिद्वस्त्राभर्णैःसुशोभिता नन्दाब्दबाणचन्द्राब्द सुखसौभाग्यवर्द्धनम् उद्वाहादिमहोत्साहो कुलकीर्तिःसुनिर्मला माननीया
सुसद्रूपाबहुभूषणभूषिता प्रकाशोविपणीभूयात्महत्वञ्चपदेपदे महादानादिमंत्रेणपूर्वपापैर्विमुच्यति अल्पमृत्युभयापत्तौसर्वव्याधिविनाशनम् ऋतुचंद्राद्ध
मारभ्यः विंशवर्षावधिततः महत्वमधिकंप्राप्य रूपयौवनमावृता पतिप्रेमविवर्द्धन्ति निजकार्येसुकौशला पुत्रजन्ममहोत्साहो कष्टचिंतासुखंलभेत्
पतिलाभप्रभावेण सर्वकार्येसुआगमः कलहारिष्टसंतप्ता यावद्यत्नेनपापहं चाल्पमृत्युभयंघोरं पतिपुत्रेणक्लेशिता इन्दुपक्षाद्धसंजातं शरपक्षाद्धमेवहो
विस्तृतिर्वंशजंपुण्य पूर्वयत्नेसुरक्षिता धनधान्यसमृद्धिश्च भोगमैश्वर्यनूतनम् कुलेविघ्नमुपाधिश्च क्षत्रभंगविचिंतनम् ईश्वरंभक्तिभावेण सुपुण्यंलाभदो
महान् रसनेत्रमितेवर्षे व्योमरामान्तरेतथा व्ययलाभग्रहान्नित्यं विवाहोमंगलंमहत् सर्वकार्याणिसिद्धंति महत्वंसुपदाधिपो कुलकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्ध
प्रशंसिता पतिपुत्रात्मजकष्टं सुपुण्याच्छान्तिसर्वदा शशिवह्निसुवर्षाणि शररामाद्धमेवहो उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेविविधंतदा चत्वारिंशावधिर्वत्स
सुखेच्छासर्वपूजिता देवदर्शनतीर्थेषु पवित्रंक्रियतेतनम् दानमन्त्रमहादानैर्सुखंसर्वेप्सितंलभेत युगवेदमितेवर्षे पुत्रभाग्योदयंभवेत् दासवाहनजैर्नित्यं
प्रकाशोपुण्यजोमहान् पौत्रजन्मोत्सवंगेहे कुलतेनप्रकाशिता सर्वसौख्याद्भवोनित्यं यावद्रामशराद्धके नानाकार्यप्रबंधेण गृहशोभासुविस्तरात् शरीरे
दारुणोकष्टंमुनिपञ्चमवत्सरे तत्रजोडमयेपत्रे कालमूर्तिसुपूजनम् महामृत्युञ्जयोजाप्यं महादानञ्चकारयेत् छायापात्रान्नदानेन सर्वारिष्टनिवारणम् पुनः
सर्वसुखंलोके शरव्यालाद्धमायुषम् रामनामजपेनित्य दानधर्मेमतिस्थयेत् पुत्रपौत्रप्रपौत्रैश्च वांछापूर्तिप्रजायते पापकर्मकृतेबाधा पुण्येविघ्नमुपस्थिता
तेनक्लेशाश्रयोनारी पूर्वपापेणपीडिता अतस्तानिनियम्याय शान्तयेत्सुखमिच्छति पूर्णायुः सुखसर्वाणि सुप्रसिद्धप्रशंसिता स्वल्पश्रमेतनंत्यक्त्वा
प्राप्यति गतिरुत्तमा पुण्याद्भाग्य महत्वेण सर्वत्रैव प्रशंसिता कर्माधीनं भवेत्सर्वं फलंयच शुभाशुभं एवंज्ञात्वा सुतत्वज्ञो सुखंचैवात्र जन्मनि ॥

स्त्री०
९५

एतद्योगोद्भवाबाला शुचिसाध्वीमनोहरा शुभलक्षणसंपन्ना गृहकार्येसुकौशला कौमलांगीसौम्यरूपा मध्यभागाप्रियंवदा धर्मेणैवसहायेण सर्वसौख्य विकारिणी यथादेहप्रवर्द्धतःविस्तृतिसर्ववैभवाः मासवर्षेमहोत्साहो तातकीर्तिबृहत्यपि विस्तृतिर्वंशजलोके सुविख्याताप्यमानिनी अल्पमृत्युभयंकष्टं सर्वशांतिःसुयत्नतः दिव्याम्बरैसुशोभंति बहुभूषणभूषिता नानाकार्यप्रबंधेण स्वकुलेसुप्रशमिता रूपयौवनसंपन्ना पतिप्रेमविवर्द्धनी पुत्रपौत्रसुखासर्वे दासदासिप्रमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन पूर्वपापोविशान्तये सर्वेच्छापूजितंलोके पतिपुत्रधनादिजा यावद्यत्नंनकर्तव्य सुखेशोकविचिंतनम् क्लिश्यति विविधोवामा पूर्वपापदुरत्यया ॥ शुक्रोवाच ॥ कथंतद्दारुणोपापं जायतेपूर्वजन्मनि कथयस्वप्रसादेण दुस्तरोकर्मजंकथा ॥ भृगुवाच ॥ विचित्रांमद माख्यानं श्रृणुवत्ससमासतः पूर्वजन्मान्तरोवामा शूद्रवंशसमुद्भवा द्विजसेवारतोनित्यं बहुकालसुखगता युवावस्थामदोन्मत्ता लोभेणहतचेतसा केचिन्मन्त्रपरंप्रीती सर्ववार्ताप्रकाशयति द्विजगेहेमहद्रव्यं भूषणविविधानिच दृष्ट्वातेसुहरंयत्नं चिंतयेद्बहुनित्यशः कदाचिद्दैवयोगेण सकुटुम्बाद्विजो हिसा तीर्थयात्रासुगतव्या दासीयगेहसंस्थिता सर्वद्रव्यहरंतस्य पूर्वमित्रसमायुता दूरदेशेगमिश्यंति यत्रकोपिनविद्यते द्विजतीर्थागतोगेहे शापं दत्वातिदुक्खिता तेनपापाश्रयोलोके नारीविश्वासघातनी पुण्यमार्गेव्ययोद्रव्य ईश्वराराधनेमति भोगमैश्वर्यसंयुक्ता क्वचित्कालेसुखंभजेत् पुनः पापाश्रयोलोके एतज्जन्मेतिदुःखता ईश्वराराधनंपुण्यं सर्वलक्षणसुन्दरी सुखसौभाग्यसंपन्ना पूर्वपापैर्व्वितप्यति अतस्तशान्तिहेत्वर्थं प्रायश्चित्त वदाम्यहम् पूर्वपापक्षयंनित्यं येनसर्वसुखागमः हेमपत्रप्रकर्तव्या शुचिशुद्धमनोहरा लेखयेद्रक्तगंधेण द्विजमूर्तिसुशोभनम् ताम्रकुम्भेघृतंगुप्तो यथा श्रद्धामहद्धनम् मूर्तितत्रैवसंस्थाप्यः पीतपट्टेणवेष्टिता पूजयेद्भक्तिभावेण वस्त्राभर्णैरलंकृतम् एतन्मंत्रमुखोच्चार्यः विधिवद्दानमाचरेत ॥ मंत्र ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं व्यूं नमोब्रह्मणेभूतानामधिपतये पूर्वजन्मान्तरार्जित शापपापं हर हर स्वाहा व्यूं ह्रूं ह्रीं ह्रां ॐ सावित्रीजापयेलक्षं मंत्रमे तत्तदर्द्धकम् तदर्द्धं वटुकोमंत्रं तदर्द्धं धनस्यच जाप्यदान मिदंसर्वं कृत्वापापैर्विमुच्यति ईश्वरंभक्ति भावेण सर्वसौख्य समागमः कार्याण्यपिच सिद्धन्ति विस्तृतिं सर्ववैभवा पतिपुत्रात्म द्रव्येण तुष्यतिविविधोत्सवाः कष्टचिन्ता भयंसर्वं विलीयन्तेपि शत्रुवाः महत्वमधिकंलोके पुण्यतत्र ब्रवीमिते

स्त्री
९६

प्रथमाब्देमहोत्साहो मंगलंगेहमाहगतः तातमातमहोत्साहो प्रपितुश्चततोधिकम् ज्वरार्तमुदरव्याधी भूतछायाश्चविव्हला ततःशांतिःसुयत्नेन कन्यका
वृद्धिमाप्नुयात् द्वित्रिवर्षान्तरोकाव्यः सुखदासर्वमंगलम् दशनोत्वतिजाकष्टं ज्वरान्नासारकादयः छायापात्रान्नदानेन सद्यसौख्यमवाप्नुयात् तातचिंता
समायुक्तोग्रीष्मेलाभसुखप्रदा मातृकष्टान्वित्तोभूयात्पुनरन्तेसुमंगलम् चतुर्थेपञ्चमेषष्टेमुनिवर्षावधिःक्रमात् लाभश्चविविधोतातः गृहेमंगलचर्चिता शिशु
क्रीड़ारतोबाला निजकृत्यसुकौशला बृणाबातेनपीड्यंति पतनाच्चमहद्भयम् मंगलंकामयोगोपि संबंधेनप्रशसिता वस्त्राभर्णैसुशोभंति मोदमानंदिनेदिने
दानमंत्रंसुपुण्येण सर्वसौख्यसमागमम् सर्पवर्षसमारभ्यः यावद्वर्षञ्चद्वादशे भोगाप्रवैभवोनित्यं वर्द्धतेपिनिशेषवत् गृहकार्येसुकुशला सर्वसौख्यविवर्द्धनी
उद्वाहोजायतेचास्यमोदवृद्धियथाक्रमः सुपुण्याच्चसुखंनित्यंकुसंगात्क्लेशभाजनीईश्वरंभक्तिभावेणमनेच्छासर्वपूजितागुणसोमाद्धमारभ्यरष्टादशसुवत्सरे
स्वकृत्यकुशलावामा बुद्धितस्यप्रकाशिता पतिप्रीतिविशेषेण कामक्रीड़ामनोरमा सुखश्चार्वावधोपुण्यं जायतेतत्रदीर्घता ऊनविंशतथाविंशे वह्निविंशाद्ध
मध्यमा मंगलंविविधोगेहे सुतापुत्रसमुद्भवं विदेशोगमनंभूयादशाश्रेष्टफलप्रदा वेदविंशगतेवर्षे व्यालपक्षतथान्तरे गृहलाभविशेषेण प्रजावृद्धिसुखप्रदा
सुप्रबंधंसुयत्नेन सुखसर्वत्रवर्तते पापाच्छोकागमोगेहे पतिपीडाभयप्रदा औषध्दिानमंत्रेण पुनःशांतिःसुखागमः स्वशरीरेमहाकष्टं प्रसूतंप्राणजायते
पूर्वयत्नमहादानं सुपुण्याच्छ्रेयभाजनी मंगलंविविधोनित्यंमानकीर्तिसुनिर्मला नंदनेत्रश्चात्रशाब्देवेदवह्निनथान्तरे व्ययलाभमहच्चापिउद्वाहादिमहोत्सव
सुशोभितेकुलंतेन गृहंचातिमनोहरो शरत्रिंशतिवर्षाणि व्योमचत्वारिमध्यमा चित्तचिंतातुरोभूयात्पुण्यंशांतिःसुखप्रदा त्वयत्नेविपरीत्यंही फलमेतद्धि
जायते नेत्रवेदगतेवर्ष पौत्रजन्मसुयत्नतः सुखवृद्धिमहोत्साहो मासेवें सुखागमं व्योमबाणावधिवत्ससर्वेच्छासुखपूजिता आनन्दंक्लेशकायञ्च जातंकर्मा
श्रयोसदा ऋतुबाणगतेवर्षे पतिप्राणहरीदशा व्यालपञ्चाद्धमारभ्यः जायतेगेहविग्रहं द्विजदेवसुहृत्पूज्यं दशाश्रेयस्करीसदा चित्तचिंताविनश्यंति
दानधर्माश्रयेमतिः अतःपरिसुखासर्वेरसषष्टाद्धमध्यमम् रामनामजपेन्नित्यं दानादिमतितत्परा प्रतापमानमधिक सर्वदासुखसम्पदा व्योमसप्ताद्धगर्किवा
मुनिव्यालाद्धजीवति ईश्वरंकृपयात्पुण्यं फलंसर्वेसितंलभेत अग्रजन्मेसमुत्पन्ना सुप्रसिद्धधनाधिपा राज्ञीवराजतिभूमौ पुण्यतेजोमहत्यशम्

सर्वखेटेष्टमानेन योगोयंलाभदाभवः भोगमैश्वर्यसंयुक्ता सुकीर्तिख्यातिभूतले विप्रदेवार्चनेप्रीती तीर्थदेवालयेरति व्रतनेमरतावामाशुचिसाध्वीपतिव्रता
सुशीलारूपसंपन्ना सवलाचमनोहरा वस्त्राभर्णैसुशोभति स्वजातिर्मानवर्द्धना सरुजंपीड्यतिपापं पुण्ययत्नात्सुखाकरी आलस्यंजायतेदेहो अंगबातेन
पीडिता प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रसुभक्तितः सर्वत्रसुखदोकाव्यः मनेच्छातेनपूजिता अयत्नेमानसीचिंतानसुखंप्राप्यतिध्रवम पीड्यतिबहुपापेणयत्कृतं
पूर्वजन्मनि पतिपुत्रात्मकष्टश्च नैवपूर्णसुखागमः रिपुवोक्लेशितानूनं हानिचिंतावलायसी तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सुखसाधनमाचरेत सर्वावस्थासुखंनित्यं
विस्तृतिंसर्ववैभवाः पतिपुत्रतथापौत्रं प्रजावृद्धिधनागमः पूर्णायुःसुखमधावीसर्वापत्तौविनश्यति सौभाग्यंमहतोभूयात्पूणयोगधनाधिपा प्रायश्चित्तम
भावेणानिस्फलंजन्मपत्रिका ॥ शुक्रोवाच ॥ किमसौदारुणोपापंजायतेपूर्वजन्मनि प्रायश्चित्तान्वितोसर्वंकथयस्वप्रसादतः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुवत्सप्रवक्षामि
परंगोप्यमतहियत् अन्तरप्रभवोगेहेनारीयंपूर्वजन्मनि सर्वसौख्यान्वितालोकेदानधर्मपरायणा मानकीर्तिसमायुक्ताक्रोधेणातप्यतिकदा कदाचिद्दैव
योगेणातीर्थस्नानेगमिष्यति तदाचसुमहापर्वे पतिगेहमुपस्थिता धर्मव्रतरतोभूयाद्धेनुदानश्चकारयेत स्नानंकृत्वाततःतीर्थान्नारीयंगेहमागता धेनुवत्स
नदृष्टंथा येषांप्रेमसुपाल्यति क्रोधेणातप्यतिवामा शृणुतद्दानकारणम् विप्रगेहगमिष्यति कुवाक्येणातिधर्षिता धेनुवत्सागतागेहे धर्मवार्तानमण्यति
ममधनुकथंदानंपतिरत्यतवादिता शापपापाश्रयोतेनएतज्जन्मेदुखावृता अनुष्ठानमहादानंसद्यःसिद्धिप्रदोमहान् कथयानिसमासेणविधितस्ययथाक्रमम्
स्वर्णपत्रप्रकर्तव्या यथावित्तसुविस्तरात धेनुवत्सान्वितोचित्रं द्विजभर्तासुशोभनम् वेष्टितारक्तपट्टेण संस्थाप्यंकलशोपरि प्रायश्चित्तविधानेन पूजयेत्सु
विधिर्यथा लक्षमंत्रजपेद्विप्राहरिभक्तिपरायणा ॥मंत्र॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं शं शंकराय सर्वपापंहराय महेशायशिवातेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापं
हरहरश्रेयोमांदेहिस्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ गोपालस्तोत्रपठितंसावित्रीजाप्यसंयुता कुम्भमूर्तिप्रदातव्यावस्त्राभर्णै.सुशोभिताः एवंदानमहादानैराचार्याय
सुतोषिता आशिर्वादंलभेत्तेन सर्वसौख्यप्रदोमहान् पूर्वपापैर्विमुच्यंति एतद्यत्नंसुभक्तितः पुनःसर्वसुखंलोके विस्तृतिपुण्यवैभवाः नानाकार्यप्रबंधेण
सर्वसौभाग्य रूपिणी पुत्रपौत्रात्मजादीनां सर्वसाफल्यवैभवा प्रतापमानमधिकं सुकीर्तिख्यातिभूरिशः एवंपुण्याश्रयेनित्यं विमलंभाग्यभाजिनी

जन्माब्देवह्निवर्षान्तं मातकष्टसुखोत्सवम् मंगलं जायतेगेहोमासेमासेसुखंगता दन्तपीड़ाज्वरोत्पत्ते जायतेचविरेचनम् शरीरेकष्टसंपन्ना कन्यकादुःख रूपणी किंचिद्दानादियत्नेन भगवद्भक्तिभावतः सर्वकष्टक्षयंलोके मोदमानंदिनेदिने दृष्टिहास्यमनोरम्यं बालक्रीड़ासुचञ्चला तातलाभमहोत्साहो सुखसौभाग्यवर्द्धनी वेदाब्देव्यालवर्षान्तं विस्तृतिंसर्ववैभवाः गृहकार्यरताबाला वस्त्राभर्णैःसुशोभिता उद्वाहंचर्चयागेहे तातमातविचिंतनम् रुजं चाल्पभयंसर्वं नित्यंशांतिसुयत्नतः पुण्ययत्नादितोर्नूनं विमलंभाग्यवर्द्धनी नन्दाब्देवेदचन्द्राब्दे तयोरन्तर्यथाक्रमः भाग्यवृद्धिमहत्वेण विवाहोमंगलं महान् वस्त्राभर्णैःसुतोष्यंति कुलकीर्तिसुविस्तरात् पतिप्रीतिविवर्द्धन्ति रूपयौवनसंभवाः भोगाप्रवैभवोवृद्धि निजकृत्यसुकौशला प्रतापमानमैश्वर्यं जायतेचदिनेदिने शरसोमाब्दमारभ्यः विंशवर्षावधिःतथा कुलवृत्तिप्रभावेण सुखसौभाग्यवर्द्धनम् अल्पमृत्युभयंघोरं पुण्ययत्नाद्विनश्यति प्रकाशो विपणीभूयात्मजावृद्धिसुमंगलम् सुशोभितंगृहंतेन विमलंभाग्यशालिनो सोमपक्षगतेवर्षे शरपक्षाद्धमध्यमा कुलवृद्धिसुपुण्येण पुत्रकन्यासमायुता व्ययलाभमहोत्साहो गृहेद्रव्यनसुस्थिरः पूर्वयत्नादितोर्नूनं पुण्यैश्वर्यविवर्द्धनम् दंपत्योरल्परुजंकष्ट नश्यतेपिसुकर्मणा ऋतुपक्षाद्धत्रिंशेच तयोरन्तक्रमा दितः किंचिच्छोकागमोगेहे पुण्याच्छान्तिर्हिनित्यशः मंगलंविविधोनित्यं जायतेबहुनूतनम् मासेवर्षेसुखजातं पतिलाभविवर्द्धनम् इन्दुरामगतेवर्षे चत्वारिंशाद्धकेतथा कुलकीर्तिवृहन्नित्य मुद्वाहादि व्ययोमहान् धर्म्मवृत्ति प्रभावेण सुप्रसिद्ध प्रशंसिता मनेच्छा पूजितंलोके पुण्यपात्री सुपूजिता राजतिसुप्रबंधेण पतिसंगेसुखाकरी सोमचत्वारिवर्षाणी व्योमभल्लाद्धमवही पतिपुत्रात्मद्रव्येण विविधंनित्यतुष्यति पौत्रजन्म विशेषेण सफलं जन्ममण्यति महत्वंजायतेगेहो कुलवृद्ध प्रशंसिता ग्रामभूमि धनंलब्ध्वा पुण्यात्सर्व सुवैभवाः सोमपञ्चमवर्षाणि यावद्व्योम रसाद्धके तावत्पुण्य सुखासर्वे मनेच्छा सर्वपूजितं अयत्नेविपरीत्यंहो भोक्तव्य कर्म्मजंफलम् तस्मात्सर्व प्रयत्नेन यत्नंकृत्वा सुखेच्छिता शतजीवी भवेद्वामा पूर्वपुण्येण भूतले पुत्रपौत्र प्रपौत्रञ्च दिव्यरत्न धनादयः लोकेच्छा पूजितासर्वे रत्नसूय वसुन्धरा अन्तेकृश्यतनंवृद्धा पुण्यपात्री सुपूजिता अनायासेतनं त्यज्यः सर्वत्रैव प्रशंसिता अग्रजन्म सुपुण्येण चोत्तमकुलसंभवाः महाराज्ञीवसोवाला फलंसर्वेप्सितंलभेत् एवंसर्व सुखंलोके ज्ञात्वापुण्याश्रयोकत्रे

एवंसर्वग्रहायत्रः फलंतत्रविनिश्चितम् सौम्यसाध्वीसुसद्रूपा बालिकाशुचिसुन्दरी सर्वैश्वर्यसुसंपन्ना कोमलांगीदयान्विता गृहकार्येसुकुशला तातमात
परंप्रिया वस्त्राभर्णैसुशोभन्ति वनितापुण्यरूपिणी दानमंत्रंसुयत्नेन पूर्वसंरक्षितायदि प्रकाशोविपणीभूयात्पतिपुत्रधनादिजा नानाकार्यप्रवंधेण
नित्यंसौख्यसमागमः राज्ञीवंराजिताभूमौ हेमरत्नविभूषिता राजतिसुप्रबन्धेण पतिप्रेमविवर्द्धनी सर्वापत्तौविनश्यंति यद्रोगश्चमहद्भयम् दासवाहन
जैर्नित्यं दम्पत्योर्मोदवर्द्धनः भूमिलाभविशेषेण गृहंचातिसुशोभनं नैववाक्यस्मृतिर्यत्रः नैवयत्नंभविष्यति कष्टंभोक्तव्यपापेण यत्कृतंपूर्वजन्मनि
नानाकष्टागमोगेहेविविधोद्वेगपीडिता प्रजावृद्धिर्वितंयतिरल्पायुसुखखंडिता पापादुक्खाश्रयोभूयात्सर्वसौख्याधिकारिणी॥ शुक्रोवाच॥ कथंतद्दारुणो
पापंवनिताक्लेशकारकः पूर्वजन्मभवेत्तातः कथयस्वक्रमादितः ॥ भृगुवाच ॥ संक्षेपात्तेनिगदितं पूर्वपापस्यकारणम् परंगोप्यमतमेतत्सज्जनानन्दहेतवे
पुरानृपकुलेजातं मानुषीशुभलक्षणा सर्वैश्वर्यसमायुक्ता दिव्यरूपाधराधिपा राजतिस्वप्रबन्धेण पतिहीनयुवावयं कामोद्वेगेणतप्यति चिन्तयन्ति
महत्यपि दानधर्म्मंव्रतंपुण्यं कृत्वाकामेणपीड्यति द्विजपुत्रैर्भवेत्प्रीती कामाशक्तपरस्परम् रमंतौविविधंक्रीड्य रुभयोप्रेमवर्द्धनम् गर्भपातमहत्पापं
कृत्वातत्र महत्यपि तेनपापाश्रयोलोके कष्टपात्रीत्रिजन्मनि क्षीणायुदुक्खसंतप्ता यावद्यत्नविनिर्मुखाः अतस्तंशान्तिहेत्यर्थं कृत्वातन्त्रसुभक्तितः
ह्यखंडितेशुभेलग्ने शुचितीर्थेशुभस्थले स्वर्णपत्र प्रकर्तव्या शुद्धं विभव विस्तरात् लक्ष्मीनारायणोमूर्ति लेखयेत्सुविधिर्यथा बालचित्रलिखेत्पृष्टे
पञ्चगर्भसुशोभनम् वेष्टितांपीतपट्टेण संस्थाप्यंकलशेततः पूजयेद्भक्ति भावेण प्रायश्चित्तविधानतः मन्त्रमाराध्ययत्नेन भगवद्भक्ति परायणम्
॥ तत्रमंत्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं नं नारायणाय आदिशक्तिसहितं स्वभक्तान्प्रतिपालकाय सर्वेश्वरायतेनमः पूर्वजन्मान्तरोजित सर्वपापं हर हर
क्लीं शं कं हं स्वाहा इतिमन्त्रजपेल्लक्षं सावित्रीसंपुटंकृता हवनंविप्र भोज्यञ्च विधिवत्मंत्र दक्षिणा मूर्तिदानं प्रकर्तव्या वस्त्राभर्णै सुश्रद्धया
आचार्य्याय प्रदातव्या तोष्यंतिही सुसद्व्रता आषिशं ग्राहयेत्तात्रः सर्वपाप क्षयंभवेत् नित्यंसर्वसुखागम्य विस्तृतिं पूर्णवैभवाः दानमन्त्रं
सुपुण्येण रत्नसूर्यवसुन्धरा सर्वसौख्य प्रदोयत्नं गोपनीयं परंतपः सर्वविघ्नक्षयंपुण्य मीश्वराराधनेमतिः तवस्नेहात्प्रवक्षामि स्वर्गलोकेषुदुर्लभम्

प्रथमे द्वितीयाब्देषु किंचित्कष्टैः प्रतप्यति उरुपीडासमुद्भुतदंतरोगप्रजायते मातृचिंतान्वितोभूयात्कष्टशांतिः सुयत्नतः तृतीयेपञ्चमेवर्षे तातयोगमहोत्सवम्
मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येणशांतये वृणत्राधाप्रपीड्यति अकस्माच्चमहद्भयं दानमंत्रसुपुण्येणसद्यशांतिः सुखंलभेत रसाब्देनंदवर्षे च तयोर्मध्येयथाक्रमः
विद्याभ्यासरताकिंचित्क्रीडनेबहुतत्परा तातलाभभविष्यंतिविवाहार्थेच चिंतया संबंधोमंगलंप्राप्यपितुरंधर्मतत्परा दशमैकादशेवर्षेतातलाभव्ययोमहान्
हर्षवृद्धिसुखोत्साहोक्रीड्यतिसखीभिस्सह प्रारंभेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशांतरे कामेच्छाप्रवलोयांतिपतियोगेसुचिंतनम् रूपयौवनसपन्नावस्त्राभर्णौसुभूषिता
प्रायश्चित्तंसुयत्नेनसुखंसर्वत्रभूतले द्रव्यलाभविशेषेणमनेच्छाबहुपूजिता प्राप्यतेषोडशेवर्षेव्योमनेत्राब्दमध्यगे दंपतिसुखमेधत्त प्रजावृद्धिसुमंगलं स्वकृत्य
कुशलात्रामामोदमानंदिनेदिने व्ययश्चमहतोगेहेक्षत्रभंगस्यचिंतनं चैकविंशत्रिविंशाब्देपञ्चविंशतिकेतथा भाग्यवृद्धिभवेत्पुण्यं दशाश्रेयस्करीभवेत् सर्व
सौख्यसुयत्नेनणतिपुत्रात्मजादयः रसविंशतिवर्षाणिव्योमवह्निनथांतरे नानालाभव्ययोनित्यंसुखिन्यातापतिप्रिया मंगलंविविधोकाव्यः सुखसाधनतत्परा
देवतीर्थेपरंप्रीतीपवित्रमानुषीतनम् इन्दुरामगतेवर्षेयावत्पञ्चगुणान्तरे तावत्कालावधिर्नून मोदतिबहुविस्तरात मानेनमहताविष्टा प्रजावृद्धिमहोत्सवम्
उद्वाहोमंगलंकार्ये यशेतसाधनेमतिः संपदासंचयेनित्यंसुकार्येचव्ययस्तथा कुलकीर्तीविशेषेणमाननीयामहज्जनैः ईश्वरंभक्तिभावेणसुप्रसिद्धप्रशंसिता
व्यालवह्निगतेवर्षेजायतेश्चैकविग्रहं आलराशिमनुक्रम्य यावद्घटगतेरविः सर्वापत्त्वौविनिर्मुक्ता दानमंत्रसुभक्तितः मासेवर्षेसुखंनित्यं रामचत्वारिवत्सरे
ऋतुवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् अजाद्वणिजगेभानुः पुत्रकष्टचकोमतः आपदुद्धारणोजाप्य सर्वकष्टविनश्यति अन्यमासेसुखंनित्यं बनिता
भाग्यभाजनी लाभश्चविविधोगेहे यावच्छून्यरसाङ्कके धनसंतानयानंच पुत्रपौत्रसुखाकरी मनेच्छापूजितंसर्वे पुनरप्याहिनूतनम् धर्मवार्तासदावृत्ति
साधुसेवासुतत्परा नगषष्टगतेवर्षे परवैराग्यचिंतनं प्रपौत्रंजन्मतोगेहे सर्वेच्छालोकपूजिता यावन्नंदरसाब्देतु वातबाधाप्रपीड्यति पुनःकष्टविनश्यंति
भजनानंदसर्वदा आयुवृद्धिः सुपुण्येण भूयान्नन्दनगाङ्कको अजराशिगतेभानुः निधनपूर्वपक्षके महोत्साहंगृहेतत्रः सर्वत्रैवप्रशंसिता पुण्याद्भाग्य
महत्वेण गतिरेवसुनिर्मलम् जन्मतिमुकुलंपुण्योत्तथैवाग्रेद्विजन्मनि सर्वेप्सितंलब्ध्वा सर्वसौख्याधिकारिणी मानेनमहताविष्टा पुण्यतत्वमहत्पदम्

एतद्योगोद्भवोकन्यासुस्वरूपाचसुन्दरी पतिप्रेमकराप्राज्ञीसुशीलाचप्रियंवदा नातिगौरीनकृष्णांगीगोधूमाकारवत्तनुम मध्यपादकरदेहोचारुहास्यावला
सिना मातृकष्टप्रदोकिंचित्तातचिंताप्रदायिणी गृहकार्येसुकुशलापुनरानंदवर्द्धिना कोमलांगीसुप्राज्ञिश्चमध्योष्ठीचारुनासिका सुनयनाभूतिशुभ्रारुचिरांगी
नितम्बिणी पूर्वावस्थाविशेषेणरमंतौसखिभिस्सह लक्षणाश्चशुभासर्वें किंचित्पापाद्धयोगतः भ्रातभग्नीसमायुक्तभूयसेपिस्वकर्मणा पूर्वावस्थासुखंदीर्घः
मध्यावस्थाचमध्यमम् अन्तेदुक्खाश्रयोनारीक्लेशितंप पकर्मणा कल्पयंतिमहचिंतासर्वसौख्याविकारिणी यावद्यत्नंनकर्तव्योदुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः नसुखं
लभतेपूर्णपतिपुत्रात्मजादयः वियोगकलहोदुःखंहानिरेवदिनेदिने पुराविप्रकुलेजातासुस्वरूपातिसुन्दरी सर्वसौख्यान्वितोभूयात्सुमतिर्वाग्विलासिनी
दानधर्मेमतिःस्वल्पाःदूषितविप्रसाधवा गेहेविवादितोनित्यंनिंदंतिस्वसुरादयः क्लिश्यतेतेनभर्तारंकुमार्गीभूयसेपिसा कदाचिदैवयोगेणगृहेक्लेशोति
दारुणम् वादावादकुवाक्येण क्रोधावेशमहत्यपि तत्रचेदंगृहत्यक्त्वा कूपेपततिदुष्टता आत्माघातमहापापं कर्तव्यंसाह्यु पस्थिता दैवेणरक्षितस्तत्रः नैव
मृत्युवशंगतः दुक्खितंतेनविविधंभर्तारंरोषितोमहान् पितृमातृसमायुक्तंशापितविविधंतया नसुखंप्राप्नुयाद्धामात्वयाचाग्रेत्रिजन्मनि एतस्मात्कारणा
द्वत्समानुषीपापमाश्रयः एतज्जन्मत्रिजन्मानिदुक्खिंतापापकर्मिणी क्लिश्यतिविविधोगेहंपतिपुत्रादिसर्वयोः नसुखंलभतेपूर्णंयाद्यत्नंनपापहम् स्वर्णपत्रं
कृतोतत्रयथावित्तंसुश्रद्धया नगांगुलंसुविस्तीर्णंबाणांगुलतथैवच तस्योपरिलिखेचत्रंविष्णुमुद्रायथाक्रमः सस्थाप्यविधिवत्कुंभेवेष्टितांपीतपट्टतः तदग्रे
मंत्रमाराध्यपूजनंभक्तिभावतः तत्रमंत्र ॐऐंह्रींक्लींश्रा शं सर्वेश्वरायसर्वरूपायविश्वरक्षणेमहापुरुषायतेनमः पूर्वजन्मान्तरार्जितपापंनाशय२ तज्जनित
सर्वकष्टंविदारय२ मनोभिलाषितसौख्यं प्रकाशय२ स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंॐ एतन्मंत्रजपेत्प्राज्ञः नंदव्यालसहस्रकम् सावित्रीतत्प्राणेनबटुकाराधनंततः
पुरुसूक्तमुच्चार्यश्रासूक्तश्चसुभक्तितः शुद्धस्थानेक्रमेणैवकूर्यातंत्रमुदारधि आचार्यायप्रदातव्यमूर्तिसंकल्पयेत्पुनः ईश्वरभक्तिभावेणआशिर्वादश्चग्राहयेत्
प्रतियत्नसुखंवृद्धि मोदतेभक्तिभावतः पतिपुत्रसुखंसर्वजन्मःक्लेशनाशनम् प्रजोपभोगवृद्धिश्च राजतेसर्वसम्पदा पति मेमहत्वेण सुखंजन्मनिजन्मनि
महत्वमधिकंलोकेसाफल्यंसर्ववैभवाः परंगोप्यमतंवत्सः पुण्यामार्गसुखप्रदा कथयामिसमासेण अथाग्रेश्रृणुभार्गवः प्रथमेद्वितीयाब्देतु रामव यथाक्रमम्

मासेमासेविवर्द्धतिबालिकाशुचिलक्षणा तातमातसुखंनित्यंगृहेमंगलमेवच शरीरेकष्टसंपन्नोभूतछायाश्चविह्वलोः किंचिद्दानादिमंत्रेणश्रेयमानासुयत्नत
दतबाधापुनःपीडयंज्वरतप्तविरेचनम् छायापात्रान्नदानेनश्रेयवृद्धिरुजनशेत् चान्येपिरंभवोकष्टंसुयत्नंशांतिनित्यशः चतुर्थेपञ्चमाब्देतुषष्टंवर्षादिसक्षमे
शिशुक्रीड़ारतोनित्यंचञ्चलश्चपलामतिः मंगलंजायतेगेहोकुलकीर्तिविवर्द्धनम् भ्रातजन्ममहोत्साहोकन्यकासुखरूपिणी यद्रोगंजायतेकष्टंयत्नेनशांति
भेततः अष्टमेद्वादशेवर्षेपतियोगाथमङ्गलम् गृहकार्येसुकुशलाकन्यारूपवतीसती क्रीड़तिविविधंबाला मोदितंसखिभिसह विवाहंमहतोत्साहोपतिरेव
सुप्राप्नुयात् तातकीर्तिविशेषेणवर्द्धतेचलतेवसः विविधाभूषणोवस्त्रंप्राप्यतेपिवरानना त्रयोदशाष्टचन्द्राब्दे र्मध्येमहत्सुखम् स्वकृत्यकुशलोबामा
मोदितापतिभिसह भयभीताहृदेगुप्तंकदाचिच्चिन्तनोमहत् भोगाप्रवैभवोनित्यंवर्द्धतेपुण्यकर्मणा ऊनविंशतथाविंशेशरनेत्राब्दमध्यगे आनंदंसंप्लवेलीन
भोगामैश्वर्यनूतनम् पतिप्रेमविशेषेणपुण्यादानन्दसर्वदा कुलवृत्तिप्रभावेणप्राप्नुयाज्ञानमुत्तमम् पूर्वपुण्यंसुयत्नेनपतिपुत्रधनादिजा सर्वसौख्यान्वितो
भूयाद्मोदितागेहभूषणा शरीरेसंभबोकष्टं सुयत्नेशांतिसर्वदा मंगलंविविधोत्साहो कुलवृद्धिप्रकाशिता ऋतुनेत्रगतेवर्षे यावनभत्रियाब्दके दानमन्त्रं
सुपुण्येणपतिपुत्रात्मजंसुखम् नोचेद्विलोमकंवृत्तंभोक्तव्यहीस्वकर्मणा यावद्यत्नंनकर्तव्यासुखेशोकसमागमः त्रिंशेकोपञ्चत्रिंशाब्देशून्यचत्वारिमध्यमा
विवाहोमंगलंकार्यं जायतेशुचियत्नतः प्रकाशोविपणीभूयाद्दानमन्त्रमहत्फलम् पूर्णभाग्योदयंभूयाद्यशसौख्यविवर्द्धते नानाकार्यप्रबन्धेण राजते
पुन्यसम्पदा पूर्वयत्नादितोनित्यं पतिभक्तिपरायणा मनेच्छापूजितंलोके सुखंसर्वत्रवर्तते शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमबाणाब्दमध्यगे सुप्रसिद्धाः
सुनारीणां पतिप्रेमविवर्द्धिनी सुतापुत्रसुखाविष्टो पौत्रजन्ममहोत्सवम् व्ययलाभमहत्वेण सर्वेच्छासुखपूजिता पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वसौख्यधरातले
शशिपञ्चशरेपञ्च तथासून्यरसान्तरे ईश्वराराधनेप्रीति तीर्थमन्द्रादिसेवनम् ब्रतनेमरतश्चापि दानयज्ञादिकाक्रिया सर्वेप्सितफलंप्राप्यः पुण्यपात्री
सुमानुषी किंचिच्छोकोगभोगेहे गृहाशक्तापिक्लिश्यति ईश्वराराधनेप्रीति सर्वसिद्धिप्रदोभवेत् देवपुण्योत्सवेतस्य व्ययंकीर्तिसुनिर्मला वेदषष्टाब्द
मायुष्यं किंवाशररसाब्दकी स्वगृहेनिधनंचास्य प्रशंसापुण्यतोभुवि पुनरुच्चकुलेजातं दानधर्मादियत्नतः सर्वसौख्यसमायुक्तं प्राप्यतेपरमांगतिः

स्त्री०

६६

सर्वखेटेष्टमानेनयोगोयंसुखवर्द्धन धनधान्यान्वितोभूयाद्भाग्यपात्रीसुमोदिता जन्माद्धनयुतोबाला तातमातसुखप्रदा मिष्टभाषीसुशीलाच गीतवाद
पर ियः महर्घभूषणौवस्त्रंप्राप्यतेब्रहमानिनी रूपहास्यसुसंपन्नामध्यमाङ्गीसुलोचना पीडितंपूर्वपापेणसर्वसौख्याधिकारिणी पतिपुत्रात्मद्रव्येण वामा
क्लेशमवाप्नुयात शोकातोविविधंचिन्ताविभ्रमोव्याकुलंकदा नसुखंलभतेपूर्णं यावद्यत्नंनपापहम् प्रायश्चित्तंसुपुण्येण नित्यंसौभाग्यरूपिणी प्रतियत्न
सुखंवृद्धि मनेच्छासर्वपूजिता सुकार्यसुस्त्राभेण पत्यरत्यन्तवल्लभाः कुलकीर्तिकरासाध्वी सतिसौम्यप्रियम्बदा मानेनमहताविष्टो यशंभूरिसुकर्मणा
पूर्वजन्मनियत्पापं कथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयोनारीदुखितापापरूपिणी वैश्यवंशोद्भवोकाव्यःनारीयं पूर्वजन्मनाः निजगेहेश्वरीभूयाद्धनपुत्रेण
दर्पिता दानधर्मरतोनित्यं व्रतयज्ञसमाचरेत द्रासवाहनजैर्नित्यं गर्वितापुण्यरूपिणी साकदाजाह्नवीतीरे संस्थितादिवसेरसे अग्निकांडेनतत्रैवव्याल
वंशक्षयंकरः तेनपापाश्रयोभूयाददुखिताइहजन्मनि कुलवृद्धिनदृश्यंतेपतिक्लेशोतिदारुणम् अतस्तंशांतिहेत्यर्थंकृत्वातन्त्रशुचिस्थले निजवित्तानु
सारेणस्वर्णपत्रकृतस्तदा लेखयेद्रक्तगधेण व्यालमूर्तिकुलान्वितः संस्थाप्यकलशेपूज्य रक्तपट्टेणावेष्टितम् सुविप्रोमन्त्रमाराध्यः नंदव्यालसहस्रकम्
। तत्रमन्त्रः । ओंऐंह्रींक्लींश्रींशंनमः शङ्करायशिवाय सर्वदुःखहर्ताय पूर्वजन्मव्यालवंशक्षय पापशमनाय सर्वसौख्यंप्रकाशय स्वाहा शंश्रींक्लींह्रींऐंओं
सावित्रीतत्समाणेन जपतोनास्तिपातकम् मूर्तिसंकल्पयेद्भक्त्या आचार्यायप्रदापयेत् वस्त्रआभूषणंदत्वा दानमानैसुतोषितम् नित्यपुण्याश्रयोवामा
एतद्यत्नसुखप्रदा सौभाग्यंसंततिसर्वाः मोदितागेह भामिनी जन्मकाल समारभ्यः यावज्जीवतिभूतले तावत्कालीयजगाथा कथयामिसमासतः
जन्माब्देद्वितियेवर्षेतथावेदेशरान्तरे तातमातमहच्चिताबालिकागेहभूषणा शरीरेजायतेकष्टंस्वयमेवविनश्यति भ्रातजन्ममहोत्साहो मंगलंजायतेगृहे
तातमातमहामोदं साफल्यसर्ववैभवा ज्वरोविरेचनंपीड्य उच्चस्थपतनाद्भयम् बृणंविस्फोटकोव्याधि सर्वथत्नेनशांतय मृदुवाक्यमनोरम्य दृष्टिहास्य
मनोहरी तातप्राणेषुसन्देहोपुण्यात्सवसुखागमः रसाब्देव्यालवर्षेवत्तयोरन्तर्यथाक्रमः चंचलश्चपलोसाम्याक्रीडतिसखिभिसह तातलाभविशेषेण
प्राप्यतिमातमुत्तमम् गृहक्लेशोपदासर्व सुयत्नेशांति नित्यशः नातिधनी भवेत्तातः नातिनिर्द्धन मेतथा मध्यमापिसुशीलाश्च लाभवृद्धिक्रमेणवै

ग्रहाब्देद्वादशेवर्षेशरसोमक्रमादितः मंगलंकार्ययोगोपिमासेमासेसुखागमः तातमातमहच्चिंताव्ययोगमहत्यपि उद्वाहो गलंदिव्यंकुलकीर्तिप्रशंसिता
महर्घभूषणोवस्त्रं अप्यतेननूतनम् अन्नदानादितोनित्यं यवृद्धिश्चसर्वदा सुगेहोसुपतिप्राप्यः सुपुरायाद्भाग्यभाजिनी सर्वापत्तौक्षयोनित्यंपूर्वयत्नेसु
रक्षणम् पतिप्रेमविवर्द्धतिविस्तृतोरूपयौवनम् मासेवर्षेसुखंजातंकष्टशांतिःसुयत्नतः प्राप्यतेषोडशेवर्षेविंशवर्षावधिततः सर्वसंपत्समायुक्ता ग्रहकार्ये
सुकौशला पतिप्रमविकरावामारमयन्तिसुमोदिता विद्याबुद्धिविशेषेण सुसंगाचयशंमहत भाग्योदयंभवेन्नित्यं संतद्योगोभिजायते मानकीर्तिमहोत्साहो
महदानंदवर्द्धिनी बंपत्तोरल्पजंकष्टंपुण्यात्शांतिसुखागमः दानधर्मेसुखंनित्य मिष्टदेवसुपूजनात् चैकविंशत्रिविंशाब्दे शरविंशतिकेतथा पतिभक्ति
सुपुण्येणमनेच्छाबहूपूजिता प्रीतिरेवसुनारीणांसुखक्लेशप्रकाशिनी मंगलंचर्चयागेहो पुत्रकन्यासमायुता सर्वकार्येसुकुशला पतिरानंदवर्द्धिनी सुस्व
रूपाप्रियसर्वाः सुभगासुविचक्षणा त्रिंशवर्षावधिर्नूनं शुचिशौख्यान्विताभवेत् भाग्यवृद्धिःसुयत्नेन विलीयंतेपिशत्रवा मंगलंविविधोकार्य जायतेनित्य
नूतनम् शशिराभाद्धमारभ्यशरवह्नितथांतरे सुतापुत्रसमायुक्तामोदितापतिभिसह वृहल्लाभप्रभावेणसर्वदामंगलंभवेत् विवाहादिमहोत्साहोकुलकीर्ति
प्रकाशिणी मानेनमहताविष्टो राजतेतर्वसम्पदा अकस्माच्चमहल्लाभं व्ययोपिबहुसाधिता सर्वसौख्यागमोगेहे कष्टचिन्ताविनष्यति त्वयत्नेविपरीतंयही
भोक्तव्यापापजंफलम् नेत्रवेदाद्धगेवत्समहच्छोकप्रदादशा सर्वशांतिः सुयत्नेनपूर्वसंरक्षितायदि सर्वोपिमानदोमान्यवनितापुण्यरूपिणी वह्निवेदगतेवर्षे
व्योमबाणसुध्यगे देवदर्शनतीर्थेषुसाफल्यंमानुषीतनम् नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेपुण्यसम्पदा प्रकाशोविपिणीभूयात्कुलवृद्धिमहोत्सवाः पूर्वयत्नप्रभा
वेणप्राप्यतेपरमंसुखं अतःपरिसुपुण्येणयावद्वयोमरसाद्धके तावत्कालावधिर्नूनमनेच्छासर्वपूजिता पौत्रजन्ममहोत्साहोध्वगेहेसुप्रतिष्ठिता नृत्यगीतोत्सवै
र्गेहंशोभितेबहुविस्तरात भूमिलाभविशेषेणरचनागेहनूतनं गुप्तद्रव्यगृहेतस्यधर्मकार्येव्ययोमहत् साधितंसर्वकार्याणिपुण्यपात्रीसुशोभिता रामसप्ताब्द
मायुष्यंपूर्वरापयेसुरक्षणम् अयत्नेक्लेशितानित्यं वैधव्यंपापरूपिणी त्रिजन्मंपीडितोपापं नित्यक्लेशाधिकारिणी दानधर्मरतोनित्यंतस्मात्सर्वसुखार्थये
पापशांतिप्रभावेणपुण्यात्सर्वसुखंसदा सकालेमृयतिश्चापिसर्वत्रैवप्रशंसिता इहजन्मसुखासर्वंतथैवाग्रत्रिजन्मनि सर्वेच्छापूजितापुण्यंनित्यंपापाद्भ

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगु संहिता महाशास्त्र स्त्री फलितखंड

समाप्तम्

पं० लक्ष्मी भूषण शिवभरोसे ज्ञान सागर प्रेस, ५२, महाजन पाड़ा मेरठ शहर ।

भक्ति

नृत्यगीतोत्सवै

ता रामसप्ताब्द

तस्मात्सर्वसुखार्थये

नित्यंपापाद्भ्ये

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगु संहिता महाशास्त्र फलित खंड

प्रारम्भः

पं० लक्ष्मी भूषण शिव भरोसे ज्ञान सागर प्रेस, ५२ महाजन पाड़ा मेरठ शहर

भूमिका

यह श्री भृगुसंहिता महाशास्त्र प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता रहा है और कोई २ पंडित कवि महाशय इस विद्या के ज्ञाता भी होते चले आये हैं और इस समय भी विद्यमान हैं उन्होंने इस ही विद्या द्वारा सहस्रों रुपया प्राप्त किया और कर रहे हैं जिस को इस विद्या की पूर्ण सिद्धी प्राप्त हो जाय वह पुरुष अवश्यमेव अति माननीय देवरूप हो सक्ताहै इस विद्या के मुख्य आचार्य श्री भृगुजी महाराज हैं तिसी कारण यह महाविद्या शास्त्र भृगुसंहिता के नाम से जहां तहां प्रकट है परन्तु विशेष निर्णय करने पर जाना गया है कि इसके कर्ता अनंत महाकवि प्रतीत होते हैं यह महाविद्याशास्त्र जन्मपत्र के फलित के विषय में अद्वितीय जाना और माना गया है सो इसमें कोई संदेह नहीं है इसकी समान ज्योतिष में जन्मपत्र के फलित का ग्रन्थ अब तक कोई भी न देखा गया न सुना गया इसमें भृगु शुक्र के संवाद द्वारा जन्मपत्र की अद्भुत रचना निकलती है यद्यपि इसके सत्या सत्य होने में बहुधा लोगों को परम संदेह होता है और होता रहा है परन्तु हमारे सिद्धान्त द्वारा यह पूर्ण रूप से सत्य है तिस पर भी विशेष सिद्धांत यह है कि सच्चों को सच्च जो झूंठ समझे झूंठ चित्त की प्रकृति के अनुकूल फलदायक है जैसे ईश्वर परम सत्यता से सर्वत्र व्याप्त है परन्तु पापी पुरुष उसमें भी अनेक प्रकार से दूषण लगाते हैं और उसके पूर्ण रूप को नहीं देख सकते किन्तु पूर्ण ज्ञाता महात्माजन ही उसका दर्शन कर परम आनन्द पाते हैं तैसे ही अविश्वासी अज्ञाता पुरुष इसके पूर्ण आशय के न जानने वाले इसे असत्य कहें तो क्या आश्चर्य है देखो नास्तिक लोग ईश्वर को भी नहीं मानते तो फिर और कहना ही क्या है तिससे अधिक लिखना व्यर्थ है ॥

पूर्व काल में गुणग्राही राजा लोगों ने इस विद्या की अतिशय मान्यता की है और विद्या के ज्ञाता पुरुषों ने अब भी बड़ी २ प्रतिष्ठा कीर्ति तथा धन प्राप्त किया है और कर रहे हैं इस महाशास्त्र का संग्रह बहुधा पंडितों ने किया है परन्तु इसका अन्त पाना सर्वथा असंभव है तथापि भी अति परिश्रम करने पर मनोर्थ की सिद्धी होती ही चली आती है और आजकल तो राज्य के प्रबन्ध के कारण समस्त विद्या की वृद्धि है ॥ इति ॥

श्रीगणेशायनमः श्री भृगुशास्त्र पूर्व कथा प्रसंगः ॥ भाषा ॥ एक समय बहुत से ऋषि मुनियों ने एकत्र हो यह जानना चाहा कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन तीनों देवताओं में कौनसा अधिक कृपालु सौम्यमूर्ति व परम स्तुति का पात्र है ऐसे विचार करते करते यह निश्चय किया कि बिना परीक्षा हुए इस बात का सत्य निर्णय न होगा अतएव इस विषय में इनकी पूर्ण रूप से परीक्षा करनी चाहिये ऐसा निर्णय कर ब्रह्माजीके पुत्र परम तेजस्वी तपके पुञ्ज महामुनि श्री भृगुजी महाराजको प्रार्थना पूर्वक इनकी परीक्षा के लिये भेजा उनकी आज्ञा ऽनुकूल भृगुजी महाराज परीक्षा को गये प्रथम ब्रह्माजी के समीप पहुंचे उस समय श्री ब्रह्माजी महाराज अपनी सभा में उच्च सिंहासन पर विराजमान थे भृगुजी वैसे ही जाकर उनके समीप बैठ गये दंडवत प्रणाम कुछ न किया यह देख ब्रह्माजी के चित्तमें अतिक्रोध हुवा और चाहा कि शापदें परन्तु पुत्रकी ममताकर कुछ न कहा चुपहो रहे तथापि भृगुजी जानगये कि यह राजसी वृत्ति में आसक्त हैं ऐसे ब्रह्माजी की परीक्षा ले प्रणाम कर पुनः शिवजी के समीप गये उस समय शिवजी महाराज पार्वती सहित कैलाश पर्वत के अति रमणीय उच्च शिखर पर विराजमान थे सो ब्रह्माजी पुत्र श्री भृगुजी महाराज को आता हुआ देख अति प्रेमसे उठ मिलने को चले जब भृगुजी के समीप हो मिलने को हाथ फैलाए तो भृगुजी उसी समय नीचे को बैठ गए यह देख शिवजी को अत्यंत क्रोध हुआ और भृगुजी के मारने के कारण अपना त्रिशूल ग्रहण किया परन्तु पार्वती जी के बहुत समझाने और प्रार्थना करने पर शांत होकर बैठ गए यह चरित्र देख भृगुजी ने शिवजी को तामसगुण में परिपूरित जान फिर क्षीर समुद्र में श्री विष्णु भगवान के समीप गवन किया उस समय विष्णु महाराज सो रहे थे और लक्ष्मी जी बैठी हुई ध्यान लगाए उनके चरण दाब रही थीं कि उसी अवसर जाय श्री भृगु जी महाराज ने भगवान के हृदय में एक लात ऐसे जोर से मारी कि वे एकाएकी नींद से चौंक उठे पुनः भृगु जी ने कहा अरे अधम तुम्हें किसी के आने जाने का कुछ खबर नहीं प्रभुता में मतवाला हुवा दिन रात पड़ा हुवा सोता रहता है

तब भगवानने नेत्रखोल भृगुजी महाराज को सामने खड़ादेखा तो शीघ्रही उठ हाथजोड़ प्रणामकर सिंहासनपर बैठाय स्तुति प्रार्थना तथा पूजनकर अति नम्रतासे कहने लगे हे महात्मन आप मेरा अपराध क्षमाकरो जो आप सरीखे स्वामी के आनेपर मैं सोतारहा आपकी कुछ सेवा नकर सका और आपकों क्लेश दिया हेप्रभु आपके कोमल चरणमें मेरे कठोरहृदय की अत्यंत चोट लगीहोगी अतःहम आपके चरण दाब भलीप्रकार आपकी सेवा करेंगे हम आपकी शरण हैं आप प्रसन्न होजाइये अहोमुनीश हमारे भाग्य कहां जो आपका चरण हृदय में लगे आज से यह आपके चरणका चिह्न सदाकाल मेरे हृदय मेंही विराजमान रहेगा ऐसे मीठी बातें कह भगवानने भृगुजी को परम संतुष्ट किया यह चरित्र देख श्री लक्ष्मी जी, निरपराधी अपने पतिके निरादर को नसह सकीं और क्रोधकर भृगुजीस बोलीं कि आपने बिना ही अपराध हमारे ऐसे सौम्य पतिका निरादरकर दंडदिया है बस हम आपको अधिक शाप क्यादें आजसे आप क्या हम आपके कुल में भी निवास नकरेंगी अबसे आपकाकुल हमारी सर्वसंपत्तियों से रहितहो अत्यंतही निर्धन और दीन दरिद्री होजायगा अधिक क्या आपका कुल हमारे कोपसे ऐसा दीन होगा कि भोजन के निमित्त भी परसेवा वा पराश्रय में अत्यंत अधमगति को प्राप्त होगा ऐसे लक्ष्मी जी के शाप देनेपर विष्णुमहाराज की कृपाके बलसे भृगुजीने कहा हेदेवी आप सत्य कहती हैं परन्तु हम एक ऐसा शास्त्र रचेंगे कि तुम्हें सदैव उसका आश्रय रहना होगा यहसुन अपने पतिका रुखदेख लक्ष्मीजी चुपरहीं पुनः भृगुजीने भगवानकी अनेक प्रशंसा व प्रार्थना कर ऋषियों के समीप जाय सब वृत्तांतकहा तब सबने विष्णुकीही प्रशंसाकरी इसके पश्चात भृगुजीने यह महाशास्त्र रचा जैसा आगे प्रसंगहै ॥

सूचना—जिसकी पत्री के ग्रह कम मिलें या विध कम मिले तो दूसरी सुगम रीति यह है उसके नाम के अक्षर और इष्ट के घड़ी पल तिथी के घड़ी पल नक्षत्र के घड़ी पल योगके करणके सबके घड़ीपल जोड़कर जो संख्याहो उसमेंसे १२ कमकर बारह घटाकर जो संख्या बचे वही फलित खंडके पत्रके अंककी कथा सुनादो।

सर्वखेटेष्टमानेन नारीबुद्धिमतीमती विद्याविनयवान्साध्वीदाताभोक्तासुकौशला गृहकार्य्यैरतोनित्यंसुखरूपासुलक्षणायथादेहप्रवद्धतः धनसंपत्समृ
द्धिमान्भोगाप्रवैभवोनित्यंजायतेनित्यनूतनम् कामक्रीड़ाविशेषेणरमयन्तिपतिस्सह पितृप्रतिष्ठितंचापिमानकीर्तिमहत्सुखम् चन्द्रजीवपरंप्रीतीकदा
चिच्चिन्तनमहत नानाकार्यप्रबन्धेणराजतेगेहसम्पदा पतिपुत्रसुताद्रव्यसर्वसौख्याधिकारिणी दिव्याम्बरधरोबालाबहुभूषणभूषिता सुखेशोकप्रदा
रेखासम्भवोपूर्वपापतः नानाचिंतातुरोभूयात्मनस्तप्तश्चक्लेशिता धनपुत्रसुभर्तारंनसुखंसुस्थिरोगृहे वियोगकलहोदुक्खविवादंस्वजनैस्सह स्वसंकल्प
विकल्पोपि बहुविघ्नद्युपद्रवाः प्रजावृद्धिनहश्यंतेगुणारातिश्चलोकमा चाल्यमृत्युभयंघोरविभवोनैवसास्वतः पापशांतिः प्रयत्नेनकृत्वासर्वसुखं मेव
सर्वेच्छापूजितंलोके दानमंत्रमहत्फलम ग्रामभूमिधनंप्राप्य: भाग्यवृद्धिदिनेदिने पूर्वजन्ममुपाख्यानंकथयामिसमासतः येनक्लेशाश्रयीनारीदुक्खिता
पापरूपिणी नृपवंशोद्भवापूर्वेबामासौभाग्यरूपिणी दानधर्मरतोनित्य मंत्रज्ञानाभिमानिनी कदाचिद्दैवयोगेणसाधुद्वारेसमागतः यज्ञार्थेयाचितोद्रव्यं
बादाबादभवेत्तदा क्रोधतश्चतदाराज्ञीभृत्येणसाधुताड़िता दुक्खितोशापितस्तेनअग्रजन्मेत्वयाधम: पतिपुत्रात्मद्रव्येणक्लिश्यतिविविधोमहान् त्रिजन्मे
तप्यत्युदरंविव दकलहगृहेएवंहीशापितोसाधुतपार्थविपिनेगता नैवयत्नकृतस्तेनतत्रपापापनुत्तये तेनपापाश्रयोभूयाइहजन्मनिक्लेशिता यावद्यत्नंन
कर्तव्यादुक्खंप्राप्यमुहुर्मुहुः तस्यशांतिः प्रवक्ष्यामिपरंगोप्यमतंहीयत कृत्वासर्वसुखलोकेवामाप्राप्यतिनित्यशः स्वर्णपत्रप्रकर्तव्यावह्निकोणनगांगुलम्
लेखयेद्रक्तगंधेणसाधुचित्रमनोहरा रसनाशापहंबीजंपादयोः शर्मदलिखेतभुजद्वयेप्रबंधश्चकामबीजसुमस्तके हृदयेप्रणवबीजंनाभ्यां श्रीबीजमेवच ताम्र
कुम्भेघृतंगुप्तः द्रव्यंश्रद्धायथाभव: वेष्टितांपीतपट्टेण मूर्तिस्थाप्यंतदोपरिः पूजनंभक्तिभावेणयथाविभवविस्तरै तदग्रेमंत्रमाराध्य इन्दुलक्षसुभक्तितः
मन्त्रऔंऐंहींक्लीं श्रींनमोनारायणायविश्वरूपायसर्वशापपापंशमनायभद्रंकुरु२ स्वाहा श्रींक्लींहींऐंऔं इन्दुवाणसहस्राणिसावित्रीजापितंतदा आचार्या
प्रदातव्यामूर्तिसंकल्पयेततः हवनंविप्रभोज्यश्च शुद्धस्थानेयथाविधिः कृत्वासर्वंसुखंप्राप्य: मानुषीपुण्यरूपिणी पुत्रपौत्रादिजासर्वे सौभाग्यंपरमोदयं
गृहक्लेशविनश्यंति महोत्साहोपिमंगलं दिनेदिनेमहत्तोजोराजतेपुण्यसंपदा पूर्णायुःसुखमेधत्तोमनेच्छाबहुपूजिता एवंपुण्यपरंतत्वंकथयामित्वयाकत्रे

जन्मतः प्रथमेवर्षेशरीरेजायतेसुखम् तातमातमहच्चिंताबालिकाशुचिलक्षणा द्वयाद्धे दशनोव्याधिः तृतीयेबृणपीडनम् किंचिद्दानादिमंत्रणाभगवद्भक्ति
भावतः श्रेयोमानंसुखंनित्यंसर्वकष्टविनाशनम् तृतीयेपंचमाब्देषुषष्टे वर्षादिसप्तमे तातमानप्रतिष्ठाचवद्धे तेनात्रसंशयः भोगाप्रवैभवोवृद्धिबालक्रीड़ा
सुततत्परा भ्रातसौख्यमहोत्साहोमासेवर्षेसुखंगता तृष्णबाधाज्वरोतस रेचनादिप्रपीड्यतिपतनाद्दारुणोकष्ट सर्वशांतिसुयत्नतः नानाकार्यप्रबंधेणराजते
गेहसंपदा संबंधश्चर्चयागेहोतातमातविचिंतनम् नन्दाब्देदिशिवे च द्वादशाब्दंक्रमादितः गृहकार्येसुकुशला बादहास्यमनोहरा पितुप्राप्तिमहल्लाभं
मातृप्रेमविवर्द्धनम् उद्वाहंजायतेचास्यप्रकाशोविपिणीभवः कीर्तिश्चनिर्मलीभुतातातमातप्रशंसिता वह्निसोमान्तरेकाब्देष्टेचन्द्राद्धकेतथा भोगाप्रवै
भवोबृद्धियुग्मगेहप्रकाशिणी सर्वसौख्योद्भवोनित्यंदानमंत्रमहत्फलम् रूपयौवनसंपन्नावस्त्राभर्णैसुशोभिता पतिप्रेमविवर्द्धतिभाग्यमेनविवर्द्धनम् यद्रोगं
स्त्री० जायतेकष्ट सर्वशांतिसुयत्नतः ऊनविंशाब्दविंशेच नेत्रविंशतिकेतथा पतिलाभविशेषेण सुखेच्छाबहुपूजिता गर्भबाधामहत्कष्टं सुतजन्मसुमंगलम्
१ हर्षवृद्धिमहोत्साहोमानकीर्तिश्च निर्मला पापशांतिः सुपुण्येण प्रकाशोविपणीभवः प्रजावृद्धिभवेन्नित्यमनेच्छापूजितंसदा रामपक्षमितेवर्षेऋतुनेत्राद्ध
मध्यगे पुत्रकन्यासमाविष्टामोदितापतिभिस्सह मंगलंविविधोत्साहोमहत्वश्चपदेपदे जायतेदारुणोकष्ट कुलस्त्रीचविवादिता सर्वशांतिसुपुण्येणदानमंत्र
महत्फलम् मुनिविंशतिवर्षाणिवेदरामावधिक्रमात् मासेवर्षेमहोत्साहोबहुद्रव्यसमागमः सर्वचिंताविनश्यंतिविवाहादिमहोत्सवम् दंपतिसुखमेधत्तेप्रताप
गुणगौरवं कीर्तिश्चनिर्मलीभूता स्वकुलेसुप्रशंसिता शरवह्निमितेब्देतु चत्वारिंशावधिक्रमातपूर्वयत्नादितः पुण्यंसौभाग्यंपरमोदयम् पतिसेवानुरक्तश्च
गृहकार्येसुकौशला सुशोभितागृहंतेनमाननीयकुलांगना मगलंविविधोत्साहोजायतेनित्यनूतनम् त्वयत्नेक्लिश्यतिबामापतिपुत्रात्मजाधनं चन्द्रचत्वा
रिवर्षेचव्योमबाणक्रमादितः पुण्येच्छापूजितासर्वे देवतीर्थाटनंसुखम् पौत्रजन्ममहोत्साहोकुलवृद्धिदिनेदिने नानाकार्यप्रबंधेणराजितागेहभूषणा शशि
षंचगतेवर्षेव्योमषष्टांतरावधिः सर्वेच्छापूजितेलोकेनिर्बलाचप्रपीड्यति व्रतदानरतोनित्यंसाफल्यंमानुषीतनं मंगलंविविधोगेहेपूर्वयत्नादितः सदा इन्दु
षष्टाब्दमारभ्ययावन्नेत्रनगाब्दके सर्वपुण्यंफलंभुक्त्वाआयुपूर्णोपिजायते अश्विनेपूर्वपक्षेसप्तम्यांनिधनोनिशिः पुनर्नृपकुलोत्पन्नाजाह्नवीपश्चिमेतटे

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैकत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्कृथयुक्त सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यग्निनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेव्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलेवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्चजायतेनात्रसंशय गुडगोधृप्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेव्देमुखंसर्वयाकिन्मासेचसप्तमेप्राप्तेतू
अष्टमेमासेपुनःपीडापीडा हरितकीसलवणाञ्च नश्यतिउदरेरुजु तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाव्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलञ्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवद्ध
तिचदिनेदिने पितुदेह भवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित् तेनसौख्यसमृद्धि स्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाद्धके कष्टञ्चजायतेदेहोदाघदानेननश्यति योगञ्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्यविशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखंचैवहर्षयंतिदिनेदिने ब्रक्षाच्चतनंज्ञेयंअथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यते भयदारुणं
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जीवोमहाप्रीतीग्राशक्तञ्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
क्लेशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तं नविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाव्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभञ्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलमश्चश्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोअल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्चनूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिबामभागेबृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राब्दमारभ्यनेत्रारामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेवापिभूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्ण दानबृथाचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोप्रपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रे धनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलानिवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दफलेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीव की चिंता रहे और बड़े २ लाभके उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावेकभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में वृन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत हो गया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुख का भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

भृ० स

फलित

२

फलदीर्घग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत् मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सग्रकस्माच्च
उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात् महच्छोचश्चजायते साहसीदृढसंकल्पग्रन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसंगविनिमुंख चौरभीति
भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मङ्गलग्रहमध्यश्चनृत्यगीतादिकं भवेत् पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासं.श्च
मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमङ्गलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यधृ. सुखं
देहंद्विजानामर्चनंसदा: विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरणयरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशय: बहु
प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनर: यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबद्धिख्यातिलोकेस्मि. शांतो
मधुरभाषिण: कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत्सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणक्लेशितां प्रायश्चित्तकनेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं .पा.कूप
तड़ागेशुआरामेमोदसंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगेणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे
सप्तमेब्देषुसंबंधयोगसमुद्भव: विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसप्राप्त पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं
नवमेब्देजलोद्भीती दशमेकष्टसंभव: द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भव: पिताचिंतातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्यय: प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं
प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा किंकरोमिकुत: सुखम् चतुपञ्चदशेब्देषुकांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका
भर्णांप्राप्यतेनविनत्यश: षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविंशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम्
नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांष्टविंशेचकन्यापत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखव. िनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित
वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल
गानञ्चनवनारिसमागम: अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधि: विप्रान्तोष्यतंविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिशेद्वित्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शाँतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्वसंजाते नगराम्रवाधिंतत यंत्रमन्त्ररतोजातंलिंखाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणांरुष्टतांव्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नागा त्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् गृहहाटधनंसर्वंविलगञ्चप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेनानाक्लेशसमुद्भवः परन्तुधनलाभश्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युं जयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत् सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यतेमंत्र यंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाण मितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था धनीनरः शरपञ्च मितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम्सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनंदमंगलं लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेत्रर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात् भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्य की बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वाला हो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्य मार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों की संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जाप से विशेष सुख की वृद्धि हो पुत्र की इच्छा पूर्ण हो एक अल्प से अधिक भय हो पाप ग्रहों का पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा जिससे वह मरगई और यह पाप का भागी हुवा तिस पाप को शान्ति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदन से लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्र सहित संकल्प करे श्रेष्ठ ब्राह्मण को दे गोपाल मंत्र का जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन सन्तान का सुख देखे अल्प नष्ट हो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आयु वाला हो मनेच्छा फल की सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मश्चानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी
चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यः कामिनिप्रिय
कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्वचित भोगमैश्वर्य युक्तश्च
कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिश्चहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत् कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्ठुरोकटुभाषिणः
साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुह्यरोग प्रपीड्य तेनचिरं विद्यतेसुखम् शुभगृहापिदृष्टव्याक्षत्रहानि
करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात

व्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापद्दुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचरणसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते

सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रोप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसं

चिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च
गंधपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टविशूचीचाद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे
विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंच वर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश
मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुर्किंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजा
यते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयातकिंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे
कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भीतिसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिंशेब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यञ्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभवाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े बड़े आनन्द भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटुम्ब का पालन करे श्रेष्ठ संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राण से अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारीआवें जीवका भय हो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्त हो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत हो जाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हेपुत्र पहिले जनम में ये जीव बड़ा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्था तक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अन्त को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यन्त पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनन्द भोगे

भृ० स
फलित
७

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वितं प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरंश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणसंपन्नोमारेदवेषसुखंगता सवलंदर्पदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वेहेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजाततंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभृत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुभक्त भूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचक्लेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेव्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्टमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंतेविस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्त देव्यायापूजनंरतः ग्रहभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सूयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाद्बसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राद्बमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्टोपिबद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानबृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोह्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वा दाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तं चैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविह्वलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मणा

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्वसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिंक्रमात द्रव्यलाभ विशेषेणपद्दीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिर्ख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागतः शरीरोपीड़ितंगुक्ष आजीर्णनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत् सर्वबाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणाम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्वगेकाव्यतथाऽनभवे दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परश्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवन सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाक्वे अतिलाभमहत्सौ ख्यंप्राप्नुर्यंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनीतस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांनेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्वमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ।। हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परन्तु पूर्व पाप के कारण जीवकी चिंता विशेष बनी रहे जिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल वंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परन्तु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊ को अत्यन्त कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पाप से इस जन्ममें चिंता अधिक रहे घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहे लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न हो तो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पाप की शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटुम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहे हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय सन्ध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वे प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्य वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयार्किचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम् बद्धिमान्पंडितः शूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्ना प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वे प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्ववस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनमम्म् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मचक्लेशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा जय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददद्देहीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रवम् चित्त चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्याविचारणम् अल्पञ्चप्रथमावस्था मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रश्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगन्प्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच बृणज्वरप्रपीडिता पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमेद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति दशमकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्ययाभूयसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

मृ० स०

फलित

६

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेपञ्चचंद्राद्ब्केतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टचतुःचन्द्रषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्ट विंशाद्बकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुवि: सप्तचंद्रतथा विंशत्रिविंशषष्टविंशति त्रिंशचत्वारित्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरेशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्राविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेण सन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विंशेषोभाग्यवर्द्धनम चन्द्रविंशामितेवर्षे सर्पाद्भयस[illegible] वाहनादिमह त्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्ययशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्नायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुवारेणसंयुतः रोहिण्यामेसमायुक्त पूर्णा मायुःभवेत्ततः ॥ भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्य वाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्या बुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्रीवंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुये तिसी से ये जीव महापाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधि से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महामन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से रत्न वर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि
विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभवः
द्रव्यलाभविजानीयात् बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्धोदरव्याधीचतुर्थेव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे
रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत् चक्षुरोगविजानीयातकिंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो
पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य
विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनकष्टनविद्यते सप्तमातचाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च
तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगञ्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाचेत्रलाभञ्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशवर्षेद्वादशे
चत्रियोदश विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यकुरुतेग्रह दीर्घचिंता
स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्वकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच
मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते
नात्रसंशय नववस्त्रमहर्षंच धीर्यंत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च
आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय
भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिवांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षाद्विधिक्रम
धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेच याचमानादिनृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलजायते
पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

भृ०स०

फलित

११

तथावेदत्रियाढ्यके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणं क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचिंतायदाकदा गोधूमगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्वबाधाविनाशनं शरत्त्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंसप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येशः आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत् मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाढ्यसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यहहै कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुःख हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनन्द हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे । हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यन्त युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चितमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इस पाप का यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचन्दन से उसपर साधु मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतय
नेत्रवर्षेतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्वयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवि
तव्यंनभूयसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबुद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागगोनित्यं मध्यसौख्योह्य
माप्नुयात् अङ्न्तारोहदेगुप्तं लाभमोहेनसाड़ेता सून्यपञ्चावधिवत्स सर्वत्राशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वेदीर्घभागोचबालकः विद्याबुद्धिगुण
द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन
सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यमहद्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमनः सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ
भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मातमहदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि
लभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशषेण मंगलोऽहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफल
प्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टित गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं
सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासीश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता
द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पाप
कर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा
वेदवाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महा
दानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा
सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा
वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोक्तृतेदीर्घ चित्त
आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभूतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते
एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुरायोदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासक्तृतेदानं
ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भृ० स०
फलित
१४

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहे कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्यु जय का जाप वेद की विधि से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यो में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेदपाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुर्द्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

भृ० स०

फलित

१५

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रिस्थित्वाभाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता काम
पीड़ाविशेषेणअकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखमर्जित आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्भयसमन्वित दुष्टकर्मेणनपीड्यंतेपूर्वपापेचदुःखिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दाचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितृद्रव्यविनाशीचमुयत्नेनविंदति धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदार्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात् नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रातरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामबाधाप्रपीडत मित्राणांचश्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविह्वलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्ट्युग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ॐऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाद्धरुनया तारकाजगनेसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभंगुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तमे
कार्यजायनेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंक्वापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोग्रजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात् रामपंचाद्वमारभ्य सूर्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञातादीर्घ कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टयः विवाहादिमहोत्साहो व्ययदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपञ्च अन्येचस्वल्पजीवनं रामषष्टगतेवर्षेस्त्रासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणंशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचउष्णातोये नित्यश षष्टमासाद्वयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रह्मभागीभवेल्लोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयमृयतेसापितदाते चमहोत्सवं षटोषष्टाद्वमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवग्राशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्य रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वंकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेतनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रे सुकुले जन्मनात्रकार्यविचार्णं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतयेशुकोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तुं महसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वह बड़ा भाग वाला हो दासदासी और सवारियों के सुख पावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुख पावे क्यों कि इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बन गया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अन्त में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय ये जीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुआ था बहुतसा पुण्यदान किया परन्तु एक समय बहुत सी मदरा का पान कर उन्मत्त हो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वश हो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोध कर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यान को बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादि का नाश करे क्लेश का अधिकारी हो हे शुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुख का नाश हो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस माशे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्र में स्थापित कर वेदकी विधिसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मण को दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्ण हो।

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे
द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे
आनन्दंवद्ध तेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणारोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूमप्रदातव्यघृतञ्च
लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घंतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशद्वाविधिक्रमात् सर्वसौख्या
गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः
क्वचित् भयभीतीहृदेगुप्तंचितयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्वकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयात्नारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती
आशक्तञ्चविशेषता कामवेगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापकृद्ग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मयावा
क्यश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवसुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम्
चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्ध तंदुक्ख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभ
कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधी विनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्व्याद्व
मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोकवे क्रमणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन
पत्नीगर्भंभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकृतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीचदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्वं
पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज
कृत्यधनंलब्धामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टमवैद्यो
पायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानमजलधेनुचकारयेत् गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्द्विज हवनंब्राह्मणं

भोज्यंततःसौख्योद्यमाप्नुयात् मासेवर्षेसुखंज तंग्रल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्मग्रन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घकार्यवृद्धिविशे षतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्या णिवेष्टितम् दासदासी समायुक्तसेव्यतेचाप्सरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंग्रारामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंसर्वे प्राप्यतेनात्रसंशयः किं चिच्छोकसमायुक्तं भ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचना मन्द्रसुन्दरः ग्रारामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ता विनश्यंतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादि कंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंग्रायुपूर्णानसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुख पावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण ग्रति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता होता रुकजाय खर्च ग्रधिक करे लाभ होता होता रह जाय पुत्र के सुखमें विघ्न हो ग्रौर कभी कभी विशेष क्लेश ग्रौर कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में ग्रति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते करटे उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु ग्रपना द्रव्य लेने ग्राया तब इसने लोभ वश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला ग्ररे दुष्ट हम साधुग्रों का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा ग्रौर तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हे शुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुग्रा इसका यह उपाय है कि पांच तोले स्वर्ण की गौरीशंकर को प्रतिमा बनाय शास्त्र को विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेमसे चरण छुवे ग्राशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम ग्रानन्द पावे ग्रौर शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादेद्यु तेमतिलौलकृपणश्चऋणीभवेत् साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयश्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंलभ्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्टतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चिंतातुरोयातोलोकेनिंदामवाप्नुयात् लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षणा वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यश्चजायते शुभकांतिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेअह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभवच्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तंशोचवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुकष्टजम् केलिक्रीडाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्येरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्रार्चनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसंयुक्तआशक्तश्चापिविव्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायाप्रपीडयन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीडाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतयेरामाब्देपञ्चवर्षाणिव्रणपीडाचदारुणम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानञ्चकारयेत् आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेदसप्तमेवर्षे

भृ०स०

फलित

१६

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रश्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत् कष्टोजायतेप्राणां मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षे राजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्रयोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वंमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्य मात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मेणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिश्चु वंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायतेद्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवधिकाव्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहे सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मन्त्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े बड़े खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहे प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जन्म में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मन्त्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वंग्रहाप्रोक्ताग्रग्रे फलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिक्यशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्तोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचग्रंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यव्हारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थे मोदतेभुवि कवित्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णातृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंविंकरे
धूर्तेनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहूपूजा चकारयेत् घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात् सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रव्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रे चविंशाद्ध वेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषट्त्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
वृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंध्जापूज्यंधनार्थलभ्यतेधन प्रथमेद्धितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्ध वन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्टमे
वर्षेवृणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच ग्रलविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमकादशेद्धे षुमंगलं महमराडले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितेवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसंप्राप्यबाणामेकंतथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउररोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्धे चविशूचिरोगसंभवम्

मृ०स०

फलित

२१

पुण्यदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगसंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षतथैवच मोदतेकांतया
युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे
नेत्ररोगश्चपीडन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणो षष्ठाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके आनन्दमंगलाचार किंचि
त्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणातले कदाचित्स
मयेकाव्यशस्त्रेणयातमाप्नते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षष्टत्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिंध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानश्चवद्धते
पूर्वयात्राभवेत्पश्चातधर्मयागेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशांतपुण्येननानासौख्यमंगलम् चन्द्रचत्वारिवर्षाणि
सून्यपञ्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणवातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाण
गतेवर्षेसून्यसप्ताद्धप्राप्तये मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसंतानयानञ्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्व
लक्षणसंपन्नवातपीड़ाविशेषतः खनवबर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् ॥ भाषा ॥ इस अङ्क की कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े
हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीन हो
बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्त हो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला
पुरुषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से
प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीन मन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की
उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुख भोगे हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपति राजा की
तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परन्तु कामवश होकर फिर वैश्या गामी हो गया और जप दानादिक क्रिया
सब लोप कर दी और दीन साधु ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ काल में पुनः मन संगति से ज्ञान उदय हुआ तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में
प्रवर्त हुआ तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्ग में लगा रहने से पाप का फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूनश्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च बृणाबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तश्चनंतिष्ठतिगृहे चित्तविच्छेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यः कामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्मा्श्चयोयदा दानमंत्रेणपुण्येन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रे वीक्षमृतेपत्नी पुनर्लब्धी नसंशय अति
मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
त्वतां साधवानांखलानांचसुखार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्नमनोरथा कुचेष्टासंततिजातप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपाल्यत
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशक्तः मध्यमायुस्तादेशे ोविदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षेचपंचमे षष्टमेसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राद्धकंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतंद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत् आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत् दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

भृ० स०
फलित
२४

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रञ्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभञ्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत् गुप्तशत्रुविरोधञ्च प्रत्यक्षंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभञ्चकस्माद्धनमागम चित्तोद्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तञ्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धं चसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकणिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचादिनेदिनेनवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुस्वरूपंचलुब्धके षष्टवह्निगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वद्धंतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्यगायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणांभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाण्येव सिद्धतोनश्रमक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वेपौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंवञ्चदानंचशांतये नंद पष्टमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्र के ग्रह कुछ विशेष वलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी कभी घर में पीड़ा करलावे भ्राता का सुख हो या प्रेमी मित्र हो खर्च विशेष हो कृपणता न हो सके एक जीव की चिंता बनी रहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्या बुद्धि विशेष बढ़े पुत्रों का सुख मिले हीन ग्रहके योग से काम अधूरा होता होता रह जाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्न हो अति परिश्रम करने पर भी मनोर्थ पूर्ण न हो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवा करे विशेष कार्य का अधिकारी हो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभ हो कभी विशेष हो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबू से बाहर हो प्राणों का भय जान पड़े अधिक दानमंत्र उपाय करने से अवस्था दीर्घ हो विशेष सुख भोगे पहले जन्म में ये जीव स्वर्णकार था स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छल करे अन्याय से अधिक द्रव्य लिया तिससे पाप का भागी इस जन्म में पीड़ित हुवा अति चिंतातुर रहे इस पाप की शांति के निमित्त चांदी के पात्र में स्वेत चावल भरकर उस में गुप्त स्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मण को दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवाये तो पाप शांति हो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहा चेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिःग्रहद्वफलदंश्रेष्ठमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप
ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीमुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोकाव्यबुद्धिनसुस्थि
रंभव उद्योगकुरुतेदीर्घलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रीतिकृत्वाकृतेवातम् सर्वदाह्नि चिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं
असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचिंत्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुह
लीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमेसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्यौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचा
रणम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोपिविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदतोमति जीवध्याभंचसंमरन यौवनरूपचितन श्रेष्टकर्मप्रसि
चापिपरकार्यचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसि
द्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मवेदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेसुसजातं भाग्योदय
विशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षेच दन्तपीड्यज्वरादिकं व्रणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे
उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय
विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंतादारुणम् अनुष्ठानमहादानं
महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषाद्वचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम्
द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि
नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्र
गतेकाव्य त्रिशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भसमायुक्ता मोदतेसुतोद्भव तातमातमह नंदं [illegible] वन

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नतः प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षा वधिंवत्सगुह्यरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घअजीर्णंनष्यतिक्षुधा लवणाश्चहरितिक्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वगृहसुप्रतिष्टित शत्रुपक्षविवादंचकार्य भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोह्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलानयेवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रश्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलसंप्राप्यचित्त आशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिंवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगति कर्मभेदेनभोप्राप्तसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीव की चिंता मिटे परन्तु इस जीव की बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुँचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बात पर क्रोध आ जावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्ब का पालन करे पराया काम मन से करे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाया करे काम की उन्मत्तता में मग्न हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पाप का भागी हुआ सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंकूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य
सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ
जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थंविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा
चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वे दुष्टकर्मेणविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता
हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंग्रकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घंसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि
विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान
नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः
पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुसुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनैं उद्यमेनधनंप्राप्य
धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः
धर्मवार्तासदावृत्तिसञ्ञतिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यबुद्धिविजानीयात्
भृगुवाक्यनसंशय पांडितंसंगतिप्राप्यशीलबृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धंति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ
द्वेषष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव
निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच
महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी
समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्यविंसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

चापिनिश्चितं सुमार्गेधनहानिचपितुर्गचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपुंसः सर्वसंग्रहतत्परः स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ
कलाभिज्ञोनृपश्रयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरंनिर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससप्रीतिःपितृभक्तसुतर्पित तुरगात्मन
ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोऽहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं
देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय
चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते
भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा
चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगश्चोनित्यंभूमिग्रन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपच
रोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चाब्धिवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्ण
भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्ट हो बड़े २ कारबार रोजगार करे परन्तु न्यून फल कारक ग्रहों का दान
मन्त्र उपाय करने से पुत्रों का सुख और विशेष धन का लाभ हो किसी समय कुटुम्ब से विरोध हो धन खर्च में आये शत्रु नुकसान पहुँचावे एक समय
थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यम हो परन्तु चतुर विशेष हो बड़े २ आदमी इज्जत करें प्रतिष्टा पावे ईश्वर का चिंतवन करे अनर्थ की बात
पर ध्यान करे श्रेष्ट संमति दे बुरे काम से बचे श्रेष्ट मित्र में चित्त रहे खरचीला हो पोचबात न कहे चित्त में गुप्त चिंता रहे इज्जत का विशेष ख्याल हो
खर्च विशेष रहे एक समय प्राणों का भय हो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहों के प्रभावसे प्राणों की रक्षाहो सारी अवस्था इज्जत के साथ आनन्द में बीत जाय
दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मो से सुख पावे हे शुक पूर्व जन्म में ये जीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक
मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर को भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आ गया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर
गया तिसी से विशेष पाप का भागी हुवा सो इस की शांति के निमित्त काशी के थाल में चावल भर कर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी
उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढककर ब्राह्मण को भोजनादि से तृप्तकरे श्रद्धा भक्तिसे दान दे तो पाप नष्ट हो परम आनन्द पावे निश्चय सुखी रहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः बृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले स्ववंशप्रकाश्यंति स्वकुलंदीपकंतथा बहु
कीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्चचलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख
वर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिंचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशंसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्रंरक्षक्रोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच
पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणाभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा
भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्सअनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिकप्रकोपीचकामाधि
क्यवलान्वितः सुशीलश्चचलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्ठुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धन
युतःपुंसःमीननादपरंप्रियव्रणापीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत्
क्रूरपापग्रहापीड्यंनानावलेशसमन्वित रूपनीतिसम...प्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स...वीर्यंभवेदेहोलोकेनिंदा
कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रंच मुक्तालाभेनसंशयः शूरोथवाग्रामे
पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरश्चतुरोनरः अविद्याजायते
क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण व्रणरोगश्चक्लेशिता पितुचिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम्
ग्रामाद्धनप्रलाभश्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशमंजातोशत्रुपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वेग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन
सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्यु
भीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुचिंतासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्वृद्धिदिनेदिने शुभकार्य
धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवावयनसंशयः लघुकालेसुकंठञ्चसंध्यासर्वंभविष्यति अष्टमाद्वादशब्देषुपितुर्लाभनसंशय

बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ
शुभकार्यव्ययोचापि यथालाभेतथाव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापञ्चपीड़िता दीर्घभागी
प्रत्यक्षंनैवकथ्यते मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षेमोदवृद्धिश्चनूतनं भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकुलयलभेद्धनम्
चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिंवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने षष्टविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा
पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रयत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् लक्षमेकंप्रमाणाञ्च सर्वकष्ट
अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः संतानार्थेष्टदेवस्य
निवारयेत् तदान्ते यद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्क्रयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी पौत्रजन्म
पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा परलोके
नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं
फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्री के ग्रहों का बड़ा भारी फल है
पृथ्वी पर आनन्द भोगेगा और कुल में दीपक के समान चांदना करे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भले में रहे एक जीव में चित्त विशेष फंसा रहे
नई नई बातों का चितवन करे है हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतु का पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति
पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थान के ईश की पूजन दान वंश की वृद्धि को अत्यन्त श्रेष्ट है गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा
अन्यकर्ता परोपकारी होने से सब सुख पाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्ट पावे प्राणों का विशेष भय हो परन्तु पुण्य कर्मो के प्रभाव से पूर्ण
आयु हो कहीं अकस्मात धन की प्राप्ती हो भूमि लाभ हो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भला चाहे मन की विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से
पूर्ण होगी हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवान था बद्रीनारायण के दर्शन को जाता था सोते समय मार्ग में धन वस्त्र आदि चोर हर कर
ले गये प्रातः काल उठ कर चोर के भ्रम से एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण
पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणों को मनेच्छा भोजनादि से तृप्त करे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादि से तृप्त करे तो सर्व पापशांति हो सम्पूर्ण इच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणाग्रकस्मात्
भयमागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिग्रंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणाचन्द्रग्रल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणानूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुश्चततोलोके उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीर्घमुपस्थित्वा पुरुषश्रीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यधनव्यय
सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाग्रन्यस्त्रीप्रीतय स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्मोद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि
सुजनचापिग्रादरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य ग्रंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यग्राशामन
स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्लानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंसित
श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्ययदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चग्रंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाग्रश्वंलाभदाभवेत् सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणावातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतनीयोविशेषतः जन्मतःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टवाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयत्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे
सुखंजातंमातृकष्टविशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारण मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल वातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्बलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राब्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

भृ० स०
फलित
२१

मद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यंसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वंसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुतापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतञ्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनक्वापि कार्यासिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंआनंदंजायतेध्रुवं सप्तवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायते विवाहोमंगलंकार्यंआनन्दञ्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घंभवेनूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धंतेयथालाभतथाऽव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणांशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वे जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोल्हानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्वमारभ्य...जन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति म ननीय हो स्त्री पुत्रादि का चिंतवन करे अपने कुटम्ब का पालन करे सारी अवस्था में दो बार विशेष कष्ट हो एक भारी अल्प आवे नया जन्म माने फिर दीर्घायु हो धन प्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्च के काम आवें पूर्ण हो चिंता विशेष रहे सप्तमेश का पूजन दानादि करने से स्त्री सुख पूर्ण हो काम संकल्प सिद्ध हो बड़े २ आदमी खातर करें जीव की लालसा बनी रहे अन्त में पूर्ण हो एक कार्य में हानि विशेष हो दान पुण्य करने से तथा ईश्वर का भजन करने से पूर्ण सुख मिले हे शुक्र पहिले जन्म में ये जीव कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अति प्रतिष्ठित ओहदा पाया देवताओं का पूजन तथा दान धर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बन गया मृग के तीर मारा वह बच गया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदय में लगा और मर गया तिसी पाप से अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांति के निमित्त स्वर्ण का पत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्ति का आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृत भर तांबे के कलश में गुप्त रख कर विधि पूर्वक दान कर ब्राह्मण को दे और वस्त्र आभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे और विशेष भक्ति से ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्व सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान्
सत्यमानश्रीमानउपकारीविचक्षणा मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृ.पूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणाग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानश्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणांभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतश्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाषंतिनात्र
कार्यविचारणां पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरापाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितप्तश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षद्वितीयेव्देज्वरबाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिश्चहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वेभयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवेपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोत्तरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेतरुपत्नरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेव्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकर चंद्रजीवपरंभीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत शशिविंशाद्वमारभ्यषष्टविंशति

मृ० स०
फलित
३२

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्ति श्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकी र्तिश्चचित्तमोदमपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणां औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्ट त्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीता दिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोमहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चने नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़े पुत्रों के जोड़ों का ध्यान रहे कन्या भी हो वंशकी वृद्धिहो धनवान लक्ष्मीवान् परोप कारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबसी बुरा न माने बड़ा प्रतिष्ठित नामी हो कई वर्ष विशेष धन की प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्य की न्यूनता करने वाले आवें पुत्रों की चिंता रहे संतान गोपाल का मन्त्र वंश की वृद्धि को श्रेष्ट है लाभ स्थान के ईश की पूजा दान जाप से विशेष लाभ हो और पृथ्वी पर बड़े बड़े कौतुक देखे चिंता और भी हो अपने समझे वअपने कहे तथा समति के न हों घरमें कभी पीड़ा हो जाया करे एक अल्पभारी आवे प्राणोंका भय रहे आयु पूर्ण हो कैसा ही भारी खर्च हो कार्य हो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्ण होवे है शुक्रपूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मवंश में उत्पन्न हुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुर था राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्त हो गई तिसे संग लेकर प्रदेश को भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसी से पाप का भागी हुवा स्वर्ण के पत्र पर स्त्री की मूर्ति रक्तचन्दन से लिखकर बहुतसा धन तथा अन्न में गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दानकरके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनन्द पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य
नूतनमागमः दीर्घकृत्योवृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य
ग्रास. विचारोपिग्रकस्माल्लाभजायत पापकूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति
वर्द्धनं चंद्रशोकस्थितोत चितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यग्रकस्मात्पातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मग्रल्प
विशेषेणशरीरेकष्टदारुण ग्रचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत ग्रंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न
वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त
कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिव्छत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो
द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीग[illegible]संजाता भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत
महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषपीड्यंतेग्रभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारश्चयशंभूरिम[illegible]तले पितुश्चमर्णंज्ञेयविपाकेवीर्यं
नाशनं दर्शनेग्ररिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीयसि तथापिसौख्य
संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तमेवर्षेव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं
ग्रष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रह नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानंमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं
द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित ग्रंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं
ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेवुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भृ॰ स॰
फलित
२५

भार्यास्वल्पसुखंभवेत् तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत् कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोऽपिजायते भाग्यवृद्धि भवेन्नूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंशे मंदसौख्योऽपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्धे तन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने अहर्हर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयश्रेयंसुलक्षण सासर्वसौख्यसंपन्नोमान्यथाभूयस्तेतुमा चंद्रागतेवर्षेतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थिते जातिमध्येसुकीर्तिच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनश्यति मत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षातं नृपात्माभवद्भवेत् राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दंमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यबाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्रमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञ अकस्मात्मरणंध्रवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परम श्रेयस्कर है विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रों की प्राप्तिहो सुख मिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहे गुप्तचिंता बनी रहे धनका लाभ विशेष हो परन्तु खर्च बड़े २ लगे रहैं आनन्द भोगे बहुत से कार्य पूर्ण हों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मत वाला हो सूर प्रतापी काम की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाय नीच कार्य बन जाय कहीं से आशा लगी रहै अकस्मात इच्छा पूर्ण हो जाय पाप क्रूर ग्रहों की शांति से विशेष सुख मिले एक शोक विशेष माने जल भय हो या पावकसे जले चौपाये या उच्च स्थान से गिरकर चोट लगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

मृ० स०
फलित
३७

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत्
चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यंभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्त शत्रुर्मित्र
वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति बृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीच दुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामोशक्तोपि
गुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वंअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घ पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः
सभायाञ्चपलोधीमान गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्ठभ्रातुप्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाञ्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणाम् चतुष्पदात्तथारात्रौ
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आसिहेतुर्भविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभव नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेद्बे च
पितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेद्बे चसंप्राप्त चतुर्थेपञ्चमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्य वृणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पञ्चमात्षष्टभवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगञ्चक्रीड़िता
सुविद्यांपाठनोबालचञ्चलत्वञ्चविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यञ्चकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबंधयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक सूर्यचन्द्रगतेवर्षेपञ्चचंद्राद्बकंतथा विद्याबुद्धिविशषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेचधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंकनः श्रेष्ठहीनदशाभोगंअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनमहा
अभावेणगुप्तचिंतावलीयसीद्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायमानम् पुनःदीर्घधनंलब्धवाकार्यंचिंतावलीयसी हीनकार्यंभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम्
सुयत्नेजायतेपूर्वंधनपुत्रसुखान्वित आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य
धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत् दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधि
काव्य नूतनंलाभसंभव पुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम्
सूर्यपञ्चावधिकाव्यचिंतनंचापिदीर्घता चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत
पौत्रञ्चमोदिता षष्टपञ्चगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणां औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिमुंख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गोदानं
श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणांजपेत् अल्पायुनश्यतेवत्सदामंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणां
सून्यसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्र में ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वाला हो मध्यम
और श्रेष्ठ दोनों दशा भोगे किसी समय कहीं से धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहों के प्रभाव से चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान
रहे लाभ की सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक कामहीन बनजावे सो पीछे मन में बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों
स्त्री की चिंता का ध्यान तथा जीव की लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धन संतान का सुख विशेष भोगे कुल की रक्षा को संतानगोपाल का
जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ठ बन जाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी
और हिम्मत वाला हो बड़े २ दुख सुख भोगे परन्तु चित्त को दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी २ भ्रम सा हो जाया करे नई नई वार्ता
भोगे नाकिस ग्रहों का दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करने से आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था
हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बस्त्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का
विशेष अन्न खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्त दानदे गायत्री मन्त्र का जाप्य करावे ब्राह्मणों को संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् भ्रमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणसुखावहं दुष्टकर्मंकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत् परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यवृतिधैर्यंचउद्यमेवहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचित्त
चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीड़ागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचिंतनं पश्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्तवाकदाचनं लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभश्चचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपीड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपश्चमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविन्हल
दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत् सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणव्रतंजायतेध्रवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविन्हलः नगमेकाद्धमारभ्य
विंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलश्चगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मृ० स०
फलित
३९

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवह्निगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्यो दयप्रहृतरूललं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाद्बमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्ति ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागबाणाद्बमारभ्यवह्निषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तदरोकाव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगणयतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रों में लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहे धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोसी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्त में समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घर में पितृपीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करने से वंश की बृद्धि हो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईश के पूजन से विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्ण हो हीन दशा में हानि भी हो परन्तु अन्त में सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदी में नाव चलाने वाला प्रधान था नवका के कृत्य से बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक सेठ श्री अयोध्या जी की यात्रा को आया सो बहुत धन नवका में भूलकर चला गया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्यकार्य में लगने वाला धन अपने घरमें धरा तिससे पाप का भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवों में गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धि हो सब प्रकार के आनंद प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धं सुखीनरः धनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्ठविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्त्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यवहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपूर्णानसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवह्निवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानञ्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसूून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोवालव्रणपीड़ाविशषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घं
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलञ्चकुलोत्सवं
नरनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत् आशक्तञ्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभञ्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रञ्चमोदिता मानसीविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकीर्तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्धगेकाब्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिमुंख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातो धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडीपाठश्चकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काब्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययश्चचापितोद्रशीः जातिम॰सुकीर्तिचवृहद्भाग्योभूवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपञ्चावधिक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगवो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदश्चगतोकाल कष्टपीडाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षे सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकर्मेतिनूतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूनौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्धमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यकिंवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्धमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं बिलम्ब से फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्ठा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहैं श्रेष्ठकुल विद्यावान अक्ल तेज दूसरे की बात को तोले सत्या सत्य को पिछाने एक जीव की आशा लगी रहा करे और जीवों के खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहों के दान मन्त्र जाप करने से मनोकामना पूर्ण हो भाग्य और वंशकी वृद्धि हो ये जीव तरह २ के दुख सुख देख गायत्री का जाप्य कराने से घर की पितृपीड़ा शांतिहो कितने ही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरुष हो हीन दशा में विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ठ दशा में अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्यारा है एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरुषार्थ से पूर्ण हो है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्र का पालन किया हुआ था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित्त गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः श्रद्धा चेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिरीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धं प्रतिष्टितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत् निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमंत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टित कुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत् उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाक्रांति प्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडषाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायोगभयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजाजते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तःकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्टामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशामितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षे वामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुहर्दि ता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रश्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यञ्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा वधिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्टिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वजातितोषयेत् प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतर्महाकष्टंग्रकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं भवेत्सौख्यंग्रग्रेयंकथ्यतेमया ग्रन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत् सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं उों नमोग्रकाल पुरुषाय महाशक्तिधराय ग्रकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणैवजपित्वा सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंश्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सग्रापत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित ग्राज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच महोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणाम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि विशेष हो ग्रौर ग्रनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी शील स्वभाव वाला हो विद्या से बुद्धि विशेष हो कई बार धन इकट्ठा करे फिर खर्च हो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसा में रहे है उपाय दान मंत्र से मनोकामना पूर्ण होगी ग्रौर कहीं से धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे ग्रापत्तीकाल ग्राये नया जन्म होवे फिर कार बार में विशेष लाभ हो ग्रनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिकर मानता रहै पुण्य कर्म से सब सुख मिले भूमि लाभ हो मन्द्र की नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भले में रहै कभी किसी का ग्रास्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वर्ण था परन्तु इसके कर्म ब्राह्मण क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुत सा धन प्राप्त किया ग्रत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब ग्रभिमान वश हो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसी से पाप का भागी हुग्रा सो श्रद्धापूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवा कर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणों को जिमाय गुप्तदान दे तो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्धिजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातश्चातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य
कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन
भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि
संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तश्चात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट
भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिण अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण
विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति
कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता
सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत् दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम्
उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त
पिशून्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं
धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्धित्रिभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति
दारुणम् कदापिकुमतिप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मान्यधनंसर्वेप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे
चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतव्रणंज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो
जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्दे चमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे
कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

भृ० स०
फलित
४५

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्राताविहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्धसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्वित्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टविजानीयात् पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहपिमंगलं कार्यवद्धंतेचदिनेदिने षड्त्रिंशमप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत् लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाब्दमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणःखवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताब्दमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो दफे रोजगार की वृद्धि हो और फिर मध्यम हो जावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभाल कर रोजगार के काम करे परन्तु नाकिस दशा में चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनन्द में बीचे कभी किसी का आस्तीक न हो अपने कृत्य से निर्वाह करे एक समय ऐसा भाग्य उदय हो कि सर्व प्रकार के आनन्द भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त हों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपाय से सब शांत हो आयु बड़ी हो पुत्र तथा ग्रह सुख की प्राप्ति के निमित्त संतान गोपाल का जाप्य कराना श्रेष्ट है वंश की वृद्धि हो पुत्र पौत्रों के सुख देखे एक जीव में विशेष प्रीति हो हीन दशा में विशेष चिंता और क्लेश हो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव कुरुक्षेत्रमें जन्म ले नगर का प्रधान अति धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेता था वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जान कर दे देते थे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्ष की आयु भोग मृत्यु को प्राप्त हुआ दान का धन भोगा ब्राह्मणों से क्लेश पाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्य की आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत
द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्मानननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह
दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यञ्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद अल्प
कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रष्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक
उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोवार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणोयुक्तसुशीलो
कांतिसंयुत राजद्वारेतिमानञ्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणञ्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां
तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येत्रकीर्तिश्चनगरायते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा
शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चकिंवावृक्षेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म
कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो
भूयकृष्यदेहञ्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा
बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति घृणारोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं
गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्बके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितञ्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि
व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषेमित्रतांव्रजेत् क्रीडितञ्चविशेषणविद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशार्थं आदौयत्नमहत्फलं
सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राब्दकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य
मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राब्दप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यंवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षक्रमंतथा चित्तचिंताविशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चितंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्व्ययसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यपूर्वंलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्बलत्वंचगुप्तता औषधिपुरायत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पुरायफलोदयंवत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारोचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाब्दकेतथा एतत्कालावधिप्राज्ञसर्वसौख्या न्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधितातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि विलंब से मन की कामना पूर्ण हो रोजगार लाभ बढ़े युवावस्था में विशेष भाग्य उदय होगा बड़े बड़े रोजगार करे किसी से मिल कर धन का विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा बढ़े पश्चात में मन की अभिलाषा पूर्ण हो प्रथम बहुत जीव को दुख माने फिर संतोष हो जाये यह जीव विशेष छलछिद्री न हो और छल को पसंद न करे नेक नियत के रोजगार से पालन करने की अभिलाषा करे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्ति हो एक अल्प से बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहे फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े २ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीति करे किसी का बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी २ दर्द सा हो जाया करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जाति था अपने षट कर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथ को मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयो अधिक हो गया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पाप का भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेश.यनमः दीर्घोत्रलोग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानु
रक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराज्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः
नित्यानत्रवर्णभोज्यंचमूलफलादि भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत
शुभम् धर्मेधनवृद्धिश्चव्रतदानादिसंयुत वलभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्ठुरंरौद्रभाषिणाम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म
प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरो
धीचक्रूरणांजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वे परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर
पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते वृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य
परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि
तथापूज्यःनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मा
द्यत्नंचकारयेत् वृहत्तोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमात
महाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूमदानंचबालासद्यसुखंलभेत मिष्टं
मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहुक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान
महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेचवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण
चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोद्यानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहर
द्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहुद्रव्यव्ययोभवेत् बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविह्वल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणाहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिण कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्वर्षा वधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणाभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणागुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठांचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णांसुवस्त्रंवर्द्धंतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसूत्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणांचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि सुखंदीर्घंदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणानूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् सून्यषष्टमितिमायुपुण्य कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा इस कुण्डली में ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्ठा वाला भाग्यवान हो सब तारीफ करें सलूक करने वाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्य के काम करे भूके को दे ईश्वर का भक्त सत्यभाषण करने वाला कई बार बहुत धन प्राप्त करे रोगों से बचे सत्यासत्य को पहिचाने शरीर में फोड़े का चिन्ह हो कामदेव की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो जाया करे जीव की चिंता को गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्न किये अधिक क्लेश पावे धन का संदेह जीव की चिंता आदि हो गुप्त शत्रु विशेष हानि पहुँचावे शरीर में पीड़ा रहै काम होता होता रुक जाय तथा अधूरा हो जाया करे इस जीव को बड़े बड़े भारी खर्च के काम आवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव श्री अयोध्या जी के पंडा के घर में जन्मा बड़े बड़े दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिस से दोष का भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दान दे और अपने इष्टदेव का भजन करें तो सब काम पूर्ण होवें ॥

मृ० स०
फलित
५१

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्ठितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यंहानिनद्रश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधश्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कारयद्ग्रहशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुर्महाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं
रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रव्य अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिर्विख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वार्जितंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्त नयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके
बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेब्देतुशरचंद्राद्धकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रव्य
व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्धमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वंकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदेस्थित अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण
नाशनम् चंद्ररामभितेवर्षेबाणत्रिशाब्दकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुक्खितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ
घृतेधृत्वासंकल्पंत्राह्मणांददेत् महामृत्युञ्जयोज.पंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाब्दके
तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्घाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं
लोकेग्रामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं
शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले
सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताब्दपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहुलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके
सिद्धतिलघुद्रव्यत पञ्चसप्ताद्भिमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैवविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेत्सुखः
मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा न हो
खर्च विशेष रहे रोजगार करे बड़ी हिम्मत वाला हो दूसरे की बात को तोले श्रेष्ट आमदनी में कुटुम्ब का पालन करे कैसी ही धन की न्यूनता हो परन्तु
खर्च का काम कभी न रुके इज्जत से काम हो जाय चित्त में भयसा रहा करे परन्तु भाई बन्धु अपनी सम्मति के नहीं युवावस्था में कई बार धन की
चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंश की वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहे घरकी पीड़ा का यत्न करे एक बार कहीं से धन मिले सारी अवस्था में
दो अल्प भारी आवें दान मन्त्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्ण हो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे
चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्रि कुल में नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेना का अफसर था युद्ध विद्या में
अति चतुर था एक समय संग्राम में बलवान शत्रु से हार होती जान छल से उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि दे दी तिस से
उस राजा का सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पाप का भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणोंको विशेष दान दे तो पाप शांत हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृबाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताऽयुक्तता विशेषो
द्रव्यसंप्राप्तलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंबृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणश्रमोपिबहु
मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंबृहत्वोपिसर्वेपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं
चापिमिष्टबाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं
पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापकूरग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो
रूपचिंतनं प्रथमेद्धे रुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देव्रणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य
दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागश्चनंदके बालक्रीड़ा
क[illegible] सौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलश्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय
पूर्वदानंसुयत्नेनअल्पायुरोग[illegible]नम् दशमेद्धादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र
प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य
रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट
शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च
तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदातेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाङ्के तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो
दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुरायं
प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मंसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

५३

[illegible]

लाभकृत्यविशेषेणाद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णांरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणां मनेच्छापूजितोपूर्वंपुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हि
गतेतथा सुतकष्टविशेषेणाज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंति
राजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथामंत्रंप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्ति
विशेषेणापदर्दीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणाहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्दंईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं
गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चाब्धिकाव्यपौत्र
जन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णास्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणांजपेत्
तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्भमारभ्यरसपंचक्रमेणावै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहना
द्विसमन्वित भूमिलाभविशेषेणाग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपूर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्याधिकारीचनात्रकिंचिद्विचारणां सून्यसप्त
मितिमायुभुञ्जीतोपुण्यमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि यह जीव चिंता फिकर सिर
पर विशेष झेले और बड़े २ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनी रहै परन्तु खर्च के कारण धन जमा न हो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसा ही
भारी काम हो ईश्वर की कृपा से सब इज्जत प्रतिष्ठा के साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जत करें किसी से तृष्णा
न रक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन न रक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करें कई बार विशेष चिंता के काम
आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रों से मेल रहै मिष्ट वाणी बोले किसी को कठोर वाक्य न कहे बहुत निष्प्रयोजन न बोले पंचम स्थान के ईश की पूजा
और दान मंत्रादि से पुत्रों का विशेष सुख मिले जीव की आशा पूर्ण हो अल्पों के दान मन्त्रादि उपाय कराने से आयु की वृद्धि को श्रेष्ट है हे शुक्र
पहिले जन्म में ये ग्वालवंशी था विशेष धनवान हो कुवां खुदवाता था तिस भूमि से परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होने से कुछ द्रव्य राजा ने लिया
कुछ उसके पास रहा इतने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रम से प्राप्त हुवा धन पुण्य में कुछ न लगाय सब भोग में खर्च किया तिसी से दान का भागी हुवा
तिस निमित्त भूखों को अन्नदान दे ब्राह्मणों को तिलों में स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवांछित फल मिले धन संतान की वृद्धि हो ग्रह पीड़ा शांत हो ।।

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपाल्यतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित बुलवृद्धि धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेग्रद्ध प्राप्तिविनाशनं ग्रहपीडाविशेषेणशांतयेयत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं पक्षिणांग्रन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेल्लाभंचित्तग्राशासुपूजितं वृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्ठित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णभविष्यति शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चितहानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनस्थितेमनः ग्रानंदेनगतेकालग्रकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र ग्रल्पभयानकं सुखदुकखागमोनित्यं संभावोनतिष्ठती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्य नंदिता प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीडायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत् भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टश्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य व्योमचंद्राद्धकेतथा विद्यारंभकृतोचापिग्रंकाभ्यासश्चवर्द्धनबालक्रीडाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाब्दमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीडामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा ग्रन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलकार्य तातमातग्रनन्दिता नगचंद्राब्दमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च कार्यमात्रोभविश्यति ग्रनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम् शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य तथाचपञ्चविंशति ग्रानंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे ग्रकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण मनोद्वेगंनहाशोकंनिशानिद्रानग्राप्यते ग्रापदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तोविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागन स्वगेहेराजतेपुंसमान

शोडशाद्वगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिततः चंद्रजीवपरंप्रीतिम्राशक्तं मित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्ञानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्य मात्रञ्चसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षित भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवश्राशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशि त्रिंशगतेवर्षे भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिरिथतो यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति श्रायुवृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्टतम् श्रारामं वापिकामन्द्रं दासदासिश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाप्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े २ भाग्यवान ग्रह पड़े हैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यून सा कर दिया नहीं तो पृथ्वी पर बड़े २ श्रानंद भोगता सो श्रब भी पाप ग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा श्रादि करने से फल प्राप्त होगा जीव की चिंता मिटेगी शुद्ध चित्त से मंगल सूर्य बृहस्पति श्रौर केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ट फल की प्राप्ति होगी श्रौर कुशल रहेगी ये जीव लाभ के उद्योग में रहे परन्तु मरजी के माफिक कार्य विलम्ब से बनेगा श्रौर काम की सिद्धि होगी बड़े बड़े खर्च सिरपैं झेले घर में पीड़ा क्लेश हो जाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ न हो सके मित्र में मन फंसा रहै श्रौर शुभ काम में विशेष धन खर्च हो बड़े २ फिक्र श्रौर श्रानन्द देखे एक समय नया जन्म हो चित्त में नई बात सोचे मित्र की श्रौर लाभकी बातोंमें चित्त लगारहै यत्नसे श्रायु पूर्णहो हे पुत्र पूर्व जन्ममें ये जीव शिव मन्द्रका पुजारी था चर्स भंग बहुत पीता श्रौरों को पिलाता एक समय शिवरात्रि को फाल्गुन के महीने एक राजा ने शिवजी के निमित्त स्नान करने को स्वर्ण के घट प्रदान किए सो कुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेच श्राया उसके धन से खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए श्रौर शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणों को प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्द्विजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्ठआभूषणांवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकाणोंभयदीर्वता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापकूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणाचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवद्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणाविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलश्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्ठतिगेहेकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशाब्दमारभ्यविंशवर्षावधितत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रश्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसीविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंहतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यचिंतनम् शशिविंशाब्दत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशकमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवद्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवद्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोल्लासानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

भृ० स०

फलित

५७

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजत रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित. पुनरंतेमहाकष्टंपत्नोचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्य मवाप्यते भागवृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरामगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्राम अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्वमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यंवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्वके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चितवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षट्सप्तमितिमायुःप्राप्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्म पत्री में जो ग्रह पड़े हैं उनका यह फल है उच्च पदवी पावे किसी के चित्त को दुख न दे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वाला हो कैसा ही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्य न माने अपने लाभका ध्यान बना रहै चित्त में प्यारे मित्र की याद बनी रहै उत्तम आजीवका से पालन करे बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत से मनुष्य इसकी आशा में रहैं अच्छे २ वस्त्राभूषण घरमें स्थित रहैं एक समय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सो कुछ न समझे पुत्रों के विशेष सुख और लाभ के कारण संतान गोपाल के मन्त्र का जाप्य कराता रहै तो वंश की वृद्धि हो घरमें पीड़ा रहै शत्रुका भयहो कभी २ बिना प्रयोजनभी भयसा होजाया करे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछ पीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दान मन्त्रसे शांतहो हे शुक्र पूर्व ये जीव ब्राह्मण था अत्यन्त प्रतिष्ठा और धन प्राप्त किया ज्योतिष विद्या में निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिका ज्ञाता दानपुण्य बहुत लिया संतान न हुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वो धन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागी हुआ तिस निमित शिवजीका पूजन करे मन्त्र जपे गायत्रीके अनुष्ठान करावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

मृ०स०
फलित
५५

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टाविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभाग्यवृद्धिश्चजायते पापक्रूर
ग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं
भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं
मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीशंमानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्मा
द्व्ययमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जीतोकर्म
बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोक्वे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच
चोरभीतोपिगुप्तता आदौसौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र
सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेचबृणविस्फोटकादय मातृ
चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा
मनंदिता सुवर्णरजिताभर्णांवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा
बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगञ्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ
विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो
कामाक्तं शिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्राक्रमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य
निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षेसुखं
प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणां स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या[illegible]मासाप्रमाणकी आप
दुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणांदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वकष्टविना
शनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारन[illegible]य उद्वाहंमहोत्साहोकुल
बंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाक्षये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखं
लोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाद्धमागम्य शरचत्वारिचांतके
तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्य
भूयसे सुतपौत्रमुत्तम जायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधिंतत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके
सर्वप्रशंसित पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदैवानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यति[illegible] आशापरित्यज सून्यसप्तगते
वर्षेआनंदेनसमायुत वान्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता अहसप्ताद्धमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

भृ० स०
फलित
६०

।। भाषा ।। इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहे कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान
प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से
पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहे तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल
जिमावे तो श्रेष्ठ कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा
देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहे चित्त में कपट न हो आनन्द में रहे एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता
रहे अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी
बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव
अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ।।

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितायेब्दचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे व्रणव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविव्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगश्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राद्धकेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुंसमंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतश्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगश्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानश्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययःलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामश्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यबाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तश्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टश्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्ररामम्मितेब्देचबाणराममितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयात्स्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ॐऐंह्रींक्लीं

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मेणअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा नुसारणः बहुहिंसावधोजीवश्मृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् व्योमबाणाद्ध केवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्त मितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेव्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापित हैं तिनका ये फल है कि बड़े भागवाला जीव हो कुलदीपक हो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बी हो न्यून कारण से चिंता विशेष मित्र से मिलने की इच्छा रहै दो समय धन की विशेष प्राप्ति हो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थान के ईश के कारण चित्त हट जाया करे दो ग्रह बलवान पड़े हैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य व्रथा हो लाभ होता २ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभ के कारण एकादश स्थान के ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्प से नया जन्म हो ३४, ४४, ५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसी का बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्च झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था सो मृगों की बहुत सी हिंसा बनी तिसके शाप के निमित्त ये उपाय करे स्वर्णका पत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांत्रेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्प नष्टहोवे वंश की वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज
रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घआयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति
आशक्तया दीर्वकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमात
सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम्
वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसूनयुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो
पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं
प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते
पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्च भाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनञ्चलभ्यते कार्यलाभञ्चदीर्घोवागुप्तचिंता
शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति
नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्धकेवर्षेबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच
प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अतितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट
विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मातउपद्रोवाजीवचिंताच
प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥शुक्रोवाच॥
केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥भृगुवाच॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गव:

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रश्चमंत्रजाप्यश्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्सर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशय पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तश्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेरश्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुण्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घर में मंगलाचार खुशी जीव का ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थान के ईश की पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्ति हो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिल जाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिस के शाप के कारण जीव की चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात् भाग्य
वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम्अर्थप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो
वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्ट्वा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतियष्टा रोगश्चप्रथमेवर्षे
द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेबृणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग
संप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्धे सुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम्
नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र
वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय
शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयात्ग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्धे चबाणनेत्रमिते
तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येव.तपित्तेनपीडनम् ।।शुक्रोवाच।। केनदानेन
पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रुणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापञ्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदञ्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम्
पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत् साधूशापमुखंदत्वाअत्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्णं
संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा शरलोकाद्धकथ्यंतेबालवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा
होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज
द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति
चंद्रवेदमितेद्धे चबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्यय

नसंशयः षष्टवेदाद्धकेवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति
क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति
नसंदेहोभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने परत्वसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः
गोधूमगुडसंयुक्तं बारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः
चंद्रसप्तमितेद्ध चवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवंम्यांच भृगुवारेण
संयुत द्विपुरार्धचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी
अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की
वृद्धि विशेष होगी मन की कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने
की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु
सब काम इज्जत के साथ सम्पूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे
हे शुक्र इस जीव के सब कार्य सम्पूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे
हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत
समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण
जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोत्मा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवानजीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः
अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि
लाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिनकालहानकं प्रथमेद्वितीयब्देचमातृकष्टोभिजायते मासमासेसुखं
वाच्यंबालवृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनरंभयो बाल
क्रीड़ाकिलोलश्चजीववृद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठश्चविद्यायांअंतविद्या
विसार्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रवर्षगाथाचकथ्यते तातलाभ
भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम्पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते
भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र
मितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते
दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वेव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेद्वे चव्योमराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र
पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पश्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः चंद्ररामभितेवर्षेबाणराममितेतथा
अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुरायपापश्चभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा
नुसारण गौवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः
सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीड़नम्पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मातसर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

कारयेत् पूर्णायत्नेनभोकाव्यानश्रमञ्जायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखञ्जात्वं अग्रजन्मपुनःपुन चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते
वर्षेन्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मेस्थितंयदा
मा मा महत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यंधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा
मंत्रदातञ्चशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसा
विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेद्धे चगृहषष्टमितेतथा सुखदुखञ्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले
स्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाश्रौषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट
आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु के पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो
राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ठ है विष्णु भगवान्
का आराधन दान पुण्य करे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले
शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ठ है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु
समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह
जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालवंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश हो कर एक गर्भणी गऊ को
मार डाला तब उससे बहुत दुखित हो कर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी
तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्ण के पत्र पर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो
जावे और धन की विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णाश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेद्वे ज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णादेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंमम: तातलाभधनंवृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समवालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखञ्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेद्वेचबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति
आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेद्वेचत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एतत्ववर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्ररामभमितेद्वेचशररामामितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाङ्कवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाङ्कवर्षे बाणवेदमितेतथा

मृ० स०
फलित
६९

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रहमंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूम्रकाणिकानिचः धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिभ्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूर्ज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचार येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफ वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णा पक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहै पश्चात् आराम मिले अल्प बीच कर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मन से करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ठ है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्ठ है मित्र में विशेष मन रहे मीन रेखा हाथ में श्रेष्ट है एक बृण का चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्ट है किसी के चित्त को यह जीव न दिखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विज
रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्यादगिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता
सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रुणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम्
दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा
परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः
वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेन तातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा
विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा
भग्निअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिवूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक
द्विरागमन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्प
जीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चंद्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा
पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेज्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले जीव
चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चंद्ररामामितेवर्षेबाणरामामितेतथा शून्यवेदाद्धकेशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो
भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त
नान्यथावचनंकवे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चन्द्रवेद
मितेब्देचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाद्धकेमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वंजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टवाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीन्नरः चंद्ररसमितेब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यवृद्धिदिनेदिने राजमानजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नरः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वंशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वंसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वाआयुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्मल्याधिऔषधी सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधवंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की कुण्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डरा करे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ठ है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मतता से बुद्धि न्यून चलायमान सी हो जाया करे एक समय अचानक विरक्ति रंज सा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ठ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्राम पति जमींदार था दान पुण्य भी विशेष करता था एक समय इस जीव ने हवन करके यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमित्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष वृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंब्रजेत् दानीमानीभवेत्पुंससुतदारासमन्वितः देवद्विज
रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचेतीक्षणः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ा
ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहश्चजायते बृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्राताअथवाभग्नीचसुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात
महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यग.थाचकथ्यते
कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो
बालक्रीड़ाकिलोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्ममितेतथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वक.येंचसिद्धति
द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च
चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरबृषमितेतथा व्योमरामाद्कमध्येतु
सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमां दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुचबालकः
चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मात्महत्प्राप्ति
आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाद्ककेवर्षेशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र
समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्चपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि
प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण
वेदाद्ककेतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवासअकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं
विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यम्घृतखांडत्रिधातुकी

रजतंदशगुणोताम्रसर्वएकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तं तुलादानञ्च
रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधातुप्रदतेमुनि द्वादशेरजतंभागमेकभागञ्चकाञ्चनं सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति
कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रश्च त्वमसर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन्
भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमासस्यारम्भयौवनमासत्रयोदशः राजद्वारेविवादञ्चधनव्ययोनसंशय पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान
भ्रमचित्त शुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्ठोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यश्रसत्यकं तोलभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहो
वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगायाचकव्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशोपिपूजनं तीर्थयात्राचगयनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध
वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजप्राप्तीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणागमनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह
कटुवाक्यं तुधातृणात्र अल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृद्धिदिनेदिने चतुराई से विशेष धन को प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने
अति श्रेष्ठ हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो दान से भाग्य की विशेष वृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है
वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो
उसकी पूजा से वंश की वृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उसका उपाय जो कुछ लिखा है सो मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से
चित्त में अनेक २ प्रकार की वार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया कर जीव ब्रह्मकुल में बड़ा
पश्चात् भाग की वृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बड़े जीव का दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बड़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये इस जन्म में श्रेष्ठ फल भी भोगे
ऐश्वर्य प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण तांबे के कलश में घृत भर कर
और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवा कर और निश्चय करके वंश की वृद्धि हो
मूर्ति प्रवेश कर और रात्रि के समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ठ है एक जीवसे मित्रता बनी रहे ॥
और हे शुक्र उस जीव की स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोग्रसत्यवचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये
कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरि
पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातमातमहाक्रोधी
भाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये बृणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयग्रल्पप्राणनसंशयः त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा
प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताकिंचित्कालोपिग्रागत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त
विद्याचपठनंकृत्वातातलाभमभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतिश्चप्राप्तये महत्प्राप्ति
चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं
महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडितपितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं
चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये
कृत्वाश्रौषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंग्रानंदभूमिमंडले चंद्रराममितेव्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्व
मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषितः जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म
गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचितवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये विवाहादिधनंज्ञेयम्ग्रन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मातउपद्रोवाकिंचित्
भविष्यंतिग्रानंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयातगुप्तचिंताधनस्थितः मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं
कालशांतये चंद्रवेदमितेव्देचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति
व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयंजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणाश्चसंकल्पं श्रद्धाचब्राह्मणांददेत्

भृ० स०
फलित
७५

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिमृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपश्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ भवेत्शुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते अल्पश्चनुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्री का फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान् पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेष रहा करे और हे शुक्र इस जीव का खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईश का पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो भ्रात योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीव का दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युंजय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहे चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्ट है विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्यों कि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवा कर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

भृ० स०
फलित
७६

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणाबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारा त्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवाकिंचित्कालशांतये चंद्रबाणमितेव्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥शुक्रोवाच॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिमुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥भृगुवाच॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रृणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकामबीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेत्विप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यंमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिच तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहे यह जीव धन का उद्योग बहुत करता रहे और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ठ फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य वार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की वार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुल में चित्र गुप्त वंश में था और हस्ती घोड़े वाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्याय से अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सर्वस्व जाता रहा सो पंडा ने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिस के कारण स्वर्ण का पत्र बनवा कर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतः श्रीमान्जन्मवाधाविधानतः
सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया दीर्घकार्योपिश्रागत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति
नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं
बृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिअथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं
सुफलंतथा अष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा
परिभाषितः पञ्चदशेअष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते बृक्षोचपतनंज्ञेयंअथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते
कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्रानोतिअल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः
निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिंता
शरीरजं षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्यययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र
जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यअनुष्ठानयथाविधिहवनंब्राह्मणं
भोज्यंवस्त्रआभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणआनंदजायतेध्रुवम् चंद्राममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य
प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते आनादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडव्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती
मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो
वत्सश्रेष्ठकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः
पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चआकारीसर्वआयुहर्षकम् पूर्णआयुदशंरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणियः शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र
सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जातोमतकीर्ति
कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रश्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितियेब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो
ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु
विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगञ्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलञ्चआनंदभूमि
मंडल तातलाभविजानीयात्देहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं
पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखञ्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा
चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणञ्चसुताजन्मन
संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे
व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापकरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये व्रणव्याधि
शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यंधनव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते
चंद्रराममितेवर्षेबाणलोकमितेतथा सून्यवेदाद्धकेमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नो
पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षे
शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः
किंचित्कष्टविजानीयात्औषधोमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

भृ० सं०
फलित
७६

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षप्रतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः
चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च
शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच
प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा
ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं
विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणागवनोनसंशयः ।। भाषा ।। इस पत्री का यह फल है कि ग्रह
केन्द्र में श्रेष्ठ होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान
के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहे चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष
खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक
जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्ष्म हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन वार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण
करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईश की पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था
सैंकड़ों चौपाये और सैंकड़ों मनुष्यों का पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैल का अंग भंग हुवा उसने
दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर
संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनन्द भोगता रहै ।।

मृ०स०
फलित
८१

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रिया शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख
दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति
कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो
जाता रेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभग्नीभ्रातृप्राप्नुयात् तातगतमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित
अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच
औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा
मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने
कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच
कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्त
व्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया उं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा
इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्ररामंमितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाब्दमध्येतुसर्वगाथाच
कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मातमहाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र
दानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण
कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

मित्रपक्षपरंप्रीति शांतये वंशवृद्धिविशेषेणानान्यथावचनंमम शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने
श्रानंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशरबाणमितेतथा व्योमरसाब्द
केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यंभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाश्रौषधीप्रतिशांतये
छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिश्रानंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते
तथा अकस्मात्महाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति
भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणागवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते
सिद्धिपरअन्नञ्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणाञ्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बलवान् श्रानकर बिराजमान
हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के
साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की
विशेष प्राप्ति हो तथा वंश को विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने
हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े २ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो
आयु पूर्ण हो एक अल्प से बच कर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े २ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु
भावी वश हो कर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में हो गई सो पिछले पुण्य पाप के
कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीव का अन्न घृत्त वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचञ्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योबचनंब्रजेत् दयावंतसमादृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्ष
महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः
यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तबृत्तिआशक्तया अल्पदेहभविष्यंति
नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते बृणा
व्याधिशरीरेचभूतछायाचविव्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं
कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्यधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे
शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीति ममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानी
यात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानश्चशांतये
पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाद्धवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमि
मंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण
मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्ररामभितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाद्धकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते अर्धआयु
गतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव
मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफवातेनपीडनं बहुलाभस्ययो
योगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाब्दकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमा
मंत्रजाप्यश्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

भृ०स०
फलित
८३

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत् नवीनोवार्तया चितवाहनादि
सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति
जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वेविघ्नोपिशांतये
चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यलाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य
पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगवनंकृतदागुप्तदानञ्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णञ्चहरितःदारुकाञ्चनं ताम्रगुप्तददेत्विप्रसंकल्पंनृपतिंकुरु आचार्यदानदृष्टस्या
अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योग का यह फल है कि बड़े २ खर्च के काम सम्पूर्ण हों प्रथम तो
चित्तको खर्च का भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बोझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के
नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीव की आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे
रात्री को अनेक वार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हानि हो चित्त में भय सा रहै फिर धन की
प्राप्ति हो स्त्री से प्रीत और घर में पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्प से बचे जीव का दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल
का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व
में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पण्डा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर
लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले
पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से
राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषण लोकसहलपातख्याती मानकातीविशेषतः
प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्रीतिश्चानंदं
भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्त मानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिंताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे
काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग व्रणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं
अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशषोडशतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्चविद्या
प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश
अनुष्ठानं दानश्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपश्चपुत्रवान्
चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यकृतेनसंदेहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाश्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानश्चशांतये मृत्युञ्जयघृतेजाप्यंव्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेव्दंच
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्टफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये
अकस्मातउपद्रोत्रा धनव्यर्थविशेषत व्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल
मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्ररामभितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य
वेदाङ्कमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि
प्राप्तये वाणिज्योकार्यंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तश्चधनंविप्रभूमिमध्येचस्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्तवैश्योगप्तधनंहरंचन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य
बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेवर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलंगृहकष्टविजानीयात् व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्र्यंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवासकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिगृह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रांफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि इस जीव का चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं किसी का बुरा नहीं चाहता सब का भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एए ब्राह्मण तिस का मित्र था कुटुम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मर गया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिस के निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्र की वृद्धि विशेष हो कामना पूर्ण हो पिछली अन्त आयु में विशेष सुख भोगे सब के भले में रहे सत्यवादी हो ॥

भृ० स०

फलित

८७

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मश्रल्पशरीरेच श्रायुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षे ज्वरपीड़ाच रेचनं मातृकष्टविजानीयात् श्रौषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमुंगलाचारकंतथा श्रादिपठनञ्चविद्यायां श्रंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः श्रष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यंधनव्ययः तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चप्पाधयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोतिपत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति श्रानंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता श्रग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय मध्यप्राप्तिविजानीयात तातचिंताचमातकंगुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिश्राशक्तयानानालाभकंप्राप्तिभाग्य वृद्धिर्दिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंतिभृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलंपापकरूग्रहापूजा लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय श्रापदुद्धारणा यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्रराममितेवर्षे बाणराममितेतथा शून्यवेदाद्गमध्योपि सर्वग.थाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टंविजानीयात् श्रौषधीप्रतिशांतये शत्रुपक्षविरोधीच धनमुद्राव्ययवृथावर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा श्रकस्मातमहाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यतिगुप्तचिंता शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात् व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युअयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधीश्चधनं व्ययविशेषत शत्रुपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ावदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजः कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्ठा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनन्द दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तात का धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घर में मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तात को लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्ट है नहीं तो जीव की चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वाला हो इन्द्री में पीड़ा काम की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े २ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्प से नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनी रहै तिस निमित्त तांबे के कलश में घृत भर कर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंश की वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्ति से जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहुभागीचबालकः दीर्घकार्यकृतेजीव सर्वकार्यञ्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमानननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यातो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेव्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीचरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालन.तनातश्चहर्षकंबालक्रीड़ाकिलोलञ्चभग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये त्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात् बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोत्रा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापकूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति वित्त वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यतेशुभकार्य धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रराममितेवर्षेबाणराममिते तथा शून्यवेदाद्वमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरज अकस्मातउपद्रोक्ष पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेव्देच शून्यबाणमितेतथाचंद्रअल्पदुखंशुक्रदानमंत्रञ्चशांतये करमानञ्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिनकालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखावहं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थईश्वरभक्तितत्परः देहकष्णाविजानीयात् व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथाव्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय।।

।। भाषा ।। इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धन का मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडा जी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर गृहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ।।

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगञ्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी
कामीदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः
युग्मअल्पश्च विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिराडले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः
द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः
मातकष्टविजानीयात्औषधी कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः
तातंधनंशुभंकार्यं प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगञ्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति
अल्प भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुखिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगञ्चप्राप्तये
त्रयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रञ्च विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशु पीड़ाउपरञ्चपपाथय
ग्रहमध्योपिआनन्दं मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति
चंद्रनेत्र जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मात्उपाधीचधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंता मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति
महामृत्युञ्जयंजापं शरीरजं कार्यमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये
कस्मिन्काल चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता
धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशञ्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति
भूमिलाभभवेत् मंगलम् मासेवर्षसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्सा होला भो भवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा

भृ० स०
फलित
६१

अल्पसुखञ्चसंतति
काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो
धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो
भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी
विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया
नवीनोलाभकंद्रस्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं
प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ
कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढ़सुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बहुत उम्दा आनंद से अवस्था
बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदान्त मत हो स्त्री को चित्त में पुत्रों की लालसा बनी रहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का
जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभ की वृद्धि हो अकस्मात् प्राणों का
भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर न रहै गुप्त धन मिले शत्रु हो जोर न चले राजद्वार में इज्जत है शुक्र पूर्व
जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तट पर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे
परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियों की चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखत में पंडित साधु मन में कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त
चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतान की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्टहो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत समाद्दश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोससुद्भवः सुखीभोगयुतः पुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिर्दीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहुप्रतापीच शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा ज्वरपीड़ाव्रणांकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेसंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवीनो कार्यकंचिंताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अश्ववंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यधन व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभमशुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंक्रियतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रुपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रवा ग्रामितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणालाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंक्रुतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणातीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यंधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथावेदसप्ताद्वकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणागवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रताप के बैठे हैं मन का गुप्त भेद किसी को न दे विद्या से बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीव की तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईश की पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालों को दुखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजनदे तो धन संतानकी वृद्धिहो चिंता मिटे मनोकामना पूर्णहो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोर्थ पूर्ण हो ॥

मृ॰स॰
फलित
९५

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चञ्चलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यञ्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चञ्चलोधीरसूरवीरञ्चतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेऽब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेऽब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफबात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्तांचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चंद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्राममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेऽब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यंलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यंतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यञ्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वंयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत् धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणक्रियतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षेषट्रसञ्चाद्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ।। भाषा ।। इस

पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो सत्य वचन बोले श्रेष्ठ जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह तरह के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेष हो अकल तेज हो दूसरे की बात को तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनि का मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे का हो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी काल में खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काम में खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूह का सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दण्ड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमन ले और भोजन जिमावे दान दे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ।।

मृ० स०

फलित

९७

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्टश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् वृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत् अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घं
सुकीर्तिचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्यः
पुनरन्तेसुरक्षणं पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णंभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेववह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविन्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनंदकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंतरुजंसर्वं
विनाशनं वेदवर्षाचपञ्चाब्देषटमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलंजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचितोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलञ्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति. वह्निमेकाद्बमारभ्यव्यालचंद्राद्बमध्यमा । बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिश्चपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशाद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेललनाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देशृणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधैरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापादुक्खंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुरायभाजने मानकीर्तिविशेषेणासर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योहर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाश्चमेलनं ग्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणाप्राप्यतेनात्रसंशयः न.नामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूज्यंतेबहुचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखीलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणांश्रेष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये वृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुक्खिता दानपुरायसुकर्मेणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणाप्राप्यतेपुरायकर्मणात् नगवेदमितेवर्षे शशिपञ्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणाअल्पंचैवोतिदारुणां नेत्रपञ्चां तरोकाव्य व्यालपञ्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वे प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टमितिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह श्रेष्ट है और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुख दुख देखे इज्जत के साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीव की चिंता रहै छल छिद्र से जले सत्यासत्य को पिछाने किसी का बुरा न चाहे हीन दशा में फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्ति से रहै आनंद मान कर बिताये एक अल्प से प्राणों का भय हो सुयत्न से प्राणों की रक्षा हो पूर्ण आयु भोगे तथा लाभेश के पूजन दान आदि से विशेष लाभ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ग्वालवंशी था बड़ा धन पात्र था मथरापुरी के समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकार का आनंद पाता था एक समय भूलवश हो ग्याभन गाय को ताले में बंदकर चौरासी कोस को ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मर गई आकर देखा तो अतिशोक माना बहुत कुछ दान पुण्य करने पर भी पाप का भागी रहा सो स्वर्ण की गऊ बनाय दान करे तो मनेच्छा फल पावे धन संतान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोउत्तमंमहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो
नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुरानविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ
चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यविशेषेणसर्वपूर्णो
भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तविशेषता हर्षसौख्यां
वितोभूयग्रनित्यंभोगततपर पुत्रार्थसंतगोपालमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रेयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेचापि अल्पदीर्वो
भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनग्रायुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले
धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता
वृणाबाधानसंदेहोग्रकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षातरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुरयेनबालवृद्धिर्दिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च
मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपश्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण
तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेसंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदवृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतेमहोत्सवं विद्याबुद्धि
वृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टवाधाविनश्यंतिसुपुरयंफल
दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेग्रष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगग्रंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनद्रष्टव्या
लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणांवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य
कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादञ्चसुखवृद्धिर्दिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता
सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत् कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

मृ०स०
फलित
६६

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुरायकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं
सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय
भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसोख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहेमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण
स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावत्कालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकायंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति
सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह
नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चंद्रचत्वारिवर्षाणि
तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात्नृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान
पुरायप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणगतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु
सारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुरायकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाब्दमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण
निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवर्दिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इसकुण्डली का फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवान हैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार
मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा
तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सब के भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े बड़े खर्च के हैं सो
चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और
न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दोनों भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो
श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा
पूर्ण हो बड़े बड़े सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रख कर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रञ्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यबृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेत्कृताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनीतश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारञ्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रञ्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्वबाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेबृणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहञ्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगचित्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परञ्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैप्येश
जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहेगीतवाद्यमनंदिता मध्यल।भव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाब्देसुता
पुत्रमनंदितालाभवृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनंसत्यवादीगुरुभक्त नृपात्समान्यभवेत्सदाद्विजदेवसुभक्तिश्च विचित्रोवाक्यंब्रवीत्चत्वारिंशा
वर्धिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुग्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहूसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित वृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाद्वसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्व
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वेपुत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारविनिर्मुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख
महत् प्राप्तेचंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति सर्वकर्मानुकूलश्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है प्रथम मध्यम भाग्य हो
पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो
जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे
लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मन की बात कहै तथा एक जीव की चिंता से
क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया
जन्म माने आयु पूर्ण हो पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना
पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से
विशेष विवाद रहा उसका हरा भरा बाग कटवा दिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुत सा स्वर्ण भर के दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्टबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाअधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चद्रश्यंते तेनहानिप्रजायते
भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा
काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुरायेण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहर्षञ्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन्
दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं
सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचरणयु
तोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिमुखः व्रणाचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुराय
प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले
जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालवृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता
विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बत्सरोवृद्धि बाल
क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाद्धके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल
चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य
आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुरायकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभ
व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमोदिता शशिचन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुरायजं प्राय
चितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुरायंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र
तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टनाश
नं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

मृ०स०
फलित
१०४

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुरायेन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाद्धमायात शर
विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे
सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा
द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं
बुद्धिसम्भव रमविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण
चितचिंताव्ययपुरायं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलारायेवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्धित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंग
लंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौद्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णविकारेण महादा
नेनशांतये चत्वारिंशावधितात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं
विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति
विशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं वन्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वे स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फलनहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगलकेतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्य की वृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय न बनेगा मध्यम लाभ हो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार से खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रतापसे आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशामें कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसीकी बुराई निन्दा नकरे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघात हो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा न थी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म भोज आदि न किए एक ब्राह्मणका गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज करानेसे धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंद्दस्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मो जीवआशाविनिमुर्ख चित्तं नसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलवृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तञ्चशांतये कृष्यदेहोपिदृश्यंते भूतछायाश्च
विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालवृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालवृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमंगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तं विशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यगृहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वे भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्यमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते बृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भाविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वे यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवह्निगतेकाव्य तथाचपंचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

मृ०स०
फलित
१०५

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्
सर्वेषांशुभचिंतकः दानमन्त्रसुपुरायेन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदंज्ञात्वा नकदाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्द
केतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुत
कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसौख्या
धिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवर्धिततः द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददी
र्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशगत अन्यसर्वसुखंद्दश कुलभाग्यविवर्द्धनम्
पञ्चपंचाब्दमारभ्य शून्यषष्टादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंबत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे
सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यसाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे
मतिस्थित रामनामसुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रस
षष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्र का ऐसा
फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहता है
गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है
और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी
अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से
विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के ब्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा
एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन
लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान दे तो पाप शांतहो परमसुख पावे ॥

मृ०स०
फलित
१०६

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यंरतोभव
यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं
नूतनाजन्ममरायते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं व्रणाचिन्हञ्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम्
उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि
प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानमन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता
विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मञ्चमोदिता आदिवर्षात्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलंसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे
विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सयत्नशांतिसर्वदा वेदाद्ध
पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः
अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य
षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तञ्च
चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यञ्चद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण
लोकाचारञ्चसंगम जायासौख्यभवेद्धत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं ग्रहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता
प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सतापुत्रसमायुक्तो
लाभकृत्यविशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोद्यानंदतोपिस.ाद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्य सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र
त्रिनागतोप्राप्तं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्धाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

भृ० म०
फलित
१०७

मृ० स०
फलित
१०८

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्यं
सिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिंशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं
राजद्वारेसुमान्यश्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं
कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णांचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट
विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धं सुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते
एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पश्च
विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मने
च्छापूर्णातोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रश्च सर्वथानंददर्शनं तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्व्ययमागम
शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्ठांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदारुण रामनाम
जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्तो
वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी
जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव
की मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर
में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसे करे किसी का बुरा
न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्ठहै ॥ हेतुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त
भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधूब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका
पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरें चींटीनाल पक्षियोंको भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्ट हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदाविद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्टईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यंतेगूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनद्रश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्टाभंगचिंतयेत्
जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमतमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभश्चकस्माद्धनप्राप्नुयात् मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षंप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्व
जायतेकुलदुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मश्चल्पभयंघोरंश्चायुपूर्णंपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घंटाकर्ण
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिश्चहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्ततथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिःसद्यशांतिभवेत्तेनश्चानंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षंगतोवत्स
तथाचसरचंद्रकेविद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घंउद्वाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घंभागीचबालक षोडशाद्वसमारभ्यतथाविंशाद्वमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िताबुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमेश्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपश्चविंशाब्देतयोरंतरधनागमद्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यक्षंप्रीतिदर्शकं सुद्रव्यंसद्धयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्टित पददीर्घमु
पुत्रजन्मेचनन्दितोरसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावलीयसी
पस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणारचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलंप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो
दीर्घभवेचापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्बत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च
वाहनं तीर्थयात्राजपंपुरायंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे
तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुरायेनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद
त्रिवेदाब्दयकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेषेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय
ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवाग्रामभूमिश्चहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता
मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोपोतिदारुणा तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत् सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा
रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य
प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुरायकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर
बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्र हो लाभ मध्यम रहे काम
होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्ठा का भयहो जीवकी चिंता क्लेश पावे सूर्य मंगल और राहुका दान मंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि
रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें
किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेगुरु पूर्व जन्म में ये जीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों
का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया
सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

मृ० स०
फलित
१११

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृक्षंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचबहुदृष्टय तथापिचबृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातः सर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित्त सुकुललज्जितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णभवेन्नरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुराय कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुबृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि व्रणविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानश्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रश्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंवहुतत्परः वन्हिचंद्राद्धकेकाब्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीतिरूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनसंदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राद्धमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुबेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राद्धकेकाब्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोद्यानंद तापिस्या

द्बहुलाभप्रभावत सुदुग्धंमहिषीगावदासदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोवत्ससुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखीन्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शकःतथा
पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणादानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचंद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशातकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चविकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजाते अकस्माद्भयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुण सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यश्चप्राप्यतेनवनारीसुक्रीड्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्ठांतरोकाव्य ज्वरतप्तं विशेषत दान
पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टावधिंचास्य
आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चसृत्युदा

।। भाषा ।। इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितीय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीतरहे अपने दुखसुखका सबवृत्तान्त उससे कहदिया करे औरविशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीतिरक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्तन दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभखुशी देख और नाकिसदशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेषदीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंतासी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ।। हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ।।

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं
मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहो भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात् जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं
मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनंव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप
क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलश्च
महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीति सर्वकर्मेशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मग्रल्पमहाभयम्
पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं व्रणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र
प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतबाधाज्वरादिकं
व्रणापीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचगुप्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश
समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे
द्वादशेवर्षे मध्यतद्ददाम्यहं पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम
किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष
आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविशेषेणानूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम्
पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहानिदर्शित प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदितादीर्घचिंताविनश्यंति
जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माब्दकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व
चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़िताम्रुतापुत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेणान्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वचरूपयौवनविव्हल

मृ० स०
फलित
११३

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्सूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं
सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणांतथा
ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते
भूतलेपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रीड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यबृद्धिमनंदिता
राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल
दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिब्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो
चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर
भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र
मनंदिता षष्टाषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन बृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगबृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं
श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुर्विवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णापञ्चम्यां निधनंतस्यजायते
भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे
मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्ठा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है
तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्दमें प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से
लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया
बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक
प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यञ्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्ठित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिर्चिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिर्गृहत्वता नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनःसय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोणरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंग्रद्धकृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापकरूग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुण्येनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसीउद्यमीपुंसअंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्वितीयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षंगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुजं मातृक्लेशमहद्दुखंजीवग्राशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते ग्रष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचपलंबालशिशुक्रीड़ामनंदिता ग्रंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिद्दश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिसेकाब्दमारभ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम्कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनैं पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाब्दकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तं ग्रजीर्णंनश्यतिक्षुधा ग्रौषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घ वृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखश्चापिनात्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवन्हिसुवर्णशिश्च त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणदृश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यंविनश्यति कर्म श्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकाव्यकार्यसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनंगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वछमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाब्दमध्यमा ब्रहलाभप्रभावेणचित्तोह्यानंदसीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्त वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय दीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोसुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरंताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत् विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुवृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढ़शुक्लसप्तम्यानिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत माने धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े बड़े काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और यह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातमौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशोश्रेष्टसुखीलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वेमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपश्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वंत्राशाप्रपूजितो कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निग्रल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्ण
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अचानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाद्धमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्धमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते आशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्धमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागम फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपितुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदशत्रुपक्षश्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यक्षंनकाशिता मानसीविविधाचिंतग्रापदुद्धारणांजपेत्

मृ० स०
फलित
११७

शांतिर्भ्रांतसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वसुखंप्राप्य
धनसंतानप्रतिष्ठित रसविंशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता
द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवन्हितथांतरे गुप्तकष्टनपीड्यंतेअजीर्णं
बातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता
व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिग्चनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेधनपुत्रादिप्राप्यते
षष्टत्रिंशाब्दमारभ्यवस्वारिंशोधिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहलाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच
युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेशून्यपञ्चावधिलभेत् पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या
भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपश्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदबाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं
औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगबाणाद्धमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रगौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त
आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेपुजनेभ्योप्रशंसितः शुन्यसप्ताब्दमायुष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ ब्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

मृ० स०
फलित
११८

मान
श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घवस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् आनंदंकौशलश्चापिसुखं
कीर्तिवृद्धिनित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलश्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेचिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यंधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेवर्ततेसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषेणसुकार्यंमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्राताभगिनसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतो
सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहादि
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते
निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्दव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोपिनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगविंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भंचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविधि चित्तचिंताविनष्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा भाग्यवृद्धिवलंदीर्घगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनष्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातंभूमिमंद्रश्च नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिभविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसर्वमानवृद्धि मनंदिता चित्तचिंताविनष्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतः परिसुख सर्वेषुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रधनासिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसौख्यविशेषेणसर्वआज्ञा प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणोशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैकत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्क्रियायुक्त सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्रिनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीतंततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलेवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वंयाक्निमासेचसप्तमेप्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाञ्च नश्यतिउदरेरुजुं तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच त्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलश्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्ध
तिचदिनेदिने पितुदेह भवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेप्राप्ते धर्मकार्यंभवेत्क्वचित् तेनसौख्यसमृद्धि स्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाद्धके कष्टञ्चजायतेदेहोदाघदानेननश्यति योग जायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्यविशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखंचैवहर्षयंतिदिनेदिने अक्षाञ्चतनंज्ञेयंअथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यते भयदारुणां
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्त सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जीवोमहाप्रीतीग्राशक्तश्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
क्लेशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्त नविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभञ्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलमञ्चप्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोऽल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्चनूतनं गृहमंगलगानञ्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिबामभागेबृगांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्रारामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेवापिभूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतोस्वर्णं दानबृथाचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोप्रपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रेधनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाएवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णंभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीव की चिंता रहे और बड़े २ लाभके उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावेकभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में वृन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत हो गया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुख का भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्वग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत् मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च
उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात् महच्छोचश्चजायते साहसीदृढ़संकल्पअन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसंगविनिमुख चौरभीति
भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मङ्गलग्रहमध्यश्चनृत्यगीतादिकं भवेत् पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च
मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमङ्गलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यवृद्धिसुखं
देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिररायरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु
प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबद्धिख्यातिलोकेरिमत्र शांतो
मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत्सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मणाक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापाकूप
तड़ागेशुआरामेमोदसंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगेणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे
सप्तमेब्देषुसंबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसप्राप्त पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं
नवमेब्देजलोद्भीती दशमेकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचिंतातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं
प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा किंकरोमिकुतः सुखम् चतुपञ्चदशेब्देषुकांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका
भर्णांप्राप्यतेनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधाप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविंशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम्
नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांष्टविंशेचकन्यापत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित
वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल
गानञ्चनवनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोष्यतंविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिशेद्धित्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पश्चत्रिंशाद्धसंजाते
नगरामवाधितत यंत्रमन्त्ररतोजातंक्लिवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणंरुष्टतांव्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नागा
त्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् गृहहाटधनंसर्वंविलगच्चप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेनानाक्लेशसमुद्भवः
परन्तुधनलाभश्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्युं जयोजाप्य दीर्घदाननशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं
ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत् सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यतेमंत्र यंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाण
मितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था
धनीनरः शरपञ्च मितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम्सून्यषटामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनंदमंगलं
लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातप्रोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात् भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्य की बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वाला हो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्य मार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों की संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जाप से विशेष सुख की वृद्धि हो पुत्र की इच्छा पूर्ण हो एक अल्प से अधिक भय हो पाप ग्रहों का पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा जिससे वह मरगई और यह पाप का भ हुवा तिस पाप को शान्ति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वतसयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदन से लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्र सहित संकल्प करे श्रेष्ठ ब्राह्मण को दे गोपाल मंत्र का जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन सन्तान का सुख देखे अल्प नष्ट हो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आयु वाला हो मनेच्छा फल की सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मश्चानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी
चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यः कामिनिप्रिय
कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्वचित भोगमैश्वर्यं युक्तश्च
कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिश्चहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत् कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्ठुरोकटुभाषिणः
साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोग प्रपीड्य तेनचिरं विद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि
करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोश्चारामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्यु भवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात
व्यासूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापद्दुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते
सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रोप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसं
चिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च
गंधंपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे
विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंच वर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश
मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुर्किंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजा
यते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे
कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसंशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

मृ०सं०
फलित्त
१२५

भीतिसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिशब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यश्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभवाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिंवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े बड़े आनन्द भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटुम्ब का पालन करे श्रेष्ठ संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राण से अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारीआवें जीवका भय हो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्त हो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत हो जाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हेपुत्र पहिले जनम में ये जीव बड़ा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्था तक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अन्त को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यन्त पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनन्द भोगे

भृ० स
फलित
१२७

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्षणबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरंश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणसंपन्नोमासेवर्षेसुरांगता म्दलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वेहेमरत्नानिभूषित सकामश्च
चलोलोल: सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभृत्यसमायुक्तो सुकार्यंकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुभक्त भूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचवलेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेव्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्टमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंतेविस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तदेव्यायापूजनंरतः [illegible] मेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाद्वसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राद्धमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्टोपिवद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानबृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोह्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वा दाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविव्हलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मणा

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिंक्रमात द्रव्यलाभ
विशेषेणापद्दीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो
यथाशशिः ग्रहमंगलगानंच नवनार्यासमागतः शरीरोपीड़ितंगुप्त आजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत् सर्वबाधा
विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणाम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषश्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्वगेकाव्यतथाद्दनभवे
दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परश्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकश्चसंप्राप्यतेजस्वी
दीर्घजीवन सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौ
ख्यंप्राप्नुयंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनीतस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका
लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परन्तु पूर्व पाप के कारण जीवकी चिंता विशेष बनी रहे जिसका कारण यह है। यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल वंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परन्तु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊ को अत्यन्त कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पाप से इस जन्ममें चिंता अधिक रहे घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहे लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न हो तो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पाप की शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटुम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहे हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय सन्ध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो
श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्य
भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद श्वेतवस्तुप्रियसर्वे धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयात्किंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम्
वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्ना प्रपञ्चाल्लाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वे
बद्धिमानपंडितः शूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच निष्ठुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं
प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य
विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य
शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनममम् शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा
देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मचक्लेशिता मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ
जय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददद्देहीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित सर्वसौख्यलभेध्रवम् चित्त
चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं अल्पञ्चप्रथमावस्था
चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् शिरोरोगप्रजायते बहु
मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे व्रणाज्वरप्रपीडिता
बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रश्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमेद्वे पुर्किंचित्पीड़ानसंशय अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि
दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्ययाभूपसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेपञ्चचंद्राङ्ककेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्ट
विंशाङ्ककेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः रसचंद्रतथा
विंशेत्रिविंशषष्टविंशति त्रिंशचत्वारित्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरेशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्राविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते
पूर्वपापप्रभावेणानतिष्टतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्तति
सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रिंत्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमह
त्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्ययशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं
पंचशीतिमितेस्नायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुगुरुवारेणसंयुतः रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णा
मायुःभवेत्ततः ॥ भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्य वाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो
परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्या बुद्धि बढ़े श्रेष्ठ
मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला
और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्रीवंश में था सो अतिशय
दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक
ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुये तिसी से ये जीव महापाप का भागी हुआ इस पाप की
शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधि से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का
संपुट लगाय गायत्री महामन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और
ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवञ्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि
विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरञ्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभवः
द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेब्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे
रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत् चक्षुरोगविजानीयातकिंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो
पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य
विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनकष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च
तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगञ्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाक्षेत्रलाभञ्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे
चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता
स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्धकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाञ्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच
मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते
नात्रसंशय नववस्त्रमहर्षंच धीर्यंत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च
आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय
भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिबांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षाविधिक्रम
धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेच याचमानापितृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते
पुरे किंचिच्छोकविजानीयातपरञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाद्धके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचिंतायदाकदा गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविसप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येशः आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत् मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ग्रहरामाद्धसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्ठावधिवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुःख हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनन्द हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे। हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यन्त युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इस पाप का यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचन्दन से उसपर साधु मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

मृ०स०
फलित
१३३

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतय
नेत्रवर्षतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणाबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवि
तव्यंनभूपतेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुःखागणेनित्यं मध्यसौख्योह्य
माप्नुयात् अङ्गन्तारोहृदेगुप्तं लाभनोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिर्वत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वेदीर्घभागीचबालकः विद्याबुद्धिगुण
द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन
सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यमहद्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमनः सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्योक्रोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ
भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मातमहदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि
लभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोत्सहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफल
प्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं
सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासीश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता
द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्ममतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पाप
कर्मणाक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा
वेदबाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महा
दानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बलं अन्नरसंमहादान सर्वदा सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घं चित्त आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभूतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहे कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युंजय का जाप वेद की विधि से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यो में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेदपाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुर्द्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

श्रीगणेशायनमः इदं ग्रहपत्रिस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता काम
पीड़ाविशेषेणअकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्धयसमन्वित दुष्टकर्मेणानपीड्यंतेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दाचशत्रुवतप्युतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितुरुच्यधिकारीचपुत्रेनचिवर्द्धनं धनवान्पुत्रवानुग्रः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रातरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामबाधाप्रपीडत मित्राणांचश्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविह्वलं यदाकामातुरोदोषविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्ट्युग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंचव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ॐऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाद्रकेतथा तात्कालगोसंत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभंगुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तम
कार्यजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंक्वापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमेपत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीररोगसंपन्नोऽजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात् रामपंचाद्धमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञा(वा)दादीर्घ कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टयः विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपश्च अन्येचस्वल्पजीवनं रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणांशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णातोये नित्यश षष्टमासाद्वयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव अहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयम्रयतेसापितदाने चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्धमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवश्राशाविनिमुंख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्य रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुरायपूर्वंकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेतनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रे सुकुले जन्मनात्रकार्यविचाणं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतयेशुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुरायदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तुं महसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वह बड़ा भाग वाला हो दासदासी और सवारियों के सुख पावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुख पावे क्यों कि इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बन गया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अन्त में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय ये जीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुआ था बहुतसा पुण्यदान किया परन्तु एक समय बहत सी मदरा का पान कर उन्मत्त हो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वश हो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोध कर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यान को बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादि का नाश करे क्लेश का अधिकारी हो हे शुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुख का नाश हो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्र में स्थापित कर वेदकी विधिसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मण को दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्ण हो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिर्दिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे
द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे
आनन्दंवद्ध तेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च
लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योद्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशद्वाविधिक्रमात् सर्वसौख्या
गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः
क्वचित् भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयात्नारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती
आशक्तञ्चविशेषता कामवेगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मयावा
क्वयश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यस[illegible]ोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेदीर्घनात्रकार्यविचारणम्
चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्ध तंदुक्ख विद्याचसौख्[illegible]दासदा सुख[illegible]च्छतियपुन्सशुभ
कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधी विनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिमुंख रामद्वयाद्ध
मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोकवे क्रमणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन
पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकृतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्ध प्राप्तीचदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्वं
पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज
कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिंवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टमवैद्यो
पायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानमजलेधेनुचकारयेत् गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्द्विज हवनंब्राह्मणं

भृ०स०

फलित

१६७

भोज्यंततःसौख्योह्यमाप्नुयात् मासेवर्षेसुखंज.तंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्मअन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घकार्यवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्यागोत्रेष्टितम् दासदासी समायुक्तपेव्यतेचासरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतष्यतेसदा वाहनादिसुखंसर्वे प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तं भ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण अहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीडापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः अहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णानसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुख पावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता होता रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता होता रह जाय पुत्र के सुखमें विघ्न हो और कभी कभी विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते करते उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभ वश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हे शुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पांच तोले स्वर्ण की गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र को विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेमसे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादोद्यु तेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयञ्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्टतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चिंतातुरोयातोलोकेनिंदामवाप्नुयात् लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनासिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यञ्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेअह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभवञ्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तंशोचवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्धोपितुकष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्रार्चनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसंयुक्तआशक्तश्चापिविव्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायाप्रपीडयन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतयेरामाब्देपञ्चवर्षाणिव्रणपीड़ाचदारुणाम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानञ्चकारयेत् आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत् कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षे राजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्रयोभविश्यति शोडशब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगश्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्य मात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेलोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मेणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिध्रुवंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पद्दगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायतेद्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणाघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवधिकाव्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहे सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मन्त्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े बड़े खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहे प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जन्म में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मन्त्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ताग्रग्रे फलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिक्षयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्ताधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचअंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यव्हारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थे मोदतेभुवि कवित्वमतिसञ्जात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंविकरे
धूर्तेनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररंरक्षणार्थायराहूपूजा चकारयेत् घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात् सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रे चविंशाद्धे वेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निष्टत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
वृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिध्दजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्धे वन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्टमे
वर्षेव्रणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच अंलविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमकादशेद्धे षुमंगलंमहमण्डले नवभूषणवस्त्रञ्चवद्ध यंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितेवर्षे ज्वरव्याधिरञ्चजायते
चतुर्दशाब्देसंप्राप्यबाणामेकंतथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्धे चदिशूचिरोगसंभवम्

मृ०स०
फलित
१४१

पुरायदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगसंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षंतथैवच मोदतेकांतया युक्तकामाशक्तञ्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे नेत्ररोगप्रपीडयन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंत्रयत्नेक्लेशदायो षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके आनन्दमंगलाचार किंचित्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणातले कदाचित्समयेकाव्यशस्त्रेणवातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षष्टत्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानञ्चवद्ध ते पूर्वयात्राभवेत्पश्चात्धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशांतपुरायेननानासौख्यमंगलम चन्द्रचत्वारिवर्षाणि सून्यपञ्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणवातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाणगतेवर्षेसून्यसप्ताद्धप्राप्तये मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसंतानयानञ्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्वलक्षणसंपन्नवातपीड़ाविशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् भाषा ॥ इस अङ्क की कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीन हो बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्त हो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला पुरुषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीन मन्त्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुख भोगे हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपति राजा की तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परन्तु कामवश होकर फिर वैश्या गामी हो गया और जप दानादिक क्रिया सब लोप कर दी और दीन साधु ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ काल में पुनः मन संगति से ज्ञान उदय हुआ तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में प्रवर्त हुआ तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्ग में लगा रहने से पाप का फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यः कामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुरणेन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धीनसंशय अति
मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
त्वतां साधवानांखलानांचसुस्वार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंभ्रातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसं[illegible]ः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपाल्यत
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकेवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः [illegible]ध्यमायुस[illegible]विदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारम्भ्यवेदवर्षेचपंचमे षष्टमेसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राङ्कतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत् आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत् दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

शतित्रर्षाणिपञ्चनेत्रञ्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभञ्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत् गुप्तशत्रुविरोधञ्च प्रत्यक्षंनैव जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभश्चकस्माद्धनमागम चित्तोद्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तञ्चमनोज्ञाता विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्ध चसुयात्रालाभदायक शरीरे रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकणिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचादिनेदिनेनवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुस्वरूपंचलुब्धके षष्टवहिगतेवर्षे सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वद्ध तेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्यगायत्रीवीर्यसंपुट ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलारायेव सिद्धतोनश्रमवर्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वेपौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबञ्चदानंचशांतये नंद पष्टमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्र के ग्रह कुछ विशेष वलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी कभी घर में पीड़ा करलावे भ्राता का सुख हो या प्रेमी मित्र हो खर्च विशेष हो कृपणता न हो सके एक जीव की चिंता बनी रहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्या बुद्धि विशेष बढ़े पुत्रों का सुख मिले हीन ग्रहके योग से काम अधूरा होता होता रह जाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्न हो अति परिश्रम करने पर भी मनोर्थ पूर्ण न हो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवा करे विशेष कार्य का अधिकारी हो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभ हो कभी विशेष हो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबू से बाहर हो प्राणों का भय जान पड़े अधिक दानमंत्र उपाय करने से अवस्था दीर्घ हो विशेष सुख भोगे पहले जन्म में ये जीव स्वर्णकार था स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छल करे अन्याय से अधिक द्रव्य लिया तिससे पाप का भागी इस जन्म में पीड़ित हुवा अति चिंतातुर रहे इस पाप की शांति के निमित्त चांदी के पात्र में स्वेत चावल भरकर उस में गुप्त स्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मण को दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवाये तो पाप शांति हो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहा वेदंफलभोक्ताभयाऽनघ त्रिग्रहद्धफलदंश्र ष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रश्चप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप
ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रे योह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीमु क्तोविशेषोलाभवर्द्ध नम्यत्नेनैवभोकाव्यबुद्धिनसुस्थि
रंभव उद्योगकुरुतेदीर्घंलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तक्रिश्रशत्रुवदाचरेत् प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं
असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचित्यसुस्थिरं नविसर्जने कामीकुतुह
लीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमेसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताढ्योगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचा
रणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोपिविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निंदतोमति जीवध्यामंचसंमग्न यौवनरूपचितन श्रेष्टकर्मप्रसि
चापिपरकार्यंचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्ददीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसि
द्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्धयनागयुग्मवेदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्धयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेसुसजातं भाग्योदय
विशेषत आदौद्धयोत्रिवर्षेच दन्तपीड्यज्वरादिकं बृणारोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे
उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्धद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय
विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंतादारुणम् अनुष्ठानमहादानं
महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषाद्धचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम्
द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि
नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्र
गतेकाव्य त्रिगवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारम्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नतः प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच
सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षा
वधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घंअजीर्णनष्यतिक्षुधा लवणाञ्चहरितिक्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि
शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वगृहसुप्रतिष्टित शत्रुपक्षविवादंचकार्य
भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोद्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य
महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रञ्चसर्वसौख्यांविता
भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य
समायुत नानामंगलंसंप्राप्यचित्तं आशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिंवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिंचचिंतनं अतःपरंसुखं
सर्वंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगति कर्मभेदेनभोप्राप्तसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

मृ० स०
फलित
१४६

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप
कराने से भाग्योदय हो जीव की चिंता मिटे परन्तु इस जीव की बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा
हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुँचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बात पर क्रोध
आ जावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्ब का पालन करे पराया काम मन से करे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न
रहे हट जाया करे काम की उन्मत्तता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र
ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता
तिसी कारण पाप का भागी हुआ सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंक्रूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य
सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ
जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थंविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा
चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वे दुष्टकर्मेणाविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता
हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंग्रकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि
विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुरायं सर्वाभिष्टफलप्रदान
नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः
पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनै उद्यमेनधनंप्राप्य
धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुरायं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः
धर्मवार्तासदावृत्तिसग्रतिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात्
भृगुवाक्यनसंशय पांडितंसंगतिप्राप्यशीलवृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ
द्वे षष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव
निजकृत्यमहलाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच
महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी
समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्वसंप्राप्यविंसवर्षाव्धिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

श्रीमान्विचक्षण:प्राज्ञ स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवित: सर्वसंग्रहतत्पर: मान्य:सर्वजनैपुंस:

चापिनिश्चितं सुमार्गेधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्य:सर्वजनैपुंस: सर्वसंग्रहतत्पर: स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवित: श्रीमान्विचक्षण:प्राज्ञ

कलाभिज्ञोनृपश्रय: अत:परंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरंनिर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससप्रीति:पितृभक्तसुतर्पित तुरगात्मनं

ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोऽहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं

देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय

चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते

भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुत: कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा

चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्ययशोनित्यंभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपच

रोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिवत्स: पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्ण

भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्ट हो बड़े २ कारबार रोजगार करे परन्तु न्यून फल कारक ग्रहों का दान

मन्त्र उपाय करने से पुत्रों का सुख और विशेष धन का लाभ हो किसी समय कुटुम्ब से विरोध हो धन खर्च में आये शत्रु नुकसान पहुँचावे एक समय

थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यम हो परन्तु चतुर विशेष हो बड़े २ आदमी इज्जत करें प्रतिष्टा पावे ईश्वर का चितवन करे अनर्थ की बात

पर ध्यान करे श्रेष्ट संमति दे बुरे काम से बचे श्रेष्ट मित्र में चित्त रहे खरचीला हो पोचबात न कहे चित्त में गुप्त चिंता रहे इज्जत का विशेष ख्याल हो

खर्च विशेष रहे एक समय प्राणों का भय हो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहों के प्रभावसे प्राणों की रक्षाहो सारी अवस्था इज्जत के साथ आनन्द में बीत जाय

दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मों से सुख पावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक

मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आ गया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर

गया तिसी से विशेष पाप का भागी हुवा सो इस की शांति के निमित्त काशी के थाल में चावल भर कर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी

उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढककर ब्राह्मण को भोजनादि से तृप्तकरे श्रद्धा भक्तिसे दान दे तो पाप नष्ट हो परम आनन्द पावे निश्चय सुखी रहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः बृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अ॰वंशप्रकाश्यंति श्वकुलंदीपकंतथा बहु
कीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्वश्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख
वर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशंसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्रंरक्षक्रोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच
पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा
भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्सअनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकत्यफलप्रदाः पितःधिकप्रकोपीचकामाधि
क्यवलान्वितः सुशीलश्चश्चचलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्टुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धन
युतःपुंसःमीननादपरंप्रियवृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत्
क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा
कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसंशयः शूरोथवाग्रामे
पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरंश्चतुरोनरः अविद्याजायते
क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमेद्वितीयवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगञ्चक्लेशिता पितुचिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम्
ग्रामाद्धनप्रलाभञ्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रुपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वेग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन
सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्यु
भीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुचिंतासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्वृद्धिदिनेदिने शुभकार्य
धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठअसंध्यासर्वंभविष्यति अष्टमाद्द्वादशब्देषुपितुर्लाभनसंशय

शुभकार्येव्ययोचापि यथालाभेतथाव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यक्षंनैवकथ्यते मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षेमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागी चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रियत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्टविंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः लक्षमेकंप्रमाणाश्च सर्वकष्ट निवारयेत् तदान्ते यद्दशायातितच्छृणुममवलभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परलोके फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्री के ग्रहों का बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनन्द भोगेगा और कुल में दीपक के समान चांदना करे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भले में रहे एक जीव में चित्त विशेष फंसा रहै नई नई बातों का चितवन करे है हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतु का पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थान के ईश की पूजन दान वंश की वृद्धि को अत्यन्त श्रेष्ट है गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होने से सब सुख पाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्ट पावे प्राणों का विशेष भय हो परन्तु पुण्य कर्मो के प्रभाव से पूर्ण आयु हो कहीं अकस्मात धन की प्राप्ती हो भूमि लाभ हो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भला चाहे मन की विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवान था बद्रीनारायण के दर्शन को जाता था सोते समय मार्ग में धन वस्त्र आदि चोर हर कर ले गये प्रातः काल उठ कर चोर के भ्रम से एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणों को मनेच्छा भोजनादि से तृप्त करे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादि से तृप्त करे तो सर्व पापशांति हो सम्पूर्ण इच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचिंत्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात
भयमागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणानूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुश्चततोलोके उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीर्घमुपस्थित्वा पुरुषथीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्येधनव्यय
सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगुप्राप्यंते किंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि
सुजनश्चापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यंकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणाम् द्रव्यआशामन
स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंसित
श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्ययदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानञ्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत् सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तं ज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तं सुयत्नत वृणवातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतनीयोविशेषतः जन्मतःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टबाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयत्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे
सुखंजातंमातृकष्टविशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारणा मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यासकृतोवालक्रीडनंचित्तचञ्चल वातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्बलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

मद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यंसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य
कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वंसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता
शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिततः सुतापुत्रसुखश्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनक्वापि
कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंआनंदंजायतेध्रुवं सप्तवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायते विवाहोमंगलंकार्यंआनन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घंभवेनूनं
सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवृद्धंतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वंकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणांशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम्
पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा
विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वे जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ
यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्वमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो
विमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति
माननीय हो स्त्री पुत्रादि का चिंतवन करे अपने कुटम्ब का पालन करे सारी अवस्था में दो बार विशेष कष्ट हो एक भारी अल्प आवे नया जन्म माने
फिर दीर्घायु हो धन प्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्च के काम आवें पूर्ण हों चिंता विशेष रहे सप्तमेश का पूजन
दानादि करने से स्त्री सुख पूर्ण हो काम संकल्प सिद्ध हो बड़े २ आदमी खातर करें जीव की लालसा बनी रहे अन्त में पूर्ण हो एक कार्य में हानि विशेष
हो दान पुण्य करने से तथा ईश्वर का भजन करने से पूर्ण सुख मिले हे शुक्र पहिले जन्म में ये जीव कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में
अति प्रतिष्ठित ओहदा पाया देवताओं का पूजन तथा दान धर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बन गया मृग के
तीर मारा वह बच गया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदय में लगा और मर गया तिसी पाप से अनेक क्लेश पावे सो इसकी
शांति के निमित्त स्वर्ण का पत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्ति का आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृत भर तांबे के कलश में गुप्त रख कर विधि पूर्वक
दान कर ब्राह्मण को दे और वस्त्र आभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे और विशेष भक्ति से ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्वसुख पावे ॥

मृ० स०
फलित
१५३

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान्
सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानञ्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतश्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र
कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरापाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाद्यादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितप्तश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्व भयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवेपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोत्तरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेतरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्रातिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकरे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत् प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टविंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तत्रिंशतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्ति श्चनूतनम् दीर्घकर्येसुखचापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकी र्तिश्चचित्तमोदमपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणां औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्ट त्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीता दिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोऽहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चनं नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़े पुत्रों के जोड़ों का ध्यान रहे कन्या भी हो वंशकी वृद्धिहो धनवान लक्ष्मीवान् परोप कारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबभी बुरा न माने बड़ा प्रतिष्ठित नामी हो कई वर्ष विशेष धन की प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्य की न्यूनता करने वाले आवें पुत्रों की चिंता रहे संतान गोपाल का मन्त्र वंश की वृद्धि को श्रेष्ट है लाभ स्थान के ईश की पूजा दान जाप से विशेष लाभ हो और पृथ्वी पर बड़े बड़े कौतुक देखे चिंता और भी हो अपने समझे वअपने कहे तथा समति के न हों घरमें कभी पीड़ा हो जाया करे एक अल्पभारी आवे प्राणोंका भय रहे आयु पूर्ण हो कैसा ही भारी खर्च हो कार्य हो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्ण होवे है शुक्रपूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मवंश में उत्पन्न हुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुर था राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्त हो गई तिसे संग लेकर प्रदेश को भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसी से पाप का भागी हुवा स्वर्ण के पत्र पर स्त्री की मूर्ति रक्तचन्दन से लिखकर बहुतसा धन तथा अन्न में गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दानकरके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनन्द पावे ॥

१ श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणाधिकप्रिय गुप्तचिंताविशषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य
नूतनमागमः दीर्घकृत्योवृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य
ग्रास.विचारोपिग्रकस्माल्लाभजायत पापकृरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति
वर्द्धनं चंद्रशोकस्थितोत चिंतसुखश्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीडयग्रकस्मात्यातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मग्रल्प
विशेषेणशरीरेकष्टदारुण ग्रचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत ग्रंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न
वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त
कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिह्वत्रुदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो
द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजाता भ्रातरस्वल्पप्रीतिकृत
महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषपीड्यंतेग्रभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमर्णांज्ञेयविपाकेवीर्य
नाशनं दर्शनेग्ररिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुर्चिंतावलीयसि तथापिसौख्य
संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तमेवर्षेव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयातग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं
ग्रष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रह नवीनोवस्त्राभरणांप्राप्यतेगृहमंडले दानंमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं
द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित ग्रंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं
ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत् तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेअष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत् कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि
भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंश मंदसौख्योपिचिंतनम्
शशिविंशाच्चत्रिंशाद्धे तन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन
भूयसेयंसुलक्षणा सासर्वसौख्यसंपन्नोप्यन्यथाभूयसेतुमा चंद्रामगतेवर्षेतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं
चापिव्ययदीर्घमुपस्थिते जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत्
तेनक्लेशविनश्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्भवेत् राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात्
नृपात्मान्मङ्गलसुखं रोगशोकप्रवर्तंते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दंमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं
सून्यवाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं
वेदषष्टाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञअकस्मात्मरणांध्रवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी
पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परम श्रेयस्कर है विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रों की प्राप्तिहो सुख मिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से
प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहे गुप्तचिंता बनी रहे धनका लाभ विशेष हो परन्तु खर्च बड़े २ लगे रहैं आनन्द भोगे बहुत से कार्य पूर्ण हों प्रतिष्ठा
बनी रहे बड़ी हिम्मत वाला हो सूर प्रतापी काम की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाय नीच कार्य बन जाय कहीं से आशा लगी रहै अकस्मात इच्छा पूर्ण
हो जाय पाप क्रूर ग्रहों की शांति से विशेष सुख मिले एक शोक विशेष माने जल भय हो या पावकसे जले चौपाये या उच्च स्थान से गिरकर चोट लगे
अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ठ सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक
ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो
महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को
पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

मध्यश्रेष्ठदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घंचिंतान्वितोभवेत्
श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् नारीचिंताहृदेगुप्तं शत्रुमित्र
हीनकार्यंभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत
चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम
पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत
नूतनंवार्तयाचिंत्यकामोश कोपि
सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमञ्चयदाकदा
गुप्तता दानमंत्रजपंपुण्यंसर्वदानंदसंभव सर्वंअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यंसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घं पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः

सृ० स०
फलित
१५७

सभायाञ्चपलोधीमान गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमान्विनयायुक्तज्येष्टभ्रातुप्रंतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धर्नाधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादञ्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाञ्चपलंज्ञेयंकलत्रंकूरकर्मिणाम् चतुष्पदात्तथारात्रौ
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतडागेनसदानंदभवेन्नरः आसिहेतुर्भविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभव नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेद्वेच
पितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेद्वेचसंप्राप्त चतुर्थेपञ्चमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्य वृणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पञ्चमात्षष्टभवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगञ्चक्रीड़िता
सुविद्यांपाठनोबालचञ्चलत्वञ्चविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यञ्चकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबंधयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक सून्यचन्द्रगतेवर्षेपञ्चचंद्राद्धकंतथा विद्याबुद्धिविशषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेचधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राङ्ककंकमः श्रेष्टहीनदशाभोगंश्चकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा
प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसीद्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायमानम् पुनःदीर्घधनंलब्धवाकार्यचिंतावलीयसी हीनकार्यंभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम्
सुयत्नेजायतेपूर्वेधनपुत्रसुखान्वित आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य
धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत् दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधि
काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिर्दिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम्
सून्यपञ्चावधिकाव्यचिंतनंचापिदीर्घता चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंदश्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत
पौत्रश्चमोदिता षष्टपञ्चगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णास्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गोदानं
श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणंजपेत् अल्पायुनश्यतेवत्सदा मंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिराश्योपिनात्रकार्यविचारणं
सून्यसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्र में ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वाला हो मध्यम
और श्रेष्ठ दोनों दशा भोगे किसी समय कहीं से धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहों के प्रभाव से चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान
रहे लाभ की सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक कामहीन बनजावे सो पीछे मन में बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों
स्त्री की चिंता का ध्यान तथा जीव की लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धन संतान का सुख विशेष भोगे कुल की रक्षा को संतानगोपाल का
जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ठ बन जाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी
और हिम्मत वाला हो बड़े २ दुख सुख भोगे परन्तु चित्त को दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी २ भ्रम सा हो जाया करे नई नई वार्ता
भोगे नाकिस ग्रहों का दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करते से आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था
हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का
विशेष अन्श खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्त दानदे गायत्री मन्त्र का जाप्य करावे ब्राह्मणों को संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

भृ०स०
फलित
१५८

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् भ्रमोद्रव्यविशेषेणाहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणासुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत् परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यवृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचित्त
चैत्रोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीडागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचिंतनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्तवाकदाचनं लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभश्चचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपीड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल
दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यच्चदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत् सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणाब्रत्वंजायतेध्रुवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाद्धमारभ्य
विंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलश्चगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

भृ० स०
फलित
१५६

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य
दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवह्निगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता
भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्यो
दयमहत्फललं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाद्गमारभ्य
नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्ति
ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागबाणाद्गमारभ्यवह्निषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद
सर्वदा सून्यसप्तशरोकाव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो
विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ
रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रों में लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहे धनका भरम विशेष हो सत्य बोले
असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोसी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में
चित्त लगे चित्त में समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घर में पितृपीड़ा सुतस्थान के स्वामी की
पूजादान मन्त्र करने से वंश की बृद्धि हो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईश के पूजन से विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा पावे
मनेच्छा पूर्ण हो हीन दशा में हानि भी हो परन्तु अन्त में सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू
नदी में नाव चलाने वाला प्रधान था नवका के कृत्य से बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक सेठ श्री अयोध्या जी की यात्रा को आया सो बहुत धन
नवका में भूलकर चला गया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्यकार्य में लगने वाला धन अपने घरमें धरा
तिससे पाप का भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवों में गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धि हो सब प्रकार के आनंद प्राप्तहों ॥

फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचखुप्रसिद्धं सुखीनरः धनाध्यक्ष
श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
इतिख्यातोगृहेद्रव्यश्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुःखदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथा।किंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो दशान्यूनयदागम्यवहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत् घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानञ्च
आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवह्निवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता विद्यारंभकृतोवालबृणपीड़ाविशषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलञ्चकुलोत्सवं
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा मानसीविविधा।चिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
नत्रनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत् आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत मानसीविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंप्राप्य
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने

सुकीर्तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्वगेकाव्य सून्यचत्वारिकिंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिमुख
उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्राती धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय
चंडीपाठञ्चकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहलाभंव्ययञ्चापितोद्रशीः जातिधनसुकीर्तिंचवृहद्भाग्योभूवितले
शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपञ्चावधिंक्रम नानालाभसुभाग्यंञ्च पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगवो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य
सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदञ्चगतोकाल कष्टपीडाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षे
सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकर्मेतिनूतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो
लभेद्भूमौमार्गोयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्वमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविप्राप्यकिंवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति
विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्वमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणकारयेत्कष्ट
शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं बिलम्ब से फल करेंगे बड़े भाग्य
वालाहो पिता अति प्रतिष्ठा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहैं श्रेष्ठकुल विद्यावान अक्ल तेज दूसरे की बात को तोले सत्या सत्य को पिछाने
एक जीव की आशा लगी रहा करे और जीवों के खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहों के दान मन्त्र जाप करने से मनोकामना पूर्ण हो भाग्य और वंशकी
वृद्धि हो ये जीव तरह २ के दुख सुख देख गायत्री का जाप्य कराने से घर की पितृपीड़ा शांतिहो कितने ही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान
दाता भोक्ता पुरुष हो हीन दशा में विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ठ दशा में अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्यारा है एक मित्र गुप्तवार्ता
वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरुषार्थ से पूर्ण हो है शुक्र पूर्व
जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके
तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्र का पालन किया हुआ था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र हे राज
अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित्त गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः अहाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्ध प्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशयं विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत् निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशाभनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमंत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टित कुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत् उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाक्रांति प्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेव्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडषाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायोगभर्यायोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजाजते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षे वामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रश्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यश्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा
वधिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्टिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वजातितोषयेत्
प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् बृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतर्महाकष्टंअकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं
भवेत्सौख्यंअग्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत् सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं उों नमोअकाल
पुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणेवजपित्वा
सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंश्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ
स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच
महोत्सवम् सुपुण्यंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि
विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी
शील स्वभाव वाला हो विद्या से बुद्धि विशेष हो कई बार धन इकट्ठा करे फिर खर्च हो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसा में रहे है
उपाय दान मंत्र से मनोकामना पूर्ण होगी और कहीं से धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में
विशेष लाभ हो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिकर मानता रहै पुण्य कर्म से सब सुख मिले भूमि लाभ हो मन्द्र की
नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भले में रहै कभी किसी का आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वर्ण था परन्तु इसके कर्म ब्राह्मण
क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुत सा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वश हो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसी से पाप
का भागी हुआ सो श्रद्धापूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवा कर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणों को जिमाय गुप्तदान दे तो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्विजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषतं दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि संपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तआत्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंसखुन्दरोमिष्ट भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिण अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत् दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम् उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त पिशून्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्कूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति दारुणम् कदापिकुमतिंप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मान्यधनंसर्वंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे त्वाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतेव्रणंज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्राता तिहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्वसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्विर्त्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टविजानीयात् पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहपिमंगलं कार्यवद्धं तेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुरायकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत् लाभाधिवयंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाब्दमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुरायशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणःखवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुरायंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुरायेणसून्यसप्ताब्दमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो दफे रोजगार की वृद्धि हो और फिर मध्यम हो जावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभाल कर रोजगार के काम करे परन्तु नाकिस दशा में चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनन्द में बीचे कभी किसी का आस्तीक न हो अपने कृत्य से निर्वाह करे एक समय ऐसा भाग्य उदय हो कि सर्व प्रकार के आनन्द भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त हों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपाय से सब शांत हो आयु बड़ी हो पुत्र तथा ग्रह सुख की प्राप्ति के निमित्त संतान गोपाल का जाप्य कराना श्रेष्ट है वंश की वृद्धि हो पुत्र पौत्रों के सुख देखे एक जीव में विशेष प्रीति हो हीन दशा में विशेष चिंता और क्लेश हो परन्तु अन्त शुभ दायक हैं सर्व प्रकार कुशल होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव कुरुक्षेत्रमें जन्म ले नगर का प्रधान अति धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेता था वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जान कर दे देते थे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्ष की आयु भोग मृत्यु को प्राप्त हुआ दान का धन भोगा ब्राह्मणों से क्लेश पाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्य की आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत
द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्मानीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह
दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंवद अल्प
कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रष्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक
उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोवार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुखित दातागुणगणेयुक्तसुशीलो
क्रांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां
तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगरायते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा
शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चकिंवावृक्षेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्मं
कीर्तिंगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो
भूयक्रूष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा
बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं
गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्वके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि
व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिंविशेषेमित्रतांव्रजेत् क्रीडितश्चविशेषणविद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशार्थं आदौयत्नमहत्फलं
सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राब्दकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणेजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राब्दप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षक्रमंतथा चित्तचिंताविशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोह्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चितंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्भयसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यपूर्वलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्बलत्वंचगुप्तता औषधिपुणययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिंकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पुणयफलोदयंवत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाब्दकेतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्या न्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधिंतातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुर्निधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि विलंब से मन की कामना पूर्ण हो रोजगार लाभ बढ़े युवावस्था में विशेष भाग्य उदय होगा बड़े बड़े रोजगार करे किसी से मिल कर धन का विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा बढ़े पश्चात में मन की अभिलाषा पूर्ण हो प्रथम बहुत जीव को दुख माने फिर संतोष हो जाये यह जीव विशेष छलछिद्री न हो और छल को पसंद न करे नेक नियत के रोजगार से पालन करने की अभिलाषा करे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्ति हो एक अल्प से बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहे फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े २ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीति करे किसी का बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी २ दर्द सा हो जाया करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जाति था अपने षट कर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथ को मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक हो गया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पाप का भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानु
रक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराद्ध्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः
मिष्टानलवणंभोज्यंपक्वमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत
शुभम् धर्मेणधनवृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्ठरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म
प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरो
धीचकृपणांजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वे परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर
पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते वृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य
परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि
तत्रापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मा
द्यत्नंचकारयेत् वृहत्गोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमात
महाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूम्रदानंचबालासद्यसुखंलभेत मिष्टं
मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहुक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान
महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण
चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोह्यानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहर
द्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहुद्रव्यव्ययोभवेत् बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविव्हल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणाहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिणा कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षा वधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णांसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुर्कितिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवर्णांचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि सुखंदीर्घदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुरायकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् सून्यषष्ठमितिमायुपुराय कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा इस कुण्डली में ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्ठा वाला भाग्यवान हो सब तारीफ करें सलूक करने वाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्य के काम करे भूके को दे ईश्वर का भक्त सत्यभाषण करने वाला कई बार बहुत धन प्राप्त करे रोगों से बचे सत्यासत्य को पहिचाने शरीर में फोड़े का चिन्ह हो कामदेव की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो जाया करे जीव की चिंता को गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्न किये अधिक क्लेश पावे धन का संदेह जीव की चिंता आदि हो गुप्त शत्रु विशेष हानि पहुँचावे शरीर में पीड़ा रहै काम होता होता रुक जाय तथा अधूरा हो जाया करे इस जीव को बड़े बड़े भारी खर्च के काम आवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव श्री अयोध्या जी के पंडा के घर में जन्मा बड़े बड़े दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिस से दोष का भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दान दे और अपने इष्टदेव का भजन करें तो सब काम पूर्ण होवें ॥

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदेस्थित अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्रराममितेवर्षेबाणत्रिंशाब्दकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुखितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् महामृत्युञ्जयोजपंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाब्दके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वावाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताब्दपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहुलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यत पञ्चसप्ताद्धिमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैवविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्पुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा न हो खर्च विशेष रहे रोजगार करे बड़ी हिम्मत वाला हो दूसरे की बात को तोले श्रेष्ट आमदनी में कुटुम्ब का पालन करे कैसी ही धन की न्यूनता हो परन्तु खर्च का काम कभी न रुके इज्जत से काम हो जाय चित्त में भयसा रहा करे परन्तु भाई बन्धु अपनी सम्मति के नहीं युवावस्था में कई बार धन की चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंश की वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहे घरकी पीड़ा का यत्न करे एक बार कहीं से धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मन्त्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्ण हो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्रि कुल में नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेना का अफसर था युद्ध विद्या में अति चतुर था एक समय संग्राम में बलवान शत्रु से हार होती जान छल से उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि दे दी तिस से उस राजा का सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पाप का भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणोंको विशेष दान दे तो पाप शांत हो ॥

मृ० स०
फलित
१७१

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्ठितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यश्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधश्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कारयेद्र्शरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणादानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणाचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुर्महाबज्ञ प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयश्चारीपापखेटातिदुक्खदं
रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोपधपस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणाशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वार्जितंधनयानश्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके
बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्ठाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेव्देतुशरचंद्राद्वकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य
व्याकुल एकांतेचिंतनश्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्वमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृबाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताऽद्भुतता विशेषो
द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंबृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणाश्रमोपिबहु
मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंबृहत्वोपिसर्वेपूर्णासुखान्वितः सुमित्रमेलनं
चापिमिष्टवाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं
पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअद्धं प्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो
रूपचिंतनं प्रथमेद्ध रुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देबृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य
दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागश्चनंदके बालक्रीड़ा
कनंदर्षतात सौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलश्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय
पूर्वदानंसुयत्नेनअल्पायुयोगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र
प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य
रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट
शरीरेचबृहत्वोवद्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च
तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदातेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो
दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणाक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं
प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

मृ० स०
फलित
१७३

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णंरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वंपुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हि गतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतसोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंति राजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथामंत्रप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्ति विशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्दईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहलाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चाब्धिकाव्यपौत्र जन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतसोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाब्दमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहना दिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चितकृतेपूर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्या... .रीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्त मितिमायुभुञ्जीतोपुण्यमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े २ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनी रहै परन्तु खर्च के कारण धन जमा न हो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसा ही भारी काम हो ईश्वर की कृपा से सब इज्जत प्रतिष्ठा के साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जत करें किसी से तृष्णा न रक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन न रक्खे परकाजी हो श्रेष्ठ रोजगार करे कई बार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रों से मेल रहै मिष्ट वाणी बोले किसी को कठोर वाक्य न कहे बहुत निष्प्रयोजन न बोले पंचम स्थान के ईश की पूजा और दान मंत्रादि से पुत्रों का विशेष सुख मिले जीव की आशा पूर्ण हो अल्पों के दान मन्त्रादि उपाय कराने से आयु की वृद्धि को श्रेष्ट है हे शुक्र पहिले जन्म में ये ग्वालवंशी था विशेष धनवान हो कुवां खुदवाता था तिस भूमि से परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होने से कुछ द्रव्य राजा ने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रम से प्राप्त हुवा धन पुण्य में कुछ न लगाय सब भोग में खर्च किया तिसी से पाप का भागी हुवा तिस निमित्त भूखों को अन्नदान दे ब्राह्मणों को तिलों में स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवांछित फल मिले धन संतान की वृद्धि हो ग्रह पीड़ा शांत हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभाग्यवृद्धिश्चजायते पापक्रूर
ग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं
भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यंसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं
मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीर्शमानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्मा
द्वयमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णंभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जीतोकर्म
बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच
चोरभीतोपिगुप्तता आदौसौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र
सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतबाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेचव्रणविस्फोटकादय मातृ
चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टंविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा
मनंदिता सुवर्णरजिताभर्णांवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा
बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगश्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ
विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो
कामाक्तं शिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्रार्कमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य
निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षेसुखं
प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तं मित्रतांव्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्यं मात्रप्रसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंप्रदत्तेभूमौतातमातोतिहर्षित भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवआशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षे भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले बृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितो यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामं वापिकामन्द्रं दासदासश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े २ भाग्यवान ग्रह पड़े हैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यून सा कर दिया नहीं तो पृथ्वी पर बड़े २ आनंद भोगता सो अब भी पाप ग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा आदि करने से फल प्राप्त होगा जीव की चिंता मिटेगी शुद्ध चित्त से मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ट फल की प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी ये जीव लाभ के उद्योग में रहे परन्तु मरजी के माफिक कार्य विलम्ब से बनेगा और काम की सिद्धि होगी बड़े बड़े खर्च सिरपै झेले घर में पीड़ा क्लेश हो जाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ न हो सके मित्र में मन फंसा रहै और शुभ काम में विशेष धन खर्च हो बड़े २ फिक्र और आनन्द देखे एक समय नया जन्म हो चित्त में नई बात सोचे मित्र की और लाभकी बातोंमें चित्त लगारहै यत्नसे आयु पूर्णहो हे पुत्र पूर्व जन्ममें ये जीव शिव मन्द्रका पुजारी था चर्स भंग बहुत पीता औरों को पिलाता एक समय शिवरात्रि को फालगुन के महीने एक राजा ने शिवजी के निमित्त स्नान करने को स्वर्ण के घट प्रदान किए सो कुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेच आया उसके धन से खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणों को प्रसन्न क मनोकामना पूर्ण हो

मृ० स०
फलित
१७६

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्ठकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुरायकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूंजत रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधितत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुरायेनशीघ्रसौख्य मवाप्यते भागवृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगराभगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्वमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यंवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्वके तथा ग्रहकष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सूर्न्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिमुंख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चितवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुर्भाप्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्म पत्री में जो ग्रह पड़े हैं उनका यह फल है उच्च पदवी पावे किसी के चित्त को दुख न दे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वाला हो कैसा ही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्य न माने अपने लाभका ध्यान बना रहै चित्त में प्यारे मित्र की याद बनी रहै उत्तम आजीवका से पालन करे बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत से मनुष्य इसकी आशा में रहैं अच्छे २ वस्त्राभूषण घरमें स्थित रहैं एक समय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सो कुछ न समझे पुत्रोंके विशेष सुख और लाभ के कारण संतान गोपाल के मन्त्र का जाप्य कराता रहै तो वंश की वृद्धि हो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी २ बिना प्रयोजनभी भयसा होजाया करे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछ पीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दान मन्त्रसे शांतहो हे शुक्र पूर्व ये जीव ब्राह्मण था अत्यन्त प्रतिष्ठा और धन प्राप्त किया ज्योतिष विद्या में निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिका ज्ञाता दानपुण्य बहुत लिया संतान न हुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वो धन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागी हुआ तिस निमित शिवजीका पूजन करे मन्त्र जपे गायत्रीके अनुष्ठान करावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

ज्यो० स०
फलित
१७७

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेत्तद्धिजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्टआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवतसअकाणेभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तं विशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यंपत्नीलाभभविष्यति ।विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलञ्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्टतिगेहेकार्यमात्रञ्चसिद्धति त्रयोदशाब्दमारभ्यविंशवर्षावधितत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनैं विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रञ्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तं विशेषता मानसीविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यंचिंतनम् शशिविंशाब्दत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोल्लानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपाल्यतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित वुलवृद्धि
धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्येधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेग्रद्ध प्राप्तिविनाशनं ग्रहपीडाविशेषेणशांतयेयत्नतसदा पिपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांग्रन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेल्लाभंचित्तग्राशासुपूजितं वृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्टित व्ययकार्यविशेषेणसर्वंपूर्णंभविष्यति
शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चित्हानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनस्थितेमनः ग्रानंदेनगतेकालग्रकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
ग्रल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्य नंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीडायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत् भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टश्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतथा विद्यारंभकृतोचापिग्रंकाभ्यासश्चवर्द्ध नबालक्रीडाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलवंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाब्दमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीडामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोवरिभितिश्चनान्यथा ग्रन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्यं
तातमातग्रनन्दिता नगचंद्राब्दमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च कार्यमात्रोभविश्यति ग्रनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घव्याधित्रशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति ग्रानंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे ग्रकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहारोगंनिशानिद्रानप्राप्यते ग्रापदुद्धारणेजाप्यसर्वापत्तोविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागत स्वगेहोराजतेपुसमान

मृ०स०
फलित
१७६

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आप दुद्धारणेमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणांदत्वामहामृत्युंञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतसर्वकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुल बंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाक्षये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखं लोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाद्धमागम्य शरचत्वारिचांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्य भूयसे सुतपौत्रसुखसर्वंजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधितत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके सर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदैवानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वं आशापरित्यज सून्यसप्तगते वर्षेआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताद्धमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

।। भाषा ।। इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहे कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा में ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहे तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहे चित्त में कपट न हो आनन्द में रहे एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहे अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ।।

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवर्षादिअष्टमे व्रणाव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविव्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भगनीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगश्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राद्वकेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुंसमंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतश्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगश्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानश्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्यय:लाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामश्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यबाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तश्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टश्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्रराममितेब्देचबाणराममितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयात्स्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ॐऐंह्रींक्लीं

भृ० स०
फलित
१८१

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्राप्तिनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मणाअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा नुसारणः बहुहिंसाबधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणंददेत् व्योमबाणाद्ब केवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्बकेशुकव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्त मितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापित हैं तिनका ये फल है कि बड़े भागवाला जीव हो कुलदीपक हो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बी हो न्यून कारण से चिंता विशेष मित्र से मिलने की इच्छा रहै दो समय धन की विशेष प्राप्ति हो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थान के ईश के कारण चित्त हट जाया करे दो ग्रह बलवान पड़े हैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य ब्रथा हो लाभ होता २ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभ के कारण एकादश स्थान के ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्प से नया जन्म हो ३४, ४४, ५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसी का बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्च झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था सो मृगों की बहुत सी हिंसा बनी तिसके शाप के निमित्त ये उपाय करे स्वर्णका पत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्प नष्टहोवे वंश की वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यवादीभवेत्बालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज
रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घआयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति
आशक्तया दीर्वकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमात
सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम्
वृणाव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसंदेहो
पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं
प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाब्दमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते
पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकलाभमगुप्तधनश्चलभ्यते कार्यलाभश्चदीर्घोवागुप्तचिंता
शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति
नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्धकेवर्षेबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच
प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अतितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट
विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मातउपद्रोवाजीवचिंताच
प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥शुक्रोवाच॥
केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥भृगुवाच॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गव:

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्त्यर्थिमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थंहेतवे एवंयत्नकृतेवत्सर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशय पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेऽब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणागवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुण्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घर में मंगलाचार खुशी जीव का ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थान के ईश की पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्ति हो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिल जाय अवानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिस के शाप के कारण जीव की चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवं ग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात् भाग्य
वृद्धिविशेषेणामनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम्अर्थप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो
वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलसेदृष्टा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतियष्टा रोगञ्चप्रथमेवर्षे
द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेबृणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग
संप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम्
नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् भृगुवावयनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र
वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय
शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते
तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येव.जपित्तेनपीडनम् ॥शुक्रोवाच॥ केनदानेन
पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम्
पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत् साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण
संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यरामर्मितेतथा शरलोकाद्वकथ्यंतेबालवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा
होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मातउपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्वकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज
द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति
चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्यय

भृ०सं०
फलित
१८५

नसंशयः षष्टवेदाङ्केवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति
क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति
नसंदेहोभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः
गोधूमगुडसंयुक्तं बारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनं भवेत्ततः
चंद्रसप्तमितेद्धे चवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवंम्यांच भृगुवारेण
संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णाआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी
अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की
वृद्धि विशेष होगी मन की कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने
की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु
सब काम इज्जत के साथ सम्पूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे
हे शुक्र इस जीव के सब कार्य सम्पूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे
हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत
समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण
जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

भृ०सं०
फलित
१८७

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोत्मा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः
अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि
लाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं
वाच्यंबालवृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनरंभयो बाल
क्रीड़ाकिलोलञ्चजीववृद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठञ्चविद्यायांअंतविद्या
विसार्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रञ्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रवर्षगाथाचकथ्यते तातलाभ
भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनञ्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम्पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते
भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र
मितेतथा दीर्घलाभविजानीयातसंतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते
दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेद्वेचव्योमराममितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र
पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः चंद्राममितेवर्षेबाणरामितेतथा
अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापञ्चभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा
नुसारण गौवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः
सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीड़नम्पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

कारयेत् पूर्णयत्नेनभोकाव्यानश्रमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वा अग्रजन्मपुनःपुन चित्तचिंताविनश्यतिंदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मेस्थितंयदा मा सेमा सेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यंधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदातश्चशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसा विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेद्वे चगृहषष्टमितेतथा सुखदुखश्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले स्त्रासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु के पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ठ है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्य करे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ठ है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालवंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश हो कर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित हो कर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्ण के पत्र पर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो जावे और धन की विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेद्वे ज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णादेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिल्लोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंम : तातलाभधनंवृद्धिबालक्रीड़ाकिल्लोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समवालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेद्वे चबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वंकष्टविनश्यंति
आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेद्वे चत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एतत्वर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्रराभमितेद्वे चशररामभितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाद्धकेवर्षे बाणवेदमितेतथा

मृ० स०
फलित
१८६

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रहमंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूम्रकाणिकानिचः धर्मकार्यंभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनश्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखश्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचार येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफ वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखश्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णा पत्तेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहै पश्चात् आराम मिले अल्प बीच कर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मन से करे किसी की आतमा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ठ है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्ठ है मित्र में विशेष मन रहे मीन रेखा हाथ में श्रेष्ट है एक बृण का चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्ट है किसी के चित्त को यह जीव न दिखावे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पं गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्विज
रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घग्रायुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता
सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कार्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिग्राशक्तया कस्मिन्कालश्रुणुशुक शीघ्रोवीर्यखंडिताम्
दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा
परिभाषितः तृतीयेग्रष्टमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति ग्रल्पजीवीचबालकः
वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेत्र ततातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा
विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा
भग्निग्रल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् ग्रादपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक
द्विरागमनन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालग्रागतः पत्नीगर्भनसंदेहोग्रल्प
जीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चंद्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा
पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिग्रानंदभूमिमंडले जीव
चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चंद्ररामभितेवर्षेबाणरामभितेतथा शून्यवेदाङ्कशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो
भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त
नान्यथावचनंकवे सुतग्रर्थग्रनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चन्द्रवेद
मितेब्देचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाङ्कमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः ग्रकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वंजपमंत्रसर्वविघ्नोपशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनव्ययंमिष्टबाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीन्नरः चंद्ररसमितेब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजद्वाराजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्मत्यधियौषधी सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधवंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की कुण्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे अनर्थ से बहुत डरा करे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ठ है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमान सी हो जाया करे एक समय अचानक विरक्ति रंज सा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ठ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्राम पति जमींदार था दान पुण्य भी विशेष करता था एक समय इस जीव ने हवन करके यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमित्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष वृद्धि हो और मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और सुख पावे ॥

मृ० स०
फलित
१९२

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंब्रजेत् दानीमानीभवेत्पुंससुतदारासमन्वितः देवद्विज
रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचेतीक्षणः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ा
ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहश्चजायते बृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्रात।अथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात
महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यग.थाचकथ्यते
कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो
बालक्रीड़ाकिल्लोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्ममितेतथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येचसिद्धति
द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च
चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरबृषमितेतथा व्योमरामाङ्कमध्येतु
सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुचबालकः
चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मात्महत्प्राप्ति
आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रामाङ्ककेवर्षेशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र
समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयात्उच्चपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़।व्याधिवृद्धि
प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण
वेदाङ्कतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्दिरकंवासअकस्मात्उपद्रवम् धनंव्ययं
विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यम्घृतखांडत्रिधातुकी

भृ० स०
फलित
१९३

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधातुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वंएकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च
कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पमर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति
भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादश्चधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन्
अनचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्वीर्यंप्रतिष्ठोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकंगौलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान
वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगायाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रगौत्रसमायुक्तोपञ्चईशोविपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो
वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्राचगवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध
कटुवाक्यंतुधानृणाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह
अति श्रेष्ठ हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन को प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने
वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष वृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है
उसकी पूजा से वंश की वृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उसका उपाय जो कुछ लिखा है सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो
चित्त में अनेक २ प्रकार की वार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से
पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीव का दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा
ऐश्वर्य प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ठ फल भी भोगे
और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवा कर और तांबे के कलश में घृत भर कर
मूर्ति प्रवेश कर और रात्रि के समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ठ है निश्चय करके वंश की वृद्धि हो
और हे शुक्र उस जीव की स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनी रहे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्ठजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोग्रसत्यवचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच
कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये
पत्नीत्रसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरि
भाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये बृणाव्याधीशरीरेचउपरश्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणानसंशयः तातमातमहाक्रोधी
प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताक्विचित्कालोपिग्रागत तातलाभनसंदेहोजीवद्वृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा
विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतिश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त
चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति
महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडितपितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं
चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नोगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं
कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये
मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषिनः चंद्ररामामितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्वकंमध्येसर्व
गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचितवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिंनेदिने प्रदेशोगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयातगुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयमअन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मातउपद्रोवाकिंचित्
कालशांतये चंद्रवेदमितेद्वेचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तय देहकष्टज्वरं
व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयंजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणाचसंकल्पं श्रद्धाचब्राह्मणंददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

मृ० स०
फलित
१६५

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानञ्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापकू रग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ भवेत्शुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्री का फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान् पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेष रहा करे और हे शुक्र इस जीव का खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहे और पंचम स्थान के ईश का पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो भ्रात योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीव का दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युंजय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहे चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्ट है विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्यों कि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवा कर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतः श्रीमान्जन्मवाधाविधानतः
सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया दीर्घकार्योपिश्रागत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति
नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं
बृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्रथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं
सुफलंतथा अष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा
परिभाषितः पञ्चदशेअष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते बृक्षोचपतनंज्ञेयंअथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते
कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिअल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः
निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिंता
शरीरजं षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्ययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र
जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यअनुष्ठानयथाविधिहवनंब्राह्मणं
भोज्यंवस्त्रआभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणआनंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य
प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते आनादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडच्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती
मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो
वत्सश्रेष्ठकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः
पापनहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चआकारीसर्वआयुहर्षकम् पूर्णआयुदशरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारात्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभवि
ष्यंतिगुप्तधिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवाकिंचित्कालशांतये
चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥शुक्रोवाच॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिर्मुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥भृगुवाच॥
अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकाम
बीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा
पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तिततपरः धनंव्ययंशुभाकार्यंमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिच
तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहे यह जीव धन का उद्योग बहुत करता रहे और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ठ फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य वार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की वार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुल में चित्र गुप्त वंश में था और हस्ती घोड़े वाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्याय से अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सर्वस्व जाता रहा सो पंडा ने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिस के कारण स्वर्ण का पत्र बनवा कर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

मृ० सं०
फलित
१९८

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणिय: शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र
सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणाज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यातगुप्तचिंताचमित्रता दशस्त्रीशुभयानजे सोमकीर्ति
कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रश्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितियेव्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो
ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलवंधु
विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलश्चआनंदभूमि
मंडल तातलाभविजानीयातदेहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं
पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखञ्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा
चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणश्चसुताजन्मन
संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयातमन्त्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे
व्योमरामसमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टञ्चफलमाप्नुयात पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये व्रणव्याधि
शरीरेचचिह्नदेहस्यदृश्यः शुभकार्यंधनव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते
चंद्ररामसमितेवर्षेबाणलोकमितेतथा सून्यवेदाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वेविघ्नो
पशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्ष
शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः
किंचितकष्टविजानीयातऔषधोमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोच्चितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यमप्राणगवनोनसंशयः ।। भाषा ।। इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केन्द्र में श्रेष्ठ होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहे चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह मैं एक काम काबू से बाहर हो नवीन वार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईश की पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैंकड़ों चौपाये और सैंकड़ों मनुष्यों का पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैल का अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनन्द भोगता रहै ।।

मृ०स०
फलित
२०१

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रिया शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख
दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति
कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो
जातारेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभग्नीभ्रातृप्राप्नुयात् तातणनमहासुखंजीवनंसुफलंमम: मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित
अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच
औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा
मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने
कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच
कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्त
व्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा
इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्ररामिमितेवर्षेबाणरामिमितेतथा शून्यवेदाब्दमध्येतुसर्वगाथाच
कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र
दानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण
कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगत्रनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणानान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशरबाणमितेतथा व्योमरसाब्द केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मातमहाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायमम्नवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नञ्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणञ्चनसंशय ।। भाषा ।। इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बलवान् आनकर बिराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े २ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बच कर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े २ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश हो कर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में हो गई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीव का अन्न घृत्त वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ।।

मृ०१०
फलित
२०३

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचश्चलोबालजननः प्रमोदीमत्यवक्ताचग्रसत्योबचनंव्रजेत् दयावंतसमादृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्ष महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिंकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिग्राशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेदर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तृण व्याधिशरीरेचभूतछायाचविह्वलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिग्रल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्यधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीति ममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानी यात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानश्चशांतये पापकरग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाद्धवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमि मंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्ररामभितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाद्धकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते अर्धआयु गतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययो योगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाद्धकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमा मंत्रजाप्यश्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्यनतथाविप्रपूजयत् नवीनोत्रार्तयाचितवाहनाद सुखंलभेत् चंद्रबाणामितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वेविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यलाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगवनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णंश्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तददेविप्रसंकल्पंनृपतिंकुरु आचार्यदानदृष्टस्या अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योग का यह फल है कि बड़े २ खर्च के काम सम्पूर्ण हों प्रथम तो

चित्तको खर्च का भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बोझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीव की आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक वार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हानि हो चित्त में भय सा रहै फिर धन की प्राप्ति हो स्त्री से प्रीत और घर में पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्प से बचे जीव का दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पण्डा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकसहस्त्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुःसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंप्री।तत्रानंदं भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्त मानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिंताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग वृणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशषोडशेतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्चविद्या प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान् चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यंकृतेनसंदेहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीडायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यंव्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये अकस्मात्उपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत वृणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्ररामामितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य वेदाङ्ककेमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि प्राप्तये वाणिज्योकार्यंकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्रभूमिमध्येचस्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्तवैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

मृ० स०

फलित

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेत्रर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलंग्रहकष्टविजानीयात् व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवासकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवाररामितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रांफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगमनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि इस जीव का चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं किसी का बुरा नहीं चाहता सब का भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एए ब्राह्मण तिस का मित्र था कुटुम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मर गया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिस के निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्र की वृद्धि विशेष हो कामना पूर्ण हो पिछली अन्त आयु में विशेष सुख भोगे सब के भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र
पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्ठमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णानसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षे ज्वरपीड़ाच
रेचनं मातृकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारकंतथा आदिपठनञ्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति
कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यधनव्ययः
तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा
किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोतिपत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ
विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय
मध्यप्राप्तिविजानीयात तातचिंताचमातकंगुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तयानानालाभकंप्राप्तिभाग्य
वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंतिभृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलंपापकरूग्रहापूजा
लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा
यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्ररामभितेवर्षे बाणराममितेतथा
शून्यवेदाद्वमध्योपि सर्वग।थाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रुपक्षविरोधीच
धनमुद्राव्ययवृथावर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मातमहाचिंता देहक्लेशभविष्यतिगुप्तचिंता
शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

भृ० स०
फलित
२०८

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात् व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधीचधनं व्ययविशेषत शत्रपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्वता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्ठा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनन्द दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तात का धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घर में मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तात को लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्ट है नहीं तो जीव की चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वाला हो इन्द्री में पीड़ा काम की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े २ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्प से नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनी रहै तिस निमित्त तांबे के कलश में घृत भर कर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंश की वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्ति से जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहुभागीचबालकः दीर्घकार्यकृतेजीव सर्वकार्यञ्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने
देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रप्रीतिपरुपकारी
सुतदारादयान्वितः पूर्वंआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यातो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेव्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह
विजानीयात ज्वरव्याधीचरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकंबालक्रीड़ाकिलोलञ्चभग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये
व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात् बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच
प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः
सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त
वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यतेशुभकार्यं
धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रराममितेवर्षेबाणराममिते
तथा शून्यवेदाद्वमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा
पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंतथा
शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेव्देच शून्यबाणमितेतथाचंद्रअल्पदुखंशुक्रदानमंत्रञ्चशांतये
करमानञ्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्यंभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखावहं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णाविजानीयात् व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथाव्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धन का मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्टा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडा जी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर गृहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगश्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी
नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योंपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामीदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति
विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिराडले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतबनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पश्च
प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं
कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगश्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं
भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुखिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगश्चप्राप्तये अल्प
विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरश्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रश्च
मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं
जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मात्उपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र
मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता
शरीरजं कार्यमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं
चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल
उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशश्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलम् मासेवर्षसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

भृ० स०
फलित
२१२

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगञ्चप्राक्षये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढ़सुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बहुत उम्दा आनंद से अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदान्त मत हो स्त्री को चित्त में पुत्रों की लालसा बनी रहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभ की वृद्धि हो अकस्मात् प्राणों का भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर न रहै गुप्त धन मिले शत्रु हो जोर न चले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तट पर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियों की चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखत में पंडित साधु मन में कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतान की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्टहो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत
समादृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतः पुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेऽब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणांकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेसंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवीनो
कार्यकंचिताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यंधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्राममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभमशुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंक्रियतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रुपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यंधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथावेदसप्ताद्धकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयातप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रताप के बैठे हैं मन का गुप्त भेद किसी को न दे विद्या से बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीव की तृष्णा बनी रहे परन्तु संतान निमित्त पंचम ईश की पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालों को दुखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजनदे तो धन संतानकी वृद्धिहो चिंता मिटे मनोकामना पूर्णहो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चश्चलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चश्चलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशीलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेऽदेज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेऽदेचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोत्र्यंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुर्किंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चंद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेऽदेचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यंतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यञ्च

मृ०स०
फलित
२१५

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत् धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणक्रियतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखश्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षेषट्रसआद्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपत्तेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो सत्य वचन बोले श्रेष्ठ जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह तरह के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेष हो अकल तेज हो दूसरे की बात को तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनि का मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे का हो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी काल में खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काम में खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूह का सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दण्ड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमन ले और भोजन जिमावे दान दे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
२१७

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्ठश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् बृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत् अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घ
सुकीर्तिचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्यः
पुनरन्तेसुरक्षण पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेववह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविव्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनंदकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंतरुजंसर्व
विनाशनं वेदवर्षाचपञ्चाब्देषटमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलंजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचितोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारभ्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिक्वपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेललनाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापादुक्खंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

मृ० स०
फलित
२१८

पुरायभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योहर्षंपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं ग्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः न.नामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूर्यंतेबहुचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखीलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणंश्रेष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये बृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुक्खिता दानपुरायसुकर्मेणसर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुरायकर्मणात् नगवेदमितेवर्षे शशिपञ्चाद्धकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपञ्चां तरोकाव्य व्यालपञ्चाद्धमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वे प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टमतिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह श्रेष्ट है और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुख दुख देखे इज्जत के साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीव की चिंता रहै छल छिद्र से जले सत्यासत्य को पिछाने किसी का बुरा न चाहे हीन दशा में फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्ति से रहै आनंद मान कर बिताये एक अल्प से प्राणों का भय हो सुयत्न से प्राणों की रक्षा हो पूर्ण आयु भोगे तथा लाभेश के पूजन दान आदि से विशेष लाभ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ग्वालवंशी था बड़ा धन पात्र था मथरापुरी के समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकार का आनंद पाता था एक समय भूलवश हो ग्याभन गाय को ताले में बंदकर चौरासी कोस की ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मर गई आकर देखा तो अतिशोक माना बहुत कुछ दान पुण्य करने पर भी पाप का भागी रहा सो स्वर्ण की गऊ बनाय दान करे तो मनेच्छा फल पावे धन संतान की वृद्धि हो ॥

मृ०स०
फलित
२१६

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो
नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण नविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ
चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यंविशेषेणसर्वपूर्णो
भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षसौख्यां
वितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो
भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले
धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता
वृणबाधा नसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालवृद्धिर्दिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च
मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदंमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण
तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेसंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदवृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतेमहोत्सवं विद्याबुद्धि
वृहत्वोपिचचलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टवाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल
दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनद्रष्टव्या
लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणांवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य
कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता
सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत् कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुरायकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहेमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाब्दमारम्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावत्कालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चंद्रचत्वारिवर्षाणि तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात्नृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान पुरायप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणगतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु सारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुरायकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाब्दमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवर्दिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इसकुण्डली का फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवान हैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सब के भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े बड़े खर्च के हैं सो चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दोनों भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा पूर्ण हो बड़े बड़े सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रख कर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रश्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षणा युवावस्थासुखंप्राप्यवृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चित्तंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापकूरग्रहापूजयेकृताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनीतश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदाराःतिचिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रश्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टञ्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्ववाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेबृणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णांप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भियसंभवः उद्वाहश्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगचित्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परश्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोबृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैव्येश
जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहेगीतवाद्यमनंदिता मध्यल।भव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाब्देसुता
पुत्रमनंदितालाभबृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनंसत्यवादीगुरुभक्त नृपात्भामान्यभवेत्सदाद्विजदेवसुभक्तिश्च विचित्रोवाक्यंत्रवीत्चत्वारिंशा
वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुग्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहूसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित बृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाद्वसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्वं
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादञ्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेञ्चकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वेपुत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारविनिमुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख
महत् प्राप्तेचंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति सर्वकर्मानुकूलञ्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है प्रथम मध्यम भाग्य हो पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मन की बातें कहै तथा एक जीव की चिंता से क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हरा भरा बाग कटवा दिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुत सा स्वर्ण भर के दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्टबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाग्रधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते
भौमपुञ्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा
काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदमंगलाचारं जीवहर्षश्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन्
दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं
सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णाविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णायु
तोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिमुखः व्रणचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्य
प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले
जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालवृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता
विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्वत्सरोवृद्धि बाल
क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाद्धके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल
चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षणा किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य
आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभ
व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदातेबहुमोदिता शशिचन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्राय
चितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र
तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिंच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणंजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टनाश
नं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिर्चिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुरायेन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाद्धमायात शर
विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले बृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे
सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा
द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं
बुद्धिसम्भव रमविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण
चितचिंताव्ययपुरायं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलारायेवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्विंत्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंग
लंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौद्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णाविकारेण महादा
नेनशांतये चत्वारिंशावधिंतात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं
विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति
विशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं वन्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वे स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत
श्रेष्ठ और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फलनहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगलकेतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और
भाग्य की वृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय न बनेगा मध्यम लाभ हो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार
जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च
और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रतापसे आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशामें कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे
किसीकी बुराई निन्दा नकरे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघात हो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ
दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा न थी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म
भोज आदि न किए एक ब्राह्मणका गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज करानेसे धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मो जीवश्राशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलवृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तश्चशांतये कृष्यदेहोपिदृश्यंते भूतछायाश्च
विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालवृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालवृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमंगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वे भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्वमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भाविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वे यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवह्निगतेकाव्य तथाचपंचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुआगम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्
सर्वेषांशुभचिंतकः दानमन्त्रसुपुरायेन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वमिदंज्ञात्वा नकदाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्द
केतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलकार्य सुतापुत्रश्चमोदिता सुत
कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तञ्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसौख्या
धिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवधिततः द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददी
र्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशगंत अन्यसर्वसुखंदश कुलभाग्यविवर्द्धनम्
पञ्चपंचाब्दमारभ्य शून्यषष्टादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंबत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे
सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यसाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे
मतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रस
षष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्र का ऐसा
फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहता है
गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा हैं होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है
और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी
अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से
विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के ब्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा
एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन
लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान दे तो पाप शांतहो परमसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव
यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं
नूतनाजन्ममरायते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं वृणाचिन्हञ्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम्
उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि
प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानमन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता
विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मञ्चमोदिता आदिवर्षात्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलंसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे
विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सयत्नशांतिसर्वदा वेदाद्व
पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः
अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य
षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च
चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यश्चद्धिविंशादनंतरंक्वे कामक्रीड़ाविशेषेण
लोकाचारञ्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं अहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता
प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सतापुत्रसमायुक्तो
लाभकृत्यविशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोह्यानंदतोपिर.ाद् बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्य सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र
चिंनागतोग्रप्नं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

मृ० स०
फलित
२२८

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्य सिद्धिमनंदिता रसरामाद्वमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यञ्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायोपात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पञ्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्वकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मने च्छापूर्णंतोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रञ्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्व्ययमागम शशिपंचाद्वगन्तव्या शून्यषष्टांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदारुण रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्तो वह्निसप्ताद्वजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव की मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसे करे किसी का बुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधुब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियोंको भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्ट हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान् चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्टईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यंतेगूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनद्रश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्टाभंगचिंतयेत्
जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमतमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभअकस्माद्धनप्राप्नुयात् मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षंप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्व
जायतेकुलदुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरंआयुपूर्णपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घंटाकर्ण
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणाकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्ततथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिःसद्यशांतिभवेत्तेनआनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स
तथाचसरचंद्रकेविद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्वाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागीचबालक षोडशाद्वसमारभ्यतथाविंशाद्वमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िताबुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमेश्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपञ्चविंशाब्देतयोरंतरधनांगमद्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूर्जितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितोरसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावलीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यक्षंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्धयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्ठित पददीर्घमु
परिथत्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलंप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो
दीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्बत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च
वाहनं तीर्थयात्राजपंपुरायंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे
तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुरायेनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद
त्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेषेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय
ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवाग्रामभूमिग्रहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता
मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारम्भ्यवायुकोषोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत् सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा
रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य
प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुरायकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर
बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्र हो लाभ मध्यम रहे काम
होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेश पावे सूर्य मंगल और राहुका दान मंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि
रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें
किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण हो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में ये जीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों
का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया
सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृक्षंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि
परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं
नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स
चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचबहुदृष्टय तथापिचबृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातः सर्वपूर्णोविनिश्चितं
(सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयागंमतिनिर्मल
सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णंभवेन्नरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुण्य
कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति
मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि
बहुत्वोपि वृणविस्फोटकादयः गुडगोधूम्रदानञ्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव
व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रश्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख
संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राङ्कवेकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीतिरूप
यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनसंदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राङ्कमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता
विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै
भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राङ्कवेकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे
मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोल्लानंद तापिस्या

भृ० स०
फलित
२३२

द्बहुलाभप्रभावत सुदुग्धंमहिषीगावदासदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोवत्ससुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखीन्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शकःतथा
पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणदानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचंद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशातकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चविकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजाते अकस्माद्भयदारुण विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुरायकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुण सर्वाबाधाविनिमुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यश्चप्राप्यतेनवनारीसुक्रीड्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतप्तं विशेषत दान
पुरायविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुरायेन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टावधिंचास्य
आयुपूर्णंविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुरायभोगश्चमृत्युदा

।। भाषा ।। इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितीय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीतरहे अपने दुखसुखका सबवृतान्त उससे कहदिया करे औरविशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीतिरक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्तन दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभखुशी देख और नाकिसदशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेषदीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंतासी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ।। हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ।।

मृ० स०
फलित
२.३

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं मध्यश्रेष्टफलञ्चास्य सुदशालाभदंग्रहो भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात् जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनंव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पापक्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलञ्च महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीति सर्वकर्मेशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम् पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं बृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतवाधाज्वरादिकं बृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचगुप्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारञ्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे द्वादशेवर्षे मध्यतद्धदाम्यहं पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलञ्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविशेषेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्धिविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम् पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहानिदर्शित प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदितादीर्घचिंताविनष्यंति जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माब्दकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़ितासुतापुत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेणअन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वचरूपयौवनविव्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं
सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा
ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते
भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रीड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता
राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल
दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिवहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो
चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर
भीतोभवेद्रात्रा धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाग्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र
मनंदिता षष्टाषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं
श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुर्विवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ।। इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम्म है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्ठा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्दमें प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें व्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कमी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुख पावे ।।

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्टित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधन।क्षय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोगोरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंग्रद्धं कृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुरायेनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसीउद्यमीपुंसअंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्वितीयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुजं मातृक्लेशमहदुखंजीवन्ग्राशाविनिमुंख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुरायकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचपलंबालशिशुक्रीड़ामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाब्दमारभ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम्कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाब्दकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तं अजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुरायकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुरायप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घ वृहच्चिंतायदाकदा

मृ० स०

फलित

२३५

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनात्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्टितः शशिवन्हिसुवर्षाणिञ्च त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यविनश्यति कर्म श्रमफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुद्रश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकाव्यकार्येसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनंगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वल्पमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाब्दमध्यमा ब्रह्लाभप्रभावेणचित्तोद्यानंदसीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिर्मुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रह्त्वोपदप्राप्नुयात् ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्त वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय दीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरंताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणंददेत् विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुवृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढ़शुक्लसप्तम्यानिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत माने धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े बड़े काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और यह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
२३७

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्थफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातमौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्टसुखीलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वेमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वआशाप्रपूजितो कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्णं
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अचानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाद्बमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेताततलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिद्दृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्बमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते आशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वंभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्बमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागम फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपितुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलंचयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदशत्रुपक्षश्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यक्षंनकाशिता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेत्

शांतिर्व्रातसुशीलत्वंनिर्वैरंप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य धनसंतानप्रतिष्ठित रसविंशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवन्हितथांतरे गुप्तकष्टनपीड्यंतेअजीर्णं बातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्द्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिग्चनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेधनपुत्रादिप्राप्यते षष्टत्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहलाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेशून्यपञ्चावधिलभेत् पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदवाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगबाणाद्यमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताब्दमायुष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनको कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेलो हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ ब्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

मृ० स०
फलित
२३९

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घवस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान
कीर्तिवृहन्नित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलञ्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेचिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यधनंव्यय सत्यवक्तासुबृद्धिश्चसुमार्गेवर्ततेसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषेणसुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्रातभगिनिसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतो
सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहादि
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते
निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोपिनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगविंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुणा औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रघृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविध चित्तचिंताविनष्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा
भाग्यवृद्धिवलंदीर्घगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनष्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातंभूमिमंद्रश्च
नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो
निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिभविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया
कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत
पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसत्रंमानवृद्धि
मनंदिता चित्तचिंताविनष्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतः परिसुख
सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः
आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्ववाहनं भूमिमन्द्रधनाप्तिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसौख्यविशेषेणसर्वआज्ञा
प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणेशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानश्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैकत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्त्रसत्क्रयायुक्त सद्रूपंसतसखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यग्निनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीततंततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलेवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्च जायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वंयाविन्मासेचसप्तमेप्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाच्च नश्यतिउदररुजु तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतश्चमहोत्साहो विद्यारंभजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्वं
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलश्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्धं
तिचदिनेदिने पितुदेह भवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित् तेनसौख्यसमृद्धि स्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाद्धके कष्टश्चजायतेदेहोदाघदानेननश्यति योगजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्यविशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखंचैवहर्षयंतिदिनेदिने अक्षाचतनंज्ञेयंअथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यते भयदारुणं
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुख्यस्य स्तोत्रपाठश्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशःस्या दुदररोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जीवोमहाप्रीतीआशक्तश्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
क्लेशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभश्चविविधंपुत्रभविष्यंति

मृ० स०
फलित
२४१

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलमश्चश्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोग्रल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्चनूतनं गृहमंगलगानञ्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिवामभागेवृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्रराम्रगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेवापिभूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पोस्वर्ण दानबृथाचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिरामामितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोप्रपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमन्द्रे धनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाणिएवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णंभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीव की चिंता रहे और बड़े २ लाभके उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावेकभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में वृन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब बह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत हो गया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुख का भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत् मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात् महच्छोचश्चजायते साहसीदृढ़संकल्पअन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसंगविनिमुख चौरभीति भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मङ्गलगृहमध्यश्चनृत्यगीतादिकं भवेत् पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च मोदिता अकीर्तिभयमादृश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमङ्गलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यवृद्धिसुखं देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरणयरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन् शांतो मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत्सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मणाक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापाकूप तड़ागेशुआराममोदसंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगेणपीड्यते सूर्यदानश्चशांतये पञ्चमे सप्तमेब्देषुसंबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसप्राप्त पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं नवमेब्देजलोद्भीती दशमेकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचिंतातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा ककरोमिकुतः सुखम् चतुपञ्चदशेब्देषुकांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका भर्णंप्राप्यतेनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधाप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविंशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम् नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशाष्टविंशेचकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल गानञ्चनवनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोष्यतंविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

मृ० स
फलित
२४२

चन्द्रत्रिशेद्वित्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शाँतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्वसंजाते
नगरामवाधिततं यंत्रमन्त्ररतोजातंक्विाविप्रनिमंत्रगः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणंरुष्टतांव्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नागा
त्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविसुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् गृहहाटधनंसर्वंविलगश्चप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेनानाक्लेशसमुद्भवः
परन्तुधनलाभश्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्यु जयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं
ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्यं याचकानांधनंददेत् सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यतेमंत्र यंत्रमतिर्यात विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाण
मितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेशुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था
धनीतरः शरपञ्च मितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम्सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनंदमंगलं
लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातप्रमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात् भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्य की बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वाला हो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्य मार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों की संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जाप से विशेष सुख की वृद्धि हो पुत्र की इच्छा पूर्ण हो एक अल्प से अधिक भय हो पाप ग्रहों का पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुश हो मनो कामना पूर्ण होवे ह शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा जिससे वह मरगई और यह पाप का भ हुवा तिस पाप की शान्ति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदन से लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्र सहित संकल्प करे श्रेष्ठ ब्राह्मण को दे गोपाल मंत्र का जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन सन्तान का सुख देखे अल्प नष्ट हो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आयु वाला हो मनेच्छा फल की सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मश्चानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी
चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यः कामिनिप्रिय
कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्वचित भोगमैश्वर्यं युक्तश्च
कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिश्चहाकूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत् कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्ठुरोकटुभाषिणः
साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोग प्रपीड्यं तेनचिरंविद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि
करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्युभवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात
व्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात मित्रबन्धुविरोधश्च निष्ठुरबचनंवदेत पापद्दुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते
सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैवयोगेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रोप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसं
चिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः विनितोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तविप्रपूजनतत्पर चित्तोदासुमूर्तिश्च
गंधपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टं विशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेजलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे
विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंच वर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश
मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुकिंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तकफवातप्रजा
यते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयातकिंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे
कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

मृ०स०
फलित।
२४५

भीतिसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिंशेब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रञ्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यञ्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभबाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े बड़े आनन्द भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटुम्ब का पालन करे श्रेष्ठ संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राण से अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प मारीआवें जीवका भय हो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्त हो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत हो जाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हेपुत्र पहिले जनम में ये जीव बड़ा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्था तक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अन्त को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यन्त पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनन्द भोगे

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्षणबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणासंपन्नोमासेवर्षेगुरुंगता मवलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वेहेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभ्रत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुर्भक्त भूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचवलेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवलभ दीर्वकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्दे्षुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्टमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंतेविस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्रमश्चोपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तं देव्यायापूजनंरतः भेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेश त्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्टोपिबद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानबृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोत्थानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वा दाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेचिंताचित्तं चैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजातवाकदापिकालेतिविह्वलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मा

मृ० स
फलित
२४७

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिक्रमात द्रव्यलाभ
विशेषेणपद्दीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिर्ख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो
यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागतः शरीरोपीड़ितंगुप्त ग्राजीर्णंनश्यतिक्षुधा ग्रौषधिसेवनंकृत्वा ग्रन्नदानंहरिस्मरेत् सर्वबाधा
विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणम् ग्रन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका ग्रादौलाभविशेषेण ग्रन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्धगेकाव्यतथाचनभवे
दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परश्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी
दीर्घजीवन सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते ग्रन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे ग्रतिलाभमहत्सौ
ख्यंप्राप्नुर्यतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनीतस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका
लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

मृ० स०

फलित

२४८

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परन्तु पूर्व पाप के कारण जीवको चिंता विशेष बनी रहे जिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल वंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परन्तु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊ को अत्यन्त कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पाप से इस जन्ममें चिंता अधिक रहे घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहे लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न हो तो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पाप की शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटुम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय सन्ध्या समय गौवों को जिमाया करे तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

भृ० स०
फलित
२४९

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो
भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वें प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वें हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्य
वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयात्किंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम्
बुद्धिमानपंडितः शूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चाल्लाभजायते पुरायोदयसुखंसर्वें
प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपति
विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य
शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनममम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य
देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मंचक्लेशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा
जय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददददेद्दीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्यसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ
चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रुवम् चित्त
चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणाम् अल्पञ्चप्रथमावस्था
मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु
बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रञ्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच बृणाज्वरप्रपीडिता
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमेद्वेषुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति
दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्ययाभूपसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेपञ्चचंद्राद्धकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्ट विंशाद्धकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टविंशति त्रिंशचत्वारिंत्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरेशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्राविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विंशेषोभाग्यवर्द्धनम चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमहत्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्ययशुभेकार्येविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्यायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुगुवारेणसंयुतः रोहिण्याभेसमायुक्तपूर्णमायुःभवेत्ततः ॥ भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्य वाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्या बुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्रीवंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुये तिसी से ये जीव महापाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधि से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महामन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यतन से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

भृ०स०

फलित

२५१

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवश्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि
विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरश्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभवः
द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे
रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत् चक्षुरोगविजानीयातकिंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो
पीडयंतिपुनःपुनः उपायञ्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य
विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनकष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे अहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च
तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगश्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाचेत्रलाभश्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे
चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यंकुरुतेग्रह दीर्घचिंता
स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्धकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाचपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच
मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रअहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते
नात्रसंशय नववस्त्रमहर्षंच धीर्यत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णंचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च
आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय
भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवलभः चित्तसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिबांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षाबधिक्रम
धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेच याचमानापितृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते
पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परश्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् अहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाद्वके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचिंतायदाकदा गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्त्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंसप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येशः आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत् मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ध्हरामाद्वसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिंगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिंवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुःख हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनन्द हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे। हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यन्त युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इस पाप का यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचन्दन से उसपर साधु मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतय
नेत्रवर्षेतथापञ्च बालक्रीडायथाक्रमम् वृणबाधामहाकृष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवि
तव्यंनभूपसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्तपात् सुखदुक्खागणोनित्यं मध्यसौख्योह्य
माप्नुयात् अहन्तारोहृदेगुप्तं लाभमोहेनपीडिता सून्यपञ्चाबधिवत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वेदीर्घभागोचबालकः विद्याबुद्धिगुण
द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीडित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन
सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतपा युग्मकार्यमहद्द्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमनः सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ
भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकृष्टं अकस्मातमहदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि
लभेद्द्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोत्सहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि दैवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफल
प्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टित गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं
सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोहान्वितोपुन्स शुभकार्यफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासीश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता
द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्ममतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पाप
कर्मणाक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा
वेदबाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महा
दानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वाचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

मृ० स०
फलित
२५४

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा
सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्पर: अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा
वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नर: पूर्वपा५वलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घ चित्त
आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभूतस्यकुत:सौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते
एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुरायोदयंयत्र सर्वसौख्यान्वित:सदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं
ज्ञातव्यंयेनर:सदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वयंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहे कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत ने कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युंजय का जाप वेद की विधि से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचारों का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यों में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेदपाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

भृ० स०
फलित
२५५

श्रीगणेशायनमः इदं ग्रहत्रिस्थित्वा भाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता काम
पीड़ाविशेषेणअकीर्तिचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्धयसमन्वित दुष्टकर्मेणनपीड्यं तेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दाचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगभोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितृद्रव्यविनाशीचगुरुतोनविद्धं धनवान्पुत्रवानुत्रः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रातरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामवाधाप्रपीडत मित्राणांचश्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिचिह्नं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्टयुग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंवव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यचशांतये ओंऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाद्धकाया तावत्कालगतेसत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभंगुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तम
कार्यजायनेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टचमानुष अपुण्येनसुखंक्वापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्तरम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोअजीर्णनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात् रामपंचाद्धमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञातवादीर्घ
कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टय: विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी
सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकरे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपश्च अन्येचस्वल्पजीवनं
रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणंशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णातोये
नित्यश षष्टमासाद्धयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रह्मभागीभवेल्लोकेसुयत्नेननर:सदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयश्रूयतेसापितदाने
चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्धमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवआशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्या
रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वंकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेतनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रे सुकुले
जन्मनात्रकार्यविचारणं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतयेशुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानञ्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तुं महसि

भाषा ।। हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वह बड़ा भाग वाला हो दासदासी और सवारियों के सुख पावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुख पावे क्यों कि इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बन गया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अन्त में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय ये जीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुआ था बहुतसा पुण्यदान किया परन्तु एक समय बहत सी मदरा का पान कर उन्मत्त हो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वश हो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोध कर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यान को बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादि का नाश करे क्लेश का अधिकारी हो हे शुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुख का नाश हो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्र में स्थापित कर वेदकी विधिसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मण को दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्ण हो

१ श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे
द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे
आनन्दंवद्ध तेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं बृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च
लवणंतया आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योद्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशद्वाविधिक्रमात् सर्वसौख्या
गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं वालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः
क्वचित् भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्वकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयातनारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती
आशक्तञ्चविशेषता कामवेगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापकृ रग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मयावा
क्यश्रु तोवत्सश्रे ष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यस [illegible]ो [illegible]ुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम्
चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्ध तंदुक्ख विद्याचसौख्[illegible]दासदा सुख[illegible] [illegible]तियपुन्सशुभ
कर्मरतोभव श्रे ष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधी विनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिमु ख रामद्वयाद्व
मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोकवे क्रमणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन
पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकृतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्ध प्राप्तीचद्दश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्व
पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज
कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टमवैद्यो
पायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानम्जलेधेनुचकारयेत् गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणं

मृ०स०
फलित
२५७

भोज्यंततःसौख्योद्यमाप्नुयात् मासेवर्षेसुखंज.तंग्रल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्मग्रन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घकार्यवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिवेष्टितम् दासदासी समायुक्तंरभ्यतेचासरोकुत्र व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंग्रारामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंसर्वे प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तंभ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः ग्रारामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण ग्रहाशक्तग्रन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यंतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंग्रायुपूर्णानसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुख पावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण ग्रति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता होता रुकजाय खर्च ग्रधिक करे लाभ होता होता रह जाय पुत्र के सुखमें विघ्न हो ग्रौर कभी कभी विशेष क्लेश ग्रौर कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में ग्रति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते करटे उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु ग्रपना द्रव्य लेने ग्राया तब इसने लोभ वश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला ग्ररे दुष्ट हम साधुग्रों का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा ग्रौर तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हे शुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुग्रा इसका यह उपाय है कि पांच तोले स्वर्ण की गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र की विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेमसे चरण छुवे ग्राशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम ग्रानन्द पावे ग्रौर शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्लोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वोदद्युतेमतिर्लोलकृपणाश्चऋणीभवेत् साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयश्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तिर्यातिवामांगी स्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्ठतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतौपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चिंतातुरोयातोलोकंनिंदामवाप्नुयात् लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यश्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेग्रह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभवच्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तंशोचवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुकष्टजम् केलिक्रीड़ाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्रार्चनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसंयुक्तआशक्तश्चापिविव्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायाप्रपीडयन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतयेरामाब्देपञ्चवर्षाणिव्रणपीड़ाचदारुणम् गुडगोधूमप्रदातव्याछायादानश्चकारयेत् आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेन्दसप्तमेवर्षे

मृ०स०
फलित
२५६

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत् कष्टोजायतेप्राणां मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षे राजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्रयोभविश्यति शोडशब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगञ्चमोदिता सर्वंमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यं मात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मेणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिध्रुवंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायतेद्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणाघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवधिकाव्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यपलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहे सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मन्त्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े बड़े खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहे प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जन्म में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मन्त्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

मृ०स०
फलित
२६१

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ताग्रग्रे फलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिक्षयशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यद्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्तोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचग्रंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यव्हारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थे मोदतेभुवि कवित्वमतिसञ्जात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णातृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनश्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंविंकरे
धूर्तेनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिणा विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहूपूजा चकारयेत् घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात् सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रे चविंशाद्धे वेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
वृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिद्धजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्धे वन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्टमे
वर्षेवृणारोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच ग्रंलविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमकादशेद्धे षुमंगलं हमराडले नवभूषणवस्त्रश्चवद्ध यंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितेवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसंप्राप्यबाणमेकंतथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्धे चविशूचिरोगसंभवम्

पुरायदानेनशांतिस्या तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगसंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षंतथैवच मोदतेकांतया
युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे
नेत्ररोगप्रपीडयन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणो षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके आनन्दमंगलाचार किंचि
त्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणातले कदाचित्स
मयेकाव्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षष्टत्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानश्चवद्ध ते
पूर्वयात्राभवेत्पश्चात्धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशांतपुरायेननानासौख्यमंगलम चन्द्रचत्वारिवर्षाणि
सून्यपश्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणवातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाण
गतेवर्षेसून्यसप्ताद्धप्राप्तये मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसंतानयानश्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्व
लक्षणसंपन्नवातपीड़ाविशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवेत् भाषा ॥ इस अङ्क की कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े
हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीन हो
बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्त हो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला
पुरुषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से
प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीन मन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की
उपासना करने से मनोवांछित फल पावे शोक रहित हो सुख भोगे है शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपति राजा की
तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परन्तु कामवश होकर फिर वैश्या गामी हो गया और जप दानादिक क्रिया
सब लोप कर दी और दीन साधु ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ काल में पुनः मन संगति से ज्ञान उदय हुआ तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में
प्रवर्त हुआ तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्ग में लगा रहने से पाप का फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च वृणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा धनागम्यविप्रदेवार्चनेव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यः कामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुरायेन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग संजातसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्चआरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रे वीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धीनसंशय अति मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांद्रशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं त्वतां साधवानांखलानांचसुस्वार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपाल्यत बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुसविज्ञेयोविदेशेभयदारु णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुविं आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षेचपंचमे षष्टमेसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राद्धकंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतांद्रशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत् आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत् दानंकृत्वासुयत्नेन सर्वकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशेब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

भृ० स०
फलित
२६३

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रञ्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभञ्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत् गुप्तशत्रुविरोधश्च प्रत्यक्षंनैव
जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभग्रकस्माद्धनमागम चित्तोद्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं ग्राशक्तश्चमनोज्ञाता
विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धंचसुयात्रालाभदायक शरीरे
रक्षणार्थायदानपुण्यंसुयत्नतः त्रिंशमेकाणिवर्षाणित्रित्रिंशपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचदिनेदिनेनवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत
ग्रन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वताम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुस्वरूपंचलुब्धके षष्टवहिगतेवर्षे
सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वद्धंतेचिंतयान्वित ग्रापदुद्धारणोजाप्यगायत्रीवीर्यसंपुट
ब्राह्मणभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाण्येव
सिद्धतोनश्रमवक्वचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः ग्रतःपरंसुखंसर्वेपौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंवज्रदानंचशांतये नंद
पष्टमितिमायुपूर्वंग्रल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्र के ग्रह कुछ विशेष वलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा कारक है कभी कभी घर में पीड़ा करलावे भ्राता का सुख हो या प्रेमी मित्र हो खर्च विशेष हो कृपणता न हो सके एक जीव की चिंता बनी रहे सुत स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्या बुद्धि विशेष बढ़े पुत्रों का सुख मिले हीन ग्रहके योग से काम ग्रधूरा होता होता रह जाय बिगड़ जाय विशेष मनोर्थ उत्पन्न हो ग्रति परिश्रम करने पर भी मनोर्थ पूर्ण न हो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवा करे विशेष कार्य का ग्रधिकारी हो प्रदेश बासहो बड़े २ लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभ हो कभी विशेष हो ग्रनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबू से बाहर हो प्राणों का भय जान पड़े ग्रधिक दानमंत्र उपाय करने से ग्रवस्था दीर्घ हो विशेष सुख भोगे पहले जन्म में ये जीव स्वर्णकार था स्वर्ण चांदी के ग्राभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी विशेष था ग्रपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया ग्रपने मान ध्यान ग्रौर पूजनिक पुरुषों से भी छल करे ग्रन्याय से ग्रधिक द्रव्य लिया तिससे पाप का भागी इस जन्म में पीड़ित हुवा ग्रति चिंतातुर रहे इस पाप की शांति के निमित्त चांदी के पात्र में स्वेत चावल भरकर उस में गुप्त स्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मण को दान करके दे ग्रौर नारायण का महामंत्र जपवाये तो पाप शांति हो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

नृ० स०
फलित
२६५

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहा वेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिःहद्वफलदंश्रे ष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रे योह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीमु क्तोविशेषोलाभवर्द्ध नमग्रयत्नेनैवभोकाव्यबुद्धिनसुस्थि

रंभव उद्योगकुरुतेदीर्घंलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाह. निचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं

ग्रसत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिःसुसंचित्यसुस्थिरं नविसर्जने कामीकुतुह

लीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमेसुखमध्यमम् ग्रंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्यौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचा

रणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोपिविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदतोमति जीवध्यामंचसंमरन यौवनरूपचितन श्रेष्टकर्मप्रसि

चापिपरकार्यंचसाधक ग्रन्नदानंचजीवना ग्रानन्ददंदीर्घसंभव ग्रल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसि

द्धतं देवाताद्विजभक्तश्च ग्रतिथीपूजनंरतः नेत्रद्धयनागयुग्मवेदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणद्विषष्टके एषुवर्षेसुसजातं भाग्योदय

विशेषत ग्रादौद्वयोत्रिवर्षेच दन्तपीड्यज्वरादिकं व्रणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् ग्रौषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे

उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय

विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंतादारुणम् ग्रनुष्ठानमहादानं

महामृत्युञ्जयोतदा ग्रापत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषाद्यचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम्

द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि

नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्र

गतेकाव्य त्रिशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेसुताद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेबाधा शांतनीयंप्रयत्नतः प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षा वधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घंअजीर्णनष्यतिक्षुधा लवणाञ्चहरितिक्रियां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधितत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वगृहसुप्रतिष्टित शत्रुपक्षविवादंचकार्य भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोद्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिंकंतथा निजकृत्य महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाराणयेवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रञ्चसर्वसौख्यांवितो भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिंकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य समायुत नानामंगलसंप्राप्यचित्तं आशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं सर्वेपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगति कर्मभेदेनभोप्राप्तसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीव की चिंता मिटे परन्तु इस जीव की बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुँचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बात पर क्रोध आ जावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्ब का पालन करे पराया काम मन से करे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाया करे काम की उन्मतता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पाप का भागी हुआ सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंकृरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य
सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ
जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थंविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा
चिंतनंकृत्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वे दुष्टकर्मेणविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्गारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता
हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंत्र्यकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि
विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान
नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः
पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनैं उद्यमेनधनंप्राप्य
धनार्थोचिंतयंसदा सद्वयोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः
धर्मवार्तासदावृत्तिसज्ञातिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात्
भृगुवाक्यनसंशय पांडितंसंगतिप्राप्यशीलबुद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धंति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ
द्वेषष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव
निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूषक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच
महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी
समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्यविंसवर्षाव्रधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

भृ० सं०
फलित
२६७

चापिनिश्चितं सुमार्गेधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपुंसः सर्वसंग्रहतत्परः स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ कलाभिज्ञोनृपश्चयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरंनिर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससप्रीतिःपितृभक्तसुतर्पित तुरगात्मन ज्ञात्वाकिंचासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोऽहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगणोनित्यंभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपद्र रोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्ण भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्ट हो बड़े २ कारबार रोजगार करे परन्तु न्यून फल कारक ग्रहों का दान मन्त्र उपाय करने से पुत्रों का सुख और विशेष धन का लाभ हो किसी समय कुटुम्ब से विरोध हो धन खर्च में आये शत्रु नुकसान पहुँचावे एक समय थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यम हो परन्तु चतुर विशेष हो बड़े २ आदमी इज्जत करें प्रतिष्टा पावे ईश्वर का चिंतवन करे अनर्थ की बात पर ध्यान करे श्रेष्ट संमति दे बुरे काम से बचे श्रेष्ट मित्र में चित्त रहे खरचीला हो पोचबात न कहे चित्त में गुप्त चिंता रहे इज्जत का विशेष ख्याल हो खर्च विशेष रहे एक समय प्राणों का भय हो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहों के प्रभावसे प्राणों की रक्षाहो सारी अवस्था इज्जत के साथ आनन्द में बीत जाय दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मो से सुख पावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अति धनवान् सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आ गया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर गया तिसी से विशेष पाप का भागी हुवा सो इस की शांति के निमित्त काशी के थाल में चावल भर कर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढककर ब्राह्मण को भोजनादि से तृप्तकरे श्रद्धा भक्तिसे दान दे तो पाप नष्ट हो परम आनन्द पावे निश्चय सुखी रहे ॥

मृ० स०

फलित

२६६

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अ॰वंशप्रकाश्यंति श्वकुलंदीपकंतथा बहु
कीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्चश्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख
वर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशंसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्र रक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच
पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा
भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्सअनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिक्प्रकोपीचकामाधि
क्यवलान्वितः सुशीलश्चश्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्ठुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धन
युतःपुंसःमीननादपरंप्रियवृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत्
क्रूरपापग्रहापीड्यंनानावलेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा
कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रश्च मुक्तालाभेनसंशयः शूरोथवाग्रामे
पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरश्चतुरोनरः अविद्याजायते
क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमेद्वितीयवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगश्चक्लेशिता पितुचिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम्
ग्रामाद्धनप्रलाभश्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रुपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वेग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन
सुखावहम् चतुर्थेपश्चमेद्वे षुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रे चशिशुक्रीड़क्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्यु
भीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुचिंतासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्वृद्धिदिनेदिने शुभकार्य
धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यश्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकलेसुकंठअसंध्यासर्वंभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसंशय

शुभकार्येव्ययोचापि यथालाभेतथाव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यक्षंनैवकथ्यते मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षेमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागी चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिंवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रयत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्टिंशेत्रित्रिंशेब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः लक्षमेकंप्रमाणाश्च सर्वकष्ट निवारयेत् तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिक्ष सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परलोके फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्री के ग्रहों का बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनन्द भोगेगा और कुल में दीपक के समान चांदना करे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भले में रहे एक जीव में चित्त विशेष फंसा रहै नई नई बातों का चिंतवन करे है हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतु का पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थान के ईश की पूजन दान वंश की वृद्धि को अत्यन्त श्रेष्ट है गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होने से सब सुख पाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्ट पावे प्राणों का विशेष भय हो परन्तु पुण्य कर्मो के प्रभाव से पूर्ण आयु हो कहीं अकस्मात धन की प्राप्ती हो भूमि लाभ हो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भला चाहे मन की विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवान था बद्रीनारायण के दर्शन को जाता था सोते समय मार्ग में धन वस्त्र आदि चोर हर कर ले गये प्रातः काल उठ कर चोर के भ्रम से एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणों को मनेच्छा भोजनादि से तृप्त करे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादि से तृप्त करे तो सर्व पापशांति हो सम्पूर्ण इच्छा पूर्णहो ॥

मृ० स०
फलित
२७१

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणाअकस्मात्
भयमागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणाचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणानूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुश्चततोलोके उद्यमेणाधनाप्तये व्ययदीर्घमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यधनव्यय
सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलंपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्त्तिसुप्राप्तोपि
सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन
स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंसित
श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्ययदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानञ्च विपाकफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत् सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तं सुयत्नत वृणाबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतनीयोविशषतः जन्मतःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टवाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयत्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे
सुखंजातंमातृकष्टविशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारण मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल बातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्वलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

मद्व्ययम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यंसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनष्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिततः सुतापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकृत्रोपिज्ञातव्यंनक्वापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंआनंदंजायतेध्रुवं ससवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायते विवाहोमंगलंकार्यंआनन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेनूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवद्धं तेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणांशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वे जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्धमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं ससअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीय हो स्त्री पुत्रादि का चिंतवन करे अपने कुटम्ब का पालन करे सारी अवस्था में दो बार विशेष कष्ट हो एक भारी अल्प आवे नया जन्म माने फिर दीर्घायु हो धन प्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्च के काम आवें पूर्ण हों चिंता विशेष रहे सप्तमेश का पूजन दानादि करने से स्त्री सुख पूर्ण हो काम संकल्प सिद्ध हो बड़े २ आदमी खातर करें जीव की लालसा बनी रहे अन्त में पूर्ण हो एक कार्य में हानि विशेष हो दान पुण्य करने से तथा ईश्वर का भजन करने से पूर्ण सुख मिले है शुक्र पहिले जन्म में ये जीव कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अति प्रतिष्ठित ओहदा पाया देवताओं का पूजन तथा दान धर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बन गया मृग के तीर मारा वह बच गया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदय में लगा और मर गया तिसी पाप से अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांति के निमित्त स्वर्ण का पत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्ति का आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृत भर तांबे के कलश में गुप्त रख कर विधि पूर्वक दान कर ब्राह्मण को दे और वस्त्र आभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे और विशेष भक्ति से ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्व सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान् सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो नृपपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानश्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज यावत्खेचरसंतानेसंयुतश्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र कार्यविचारणां पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरापाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्धेशीतितत्पश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य वर्षेद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिश्चहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वेभयंप्राप्यपितृचिंतावली यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवेपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोत्तरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे वर्षेतरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत् प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टविंशति

मृ० स०
फलित
२७३

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंश.ब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्ति श्चनूतनम् दीर्घक.र्येसुखश्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकी र्तिश्चचित्तमोदभपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणां औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्ट त्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीता दिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चनं नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़े पुत्रों के जोड़ों का ध्यान रहे कन्या भी हो वंशकी वृद्धिहो धनवान लक्ष्मीवान् परोप कारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबभी बुरा न माने बड़ा प्रतिष्ठित नामी हो कई वर्ष विशेष धन की प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्य की न्यूनता करने वाले आवें पुत्रों की चिंता रहे संतान गोपाल का मन्त्र वंश की वृद्धि को श्रेष्ट है लाभ स्थान के ईश की पूजा दान जाप से विशेष लाभ हो और पृथ्वी पर बड़े बड़े कौतुक देखे चिंता और भी हो अपने समझे वक्रपने कहे तथा समति के न हों घरमें कभी पीड़ा हो जाया करे एक अल्पभारी आवे प्राणोंका भय रहे आयु पूर्ण हो कैसा ही भारी खर्च हो कार्य हो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्ण होवे हे शुक्रपूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मवंश में उत्पन्न हुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुर था राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्त हो गई तिसे संग लेकर प्रदेश को भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसी से पाप का भागी हुवा स्वर्ण के पत्र पर स्त्री की मूर्ति रक्तचन्दन से लिखकर बहुतसा धन तथा अन्न में गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दानकरके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनन्द पावे ॥

भृ०स०
फलित
२७५

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य
नूतनमागमः दीर्घकृत्योवृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मंचविभ्रम नित्य
त्र्यास। विचारोपित्र्यकस्माल्लाभजायत पापक्रूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति
वद्धनं चंद्रशोकस्थितोत चितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यत्र्यकस्मात्वातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मत्र्यल्प
विशेषेणशरीरेकष्टदारुण त्र्यचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत त्र्यंतेचकुशलंज्ञात्वा।रिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न
वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त
कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जित्शत्रुरलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो
द्विज।नामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवद्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवद्धनं राजसीगुणसंजाता भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत
महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषपीड्यंतेत्र्यभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारञ्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमर्णंज्ञेयविपाकेवीर्य
नाशनं दर्शनेत्र्यरिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीयसि तथापिसौख्य
संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तमेवर्षेत्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं
त्र्यष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रह नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानंमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं
द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित त्र्यंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्र
ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत् तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेग्रष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत् कष्टेनजीवनंतस्यधनलाभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतस्त्रश्चपीडनं ग्रौषधीदानमंत्रेणाशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंश मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाचत्रिंशाद्धे तन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षणा सासर्वसौख्यसंज्ञोमान्यथाभूयसेतुसा चंद्रागतेवर्षेतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थिते जातिमध्येसुकीर्तिच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनश्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षातं नृपात्माभवद्भवेत् राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्मद्भुतसुखं रोगशोकप्रवर्तते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले ग्रानन्दंमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपश्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता ग्रंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्धमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञ ग्रकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परम श्रेयस्कर है विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रों की प्राप्तिहो सुख मिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहे गुप्तचिंता बनी रहे धनका लाभ विशेष हो परन्तु खर्च बड़े २ लगे रहैं ग्रानन्द भोगे बहुत से कार्य पूर्ण हों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मत वाला हो सूर प्रतापी काम की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाय नीच कार्य बन जाय कहीं से ग्राशा लगी रहै ग्रकस्मात इच्छा पूर्ण हो जाय पाप क्रूर ग्रहों की शांति से विशेष सुख मिले एक शोक विशेष माने जल भय हो या पावकसे जले चौपाये या उच्च स्थान से गिरकर चोट लगे ग्रन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ठ सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी ग्रौर मन्दर छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण ग्रति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा ग्रौर बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा ग्रादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के ग्रानन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घंचिंतान्वितोभवेत्
चित्तं चञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घंधनागम हीनकार्यंभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तं शत्रुमित्र
वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
सुशीलश्च असत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमञ्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशकोपि
गुप्तता दानमंत्रजपंपुरायंसर्वदानंदसंभव सर्वंअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकोशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घं पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः
सभायाञ्चपलोधीमान गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्टभ्रातुप्रतप्यते पुरुषार्थंधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धर्नीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादञ्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाञ्चपलंज्ञेयंकलत्रंकूरकर्मिणाम् चतुष्पदात्तथारात्रौ
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आसिहेतुर्भाविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभव नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिनशांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेद्बे च
पितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेद्बे चसंप्राप्त चतुर्थेपञ्चमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यं वृणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पञ्चमात्षष्टेभवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगञ्चक्रीड़िता
सुविद्यांपाठनोबालचञ्चलत्वञ्चविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यञ्चकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबंधयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक मून्यचन्द्रगतेवर्षेपञ्चचंद्राद्वकंतथा विद्याबुद्धिविशषेणावर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेचधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्वकंक्रमः श्रेष्ठहीनदशाभोगंअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसीद्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायमानम् पुनःदीर्घधनंलब्धवाकार्यचिंतावलीयसी हीनकार्यंभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेधनपुत्रसुखान्वित आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशात्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत् दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधि काव्य नूतनंलाभसंभव पुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सूर्यपञ्चावधिकाव्यचिंतनंचापिदीर्घता चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंद्रञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रञ्चमोदिता षष्टपञ्चगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिमुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गौदानं श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणांजपेत् अल्पायुनश्यतेवत्सदा मंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिरशयोपिनात्रकार्यविचारणं सूर्यसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्र में ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वाला हो मध्यम और श्रेष्ठ दोनों दशा भोगे किसी समय कहीं से धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहों के प्रभाव से चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ की सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक कामहीन बनजावे सो पीछे मन में बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्री की चिंता का ध्यान तथा जीव की लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धन संतान का सुख विशेष भोगे कुल की रक्षा को संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ठ बन जाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े २ दुख सुख भोगे परन्तु चित्त को दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी २ भ्रम सा हो जाया करे नई नई वार्ता भोगे नाकिस ग्रहों का दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करने से आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अन्श खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्त दानदे गायत्री मन्त्र का जाप्य करावे ब्राह्मणों को संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् अमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणसुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत् परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यवृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचित्त
चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीडागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचिंतनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्तवाकदाचनं लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभश्चचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपीड़ितं वृक्षाचपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल
दंतापीडयंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युञ्जयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत् सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणव्रत्वंजायतेध्रवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाद्धमारभ्य
विंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलश्चगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

भृ० स०
फलित
२७९

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवह्निगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्यो दयमहत्फललं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाद्धमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्ति ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाद्धमारभ्यवह्निषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तच्चरोकाव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रों में लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहे धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोसी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्त में समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घर में पितृपीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करने से वंश की बृद्धि हो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईश के पूजन से विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्ण हो हीन दशा में हानि भी हो परन्तु अन्त में सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदी में नाव चलाने वाला प्रधान था नवका के कृत्य से बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक सेठ श्री अयोध्या जी की यात्रा को आया सो बहुत धन नवका में भूलकर चला गया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्यकार्य में लगने वाला धन अपने घरमें धरा तिससे पाप का भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवों में गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धि हो सब प्रकार के आनंद प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धं सुखीनरः धनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबृद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापकूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यवहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवह्निवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत् घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानश्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोवालबृणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलञ्चकुलोत्सवं
नवनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत् आशक्तञ्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविघ्नानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभञ्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रञ्चमोदिता मानसीविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकीर्तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्वगेकाव्य शून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातो धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडोपाठश्चकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययश्चापित्तोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिचवृहद्भाग्योभूवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपश्चावधिक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगवो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदश्चगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षे सुखंगत्वासुकुलंक्षानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिद्वितितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकर्मेतिनूतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौभाग्योयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्वमारभ्यशून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यकिंवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्वमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णंभवेलोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं बिलम्ब से फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्ठा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहैं श्रेष्ठकुल विद्यावान अक्ल तेज दूसरे की बात को तोले सत्या सत्य को पिछाने एक जीव की आशा लगी रहा करे और जीवों के खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहों के दान मन्त्र जाप करने से मनोकामना पूर्ण हो भाग्य और वंशकी वृद्धि हो ये जीव तरह २ के दुख सुख देख गायत्री का जाप्य कराने से घर की पितृपीड़ा शांतिहो कितने ही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरुष हो हीन दशा में विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ठ दशा में अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्यारा है एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरुषार्थ से पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्र का पालन किया हुआ था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र हे राज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित्त गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

भृ० स०
फलित
२८३

श्रीगणेशायनमः अथाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धं प्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत् निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमंत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टित कुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत् उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाक्रांति प्रसन्नोसत्यभाषिणा सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभताततकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडषाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषंवर्द्धतेधिय विंशान्भितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायोगभर्मयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजाजते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षे वामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रश्चत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यश्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा
वधिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्टिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वजातितोषयेत्
प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतर्महाकष्टंग्रकस्माचउपद्रवम् एतद्यत्नं
भवेत्सौख्यंग्रग्रेयंकथ्यतेमया ग्रन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत् सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं उों नमोग्रकाल
पुरुषाय महाशक्तिधराय ग्रकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणैवजपित्वा
सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंश्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सग्रापत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ
स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित ग्राज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच
महोत्सवम् सुपुरायंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि
विशेष हो ग्रौर ग्रनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी
शील स्वभाव वाला हो विद्या से बुद्धि विशेष हो कई बार धन इकट्ठा करे फिर खर्च हो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसा में रहे है
उपाय दान मंत्र से मनोकामना पूर्ण होगी ग्रौर कहीं से धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे ग्रापत्तीकाल ग्राये नया जन्म होवे फिर कार बार में
विशेष लाभ हो ग्रनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिकर मानता रहै पुण्य कर्म से सब सुख मिले भूमि लाभ हो मन्द्र की
नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भले में रहै कभी किसी का ग्रास्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वर्ण था परन्तु इसके कर्म ब्राह्मण
क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुत सा धन प्राप्त किया ग्रत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब ग्रभिमान वश हो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसी से पाप
का भागी हुग्रा सो श्रद्धापूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवा कर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणों को जिमाय गुप्तदान दे तो सुख मिले ॥

मृ० स०
फलित
२८५

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्विजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य
कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन
भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि
संपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तभ्रात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंसुन्दरोमिष्ट
भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिण अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण
विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानश्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति
कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानश्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता
सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत् दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम्
उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त
पिशून्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनासिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं
धनयानश्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्विविभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति
दारुणम् कदापिकुमतिंप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मान्यधनंसर्वेप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रश्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे
चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतवृणांज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो
जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे
कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलश्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्वसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्वित्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टविजानीयात् पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय अहपिमंगलं कार्यवद्ध तेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत् लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाब्दमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणःखवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताब्दमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो दफे रोजगार की वृद्धि हो और फिर मध्यम हो जावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभाल कर रोजगार के काम करे परन्तु नाकिस दशा में चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनन्द में बीचे कभी किसी का आस्तीक न हो अपने कृत्य से निर्वाह करे एक समय ऐसा भाग्य उदय हो कि सर्व प्रकार के आनन्द भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन द्रान मन्त्र उपाय करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त हों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपाय से सब शांत हो आयु बड़ी हो पुत्र तथा ग्रह सुख की प्राप्ति के निमित्त संतान गोपाल का जाप्य कराना श्रेष्ट है वंश की वृद्धि हो पुत्र पौत्रों के सुख देखे एक जीव में विशेष प्रीति हो हीन दशा में विशेष चिंता और क्लेश हो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव कुरुक्षेत्रमें जन्म ले नगर का प्रधान अति धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेता था वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जान कर दे देते थे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्ष की आयु भोग मृत्यु को प्राप्त हुआ दान का धन भोगा ब्राह्मणों से क्लेश पाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्य की आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबानात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत
द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्मानीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह
दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणेरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंवद अल्प
कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णंसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रष्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक
उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोवार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणैयुक्तःसुशीलो
क्रांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्यु तेमतिर्लोलक्रूपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां
तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येश्चकीर्तिश्चनगरायते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा
शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चकिंवावृक्षेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म
कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो
भूयक्रूष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा
बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपश्यति व्रणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं
गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्बके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयंजपेत् विवाहादि
व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषेमित्रतांव्रशेत् क्रीडितश्चविशेषणविद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशार्थं आदौयत्नमहत्फलं
सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राब्दकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणेजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राब्दप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

भृ०स०
फलित
२८७

ग्रहापूज्यंकार्यवृद्धिर्दिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षक्रमंतथा चित्तचिंताविशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोद्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चितंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्व्ययसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रिंत्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यपूर्वलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्बलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पुण्यफलोदयंवत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारीचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाब्दकेतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्या न्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधिंतातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि विलंब से मन की कामना पूर्ण हो रोजगार लाभ बढ़े युवावस्था में विशेष भाग्य उदय होगा बड़े बड़े रोजगार करे किसी से मिल कर धन का विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा बढ़े पश्चात में मन की अभिलाषा पूर्ण हो प्रथम बहुत जीव को दुख माने फिर संतोष हो जाये यह जीव विशेष छलछिद्री न हो और छल को पसंद न करे नेक नियत के रोजगार से पालन करने की अभिलाषा करे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्ति हो एक अल्प से बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंत्ता विशेष रहे फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े २ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीति करे किसी का बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी २ दर्द सा हो जाया करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जाति था अपने षट कर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथ को मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक हो गया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पाप का भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ॥

श्रीगणेशायनमः दीर्घौवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानु
रक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराद्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः
मिष्टानलवणंभोज्यंपक्वमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत
शुभम् धर्मेणधनबृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणानिष्टंरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म
प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरो
धीचकृपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वे परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर
पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते व्रणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य
परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि
तथापूज्यःनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मा
द्यत्नंवकारयेत् बृहत्कोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमात
महाचिंतोबालवृद्धिश्रहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेव्रणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूमप्रदानंचबालासद्यसुखंलभेत मिष्टं
मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहुक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान
महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण
चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोद्यानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहर
द्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहुद्रव्यव्ययोभवेत् बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं

भृ० सं०
फलित
२६०

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविव्हल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिण कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षा वधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्टाचवद्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णंसुवस्त्रंवद्धंतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धेतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि सुखंदीर्घदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुरायकर्माणिसंचय पूर्णंसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् सून्यषष्टमितिमायुपुराय कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा इस कुण्डली में ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टा वाला भाग्यवान हो सब तारीफ करें सलूक करने वाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्य के काम करे भूके को दे ईश्वर का भक्त सत्यभाषण करने वाला कई बार बहुत धन प्राप्त करे रोगों से बचे सत्यासत्य को पहिचाने शरीर में फोड़े का चिन्ह हो कामदेव की उन्मतता में न्यून बुद्धि हो जाया करे जीव की चिंता को गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्न किये अधिक क्लेश पावे धन का संदेह जीव की चिंता आदि हो गुप्त शत्रु विशेष हानि पहुँचावे शरीर में पीड़ा रहै काम होता होता रुक जाय तथा अधूरा हो जाया करे इस जीव को बड़े बड़े भारी खर्च के काम आवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव श्री अयोध्या जी के पंडा के घर में जन्मा बड़े बड़े दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिस से दोष का भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दान दे और अपने इष्टदेव का भजन करें तो सब काम पूर्ण होवें ॥

मृ० स०

फलित

२५१

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्टितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधञ्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कारयद्व शरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुर्महाबन प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुक्खदं
रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तो धयस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिर्विख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वार्जितंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तं नयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके
बालक्रीड़ासुखप्रदा. अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेब्देतुशरचंद्राद्वकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीड़येत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य
व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्वमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभयः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिशंवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदेस्थित अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नंदानमंत्रेण नाशनम् चंद्ररामामितेवर्षेबाणत्रिंशाब्दकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुक्खितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणंददेत् महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाब्दके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेश्चानंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेश्चामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिश्चानंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताब्दपर्यन्तेसर्वश्चाशाप्रपूरकः बहुलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यत पञ्चसप्ताद्धिमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैवविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्पुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा न हो खर्च विशेष रहे रोजगार करे बड़ी हिम्मत वाला हो दूसरे की बात को तोले श्रेष्ठ आमदनो में कुटुम्ब का पालन करे कैसी ही धन की न्यूनता हो परन्तु खर्च का काम कभी न रुके इज्जत से काम हो जाय चित्त में भयसा रहा करे परन्तु भाई बन्धु अपनी सम्मति के नहीं युवावस्था में कई बार धन की चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंश की वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहे घरकी पीड़ा का यत्न करे एक बार कहीं से धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मन्त्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्ण हो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्रि कुल में नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेना का अफसर था युद्ध विद्या में अति चतुर था एक समय संग्राम में बलवान शत्रु से हार होती जान छल से उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि दे दी तिस से उस राजा का सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पाप का भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणोंको विशेष दान दे तो पाप शांत हो ॥

मृ० स०
फलित
२६३

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृबाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो
द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंवृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणश्रमोपिबहु
मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंवृहत्वोपिसर्वेपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं
चापिमिष्टबाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवआशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं
पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापकरूग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्ध प्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो
रूपचिंतनं प्रथमेद्वे रुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देवृणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य
दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागश्चनंदके बालक्रीड़ा
करनंवर्षं तात सौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलश्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय
पूर्वदानंसुयत्नेनअल्पायुयोग नाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र
प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य
रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्धमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट
शरीरेचबृहत्वोवद्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणांभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च
तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाद्धके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो
दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं
प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मंसाधयेद्बुध रसविंशाद्धमारभ्यव्योमरामाद्धमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णंरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वंपुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपश्चवन्हि गतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंति राजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथामंत्रप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्ति विशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पश्चवेदाब्देईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंदश्चैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चावधिकाव्यपौत्र जन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोगृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपश्चाद्भमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहना दिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपूर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्या... ...रीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्त मितिमायुभुञ्जीतोपुण्यमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े २ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनी रहै परन्तु खर्च के कारण धन जमा न हो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसा ही भारी काम हो ईश्वर की कृपा से सब इज्जत प्रतिष्टा के साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जत करें किसी से तृष्णा न रक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंद्रा से प्रयोजन न रक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करे कई बार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रों से मेल रहै मिष्ट वाणी बोले किसी को कठोर वाक्य न कहे बहुत निष्प्रयोजन न बोले पंचम स्थान के ईश की पूजा और दान मंत्रादि से पुत्रों का विशेष सुख मिले जीव की आशा पूर्ण हो अल्पों के दान मन्त्रादि उपाय कराने से आयु की वृद्धि को श्रेष्ट है हे शुक्र पहिले जन्म में ये ग्वालवंशी था विशेष धनवान हो कुवां खुदवाता था तिस भूमि में परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होने से कुछ द्रव्य राजा ने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रम से प्राप्त हुवा धन पुण्य में कुछ न लगाय सब भोग में खर्च किया तिसी से पाप का भागी हुवा तिस निमित भूखों को अन्नदान दे ब्राह्मणों को तिलों में स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवांछित फल मिले धन संतान की वृद्धि हो ग्रह पीड़ा शांत हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभाग्यवृद्धिश्चजायते पापक्रूर
ग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं
भवेत् उद्योगलाभकृत्यश्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशश्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं
मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीर्शमानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्मा
द्व्ययमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णंभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जीतोकर्म
बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच
चोरभीतोपिगुप्तता आदौसौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र
सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेचबृणाविस्फोटकादय मातृ
चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा
मनंदिता सुवर्णरजिताभर्णंवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा
बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगञ्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ
विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो
कामाक्तं शिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्राक्रमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य
निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षेसुखं
प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

भृ०सं०
फलित
२६५

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिंततः चंद्रजीवपरंप्रीतिग्राशक्तं मित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणालोकलज्ञानकथ्यते द्र लाभोपिज्ञातव्याकार्यं मात्रासिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणाभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि विशेषेणावृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलं दतेभूमौतातमातोतिहर्षित भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवग्राशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशि त्रिंशगतेवर्षे भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्चजायते श्रद्धाभक्तिस्थितो यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दृष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठतम् आरामं वापिकामन्द्रंदासदा।सश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुण्यसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाप्यतेमुनिरुत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े २ भाग्यवान ग्रह पड़े हैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यून सा कर दिया नहीं तो पृथ्वी पर बड़े २ आनंद भोगता सो अब भी पाप ग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा आदि करने से फल प्राप्त होगा जीव की चिंता मिटेगी शुद्ध चित्त से मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ट फल की प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी ये जीव लाभ के उद्योग में रहे परन्तु मरजी के माफिक कार्य विलम्ब से बनेगा और काम की सिद्धि होगी बड़े बड़े खर्च सिरपै झेले घर में पीड़ा क्लेश हो जाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ न हो सके मित्र में मन फंसा रहै और शुभ काम में विशेष धन खर्च हो बड़े २ फिक्र और आनन्द देखे एक समय नया जन्म हो चित्त में नई बात सोचे मित्र की और लाभकी बातोंमें चित्त लगारहै यत्नसे आयु पूर्णहो हे पुत्र पूर्व जन्ममें ये जीव शिव मन्द्रका पुजारी था चर्स भंग बहुत पीता औरों को पिलाता एक समय शिवरात्रि को फाल्गुन के महीने एक राजा ने शिवजी के निमित्त स्नान करने को स्वर्ण के घट प्रदान किए सो कुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेच आया उसके धन से खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणों को प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्ण हो

भृ० स०

फलित

२९७

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्विजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्ठआभूषणांवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकार्णोभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापकूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणाचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तंविशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुखिखत मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणाविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलश्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्टतिगेहेकार्यमात्रञ्चसिद्धति त्रयोदशाब्दमारभ्यविंशवर्षावधिंतत सुवस्त्राभरणांवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेचापिकार्यमात्रञ्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तंविशेषता मानसीविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यंचिंतनम् शशिविंशाब्दत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोद्यानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

मृ० स०
फलित
२९८

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्य मवाप्यते भागवृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगराभगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यंवद्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्वके तथा ग्रहकष्टत्रिचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चित्तवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुभोष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्म पत्री में जो ग्रह पड़े हैं उनका यह फल है उच्च पदवी पावे किसी के चित्त को दुख न दे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वाला हो कैसा ही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्य न माने अपने लाभका ध्यान बना रहै चित्त में प्यारे मित्र की याद बनी रहै उत्तम आजीवका से पालन करे बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत से मनुष्य इसकी आशा में रहैं अच्छे २ वस्त्राभूषण घरमें स्थित रहैं एक समय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सो कुछ न समझे पुत्रोंके विशेष सुख और लाभ के कारण संतान गोपाल के मन्त्र का जाप्य कराता रहै तो वंश की वृद्धि हो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भयसा होजाया करे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछ पीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दान मन्त्रसे शांतहो हे शुक्र पूर्व ये जीव ब्राह्मण था अत्यन्त प्रतिष्ठा और धन प्राप्त किया ज्योतिष विद्या में निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिका ज्ञाता दानपुण्य बहुत लिया संतान न हुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वो धन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागी हुआ तिस निमित शिवजीका पूजन करे मन्त्र जपे गायत्रीके अनुष्ठान करावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रअहावेयंसर्वावस्थासुखीनर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपाल्यतेनर भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित कुलवृद्धि
धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चऊऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्ध प्राप्तिविनाशनं ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेध्यत्नतसदा पपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांअन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेल्लाभंचित्तआशासुपूजितं बृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्ठित व्ययकार्यविशेषेणसर्वपूर्णभविष्यति
शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चितद्दानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनस्थितेमनः आनंदेनगतेकालअकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
अल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्य नंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत् भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टश्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राङ्केतथा विद्यारंभकृतोचापिग्रंकाभ्यासश्चवर्द्धनबालक्रीड़ाविशेषेणताततमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाब्दमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा अन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्य
तातमातअनन्दिता नगचंद्राब्दमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च कार्यमात्रोभविश्यति अनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घव्याधिप्रशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति आनंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे अकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते आपदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागम स्वगेहोराजतेपुंसमान

भृ०स०
फलित
२९९

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आप
दुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणंदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतसर्वकष्टविना
शनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुल
बंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाक्षये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखं
लोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाद्धमागम्य शरचत्वारिचांतके
तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्य
भूयसे सुतपौत्रसुखसर्वजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधितत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके
सर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणसर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदैवानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्व आशापरित्यज सून्यसप्तगते
वर्षेआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताद्धमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

।। भाषा ।। इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहे कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहे तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहे चित्त में कपट न हो आनन्द में रहे एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहे अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ।।

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवष. दिअष्टमे वृणव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविव्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगश्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राद्धकेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुं समंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतश्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगश्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानश्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्यय लाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामश्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यबाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तश्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टश्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्ररामामितेब्देचबाणरामामितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयात्स्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धंआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानवृद्धया उंऐंह्रींक्लीं

मृ० स०
फलित
३०१

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्रश्नसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वग्रामेभवेत्खेदंकल्पर्यंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मेणाअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटानुसारणः बहुहिंसाबधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणंददेत् व्योमबाणाद्धकेवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापित हैं तिनका ये फल है कि बड़े भागवाला जीव हो कुलदीपक हो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बी हो न्यून कारण से चिंता विशेष मित्र से मिलने की इच्छा रहै दो समय धन की विशेष प्राप्ति हो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थान के ईश के कारण चित्त हट जाया करे दो ग्रह बलवान पड़े हैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य ब्रथा हो लाभ होता २ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभ के कारण एकादश स्थान के ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्प से नया जन्म हो ३४, ४४, ५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसी का बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्च झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था सो मृगों की बहुत सी हिंसा बनी तिसके शाप के निमित्त ये उपाय करे स्वर्णका पत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरे मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकलपकरे अल्प नष्टहोवे वंश की वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज
रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घआयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति
आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमात
सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम्
वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगञ्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसं
पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं
प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते
पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभमगुप्तधनञ्चलभ्यते कार्यलाभञ्चदीर्घोवागुप्तचिंता
शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति
नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्धकेवर्षेबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच
प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अतितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट
विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मातउपद्रोवाजीवचिंताच
प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥शुक्रोवाच॥
केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥भृगुवाच॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्याथमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्सर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशय पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारम्भ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेद्ध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशय ।। भाषा ।। इस अंक की कुण्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घर में मंगलाचार खुशी जीव का ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थान के ईश की पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्ति हो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिल जाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिस के शाप के कारण जीव की चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ऊों ऐं ह्लीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय : मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ।।

मृ०स०
फलित
३०५

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात् भाग्य वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम्अर्थप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययफलखेद्दृष्टा श्रेष्ठवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतियष्टा रोगश्चप्रथमेवर्षे द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेबृणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग संप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम् नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयातग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्रातिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येव.तपित्तेनपीडनम् ।।शुक्रोवाच।। केनदानेन पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वंपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम् पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत् साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यम्नान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्णं संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा शरलोकाद्वकथ्यंतेबालवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्वकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्यय

नसंशयः षष्टवेदाद्धकेवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तंबारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्वेचवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवम्यांच भृगुवारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मन की कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ सम्पूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य सम्पूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोत्मा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः
अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि
लाभनसंशयः अकस्मात्उपद्रोबाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीडाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं
वाच्यंबालवृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनरंभयो बाल
क्रीडाकिलोलश्चजीववृद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठश्चविद्यायांअंतविद्या
विसार्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रवर्षगाथाचकथ्यते तातलाभ
भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम्पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते
भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र
मितेतथा दीर्घलाभविजानीयात्संतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीडाचप्राप्तये छायापात्रकृते
दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेद्वेचव्योमराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र
पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा
अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापश्चभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा
नुसारण गौवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः
सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीडनम्पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

कारयेत् पूर्णयत्नेनभोकाव्यानश्रमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वा अग्रजन्मपुनःपुन चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मेस्थितंयदा मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यंधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा मंत्रदातव्यशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसा विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेद्बेचगृहषष्टमितेतथा सुखदुखञ्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले स्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु के पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ठ है विष्णु भगवान् का आराधन दान पुण्य करे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला भूंठ से जले शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ठ है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालवंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश हो कर एक गर्भणी गऊ को मार डाला तब उससे बहुत दुखित हो कर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्ण के पत्र पर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो जावे और धन की विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेद्बे ज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णादेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिल्लोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रश्रौषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंमम: तातलाभधनंवृद्धिबालक्रीड़ाकिल्लोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समवालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचश्रौषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेद्बे चबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोश्रानंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने श्रारिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे श्रौषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वकष्टविनश्यंति
श्रानंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेद्बे चत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एतत्वर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रश्रंगपीड़ाप्रजायते श्रौषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्ररामभितेद्बे चशररामभितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताश्रानंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाद्बकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाद्बकेवर्षे बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रहमंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूम्रकाणिकानिचः धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिभ्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितीर्थयात्राविचार येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफ वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णा पक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहै पश्चात् आराम मिले अल्प बीच कर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मन से करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ठ है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्ठ है मित्र में विशेष मन रहे मीन रेखा हाथ में श्रेष्ट है एक बृण का चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्ट है किसी के चित्त को यह जीव न दिखावे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

मृ० स०
फलित
३१०

मृ० स०
फलित
२ : १

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्वि रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्यादगिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रृणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम् दीर्घकार्यव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेव लतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा भग्निअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रेमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितितातशोकोपिबूडनम् आदपठनश्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक द्विरागमन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्प जीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चंद्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले जीव चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चंद्ररामिमितेवर्षेबाणरामिमितेतथा शून्यवेदाद्धकेशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त नान्यथावचनंकवे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानश्चशांतये चन्द्रवेद मितेब्देचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाद्धकेमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वंजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टबाणीच
भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीनरः चंद्ररसमितेब्देवर्षोनषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती
भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजाराजजनंत्रीचदासदासीसुखीनरः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र
षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानश्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखश्चप्राप्तये
मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मात्मल्याधिऔषधी
सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधवंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र
इस प्राणी की कुण्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ
होवे अनर्थ से बहुत डरा करे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान
करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत
श्रेष्ठ है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मतता से बुद्धि न्यून चलायमान सी हो जाया करे एक समय
अचानक विपत्ति रंज सा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ठ हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्राम पति जमींदार था दान पुण्य भी विशेष करता था एक समय इस जीव ने हवन करके
यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा
साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमित्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे
और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष वृद्धि हो और
मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वंगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचग्रसत्यवचनंब्रजेत् दानीमानीभवेत्पुंससुतदारासमन्वितः देवद्विज
रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचतीक्ष्णः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ा
ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहश्चजायते बृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्रात।ग्रथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात
महाहर्षंजीवनंसुफलंमन ग्रन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः ग्रष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यग.थाचकथ्यते
कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचग्रौषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो
बालक्रीड़ाकिल्लोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्ममितेतथा विद्याबुद्धिविशेषेणग्रायुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकायेंचसिद्धति
द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिग्रल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिग्रौषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च
चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिग्राशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरबृषमितेतथा व्योमरामाङ्कमध्येतु
सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तग्रल्पग्रायुचबालकः
चितक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता ग्रकस्मातमहत्प्राप्ति
ग्रानंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाङ्केवर्षेशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र
समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्यपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़।व्याधिवृद्धि
प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदृश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण
वेदाङ्केतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवासग्रकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं
विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातग्रल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यमघृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधानुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वंएकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तं तुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पमर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादश्चधनव्ययोनसंशयः धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् भ्रमचित्ते शुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकं तौलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगायाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रगौत्रसमायुक्तोपञ्चईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्राचगवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंतुधानृणाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन को प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष वृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की वृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उसका उपाय जो कुछ लिखा है सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक २ प्रकार की वार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की वृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीव का दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वर्य प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवा कर और तांबे के कलश में घृत भर कर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रि के समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंश की वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीव की स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनी रहे ॥

मृ० स०
फलित
३१५

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोत्र्असत्यवचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच
कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये
पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरि
भाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी
प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताक्विचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा
विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतिश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त
चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति
महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडितपितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं
चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नोगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं
कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये
मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषिनः चंद्ररामममितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्वकंमध्येसर्व
गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचितवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभममध्यदिंनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्यथावचनंमम पुत्रजन्म
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयातगुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम्अन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मातउपद्रोवाकिंचित्
कालशांतये चंद्रवेदमितेद्धेचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तय देहकष्टज्वरं
व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयंजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणञ्चसंकल्पं श्रद्धाचब्राह्मणांददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपश्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ भवेत्शुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते अल्पश्चनुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्री का फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान् पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेष रहा करे और हे शुक्र इस जीव का खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईश का पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो भ्रात योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीव का दुख देखे उसको निवृत्ति के कारण महामृत्युंजय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहे चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्ट है विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्यों कि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवा कर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतः श्रीमान्जन्मवाधाविधानतः
सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्चाशक्तया दीर्घकार्योपिश्चागत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति
नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं
बृणव्याधीशरीरेचकृशयदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्चथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं
सुफलंतथा श्रष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा
परिभाषितः पञ्चदशेश्रष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते बृक्षोचपतनंज्ञेयंश्रथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते
कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्चल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः
निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्श्रौषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिंता
शरीरजं षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्ययगयोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र
जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यश्चनुष्ठानयथाविधिहवनंब्राह्मणं
भोज्यंवस्त्रश्चाभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणश्चानंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य
प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते श्चानादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडच्यश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती
मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो
वत्सश्रेष्ठकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः
पापनहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चश्चाकारीसर्वश्चायुहर्षकम् पूर्णश्चायुदशंरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

मृ० स०
फलित
६१७

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणाबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारात्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभवि
ष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवा किंचित्कालशांतये
चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥शुक्रोवाच॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिमुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥भृगुवाच॥
अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकाम
बीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा
पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यंमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिच
तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले
और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहे यह जीव धन का उद्योग बहुत करता रहे और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा
बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ठ फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा
जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य वार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया
करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की वार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म
होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर
थे कायस्थ कुल में चित्र गुप्त वंश में था और हस्ती घोड़े वाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्याय से अन्याय कर दिया सो इसी चिंता
में पंडा मरा सर्वस्व जाता रहा सो पंडा ने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिस के
कारण स्वर्ण का पत्र बनवा कर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवीणोसत्कर्मीचदयालुसर्वप्राणिय: शुभकर्मरत:पुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र
सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्च:अल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्ति
कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रञ्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितियेब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो
ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु
विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगञ्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलञ्चआनंदभूमि
मंडले तातलाभविजानीयात्देहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं
पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखञ्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा
चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणञ्चसुताजन्मन
संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे
व्योमरामप्रमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये व्रणव्याधि
शरीरेचचिह्नदेहस्यदृश्यः शुभकार्यंधनव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते
चंद्ररामप्रमितेवर्षेबाणलोकमितेतथा सून्यवेदाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नो
पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्ष
शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः
किंचित्कष्टविजानीयात्औषधोमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः
चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च
शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताच
प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा
ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यधनंव्ययं
विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणागवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह

केन्द्र में श्रेष्ट होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान
के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहे चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष
खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक
जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन वार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण
करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईश की पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था
सैंकड़ों चौपाये और सैंकड़ों मनुष्यों का पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैल का अंग भंग हुवा उसने
दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर
संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनन्द भोगता रहै ॥

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रिया शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख
दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति
कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो
जातारेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभग्नीभ्रातृप्राप्नुयात् तातपानमहासुखंजीवनंसुफलंमम: मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित
अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच
औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा
मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित प[illegible]गश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजा[illegible]त्औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने
कार्यंकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच
कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यंकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्त
व्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ओं, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा
इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाब्दमध्येतुसर्वगाथाच
कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मात्महाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र
दानंचशांतये नवीनोकार्यंकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण
कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

मृ० स०
फलित
२२२

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणानान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशरबाणमितेतथा व्योमरसाब्द केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मात्महाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणागवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नञ्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणञ्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बलवान् आनकर बिराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश को विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े २ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बच कर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े २ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश हो कर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में हो गई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीव का अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचश्चलोबालजननः प्रमोदीसत्यवक्ताचग्रसत्योबचनंव्रजेत् दयावंतसमादृश्योपरकार्योपिततपरः सदाहर्ष
महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः
यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिग्राशक्तया अल्पदेहभविष्यंति
नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते बृण
व्याधिशरीरेचभूतछायाचविव्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिअल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं
कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्यधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे
शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचआनंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीति ममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानी
यात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानश्चशांतये
पापकृ रुद्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाद्धवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिआनंदभूमि
मंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिग्राशक्तया अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण
मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्ररामभितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाद्धकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते अर्धआयु
गतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्अथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव
मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययो
योगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाब्दकंमध्येसर्वग.थाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफबातेनपीडनं चंद्रमा
मंत्रजाप्यश्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

भृ०स०
फलित

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत् नवीनोवार्तया चितवाहन॥द
सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति
जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वेविघ्नोपशांतये
चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यलाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य
पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगवनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णश्चहरितःदारुकाञ्चनं ताम्रगुप्तददेविप्रसंकल्पंनृपतिंकुरु आचार्यदानदृष्टस्या
अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योग का यह फल है कि बड़े २ खर्च के काम सम्पूर्ण हों प्रथम तो
चित्तको खर्च का भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के
नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीव की आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे
रात्री को अनेक वार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हानि हो चित्त में भय सा रहै फिर धन की
प्राप्ति हो स्त्री से प्रीत और घर में पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्प से बचे जीव का दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल
का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व
में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पण्डा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर
लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले
पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से
राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
३२५

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकसहस्त्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः
प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरप्रीतिश्चानंदं
भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्त मानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिंताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे
काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग बृणाव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं
अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशषोडशतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्चविद्या
प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश
अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान्
चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यकृतेनसंदेहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यंव्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये
अकस्मातउपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत बृणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल
मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापावददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्ररामामितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य
वेदाद्धकेमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि
प्राप्तये वाणिज्योकार्यकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्रभूमिमध्येचस्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्तवैश्योगुप्तधनंहरंचन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य
बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेत्रर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकेलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलंग्रहकष्टविजानीयात् व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्र्यंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवासकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगतनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि इस जीव का चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं किसी का बुरा नहीं चाहता सब का भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एए ब्राह्मण तिस का मित्र था कुटुम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मर गया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिस के निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्र की वृद्धि विशेष हो कामना पूर्ण हो पिछली अन्त आयु में विशेष सुख भोगे सब के भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षे ज्वरपीड़ाच रेचनं मातृकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारकंतथा आदिपठनञ्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यधनव्ययः तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोतिपत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय मध्यप्राप्तिविजानीयात तातचिंताचमातकंगुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिनकालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तयानानालाभकंप्राप्तिभाग्य वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंतिभृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलंपापक्रूरग्रहापूजा लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्राममितेवर्षे बाणराममितेतथा शून्यवेदाद्बमध्योपि सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रुपक्षविरोधीच धनमुद्राव्ययवृथावर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यतिगुप्तचिंता शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात् व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधीचधनं व्ययविशेषत शत्रपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्ठा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनन्द दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तात का धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घर में मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तात को लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्ट है नहीं तो जीव की चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वाला हो इन्द्री में पीड़ा काम की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े २ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्प से नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनी रहै तिस निमित्त तांबे के कलश में घृत भर कर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंश की वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्ति से जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहुभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यंञ्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वंआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यातो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेव्देचे तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीचरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकंबालक्रीड़ाकिलोलञ्च भग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात् बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यतेशुभकार्यं धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरजं चंद्ररामामितेवर्षेबाणराममिते तथा शून्यवेदाद्वमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेतशुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मातउपद्रोवा पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंतथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेव्देच शून्यबाणमितेतथाचंद्रअल्पदुखंशुक्रदानमंत्रप्रशांतये करमानञ्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्नकालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्रं धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखावहं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सूून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णविजानीयात् व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथाव्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धन का मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्टा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडा जी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर गृहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगञ्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी
नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्पर: विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामीदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति
विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिराडले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतबनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पञ्च
प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं
कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगञ्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं
भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुखिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगञ्चप्राप्तये अल्प
विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरञ्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रञ्च
मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं
जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मात्उपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र
मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता
शरीरजं कार्यमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं
चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्ररामसितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल
उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशञ्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलम् मासेवर्षसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधावृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढ़सुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बहुत उम्दा आनंद से अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदान्त मत हो स्त्री को चित्त में पुत्रों की लालसा बनी रहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ठ है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभ की वृद्धि हो अकस्मात् प्राणों का भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर न रहै गुप्त धन मिले शत्रु हो जोर न चले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तट पर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियों की चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखत में पंडित साधु मन में कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतान की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्टहो ७५ बर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंव्रजेत् दयावंत
समादृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतः पुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणांकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाब्दविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेसंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवीनो
कार्यकंचिंताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामभितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभस्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

मृ०स०
फलित

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रुपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथावेदसप्ताङ्ककेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतिभषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ।। भाषा ।। इस पत्री का फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रताप के बैठे हैं मन का गुप्त भेद किसी को न दे विद्या से बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीव की तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईश की पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालों को दुखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजनदे तो धन संतानकी वृद्धिहो चिंता मिटे मनोकामना पूर्णहो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोर्थ पूर्ण हो ।।

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चचलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चचलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयातभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चंद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्राममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यंतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यञ्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वंयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत् धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रञ्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणक्रियतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षेषट्रसआद्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ।। भाषा ।। इस

पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो सत्य वचन बोले श्रेष्ठ जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह तरह के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेष हो अकल तेज हो दूसरे की बात को तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनि का मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे का हो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी काल में खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काम में खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूह का सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दण्ड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमन ले और भोजन जिमावे दान दे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ।।

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्टश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् वृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत् अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घ
सुकीर्तिचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्यः
पुनरन्तेसुरक्षण पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णंभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेववह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविव्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनंदकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंतरुजंसर्व
विनाशनं वेदवर्षाचपश्चाब्देषष्टमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलंजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचितोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्बमारभ्यव्यालचंद्राद्बमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिस्यपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेललनाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधैरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टोभिजायते पापादुक्खंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

मृ० स०
फलित
३३७

पुण्यभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योर्हर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं ग्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः न.नामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यंसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वंआशाप्रपूर्ज्यंतेबहुचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखीलोकेराजद्वारेप्रतिष्ठता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणंश्रेष्ठनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्रातये बृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुःखिता दानपुण्यसुकर्मेणसर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुर्वृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुनस्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात् नगवेदमितेवर्षे शशिपक्षाङ्कंकेतथा द्रव्यपार्थिवगृहागम्ययावंतोभागदर्शनं पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्रातये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पचैवोतिदारुणं नेत्रपक्षां तरोकाव्य व्यालपक्षाङ्कमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरंसुखंसर्वं प्राप्यतेप्ययथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ आनन्दाति विनिश्चित रसषष्टमतिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह श्रेष्ठ है और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार करै लाभ और सुख दुख देखे इज्जत के साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीव की चिंता रहे छल छिद्र से जले सत्यासत्य को पिछाने किसी का बुरा न चाहे हीन दशा में फिक्र चिंता क्लेश होती रहे परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्ति से रहे आनंद मान कर बितावे एक अल्प से प्राणों का भय हो पुण्य से प्राणों की रक्षा हो पूर्ण आयु भोगे तथा लग्नेश के पूजन दान आदि से विशेष लाभ हो है सुख पूर्व जन्म में ये जीव ग्वालवंशी था बड़ा धन पात्र था मथरापुरी के समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकार का आनंद पाता था एक समय भूलवश हो ग्वासन गाय की ताले में बंधकर चौरासी कोस की ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मर गई आकर देखा तो अतिशोक माना बहुत कुछ दान पुण्य करने पर भी पाप का भागी रहा सो स्वर्ण की गऊ बनाय दान करे तो मनेच्छा फल पावे धन संतान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोउत्तमम्हा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो
नित्यंजाप्यमंत्रष्टाक्षरी दानमंत्रसुपुरा नविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ
चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यंविशेषेणसर्वपूर्णो
भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तं विशेषता हर्षसौख्यां
वितोभूयअनित्यंभोगतत्परं पुत्रार्थंसंतगोपालमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो
भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीडाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले
धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता
वृणबाधा नसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुण्येनबालवृद्धिर्दिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च
मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदंमंगलंह्रिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपश्चतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण
तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेसंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदवृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतेमहोत्सवं विद्यावुद्धि
वृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टवाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल
दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशततथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनद्रष्टव्या
लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य
कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिर्दिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता
सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत् कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणां
नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुणयकर्मसुभक्तितः गुप्तशत्रुविशेषेणभय
सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः छत्रचिंताविशेषेण
भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहोमोदतेचमहोत्सवं बृहत्वोकायंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति
स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावत्कालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह
सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा चंद्रचत्वारिवर्षाणि
नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्टितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदश्चापिसर्वदा दान
तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयातन्नृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं कर्मानु
पुणयप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदंमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणगतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु
सारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुणयकर्मेणादैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाब्दमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण
निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवर्दिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इसकुण्डली का फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवान हैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार
मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा
तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सब के भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े बड़े खर्च के हैं सो
चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और
न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दोनों भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो
श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा
पूर्ण हो बड़े बड़े सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रख कर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाद्महाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रश्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यवृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरायते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णभविष्यति पापकूरग्रहापूजयेक्तताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनीतश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रश्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पश्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टश्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्ववाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेव्रणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहश्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगचित्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदिन पश्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भृ० स०
फलित
३४१

मृ० स०
फलित
२४२

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैप्येश जायतेपुरायकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहेगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाब्देसुता पुत्रमनंदितालाभवृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनंसत्यवादीगुरुभक्त नृपात्भामान्यभवेत्सदाद्विजदेवसुभक्तिश्च विचित्रोवाक्यंब्रवीत्चत्वारिंशा वधिंवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुग्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहुसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित वृहद्भाग्योधिकारीचद्रस्यतेनात्रसंशय शशिवेदाब्दसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्व विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादञ्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वेपुत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्ठोपिवर्षांतेकार्यभारविनिर्मुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख महत् प्राप्तेचंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णाभविष्यति सर्वकर्मानुकूलञ्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है प्रथम मध्यम भाग्य हो पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मन की बात कहै तथा एक जीव की चिंता से क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हरा भरा बाग कटवा दिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुत सा स्वर्ण भर के दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
३४२

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्टबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाअधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चद्रश्यंते तेनहानिप्रजायते
भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा
काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहर्षश्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन्
दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं
सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णयु
तोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः वृणचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्य
प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले
जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालवृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता
विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्वतसरोवृद्धि बाल
क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाद्धके विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल
चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य
आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभ
व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमोदिता शशिचन्द्राद्धमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्राय
चितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र
तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टनाश
नं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुरायेन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाद्धमायात शर
विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे
सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा
द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं
बुद्धिसम्भव रमविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण
चितचिंताव्ययपुरायं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलारायेवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्धित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंग
लंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णाविकारेण महादा
नेनशांतये चत्वारिंशावधितात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चातभाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं
विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति
विशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं वन्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वे स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फलनहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगलकेतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्य की वृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय न बनेगा मध्यम लाभ हो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रतापसे आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशामें कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसीकी बुराई निन्दा नकरे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघात हो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा न थी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म भोज आदि न किए एक ब्राह्मणका गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज करानेसे धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

मृ०स०
फलित
३४४

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मो जीवआशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलवृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तञ्चशांतये कृष्यदेहोपिद्रश्यंते भूतछायाश्च
विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालवृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालवृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमंगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वे भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राब्दमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भाविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वे यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवह्निगतेकाव्य तथाचपंचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्
सर्वेषांशुभचिंतकः दानमन्त्रसुपुरायेन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढतत्वमिदंज्ञात्वा नकदाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्द
केतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलकार्य सुतापुत्रश्चमोदिता सुत
कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसौख्या
धिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवधिततः द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददी
र्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशगत अन्यसर्वसुखंदश कुलभाग्यविवर्द्धनम्
पञ्चपंचाब्दमारभ्य शून्यषष्टादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंबत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे
सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यसाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे
मतिस्थित रामनाममुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रस
षष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्र का ऐसा
फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहता है
गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है
और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी
अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से
विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के ब्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा
एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन
लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान दे तो पाप शांतहो परमसुख पावे ॥

भृ० म०

फलित

३४७

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाच्चेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव
यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं
नूतनाजन्ममणयते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं व्रणाचिन्हश्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम्
उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि
प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानमन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता
विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मश्चमोदिता आदिवर्षात्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलंसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे
विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सयत्नशांतिसर्वदा वेदाद्ध
पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणाव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः
अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य
षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च
चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यश्चद्विविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण
लोकाचारश्चसंगम जायासौख्यभवेद्धत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं अहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता
प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधिंतत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सतापुत्रसमायुक्तो
लाभकृत्यविशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोद्यानंदतोपिर.ाद् बहुलाभप्रभावत पापकरग्रहापूज्य सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र
त्निनागतोग्रप्नं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्य
सिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं
राजद्वारेसुमान्यश्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं
कष्टं अकस्माज्जायतेक्वे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायोपात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट
विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धंसुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते
एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पश्च
विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मने
च्छापूर्णातोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रश्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्भयमागम
शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्टांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदारुण रामनाम
जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्तो
वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी
जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव
की मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर
में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसे करे किसी का बुरा
न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त
भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधुब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका
पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियोंको भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्ट हो ॥

मृ० स०
फलित
३४९.

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदा विद्यावान् चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्टईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यंतेगूढतत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनद्रश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्ठाभंगचिंतयेत्
जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमतमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभग्रकस्माद्धनप्राप्नुयात् मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहलाभप्रभुत्व
जायतेकुलदुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मग्रल्पभयंघोरंआयुपूर्णपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुवृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घंटाकर्ण
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे वृणपीड़ाज्वरोतप्ततथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिःसद्यशांतिभवेत्त नआनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स
तथाचसरचंद्रकेविद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्धाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चमपातिता ग्रकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागीचबालक षोडशाद्वसमारभ्यतथाविंशाद्वमध्यमा लाभकृत्यरत्तोभूयचृहद्भागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़ताबुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमेश्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपञ्चविंशाब्देतयोरंतरधनांगमद्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूर्जितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वौपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

मृ०स०
फलित
३५०

पुत्रजन्मेचनन्दितोरसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावलीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यक्षंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्वयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्टित पददीर्घमु
पस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलंप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो
दीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्बत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च
वाहनं तीर्थयात्राजपंपुरायंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यंचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे
तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुरायेनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद
त्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेषेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय
ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्वंवैभवाग्रामभूमिग्रहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता
मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोपोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत् सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा
रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य
प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुरायकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर
बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्र हो लाभ मध्यम रहे काम
होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेश पावे सूर्य मंगल और राहुका दान मंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि
रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें
किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में ये जीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों
का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया
सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

मृ० स०
फलित
३५१

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृक्षंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्त नकार्यसाधनं दशाश्रेष्ठयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्राप्नुयात लाभञ्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रे चबहुद्रव्य तथापिचवृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातः सर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयोगंमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णभवेन्नरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुण्य कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रञ्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि वृणविस्फोटकादयः गुडगोधूम्रदानञ्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रञ्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राद्धकेकाब्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीतिरूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनसंदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राद्धमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्त मनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनैः भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मञ्चमोदिता रसनेत्राद्धकेकाब्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोद्यानंद तापिस्या

द्बहुलाभप्रभावेत सुटुंधंमहिषीगावदासदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपश्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोवत्ससुयत्नंभाग्यवद्धं नः नूतनंचिंत्ये त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखीनर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चैनूतनोद्भवंगुक्षशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शकःतथा पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणादानंमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचंद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशातकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरें विशेषोचिंतयेन्नित्यंसंकल्पश्चविकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम् मासेवर्षेसुखंज।ते अकस्माद्भयदारुणा विशेषोचिंतयेक्लेशाविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट दारुण सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाश्यचसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तातनसौख्यप्राप्यतेनुवनारीसुक्रीडन्ते शोभितेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्ठांतरेकार्य ज्वरतस विशेषत दान पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टावधिंचास्य आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रच कुलंदीर्घंसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितीय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीतरहे अपने दुखसुखका सबवृत्तान्त उससे कहदिया करे औरविशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीतिरक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चिन्तन दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभखुशी देख और नाकिसदशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेषहोखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंतासी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेतुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

मृ० स०
फलित
३५२

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं
मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहो भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात् जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं
मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनंव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप
क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलश्च
महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीति सर्वकर्मेशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम्
पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र
प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतवाधाज्वरादिकं
वृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचगुप्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश
समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे
द्वादशेवर्षे मध्यतद्धदाम्यहं पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम
किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष
आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविशेषेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम्
पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहानिदर्शित प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदितादीर्घचिंताविनश्यंति
जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाब्य नगयुग्माब्देकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ग्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व
चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़ितासुतापुत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेणअन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वचरूपयौवनविव्हल

मृ० स०
फलित

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंवृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्बमारम्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रीड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्बमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं ग्रामप्राप्तिब्रहत्वोपि आसमश्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्बकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र मनंदिता षष्टाषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ।। इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्टा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्दमें प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुख पावे ।।

श्रीगणेशायनमः कुंडलास्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घं ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्टित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधन।सय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोगोरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंग्रद्धकृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवद्धनं पापकूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुरायेनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसीउद्यमीपुंसअंतेसौख्य
विवद्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीडयद्वितीयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेचादौपुनश्चदारुणोरुजं मातृक्लेशमहद्दुखंजीवश्चाशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुरायकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचपलंबालशिशुक्रीड़ामनंदिता ग्रंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाब्दमारम्भ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवद्धनम्कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविप्रोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाब्दकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवद्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्त ग्रजीर्णनश्यतिक्षुधा ग्रौषधीसेवनंकृत्वापुरायकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवद्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुरायप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं वृहच्चितायदाकदा

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनात्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवन्हिसुवर्णाणि च त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यविनश्यति कम श्रमफलंमर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुहृश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकाव्यकार्यसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनंगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वछमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाब्दमध्यमा ब्रहलाभप्रभावेणचित्तोद्यानंदसीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिमुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्त वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय दीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरंताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत् विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुवृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढ़शुक्लसप्तम्यानिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत माने धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े बड़े काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और यह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
३५७

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातसौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्टसुखीलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वेमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुरायसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वंग्राशाप्रपूजितो कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निग्रल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं ग्रायुपूर्णं
सुपुरायेनविशेषोधनमागम ग्रचानकंविपत्तोपिग्रंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाद्भमहाभयं दानमंत्रसुपुरायेनग्रायुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेताततलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकृतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिद्दश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्भमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते ग्राशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वंभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्भमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणांवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागम फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुरायेनकिंकिंकार्यंनसिद्धति ग्रपितुसर्वंसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदशत्रुपक्षश्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यक्षंनकाशिता मानसीविविधाचिंतग्रापदुद्धारणंजपेत्

शांतिर्व्रतसुशीलत्वंनिर्वैरंप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य
धनसंतानप्रतिष्ठित रसविंशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्ष्यामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता
द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवन्हितथांतरे गुप्तकष्टनपीड्यंतेअजीर्णं
वातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्द्रव्यमायात्उद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता
व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनश्यंतिरचनामन्दनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेधनपुत्रादिप्राप्यते
षष्टत्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोधिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्याद्यौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहलाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच
युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनश्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेशून्यपञ्चावधिलभेत् पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या
भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदवाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं
औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगवाणाद्ब्दमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त
आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताब्दमायुर्ष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घवस्थासुयत्नेनबृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान
कीर्तिबृहन्नित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलञ्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेचिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यधनंव्यय सत्यवक्तासुबृद्धिश्चसुमार्गेवर्ततेसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषेणसुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्रातभग्निसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतो
सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहादि
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीडामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीडाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते
निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोपिनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगविंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रकृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविध चित्तचिंताविनष्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा भाग्यवृद्धिवलंदीर्घगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनष्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातंभूमिमंद्रश्च नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिभविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसत्रमानवृद्धि मनंदिता चित्तचिंताविनष्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतः परिसुख सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः आज्ञाकारोसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रधनार्थिचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसौख्यविशेषेणसर्वआज्ञा प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणेशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

भृ० सं०

फलित

३६१

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थितत्वाग्रहाचेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानञ्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैकत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्क्रयायुक्त सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्रिनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखंरोग
ज्वरंपीड्यकष्टोभूतंकलेवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्चजायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वंयाक्निमासेचसप्तमप्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाञ्च नश्यतिउदरेरुजु तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतञ्चमहोत्साहो विद्यारंभजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्व
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलञ्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्ध
तिचदिनेदिने पितुदेह भवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित् तेनसौख्यसमृद्धि स्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाङ्के कष्टञ्चजायतेदेहोदाधदानेननश्यति योगञ्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्यविशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखंचैवहर्षयंतिदिनेदिने, ब्रक्षाच्चतनंज्ञेयंअथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंवाप्राप्यते भयदारुणां
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहाद्यत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतवाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुखस्य स्तोत्रपाठञ्चकारयेत् प्रेतवाधाविनाशस्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे, केचिज्जीवोमहाप्रीतीआशक्तञ्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
क्लेशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तंनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभञ्चविविधंपुत्रभविष्यंति

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलमश्चभवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीररोगसंपन्नोग्रल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्चनूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिवामभागेबृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्रारामगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेवापिभूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्ररूपतोस्वर्ण दानबृथाचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिराममितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोप्रपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमन्द्रे धनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ।। भाषा ।। हे शुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीव की चिंता रहे और बड़े २ लाभके उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावेकभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्व सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में वृन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब वह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत हो गया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुख का भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ।।

भृ॰ स

फलित

३६२

फलदीर्घग्रहाचेदंभाग्यवृद्धिश्चकारयेत् मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सअकस्माच्च
उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात् महच्छोकश्चजायते साहसीदृढ़संकल्पअन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसंगविनिमु र्ख चौरभीति
भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मङ्गलग्रहमध्यश्चनृत्यगीतादिकं भवेत् पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च
मोदिता अकीर्तिभयमाद्दश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमङ्गलं पराक्रमीद्यशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यवृद्धिसुखं
देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरण्यरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु
प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबुद्धिख्यातिलोकेरिमः शांतो
मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत्सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मणाक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापाकूप
तड़ागेशुआरामेमोदसंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका आगंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगेणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे
सप्तमेब्देषुसंबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेचतत्रैव पितुसौख्यनसंशय अष्टमेवर्षसप्राप्त पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं
नवमेब्देजलोद्भीती दशमेकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचिंतातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं
प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा ककरोमिकुतः सुखम् चतुपञ्चदशेब्देषुकांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका
भर्णप्राप्यतेनविनत्यशः षोडषाष्टदशेवर्षेकांताचप्रियभाषिणी आगंतुकज्वरव्याधाप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविंशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम्
नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशांष्टविंशेचकन्यापुत्रससुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्ध तिपित
वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशामितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल
गानञ्चनवनारिसमागमः अतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोष्यतविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

चन्द्रत्रिशेद्धित्रिंशेब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः शांतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्वसंजाते नगराभवाधितत यंत्रमन्त्ररतोजातंकिंवाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणांरुष्टतांव्रजेत् किंचिद्धनप्रदातव्यसद्धिजोनतुतुष्यति नागा त्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् गृहहाटधनंसर्वंविलगश्चप्रजायते शशिवेदगतेवर्षेनानावलेशमसुद्भवः परन्तुधनलाभश्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्यु जयोजाप्य दीर्घदाननशांतति बाणवेदमितेवर्षेमंगलं ग्रहमंडले नृत्यगीतादिकंकार्य याचकानांधनंददेत् सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यतेमंत्र यंत्र मतिर्याति विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाण मितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था धनोतरः शरपञ्च मितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवमसून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः आनंदमंगलं लोकेनिजकृत्यधनागमः भासेवर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात् भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसी समय भाग्य की बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वाला हो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्य मार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों की संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पित पूजन और गायत्री जाप से विशेष सुख की वृद्धि हो पुत्र की इच्छा पूर्ण हो एक अल्प से अधिक भय हो पाप ग्रहों का पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशा हो मनो कामना पूर्ण होवे हे शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा जिससे वह मरगई और यह पाप का भ हुवा तिस पाप की शान्ति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदन से लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्र सहित संकल्प करे श्रेष्ठ ब्राह्मण को दे गोपाल मंत्र का जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन सन्तान का सुख देखे अल्प नष्ट हो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आयु वाला हो मनेच्छा फल की सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मश्चानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी
चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यः कामिनिप्रिय
कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्वचित भोगमैश्वर्य युक्तश्च
कीर्तिविख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिग्रहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत् कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्ठुरोकटुभाषिणः
साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोग प्रपीड्यं तेनचिरं विद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि
करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोश्चारामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्यु भवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात
व्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्ठुरबचनंवदेत पापद्दुखलभेदीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचर्णसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते
सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैव [illegible]नपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रोप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमागत सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसं
चिन्नसंशयः सुशीलप्रबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः [illegible]विनतोदारशांतश्चधनसिहृष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तवि [illegible]जनतत[illegible] [illegible]चित्तोदासुमूर्तिश्च
गंधंपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टं विशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंज जलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे
विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंच वर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश
मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुर्किंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तःकफवातप्रजा
यते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे
कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भीतिसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिंशेब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रश्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिसेवनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यश्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदमितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभवाणमितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणमितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े बड़े आनन्द भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करनेसे वंश की वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटुम्ब का पालन करे श्रेष्ठ संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राण से अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारीआवें जीवका भय हो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्त हो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत हो जाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हेपुत्र पहिले जनम में ये जीव बड़ा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्था तक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अन्त को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदावत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यन्त पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनन्द भोगे

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदक्रीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्ष्णबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणासंपन्नोमासेऽर्षेसुखंगता सकलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वेहेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभ्रत्यसमायुक्तो सुकार्यकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुर्भक्तःभूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचवलेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवल्लभ दीर्वकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्टमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंतेविस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्तदेव्यायापूजनेरतः [illegible]भेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाद्बसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राद्बमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्टोपिबद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानबृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोद्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वा दाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहृदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविह्वलम् वाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मणा

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्वसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिंक्रमात द्रव्यलाभ विशेषेणपद्दीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंग्रहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो यथाशशिः ग्रहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागतः शरीरोपीड़ितंगुप्त आजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत् सर्वबाधा विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणाम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्वगेकाव्यतथाचनभवे दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परञ्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी दीर्घजीवन सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौ ख्यंप्राप्नुयंतिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनीतस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्वमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ॥ हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परन्तु पूर्व पाप के कारण जीवकी चिंता विशेष बनी रहे जिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल वंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परन्तु चित में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊ को अत्यन्त कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पाप से इस जन्ममें चिंता अधिक रहे घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहे लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न हो तो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पाप की शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटुम्बी ब्राह्मण को दान करके दे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय सन्ध्या समय गौवों को जिमाया करे, तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ॥

मृ० स०

फलित

३६९

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो
भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वे प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नश्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्य
वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयार्त्किचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम्
बुद्धिमान्पंडितः शूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्नी प्रपञ्चालाभजायते पुण्योदयसुखंसर्वे
प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपतिं
विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य
शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनममम् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्यापिग्रहागमः अन्य
देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मंचक्लेशिता शत्रुपक्षउपाधीत्रराजद्वारेपरा
जय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददर्देद्दीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्तसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ
चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोअल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रवम् चित्त
चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् अल्पश्चप्रथमावस्था
मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु
बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रश्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवद रोगश्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच बृणाज्वरप्रपीडिता
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमेद्धे र्धुकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतांति
दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्ययाभूपसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेपञ्चचंद्राद्धकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्ट विंशाद्धकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुरायप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टविंशति त्रिंशचत्वारित्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरेशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्राविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणानतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुरायप्रभावेणसन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः वाहनादिमह त्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुरायधरातले धनव्यशुभेकार्येविवाहोत्सवमंगलम् पुरायकर्मेणाभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्नायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुगुवारेणासंयुतः रोहिरायाभेसमायुक्तपूर्णा मायुःभवेत्ततः ॥ भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्य वाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्या बुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्रीवंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुये तिसी से ये जीव महापाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधि से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महामन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और ब्राह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यञ्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवश्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि
विशेषेणवद्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरश्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभवः
द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेब्रणसंभव दानपुरायेनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे
रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत् चक्षुरोगविजानीयातकिंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो
पीडयंतिपुनःपुनः उपायश्चास्यवक्षामि येनश्रयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेघृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य
विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनकष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च
तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगश्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाचेत्रलाभश्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे
चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यकुरुतेग्रह दीर्घचिंता
स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिहचन्द्राद्वकेकाव्यपञ्चमेकश्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रेपपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच
मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रेच सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते
नात्रसंशय नववस्त्रमहर्षंच धीर्यंत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णांचपूजयेत् तत्पश्चातसंततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च
आनंदवद्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्वकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय
भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिवांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षावधिक्रम
धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवद्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेच याचमानापिन्तृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते
पुरे किंचिच्छोकविजानीयात्परञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

तथावेदत्रियाङ्कके संबन्धंचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहो मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचिंतायदाकदा गोधूमग्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्वबाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा कार्या मासविंसप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येशः आपदुद्धारणंलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत् मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी [illegible]हरामाद्धसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम पंचावधिंगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टावधिंवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वंफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुःख हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनन्द हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे। हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यन्त युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इस पाप का यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचन्दन से उसपर साधू मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातो सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतय
नेत्रवर्षेतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवि
तव्यंनभूयसेमध्यभागीश्चबालोयम् विद्याबद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुःखागतोनित्यं मध्यसौख्योद्य
माप्नुयात् अङ्गन्तारोहदेगुप्तं लाभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चाब्धिवत्स सर्वत्राशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वेदीर्घभागोचबालकः विद्याबुद्धिगुण
द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन
सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतया युग्मकार्यंमहद्द्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विभ्रमोजायतेमनः सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ
भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि
लभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोत्सहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि देवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफल
प्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधञ्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं
सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासीश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाब्य पौत्रसुखविशेषता
द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्मेमतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाब्य पाप
कर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोद्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा
वेदवाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महा
दानेनशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यसप्तांतरोकाब्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बलं अन्नरसंमहादान सर्वदा
सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा
वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपापवलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोकृतेदीर्घं चित्त
आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभूतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते
एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुण्योदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं
ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वंयंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रेयोभविश्यति

भाषा ॥ इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहे कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युंजय का जाप वेद की विधि से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यों में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेदपाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ॥

सृ० स०
फलित
३७५

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहत्रिस्थित्वाभाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता काम
पीडाविशेषेणअकीर्तिंचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाढ्यसमन्वित दुष्टकर्मेणनपीड्यंतेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दाचशत्रुवतथ्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिंचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितुःकष्टंत्रिनारीवसुवर्षेनिदर्शनं धनवान्पुत्रवान्गुणः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदीर्घसुलोचन प्रमोदीशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षव्रणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीडयन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यह्यमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामबाधाप्रपीडत मित्राणांचछलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविह्वलं यदाकामातुरोदोर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुगुणयफलंदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्ठ्युग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंवत्सयशोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ॐऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाद्रूलनया तावत्कालागमेतं सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्याचसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंचैवशुभाशुभंगुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तम
कार्यजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अगुणयेनसुखंक्वापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसंचय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्तरम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्विपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोऽजीर्णंनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात् रामपंचाद्वमारभ्य सूर्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञा वादीर्घ
कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टयः विवाहादिमहोत्सोहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी
सुतभृत्यमहामोदंसनायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपश्च अन्येचस्वल्पजीवनं
रामषष्टगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा औषधिभक्षणंशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णंचऊष्णातोये
नित्यश षष्टमासाद्वयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रहद्भागीभवेल्लोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घऔषधीफलवर्जित कालेयमृयतेसापितत्वंते
चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्वमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवश्राशाविनिमुंख पुत्रपौत्रसुखंसर्वदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्य
रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वंकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेतनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रे सुकुले
जन्मनात्रकार्यविचार्णं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतयेशुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तुं महसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वह बड़ा भाग वाला हो दासदासी और सवारियों के सुख पावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुख पावे क्यों कि इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बन गया है उसके संयोग से महाभारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अन्त में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय ये जीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुआ था बहुतसा पुण्यदान किया परन्तु एक समय बहुत सी मदरा का पान कर उन्मत्त हो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वश हो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोध कर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यान को बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादि का नाश करे क्लेश का अधिकारी हो हे शुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुख का नाश हो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस मासे स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्र में स्थापित कर वेदकी विधिसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मण को दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्ण हो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिदिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तअन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे आनन्दंवद्ध तेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं वृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घंतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशद्वाविधिक्रमात् सर्वसौख्या गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः क्वचित् भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयातनारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती आशक्तश्चविशेषता कामवेगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मयावा क्यश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यस सौख्यदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेदीर्घनात्रकार्यविचारणम् चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्धतंदुक्ख विद्याचसौख्यदासदा सुखा च्छतियपुन्सशुभ कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवद्धितम् कष्टव्याधी विनाशार्थंदानपुण्यरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिमुख रामद्वयाद्ध मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोक्वे क्रमणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यक्रतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अद्धप्राप्तीचदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्व पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवतसचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टमवैद्यो पायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानमजलधेनुचकारयेत् गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणां

भोज्यंततःसौख्योद्यमाप्नुयात् मासेवर्षेसुखंज.तंअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्मअन्यते पुनःसौख्यलभेद्दीर्घकार्यवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्यागात्रेष्टितम् दासदासी सनायुक्तसेव्यतेचासरोकुल व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंसर्वे प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्तं भ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुण्य नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचना मन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचित्तं तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण अहाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुण्यविशेषतः चित्तचिन्ता विनश्यंतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुण्यदानविशेषता देव्याथापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः ग्रहषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णनसंशय ।। भाषा ।। भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुख पावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता होता रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता होता रह जाय पुत्र के सुखमें विघ्न हो और कभी कभी विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते करते उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभ वश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हे शुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पांच तोले स्वर्ण की गौरीशंकर को प्रतिमा बनाय शास्त्र को विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेमसे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ।।

मृ०स०
फलित

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादेद्यु तेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयश्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तिर्यांतिवामांगी स्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्टतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चितातुरोयातोलोकंनिंदामवाप्नुयात् लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाप्तिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यश्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेअह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभवच्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यंलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तंशोचवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुकष्टजम् केलिक्रीडाप्रयत्नेनभविष्यन्तितनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्रार्चनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसंयुक्तआशक्तश्चापिविव्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायाप्रपीडयन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीड़ाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतयेरामाव्देपञ्चवर्षाणिव्रणपीड़ाचदारुणाम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानश्चकारयेत् आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीड़ासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत् कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षे राजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्रयोभविश्यति शोडशेब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगञ्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविघ्नानप्राप्यंते कार्यमात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मेणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिध्रुवंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायतेद्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणाघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंवातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवधिकाव्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यफलंप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहे सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मन्त्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े बड़े खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहे प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जन्म में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मन्त्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ताग्रग्रे फलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिक्यशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्तोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचग्रंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यव्हारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थे मोदतेभुवि कवित्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंविं करे
धूर्तेनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिणा विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररंक्षणार्थायराहूपूज।चकारयेत् घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात् सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रे चविंशाद्वे वेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
वृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंधुजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्वे वन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्टमे
वर्षेवृणारोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच ग्रंलविद्याचपठति ग्रष्टमेब्देमातृपीड़ा ग्रौषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमकादशेद्वे षुमंगलंग्रहमराडले नवभूषणावस्त्रश्चवद्धं यंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितेवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसंप्राप्यबाणामेकंतथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्वे चविशूचिरोगसंभवम्

पुरायदानेनशांतिस्या त्तथाऔषधिसेवनं कांतासंयोगसंजातो आनंदेनसमन्वितः अष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षतथैवच मोदतेकं तया
युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणाविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे
नेत्ररोगप्रपीडयन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंअयत्नेक्लेशदारुणो षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके आनन्दमंगलाचार किंचि
त्कष्टशरीरजम् औषधीदानमन्त्रेणासर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणातले कदाचित्स
मयेकाव्यशस्त्रेणाघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षष्टत्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानश्चवर्द्धते
पूर्वयात्राभवेत्पश्चात्धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशांतपुरायेननानासौख्यमंगलम चन्द्रचत्वारिवर्षाणि
सून्यपश्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणाबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंआनन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणादीर्घंसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाण
गतेवर्षेसून्यसप्ताद्धमासये मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसंतानयानश्चसर्वआशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्व
लक्षणसंपन्नबातपीड़ाविशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवे भाषा ॥ इस अङ्क की कुण्डली का फल अच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े
हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम आनन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे और किसी समय सब कार्य हीन हो
बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश अत्यन्त हो बड़ी आपत्ति आवे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला
पुरुषार्थी हो लाभ के अनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से
प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीन मन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ और शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की
उपासना करने से मनोबांछित फल पावे शोक रहित हो सुख भोगे हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपति राजा की
तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परन्तु कामवश होकर फिर वैश्या गामी हो गया और जप दानादिक क्रिया
सब लोप कर दी और दीन साधु ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ काल में पुनः मन संगति से ज्ञान उदय हुआ तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में
प्रवर्त हुआ तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्ग में लगा रहने से पाप का फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वेगृहस्थित्वा फलन्यूनञ्चभार्गव दण्डलोहाग्निभीतश्च ब्रणबाधाप्रपीडितं रणेशत्रुक्षयंयांति धनागारेपुराधनं अतिकष्टा
धनागम्यविप्रदेवार्चनेव्ययः दीर्घचिंतान्वितोगुप्तधनंतिष्ठतिगृहे चित्तविक्षेपतांयातिधनार्थंचरेतभुवि सर्वोपाधिसमायुक्त धूर्तत्वाधननाशनं
उदरेगुप्तरोगश्च कौशल्यः कामनीप्रिया कामक्रीड़ासमायुक्तः कटुभाषीचनिष्टुरः साभिमानीमलीनश्च मित्रशत्रुसमायुत शुभग्रहाफलंश्रेष्ट शुभ
कर्माश्रयोयदा दानमंत्रेणपुरयेन कुयोगंनश्यतेध्रुवम् राजद्वारेमयत्मान्यं तथैवधनमागम आनंदंजायतेलोके भृगुणापरिभाषित संततियोग
संजातसत्यंसत्यनसंशय द्विपुत्रयोगसंजातंकन्याश्चतृतीयंतथा वापीकूपतडागश्च आरामेप्रीतवर्द्धनः मंद्रेवीक्षमृतेपत्नीपुनर्लब्धीनसंशय अति
मानसमायुक्तः निजकृत्यप्रतिष्ठतः युवावस्थातुसंप्राप्य विशेषोभाग्यजायते उद्यमेनधनंप्राप्यश्रमेणदीर्घतांदृशः धनसंतानयानञ्चनवनारिप्रियं
त्वतां साधवानांखलानांचसुखार्थेप्रीतिवर्द्धनं नकोपिसंसुखंयातिमर्कटेभूषणयथा मातुलंमातृरोगार्तो शत्रुवतप्यतेसदा सुबुद्धिधनवान्पुन्सः
दानादिमतितत्पर स्वजनेसुखभोक्ताचधनरत्नानिसंचयः दासदासीसमायुक्तःअन्तपूज्जमनोरथा कुचेष्टासंततिजातप्रेमहीनोपिनिष्टुरःपाल्यत
बंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वित जनकस्यभरणंज्ञेयां विपाकवीर्यनाशनं कलत्रंकुमतिजातं शूद्रविप्रेणशत्रतः मध्यमायुस्तदेशे विदेशेभयदारु
णम् सुकीर्तिख्यातिलोकेषु दुष्टवच्चरेतभुवि आद्यवर्षसमारभ्यवेदवर्षेचपंचमे षष्टमेसप्तमेचापिबालक्रीड़ायथाक्रम दीर्घकष्टेनसंपीड्यज्वरखेदविरे
चनं चक्षुरोगोतिक्लेशंच तातमास्तयचिंतनम् विद्यारम्भसंस्कारे मंगलंसौख्यवर्द्धते अष्टमेद्वादशेचापि वेदचन्द्राद्धकंतथा बालक्रीड़ाविशेषेण
मित्रप्रीतिश्चचिंतनं कदाकालेमहाक्रोधंविरोधेशत्रुतंदृशः दीर्घद्रव्यव्ययोजातंविवाहेमंगलंशुभम् रूपयौवनसंलब्ध्वाचिन्तयन्तोदिवानिशि
नविद्याप्राप्यतेदीर्घ निजकृत्यविचक्षणः तिथिवर्षगतेकाव्य त्रिंशवर्षेचमध्यमा दीर्घसौख्यलभेनित्यं नारिभोगसुयत्नते पुनप्राप्यमहाकष्टंदीर्घ
यत्नमहौषधं घटताम्रसमादायघृतेनपूरितंततः भास्करोस्वर्णमूर्तिश्चतन्मध्येगुप्तथापयेत् आदित्यंहृदयंपाठवेदमन्त्रञ्चजापयेत् दानंकृत्वासुयत्नेन
सर्वकष्टविनष्यति सुयत्नंफलदाज्ञेयो संततिप्राप्यसत्तमा चंद्रविंशेद्विविंशब्देषष्टविंशतिकेतथा निजकृत्यलभेद्रव्यं किंकरोत्वापिभूयसे शशिविं

भृ० स०
फलित

शतिवर्षाणिपञ्चनेत्रञ्चत्रिंशके भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्या पूर्वलाभञ्चन्यूनता चिंतयेदीर्घकार्याणि संकल्पंचविकल्पयेत् गुप्तशत्रुविरोधञ्च प्रत्यक्षंनैव
जायते शुभकृत्यव्ययोद्रव्य मंगलंग्रहमागत चिंतयेन्नूतनोलाभग्रकस्माद्धनमागम चित्तोद्यानन्दतापिश्चसुयत्नेनसुखावहं आशक्तश्चमनोज्ञाता
विषयेसमुपस्थितम् गुप्तरोगशरीरेण निर्बलावह्निजायते संबंधंमोदतेचापिकीर्तिपात्रंचभूयसे स्वजनेभ्योप्रसिद्धं चसुयात्रालाभदायक शरीरे
रक्षणार्थायदानपुरायंसुयत्नतः त्रिंशमेकणिवर्षाणित्रित्रिंशेपंचत्रिंशके विवाहादिव्ययोदीर्घमंगलंचादिनेदिनेनवनारीगृहागम्यमोदवृद्धिविशेषत
अन्यसर्वसुखंलोके व्ययलाभंचसंभवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् नवनारीप्रियत्वतोम् विशेषोचिंतनंकृत्वा सुस्वरूपंचलुब्धके षष्टवहिगतेवर्षे
सून्यचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेकाव्य दीर्घसौख्यान्वितःपुमान् गुप्तरोगविशेषेण वर्द्धतेचिंतयान्वित आपदुद्धारणोजाप्यगायत्रीवीर्यसंपुट
ब्राह्मणंभोजनातुष्टो ततःशांतिश्चजायते शशिवेदाब्दसंजातं तथाचव्योमपंचके निजकृत्यलभेद्रव्यं पददीर्घमुपस्थित कार्याणिसकलाणयेव
सिद्धतोनश्रमववचित सुतापुत्रादिसंयुक्तो मोदतेचापिभार्गवः अतःपरंसुखंसर्वेपौत्रजन्ममहोत्सवम् प्राप्यतेदारुणाकष्टंबञ्जदानंचशांतये नंद
पष्टमितिमायुपूर्वंअल्पगतेसती ॥ भाषा ॥ इस जन्म पत्र के ग्रह कुछ विशेष वलवान नहीं हैं परन्तु तथापि वृद्धि करने वाले हैं एक ग्रह पीड़ा
कारक है कभी कभी घर में पीड़ा करलावे भ्राता का सुख हो या प्रेमी मित्र हो खर्च विशेष हो कृपणता न हो सके एक जीव की चिंता बनी रहे सुत
स्थान के स्वामी की पूजादान करने से विद्या बुद्धि विशेष बढ़े पुत्रों का सुख मिले हीन ग्रहके योग से काम अधूरा होता होता रह जाय बिगड़ जाय
विशेष मनोर्थ उत्पन्न हो अति परिश्रम करने पर भी मनोर्थ पूर्ण न हो नवीन इच्छा उत्पन्न हुवा करे विशेष कार्य का अधिकारी हो प्रदेश बासहो बड़े २
लाभ खर्च करे कभी न्यून लाभ हो कभी विशेष हो अनेक कार्य चिन्तवनकरे काम काबू से बाहर हो प्राणों का भय ज्ञान पड़े अधिक दानमंत्र उपाय
करने से अवस्था दीर्घ हो विशेष सुख भोगे पहले जन्म में ये जीव स्वर्णकार था स्वर्ण चांदी के आभूषण विशेष सुन्दर बनाता रहा परन्तु स्वारथी
विशेष था अपनी चतुराई से विशेष लोगों का धन हरण किया अपने मान ध्यान और पूजनिक पुरुषों से भी छल करे अन्याय से अधिक द्रव्य
लिया तिससे पाप का भागी इस जन्म में पीड़ित हुवा अति चिंतातुर रहे इस पाप की शांति के निमित्त चांदी के पात्र में स्वेत चावल भरकर उस में
गुप्त स्वर्ण प्रवेश सुयोग ब्राह्मण को दान करके दे और नारायण का महामंत्र जपवाये तो पाप शांति हो सब प्रकार सुख मिले इसमें कुछ संशय नहीं ॥

मृ० स०
फलित
३८५

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहा वेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहद्वफलदंश्रेष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रश्चप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप
ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीमुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम् अयत्नेनैवभोकाव्यबुद्धिनसुस्थि
रंभव उद्योगकुरुतेदीर्घलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाह।निचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं
असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षण ईशभक्तिसुसंचित्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुह
लीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमेसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्यौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचा
रणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोपिविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निदतोमति जीवध्यामंचसंमरन यौवनरूपचितन श्रेष्टकर्मप्रसि
चापिपरकार्यचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसि
द्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मवेदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणाद्विषष्टके एषुवर्षेसुसजातं भाग्योदय
विशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षेच दन्तपीड्यज्वरादिकं बृणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे
उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय
विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंतादारुम् अनुष्ठानमहादानं
महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषाद्वचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम्
द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता ।मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि
नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्र
गतेकाव्य त्रिंशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भेसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच
पूर्वपापकृतेबाधा शांतनीयंप्रयत्नतः प्रायश्चितकृतेनूनं मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षा
सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचिंत्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ लवणाश्चहरितिक्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि
वधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घअजीर्णनष्यतिक्षुधा विवाहोमंगलंकार्यंस्वगृहसुप्रतिष्टित शत्रुपक्षविवादंचकार्यं
शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिंकंतथा निजकृत्य
भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोह्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत द्विकन्यारामपुत्रश्चसर्वसौख्यांवितो
महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य
भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिंकंतथा अतःपरंसुखं
समायुत नानामंगलसंप्राप्यचित्त आशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिंवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं
सर्वेंपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिमांगति कर्मभेदेनभोप्राप्तसुखदुःखसमाश्रय ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप कराने से भाग्योदय हो जीव की चिंता मिटे परन्तु इस जीव की बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुँचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बात पर क्रोध आ जावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्ब का पालन करे पराया काम मन से करे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाया करे काम की उन्मत्तता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता तिसी कारण पाप का भागी हुआ सो ब्राह्मणों को खीरखांड़ के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंकूरादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य
सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशेषोलाभ
जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा
चिंतनंकुत्रा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वे दुष्टकर्मेणविसर्जिता सुमित्रोभाषणेप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता
हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यं अकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यचसिद्धति कष्टव्याधि
विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुण्यं सर्वाभिष्टफलप्रदान
नगनेत्रद्वयोवह्निपश्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यश्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः
पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनैं उद्यमेनधनंप्राप्य
धनार्थोचिंतयंसदा सद्व्ययोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुण्यं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः
धर्मवार्तासदावृत्तिसद्मतिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्ततथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात्
भृगुवाक्यनसंशय पंडितंसंगतिप्राप्यशीलवृद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादश्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ
द्वेषष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेत्रत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव
निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच
महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभग्नी
समायुक्तोमोदतेचापिभार्गव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्यत्रिंसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि क्रियाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

भृ० स०
फलित
३८७

सर्वसंग्रहततपरः स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ
चापिनिश्चितं सुमार्गेधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपुंसः सर्वसंग्रहततपरः स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवितः पितृभक्तसुतर्पित तुरग।त्मन
कलाभिज्ञोनृपश्चयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरंनिर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससप्रीतिःपितृभक्तसुतर्पित तुरग।त्मन दिवारात्रौचचिन्तनं
ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं
देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्‌शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय
चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते
भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा
चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगणोनित्यंभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपच
रोपिशांतये बहुलाभविजानीयाल्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्ण
भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्ट हो बड़े २ कारबार रोजगार करे परन्तु न्यून फल कारक ग्रहों का दान
मन्त्र उपाय करने से पुत्रों का सुख और विशेष धन का लाभ हो किसी समय कुदुम्ब से विरोध हो धन खर्च में आये शत्रु नुकसान पहुँचावे एक समय
थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यम हो परन्तु चतुर विशेष हो बड़े २ आदमी इज्जत करें प्रतिष्टा पावे ईश्वर का चिंतवन करे अनर्थ की बात
पर ध्यान करे श्रेष्ट संमति दे बुरे काम से बचे श्रेष्ट मित्र में चित्त रहे खरचीला हो पोचबात न कहे चित्त में गुप्त चिंता रहे इज्जत का विशेष ख्याल हो
खर्च विशेष रहे एक समय प्राणों का भय हो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहों के प्रभावसे प्राणों की रक्षाहो सारी अवस्था इज्जत के साथ आनन्द में बीत जाय
दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मो से सुख पावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक
मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आ गया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर
गया तिसी से विशेष पाप का भागी हुवा सो इस की शांति के निमित्त काशी के थाल में चावल भर कर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी
उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढककर ब्राह्मण को भोजनादि से तृप्तकरे श्रद्धा भक्तिसे दान दे तो पाप नष्ट हो परम आनन्द पावे निश्चय सुखी रहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः वृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अ॰वंशप्रकाश्यंति श्वकुलंदीपकंतथा बहु
कीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवपरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्वश्वलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख
वर्द्ध नं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशंसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्र रक्षक्रोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच
षर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणाभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा
भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्सअनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकत्यफलप्रदाः पिताधिक्प्रकोपीचकामाधि
क्यवलान्वितः सुशीलश्चश्चचलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्ठुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धन
युतःपुंसःमीननादपरंप्रियवृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत्
क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यभवेदेहोलोकेनिंदा
कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसंशयः शूरोथवाग्रामे
पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेफलंचक्रूरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरश्चतुरोनरः अविद्याजायते
क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगञ्चक्लेशिता पितुचिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम्
ग्रामाद्धनप्रलाभञ्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रुपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्वग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन
सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्यु
भीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुचिंतासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्वृद्धिदिनेदिने शुभकार्य
धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठअसंध्यासर्वभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसंशय

वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ
शुभकार्यव्ययोचापि यथालाभेतथाव्ययम् पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागी
प्रत्यक्षंनैवकथ्यते मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षेमोदवृद्धिश्चनूतनं भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम्
चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने षष्टविंशेत्रित्रिंशब्देपञ्चवन्हिगतेतथा
पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रयत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् लक्षमेकंप्रमाणञ्च सर्वकष्ट
अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागम केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः संतानार्थेष्टदेवस्य
निवारयेत् तदान्ते गहशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्कृयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी पौत्रजन्म
पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा परलोके
नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलित सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं
फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्री के ग्रहों का बड़ा भारी फल है
पृथ्वी पर आनन्द भोगेगा और कुल में दीपक के समान चांदना करे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भले में रहे एक जीव में चित्त विशेष फंसा रहै
नई नई बातों का चिंतवन करे है हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतु का पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति
पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थान के ईश की पूजन दान वंश की वृद्धि को अत्यन्त श्रेष्ट है गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा
अन्यकर्ता परोपकारी होने से सब सुख पाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्ट पावे प्राणों का विशेष भय हो परन्तु पुण्य कर्मो के प्रभाव से पूर्ण
आयु हो कहीं अकस्मात धन की प्राप्ती हो भूमि लाभ हो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भला चाहे मन की विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से
पूर्ण होगी हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवान था बद्रीनारायण के दर्शन को जाता था सोते समय मार्ग में धन वस्त्र आदि चोर हर कर
ले गये प्रातः काल उठ कर चोर के भ्रम से एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण
पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणों को मनेच्छा भोजनादि से तृप्त करे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादि से तृप्त करे तो सर्व पापशांति हो सम्पूर्ण इच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात्
भयमागम दीर्घंद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणनूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुश्चततोलोके उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीर्घमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यधनव्यय
सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि
सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन
स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोह्यानंदतापिच सुमित्रंप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंसित
श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचरणलोकभि हीनकार्ययदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंदिरयानञ्च विपाकफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषञ्चतथाअश्वंलाभदाभवेत् सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तं ज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्त सुयत्नत वृणाबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतनीयोविशेषतः जन्मतःपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ाक्रमंयथा कष्टवाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयत्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे
सुखंजातंमातृकष्टविशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारणा मंगलंजायतेगेहोभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यासकृतोवालक्रीडनंचित्तचञ्चल वातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्बलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राब्दसंप्राप्यषोडशाब्देन

मद्वयम् नानामंगलंकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यसमारभ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाग्रल्पविनश्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिततः सुतापुत्रसुखश्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतश्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनक्वापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंग्रानंदंजायतेध्रुवं सप्तवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायंते विवाहोमंगलंकार्यंग्रानन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घभवेनूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवद्धंतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणिशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घ नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वे जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्बमारभ्यपौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तग्रष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीय हो स्त्री पुत्रादि का चिंतवन करे अपने कुटम्ब का पालन करे सारी अवस्था में दो बार विशेष कष्ट हो एक भारी अल्प आवे नया जन्म माने फिर दीर्घायु हो धन प्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्च के काम आवें पूर्ण हो चिंता विशेष रहे सप्तमेश का पूजन दानादि करने से स्त्री सुख पूर्ण हो काम संकल्प सिद्ध हो बड़े २ आदमी खातर करें जीव की लालसा बनी रहे अन्त में पूर्ण हो एक कार्य में हानि विशेष हो दान पुण्य करने से तथा ईश्वर का भजन करने से पूर्ण सुख मिले हे शुक्र पहिले जन्म में ये जीव कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अति प्रतिष्ठित ओहदा पाया देवताओं का पूजन तथा दान धर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बन गया मृग के तीर मारा वह बच गया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदय में लगा और मर गया तिसी पाप से अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांति के निमित्त स्वर्ण का पत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्ति का आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृत भर तांबे के कलश में गुप्त रख कर विधि पूर्वक दान कर ब्राह्मण को दे और वस्त्र आभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे और विशेष भक्ति से ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्व सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकामंद्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं धनवान्
सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृपूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराढ्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानश्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतश्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र
कार्यविचारणां पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरापाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्धेशीतितत्पश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्तात्रसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वे भयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवेपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोत्तरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेतरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्राप्तिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्घकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टविंशति

मृ० स०
फलित
१९३

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशब्दे अंगरोगश्चओषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धंतिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्ति श्चनूतनम् दीर्घकार्येसुखञ्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकी तिश्चचित्तमोदभपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणं औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्ट त्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सून्यवेदाद्धमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीता दिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोगृहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चनं नागपञ्चाद्धमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़े पुत्रों के जोड़ों का ध्यान रहे कन्या भी हो वंशकी वृद्धिहो धनवान लक्ष्मीवान् परोप कारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबभी बुरा न माने बड़ा प्रतिष्ठित नामी हो कई वर्ष विशेष धन की प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्य की न्यूनता करने वाले आवें पुत्रों की चिंता रहे संतान गोपाल का मन्त्र वंश की वृद्धि को श्रेष्ट है लाभ स्थान के ईश की पूजा दान जाप से विशेष लाभ हो और पृथ्वी पर बड़े बड़े कौतुक देखे चिंता और भी हो अन्तें समझे वअपने कहे तथा समति के न हों घरमें कभी पीड़ा हो जाया करे एक अल्पभारी आवे प्राणोंका भय रहे आयु पूर्ण हो कैसा ही भारी खर्च हो कार्य हो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्ण होवे हे शुक्रपूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मवंश में उत्पन्न हुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुर था राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्त हो गई तिसे संग लेकर प्रदेश को भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसी से पाप का भागी हुवा स्वर्ण के पत्र पर स्त्री की मूर्ति रक्तचन्दन से लिखकर बहुतसा धन तथा अन्न में गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दानकरके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनन्द पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणोधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य
नूतनमागमः दीर्घकृत्योगृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मचविभ्रम नित्य
ग्रास.विचारोपिग्रकस्माल्लाभजायत पापकू रग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भाग्यवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति
वर्द्धनं चंद्रशोकस्थितोतचितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यग्रकस्मात्यातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मग्रल्प
विशेषेणशरीरेकष्टदारुण ग्रचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत ग्रंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न
वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणीश्चधनसंयुक्त
कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिव्हत्रुस्थलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्त्रपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो
द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजाता भ्रातरस्वल्पप्रीतिकृत
महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषपीड्यंतेग्रभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारञ्चयशंभूरिम तले पितुश्चमर्णज्ञेयविपाकेवीर्य
नाशनं दर्शनेग्ररिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीयसि तथापिसौख्य
संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तमेवर्षेव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं
ग्रष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रह नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानंमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं
द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथप्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित ग्रंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं
ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविव्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत् तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदशेऽष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत् कष्टेनजीवनंतस्यधनलोभोपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतप्तश्चपीडनं औषधीदानमंत्रेणशरणांतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंशे मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्वै तन्मध्येकामवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्घकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षण सासर्वसौख्यसंपन्नोभान्यथाभूयसेतुमा चंद्रागमगतेवर्षेतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थिते जातिमध्येसुकीर्तिंच पुण्यकृत्येसुखागम साहसंउद्यमंध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनश्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्भवेत् राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्मङ्तसुखं रोगशोकप्रवर्तते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुण्यप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले आनन्दंमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यबाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता अंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवसर्वप्रकारेण पुण्यकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्भमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञअकस्मात्मरणंध्रुवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परम श्रेयस्कर है विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रों की प्राप्तिहो सुख मिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहे गुप्तचिंता बनी रहे धनका लाभ विशेष हो परन्तु खर्च बड़े २ लगे रहैं आनन्द भोगे बहुत से कार्य पूर्ण हों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मत वाला हो सूर प्रतापी काम की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाय नीच कार्य बन जाय कहीं से आशा लगी रहै अकस्मात इच्छा पूर्ण हो जाय पाप क्रूर ग्रहों की शांति से विशेष सुख मिले एक शोक विशेष माने जल भय हो या पावकसे जले चौपाये या उच्च स्थान से गिरकर चोट लगे अन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक ब्राह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी और मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण अति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा और बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा आदि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के आनन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत्
चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तं शत्रुमित्र
वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति बृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
सुशीलश्च असत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमश्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामोशकोपि
गुप्तता दानमंत्रजपंपुरायंसर्वदानंदसंभव सर्वेग्रल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घ पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः
सभायाञ्चपलोधीमान गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमानविनयायुक्तज्येष्टभ्रातुप्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धर्नीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादञ्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाश्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणाम् चतुष्पदात्तथारात्रो
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः ग्रासिहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभव नानाभोगसमायुक्तोमहद्धलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेद्धेच
पितुप्राप्तिमहद्धनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वातावाचसमुद्भवः तृतीयेद्धेचसंप्राप्त चतुर्थेपञ्चमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यं वृणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनश्यति पञ्चमाःषष्टभवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगञ्चक्रीड़िता
सुविद्यांपाठनोबालचञ्चलत्वञ्चविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यञ्चकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबंधयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक सूर्यचन्द्रगतेवर्षेपञ्चचंद्राद्रकंतथा विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यंभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

मृ० स०
फलित
३६७

जायतेचधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राङ्ककंक्रमः श्रेष्ठहीनदशाभोगंश्रकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहा प्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसीद्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायमानम् पुनःदीर्घधनंलब्धवाकार्यचिंतावलीयसी हीनकार्यंभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेधनपुत्रसुखान्वित आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रित्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत् दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधि काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिकाव्यचिंतनंचापिदीर्घता चित्तोह्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणग्राममंदिरञ्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रश्चमोदिता षष्टपञ्चगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिमुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानसुयत्नत गोदानं श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणंजपेत् अल्पायुनश्यतेवत्सदा मंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिरस्योपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतितत्वंब्रवीमिते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्र में ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वाला हो मध्यम और श्रेष्ठ दोनों दशा भोगे किसी समय कहीं से धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहों के प्रभाव से चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ की सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक कामहीन बनजावे सो पीछे मन में बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्री की चिंता का ध्यान तथा जीव की लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धन संतान का सुख विशेष भोगे कुल की रक्षा को संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ठ बन जाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषारथी और हिम्मत वाला हो बड़े २ दुख सुख भोगे परन्तु चित्त को दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी २ भ्रम सा हो जाया करे नई नई वार्ता भोगे नाकिस ग्रहों का दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करने से आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़े आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अन्श खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्त दानदे गायत्री मन्त्र का जाप्य करावे ब्राह्मणों को संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्टसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् श्रमोद्रव्यविशेषेणाहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणासुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सश्चापत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नश्रसत्यवचनंत्यजेत् परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यवृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचित्त
चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीडागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचिंतनं पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्तवाकदाचनं लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभश्चचित्तश्राशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपीडितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्लिष्यंतिविशेषत कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल
दंतापीडयंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम दानमंत्रविशेषेण महामृत्युंजयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राङ्कतेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत् सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राङ्कमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणाव्रत्वंजायतेध्रुवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाङ्कमारभ्य
विंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलश्चगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतपश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्ययं शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाङ्कतेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

मृ० स०
फलित
२९६

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवह्निगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्यो दयमहत्फलंलं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पञ्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाद्धमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणं सुकीर्ति ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागत्राणाद्धमारभ्यवह्निषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तद्धरोकाव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगण्यतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रों में लिहाज परकाजी भला आदमी इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहे धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोसी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्त में समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घर में पितृपीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करने से वंश की बृद्धि हो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईश के पूजन से विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्ण हो हीन दशा में हानि भी हो परन्तु अन्त में सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदी में नाव चलाने वाला प्रधान था नवका के कृत्य से बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक सेठ श्री अयोध्या जी की यात्रा को आया सो बहुत धन नवका में भूलकर चला गया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्यकार्य में लगने वाला धन अपने घरमें धरा तिससे पाप का भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवों में गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धि हो सब प्रकार के आनंद प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धं सुखीनरः धनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यश्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबुद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्त्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथा।किंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगण्यते दशान्यूनयदागम्यवहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवह्निवर्षांतंछायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत् घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानश्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोवालवृणपीड़ाविशषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलश्चकुलोत्सवं
नत्रनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत् आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्मोद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मानसीविविधाचिंत्यसुकर्मश्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकीर्तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्वगेकाव्य सून्यचत्वारिकंक्रम: भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिमुंख उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातौ धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय चंडोपाठश्चकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययश्चचापितोद्रशीः जाति... सुकीर्तिचबृहद्भाग्योभूवितले शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपश्चावधिक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुण्योदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगवो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदश्चगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त सुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षे सुखंगत्वासुकुलंमानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुण्यकर्मेतिनूतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो लभेद्भूमौभाग्योयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्वमारभ्यसून्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविंप्राप्यकिंवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रप्रसिद्धति विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्वमारभ्यअकस्माद्रोगसंभव दानपुण्यविशेषेणकारयेत्कष्ट शांतये आयुपूर्णाभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं बिलम्ब से फल करेंगे बड़े भाग्य वालाहो पिता अति प्रतिष्ठा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहैं श्रेष्ठकुल विद्यावान अक्ल तेज दूसरे की बात को तोले सत्या सत्य को पिछाने एक जीव की आशा लगी रहा करे और जीवों के खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहों के दान मन्त्र जाप करने से मनोकामना पूर्ण हो भाग्य और वंशकी वृद्धि हो ये जीव तरह २ के दुख सुख देख गायत्री का जाप्य कराने से घर की पितृपीड़ा शांतिहो कितने ही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान दाता भोक्ता पुरुष हो हीन दशा में विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ठ दशा में अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्यारा है एक मित्र गुप्तवार्ता वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरुषार्थ से पूर्ण हो है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्र का पालन किया हुआ था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित्त गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः ब्रह्माचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धं प्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत् निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेग्राशामनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमंत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता ग्रकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणग्राशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टित कुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत् उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाकांति प्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभग्रन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभतातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडषाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषंवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायोगभर्योगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजाजते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तग्राशक्तं कामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षे वामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुहचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रअत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यञ्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा
वर्धिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्टिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वजातितोषयेत्
प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षंवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतर्महाकष्टंअकस्माचउपद्रवम् एतद्यत्नं
भवेत्सौख्यंअग्रे यंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत् सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं उं नमोअकाल
पुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणैवजपित्वा
सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंञ्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सआपत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगञ्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ
स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्वमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच
महोत्सवम् सुपुरायंबुद्धिनायुक्तं नात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि
विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी
शील स्वभाव वाला हो विद्या से बुद्धि विशेष हो कई बार धन इकट्ठा करे फिर खर्च हो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसा में रहे है
उपाय दान मंत्र से मनोकामना पूर्ण होगी और कहीं से धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में
विशेष लाभ हो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिकर मानता रहै पुण्य कर्म से सब सुख मिले भूमि लाभ हो मन्द्र की
नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भले में रहै कभी किसी का आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वर्ण था परन्तु इसके कर्म ब्राह्मण
क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुत सा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वश हो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसी से पाप
का भागी हुआ सो श्रद्धापूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवा कर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणों को जिमाय गुप्तदान दे तो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्विजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातचातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य
कृतेलोकेपुण्यकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिआनंदेन
भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनआस्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचआनंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि
संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तआत्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट
भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिणा अलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण
विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत अतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेअंगनाप्रीति
कारक सुपुण्यंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाटिकामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता
सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत् दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रुवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम्
उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त
पिशून्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं
धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्वाकीटव्यालाद्वाभयंप्राप्यंति
दारुणम् कदापिकुमतिंप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मान्यधनंसर्वंप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे
चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतवृणांज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाकर्मसर्वंआनंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय आपदुद्धारणो
जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते अष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे
कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुण्यसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्रातातिहर्षितः सप्तचाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्वसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्वित्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या समायुत पत्नीकष्टविजानीयात् पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहपिमंगलं कार्यवद्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत् लाभाधिक्यंभवेतस्मिन् भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाब्दमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वोपिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणाःखवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम् दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताब्दमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो दफे रोजगार की वृद्धि हो और फिर मध्यम हो जावे चतुराई बुद्धिमानी से संभाल कर रोजगार के काम करे परन्तु नाकिस दशा में चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनन्द में बीचे कभी किसी का आस्तीक न हो अपने कृत्य से निर्वाह करे एक समय ऐसा भाग्य उदय हो कि सर्व प्रकार के आनन्द भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त हों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपाय से सब शांत हो आयु बड़ी हो पुत्र तथा ग्रह सुख की प्राप्ति के निमित्त संतान गोपाल का जाप्य कराना श्रेष्ट है वंश की वृद्धि हो पुत्र पौत्रों के सुख देखे एक जीव में विशेष प्रीति हो हीन दशा में विशेष चिंता और क्लेश हो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव कुरुक्षेत्रमें जन्म ले नगर का प्रधान अति धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेता था वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जान कर दे देते थे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्ष की आयु भोग मृत्यु को प्राप्त हुआ दान का धन भोगा ब्राह्मणों से क्लेश पाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्य की आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत
द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्मानीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह
दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यश्चस्वकुलेपोषणोरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंबद अल्प
कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रष्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक
उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोवार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खत. दातागुणगणोयुक्तसुशीलो
क्रांतिसंयुत राजद्वारेतिमानश्चविद्यावान्धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्युतेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां
तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येअकीर्तिश्चनगण्यते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा
शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चकिंवावृक्षेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म
कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो
भूयकृष्यदेहश्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा
बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभंनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं
गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्वके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितश्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयंजपेत् विवाहादि
व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषेमित्रतांव्रशेत् क्रीडितश्चविशेषणविद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशार्थं आदौयत्नमहत्फलं
सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राब्दकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राब्दप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यंवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षक्रमंतथा चित्तचिंताविशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशोगमनंपूर्वंपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोद्यानन्दतापिस्यातसुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चितंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्व्ययसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यंपूर्वंलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्बलत्वंचगुप्तता औषधिपुणययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पुणयफलोदयंवत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारोचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाब्दकेतथा एतत्कालावधिप्राज्ञसर्वसौख्या न्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधितातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ।। भाषा ।। इस कुण्डली का फल यह है कि विलंब से मन की कामना पूर्ण हो रोजगार लाभ बढ़े युवावस्था में विशेष भाग्य उदय होगा बड़े बड़े रोजगार करे किसी से मिल कर धन का विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा बढ़े पश्चात में मन की अभिलाषा पूर्ण हो प्रथम बहुत जीव को दुख माने फिर संतोष हो जाये यह जीव विशेष छलछिद्री न हो और छल को पसंद न करे नेक नियत के रोजगार से पालन करने की अभिलाषा करे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्टमूर्ति हो एक अल्प से बचें नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिंता विशेष रहे फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े २ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीति करे किसी का बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी २ दर्द सा हो जाया करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जाति था अपने षट कर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथ को मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयी अधिक हो गया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पाप का भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ।।

भृ० स०

फलित

४०८

मृ० स०
फलित
४०६

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलोग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनाप्तिश्चतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानु
रक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराद्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः
मिष्टानलवणंभोज्यंपक्वमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणत
शुभम् धर्मेणधनवृद्धिश्चव्रतदानादिसंयुत वल्लभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्टरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म
प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुर्लाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरो
धीचकृपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वे परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर
पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते व्रणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य
परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि
तथापूज्यमने च्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चक्लेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मा
द्यत्नंचकारयेत् बृहत्गोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमात
महाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेव्रणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूम्रदानंचबालासद्यसुखंलभेत मिष्टं
मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहुक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान
महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण
चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्नूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोद्यानंदवृत्तिस्याचपलत्वंमनोहर
द्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टय: तातकीर्तिविशेषेण बहुद्रव्यव्ययोभवेत् बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविन्हल रूपयौवनसंपन्नादिव्यवस्त्रादिभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता
विशेषेणहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिण कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षा
वधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी
विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णसुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे
शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घंसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो
भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणंचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि
सुखंदीर्घदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणनूतनंमंद्रवाहनं
तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् सून्यषष्टमितिमायुपुण्य
कर्मेबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ॥ भाषा इस कुण्डली में ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्टा वाला भाग्यवान हो सब तारीफ करें सलूक करने वाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्य के काम करे भूके को दे ईश्वर का भक्त सत्यभाषण करने वाला कई बार बहुत धन प्राप्त करे रोगों से बचे सत्यासत्य को पहिचाने शरीर में फोड़े का चिन्ह हो कामदेव की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो जाया करे जीव की चिंता को गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्न किये अधिक क्लेश पावे धन का संदेह जीव की चिंता आदि हो गुप्त शत्रु विशेष हानि पहुँचावे शरीर में पीड़ा रहै काम होता होता रुक जाय तथा अधूरा हो जाया करे इस जीव को बड़े बड़े भारी खर्च के काम आवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव श्री अयोध्या जी के पंडा के घर में जन्मा बड़े बड़े दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना में विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिस से दोष का भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दान दे और अपने इष्टदेव का भजन करें तो सब काम पूर्ण होवें ॥

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्ठितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यञ्चन्यूनोपिकार्यहानिनद्रश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधश्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कारयद्ब्रशरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणादानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणाचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुर्महाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाजयंप्राप्तिशत्रूचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयञ्चारीपापखेटातिदुखदं
रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोऽधस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वार्जितंधनयानञ्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तंनयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके
बलक्रीडासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेब्देतुशरचंद्राङ्केतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्य
व्याकुल एकांतेचिंतनञ्चापिनप्राप्यंतेतिदुखिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्बमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्ठति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

भृ० स०
फलित
४११

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदेस्थित अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्ररामामितेवर्षेबाणात्रिंशाब्दकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुःखितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणांददेत् महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाब्दके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेनामप्रतिष्टया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिर्दिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताब्दपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहुलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यत पञ्चसप्ताद्धिमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैवविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्सुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा न हो खर्च विशेष रहे रोजगार करे बड़ी हिम्मत वाला हो दूसरे की बात को तोले श्रेष्ट आमदनी में कुटुम्ब का पालन करे कैसी ही धन की न्यूनता हो परन्तु खर्च का काम कभी न रुके इज्जत से काम हो जाय चित्त में भयसा रहा करे परन्तु भाई बन्धु अपनी सम्मति के नहीं युवावस्था में कई बार धन की चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंश की वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहे घरकी पीड़ा का यत्न करे एक बार कहीं से धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मन्त्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्ण हो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्रि कुल में नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेना का अफसर था युद्ध विद्या में अति चतुर था एक समय संग्राम में बलवान शत्रु से हार होती जान छल से उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि दे दी तिस से उस राजा का सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पाप का भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणोंको विशेष दान दे तो पाप शांत हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृबाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो
द्रव्यसंप्राप्त्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंबृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणभ्रमोपिबहु
मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंबृहत्वोपिसर्वेपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं
चापिमिष्टवाणीसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवश्चाशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं
पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापक्रूरग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो
रूपचिंतनं प्रथमेब्दे रुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देबृणपीडासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य
दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागञ्चनंदके बालक्रीड़ा
कन्दर्पजातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलञ्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्वलत्वंचद्रष्टय
पूर्वदानंसुयत्नेनंअल्पायुयोगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र
प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य
रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससूर्यनेत्राब्दमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट
शरीरेचबृहत्वोवर्द्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च
तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदातेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाब्दके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो
दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं
प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाब्दमारभ्यव्योमरामाब्दमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणाद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वंपुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशत्रिविंशाब्देपञ्चवन्हि गतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंति राजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथामंत्रप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्ति विशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणाहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्देईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चावधिकाव्यपौत्र जन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वंव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्भमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहना दिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपूर्वंपापशांतिप्रयत्नत पूर्णसौख्या[illegible] रीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्त मितिमायुभुञ्जीतोपुण्यमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े २ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनी रहै परन्तु खर्च के कारण धन जमा न हो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसा ही भारी काम हो ईश्वर की कृपा से सब इज्जत प्रतिष्ठा के साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जत करें किसी से तृष्णा न रक्खे संतोषो वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन न रक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करें कई बार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रों से मेल रहै मिष्ट वाणी बोले किसी को कठोर वाक्य न कहे बहुत निष्प्रयोजन न बोले पंचम स्थान के ईश की पूजा और दान मंत्रादि से पुत्रों का विशेष सुख मिले जीव की आशा पूर्ण हो अल्पों के दान मन्त्रादि उपाय कराने से आयु की वृद्धि को श्रेष्ट है हे शुक्र पहिले जन्म में ये ग्वालवंशी था विशेष धनवान हो कुवां खुदवाता था तिस भूमि से परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होने से कुछ द्रव्य राजा ने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रम से प्राप्त हुवा धन पुण्य में कुछ न लगाय सब भोग में खर्च किया तिसी से पाप का भागी हुवा तिस निमित्त भूखों को अन्नदान दे ब्राह्मणों को तिलों में स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवांछित फल मिले धन संतान की वृद्धि हो ग्रह पीड़ा शांत हो ॥

मृ०स०
फलित
३१५

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूर
ग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं
भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यंसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं
मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीशंमानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नंतेआनंदंभुविमंडले अकस्मा
द्व्ययमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णंभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जीतोकर्म
बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच
चोरभीतोपिगुप्तता आदौसौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र
सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेचव्रणाविस्फोटकादय मातृ
चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा
मनंदिता सुवर्णरजिताभर्णवेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा
बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगञ्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ
विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो
कामाक्तंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्राक्रमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य
निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षेसुखं
प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्बगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिततः चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तं मित्रतांद्रश गुप्तध्यानविशेषेणलोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्य
मात्रसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिमोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि
विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंमोदतेभूमौतातमातोतिहर्षित
भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवआशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेल्लोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षे
भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिकाव्यचित्तचिंताविनाशनम्
युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग
वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतप्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्च जायते श्रद्धाभक्तिस्थितो
यत्रसर्वकार्यंचसिद्धति आयुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दृष्टवर्षातंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्ठितम् आरामं
वापिकामन्द्रंदासदा।सश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुरायसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिरुत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े २
भाग्यवान ग्रह पड़े हैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यून सा कर दिया नहीं तो पृथ्वी पर बड़े २ आनंद भोगता सो अब भी पाप ग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के
दान मंत्र उपाय पूजा आदि करने से फल प्राप्त होगा जीव की चिंता मिटेगी शुद्ध चित्त से मंगल सूर्य बृहस्पति और केतु का दान मंत्र जाप
कराने से श्रेष्ट फल की प्राप्ति होगी और कुशल रहेगी ये जीव लाभ के उद्योग में रहे परन्तु मरजी के माफिक कार्य विलम्ब से बनेगा और
काम की सिद्धि होगी बड़े बड़े खर्च सिरपं झेले घर में पीड़ा क्लेश हो जाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ न हो सके मित्र में
मन फंसा रहै और शुभ काम में विशेष धन खर्च हो बड़े २ फिक्र और आनन्द देखे एक समय नया जन्म हो चित्त में नई बात सोचे मित्र की और लाभकी
बातोंमें चित्त लगारहै यत्नसे आयु पूर्णहो हे पुत्र पूर्व जन्ममें ये जीव शिव मन्द्रका पुजारी था चर्स भंग बहुत पीता औरों को पिलाता एक समय शिवरात्रि
को फाल्गुन के महीने एक राजा ने शिवजी के निमित्त स्नान करने को स्वर्ण के घट प्रदान किए सो कुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेच आया उसके
धन से खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए और शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणों को प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्ण हो

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्विजायते पददीर्घमुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहृदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्टआभूषणांवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकार्णोभयदीर्घता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणाचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तं विशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षंतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्धाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचञ्चलञ्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्टतिगेहेकार्यमात्रञ्चसिद्धति त्रयोदशाब्दमारभ्यविंशवर्षावधितत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रञ्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तं विशेषता मानसीविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यंचिंतनम् शशिविंशाब्दत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोद्यानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंतत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमहोत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित पुनरंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्य मवाप्यते भागवृद्धिभवेचापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरामगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रामे अतिचिंतापरायण रिपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यंवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपश्चाद्धके तथा ग्रहकष्टत्रिचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपौत्रजन्मचमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चितवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुभोष्यतेमुनिसत्तमः

मृ० स०
फलित
३१८

भाषा ॥ इस जन्म पत्री में जो ग्रह पड़े हैं उनका यह फल है उच्च पदवी पावे किसी के चित्त को दुख न दे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वाला हो कैसा ही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्य न माने अपने लाभका ध्यान बना रहै चित्त में प्यारे मित्र की याद बनी रहै उत्तम आजीवका से पालन करे बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत से मनुष्य इसकी आशा में रहैं अच्छे २ वस्त्राभूषण घरमें स्थित रहैं एक समय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सो कुछ न समझे पुत्रोंके विशेष सुख और लाभ के कारण संतान गोपाल के मन्त्र का जाप्य कराता रहै तो वंश की वृद्धि हो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी २ बिना प्रयोजनभी भयसा होजाया करे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछ पीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दान मन्त्रसे शांतहो हे शुक्र पूर्व ये जीव ब्राह्मण था अत्यन्त प्रतिष्ठा और धन प्राप्त किया ज्योतिष विद्या में निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिका ज्ञाता दानपुण्य बहुत लिया संतान न हुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वो धन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागी हुआ तिस निमित शिवजीका पूजन करे मन्त्र जपे गायत्रीके अनुष्ठान करावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः   फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर   सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपाल्यतेनर   भ्रातृयोगवियोगश्चहर्षशोकसमन्वित   कुलवृद्धि
धनंप्राप्यभूमिमंद्रतथैवच   दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते   पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय   सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता   लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्धप्राप्तिविन   ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेयत्नतसदा   पपीलिकाणिसभोज्यं
पक्षिणांअन्नभक्षणं   कार्यशुद्धिभवेल्लाभंचित्तआशासुपूजितं   बृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्टित   व्ययकार्यविशेषेणसर्वंपूर्णंभविष्यति
शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चितद्दानिचिंतक   शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनास्थितेमनः   आनंदेनगतेकालअकस्माद्धनआगमः   सर्वावस्थाविशेषेणचंद्र
अल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती   जन्मतोमातृबाधायां   बालजन्मश्चमोदिता   दिनेदिनेसुखंगत्वा   ग्रहसौख्यनंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं   बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः   घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित   महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति   तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत्   भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टश्चदारुण   भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं   रसवर्षगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतथा   विद्यारंभकृतोचापिअंकाभ्यासश्चवर्द्धनबालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित   ग्रहमंगलगानश्चकुलबंधुसमागत   पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुर्द्रव्योतिचिंतनं   देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम्   एकादशाब्दमारभ्यषटचंद्रमितेतथा   मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीड़ामनोद्भवं   मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा   अन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं   नानामंगलंकार्य
तातमातअनन्दिता   नगचंद्राब्दमारभ्य   विंशवर्षादनंतरं   द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च   कार्यमात्रोभविश्यति   अनुष्ठानमहादानं   सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घव्याधिवशांतये   पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण   पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः   शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति   आनंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत   दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे   अकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहारोकंनिशानिद्रानप्राप्यते   आपदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति   रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागत   स्वगेहेराजतेपुंसमान

कीर्तिविशेषत मित्राणांतोषयोनित्यंस्वकुलंपोषतेनरः पत्नीग्रल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यासप्तमासाप्रमाणकी आप दुद्धारणेमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणंदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतेसर्वकष्टविनाशनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशयथाक्रमं ग्रकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुल बंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाप्तये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनचिंताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखं लोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य ग्रारामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाद्धमागम्य शरचत्वारिचांतके तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते ग्रतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्य भूयसे सुतपौत्रसुखसर्वजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधिंतत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके सर्वप्रशंसिता पुण्यदानविशेषेणासर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदैवानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्व ग्राशापरित्यज सून्यसप्तगते वर्षेग्रानंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताद्धमारभ्य ग्रायुपूर्णोपिजायते ग्रनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

।। भाषा ।। इस पत्री का यह फल है सारी ग्रवस्था ग्रपने कृत्य में लगा रहे कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो ग्रपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल की वृद्धि हो ग्रामदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहे तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े ग्रादमी इज्जत करे कई काम खर्च के ग्रावें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहे चित्त में कपट न हो ग्रानन्द में रहे एक समय ग्रचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहे ग्रन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव ग्रन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो ग्रब चींटी नाल जिमावे ग्रौर पक्षियों को ग्रन्न देने से सब काम सिद्ध हों ।।

भृ०स०
फलित
४२२

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्र क्षनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वंग्रामेभवेत्खेदंकल्पर्यंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मेणअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा नुसारणः बहुहिंसाबधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंब्राह्मणंददेत् व्योमबाणाद्ध केवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्त मितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापित हैं तिनका ये फल है कि बड़े भोगवाला जीव हो कुलदीपक हो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बी हो न्यून कारण से चिंता विशेष मित्र से मिलने की इच्छा रहै दो समय धन की विशेष प्राप्ति हो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थान के ईश के कारण चित्त हट जाया करे दो ग्रह बलवान पड़े हैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य ब्रथा हो लाभ होता २ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभ के कारण एकादश स्थान के ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्प से नया जन्म हो ३४, ४४, ५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसी का बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्च झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था सो मृगों की बहुत सी हिंसा बनी तिसके शाप के निमित्त ये उपाय करे स्वर्णका पत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांब्रेके कलशमें घृतभरें मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्प नष्टहोवे वंश की वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवष.दिअष्टमे वृणव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविव्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातञ्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यंधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगञ्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रञ्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलञ्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रञ्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीववृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राद्धकेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशवृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये
ग्रहवर्षयुतपुंसमंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतञ्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगञ्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानञ्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्नकाल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्यय.लाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामञ्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यंकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यबाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यम्चित्तवृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टञ्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्ररामभितेब्देचबाणराममितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयात्स्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंताननवृद्धया ॐऐंह्रींक्लीं

भृ० स०

फलित

४२१

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज
रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घआयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंकृते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति
आशक्तया दीर्वकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमात
सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम्
वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसं
पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं
प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्धमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते
पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनञ्चलभ्यते कार्यलाभश्चदीर्घोवागुप्तचिंता
शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति
नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्धकेवर्षेबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच
प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अतितेजोप्रतिष्ठोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट
विजानीयात्पितृपाड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंकृते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच
प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥शुक्रोवाच॥
केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥भृगुवाच॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गवः

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत एकादशसहश्रञ्चमंत्रजाप्यञ्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्त्यर्थमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्धयर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्सर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशय पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तञ्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेऽब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणागवनोनसंशय ।। भाषा ।। इस अंक की कुण्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घर में मंगलाचार खुशी जीव का ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थान के ईश की पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्ति हो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिल जाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिस के शाप के कारण जीव की चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावे और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ।।

नसंशयः षष्टवेदाङ्कवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति नसंदेहोभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः गोधूमगुडसंयुक्तं बारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः चंद्रसप्तमितेद्वे चवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महल्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवंम्यांच भृगुवारेण संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ठ बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की वृद्धि विशेष होगी मन की कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु सब काम इज्जत के साथ सम्पूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे हे शुक्र इस जीव के सब कार्य सम्पूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवं ग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापकृ रग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात् भाग्य
वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम्अर्धप्राप्तिनसंशयः संत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो
वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेदृष्ट्वा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतियष्टा रोगश्चप्रथमेवर्षे
द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेत्रणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग
संप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वे षुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम्
नवमेद्वादशेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र
वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय
शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयात्ग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वे चबाणनेत्रमिते
तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येव.तापित्तेनपीडनम् ॥शुक्रोवाच॥ केनदानेन
पुरायेनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम्
पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत् साधूशापमुखंदत्वाअग्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यमनान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्णं
संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा शरलोकाद्वकथ्यंतेबालवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा
होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मात्उपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज
द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति
चंद्रवेदमितेद्वे चबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजादिजार्चादिधनव्यय

मृ०स०
फलित
४२५

मृ०सं०
फलित
४२७

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोकमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः
अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि
लाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीये[illegible]ब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं
वाच्यंबालवृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनरंभयो बाल
क्रीड़ाकिलोलश्चजीववृद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठश्चविद्यायांअंतविद्या
विसार्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रवर्षगाथाचकथ्यते तातलाभ
भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम्पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते
भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र
मितेतथा दीर्घलाभविजानीयात्संतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते
दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रस[illegible]धीविनश्यति षटनेत्रमितेद्वेचव्योमराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र
पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पश्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः चंद्राममितेवर्षे[illegible]राममितेतथा
अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगोवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुण्यपापश्चभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा
नुसारण गौवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः
सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीड़नम्पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वंप्रयत्नेनप्रा[illegible]

कारयेत् पूर्णायत्नेनभोक्तव्यानश्रमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्वा अग्रजन्मपुनःपुन चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवदमिते
वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मेस्थितंयदा
मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यंधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा
मंत्रदातव्यशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसा
विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेब्दे चगृहषष्टमितेतथा सुखदुखव्यभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले
स्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट
आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु के पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो
राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ठ है विष्णु भगवान्
का आराधन दान पुण्य करे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले
शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ठ है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु
समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह
जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालवंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश हो कर एक गर्भणी गऊ को
मार डाला तब उससे बहुत दुखित हो कर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी
तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्ण के पत्र पर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो
जावे और धन की विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेद्वे ज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णदेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंमनः तातलाभधनंवृद्धिबालक्रीड़ाकिलोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समवालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंमनः
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेद्वे चबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वंकष्टविनश्यंति
आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेद्वे चत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एतत्वर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्ररामामितेद्वे चशररामामितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाद्धकेवर्षे बाणवेदमितेतथा

मृ० स०
फलित
४२६

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रहमंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूम्रकाणिकानिचः धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्र प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितितीर्थयात्राविचार येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधञ्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफ वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णा पक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीर कृष माता पिता को जीव की चिंता रहै पश्चात् आराम मिले अल्प बीच कर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मन से करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ठ है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्ठ है मित्र में विशेष मन रहे मीन रेखा हाथ में श्रेष्ट है एक बृण का चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्ट है किसी के चित्त को यह जीव न दिखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्वि
रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसंप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्यादगिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता
सुहत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कार्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रृणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम्
दीर्घकार्यंव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा
परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः
वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेब लतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा
विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा
भग्निअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रःमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिवूडनम् आदपठनञ्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक
द्विरागमनन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्प
जीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चंद्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा
पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले जीव
चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चंद्ररामभितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धकेशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो
भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त
नान्यथावचनंकवे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानञ्चशांतये चन्द्रवेद
मितेब्देचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाद्धकेमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वंजपंमंत्रंसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टबाणीच
भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचआनंदोअंतआयुसुखीन्नरः चंद्ररसमितेब्देवब्यो नषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती
भाग्यबृद्धिदिनेदिने राजाद्वाराजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नरः पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र
षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये
मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोआनंदभुविमंडले अकस्मातमत्याधिऔषधी
सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधवंधेनमर्हसि अपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र
इस प्राणी की कुण्डली में ग्रहों का ऐसा योग आनकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ
होवे अनर्थ से बहुत डरा करें सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो असत्य से क्रोध विशेष आवे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान
करने से वंश की वृद्धि विशेष हो और यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला अल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत
श्रेष्ठ है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मतता से बुद्धि न्यून चलायमान सी हो जाया करे एक समय
अचानक विपत्ति रंज सा हो जाया करे और दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे आयु अल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली अन्तआयु श्रेष्ठ हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्राम पति जमींदार था दान पुण्य भी विशेष करता था एक समय इस जीव ने हवन करके
यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी आन प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा
साधु की अपकीर्ति हुई और उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमित्त ब्राह्मण और साधुओं को नौतकर जिमावे
और गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष वृद्धि हो और
मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्ण हो और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंव्रजेत् दानीमानीभवेत्पुंसस्सुतदारासमन्वितः देवद्विज
रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननीयख्यातोविद्याबुद्धिचेतीक्षणः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ा
ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहश्चजायते बृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्राताअथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात
महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यग.थाचकथ्यते
कनिष्टोभ्रातकंप्रासितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो
बालक्रीड़ाकिलोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्ममितेतथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येचसिद्धति
द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च
चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा व्योमरामाङ्कमध्येतु
सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुचबालकः
चित्तक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मात्महत्प्राप्ति
आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामाङ्कवर्षेशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र
समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्चपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़ाव्याधिवृद्धि
प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण
वेदाङ्कतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्द्रकंवासअकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं
विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यमघृतखांडत्रिधातुकी

रजनितस्वर्णताम्रश्चत्रिधानुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागंमेकभागश्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वंएकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तंतुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रग्रहपसर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयंप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमासमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादश्चधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चगृहमंगलगानकं कस्मिन् भ्रमचित्तेशुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यश्रसत्यकंतोलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रगौत्रसमायुक्तोपञ्चईशोविपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्राचगवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंक्षुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणागवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन को प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष वृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की वृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उसका उपाय जो कुछ लिखा है सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक २ प्रकार की वार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया कर मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीव का दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वर्य प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवा कर और तांबे के कलश में घृत भर कर मूर्ति प्रवेश कर और रात्रि के समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंश की वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीव की स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनी रहे ॥

मृ० स०

फलित

४३५

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यबादीभवेत्वालोअसत्यवचनंब्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच
कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यंदेंहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये
पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेंदने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरि
भाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये बृणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी
प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताक्वचित्कालोपिआगत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा
विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतिश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त
चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति
महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडितपितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं
चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नोगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं
कृत्वाऔषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंआनंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये
मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषिनः चंद्रराममितेब्देचबाणराममितेतथां शून्यवेदाद्वकंमध्येसर्वं
गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यंचितवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिंनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्येथावचनंमम पुत्रजन्म
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयातगुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम्अन्यवर्षेसुखंतथा अकस्मातउपद्रोवाकिंचित्
कालशांतये चंद्रवेदमितेद्धेचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं
व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयंजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणञ्चसंकल्पं श्रद्धाचब्राह्मणांददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंद्रष्टाभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ भवेत्शुक्राराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहद्रश्यते अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्री का फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान् पड़े हैं परन्तु इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेष रहा करे और हे शुक्र इस जीव का खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम स्थान के ईश का पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो भ्रात योग हो जल चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीव का दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युंजय का जाप श्रेष्ट है और इस जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहे चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्ट है विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप लगा क्यों कि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवा कर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतः श्रीमान्जन्मवाधाविधानतः
सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्रशक्तया दीर्घकार्योपिश्रागत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति
नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं
बृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्रथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं
सुफलंतथा श्रष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यविव।होत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा
परिभाषितः पञ्चदशेश्रष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते बृक्षोचपतनंज्ञेयंश्रथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते
कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिश्रल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः
निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्श्रौषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिंता
शरीरजं षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्यययोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र
जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यश्रनुष्ठानयथाविधिहवनंब्राह्मणं
भोज्यंवस्त्रश्राभूषणददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणश्रानंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसून्यराममितेतथा द्रव्य
प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते श्रानादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडश्चयश्चमोदकानिकृतौतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती
मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो
वत्सश्रेष्ठकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदोभवः
पाप-होपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चश्राकारीसर्वश्रायुहर्षकम् पूर्णश्रायुदशंरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणाबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारात्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यम्धनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभविष्यंतिगुप्तचिंताचव्यासये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवाकिंचित्कालशांतये चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥शुक्रोवाच॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिमुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥भृगुवाच॥ अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकाम बीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यबृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तिततपरः धनव्ययंशुभाकार्यंमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्श्रेष्टभूमिच तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहे यह जीव धन का उद्योग बहुत करता रहे और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ठ फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य वार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की वार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर थे कायस्थ कुल में चित्र गुप्त वंश में था और हस्ती घोड़े वाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्याय से अन्याय कर दिया सो इसी चिंता में पंडा मरा सर्वस्व जाता रहा सो पंडा ने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिस के कारण स्वर्ण का पत्र बनवा कर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः श्रवाणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणियः शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवानजीवोसत्कीर्ति कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रश्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितियेब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलश्चआनंदभूमि मंडले तातलाभविजानीयात्देहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेशअनुष्ठानं पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखश्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणश्चसुताजन्मन संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानश्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टश्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये वृणव्याधि शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यंधनव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते चंद्ररामंमितेवर्षेबाणलोकमितेतथा सून्यवेदाङ्कमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वेविघ्नो पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्ष शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्टविजानीयात्औषधोमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षप्रतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यंधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसंशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंता च प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितेवर्षेव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्श्वासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यमप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केन्द्र में श्रेष्ठ होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहे चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहै लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह में एक काम काबू से बाहर हो नवीन वार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईश की पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैंकड़ों चौपाये और सैंकड़ों मनुष्यों का पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैल का अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनन्द भोगता रहै ॥

मृ०स०
फलित
४४१

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलासीचस्वल्पभाषीगुरुप्रिया शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख
दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति
कुलवर्धनः सुक[illegible]चधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो
जाता रेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभग्नीभ्रातृप्राप्नुयात् तात[illegible]नमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित
अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचितव्याधीशरीरेच
औषधीप्रतिशांतये आदियठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा
मध्यग[illegible]थाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित प[illegible] [illegible]गश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः ताततलाभविजानीयातबालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजा[illegible]त्औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने
कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच
कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्त
व्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ॐ, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा
इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्ररामंमितेवर्षेबाणरामंमितेतथा शून्यवेदाब्दमध्येतुसर्वगाथाच
कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मातमहाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र
दानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितनन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण
कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयातमंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणनान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशरबाणमितेतथा व्योमरसाब्द
केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये
छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेभासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते
तथा अकस्मात्महाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति
भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते
सिद्धिपरअन्नञ्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणञ्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बलवान् आनकर बिराजमान
हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के
साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की
विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने
हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े २ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो
आयु पूर्ण हो एक अल्प से बच कर नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े २ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु
भावी वश हो कर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में हो गई सो पिछले पुण्य पाप के
कारण श्रेष्ठ फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीव का अन्न घृत्त वस्त्र दान करने से श्रेष्ठ फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

मृ० स० फलित ४३३

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचश्चलोबालजननः प्रमोदीसत्यवक्ताचग्रसत्योबचनंव्रजेत् दयावंतसमादृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्ष महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिप्राशक्तया अल्पदेहभविष्यंति नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते कृत्य व्याधिशरीरेचभूतछायाचविव्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिग्रल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं कार्यम् अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्यधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचग्रानंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीति ममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानी यात्औषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचित्व्याधीशरीरेचमन्त्रदानश्चशांतये पापकृ रग्रहापूजाधनसंतानबृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाद्ववर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिग्रानंदभूमि मंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिप्राशक्तया ग्रकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्ररामामितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाद्वकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते ग्रर्धग्रायु गतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्ग्रथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफवातेनपीडनं बहुलाभस्ययो योगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाब्दकंमध्येसर्वग.थाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफवातेनपीडनं चंद्रमा मंत्रजाप्यश्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोग्रोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयेत् नवीनोवार्तंया चितवाहनादि सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोसवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वविघ्नोपिशांतये चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यलाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वंक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य पर्वप्राप्नुयात् कुरुक्षेत्रगवनंकृत्वागुप्तदानञ्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णञ्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तददेविप्रसंकल्पंनृपतिंकुरु आचार्यदानदृष्टस्या अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंददभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योग का यह फल है कि बड़े २ खर्च के काम सम्पूर्ण हों प्रथम तो चित्तको खर्च का भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बीझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीव की आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे रात्री को अनेक वार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हानि हो चित्त में भय सा रहै फिर धन की प्राप्ति हो स्त्री से प्रीत और घर में पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्प से बचे जीव का दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पण्डा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
४४५

श्रीगणेशायनमः अष्टपत्रमहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः
प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुःसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुनः प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरंभ्रा तत्रानंदं
भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्तं मानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिंताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे
काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग बृणाव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं
अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशषोडशतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचततकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीड़ाकिलोलश्चविद्या
प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीड़ाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश
अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान्
चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यकृतेनसंदेहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीड़ायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यंव्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेव्देच
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्ठञ्चफलप्राप्नुयात् पापकृरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये
अकस्मातउपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत बृणाव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल
मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्रराममितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य
वेदाङ्कमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि
प्राप्तये वाणिज्योकार्यकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्रभूमिमध्येचस्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्तवैश्योगुप्तधनंहरं चन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य
बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेत्रर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेब्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलंग्रहकष्टविजानीयात् व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंबिकंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तद्रव्यधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवासकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येआनंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रांफललंभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुरायोपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगमनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि इस जीव का चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं किसी का बुरा नहीं चाहता सब का भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एए ब्राह्मण तिस का मित्र था कुटुम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मर गया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिस के निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्र की वृद्धि विशेष हो कामना पूर्ण हो पिछली अन्त आयु में विशेष सुख भोगे सब के भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र
पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मअल्पशरीरेच आयुपूर्णनसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षे ज्वरपीड़ाच
रेचनं मातृकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारकंतथा आदिपठनञ्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति
कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिनसंदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यंधनव्ययः
तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा
किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोतिपत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ
विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय
मध्यप्राप्तिविजानीयात तातचिंताचमातकंगुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तयानानालाभकंप्राप्तिभाग्य
वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंतिभृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलंपापक्रूरग्रहापूजा
लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति उों, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणा
यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्राममितेवर्षे बाणराममितेतथा
शून्यवेदाद्धमध्योपि सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रुपक्षविरोधीच
धनमुद्राव्ययवृथावर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यतिगुप्तचिंता
शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात् व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधीचधनं व्ययविशेषत शत्रपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मातउपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरजं मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्ठा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनन्द दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भगिन का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तात का धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घर में मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तात को लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्ट है नहीं तो जीव की चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वाला हो इन्द्री में पीड़ा काम की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े २ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्प से नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनी रहै तिस निमित्त तांबे के कलश में घृत भर कर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंश की वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्ति से जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहुभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यंश्चसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो भाग्यवृद्धिदिनेदिने
देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकृत्यग्यश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रप्रीतिपरुपकारी
सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधेनुविख्यातो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह
विजानीयात ज्वरव्याधीचरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालताततमातश्चहर्षकंबालक्रीड़ाकिलोलश्च भग्नीभ्रातश्चप्राप्तये
व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात् बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच
प्राप्नोति कार्यमात्रश्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगश्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः
सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त
वृत्तिआशक्तया भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यतेशुभकार्यं
धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रराममितेवर्षेबाणराममिते
तथा शून्यवेदाद्वमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा
पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा
शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेब्देच शून्यबाणमितेतथाचंद्रअल्पदुखंशुक्रदानमंत्रप्रशांतये
करमानश्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पश्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिन्कालभ्रमणबुद्धि गुप्त

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्र धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेऽवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखावहं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्णार्थंईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णाविजानीयात् व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथाव्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय।।

।। भाषा ।। इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धन का मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्टा पावे धैर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडा जी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर गृहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ।।

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगश्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित पृथवी
नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामीदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति
विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिराडले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतबनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पश्च
प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं
कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगश्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं
भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेतशुक्रजीवक्लेशोपिदुक्खिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगश्चप्राप्तये अल्प
विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरश्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रश्च
मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं
जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यंकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मात्उपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र
मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता
शरीरजं कार्यमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं
चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्ररामममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल
उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशश्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलम् मासेवर्षसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

कान्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणयोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकान्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधावृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेंदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढ़सुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बहुत उम्दा आनंद से अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदान्त मत हो स्त्री को चित्त में पुत्रों की लालसा बनी रहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभ की वृद्धि हो अकस्मात् प्राणों का भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर न रहै गुप्त धन मिले शत्रु हो जोर न चले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तट पर कथा सुनाया करे था सैकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियों की चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखत में पंडित साधु मन में कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतान की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्टहो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंब्रजेत् दयावंत
समाहृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतः पुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्यादृगिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणांकाव्यकृष्यदेहोपरिचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेसंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवीनो
कार्यकंचिंताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यंधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रुपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रवागमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथावेदसप्ताद्धकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रताप के बैठे हैं मन का गुप्त भेद किसी को न दे विद्या से बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीव की तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईश की पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालों को दुखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजनदे तो धन संतानकी वृद्धिहो चिंता मिटे मनोकामना पूर्णहो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोर्थ पूर्ण हो ॥

भृ० स०
फलित
४५४

4058

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चचलोकांति विद्यावान्धनीनरः राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चचलोधीरसूरवीरश्चातिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशीलविशीलदृग विक्रयायांकृपादक्ष प्रेमकर्ताधनान्वितः संग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्ठया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीडासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबंधयोगजानीयातभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानश्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रश्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री चंद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयातवाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयातऔषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यंलभेजीवभाग्यवृद्धि दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यंतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यश्च

मृ० सं०

फलित

४५५

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत् धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणक्रियतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षेषट्रसआद्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो सत्य वचन बोले श्रेष्ठ जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह तरह के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेष हो अकल तेज हो दूसरे की बात को तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनि का मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे का हो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी काल में खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काम में खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूह का सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दण्ड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमन ले और भोजन जिमावे दान दे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगश्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी
नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामीदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति
विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिमण्डले उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पश्च
प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं
कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीडाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीडाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीडाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगश्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं
भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुखिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगश्चप्राप्तये अल्प
विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीडाउपरश्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रश्च
मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं
जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यंकंचितवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मात्उपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र
मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता
शरीरजं कार्यमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं
चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्ररामिमितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल
उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशश्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलम् मासेवर्षसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

भृ० स०
फलित
४५१

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति
धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणायोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो
भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधावृद्धिदिनेदिने मानसी
विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया
नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं
प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ
कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढ़सुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बहुत उम्दा आनंद से अवस्था
बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदान्त मत हो स्त्री को चित्त में पुत्रों की लालसा बनी रहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का
जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभ की वृद्धि हो अकस्मात् प्राणों का
भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर न रहै गुप्त धन मिले शत्रु हो जोर न चले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व
जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तट पर कथा सुनाया करे था सैकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे
परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियों की चेष्टा में आशक्त रहने लगा देवत में पंडित साधु मन में कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त
चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतान की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्टहो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंव्रजेत् दयावंत
समादृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतः पुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिर्दीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहुप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाव्रणंकाव्यकृष्यदेहोपरिचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेसंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यरामामितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंक्रियतेफलदायकं नवीनो
कार्यकंचिंताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामामितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभस्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थंईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

मृ०स०
फलित
४५३

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंकृयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रुपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषटमितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिर्चितवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवीं चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंप्राप्यनात्रकार्यविचारणां अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथावेदसप्ताद्धकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रताप के बैठे हैं मन का गुप्त भेद किसी को न दे विद्या से बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीव की तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईश की पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित्त बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालों को दुखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजनदे तो धन संतानकी वृद्धिहो चिंता मिटे मनोकामना पूर्णहो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चञ्चलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यञ्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चञ्चलोधीरसूरवीरश्रतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः संग्रहकर्ताचश्रतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशूचिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंश्रंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोश्रंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेव्वर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चंद्रश्यंतेश्रानंदभूमिमंडले चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयात्व्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तश्रन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयात्वाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यंतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यञ्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वंयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत् धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणआनंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणक्रियतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षेषट्रसआद्यमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिआनंदंभूमि मंडले अकस्मात्महाव्याधीऔषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे अभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो सत्य वचन बोले श्रेष्ठ जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह तरह के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेष हो अकल तेज हो दूसरे की बात को तोले तेजस्वी प्रतापी हो शनि का मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे का हो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी काल में खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काम में खर्च हो वृथा भी हो पिछली अर्ध आयु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें आयु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मणों के समूह का सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था और बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा आसन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के और सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दण्ड दिया करता तिस निमित्त अब ब्राह्मणों के चरण धोके आचमन ले और भोजन जिमावे दान दे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

मृ० सं०
फलित
४५७

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्टश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् बृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत् अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घं
सुकीर्तिंचिंतयेत्सदा कदादीर्घधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेचापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्यः
पुनरन्तेसुरक्षणं पुण्यकर्मप्रभावेणआयुपूर्णभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्वंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविव्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनंदकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंतरुजंसर्व
विनाशनं वेदवर्षाचपश्चाब्देषटमेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलंजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुण्यकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचितोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्वमारभ्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिक्यपुण्यधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेललनाजनै त्रियोविंशाष्टविंशेब्देश्रुणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधेरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणांवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मंकृतेबाधापुण्यश्रेष्टोभिजायते पापादुक्खंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुरायभाजने मानकीर्तिविशेषेणासर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योहर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाश्चमेलनं ग्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभाविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः न.नामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूज्यंतेबहुचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखीलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणंश्रेष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये वृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुखिता दानपुरायसुकर्मेणासर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुरायकर्मणात् नगत्रेदमितेवर्षे शशिपञ्चाद्वकेतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपञ्चां तरोकाव्य व्यालपञ्चाद्वमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वे प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टमतिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह श्रेष्ट है और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुख दुख देखे इज्जत के साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीव की चिंता रहै छल छिद्र से जले सत्यासत्य को पिछाने किसी का बुरा न चाहे हीन दशा में फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्ति से रहै आनंद मान कर बिताये एक अल्प से प्राणों का भय हो सुयत्न से प्राणों की रक्षा हो पूर्ण आयु भोगे तथा लाभेश के पूजन दान आदि से विशेष लाभ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ग्वालवंशी था बड़ा धन पात्र था मथरापुरी के समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकार का आनंद पाता था एक समय भूलवश हो ग्याभन गाय को ताले में बंदकर चौरासी कोस को ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मर गई आकर देखा तो अतिशोक माना बहुत कुछ दान पुण्य करने पर भी पाप का भागी रहा सो स्वर्ण की गऊ बनाय दान करे तो मनेच्छा फल पावे धन संतान की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्थफलंचेदंविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधनो
नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुण नविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ
चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यंविशेषेणसर्वपूर्णो
भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तंविशेषता हर्षसौख्यां
वितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेचापि अल्पदीर्घो
भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदीर्घोभविष्यति पत्नीचिंतान्वितोनित्यंपितृपीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले
धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता
वृणबाधानसंदेहोअकस्माद्भयदारुणां वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणां दानमंत्रसुपुण्येनबालवृद्धिर्दिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वाताततमातश्च
मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदंमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपठ्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण
तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेसंप्राप्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदवृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतेमहोत्सवं विद्याबुद्धि
वृहत्वोपिचञ्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुण्यंफल
दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनद्रष्टव्या
लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणांवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोक्तत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य
कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिर्दिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता
सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत् कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

मृ०स०
फलित
४५६

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुरायकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं
सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय
भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहेमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण
स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावत्कालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति

कीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह
नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्ठितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चंद्रचत्वारिवर्षाणि
तथाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यंविजानीयात्नृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान
पुरायप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदंमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणगतेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु
सारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुरायकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाब्दमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण
निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवर्दिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इसकुण्डली का फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवान हैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार
मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा
तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सब के भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े बड़े खर्च के हैं सो
चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और
न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दोनों भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो
श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा
पूर्ण हो बड़े बड़े सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया
एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रख कर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका
सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रश्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यवृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहूद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चित्तंजायतेबहुनूतन अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णंभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेत्कृताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यश्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनीतश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदारातिचिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रश्चकन्याद्वाहेसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टश्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्वबाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धन षष्टमेचाष्टमेवर्षेब्रणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णंप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहश्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचित्तंचैवोपिव्याकुल नववनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परश्चचिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

मृ० स०
फलित
४६१

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोवृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैव्येश
जायतेपुरायकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंद्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति
गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाब्देसुता
पुत्रमनंदितालाभबृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनंसत्यवादीगुरुभक्त नृपात्भामान्यभवेत्सदाद्विजदेवसुभक्तिश्च विचित्रोवाक्यंब्रवीत्चत्वारिंशा
वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुग्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहूसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे
मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित वृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाब्दसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्व
विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वेपुत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य
विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारविनिर्मुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख
महत् प्राप्तेचंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णाभविष्यति सर्वकर्मानुकूलञ्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है प्रथम मध्यम भाग्य हो
पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो
जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे
लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मन की बात कहै तथा एक जीव की चिंता से
क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया
जन्म माने आयु पूर्ण हो पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंने भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना
पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो
हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से
विशेष विवाद रहा उसका हरा भरा बाग कटवा दिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुत सा स्वर्ण भर के दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्टबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहाग्रधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चदृश्यंते तेनहानिप्रजायते
मौनपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा
काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदंमंगलाचारं जीवहर्षश्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन्
दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं
सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णायु
तोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यग्रशुभंचिंत्य परनिंदाविनिमुखः वृणाचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यश्च सुपुण्य
प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले
जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालवृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतक्षोविरेचनम् ग्रहचिंता
विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन वूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बत्सरोवृद्धि बाल
क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्सष्टमेवर्षे नगनागदशाङ्के विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल
चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य
आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनश्यन्ति. द्रव्यलाभ
व्ययंतथा उद्वाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमोदिता शशिचन्द्राद्भमारभ्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्राय
चितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र
तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणंजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टनाश
नं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृत्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

मृ० स०
फलित
४६३

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुरायेन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाद्धमायात शर विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यंचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेण सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण चितचिंताव्ययपुरायं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलारायेवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंग लंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तोह्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णविकारेण महादा नेनशांतये चत्वारिंशावधिंतात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति विशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं वन्हिनगाद्धमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वे स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फलनहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगलकेतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और भाग्य की वृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय न बनेगा मध्यम लाभ हो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रतापसे आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशामें कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे किसीकी बुराई निन्दा नकरे शरीर में व्रणका चिन्हहो या शस्त्रघात हो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा न थी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म भोज आदि न किए एक ब्राह्मणका गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज करानेसे धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मो जीवआशाविनिर्मुख चित्तं नसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीडागृहंगुप्त अकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन अनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलवृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च आनंदंहिदिनेदिने आदिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तञ्चशांतये कृष्यदेहोपिदृश्यंते भूतछायाश्च
विव्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालवृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविव्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं बृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालवृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यञ्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमंगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य अविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते अथेदंकारणंवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे अष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वे भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्वमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचअहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते बृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भाविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्योपि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वे यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामआशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवह्निगतेकाव्य तथाचपंचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्
सर्वेषांशुभचिंतकः दानमन्त्रसुपुरायेन सर्वसौख्यनिरन्तरं गूढत्वंमिदंज्ञात्वा नकदाशोकमाश्रय षष्टवन्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्द
केतथा भूमिलाभविशेषेणामन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्य जातिमध्येप्रतिष्टता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुत
कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता श्चित्तचिंताविनश्यंति भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसौख्या
धिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवर्धिततः द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददी
र्घमुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फला स्वयंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशगत अन्यसर्वसुखंदश कुलभाग्यविवर्द्धनम्
पञ्चपंचाब्दमारभ्य शून्यषष्टादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंवत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे
सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यसाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयप्रियानित्यं देवागारे
मतिस्थित रामनामसुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वातरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशापरित्यज रस
षष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्र का ऐसा
फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहता है
गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है
और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी
अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से
विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के ब्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा
एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन
लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान दे तो पाप शांतहो परमसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहानेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव
यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाअल्पं
नूतनाजन्ममरायते जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं व्रणाचिन्हश्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम्
उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यअशुभचिंत्य सर्वतोपि
प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपश्चमेशश्च दानमन्त्रप्रयत्नत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता
विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीडाविशेषेण बालजन्मश्चमोदिता आदिवर्षात्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिअहर्निशं मंगलंसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे
विशेषत दंतपीडाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सयत्नशांतिसर्वदा वेदाद्व
पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीडाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः
अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य
षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चअन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तश्च
चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यश्चद्धिविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण
लोकाचारश्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं अहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता
प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधितत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सतापुत्रसमायुक्तो
लाभकृत्यविशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोद्यानंदतोपिर.ाद् बहुलाभप्रभावत पापकूरग्रहापूज्य सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र
त्रिनागतोगप्नं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्धाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

भृ० म०
फलित
४६७

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिर्मुख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्यं सिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिंशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यश्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायापात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धं सुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पश्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मने च्छापूर्णातोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रञ्च सर्वथानंददर्शन तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्धयमागम शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्ठांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदारुण रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्तो वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव की मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसे करे किसी का बुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्ठहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधुब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियोंको भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्ट हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदाविद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्टईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यंतेगूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनदृश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्टाभंगचिंतयेत्
जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमतमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनश्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभग्रकस्माद्धनप्राप्नुयात् मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्व
जायतेकुलदुखसौख्यसमोदृश्यविशेषोव्ययभूतले शुभग्रल्पभयंघोरंग्रायुपूर्णपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घंटाकर्णं
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु ग्रादौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे बृणपीड़ाज्वरोतप्ततथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिःसद्यशांतिभवेत्तेनग्रानंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स
तथाचसरचंद्रकेविद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्घाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता ग्रकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागीचबालक षोडशाद्धसमारभ्यतथाविंशाद्धमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्धागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िताबुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमेश्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपञ्चविंशाब्देतयोरंतरधनांगमद्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूजितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

मृ० स०
फलित
४६४

पदादीर्घमु

पुत्रजन्मेचनन्दितोरसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावलीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यक्षंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्वयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्ठित पददीर्घमु

पस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलंप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो

दीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्बत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च

वाहनं तीर्थयात्राजपंपुण्यंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यंचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे

तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुण्येनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद

त्रिवेदाब्दअकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेषेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय

ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवाग्रामभूमिश्चहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता

मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोपोतिदारुणं तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत् सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुवृद्धा

रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य

प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुण्यकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर

बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्र हो लाभ मध्यम रहे काम

होता २ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्ठा का भयहो जीवकी चिंता क्लेश पावे सूर्य मंगल और राहुका दान मंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि

रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें

किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में ये जीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों

का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया

सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

मृ० स०
फलित
४७१

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातामित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृक्षंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि
परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं
नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्रा‍नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स
चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअग्रेचवहुदृष्टय तथापिचवृहद्भागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातः सर्वपूर्णोविनिश्चितं
(सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयागंमतिनिर्मल
सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णंभवेन्नरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुराय
कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति
मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तक्रमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि
बहुत्वोपि वृणाविस्फोटकादयः गुडगोधूम्रदानश्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव
व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रश्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्वाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख
संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राद्धकेकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीतिरूप
यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनसंदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राद्धमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता
विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै
भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राद्धकेकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे
मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोद्यानंद तापिस्या

मृ० स०
फलित
४७२

द्बहुलाभप्रभावत सुदुग्धंमहिषीगावदासदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाङ्कमारस्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोवत्ससुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखीन्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शकःतथा
पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घमुपस्थित सुतकष्टविशेषेणादानमंत्रफलप्रदा द्विपुत्रचंद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षे चत्वारिंशातकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चविकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजाते अकस्माद्भयदारुणा विशेषोचिंतयेक्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुणा सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिपाठश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यञ्चप्राप्यतेनवनारीसुकीर्त्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतप्तं विशेषत दान
पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टावधिर्वास्य
आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगञ्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितीय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीतरहे अपने दुखसुखका सबवृत्तान्त उससे कहदिया करे औरविशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीतिरक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्त दुखावे श्रेष्ठ दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभखुशी देख और नाकिसदशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेषदीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंतासी रहे बड़े श्रेष्ठ कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेतुक्त पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं
मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहो भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात् जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं
मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनंव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप
क्रूरग्रहानेष्ठ स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलञ्च
महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीति सर्वकर्मेशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मञ्चल्पमहाभयम्
पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र
प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतबाधाज्वरादिकं
वृणपीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्धयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचगुप्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश
समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे
द्वादशेवर्षे मध्यतद्धदाम्यहं पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलश्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम
किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरसोदक्ष
आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविशेषेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम्
पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहानिदर्शित प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदितादीर्घचिंताविनश्यंति
जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माब्दकेतथा मानकीर्तिविशेषेण ब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् सर्व
चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़ितासुतापुत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेणअन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वचरूपयौवनविन्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यश्चन्यूनोपि निजकृत्येणामोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं
सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा
ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णंयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्धमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते
भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रीड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता
राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्धमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल
दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं ग्रामप्राप्तिर्ब्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो
चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्धकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर
भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र
मनंदिता षष्टाषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन वृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं
श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुर्विवर्द्धनं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णपञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ।। इस कुण्डलीका फल श्रेष्ठ और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे
मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्ठा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंने जो स्थान बिगाड़ा है
तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्दमें प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से
लाभ शरीरमें ब्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया
बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक
प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुख पावे ।।

श्रीगणेशायनमः कुंडलास्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घ ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्ठित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिगृहत्वता नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधनाक्षय कुलश्रेष्ठसुभाषीचसर्वेषांतोगोरतः दशान्यूनमहाचिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंश्रद्धं कृत्यञ्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापक्रूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुरायेनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसीउद्यमीपुंसअंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्वितीयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीड़ागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तगृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीड़ाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुजं मातृक्लेशमहदुखंजीवश्राशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुरायकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचपलंबालशिशुक्रीड़ामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाब्दमारम्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम्कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंविमोहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनैं पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाब्दकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तं अजीर्णनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुरायकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
द्रव्यलाभविवर्द्धनं श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपिकामक्रीड़ापरंप्रिय पूर्वपुरायप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घ वृहच्चिंतायदाकदा

मृ० स०
फलित
४७५

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनात्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्टितः शशिवन्हिसुवर्णाग्निञ्च
त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यविनश्यति कर्म
श्रणफलंमर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुद्दश्यंतेसुता
पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकान्यकार्येसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनंगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना
सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वछमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाब्दमध्यमा ब्रहलाभप्रभावेणचित्तोह्यानंदसीतल
मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिमुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्त
वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय
दीर्घबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरंताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि
पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत् विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुवृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते
पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चदासदासिश्ववाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढ़शुक्लसप्तम्यानिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत माने धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान
अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन
करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ट कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो
बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े बड़े काम करे हे शुक्र पूर्व जन्म में
ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा
रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और यह धन सेठ ने
अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

मृ०स०
फलित
४७८

शांतिर्व्रातसुशीलत्वंनिर्वैरंप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुण्येरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वंसुखंप्राप्य
धनसंतानप्रतिष्टित रसविंशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता
द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवन्हितथांतरे गुप्तकष्टनपीड्यंतेअजीर्णं
बातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुण्यलाभदायक अकस्माद्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता
व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेधनपुत्रादिप्राप्यते
षष्टत्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहलाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच
युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेशून्यपञ्चावधिलभेत् पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या
भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुण्यकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदबाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं
औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगबाणाद्भमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त
आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताब्दमायुष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥
इस कुण्डली के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख
प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी
श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनकी
कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे
हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी
सुन्दर स्त्री चेली हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो
ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्थफलंत्वेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातमौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्टसुखीलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वेमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वआशाप्रपूजितो कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यचिंतयेदीर्घतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्ण
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अज्ञानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चसाद्धमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभकतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्धमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते आशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्धमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागम फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपितुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलंचयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदशत्रुपक्षश्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यक्षंनकाशिता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेत्

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घवस्थासुयत्नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात् मान
कीर्तिवृहन्नित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपाललक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषतः आनंदंकौशलञ्चापिसुखं
सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापक्रूरग्रहारपि मध्यलाभभवेचिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीज्यश्चक्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन
वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यधनंव्यय सत्यवक्तासुबृद्धिश्चसुमार्गेवर्ततेसदा पदोच्चप्राप्यतेलोकेनीचसंगतिपरित्यजः धन
हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषेणसुकार्यमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं
शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्यारंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले
भ्रातभग्निसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतो
सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनमतितत्परः चित्तोसाधारणंबुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहादि
महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्रीतिविशेषेणतस्यध्यानोति
चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशत्रिविंशाब्देकामक्रीड़ाविशेषता चित्तचिंतान्वितो
भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घोभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः तातद्रव्यव्ययोदीर्घविशेषोहानदृश्यते
निजकस्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यानूतनंजन्ममन्यते वेदेब्देव्यालनेत्राब्दे
सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोपिनानाचिंतासमन्वितः कार्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता
मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगविंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भंचनिस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच
प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृत्वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रकृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविधि चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्धमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा
भाग्यवृद्धिबलंदीर्घगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातंभूमिमंद्रव्य
नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीचपश्चातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो
निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिभविष्यति पञ्चवेदाद्धमारभ्यव्योमबाणांतरोतथा जाया
कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजायते पुनश्चकुशलंभूयपुण्यकर्मप्रभावत
पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धिश्चसर्वदा पुत्रपौत्रसुखंसत्रमानवृद्धि
मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकीर्तिचपुण्यपात्रप्रशंसिता अतः परिसुख
सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणोनित्यंशीघ्रशांतिभवेततः
आज्ञाकारोसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रधनाप्तिंचदेवागाररेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसौख्यविशेषेणसर्वआज्ञा
प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रञ्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्धमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणेशुक्लषष्टम्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ॥ भाषा ॥
इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र
जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक
प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ट मति और सत्यता से व्यतीत
करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे आयु पूर्ण भोगे है शुक्र पहिले
जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय किया संतान न थी इष्ट पुत्र मान
लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने क्रोधवश हो फेंक दिया इसने और
फकीर को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय स्वर्ण की दक्षिणा दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

मृ० स०
फलित
४८०

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहावेदं बलवीर्यसमन्वित उद्यमेनधनंप्राप्तिलुभ्यतेललनाजनै धनसंतानयानश्चकुटंबेसुखवर्द्धनं मध्यभागीसुखी
लोकेसर्वसंपत्समन्वितः नैकत्रवसतिकाले निरोगीदीर्घजीवन सहस्रसत्क्रियायुक्तं सद्रूपंसत्सखाप्रियः शत्रुरोगविनश्यंति राजद्वारेधनागमः
वस्तिगुह्यघ्निनेत्रेच पीडनंमातुलंसुखं पूर्वपापग्रहाक्रूरं बलवीर्यविनाशनं धनबंधुविहीनश्च लोकेहास्यप्रजायते अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहि
विनिश्चितम् अनुष्ठानमहादान सर्वसौख्यप्रदःसदा गुप्तचिंताविनश्यंति मनेच्छापुरीततंततः प्रथमेब्देजन्मपीड़ा द्वितियेचक्षरोगकम् मुखरोग
ज्वरंपीड्यकष्टीभूतकलेवरम् पितुर्धनसमृद्धिश्चजायतेनात्रसंशय गुडगोधूम्रदानेनसर्वरोगविनश्यति तृतीयेब्देमुखंसर्वयाविन्मासेचसप्तमेप्राप्तेतू
अष्टममासेपुनर्व्याधीप्रपीडतं हरितकीसलवणाश्च नश्यतिउदरेरुजुं तस्माद्यत्नेनदातव्यं सर्वशांतिप्रजायते वेदपंचेचषष्टाब्दे नगवर्षान्तकेसुतं
संस्कृतश्चमहोत्साहो विद्यारंभप्रजायते मातृकष्टसुतंजातो पितुप्राप्तिनसंशयः अकस्माद्धनप्राप्नोति भूमिलाभतथैवच व्रणव्याधिनसंदेहोसर्वं
अंगेचजायते नेत्रमासगतेतत्र सर्वशांतिसुखोद्भवं मंगलश्चग्रहागम्यसंबंधोपिमुपस्थित नवमेचाष्टमेवर्षे शरीरेसुखसंभव व्यवहारेधनंधान्यंवर्द्ध
तिचदिनेदिने पितुदेह भवेत्कष्टंमासेपञ्चमसप्तमे अष्टमेमासेसंप्राप्ते धर्मकार्यभवेत्क्वचित् तेनसौख्यसमृद्धि स्यातभृगुणापरिभाषितं सून्यशशिगते
वर्षेतथाचषोडशाद्धके कष्टश्चजायतेदेहोदावदानेननश्यति योगश्चजायतोद्वाहंमंगलंग्रहमागत तातलाभविजानीयातव्ययोद्रव्यविशेषतः मोद
तेभूमिभागेचविद्यापठतिमध्यमा मासेमासेसुखंचैवहर्षयंतिदिनेदिने, ब्रक्षाचतनंज्ञेयंअथवाउच्चमंदिरात् जलभीतोभवेत्किंचाप्राप्यते भयदारुणां
नगचंद्रमितेवर्षेव्योमनेत्रमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोकांतासंगमजायते पूर्वपुन्यमहायत्नंजायतेवसुसंतति सप्तमासेगतेसंतप्रेतबाधाग्रहागम
हनुमतपञ्चमुखस्य स्तोत्रपाठश्चकारयेत् प्रेतबाधाविनाशाय्या दुदरेरोगनाशनं मोदतिकामिनीयुक्तं सर्वसौख्यसमन्वितः कष्टंभवतिभोपुत्र
प्रमदासेवनंचरेत स्वयंशांतिविजानियात्बहुमोदसमुद्भवे केचिज्जीवोमहाप्रीतीआशक्तश्चापिचिंतति पुत्रसौख्यभवेन्यूनंपूर्वपापेनपीडितं पत्नी
वत्नेशोपिप्राप्यंतेप्रायश्चित्तेनविद्यते नानासौख्यसमुत्पन्नो सुयत्नंचापिभूतले चंद्रविशेद्विविंशाब्दे पञ्चविंशाष्टविंशके लाभश्चविविधंपुत्रभविष्यंति

भृ० स०
फलित
४८१

नसंशयः पुत्रजन्मविजानीयात्कन्याप्राप्तिमथोपिवा भूलमञ्चश्रवंज्ञेयंनवीनोवार्तयाचितं शत्रुपक्षविशादश्चव्ययोद्रव्यप्रजायते राजद्वारेजयं प्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने शरीरेरोगसंपन्नोश्रल्पप्राप्नोतिनिश्चितं दारचिंतासमायुक्तोसुयत्नेनसुखंलभेत् धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिश्चनूतनं गृहमंगलगानश्चनववस्त्रोपिप्राप्यतिवामभागेबृणांयातदीर्घकष्टेनपीड़ितं भोमस्यमंत्रदानेननश्यतिनात्रसंशय नंदनेत्राद्धमारभ्यनेत्रराभगतेतथा सर्वसौख्यसमृद्धिश्चमोदतेवापिभूतले पुर्नपुत्रतथाकन्याउद्वाहश्चातिमंगलं महत्प्राप्तिमहोत्साहो सुभाग्यश्चातिसौख्यदं सूर्यमूर्तिप्रकल्पतेस्वर्ण दानबृथाचरेत् महात्सौख्यभृगुश्रेष्टमहादानकृतेसति वन्हिरामभितेवर्षेव्योमवेदोतथैवच सर्वसंपत्मवाप्नोतिममवाक्यनसंशय नेत्ररोगभवेत्का व्ययदादीर्घोप्रपीडतम् आदित्यहृदयंपाठंश्रुत्वाशांतिप्रजायते मंगलंजायतेमंन्द्रे धनव्ययनसंशय सत्संगात्प्रभवेज्ज्ञानंपूर्वयात्राभविष्यति अतः परंसुखंसर्वंव्योमषष्टावधिक्रमं सुतपौत्रसमायुक्तोदासद्रव्यश्चवाहनम् कार्याणिसकलानिवंसिद्धतिलघुद्रव्यत नंदषष्टगतेवर्षेश्रायुपूर्णभविष्यति निजकर्मानुसारेण आनन्दक्लेशसर्वदा ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की पत्री में ऐसे ग्रह हों सो मध्यम सुख भोगे शनि राहु मंगल की पूजा दान करने से अधिक सुख मिले जीव की चिंता रहे और बड़े २ लाभके उद्योग करे परन्तु न्यून धन प्राप्त हो स्थिर न रहे एक मित्र से प्रीत अधिक हो भारी अल्प आवे प्राणों का भय हो विद्या कम हो क्लेश विशेष पावेकभी २ बाय कफ से विशेष पीड़ित हो दान पुन्य यत्न करने से अन्त में मनो कामना पूर्ण हो बड़ा ऐश्वर्य पावे पुत्र पौत्रादि सर्ब सुख देखे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न रहे हट जाय कभी २ न्यून परिश्रम से अधिक द्रव्य पावे कई दफे धनकी न्यूनता हो परन्तु कार्य सब पूर्ण होजाय ये जीव पूर्व जन्म में वृन्दावन में उत्पन्न हुवा मन्द्रों की पूजा कर यात्रियों को ठाकुर के दर्शन कराय दक्षिणा द्रव्य लिया करता था और सर्वथा यात्रियों का ही अन्नभोजन करता था एक समय लोभ वश हो एक धनवान यात्री को विशेष भांग पिलादी जब बह रात्रि के समय नशे में पीड़ित हो अचेत हो गया तब उसका सर्वस्व धन हरलिया चेत होने पर उसने अतिशोक कर दारुण शापदिया तिसी से इस जन्म में महाक्लेश व अनेक दुख का भागी हुवा सो इस पाप की शांति के निमित्त बहुत से ब्राह्मणों को भोजन जिमाय गुप्त रीति से स्वर्ण दानदे संतुष्ट करे तो सर्व मनेच्छा फल पूर्ण हो जावे ॥

फलदीर्घग्रहाचेदं भाग्यवृद्धिश्चकारयेत् मध्यावस्थाधनंप्राप्यपुरुषार्थेननिश्चितम् प्रतापीबुद्धिमंतश्चकीर्तिवंतोप्रतीष्टतकदापिसमयेवत्सग्रकस्माच्च
उपद्रवम् दीर्घचिंतान्वितोभूयात् महच्छोचश्चजायते साहसीदृढ़संकल्पग्रन्यचैवोपितोपिता सत्यमार्गीचशूरोपिदुष्टसंगविनिमुर्ख चौरभीति
भवेचास्यतथावन्हिश्चपीड़िता धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् मङ्गलग्रहमध्यश्चनृत्यगीतादिकं भवेत् पुत्रपौत्रसमायुक्तोदासदासीश्च
मोदिता ग्रकीर्तिभयमादश्यशिवभक्तिसुखप्रदा क्रूरपापग्रहापूज्यसर्वतोदिशिमङ्गलं पराक्रमीयशंप्राप्य विनीतश्चतुरोगणी भाग्यवृद्धिसुखं
देहंद्विजानामर्चनंसदाः विदेशेगमनंकृत्यसुतदारादिचिंतनं वृषभमहिषीगावंहिरगयरजतान्वितम् स्वल्पभ्रातृसुखंज्ञेयंरिपुतुल्यंनसंशयः बहु
प्रीतिकरस्त्राणांमुदारासुभगंनरः यत्संख्यापञ्चमस्थाने तथैवसंततिभवेत् पितुधर्मसुसंग्राहीनिर्पेक्षाहिजायते सुबद्धिख्यातिलोकेरिमः शांतो
मधुरभाषिणः कदापिदैवयोगेनवेश्ययाप्रतिसमुद्भवेत्सुकर्मसौख्यदंलोकेपापकर्मेणक्लेशितां प्रायश्चित्तकृतेवत्ससर्वसौख्यंविनिश्चतं वापीकूप
तड़ागेशुग्रारामेमोदसंभव प्रथमेद्वितियेब्देचज्वररोगविशूचिका ग्रागंतुकंतृतीयेब्देचतुर्थेव्रणपीडिनं नेत्ररोगेणपीड्यते सूर्यदानञ्चशांतये पञ्चमे
सप्तमेब्देषुसंबंधयोगसमुद्भवः विद्यारंभेवतत्रैव पितुसौख्यनसंशय ग्रष्टमेवर्षसप्राप्त पितुप्राप्तिमहधनं मातांगेकष्टसजातो प्रसूतीरोगसमुद्भवं
नवमेब्देजलोद्भीती दशमेकष्टसंभवः द्वादशेकादशेवर्षे पत्नीयोगसमुद्भवः पिताचिंतातुरोभूत्वा राजद्वारेधनव्ययः प्राप्तेत्रयोदशेवर्षेमहत्खेदं
प्रजायते मातृचिंतापराभूत्वा ककोमिकुतः सुखम् चतुपञ्चदशेब्देषुकांतासौख्यमवाप्नुयात् ग्रहमंगलकार्यंच नववस्त्रप्रवर्द्धनम् रजतंकनका
भर्णांप्राप्यतेनविनत्यशः षोडषाष्टदशवर्षेकांताचप्रियभाषिणी ग्रागंतुकज्वरव्याधाप्राप्यतेनात्रसंशय शशिविंशमितेवर्षेभाग्योदयविनिश्चितम्
नानाद्रव्यसमायुक्तनववस्त्रसमन्वित पंचविंशाष्टविंशेचकन्यापुत्रसमुद्भव सरूपासुन्दरंकन्यामातुरंसुखवर्द्धिनी सर्वलक्षणसंपन्नावर्द्धतिपित
वेष्मनि धनप्राप्तिनसंदेहोचित्तसौख्यप्रजायते नन्दविंशमितेवर्षेवन्हित्रिंशाब्दकेपिवा पुत्रस्यजन्मयोगस्यात् भृगुराजेनभाषितम् गृहमंगल
गानञ्चनवनारिसमागमः ग्रतिहर्षसंप्राप्ति दानंदत्वायथाविधिः विप्रान्तोष्यतंविद्वान्याचमानाधनंददेत् राजद्वारेजयंप्राप्य नान्यथावचनंमम

शाँतिमूर्तिकुलीनश्च कंदर्पसमसुप्रभा पञ्चत्रिंशाद्वसंजाते
चन्द्रत्रिशेऽद्वित्रिंशब्दे अन्यकांताविमोहिता परंचस्वकुलेविक्ष कुमार्गेनात्रगामिनः किंचिद्धनप्रदातव्यसद्विजोनतुतुष्यति नागा
नगरामवाधितत यंत्रमन्त्ररतोजातंत्क्वाविप्रनिमंत्रणः रामनामविलिख्येन ब्राह्मणंरुष्टतांव्रजेत् शशिवेदगतेवर्षेनानाक्लेशसमुद्भवः
त्रिंशमितेवर्षेचत्वारिंशमथोपिवा भ्रातुःविमुखतांयातिमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् गृहहाटधनंसर्वंविलगच्चप्रजायते बाणवेदमितेवर्षेमंगलं
परन्तुधनलाभश्चजायतेनात्रसंशय नेत्रचत्वारिवर्षाणि कांतरोगनपीड़ितम् महामृत्यु जयोजाप्य दीर्घदानंनशांतति विप्रात्संगधनव्यय नेत्रबाण
ग्रहमंडले नृत्यगोतादिकंकार्य याचकानांधनंददेत् सून्यबाणमितेवर्षे अकस्माद्धनप्राप्यतेमंत्र यंत्रमतिर्यात स्वल्पसंततिबंधुश्च सर्वावस्था
मितेवर्षे तीर्थयात्रासमारभेत् पूर्वदेशेषुयात्राच विप्रात्संगनसंशयः स्वल्पभक्षीतपस्वीच शांतिक्षिप्रप्रकोपिनः आनंदमंगलं
धनीतरः शरपञ्च मितेवर्षे पुत्रपौत्रसुसंयुतः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहादिमहोत्सवम्सून्यषष्टामितेब्देच वाहनादिसुखान्वितः
लोकेनिजकृत्यधनागमः मासेवर्षेसुखंजातमोदतेभुविमंडले अष्टषष्टमितेवर्षेअथवापञ्चसप्तति सर्वावस्थाविजानियात् भृगुराजेनभाषितम् ॥

भाषा ॥ इन ग्रहों का फल किसो समय भाग्य की बहुत वृद्धि करेगा प्रथम अर्द्ध अवस्था में भाग्योदय हो अपने पुरुषार्थ से भाग्यवान् तेजस्वी प्रतापी हो किसी समय अकस्मात् चिंता फिकर आपड़े बड़ा सदमा उठावे हिम्मत वाला हो सबको दिलासा दे सुखी रहै सत्य मार्गी हो पाखंड से बचे दुष्टों की संगति त्यागे इज्जत का ख्याल और भयसा रहे शिवजी की भक्ति पितृ पूजन और गायत्री जाप से विशेष सुख की वृद्धि हो पुत्र की इच्छा पूर्ण हो एक अल्प से अधिक भय हो पाप ग्रहों का पूजन दान मंत्र करता रहे तो अधिक लाभ हो स्त्री को खुशी हो मनो कामना पूर्ण होवे द शुक्र यह जन पूर्व जन्म में क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था एक समय शिकार खेलने गया मृगके भ्रम से एक गर्भवती गऊ के तीर लगा जिससे वह मरगई और यह पाप का भ हुवा तिस पाप की शान्ति के निमित्त स्वर्ण के पत्र पर गर्भवती वत्सयुक्त गऊ की मूर्ति लाल चंदन से लिखवाय घृत चावल मिष्टान और वस्त्र सहित संकल्प करे श्रेष्ठ ब्राह्मण को दे गोपाल मंत्र का जाप करावे और गऊ ब्राह्मणों की सेवा कर उन्हे संतुष्ट करे तो धन सन्तान का सुख देखे अल्प नष्ट हो बहुत से सुख भोगे दीर्घ आयु वाला हो मनेच्छा फल की सिद्धि प्राप्त करे ॥

एतद्योगेनरोजन्मश्रानन्देनसमायुत राजद्वाराद्धनंप्राप्य सुविनीतोसुखीनरः दातागुणगणोयुक्तसुन्दरश्चंचलोमति निजकृत्यमहलाभसाहसी
चरणप्रियः सत्याधिकजितेन्द्रीच कामाधिक्यबलान्वितः सज्जनानांसुसनमानी सर्वसंग्रहकारक स्वकृत्यपरमोदक्ष कौशल्यः कामिनिप्रिय
कामक्रीड़ासमायुक्त प्रेमकर्ताधनान्वितः भ्रातबन्धुसुखंन्यून साभिमानीभवेन्नर सिद्धयेपिधनंधान्यं नोयशंप्राप्यतेक्वचित भोगमैश्वर्य युक्तश्च
कीर्तिवि ख्यातभूतले पराक्रमेधनंप्राप्य संततिकष्टजायते मंदबुद्धिग्रहाक्रूर शास्त्रवाक्यनविश्वसेत् कफपित्तोद्भवेत्पीड़ा निष्ठुरोकटुभाषिणः
साभिमानीमलीनश्च विदेशेभ्रमगतेनरः शूरश्चपलबुद्धिश्चसर्वकर्मविशारदे गुप्तरोग प्रपीड्य तेनचिरं विद्यतेसुखम् शुभगृहापिद्रष्टव्याक्षत्रहानि
करोध्रुवम् दीर्घप्रीतिसमुत्पन्नोआरामेचजलाश्रय वापीकूपतडागेशुपुष्पमाल्यैसुवस्त्रके विशुचिकारुजंयातोतेनमृत्यु भवेन्नरः नानाद्रव्यप्रदात
व्याभूम्याद्धनमवाप्नुयात् मित्रबन्धुविरोधश्च निष्टुरबचनंवदेत पापद्दुखलभेद्दीर्घं सुयत्नेनसुखावहम् शुभाचरणसुबुद्धिश्च प्रधानत्वहिजायते
सुकीर्तिख्यातलोकेषुपृथ्वीनाथेनस्वागत कदापिदैव ेनपरस्त्रीप्रीतिवर्द्धनः रोप्यमुक्ताधनंप्राप्यवैश्यापिग्रहमाग सुमार्गेधनहानिश्चपूर्वसं
चिन्नसंशयः सुशीलश्चबलोपुंसःशास्त्रज्ञविचक्षणः ।विानतोदारशांतश्चधनसिहष्टमानम गुरुमातृपितुभक्तवि जनतत। ।चत्तोदासु मूर्तिश्च
गंधंपुष्पविभूषित आद्यवर्षेज्वरात्कष्टंविशूचीचद्वितीयके तृतियेब्देमुखंपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंज जलभीतिनसंशय षष्ठेचसप्तमेवर्षे
विद्यारम्भप्रजायते संबंधयोगज्ञातव्याभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंजातेज्वरपीड़ाचदारुणं औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानेतथैवच त्रयोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचिज्ज्वरकोपसमुद्भवः चतुर्दशमितेवर्षेरजतंस्वर्णभूषणं महर्घवस्त्रपात्रंच वर्द्धतेग्रहमंडले पञ्चदश
मितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडषेवर्षसंजायतेपितुर्किंचिज्ज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्त.कफवातप्रजा
यते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेतथाविंशेपत्नीसौख्यसमागमः पितुर्लाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित शशिविंशेब्देद्विविंशे
कष्टयोगसमुद्भव चतुर्विंशचसंप्राप्त पुत्रप्राप्तिर्नसशयः पञ्चविंशात्सप्तविंशे यथालाभतथाव्ययम् अष्टविंशमितेवर्षे चित्तचिंताप्रपीडितम् रिपु

भीतिसमायुक्तहीनजातिश्चसाभवेत् त्रिंशेब्देचन्द्रत्रिंशोवासुतपुत्रसमायुत पत्नीकष्टविजानीयात् कफवातेनपीड़नं शशिमंत्रजपंदानशीघ्र शांतिश्चजायते चतुत्रिंशमितेवर्षेतथाचपञ्चत्रिंशयो बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्यतेनात्रसंशयः स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा षष्टत्रिंशेसप्त त्रिंशेचसुमार्गेपिधनव्ययः सुतापुत्रञ्चसंबंधंभृगुणापरिभाषितम् शरीरेकष्टसंपन्नोदीर्घरोगमुपस्थित महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानविधिर्यथा औषधिनेत्रनंकृत्वा शीघ्रशांतिश्चजायते अष्टत्रिंशस्ववेदेब्दे यात्राभवतिनिश्चितम् पश्चिमेदक्षिणेकोणे सुयात्राधनदायिनी चन्द्रवेदेद्विवेदेब्दे धर्ममार्गेधनव्ययः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजनं राजद्वारेतिमान्यञ्चभविष्यतिनसंशय शरवेदमितेवर्षेकिंचितखेदप्रजायते ततप्राप्ति नसंदेहो भृगुणापरिभाषितम् अष्टवेदामितेवर्षे विवाहोतधनव्ययः नभवाणामितेवर्षे राजद्वारेभयंभवेत् धनव्ययेनशांतिश्च जायतेनात्रसंशय नेत्रबाणामितेवर्षे पूर्वयात्राप्रजायते व्योमषष्टविधिकेवर्षे सर्वआशाप्रपूजिता धनसंतानयानञ्च सुयत्नेसुखवर्द्धनम् सून्यसप्तोपरिवत्स निर्बल त्वविशेषता अवस्थानतविज्ञेयाभृगुराजेणभाषतम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र जिस जीव की जन्म पत्री में ऐसे ग्रह पड़े बड़े बड़े आनन्द भोगे उद्योग व लाभके वास्ते बुद्धि से विचारकर परिश्रम करे इज्जत प्रतिष्ठा प्राप्त करे पंचम स्थान के ईशकी पूजादान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो पुत्र सुख पावे विद्या बुद्धि बढ़े दिन रात बड़ी २ बात सोचे दूसरे की बात को परखे सत्यासत्य को पिछाने अपने परिश्रम से कुटुम्ब का पालन करे श्रेष्ठ संगति में प्रीति रक्खे दुष्ट से बचे एक प्राणी पर प्राण से अधिक प्रीति हो सारी अवस्था में दो अल्प भारीआवें जीवका भय हो फिर शांत हो जाय सर्व सुख प्राप्त हो पुत्र पौत्र आदि से युक्त हो बत्तीस वर्ष से अधिक लाभ हो शुभ काम में खर्च करे अचानक उपद्रव उठकर शांत हो जाय भाग्य की वृद्धि हो दान पुण्यादिक करने से सबका प्यारा हो सर्वत्र सुख उपजे हेपुत्र पहिले जनम में ये जीव बड़ा भारी धनवान सेठ था प्रथम आधी अवस्था तक कुछ दान नहीं दिया अति कृपण रहा अन्त को अर्द्ध अवस्था में विशेष दान दिये सदाव्रत लगा दिया बहुत से मंगता आने लगे एक समय एक दिन ब्राह्मण का तिरस्कार कर उसको अत्यन्त पीड़ित करके शोक युक्त किया तिसी कारण इस जनम में अत्यन्त क्लेश का भागी हो इस पाप की शांति के निमित्त गायत्री मंत्र का जाप करावे ब्राह्मणों को भोजन दान सनमानादिक से खूब संतुष्ट करे तो पूर्व जनम के सम्पूर्ण पाप नाश को प्राप्त हों और अनेक प्रकार के सुख और आनन्द भोगे

श्रीगणेशायनमः सर्वखेटाइतिस्थित्वा नरोजन्मभुवितले बालवृद्धिभवेल्लोके आदकीड़ायथाक्रमम् कालानुसारविद्याच मंत्रौषधिरतःसदा
तीक्षणबुद्धिरिपोहन्तामध्यभागीसुखान्वित प्रलापीशीलवानज्ञेयोविवलश्चकलिप्रिय सुन्दरंश्चपलोबालयस्यजन्मश्चमोदिता राजद्वाराद्धनं
प्राप्तीविद्याभूषणभूषित रूपवानगुणसंपन्नोमासेदषेंसुखंगता सवलंदीर्घदेहश्चतमोगुणविशेषत प्रतापीसुखदस्सर्वेहेमरत्नानिभूषित सकामश्च
श्चलोलोलः सुजनेप्रीतिकारकः मिष्टवक्तारिपुद्रोहीगुप्तचिंतान्वितोभवेत् वाहनादिसुखंजातंतप्यतोरिपुवःसदा हिरण्यधनभूमिश्चबद्धिश्रेष्ट
सुनिर्मल हीनग्रहापिजन्मश्चसिंहतुल्यपराक्रम बहुभ्रत्यसमायुक्तो सुकार्यंकुशलंभवेत् मातृपितृगुरुभक्त भूपवद्राजतेनरः द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवच्चरेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्तःकीर्तिविख्यातभूतले धनपूर्णोतृषायुक्तसुशीलश्चतुरोधनी बहुपीड़ामनोद्वेगंबन्धुवर्गंचक्लेशिता सुगात्रो
सुमुखोसिद्ध पुत्रमित्रादिवलभ दीर्घकष्टेनसंपीड्यपूर्वपापस्यकारणम् प्रथमेद्वितीयेब्देषुकिंचित्कष्टप्रतप्यते उरपीड़ासमुद्भूतंदन्तरोगप्रजायते
तृतीयेपंचमेवर्षेभ्रातृयोगनसंशयः मातृकष्टविजानीयाद्दानपुण्येनशांतये चतुर्थेषष्टमेवर्षेपितुरंशोचजायते धनार्थेयत्नकर्ताचनंदलाभनसंशय
वृणव्याधीप्रपीड्यंतेत्रिस्फोटकभयंभवेत् सप्तमेनवमेवर्षेविवाहार्थंचचिंतया संबंधजायतेतस्मिन्तातोधर्मरतिभवः विद्याप्रीतिश्चमध्योपिक्रीडनं
दीर्घतत्पर दशमेकादशेवर्षेतातलाभनसंशयः मातृखेदसमायुक्त देव्यायापूजनंरतः प्रारंभेद्वादशेवर्षेव्ययोद्रव्यप्रजायते शरीरेकष्टसंपन्नो
सुयत्नंशांतयेसदा त्रयोदशाब्दसंप्राप्य तथाचैवचतुर्दशे पत्नीयोगोपिजायतेशत्रुवःतप्यतेध्रुवम् पंचचंद्रमितेवर्षेनागनेत्राब्दमध्यमे मध्यविद्याप्र
तिष्टोपिबद्धिमंतोविशेषतः विद्यावस्त्रमहर्घंचप्राप्यतेनात्रसंशय ऊनविंशेतथाविंशलाभयोगसमुद्भवम् राजद्वारेपदंस्थित्वास्वल्पलाभप्रजायते
चंद्रविंशमितेवर्षेवेदविंशतथैवच मानबृद्धिविजानीयात् नानाभोगसमायुतः नवनार्यागृहंचैवमंगलंमोदवर्द्धन प्रायश्चित्तकृतेपापंनानासौख्य
समागमः द्रव्यलाभविशेषेणचित्तोथ्यानन्दतोपिच वाहनादिसुखंज्ञात्वा दाससौख्यंचमोदिता अयत्नेनभवेच्चिंताचित्तंचैवोपिविभ्रमः चंद्रजीवपरं
प्रीतिस्वरूपोहदिचिंतनं आशक्तश्चमनोजात्वाकदापिकालेतिविह्वलम् बाणयुग्मगतेचापिनभवन्हिमितेतथा तावत्कालगतेसौख्यंपापकर्मणा

पीड़िता नैवंकष्टमवाप्यंते पुरायकर्माश्रयोयदा सुतापुत्रसमायुक्तो भाग्यवृद्धिश्चलाभदं शशिरामाद्धसंप्राप्य षष्टात्रिंशावधिकमात द्रव्यलाभ
विशेषेणापद्दीर्घमुपस्थित विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमुपस्थित सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् मंगलंगृहमोदिता मासेवर्षेकलावृद्धिशुक्लपक्षो
यथाशशि: गृहमंगलगानञ्च नवनार्यासमागतः शरीरोपीड़ितंगुप्त ग्राजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधिसेवनंकृत्वा अन्नदानंहरिस्मरेत् सर्वबाधा
विनश्यंतिनात्रकार्यविचारणम् अन्यदेशाद्धनंप्राप्यगोवृषञ्चमहिष्यका आदौलाभविशेषेण अन्तव्ययनसंशय नगत्रिंशाद्धगेकाव्यतथाचनभवे
दकेभाग्यवृद्धिविजानीयाद्धनलाभनसंशय परश्चनेत्ररोगश्चजायतेनात्रसंशय शत्रुपक्षउपाधिश्च बांधवोपिपराजय पुत्रमेकञ्चसंप्राप्यतेजस्वी
दीर्घजीवन सुमूर्तिश्चन्द्रवत्कांतिकंदर्पसमजायते अन्योपाधिभवेनत्रराजद्वारेनिवृत्तय शशिचत्वारिवर्षाणिरुद्रवेदेतथाकवे अतिलाभमहत्सौ
ख्यंप्राप्नुर्यातिदिनेदिने गावमेकसमागम्यवत्सयुक्तापयस्विनीतस्ययोगेधनंवृद्धिसर्वदानन्दलभ्यते पत्नीकष्टविशेषेण वामकुक्षिचपीडनं शूठिका
लवणंश्यामदेयात्शांतिप्रजायते तदांतेचमहामोदंपुत्रपौत्रधनादिकं व्योमषष्टाद्धमायुष्यंभाष्यतेमुनिसत्तम मंत्रदानमहापुरायसर्वसौख्यप्रदोभव

भाषा ।। हे पुत्र इसयुग में उत्पन्न होने वाला पुरुष अति चतुर बुद्धिमान गुणवान और सर्वसुखयुक्त होता है परन्तु पूर्व पाप के कारण जीवकी चिंता विशेष बनी रहे जिसका कारण यह है कि यह जीव पहले जनम में बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्वाल वंशी अहीर था दान पुण्य अधिक करता था परन्तु चित्त में ईश्वर की भक्ति अधिक न थी एक समय अति क्रोध वश होकर एक गर्भवति गऊ पर लाठी का प्रहार किया जिस से उस गऊ को अत्यन्त कष्ट हुवा और उसका गर्भ नष्ट हो गया तिस पाप से इस जन्ममें चिंता अधिक रहे घरमें अल्प आवे जीव की चिंता विशेष रहे लाभ होता होता रुक जाय और विशेष कष्ट व क्लेश का भागी हो यदि इस पाप की शांति का यत्न न हो तो तीन जनम तक क्लेश पावे इस पाप की शांति के निमित्त अपनी श्रद्धा अनुसार शुद्ध स्वर्ण लेकर गऊकी मूर्ति बनवाय वेद पाठी ग्रहस्थी सज्जन कुटुम्बी ब्राह्मण को दान करके वे यथा शक्ति गायत्री मंत्र का जाप करावे और आप भी अपने इष्ट देव की प्रार्थना करता रहै हवन कर ब्राह्मण जिमावे और अन्न की लोई बनाय सन्ध्या समय गौवों को जिमाया करे; तो शीघ्र ही पाप नष्ट हो जाय सर्व सुख पावे और मनकी इच्छा सर्व प्रकार पूर्ण हो जाय इसमें संशय नहीं ।।

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं भाग्यशालिश्चसुन्दरः पितृवाक्यप्रतिपाल कठोरमननिश्चितम् कालाऽनुसार विद्याच मन्त्रौषधीरतो
भवेत् सात्विकंवृत्तिसंयुक्त सुन्दरश्चभुजापद स्वेतवस्तुप्रियसर्वे प्रसन्नमुखकौशलः प्रतापीसुखदःसर्वे हेमरत्नञ्चभूषणम् कृतज्ञीचधनाढ्यश्चसत्य
वादीसुनिश्चितः दासदासीसमायुक्तो भाग्यशालिभवेन्नरः धनसन्तानयानञ्च कुटम्बेसुखवर्द्धनम् नृपानुकंपयात्किंचि त्प्राप्यतेभूधनंसुखम्
बद्धिमान्पंडितः शूरो स्वकुलेसुप्रतिष्ठतम् सुमूर्तिप्रियभाषीच सर्वसंपत्तसमन्वितः कुक्षिपीड़ायुतःपत्ना प्रपञ्चालाभजायते पुरायोदयसुखंसर्वे
प्राप्यतेचयथाक्रमम् पूर्वपापोदयंवत्स कुटुम्बेदुखदायक सर्वभोगसमायुक्तो निष्टुरवचनंवदेत् महर्घवस्त्रधारीच सुतदारातिचिंतयेत् श्रीपति
विदितंलोके स्वार्थीत्वमुपजायते अस्ययोगविचारेण करोतिधनमागम् स्वयमस्थानसंस्थित्वा गीतवादमतिप्रियः क्रूरेबंधुविरोधीचसौम्य
शुभफलप्रदः शनिश्चरेतिभूम्यांच सुवस्त्रेवेष्टितःसदाः चतुष्पदास्थितंगेहे कालेनोपिविसर्जनमम्म् रौप्यमुक्ताधनंप्राप्य वैश्याद्विग्रहागमः अन्य
देशाद्धनागम्य गृहभार्याप्रधानिनी चन्द्रजीवपरंप्रीति स्वरूपचिंतनंकदा सुकर्मंसर्वदासौख्यंदुष्टकर्मंचक्लेशिता शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारेपरा
जय वाहनादिसुखंकृत्य विनयंधर्मवर्जित अल्पखेददददेद्दीर्घ पूर्णमायुभवेन्नर पूर्वपापेनसंपीड्य अन्दसर्वसुखान्वित मनश्चविव्हलोजातंदीर्घ
चिंताकदाकदा नशांतिप्राप्नुयात्कुत्रविमग्नकामपीड़िता द्वयोरल्पमहाकष्टं जीवचिंताचविव्हलं प्रायश्चित्तकृतेनूनं सर्वसौख्यलभेध्रवम् चित्त
चिंताविनश्यंतिसर्वकष्टविनाशनम् मनेच्छापूजितोवत्स कामशांतिश्चलोकमा अयत्नेनभवेच्छोकम् नात्रकार्यविचारणम् अल्पञ्चप्रथमावस्था
मध्यावस्थासुखीभवेत् अन्तेधर्मसमायुक्त तीर्थयात्रातुरोभवेत् ललाटेमध्यरेखाचभृगुवाक्यनसंशय दग्धचिन्हंवामांगे शिरोरोगप्रजायते बहु
बन्धुसमायुक्तो कांतापुत्रश्चमोदिता गृहधर्मप्रवेत्ताच बहुमित्रप्रियंवच रोगञ्चप्रथमेवर्षे द्वितीयेतुविशूचिका तृतीयेवेदवर्षेच बृणज्वरप्रपीडिता
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते संबन्धयोगप्राप्यंतेगृहमंगलगायनं अष्टमेनवमेद्ध्वेर्षाकिंचित्पीड़ानसंशय कफवातोद्भवेद्रोगंऔषधेनप्रशांतति
दशमेकादशेवर्षेगृहद्रव्यसमागम गुप्तचिंताभवेत्तातो नान्ययाभूपसेकवे द्वादशेवन्हिचन्द्राब्दे नेत्ररोगसमन्वित अन्यदेशेभवेद्यात्राभृगुणापरि

भाषितम् चतुर्दशमितेवर्षेपञ्चचंद्राद्वकेतथा सुपत्निप्राप्यतेनूनंआनन्देनसमन्वितः द्विवेदेद्वादशेचाष्टंचतुःचन्द्रचषोडषे विंशेब्देचचतुर्विंशअष्ट विंशाद्वकेतथा अरिष्टंयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकवे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावत सर्वकष्टविनश्यंतिआनन्दंमोदतेभुविः सप्तचंद्रतथा विंशेत्रिविंशषष्टविंशति त्रिंशचत्वारिंत्रिंशेच पञ्चत्रिंशतथैवच एतद्वर्षान्तरेशुक्र सन्ततियोगजायते नेत्राविंशमितेब्देच भाग्योदयप्रजायते पूर्वपापप्रभावेणनतिष्ठतिचिरंसुखं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपापशांतिश्चकारयेत् ब्राह्मणान्भोजयित्वातुमहादानसुभक्तित दानपुण्यप्रभावेणसन्तति सौख्यवर्द्धनम् द्वाविंशेचचतुर्विंशे सप्तविंशेत्रित्रिंशके षष्टवेदेनभेपञ्च विशेषोभाग्यवर्द्धनम चन्द्रविंशमितेवर्षे सर्पाद्भयसमुद्भवः दाहनादिमह त्सौख्यंचित्तआशाप्रपूरकः लोकेग्रामप्रतिष्ठाच दीर्घपुण्यधरातले धनव्ययशुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलम् पुण्यकर्मेणभोप्राज्ञसर्वसौख्यनिरन्तरं पंचशीतिमितेस्नायु षष्टासीतिमथोपिवा ज्ञानध्यानसमुत्पन्नरामनाममुखंजपेत् माघशुक्लनवम्यांचभृगुगुरुवारेणसंयुतः रोहिण्यामेसमायुक्तःपूर्ण मायुःभवेत्ततः ॥ भृगुजी बोले हे शुक्र जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़ने से अत्यन्त ही भाग्य वाला होता है प्रथम अवस्था में सुख कमती हो परन्तु अन्त में सुख पावे इस जीव के पूर्व जन्म के कर्म अच्छे हैं तिसी से दिनों दिन अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों विद्या बुद्धि बढ़े श्रेष्ठ मित्रों से मिलाप हो और यथा कर्म सब आशा पूर्ण हो परन्तु एक अति शय पाप पहिले अचानक बन गया है सो अतिशय क्लेश देने वाला और सब सुखों में विशेष बाधा कारक है अतिशय चिन्ता उत्पन्न करे है सो यह है कि यह जन प्रथम क्षत्रीवंश में था सो अतिशय दान पुण्य करे सब को सन्तुष्ट करता था एक समय बन को शिकार खेलने गया सो मृग के भ्रम से गऊ का बछड़ा मारा गया वह एक ऋषि की गऊ थी तिस के बच्चे के मर जाने से वे ऋषि अतिशय शोकातुर हुये तिसी से ये जीव महापाप का भागी हुआ इस पाप की शांति के निमित्त स्वर्ण का बछड़ा बनाय संहिता की विधि से धरम परायण वेद पाठी ब्राह्मण को दान करके दे वीर्य मन्त्र का संपुट लगाय गायत्री महामन्त्र का जाप करावे हवन कराय ब्राह्मणों को भोजन जिमाय सब प्रकार से सन्तुष्ट कर सैया दान करे और बाह्मणों को सर्वथा संतुष्ट करता रहे इस यत्न से महा पाप नष्ट हो पूर्ण पुण्य उदय होवे आशा पूर्ण हो सर्व सुख प्राप्त निश्चय करके होय ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगविचारेणआदौसौख्यश्चमंदता पुनरंतेमहामोदंभाग्यवृद्धिश्चभूतले चंद्रजीवश्चसंयोगे बहुद्रव्यसमागम विद्याबुद्धि
विशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने प्रथमेद्वितीयेब्देच ज्वरश्चमुखपीड़ितं कष्टदेहेविजानीयात् जननीचिंतयायुतं मातृकष्टनसंदेहो पितृचिंतातुरोभवः
द्रव्यलाभविजानीयात्बालवृद्धिश्चमोदिता तृतीयेद्वोदरव्याधीचतुर्थेव्रणसंभव दानपुण्येनशांतिश्चसर्वरोगनिवारणं महामृत्युञ्जयोजाप्यशरीरे
रोगसंभव पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यारम्भप्रजायते पितुशत्रुभयंप्राप्तिराजद्वारेजयंभवेत् चक्षुरोगविजानीयातकिंचिज्ज्वरसमन्वित बहुरोगसमुत्पन्नो
पीडयंतिपुनःपुनः उपायश्चास्यवक्षामि येनश्रेयोनिरन्तरं स्वर्णपत्ररक्तगन्ध उल्लेख्यहरिमूर्तये घृतकुंभान्तरेधृत्वा पौर्णिमायांचपूजनं अन्य
विप्रयदातव्यंयेनतिष्ठतितत्पुरे अस्यदानेनशांतिस्या पुनकष्टनविद्यते सप्तमात्चाष्टमेवर्षे ग्रहेचव्योमचंद्रके संबंधयोगसंजातं बालक्रीड़ाश्च
तत्परः पितुप्राप्तिनसंदेहोनिजकृत्यधनागम नवमंद्रस्ययोगश्चअस्मिनवर्षेप्रजायते अथवाक्षेत्रलाभश्चस्वपुरेवापरोपुरो दशमेकादशेवर्षेद्वादशे
चत्रियोदशे विवाहेवार्तयायातो दिवारात्रौचमंदिरे पितुर्लाभविजानीयात अन्यदेशेनसंशय शत्रुभीतिसमायुक्त विचार्यकुरुतेग्रह दीर्घचिंता
स्थितंगेहेदिवारात्रौतनुक्षय वन्हिचन्द्राद्धकेकाव्यपञ्चमेकञ्चषोडषे वृक्षाच्चपतनंज्ञात्वाकिंवामंद्रे पपातिता चौरभीतिभवेद्ग्रामेसर्पभीतिस्तथैवच
मातृक्लेशसमायुक्तो अतिशोचोहिजायते गोभूहिरण्यदानेन सर्वदुखविनाशनं षोडषेनगचन्द्रे च सर्पचंद्रग्रहाशशि कांतासंगतिआनन्दंजायते
नात्रसंशय नववस्त्रमहर्घंच धीर्यत्यतिसुन्दरम् कष्टव्याधिविनाशार्थंघंटाकर्णांचपूजयेत् तत्पश्चात्संततियोगद्रव्यलाभश्चनूतनं ग्रहमंगलगानञ्च
आनंदवर्द्धतेमहत् याचकानांसमाहूयदानंदत्वापुनःपुनः व्योमनेत्रगतेवर्षेवेदयुग्माद्धकेतथा कन्यायोगनसंदेहोतप्यतिनारीमंदिरे भाग्योदय
भवेतस्यतस्मिनवर्षेनसंशय अनुष्ठानप्रकर्तव्यायत्नेनममवल्लभः चित्तंसुस्थिरतांयातिधनप्राप्नोतिबांछितम् पंचयुग्मगतेकाव्यत्रिंशवर्षाविधिक्रम
धर्ममार्गेमतिप्राप्य सर्वदानन्दवर्द्धनम् सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव धनव्ययसुमार्गेच याचमानापितृप्यति यत्रकुत्रमहर्षंच मंगलञ्जायते
पुरे किंचिच्छोकविजानीयातपरञ्चधनलभ्यते जाप्यपूजाद्विजार्चादि सर्वशोकविनाशनम् ग्रहेविप्रभोज्यञ्चमंगलंगानमेवच सोमविंशगतेकाव्य

मृ०स०
फलित
४९१

तथावेदत्रियाङ्के संबन्धंचचर्चयाजातोउत्तमेग्रहमेवच विवाहादिमहोत्साहौ मंगलंहिदिनेदिने तस्मिन्वर्षेचगोदानविद्यावान्विप्रदापयेत् ब्राह्मण
भोजनंदद्यात्सर्वकष्टनिवारणे क्षत्रचिंताचप्राप्यंतेसुकीर्तिचापिभूतले यत्रकुत्रप्रशंसाचमाननीयंसुजातय मंगलंजायतेदीर्घगुप्तचिंतायदाकदा
गोधूम्रगुडसंयुक्तवानराणांप्रदापयेत् तेनसौख्यभवेन्नूनंसर्ववाधाविनाशनं शरत्रिंशमितेब्देच अष्टत्रिंशमितेतथा भाग्योदयाधिकंचैवकष्टेन
धनागम मन्द्रहाटतथाद्वारंनवीनंचभवेततः महिषीआगमंतस्मिन्दुग्धयुक्तंसुमन्दिरे तदोपरिमहाकष्टंमृततुल्योमहाभयम् स्वर्णस्यप्रतिमा
कार्या मासविंसप्रमाणकी तन्मध्येचैवदैत्येशः आपदुद्धारणांलिखेत् संपुटंकामबीजेन मंत्रभागवतंचरेत् मूर्तिपूजाप्रकर्तव्यं अन्यविप्रायतं
ददेत् येदानंचैवगृन्हति पुनर्नगरेनआगमम् सर्वकष्टेगतेतत्र पूर्णमायुभवेत्सुधी ...हरामाद्धसंप्राप्य व्योमवेदत्रिवेदके वेदोवेदगतेचापिव्योम
पंचाव्धिगते मंगलंजायतेवत्स गृहेनित्यमनेकशः अन्यदीर्घसुखंज्ञात्वा कार्यवृद्धिश्चभार्गव धर्मयात्रानसंदेहोतीर्थपर्यटनंभवेत् नरनारिसमा
युक्तोसुतापुत्रतथैवच सून्यषष्टाव्धिवत्स पुत्रपौत्रादिसंयुत सर्वफलभविश्यंति जीवकर्मानुसारत अंतेचनिधनंचास्य किंविशेषेणकथ्यताम् ॥

भाषा ॥ इस पत्र के ग्रहों का फल यह है कि प्रथम न्यून फल होकर फिर अधिक हो एक जीव से मिलकर बहुत सा लाभ हो विद्यावान् कम हो परन्तु बुद्धि विशेष हो हर एक की बात को तोले सत्या सत्य को परखे किसी के छल में न आवे औरों को अकल दे और बड़े २ खर्च के शुभ काम करे कीर्ति वान हो प्रतिष्टा बढ़े किसी मित्र से खुश रहे उसमें चित्त विशेष लगा रहे एक समय प्राणों का भय हो सब का भला चाहे एक जीव का विशेष दुःख हो कुछ दिन कठिनता से कटें फिर सुख पावे पंचमेश और सप्तमेश की पूजा दान मंत्रादि से परम आनन्द हो स्त्री और पुत्र पौत्रादिका सुख देखे। हे शुक्र पूर्व जनम में ये जीव एक नृप की सेना का बड़ा अफसर था एक समय एक पर्वत पर शत्रुओं से अत्यन्त युद्ध हुवा वहां एक गुफा में महात्मा साधु बैठे हुवे तप कर रहे थे इस सेनाधिपति ने वहां आग लगवा दई तिस अग्नि से पीड़ित हो उस साधु ने शाप दिया तिस कारण इस जनम में क्लेश पावे और चित्तमें संतापितरहे कार्य होकर बिगड़ जाय सो इस पाप का यह उपाय है कि स्वर्णका पत्र बनवाकर लालचन्दन से उसपर साधू मूर्ति लिखे पूजन कर घृत भरे कलश में धर कर गुप्त दान करे और सर्वथा ईश्वर का भजन करता रहे सो सब मनेच्छा पूर्ण हो जाय और सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजाता सुकलंमानवर्द्धनम् जन्मतोमातृबाधायां मासेमासेसुखंगतः दन्तबाधाज्वरोजाता रेचनंतत्रशांतय
नेत्रवर्षतथापञ्च बालक्रीड़ायथाक्रमम् वृणबाधामहाकष्टं दीर्घयत्नेनशांतये षष्टनन्दाब्दमध्योपि मंगलंसौख्यसंभव भ्रातभग्नीसुखंलोके भवि
तव्यंनभूपत्नेमध्यभागोश्चबालोयम् विद्याबद्धिश्चमन्दता व्योमचन्द्राब्दमारभ्य नभनेत्रान्तरोक्रमात् सुखदुक्खागतोनित्यं मध्यसौख्योह्य
माप्नुयात् अहन्तारोहृदेगुप्तं लाभमोहेनपीड़िता सून्यपञ्चावधिवत्स सर्वआशाप्रपूजिता सुयत्नंजायतेपूर्वेदीर्घभागोचबालकः विद्याबुद्धिगुण
द्रव्य वर्द्धितश्चापिभूतले न्यूनकार्यमहाचिंता जायतेचयदाकदा नानासौख्यसमायुक्तो गुप्तबाधाप्रपीड़ित मानसीविविधाचिंत्य कदासिद्धोन
सिद्धति अन्त्यसर्वसुखंप्राप्य मित्रपक्षोपिप्रीतमा युग्मकार्यमहद्रव्यं प्राप्यतेसौख्यवर्द्धनम् बहुकार्यचिंतयेजीव विप्रभोजायतेमनः सत्यवक्ता
सुखीलोके असत्योकोपवर्द्धनम् ग्रहाक्रूरास्तुज्ञातव्या दुक्खदातेचसर्वदा अतस्तेषांतुशांतिश्च कर्तव्याहिविशेषतः सर्वसौख्यसमायुक्तो दुर्लभ
भोगप्राप्तये त्रिरत्नपञ्चमहाकष्टं अकस्मात्महदागते महामृत्युञ्जयोजाप्य अनुष्ठानयथाविधिः प्रायश्चित्तकृतेपापम् सर्वशोकविनश्यति ग्रामभूमि
लभेद्रव्यं कोषवृद्धिश्चन्यूनता व्ययोलाभविशेषेण मंगलोग्रहमागम श्रद्धाभक्तिश्चमध्योपि देवाराधनतत्सवै अनुष्ठानमहादान सर्वाभिष्टफल
प्रदा दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबुद्धिवन्तोविचक्षण निजकृत्यसुदक्षश्च मानकीर्तिप्रतिष्टत गुप्तशत्रुविरोधश्च विवाहादिमहोत्सवम् पंचेशोपूजयेद्यत्नं
सन्ततिसौख्यदीर्घता महामोदान्वितोपुन्स शुभकर्मफलप्रदा सुतापुत्रसमायुक्त दासदासीश्चमोदिता वन्हिषष्टांतरोकाव्य पौत्रसुखविशेषता
द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्या व्ययोपिदीर्घचिंतनं दानपुण्यरतोनित्यं शुभकर्ममतिस्थियेत पूर्वपुण्यप्रभावेण मोदतेचापिभूतले अयत्नेनैवभोकाव्य पाप
कर्मेणक्लेशिता लाभेशोसुविधिपूज्ये दीर्घद्रव्यसमागमः सदाचित्तोह्यानन्द तापिस्याद्बहुलाभप्रभावत नागवह्निमितेवर्षे चत्वारिंशाब्दकेतथा
वेदवाणतथाचापि दीर्घलाभोपिजायते ग्रामभूमिधनंलब्ध्वा रचनामन्द्रनूतनं पुण्यकर्मविशेषेण मंगलंविप्रभोजनम् गुप्तचिंतातथाक्लेशम् महा
दाननशांतये ईशभक्तिविशेषेण दीर्घसौख्यह्यमाप्नुयात् सर्वचिन्ताविनश्यन्ति क्लेशनाशंसुखान्वितम् सून्यमप्तांतरोकाव्य प्रपौत्रंजन्मसम्भव

मृ०स०
फलित
४६३

दासदासीसमायुक्तं वाहनादिमहासुखं मानकीर्तिविशेषेण पददीर्घमुपस्थित शरीरेकष्टसंपन्न गतिमन्दंचदुर्बल अन्नरसंमहादान सर्वदा सौख्यवर्द्धनम् नगसप्तमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते महामन्त्रतथादानं सुयत्नेभक्तितत्परः अनुष्ठानविधानेन वर्द्धतेसुखसम्पदा अयत्नेनतथा वत्स मन्दसौख्यंचक्लेशिता नानाचिंताप्रपीड्यन्ते बहुबाधालभेन्नरः पूर्वपा५वलीजातं पूर्णसौख्यंविनाशिता परिश्रमोक्तेदीर्घं चित्त आशानपूजिता संततिभूयसेलोके नसुखंविद्यतेक्वचित् अभूतस्यकुतःसौख्यं भूयसेनापिभूयसे व्ययोदीर्घमुपस्थित्य बहुशोकेनप्राप्यते एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वधर्मसंचय दीर्घपुरायोदयंयत्र सर्वसौख्यान्वितःसदा चित्तचिंताविनश्यंति ममवाक्यश्चसिद्धति स्वासकासकृतेदानं ज्ञातव्यंयेनरःसदा नपीड्यन्तेमहाशोकम् सर्वदानन्दप्राप्यते पूर्वंजायतेपापम् समासेनवदाम्यहम् महादानंप्रवक्षामि येनश्रयोभविश्यति

भाषा ।। इस कुण्डली में ग्रह जो बहुत अच्छे पड़े हैं तिस से इस मनुष्य को सब तरह के आनन्द प्राप्त हों धन का लाभ होता रहे कभी कभी थोड़े ही परिश्रम से कार्य सिद्ध होजाय बहुत से कामों का चिन्तवन करता रहे क्रूर और खोटे ग्रहों के प्रभाव से जब कष्ट हो तब महा मृत्युंजय का जाप वेद की विधि से करावे तो आनन्द हो अन्न का दान करने से सदा सुख पावे इस शास्त्र के विचार का यही फल है कि हमेशा पुण्य कार्यों में चित्त लगावे धर्म से सब सुख प्राप्त होते हैं यह जीव पहले क्षत्री बंश में उत्पन्न हुवा था शिकार खेलने और मांस खाने का अधिक व्यसन पड़गया तिस से मृगों की हिंसा अधिक बन गई इसी कारण इस जनम क्लेश अधिक पावे गुप्त चिंता विशेष रहे काम होता होता रहजाय और धन पुत्र होने पर भी सुख न पावे और शरीर पर बहुत भारी अल्प आवे सो इसकी शांतिके कारण श्रद्धानुकूल वित्तानुसार स्वर्ण का मृग बनवाय घृत भरे तांबे के कलश में गुप्त रखकर वेदपाठी ब्राह्मण को गुप्त दान दे और आप दुद्धार मंत्र का जाप कराय ब्राह्मण को सर्व प्रकार से प्रसन्न करे ब्रह्मभोज करे इस यत्न को श्रद्धा पूर्वक करने से सब सुख पावे और निश्चय करके पूर्ण आयु भोगे और दान के समय इस मंत्र को मुख से उच्चारण करे ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं विष्णुभगवान मम अपराध पूर्व जन्म का क्षमा कुरु कुरु स्वाहा ।।

भृ० सं०
फलित
४९५

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहयन्त्रेस्थित्वाभाग्यवान्भोगतत्परः दाताभोक्ताकृतज्ञश्चबहुसेवीनरोभवेत् वाहनादिसुखंलोकेदासदासिश्चमोदता काम
पीड़ाविशेषेणग्रकीर्तिंचापिभूतले दीर्घकार्योमहाचिंताजायतेचदिनेदिने आदौद्रव्यविशेषेणपश्चांतेचापिन्यूनता पितृमातृसुखंस्वल्पविग्राही
सुखवर्जिते आज्ञाकारीसुखंभृत्यनृपाद्धयसमन्वित दुष्टकर्मेणनपीड्यंतेपूर्वपापेचदुक्खिता अल्पवायुश्यतेलोकेसुकर्मेसुखसंभव बंधुवर्गापवा
दोचशत्रुवतप्यतेसदा अनुष्ठानमहादानं पापशांतिश्चजायते सर्वसौख्यगमोनित्य सुकीर्तिचापिभूतले नानासौख्यलभेजीव भजनानंदसर्वदा
पितृद्रव्यविनाशीचगुरुलोभापिदुर्द्रं धनवान्पुत्रवान्नरः परकार्यकरसदा सर्वकर्मप्रकर्ताच शीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीसुभाग्यश्चविप्रदेवार्चनेमति
सुमूर्तिस्वल्पभक्षीच ताम्रदोर्घसुलोचन प्रमोदोशीघ्रशूरश्चकामीनिर्बलजानुक शीर्षवृणसमायुक्तः कुनखीसेवकःप्रियः प्रथमेपञ्चमेवर्षेसप्तमेचाष्टमे
तथा ज्वरबाधाप्रपीड्यन्ते व्रणविस्फोटकादय मातृचिंताविशेषेण तातंचगुप्तक्लेशिता आपदुद्धारणमंत्र जापयेत्भक्तिसंयुत अन्नरसमहादानं
कृत्वासौख्यश्चमाप्नुयात नंदवर्षेगतेकाव्यनगचंद्रांतरोतथा पत्नीयोगनसंदेहोकामबाधाप्रपीडत मित्राणांचश्चलोबुद्धिकिंचिदुखभयंभवेत परस्त्री
प्रीतिसंपन्नोआशक्तंचापिविव्हलं यदाकामातुरोदीर्घविपाकेशोकसंभवः नागचंद्राद्धमारभ्यपंचविंशतिकेतथा जायागर्भसमुत्पन्नपुत्ररत्नाति
सुन्दरं मोदवृद्धिश्चज्ञातव्या सुपुण्यफलदंशुभं अयत्नेनैवभोवत्स मंदभाग्योपिजायते षष्ट्युग्मयदारभ्य रामरामाद्धमध्यमा द्रव्यलाभविशेषेण
मंगलंकव्ययोभव शरीरेकष्टसंपन्नमंत्रजाप्यश्चशांतये ॐऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणायरक्षांकुरु२ स्वाहा वेदवन्हिमितेकाव्यचत्वारिं
शाद्रूतया ताम्रकालागोपेत सुतापुत्रसुखावहं भाग्योदयभवेतस्य नूतनंलाभसंभव भूमिप्राप्तविशेषेण पददीर्घमुपस्थित अविद्याजायतेक्लेशं
विद्यावसौख्यदासदा कर्मभेदेनज्ञातव्यंफलंवैवशुभाशुभंगुप्तचिंताभवेन्नष्टपूर्वपापोपिशांतये पुण्योदयंफलयत्रसर्वक्लेशोपिशांतये दीर्घविघ्नोत्तमे
कार्यजायतेनात्रसंशय पापकर्मकृतेबाधापुण्यभ्रष्टश्चमानुष अपुण्येनसुखंक्वापिसर्वशोकसमागम एतस्मात्कारणावत्ससर्वदाधर्मसञ्चय चिरकाल
सुखंलब्ध्वामानकीर्तिश्चविस्त्रम् चंद्रचत्वारिवर्षाणि नंदवेदेद्धिपंचमे पत्नीकष्टविशेषेण महादानेनशांतये द्विकांतासगरेभोगे जायतेनात्रसंशयः

शरीरेरोगसंपन्नोऽजीर्णांनश्यतिक्षुधा अन्नदानंततकृत्वा शीघ्रसौख्यमाप्नुयात् रामपंचाद्धमारभ्य सून्यषष्ठांतरोतथा मासेवर्षेसुखंज्ञा‥वादीर्घ
कार्योसुलाभदं नेत्रकन्यात्रिपुत्रश्चसंस्थिचापिभूतले ग्रामप्राप्तिमहामोदंकोषवृद्धिश्चद्रष्टयः विवाहादिमहोत्साहो व्यदीर्घोपिजायते आज्ञाकारी
सुतभृत्यमहामोदंसमायुत सर्वावस्थासुखीलोकेसुयत्नेनतदाकवे सुतापुत्रतथापौत्रकुलवृद्धिश्चजायते आयुवान्संततिपश्च अन्येचस्वल्पजीवनं
रामषष्ठगतेवर्षेस्वासरोगेनपीड़ितं छायादानंततकृत्वा ओषधिभक्षणांशुभं हरीतिकोतथाम्लंच पिप्पलंचित्रकंतथा सैंधवपंचचूर्णांचऊष्णातोये
नित्यश षष्टमासाद्धयासंध्यासेवनंसौख्यसंभव ब्रहद्भागीभवेलोकेसुयत्नेननरःसदा पत्नीकष्टभवेद्दीर्घओषधीफलवर्जित कालेयमृयतेसापितत्वांने
चमहोत्सवं षष्टोषष्टाद्धमारभ्यरेचनंरोगसंभव कृशांगोनिर्बलंचापिजीवआशाविनिर्मुख पुत्रपौत्रसुखंसर्वंदासदासीश्चवाहनं दीर्घदानप्रदातव्य
रामनामजपेन्मुख तीर्थयात्रामहापुण्यपूर्वकृत्वासुयत्नत अंतकालसमायुक्तस्वल्पकष्टंत्यजेतनं सुकीर्तिवर्ततेलोकेयत्रकुत्रप्रशंसित अथाग्रेसुकुले
जन्मनात्रकार्यविचार्णं तस्मासर्वप्रयत्नेनपूर्वपापश्चशांतयेशुक्रोवाच पूर्वपापकथंतातपुण्यदानश्चकोविधि तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिप्रसादंकर्तु महसि

भाषा ॥ हे शुक्र जिसकी जन्मकुण्डली में यह ग्रह पड़े हैं वह बड़ा भाग वाला हो दासदासी और सवारियों के सुख पावे धनपुत्र संयुक्त हो अति सुन्दर स्त्री भोगे और सब सुख पावे क्यों कि इसका पूर्व जनम का पुण्य बहुत है परन्तु एक महाभारी पाप ऐसा बन गया है उसके संयोग से महामारी विपत्ति आवे बुद्धि बिगड़जाय धन का नाश हो और अन्त में सब सुखों से भ्रष्ट होजाय ये जीव पहले राजवंश में उत्पन्न हुआ था बहुतसा पुण्यदान किया परन्तु एक समय बहुत सी मदरा का पान कर उन्मत्त हो बनको गया वहां एक ब्रह्मऋषि ईश्वर के ध्यान में मग्न हुए बैठे तप कररहे थे ये जीव अति अभिमान वश हो मदसे अचेत हुवा उन ऋषि को अनेक प्रकार पीड़ित करने लगा वह ऋषि अतिशयसंतापित होने के कारण क्रोध कर यह शाप देते भये अरे अधमतैंने धन और मदमें उन्मत हो अतिक्लेश दिया और हमारे ध्यान को बिगाड़ा तिससे अगले जनम में तू बुद्धि रहित हो शीघ्र ही अपने सम्पूर्ण धनादि का नाश करे क्लेश का अधिकारी हो हे शुक्र तिसी शापसे इसके धनादिसुख का नाश हो इसकी शांतिका यह उपाय कि तीस माले स्वर्णकी लक्ष्मीनारायण की मूर्ति बनवाय चांदी के पात्र में स्थापित कर वेदकी विधिसे सबप्रकार उसका पूजनकर मेरे शास्त्रके जानने वाले वेदपाठी ब्राह्मण को दान करके दे और सवालक्ष गायत्री जपवाय ब्राह्मणको सब प्रकार संतुष्ट करे तो सब सुख पावे और जो मन इच्छा है निश्चय करके पूर्ण हो

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेजन्मदीर्घभागीचबालक जन्मोत्सवमहासौख्यं मोदवृद्धिर्दिनेदिने तातमातमहासौख्यं मंगलंग्रहमागते प्रथमे द्वितियेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं विरेचनंतदाजातं छायादानञ्चकारयेत् सप्तग्रन्नतुलादानं शीघ्रशांतिश्चजायते रामवर्षसमारभ्य वेदपञ्चमसप्तमे आनन्दंवद्ध तेनित्यंबालक्रीड़ायथाक्रमं विद्यारंभविजानीयातमंगलाचारकंशुभं वृणरोगसमुत्पन्नोपीडनंखरवाहिनी गुडगोधूम्रदातव्यघृतञ्च लवणंतथा आपदुद्धारणोजाप्यशीघ्रसौख्योह्यमाप्नुयात बालक्रीड़ामतिदीर्घतातमोदसमायुतं अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशद्वाविधिक्रमात् सर्वसौख्या गमोनित्यंविद्याबुद्धिश्चमध्यमा विवाहादिमहोत्साहोतातकीर्तिविशेषत सुप्रसिद्धसुखीलोकेसफलंमन्यजीवनं बालप्रीतिविशेषेणआशक्तमनः क्वचित् भयभीतीहृदेगुप्तंचिंतयंतिकदाकदा त्रयोदशाष्टकंचंद्रनेत्रनेत्राद्धकंतथा सर्वसौख्यान्वितोभूयात्नारीभोगञ्चस्वेछया चंद्रजीवपरंप्रीती आशक्तञ्चविशेषता कामवेगेनपीड्यन्ते गुप्तरोगंचक्लेशता गुरुदेवातीर्थनाञ्चमानभक्तिविवर्जितं पापक्रूरग्रहापूज्यं भाग्यवृद्धिविशेषत मयावा क्यश्रुतोवत्सश्रेष्टकर्माणिसञ्चयं दुष्टकर्मपरित्यज्यसदैवोदुखदाभवः दुष्टसंगप्रभावेणसर्वदापापमाश्रय पापादुःखलभेद्दीर्घनात्रकार्यविचारणम् चञ्चलंहिमनंवत्सविषवान्वर्ततेसदा आनंदज्ञानरहितं अविद्यापापमाश्रय अविद्यावाद्धतंदुक्ख विद्याचसौख्यदासदा सुखमिच्छतियपुन्सशुभ कर्मरतोभव श्रेष्ठसंगप्रभावेणविद्याबुद्धिश्चवर्द्धितम् कष्टव्याधी विनाशार्थंदानपुरायरतःसदा पूर्वपापप्रभावेण पुत्रसौख्यविनिर्मुख रामद्वयाद्य मारभ्यत्रिंशवर्षान्तरोकवे क्रमणप्राप्यतेसर्वं द्रव्यंचसुखसंपदा वाहनादिसुखंज्ञात्वा गुप्तचिंताविशेषत सिंधुतुल्यतिरंगोपि नशांतिप्राप्यतेमन पत्नीगर्भभविश्यंतिअयत्नेचापिनिस्फल लाभकृत्यकतेलोके मनेच्छाफलमन्दता अर्द्धप्राप्तीचदृश्यंते गुप्तक्लेशविशेषता वंशवृद्धितथाद्रव्यंपूर्वं पापञ्चक्लेशिता भवितव्यंनतिष्ठति मन्दभाग्यञ्चकारणम् सर्वसौख्यलभेन्नित्यंप्रायश्चितेनभोकवे पूर्वपापविनष्यंतिसर्वसौख्यान्वितोभवेत् निज कृत्यधनंलब्ध्वामानकीर्तिप्रतिष्टत व्योमवेदाविधिवत्सचित्तआशाप्रपूजिता मित्रप्राप्तिविशेषेण गुप्तध्यानञ्चचिन्तनं चन्द्रअल्पमहाकष्टमवैद्यो पायंचनिस्फल अचानकंउपद्रोयंचित्तखिन्नचक्लेशिता स्वर्णधेनुमहादानमृजलेधेनुचकारयेत् गायत्रीवीर्यमंत्रेणसंपुटंजापयेद्विज हवनंब्राह्मणां

मृ०स०

फलित

४६७

भोज्यंततःसौख्योह्यमाप्नुयात् मासेववर्षेसुखंज तंत्रअल्पायुयोगनाशनम् चित्तचिंताभवेन्नष्टनूतनंजन्मअन्यते पुनःसौख्यंलभेद्दीर्घकार्यवृद्धिविशेषतः सुतापुत्रसुखंलाभंउच्चोपदमुपस्थित सूर्यवत्सप्रकाशंचबहुद्रव्यसमागम भूमिप्राप्तिनसन्देहोवाहनंश्रेष्टकिंकर व्योमपंचमितेवर्षे बहुद्रव्याणिचेष्टितम् दासदासी समायुक्तलभ्यतेचासरोकुञ्ज व्ययदीर्घमुपस्थित्य विवाहादिमहोत्सवम् सुप्रसिद्धसुखीलोके मानकीर्तिविशेषत सुयत्नेन सुखंनूनंजायतेभूमिमंडले धर्ममार्गव्ययोजातंआरामेकूपमन्दिरे भ्रातृहीनसविज्ञेयो रिपुवतप्यतेसदा वाहनादिसुखंसर्वे प्राप्यतेनात्रसंशयः किंचिच्छोकसमायुक्त भ्रम्यतेपृथ्वीतले सत्यषष्टाब्दमध्योपि पौत्रजन्मश्चमोदिता तीर्थयात्राजपेपुराय नूतनंसौख्यसंभव ग्रामप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रसुन्दरः आरामेरम्यतेचित्त तडागेपुष्पवाटिका ईशभक्तिविशेषेण श्रद्धाशक्तश्चन्यूनता निधनंजायतेपत्नी दानपुरायविशेषतः चित्तचिन्ताविनश्यतिभजनानन्दसर्वदा कफवातोद्भवोपीड़ापुरायदानविशेषता देव्यायापूजनारम्भजाप्यमृत्युञ्जयादिकम् जायतेनात्रसन्देहोहोमयज्ञादिकंपुनः अष्टषष्टमितेवर्षेयुग्मसप्तमितेतथा सर्वसुखंचभोक्तव्यंआयुपूर्णांनसंशय ॥ भाषा ॥ भृगुजी कहते हैं हे पुत्र इस योगमें उत्पन्न होने वाला जीव भाग्यवान हो पृथ्वी पर सब प्रकार से सुख पावे परन्तु पहले जन्म के पाप के कारण अति चिन्तायुक्त रहे सोचे कुछ होवे कुछ काम होता होता रुकजाय खर्च अधिक करे लाभ होता होता रह जाय पुत्र के सुखमें विघ्न हो और कभी कभी विशेष क्लेश और कष्ट पावे यह जन पूर्व जन्म में अति धनवान् परम प्रसिद्ध सेठ था सो एक साधू इसे परम धन पात्र समझ कर कुछ द्रव्य धरोहर की भांति इसके पास जमा करके तीर्थ यात्रा करने चला गया यात्रा करते करटे उसे बहुत समय बीता तब कई वर्ष के पीछे वह साधु अपना द्रव्य लेने आया तब इसने लोभ वश हो उस साधू का द्रव्य नहीं दिया तब वह क्रोधवश हो बोला अरे दुष्ट हम साधुओं का द्रव्य रखकर किसी प्रकार तेरा कल्याण न होगा तू वंश रहित हो तीन जन्म तक क्लेश पावेगा तेरा सम्पूर्ण धन कुमार्ग में नष्ट होगा और तेरे चित्त को कभी शांति न होगी हे शुक्र ऐसे उस साधू के श्राप से पाप का भागी हुआ इसका यह उपाय है कि पांच तोले स्वर्ण की गौरीशंकर की प्रतिमा बनाय शास्त्र को विधि से ब्राह्मण को दान कर साधू ब्राह्मणों को भोजन कराय मोदक के लड्डू में श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण गुप्त रख कर दक्षिणा में दे दंडवत कर प्रेमसे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो सब कामना सिद्ध हों परम आनन्द पावे और शाप नष्ट हो जावे ॥

श्रीगणेशायनमः अस्ययोगफलंशास्त्रेभाष्यतेमुनिसत्तम कफवान्वितोज्ञेयंमित्रबृन्दसमाकुलः सदानंदविनीतश्चदारापुत्रसमन्वित सुशीलश्च
श्चलोकांतिसुमुखवाग्विचक्षणः वादेद्युतेमतिर्लोलकृपणाश्चऋणीभवेत् साहसीसत्यवादीच रिपुणांकष्टदायक अतिलोभीस्वयश्चारी कुमतिबहू
सन्तति राजद्वारेतिमान्यश्चमातुलंतप्यतेसदा सर्वसंपतसमायुक्तः अंगनाप्रीतिकारक नतृप्तियांतिवामांगीस्वल्पकालेचसंगमे धनबंधुविहीन
श्चलोकेहास्यप्रजायते अतिकष्टधनागम्यनचिरंतिष्टतिगृहे सत्कृतोपिसुखंरोगंस्ववाक्यपरिपालकः भूरिदाररतोपुन्सः कामाधिक्यसुवेशवान्
मनश्चिंतातुरोयातोलोकेनिंदामवाप्नुयात् लोभावस्वामिसंयुक्तोअथवातत्रवक्षित तस्यवृद्धिविजानीयात्भृगुवाक्यनसंशय शरीररेक्षणार्थाय
भौमस्यपूजनंकृत जलोद्भवधनाधिंच उपकारीविचक्षण वित्तनाशकरोयोगं पूर्वपापेनपीडता वन्हिवीरीभयंप्राप्य उच्चस्थेचपपातिता शुभग्रहा
प्रभावेणनानाभोगसमायुत अस्ययोगविचारेणकदादीर्घधनागम पितुप्रीतिविहीनश्चस्वल्पसौख्यश्चजायते शुभकातिसमायुक्तोनिजधर्मपरा
यणः भार्यासंरक्षणार्थायसप्तमेशोप्रपूजयेत् तेनसौख्यलभेन्नूनंसुपत्निमोदतेअह अल्पेकोप्राप्यतेदीर्घअकस्माद्भयमागत चौरद्वाकोटव्यालाद्वा
मृत्युशंकामुपस्थित विंशाब्देपञ्चविंशेचत्रिंशवाणात्रियंतथा चत्वारिंशेपञ्चवेदेद्विवाणेभाग्यवृद्धय सुयत्नेनतदावत्सप्राप्यतेभूधनंसुखम् भाग्यो
दयभवच्चास्यवाणिज्यत्प्रचुरंधनं वातव्याधिदसंयुक्तःदक्षिणांगेचपीडनम् लाभेशोचधनंशोपिपूजयत्नंविधानत सर्वसौख्यलभेन्नित्यंधनरत्नानि
वेष्टित मातृरोगसमायुक्तंशोचवृद्धिदिनेदिने त्रियेब्देचन्द्रवेदेचअष्टाद्वोपितुकष्टजम् केलिक्रीडाप्रयत्नेनभविष्यन्तिनसंशय बन्धुवर्गप्रपाल्यन्ते
कलिवस्तुधनव्ययः धर्ममार्गेव्ययोदीर्घबहूमंगलसंभव कन्यापुत्रविवाहेचतथाबन्धुप्रभोजने धनपुत्रसमायुक्तपरकार्यरतःसदा सर्वकर्मप्रकर्ता
चशीलवान्नृपवल्लभ गुणग्राहीकृतज्ञीचदेवप्रार्चनेमतिः सुमूर्तिस्वल्पभक्षीचताम्रदीर्घसुलोचन प्रमादीशीघ्रशूरश्चकामाधिक्यसुवेशवान द्विपत्नी
भागसंयुक्तआशक्तश्चापिविव्हलं दीर्घकार्यास्थितोचित्तनूतनंकार्यसिद्धति आदौछायाप्रपीडयन्तेद्वयेदन्तविरेचनं ज्वरपीडाभवेद्दीर्घछायादाने
चशांतयेरामाब्देपञ्चवर्षाणिव्रणपीडाचदारुणम् गुडगोधूम्रदातव्याछायादानश्चकारयेत् आरोग्यंनात्रसंदेहो बालक्रीडासुतत्परः षष्टेचसप्तमेवर्षे

भृ०स०
फलित
४६६

प्रम।

ज्वरपीड़ाप्रजायते विद्यारंभनसंदेहो अंकमात्रञ्चपठ्यति अष्टमेनवमेवर्षे पितुरारिष्टमतिर्भवेत् कष्टोजायतेप्राणं मृत्युवाकष्टमृत्युवत् सम्बन्ध योगसंभूय ग्रहमंगलगानकम् प्राप्तेचकादशेवर्षे राजविद्यासुपठ्यते प्राप्यतेतुद्वादशेवर्षेजलभीतिर्नसंशय वन्हिचन्द्राब्दसम्प्राप्यशरीरोव्याधि पीडतम् औषधीसेवनंकृत्वाशीघ्रश्रयोभविश्यति शोडशब्देचतुचंद्रात्पत्नीयोगञ्चमोदिता सर्वमंगलकार्यंचभविष्यतिनसंशयः बहुविद्यानप्राप्यंते कार्यं मात्रोपिसिद्धति विशूचिकारुजंपीड्य शीघ्रशांतिश्चजायते प्राप्तेसप्तदशेवर्षे विंशवर्षावधितथा निजकृत्यभवेल्लोके कांतायुक्तप्रफुल्लितः विंशचैकमितेवर्षे तथाद्वविंशवर्षयो भाग्योदयविजानीयात्पापकर्मणादुःखिता पंचविंशमितेवर्षे सुतापुत्रसुनिश्चितम् धनवृद्धिश्च वंयातोव्ययो पिनात्रसंशयः षडविंशमितेवर्षे सप्तविंशप्रजायते रात्रौस्वल्पदृगंयोगं भृगुणापरिभाषितः अष्टविंशमितेवर्षे पुनर्संततिजायतेद्वात्रिंशमिताब्दे चशस्त्रेणघातप्राप्यति विदेशेगमनंप्रीतिः कृशांगीशीघ्रगामिनः नन्दचत्वारिवर्षाणिशरीरंबातपीडतं पापशांतिकृतेपूर्वसौख्यलाभोभवेत्ततः नागसप्तवधिकाव्य आयुपूर्णभविश्यति निजकृत्यप्राप्य सर्वतोपिवसुन्धरा ।। भाषा ।। इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बड़े बलवान और लाभकारी वंश की वृद्धि करने वाले हैं परन्तु यह बलवान ग्रह अधिक दान करने से पूर्व फल दायक होते हैं विशेष कर जीवों को अन्न का दान दे चींटी नाल जिमावे पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करता रहे सुत स्थान के स्वामी का पूजा दान मन्त्र करावे तो विशेष सुख भोगे जिसमें मन रहता है सो प्राप्त हो अपनी इच्छानुकूल जीव का संयोग हो और ये जीव बड़े बड़े खर्च के काम करे सब पूर्ण हो जांय धन बहुत प्राप्त करे परन्तु खर्च हो जाय गुप्त चिंता फिक्र बहुत रहा करे परन्तु कभी कोई भारी काम अटका न रहे प्रमेह रोग की उत्पत्ति से कभी वीर्य शीघ्र खन्डित हो आयु में कई बार कष्ट पीड़ा अल्प आवे परन्तु यत्न करने से आयु पूर्ण होय मित्र व भाई बंधुओं से मध्यम प्रीति हो विशेष कपटी न हो चित्त शुद्ध हो काम की उन्मत्तता में गुप्त न्यून काम बन आवे ग्रह की प्रबलता से चित्त स्थिर न रहे बड़े २ भोग भोगे पूर्व जन्म में ये जीव चित्रगुप्त वंश में उत्पन्न हुवा था राज मन्त्री था सत्य से न्याय करता रहा परन्तु एक समय अति द्रव्य के कारण लोभवश हो महा अधर्म और अति अन्याय किया तिस कारण उस जनम में प्रधान पद से पतित हो इस जनम में पाप का भागी हुवा सो दीन ब्राह्मणों को भोजन आदि से तृप्त करे दक्षिणा दे विशेष अन्नदान दे तो शुद्ध हो सुख हो ।।

मृ०स०
फलित
५०१

श्रीगणेशायनमः एतत्सर्वग्रहाप्रोक्ताग्रग्रे फलयथाविधिः दुखसौख्यसमायुक्तोकांतापुत्रयुतपुमान् नीतवादीसुकर्मीचधनसंयुक्तकौशलः क्षीण
देहोकफादिक्यशीलकीर्तिसमायुत दीर्घसौख्यकदाकालेतेजस्वीचप्रतिष्ठत कदामध्यदशान्यून चिंतयंतिदिवानिशि कार्यहानिश्चज्ञातव्यापुन
सौख्यह्यमाप्नुयात् राजद्वारेसमान्यश्च सकुटुम्बदयान्वित पित्तोधिकप्रकोपीचशूरवीरपराक्रम सत्यासत्यविनीतश्च सर्वसंपतिसंयुत चतुरोस्वल्प
भक्षीचहेमरत्नानिभूषित रिपुरोगक्षयंसर्वेमातुलतप्यतेसदा मातुलंक्लेशदायीचग्रंगनाप्रीतिकारक कदाबंधुविरोधश्चमित्रोपिशत्रुवच्चरेत् व्यव्हारे
क्रोधसंयुक्त पतीनांचप्रबोधयेत् गजाश्वरथमारूढं परार्थे मोदतेभुवि कवित्वमतिसज्ञात मिष्टभोज्यमतिप्रियः कुटुम्बमध्यप्रीतिश्च धनपूर्णतृषा
न्वितः दीर्घदेहविषदृष्टिं दृष्टवेवरिपुनाशक धनमानतथावस्था चिरकालेननिश्चल रोगोपाधिविनष्यंति नानासौख्यसमागमः सेवितंविकरे
धूर्तेनीचानामार्थमाप्नुयात् लज्जाकांतात्मजंत्यागी साहसीनिष्टुरश्चयः शिल्पज्ञातासुलेखीचदारुणोकौतुकीनर कुशलंसर्वकार्येषुसाभिमानीकुबु
द्धयः कीर्तिमानचिंतयायुक्तप्रचंडोबहुभाषिण विपाकोलाभदाज्ञेया तेजस्वीदीर्घमायुषः शरीररक्षणार्थायराहूपूजा चकारयेत् घृतंपूर्णघटंदानं
खंडवाचलवणंतथा महामृत्युञ्जयंजाप सर्वरोगनिवारणं कुवेरोमंत्रजाप्यश्चधनार्थेमंत्रपूजनम् भूरिवित्तयशंप्राप्य कविविप्रप्रपूजनात् सुगन्धि
युक्तवस्त्रंचपुष्पमाल्येप्रियसदाः कष्टेनप्राप्यतेद्रव्यनृत्यगीतादिकंकरेत दानमंत्रप्रतेसंतधनपुत्रसुखान्वितः कांतासौख्योपिमध्यश्चद्वयोनारिश्च
मोदिता सप्तचन्द्रे चविंशाद्वे वेदनेत्राष्टविंशके युग्मवह्निषटत्रिंश चन्द्रचत्वारिकंतथा वेदवेदाष्टवेदेच नेत्रपञ्चादिकंक्रमात एषवर्षेषुसंप्राप्तभाग्य
वृद्धिश्चभूतले कुवेरोसिंधुजापूज्यंधनार्थंलभ्यतेधन प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरव्याधीविशूचिका तृतीयेद्वे वन्हिभीति चतुर्थेपितुलाभदः पंचमेषष्टमे
वर्षेव्रणरोगप्रजायते सप्तमेज्वरपीड़ाच अंक्षविद्याचपाठति अष्टमेब्देमातृपीड़ा औषधीप्रतिशांतये शिशुणाप्रीतिसंपन्नो बालक्रीड़ायथाक्रमम्
नवमकादशेद्वे षुमंगलंग्रहमण्डले नवभूषणवस्त्रश्चवर्द्धयंतिदिनेदिने प्राप्तेतुद्वादशेवर्षे जलभीतिनसंशय रामइन्दुमितेवर्षे ज्वरव्याधिश्चजायते
चतुर्दशाब्देसंप्राप्यबाणमेकंतथैवच गुप्तचिंताहृदेजातोकामाशक्तोपिकांतया षोडषेवर्षसंप्राप्तेउरुरोगसमुद्भव सप्तविंशमितेद्वे चविशूचिरोगसंभवम्

पुरायदानेनशांतिस्या त्तथाग्रौषधिसेवनं कांतासंयोगसंजातो ग्रानंदेनसमन्वितः ग्रष्टादशमितेवर्षे विंशवर्षेतथैवच मोदतेकांतया
युक्तकामाशक्तश्चक्रीडनम् शशिविंशमितेवर्षेवाणविंशतिकेतथा सन्ततियोगजायंतेमंगलंचमहोत्सवम् द्रव्यलाभनसन्देहो सफलंजन्मभूयसे
नेत्ररोगप्रपीडयन्तेनिशायांस्वल्पदृष्टय सुयत्नेशांतयेनित्यंग्रयत्नेक्लेशदारुणो षष्टाविंशसमारभ्यसून्यरामतथाद्धके ग्रानन्दमंगलाचार किंचि
त्कष्टशरीरजम् ग्रौषधीदानमन्त्रेणसर्वव्याधीविनाशनं शशित्रिंशागमेवर्षेवाणरामाद्धकेतथा सुतापुत्रसमायुक्तामोदतेधरणीतले कदाचित्स
मयेकाव्यशस्त्रेणघातप्राप्यते विदेशेगमनचैवसुयात्राभयदायकः षष्ठत्रिंशाद्धसंजातसून्यचत्वारिमध्यगे द्रव्यलाभविजानीयास्थानश्चवर्द्धते
पूर्वयात्राभवेत्पश्चात्धर्ममार्गेधनव्ययः मन्त्रयन्त्रविजानीयान्निजकृत्यात्महत्सुखम् पापाशांतपुरायेननानासौख्यमंगलम चन्द्रचत्वारिवर्षाणि
सून्यपञ्चाद्धकेतथा किंचित्कष्टशरीरेणबातपीड़ाप्रजायते धनपुत्रमहत्सौख्यंग्रानन्दभूमिमंडले उपायदानमन्त्रेणदीर्घसौख्यनिरन्तरं पञ्चबाण
गतेवर्षेसून्यसप्ताद्धप्राप्तये मासेवर्षेमहोत्साहोविवाहादिधनव्यय धनसंतानयानञ्चसर्वग्राशाप्रपूजिता नभचाष्टमितेवर्षेसर्वकार्यविनिश्चितं सर्व
लक्षणसंपन्नबातपीड़ाविशेषतः खनववर्षमायुश्चविदेशेनिधनंभवे भाषा ॥ इस ग्रङ्क की कुण्डली का फल ग्रच्छा है परन्तु ऐसे ग्रह पड़े
हैं कि कभी तो अधिक द्रव्य प्रतिष्ठा उच्चपद इत्यादि प्राप्त होने से परम ग्रानन्द पावे बड़े २ लाभ उठावे ग्रौर किसी समय सब कार्य हीन हो
बिगड़ता दीखे चिंता क्लेश ग्रत्यन्त हो बड़ी ग्रापत्ति ग्रावे काम काबू से बाहर हो जाय लाभ की विशेष चिंता हो परन्तु शूर प्रतापी हिम्मत वाला
पुरुषार्थी हो लाभ के ग्रनेक कार्य करे परन्तु नाकिस दशा में पाप के प्रभाव से मनोर्थ निष्फल हो जाय सुदशा में पुण्य उदय होने पर मित्रों से
प्रीति बढ़े बिना परिश्रम से धन मिले नवीन मन्द्र की प्राप्ति भूमि लाभ ग्रौर शुभ कृत्य में धन खर्च करे संहितानुसार श्रीलक्ष्मी व कुबेर जी की
उपासना करने से मनोवांछित फल पावे शोक रहित हो सुख भोगे हे शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में बड़ा भाग्य वाला ग्रामाधीश गजपति राजा की
तुल्य ऐश्वर्य वाला था ईश्वर का भजन कर दान पुण्य में तत्पर रहता था परन्तु कामवश होकर फिर वैश्या गामी हो गया ग्रौर जप दानादिक क्रिया
सब लोप कर दी ग्रौर दीन साधु ब्राह्मणों का निरादर किया कुछ काल में पुनः मन संगति से ज्ञान उदय हुग्रा तब संपूर्ण दुष्ट करमों को त्याग सुमार्ग में
प्रवर्त हुग्रा तिसी कारण पूर्व कर्मानुसार इस जनम में दुख सुख का भागी हो विशेष कर पुण्य मार्ग में लगा रहने से पाप का फल कम भोगे सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहा वेदंफलभोक्तामयाऽनघ त्रिग्रहद्वफलदंश्रेष्टमनानालाभसमागम भूमिमंद्रव्यप्राप्नोतिकीर्तिवृद्धिधरातले क्रूरपाप
ग्रहापूज्यंदानंचैवप्रयत्नतः पूज्यश्चश्रद्धायायुक्तोसर्वंश्रेयोह्यमाप्नुयात जीवचिंताविनीमुक्तोविशेषोलाभवर्द्धनम्अयत्नेनैवभोकाव्यबुद्धिनसुस्थि
रंभव उद्योगकुरुतेदीर्घंलाभचिंतावलीयसी प्रमेहोपीडनंगुप्तमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रीतिकृत्वाकृतेघातम् सर्वदाहानिचिंतनम् सत्यवक्तासुजीवोयं
असत्यवचनंत्यजेत सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेउद्यमेपोषतेकुलं परोपकारकर्ताचबुद्धिवंतोसुलक्षणा ईशभक्तिसुसंचिंत्यसुस्थिरंनविसर्जने कामीकुतुह
लीचैव कुटुम्बेप्रीतिवत्सलः पूर्वमायुसुखीचैव मध्यमेसुखमध्यमम् अंत्येःदुखप्रभोक्ताच कांताद्यौगुरुवत्सल सुयत्नंसर्वथासौख्यंनात्रकार्यविचा
रणाम् कामवेगेनचोन्मत्तो चित्तचैवोपिविभ्रम बुद्धिमन्तोयशीसौख्ये नकश्चिन्निंदतोमति जीवध्यामंचसंमरन यौवनरूपचितन श्रेष्टकर्मप्रसि
चापिपरकार्यंचसाधक अन्नदानंचजीवना आनन्दंदीर्घसंभव अल्पायुनश्यतेचापी कष्टपीड़ाविनाशनम् भाग्ययोगंचमध्योपि धर्मकर्मप्रसि
द्धतं देवाताद्विजभक्तश्च अतिथीपूजनंरतः नेत्रद्वयनागयुग्मवेदरामग्रहात्रियम् पंचवेदद्वयोपंच नगवाणाद्विषष्टके एषुवर्षेसुसजातं भाग्योदय
विशेषत आदौद्वयोत्रिवर्षेच दन्तपीड्यज्वरादिकं व्रणरोगसमायुक्त शरीरेभयदारुणाम् औषधीसेवनंचापि दानमंत्रादिशांतये पंचमेचाष्टमेवर्षे
उच्चस्थेचपपातितां बालक्रीड़ासुखंचापि विद्यारंभोपिमंगलम् नन्दाद्वद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते तातभग्नीसुखंलोके व्ययोद्रव्यनसंशय
विवाहंचमहोत्साहो मंगलंग्रहमागमः नवनारिसमायात नृत्यगीतादिवादितम् शरीरेकष्टसंपन्न तातचिंतादारुम् अनुष्ठानमहादानं
महामृत्युञ्जयोतदा आपत्तौचविनश्यंति नूतनंसौख्यंनित्यजम् वन्हिचन्द्रगतेवर्षे षोडषाद्वचमध्यमा निजकृत्यगुणीप्राज्ञ मोदतेकांतयायुतम्
द्रव्यलाभग्रहंचापिकामशक्तश्चपीड़िता मोदतेभूमिभागोपिगुप्तचिंतावलीयसी जीवशक्तंमनोजातंनिशानिद्राविसर्जनम् कामक्रीड़ारतोचापि
नूतनयौवनंप्रिय गुप्तकष्टनपीड्यन्ते पुनरंतेमहोत्सवम् सुयात्राप्राप्यतेमोदं लाभवृद्धिश्चनूतनम् विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयंतिदिनेदिने नगचंद्र
गतेकाव्य त्रिंशवर्षेक्रमंतथा नूतनकृत्यामारभ्य द्रव्यप्राप्तिश्चनूतना पत्नीगर्भसमायुक्ता मोदतेचसुतोद्भव तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं

पूर्वपापकृतेवाधा शांतनीयंप्रयत्नतः प्रायश्चितकृतेनूनं धनपुत्रंचतोषिता शशियुग्मगतेकाव्य पञ्चनेत्रोपिमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तो मोदतेच
सुयत्नत दीर्घकार्याणिसंचित्यं भाग्यवृद्धिश्चजायते क्षत्रचिंताव्ययोदीर्घ मानकीर्तिविवर्द्धनं आनंदंकौशलेचापि दीर्घदानमहत्फलं त्रिंशवर्षा
वधिवत्सगुप्तरोगेनपीड़ितं आलस्यजायतेदीर्घअजीर्णनष्यतिक्षुधा लवणञ्चहरितिक्यां सेव्यतोनश्यतेरुजं आपदुद्धारणोजाप्य सर्वविघ्नोपि
शांतये शशिवह्निमितेवर्षेपञ्चत्रिंशवधिंतत द्रव्यलाभविशेषेणव्ययोपितत्रनिश्चितं विवाहोमंगलंकार्यंस्वगृहसुप्रतिष्टित शत्रुपक्षविवादंचकार्य
भंगोपिचिंतनं पूर्वपुण्येनभोवत्ससर्वकार्याणिसिद्धति चित्तोद्यानंदतापिश्चबहुलाभप्रभावत षष्टरामाद्धमारभ्यव्योमचत्वारिकंतथा निजकृत्य
महल्लाभंगुप्तचिंताविनष्यति कार्याणिसकलाण्येवंलघुद्रव्येणसिद्धति वाहनादिसुखंलोकेप्रियाचापिमोदिता द्विकन्यारामपुत्रञ्चसर्वसौख्यांवितो
भवेत् कार्यवृद्धिसुयत्नेनप्राप्यतेचमहद्धनं भूमिलाभनसंदेहोरचनामंद्रनूतनं चन्द्रचत्वारिवर्षाणिपञ्चचत्वारिकंतथा तावत्कालगतेवत्ससर्वसौख्य
समायुत नानामंगलसंप्राप्यचित्तं आशाप्रपूजिता व्ययोपञ्चावधिवत्सजायासौख्यविनष्यंति हरिनामसुखंजाप्यईशभक्तिचचिंतनं अतःपरंसुखं
सर्वेपूर्वयत्नेननिश्चतं षष्टोषष्टमितेवर्षेआयुपूर्णोपिजायते इहलोकेपरित्यज्य जातोपिपरिभ्रमंगति कर्मभेदेनभोप्राप्तसुखदुखसमाश्रय ॥ भाषा ॥
इस कुण्डली में तीन ग्रह उत्तम फलदायक हैं बड़े २ कार्य करे भूमि का लाभ हो कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े क्रूर और पाप ग्रहों के पूजन दान जाप
कराने से भाग्योदय हो जीव की चिंता मिटे परन्तु इस जीव की बुद्धि स्थिर न रहे एकनाएक लाभ का उद्योग सोचता रहे कभी २ प्रमेह पीड़ा
हो किसी समय कोई जीव मिलके दगा दे शत्रु धन हरने और नुकसान पहुँचाने के फिकर में रहे ये जीव सत्यवादी हो असत्य बात पर क्रोध
आ जावे सत्य बोले नेकनामी पावे श्रेष्ट उद्योग से कुटम्ब का पालन करे पराया काम मन से करे ईश्वर की भक्ति में मन लगावे परन्तु स्थिर न
रहे हट जाया करे काम की उन्मत्तता में मगन हो, चींटी नाल जिमावे तथा जीव पक्षियों को अन्न जल से तृप्त करने से विशेष सुख मिले हे शुक्र
ये जीव पूर्व जनम में बड़ा धनी था दधि दूध बेचने का कृत्य कर खूब प्राप्ति करता था परन्तु कपट चतुराई से दूध में पानी मिलाकर बेचता
तिसी कारण पाप का भागी हुआ सो ब्राह्मणों को खीरखांड के दूध आदि के भोजन से तृप्त करे तो पाप शांति होय धन सन्तान की वृद्धि हो ॥

मृ० स०
फलित
५०७

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंयुवाश्रेष्टफलप्रदा दीर्घकृत्याधिकारीचप्राप्यतेधननिश्चितं गृहान्यूनफलंकृ रादानमंत्रजपादिकं कृत्वासद्य
सुखंप्राप्य धनपुत्रविवर्द्धितं कदापिसमयेवत्स स्वकुटंबोविरोधता व्ययोद्रव्यसुखंजातं शत्रुहानिश्चजायते स्वल्पश्रमंकदाकाले विशषोलाभ
जायते मध्यविद्यान्वितोपुंस बुद्धिवंतोविशेषतः चातुर्थविशेषेण सुजनीमानवर्द्धनं सुकीर्तिर्ख्यातलोकेस्मिन ईशस्यचिंतनंकृत नध्यात्वा
चिंतनंकुर्वा वार्ताचैवनिरर्थकं दीयतेसुमतिसर्वे दुष्टकर्मेणविसर्जिता सुमित्रोभाषणोप्रीति चित्तोद्दारनसंशयः हीनवार्तानकर्तव्या गुप्तचिंता
हृदिस्थतं सुकीर्तिचिंतयेनित्यंअकीर्तिचभयावह मानकीर्तिसमायुक्तोभूमिभागेचमोदिता व्ययोदीर्घसमायातसर्वकार्यंचसिद्धति कष्टव्याधि
विशेषेणभयदीर्घमुपस्थित प्राणभीतोमहाचिंताजायतेचउपद्रवं श्रेष्ठग्रहाप्रभावेण सर्वविघ्नोपिशांतये दानमंत्रमहापुरयं सर्वाभिष्टफलप्रदान
नगनेत्रद्वयोवह्निपञ्चत्रिंशचतुचतु एषुवर्षेसुखंप्राप्यभाग्यवृद्धिश्चभूयसे राजद्वारेपिमान्यञ्चसकुटंबदयान्वित सुखदुखसमायुक्तोकांतापुत्रयुतः
पुमान आज्ञाकारीसुतभृत्यसुमुखोवागविचक्षण स्वेतमालाम्बरधरःप्रतापीचमहायशसुस्वरूपंप्रियोचापिलुभ्यतेललनाजनैः उद्यमेनधनंप्राप्य
धनार्थोचिंतयंसदा सद्व्ययोपिधनधान्य साभिमानीभवेन्नरः सुबुद्धिधनवान्पुरयं दानादिमतितत्परः सुमूर्तिप्रियभाषीच अविघ्नशीतलनरः
धर्मवार्तासदावृत्तिसञ्जतिसकुलंतथा गुप्तरोगरिपुःभीतिः चित्तभ्रांतिकदापिच योभावस्वामिसंयुक्तस्तथाचैवविलोकितः तस्यवृद्धिविजानीयात्
भृगुवाक्यनसंशय पंडितंसंगतिप्राप्यशीलबुद्धिभवेन्नरः गृहद्रव्यविशादञ्चविभागेजायतेधन शत्रुपक्षविवर्द्धति चिकित्सायांधनंव्ययः आदौ
द्वे षष्टमेवर्षे अष्टमेचत्रियोदशे नागचंद्रद्विविंशेच षष्टविंशेचत्रिंशके त्रित्रिंशेसप्तत्रिंशोपि वन्हिचत्वारिकंक्रम एषुवर्षेसुभावत्स शरीरेकष्टसंभव
निजकृत्यमहल्लाभं जायतेचसुयत्नत स्वयंधर्मप्रवक्ताच परधर्मविदूशक व्योमचंद्रावधिवत्स बालक्रीड़ायथाक्रम विद्यारंभकृतेचापि मंगलंच
महोत्सवं मातृकष्टसमुत्पन्नोतातचिंताचगुप्तता बालप्रीतिसुखंचापिकष्टपीड़ाविनाशनम् छायादानमहामंत्र अल्पायुनश्यतेध्रुवम् भ्रातभगनी
समायुक्तोमोदतेचापिभागेव शशिचन्द्राद्धसंप्राप्यविंसवर्षावधिततः वारिभीतोऽथमावन्हि किंवाउच्चपपातितः विवाहादिमहोत्साहो सुकीर्ति

मृ॰ स॰
फलित
५०८

चापिनिश्चितं सुमार्गेधनहानिचपितुसंचिन्नसंशय मान्यःसर्वजनैपुंसः सर्वसंग्रहतत्परः स्वयंधर्मरतोभोगीबहुभृत्यप्रसेवितः श्रीमान्विचक्षणःप्राज्ञ
कलाभिज्ञोनृपश्रयः अतःपरंसुखंचापिजायतेचसुयत्नत वापीकूपतडागेचसादरंनिर्मितंग्रहम् मिष्टान्नरससप्रीतिःपितृभक्तसुतर्पित तुरगात्मनं
ज्ञात्वाकिंवासर्पभयावह वाणविंशेतथात्रिंशधनपुत्रसुखान्वित शत्रुपक्षविवादश्च बांधवक्लेशितोग्रहं दीर्घचिन्तास्थितोगुप्त दिवारात्रौचचिन्तनं
देवब्राह्मणभक्तश्चविक्रयोपिधनागम सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्शत्रुवतप्यतेसदा सिन्धुतुल्यतरंगोपिदीर्घकार्याणिचिन्तयेत् द्रव्यलाभव्ययोभूय
चिंतनंतोषितंकदा सुमित्रंमंगलंचापि गुप्तभेदोपिवर्तते सप्तत्रिंशगतेवर्षे चत्वारिंशान्तरेतथा शुभकार्येव्ययोद्रव्य विवाहादिमहोत्सवं मोदते
भूमिभोगश्चआनंदेनसमायुतः कष्टपीड़ासमुत्पन्नोसुयत्नंचापिशांतये जायतेचमनोद्वेगंविभ्रमोपियदाकदा भाग्यवृद्धिविशेषेणमहादानफलप्रदा
चन्द्रवेदमितेवर्षेतथाचसून्यपञ्चमे दीर्घसौख्यगश्चोनित्यंभूमिमन्द्रलभेदानं वाहनादिगवांशय्यांदासीदासश्चमोदिता किंचित्कष्टशरीरेणउपच
रोपिशांतये बहुलाभविजानीयात्दानंदेनसमायुत नागपञ्चावधिवत्सः पुत्रपौत्रसुखान्वित अचानकंउपद्रोपि प्राणभीतोभिजायते आयुपूर्ण
भवेचास्यनिधनंपूर्वयाम्के ॥ भाषा ॥ इस पत्र का फल युवाअवस्था में श्रेष्ट हो बड़े २ कारबार रोजगार करे परन्तु न्यून फल कारक ग्रहों का दान
मन्त्र उपाय करने से पुत्रों का सुख और विशेष धन का लाभ हो किसी समय कुटुम्ब से विरोध हो धन खर्च में आये शत्रु नुकसान पहुँचावे एक समय
थोड़े परिश्रम से बहुत धन मिले विद्या मध्यम हो परन्तु चतुर विशेष हो बड़े २ आदमी इज्जत करें प्रतिष्टा पावे ईश्वर का चिंतवन करे अनर्थ की बात
पर ध्यान करे श्रेष्ट संमति दे बुरे काम से बचे श्रेष्ट मित्र में चित्त रहे खरचीला हो पोचबात न कहे चित्त में गुप्त चिंता रहे इज्जत का विशेष ख्याल हो
खर्च विशेष रहे एक समय प्राणों का भय हो विशेष कष्ट पावे शुभ ग्रहों के प्रभावसे प्राणों की रक्षाहो सारी अवस्था इज्जत के साथ आनन्द में बीत जाय
दान मन्त्र उपाय और श्रेष्ट कर्मो से सुख पावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अति धनवान सेठ था पुण्य दान विशेष करता रहा एक समय एक
मनुष्य सच्चे मोतियों का डिब्बा धरोहर की भांति धर गया सो अच्छे मोती देख लोभ आ गया जब वह मांगने आया तो नहीं दिया मुकर
गया तिसी से विशेष पाप का भागी हुवा सो इस की शांति के निमित्त काशी के थाल में चावल भर कर कुछ चांदी और सच्चे मोतियों की लड़ी
उसमें धर रेशमी स्वेत वस्त्रसे ढककर ब्राह्मण को भोजनादि से तृप्तकरे श्रद्धा भक्तिसे दान दे तो पाप नष्ट हो परम आनन्द पावे निश्चय सुखी रहे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वखगास्थित्वा जन्मकालेयदान्नरः बृहत्वफलमादाय आनंदभुविमंडले अं॰वंशप्रकाश्यंति श्वकुलंदीपकंतथा बहु
कीर्त्यधिकारीचसर्वेशांशुभचिंतकः चंद्रजीवयरंप्रीतिनूतनंवार्तयाचितः सुदृढश्चश्चलोधीरप्रतापीशूरविक्रमी गुरुभौमतथापुच्छंपूजनात्सुख
वर्द्धनं दीर्घोन्नांतसुकीर्तिंचपुत्रपौत्रसमायुत पंचमेशंसुसंपूज्यंवंशवृद्धिशुभप्रदा गौविप्रं रक्षकोधीमानसत्यवादीविचक्षण कालाऽनुसारविद्याच
पर्यटनंप्रियसदा द्वयोअल्पमहाकष्टं प्राणाभीतिश्चचिंतनं श्रेष्टकर्माश्रयोभूत्वा आयुपूर्णसुखीनरः गुप्तलाभविशेषेण अकस्माजायतेकदा
भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं मनेच्छापूजितोवत्सअनुष्ठानसुयत्नतः राजद्वाराद्धनंप्राप्यनिजकृत्यफलप्रदाः पिताधिकप्रकोपीचकामाधि
क्यवलान्वितः सुशीलश्चश्चलोपुंसः रिपुणांकष्टदायक निष्ठुरंवचनंवक्ताकुमतिंचउदारधी सर्वसंपत्समायुक्तोअंगनाप्रीतिकारकः जन्माद्धन
युतःपुंसःमीननादपरंप्रियवृणपीड़ासमुत्पन्नोनिजांगेनात्रसंशय सर्वकार्याणिसिध्यंतिहीनसंगान्नसंशय धनहानिकरापाकेस्वजनेरिपुतांव्रजेत्
क्रूरपापग्रहापीड्यंनानाक्लेशसमन्वित रूपनीतिसमायुक्तोप्रसन्नहितवर्जितं कारयेत्पत्नीरक्षार्थंसप्तमेशोपिपूजनम् स्वल्पवीर्यंभवेदेहोलोकेनिंदा
कदापिच शुभकर्मरतोचापि धर्ममार्गेधनव्यय मन्द्रवाकन्यकाद्वाहे पुण्यदानेतथापिच रजतंस्वेतवस्त्रञ्च भुक्तालाभेनसंशयः शूरोथवाग्रामे
पुरोधिनाथोभवेद्यशस्वी कुशलःकलासुएवंसुपुण्यंसुगृहेपलंचकरेचपापभयविघ्नहानि मंत्रविद्याप्रवीणश्च सुन्दरश्चतुरोनरः अविद्याजायते
क्लेशविद्याचसौख्यदासदा प्रथमेद्वितीयेवर्षे ज्वरपीड़ाविरेचनं दन्तरोगविशेषेण वृणरोगञ्चक्लेशिता पितुचिंतापरोभूत्वा नृपद्वारेसुकीर्तितम्
ग्रामाद्धनप्रलाभञ्चचिंतायुक्तदिनेदिने कुटुम्बेक्लेशसंजातोशत्रुपक्षेचदुःखिता तृतीयेद्धेग्निभीतिश्चमातृखेदंतथैवच पितुरंप्राणसंदेहोपूजनेन
सुखावहम् चतुर्थेपञ्चमेद्वेषुग्रहमंगलमागत पितुप्राप्तिधनंभूरीमिष्टान्नक्रियेविक्रये ज्वरपीड़ातदाग्रेचशिशुक्रीड़ाक्रमेयथा मातृकष्टभवेत्षष्टंमृत्यु
भीतोनसंशय तातक्लेशसमायुक्तः धातारंकिंकरिष्यति जायते सप्तमेवर्षेपितुचिंतासमन्वित निजकृत्यलभेद्रव्यभवेद्वृद्धिदिनेदिने शुभकार्य
धनंयातिविवाहादिमहोत्सवं विद्यापाठ्यञ्चमध्योपिचरवाक्यनसंशयः लघुकालेसुकंठअसंध्यासर्वभविष्यति अष्टमाद्वादशेब्देषुपितुर्लाभनसंशय

शुभकार्यंव्ययोचापि यथालाभेतथाव्ययम् वन्हिचंद्रान्तरोकाव्य तिथिवर्षेक्रमंतथा बहुविघ्नानप्राप्यंते कार्यमात्रोविशेषता गुप्तशोचदिवारात्रौ प्रत्यक्षंनैवकथ्यते मानसीविविधाचिंत्यकामाशक्तविशेषता व्योमनेत्रगतेवर्षेमोदवृद्धिश्चनूतनं पत्नीसौख्यभवेच्चापिपूर्वपापश्चपीड़िता दीर्घभागी चजीवोयंनसुखंतिष्ठतिसदा पञ्चनेत्रावधिवत्सज्वरपीड़ाविशेषतः दानेनसुखमाप्नोतिइष्टदेवस्यपूजने भाग्योदयेचन्यूनोपिनिजकृत्यलभेद्धनम् पत्नीगर्भयुतोकष्टंसुयत्नंपुत्रसंभव मंगलंजायतेगेहनवनारिप्रयत्वतां आशक्तमनोज्ञात्वारूपयौवनचिंतनम् षष्ठिंशेत्रित्रिंशब्देपञ्चवन्हिगतेतथा अकस्माज्जायतेलाभं बहुद्रव्यसमागमं केचित्कालगतेसंत महत्कष्टप्रजायते मृत्युञ्जयजपित्वाच घंटाकर्णश्चवाजपः लक्षमेकंप्रमाणाञ्च सर्वकष्ट निवारयेत् तदान्तेयद्दशायातितच्छृणुममवल्लभः विघ्नकर्तानसंतुष्टपृथ्वीनाथेनसत्क्रयः शुभलक्षणसंयुक्तोगुप्तपापीचविक्रमी संतानार्थेष्टदेवस्य पूजनंमंत्रजाप्यकम् दानपुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यप्रजायते शरअष्टमितेवर्षेसर्वसौख्यधरातले धनपुत्रयुतोभूत्वादानपुण्यफलप्रदा पौत्रजन्म नसंदेहोदासीदासश्चवाहनम् गुप्तचिंताशरीरेण पुण्यसौख्यविनश्यति ईश्वराराधनोलिप्त सर्वआशापरित्यजेत इहलोकेसुखम्सर्वं परलोके फलप्रदा खनवाद्धमितेवर्षे आयुपूर्णोपिजायते निधनंरात्रिसमयेभृगुवाक्यनसंशय ॥ भाषा ॥ इस जीवकी पत्री के ग्रहों का बड़ा भारी फल है पृथ्वी पर आनन्द भोगेगा और कुल में दीपक के समान चांदना करे और इज्जत प्रतिष्ठा पावे सबके भले में रहे एक जीव में चित्त विशेष फंसा रहै नई नई बातों का चिंतवन करे है हिम्मत वाला शूरवीर और प्रतापी होगा बृहस्पति, मंगल, केतु का पूजन भजन तथा जापदान करने से विशेष उन्नति पावे पुत्र पौत्रादि का सुख पावे पंचम स्थान के ईश की पूजन दान वंश की वृद्धि को अत्यन्त श्रेष्ट है गौ ब्राह्मणों की रक्षा करे सत्यवादी हो तथा अन्यकर्ता परोपकारी होने से सब सुख पाय सारी अवस्था में दो चार भारी कष्ट पावे प्राणों का विशेष भय हो परंतु पुण्य कर्मों के प्रभाव से पूर्ण आयु हो कहीं अकस्मात धन की प्राप्ती हो भूमि लाभ हो नवीन मन्द्र की रचना करे सबका भला चाहे मन की विशेष कामना अनुष्ठान प्रायश्चित से पूर्ण होगी है शुक्र ये जीव पूर्व जन्म में राजवंशी धनवान था बद्रीनारायण के दर्शन को जाता था सोते समय मार्ग में धन वस्त्र आदि चोर हर कर ले गये प्रातः काल उठ कर चोर के भ्रम से एक साधु को पकड़ के उसको खूब मारा और धन वस्त्रादि छीन कर कैद में गिरवा दिया तिस कारण पापाश्रय हुवा सो ब्राह्मणों को मनेच्छा भोजनादि से तृप्त करे वस्त्र आभूषण तथा दक्षिणादि से तृप्त करे तो सर्व पापशांति हो सम्पूर्ण इच्छा पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेद दीर्घमान्योप्रतिष्टत पुत्रदारादिसंचित्य स्वकुलंपोषितसदा मानकीर्तिविशेषेण सुप्रसिद्धिसुखीनरः
रूपयौवनसंपन्नसुमित्रंचापिभाषित नानामंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं मध्यसौख्याधिकारीचविलासीमतिमान्नर गुप्तशोकविशेषेणअकस्मात्
भयमागम दीर्घद्रव्यव्ययोचापिचिंतयंतिदिनेदिने चिंतयंदीर्घकार्याणिअंतसौख्यसमायुत द्वयोकष्टविशेषेणचन्द्रअल्पमहाभयं सुयत्नंरक्षितो
प्राणनूतनंजन्ममन्यते दीर्घायुचततोलोके उद्यमेणधनाप्तये व्ययदीर्घमुपस्थित्वा पुरुषार्थीविशेषतः दीर्घकृत्यकृतेचापि शुभकार्यधनव्यय
सप्तमेशोपिसंपूज्यजायासौख्यविशेषत द्विभार्यायोगप्राप्यंतेकिंवाअन्यस्त्रीप्रीतये स्वकुलेपोषितोनित्यंश्रेष्ठकर्माद्धनागम मानकीर्तिसुप्राप्तोपि
सुजनचापिआदरं बुद्धिविद्यान्वितोपुंस न्यायकारीविचक्षण दीर्घचिंताधिकारीचजीवदर्शनलालसा पुत्रपौत्रसुखंप्राप्य अंतेपूर्णमनोरथा
केचित्कार्यकृतेवत्सहानिज्ञात्वाविनिश्चितं सुयत्नंदानमंत्रेण सर्वसौख्यसमागम चित्तचिंताविनश्यंति नात्रकार्यविचारणम् द्रव्यआशामन
स्थित्वापूजयंतोसुयत्नत ईशभक्तिसुदानेनचित्तोद्यानंदतापिच सुमित्रप्रीतिकर्ताचसर्वतोशुभचिंतक परोपकारकर्ताच सुजनानांप्रशंसित
श्रेष्टलक्षणसंग्राहीउत्तमाचर्णलोकभि हीनकार्ययदाभूत्यामनोद्वेगश्चचिंतनम् दंडहोहाग्निभीतिश्चअंगनाप्रीतिकारक सुशीलोदारचित्तश्च
भाग्यवृद्धिदिनेदिने वाटिकामंद्रयानश्च विपाकेफलदायक विनीतोकुशलोचापि स्वधर्मपरिपालक मदेनालस्यसंपन्नो नारीणांप्रीतिवर्द्धनं
पुत्रकलत्रमित्राणि प्राप्तिसौख्यंद्विजार्चनं गोवृषश्चतथाअश्वंलाभदाभवेत् सदाईशभक्तियुताभूत्वा तीर्थपर्यटनंकृतं गुणविद्यासमायुक्तंज्ञाने
दोषसंभव पूर्णसौख्यभवेल्लोके प्रायश्चित्तंसुयत्नत वृणबातविकारेण निधनजायतेध्रुवं पूर्वजन्मकृतेपापं सर्वदाहानिकारक तस्मात्सर्वप्रयत्नेन
शांतनीयोविशषतः जन्मतःपञ्चमेवर्षेबालक्रीडाक्रमंयथा कष्टवाधासमुत्पन्नोदीर्घरोगेणपीड़िता मंत्रजाप्यतथादानंसुयत्नंसौख्यसंभव मासेवर्षे
सुखंजातंमातृकष्टविशेषत षष्टमेचाष्टमेवर्षेनवमेद्वादशेतथा बालवृद्धिभवेल्लोकेनात्रकार्यविचारण मंगलंजायतेगेहेभूयसेचमहोत्सवं विद्या
भ्यासकृतोबालक्रीडनंचित्तचञ्चल वातपित्तोद्भवेपीड़ाकफकोपेननिर्बलं पुनःसौख्यनसंदेहोसुयत्नेचफलप्रदा वन्हिचन्द्राद्धसंप्राप्यषोडशाब्देन

मद्व्ययम् नानामंगलकार्यंपत्नीसौख्यञ्चभोक्तया कामपीड़ामनोद्वेगंचिंतयंतिचगुप्तता लाभकार्यसमारम्भ्यचिंतनंसुस्थिरोभवः विद्यामध्यमंप्राप्य कामक्रीड़ाश्चचिंतनम् शरीरेकष्टसंजातोसुयत्नंशांतयेसदा महाअल्पविनश्यंति दानमंत्रमहत्फलम् अन्यसर्वसुखंज्ञात्वा पापशांतिश्चमोदिता शशिनेत्रमितेवर्षेत्रिंशवर्षावधिंततः सुतापुत्रसुखञ्चापिभाग्यवृद्धिदिनेदिने दशानेष्टमहाचिंता भयभीतञ्चगुप्तता अत्रकत्रोपिज्ञातव्यंनक्वापि कार्यसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपापंआनंदंजायतेध्रुवं सप्तवह्निमितेवर्षेविशेषोलाभजायते विवाहोमंगलंकार्यंआनन्दश्चमहोत्सवं व्ययोदीर्घंभवेनूनं सुप्रसिद्धप्रतिष्ठित सुतापुत्रविवर्द्धंतेयथालाभतथाव्ययम् सर्वकर्माश्रयोभूत्वातस्मात्कर्माणिशोधयेत् यंसौख्यप्राप्यतेभूमौसासर्वंपुण्यकारणम् पुण्यकर्माश्रयोभूत्वा सर्वथासौख्यसंभव पापादुःखलभेद्दीर्घं नात्रकार्यविचारणम् एतस्मात्कारणाद्वत्स सर्वदाधर्मसंचयेत् एवंतत्वयाज्ञात्वा विपरीतंनभूयसे अतःपरंसुखंसर्वे जायतेनात्रसंशय व्योमपंचावधिकाव्यनानासौख्यसमागम चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत तीर्थ यात्रारतोचापिभजनानंदसर्वदा वन्हिपंचाद्बमारभ्य पौत्रजन्ममहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्यत्रकुत्रप्रशंसिता भूमिप्राप्तितथामंद्रपूजितो पिमनोरथं सप्तअष्टमितेवर्षे निधनंदेवसंभव दाहप्राप्यनदीतीरे स्वदेशेकुशलंविधिम् ॥ भाषा ॥ जिसकी कुण्डली में ये ग्रह पड़े हैं वह अति माननीय हो स्त्री पुत्रादि का चिंतवन करे अपने कुटम्ब का पालन करे सारी अवस्था में दो बार विशेष कष्ट हो एक भारी अल्प आवे नया जन्म माने फिर दीर्घायु हो धन प्राप्ति के अनेक उपाय करे पुरुषार्थ से विशेष धन पावे बड़े २ खर्च के काम आवें पूर्ण हो चिंता विशेष रहे सप्तमेश का पूजन दानादि करने से स्त्री सुख पूर्ण हो काम संकल्प सिद्ध हो बड़े २ आदमी खातर करें जीव की लालसा बनी रहे अन्त में पूर्ण हो एक कार्य में हानि विशेष हो दान पुण्य करने से तथा ईश्वर का भजन करने से पूर्ण सुख मिले हे शुक्र पहिले जन्म में ये जीव कायस्थ कुल में उत्पन्न हुवा था राजद्वार में अति प्रतिष्ठित ओहदा पाया देवताओं का पूजन तथा दान धर्मादि करता था एक समय शिकार खेलने गया कर्मवश महापाप बन गया मृग के तीर मारा वह बच गया एक ऋषि बैठा तप करता था वह तीर उसके हृदय में लगा और मर गया तिसी पाप से अनेक क्लेश पावे सो इसकी शांति के निमित्त स्वर्ण का पत्र बनाकर ब्राह्मण की मूर्ति का आकार रक्तचन्दन से बनवाय घृत भर तांबे के कलश में गुप्त रख कर विधि पूर्वक दान कर ब्राह्मण को दे और वस्त्र आभूषण दक्षणादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे और विशेष भक्ति से ईश्वर का भजन करे तो निश्चय सर्व सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः जन्मकालेइतिखेटासर्वपत्रस्थितोयदि पुत्रकन्यातथाजायाग्रहसौख्यंसुयत्नत वाटिकोमंद्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं धनमान्
सत्यमान्श्रीमान्उपकारीविचक्षण मित्रकृतघ्नतांयातिबांधवानांसुखंलघु कवित्वेमतिसंजातोमिष्टभोज्यमतिप्रियः स्वभुजेनधनंप्राप्यपंडितो
नृ पूजित विरोधश्चकुटंबेन शत्रुवःतप्यतेसदा वेदशास्त्रानुरक्तश्च गुणग्राहीभवेन्नर अतिवल्लभमूर्तिश्च भूधनंवर्द्धतेग्रह अर्थप्राप्तिभवेत्शौर्या
जराब्योशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदानश्चधनकीर्तिविवर्द्धनः स्वजनेसुखभोक्तव्याधनरत्नानिसञ्चय देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीन्नर दिव्य
वस्त्रसदाधारीस्वजातिमानवर्द्धन सुमिष्टलवणंभोज्यपक्वमूलफलंतथा भक्षतिसहमित्रश्चनदीतीरेशुभस्थले अन्यत्रकुरुतेवासंमातुरंपितुरंत्यज
यावत्खेचरसंतानेसंयुतश्चप्रपश्यते तावत्संततिज्ञातव्यनरोपुत्रास्त्रिकन्यका यत्खगापञ्चमस्थानेतथैवसंततिवदेत केचिन्मुनिप्रभाष्यंतिनात्र
कार्यविचारणं पाल्यतेबंधुपुत्राणांबलवीर्यसमन्वितः धनहानिकरापाकेस्वजनैरिपुतांव्रजेत् सुरूपाग्रहणीचैवप्रमोदामृतभाषणी पुत्रोहाहादि
कंचैवधर्ममार्गेधनव्यय दीर्घमायुप्रयच्छतिकष्टव्याधिविनाशनं साधुद्वेशीतितत्पश्चकांताहेतुकरःसदा सभामध्येसुवक्ताचसर्वसंतुष्टकारकः आद्य
वर्षद्वितीयेब्देज्वरवाधाविशूचिका मातृकष्टविजानीयाद्धनवृद्धिग्रहेपिच भ्रातृवाभगनीयोगंजायतेनात्रसंशय तृतीयेद्वेभयंप्राप्यपितृचिंतावली
यसि पंचमेसप्तमेवर्षेविद्यायोगनसंशय अष्टमेनवमेवर्षेसंबंधंयोगमुद्भवं कफपित्तोद्भवेपीड़ाज्वरांगोजायतेकदा मातृदेहभवेत्कष्टज्वरव्याधिन
पीडतम् पितुरंधनलब्धिचनिजकृत्यान्नसंशयः जन्मभूम्यादग्निकोणेतथाचपश्चिमोत्तरे पत्नीयोगभविष्यंतिसुन्दरंचसुभाषिणी दशमेद्वादशे
वर्षेतरुपत्नंरुजाद्भवं विवाहोमंगलंकार्यंपितुद्रव्यव्ययोधिक विद्याप्रातिश्चमध्योपि मित्रस्नेहोपिचिंतयेत षोडशेब्देचसंप्राप्य सर्पभीतिनसंशयः
पितुरंधनप्राप्तिश्चअन्यदेशेतदाकवे चंद्रजीवपरंप्रीतिआशक्तंकामपीड़िता मनेच्छापूजितंचास्यमित्राणांप्रियमंगलम् एकोनविंशवर्षेषुकिंचि
त्खेदप्रजायते दानेनकष्टनष्यंतितथाचविप्रभोजने निजकृत्यभवेल्लाभोमातृपितृचतोषियेत् प्राप्तेविंशमितेवर्षे भाग्योदयनसंशय लाभकृत्य
तदारभ्यमध्यप्राप्तिश्चभूतले दीर्वकृत्याधिकारीचस्वकुलचप्रतिष्टत विनीतश्चतुरोधीमान शुभकृत्यरतोभवेत शशिविंशाद्धमारभ्यषष्टविंशति

केतथा नारीभोगश्चसंप्राप्यमोदितेचकुलोत्सवं सुतजन्ममहोत्साहोयाज्ञवृद्धिश्चनूतनं वातपित्तोद्भवंपीड़ाज्वरदाहेनपीडनं गोदानाद्रोगनाशश्च सप्तअन्नतुलाथवा राजद्वारेजयंप्राप्यधनप्राप्तितथैवच नतमसत्यामारभ्यचित्तनैवोपिसुस्थितः गुप्तपीड़ाविनष्यंतिअन्यदेशाद्धनागम त्रिंशाब्दे अंगरोगश्चऔषधेनविनष्यति सुतापुत्रसमायुक्तोमेदताहापिभार्गव नदान्तेचमहल्लाभजायतेनात्रसंशय विवाहादिमहोत्साहोव्यदीर्घमुपस्थित प्रायश्चितेकृतेपूर्वेसर्वसौख्यसमागम सर्वकार्याणिसिद्धं तिभजनानंदसर्वदा अयत्नंभृष्टकार्याणिनानाचिंतावलीयसी द्वात्रिंशमितेवर्षेभूमिप्राप्ति श्चनूतनम् दीर्घकर्येसुखश्चापिसफलंमन्यजीवनं वेदत्रिंशगतेवर्षेसर्वभोगसुतत्परम् श्लेष्मलशांतिशूरश्चसाहसीबुद्धिमान्नर स्वजनेभ्योसुकी र्तिश्चचित्तमोदभपूरित दीर्घकृत्याधिकारीचमासेवर्षेसुखगत पञ्चत्रिंशगतेवर्षेपत्नीपीड़ाचदारुणं औषधीनैवकर्तव्यातस्माद्रोगविवर्द्धनं षष्ट त्रिंशगतेवर्षेतीर्थयात्रासमागम सूर्न्यवेदाद्बमारभ्यभाग्यवृद्धिविशेषत अन्यदेशाद्धनागम्य स्वस्थानव्ययजायत गृहेमंगलकार्यंचनृत्यगीता दिवादितम् पुत्रोपिकन्यकाद्वाहोग्रहमंगलवर्तते पञ्चवेदमितेवर्षेवायुरोगसमुद्भव औषधेनविनष्यति दानपुण्यजपार्चनं नागपञ्चाद्बमायुष्य भाष्यतेमुनिसत्तमा ॥ भाषा ॥ जिसके जन्म पत्र में ऐसे ग्रह पड़े पुत्रों के जोड़ों का ध्यान रहे कन्या भी हो वंशकी वृद्धिहो धनवान लक्ष्मीवान् परोप कारी श्रेष्ठहो लोग निंदाकरें तबभी बुरा न माने बड़ा प्रतिष्ठित नामी हो कई वर्ष विशेष धन की प्राप्ति आवे और कई दफे भाग्य की न्यूनता करने वाले आवें पुत्रों की चिंता रहे संतान गोपाल का मन्त्र वंश की वृद्धि को श्रेष्ट है लाभ स्थान के ईश की पूजा दान जाप से विशेष लाभ हो और पृथ्वी पर बड़े बड़े कौतुक देखे चिंता और भी हो अपने समझे व अपने कहे तथा समति के न हों घरमें कभी पीड़ा हो जाया करे एक अल्पभारी आवे प्राणोंका भय रहे आयु पूर्ण हो कैसा ही भारी खर्च हो कार्य हो जाय अन्तमें मनोर्थ पूर्ण होवे हे शुक्रपूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मवंश में उत्पन्न हुवाथा सो नाट्यविद्या में बड़ा चतुर था राजाओंसे बहुत धन प्राप्त किया फिर वृन्दावनमें रासक्रीड़ा कर स्त्री पुरुषोंके मनमोहित करताथा एक महान् रूपवति स्त्री आशक्त हो गई तिसे संग लेकर प्रदेश को भाग गया पीछे उसका पुत्र तथा पति अत्यन्त क्लेशित हो भटकते फिरे सो तिसी से पाप का भागी हुवा स्वर्ण के पत्र पर स्त्री की मूर्ति रक्तचन्दन से लिखकर बहुतसा धन तथा अन्न में गुप्त रखकर गृहस्थी ब्राह्मणको दानकरके देतो पापशांतिहो और निश्चयकरके आनन्द पावे ॥

विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
श्रीगणेशायनमः एतद्योगेनरोजातामाननीयोप्रतिष्टता पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमन्त्रंचतोषिता विद्याबुद्धिविशेषेणधनपुत्रासुखान्वित पत्नी
सौख्यविशेषेणनवनारीप्रियत्वताम् चंद्रजीवपरंप्रीति निजप्राणाधिकप्रिय गुप्तचिंताविशेषेण लाभप्राप्तिश्चदीर्घता व्ययोचापिविशेषेणनित्य
नूतनमागमः दीर्घकृत्योवृहन्नित्यं सुकीर्तिकार्यसिद्धति शूरदानीप्रतापीच साहसीसुस्थिरोमति कामपीड़ामनोद्वेगं नीचकर्मचविभ्रम नित्य
आस.विचारोपिअकस्माल्लाभजायत पापकूरग्रहापूज्यंमंत्रजापसुभक्तित तेनश्रयोभवेत्प्राज्ञसुयत्नंसर्वलाभदं भागवृद्धिवृहत्तोपिस्वकुलंकीर्ति
वर्द्धनं चंद्रशोकस्थितोतचितंसुखञ्चापिविसर्जनं चतुष्पादजलंपीड्यअकस्मात्घातसंभव जीवशोकोपिद्रष्टव्या नचैवंसुस्थिरोमनः युग्मअल्प
विशेषेणशरीरेकष्टदारुण अचानकंउपद्रोपिचिंतनीयंविशेषत अंतेचकुशलंज्ञात्वारिपुहानिप्रजायते दयालुसुविचारश्चगीतनादपरंप्रिय प्रसन्न
वदनःपुंसः दारापुत्रसमाकुलः चञ्चलश्चित्तवृतिस्याद्दीर्घसूत्रीसमन्वितः विदेशोवसतेचापि नारीणांप्रीतिसंभव सुन्दरंमृदुवाणिश्चधनसंयुक्त
कौशलः सत्यवक्ताप्रतापीचबलवान्वाहनोयुत जिह्वाग्रेदलंज्ञानिचहेमरत्नविभूषितः स्वपुर्षार्थधनंप्राप्तिचंद्रवतसाहसंमुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहो
द्विजानामर्चनंसदा मातुलंक्लेशदायीच विपाकेसुखवर्द्धनं पूर्णसौख्यसुयत्नेन नारीणांप्रीतिवर्द्धनं राजसीगुणसंजाता भ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत
महर्घवस्त्रधारीचसंततिकष्टजायतः सत्पुरुषपीड्यंतेअभक्तितोपितोद्विज निजकृत्याधिकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमर्णज्ञेयविपाकेवीर्य
नाशनं दर्शनेअरिनिंदंति कदापिदेहव्याकुल प्रथमात्पञ्चमेवर्षे नानारोगसमन्वितः तन्मध्येमातृहानिच पितुचिंतावलीयसि तथापिसौख्य
संजातोबालक्रीड़ासुतत्परः शष्टमेसप्तमेवर्षेव्रणव्याधिनसंशय तातलाभविजानीयात्ग्रहसौख्यसमागम मंगलंनात्रसंदेहोविद्यारंभोपिक्रीडनं
अष्टमेचतथानौमेउत्सवंजायतेग्रह नवीनोवस्त्राभरणंप्राप्यतेगृहमंडले दानंमंत्रसुयत्नेनसर्वकष्टविनाशनं क्षत्रचिंताविशेषेणतथान्नेसोपिनाशनं
द्वादशेवन्हिचंद्राब्देतातमानविशेषतः भूमिनाथात्प्रतिष्ठाचजायतेनात्रसंशय वातव्याधिगृहपीड्यदीर्घशोकेसमन्वित अंतेकुशलमाप्नोतिसुमित्रं
ध्यानचिंतनं चतुपञ्चदशेवर्षेनवनारिसमागमः मध्यविद्यासुप्राप्यंतेबुद्धिवंतोविशेषत केचिजीवोमहाप्रीतिकामशक्तश्चविन्हलं षोडशेवर्षसंप्राप्त

भार्यास्वल्पसुखंभवेत् तदांतेक्लेशसंजातोकुलबन्धुविरोधता सप्तदसेग्रष्टचंद्रतातकष्टं पुनर्भवेत् कष्टेनजीवनंतस्यधनलोभोऽपिजायते भाग्यवृद्धि भवेनूनंसुयत्नश्चविवर्द्धनम् शरीरेकष्टसंजातोज्वरतश्चपीडनं ग्रौषधीदानमंत्रेणशरणंतिभवेत्सदा ऊनविंशेतथाविंश मंदसौख्योपिचिंतनम् शशिविंशाच्चत्रिंशाद्धे तन्मध्येकोभवर्द्धनम् चिंतयेद्दीर्वकार्याणि द्रव्यलाभदिनेदिने ग्रहहर्षमहोत्साहो सुतापुत्रश्चमोदिता प्रायश्चित्तविधानेन भूयसेयंसुलक्षण सासर्वसौख्यसंपन्नोमानप्यथाभूयसेतुसा चंद्रामगतेवर्षेतथाचनभवेदके विदेशोगमनंचापिविशेषोद्रव्यलभ्यते विवाहोमंगलं चापिव्ययदीर्घमुपस्थितं जातिमध्येसुकीर्तिच पुरायकृत्येसुखागम साहसंउद्यमध्येय भजनानन्दसर्वदा संततिग्रहरक्षार्थं चंडीपाठंसमारभेत् तेनक्लेशविनश्यति सत्यसंकल्पसिद्धदम् वन्हिचत्वारिवर्षांतं नृपात्माभवद्भवेत् राजद्वारेजयंप्राप्य धनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात् नृपात्मान्महत्सुखं रोगशोकप्रवर्तते किंचित्कालेविनाशनम् दानंपुरायप्रभावेण सर्वसौख्यभुवितले ग्रानन्दंमङ्गलोनित्य विवाहादिमहोत्सवं सून्यवाणगतेवर्षेपूर्ववांछाचपूरित नागपञ्चमितेवर्षेपौत्रजन्मचमोदिता ग्रंतपरंसुखंसर्वेधनरत्नानिवाहनं एवसर्वप्रकारेण पुरायकर्ममहत्फलं वेदषष्टाद्रमायुष्यभाष्यतेमुनिसत्तम स्वल्पकष्टेनभोप्राज्ञग्रकस्मात्मरणंध्रवम् ॥ भाषा ॥ इस योग में उत्पन्न होनेवाले जनको पंचमस्थान के ईशकी पूजादान मन्त्रादि का प्रयोग करना परम श्रेयस्कर है विद्या बुद्धि विशेष बढ़े सुपुत्रों की प्राप्तिहो सुख मिले स्त्री का लाभ हो एक जीव प्राणों से प्यारा रहै उसमें चित्त विशेष रहे गुप्तचिंता बनी रहे धनका लाभ विशेष हो परन्तु खर्च बड़े २ लगे रहैं ग्रानन्द भोगे बहुत से कार्य पूर्ण हों प्रतिष्ठा बनी रहे बड़ी हिम्मत वाला हो सूर प्रतापो काम की प्रबलता में न्यून बुद्धि हो जाय नीच कार्य बन जाय कहीं से ग्राशा लगी रहै ग्रकस्मात इच्छा पूर्ण हो जाय पाप क्रूर ग्रहों की शांति से विशेष सुख मिले एक शोक विशेष माने जल भय हो या पावकसे जले चौपाये या उच्च स्थान से गिरकर चोट लगे ग्रन्त में सर्व भांति कुशल हो पहले जन्म में ये जीव राज मन्त्री था दान पुण्य में तत्पर रहै श्रेष्ट सम्मति देता था परन्तु भावीवश एक बाह्मण से विरोध हो गया उसकी पृथ्वी ग्रौर मन्द्र छीन कर एक भाट को दे दिया वह भाट प्रशंसा करता फिरा ब्राह्मण ग्रति दीन हो महा क्लेश हो विलाप करता रहा ग्रौर बहुत प्रकार शाप दिया तिसी पाप से क्लेश पावे इसकी शांति के निमित्त कुटम्बी ब्राह्मण को पृथ्वी तथा स्थान का दान दे भोजन वस्त्र दक्षणा ग्रादि सर्व प्रकार से संतुष्ट करे तो मनोर्थ पूर्ण हो सर्व प्रकार के ग्रानन्द प्राप्त हों ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेयदाजन्म विचित्रोभाग्यमेध्रुवम् मध्यश्रेष्टदशाभुक्तो पूजितंसुमनोरथा पापग्रहाप्रभावेण दीर्घचिंतान्वितोभवेत्
चित्तंचञ्चलोनित्यंलाभेविघ्नसमुद्भव विलंबोजायतेप्राज्ञपुनःदीर्घधनागम हीनकार्यंभवेच्चापि पश्चातेचिंतनंकृत नारीचिंताहृदेगुप्तंशत्रुमित्र
वदाचरेत् जीवचिंताविशेषेण जायतेनात्रसंशय प्रायश्चित्तकृतेसंत पुत्रसौख्यविशेषतः लाभकृत्योपिसिद्धंति वृहत्वोधनमागम सत्यवक्ता
सुशीलश्चअसत्योक्रोधसंभवः साहसीपुरुषार्थीचदुखसौख्यविशेषतः दीनोबुद्धिमतोप्राज्ञविभ्रमञ्चयदाकदा नूतनंवार्तयाचिंत्यकामाशकोपि
गुप्तता दानमंत्रजपंपुरायंसर्वदानंदसंभव सर्वेअल्पविनश्यंति दीर्घायुश्चसुखावह मनेच्छापूजितंचांते सर्वतोकार्यसिद्धति दानेनपरमंसौख्यं
इष्टदेवस्यपूजनम् सुन्दरंमृदुवाणीचधनसंयुक्तकौशलः वाणिज्यञ्चधनंदीर्घ पुत्रकांतामतिप्रियः राजद्वारेजयंजाप्य स्वजातिमानवर्द्धनः
सभायाञ्चपलोधीमान गुणाधिक्यभवेन्नरः मतिमान्विनयायुक्तज्येष्टभ्रातुप्रतप्यते पुरुषार्थधनंप्राप्यरिपुनाशंनसंशय धर्मकर्मयतोपुंसकुशलः
सर्वसाधने धनीधर्मीप्रसन्नात्मदयामूर्तिसुकोविदः पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि कृपणाश्चपलंज्ञेयंकलत्रंक्रूरकर्मिणाम् चतुष्पदात्तथारात्रौ
विकारोफलजायते अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमन्द्रादिसेवनं प्रपारामतड़ागेनसदानंदभवेन्नरः आसिहेतुभविश्यंतिकदाकालेचशत्रुवः धर्ममार्गे
व्ययोद्रव्यबांधवानांप्रियोभव नानाभोगसमायुक्तोमहद्बलपराक्रमः स्वल्पप्रीतिकरोपितृविचित्रंधनसुस्थिरं सुबुद्धिख्यातिलोकस्मिन्शांतो
मधुरभाषिणः जनकस्यसुखंस्वल्पमित्रबंधुप्रतप्यते अथवाबंधुहीनश्चनिष्टुरंबचनंवदेत् कुटुम्बेभ्रातरंवैरंजायतेनात्रसंशयः प्रथमेद्वितीयेद्बंच
पितुप्राप्तिमहद्धंनम् किंचित्कष्टविजानीया द्वाताद्याचसमुद्भवः तृतीयेद्बंचसंप्राप्त चतुर्थेपञ्चमेतथा नानाखेदसमायुक्तो ज्वरपीड्यंवृणोद्भवः
तातमातनसंदेहोजायतेनात्रसंशय दानमंत्रसुयत्नेनसर्वंकष्टविनश्यति पञ्चमात्षष्टमेवर्षेसप्तमेचाष्टमेगृहे पितुद्रव्यभवेत्सौख्यंबालसंगञ्चक्रीड़िता
सुविद्यांपाठनोबालचञ्चलत्वञ्चविभ्रमः गृहेमंगलंकार्यञ्चकुलबंधुसमागत मोदितंसहमित्रश्चकष्टपीड़ाविनाशनम् संबंधयोगसंप्राप्यदीर्घभागीच
बालक सूर्यचन्द्रगतेवर्षेपञ्चचंद्राद्वकंतथा विद्याबुद्धिविशषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने स्वल्पसौख्यभवेल्लोकेचिंतनंदीर्घतत्पर विवाहंमंगलाकार्यं

जायतेचधनव्ययः षष्टचंद्रनभोयुग्मपञ्चनेत्राद्धकंक्रमः श्रेष्टहीनदशाभोगंअकस्माद्धनमागम मनेच्छापूजितोतत्रआनंदेनसमायुत हीनग्रहप्रभावेणगुप्तचिंतावलीयसीद्रव्यलाभविलंबोपिबुद्धिचित्तचलायमानम् पुनःदीर्घधनंलब्धवाकार्यंचिंतावलीयसी हीनकार्यंभवेच्चापिशोकसंदेहसंभवम् सुयत्नेजायतेपूर्वेधनपुत्रसुखान्वित आनंदमंगलोदीर्घसुभाग्यंवृद्धतोसदा षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्रिंशकेतथा चिंतयेद्दीर्घकार्याणिशुभकृत्य धनव्यय शरीरेरोगसंपन्नगुप्तकष्टवलीयसी आपदुद्धारणोजाप्यअन्नदानञ्चकारयेत् दीर्घसौख्यलभेच्चापिकष्टचिंताविनाशनम् चत्वारिंशावधि काव्य नूतनंलाभसंभव सुतापुत्रधनंप्राप्य हर्षवृद्धिदिनेदिने तदांतेभूमिलाभञ्च पौत्रजन्मसुमंगलं सुतभाग्यविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनम् सून्यपञ्चावधिकाव्यचिंतनंचापिदीर्घता चित्तोद्यानंदतापिस्याद्बहुलाभप्रभावत भूमिप्राप्तिविशेषेणध्यानंदश्चनूतनं व्यापारोप्राप्यतेद्रव्यंसुत पौत्रश्चमोदिता षष्टपञ्चगतेवर्षेशरीरेकष्टदारुणं औषधीनिस्फलोज्ञात्वा जीवआशाविनिर्मुख स्वर्णस्यप्रतिमादानं शैयादानंसुयत्नत गोदानं श्रद्धायुक्तोआपदुद्धारणंजपेत् अल्पायुनश्यतेवत्सदा मंत्रफलप्रद अतःपरंसुखंसर्वेपापशांतिश्चजायते अयत्नंचनिरर्थकोपिनात्रकार्यविचारणं सून्यसप्तमितिमायुभाष्यतेमुनिसत्तमा कर्माधीनंभवेत्सर्वइतिततत्वंब्रवीमि ते ॥ भाषा ॥ जिसके पत्र में ये ग्रह पड़ें विचित्र भाग्य वाला हो मध्यम और श्रेष्ठ दोनों दशा भोगे किसी समय कहीं से धन मिले मनोकामना पूर्णहो परन्तु ग्रहों के प्रभाव से चिंता फिकर भी भोगे चित्त चलायमान रहे लाभ की सूरत होकर विलम्ब हो जावे बहुत धन प्राप्त करे एक कामहीन बनजावे सो पीछे मन में बहुत पछतावे शत्रु मित्र दोनों हों स्त्री की चिंता का ध्यान तथा जीव की लालसा बनीरहे प्रायश्चित करने से धन संतान का सुख विशेष भोगे कुल की रक्षा को संतानगोपाल का जाप्य करावे एक लाभ रोजगार का काम बहुत श्रेष्ठ बन जाय उसमें लाभ विशेष हो यह जीव सत्य में प्रीति करे असत्य से बचे पुरषार्थी और हिम्मत वाला हो बड़े २ दुख सुख भोगे परन्तु चित्त को दुखी न समझे विशेष बुद्धिमान हो कभी २ भ्रम सा हो जाया करे नई नई वार्ता भोगे नाकिस ग्रहों का दान मंत्र उपाय करने से मनोकामना सिद्धहो एक अल्प आवे यत्न करने से आयु पूर्णहो पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री था हरिद्वार में निवास करता रहा जो हाथी घोड़ आदि बज्रदान पण्डाओं को मिलते थे सो आधी कीमत पर खरीद कर बेचता था ऐसे दान का विशेष अन्श खाय पापका भागी हुवा सो तीर्थपर जाय विशेष गुप्त दानदे गायत्री मन्त्र का जाप्य करावे ब्राह्मणों को संतुष्ट करे तो सर्वसुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मसुन्दरंचेष्टयानरः कुलश्रेष्ठसुकीर्तिचलज्जावंतोसुगौरवं परोपकारकर्तारौबुद्धिवंतोसुखान्वित सुकीर्तिंप्राप्य
लोकेस्मिन्शुभकर्मरतोभवेत् अमोद्रव्यविशेषेणहीनश्चग्रहसंस्थित चिंततोबहुकार्याणिमानकीर्तिश्चकारणं भयभीतिहृदेगुप्तशत्रुपक्षविरोधता
पश्चातेकुशलंभूयसुकर्मेणासुखावहं दुष्टकर्मकृतेवत्सआपत्तौचप्रविश्यति सत्यभाषणसंभग्नअसत्यवचनंत्यजेत् परनिंदाविरोधितंसुखाभिला
षितंसदा संतोष्यवृतिधैर्यंचउद्यमेबहुसंयुत लाभकृत्यविशेषेणव्ययोपिदीर्घसंभव जीवचिंताहृदेगुप्तंस्वरूपंध्यानचिंतयेत् तरंगोसिंधुतुल्यश्चचित्त
चैवोपिविभ्रमः उद्योगेलाभसंपन्नोसंकल्पश्चविकल्पता पितृपीडागृहेगुप्तंपुत्रपत्नीचचिंतनं पश्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रसुभक्तित प्रायश्चितकृते
पापंद्विजानांतोषयेत्सुधी दीर्घसौख्याधिकारीचभूयसेनात्रसंशय पत्नीपुत्रसमायुक्तोमोदतेभूविमंडले दीर्घकष्टविनश्यंति आयुपूर्णंसुयत्नत
कुवेरोमंत्रसंजाप्यदानमंत्रश्चपूजयेत् श्रद्धाभक्तिविशेषेणनैवत्यक्तवाकदाचनं लाभश्चविविधंवत्सदीर्घकृत्यफलप्रदा धनीयशस्वीतेजस्वीसुजाति
मानवर्द्धन राजद्वारेसुलाभश्चचित्तआशाचपूजितं दशानेष्टयदाप्राप्यचतुष्पादादिपीड़ितं वृक्षाच्चपतनंकिंवाहानिकष्टविशेषत तथापिपूर्ण
पुण्येन नक्षिष्यंतिविशेषत कार्याणिसकलाण्येवंसिद्धतेचसुयत्नत प्रथमेपञ्चमेवर्षेबालक्रीड़ायथाक्रमं विशेषोकष्टप्राप्यंतेभूतछायाश्चविव्हल
दंतापीड्यंज्वरोजाता कृष्यभूतकलेवरम् दानमंत्रविशेषेण महामृत्युंजयोविधि तेनकष्टविनश्यंति बालवृद्धिसुखोद्भवं अन्यचदीर्घरोगाणि
दानमंत्रेणशांतये षष्टमेचाष्टमेवर्षेसून्यचंद्राद्धकेतथा वृणादिरोगसंपन्नोशांतयेचसुयत्नत विद्याभ्याससमारभ्यसुकृत्यगृहमंगलं बालक्रीड़ा
समासक्तशिशुनांप्रीतिदीर्घता विवाहादिमहोत्साहोतातद्रव्यव्ययोभवेत् सुकीर्तिजातिमध्येचचित्तहर्षेणपूरित शशिचंद्राद्धमारभ्यषष्टचंद्रश्च
मध्यमा बुद्धिविद्याविशेषेणत्वंजायतेध्रुवं नवनारीसुभागश्चसुवस्त्राभर्णसंयुत दीर्घसौख्यगमोनित्यंकामपीड़ाचविव्हलः नगमेकाद्धमारभ्य
विंशवर्षेचमोदिता निजकृत्यसुखीलोके विशेषोलाभचिंतनं मंगलश्चगृहागम्य नवनारिप्रियत्वतां जीवचिंताविशेषेण मानकीर्तिश्चवर्द्धनं
गुप्तरोगविनश्यंतिज्वरतप्तश्चशांतये क्षत्रचिंताविशेषेण धर्ममार्गेधनव्यय शशियुग्मगतेकाव्य व्योमत्रिंशाद्धकेतथा सुतापुत्रसुखंलोकेसुग्रह

भृ० स०
फलित
५१९

मानवर्द्धनम् लाभकृत्यविशेषेणधनलाभनसंशय सुमित्रंमेलनंचापिनूतनंरूपलुभ्यते गुप्तप्रीतिविशेषेणप्रत्यक्षनैवकथ्यते अन्यबहुसुखंप्राप्य दानमंत्रफलप्रदा चंद्रवह्निगतेवर्षे सून्यचत्वारिमध्यमा विवाहादिमहोत्साहो यथालाभतथाव्यय पुनःदीर्घधनंप्राप्य यथालाभसुतोषिता भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनं पददीर्घमुपस्थित्यदासदासिश्चमोदिता मासेवर्षेसुखंगत्वाकष्टशोकविनाशनं आनंदरस्तुशत्रुणांपुण्यो दयमहत्फललं सोमचत्वारिवर्षाणिनागवेदक्रमंतथा पश्चपुत्रद्वयोकन्यासर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनभवेच्चिंतानसुखंविद्यतेसदा नंदवेदाद्वमारभ्य नगपञ्चक्रमंततः भाग्यवृद्धिविशेषेणप्रशंसाजायतेकुल पौत्रजन्ममहामोदसफलंमन्यजीवनं द्विजानांतोषयेन्नित्यंसुपक्ववस्त्रभूषणां सुकीर्ति ख्यातिसर्वत्रचित्तआशासुपूजितम् नागवाणाद्वमारभ्यवह्निषष्टान्तरंतथा दिनेदिनेमहल्लाभंधनरत्नानिसञ्चयम् ग्रामप्राप्तिविशेषेणभजनानंद सर्वदा सून्यसप्तद्वरोकाव्यप्रपौत्रजन्मसंभव भूरिभाग्यततोलोकेगणयतेचविशेषत पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चधनरत्नानिपूरितम् नंदसप्तगतेवर्षेआयुपूर्णो विनिश्चितम् विरेचनंनपीड्यंतेदानपुण्योपिदीर्घता निधनंचास्यविज्ञेयोस्वल्पकष्टेनतत्रवै ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल परमोत्तम है श्रेष्ठ रूपवान सुन्दर कुलवाला नेत्रों में लिहाज परकाजी भला आदमो इज्जत प्रतिष्ठा के कारण चिंता विशेष रहे धनका भरम विशेष हो सत्य बोले असत्य से बचे पराई निंदा न करे संतोसी धैर्यवान उद्यमी और पुरुषार्थी हो बड़े २ लाभ खर्च सिरपर झेले इज्जत प्रतिष्ठा पावे कई जीव में चित्त लगे चित्त में समुद्र केसी तरंग उठाकरे उद्योग करे लाभ की वार्ता सोचता रहे स्त्री की चिंता घर में पितृपीड़ा सुतस्थान के स्वामी की पूजादान मन्त्र करने से वंश की बृद्धि हो परमसुख पावे दो अल्प आवें आयु दीर्घहो लाभ स्थान के ईश के पूजन से विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा पावे मनेच्छा पूर्ण हो हीन दशा में हानि भी हो परन्तु अन्त में सब प्रकार से कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ा धनवान् पुण्यवान् सरयू नदी में नाव चलाने वाला प्रधान था नवका के कृत्य से बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक सेठ श्री अयोध्या जी की यात्रा को आया सो बहुत धन नवका में भूलकर चला गया फिर थोड़ीदूर जाय याद आया आकर मांगा तब उसने न दिया वह सम्पूर्ण पुण्यकार्य में लगने वाला धन अपने घरमें धरा तिससे पाप का भागी हुआ तिसके निमित्त लड्डुवों में गुप्त स्वर्ण रखकर ब्राह्मणों को दानकरे संतुष्ट करे तो धनकी वृद्धि हो सब प्रकार के आनंद प्राप्तहों ॥

श्रीगणेशायनमः फलंचेयंग्रहापत्रीविशेषोभाग्यवर्द्धनं फलंप्राप्यंविलंबोपिनानाभोगसमन्वित पितुप्राप्तिप्रतिष्ठाचसुप्रसिद्धं सुखीनरः धनाध्यक्ष
इतिख्यातोगृहेद्रव्यञ्चन्यूनता गुप्तचिंताविशेषेणउद्योगंबहुचिंतनं उत्तमोपिकुलंश्रेष्टविद्यावंतोसुतोबुद्धि सत्यासत्यविवेकीचअन्यवार्तासुचिंतक
चंद्रजीवविशेषेण प्रीतीआशाचविव्हलं जीवानांप्राप्यतेखेदं लाभहानिश्चसंगमे पापक्रूरग्रहानेष्टं दुक्खदातेचनित्यश अतस्तेषांतुशांतिश्च
कर्तव्याहिविशेषत पूजादानतथामंत्रंयुग्मभक्तिविशेषत कृत्वासद्यसुखोभूत्वानान्यथाकिंचितोभवेत् गायत्रीमंत्रजाप्येनपितृपीड़ाचशांतये
मनेच्छापूजितंचापि भाग्यवृद्धिदिनेदिने वंशवृद्धिनसंदेहो पुत्रपौत्रधनान्वित बहुजनंपालकोलोके विशेषोकीर्तिवर्द्धनं बहुजीवकृतेआशा
दाताभोक्ताचतोषक दुखसौख्यव्यतीतानिधैर्यवंतोनगणपते दशान्यूनयदागम्यवहुत्वेक्लेशदायक दानमंत्रसुपुण्येनसर्वदानंदवर्द्धनं दशाश्रेष्ट
समायातसर्वतोदिशमंगलं चंद्रजीवपरंप्रीतिगुप्तवार्तानकथ्यते हितैषीचित्तआधारंसर्वतोशुभचिंतक विशेषोअल्पमायातसुयत्नचापिशांतये
आयुपूर्णनसंदेहोसुपुण्यफलदायक जन्मतोवह्निवर्षांतंच्छायारोगेणपीड़िता उरपीड्यविशेषेणरुरोदपितृचिंतयेत् घूटिकासेवनंयत्नअन्नदानञ्च
शांतये बालवृद्धिक्रमेणैवविनोदंशिशुमोदिता वेदवर्षसमारभ्यसून्यचन्द्रांतरोतथा विद्यारंभकृतोवालव्रणपीड़ाविशेषत पितुद्रव्यव्ययोदीर्घ
गृहमंगलमोदिता सुकीर्तिख्यातलोकेषु कुलभ्रातुप्रशंसित चन्द्रचन्द्राद्धमारभ्य नागचंद्राद्धकेतथा विवाहादिमहोत्साहो मंगलञ्चकुलोत्सवं
नरनारिप्रियत्वेपिरूपयौवनचिंतयेत् आशक्तश्चमनोज्ञात्वायत्रकुत्रचविव्हलं मानसीविविधाचिंत्यनिजकृत्यस्यसाधक बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं
मात्रोपिसिद्धति कष्टव्याधिविशेषेणपुण्यकर्मेणशांतये महामृत्युञ्जयोजाप्यछायादानसुखप्रद नगइन्दुमितेवर्षेपञ्चयुग्माद्धमध्यमा कामक्रीड़ा
विशेषेणपुत्रजन्मेचमोदिता धनलाभश्चमध्योपिदीर्घकार्याणिचिंतनं क्षत्रचिंताविशेषेणमानकीर्तिविशेषत सुतापुत्रसमायुक्तोमंगलंचमहोत्सवं
षष्टनेत्रगतेवर्षे रामवह्निसमागम प्रायश्चित्तकृतेपूर्वे विशेषोभाग्यवर्द्धनं द्रव्यलाभसुखंदीर्घ जायापुत्रश्चमोदिता मानसीविविधाचिंत्यसुकर्मञ्च
फलप्रदा विवाहोमंगलंसौख्यपददीर्घमुपस्थित आपदुद्धारणोजाप्यपुत्रपत्नीफलप्रदा सर्वरोगविनश्यंतिआनन्दंहिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंप्राप्य

सुकीर्तिख्यातिभूतले वेदत्रिंशाद्वगेकाव्य सून्यचत्वारिकंक्रमः भाग्यवृद्धिविशेषेण भूमिप्राप्तिस्तथैवच राजद्वारेजयंप्राप्य शत्रुचास्यविनिर्मुख
उद्वाहोमंगलंकार्यं सुतापुत्रसुखीनरः चौरभीतिभवेद्रातो धनहानिश्चन्यूनता चित्तचिंताविशेषेण नचैवंसुस्थिरोमति आपत्तौनाशनार्थाय
चंडोपाठश्चकारयेत् ततःसौख्यभवेत्काव्यसर्वशोकविनाशनः अतःपरोमहल्लाभंव्ययश्चचापितोद्रशीः जातिमध्यसुकीर्तिचवृहद्भाग्योभूवितले
शशिचत्वारिवर्षाणिव्योमपश्चावधिक्रम नानालाभसुभाग्यंच पुरायोदयफलेनवै सुदुग्धंमहिषीगपो दासदासिश्चमोदिता ग्रामभूमिधनंप्राप्य
सुखंसर्वत्रवर्तते पौत्रजन्ममहोत्साहोनवनारीचमंगलं आनंदश्चगतोकाल कष्टपीड़ाविनश्यति भूमिमध्यधनंगुप्त हुयत्नंलाभसंभवः मासेवर्षे
सुखंगत्वासुकुलंक्षानवर्द्धनं कर्मभ्रष्टपतित्योपिइतितत्वंवदामिते धनरत्नंसुखंसर्वपुरायकर्मेतिनूतनं पूर्वपुरायेनभोवत्ससुखंसर्वत्रवर्तते स्वर्गभोगो
लभेद्भूमौप्रागौयंनंदनंवनं इन्दुपंचाद्वमारभ्यसूण्यषष्टतथासुतः ग्रामाधीशोभुविप्राप्यकिंवामन्द्रनूतनं जायाकष्टविनश्यंतिसुतपौत्रंप्रसिद्धति
विवाहोमंगलंकार्यंनूतनंचदिनेदिवम् ईशभक्तिविशेषेणभजनानन्दसर्वदा नेत्रषष्टाद्वमारभ्यग्रकस्माद्रोगसंभव दानपुरायविशेषेणकारयेत्कष्ट
शांतये आयुपूर्णभवेल्लोकेनिधनंनात्रसंशयम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का ये फल है ग्रह भाग्यवान् पड़े हैं बिलम्ब से फल करेंगे बड़े भाग्य
वालाहो पिता अति प्रतिष्ठा पावे धनवान् गुप्तचिंता उद्योग लगेरहैं श्रेष्ठकुल विद्यावान अक्ल तेज दूसरे की बात को तोले सत्या सत्य को पिछाने
एक जीव की आशा लगी रहा करे और जीवों के खेद भी झेले पाप क्रूरग्रहों के दान मन्त्र जाप करने से मनोकामना पूर्ण हो भाग्य और वंशकी
वृद्धि हो ये जीव तरह २ के दुख सुख देख गायत्री का जाप्य कराने से घर की पितृपीड़ा शांतिहो कितने ही जीव इसकी आशा करते रहैं धैर्यवान
दाता भोक्ता पुरुष हो हीन दशा में विशेष चिंता तथा कष्ट पावे श्रेष्ठ दशा में अनेक आनन्द देखे इसका भेद सबसे न्यारा है एक मित्र गुप्तवार्ता
वाला अपना हितैषी हो एक अल्प भारी आवे नया जन्म जाने एक कामना बहुत भारी है सो विशेष पुरुषार्थ से पूर्ण हो है शुक्र पूर्व
जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ धनुष विद्या में परम चतुर था एक समय बन को शिकार खेलने गया एक पशु दृष्टि पड़ा तिसके
तीर मारा सो लगते ही वह उसी समय मरगया वह पशु एक ऋषि पुत्र का पालन किया हुआ था तिसकी मृत्यु देख वह ऋषि पुत्र महाराज
अत्यन्त शोकातुर हुवा तिस श्राप के निमित्त गौ वत्सों को खूब सजाय ब्राह्मणों को दान दे तो यह पाप शांत हो जाय और सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः अथाचेदंस्थिताकाव्य सुयत्नंभाग्यवर्द्धनम् बहुलाभविजानीयात्संतोष्यवृत्तिशीलवान् व्ययोकृत्यविशेषेणसुप्रसिद्धं प्रतिष्ठितं
परोपकारकर्ताचसर्वकार्योपिसिद्धति पुनःपुनःधनंसंचयव्ययोयातिनसंशय विद्यावंतोपकारीचविशेषोबुद्धिमान्भवेत् निजकृत्यसुदक्षश्चबहु
सौख्येणवेष्टिता चन्द्रजीवकृतेआशाभनश्चविव्हलोकदा उपायंदानमंत्रेणमनेच्छासर्वपूजिता अकस्माद्धनमायातहर्षवृद्धिश्चदीर्घता चंद्रकष्ट
विशेषेण दशानेष्टसमागम नूतनंमन्यतेजन्मसुपुण्यंफलदायक विशेषोवार्तयाचिंत्यनचैवंसुस्थिरोमति भूमिलाभविशेषेणरचनामन्द्रनूतनम्
सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् सर्वोपिशुभचिंतक केचिज्जीवोविशेषेणआशक्तश्चकदाकदा दीनानांप्रतिपालीचदयामूर्तिसुकोविद पुत्रोद्वाहादिकं
चैवधर्ममार्गेधनव्यय प्रियवक्तासुमूर्तिश्च बहुमित्रेणवेष्टित कुशलःसुमतिदाताच विवेकीचसुकर्मकृत् उग्रःधीरधरोप्राज्ञ नृपप्रेमीसुपुत्रवान्
कृपालुश्चशुभाक्रांति प्रसन्नोसत्यभाषिण सत्कर्मीप्रेमसंयुक्तोन्यायकर्ताक्षमान्वितः पूर्वपापप्रभावेणहृदेदाहश्चक्लेशिता प्रायश्चित्तकृतेकाव्य
सर्वसौख्यान्वितोभवेत् पुण्यकर्मप्रभावेण सर्वदानंदवर्द्धनम् प्रथमेचाष्टमेवर्षेज्वरपीड़ाप्रजायते उदरव्याधिसंयुक्तःमुखरोगसमुद्भव द्वितीये
नवमेवर्षेपितुप्राप्तिमहद्धनम् मातृपीड़ाविजानीयाद्भेषजेनप्रशांतयेः तृतीयेब्देचसंप्राप्तेसमुत्पन्नंविशूचिका मातृपीड़ानसंदेहोउरुरोगप्रजायते
पञ्चमेसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते पितुयात्राविदेशेचधनार्थंचरेतभुवि तयोरंतर्गतेवत्सव्रणपीड़ाप्रजायते मातृशोचपितुलाभअन्यदेशेधनागमः
जलभीतितदांतेचसर्पभीतिस्तथैवच दशमेकादशेवर्षेउच्चस्थेपतनंध्रुवम् पितुलाभनसंदेहोविक्रियाद्धनमागत शस्त्रघातंविजानीया द्वादशेब्दे
नसंशय त्रयोदशेपितुर्लाभताातकष्टश्चतुर्दशे पत्नीसौख्यभविश्यंतिमोदतेगृहमंदिरे षोडषाष्टदशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमध्यमा कार्यमात्रोपिज्ञातव्या
विशेषवर्द्धतेधिय विंशान्मितेज्वरात्खेदं वायुपित्तप्रकोपित पत्न्यायोगभयोगश्च भृगुर्वचनमब्रवीत चंद्रविंशेद्विविंशेब्दे भाग्यवृद्धिप्रजाजते
निजकृत्यंचिंतनोपिद्रव्यप्राप्तिश्चकारणम् विशेषोवार्तयाचित्तआशक्तंकामपीड़िता व्याकुलत्वोपिजायंतेमित्रपक्षश्चप्रीतये प्रतिष्ठामानसंयुक्तः
स्वजातिश्चप्रियंभव द्वाविंशमितेवर्षेपुत्रप्राप्तिनसंशयम् पञ्चविंशमितेवर्षे वामांगेवह्निपीड़ितम् विक्रियस्तुमादायकिंचिल्लाभप्रजायते गुप्तचिंता

विनश्यंति सुयत्नंफलदायकः रसनेत्रत्रत्रिंशाब्दे सुतापुत्रविवर्द्धनम् लाभप्राप्तिविशेषेण सुकृत्यञ्चफलप्रदा शशित्रिंशगतेकाव्य चत्वारिंशा
वर्धिततः सुतापुत्रधनसौख्यभूविभागेप्रतिष्ठिता विशेषोप्राप्यतेद्रव्यव्ययोदीर्घमुपस्थित विवाहोमंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे स्वजातितोषयेत्
प्राज्ञयत्रकुत्रप्रशंसित ग्रहसौख्यविशेषेणपूर्वपापविनाशनम् वृहत्वोजायतेलाभंहर्षवृद्धिपुनःपुनः तयोरंतर्महाकष्टंग्रकस्माच्चउपद्रवम् एतद्यत्नं
भवेत्सौख्यंअग्रेयंकथ्यतेमया अन्नदानविशेषेणक्षुधार्थोभोजनंददेत् सुवैद्यस्यौषधीसेव्यएतन्मंत्रजपेबुधः मंत्र श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं उं नमोत्रकाल
पुरुषाय महाशक्तिधराय अकस्मासर्वदोषान्भंजय२ तत्सर्वंनाशय२ शोषय२ सर्वतोदिशिसंरक्षणायनमः स्वाहा शशिलक्षप्रमाणैवंजपित्वा
सिद्धिजायते हवनंविप्रभोज्यंञ्चदक्षिणाश्रद्धयान्वित एवंकृत्वातुभोवत्सश्रापत्तौशीघ्रनश्यति नानालाभसभोगश्चनूतनंप्राप्यनित्यश भूमिलाभ
स्तुज्ञातव्यारचनामन्द्रनूतनम् पञ्चाशीतिमितिमायुदासदासिश्चमोदिता दीर्घलाभव्ययोदीर्घवाहनादिसमन्वित आज्ञाकारीसुतभृत्यजायतेच
महोत्सवम् सुपुरायंबुद्धिनायुक्तंनात्रकिंचिद्विचारणम् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस जन्मपत्री में ऐसे ग्रह पड़े हैं जो उपाय यत्न करे तो भाग्य की वृद्धि
विशेष हो और अनेक प्रकार के लाभ हों यह जीव संतोषी हो सब प्रकार से मगन रहे बड़े बड़े खर्च के काम करे सब संपूर्ण उतर जांय परोपकारी
शील स्वभाव वाला हो विद्या से बुद्धि विशेष हो कई बार धन इकट्ठा करे फिर खर्च हो जाय परन्तु काम सब सिद्ध होंगे एक जीवकी लालसा में रहे है
उपाय दान मंत्र से मनोकामना पूर्ण होगी और कहीं से धन मिलेगा एक कष्ट बहुत भारी भोगे आपत्तीकाल आये नया जन्म होवे फिर कार बार में
विशेष लाभ हो अनेक प्रकार की वार्ता सोचे चित्त स्थिर न रहै निस्प्रयोजन भी फिकर मानता रहै पुण्य कर्म से सब सुख मिले भूमि लाभ हो मन्द्र की
नवीन रचना रचे नेकनामी पावे सबके भले में रहै कभी किसी का आस्तिक न हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव शूद्र वर्ण था परन्तु इसके कर्म ब्राह्मण
क्षत्रियों केसे थे ठेके के कामों में बहुत सा धन प्राप्त किया अत्यन्त प्रतिष्ठा पाई तब अभिमान वश हो साधु ब्राह्मणों की निंदा करने लगा तिसी से पाप
का भागी हुआ सो श्रद्धापूर्वक साधु ब्राह्मणों की सेवा कर नित्य नियम द्वादशाक्षरी मंत्र जपे तथा साधु ब्राह्मणों को जिमाय गुप्तदान दे तो सुख मिले ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेद्बालफलमेतद्विजायते द्विरारंद्रव्यदीर्घंचलुभ्यतेभाग्यवर्द्धनं पुनश्चमध्यमोजातत्रातुर्थंबुद्धिमान्नर निजकृत्य
कृतेलोकेपुरायकर्मफलप्रदा दशानेष्टयदाप्राप्यनानाचिंतावलीयसी विशेषोचिंतनंनित्यंभ्रमोबुद्धिस्तुभोप्रिय तथापिसर्वकार्याणिग्रानंदेन
भविष्यति स्वकृत्यपरमोदक्षनग्रास्तिक्योपिकश्चन कदापिदेवयोगेनभाग्योदयविशेषत दीर्घमान्योधिकारीचग्रानंदंसर्वभोक्तया पापग्रहाणि
संपूज्यदानमंत्रंप्रयत्नत नानालाभसमायुक्तोसुमूर्तिश्चदयान्वित केलिक्रीड़ासमायुक्तभ्रात्रंस्वल्पप्रियःपुमान् दाराप्रीतिरतोपुंससुन्दरोमिष्ट
भाषिणः शांतामधुरभक्तश्चकदाचित्क्लेशसंयुतः कृष्णोललीतकेशीचगौरांगीस्वल्पभक्षिणा ग्रलंकारसमायुक्तोदुर्बलोप्रीतिवर्द्धनः तमोगुण
विशेषेणसर्वसौभाग्यसंयुत ग्रतिलोभीस्वयंचारीभाग्यशालीभवेन्नरः धनसंतानयानञ्चकुटुम्बेसुखवर्द्धनम् संततिकष्टप्राप्यंतेग्रंगनाप्रीति
कारक सुपुरायंप्राप्यतेसौख्यंस्वल्पस्नेहकुटुम्बिनः बहुचिन्तासमायुक्तधर्मकर्मविशारदः वाट्किामन्द्रयानञ्चविपाकेधनुवर्द्धनम् स्वल्पवक्ता
सुमूर्तिश्चतीक्ष्णबुद्धिभवेन्नरः सुखसंपतसमायुक्तमहत्वंमहतोभवेत् दंपतिरोगसंयुक्तःशत्रवोपिप्रियंवदः धनमित्रसुनारीणांचिरंनविद्यतेसुखम्
उच्चस्त्रीरतिसंप्राप्य कुमार्गेणधनंव्ययः बहुपीड़ामनोद्वेगं बंधुवर्गविनश्यति म्लेच्छानांप्रीतिजायंते शत्रुनाशोधनीभवः कदापापरतोधूर्त
पिशून्कर्मरतस्तथा जन्माद्धनयुतोभूयपुष्पमूलफलप्रिय पुत्रमित्रसुखंसर्वंसुपत्नीप्रियभाषिणी निजकृत्यधनाप्तिश्चउपकारीविचक्षण स्वार्चितं
धनयानञ्चनानाभोगसमन्वित निजधर्मरतोभूयकलत्रंसुमनोहरम् सकलंकभवेत्क्रूरसौम्यद्वित्रिभवतिच चौराद्बाकीटव्यालाद्बाभयंप्राप्यंति
दारुणम् कदापिकुमतिप्राप्तेकुसंगानात्रसंशय नृपात्मान्यधनंसर्वेप्रसिद्धोगुरुपूजक दिव्याभर्णवस्त्रञ्चदेवागारेसदारतिः प्रथमेपञ्चमेवर्षेषष्टमे
चाष्टमेतथा नानारोगेणपीड्यंतव्रणंज्वरविरेचनं बालक्रीड़ाक्रमंसर्वंग्रानंदंचापिकौशलम् भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय ग्रापदुद्धारणो
जाप्यसर्वकष्टोपिशांतये पितुचिन्ताविनश्यंतिद्रव्यलाभस्तुजायते ग्रष्टमेदशमेब्देचमंगलंजायतेगृहे नवनारीसमागम्यवस्त्रालंकारसंयुत द्वादशे
कादशेवर्षेरोगोद्भवविनाशनम् चञ्चलञ्चसुदीर्घायुपूर्वपुरायसुखप्रदा चतुःपञ्चदशेवर्षेपितृपीड़ाप्रजायते येनकिंचिद्धनंहानिंदुर्मतिजायतेध्रुवम्

षोडषेवर्षसंप्राप्तेज्येष्ठभ्राताविहर्षितः सप्तश्चाष्टदशेवर्षेनवनारीप्रियत्वताम् सुस्वरूपंसमाशक्तनिशामध्येतिचिंतनम् शशिविंशात्रिविंशाब्देलाभ
कृत्यस्यचिंतनम् गृहबंधुविरोधश्चविद्याप्राप्यतिन्यूनता चतुर्विंशाद्वसंप्राप्तेसुतोद्भवसुखंभवेत् षड्विंशेसप्तविंशेब्देसुमतिर्जायतेध्रुवम् द्रव्यलाभ
नसंदेहोस्वकुलंतोषितःसदा त्रिंशोद्वित्रिंशवर्षोवाकिंचित्खेदधनागमः विक्रमेलाभमाप्नोतिकुमतिश्चकदाकदा त्रिंशकेचद्वित्रिंशेवापुत्रकन्या
समायुत पत्नीकष्टविजानीयात् पश्चांतेचविसर्जनम् अनुष्ठानमहादानंभाग्योदयदिनेदिने त्रित्रिंशात्पञ्चत्रिंशाब्देपुत्रप्राप्तिनसंशय ग्रहपिमंगलं
कार्यवर्द्धतेचदिनेदिने षड्त्रिंशसप्तत्रिंशोवाव्ययलाभश्चदीर्घता मासेवर्षेसुखंप्राप्यगुप्तचिंताविशेषता अकस्माच्चमनोद्वेगंपुण्यकर्मोपिसौख्यदं
अष्टत्रिंशमितेवर्षेज्वरदाहेनपीड़ितम् गोदानात्सुखमाप्नोतिअन्नदानेनवासुखम् अहोत्रिंशमितेवर्षेदेहनिर्बलताभवेत् लाभाधिक्यंभवेतस्मिन
भृगुवाक्यनसंशय नभवेदाब्दमारभ्यअकस्माद्धनहानिनः चौराद्वालंपटाद्वापिअयत्नेधननाशनम् स्वेष्टदेवार्चनेपुण्यशिवमाराधनेनच मंत्रजाप
कुवेरस्यतस्यदोषनिवारणःखवेदादष्टवर्षांतंपुत्रपौत्रादिकंसुखम् तत्पश्चात्सप्तवर्षांतेकिंचित्कष्टसमन्वित द्रव्यलाभभवेल्लोकेसुपुण्यंसर्वसिद्धिदम्
दानमंत्रेणपुण्येणसून्यसप्ताब्दमायुषम् भुञ्जीतंसर्वसौख्याणिअंतेयशमवाप्नुयात् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो दफे रोजगार की वृद्धि हो और फिर मध्यम हो जावे चतुराई बुद्धिमानी से सिंभाल कर रोजगार के काम करे परन्तु नाकिस दशा में चिंता फिकर विशेष रहा करे तथापि सर्व अवस्था आनन्द में बीचे कभी किसी का आस्तीक न हो अपने कृत्य से निर्वाह करे एक समय ऐसा भाग्य उदय हो कि सर्व प्रकार के आनन्द भोगे पाप ग्रहों और क्रूर ग्रहों का पूजन दान मन्त्र उपाय करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त हों और कैसीही प्रबल पीड़ाहो उपाय से सब शांत हो आयु बड़ी हो पुत्र तथा ग्रह सुख की प्राप्ति के निमित्त संतान गोपाल का जाप्य कराना श्रेष्ट है वंश की वृद्धि हो पुत्र पौत्रों के सुख देखे एक जीव में विशेष प्रीति हो हीन दशा में विशेष चिंता और क्लेश हो परन्तु अन्त शुभ दायक है सर्व प्रकार कुशल होवे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव कुरुक्षेत्रमें जन्म ले नगर का प्रधान अति धनवान इज्जत प्रतिष्टा वाला था परन्तु वहां सूर्य ग्रहण में पंडाओं को हाथी घोड़े रथ बैल आदि जो दान मिलता सो आधे मूल्य में लेता था वह इसे बड़ा आदमी तथा प्रधान जान कर दे देते थे परन्तु पीछे अंतःकरण से क्लेश मानते थे तहां यह सत्तर वर्ष की आयु भोग मृत्यु को प्राप्त हुआ दान का धन भोगा ब्राह्मणों से क्लेश पाया तिसका प्रायश्चित कर सूर्य की आराधना करे तो पूर्ण सुख प्राप्त हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा कुन्डलीस्यफलत्विदं मनेच्छापूजितंलोके विलंबोनात्रसंशय युवावस्थायदाप्राप्य भाग्योदयविशेषत
द्रव्यलाभंभवेच्चापिस्वकृत्यकुशलोगुणी बहुकार्यरतोनित्यंसुमित्रेलाभवर्द्धनम् सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन्‌मानननीयोविशेषत आदौज्ञात्वामह
दुक्खंपुनःसंतोष्यमाप्नुयात् छलछिद्रोविरहितंनतुष्यतिकदाचन सत्मार्गेसुकृत्यञ्चस्वकुलेपोषणोरत प्रतिष्ठावर्द्धतेलोकेश्रेष्ठमूर्तिप्रियंवद अल्प
कष्टविशेषेणनूतनंजन्ममन्यते आयुपूर्णसुकर्मेणगुप्तचिंताविशेषत पुनर्बहुसुखंद्रव्यशुभकार्येधनव्यय मित्राणांप्रीतिकर्ताचनकश्चिद्दोषचिंतक
उद्यमीसाहसीप्राज्ञदाताशूरगुणान्वित नूतनोवार्तयादीर्घचिंतनीयंशुभप्रदा शरीरेपीड़ितोदीनंगुप्तखेदंचदुक्खित दातागुणगणोयुक्तसुशीलो
कांतिसंयुत राजद्वारेतिमानञ्चविद्यावान्‌धनीनर क्रूरपापग्रहानेष्टंविद्याबुद्धिविनाशकः वादीद्यु तेमतिर्लोलकृपणश्चऋणीभवेत् कफाधिकप्रशां
तश्चसुमुखोवाग्विचक्षण अपवादीतथाधूर्तकेलीक्रीड़ामहाप्रिय सुखदुक्खसमंपश्येत्अकीर्तिश्चनगरायते वाहनादिसुखंप्राप्यतप्यतेरिपुवोसदा
शत्रुप्रवलतांयातिः चिंतावृद्धिदिनेदिने नृपाद्भयसमायुक्तोनेत्रपीड़ाशिरस्तथा दंडलोहाग्निभीतिश्चकिंवावृत्तेप्रपातिता अयत्नेनकुकर्मेणधर्म
कीर्तिगुणंयश निश्चितंपश्यतेसर्वंमित्रशत्रुवदाचरेत् प्रथमेवह्निवर्षेचशिशुजन्ममहोत्सवं शरीरेकष्टसंप्राप्यज्वरव्याधीविरेचनं मातृचिन्तान्वितो
भूयकृष्यदेहञ्चद्रष्टय लवणान्नंघृतमिष्टं दानात्सौख्योह्यवाप्नुयात् तातलाभभविष्यंति पुनश्चमंगलंगृहे वेदवर्षसमारभ्य नागवर्षक्रमंतथा
बालक्रीड़ासमासक्तविद्यारंभनपठ्यति वृणरोगसमुत्पन्नोज्वरदाहेनपीडनं अन्नदानेततःकृत्वासर्वतोदिशिमंगलं मासेवर्षेसुखंज्ञात्वामंगलं
गृहमागम ग्रहवर्षेगतेकाव्यतथाचद्वादशाद्बके विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धितञ्चअहर्निशि कष्टव्याधिविनाशार्थंमहामृत्युञ्जयोजपेत् विवाहादि
व्ययोद्रव्यनवनारीग्रहागम चंद्रजीवपरंप्रीतिविशेषेमित्रतांव्रशेत् क्रीडितश्चविशेषणविद्याप्राप्यतिमंदता पूर्वपापविनाशार्थं आदौयत्नमहत्फलं
सर्वक्लेशविनश्यंतिपुनरंतेसुखप्रदा वन्हिमेकोहिवर्षाणिनंदचन्द्राब्दकंतथा तयोरंतरगतेकाव्यकामक्रीड़ाविमोहितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्य
मात्रोपिन्यूनता आपदुद्धारणोजाप्ययेनश्रेयोविनिश्चितं नभनेत्राब्दप्रारंभरसनेत्रगतेतथा अल्पकष्टविनश्यंतिक्षत्रचिन्ताविशेषतः क्रूरपाप

ग्रहापूज्यंकार्यंवृद्धिदिनेदिने द्रव्यलाभभवेच्चापिस्वकृत्यफलदायकम् नगविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षक्रमंतथा चित्तचिंताविशेषेणव्ययोलाभश्चमंदता विदेशेगमनंपूर्वंपुनर्लाभविवर्द्धितम् चित्तोद्यानन्दतापिस्यात्सुमित्रश्चमेलनम् पुत्रजन्ममहोत्साहोप्रायश्चितंसुयत्नत सुतापुत्रसमायुक्तोकांता युक्तंचमोदिता गुप्तशत्रुविरोधंतिगृहोपिक्लेशसंभव अकस्माद्व्ययसंभूयकेचित्कालविनश्यति शशिरामत्रित्रिंशाब्देपंचवन्हिगतेतथा चिंतये नूतनंकार्यपूर्वंलाभंचमंदता पुनर्दीर्घधनंप्राप्यसुकीर्तिख्यातिलोकमा गुप्तकष्टविशेषेणपीड्यतेचकदाकदा आलस्यंजायतेदेहोनिर्बलत्वंचगुप्तता औषधिपुण्ययत्नेनचिंतारोगविनाशनम् अतःपश्चात्महल्लाभंव्ययदीर्घमुपस्थित जायाकष्टविशेषेणपुनरंतेविनश्यति रसवन्हिगतेकाव्यव्योम चत्वारिकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सर पुण्यफलोदयंवत्सदासदासिश्चमोदिता सुदुग्धंमहीषीगावंचतुष्पादादिवाहनं नवनारी सुशोभंतेपुत्रपत्नीमनोहरम् बहुकीर्त्याधिकारोचजातिमध्यप्रशंसित शशिचत्वारीसंप्राप्यरसवेदाब्दकेतथा एतत्कालावधिंप्राज्ञसर्वसौख्या न्वितोभवेत् अकस्माज्जायतेविघ्नदानमंत्रेणशांतये नगचत्वारिवर्षाणिनभपंचक्रमेणवै भाग्योदयविशेषेणभूमिप्राप्तिश्चनूतनम् पंचबाणगते वर्षेपत्नीसौख्यविनाशनम् नभषष्टावधिंतातपौत्रजन्ममहोत्सव रसषष्टमितिमायुनिधनंपूर्वयाम्यके ।। भाषा ।। इस कुण्डली का फल यह है कि विलंब से मन की कामना पूर्ण हो रोजगार लाभ बढ़े युवावस्था में विशेष भाग्य उदय होगा बड़े बड़े रोजगार करे किसी से मिल कर धन का विशेष लाभ हो प्रतिष्ठा बढ़े पश्चात में मन की अभिलाषा पूर्ण हो प्रथम बहुत जीव को दुख माने फिर संतोष हो जाये यह जीव विशेष छलछिद्री न हो और छल को पसंद न करे नेक नियत के रोजगार से पालन करने की अभिलाषा करे कीर्ति प्रतिष्ठा बढ़े श्रेष्ठमूर्ति हो एक अल्प से बचे नया जन्महो फिर पूर्ण आयु भोगे परन्तु गुप्त चिन्ता विशेष रहे फिरभी यह जीव पुण्यके प्रभावसे बड़े २ सुखदेखे शुभकार्यमें धनखर्चहो मित्रोंसे प्रीति करे किसी का बुरा नचाहे हिम्मत वाला शूरवीर तथा चिंतवन करे कभी २ दर्द सा हो जाया करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव प्रयाग नगर में यवन जाति था अपने षट कर्म से सावधान हो ईश्वर का भजन करता सब के पंथ को मानता त्रिवेणी में स्नान कर कुछ दान करता रहा तिस कारण विशेष पुण्य का भागी हुवा परन्तु विशेष धनी होने के कारण विषयो अधिक हो गया विशेष उच्च जाति की कन्याओं को भोगने के कारण पाप का भागी हुवा सो ब्राह्मणों की कुवारी कन्याओं को भोजन वस्त्र आभूषणादि से पूजन करे तो परम सुख प्राप्त करे ।।

श्रीगणेशायनमः दीर्घोवलीग्रहाचेयंप्रतिष्ठाभाग्यवर्द्धनं राजद्वाराधनासिद्धतीर्थदेवालयेरतः बहुपीड़ामनोद्वेगंबंधुवर्गप्रतप्यते वेदशास्त्रानु
रक्तश्चगुणग्राहीभवेन्नरः शौर्याद्धनमवाप्नोतिजराब्धोशत्रुमर्दनः नानाचतुष्पदाद्यश्चयशकीर्तिविवर्द्धनः देवतागुरुभक्तश्चसौम्यमूर्तिसुखीनरः
मिष्टानलवणंभोज्यंपक्वमूलफलप्रिय भक्षतिसहमित्रश्चआरामेवानदीतटे सर्वकार्याणिसिद्धंतिहीनसंगान्नसंशय वीर्यवान्पुत्रसंभूयकलत्रंप्रणात
शुभम् धर्मेणधनवृद्धिश्चवृतदानादिसंयुत वलभोतिसुमूर्तिश्चभूधनंवर्द्धतेगृहे क्रूरग्रहाप्रभावेणनिष्टरंरौद्रभाषिणम् वधात्मकंदयाहीनंपापकर्म
प्रफुल्लितः पुत्रसौख्यप्रसुयत्नेनकन्याभवतिसुन्दरी पितुरंलाभकारीचजन्माद्धनसमागम श्रीपतिविदितंलोकेस्वार्थीत्वमुपजायते क्रूरेबंधुविरो
धीचकृपणंजायतेन्नरः सौम्यसोदरभक्तश्च बांधवैसुखदायक लोकेप्रशंसितासर्वे परकृत्यश्चसाधक विद्यावान्चतुरोप्राज्ञ द्रव्योपार्जनतत्पर
पुण्यकर्मरतोनित्यंअन्नदानविभिक्षुकम् ईश्वराराधनेभक्तसत्यभाषणतत्पर पुनःपुनःधनंप्राप्यरोगशांतिश्चजायते वृणचिह्नयुतोदेहसत्यासत्य
परीक्षक कामाशक्तमनोन्मत्तोबुद्धिशून्याभिजायते जीवचिंताविशेषेणगुप्तध्यानश्चचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्चदानमंत्रादिपूजनम् लग्नेशोपि
तथापूज्यमनेच्छापूजितंशुभम् अपूज्यंप्रवलोचिंताधनलाभोपिन्यूनता जीवचिंताविशेषेणशत्रुपीड्यश्चवलेशिता अर्द्धकार्योपिद्रव्यंचतस्मा
द्यत्नंचकारयेत् वृहत्शोकार्यकर्ताचव्ययलाभविशेषतः सिद्धंतिसर्वकार्याणिआनंदेनसमायुत प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमात
महाचिंतोबालवृद्धिअहर्निशि तृतीयेपंचमेषष्टेवृणखेदंचदारुण ज्वराप्राप्तविशेषेणपुनरानंदसंभव गुडगोधूमदानंचबालासद्यसुखंलभेत मिष्टं
मनोहरोवाक्यंतातमातोतितुष्यति बहुक्रीड़ाकृतेलोकेशिशुसंगोपिमोदिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेअक्षराभ्यासचिन्हतम् मंगलंसौख्यसंभूयगृहगान
महोत्सवम् पितुलाभभविश्यंतियात्राचिंतनंकृत मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाकष्टपीड़ाविनश्यति ग्रहवर्षगतेवत्सशशिचंद्राद्धकंतथा बालप्रीतिविशेषेण
चित्तक्रीड़ेनतत्पर विद्याभ्यासभवेन्यूनं बहुमान्योपिबालक भ्रातभग्नीसमायुक्तो मोदतेचापिभार्गव चित्तोद्यानंदवृत्तिस्याच्चपलत्वंमनोहर
द्वादशाब्दोपिमारंभ षष्टिचंद्रादनंतरं उद्वाहंचास्यसंभूय भाग्यवृद्धिश्चद्रष्टयः तातकीर्तिविशेषेण बहुद्रव्यव्ययेयोभवेत् बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यं

मात्रोपिसिद्धति कामकेलिसमायुक्तोजीवध्यानश्चविह्वल रूपयौवनसंपन्नोदिव्यवस्त्रविभूषितं नगचंद्रश्चविंशाब्देपत्नीसौख्यसमायुत गुप्तचिंता विशेषेणहृदेध्यानश्चचिंतनम् सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्शांतोमधुरभाषिणा कदाकालेमहाकोपंचित्तचेतविनश्यति शशिनेत्रगतेवर्षेत्रिंशत्वर्षा वधिततः प्रायश्चितंसुयत्नेनपुत्रकन्यासमायुत द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यास्वकृत्येकुशलोगुणी क्षत्रचिंताविशेषेणाभूयसेचदिनेदिने कष्टव्याधी विशेषेणगुप्तपीड्यश्चचिंतनं दर्शनेरिपुनिंदंतिकदापिदेहव्याकुलम् अतिलाभप्रतिष्ठाचवर्द्धयंतिदिनेदिने कनकंरजताभर्णासुवस्त्रंवर्द्धतिगृहे शशिरामगतेकाव्यसून्यचत्वारिकेतथा विवाहादिव्ययोदीर्घसुकीर्तिख्यातिमोदिता चित्ततृप्तिमनस्तोषंभृगुणापरिभाषितम् बहुलाभनसंदेहो भविश्यतियथाचितम् उरुरोगसमुत्पन्नोपुत्रकष्टेनपीड़िता तद्धंतोपुतनायांचउत्तारंकारयेत्सदा लवणांचघृतदानंकारयेद्यत्नंसाधने अतःपरि सुखंदीर्घंदासदासिश्चवाहनम् चंद्रचत्वारिवर्षाणिनभपंचावधितथा गुप्तचिंताविनश्यंतिदीर्घकार्यमहद्धनम् भूमिलाभविशेषेणानूतनंमंद्रवाहनं तीर्थयात्रारतोदीर्घपुण्यकर्माणिसंचय पूर्णसौख्यसुतंभृत्यसुयत्नंफलदायक अनादरस्तुशत्रुणांराजद्वारेप्रतिष्ठितम् सून्यषष्ठमितिमायुपुण्य कर्मबृहत्वतां ईशध्यानमहत्सौख्यंप्राप्यतेपरमंपदम् ।। भाषा इस कुण्डली में ग्रह बड़े बलवान हैं इज्जत प्रतिष्ठा वाला भाग्यवान हो सब तारीफ करें सलूक करने वाला विद्यावान चतुर धन कमाने वाला पुण्य के काम करे भूके को दे ईश्वर का भक्त सत्यभाषण करने वाला कई बार बहुत धन प्राप्त करे रोगों से बचे सत्यासत्य को पहिचाने शरीर में फोड़े का चिन्ह हो कामदेव की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो जाया करे जीव की चिंता को गुप्त रक्खे लाभेश पंचमेश और लग्नेश इनकी पूजा दान मन्त्र जाप आदि श्रद्धा पूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी बिना यत्न किये अधिक क्लेश पावे धन का संदेह जीव की चिंता आदि हो गुप्त शत्रु विशेष हानि पहुँचावे शरीर में पीड़ा रहै काम होता होता रुक जाय तथा अधूरा हो जाया करे इस जीव को बड़े बड़े भारी खर्च के काम आवें परन्तु सब पूर्ण उतर जांय सुन्दर स्त्री धन पुत्र इत्यादि के सुख केवल पुण्य के प्रभाव से ही प्राप्त होते हैं हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव श्री अयोध्या जी के पंडा के घर में जन्मा बड़े बड़े दान पुण्य लेता और धन का ब्याज खाता था विषय वासना विशेष प्रीति रखता शतरंज खेलता और अपना समय आनन्द में बिताता था विशेष दान का पतिग्राही हुवा कुछ भजन न किया तिस से दोष का भागी हुवा सो अब दीनों को यथाश्रद्धा दान दे और अपने इष्टदेव का भजन करें तो सब काम पूर्ण होवें ।।

श्रीगणेशायनमः एतेसर्वग्रहायत्रकुन्डलीस्यफलत्विदं श्रमंकष्टविशेषेणधनंतिष्ठितोगृहे व्ययदीर्घमुपस्थित्वालाभकृत्यंधनागम साहसीउद्यमी
चैवअन्यवार्ताचतौलक चातुर्थंबहुज्ञाताचअन्यमेदोपिलक्षित श्रेष्ठकृत्याश्रयोलाभंस्वकुलंपोषितसदा गृहेद्रव्यश्चन्यूनोपिकार्यंहानिनदृश्यते
मानकीर्तिसमायुक्तगुप्तभीतिस्तुचिंतनं गृहबंधुविरोधश्चनारीक्लेशप्रवर्तक युवावस्थायदाप्राप्यद्रव्यचिंताविशेषतः अकस्माज्जायतेलाभंचित्त
मोदेनपूरिताः कार्यद्व शरक्षार्थंदानमंत्रयथाविधिः द्वयोअल्पविशेषेणदानमन्त्रेणशांतये गृहपीड़ाविनश्यंतिगायत्रीजाप्यनित्यश पूर्णायु
भोग्यतेलोकेमनेच्छासर्वपूजिता सत्यभाषीसुमार्गीचपरकृत्यस्यसाधक विनीतश्चतुरोधीमानसुकीर्तिपात्रलोकमा वृणाचिन्हभवेद्गात्रेमध्य
जानुर्महाबल प्रतापीशीलवान्पुन्स गुप्तचिंतातुरोभवेत् पृथ्वीनाथाज्जयंप्राप्तिशत्रुचास्यविनश्यति अतिलोभीस्वयश्चारीपापखेटातिदुक्खदं
रिपुणांकष्टदाताचकुमतिर्बहुसंतति विदेशेधनहानिश्चतप्यतेपितुबांधवा द्रगंपीड़ान्वितोभूयअथवास्वल्पद्रष्टय अंगनाप्रीतिकारीचरूपयौवन
लुब्धके सर्वसंपत्समायुक्तोमध्यस्नेहकुटंबिनः विक्रमेस्वल्पप्राप्तिश्चभ्रातरोपिनमन्यते रणशत्रुक्षयंयांतिवाहनादिसुखंभवेत् द्विजदेवार्चनेप्रीति
रिपोपिदासवद्भवेत् भोगमैश्वर्यसंयुक्त कीर्तिविख्यातिभूतले धनमित्रतथानारीसुखंनविद्यतेचिरं पुत्रमित्रान्वितोपुन्ससुपत्नीप्रियभाषिणी
स्वार्जितंधनयानश्चनानाभोगसमन्वित धर्मात्मकंदयायुक्तं नयसेवारतःसदा प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाविरेचनं तातमातमहाचिंताकिंचित्कालो
पिशांतये तृतीयपञ्चमेवर्षेषष्टमेसप्तमेतथा किंचित्कष्टशरीरेणपत्नीयोगोपिजायते विद्यायापाठनंकृत्वामासेवर्षेसुखंगत तातलाभभवेल्लोके
बालक्रीड़ासुखप्रदा अष्टमेनवमेवर्षेदशमेद्वादशेतथा पत्नीलाभविजानीयाद्विवाहोत्सवमंगलं वित्तव्ययंप्रतिष्टाचमानकीर्तिधरातले वन्हिचंद्र
मितेब्देतुशरचंद्राद्वकेतथा पत्नीप्रीतिविजानीयात्कामबाणप्रपीडयेत् तत्पश्चाद्विंशवर्षांतंसंततिजायतेध्रुवम् बहुभोगसमायुक्तोस्वरूपंद्रश्यं
व्याकुल एकांतेचिंतनश्चापिनप्राप्यंतेतिदुक्खिता चंद्रविंशमितेवर्षेबाणविंशाद्वमध्यमा रोगशोकभवेद्देहोबहूकालेनतिष्टति मानसीगुप्त
चिंताचजायादेहरुजंभवः औषधीदानमंत्रेणसर्वकष्टविनश्यति षष्टनेत्रगतेवर्षेत्रिंशवर्षसमागमः पुत्रपुत्रीसुखीलोकेआनन्दंभूविमण्डले

धनलाभस्तुजायंतेगुप्तचिंताहृदेस्थित अनादरस्तुशत्रुणांमानकीर्तिश्चवर्द्धते नूतनंकार्यचिंताचविचारोबहुजायते संतत्कष्टसमुत्पन्नदानमंत्रेण नाशनम् चंद्ररामामितेवर्षेबाणत्रिशाब्दकेतथा महाविपत्तिकालश्चशोकचिंतातिदुःखितम् स्वर्णस्यप्रतिमाकार्यचंद्रमुद्राप्रमाणकी ताम्रकुम्भ घृतेधृत्वासंकल्पंब्राह्मणंददेत् महामृत्युञ्जयोजापंसर्वापत्तौनिवारणम् लाभश्चविविधंवत्सजायतेनात्रसंशय षष्टत्रिंशसमारम्भचत्वारिंशाब्दके तथा अनादरस्तुशत्रुणांलाभप्राप्तिस्तुजायते सुतापुत्रप्रवर्द्धन्तेआनंदेनसमायुत उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवम् मासेवर्षेसुखंजातं लोकेग्रामप्रतिष्ठया चंद्रवेदगतेवर्षेधनलाभोपिनित्यश नेत्रवेदमितेकाव्यसून्यबाणगतेतदा सर्वसौख्यविजानीयात्मानवृद्धिदिनेदिने धनव्ययं शुभेकार्यविवाहोत्सवमंगलं वायुकष्टशरीरेणचित्तखेदोपिजायते भगवत्याराधनंकृत्यसर्वाबाधेपिजाप्यकं सर्वरोगविनश्यंतिआनंदंगृहमंडले सर्वसौख्यसमुत्पन्नदानधर्मस्यकारणम् सून्यसप्ताब्दपर्यन्तेसर्वआशाप्रपूरकः बहुलाभव्ययोलोकेकीर्तिहर्षप्रतिष्ठितः कार्याणिसकलांलोके सिद्धतिलघुद्रव्यत पञ्चसप्ताद्धिमायुश्चभुञ्जतेसुखतोभुविः तत्पश्चाद्युग्ममासांतव्याधिश्चैवविरेचनं दानपुण्यप्रकर्तव्यारामनामजपेन्पुखः मृत्युरेवविजानीयाजेष्ठमासेसितेतरे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है बहुत से परिश्रम और उद्योग करे परन्तु विशेष धन जमा न हो खर्च विशेष रहे रोजगार करे बड़ी हिम्मत वाला हो दूसरे की बात को तोले श्रेष्ट आमदनी में कुटुम्ब का पालन करे कैसी ही धन की न्यूनता हो परन्तु खर्च का काम कभी न रुके इज्जत से काम हो जाय चित्त में भयसा रहा करे परन्तु भाई बन्धु अपनी सम्मति के नहीं युवावस्था में कई बार धन की चिंता होकर अकस्मात् लाभ हो वंश की वृद्धि हो दान मन्त्र करता रहे घरकी पीड़ा का यत्न करे एक बार कहीं से धन मिले सारी अवस्था में दो अल्प भारी आवें दान मन्त्र उपाय तथा पुण्य के प्रभाव से आयु बढ़े मनोकामना पूर्ण हो सत्य भाषण और पर कार्य करने से भलाई पावे चतुर बुद्धिमान् हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्रि कुल में नीच योनि से उत्पन्न हुवा बड़ा शूरवीर बलवान सेना का अफसर था युद्ध विद्या में अति चतुर था एक समय संग्राम में बलवान शत्रु से हार होती जान छल से उसकी सेना के निवास स्थान से सुरंग लगाय अग्नि दे दी तिस से उस राजा का सम्पूर्ण वंश नष्ट हो गया और पाप का भागी हुवा तिसी निमित्त चींटीनाल जिमावे और ब्राह्मणोंको विशेष दान दे तो पाप शांत हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेसमुत्पन्नंधनधान्योभविष्यति जन्मतोमातृबाधायांमासेमासेसुखंगत मध्यभागीसुबालोयंबहुचिंताचगुप्तता विशेषो
द्रव्यसंप्राप्यलाभयोगोपिनूतनं व्ययदीर्घमुपस्थित्यनोधनंतिष्ठतिगृहे आयातश्चगतोद्रव्यंवृहत्वोकार्यसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणभ्रमोपिबहु
मन्यते संतोषीसाहसीप्राज्ञनिंदकोनैवकश्चन परकृत्यंसाधकोधीमान्श्रेष्टकार्यरतोभवेत् चिंताकार्यंवृहत्वोपिसर्वेपूर्णसुखान्वितः सुमित्रमेलनं
चापिमिष्टबाणोसुभाषित पञ्चमेशोपिसंपूज्यदानमंत्रयथाविधि सुतापुत्रसुखंलोकेकुलवृद्धिश्चलाभदं जीवश्चाशाप्रपूज्यंतेअल्पायुयोगनाशनं
पूर्णायुजायतेलोकेमहादानफलप्रदा पापकूरग्रहापूज्यंभाग्यवृद्धिअहर्निशि अयत्नेनतदाकाव्यअर्द्धप्राप्तिनसंशय चंद्रस्त्रियंमहाप्रीतिप्रसन्नो
रूपचिंतनं प्रथमेद्व रुजंप्राप्यद्वितीयेचविशूचिक वह्निवर्षेचपञ्चाब्देव्रणपीड़ासमुद्भव भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंग्रहमंडले महामृत्युञ्जयोजाप्य
दीर्घरोगविनश्यति अन्नरसघृतंदानेविपाकेसुखवर्द्धनं तातचिंताविशेषेणजायतेचकदातदा रसवर्षगतेकाव्यनगनागश्चनंदके बालक्रीड़ा
कनंवर्षंतातसौख्यप्रदोभव सुविद्यारंभसंप्रीत्य पठ्यन्तेचविसर्जनं नवनारीगृहागम्य मंगलश्चमहोत्सवम् ज्वरदाहप्रकोपेन निर्बलत्वंचद्रष्टय
पूर्वदानंसुयत्नेनअल्पायुयोगनाशनम् दशमेद्वादशेवर्षेतथापञ्चदशेकवे व्ययोतातधनंदीर्घउद्वाहंचास्यनिश्चितं स्वजातिकीर्तिसंप्राप्ययत्रकुत्र
प्रशंसित गुप्तशत्रुसमुत्पन्नोतातक्लेशसमन्वित तथापिसर्वकार्याणिनिर्विघ्नजायतेसुखं जीवप्रीतिहृदेगुप्तंमित्रतांबहुजायते हृदेध्यानसुसंचित्य
रूपयौवनलुब्धक रसचंद्रगतेवत्ससून्यनेत्राद्वमध्यमा कामकेलिसमासक्तमदेनालस्यदेहिना सुविद्यामध्यमाप्राप्यकार्यमात्रसुलाभदं किंचित्कष्ट
शरीरेचबृहत्वोवद्धतेपुनः आपत्तौकालमायातजायादेहोपिपीडनम् चंडीपाठंतदाकृत्वासर्वाविधितिसंपुटं हवनंब्राह्मणंभोज्यश्रद्धाभक्तिश्च
तत्पर सर्वापत्तौविनश्यंतितदांतेसौख्यसंभव शशिविंशेब्देसंप्राप्ययावत्पञ्चद्वयाद्वके तावत्कालगतेकाव्यभाग्यवृद्धिश्चचिंतनं मध्यलाभव्ययो
दीर्घकुलबंधुविरोधिता गुप्तक्लेशविशेषेणक्षत्रचिंतादिनेदिने प्रायश्चित्तकृतेपापंदानमंत्रयथाविधि धनपुत्रसमायुक्तोमोदतेचापिभार्गव सुपुण्यं
प्राप्यतेसौख्यंकुकर्मोक्लेशभोजन कर्माधीनजगत्सर्वंसुकर्मसाधयेद्बुध रसविंशाद्वमारभ्यव्योमरामाद्वमध्यमा सुतापुत्रसमायुक्तोसपत्निमोदसंभव

लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यलाभसुखोद्भवः सुवर्णंरजतंताम्रं प्राप्यतेवस्त्रभूषणं मनेच्छापूजितोपूर्वंपुनश्चनूतनोभव शशित्रिंशात्रिविंशाब्देपञ्चवन्हि गतेतथा सुतकष्टविशेषेणज्वरतप्तोपिचिंतनं छायापात्रकृतेदानंशीघ्रशांतिश्चजायते पुनर्मंगलमायातउद्वाहश्चमहोत्सवम् नवनारीसुगायंति राजितंगृहसुन्दरम् पूजादानतथामंत्रप्रायश्चित्तफलप्रदा रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशाब्देमध्यमा नानामंगलकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्ति विशेषेणपददीर्घमुपस्थित द्रव्यलाभविशेषेणहर्षवृद्धिसमागम तत्पश्चात्पञ्चवेदाब्देईशध्यानात्सुखावहम् ग्रामभूमिधनंप्राप्यमंद्रचैवोपिनूतनं गुप्तचिंताविनश्यन्तिशत्रुनाशंभवेध्रुवं राजद्वारेमहल्लाभंपुत्रभाग्योविवर्द्धितम् दानपुण्यरतोदीर्घतीर्थदेवालयेरत सून्यपञ्चावधिकाव्यपौत्र जन्ममहोत्सवम् चित्तोदारविनीतश्च अतिमोदेनपूरिता बातपीड़ाप्रपीड्यंते ज्वरतप्तोविरेचनं स्वर्णस्यप्रतिमादानं आपदुद्धारणंजपेत् तेनसौख्यमवाप्यंतेसर्वव्याधीविनाशनम् पुत्रपौत्रसमायुक्तोवृहद्भाग्योप्रशंसिता शशिपञ्चाद्भमारभ्यरसपंचक्रमेणवै चित्तआशाप्रपूज्यंतेवाहना दिसमन्वित भूमिलाभविशेषेणग्रामप्राप्तिसुखोद्भवः प्रायश्चित्तकृतेपूर्वंपापशांतिश्चयत्नत पूर्णसौख्या[illegible] रीचनात्रकिंचिद्विचारणं सून्यसप्त मितिमायुभुञ्जीतोपुण्यमानवा अंतेसत्यपुरङ्गत्वाइहलोकेप्रशंसितम् ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि यह जीव चिंता फिकर सिर पर विशेष झेले और बड़े २ लाभ उठावे आमदनी की सूरत बनी रहै परन्तु खर्च के कारण धन जमा न हो आवे सो खर्च हो जावे परन्तु कैसा ही भारी काम हो ईश्वर की कृपा से सब इज्जत प्रतिष्ठा के साथ पूर्ण हो जाय तिससे लोग भरम बहुत गिने भले आदमी इज्जत करें किसी से तृष्णा न रक्खे संतोषी वृत्ति हो हिम्मत वाला हो किसी की निंदा से प्रयोजन न रक्खे परकाजी हो श्रेष्ट रोजगार करें कई बार विशेष चिंता के काम आवें सब पूर्ण उतर जांय मित्रों से मेल रहै मिष्ट वाणी बोले किसी को कठोर वाक्य न कहे बहुत निष्प्रयोजन न बोले पंचम स्थान के ईश की पूजा और दान मंत्रादि से पुत्रों का विशेष सुख मिले जीव की आशा पूर्ण हो अल्पों के दान मन्त्रादि उपाय कराने से आयु की वृद्धि को श्रेष्ट है हे शुक्र पहिले जन्म में ये ग्वालवंशी था विशेष धनवान हो कुवां खुदवाता था तिस भूमि से परिपूर्ण खजाना मिला प्रसिद्ध होने से कुछ द्रव्य राजा ने लिया कुछ उसके पास रहा इसने खूब आनंद भोगे बिना परिश्रम से प्राप्त हुवा धन पुण्य में कुछ न लगाय सब भोग में खर्च किया तिसी से पाप का भागी हुवा तिस निमित्त भूखों को अन्नदान दे ब्राह्मणों को तिलों में स्वर्ण छिपाकर गुप्तदान करे तो मनवांछित फल मिले धन संतान की वृद्धि हो ग्रह पीड़ा शांत हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीयफलंश्रेष्टंविशेषोभागवानग्रहा चंद्रखेटाफलंनेष्टंविशेषोहानिकारकः तस्यशांतिप्रयत्नेनभागवृद्धिश्चजायते पापक्रूर
ग्रहापूज्यंविशेषोफलप्राप्नुयात् जीवचिंताविनश्यंतिद्रव्येलाभदिनेदिने रविभौमगुरुकेतुपूजनीयंविशेषतः मंत्रजापतथादानंसर्वतोकुशलं
भवेत् उद्योगलाभकृत्यञ्चविलंबोकार्यसिद्धति व्ययदीर्घविशेषेणग्रहक्लेशञ्चपीड़ितं गुप्तशत्रुभवेल्लोकेसर्वदाहानिकारक सायत्नंनिस्फलंसर्वं
मित्राणांप्रीतिसंभव शुभकृत्यविशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवं उद्वाहोमंगलंकार्यंमीर्शमानादिसेवितं चिंतातद्रूपवर्नतेआनंदंभुविमंडले अकस्मा
द्व्ययमायातनूतनंजन्ममन्यते नूतनोवार्तयाचिंतलाभमित्रोपिचिंतनं सर्वभोगोपिभुञ्जीतंआयुपूर्णभविष्यति हर्षशोकसुखंदुःखंभुञ्जीतोकर्म
बंधनं सर्वचिंताविनश्यंतिपुण्यकर्मेणभोकवे नानामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवासरे जलोभयंकदाकालेकिंवाउच्चेप्रपातिता बहुद्रव्याधिकारीच
चोरभीतोपिगुप्तता आदौसौख्यविशेषेणपुनरंतेचमन्दता पूर्वपापप्रभावेणदशानेष्टभयप्रदा प्रायश्चित्तकृतेसंतसर्वावस्थाचमोदिता सुतापुत्र
सुखंलोकेवंशवृद्धिविशेषतः प्रथमेपञ्चमेवर्षेगर्भपीड़ामहद्भयम् मासेमासेसुखंप्राप्यदंतवाधाविरेचनं ज्वरतप्तंतदांतेचवृणविस्फोटकादय मातृ
चिंताविशेषेणरात्रौनिद्रानप्राप्यते घूटिकासेवनंचैवदानधर्मादिसञ्चय तेनकष्टविनश्यन्तिबालवृद्धिश्चमोदिता तातप्राप्तिभवेल्लोकेबालक्रीड़ा
मनंदिता सुवर्णरजिताभर्णावेष्टितासुन्दरंप्रियः तातमातमहामोदंमातृपीड़ासमुद्भव अतिकष्टभयंप्राप्यभ्रातजन्मेसुमन्दिरे मासेवर्षेसुखंगत्वा
बालवृद्धिअहर्निशम् पञ्चमेषष्टमेवर्षेचाष्टमेदशमेतथा विद्यारंभमहोत्साहोपत्नीयोगश्चश्रूयते नवनारीगृहागम्यनृत्यगानसुमोदिता पितुलाभ
विशेषेणव्ययोपिजायतेध्रुवम् पुनरंतेमहाकष्टंपुण्यकर्मेणशांतये महल्लाभप्रभावेणसर्वचिंताविनश्यति विद्यामध्यमापठतिक्रीड़ाशक्तविशेषतो
कामाक्तंशिशुसंगेगुप्तवार्तानकथ्यते मासेवर्षेसुखंकार्यंभृगुणापरिभाषितः शशिचंद्रगतेवर्षेसरचंद्राक्रमंतथा गृहमंगलमायातउद्वाहोचास्य
निश्चितम् कुलबंधुसमायातसुकीर्तितातसंभव पत्नीलाभभवेल्लोकेरूपयौवनचिंतनं कामक्रीड़ामनस्थित्वानिशानिद्रानप्राप्यते मासेवर्षेसुखं
प्राप्यमनेच्छासर्वपूजितं निजकृत्यसुदक्षश्चलज्जावंतोसुचिंतक भ्रातभग्नीसमायुक्तोमंगलंद्रश्यतेगृहे बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रोभविष्यति

शोडशाद्धगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिततः चंद्रजीवपरंप्रीतिग्राशक्तं मित्रतांद्रश गुरुध्यानविशेषेणालोकलज्जानकथ्यते द्रव्यलाभोपिज्ञातव्याकार्य मात्रसिद्धति पत्नीकष्टनपीड्यंतेदानमंत्रसुखावहं सर्वकष्टविनष्यंतिप्रोदयंतिदिनेदिने कामक्रीड़ाविशेषेणभुञ्जीतोलोकमानव विद्याबुद्धि विशेषेणवृहत्वोजायतेध्रुवं शशिविंशगतेवत्सत्रिंशवर्षावधिक्रमं पत्नीगर्भान्वितोभूयपुत्रकन्याचप्राप्तये मंगलंप्रोद्तेभूमौतातमातोतिहर्षित भार्यादीर्घरुजंप्राप्य जीवग्राशापरित्यज महामृत्युञ्जयोजाप्य छायापात्रविधानत पुनःसौख्यभवेलोके धनवृद्धिदिनेशुभं शशित्रिंशगतेवर्षे भाग्यवृद्धिश्चमोदिता उद्वाहोपिसुतापुत्रमंगलंप्रतिवत्सरे सुदुग्धंमहिषीप्राप्यव्ययलाभोपिदीर्घता चत्वारिंशावधिकाव्यचित्तचिंताविनाशनम् युग्मकन्यात्रिपुत्रश्चसंजातोभूविमंडले वृहत्वोधनमायातउच्चकृत्याधिपोभव नवनारिसुशोभंतेराजतेशुभमन्दिरम् शशिचत्वारिमारभ्यनाग वेदाद्धकेतथा वृहत्वोकष्टसंपन्नज्वरतस्तविरेचनं सर्वाबाधाविनिर्मुक्तोइतिमंत्रंचसंपुटी चंडीपाठंसुयत्नेनशीघ्रशांतिश्च जायते श्रद्धाभक्तिस्थितो यत्रसर्वकार्यंचसिद्ध्यति ग्रायुबृद्धिभवेलोकेसुयत्नंशुभमंगलं तत्पश्चाद्दष्टवर्षांतंपौत्रजन्ममहोत्सवम् पुत्रभाग्यवृहत्वोपिराजद्वारेप्रतिष्टतम् ग्रारामं वापिकामन्द्रं दासदा।सश्चवाहनं धनरत्नसुहृतंमित्रंराजतेपुरायसंपदा सून्यसप्तमितीमायुभाष्यतेमुनिसत्तमः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली में बड़े २ भाग्यवान ग्रह पड़े हैं परन्तु एक ग्रह ने फल न्यून सा कर दिया नहीं तो पृथ्वी पर बड़े २ ग्रानंद भोगता सो ग्रब भी पाप ग्रहों तथा क्रूर ग्रहों के दान मंत्र उपाय पूजा ग्रादि करने से फल प्राप्त होगा जीव की चिंता मिटेगी शुद्ध चित्त से मंगल सूर्य बृहस्पति ग्रौर केतु का दान मंत्र जाप कराने से श्रेष्ट फल की प्राप्ति होगी ग्रौर कुशल रहेगी ये जीव लाभ के उद्योग में रहे परन्तु मरजी के माफिक कार्य विलम्ब से बनेगा ग्रौर काम की सिद्धि होगी बड़े बड़े खर्च सिरपै झेले घर में पीड़ा क्लेश हो जाया करे एक शत्रु गुप्त नुकसान चाहता रहे परन्तु कुछ न हो सके मित्र में मन फंसा रहै ग्रौर शुभ काम में विशेष धन खर्च हो बड़े २ फिक्र ग्रौर ग्रानन्द देखे एक समय नया जन्म हो चित्त में नई बात सोचे मित्र की ग्रौर लाभकी बातोंमें चित्त लगारहै यत्नसे ग्रायु पूर्णहो हे पुत्र पूर्व जन्ममें ये जीव शिव मन्द्रका पुजारी था चर्स भंग बहुत पीता ग्रौरों को पिलाता एक समय शिवरात्रि को फालगुन के महीने एक राजा ने शिवजी के निमित्त स्नान करने को स्वर्ण के घट प्रदान किए सो कुछ दिन बाद ये पुजारी उन्हे बेच ग्राया उसके धन से खूब चर्सभंग पिया मालउड़ाए ग्रौर शिवजीका पूजन करतारहा सो तिस निमित्त गुप्तस्वर्ण दानदे ब्राह्मणों को प्रसन्न करे तो मनोकामना पूर्ण हो

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंफलमेतद्विजायते पददीर्घसुपस्थित्यनकश्चित्पीडितंकदा बुद्धिमंतोविशेषेणसर्वेशांशुभचिंतक उद्यमी
साहसीचैवसर्वकृत्यस्यसाधक आलस्यरहितोजीवंनिजलाभस्यचिंतक प्रियमित्रहदेध्यानंशुभकृत्यरतःसदा सुकीर्तिप्राप्यतेलोकेआशाच
बहवोजना श्रेष्टआभूषणंवस्त्रंवेष्टितोगृहसर्वदा अचानकंउपद्रोपिबहुचिंतानमन्यते मंत्रसंतानगोपालंवंशवृद्धिसुलाभदं पुत्रलाभविशेषेण
मनेच्छासर्वपूजिता ग्रहपीड़ाभविष्यंतिरिपुभीतिस्तुचिंतनं कदापिसमयेवत्सअकाणेभयदीर्वता युग्मअल्पविशेषेणआयुपूर्णोपिजायते
वन्हिसप्तमितेवर्षेद्वादशेनेत्रविंशके द्वित्रिंशचंद्रचत्वारोएतेवर्षेचपीड़ित पापक्रूरग्रहापूज्यंशीघ्रशांतिश्चप्राप्यते वृणचिह्नशरीरोपिलिंगजंघाति
लंद्रश कामाशक्तं विशेषेणमिथ्यावीर्यविनाशक व्ययलाभविशेषेणप्राप्यतेश्रयमुत्तमं विशेषोचिंतनंनित्यंसुमित्रश्चारुभाषिणं स्वभुजेनधनं
प्राप्यस्वजातिमानवर्द्धनं प्रथमेवन्हिवर्षांतंतातपीड़ाचदुक्खित मातृक्लेशसमायुक्तोबालरोगेनपीड़ितं दंतबाधाज्वरोतप्तकृष्यभूतकलेवरं
छायादानप्रयत्नेनसप्तअन्नतुलाथवा बालवृद्धिभवेल्लोकेसर्वचिंताविनश्यति चतुर्थेसप्तमाब्दंतंबालक्रीड़ासुनित्यश विद्यारंभनसंदेहोमंगलंमोद
संभव ग्रहमंगलगायंतिमोदतेचकुलास्त्रिय तातलाभभविष्यंतिशिशुवृद्धिअहर्निशं ज्वरतप्तविशेषेणवृणविस्फोटकादय अयत्नेनतदाकाव्य
स्वयंरोगविनाशनं नागवर्षसमारंभनेत्रचंद्रादनंतरं उद्वाहोमंगलंकार्यपत्नीलाभभविष्यति विद्याबुद्धिविशेषेणवर्द्धयंतिसुनित्यश शिशुकेलि
विशेषेणचश्चलश्चविमोहितं सुहास्यंसुन्दरंचेष्टालुभ्यतेपिप्रियंजनः मासेवर्षेसुखंप्राप्ययदारोगविनश्यति मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाविशेषतः
तातद्रव्यव्ययोदीर्घदीर्घचिंतायदाकदा नोधनंतिष्ठतिगेहेकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशाब्दमारभ्यविंशवर्षावधितत सुवस्त्राभरणंवेष्टलुभ्यते
ललनाजनै विद्याप्राप्तिभवेच्चापिकार्यमात्रश्चमंदता नवनारिप्रियत्वोपिकामाशक्तं विशेषता मानसीविविधाचिंतालाभकृत्यंसुकारयेत सिंधुतुल्य
मनोद्वेगंनूतनंकार्यंचिंतनम् शशिविंशाब्दत्रिंशाब्देपञ्चत्रिंशक्रमंतथा सुतापुत्रोपिप्राप्यंतेमानकीर्तिविवर्द्धनं द्रव्यलाभस्तुज्ञातव्यानिजकृत्यस्य
साधनं क्षत्रचिंताविशेषेण भूयसेमानवर्द्धनं प्रायश्चित्तप्रयत्नेन सुपुण्यंसर्वमंगलं चित्तोद्यानंदतापिस्यात् कदाकालेतिचिंतया यथालाभ

तथातोष्यंचित्तवृत्तिसुशीतल मयावाक्यमिदंतत्वंश्रेष्टकर्माणिसञ्चय सुकर्मलाभदोनित्यंकुकर्मेणभयावनं सुखदुःखादिसंयुक्तोकर्मजालमिदं जगत् तस्मात्सर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्माश्रयोनरः सर्वसौख्यान्वितोलोकेमनेच्छासर्वपूजित रसविंशगतेवर्षेत्रिंशवर्षावधितत धनपुत्रान्वितोलोके द्रव्यलाभदिनेदिने नानाकार्योपिसंचित्य सुमित्रोलाभदंसदा मानकीर्तिविशेषेण वर्धयन्तिदिवानिशि अयत्नेनतदाकाव्यधनपुत्रविवर्जित शशित्रिंशगतेवत्सषष्टत्रिंशमितेतथा पुत्रोद्वाहंमङ्गेत्साहोयत्रकुत्रप्रशंसित रंतेमहाकष्टंपत्नीचिंताविवर्द्धितं दानमंत्रसुपुण्येनशीघ्रसौख्य मवाप्यते भागवृद्धिभवेच्चापिराजद्वारेप्रतिष्टितं मंगलोद्वाहजंसौख्यंप्राप्यतेचपुनःपुनः नगरामगतेवर्षेचंद्रचत्वारिमध्यमा चौरभीतिभवेद्ग्रा अतिचिंतापरायण रपवसंक्षयोयातिराजद्वारेपराजयं कार्यसिद्धिस्तुज्ञातव्याव्ययलाभविशेषत नेत्रवेदाद्धमारभ्यनागचत्वारिकंतथा नाना मंगलोकार्यवर्द्धयंतिसुमंदिरे भूमिलाभविशेषेणमोदतेचापिभार्गव धनधान्यान्वितोगेहंपूर्णसौख्यञ्चपश्यसी नंदचत्वारिवर्षाणिपञ्चपञ्चाद्धके तथा ग्रहरुष्टविचिंत्योपिअल्पकालोतिदारुण अतपश्चात्सुखंप्राप्यपात्रजन्मत्रमोदिता सून्यषष्टावधिकाव्यसर्वआशाविनिर्मुख ईशध्यान विशेषेणभजनानंदसर्वदा चितवृत्तिसुसंतोष्यनिर्बलत्वोपिजायते तथापिनिरुजादेहंमोदतेचमहोत्सवं षष्टसप्तमितिमायुर्भाष्यतेमुनिसत्तमः

भाषा ॥ इस जन्म पत्री में जो ग्रह पड़े हैं उनका यह फल है उच्च पदवी पावे कि... के चित्त को दुख न दे सबका भला चाहे पुरुषारथी हिम्मत वाला हो कैसा ही कठिन काम आवे सब पूर्ण करे आलस्य न माने अपने लाभका ध्यान बना रहै चित्त में प्यारे मित्र की याद बनी रहै उत्तम आजीवका से पालन करे बड़ी इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत से मनुष्य इसकी आशा में रहैं अच्छे २ वस्त्राभूषण घरमें स्थित रहैं एक समय अचानक विपत्ति और फिक्र आपड़े सो कुछ न समझे पुत्रोंके विशेष सुख और लाभ के कारण संतान गोपाल के मन्त्र का जाप्य कराता रहै तो वंश की वृद्धि हो घरमें पीड़ारहै शत्रुका भयहो कभी२ बिना प्रयोजनभी भयसा होजाया करे आयुपूर्णहो दो अल्प भोगे तीसरे सातवें बारहवें बाइसवें बत्तिसवें और इकतालिसवें वर्षमें कुछ पीड़ाहो पाप क्रूर ग्रहोंके दान मन्त्रसे शांतहो हे शुक्र पूर्व ये जीव ब्राह्मण था अत्यन्त प्रतिष्ठा और धन प्राप्त किया ज्योतिष विद्या में निपुण यन्त्र मन्त्र तन्त्र आदिका ज्ञाता दानपुण्य बहुत लिया संतान न हुई इस पुत्रको मानकर घर रखलिया कभी दानपुण्य नहीं किया सर्वस्व छोड़कर मरगया वो धन इस पुत्रने कुमार्गमें खोया सो पापका भागी हुआ तिस निमित शिवजीका पूजन करे मन्त्र जपे गायत्रीके अनुष्ठान करावे ब्रह्मभोज करे तो पूर्ण फल पावे ॥

श्रीगणेशायनमः फलंपत्रग्रहाचेयंसर्वावस्थासुखीन्नर सर्वावस्थासुकार्येणकुटंबंपाल्यतेनर भ्रातृयोगवियोग ग्रह५... वसमन्दित कुलवृद्धि
धा...्यभूमिमंद्रत ...वच दशाहीनयदालोकेऋणयोगोपिजायते पुनश्चउऋणोभूयशुभकार्योधनव्यय सुतेशोपूजनंदीर्घदानमंत्रसुभक्तित
पुत्रपौत्रसुखंलब्ध्वाकुलसौख्यमनंदिता लाभयोगोपिदृश्यंतेअर्द्धप्राप्तिविन ग्रहपीड़ाविशेषेणशांतयेद्यत्नत । पपीलिकाणिसभोज्यं
प...णांग्रन्नभक्षणं कार्यशुद्धिभवेल्लाभांचत्तआशासुपूजितं वृहत्कीर्त्याधिकारीचसुजनेभ्यप्रतिष्टित व्ययकार्यविशषेणसर्वपूर्णंभविष्यति
शत्रुश्चपतितनूनंनकश्चितहानिचिंतक शुभचिंतकसर्वेषांकपटंनस्थितेमनः आनंदेनगतेकालग्रकस्माद्धनमागमः सर्वावस्थाविशषेणचंद्र
ग्रल्पभयानकं सुखदुक्खागमोनित्यं संभावोनतिष्टती जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता दिनेदिनेसुखंगत्वा ग्रहसौख्य नंदिता
प्रथमात्पञ्चमेवर्षेशिशुक्रीड़ायथाक्रमं बहुकष्टेनपीड्यंतेकृष्यदेहोतिनिर्बलः घूटिकासेवनंकृत्यविशेषोदानभक्तित महामृत्युञ्जयोजाप्यसर्वकष्ट
विनश्यति तातलाभविशेषेणमातृगर्भान्वितोभवेत् भ्रातृजन्मभवेच्चापिमातृकष्टञ्चदारुण भ्रातभग्नीसमायुक्तोमोदतेचमहोत्सवं रसवर्षंगतेकाव्य
व्योमचंद्राद्धकेतया विद्यारंभकृतोचापिग्रं...भ्यासवच्च...नबालक्रीड़ाविशेषेणतातमातोतिहर्षित ग्रहमंगलगानञ्चकुलबंधुसमागत पत्नीक्लेशो
पिदृश्यंतेपितुद्रव्योतिचिंतनं देहकष्टविशेषेणपुनरंतेसुखावहम् एकादशाब्दमारभ्यषटचंद्रमितेतथा मासेवर्षेसुखंजातंसौख्यवृद्धिश्चनूतनं
पत्नीप्राप्तिभवेच्चापिकामक्रीड़ामनोद्भवं मित्राणांप्रीतसञ्जातोबरिभितिश्चनान्यथा ग्रन्यदेशांतरोगत्वायात्राभवतिलाभदं नानामंगलंकार्यं
तातमातग्रनन्दिता नगचंद्राब्दमारभ्य विंशवर्षादनंतरं द्रव्यलाभसुकृत्यञ्च कार्यमात्रोभविश्यति ग्रनुष्ठानमहादानं सर्वसौभाग्यवर्द्धनम्
शत्रुपक्षविनश्यतिदीर्घव्याधिचशांतये पत्नीगर्भान्वितोवत्सकन्याजन्मसुलक्षण पुनःभागोविवर्द्धतेनिजकृत्यविचक्षणः शशिविंशगतेकाव्य
तथाचपञ्चविंशति ग्रानंदोमंगलंनित्यंपुत्रकन्यासमायुत दीर्घसौख्याधिकारीचदासवाहनमन्दिरे ग्रकस्माद्भयमायातचित्तचिंतातिदारुण
मनोद्वेगंमहाशोकंनिशानिद्रानप्राप्यते ग्रापदुद्धारणोजाप्यसर्वापत्तौविनश्यति रसविंशमितेवर्षेव्योमवह्निसमागत स्वगेहोराजतेषु समान

कीर्तिविशेषत मित्राणांताषयानित्यंस्वकुलपोषतेनरः पत्नीअल्पविशेषेणप्राप्यतेकष्टदारुणं स्वर्णस्यप्रतिमाकायासप्तमासाप्रमाणकी आप
दुद्धारणोमंत्रलेखयेद्रक्तचंदनम् ताम्रकुम्भघृतंमध्येगुप्तमौनंप्रवेशित संकल्पंब्राह्मणंदत्वामहामृत्युञ्जयोजपेत् शीघ्रसौख्यमवाप्यंतंसर्वकष्टविना
शनम् शशिरामगतेवर्षेशरत्रिंशियथाक्रमं अकस्माज्जायतेलाभंबहुद्रव्यसमागम स्वकृत्यप्रमोदश्चचित्तोदारनसंशय उद्वाहंमहोत्साहोकुल
बंधुप्रशंसिता पददीर्घमुपस्थित्वाराजद्वारेधनाप्तये रसवन्हिसमारभ्यचत्वारिंशाब्दकेतथा व्ययोलाभविशेषेणपुनर्चिताप्रवश्यति सुतापुत्रसुखं
लोकेकुलबंधुधनागम द्रव्यलाभविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं देवागारेसुखंप्राप्य आरामेप्रीतिवर्द्धन शशिवेदाब्धमागम्य शरचत्वारिचांतके
तावत्कालगतेपुत्रभूयसेकीर्तिभाजनः उद्वाहोमंगलंकार्यंविशेषोमानप्राप्यते अतःपश्चात्सुखंसर्वंप्राप्यतेप्रतिवत्सरे रसपञ्चयदारभ्यतावत्सौख्य
भूयसे सुतपौत्रसुखसर्वंजायतेभुविमंडले कार्यभारंपरित्यज्यसून्यषष्टावधितत रामनामजपंन्नित्यंईशभक्तिसमुद्भव पुत्रपौत्रमहाभागीलोके
सर्वप्रशंसिता पुरायदानविशेषेणासर्वदाधर्मसञ्चय दैवस्यकृपयाप्राप्यदैवानांदुर्लभंसुखं चित्तचिंताविनश्यतिसर्वं आशापरित्यज सून्यसप्तगते
वर्षेआनंदेनसमायुत वन्हिसप्तगतेसंत निर्बलत्वंविशेषता ग्रहसप्ताब्धमारभ्य आयुपूर्णोपिजायते अनायासेतनंत्यक्त्वा कुलसौख्यदिनेदिने

॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है सारी अवस्था अपने कृत्य में लगा रहे कुटुम्ब का पालन करे भाइयों का योग वियोग हो अपने बड़ों का धन स्थान प्राप्त करे न्यून दशा ऋण का योग हो जाय सो फिर उतर जाय शुभ कार्य में द्रव्य खर्च करे सुत स्थान के स्वामी की पूजा दान मन्त्र उपाय करने से पुत्र का सुख मिले कुल वृद्धि हो आमदनी की सूरत होकर बिगड़ जाया करे घर में कष्ट पीड़ा रहे तिसके निमित्त पक्षियों को चुग्गा दे चींटी नाल जिमावे तो श्रेष्ट कार्य की सिद्धि हो मनोकामना पूर्ण हो बड़ी प्रतिष्ठा पावे बड़े बड़े आदमी इज्जत करे कई काम खर्च के आवें सो पूर्ण उतरे शत्रु नीचा देखे परन्तु ये जीव किसी के बुरे में न हो सबका भला चाहता रहे चित्त में कपट न हो आनन्द में रहे एक समय अचानक धन प्राप्त हो सुख दुख होता रहे अन्त में सब प्रकार कुशल हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव वैश्य वंश में उत्पन्न हुवा हलवाई का कृत्य कर पाक बनाता था धनवान था सो जलेबी बनाने के पात्र को न धोता था वर्षा ऋतु में उस पात्र में विशेष जीव पैदा हो जाते थे उसी में खमीर भर कर जलेबी बनाता सो लक्षों जीव अन्न के साथ भुनकर मरे दान पुण्य भी करता रहा सो अब चींटी नाल जिमावे और पक्षियों को अन्न देने से सब काम सिद्ध हों ॥

श्रीगणेशायनमः प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ाज्वरादिकम् मातुकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये तृतीयेपञ्चमेवर्षेसप्तवष. दिअष्टमे वृणव्याधि
शरीरेचभूतछायाचविव्हलम् वैद्योपायकंकृत्वानेकदिवसोपिशांतये भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिअल्पजीवनसंशयः मंगलाचारकंयोगंशुभकार्यधनव्यय
तातलाभविजानीयातविद्यायोगश्चयुग्मकम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति गृहवर्षादिद्वादश्यांमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहो
विवाहोत्सवधनंव्यय बालक्रीड़ाकिलोलश्चकिंचित्कष्टतातकम् त्रियोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये तात
धनशुभंकार्यं जीवबृद्धिदिनेदिने षष्टचन्द्राङ्कवेर्षेव्योमनेत्रमितेतथा वंशबृद्धिनसंदेहोपूर्वपापप्रणश्यति पत्नीगर्भमादायअल्पजीवीचप्राप्तये

ग्रहवर्षयुतपुंसमंगलाचारदृश्यते पूर्वपापप्रभावेणअल्पकष्टीचबालकः तातचिंतानसंदेहोनिजकृत्योपिकृत्यया मंदलाभप्रतीतश्चव्ययदीर्घो
नसंशय जीवयोगश्चप्राप्नोतिजीवनंसुफलंममः किंचित्कष्टविजानीयात्मंत्रदानश्चशांतये मित्रपक्षपरंप्रीतिआनंदंभूमिमंडले कस्मिन्काल
उपद्रोवामित्रबंधुपरस्परम् अल्पबाधाचप्राप्नोतिछत्रभंगोपिचिंतया वर्षेमासेसुखंप्राप्तिव्ययलाभोसमानकम् चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा
व्योमरामश्चमध्योपिसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये पुत्रपौत्रीचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने गुप्तचिंताचप्राप्नोति
गृहक्लेशमहानकं कार्यकृत्यनसंदेहोराजद्वारेचलाभकम् विवाहादिगृहंमध्येशुभकार्यधनव्यय दाताभोक्ताकृत्यग्यश्चसत्यबाणीचभाषणं भूमि
लाभमहत्सौख्यंपरकृत्योपितत्परः भाग्यवान्लोकशालीचधनधान्यसमागमः गुप्तश्चधनप्राप्नोतिआनंदंभूमिमंडले पञ्चमईशपूज्यतेवंशबृद्धि
विशेषतः चंद्रमित्रमहाप्रीतिगुप्तवार्ताचभाषण आनंदादिभोक्तव्यमचित्तबृत्तिआशक्तया अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताभविष्यति गृहव्याधि
कष्टश्चऔषधीप्रतिशांतये चंद्ररामामितेब्देचबाणरामामितेतथा सून्यवेदादिमध्योपिकथ्यतेमुनिसत्तमः मध्यलाभविजानीयात्स्वकुटंबोपिपालन
नवीनोवार्तयाचित्तशुभकार्यधनव्यय छत्रचिंताचप्राप्नोतिव्ययदीर्घोनसंशयः मानसीविविधाचिंतासर्वकार्यंचसिद्धति अर्धआयुगतेकाव्य
धनधान्यसमागमः क्रूरपापग्रहपत्रीनिश्चयजीवपूजनं पूजादाननकर्तव्यम्अतिआपत्यकालकं इदंमंत्रकृतेजापंधनसंतानबृद्धया उंऐंह्रींक्लीं

श्रींबटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय ममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा महत्प्र सनसंदेहोमहोत्साहोतथैवच आनंदेन समायुक्तभृगुणापरिभाषितः सर्वंश्रामेभवेत्खेदंकल्पयंतिगृहेगृहे अल्पयोगश्चप्राप्नोतिवैद्योपायकंकृत्वा ॥ शुक्रोवाच ॥ किंकर्मेणअल्पोयं किंदानेनविनश्यति तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिब्रूहिमेभार्गवोत्तमः ॥ भृगुवाच ॥ शृणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापंचकारणं क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा नुसारणः बहुहिंसाबधोजीवमृगपुत्रंचमृत्युदा स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी मृगमूर्तिलिपिकृत्वासंकल्पंत्राह्मणंददेत् व्योमबाणाद्ध केवर्षेपंचबाणमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने चौरभीतिविजानीयातगुप्तचिंताचप्राप्तये मासेवर्षेसुखंप्राप्यआनंदंभूमिमंडले षष्टबाणाद्धकेशुक्रव्योमरसमितेतथा सर्वसुखंचप्राप्नोतिधनप्राप्तिविशेषत विवाहादिधनव्ययंअतितेजोप्रतिष्टया चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्त मितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभनसंशयः पत्नीखेदसमायुक्तऔषधीसेवनंवृथा वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगवनोनसंशयः चंद्रसप्तमितेब्देच बाणनागमितेतथा कृष्यदेहविजानीयात्स्वासकासमहावृद्धि सर्वसुखंचभोक्तव्यमदैवलोकोपिवासकम् ॥ भाषा ॥ इस पत्री में जो ग्रह स्थापित हैं तिनका ये फल है कि बड़े भोगवाला जीव हो कुलदीपक हो चतुर बुद्धिमान् कुटम्बी हो न्यून कारण से चिंता विशेष मित्र से मिलने की इच्छा रहै दो समय धन की विशेष प्राप्ति हो सत्यवादी हो भजन की इच्छा हो नवम स्थान के ईश के कारण चित्त हट जाया करे दो ग्रह बलवान पड़े हैं बड़ा ऐश्वर्य दिखावें गुप्त व्याधि युवा अवस्था में दर्द हो जाया करे नवीन वार्ता लाभ की सोचे वंश की वृद्धि को पंचम स्थान का पूजन श्रेष्ट है गर्भ खंडित वीर्य ब्रथा हो लाभ होता २ पीछे को हटे दुष्ट मनुष्य से बचता रहे विशेष लाभ के कारण एकादश स्थान के ईश का पूजन श्रेष्ट है सब अवस्था में एक अल्प से नया जन्म हो ३४, ४४, ५४ वर्ष लाभकारी विशेष हों इज्जत प्रतिष्टा पावे यह जीव किसी का बुरा न चाहे बड़े बड़े खर्च झेले हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुवा था सो मृगों की बहुत सी हिंसा बनी तिसके शाप के निमित्त ये उपाय करे स्वर्णका पत्र श्रद्धाप्रमाण तिसपर मृगकी मूर्ति लिखे तांबेके कलशमें घृतभरें मूर्ति गुप्त प्रवेशकर संकल्पकरे अल्प नष्टहोवे वंश की वृद्धि मनोकामना पूर्णहो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहस्थापित्वाबहुभागीचबालकः सत्यवादीभवेत्वालोभृगुणापरिभाषितः परमार्थीसविज्ञेयोप्रमादीप्रसवःपुमान् देवद्विज
रतोनित्यं प्रियवक्तासुपुत्रमान् बुद्धिदीर्घ आयुस्याद सत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्च नवीनोचितवनंक्रते चंद्रमित्रपरंप्रीति चित्तवृत्ति
आशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतोततः प्रथमेद्वितीयेब्देचज्वरपीड़ाचरेचनं कृष्यदेहविजानीयात्घूटिकाप्रतिशांतये तातमात
सुखंलोकेआनंदभूविमंडले तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिपितुमातमहासुखं तातलाभविजानीयात्मंगलाचारहर्षकम्
वृणव्याधिनसंदेहोकिंचित्कालशांतये अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्यायोगश्चप्राप्तये पत्नीलाभभविष्यंतितातलाभदिनेदिने धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलं ग्रहपीड़ाचप्राप्नोतिऔषधीप्रतिशांतये त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्ययुग्ममितेतथा पठनंपाठनंचैवबुद्धिमानविशेषतः द्विरागमननसं
पत्नीप्रीतप्राप्तये पूर्वपापप्रणश्यंतिपत्नीगर्भनसंशय पञ्चमेईशपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति पञ्चमेशोनपूज्यंतिजीवचिंतामहानकम् मित्रपक्षपरं
प्रीतिआनंदभुविमंडले किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये चंद्रयुग्ममितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमलोकाद्रमध्यंतेसर्वगाथाचकथ्यते
पुत्रकन्याचप्राप्नोतिपञ्चमेशोपिपूजनं धनधान्यसमृद्धिश्चभाग्यवृद्धिनसंशयः राजद्वारकंलाभम्गुप्तधनञ्चलभ्यते कार्यलाभश्चदीर्घोवागुप्तचिंता
शरीरकं धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने स्त्रीप्रीति
नसंदेहोचित्तचिंतामहानकम् चंद्ररामाद्रकेवर्षेबाणराममितेतथा नवीनोमन्द्रकंरचनाभूमिलाभंचप्राप्तये अकस्मात्धनप्राप्नोतिसर्वसुखंच
प्राप्यते एकादशीशोपिपूज्यंतेमनवांछितफलप्रदा अतितेजोप्रतिष्टोवालाभोभवतिनान्यथा व्योमवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा देहकष्ट
विजानीयात्पितृपीड़ाचदृश्यते मानसीविविधाचिंतानवीनोचितवनंक्रते वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानंचशांतये अकस्मात्उपद्रोवाजीवचिंताच
प्राप्तये शत्रुविघ्नउपाधीचकिंचित्कालंचशांतये धनव्ययोवृथाजीवगुप्तचिंताशरीरजम् अल्पकष्टंचप्राप्नोतिपितृपीड़ाचगुप्तता ॥शुक्रोवाच॥
केनजाप्येनदानेन कष्टंनश्यतिभोमुने ॥भृगुवाच॥ स्वर्णस्यप्रतिमाकार्या श्रद्धामात्रप्रमाणकी तन्मध्येचलिखेनमूर्ति विप्रबालस्यभार्गव:

संपुटंकामबीजेनमंत्रभागवतचरेत् एकादशसहश्रश्चमंत्रजाप्यश्चकारयेत् अनुष्ठानसमाप्त्यर्थमूर्तिसंकल्पयेत्सुधी आचार्यायददेत्पुत्रशांति वृद्ध्यर्थहेतवे एवंयत्नकृतेवत्सर्वसौख्यंभविष्यति रसवेदमितेवर्षेशून्यशरमितेतथा शरीरेचसुखंवत्सधनलाभनसंशय पत्नीदेहमहत्सौख्यं पूर्वाल्पाद्यादिजीवित नोचेत्कष्टभयंशुक्र पूर्वमेवमुदाहृतः तत्रदानंभवेत्पुत्र सौख्यंभवतिनिश्चितम् गुप्तश्चधनप्राप्नोति वाहनादिसुखंमहत् चन्द्रबाणमितेवर्षेपञ्चबाणमितेतथा शून्यषष्टसमारभ्यमध्यगाथाचकथ्यते धनलाभमहत्सौख्यंतीर्थयात्राभवेध्रुवम् चौरभीतिभवेत्पुत्रतथा वन्हिभयंभवेत् पुत्रपौत्रसुखंप्राप्तिपंचमेशोपिपूजनम् मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चन्द्रषष्टमितेब्देचव्योमसप्तमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यंतेभृगुणापरिभाषित पौत्रजन्मनसंदेहो तथापौत्रविवाहकम् मंगलंग्रहमध्येच नृत्यगीतादिकंभवेत् चन्द्रसप्तगतेवर्षे बहूपीड़ाचप्राप्यते वैद्योपायकंकृत्वाप्राणागवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस अंक की कुण्डली का फल यह है कि बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा विद्यावान अकल विशेष सत्य बोले दूसरे की बात तोले विद्या मध्यम बुद्धि विशेष भ्रातयोग घर में मंगलाचार खुशी जीव का ध्यान स्त्री से प्रीत मित्र से मित्रता भाग्य की वृद्धि अन्त आयु श्रेष्ट पुत्र स्थान के ईश की पूजा करने से पुत्रोंका सुख विशेष और कर्म स्थान के स्वामी की पूजा से भाग्य विशेष उदय हो शत्रु का भय एक समय में नया जन्म हो किसी काल में एक स्त्री की चिंता ये जीव पर उपकारी दुष्टों से जले न्यायकारी हो नई नई बात का चिंतवन संतोष वृत्ति हो धन मिले हे शुक्र अन्त अवस्था में कहीं से बिना परिश्रम धन मिल जाय अचानक सूर्य के सा प्रकाश हो जाय सवारी और नौकर बहुत रखने पड़े अनेक प्रकार के सुख होवें हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजवंशी था एक ऋषि को मद की उनमत्तता में बहुत दुख दिया तिस के शाप के कारण जीव की चिंता कुछ क्लेश हो जाया करे तिस निमित स्वर्ण के पत्र पर ऋषि की मूर्ति लिखवाकर पूजा करे धूप दीप नैवेद चढ़ावें और फिर मूर्ति संकल्प करे ब्राह्मण को दे यह मन्त्र पढ़े ओं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय मम रक्षां कुरु कुरु स्वाहा इसके करने से मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहविराजित्वाश्रेष्टपत्रीचबालकः स्वदशाफलप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाक्रियतेफलप्राप्नुयात् भाग्य
वृद्धिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा ग्रहपूजानकर्तव्यम्अर्धप्राप्तिनसंशयः सत्यवादीसुशीलस्यपरकार्योपितत्परः गुप्तचिंताशरीरेणनवीनो
वार्तयाचितः चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिप्रसन्नोउनमत्तता दीर्घव्ययलखेद्दृष्टा श्रेष्टवंशनसंशयः सिंधुसमतरंगोवानिजलोकप्रतियष्टा रोगश्चप्रथमेवर्षे
द्वितियेतुविशूचिका तृतीयेवृणव्याधीचभ्रातयोगश्चप्राप्तये पञ्चषष्टेमितेवर्षेविद्यारंभोपिजायते सप्तमेअष्टमेवर्षेमातृपीड़ाज्वरंभवेत् संबंधयोग
संप्राप्तेग्रहमंगलगानकम् कफवातोद्भवद्रोगंऔषधीप्रतिशांतति नवमेदशमेद्वेषुतातलाभभविष्यति भग्नीभ्रातश्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताचतातकम्
नवमेद्वादशवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् भृगुवाक्यनचान्यथा तातधनशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदशअष्टकंचंद्र
वर्षगाथाचकथ्यते विद्याधेनुकृतेजीवमित्रप्रीतिभविष्यति पत्नीलाभनसंदेहोद्विरागमननसंशय भाग्यवृद्धिविशेषेणपत्नीप्रीतिप्राप्तये तातव्यय
शुभंकार्योविवाहोत्सवमंगलं अल्पगर्भविजानीयात्ग्रहपीड़ाचनान्यथा क्षत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तशत्रुचप्राप्तये ऊनविंशमितेद्वेचबाणनेत्रमिते
तथा पत्नीगर्भनसंदेहोपञ्चमईशपूजनम् पुत्रप्राप्तिनसंदेहोआनंदंभूमिमण्डले पुत्रिपीड़ागृहंमध्येच तापित्तेनपीडनम् ॥शुक्रोवाच॥ केनदानेन
पुण्येनस्वस्थचित्तंप्रजायते श्रुणुपुत्रकथासर्वंपूर्वपापश्चकारणम् पूर्वजन्मधनीलोकेआनंदश्चभोक्तया चंद्रंसाधूधनस्थित्वागत्वातीर्थयात्रकम्
पश्चातोपिमागत्वाधनीदुष्टचनददेत् साधूशापमुखंदत्वाअत्रजन्मपुनःपुनः धनपीड़ाचभोक्तव्यश्चनान्यथावचनंमम ब्रह्मभोजददेत्दानंस्वर्ण
संकल्पदक्षिणाइदंदानकृतेसंतमनवांछितफलप्रदा षष्टनेत्रमितेवर्षेशून्यरामभितेतथा शरलोकाद्वकथ्यंतेबालवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिर्महोत्सा
होलाभोभवतिनान्यथा पुत्रपुत्रिसमायुक्तभाग्योदयदिनेदिने अकस्मातउपद्रोवागुप्तचिंताशरीरजं षष्टरामाद्वकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा राज
द्वारकंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय धनव्ययंशुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पुत्रसंबंधयोगंचजायतेनात्रसंशय कुलबंधुविरोधंचक्लेशचिंताभविष्यति
चंद्रवेदमितेद्वेचबाणवेदगतस्तदा सर्वसुखंचप्राप्नोतिलाभंप्रतिदिनेदिने पुन्यमार्गेधनंयातिनान्यथावचनंमम जाप्यपूजाद्विजार्चादिधनव्यय

नसंशयः षष्टवेदाङ्कवर्षेशून्यशरमितेतथा भूमिलाभभयंशुक्रवाहनादिसुखंमहत् राजद्वारउपाधीचकुलबंधुविरोधता गुप्तचिंताचप्राप्नोति
क्वचित्कालोपिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्णपापप्रणश्यति प्रायश्चित्तनकर्तव्यंधनपुत्रश्चमध्यमा भूमिप्राप्ति
नसंदेहोभाग्यवृद्धिर्दिनेदिने परश्चसंततिदेहोकिंचिद्रोगप्रजायते चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमेतथा जीवक्लेशमहाशोकंभृगुणापरिभाषितः
गोधूमगुडसंयुक्तं बारायप्रदापयेत् तेनरोगश्चशमनंजायतेनात्रसंशयः भाग्योदयाधिकंचैवप्रकष्टेनधनागमं मंद्रहाटतथाद्वारंनवीनश्चभवेत्ततः
चंद्रसप्तमितेद्वे चवेदबाणमितेतथा शुभकार्यंधनंव्ययम्विवाहोपौत्रकंलभेत् अकस्मात्महत्व्याधीवैद्योपायकंवृथा माघेशुक्लेनवंम्यांच भृगुवारेण
संयुत द्विपुरार्धंचगतेरात्रीपूर्णआयुभवेत्ततः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बहुत श्रेष्ट बलवान पड़े हैं परन्तु अपनी
अपनी दशा में फल दिखावेंगे जो पाप क्रूर ग्रहों का पूजा दान जप आदि विधि पूर्वक होगा तो निश्चय भाग्य की वृद्धि विशेष होगी वंश की
वृद्धि विशेष होगी मन की कामना पूर्ण होवेगी उपाय न होने से फिकर चिंता कार्य अधूरा लाभ मध्यम सिर पर खर्च बड़े बड़े दीखें धन आने
की देर है खर्च तैयार है प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो चित्त में समुद्र की तरंग उठा करे लाभ की वृद्धि का उद्योग बहुत किया करे परन्तु
सब काम इज्जत के साथ सम्पूर्ण हो जावें इज्जत पावे प्रतिष्ठा पावे किसी समय में कहीं से ऐसा गुप्त लाभ हो जावे कि सूर्य के सा प्रकाश हो जावे
हे शुक्र इस जीव के सब कार्य सम्पूर्ण बन जावें परन्तु अनेक शत्रु गुप्त होते रहें और यह जीव सत्य असत्य को खूब जांचे बुद्धिमान विशेष होवे
हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव सेठ धनी था सो एक साधू अपने द्रव्य धरोहर इसके पास धर कर तीर्थ यात्रा करने को चला गया था फिर बहुत
समय व्यतीत हुवे अपना द्रव्य मांगने आया सो इस सेठ ने नहीं दिया साधू ने दुखित होकर शाप दिया सो अब तिस निमित्त साधू ब्राह्मण
जिमावे और श्रद्धा प्रमाण चांदी स्वर्ण की दक्षिणा दे दंडवत करे चरण छुवे आशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण हो धन और वंश की वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वादीर्घभागीचलोत्तमा सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः
अल्पविद्याचप्राप्नोतिबुद्धिवानोविशेषतः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचितवनंकृते राजद्वारकंप्राप्तिअन्नादिकप्रतिदीर्घता वाहनादिसुखंज्ञेयंभूमि
लाभनसंशयः अकस्मातउपद्रोवाधनव्ययविशेषतः गुप्तपीड़ाग्रहमध्येकस्मिन्कालहानकं प्रथमेद्वितीयेब्देचमातृकष्टोभिजायते मासेमासेसुखं
वाच्यंबालवृद्धिश्चभूतले किंचिद्रोगप्रजायतेभूतछायाचविव्हलम् तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारहर्षकम् वामयोगमहाहर्षम्विद्यापठनंरंभयो बाल
क्रीड़ाकिलोलश्चजीववृद्धिदिनेदिने वृणव्याधिशरीरेचतातलाभभविष्यति अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते आदिपठश्चविद्यायांअंतविद्या
विसार्जनम् बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति तातधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रयोदशअष्टकंचंद्रवर्षगाथाचकथ्यते तातलाभ
भविष्यंतिभग्नीभ्रातयुक्तकं द्विरागमनश्चआनंदोपत्नीप्रीतप्राप्तये चित्तचिंताचभोशुक्रनिजकृत्यस्यचिंतनम्पत्नीगर्भनसंदेहोअल्पगर्भोपिजायते
भ्रातभग्नीविवाहश्चतातधनंव्ययंतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया मानसीविविधाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने गृहचंद्रमितेवर्षेबाणनेत्र
मितेतथा दीर्घलाभविजानीयात्संतत्योगप्रजायते महत्प्राप्तिर्महोत्साहोजीवनंसुफलंममः लाभप्राप्तिविशेषेणग्रहपीड़ाचप्राप्तये छायापात्रकृते
दानंषटरसादितुलाकृतं संकल्पंददेत्विप्रसर्वव्याधीविनश्यति षटनेत्रमितेद्वेचव्योमराममितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्र
पौत्रसमायुक्तपापगृहादिपूजनं पञ्चमईशपूज्यतेवंशवृद्धिविशेषतः छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः चंद्रराममितेवर्षेबाणराममितेतथा
अकस्मातउपद्रोवाबाधावृद्धिदिनेदिने गायत्रीमूलमंत्रेचसंकल्पोगौवच्छकम् पूर्वगाथाचकथ्यंतेपुरायपापञ्चभोक्तया क्षत्रीवंशसमुत्पन्नगवनखेटा
नुसारण गौवच्छवधोजीवशापभागीनसंशयः कार्यलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् रसराममितेवर्षे
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः शरीरेसौख्यसंपन्नोनात्रकार्यविचारणा द्रव्यलाभगृहेतस्यजायतेनात्रसंशयः
सर्वसौख्यसमायुक्तोपत्नीपुत्रेणपीड़नम्पुत्रहीनवृथासर्वंदीर्घचिंतायदाकदा पूर्वपापप्रभावेणपुत्रसौख्यंनपश्यति तस्मात्सर्वप्रयत्नेनप्रायश्चित्तच

कारयेत् पूर्णयत्नेनभोक्तव्यानश्रमज्ञायतेसुतम् पुत्रपत्नीसुखंज्ञात्व। अग्रजन्मपुनःपुन चित्तचिंताविनश्यतिदीर्घसौख्यसमुद्भवः चंद्रवेदमिते
वर्षेव्योमबाणमितेतथा मित्रपक्षपरंप्रीतिकामवेगेनपीड़तम् वायुकष्टेनपीड्यंतेकिंचित्कालांतरेतथा सर्वसौख्योद्भवोवत्सचित्तधर्मेस्थितंयदा
मासेमासेमहत्सौख्यंजायतेनात्रसंशयम् शुभकार्यंधनव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं शत्रुपक्षउपद्रोवाचित्तचिंताचक्लेशयो कस्मिन्कालमहापीड़ा
मंत्रदातश्चशांतये चंद्रशरमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मानसा
विविधाचिंतापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारकंप्रीतिगुप्तलाभधनंकवे चंद्रषष्टमितेद्वे चगृहषष्टमितेतथा सुखदुखश्चभोक्तव्यम् आनंदभूमिमंडले
श्वासकासमहापीड़ाव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि कई ग्रह ऐसे श्रेष्ट
आनकर विराजमान हुवे हैं परन्तु अर्ध आयु के पश्चात् भाग्य की वृद्धि विशेष होवेगी गुप्त धन की विशेष प्राप्ति हो भूमि से बहुत लाभ हो
राजद्वार से प्राप्ति हो परन्तु पूर्व शाप के कारण वंश की वृद्धि प्रायश्चित से विशेष होगी पुत्र स्थान के स्वामी की पूजा श्रेष्ठ है विष्णु भगवान्
का आराधन दान पुण्य करे कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ सम्पूर्ण होवें बुद्धिमान् विशेष हिम्मत वाला झूंठ से जले
शांति स्वभाव होवे परन्तु कभी कभी क्रोधसा आवे तो दीर्घ आवे न्यून ग्रहों का जाप्य अति श्रेष्ठ है सर्व आयु में एक अल्प आवे सो मृत्यु
समान कष्ट हो जावे इज्जत का भय सा रहा करे आयु ६९ वर्ष से अधिक हो एक जीव में बहुत चित्त रहा करे है शुक्र पूर्व जन्म में यह
जीव बड़ा धनवान इज्जत प्रतिष्ठा वाला ग्वालवंशी अहीर था दान पुण्य बहुत देता था एक समय अति क्रोधवश हो कर एक गर्भणी गऊ को
मार डाला तब उससे बहुत दुखित हो कर गौ ने शाप दिया तिसके शापसे अधूरे लाभ होवें जीवकी विशेष चिंता हो दुख अल्प ग्रह में व्याधी
तिस निमित्त गऊ की मूर्ति स्वर्ण के पत्र पर लिखकर गंगाजल में स्नान कराकर संकल्प करावे और गायत्री मंत्र जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो
जावे और धन की विशेष प्राप्ति हो और वंश की वृद्धि हो और पुत्र होकर जीवे और मन इच्छा फल पावे और अनेक प्रकार के सुख भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वाबुद्धिवानोविशेषतः सत्यवादीभवेत्बालोभृगुणापरिभाषितः लोकंबहुधनीख्यातोमानकीर्तिविशेषतः
बहुविद्याचप्राप्नोतिपरकार्योपितत्परः सुशीलगौरवर्णश्चसत्कीर्तिकुलवर्द्धनः प्रथमेद्धे ज्वरव्याधीद्वितीयेमुखपीड़िका कृष्णादेहविजानीयात्
रेचनंव्याधिप्राप्तये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिल्लोलकम् मातृकष्टदुखंशुक्रऔषधीप्रतिशांतये भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकम् तातमात
सुखंप्राप्तिजीवनंसुफलंम ः तातलाभधनंवृद्धिबालक्रीड़ाकिल्लोलकं अष्टमेत्रयोदशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययम्
विद्याचपाठनंकृत्वाबालक्रीड़ाविसार्जनम् समवालमहाप्रीतिवामयोगश्चप्राप्तये किंचित्कष्टशरीरेचऔषधीप्रतिशांतये चतुर्दशविंशवर्षोवामध्य
गाथाचकथ्यते मित्रक्रीड़ाभवेत्बालोभृगुणापरिभाषितः धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतश्चप्राप्तये विद्याबुद्धि
विशेषेणकार्यंकृत्यनसंशयः तातचिंताभवेत्काव्यधनव्ययविशेषतः पञ्चमेशोपिपूज्यंतेपुत्रजन्मभविष्यति सुतदुखश्चदृष्टीचजीवनंसुफलंममः
मासेवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने चंद्रनेत्रमितेद्धे चबाणनेत्रमितेतथा स्वयंकृत्यमहालाभोआनंदभूमिमंडले कांताचपुत्रिगर्भोवापुत्रकन्या
चदृश्यते गुप्तचिंताशरीरेचलाभंप्रतिदिनेदिने आरिष्टयोगजायंतेश्रूयतांवचनंकथे औषधीसेवनंकृत्वादानपुण्यप्रभावतः सर्वंकष्टविनश्यंति
आनंदंमोदतेभुवि षट्नेत्रमितेद्धे चत्रिंशवर्षोपिमध्यमा एततवर्षांतरेशुक्रसंततियोगजायते एकादशीशोपिपूज्यंतेभाग्योदयदिनेदिने कस्मिन्
कालगतेशुक्रअंगपीड़ाप्रजायते औषधीदानमंत्रेणसर्वरोगविनाशनं चंद्ररामभितेद्धे चशररामभितेतथा चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया
गुप्तप्रीतिचित्तोचिंताआनंदंउन्मत्तता वाहनादिसुखंज्ञेयंमनवांछितफलप्रदा धनव्ययशुभकार्यविवाहोत्सवमंगलम् कार्यंकृत्यनसंदेहोद्रव्य
लाभप्रतीततः षट्रामाद्धकेवर्षेव्योमवेदमितेतथा पत्नीदेहोभवेत्कष्टप्रसूतीरोगमुद्भवः ॥ शुक्रोवाच ॥ केनजाप्येनदानेनप्रसूतिरोगशांतति
तत्सर्वंवदमेतातंकृपांकृतममोपरि ॥ भृगुवाच ॥ स्वर्णपत्रसमादायनवमासाप्रमाणकम् तस्यांपरिलिखेन्मूर्तिंमहालक्ष्मीसुकुंकुमैः नारिकेलां
तरेधृत्वा पूजनीयाप्रयत्नतः सनारिकेसुमूर्तिश्च द्विजवर्यायदापयेत् एतद्दानप्रभावेण प्रसूतिरोगशांतये चंद्रवेदाद्धकेवर्षे बाणवेदमितेतथा

महत्सौख्यमहोत्साहोग्रहमंगलमेवच नेत्रमासमितेपुत्रयावन्मासचतुष्टय ग्रामाद्धनमवाप्नोतिगोधूम्रकाणिकानिचः धर्मकार्यभवेत्पुत्रकूपमन्द्र
प्रतिष्ठया लाभप्राप्तिश्रमंपुत्रशत्रुपक्षविरोधता षटवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पृथ्वीधनञ्चप्राप्नोति
कस्मिन्कालउपद्रकम् पापग्रहादिपूज्यंतेधनप्राप्तिर्नसंशयः पूजादाननकर्तव्यम्धनप्राप्तिचमध्यमा चंद्रबाणमितेवर्षेव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारे
महत्प्राप्तिकुलदीपनसंशयः राजावाराजमंत्रीचदासदासीचयुक्तकम् विवाहादिधनंज्ञेयंप्रसिद्धोधनुलोकमा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतितितीर्थयात्राविचार
येत् चंद्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा स्वकुटंबविरोधश्चराजद्वारन्यायकम् शत्रुभयमहाचिंताकिंचित्कालपराजयः देहकष्टविजानीयात्कफ
वायुज्वरंतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोसर्वसुखञ्चप्राप्यते दीर्घव्याधीशरीरेचबाधाबुद्धिदिनेदिने प्रहरगतिगतेशुक्रनवम्यांभौमवासरे माघकृष्णा

मृ० स०
फलित
५५०

पक्षेचजीवमृत्युनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बलवान हैं पुण्य दान से विशेष भाग की वृद्धि हो बिना परिश्रम से धन मिले बाल अवस्था में पीड़ा दस्तों की बीमारी शरीरं कृष माता पिता को जीव की चिंता रहै पश्चात् आराम मिले अल्प बीच कर शरीर निरोग हो जाय माता पिता को लाभ हो और जीव चतुर बुद्धिमान हो विद्या मध्यम हो परन्तु इज्जत प्रतिष्ठा वाला हो बहुत मनुष्यों के काम निकलें पराया काम मन से करे किसी की आत्मा न दुखाये पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता लाभ मध्यम संतोषी वृत्ति हो ईश्वर की भक्ति में चित्त प्रवर्त करे परन्तु भजन पूर्ण न बने संतान गोपाल मन्त्र श्रेष्ठ है दो अल्प हैं आयु ७० की है चन्द्रमा ऐसी राश का है आयु अधिक हो ग्रह में गुप्त पीड़ा को गायत्री श्रेष्ठ है मित्र में विशेष मन रहे मीन रेखा हाथ में श्रेष्ट है एक व्रण का चिन्ह शरीर में हो पश्चात् की आय के वास्ते ग्रह श्रेष्ट है किसी के चित्त को यह जीव न दिखावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में था और बड़ा भागवान था जीवों की हिंसा शिकार भी खेलता था एक समय मृग के भूल से गौ का बच्चा बध हो गया सो उस गाय के शाप से जीव चिंता और एक अल्प आवे सो तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पै गौ के बछड़े की मूर्ति बनवावे और रक्त चन्दन से लिखे सो मूर्ति संकल्प करके ब्राह्मण को दे मूल मन्त्र गायत्री जपवावे तो मनोकामना पूर्ण हो वंश की वृद्धि और धन का आवागमन हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाप्रकाशस्थेसुबुद्धिकुलदीपकम् सत्यवादीप्रवक्ताचचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोभृगुणापरिभाषितः देवद्वि
रतोनित्यंगुणाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतःपुंसप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्यादगिरावत्सरोद्भवम् श्रीमानबहूप्रतापीचशास्त्रवेत्ता
सुहृत्प्रियः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कार्तिकुलवर्धनः चन्द्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया कस्मिन्कालश्रुणुशुक्र शीघ्रोवीर्यखंडिताम्
दीर्वकार्यंव्ययंदृष्ट्वासर्वानंदव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोतिनवीनोचिंतनंकृते प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकम् तातमातसुखीलोकेभृगुणा
परिभाषितः तृतीयेअष्टमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकम् पत्नीयोगविजानीयात् मंगलाचारहर्षकम् भ्रातभग्नीचप्राप्नोति अल्पजीवीचबालकः
वृद्धगवनंमहाचिंताबालवृद्धिदिनेदिने विद्यारंभकृतेव लतातमाताचहर्षकम् नवमेद्वादशेवर्षेकिंचित्कष्टप्रजायते दानमंत्रादिसंकल्पसर्वपीड़ा
विनष्यति तातधनशुभंकार्यविवाहोत्सवमंगलम् मित्रप्रीतिकृतेक्रीड़ातातलाभनसंशयः ग्रहपीड़ाचदृश्यतेकिंचित्कालशांतये बंधुप्राप्तिर्थवा
भग्निअल्परोगश्चप्राप्तये त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमध्यमा भ्रातचिंताचप्राप्नोतितातशोकोपिबूडनम् आदपठनञ्चविद्यायांदीर्घबुद्धिचबालक
द्विरागमनन्नसंदेहोचित्तचिंताचलाभकं ग्रहक्रोधउपाधीचप्रदेशोगमनंतथा तातमातमहाचिंताकस्मिन्कालआगतः पत्नीगर्भनसंदेहोअल्प
जीवीचबालकः जापसंतानगोपालंपुत्रसुखभविष्यति चंद्रनेत्रमितेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपुत्रीचप्राप्नोतिनान्यथावचनंमम पापक्रूरग्रहा
पूजावंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यलभेत्जीवधनप्राप्तिचमध्यमा शुभकार्यधनव्ययंगुप्तचिंताशरीरजं मासवर्षसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले जीव
चिंतामहादुखंस्त्रीप्रीतिगुप्तताम् चंद्ररामभितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाद्धकेशुक्रमध्यगाथाचकथ्यते लोकबहूधनीख्यातोकृत्यलाभो
भविष्यति धनव्ययविशेषेणविवाहोत्सवमंगलं सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचगुप्तता भूमिलाभनसंदेहोनवीनोमंद्रवासकं पुत्रीपुत्रसमायुक्त
नान्यथावचनंकवे सुतअर्थअनुष्ठानंवंशवृद्धिभविष्यति कार्यकृत्यनसंदेहोधनप्राप्तिभविष्यति किंचिद्रोगप्रजायतेमंत्रदानञ्चशांतये चन्द्रवेद
मितेब्देचबाणवेदमितेतथा शून्यबाणाद्धकेमध्येसर्वगाथाचकथ्यते भूमिलाभनसंदेहोधनधान्यसमागमः अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंतामहानकं

महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रबाणसहस्रकं विधिपूर्वंजपंमंत्रसर्वविघ्नोपिशांतये ग्रामभूमिचप्राप्नोतिभाग्योदयदिनेदिने दीर्घंचधनंव्ययंमिष्टबाणीच भाषणं पितृपीड़ाचहेत्यर्थंगायत्रीमंत्रजापकं धनभागीचग्रानंदोग्रंतग्रायुसुखीन्नरः चंद्ररसमितेऽब्देचव्योमषष्टमितेतथा राजद्वारेमहाप्राप्ती भाग्यवृद्धिदिनेदिने राजावाराजमंत्रीचदासदासीसुखीन्नर पुत्रपौत्रसमायुक्तोपूर्वशापविनश्यति विवाहादिधनंज्ञेयंभृगुणापरिभाषितः चन्द्र षष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा जीवचिंताचप्राप्नोतिचौरभीतिभयंक्वचित् पत्नीकष्टभयंघोरंमंत्रदानञ्चशांतये पौत्रप्राप्तिभविष्यंतिसर्वसुखञ्चप्राप्तये मासेवर्षेसुखंगत्वावायुरोगज्वरंतथा चन्द्रसप्तमितेऽब्देचषष्टसप्तमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोग्रानंदश्चुविमंडले ग्रकस्मात्मल्याधिग्रौषधी सेवनंवृथा पूर्वजन्मकथाकथ्यंग्रामधीशोनसंशय चन्द्रसाधूभिक्षार्थंक्रोधवंधेनमर्हसि ग्रपृष्टोताडनंकृत्वासाधुशापमुखंददेत् ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की कुण्डली में ग्रहों का ऐसा योग ग्रानकर पड़ा है कि दूसरों को परिश्रम करके खुश रक्खे कठोर वचन न कहै चित्त में इन्साफ होवे ग्रनर्थ से बहुत डरा करे सत्य बोलने वाला बड़ा पराक्रमी हो ग्रसत्य से क्रोध विशेष ग्रावे सुतस्थान के ईश की पूजा करने से दान करने से वंश की वृद्धि विशेष हो ग्रौर यह जीव धन का भोगने वाला सुजन से प्रीति रखने वाला ग्रल्प का उपाय पूजा दान करना बहुत श्रेष्ठ है एक स्त्री का सुख विसर्जन दूसरी से सुख मिले कामदेव की उन्मत्तता से बुद्धि न्यून चलायमान सी हो जाया करे एक समय ग्रचानक विपत्ति रंज सा हो जाया करे ग्रौर दीर्घ पीड़ा से प्राण बचे ग्रायु ग्रल्प उपाय करने से ७६ वर्ष की हो पिछली ग्रन्त ग्रायु श्रेष्ठ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव बड़ी प्रतिष्ठा वाला ग्राम पति जमींदार था दान पुण्य भी विशेष करता था एक समय इस जीव ने हवन करके यज्ञ करी थी सो उस यज्ञ में एक साधु भी ग्रान प्राप्त हुवा साधु से कहा कि तुझे सबसे पीछे भोजन मिलेगा वार्ता में विवाद बहुत हुवा साधु की ग्रपकीर्ति हुई ग्रौर उसे पिटवाया उसने शाप दिया सो उस निमित्त ब्राह्मण ग्रौर साधुग्रों को नौतकर जिमावे ग्रौर गुप्त दक्षणा विशेष दे उन के चरण छुवे ग्राशीर्वाद ले तो मनोकामना पूर्ण होवे वंश की विशेष वृद्धि हो ग्रौर मन की कामना जो भारी लगी हुई है सो भी पूर्ण हो ग्रौर वो जो एक चिंता में लालसा लगी हुई है सो भी पूर्ण हो ग्रौर सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहास्थापित्वासर्वगाथाचकथ्यते प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्यवचनंव्रजेत् दानीमानीभवेत्पुंससुतदारासमन्वितः देवद्विज
रतोनित्यंकृपांकृत्वापरोजनं लोकेमाननायख्यातोविद्याबुद्धिचेतीक्षणः मित्रप्रीतिपरोपकारीसुतदारादयान्वित प्रथमेद्वितीयेब्देचदंतपीड़ा
ज्वरोजाता रेचनंव्याधिप्राप्तयेकृष्यदेहश्चजायते बृणव्याधीशरीरेचकिंचितकालशांतये भ्रात।अथवाभग्नीचयुक्तयोगश्चनान्यथा तातमात
महाहर्षंजीवनंसुफलंमन अन्यवर्षेसुखंप्राप्तिबालवृद्धिदिनेदिने मंगलाचारकंयोगंविद्यारम्भनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यग.थाचकथ्यते
कनिष्टोभ्रातकंप्राप्तितातलाभदिनेदिने धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् किंचित्व्याधिशरीरेचऔषधिप्रतिशांतये मित्रप्रीतिनसंदेहो
बालक्रीड़ाकिल्लोलकम् त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्ययुग्ममितेतथा विद्याबुद्धिविशेषेणआयुरेखाचपूर्णांकं मीनमध्यध्वजारेखासर्वकार्येचसिद्धति
द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये गर्भयोगश्चप्राप्नोतिअल्पयोगश्चप्राप्तये ग्रहपीड़ाभविष्यंतिऔषधीसेवनंवृथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिपत्नीयोगश्च
चिंतया निजप्राप्तिचित्तचिंतामन्दलाभंप्रतीततः चंद्रजीवमहाप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा व्योमरामाद्वमध्येतु
सर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभप्राप्तिचमध्यमा दीर्घव्ययंशुभंकार्यंगुप्तचिंताशरीरजं पुत्रपौत्रीसमायुक्तअल्पआयुचबालकः
चितक्लेशमहाचिंताभृगुणापरिभाषितः पञ्चमस्वामिकृतेपूजामनवांछितफलप्रदा कुलबंधुविरोधश्चपत्नीक्लेशविरोधता अकस्मातमहत्प्राप्ति
आनंदभूमिमंडले छत्रचिंतानसंदेहोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्रामाद्वकेवर्षेशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रिपौत्र
समायुक्तोशुभकार्यंधनव्यय लाभप्राप्तिविशेषेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने भूमिलाभविजानीयातउच्यपदवीप्राप्तये देहकष्टमहापीड़।व्याधिवृद्धि
प्रतीतत लग्नईशकृतेपूजाछायापात्रतुलाकृतं मृत्युञ्जयजपेत्विप्रव्याधीन्यूनदरश्यते दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेबाण
वेदाद्वकेतथा सून्यशरेचमध्येतुसर्वगाथाचकथ्यते मानसीविविधाचिंतालाभंप्रतिदिनेदिने नवीनोमन्दिरकंवासअकस्मातउपद्रवम् धनंव्ययं
विशेषेणपश्चांतेधनसञ्चय ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मेणभोतातअल्पशांतिभविष्यति ॥ भृगुवाच ॥ तुलादानप्रकर्तव्यम्घृतखांडत्रिधातुकी

भृ० स०
फलित
५५३

रजनितस्वर्णताम्रञ्चत्रिधाचुवदतेमुनि द्वादशेरजतंभागमेकभागञ्चकाञ्चनं रजतंदशगुणोताम्रसर्वएकत्रधारयेत् घृतखांडसमायुक्तं तुलादानञ्च कारयेत् अस्यदानेनभोपुत्रअल्पसर्वविनश्यति शरबाणमितेब्देचशून्यषट्मितेतथा सर्वसौख्यसमायुक्तोधनवृद्धिदिनेदिने राजद्वारजयप्राप्ति भाग्यवृद्धिनसंशयः पञ्चमाससमारभ्ययौवनंमासत्रयोदशः राजद्वारेविषादञ्चधनव्ययोनसंशय धनधान्यसमृद्धिश्चग्रहमंगलगानकं कस्मिन् भ्रमचित्तं शुक्रबुद्धिमानोविशेषतः दीर्घोयंप्रतिष्टोवान्यायकारीप्रधानतः सत्यअसत्यकं तोलभृगुणापरिभाषितः पापक्रूरग्रहापूजाधनसंतान वृद्धया चंद्ररसमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रगोत्रसमायुक्तोपञ्चईशोपिपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो वाहनादिसुखंमहत् अश्वपतिगजग्रामीचदासदासीसुखीनरः चंद्रसप्तमितेवर्षेशून्यअष्टमितेतथा तीर्थयात्राचगवनंईश्वरभक्तितत्पर चित्तक्रोध कटुवाक्यंतुधातृष्णाचअल्पयो नेत्रज्योतिकंन्यूनंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाप्राणगतनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री में ग्रह अति श्रेष्ट हैं और विचित्र पड़े हैं बुद्धि तीक्षण होवे विद्या मध्यम सी हो चतुराई से विशेष धन को प्राप्ति करे सत्य असत्य को परखने वाला हो पाप ग्रहों का और क्रूर ग्रहों का उपाय दान जप करता रहै मन्त्र दान से भाग्य की विशेष वृद्धि हो पंचम स्थान का जो ईश है उसकी पूजा से वंश की वृद्धि हो एक समय अल्प आवे सो उसका उपाय जो कुछ लिखा है सो विधिपूर्वक करे तो निश्चय करके अल्प नष्ट हो चित्त में अनेक २ प्रकार की वार्ता उपजा करें और हे शुक्र धन प्राप्त होने के यह जीव बहुत उद्योग किया करे मित्र से प्रीत रहै अर्ध अवस्था से पश्चात् भाग की बृद्धि हो विशेष ऐश्वर्य बढ़े जीव का दुख भी देखे पश्चात् ईश्वर की भक्ति बढ़े हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्रह्मकुल में बड़ा ऐश्वर्य प्रतिष्ठा वाला कीर्तिवान दानी था परन्तु कामवश हो कर पर स्त्री भोग कर गर्भ खंडित कराया इस कारण इस जन्म में श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर रक्त चन्दन से ब्राह्मण के बालक की मूर्ति बनवा कर और तांबे के कलश में घृत भर कर मूर्त्ति प्रवेश कर और रात्रि के समय संकल्प करके दे तो मनोकामना पूर्ण हो गायत्री महामन्त्र का जाप कराना श्रेष्ट है निश्चय करके वंश की वृद्धि हो और हे शुक्र उस जीव की स्त्री से प्रीत और गुप्त चिंता सी रहा करे खर्च के बहुत से काम आवें सो आनंद में पूर्ण उतरे एक जीवसे मित्रता बनी रहे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहापत्रस्थित्वाश्रेष्टजनकुलदीपकः सत्यवादीभवेत्वालोग्रसत्यवचनंव्रजेत् प्रथमेद्वितीयेवर्षेतृतीयेसप्तमेतथा मध्यगाथाच
कथ्यतेभृगुणापरिभाषितः मातृपीड़ाभविष्यतिकृष्यदेहशरीरजं बालक्रीड़ाचप्राप्नोतिमातृदुग्धनलभ्यते घूटिकासेवनंकृत्वाकिंचित्कालशांतये
पत्नीचसंस्कारोपिमंगलाचारहर्षकं विद्याभोगप्राप्नोतिबालवृद्धिदिनेदने अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते विद्यायोगप्राप्नोतिभृगुणापरि
भाषितः तातधनंशुभंकार्यंजीवपत्नीचप्राप्तये बृणव्याधीशरीरेचउपरञ्चपपाथयः पशुजीवजलंभयअल्पप्राणनसंशयः तातमातमहाक्रोधी
प्रदेशोगमनंतथा बंधुभ्रातमहाचिंताक्विचित्कालोपिग्रागत तातलाभनसंदेहोजीववृद्धिदिनेदिने त्रयोदशषोडशेवर्षेविंशवर्षोपिमध्यमा
विद्याचपठनंकृत्वातातलाभभविष्यति मानसीविविधाचिंतामित्रप्रीतिचलोकमे द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतिश्चप्राप्तये अन्यस्त्रीमहाप्रीतिगुप्त
चिंताशरीरजं स्वयंलाभकृतःकृतःमन्दप्राप्तिचदृश्यते पत्नीगर्भंनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति मंत्रदानंसुतस्थानंवंशवृद्धिभविष्यति महत्प्राप्ति
महोत्साहोलाभेभवतिनान्यथा प्रमेहोव्याधिकंगुप्तशीघ्रोवीर्यखंडितपितृपीड़ागृहेमध्येगायत्रीमंत्रजापकं मित्रपक्षपरंप्रीतिगुप्तक्रीड़ाकिलोलकं
चंद्रयुग्ममितेवर्षेशरवृषमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते पत्नोगर्भनसंदेहोपुत्रीजन्मनसंशय पत्नीकष्टभयंघोरंपीड़ायाचप्रसूतिका वैद्योपायकं
कृत्वाग्रौषधीप्रतिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेणनिजकृत्योपिकृत्यया राजद्वारमहालाभंग्रानंदभूमिमंडले तातकष्टभयंघोरंछत्रचिंताचप्राप्तये
मानसीविविधाचिंतापत्नीक्लेशसमन्वितः शुभकार्यधनव्ययंभृगुणापरिभाषिनः चंद्ररामभितेब्देचबाणराममितेतथा शून्यवेदाङ्कमध्येसर्वं
गाथाचकथ्यते नवीनोकार्यचितवनंगुप्तचिंताचप्राप्तये जीवक्लेशभयंशुक्रलाभमध्यदिंनेदिने प्रदेशेगवनंकृत्वानान्येथावचनंमम पुत्रजन्म
भविष्यंतिग्रानंदभूमिमंडले भूमिलाभविजानीयातगुप्तचिंताधनस्थितः विवाहादिधनंज्ञेयम्ग्रन्यवर्षेसुखंतथा ग्रकस्मातउपद्रोवाकिंचित्
कालशांतये चंद्रवेदमितेद्वेचशून्यबाणचमध्यमा निजकृत्यमहल्लाभम्मनवांछितफलप्रदा मित्रपक्षपरंप्रीतिमन्द्रभूमिचप्राप्तये देहकष्टज्वरं
व्याधीकृष्यदेहप्रतीततः महामृत्युञ्जयंजाप्यचंद्रलक्षप्रमाणकं घृतलवणञ्चसंकल्पं श्रद्धाचब्राह्मणंददेत् दानमंत्रकृतेसंतसर्वव्याधिविनश्यति

धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् दशाश्रेष्टचआरम्भलाभप्राप्तिचगुप्तता चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिवृद्धमृत्यु
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात्व्याधिवृद्धिदिनेदिने सप्तईशश्चपूज्यंतेमंत्रदानश्चशांतये चौरभीतिभयंचित्तकुलबंधुविरोधता गुप्तशत्रुनसंदेहो
सन्मुखमिष्टवाक्यकं वायुकष्टशरीरजंअकस्मातोपिपीडनं वाहनादिसुखंशुक्रअतितेजोप्रतिष्टया पुत्रपौत्रसमायुक्तोपश्चईशपूजनम् चंद्रषष्ट
मितेवर्षेसप्तषष्टमितेतथा नानालाभकंश्रष्टभाग्यवृद्धिविशेषतः ऐश्वर्यंचभविष्यंतिआनंदभूमिमंडले पापक्रूरग्रहापूजासर्वानंदश्चप्राप्तये भूमिलाभ
भवेत्शुक्रराजद्वारेउपाधिकं सप्तषष्टमितेवर्षेरामनागमितेतथा पुत्रपौत्रसुखीलोकेआनंदभूमिमंडले श्वासकासादिकंव्याधिदुर्बलोदेहदृश्यते
अल्पश्चक्षुधाशुक्रमृत्युजीवोचप्राप्तये ॥ भाषा ॥ हे शुक्र इस प्राणी की पत्री का फल अति उत्तम है और ग्रह श्रेष्ट और बलवान् पड़े हैं परन्तु
इस जीव के चित्त को फिक्र हो इज्जत विशेष हो लाभ का ध्यान विशेष रहा करे और हे शुक्र इस जीव का खर्च दीर्घ है इस कारण से लाभ की
विशेष प्राप्ति हो इज्जत और प्रतिष्ठा दीर्घ होवे सब कार्य पूर्ण हो जावें लाभ ग्रह के ईश का जाप्य मन्त्र और दान करता रहै और पंचम
स्थान के ईश का पूजन दान विद्या बुद्धि और पुत्रों का विशेष सुख मिले हे शुक्र बाल अवस्था में दस्तों की बीमारी हो भ्रात योग हो जल
चौपाए से भय हो फोड़े का चिन्ह हो एक समय में जीव का दुख देखे उसकी निवृत्ति के कारण महामृत्युंजय का जाप श्रेष्ट है और इस
जीव का चित्त कभी कभी स्थिर न रहे चलायमान सा रहा करे एक ना एक तुड़कधांस लगी रहा करे एक अल्प व्यतीत होकर ७३ वर्ष की
आयु होवे अल्प का उपाय करना श्रेष्ट है विद्यावान् बुद्धिवान् सत्यवादी खर्च करने वाला काम की उन्मत्तता में बुद्धि न्यून हो हे शुक्र पूर्व
जन्म में ये जीव राज मन्त्री था श्रेष्ट सम्मत का देने वाला दान पुण्य भी करता था तीर्थ यात्रा को जाते समय रथ में सवार था रथ के
पइये के नीचे गर्भणी सांपन नष्ट हुई उसके दो भाग होगए और महा कष्ट भोग कर मरी उसने शाप दिया सो इस जीव को आधा शाप
लगा क्यों कि बिन देखे भूल से मरी सो हे शुक्र स्वर्ण की सांपन बनवा कर घृत के कलश में प्रवेश करके गुप्त दान देने से मनोकामना पूर्ण हो
वंश की वृद्धि विशेष हो एक समय प्रमेह पीड़ा हो जावे बिना कारण भी चिंता सी हो जाया करे काम काबू से बाहर दीखे ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहस्थितोपत्रीमध्यगाथाचबालकः यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सदाहर्षयुतः श्रीमान्जन्मवाधाविधानतः
सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिआशक्तया दीर्घकार्योपिआगत्वासर्वसुखंव्यतीततः गुप्तचिंताचप्राप्नोति
नवीनोचितवनंकृते प्रथमेब्देज्वरंपीड़ा द्वितीयेरेचनंतथा मातृकष्टविजानीयात् भृगुणापरिभाषितः तृतीयेसप्तमेवर्षे बालक्रीड़ाकिलोलकं
बृणव्याधीशरीरेचकृश्यदेहप्रतीततः तातलाभश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं भग्नीयोगश्चप्राप्नोतिअथवाभ्रातयोगकं तातमातमहासुखंजीवनं
सुफलंतथा अष्टमेद्वादशेवर्षेवेदचंद्रमितेतथा वामयोगनसंदेहोविद्यापठनंपाठनं धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् मित्रपक्षउपाधीचभृगुणा
परिभाषितः पञ्चदशेअष्टकंचन्द्रमध्यगाथाचकथ्यते वृक्षोचपतनंज्ञेयंअथवाजलमन्द्रतो देहकष्टविजानीयात्रात्रौनिद्रानलभ्यते चिकित्सौते
कृतेजीवकिंचित्कालशांतये पत्नीयोगश्चप्राप्नोतिअल्पगर्भोपिदृश्यते ऊनविंशमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्रजन्मप्रतीततः
निजकृतजीवयोगेनधनलाभदिनेदिने देहकष्टविजानीयात्औषधीप्रतिशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिदिनेदिने पुत्रप्राप्तिग्रहमध्येगुप्तचिंता
शरीरजं षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा व्ययचयोगनसंदेहोशुभकार्यस्तुमेवच भूलाभधनंप्राप्यभृगुराजेनभाषितम् पत्नीगर्भधारणश्चपुत्र
जन्मप्रतीततः महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्योदयदिनेदिने देहकष्टभवेद्दीर्घछायापात्रकृतेतदा महामृत्युञ्जयोजाप्यअनुष्ठानयथाविधिहवनंब्राह्मणं
भोज्यंवस्त्रआभूषणाददेत् भूरिशदक्षिणांदत्वाश्रद्धायुक्तेनचेतसा एतद्यत्नप्रभावेणआनंदजायतेध्रुवम् चंद्रराममितेवर्षेसूर्न्यराममितेतथा द्रव्य
प्राप्तिगृहेतस्यव्ययोपितत्रजायते आनादरक्तशत्रुणांजायतेनात्रसंशयः गोधूमोपिगुडच्यश्चमोदकानिकृतोतदा मर्कटोबटुकोदत्वापूजयन्ती
मनोरथम् धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् पत्नीप्रीतसमुत्पन्नोइच्छायांवर्ततेमनः पुण्यकर्मप्रभावेणसर्वसौख्योपिजायते मयावाक्यश्रुतो
वत्सश्रेष्ठकर्माणिसञ्चयम् चन्द्रवेदमितेवर्षेसून्यबाणमितेतथा लाभप्राप्तिविशेषेणमनवांछितफलप्रदा दुष्टकर्मपरित्यज्यसर्वदासुखदाभवः
पापग्रहोपिपूज्यंतेऐश्वर्यंमहानवृद्धि करमीनश्चआकारीसर्वंआयुहर्षकम् पूर्णंआयुदशंरेखासुबुद्धिश्चिरजीवन भूमिलाभभविष्यन्तिनवीनो

मृ॰स॰
फलित
५५७

चित्तचिंतनम् किंकालभ्रमणबुद्धिगुप्तचिंताशरीरजं सिंधुतुल्यतरंगोवारात्रिदिवसम्मति दानग्रहनकर्तव्यमधनन्यूनंदिनेदिने पत्नीक्लेशभवि
ष्यंतिगुप्तचिंताचव्याप्तये निजप्रियजीवयंचिंताभृगुणापरिभाषितः धनंव्ययंशुभकार्यंआनंदभूमिमंडले अचानकंउपद्रोवाकिञ्चितकालशांतये
चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा ॥शुक्रोवाच॥ किंदानंकस्यपूजाचकिंमंत्रंकस्यजापकं पूर्वशापविनिमुक्तोकथ्यतेविधिपूर्वकं ॥भृगुवाच॥
अस्यशांतिप्रवक्षामियथार्थंश्रुणुसुतकवे स्वर्णस्यप्रतिमाकार्याश्रद्धामात्रप्रमाणकी पंडामूर्तिलिपिकृत्वागंगाजलस्नानकम् तनमध्येकाम
बीजञ्चगायत्रीसंपुटंलिखेत् संकल्पंददेतविप्रमनवांछितफलप्रदा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिदिनेदिने चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा
पुत्रपौत्रसमायुक्तोईश्वरभक्तितत्परः धनव्ययंशुभाकार्यंमन्द्रभूमिचप्राप्तये चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदसप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यमश्रेष्टभूमिच
तीर्थकं व्याधिदेहप्राप्नोतिप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि किसी समय में बिना परिश्रम के विशेष धन मिले
और कांक्षा धन की विशेष ही बनी रहे यह जीव धन का उद्योग बहुत करता रहे और दान पुण्य में चित्त मध्यम सा रहा करे सब झूंठा
बखेड़ा समझे सप्तम और पंचम एकादश स्थान के ग्रह के ईश की पूजा करने से श्रेष्ठ फल हो दुभार्या योग का आश्चर्य नहीं शत्रु हमेशा
जला करें और मित्र बंधुओं से मध्यम मेल हो और सदा सत्य वार्ता को पसंद करता रहा करे और अच्छे कामों में धन विशेष खर्च किया
करे गप्पाष्टिक की बात को तोला करे और विद्या से अक्ल ज्यादा हो हमेशा न्याय की वार्ता कहा करे एक समय एक अल्प से नया जन्म
होवे दान पुण्य और बटुक भैरव का मन्त्र करावे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव उच्च पदवी पाने वाला न्याय करता था बहुत से नौकर चाकर
थे कायस्थ कुल में चित्र गुप्त वंश में था और हस्ती घोड़े वाहनादि थे परन्तु लोभवश होकर तीर्थ पण्डा का न्याय से अन्याय कर दिया सो इसी चिंता
में पंडा मरा सर्वस्व जाता रहा सो पंडा ने शाप दिया कि तुझे भी एक ऐसा कारण होगा जिसमें बहुत फिक्र चिंता दुख प्राप्त हों सो हे शुक्र तिस के
कारण स्वर्ण का पत्र बनवा कर पंडा की मूर्ति लिखे विष्णु भगवान् का पूजन करावे ब्राह्मणों को जिमावे मूर्ति संकल्प करे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वामध्यभागीचबालकः प्रवाणोसत्करमीचदयालुसर्वप्राणिय: शुभकर्मरतःपुंसप्रसिद्धोजनसंभवः सत्पुत्र
सुदारश्चधनधान्यसमाकुलः मिष्टभोक्तागुणज्ञश्चःअल्पयुग्मनसंशयः चञ्चलश्चित्तवृत्तिस्यात्गुप्तचिंताचमित्रता यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्ति
कुलवर्द्धनः कस्मिन्कालपीड्यंतेप्रमेहोव्याधिकंतथा शीघ्रञ्चवीर्यखंडश्चवीर्यरक्तसाधनः प्रथमेद्वितियेब्देचतृतीयेसप्तमेतथा कष्टव्याधीनसंदेहो
ज्वरपीड़ाचरेचनं भ्रातभग्नीचप्राप्नोतिअल्पकष्टभविष्यति मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशेषोडशेतथा कुलबंधु
विरोधश्चतातचिंताचगुप्तता धनव्ययशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं पत्नीयोगञ्चप्राप्नोतिविद्याप्रीतिचमध्यमा बालक्रीड़ाकिलोलञ्चआनंदभूमि
मंडले तातलाभविजानीयात्देहकष्टोपिशांतये सप्तचंद्रमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहोद्विरागमनोचवामकं पञ्चमेश अनुष्ठानं
पूज्यतेविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भंचप्राप्नोतिअल्पकष्टीचबालकः सर्वसुखञ्चमध्यस्थेभृगुवाक्यनचान्यथा
चंद्रमित्रपरंप्रीतिछत्रचिंताचप्राप्तये चंद्रनेत्रमितेब्देचबाणनेत्रमितेतथा कार्यकृत्यनसंदेहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने पत्नीगर्भधारणञ्चसुताजन्मन
संशयः पत्नीप्रसूतिकाव्याधिऔषधीप्रतिशांतये देहकष्टविजानीयात्मन्त्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षटनेत्रमितेवर्षे
व्योमराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषितः महाउग्रग्रहाकेंद्रश्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापकरग्रहापूजासर्वविघ्नोपशांतये व्रणव्याधि
शरीरेचचिह्नदेहस्यद्रष्टयः शुभकार्यंधनव्ययंधनलाभदिनेदिने जीवलाभदिशंशुक्रगुप्तव्याधीचप्राप्तये छायापात्रकृतेजीवसप्तअन्नतुलाकृते
चंद्ररामभितेवर्षेबाणलोकमितेतथा सून्यवेदाङ्केमध्येसर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोतिजीवदुखभविष्यति मन्त्रदानकृतेसंतसर्वविघ्नो
पिशांतये पूर्वजन्मइदंजीवकृषिकर्मादितत्पर वृषभोज्यंचकर्तव्यम्अतिक्रोधीचसाहसी लाभप्राप्तिविशेषेणगुप्तचधनप्राप्तये चंद्रवेदमितेवर्षे
शून्यबाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनम् महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारेचन्यायकम् धनव्ययविशेषतः
किंचित्कष्टविजानीयात्औषधीमन्त्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तोशुभकार्यधनव्ययः मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति

मृ०स०
फलित
५६०

आनंदभूमिमंडले लाभेशपूजनंकार्यंधनधान्यसमागमः लोकेलक्षपतिख्यातोमानकीर्तिविशेषतः नवीनोच्चितवनंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाणमितेब्देचशून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहोभूमिलाभनसंशयः शुभकार्यंधनंव्ययविवाहोत्सवमंगलं वामकष्टभविष्यंतिमन्त्रदानञ्च शांतये गुप्तञ्चधनप्राप्नोतिभूमिलाभनसशयः नवीनोमन्द्रकंरचनावाहनादिसुखंमहत् अकस्मातउपद्रोवाचित्तचिंताचगुप्तता जीवचिंताःच प्राप्नोतिभृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रषष्टमितवर्षेंव्योमवारमितेतथा वंशवृद्धिभविष्यंतिधनंव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोमनवांछितफलप्रदा ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् कृष्यदेहविजानीयात्खवासकासाधिकोभवेत् नेकलाभगृहमध्येआनंदभूमिमंडले शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रसप्तमितेब्देचषट्सप्तमितेतथा दुखसुखादिभोक्तव्यम्प्राणागवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह केन्द्र में श्रेष्ट होते हैं सो दीर्घ खर्च और दीर्घ लाभ होवे भूमि से प्राप्ति और रोजगार में फायदा विशेष हो लाभ स्थान अर्थात् एकादश स्थान के ईश की पूजा दान से सदैव प्राप्ति हो एक लालसा सी बनी रहे चित्त में ऐश्वर्य की चिंता इज्जत प्रतिष्ठा का भय सा रहे लाभ से विशेष खर्च आन मौजूद हों परन्तु ग्रह भाग्यवान हैं पाप क्रूर ग्रहों का दान कराता रहै मनोकामना पूर्ण हो कहीं से गुप्त धन की प्राप्ति हो एक जीव में बड़ी प्रीत बनी रहै प्रमेह पीड़ा सूक्षम हो बृण का चिन्ह देह मैं एक काम काबू से बाहर हो नवीन वार्ता चिंतवन कर सत्य भाषण करता एक समय चोर का भय स्त्री स्थान के ईश की पूजा से कामना पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव अहीर कृषि कर्म करता था सैंकड़ों चौपाये और सैकड़ों मनुष्यों का पालन करता था एक समय क्रोधवश होकर एक बैल को बहुत मारा सो बैल का अंग भंग हुवा उसने दुखी होकर शाप दिया तिस निमित्त स्वर्ण के पत्र पर बैल की मूर्ति रक्त चंदन से लिख ताम्र कलश में घृत भर मूर्ति प्रवेश कर संकल्प करके ब्राह्मण को दे तो मनोकामना सिद्ध हो धन तथा वंश की वृद्धि हो शाप नष्ट हो पृथ्वी पर आनन्द भोगता रहै ॥

श्रीगणेशायनमः बहुव्याधीविलाशीचस्वल्पभाषीगुरुप्रिया शुभकर्मीकृतज्ञीचआषाढ़ेप्रसवेन्नरः मित्रपुत्रसमायुक्तोबहुभागीकुलदीपकं सुख
दुःखंसमायुक्तोसुतकांतायुतनर क्षीणदेहोकफाधिक्यवायुरोगश्चपीड़का राजद्वारधनंप्राप्तिविद्यावान्धनान्वित दाताभोक्ताकृतज्ञश्चसत्कीर्ति
कुलवर्धनः सुकर्मीचधनीशूरोश्रेष्टकेशाविशालदृग विक्रयकर्मकर्ताचअथवाराज्यलाभके प्रथमेद्वितीयेवर्षेमातृपीड़ाप्रसूतिका दंतपीड़ाज्वरो
जाता रेचनंव्याधीलिप्तवान् तृतीयेसप्तमेवर्षेभग्नीभ्रातृप्राप्नुयात् तातपानमहासुखंजीवनंसुफलंममः मंगलाचारकंयोगंभृगुणापरिभाषित
अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वामयोगश्चप्राप्नोतिशुभकार्यधनव्ययम् भ्रातृयोगश्चप्राप्नोतितातलाभदिनेदिने किंचित्व्याधीशरीरेच
औषधीप्रतिशांतये आदिपठनश्चविद्यायांअन्तविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोतिकार्यमात्रश्चसिद्धति त्रयोदशषोडशेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा
मध्यगाथाचकथ्यतेभृगुणापरिभाषित प[illegible]गश्चप्राप्नोतिद्विरागमननसंशयः तातलाभविजानीयात्बालवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति
चित्तवृत्तिआशक्तया किंचितकष्टविजा[illegible]त्औषधीप्रतिशांतये पत्नीगर्भनसंदेहोसुताप्राप्तिभविष्यति महत्प्राप्तिमहोत्साहोभाग्यवृद्धिदिनेदिने
कार्यकृत्यसुखीलोकेशत्रुपक्षविरोधता पशुजलभयंजीवऊपरश्चपपाथयः चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा व्योमरामंचवर्षोवामध्यगाथाच
कथ्यते ग्रहपीड़ादुखंप्राप्तिपितृव्याधीचगुप्तता नवीनोकार्यकंकृत्वाभाग्यवृद्धिविशेषतः पापक्रूरग्रहंपूजालाभोभवतिनान्यथा ग्रहपूजानकर्त
व्यम्मंदलाभप्रतीततः इदंमन्त्रंकृतेजापंधनसंतानवृद्धया ॐ, ऐं, ह्रीं, क्लीं, श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय धनसंतानवृद्धिकुरुकुरुस्वाहा
इदंमंत्रकृतेजापंसर्वविघ्नोपिशांतये नानालाभकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्ररामामितेवर्षेबाणराममितेतथा शून्यवेदाब्दमध्येतुसर्वगाथाच
कथ्यते चंद्रमित्रपरंप्रीतिआनंदभूमिमंडले शत्रुपक्षउपाधीचराजद्वारपराजयः अकस्मातमहाचिंतागृहक्लेशभविष्यति गुप्तचिंताशरीरेचमंत्र
दानंचशांतये नवीनोकार्यकंचितवन्धनलाभविशेषत नवीनोमन्द्रकंरचनाभृगुणापरिभाषित चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा शून्यबाण
कथाकथ्यंभृगुणापरिभाषितः मानसीविविधाचिंतालाभोभवतिनान्यथा प्रदेशोगवनंकृत्वामनवांछितफलप्रदा गृहकष्टविजानीयात्मंत्रदानंच

शांतये वंशवृद्धिविशेषेणानान्यथावचनंमम शुभकार्यधनंव्ययम्विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहोधनवृद्धिदिनेदिने मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भूमिमध्यधनंप्राप्तिबंधुकुलविरोधता शत्रुमित्रउपाधीचकिंचित्कालेतिशांतये चंद्रबाणमितेवर्षेशरबाणमितेतथा व्योमरसाब्द केमध्यसर्वगाथाचकथ्यते पुत्रकार्यभविष्यंतिलाभोभवतिनान्यथा गुप्तचिंताचप्राप्नोतिकिंचित्कष्टशरीरजं वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीप्रतिशांतये छत्रचिंतानसंदेहोधनव्ययविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्योदयदिनेदिने वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले चंद्रषटमितेब्देचशून्यसप्तमिते तथा अकस्मात्महाप्राप्तिसर्वचिंताविनष्यति राजद्वारकंन्यायम्मनवांछितफलप्रदा शुभकार्यधनंव्ययपुत्रपौत्रसुखावहं नवीनोकार्यकंप्राप्ति भाग्योदयदिनेदिने चंद्रजीवमहादुखंगुप्तचिंतामहानकं वामदेहमहाकष्टंप्राणगवनोनसंशय संजीवंकथापूर्वंतपस्वीचगंगातटे मंत्रजापकृते सिद्धिपरअन्नञ्चभोक्तया लीनभोज्यकुलीनोवाभक्षणञ्चनसंशय ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह बलवान् आनकर बिराजमान हुए हैं परन्तु पाप और क्रूर ग्रहों की दृष्टि के प्रभाव के कारण चिंता फिक्र चित्त माने परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब इज्जत के साथ पूर्ण हो जाया करे यह जीव दीर्घ इज्जत प्रतिष्ठा वाला होता पंचम और एकादश ग्रह के ईश की पूजा दान मन्त्र खर्च और धन की विशेष प्राप्ति हो तथा वंश की विशेष वृद्धि होवे पुत्र पौत्रों के सुख अधिक देखे लाभ के वास्ते उद्योग बहुत करे धन व्यय ये जीव अपने हाथ से बहुत करे अर्थात् बड़े २ मामले भुगते किसी का बुरा न चाहे नेक चलन एक कार्य न्यून बने फिर पछतावे विद्या से बुद्धि विशेष हो आयु पूर्ण हो एक अल्प से बच कर नया जन्म हो है शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा तपस्वी सन्यासी था बड़े २ मन्त्र सिद्ध किए थे परन्तु भावी वश हो कर गंगातट पर रह कर भोजन लीन और कुलीन खाता था और कुछ पाप दृष्टि भी पश्चात् में हो गई सो पिछले पुण्य पाप के कारण श्रेष्ट फल भी भोगे और न्यून फल भी भोगे सो इस जीव का अन्न घृत वस्त्र दान करने से श्रेष्ट फल होगा और मनोकामना पूर्ण होवेगी ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वाचश्चलोबालजन्मनः प्रमोदीसत्यवक्ताचश्रसत्योबचनंब्रजेत् दयावंतसमादृश्योपरकार्योपितत्परः सदाहर्ष
महोत्साहोचित्तोदारसुपुत्रवान् विद्याविनयसंपन्नोसुतदारदयान्वित देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोसमुद्भवः सुखीभोगयुतंपुंसश्रीमुखंप्रभवेजनः
यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्धनः सुन्दरोगुरुभक्तश्चभृगुणापरिभाषितः चंद्रमित्रपरंप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया श्रल्पदेहभविष्यंति
नवीनोजन्मबालकः प्रथमेद्वितीयेवर्षेदंतपीड़ाज्वरादिकं मातृकष्टविजानीयात्श्रौषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते वृणा
व्याधिशरीरेचभूतछायाचविन्हलम् उपकारकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये भग्नीभ्रातृप्राप्नोतिश्रल्पकष्टनसंशयः मंगलाचारकंयोगंतातधनंशुभं
कार्यम् श्रष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगनसंदेहोशुभकार्यधनव्ययं विद्यापाठनंचैवबालक्रीड़ाकिलोलकं त्रयोदशषोडशेवर्षे
शून्यनेत्रश्चमध्यमा द्विरागमनपत्नीचश्रानंदभूमिमंडले चंद्रमित्रपरंप्रीति ममवाक्यनचान्यथा पत्नीगर्भनसंदेहोसंततयोगप्राप्तये वामकष्टविजानी
यात्श्रौषधीप्रतिशांतये व्यवहारेधनप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं किंचितव्याधीशरीरेचमन्त्रदानश्चशांतये
पापकृरञ्चहापूजाधनसंतानवृद्धति चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा शून्यरामाद्धवर्षेचमध्यगाथाचकथ्यते पुत्रपौत्रभविष्यंतिश्रानंदभूमि
मंडले बंधुकुलविरोधश्चपत्नीक्लेशश्चचित्तवान् मित्रचंद्रमहाप्रीतिचित्तवृत्तिश्राशक्तया श्रकस्मात्उपद्रोवाचित्तचिंताविरोधता धनव्ययविशेषेण
मंदलाभप्रतीततः कष्टदेहज्वरोजातामहामृत्युञ्जयोजपेत चंद्ररामितेवर्षेबाणरामश्चमध्यमा शून्यवेदाद्धकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते श्रर्धश्रायु
गतेकाव्यंभाग्योदयदिनेदिने पुत्रप्राप्तिविजानीयात्श्रथवाजन्मकन्यका भूमिलाभभवेत्काव्यशत्रुपक्षविरोधता शुभकार्यधनव्ययंविवाहोत्सव
मंगलं पितुलाभविजानीयात्किंचित्कष्टसमन्वित रिपुभीतिसमायुक्तहीनजातिरिपुभवेत् पत्नीकष्टनसंदेहोकफबातेनपीडनं बहुलाभस्ययो
योगंप्राप्तेनात्रसंशय चंद्रवेदमितेवर्षेबाणवेदमितेतथा व्योमबाणाब्दकंमध्येसर्वगाथाचकथ्यते किंचित्कष्टशरीरेचकफबातेनपीडनं चंद्रमा
मंत्रजाप्यश्चतथादानेनशांतये दानमंत्रकृतेजापंसर्वकष्टोपिशांतये पुत्रसंबंधयोयोगंधनव्ययविशेषतः छत्रचिंताचप्राप्नोतिमंदलाभप्रतीततः

नवीनोमंद्रकंरचनापुत्रपौत्रसुखावहं राजद्वारोतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रपूजयत् नवीनोवार्तयाचितवाहनादि
सुखंलभेत् चंद्रबाणमितेवर्षेसून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोकार्यलाभविशेषतः धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चित्तचिंताचप्राप्नोति
जीवक्लेशोनसंशयः अकस्मात्महल्लाभंवाहनादिसुखंभवेत् गुप्तचिंताचप्राप्नोतिशत्रुपक्षविरोधता किंचित्कालगतेकाव्यसर्वविघ्नोपिशांतये
चन्द्रषष्टमितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा कृत्यलाभभविष्यतिभाग्योदयदिनेदिने पूर्वक्षत्रीकुलेजन्मराणाएवंनृपोपति कोटपतिगजग्रामीचसूर्य
पर्वप्राप्नुयात कुरुक्षेत्रगवनंकृत्वागुप्तदानश्चहेतवे मिष्टान्नगुप्तस्वर्णश्चहरितःदासकाञ्चनं ताम्रगुप्तददेविप्रसंकल्पंनृपतिंकुरु आचार्यदानदृष्टस्या
अतिदुखितचिंतयो वर्षेमासेसुखंप्राप्तिआनंदभूमिमंडले ॥ भाषा ॥ इन ग्रहों के योग का यह फल है कि बड़े २ खर्च के काम सम्पूर्ण हों प्रथम तो
चित्तको खर्च का भय हो परन्तु काम ठीक बनजावे गुप्तचिंता बोझनसी लगी रहै कारबार में लाभ रहै बड़ी प्रतिष्ठा वाला हो परन्तु ग्रहों के
नाकिस दृष्टि के कारण नुकसान भी बहुत उठावे प्रदेश देखे और जीव में चित्त फंसा रहै जीव की आशा बनी रहै काम काबू से बाहर दीखे
रात्री को अनेक वार्ता सोचे दान मन्त्र जाप कराने से मनोर्थ पूर्ण हो एक समय अकस्मात् हानि हो चित्त में भय सा रहै फिर धन की
प्राप्ति हो स्त्री से प्रीत और घर में पितृ पीड़ा किसी समय में पीड़ा हो जाया करे अल्प से बचे जीव का दुख देखे संतोष हो जावे राहु केतु मंगल
का दान श्रेष्ट है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राणा ठाकुर थे और गज ग्राम रथ घोड़े आदि अनेक सवारी थी एक समय सूर्य पर्व
में कुरुक्षेत्र स्नान करने गया सो मिष्टान में गुप्त स्वर्ण रख कर नौकर से कहा पण्डा को दिया नौकर ने स्वर्ण हर
लिया तांबा भीतर मिष्टान में रख कर पंडा को दिया पंडा ने घर पर आकर मगन होकर राजा का दान टटोला तो पैसे निकले
पंडा का चित्त बहुत दुखी हुवा और निराश होकर बड़ा दुख माना और कठोर वाक्य कहे क्योंकि इसे बहुत दिनों से
राजा के दान की अभिलाषा थी सो हे शुक्र तिस निमित्त श्रद्धा प्रमाण स्वर्ण का गुप्त दान देने से निश्चय करके कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः श्रेष्टपत्रग्रहाकाव्य दीर्घभागीचबालक प्रमाणीसत्यवक्ताच मिष्टबाणीचभाषणं लोकसहस्रपतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः
प्रवीणोसत्यकर्मीचदयालुःसर्वप्राणियां शुभकर्मरतःपुन्स प्रसिद्धोधेनुलोकमा धनभोक्तागुणज्ञश्च अल्पयुग्मनसंशय मित्रपक्षपरप्रीतञ्चानंदं
भूमिमंडले कस्मिन्कालभयंचित्त मानहानिचद्रष्टय मानसीविविधाचिंतागुप्तचिंताचशांतये प्रथमेद्वितीयेवर्षेदन्तव्याधाज्वरादिकं तृतीयेसप्तमे
काव्य भ्रातभग्निचप्राप्तये अल्पजीवीचबालोयं भृगुणापरिभाषित पत्नीचमंगलंयोग व्रणव्याधिशरीरजं तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं
अष्टमेद्वादशेवर्षेत्रयोदशषोडशतथा विवाहादिधनंव्ययं गुप्तचिंताचतातकं पत्नीयोगनसंदेहो भाग्यवृद्धिदिनेदिने बालक्रीडाकिलोलश्चविद्या
प्रीतिचमध्यमः तातलाभविजानीयात् देहपीडाचशांतये सप्तचन्द्रमितेवर्षे सून्यनेत्रमितेतथा पत्नीप्रीतनसंदेहो द्विरागमननसंशय पञ्चमेश
अनुष्ठानं दानञ्चविधिपूर्वकं वंशवृद्धिनसंदेहोपुत्रजन्मभविष्यति पत्नीगर्भप्राप्नोति अल्पजीविचबालकः पञ्चमेशोपिपूज्यंते कुलदीपञ्चपुत्रवान्
चन्द्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा चन्द्रमित्रमहाप्रीति छत्रचिंताचप्राप्तये कार्यंकृतेनसंदेहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पत्नीगर्भचप्राप्नोति सुतजन्म
नसंशयः पत्नीकष्टविजानीयात् पीडायाञ्चप्रसूतिका वैद्योपायकंकृत्वामंत्रदानञ्चशांतये मृत्युञ्जयकृतेजाप्यंव्याधीनष्टदिनेदिने रसनेत्रमितेब्देच
शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंते भृगुणापरिभाषितः ग्रहकेंद्रस्थापित्वा श्रेष्टञ्चफलप्राप्नुयात् पापक्रूरग्रहापूजा सर्वविघ्नोपशांतये
अकस्मातउपद्रोवा धनव्यर्थविशेषत ब्रणव्याधिशरीरेच चिन्हदेहस्यद्रष्टयः धनव्ययंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलम् पशुभयविजानीयात् जल
मध्येपपाथयः जीवचिंतानसंदेहो प्रमेहोव्याधीपिडिका छायापात्रददेत्दानं सप्तअन्नतुलाकृतः चन्द्ररामभितेवर्षे बाणलोकमितेतथा शून्य
वेदाङ्कमध्ये सर्वगाथाचकथ्यते वामचिंताचप्राप्नोति जीवदुखभविष्यति मंत्रदानकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये पूर्वजन्मइदंजीव वैश्यवंशोपि
प्राप्तये वाणिज्योकार्यकंकृत्वा धनवानोविशेषतः गुप्तञ्चधनंविप्रभूमिमध्येचस्थिति ब्राह्मणमृत्युकंप्राप्तवैश्योगुप्तधनंहरंचन्द्रवेदमितेवर्षे शून्य
बाणमितेतथा पुत्रपुत्रीचसंयुक्तो पंचमईशपूजनं महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्योदयदिनेदिने राजद्वारकंन्यायं धनव्ययविशेषतः किंचित्कष्ट

विजानीयात् औषधीमंत्रशांतये पुत्रपौत्रसमायुक्तो शुभकार्यंधनव्यय मासेत्रर्षेसुखंप्राप्ति लाभोभवतिनान्यथा चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमि मंडले लाभईशोपिपूज्यते धनधान्यसमागमः लोकंलक्षप्रतिख्यातो मानकीर्तिविशेषतः नवीनोचिंतनंकृत्वा भाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रबाण मितेव्देच शून्यषष्टमितेतथा महत्प्राप्तिमहोत्साहो भूमिमंद्रव्यप्राप्तये शुभकार्यंधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलंग्रहकष्टविजानीयात् व्याधिवृद्धिदिनेदिने त्रयंविक्रंयजामहे ॥ मंत्रदानंकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये गुप्तश्चधनंप्राप्तिभूमिलाभनसंशय वाहनादिसुखंशुक्रनवीनोमंद्रवासकं अकस्मातउपद्रोवा चित्तचिंताचगुप्तता चंद्रषट्मितेवर्षेव्योमवारमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तोपञ्चमभावपूजनं श्वासकासादिउत्पन्न कृष्यदेहदिनेदिने बहुप्राप्तिग्रह मध्येग्रानंदभूमिमंडले ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्राफलंलभेत् अंतआयुमहासुखंपूर्वपुण्योपकारणं चंद्रसप्तमितेवर्षेवेदवारमितेतथा दुःख सुखादिभोक्तव्यम् प्राणगश्नोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि इस जीव का चित्त शुद्ध सच्चा है और अभिमान नहीं किसी का बुरा नहीं चाहता सब का भला चाहता है लाभ मर्जी के माफिक लाभ स्थान के ईश के दान मंत्र से धन की वृद्धि विशेष बढ़े भाग्य वाला हो तीन ग्रह बलवान पड़े हैं देर से फल करे एक चिंता बहुत रहती है सो ईश्वर आधीन है उपाय प्रायश्चित करने से फल मिलेगा पंचम स्थान के उपाय से वंश की विशेष वृद्धि हो एक स्त्री से प्रीत भाव विशेष हो और घर में पितृ पीड़ा देवता के निमित्त दान मंत्र करने से कामना पूर्ण और धन का विशेष लाभ आयु में एक अल्प भारी है आयु पूर्ण है हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव धनवान सेठ था बहुत धन संचय किया था एए ब्राह्मण तिस का मित्र था कुटुम्बी था उस ब्राह्मण को कहीं से चांदी सोने का दान मिला था सो घट भरकर सेठ की सम्मति से घर में गाढ़ दिया सिवा सेठ के और से न कहा सो कुछ काल पर्यन्त ब्राह्मण मर गया सो वह धन रात्रि को सेठ चुराकर खोद लाया ब्राह्मण के बाल बच्चे भूके रहे सो सेठ ने बड़ा अनर्थ किया तिस के निमित्त अब ब्राह्मणों को भोजन कराकर गुप्त दक्षिणा दे तो धन पुत्र की वृद्धि विशेष हो कामना पूर्ण हो पिछली अन्त आयु में विशेष सुख भोगे सब के भले में रहे सत्यवादी हो ॥

श्रीगणेशायनमः इदंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालक बहुव्ययीविलाशीच स्वल्पभाषीगुरुप्रिय दाताभोक्ताकृतज्ञश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्र
पुत्रसमायुक्तो सत्कीर्तिकुलवर्द्धनः सुकर्मीचधनीशूरो श्रेष्टमूर्तिविशालदृग युग्मम्रल्पशरीरेच आयुपूर्णानसंशय प्रथमेद्वितियेवर्षे ज्वरपीड़ाच
रेचनं मातृकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेमंगलाचारकंतथा आदिपठनञ्चविद्यायां अंतविद्याविसार्जनं बहुविद्यानप्राप्नोति
कार्यमात्रञ्चसिद्धति भ्रातृप्राप्तिन्संदेहो भृगुणापरिभाषितः अष्टमेद्वादशेवर्षे मध्यगाथाचकथ्यते पत्नीयोगविजानीयात् शुभकार्यधनव्ययः
तातंधनंव्ययंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं जीवचिंताभविष्यंति गुप्तपीड़ाचपितृकं गायत्रीजपेत्मंत्र सर्वविघ्नोपशांतये मित्रपक्षपरंप्रीति बालक्रीड़ा
किलोलकं पशुजलभयंजीव उपरञ्चपपाथयः छत्रचिंतानसंदेहो भृगुणापरिभाषितः त्रयोदशषोडशेवर्षे शून्यनेत्रमितेतथा तातधनंशुभंकार्यं
विवाहोत्सवमंगलं द्विरागमनप्राप्नोतिपत्नीप्रीतिपरस्परः चंद्रमित्रमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पत्नीगर्भमादायः पुत्रीजन्मभविष्यति तातलाभ
विजानीयात् धनवृद्धिचन्यूनता अग्निचौरभयंतातं गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रनेत्रमितेवर्षे बाणनेत्रमितेतथा पुत्रसुखंनसंदेहो सुताजन्मनसंशय
मध्यप्राप्तिविजानीयात तातचिंताचमातकंगुप्तञ्चधनमंदिरे कस्मिन्कालप्राप्तये चंद्रस्त्रीमहाप्रीति चित्तवृत्तिआशक्तयानानालाभकंप्राप्तिभाग्य
वृद्धिदिनेदिने षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा कन्याजन्मभविष्यंतिभृगुणापरिभाषित शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलंपापकू रग्रहापूजा
लाभोभवतिनान्यथा ग्रहापूजानकर्तव्यम् इदंलाभप्रतीततः इदंमंत्रकृतेजापं धनसंतानवृद्धिति ओं, ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं बटुकभैरवाय आपदुद्धाराा
यममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा इदंमंत्रकृतेजापं सर्वविघ्नोपिशांतये लाभप्राप्तिविशेषेण भाग्यवृद्धिविशेषत चंद्राममितेवर्षे बाणराममितेतथा
शून्यवेदाङ्कमध्योपि सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचितवन् शुभकार्यधनव्ययः गृहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये शत्रुपक्षविरोधीच
धनमुद्राव्ययवृथावर्षेमासेसुखप्राप्ति भृगुवाक्यनचान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षे बाणवेदमितेतथा अकस्मात्महाचिंता ग्रहक्लेशभविष्यतिगुप्तचिंता
शरीरेच रविदानञ्चशांतये नवीनोमंद्रकंरचना मित्रलाभविशेषत शून्यबाणकथाकथ्यं भृगुणापरिभाषितचित्तचिंताशरीरेचलाभोभवतिनान्यथा

भृ० स०
फलित
५६७

नवीनोकार्यकंकृत्वा मनवांछितफलप्रदा ग्रहकष्टविजानीयात् व्याधीवृद्धिदिनेदिने महामृत्युञ्जयंजापं सर्वकष्टोपिशांतये राजद्वारउपाधीचधनं व्ययविशेषत शत्रपक्षविरोधस्यात् पश्चातोपिपराजय शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं चंद्रबाणमितेब्देच बाणपञ्चमितेतथा मध्यगाथाच कथ्यते भृगुणापरिभाषित महत्प्राप्तिमहोत्साहो भाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो नवीनोवार्तयाचित अकस्मात्उपद्रोवा गुप्तचिंताशरीरज मासेवर्षेसुखंप्राप्ति भूमिलाभनसंशय षट्बाणमितेवर्षे शून्यषष्टमितेतथा पुत्रपौत्रसमायुक्तो भाग्योदयदिनेदिने मित्रपक्षमहल्लाभं आनंदभूमि मंडले अकस्मात्महल्लाभं सर्वचिंताविनश्यति राजद्वारकंन्यायं पत्नीपीड़ाचदीर्घता वैद्योपायकंकृत्वा व्याधीवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंताशरीरेच गृहक्लेशमहानकं चंद्रषट्मितेवर्षे शून्यसप्तमितेतथा दीर्घलाभनसंदेहो आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो दासदासीभवेन्नरः शुभकार्येधन व्ययं विवाहोत्सवमंगलं पापक्रूरग्रहापूजा कुर्वंतिसुखप्राप्तये श्वासकासमहापीड़ा अल्पमृत्युमहानकं ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि बड़ा प्रतिष्टा का जीव हो भूमि से लाभ हो बाल अवस्था में बाल क्रीड़ा आनन्द दूसरे तीसरे वर्ष में पीड़ा देह क्लेश माता को कष्ट चौथे पांचवें में भ्रात भग्नि का योग पिता को कष्ट छटे आठवें में सगाई तात का धन शुभ काम में खर्च नवें १२ वें में स्त्री की प्राप्ति घर में मंगलाचार विद्या का योग १३ से १८ तक स्त्री से प्रीत तात को लाभ गर्भ अल्प पंचम स्थान की पूजन दान करना श्रेष्ट है नहीं तो जीव की चिंता विशेष है पुत्रों के योग कभी लाभ विशेष कभी न्यून प्रीति भाव वाला हो इन्द्री में पीड़ा काम की उन्मत्तता में न्यून बुद्धि हो गुप्त चिंता बनी रहै समझदार सूरवीर बड़े २ कठिन काम करे काम सम्पूर्ण उतरें और एक अल्प से नया जन्म हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव राजकंवर था शिकार बहुत खेले था दान भी करे था परन्तु जीवों की हिंसा करता था सो जीवों की हिंसा से श्रापित है जीव चिन्ता बनी रहै तिस निमित्त तांबे के कलश में घृत भर कर श्रद्धाप्रमाण स्वर्ण प्रवेश करे दान दे तो धन और वंश की वृद्धि हो और बड़े कार्यों का विचार पूर्ण हो पदवी बढ़े प्रतिष्ठा बढ़े ईश्वर की भक्ति से जो चित्त हट जाता है सो लगने लगे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहाविराजित्वा बहुभागीचबालकः दीर्घकार्यंकृतेजीव सर्वकार्यंचसिद्धति सत्यवादीगुणीशीलो माग्यवृाद्धादनादनं देवद्विजरतोनित्यं कृपांकृत्वापरोजनं लोकंमाननीख्यातो विद्याबुद्धिसुतीक्षणः दाताभोक्ताकुलग्यश्च बहुसेवीनरोभवेत् मित्रप्रीतिपरुपकारी सुतदारादयान्वितः पूर्वआयुधनंव्ययं अंतआयुधनागमः लोकंधनुविख्यातो आनंदोभूमिमंडले प्रथमेद्वितीयेऽब्देच तृतीयेसप्तमेतथा कृष्यदेह विजानीयात ज्वरव्याधीचरेचनं मंगलाचारकंयोगं पत्नीयोगरोपनम् विद्यारंभकृतेबालतातमातश्चहर्षकंबालक्रीड़ाकिलोलञ्च भग्नीभ्रातञ्चप्राप्तये व्रणव्याधीशरीरेच भ्रातदुखनसंशयः अष्टमेद्वादशेवर्षे त्रयोदशषोडशेतथा पत्नीयोगविजानीयात् बालविद्यचप्राप्तये तातधनंशुभंकार्यं विवाहोत्सवमंगलं मित्रपक्षपरंप्रीति आनंदभूमिमंडले भ्रातसुखनसंदेहो तातचिंताचगुप्तता अचानकंउपद्रोवा धनव्ययविशेषतः स्वल्पविद्याच प्राप्नोति कार्यमात्रञ्चसिद्धति ग्रहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये सप्तचंद्रमितेवर्षेशून्यनेत्रमितेतथा पत्नीयोगञ्चप्राप्नोति द्विरागमननसंशयः सुताजन्मनसंदेहो तातमातचहर्षकं नवीनोकार्यकंचिंतवन तातलाभदिनेदिने पापक्रूरग्रहापूजा क्रियतेलाभदीर्घता चंद्रमित्रमहाप्रीति चित्त वृत्तिग्राशक्त्या भग्नीभ्रातविवाहार्थं धनव्ययंविशेषत पितृपीड़ागृहमध्ये भूतछायाचगुप्तता गायत्रीमंत्रकंजापं सर्वकष्टोपशांतये चंद्रनेत्रमितेवर्षे शून्यराममितेतथा मध्यगाथाचकथ्यते भृगुणापरिभाषितं पत्नीगर्भनसंदेहो पुत्रजन्मभविष्यति तातमातमहासुखं वंशवृद्धिचदृश्यतेशुभकार्यं धनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभविजानीयात् कार्यलाभदिनेदिने व्ययदीर्घंविजानीयात् गुप्तचिंताशरीरजं चंद्रराममितेवर्षेवाणराममिते तथा शून्यवेदाद्धमध्येतु सर्वगाथाचकथ्यते नवीनोकार्यकंचिंतवन् लाभन्यूनकंद्रश व्ययदीर्घभवेत्शुक्र गुप्तचिंताशरीरजं अकस्मात्उपद्रोवा पश्चातोपिप्रशांतये शत्रुपक्षविरोधस्यात जीवचिंताभविष्यति देहकष्टज्वरंपीड़ा व्याधीवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथा शनिभौमकृतेजापं सप्तअन्नतुलाकृतं दानमंत्रकृतेसंत सर्वकष्टोपशांतये चंद्रवेदमितेऽब्देच शून्यवाणमितेतथाचंद्रअल्पदुखंशुक्रदानमंत्रकृशांतये करमानञ्चआकारो सर्वआयुचमध्यमा पञ्चमईशपूज्यंते वंशवृद्धिविशेषतः पुत्रपौत्रसमायुक्तो शूरवीरोप्रतापवान् कस्मिनकालभ्रमणबुद्धि गुप्त

भृ०स० फलित ५७०

चिंताचशरीरजं प्राणभयविजानीयात् मंत्रदानञ्चशांतये भूमिलाभगृहशुक्र धनधान्योभविष्यति देहकष्टविजानीयात् औषधीप्रतिशांतये चंद्र बाणमितेवर्षे शून्यषट्मितेतथा जीवचिंताभविष्यंति भृगुणापरिभाषितः शुभकार्यधनंव्ययं विवाहोत्सवमंगलं भूमिलाभनसंदेहो पुत्रपौत्र सुखावहं वाहनादिसुखंशुक्र धनधान्योसमागम शुभकार्यधनव्यय विवाहोत्सवमंगलं देशंनामविख्यातो दासदासीसुखीन्नरः चंद्रषट्मितेवर्षे सून्यसप्तमितेतथा सर्वगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमईशपूजनम् नानाप्रकारकंलाभं भाग्यवृद्धिविशेषतः तीर्थयात्राच पुर्षार्थईश्वरभक्तितत्परः देहकृष्णविजानीयात् व्याधीदेहलिप्तवान् वैद्योपायकंकृत्वा औषधीसेवनंवृथाव्याधीवृद्धिनसंदेहो प्राणगवनोनसंशय॥

॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का फल यह है कि दो ग्रह बलवान पड़े हैं यह अपनी दशा में ऐसा फल करेंगे जैसा कि सूर्य का प्रकाश होता है भूमि से लाभ राजद्वार से लाभ नवीन मन्द्र रचना परन्तु एक कामना चित्त में बनी रहै दान पुण्य अनुष्ठान से मनोकामना पूर्ण हो एक मित्र से प्रीत बहुत विशेष बनी रहै युवा अवस्था में एक अल्प भारी प्राणों का भय हो अल्प दो टलें आयु पूर्ण है कोई धोखे से धन का मामला हो ये जीव बुद्धिमान विशेष हो विद्या कार्य मात्र हो इज्जत प्रतिष्ठा पावे धर्यवान धीरज देने वाला पक्की बात मुंह से निकाले सत्य भाषण करे आपको तुच्छ माने बड़े २ खर्च झेले दर्द हो जाया करे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जीव बड़ा धनवान हरिद्वार का तीर्थ पुरोहित था बड़े २ दान लिये पुण्य भी करता था एक समय हर की पैड़ी पर स्नान करने एक रानी आई और सब स्नान करके सब आभूषण वस्त्र जो धारण कर रही थी सो पंडा जी को दिये और भी अनेक दान पंडा जी ने लिये परन्तु अपने उद्धार निमित्त पंडा जी ने गायत्री मन्त्र का जाप कभी नहीं किया सो दान लेकर महा पाप के भागी हुए और घर गृहस्थ में पड़कर तृष्णा में फंस रहे तिस निमित्त अब हे शुक्र इस जन्म में ब्राह्मणों को भोजन करावे गायत्री मन्त्र का जाप करावे और ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे तो धन और संतान की विशेष वृद्धि हो और अल्प नष्ट होवे और आगे को श्रेष्ट वर्ण होवे ॥

श्रीगणेशायनमः एक्ययोगश्चप्राप्नोतिबहुभागीचबालकः लोकंधेनुविख्यातोबहुसेवीनरोभवेत् दाताभोक्ताकृतज्ञश्चभृगुणापरिभाषित प्रथवी
नानाधनंप्राप्तिवाहनादिसुखंमहत् प्रमोदीसत्यवक्ताचपरकार्योपितत्परः विद्याविनयसंपन्नोपुत्रीपुत्रेणसंयुतः कामीदीर्घभवेतशुक्रमित्रप्रीति
विशेषत गुप्तप्राप्तिनसंदेहोआनन्दभूमिराडल उन्मत्तकामदेवोपिकस्मिन्कालक्रोधयो नवीनोचिंतवनंकृत्वामित्रप्रीतिचभार्गवः युग्मअल्पश्च
प्राप्नोतिनवीनोजन्मप्राप्तये दीर्घआयुनसंदेहोदुखसुखादिभोगनं पञ्चभावनोपिपूज्यंतेवंशवृद्धिविशेषतः द्विभार्यायोगप्राप्नोतिसप्तमभवनपूजनं
कस्मिन्कालमहाक्रोधंवृथावादकुदृष्टयः वायुपीड़ाशरीरेचवैद्योपायशांतये प्रथमेद्वितियेवर्षेदेहपीड़ाविशेषतः मातकष्टविजानीयात्औषधी
प्रतिशांतये तृतीयेसप्तमेवर्षेबालक्रीड़ाकिलोलकं मंगलगानग्रहमध्येपत्नीयोगश्चप्राप्तये बंधुभग्नीसमायुक्तोतातहर्षभविष्यति तातंधनंशुभंकार्यं
भृगुणापरिभाषित अष्टमेद्वादशेवर्षेमध्यगाथाचकथ्यते तातचिंताभवेत्शुक्रजीवक्लेशोपिदुखिता वर्षेमासेगतेकाव्यवामयोगश्चप्राप्तये अल्प
विद्याचप्राप्नोतिमित्रसहितकिलोलकं बंधुभग्नीचप्राप्नोतिशुभकार्यंधनव्ययं जलोभयंपशुपीड़ाउपरश्चपपाथय तृयोदशषोडशेवर्षेव्योमनेत्रश्च
मध्यमा द्विरागमननसंदेहोपत्नीप्रीतप्राप्तये विद्याधेनूकृतेशुक्रउच्यपदवीचप्राप्तये पत्नीगर्भनसंदेहोसुतयोगभविष्यति ग्रहमध्योपिआनन्दं
जीवनंसुफलंमम नवीनोकार्यकंचिंतवनभाग्योदयदिनेदिने छत्रचिंतामहाशुक्रगुप्तक्लेशशरीरजं अकस्मात्उपाधीचधनव्ययविशेषतः चंद्रनेत्र
मितेवर्षेसून्यराममितेतथा पुत्रकन्याचप्राप्नोतिअल्पजीवीचबालक शुभकार्यंधनंव्ययंविवाहोत्सवमंगलम् छत्रचिंताचप्राप्नोति गुप्तचिंता
शरीरजं कार्यमध्यमाप्राप्तिभृगुवाक्यनचान्यथा गुप्तधनंलाभंभाग्यवृद्धिविशेषतः ग्रहकष्टभयंशुक्रऔषधीमंत्रशांतये महामृत्युञ्जयंजापं
चंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेसंतसर्वकष्टोपशांतये चंद्रराममितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिजीवचिंताचदीर्घता कस्मिन्काल
उपद्रोवाअतिविपत्तिकालकं धनव्ययवृथाशुक्रअंतकालपराजयः कीर्तिदेशश्चविख्यातोभूमिलाभभविष्यति धनव्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सव
मंगलम् मासेवर्षसुखंप्राप्तिभाग्योदयदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभभवेत्

भृ० स०
फलित
५७१

काव्यधनधान्यसमागमः परस्त्रीमहाप्रीति आनंदभूमिमंडले पुत्रपौत्रसमायुक्तो पञ्चमस्थानपूजनं दानमंत्रनकर्तव्यम् अल्पसुखञ्चसंतति धनस्थईशपूज्यंतेधनधान्यसमागम धनस्थानेनपूज्यंतेऋणायोगञ्चप्राप्तये गुप्तचिंतामहाकाव्यभृगुवाक्यनचान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिलाभो भवतिनान्यथा चंद्रबाणमितेवर्षेशून्यषट्मितेतथा सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्व्याधावृद्धिदिनेदिने मानसी विविधाचिंतामंत्रदानञ्चशांतये राजद्वारकंप्राप्तिभाग्यवृद्धिविशेषतः चंद्रषट्मितेवर्षेशून्यसप्तमितेतथा बाणवारञ्चमध्योपिसुखदुखादिभोक्तया नवीनोलाभकंदृश्यभाग्यवृद्धिविशेषतः देहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये वाहनादिसुखंप्राप्तिउच्चपदवीपिलाभकं पत्नीकष्टभयंघोरं प्राणगवनोनसंशय मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने निजदेहमहाकष्टंव्याधिवृद्धिदिनेदिने वैद्योपायकंकृत्वाऔषधीसेवनंवृथा ज्येष्ठ कृष्णपक्षेचतृतीयोभोमवासरे पूर्वाषाढ़सुनक्षत्रप्राणगवनोनसंशय ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कि ग्रह बहुत उम्दा आनंद से अवस्था बीते परन्तु अपना जीवन तुच्छ समझे वेदान्त मत हो स्त्री को चित्त में पुत्रों की लालसा बनी रहे परन्तु संतान गोपाल के मन्त्र पंचम भाव का जतन करना श्रेष्ट है बड़े आदमी इज्जत करें लाभ प्राप्ति को लाभ स्थान के ईश का पूजन दान जाप से लाभ की वृद्धि हो अकस्मात् प्राणों का भय हो एक अवस्था में अल्प पश्चात् कुशल नया जन्म चित्त स्थिर न रहै गुप्त धन मिले शत्रु हो जोर न चले राजद्वार में इज्जत हे शुक्र पूर्व जन्म में बड़ा पंडित विद्वान था यमुना तट पर कथा सुनाया करे था सैंकड़ों स्त्री पुरुष सुना करते थे और वस्त्र आभूषण अन्नादिक दक्षिणा चढ़ाते थे परन्तु चित्त चलायमान होकर स्त्रियों की चेष्टा में आशक्त रहने लगा देखत में पंडित साधु मन में कपट तिस कारण विद्या मध्यम ऐश्वर्य मध्यम गुप्त चिंता तिस निमित्त ब्राह्मणोंको भोजन और सैया दान करे तो धन संतान की वृद्धि हो कष्ट पीड़ा नष्टहो ७५ वर्ष तक पृथ्वी पर निश्चय करके आनंद भोगे ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगेभवेज्जन्मबहुभागीचबालकः तातमातमहत्सौख्यंजीवनंसुफलंमम प्रमोदीसत्यवक्ताचअसत्योवचनंत्रजेत् दयावंत
समादृश्योभृगुणापरिभाषित परमार्थीसविज्ञेयोप्रमोदीप्रसवःपुमान सदाहर्षमहोत्साहोचित्तोदारपुत्रवान् दानीमानीकृतज्ञीचसुतदारदयान्वित
देवद्विजरतोनित्यंप्रजाधीशोससुद्भवः सुखीभोगयुतः पुंसःप्रियवक्तासुमूर्तिवान् सुबुद्धिदीर्घआयुस्याद्गिरावत्सरोद्भवम् श्रीमान्बहूप्रतापीच
शास्त्रवेत्तासुहृत्प्रिय यशस्वीगुणवान्जीवोसत्कीर्तिकुलवर्द्धन सुशीलगौरवर्णश्चभृगुवाक्यनचान्यथा प्रथमेद्वितीयेब्देच तृतीयेसप्तमेतथा
ज्वरपीड़ाबृणांकाव्यकृष्यदेहोपिरेचनं मातुदुग्धलभ्यंतेघूटिकासेवनंकृते भ्रातयोगश्चप्राप्नोतिमंगलाचारहर्षकं मातकष्टविजानीयात् औषधी
प्रतिशांतये अष्टमेनवमेवर्षेद्वादशाद्वविधिक्रमात् सर्वसौख्यसमायुक्तोविद्याबुद्धिविशेषतः विवाहादिशुभंकार्यंमानकीर्तिचवर्द्धनं सुप्रसिद्ध
सुखीलोकेबालक्रीड़ाकिलोलकं पत्नीयोगश्चप्राप्नोतितातमातश्चहर्षकं विद्याधेनुपठंजीवमध्यविद्याचकथ्यते तातलाभंधनंप्राप्तिआनंदभूमि
मंडले त्रयोदशषोडशेवर्षेसून्यनेत्रश्चमध्यमा जीवचिंताचप्राप्नोतितातधनवृथाव्यय द्विरागनसंदेहोपत्नीकीर्तिचप्राप्तये पितृपीड़ागृहमध्ये
गायत्रीमंत्रजापकं दानमंत्रकृतेसंतव्याधीनष्टदिनेदिने महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा मासेवर्षेसुखंप्राप्तिजीवलाभनसंशय पत्नीप्रीत
भविष्यंतिआनंदभूमिमंडले चंद्रनेत्रमितेवर्षेशून्यरामामितेतथा सर्वसुखश्चप्राप्नोतिपुत्रअल्पश्चप्राप्तये पूजापंचमस्थानंकृयतेफलदायकं नवीनो
कार्यकंचिंताअंतप्राप्तिर्भविष्यति अकस्मात्उपद्रोवाधनव्ययविशेषतः शत्रुपक्षविरोधीचगुप्तचिंताशरीरजं अग्रवंशोसुखंप्राप्तिशुभकार्यधन
व्यय दानमंत्रकृतेजापंवंशवृद्धिभविष्यति लोकंधेनुविख्यातोवृद्धमृत्युनसंशय चंद्ररामामितेवर्षेशून्यवेदमितेतथा दीर्घकार्यकृतेजीवलाभा
भवतिनान्यथा गुप्तंचधनंलाभम्शुभकामाधिपोभवेत् धनस्थईशपूजायांधनवृद्धिदिनेदिने पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिविशेषत विवाहादि
धनंव्ययंप्रसिद्धोधेनुलोकमा ग्रहकष्टभविष्यंतिदानमंत्रंचशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा भूमिलाभनसंदेहोधनव्ययविशेषतः
गुप्तचिंताशरीरेचबंधुकुलविरोधता चौरभीतिभयंलोकेभृगुणापरिभाषितः पुत्रपौत्रचितःचिंतापत्नीक्लेशगुप्तता ज्वरव्याधिभविष्यंतिपीड़ा

वृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंक्रुयतेव्याधिन्यूनता राजद्वारउपाधीचशत्रुपक्षविरोधता अकस्मातमहाचिंतापश्चातोपिपराजय धनव्ययं शुभकार्यंविवाहोत्सवमंगलं चंद्रबागमितेवर्षेसून्यषट्मितेतथा भाग्यवृद्धिविशेषेणलाभोभवतिनान्यथा चंद्रस्त्रीमहाप्रीतिचिंतवनंचित्तप्राप्तये दीर्घकार्यंकृतेजीवधनलाभविशेषतः ईश्वरभक्तिविशेषेणतीर्थयात्रादिकंकृते परकार्यंचउपकारीशुभकार्यधनव्ययं वाहनादिसुखंज्ञेयउच्चपदवी चप्राप्तये पुत्रपौत्रसमायुक्तोमंत्रदानंकृतेसति चंद्रषट्मितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा तीर्थयात्राजपंपुन्यंनूतनंसौख्यसंभवः भूमिलाभनसंदेहो रचनामंद्रसुन्दरं ईश्वरभक्तिविशेषेणतड़ागेपुष्पवाटिका पुन्यदानकृतेजापंवाहनादिसुखंमहत् नेत्ररोगकदाकालेजायतेदीर्घचिंतनं आदित्य हृदयंजापंरविदानकृतेसति कृत्वासद्यसुखंआप्यनात्रकार्यविचारणं अकस्मातमहाव्याधीऔषधीसेवनंवृथावेदसप्ताद्वकेशुक्रव्याधिवृद्धिदिनेदिने श्रावणकृष्णपक्षेचद्वितीयांभौमवासरे शतभिषाभेविजानीयात्प्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का फल ये है ग्रह बहुत उत्तम तेज प्रताप के बैठे हैं मन का गुप्त भेद किसी को न दे विद्या से बुद्धि विशेष हो सत्य बोलने वाला सब का भला चाहे पराये काम मन से करे पिछली आयु में बिना परिश्रम धन मिले बहुत प्रकार के उद्योग फिक्र रहा करें गुप्त चिंता एक जीव की तृष्णा बनी रहै परन्तु संतान निमित्त पंचम ईश की पूजा करे संतान का विशेष सुख हो और नये मकान भूमि प्राप्त हों और काम काबू से बाहर दीखे अल्प से नया जन्म हो फिर आयु पूर्ण हो एक जीव में चित बहुत रहै उद्योग बहुत करे बड़े बड़े मामले सिर पर झेले है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव अजुध्या जी में एक बड़े मन्द्र का पुजारी था स्वर्ण का आभूषण धारण कर ठाकुरों की पूजा करता था गायत्री का चरणामृत दिया करे था परन्तु दक्षिणा चढ़ाने वाले को विशेष प्रसाद दिया करता था और फल पान चढ़ाने वालों को दुखित मन से देता था इस कारण भाग्य मंद हुवा तिस निमित्त मंद्र कुवां बनवावे गौ ब्राह्मण को भोजनदे तो धन संतानकी वृद्धिहो चिंता मिटे मनोकामना पूर्णहो और शरीर अल्प नष्ट हो भूमि से गुप्त धन की प्राप्ति हो दान से मनोर्थ पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंग्रहपत्रस्थित्वा मध्यभागीचबालकः सदानंदविनीतश्च दारापुत्रसमाकुलः सुशीलश्चचलोकांति विद्यावान्धनीनरः
राजद्वारेतिमान्यश्चभृगुणापरिभाषितः सुदृढश्चचलोधीरसूरवीरअतिपुष्टता जितेंद्रियसत्यवक्ताचचारुशोलविशालदृग विक्रयायांकृपादक्ष
प्रेमकर्ताधनान्वितः सर्वसंग्रहकर्ताचअतितेजोप्रतिष्टया सद्गुणीज्ञानसंपन्नकौशल्यकामिनीप्रियः कामक्रीड़ासमायुक्तभृगुवाक्यंनचान्यथा
प्रथमेब्देज्वराकष्टंविशू चिचद्वितीयके तृतीयेब्देचमुखेपीड़ाचतुर्थेगुह्यपीडनं पञ्चमेवर्षेसंजातेमंगलाचारहर्षकं षष्टेचसप्तमेवर्षेविद्यारंभप्रजायते
संबंधयोगजानीयातभृगुवाक्यनसंशय अष्टमेवर्षेसंप्राप्तेज्वरपीड़ाप्रजायते विद्याभ्यासकर्तव्यंअंकज्ञानञ्चप्राप्तये विद्याचैयमिनीभ्यासोअंक
विद्यातथैवचः द्वादशेकादशेवर्षेमहत्पीड़ाप्रजायते औषधेनप्रशांतिश्चजाप्यदानतथैवच तातंधनंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलम् त्रियोदश
मितेवर्षेपितुलाभप्रजायते मातृपीड़ाभवेत्किंचितज्वरकोपसमुद्भव चतुर्दशमितेवर्षेरजतंकनकभूषितम् महर्घवस्त्रपात्रञ्चवर्द्धतेगृहमंडले पञ्च
दशमितेवर्षेविवाहंयोगजायते पत्नीरूपसमायुक्तोलक्ष्मीरूपानसंशयः षोडशेवर्षेसंजातोपितुकिंचिज्वरान्वितः वायुपीड़ासमायुक्तेकफवात
प्रजायते सप्तदशमितेवर्षेपितुर्लाभनसंशय ऊनविंशेचतथाविंशेपत्न्यागमनजायते चंद्रनेत्रमितेवर्षेबाणनेत्रमितेतथा पत्नीगर्भनसंदेहोपुत्र
प्राप्तिनसंशय नवीनोकार्यकंकृत्वालाभप्राप्तिचमध्यमा षट्नेत्रमितेवर्षेशून्यराममितेतथा नवीनोवार्ताचिंतनंभाग्यवृद्धिविशेषतः पुत्रपुत्री
चंद्रश्यंतेआनंदभूमिमंडले चंद्राममितेवर्षेबाणराममितेतथा देहकष्टविजानीयातव्याधीवृद्धिदिनेदिने छायापात्रतुलादानंसप्तअन्नतुलाकृतेः
महामृत्युञ्जयंजापंचंद्रलक्षप्रमाणकं दानमंत्रकृतेजापंव्याधीनष्टदिनेदिने षट्राममितेब्देचशून्यवेदमितेतथा मध्यगाथाचकथ्यंतेभृगुणापरि
भाषितः महत्प्राप्तिमहोत्साहोलाभोभवतिनान्यथा भूमिलाभविजानीयातवाहनादिसुखंमहत् मानसीविविधाचिंताशत्रुपक्षविरोधता धनं
व्ययंशुभंकार्यंविवाहोत्सवमंगलं ग्रहकष्टविजानीयात्औषधीमंत्रशांतये चंद्रवेदमितेवर्षेशून्यबाणमितेतथा दीर्घकार्यंलभेजीवभाग्यवृद्धि
दिनेदिने शुभंकार्यंधनव्ययंमंगलाचारहर्षकं जीवलाभभविष्यंतिगुप्तचिंताशरीरजं देवतामंत्रजाप्येनतथाविप्रप्रपूजने राजद्वारेतिमान्यञ्च

भृगुवाक्यंनचान्यथा छत्रचिंताचप्राप्नोतिगुप्तचिंताशरीरजं धनव्ययेनशांतिश्चजायतेनात्रसंशयः चंद्रवेदमितेवर्षे पञ्चबाणमितेतथा ईश्वरभक्ति जपंमंत्रपूर्वयात्राप्रजायते रिपुभीतिसमायुक्तोहीनजातिरिपुर्भवेत् धनव्ययविशेषेणसुमार्गेदेवदर्शनः लाभकार्यविशेषेणग्रानंदभूमिमंडले पुत्रपीड़ाचप्राप्नोतिदानमंत्रश्चशांतये षट्बाणमितेवर्षेशून्यरसमितेतथा ईश्वरभक्तिविशेषेणक्रयतेमंत्रजापकं शुभकार्यंधनव्ययंमंगलाचार हर्षकं पुत्रपौत्रसमायुक्तोभाग्यवृद्धिदिनेदिने किंचित्कष्टविजानीयात्ग्रोषधीप्रतिशांतये चंद्रषष्टमितेवर्षेसून्यसप्तमितेतथा पत्नीकष्टभयंघोर प्राणगवनोनसंशयः मानसीविविधाचिंताधनलाभदिनेदिने स्थानयानप्रवृद्धिश्चजायतेसुखसंपदा बहुलाभस्ययोगोयंप्राप्तयेनात्रसंशयः सर्वसुखञ्चप्राप्नोतिमंत्रदानकृतेसति चंद्रसप्तमितेवर्षेषट्रसग्राद्वमध्यमा भूमिलाभनसंदेहोवाहनादिसुखंमहत् उच्चपदवीसुखंप्राप्तिग्रानंदंभूमि मंडले ग्रकस्मातमहाव्याधीग्रोषधीसेवनंवृथा चैत्रकृष्णपक्षेचनवम्यांभृगुवासरे ग्रभिजितनामनक्षत्रेप्राणगवनोनसंशयः ॥ भाषा ॥ इस पत्री का यह फल है कभी बहुत वृद्धि कभी न्यूनता गुप्त चिंता प्रमेह पीड़ा किसी काल में हो सत्य वचन बोले श्रेष्ठ जनों से प्रीति बड़े बड़े लाभ उठावे खर्च भी पूर्ण हो राजद्वार से कृत्य में लाभ हो एक विपत्ति पड़े फिर खर्च दीखते रहैं चित्त में तरह तरह के उद्योग सोचे शत्रु का भय गुप्त प्राप्ति किसी मित्र से प्रीत पंचम ईश के पूजन संतान का सुख विशेष हो ग्रकल तेज हो दूसरे की बात को ताले तेजस्वी प्रतापी हो शनि का मन्त्र जपने या जपवाने से रोजगार बढ़े फायदे का हो एक कष्ट मामले से बचे नया जन्म हो वीर्य वृथा किसी काल में खोवे भूमि मन्द्र रचना धन शुभ काम में खर्च हो वृथा भी हो पिछली ग्रर्ध ग्रायु श्रेष्ट धन मिले एक पीड़ा भारी हो प्राण बचें ग्रायु पूर्ण हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ब्राह्मणों के समूह का सरदार था ब्राह्मणों के सिराने बैठता था ग्रौर बड़े छोटे सब ब्राह्मणों को नीचा ग्रासन देता था दान पुण्य भी करता था परन्तु श्रद्धा रहित था धन के ग्रौर सरदारी के घमंड में रहता था सो वंश नहीं चला ब्राह्मणों को निर्दोष दण्ड दिया करता तिस निमित्त ग्रब ब्राह्मणों के चरण धोके ग्राचमन ले ग्रौर भोजन जिमावे दान दे तो धन संतान की वृद्धि हो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः ग्रहाश्रेष्टश्चमध्योपिपत्रीस्येदंफलंभवेत् वृहत्कार्यंकृतेभूमौव्ययलाभविशेषतः सौख्यशोकान्वितोभूयनसमोसुस्थिरंमनः
भाग्यवंतोग्रहस्थित्वाविद्याकीर्तिधनंलभेत् अनर्थंनकृतेलोकेसत्यवक्तासुखीनरः छलछिद्रेणतप्यंतेसत्यासत्यपरीक्षक सुजनश्चव्ययदीर्घं
सुकीर्तिंचिंतयेत्सदा कदादीर्घंधनंप्राप्यसर्वावस्थाचमोदिता नकश्चिदाश्रयोभूत्वादशान्यूनश्चश्रेष्टता ईशाश्रयस्थितोनित्यंदशानेष्टश्चक्लेशिता
चित्तचिंताभवेद्दीर्घंपीड्यंतेत्चापदुखिता साहसीसुविचारश्चसंतोषीधैर्यवान्नरः आनंदेनगतोकालस्वप्नवत्मन्यतेजगत् अल्पप्राणभयंप्राप्यः
पुनरन्तेसुरक्षण पुरायकर्मप्रभावेणआयुपूर्णभविष्यति सुतेशोदानमंत्रेणपूजनाद्धंशवर्द्धनं लाभेशोपूज्यनंनित्यंबृहल्लाभदिनेदिने आदीवर्षा
द्वितीयेचवह्निवर्षांतरोतथा गर्भवाधाप्रपीड्यंतेज्वरश्चरेचनंपुनः दंतपीड़ाविशेषेणभूतछायाश्चविव्हल कृष्यदेहोपिद्रष्टव्यातातमातोतिचिंतनं
छायापात्रप्रयत्नेनगुडगोधूम्रकंतथा पुरायकर्मप्रभावेणसर्वरोगविनश्यति आनंदकौशलश्चापिबालवृद्धियथाक्रमः मासेमासेसुखंजातंतरुजंसर्वं
विनाशनं वेदवर्षाचपञ्चाब्देषट्मेसप्तमान्तरे बालक्रीड़ाविशेषेणजायतेचदिनेदिने तातलाभनसंदेहोभ्रातभग्नीचमोदता विद्यारम्भकृतोबाल
मंगलंजायतेग्रह कष्टव्याधिविशेषेणनश्यतेपुरायकर्मणा पितुचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा व्यालवर्षगतेवत्सनेत्रचन्द्रांतरोतदा तातलाभ
विशेषेणचित्तोह्यानंदवर्द्धन व्ययदीर्घमुपस्थित्यमंगलश्चमहोत्सवं विवाहादिशुभंकार्यंजायतेचापिभूतले सुविद्यामध्यमाप्रीतिमंदपाठ्यंचचिंतनं
शिशुक्रीड़ाविशेषेणमित्रप्रीतिविवर्द्धितः कदाक्लेशमहामोदंएकाग्रनोस्थिरोमति वह्निमेकाद्धमारम्यव्यालचंद्राद्धमध्यमा बहूविद्यानप्राप्यन्ते
कार्यमात्रंचसिद्धति निजकृत्यसुधीमंतोमित्राणांप्रियवादितः सभामध्येसुवक्ताचसुविद्याचधर्मसंचक पत्नीप्रीतिविशेषेणकामक्रीड़ामनंदिता
लाभप्राप्तिभवेल्लोकेज्वरबाधाभविष्यति सर्वसौख्यधनादिक्यपुरायधर्माश्रयोसदा ऊनविंशद्विविंशेब्देभोगानंदविवर्द्धनं बामाप्रीतिविशेषेण
लुभ्यतेललनाजनैः त्रियोविंश.ष्टविंशेब्देश्रृणुपुत्रप्रयत्नतः भाग्यवृद्धिनसंदेहोचिंतयेद्बहुविधैरपि सुसंगात्सौख्यसंप्राप्यसुविद्यामोदवर्द्धनः
एतस्मात्कारणंवत्सचिंतनीयंविशेषतः पापकर्मकृतेबाधापुरायभ्रष्टोभिजायते पापादुक्खंलभेद्दीर्घंइतितत्वंब्रवीमिते धनपुत्रसमायुक्तोजायते

पुण्यभाजने मानकीर्तिविशेषेणसर्वावस्थाविवर्द्धिता नानामंगलंकार्यंदंपत्योर्हर्षपूरित चित्तचिंताविनश्यंतिसुमित्राणाञ्चमेलनं अ्रहनेत्रगते वर्षेवेदत्रिंशांतरोतथा चिंतयेनूतनोकार्यंद्रव्यलाभविवर्द्धनं सुतापुत्रविशेषेणप्राप्यतेनात्रसंशयः न.नामंगलंकार्यंजायतेप्रतिवत्सरे दीर्घचिंता हृदेगुप्तसुयत्नंकार्यसिद्धति प्रायश्चित्तप्रयत्नेनेनसर्वदानंदसंभवः सर्वआशाप्रपूर्ज्यंतेबहुचिन्ताविनाशनं पञ्चवन्हिगतेवर्षे व्योमचत्वारिमध्यमा सुप्रसिद्धसुखीलोकेराजद्वारेप्रतिष्टता विवाहोमंगलंकार्यंजायतेचमहोत्सवं सुवस्त्रंभूषणंश्रेष्टनूतनंजायतेगृह वाहनादिसुखंज्ञात्वादासदासिश्च मोदता चित्तआशाचसंप्राप्यप्राप्यतेमन्द्रनूतनं सुयात्रालाभदोवत्सजायतेतीर्थदर्शनं बहुव्याधीप्रतापीचस्वकुलमानप्राप्तये वृहद्रोगान्वितो देहोक्लिश्यन्तेचातिदुखिता दानपुण्यसुकर्मेणसर्वथासौख्यप्राप्तये महाअल्पविनश्यन्तिआयुवृद्धिसुखोद्भवं शशिवेदांतरोकाव्यरसचत्वारि चांतके एतत्कालांतरेपुन्सभूरिसौख्यसमन्वित चंद्रजीवपरंप्रीतिस्वयमाज्ञाप्रपालक पुत्रसौख्यविशेषेणप्राप्यतेपुण्यकर्मणात् नगवेदमितेवर्षे शशिपञ्चाङ्केतथा द्रव्यपार्थिगृहागम्ययावंतोभागदर्शन पौत्रजन्मविलंबोपिपुनरंतेचप्राप्तये पत्नीकष्टविशेषेणअल्पंचैवोतिदारुणं नेत्रपञ्चां तरोकाव्य व्यालपञ्चाङ्कमध्यमा पुत्रपौत्रसुखंसर्वं सुजनेभ्योप्रशंसितो अतःपरिसुखंसर्वे प्राप्यतेचयथाक्रमं भूमिप्राप्तिविवाहादौ ग्रामप्राप्ति विनिश्चित रसषष्टमतिमायुजायतेसुखसंयुत पुनश्चनिधनंभूयःशुक्लपक्षेचश्रावणे ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है कि ग्रह श्रेष्ट है और मध्यम भी हैं सो पृथ्वी पर बड़े २ कारबार खर्च लाभ और सुख दुख देखे इज्जत के साथ धन प्राप्त करे सत्य बोले जीव की चिंता रहै छल छिद्र से जले सत्यासत्य को पिछाने किसी का बुरा न चाहे हीन दशा में फिक्र चिंता क्लेश होती रहै परन्तु हिम्मत वाला हो संतोष वृत्ति से रहै आनंद मान कर बिताये एक अल्प से प्राणों का भय हो सुयत्न से प्राणों की रक्षा हो पूर्ण आयु भोगे तथा लाभेश के पूजन दान आदि से विशेष लाभ हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव ग्वालवंशी था बड़ा धन पात्र था मथरापुरी के समीप नंदगांव में निवास कर सब प्रकार का आनंद पाता था एक समय भूलवश हो ग्याभन गाय को ताले में बंदकर चौरासी कोस को ब्रजयात्रा तथा दर्शनों को चला गया कुछ दिन बाद गऊ मर गई आकर देखा तो अतिशोक माना बहुत कुछ दान पुण्य करने पर भी पाप का भागी रहा सो स्वर्ण की गऊ बनाय दान करे तो मनेच्छा फल पावे धन संतान की वृद्धि हो ॥

मृ०स०

फलित

५७९

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्थफलंचेदंविशेषोउत्तमग्रहा पत्रश्रेष्टचतुरमध्येसर्वश्रेष्टफलप्रदा यदामध्यगृहाजीवदानमंत्रसुभक्तित ईश्वराधना
नित्यंजाप्यमंत्रषटाक्षरी दानमंत्रसुपुरा नविशेषोफलप्राप्यते ऐश्वर्यंतेजसंयुक्तोमानकीर्तिप्रतिष्टित श्रेष्टकर्मकृतोनित्यंदुष्टकर्मपरित्यज शुभ
चिंतकसर्वेषांनकन्याशुभचिंतक आनंदेनगतोकालव्ययययोगविशेषत चित्तचिंतान्वितोभूयचिंतयेद्बहुनित्यश कोपिकार्यंविशेषेणसर्वपूर्णो
भविष्यति दशाश्रेष्टधनंदीर्घप्राप्यतेनात्रसंशयः न्यूनलाभदशामध्येनेष्टंचैवोपिदुखिता किंचित्कालमनोद्वेगेजीवशक्तं विशेषता हर्षसौख्यां
वितोभूयअनित्यंभोगतत्पर पुत्रार्थंसंतगोपालंमंत्रजाप्यंयथाविधि तेनश्रयोभवेन्नूनंकुलवृद्धिश्चमोदिता प्राणभीतोभवेच्चापि अल्पदीर्घो
भयानकं पुनःशांतिप्रयत्नेनआयुदी ो भविष्यति पत्नीचिंता न्वितोनित्यंपितृ ीड़ाग्रहस्थित उपायंतस्ययत्नेनसद्यश्रेयोभविष्यति कदाकाले
धनंगुप्तप्राप्यतेचविशेषता मनेच्छापूजितेचापिभयसौख्यविशेषता रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वयोश्चदंतपीड़ितं वन्हिभीतोतृतीयेब्देकिंवाउच्चपपातिता
वृणबाधा नसंदेहोअकस्माद्भयदारुणं वेदवर्षांतरोकाव्यप्राप्यतेकष्टदारुणं दानमंत्रसुपुरायेनबालवृद्धिदिनेदिने मासेवर्षेसुखंगत्वातातमातश्च
मोदिता पञ्चमात्सप्तमाब्देचशिशुक्रीड़ासुनूतनं तातमातमहामोदंमंगलंहिदिनेदिने विद्यारंभकृतोचादौपत्यतेक्रीडनेमति शिशुप्रीतिविशेषेण
तातप्राप्तिश्चनूतनं अष्टमेवर्षेसंप्र.प्यतथाचद्वादशोगता तन्मध्येचैवदैत्योशमंदवृद्धिमनुत्तमं विवाहोमंगलंकार्यंपुनरंतेमहोत्सवं विद्याबुद्धि
वृहत्वोपिचश्चलत्वंमनंदिता मित्राणांप्रीतिसंपन्नोकामक्रीड़ाप्रवर्तनं भयभीतहृदेगुप्तंमोदितेचापिक्रीडतम् कष्टबाधाविनश्यंतिसुपुरायंफल
दायक वन्हिचंद्रमितेवर्षेअष्टादशतथांतरे आपत्तौचविनश्यंतिद्रव्यप्राप्तिसुखोद्भवं आशक्तश्चमनोद्वेगअंगनाप्रीतिसंभव रूपयौवनद्रष्टव्या
लुभ्यतेललनाजनै महर्घभूषणांवस्त्रंप्राप्यतेनूतनंगृहं भाग्यवृद्धिश्चज्ञातव्यालाभोकृत्योपिचिंतनं ऊनविंशेचदैत्येशतथाब्देवेदविंशके स्वकृत्य
कुशलोदक्षकार्यमात्रधनागमः मित्रपक्षपरंप्रीतिचंद्रजीवपरंप्रिय गृहक्लेशविवादश्चसुखवृद्धिदिनेदिने गुप्तचिंतान्वितोभूयनिशानिद्राचमंदता
सिंधुतुल्यतरंगोपिचित्तोद्वेगंनसुस्थिर कामक्रीड़ाविशेषेणपत्नीगर्भान्वितोभवेत् कन्यकामथवापुत्रजायतेचमहोत्सवम् पत्नीकष्टविशेषेण

नूतनंजन्ममन्यते अयत्नंचतदाकाव्यविपाकेशोकदायक तस्मातसर्वप्रयत्नेनपुण्यकर्मसुभक्तितः सर्वसौख्यागमोनित्यंनात्रकार्यविचारणं सुतापुत्रान्वितोभूयपुनश्चशोकनाशनं पंचविंशांतरोकाव्यतथाचत्रिंशमध्यमा लाभकृत्यभवेल्लोकेराजद्वारेधनागमः गुप्तशत्रुविशेषेणभय भीतीभविष्यति आनंदचापिदैत्येशसर्वोपद्रवनाशनं कष्टेनसंततिसौख्यंप्राप्यतेबहुयत्नत मंगलंजायतेगेहेमोदतेचमहोत्सवं छत्रचिंताविशेषेण स्वजातीमानवर्द्धनं शशित्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिमध्यमा तावत्कालंचदैत्येशव्ययलाभविशेषता बृहत्वोकार्यंजायंतेसर्वपूर्णंभविश्यति सुकीर्तिस्वपरंप्राप्यकुलबंधुप्रशंसिता उद्वाहंचमहोत्साहोजायतेबहुवत्सरे चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा नूतनंलाभसंपन्नोप्राप्यतेगेह नूतनं कार्यवृद्धिभवेल्लोकेराजद्वारेप्रतिष्टितः चंडीपाठेनक्लेशंचसत्यंसत्यविनश्यति बृहल्लाभप्रभावेणआनंदचापिसर्वदा चंद्रचत्वारिवर्षाणि

मृ० स० फलित ५८०

थाचसर्पवेदके राजद्वारेजयंप्राप्तिधनधान्यप्रवर्द्धते सर्वसौख्यविजानीयात्नृपात्मानमहासुखं रोगशोकप्रवर्ततेकिंचित्कालविनाशनं दान पुण्यप्रभावेणसर्वसौख्यधरातले आनंदंमंगलाचारंविवाहादिमहोत्सवं शून्यबाणगनेवर्षेपूरितंमनवांछया आनंदक्लेशकार्यंचभुक्ताकर्मानु सारत लाभालाभसुखंदुखंतथाकर्मेतथाभवं पुण्यकर्मेणदैत्येशपुत्रपौत्रधनान्वित व्यालषष्टाब्दमायुष्यजायतेनात्रसंशय निजकर्मानुसारेण निधनंमोदसंयुत ईश्वरेच्छानुकूलंचवर्दिश्यामिमयानघः ॥ भाषा ॥ इसकुण्डली का फल उत्तम है ग्रह बड़े बलवान हैं पांच ग्रह श्रेष्ट चार मध्यम सो ये जीव मध्यम ग्रहों का उपाय दानमंत्र जाप करावे ईश्वर का ध्यान करे नित्य षटाक्षरी मन्त्र जपे तो अति ऐश्वर्य तेज प्रतिष्ठा तथा बड़ाई पावे श्रेष्ट कर्म करे नीच कर्म से बचे सब के भले में रहै किसी का बुरा न चाहे आनन्द में बीते परन्तु कई योग बड़े बड़े खर्च के हैं सो चिंता मानेगा परन्तु कैसा ही भारी खर्च का काम आवे सब पूर्ण हो कभी श्रेष्ट दशा में विशेष लाभ कभी मध्यम दशा में मध्यम लाभ और न्यून में न्यून लाभ होता रहै किसी समय किसी जीव में चित्त फंसे आनन्द दुख दोनों भोगे पुत्रों के सुख को संतान गोपाल का जाप करावे तो श्रेष्ट है प्राणों का भय हो भारी अल्प आवे परन्तु शांति हो जाय दीर्घायु हो स्त्री की चिंता घर की पितृ पीड़ा उपाय से शांत हो धन मिले आशा पूर्ण हो बड़े बड़े सदमें आनन्द भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव हरिद्वार में रहता जल की शीशी बेचा करता बहुत धन प्राप्त किया एक समय एक यात्री इसके स्थान पर ठहरा सो बहुत सा माल रख कर ऋषिकेष को गया मार्ग में मृत्यु वश हुवा उसका सब माल इसने रख लिया सो तिस निमित्त पर्व में ब्राह्मणों को नौता जिमाय गुप्त दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदंएवंसाकुन्डलीफलं आदौभाग्यश्चमध्योपिपुनरंतेविशेषता बाल्यवस्थाचक्रीड्यंतेविद्याभ्यासोपिमंगलं
तातद्रव्यशुभेकार्येविवाहादिमहोत्सवः भ्रातृभग्नीसमायुक्तोमोदतेनात्रसंशय वारभीतोथवावन्हिचतुष्पादेनपीड़ितम् उच्चस्थेपतितोभूमौशरीरो
घातपीड़ितं बहुविद्यानप्राप्यंतेकार्यमात्रश्चसिद्धति बुद्धिमंतोविशेषेणसुज्ञाताचसुलक्षण युवावस्थासुखंप्राप्यबृहत्कार्याधिपोभव व्ययलाभ
विशेषेणकीर्तिवंतोप्रतिष्टत भाग्यवंतोधनाध्यक्षसुप्रसिद्धसुखीनर चंद्रमित्रपरंप्रीतिसर्ववार्ताचकथ्यते क्लेशचिंताद्वयोजीवप्राप्यंतेशोकसंयुत
कदाचकष्टरोगार्तोबहुद्रव्यव्ययोभव राजद्वारेधनागम्यभूमिलाभस्तथैवच तरंगोसिंधुवच्चितंजायतेबहुनूतनं अल्पोदीर्घभयंप्राप्यनूतनं
जन्ममरणयते पुनरंतेसुखंप्राप्यआयुपूर्णभविष्यति पापक्रूरग्रहापूजयेक्तताभाग्यमंदता दानमंत्रविधानेनमनेच्छासिद्धितंततः पुत्रसौख्य
विशेषेणपरकार्यरतोनर दयालुसुविचारश्चगीतवाद्यरतसदा सुन्दरंमृदुबाणीचधनसंयुक्तकौशलः बाणिज्यश्चधनंप्राप्तिबलवानवाहनोयुत
सत्यवक्ताप्रतापीचविनीतश्चतुरोगुणी लोलचक्षुसुमूर्तिश्चहेमरत्नविभूषित स्वपुरुषार्थधनप्राप्तिरिपुनाशनृपातसुखं भाग्यवृद्धिसुखंदेहंद्विजाना
मर्चनंसदा बाटिकामन्द्रयानश्चविपाकेधनवर्द्धनं कवित्वंमतिसंजातनधनंपूर्णतिष्ठति पूर्णसौख्यभवेल्लोकेनारिणांप्रतिवर्द्धनः गोस्वर्णभूमि
दानेनसर्वसौख्यंभवेध्रुवं राजसीगुणसंजातोभ्रातरंस्वल्पप्रीतिकृत कुक्षिपीडयुतपत्नीसुतदाराततिर्चिंतयेत् महर्घवस्त्रधारीचप्रचंडोबहुभाषिण
नृपद्वारोधीकारश्चयशंभूरिमहीतले पितुश्चमरणंज्ञेयंविपाकेवीर्यनाशनम् पुत्रश्चकन्याद्वाहसुमार्गेसुधनंव्यय प्रथमात्पञ्चमेवर्षेनानारोगसमन्वित
मातृहानितयोर्मध्येशिशुकष्टश्चदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्यदानमंत्रसुभक्तित सर्ववाधाविनश्यंतिविपाकेसुखवर्द्धनं षष्टमेचाष्टमेवर्षेबृणव्याधी
नसंशय पितुलाभविजानीयातभृगुवाक्यनचान्यथा अष्टमेचतथानंदेउत्सवंजायतेगृहे नवीनोवस्त्राभर्णांप्राप्यतेग्रहमंडले दशमेवन्हिचंद्राब्दे
अकस्माद्भयसंभवः उद्वाहश्चमहोत्साहोकुलबंधुप्रशंसिता प्राप्तेचतुर्दशवर्षेतथाचविंशमध्यमे तातबाधामहाकष्टंसुयत्नेकुशलंभव भाग्यवृद्धि
नसंदेहोधनलाभदिनेदिने कामपीड़ामनोद्वेगंचित्तंचैवोपिव्याकुल नवनारिसमागम्यतेनभोगमनंदित परश्चिंतयायुक्तोजायतोपिकदाकदा

भार्यास्वल्पसुखंप्राप्यअन्यत्रोचित्तचञ्चलं तदांतेक्लेशसंजातोबृहचिंताभविष्यति विंशैकपञ्चविंशोवास्वदेहंकष्टजायते तस्यशांतिश्चदैव्येश जायतेपुण्यकर्मणात् अभ्यागतद्विजंपूज्यंतीर्थमंत्रादिसेवनं प्राप्यतेपरमंसौख्यंदानमंत्रसुभक्तितः पत्नीकष्टविशेषेणमृत्युतुल्योभविष्यति गंभीरोमतिमान्पुत्रजायतेनात्रसंशयः मंगलंजायतेगेहेगोगीतवाद्यमनंदिता मध्यलाभव्ययोसर्वमनेच्छाकार्यसाधने रसविंशचत्रिंशाब्देसुता पुत्रमनंदितालाभबृद्धिभवेल्लोकेचिंतावृद्धिश्चनूतनंसत्यवादीगुरुभक्त नृपात्भामान्यभवेत्सदाद्विजदेवसुभक्तिश्च विचित्रोवाक्यंब्रवीत्चत्वारिंशा वधिवत्सविशेषोभागवर्द्धन विवाहादिमहोत्साहोकुलबंधुग्रहागम व्ययधनप्रसन्नात्मासुभक्तिसर्वतोषिता एवंबहुसुकार्योपिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसमायुक्तोसुजनेभ्योप्रशंसित बृहद्भाग्योधिकारीचद्रश्यतेनात्रसंशय शशिवेदाब्दसंजातंव्योमपञ्चावधिततः मनेच्छापूजितंसर्वं विशेषोकष्टनाशनम् पत्नीहेतुविवादश्चजायतेपुत्रबंधुभि अंतेचकुशलंज्ञात्वाभिन्नवासद्विमंदिरे अतःपरिसुखंसर्वंपुत्रपौत्रमनेकधा लाभकृत्य विशेषेणधनरत्नानिसंचित सर्वचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा सून्यषष्टोपिवर्षांतेकार्यभारंविनिर्मुख तदांतेशून्यसप्तांतेसर्वावस्थासुख महत् प्राप्तेचंद्रनगेवर्षेआयुपूर्णभविष्यति सर्वकर्मानुकूलञ्चभाषितंयन्मतिमम ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली का यह फल है प्रथम मध्यम भाग्य हो पश्चात् में विशेष भाग जागे बाल्यवस्था में बाल क्रीड़ा विद्या सगाई मंगलाचार हो पिता का धन शुभ काम में लगे बहन भ्राता का योग हो जल अग्नि चौपाये का भय कहीं से गिरकर चोट लगे विद्या कार्य मात्र हो चतुर अकलमन्द दानी युवावस्था में बड़े काम और मामले देखे लाभ खर्च बहुत करे प्रतिष्ठा पावे भाग्यवान हो एक मित्र से गुप्त प्रीति विशेष हो उससे सब मन की बात कहै तथा एक जीव की चिंता से क्लेश पावे कई बीमारियों में धन खर्च हो राजद्वार तथा भूमि लाभ हो चित्त में समुद्र कैसी नित्य नई तरंग उठे एक अल्प भारी हो नया जन्म माने आयु पूर्ण हो पाप ग्रह और क्रूर ग्रह जिन्होंनें भाग्य को मंद कर रक्खा उनका पूजन दान मन्त्र जाप आदि कराने से मनोकामना पूर्ण हो पुत्रों का सुख देखे सबका भला चाहे अच्छे विचार वाला दयालु तथा श्रेष्ठ वक्ता पराया काम सिद्ध करे धन धान्य युक्त हो हे शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ ग्रामाधीश धन पात्र था शिकार बहुत खेला करता था सो एक सेठ से विशेष विवाद रहा उसका हरा भरा बाग कटवा दिया सो जौ बोकर ब्राह्मण को बहुत सा स्वर्ण भर के दान करे तो कामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः एतद्योगोद्भवेबाल ग्रहाश्रेष्टबलान्वित फलपूर्णनकर्तव्या विग्रहांश्रधमस्थिता कार्यसिद्धिश्चद्रश्यंते तेनहानिप्रजायते
भौमपुच्छोरविपूज्यं दानमंत्रसुभक्तित विशेषोलाभसंजात भाग्यवृद्धिदिनेदिने मनेच्छापूजितेलोकेसर्वतोदिशिमंगलं अयत्नेनतदा
काव्य मध्यलाभोतिचिंतया दानमन्त्रसुपुण्येण बहुत्वालाभसंभव आनंदमंगलाचारं जीवहर्षश्चमोदिता सुकीर्तिप्राप्यलोकेस्मिन्
दीर्घमान्यप्रतिष्टत यदामध्यदशायात मध्यलाभोतिचिंतनं गुप्तचिंताविशेषेण व्ययदीर्घोपिजायते क्लेशपीड़ाविशेषेण अल्पाजन्मनूतनं
सुयत्नंदानमंत्रेण आयुपूर्णविनिश्चितं दशाश्रेष्टप्रभावेण अकस्माल्लाभसंभव कुत्रोद्रव्यविशेषेण प्राप्यतेचापिमोदिता शुभाचर्णायु
तोजीव सर्वेशांशुभचिंतक नकस्यअशुभंचिंत्य परनिंदाविनिर्मुखः वृणचिन्हशरीरोपि अथवाशस्त्रघातनं तथापिसर्वसौख्यञ्च सुपुण्य
प्राप्यतेसदा सुखदुखान्वितोजीव सर्वथाकर्मकारणं पूर्वकर्मानुसारेण बालजन्मश्चमोदिता मातृकष्टविशेषेण पुनःसौख्यभूवितले
जन्मतःप्रथमेवर्षे द्वयोवन्हिश्चपञ्चमे मासेमासेसुखंज्ञात्वा बालवृद्धियथाक्रमम् दन्तपीड़ाविशेषेण ज्वरतप्तोविरेचनम् ग्रहचिंता
विशेषेण कष्टीभूतकलेवरम् छायादानसुयत्नेन घूटिकासेवनंतथा कष्टनष्टनसंदेहो सर्वथामोदप्राप्तये प्रतिसम्बतसरोवृद्धि बाल
क्रीड़ाविशेषत तातमातमहामोदं मंगलंगृहेशोभित पञ्चमात्षष्टमेवर्षे नगनागदशाङ्के विद्यारंभकृतोबाल क्रीडनंबहुतत्परं चञ्चल
चपलाधीमान् हृदेबुद्धिविलक्षण किंचित्कालगतेसंत अंकज्ञानभविष्यति जायतेमंगलाचारं नूतनमोदसंभव सुकार्यंचव्ययोद्रव्य
आनन्दंहिदिनेदिने कष्टव्याधिविशेषेण नूतनंजन्ममन्यते पुण्यकर्मप्रभावेण दीर्घसौख्यादिवेशुभं तातचिंताविनष्यन्ति द्रव्यलाभ
व्ययंतथा उद्धाहोमंगलंकार्यं तदांतेबहुमोदिता शशिचन्द्राङ्कमारम्य पञ्चचन्द्रादनन्तरं विद्याबुद्धिविशेषेण वर्द्धयन्तिसुपुण्यजं प्राय
चितकृतेपापं यत्कृतेपूर्वजन्मनि दीर्घभाग्याधिकारीच सुपुण्यंसर्वमंगलं मित्रपक्षपरम्प्रीति रूपध्यानसुचिंतनम् सुविद्यावर्द्धतेयत्र
तत्रसर्वसुखागम पत्नीलाभसुकीर्तिच मासेवर्षेसुखंगत कष्टव्याधिविनाशार्थं आपदुद्धारणोजपेत् आपदुद्धारणावत्स सर्वथारिष्टनाश
नं षोडशेविंशवर्षांतं लाभकृद्योतिचिंतनं क्षत्रचिन्तानसंदेहो द्रव्यलाभसुखोद्भव मान्यकीर्तिविशेषेण वर्द्धितंप्रतिवत्सरे कामवेगेन

पीड्यते रूपयौवनचिंतनं पत्नीसौख्यसुपुरायेन आनन्दंप्रतिवत्सरे प्रायश्चित्तेनभोकाव्य सर्वदानंदवर्द्धनं शशिविंशाद्वमायात शर
विंशांतकेतथा तावत्कालगतेवत्स मोदतेचापिभूतले वृहद्भाग्याधिकारीच भूयसेपिसुकर्मणा आनन्दंमंगलंकार्यं वर्द्धितप्रतिवत्सरे
सुतापुत्रसमायुक्तो द्रव्यलाभविवर्द्धनं बहुकार्यचिंतयोनित्यं भूयसेसुखभाजनं दुष्टसंगकुकर्मेणा सर्वथाहानिसंभव एतस्मात्कारणा
द्वत्स चिंतनीयंविशेषत सर्वसौख्यान्वितोलोके जायतेचयथाक्रमं शत्रुपक्षविनश्यंति रोगापत्तौचशांतये बहुकार्यचिंतनंलोके नूतनं
बुद्धिसम्भव रसविंशनभेवन्हि तावत्कालश्चमोदिता सुमित्रंमेलनंप्रीति व्ययदीर्घभयावहं स्वकुलेसुप्रसिद्धश्च निजकृत्यविचक्षण
चितचिंताव्ययपुरायं भूयसेभूपवल्लभं कार्याणिसकलारायेवं सिद्धंतिलघुद्रव्यत एकत्रिंशाद्वित्रिंशाब्दे पंचत्रिंशांतरेतथा उद्वाहोमंग
लंकार्यं सुतापुत्रविवर्द्धनम् मानकीर्तिविशेषेण वर्द्धयंतिसुकर्मणा लाभश्चविविधंशुक्र चित्तौद्यानंदवर्द्धनं पीड्यंऊष्णविकारेण महादा
नेनशांतये चत्वारिंशावधितात अतिसौख्यसमागम तत्पश्चात्भाग्यवृद्धोपि सर्वथामोदसंभव त्रिपुत्रंयुग्मकन्याच आशासर्वत्रपूजितं
विवाहादिमहोत्साहो जायतेबहुवत्सरे सर्वचिंताविनश्यंति कुलवृद्धिधनाप्तये व्योमषष्टगतेवर्षे पौत्रजन्ममहोत्सवम् ग्रामप्राप्ति
विशेषेण भूमिमंद्रश्चनूतनं वन्हिनगाद्वमायुष्यं भुञ्जतेसुखतोभुवि पुत्रपौत्रसुखंसर्वे स्वकुलसुप्रशंसिता ॥ भाषा ॥ इस कुण्डली के ग्रह बहुत
श्रेष्ट और बलवान पड़ेहैं परन्तु पूरा२ फलनहीं करसकते तीन नाकिस ग्रहोंने हानि कर रक्खीहै सूर्य मंगलकेतु इनका दानमन्त्र उपाय करनेसे लाभ विशेष और
भाग्य की वृद्धि और जीव मनोकामना पूर्ण होगी इतने प्रायश्चित उपाय न बनेगा मध्यम लाभ हो और दान करनेसे अनेक प्रकारके लाभ आनन्द मंगलाचार
जीव की खुशी होगी और ये जीव बड़ी इज्जत प्रतिष्टा पावेगा और कीर्ति विख्यात होगी मध्यम दशा में मध्यम लाभ गुप्त चिन्ता और अनेक प्रकार के खर्च
और क्लेश पीड़ा होतीहै अल्प से बचकर दूसरा जन्महो परन्तु पुण्यके प्रतापसे आयु पूर्ण होतीहै शुभ दशामें कहीं से विशेष धन प्राप्त होगा सबका भलाचाहे
किसीकी बुराई निन्दा नकरे शरीर में बृणका चिन्हहो या शस्त्रघात हो हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव हीन क्षत्रीवंशमें उत्पन्न हुवा अति ऐश्वर्यवान हाथी घोड़े रथ
दास दासी आदि से युक्त ग्राम का प्रधान था ईश्वर का भजन करता था परन्तु दान धर्म में चेष्टा न थी कृपण स्वारथी था मन्त्र बहुत जपा हवन यज्ञ ब्रह्म
भोज आदि न किए एक ब्राह्मणका गुप्त धन हरा सो महा माया भगवती की आराधना कर दान यज्ञ ब्रह्मभोज करानेसे धन सन्तान की विशेष वृद्धि हो ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थेदफलंदृश्य यथाभाग्योधिकोजन द्रव्यलाभप्रसन्नात्मो जीवग्राशाविनिर्मुख चित्तंनसुस्थिरंलोके चञ्चलत्वं
विशेषता गुप्तचिंतामनस्थित्वा लाभसिद्धिश्चमंदता नूतनोवार्तयाचिंत्य चंद्रकृत्योतिलालसा तस्यसिद्धिसुदृश्यंते विलंबजायतेपुनः
क्लेशरोगेणपीड्यते सर्वथाहानिचिंतनं लाभेशोपञ्चमेशश्च दानमंत्रसुपूजिता फलश्रेष्टसुखंप्राप्य सुपुण्यफलदंशुभं भाग्योदयविशेषेण
पुत्रसौख्यञ्चमोदिता बहुकृत्यमहल्लाभं सुजनानंदवर्द्धनं चंद्रजीवपरंप्रीति विशोकंभोगभाजनं पितृपीड़ागृहंगुप्त ग्रकस्माद्भयदायकं
गायत्रीजाप्ययत्नेन ग्रनुष्ठानयथाविधिः नानासौख्यभवेद्दीर्घ सर्वतोप्राप्यमंगलं द्रव्यप्राप्तिविशेषेण कुलवृद्धिश्चहर्षिता प्रायश्चित्तकृते
पापंसुपुण्यंफलदंशुभं सर्वसौख्यस्मृद्धिश्च ग्रानंदंहिदिनेदिने ग्रादिवर्षद्वयोवन्हि ज्वरतप्तश्चशांतये कृष्यदेहोपिद्रश्यंते भूतछायाश्च
विन्हलः दानमंत्रविशेषेण उत्तरोपूतनातथा सर्वबाधाविनश्यंति बालवृद्धिसुमंगलं चतुर्थपञ्चमेवर्षे षष्टवर्षादिसप्तमे तातलाभनसंदेहो
गुप्तचिंतातिविन्हलं विद्यारंभतथाभ्यासे मंगलाचारकंशुभं वृणव्याधिमहाकष्टं नूतनंजन्ममन्यते बालवृद्धिभवेल्लोके क्रीडाशक्तं
विशेषता व्यालवर्षयदारभ्य द्वादशाब्दांतरंतथा मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते नानासौख्यश्चमोदिता शरीरारोग्यवृद्धिश्च कष्टोपद्रवनश्यति
विवाहोमंगलंगेहो नूतनंलाभहर्षिता चंचलचपलोधीमान् विशेषोभाग्यभाजनं सुविद्यासर्वतोसौख्य ग्रविद्याक्लेशकारक सुविद्या
सज्जनात्संग किंकिंसौख्यंनलभ्यते ग्रथेदंकोरणांवत्स चिंतनीयंविशेषत येनज्ञानेनदैत्येश सौख्यपात्राभवेध्रुवं वन्हिमेकोगतेवर्षे ग्रष्टा
दशांतरोतथा स्वकृत्यकुशलोधीमान् कामबाणेनमोदिता जीवशक्तंविशेषेण गुप्तप्रेमंचलज्जिता पत्नीसौख्यग्रहसौख्य लाभकृत्य
सुयत्नत सुप्रतिष्ठंसुखंसर्वे भूयसेचदिनेदिने ग्रहचन्द्राद्यमारभ्य वह्निनेत्रांतरोतथा नारीभोगादिसर्वाणि प्राप्यतेचग्रहर्निशम् ज्वर
तप्तेनपीड्यंते वृहत्वरोगशांतये लाभकृत्यंचमध्योपि तथापिमंगलंसदा पत्नीगर्भाविमोदंच सुतजन्मभुवितले वेदविंशगतेवर्षे तथाच
ग्रहविंशके द्रव्यलाभंचमध्यापि कार्यमात्रोपिन्यूनता सुतापुत्रसुखंसर्वे यत्रकुत्रप्रशंसिता सुमित्रंपरमोप्रीति कामग्राशासुपूजितम्
शुभकर्मरतोदीर्घ न्यूनबुद्धिश्चचिंतनं व्योमवह्निगतेकाव्य तथाचपंचविंशके उद्वाहोमंगलंनित्यं कुलबन्धुग्रहागम नवनारीप्रियत्वोपि

नृत्यगानसुमन्दिरे व्ययलाभविशेषेण सुकीर्तिख्यातिभूतले सुवाक्यन्तोषितोलोक विशेषोमतिमान्नर सुबुद्धिख्यातिलोकेस्मिन्नं सर्वेषांशुभचिंतकः दानमन्त्रसुपुरायेन सर्वसौख्यंनिरन्तरं गूढस्वंमिदंज्ञात्वा नकदाश्चैकमाश्रय अष्टवर्निर्हिसुवर्षाणि चत्वारिंशाब्द केतथा भूमिलाभविशेषेणमन्द्रप्राप्तिश्चनूतनं शुभकार्यंव्ययोद्रव्यं जातिमध्येप्रतिष्ठता नानामंगलंकार्यं सुतापुत्रश्चमोदिता सुत-कष्टविशेषेण प्रायश्चित्तश्चमोदिता चित्तचिंताविनश्यंति - भजनानन्दसर्वदा दासदासीसमायुक्तो तथास्वस्थवाहनम् सर्वसौख्या धिकारीच सुयत्नादिफलप्रदा शशिचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चवधिततः द्रव्यलाभविशेषेण नूतनंवार्तयाचित राजद्वारेजयंजाप्य पददी र्घसुपस्थित पत्नीकष्टविशेषेण औषधीसेवनिस्फलं स्वस्थंरोगविनश्यंति पुनर्मृत्युवशगत अन्यसर्वसुखंदृश कुलभाग्यविवृद्ध नम् पञ्चपंचाब्दमारभ्य शून्यषष्टादनन्तरं कार्यसिद्धिविशेषेण प्रतिसंवत्सरोतदा पौत्रजन्ममहामोदं मंगलंग्रहमंडले गुप्तद्रव्यस्थितोगेहे सुयत्नंशीघ्रलभ्यते दानविषयमतिस्थित्वा परकृत्यस्यसाधक अतिनम्रदयायुक्तो स्वार्थकर्मनमन्यते जलाश्रयक्रियानित्यं देवागारे मतिस्थित रामनामसुखंजाप्य श्रद्धाभक्तिविशेषत वालरोगेणपीड्यन्ते तदांतेचापिभार्गव कष्टवृद्धिविशेषेण जीवआशांपरित्यज रस षष्टमितिमायु कथ्यतेभार्गवोमुनि सुतपौत्रसमायुक्तो मनेच्छासर्वपूजिता अनायासेतनुत्यज गच्छेतपरमंपदम् ॥ भाषा ॥ इस पत्र का ऐसा फल है जैसा बड़े आदमी भाग्यवानों का होता है लाभ प्राप्ति, खुशी, जीवका लाभ, आशासी होकर निराश होजावे चित्त स्थिर नहीं होता चलायमान रहता है गुप्त चिन्ता विशेष होवेहै लाभ इच्छा के अनुकूल नहीं रहता नई नई बात सोचे है एक कामकी बड़ी लालसा है होने की सूरत होकर विलम्ब हो जाता है और पीड़ा क्लेश भी होता रहता है सो लाभेश और पंचमेश का दान मन्त्र पूजन उपाय कराना श्रेष्ट है भाग्य विशेष उदय हो पुत्रों को विशेष खुशी होगी अनेक प्रकार लाभ होंगे एक जीव में प्रीति अधिक रहती है सो आनन्द भोगे घर की पितृपीड़ा को गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराना परमोत्तम है कहीं से विशेष धन मिले ॥ हे शुक्र पूर्व जन्म में वैश्य वर्ण धनवान सेठ था दान पुण्य भी करता था धन के ब्याज से अपना प्रतिपालन कर द्रव्य संग्रह करता रहा एक ब्राह्मण पै धन चाहिये था लेने देनेमें ब्राह्मणके बेटे से उपाधि कर बैठा क्रोधवश होकर उसे मारा उसका घर छीन लिया विशेष ब्याज बढ़ाकर दूना धन लिया तिसी से महा पापका भागी हुआ सो अब गायत्री का जाप्य अनुष्ठान कराय ब्रह्मभोज कर ब्राह्मण को विशेष दान दे तो पाप शांतहो परमसुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः पत्रस्थित्वाग्रहाचेदं फलज्ञात्वा विचक्षण युवावस्थायदाप्राप्य विशेषोभाग्यवर्द्धनं सर्वावस्थासुखंप्राप्य बहुकार्यरतोभव
यदालाभविशेषेण कदादीर्घव्ययस्थिता लाभोपिसर्वदानूनं व्ययोकार्यविशेषत चन्द्रमित्रपरंप्रीति विशेषेमोदप्राप्नुयात् अतिकष्टमहाग्रल्पं
नूतनाजन्ममरणयत्रे जीवचिंताविशेषेण मनेच्छापूजितेपुन चतुष्पदातजलंवापि प्राप्यतेभयदारुणं व्रणचिन्हञ्चशीर्षोपि किंवाशस्त्रघातकम्
उद्योगलाभप्राप्तिश्च नूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षपरंप्रीति रूपध्यानकचिंतनं परकृत्यरतोचिंता मंत्रप्रीतिविशेषतानकस्यग्रशुभचिंत्य सर्वतोपि
प्रशंसिता कामदेवमदोन्मत्तो न्यूनकार्योपिजायते लाभशोपञ्चमेशश्च दानमन्त्रप्रयतनत लाभवृद्धिविशेषेण कुलवृद्धिसुखोद्भवं चित्तचिंता
विनश्यंति सर्वतोदिशमंगलं मातृपीड़ाविशेषेण बालजन्मञ्चमोदिता आदिवर्षात्रिवर्षाणि शिशुवृद्धिग्रहर्निशं मंगलंसौख्यसंपन्नो मासेवर्षे
विशेषत दंतपीड़ाज्वरोतप्तं चिंतनीयोविशेषत कष्टंपुनःपुनःप्राप्य अन्तेसौख्योपिजायते भूतछायाविशेषेण सयत्नशांतिसर्वदा वेदाद्ध
पञ्चवर्षाणि सप्तमेचाष्टमांतरं कष्टव्याधिविशेषेणव्रणपीड़ाश्चविव्हलं दानमंत्रसुपुण्येनग्रायुवृद्धिनसंशयः नूतनंमन्यतेजन्म कष्टेनप्राणरक्षितः
अन्यसर्वसुखंजातं शिशुक्रीड़ाविमोहिता विद्यारंभमहोत्साहो मंगलगृहमागतः तातचिंताविशेषेण भ्रातभग्नीश्चमोदितं नंदवर्षसमारभ्य
षोडषाद्धादनन्तरम विशेषोमंगलंकार्यं विवाहादिमहोत्सवं सुकीर्तिख्यातिलोकेस्मिन् विद्याप्राप्तिश्चन्यूनता बुद्धिमन्तोविशेषेण कामाशक्तञ्च
चञ्चलः मित्रपक्षपरम्प्रीति जीवोयंसौख्यनूतनं पत्नीप्रीतिसमुत्पन्नोरूपयौवनलुब्धक नगचंद्राद्धमारभ्यञ्चद्धिविंशादनंतरंकवे कामक्रीड़ाविशेषेण
लोकाचारञ्चसंगम जायासौख्यभवेद्वत्स पुण्यकर्मफलप्रदा स्वकृत्यपरमोप्राज्ञ द्रव्यलाभोतिचिंतनं अहमंगलगायन्ति नवनारिश्चमोदिता
प्रायश्चित्तकृतेसंत भाग्यवृद्धिविशेषतः वृन्हिविंशगतेसंत विंशवर्षावधितत एतत्कालान्तरोकाव्य विशेषोभाग्यसंभव सतापुत्रसमायुक्तो
लाभकृत्यविशेषता नानासौख्यसमुत्पन्नो मासेवर्षेधनागम चित्तोद्यानंदतोपि दृ बहुलाभप्रभावत पापक्रूरग्रहापूज्य सर्वदानंदवर्द्धनं क्षत्र
चिन्तागतोग्रप्नं स्वात्मजंसौख्यपूरिता शशिवन्हिमितेवर्षे शरत्रिंशतथांतरे उद्वाहोमंगलंवृद्धि नवनारिमहोत्सवं कुलबंधुगृहागम्य मानवृद्धि

विशेषतः गुप्तचिंताहृदिस्थितः शत्रुपक्षकुलंगुप्तं सर्वदाहानिचिंतकः तेसर्वक्लेशतागुप्तं निजइच्छाविनिमुंख मित्राणांहर्षसम्पन्नो कार्यं सिद्धिमनंदिता रसरामाद्धमारभ्य चत्वारिशांतकेतथा भूमिप्राप्तिविशेषेण रचनामन्द्रनूतनं नद्यांकूपतडागोवा आरामेप्रतिवर्धनं राजद्वारेसुमान्यञ्च पददीर्घमुपस्थित निजकृत्यविशेषेण द्रव्यलाभदिनेदिने उद्वाहादिमहोत्साहो जायतेप्रतिवत्सरे शरीरेदारुणं कष्टं अकस्माज्जायतेकवे महामृत्युञ्जयोजाप्य वीर्यमंत्रेणसंपुटं घंटाकर्णंचउल्लेख्य विप्रभोज्ययथाविधि छायोपात्रसुयत्नेन सद्यकष्ट विनश्यति शशिचत्वारिवर्षाणि तथाचपञ्चवेदके सुप्रसिद्धं सुखीलोके माननीयोतिवल्लभ दानपुण्यरतोदीर्घं सर्वथासौख्यवर्धते एतस्मात्कारणाद्वत्स पुण्यकर्ममहत्सुखं परोपकारकर्तारौ भाग्यपात्रंविशेषत चित्तचिंताविनश्यंति मनेच्छाबहुपूजितो संकल्पञ्च विकल्पोपि तातकष्टमृतोभव शुभकृत्यविशेषेण मंगलंप्रतिवत्सरे रसचत्वारिमारभ्य व्योमपञ्चाद्धकेतथा नूतनंसौख्यसंपन्नो मने च्छापूर्णतोषिता द्विकन्यानेत्रपुत्रञ्च सर्वथानंददर्शन. तीर्थयात्राकृतेलोके विप्राणांतोषणेरतः पौत्रजन्ममहामोदं अकस्माद्धयमागम शशिपंचाद्धगन्तव्या शून्यषष्टांतकेतथा गृहप्रीतिविशेषेण जायामृत्युवशंगत पुनरंतेमहासौख्य अकस्माद्रोगदारुण रामनाम जपेनित्यं श्रद्धाभक्तिसमायुत गोदानब्राह्मणभोज्यं तेनकष्टनिवारणं ग्रामप्राप्तिविशेषेण राजद्वारेधनागम तदांतेसौख्यसंयुक्तो वह्निसप्ताद्धजीवित श्रावणशुक्लपक्षेच निधनंतस्यजायते ॥ भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल ये है इस जीवका युवावस्थामें भाग्य उदय होगा और अपनी जिन्दगी तथा अवस्थामें अनेक प्रकारके दुख सुख देखेगा कभी लाभ विशेष कभी न्यून तथा सर्वदा लाभहो परन्तु कई कामोंमें खर्च विशेष करेगा और एक जीव की मित्रतामें बड़े आनन्द पावेगा और अल्प भारी आवे नयाजन्म माने जीव की चिन्तामें विशेषरहै परन्तु फिर मनोकामना पूर्णहो जल चौपायेसे भयपावे शरीर में फोड़ेका या किसी शस्त्र घातका चिन्हहो और लाभ उद्योगका नित्य नई बातका चिंतवनकरे मित्रकी प्रीतके ध्यानमें रहे पराया काम मनसे करे किसी का बुरा न चाहे सब प्रशंसाकरें कामदेवकी उन्मत्ततासे बुद्धिन्यून होजाय पंचमेश लाभेशका दान श्रेष्टहै ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव क्षत्री वंशमें उत्पन्नहो राजपदवीकोप्राप्त भया एक समय प्रयाग राजमें विशेष दानपुण्य किए परन्तु हिंसाकर्म विशेष बना पश्चातमें कुछ साधुब्राह्मण निर्मुख रहे सो अति शोकातुर हुवे तिसीसे यज्ञका पुण्य क्षयहो पापाश्रय हुवासो ब्राह्मणोंको भोजन जिमाय स्वर्ण दानकरे चींटीनाल पक्षियोंको भोजनदे सब जीवोंपर दयारक्खे तो विशेष सुखपावे पाप नष्ट हो ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहस्थित्वापत्रमेतत्फलप्रदाविद्यावान्चतुरोधीमान्सत्यासत्यस्यचिंतकउत्तमश्चकुलंश्रेष्टईशज्ञातासुपुण्यवान्वृथावार्तान
कथ्यंतेगूढ़तत्वापिदर्शक हानिज्ञात्वादशामेकोगुप्तचिंताविशेषत लाभोपिमध्यमंवत्सकार्यसिद्धिनदृश्यंते गुप्तशत्रुभयप्राप्यप्रतिष्टाभंगचिंतयेत्
जीवचिंतामहाक्लेशंप्राणशंकाविशेषत सूर्यभौमतमोपूज्यदानमंत्रप्रयत्नत सर्वापत्तौविनष्यंतिदशाश्रेष्टसमागमः धनपुत्रसुखंप्राप्यवंशवृद्धिदिने
दिने स्वकृत्यपरमोलाभअकस्माद्धनप्राप्नुयात् मित्रप्रीतिमहामोदंशत्रुरोगविनाशनं बहुविधहर्षंप्राप्यनूतनंकार्यमारभेत् सहमेलनंमहल्लाभप्रभुत्व
जायतेकुलदुखसौख्यसमोद्रश्यविशेषोव्ययभूतले युग्मअल्पभयंघोरंआयुपूर्णपुनर्भवेत् सुपुण्यमंगलंसर्वमनेच्छापूजितंबुध मातृपीड़ाविशेषेण
पुनश्चमोदिताभुवि शशिनेत्रवर्षाणिशिशुबृद्धिधनागम गुप्तरोगेणपीड्यंतेभूतछायाश्चविव्हल विशेषोशंकयाजातंतातमातोतिचिंतया घंटाकर्ण
तदापूज्यउक्तरोगपूतनातथा छायादानकृतेसंतसद्यसौख्यान्वितोशिशु बालक्रीड़ाविशेषेणकारयेत्सुमनोहरम् वेदवर्षसमारभ्यतथाचव्यालकंकवे
तातमातमहामोदंप्रियवाक्यंमधुःशिशु आदौविद्यासमारंभपश्चातोपिविसर्जनम् विशेषोमंगलंगेहनवनारिग्रहागम तातभग्निसमायुक्तोमोदितं
प्रतिवत्सरे व्रणपीड़ाज्वरोतप्ततथाविस्फोटकंभयं महामृत्युञ्जयोजाप्यउत्तरोपूतनाविधिःसद्यशांतिभवेत्तेनआनंदंजायतेध्रुवम् नंदवर्षगतोवत्स
तथाचसरचंद्रकेविद्याप्रीतिश्चमध्योपिबालक्रीड़ाप्रवर्तते तातद्रव्यव्ययोदीर्घउद्धाहंतस्यनिश्चितं वारिभीतोतथावन्हिकिंवाउच्चप्रपातिता अकस्मा
ज्जायतेव्याधिपुण्यकर्मेणशांतये पुनरंतेमहामोदंदीर्घभागीचबालक षोडशाद्धसमारभ्यतथाविंशाद्धमध्यमा लाभकृत्यरतोभूयवृहद्भागीसमागम
पत्नीसौख्यरतिप्राप्यरूपयौवनमोहिता क्षोभचिंताहृदेगुप्तंकामवेगेनपीड़िताबुद्धिमंतोविशेषेणकदाकालश्चविभ्रमेश्रेष्टसंगप्रभावेणपुनरंतेमहत्सुखं
विंशैकोपश्चविंशाब्देतयोरंतरधनांगमद्रव्यलाभव्ययोदीर्घकार्यसिद्धिमनंदिता यदाकष्टविशेषेणदानमंत्रोपिशांतये सुभाग्यंउदयंतेन मानकीर्ति
विवर्द्धनम् पत्नीगर्भसमायुक्तोसुतजन्ममहोत्सवं मनेच्छापूर्जितंसद्यपुन्यकर्माश्रयायदा नवनारिप्रियत्वोपितेनकष्टप्रपीड़िता पुनश्चकन्यकाजन्म

पुत्रजन्मेचनन्दितोरसविंशेचत्रिंशाब्देचित्तचिंतावलीयसी गुप्तशत्रुभयंगेहोप्रत्यक्षंप्रीतिदर्शक सुद्रव्यंसद्वयोलोकेसुजनेभ्योप्रतिष्ठित पददीर्घमु
पस्थित्यभजनानंदसर्वदा भूमिलाभविशेषेणरचनामंद्रनूतनं शशिवन्हिमितेवर्षेशरत्रिंशांतरंतथा विवाहोमंगलंप्राप्यकुलबन्धुमहोत्सवं व्ययो
दीर्घभवेच्चापिसुकीर्तिख्यातिस्वपुरे राजद्वारेतिमानश्चचित्तमोदेनपूरिता मासेसम्बत्सरोहर्षदुर्भाग्यश्चविनश्यति अन्यसर्वसुखप्राप्यदासदासिश्च
वाहनं तीर्थयात्राजपंपुरायंदेवागारेमतिस्थितः आरामेवाटिकानद्यांविशेषोप्रीतिवर्द्धन बहुकार्यचिंतयेनित्यंतेनदीर्घप्रतिष्टत रसवन्हिगतेवर्षे
तथाचशून्यवेदके मोदितोमंगलंकार्यंउद्वाहादिमहोत्सव मानकीर्तिविशेषेणवर्द्धयंतिदिनेदिने दानमंत्रसुपुरायेनकुलात्सौख्यविशेषतः शशिवेद
त्रिवेदाब्दश्चकस्माच्चउपद्रवं चित्तचिंताविशेषेणकिंचित्कालेसुखोद्भवं अयत्नेपापकर्मेणप्राप्यतेक्लेशदारुणं तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकारयेद्धर्मसञ्चय
ईश्वरकृपयावत्ससुस्थिरंसर्ववैभवाग्रामभूमिश्चहेरत्नंसुपत्नीचमनोहरं सुतापुत्रादिसर्वाणिप्राप्यतेसौख्यवैभवं व्योमपञ्चगतेवर्षेपौत्रसौख्यंचमोदिता
मासेवर्षेसुखंप्राप्यमंगलंहिदिनेदिशि वन्हिपंचाब्दमारभ्यवायुकोषोतिदारुण तेनकष्टभवेद्दीर्घअतिचिंतातुरोभवेत् सुयत्नेनश्यतोसद्यआयुर्वृद्धा
रुजंगतः शून्यषष्टाब्दपर्यंतंमनेच्छापूजितेपुनः ईशध्यानविशेषेणगृहसौख्यविसर्जनः श्रेष्टाभक्तिसमायुक्तोसर्वाणितोषितंसदा नंदषष्टगतेकाव्य
प्रपौत्रभाग्यदर्शन पंचसप्तमितिमायुजायतेपुरायकर्मणात प्रशंसावर्ततेलोकेगतांतेनंदनंवनम् ॥ भाषा ॥ इस पत्रका फल ये है कि विद्यावान् चतुर
बुद्धिमान सत्यासत्यको विचारने वाला श्रेष्टकुलयुक्त ईश्वरको पिछानने वालाहो वृथा बात न कहे कई दशा ऐसी आवें गुप्त चिंता फिक्र हो लाभ मध्यम रहे काम
होता२ रुक जाय शत्रुका भय माने कीर्ति प्रतिष्टा का भयहो जीवकी चिंता क्लेश पावे सूर्य मंगल और राहुका दान मंत्र जाप करानेसे पुत्रोंका सुख वंशकी वृद्धि
रोजगार में लाभहो और कहीं से धन मिले मित्रों से प्रीति में आनंद भोगे पीड़ा और शत्रुका नाशहो अनेक कामकी खुशी मान एक कार्य आरम्भ करे उसमें
किसीसे मिलकर विशेष लाभहो सुखदुख का समान देखे और दो अल्पसे बचे फिर अवस्था पूर्ण ॥ हेशुक्र पूर्व जन्म में ये जीव विप्रवंश में उत्पन्नहो ब्राह्मणों
का चौधरी विशेष धनवान हुवा इन्द्रप्रस्थ में बास करता था यजमान चेले बहुत थे यमुना स्नान करता परन्तु चित्त से कभी ईश्वर का भजन दान न किया
सदा दान का धनले सब कार्य किये विशेष सुख भोगे सो अब गायत्री का जाप्य करावे दान दे तो मनोकामना पूर्ण हो और निश्चय करके सर्वसुख प्राप्तकरे ॥

भृ० स०
फलित
५९६

श्रीगणेशायनमः पत्रस्येदंफलंज्ञात्वाभ्रातमित्रसमायुत भूमिमंद्रधनंप्राप्यभाग्यभोजनमादितो मंद्रस्यनिकटरम्यवृक्षंकिंवाजलाश्रय जन्मभूमि परित्यज्यअन्यत्रोवासप्राप्तये चंद्रमित्रपरंप्रीतिसुखक्लेशप्रकाशित विद्यामध्यमाप्राप्यबुद्धिमंतोविशेषत परकृत्यरतोभूयसर्वेषांप्रीतिवर्द्धनं नकस्यचित्तसंतापंचित्तेनकार्यसाधनं दशाश्रेष्टयदाप्राप्यअनेकोसौख्यप्रा'नुयात लाभश्चविविधंवत्ससर्वतोदिशिमंगलम् कुदशाप्रविशंवत्स चित्तचिंताविवर्द्धितं न्यूनलाभव्ययोदीर्घअश्वेचबहुहृष्टय तथापिचवृद्धद्यागीजीवोयपरमंसुखी विशेषोकार्यमायातः सर्वपूर्णोविनिश्चितं (सुतेशोपूजनंदानं) विद्याबुद्धिविशेषेण भाग्यपात्रमनंदिता पत्नीचिंताहृदेगुप्त विशेषोवार्तयाचित सुकुललज्जितोजीव सुयोगमतिनिर्मल सकलहोप्रियंवाद स्वभावंशुभशीतल कदाकष्टविशेषेण प्राणभीतोतिचिंतया अयत्नंअल्पनश्यंति आयुपूर्णभवेन्नरः प्रायश्चितफलंप्राप्य पुराय कर्मसुखप्रदा प्रथमेद्वितियेवर्षे दंतपीड़ाज्वरोद्भव गुप्तरोगविशेषेण कृष्यभूतकलेवर पितृपीड़ामहत्खेदं जाप्यमंत्रश्चशांतये तातचिंताविनश्यंति मातृमोदसमुद्भव वन्हिवर्षेचवेदाब्दे पञ्चसप्तकमंयथा शिशुवृद्धिसुखंप्राप्य बालक्रीड़ाविमोहिता अंकविद्यासमारंभ चञ्चलत्वंविशेषता कष्टव्याधि बहुत्वोपि वृणाविस्फोटकादयः गुडगोधूमदानञ्च छायापात्रप्रयत्नत महामायासमाराध्य पूजनंभक्तिसंयुत सर्वकष्टविनश्यंति मंगलंमोदसंभव व्यालवर्षगतेवत्स नेत्रचंद्रञ्चमध्यमा नूतनंमंगलंकार्यं विद्याबुद्धिविशेषत उद्धाहंचमहोत्साहो पितुकीर्तिविशेषत नृत्यगानगृहमोद राजतोसुख संपदा अल्पकष्टविनश्यंति क्रीडनंबहुतत्परः वन्हिचंद्राद्धकेकाव्य ऊनविंशांतरोतथा कामचेष्टारतोभूय पत्नीप्राप्तिमनोहरं सुमित्रंपरमंप्रीतिरूप यौवनलुब्धके प्रायश्चितसुयत्नेन विशेषोभाग्यदर्शनः द्रव्यलाभनसंदेहो कार्यमात्रंचमध्यमा व्योमनेत्राद्धमारभ्य शरविंशयथाक्रमः कार्यचिंता विशेषेण सुस्थिरनोपिचंचल कुवेरोमंत्रमाराध्य सुमतिप्राप्यतेनर लाभकृत्यविशेषेण वर्द्धितेचापिमोदिता चिंताशक्तंमनोद्वेगं लुभ्यतेललनाजनै भार्यागर्भान्वितोभूय बालजन्मश्चमोदिता रसनेत्राद्धकेकाव्य व्योमवन्हितथांतरम् चित्तचिंताविनश्यंति धनाप्तिमोदसंभव आरामे मोदसंपन्नो जलाश्रय मतिप्रिय सुतापुत्र समायुक्तो आनंदंचापि कौशल मंगलंगृहमागत्य व्ययदीर्घमुपस्थित चित्तोद्यानंद तापिस्या

द्बहुलाभप्रभावत सुदुग्धंमहिषीगावदासदासिश्चवाहनंचंद्रत्रिंशाद्बमारभ्यपञ्चत्रिंशांतरेतथा तावत्कालान्तरोवत्ससुयत्नंभाग्यवर्द्धनः नूतनंचिंत्ये
त्कार्यंसुप्रसिद्धसुखीन्नर विवाहादिमहोत्साहोमंगलंजायतेकुले चित्तचिंताविनश्यतिपुनश्चनूतनोद्भवंगुप्तशत्रुकुलंज्ञात्वाप्रत्यक्षप्रीतिदर्शकःतथा
पिसर्वकार्याणिसुयत्नश्चापिसिद्धति मानकीर्तिविशेषेणपददीर्घसुपस्थित सुतकष्टविशेषेणादानमंत्रफलप्रदा छिपुत्रचंद्रकन्याचसुस्थिरंशेषनश्यति
रसवन्हिगतेवर्षेचत्वारिंशातकेतथा उद्वाहोमंगलंकार्यंजायतेबहुवत्सरे विशेषोचिंतयेन्नित्यसंकल्पश्चविकल्पिता मंद्रनूतनंप्राप्यरचनासुमनोहरम्
मासेवर्षेसुखंजाते अकस्माद्भयदारुणा विशेषोचिंतयेत्क्लेशविपाकेकुशलंभवेत् सर्वशोकविनश्यतिपुण्यकर्मफलप्रदा वेदचत्वारिवर्षाणिशरीरेकष्ट
दारुणा सर्वाबाधाविनिमुक्तोइतिपाठ्यश्चसंपुटे अनुष्ठानविधानेनहोमयज्ञादिकाक्रिया श्रद्धाभक्तिसमायुक्तोतेनसौख्यश्चप्राप्यतेनवनारीसुक्रीड्यन्ते
शोभितेशुभमंदिरे नगवेदगतेवर्ष पौत्रजन्ममहोत्सवम् मनेच्छापूजितोसर्वे मंगलंहिदिनेदिने व्योमषष्टांतरोकाव्य ज्वरतप्त विशेषत दान
पुण्यविशेषेण आयुवृद्धोपिमोदिता कुटुम्बेपरमंप्रीति सर्वआज्ञाप्रपालित महद्भागीसुपुण्येन जायतेनात्रसंशयः नंदषष्टावधिचास्य
आयुपूर्णविनिश्चित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्च कुलदीर्घसुमोदिता दासदासिगृहंरत्नं भूमिप्राप्तिविशेषता एवंसर्वप्रकारेण सुपुण्यभोगश्चमृत्युदा

॥ भाषा ॥ इस पत्र का यह फल है कि भाई मित्र मकान पृथ्वी आदि सब सुख का योग हो घर के समीप जलका स्थान या वृक्षादि हो जन्मभूमि का ध्यान छोड़कर द्वितीय ग्रहमें निवासकरे एकमित्रसे प्रीतरहे अपने दुखसुखका सबवृत्तान्त उससे कहदिया करे औरविशेष प्रीतिहो विद्या मध्यमहो परन्तु चतुर बुद्धिवान विशेषहो सबसे प्रीतिरक्खे पराया काम आपड़े तो मनसे करे किसीका चित्तन दुखावे श्रेष्ट दशामें अनेक प्रकारका सुख लाभखुशी देख और नाकिसदशामें गुप्त चिंता विशेषरहे लाभ कमहो खर्च विशेषदीखे और कैसाही कामपड़े सबपूर्ण उतरे सुतस्थानके स्वामीकी पूजादानसे वंशकी वृद्धि विशेषहो स्त्रीकोभी चिंतासी रहे बड़े श्रेष्ट कुलवालाहो लड़का नहो शील स्वभावहो एक रोगमें प्राणोंका भयहो अल्प आवे आयु पूर्णहो ॥ हेशुक्र पूर्व जन्ममें ये जीव बड़ा आदमी लक्षाधीश जमीदार था कृषिसे विशेषधन प्राप्तकिया एकसाल बहुतअच्छी कृषि उत्पन्नहुई सो एक बिजार नित्यआकर उसे खाया करता यहदेख अति क्रोधितहो उस बिजार को लट्ठों से पिटवाया जिससे वह मर गया तिस निमित्त स्वर्ण पत्रपर रक्त चन्दन से बिजार की मूर्ति बनवाय दान करे तो पाप शांत हो सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः एवंसर्वग्रहास्थित्वा पत्रीस्येदंफलंनर जन्मतोमातृबाधायां बालजन्मश्चमोदिता तातमातमहानंदं सफलंमन्यजीवनं
मध्यश्रेष्टफलश्चास्य सुदशालाभदंग्रहो भाग्योदयनसंदेहो स्वकृत्योद्रव्यमाप्नुयात् जीवप्राप्तिधरालाभं अन्यदेशाद्धनागम सुजनंमेलनोलाभं
मानकीर्तिप्रतिष्टित सुकुलंसंस्थितोलोके दशामध्यधनंव्यय न्यूनलाभनसंदेहो गुप्तचिंताचक्लेशिता धनहानिविशेषेण विपाकेसुखसंभव पाप
क्रूरग्रहानेष्टा स्थानहानिश्चदुक्खदा उपायंदानमंत्रेण पूजनियेशुभप्रदा मनेच्छापूजितेचापि गुप्तद्रव्यलभेत्पुन जीवसौख्यमवाप्यते मंगलञ्च
महोत्सव मित्रप्राप्तिपरंप्रीति सर्वकर्मेशुभावह व्ययलाभविशेषेण सर्वेषांशुभचिंतक कदाचिल्लाभदीर्घता धनप्राप्तिनसंदेहो युग्मअल्पमहाभयम्
पुण्यकर्मविशेषेण वयपूर्णोविनिश्चितं मनेच्छापूजितंलोके नभूयात्कश्चिदाश्रय राजकर्मभवेल्लाभं वृणाचिन्हशरीरजं स्ववीर्यखंडितोशीघ्र
प्रमेहोवाकदापिच यौवनंपरमंसौख्य सर्वभोगसमायुतः प्रथमाब्देशिशुवृद्धि तातमातश्चमोदिता द्वितीयेब्देरुजंप्राप्य दंतवाधाज्वरादिकं
वृणापीड़ातृतीयेब्देचचतुर्थेवन्हिजंभयं अकस्माद्भयमायात उच्चस्थेपतनोपिवा पञ्चमेसप्तमेवर्षे उरुपीड्यंचगुप्तता तातचिंताविशेषेण मातृक्लेश
समन्वितः विद्यारंभमहोत्साहो संस्कारश्चमंगलम् सर्वकष्टविनश्यति बालक्रीड़ायथाक्रमः अंकविद्यापठेत्यादौ चञ्चलत्वोपिमोहिता अष्टमे
द्वादशेवर्षे मध्यतद्वदाम्यहं पितुचिंताविशेषेण अकस्माद्धनमागमः मंगलञ्चमहोत्साहो उद्वाहोनात्रसंशय नवनारीगृहागम्य कुलबंधुसमागम
किंचित्कष्टभयंदीर्घ पुण्यकर्मेणशांतये वन्हिमेकाब्दमारभ्य अष्टचंप्रांतरोतथा विद्याबुद्धिविशेषेण प्राप्यतेचविनिश्चित स्वकृत्यपरमोदक्ष
आशक्तंकामपीड़ितं पत्नीप्रीतिविशेषेणनूतनंवार्तयाचित मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते कदाकालेतिचिंतनं ऊनविंशद्विविंशाब्दे द्रव्यलाभविवर्द्धनम्
पुण्यकर्मश्रयोपूर्वात भार्याद्रव्यसुमोदिता अयत्नेजायतेक्लेशं विशेषोहानिदर्शित प्रायश्चितसुयत्नेन पुत्रसौख्यंचमोदितादीर्घचिंताविनष्यंति
जीवोयंसुस्थिरोमति सर्वसौख्यसमायात भागपात्रमनंदिता वन्हिनेत्रगतेकाव्य नगयुग्माब्दकेतथा मानकीर्तिविशेषेण अहत्वोपदमाप्नुयात् सर्व
चिंताविनिर्मुक्तोअयत्नेचातिपीड़ितासुतापुत्रसमुत्पन्नोमंगलंहिदिनेदिनेपत्नीप्रीतिविशेषेणअन्यत्रोप्रेमसंभवनवनारिप्रियत्वचरूपयौवनविव्हल

लाभकृत्यविशेषेण मध्यप्रीतिधनंबृद्धि पितुसौख्यञ्चन्यूनोपि निजकृत्येणमोदिता व्यालयुग्मगतेवर्षे त्रियंत्रिशाब्दमध्यमा राजद्वारमहल्लाभं सुकीर्तिश्चापिमंगलं विवाहादिमहोत्साहो विशेषोकुलमंगलं अकस्माज्जायतेखेदं विशेषोभयदारुणं महामृत्युञ्जयोजाप्य आपदुद्धारणंतथा ताम्रकुम्भघृतंदानं गुप्तस्वर्णंयथाविधिः तेनकष्टविनश्यति सद्यसौख्यलभेन्नरः वेदत्रिंशाद्बमारभ्य वासवन्हितथांतरं तावत्कालत्वयावत्स मोदते भूतलोपुमान् चित्तचिंताविनश्यंति पुत्रपत्नीचक्रीड़िता व्ययलाभविशेषेण पुत्रोद्वाहादिसुप्रभा चिंतयेदीर्घकार्याणि भाग्यवृद्धिमनंदिता राजद्वारेमहल्लाभं जायतेभाग्यभूषणं नंदवन्हिमितेवर्षे वेदवेदाद्बमध्यमा एतत्कालांतरोकाव्य विशेषोकुलहर्षिता पुत्रभागविशेषेण जायतेकुल दीपक राजद्वारेमहामान्यं धनरत्नानिवेष्टिता द्रव्यलाभविशेषेण भूमिमंद्रञ्चनूतनं ग्रामप्राप्तिव्रहत्वोपि आसमञ्चजलाश्रयो दासदासीसमायुक्तो चतुष्पादादिवाहनं शरचत्वारिवर्षाणि व्योमपञ्चाद्बकेतथा पौत्रजन्ममहोत्साहो सर्वतोलाभसंभवः पुण्यकर्मविशेषेण चित्तवृत्तिसुगौरवं चौर भीतोभवेद्रात्रौ धनहानिनदृश्यते सुदुग्धंमहिषीगावं सुतकांतामनोहरं शशिपञ्चाब्दमागत्य शून्यषटयथाक्रमम् सुभाव्यवर्द्धितोपुण्य पुत्रपौत्र मनंदिता षष्ठाषष्टगतेवर्ष प्रपौत्रजन्मदर्शन बृहत्कीर्त्याधिकारीच क्षुधान्यूनंतुनिर्बल वायुकोपविशेषेण रोगवृद्धिश्चक्लेशिता शुंठिकालवणं श्यामि चूर्णभक्षहरंतिका तेनकष्टविनश्यंति पुनरायुविवर्द्ध नं व्योमव्यालमितिमायु जायतेमुनिसत्तमा आश्विनकृष्णापञ्चम्यां निधनंतस्यजायते

भाषा ॥ इस कुण्डलीका फल श्रेष्ट और मध्यम है तीनग्रह उत्तम हैं अपनी दशामें भाग्योदय करेंगे विशेषलाभहोगा जीवकी प्राप्ति भूमि लाभ प्रदेशमें लाभ किसीसे मिलकर लाभ येजीव इज्जत प्रतिष्ठा वालाहो अच्छे कुलमें रहे खर्चविशेष लाभ न्यून गुप्तचिंता क्लेशपीड़ा धनकी हानिहो हेशुक्र पापक्रूर ग्रहोंनेजो स्थान बिगाड़ा है तिसका उपाय करनेसे मनोकामना पूर्णहो गुप्त धन मिले जीवकी खुशी और मंगलाचारहो मित्रमें जो चित्त रहताहै सो आनन्दमें प्रीतहो लाभ खर्चके राजद्वार से लाभ शरीरमें व्रणका चिन्ह शीघ्र वीर्य नष्टहो या कभी प्रमेह रोगहो । हेशुक्र पूर्व जन्ममें येजीव मथुरापुरी में जाय विप्रवंशमें उत्पन्न हुवा और मंद्रका पुजारी भया बहुत समय तक ठाकुर की पूजा करी जो यात्री मंद्र में आकर फूल दक्षिणा चढ़ाता उसको चरणामृत देता जो अधिक द्रव्य चढ़ाता उसे अधिक प्रसाद देता जो कुछ न चढ़ाता उसकी बात भी न पूंछता ठाकुर के मंद्र में ऐसा व्यवहार किया सो ब्रह्मभोज कर कृष्ण का भजन करे तो सुख पावे ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलास्यफलश्चेदंयथालाभतथाव्ययः पुनश्चलाभज्ञातव्याचित्तचिंतातिमन्यते भ्रमोपिजायतेदीर्घं ग्रहद्रव्यश्चन्यूनता
विद्यावंतोसुवृद्धश्चसर्वावस्थाप्रतिष्टित सत्यवक्तासुखीलोकेनकश्चितहानिचिंतक परकृत्यरतोप्रेमीजनासर्वेप्रशंसिता जीवचिंताविशेषेणमित्र
प्रीतिवृहत्वता नूतनोवार्तयाचित्तं उद्यमेणधन।क्षय कुलश्रेष्टसुभाषीचसर्वेषांतोगेरतः दशान्यूनमहा।चिंताउद्यमंश्रमनिस्फलं विलंबोजायते
लाभंश्रद्ध कृत्यश्चसिद्धति दशाश्रेष्टपुनःप्राप्यपदउच्चमुपस्थित विशेषोजायतेलाभंमानकीर्तिविवर्द्धनं पापकूरग्रहापूज्यंपञ्चमेशोप्रयत्नतः दान
मंत्रसुपुण्येनमनेच्छासर्वपूजितः शुभकृत्यविशेषेणसुखप्राप्यमनेकधा सर्वावस्थामहल्लाभंव्ययकृत्यविशेषतः साहसीउद्यमीपुंसअंतेसौख्य
विवर्द्धन जन्मतोमातृबाधायांप्राप्यतेकष्टदारुणं प्रथमाब्देज्वरंपीड्यद्वितीयेचविशूचिका कृष्यदेहनसंदेहोभूतछायाश्चगुप्तता घंटाकर्णगृहेपूज्यं
उत्तरोपूतनातथा शीघ्रबाधाविनश्यंतिशिशुपितृश्चमोदिता वन्हिवर्षगतेकाव्यपञ्चमेसप्तमेतथा बालक्रीडागृहेमोदंभ्रातभग्नीसमायुत तातचिंता
हृदेगुप्तवृहत्वोकार्यचिंतन वृणपीडाभवेच्चादौपुनश्चदारुणोरुजं मातृक्लेशमहदुखंजीवश्राशाविनिर्मुख तातचिंताविशेषेणबहुयत्नमनेकधा
ईश्वरकृपयाकाव्यपुण्यकर्मफलप्रदा सर्वकष्टविनष्यंतिशिशुवृद्धिमहोत्सवं मासेवर्षेसुखंप्राप्यनूतनंजन्ममन्यते अष्टमेद्वादशेवर्षेगृहद्रव्यंसमागम
चञ्चलांचपलंबालशिशुक्रीडामनंदिता अंकविद्यापठेत्यादौप्राप्यतेचविसर्जनं पत्नीयोगोपिदृश्यंतेमंगलंजायतेकुल कुलबंधुगृहागम्यगायंतेच
कुलस्त्रियः वन्हिमेकाब्दमारभ्यविंशवर्षादनंतरं विद्याबुद्धिविशेषेणप्राप्यतेचापिनूतनं विवाहोमंगलंदीर्घमानकीर्तिविवर्द्धनम्कामेचेष्टाविशेषेण
सुस्वरूपंवि गेहिता गुप्तवार्तानकथ्यंतेलोकलज्जाचकारणात् स्वकृत्योसाधनेदक्षलुभ्यतेललनाजनै पत्नीप्रेमातुरोभूयलाभकृत्यस्यचिंतनं
शशिविंशद्विविंशाब्देपञ्चविंशाब्दकंकथा लाभकृत्यविशेषेणद्रव्यप्राप्तिश्चमध्यमा चित्तचिंताविशेषेणसुताजन्मंचमंगलं प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेधन
पुत्रविवर्द्धनं गुप्तकष्टहृदेगुप्तं अजीर्णंनश्यतिक्षुधा औषधीसेवनंकृत्वापुण्यकर्मसुखप्रदा रसनेत्रगतेवर्षेव्योमवन्हितथांतरं सुतापुत्रसमायुक्तो
...यलाभविवर्द्धनं श्रद्ध... ...श्चम... ...पिकामक्रीडापरंप्रिय पूर्वपुण्यप्रभावेणभाग्यवृद्धिदिनेदिने व्ययोपिचिंतनंदीर्घं वृहच्चिंतायदाकदा

सुकार्यंमंगलंचापिजायतेप्रतिवत्सरे मानकीर्तिसुखञ्चापिनात्रकार्यविचारणं बुद्धिमंतोविशेषेणसुजनेभ्योप्रतिष्ठितः शशिवन्हिसुत [illegible] त्रिंशांतरोतथा व्ययकृत्यविशेषेणद्रश्यतेचातिचिंतनं उद्वाहादिमहोत्साहोकुलवृद्धिसुमोदिता अयत्नेपापकर्मेणसर्वसौख्यविनश्यति कर्म श्रयोफलंसर्वज्ञीतोभुविमानवा रसत्रिंशाब्दमारभ्य चत्वारिंशांतरोतथा गृहक्लेशविशेषेण पुनःशांतिभवेध्रुवम् नवनारिसुदृश्यंतेसुता पुत्रमनंदिता स्वल्पश्रमेणभोकाव्यकार्येसिद्धिविशेषतः गुप्तचिंताविनश्यंतिकार्योपिनूतनंगृह वापीकूपतडागाद्यआरामेप्रीतिवर्द्धन रचना सुन्दरंकृत्यमन्द्रस्वछमनोरमा वेष्टितोद्रव्यरत्नेनकुलदीपंसुखीनर चंद्रचत्वारिमायातपञ्चवेदाब्दमध्यमा ब्रहलाभप्रभावेणचित्तोद्यानंदसीतल मित्राणांसौख्यसंपन्नोशत्रुचास्यविनिमुखः राजद्वारेमहल्लाभंब्रहत्वोपदप्राप्नुयात् ग्रामप्राप्तिविशेषेणमंद्रचैवोपिनूतनं मनेच्छापूजितोसर्वचित्त वृत्तिसुगौरवं रसचत्वारिवर्षाणिशून्यपञ्चयथाक्रमं सर्वेच्छापूजितंचादौपौत्रजन्मसुमंगलं पुनरंतेप्राप्यतेकष्टंशरीरेभयदारुणं गृहक्लेशभय दीर्घंबहुविधंचितनंकृतो आपत्कालोमुपस्थित्वामहादानेनशांतये स्वर्णपत्रकृतोशुद्धविष्णुमूर्तिमनोहरंताम्रकुंभघृतंगुप्तसंस्थाप्यञ्चयथाविधि पूजयित्वाविधानेनसंकल्पंब्राह्मणांददेत् विष्णुवर्मपठेन्नित्यंमहाकष्टनिवारणं आयुवृद्धिविशेषेणभाग्योदयमनंदिता नंदसप्तमितिमायुजायते पुण्यकर्मणा पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चदासदासिश्चवाहनं सर्वसौख्यान्वितोभूयभूरिभोगप्रशंसिता आषाढ़शुक्लसप्तम्यानिधनंजायतेनरः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डली का यह फल है जो पैदा करे सो खर्च करदे फिर लाभ होता रहै चिंता फिक्र बहुत माने धर्म विशेष हो विद्यावान् बुद्धिमान अधिक हो इज्जत से अपना समय बितावे किसी का बुरा न चाहे लोग भला कहैं जीव की लालसा रहै मित्रों से प्रीत रहै नवीन वार्ता चिंतवन करे परिश्रम से धन मिले श्रेष्ठ कुल में रहे उच्च पदवी मिले लाभ विशेष हो पंचमेश और पाप ग्रहों का पूजन दान करने से विशेष लाभ हो बुद्धि बढ़े सुख मिले मनोकामना पूर्ण हो और अनेक प्रकार के सुख देखे दुख क्लेश शांत हो लाभ खर्च के बड़े बड़े काम करे है शुक्र पूर्व जन्म में ये जीव लक्षाधीश साहुकार सेठ था सदा वाणिज्य व्यापार करता रहा एक समय मन्दिर बनाने के निमित्त बहुत धन प्राप्त करके सेठ के जमा रखकर बद्रीनारायण के दर्शन को चला गया वहां से दर्शन करके उलटा लौटा तो मार्ग में मृत्यु को प्राप्त हुवा और यह धन सेठ ने अपने कृत्य में लगाया तिसी से दोष का भागी हुआ तिस निमित्त विशेष धन देव स्थान में लगावे तो मनोकामना पूर्ण हो ॥

श्रीगणेशायनमः कुंडलीस्यफलंचेदंविशेषोबलवान्ग्रहा लाभकारीसुभार्याचचित्तचिंताविशेषतः व्ययलाभविशेषेणसर्वावस्थासुमोदिता
भ्रातमौख्यविशेषेणकिंवामित्रोतिवल्लभ दशाश्रेष्टसुखीलोकद्रव्यलाभमनंदिता मनेच्छापूजितासर्वेमानवृद्धिप्रशंसित पापग्रहाप्रभावेणबहु
चिंताचक्लेशिता हीनलाभव्ययोनित्यंकीर्तिभ्रंशमहद्भयं दशाचंद्रशुभंश्रेष्टविशेषोलाभदायक लाभेशोपञ्चमेशश्चपूजनीयंप्रयत्नत दानमंत्र
महापुण्यसर्वशोकविनाशनं चित्तचिंताविनश्यंतिसर्वआशाप्रपूजितो कुलवृद्धिमहामोदंव्यापारेलाभजायते यत्कार्यंचिंतयेदीर्घंतस्यसिद्धि
भवेत्पुनः मित्राणांमेलनंप्रीतिविपाकेलाभदायकः कष्टपीड़ाविनश्यंतिसुस्थिरोचित्तशांतये वह्निअल्पविशेषेणप्राणचिंतामहाभयं आयुपूर्ण
सुपुण्येनविशेषोधनमागम अचानकंविपत्तोपिअंतेशांतिविनिश्चितम् रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेब्देविशूचिका वन्हिपीड़ातृतीयेब्देव्रणचत्वारि
पीड़ित ज्वरतप्तविशेषेणपञ्चमाद्रमहाभयं दानमंत्रसुपुण्येनआयुवृद्धिसुखागम मासेवर्षेसुखंज्ञात्वाशिशुक्रीड़ायथाक्रमं मंगलंजायतेगेहो
तातमातोतिहर्षिता षष्टमेचाष्टमेवर्षेतातलाभदिनेदिने कुलबंधुसमायातमंगलंजायतेकुले विद्यारंभक्रतोबालशिशुक्रीड़ाविशेषता पत्नीयोगो
पिदृश्यंतेनप्राप्यंतेविलंबता नंदवर्षगतेवत्सप्राणचंद्राद्रमध्यमा तातप्राप्तिविशेषेणविवाहादिमहोत्सवं मित्रपक्षोपिक्रीड्यंते आशक्तंचयदाकदा
विद्याप्राप्तिनसंदेहोबुद्धिमंतोतिवल्लभ स्वल्पकालेचकंठाग्रंसंध्यासर्वभविष्यति मातृचिंताहृदेगुप्तंजायतेशुभदर्शन रसचंद्राद्रमागत्यविंशवर्षा
दनंतरं तावत्कालगतेकाव्यनानाभोगसमन्वितः महर्घोभूषणंवस्त्रंप्राप्यतेचसुखागम फलमूलप्रियोनित्यंजलाश्रयमनोरमं जीवचिंता
विशेषेणनिजकृत्यविशारदः लाभंचिंतयेद्यत्नंकार्यमात्रोपिसिद्धति प्रायश्चित्तकृतेपूर्वेश्रद्धाभक्तिविशेषतः भाग्यवृद्धिभवेन्नित्यंकदादुखमाश्रय
सुसंगातश्रेष्टपुण्येनकिंकिंकार्यंनसिद्धति अपितुसर्वसिद्धंतिसुभाग्यंपात्रभूतले यत्कर्मक्रियतेजीवतत्फलञ्चयथाक्रमः ईशभक्तिविशेषेणसर्व
तोदिशिमंगलं शशिविंशगतयावत्पञ्चनेत्रांतकंतथा तावत्कालगतेसंतलाभवृद्धिदिनेदिने राजद्वारेधनागम्यपुत्रजन्मश्चमोदिता क्षत्रचिंता
विशेषेणपुनरंतेमहोत्सवं मित्रप्रीतिमहामोदशत्रुपक्षश्चक्लेशिता कुलबंधुहृदवैरंप्रत्यक्षंनकाशिता मानसीविविधाचिंतआपदुद्धारणंजपेत्

शांतिर्व्रातसुशीलत्वंनिर्वैरप्राप्यतेसुखं कष्टव्याधिविनाशार्थंदानपुरायेरतोसदा तेनसौख्यलभेन्नित्यंविपाकेप्राणरक्षिता अन्यसर्वसुखंप्राप्य धनसंतानप्रतिष्टित रसविंशेचत्रिंशाब्देमध्यतत्फलंभवेत् तत्सर्वंसंप्रवक्षामिसौख्यशोकयथाक्रमं गुप्तचिंताविशेषेणजीवशाकश्चक्लेशिता द्रव्यप्राप्तिगृहेतस्यसुयात्रालाभदायकः सुतापुत्रसमायुक्ततदांतेमोदितेदिने शशित्रिंशगतेवर्षेशरवन्हितथांतरे गुप्तकष्टनपीड्यंतेअजीर्णं बातसंभवः औषधीभक्षणंचैवसुपुरायलाभदायक अकस्माद्रव्यमायातउद्वाहोमंगलंभव व्ययदीर्घोपिजायंतेसुकीर्तिकुलवर्धन क्षत्रचिंता व्ययद्रव्यंसुप्रसिद्धसुखोद्भवं अल्पकष्टविनष्यंतिरचनामन्द्रनूतनं विशेषोमंगलंकार्यंभूमिप्राप्तिमनेच्छितं प्रायश्चितकृतेपूर्वेधनपुत्रादिप्राप्यते षष्टत्रिंशाब्दमारभ्यचत्वारिंशोपिकंतथा नूतनंकृत्यसौख्यादौविपाकेहानिसंभवः निजकृत्यमहल्लाभंराजद्वारेपदस्थित त्रिपुत्रश्चन्द्रकन्याच युग्मबालमृतोभव आपत्तौचविनष्यंतिसुदशांसुफलंप्रदा अतःपरंसुखंसर्वेशून्यपञ्चावधिलभेत् पौत्रजन्ममहोत्साहोसुफलंमन्यजीवनं द्विभार्या भोग्यतेमोदंसर्वावस्थासुखीनर वन्हिपञ्चांतरोपुत्रः प्राप्यतेदारुणंभयं पुरायकर्मरतोयत्रनकश्चिद्बाधितंततः वेदवाणांतरोप्राप्यशरीरेकष्टदारुणं औषधीसेवनंकृत्वासुयत्नंव्याधिशांतये नगवाणाद्बमारभ्यजायासौख्यविनश्यति रसषष्टगतेवर्षेप्रपौत्रजन्मसंभवः सर्वेच्छापूजितंलोकेचित्त आशापरित्यज रामनामजपेन्नित्यंभजनानंदसर्वदा सुकीर्तिपूरितोलोकेसुजनेभ्योप्रशंसितः शून्यसप्ताब्दमायुष्यंनिधनंजायतेपुनः ॥ भाषा ॥

इस कुण्डलो के ग्रह बड़े बलवान लाभकारी हैं चिंता भय आपत्ति लाभ खर्च भारी हो सारी अवस्था आनन्द भोगे भ्राता या मित्र का सुख प्राप्त हो श्रेष्ट दशा में आनन्द भोगे परन्तु पाप ग्रहों के प्रभाव से गुप्त चिंता फिकर पीड़ा क्लेश रोजगार में हानि होती रहे एक दशा ऐसी श्रेष्ट आवे उसमें विशेष लाभ हो पंचमेश और लाभेश की पूजा दानमन्त्र उपाय करने से वंश की वृद्धि हो रोजगार में फायदा रहे मनकी कामना पूर्ण हो मित्र की प्रीति से आनन्द भोगे कहीं से धन मिले एक विपत्ति अचानक आवे पश्चात् शांत हो प्रायश्चित से सब सुख भोगे हे शुक्र पूर्व जन्म में यह जोव प्रयागराज में जन्म ले अति विद्वान् पंडित हुवा कुछ काल ग्रह सुख भोग पुनः ब्रह्मचर्य धारण कर लिया एक बड़ी सुन्दर स्त्री चेलो हो सेवा में रहने लगी चमत्कारी विद्या जानते थे बहुत सा द्रव्य इकट्ठा हो गया अन्त में उस स्त्री पर चित्त चलायमान हो ब्रह्मचर्य खंडित हुवा विषयानन्द में अधिक प्रवृति हो गई सो अब हवन यज्ञ व्रतदान आदि के करने से सर्वथा सुख मिले कामना पूर्ण होवे ॥

नेनवृहत्वोफलप्राप्नुयात्

श्रीगणेशायनमः जन्मपत्रफलस्येदंद्विखेटाबलवानशुभं तेजस्वीचप्रतापीचअयत्नेक्लेशदारुणं दीर्घवस्थासु[illegible]

कीर्तिवृहन्नित्यंदीर्घभाग्यमनंदिता मंत्रसंतानगोपालंलक्ष्मीजाप्यंयथाविधि पुत्रप्राप्तिनसंदेहोद्रव्यलाभविशेषत[illegible]: आनंदंकौशलञ्चापिसुखं

सर्वत्रदृश्यते यौवनपूजनंदानंपापकृ[illegible]हारपि मध्यलाभभवेच्चिंतासंदेहोलाभहानिदं चिंतयेदीर्घयत्नानिवृथापीड्यञ्च क्लेशिता दानमंत्रसुपुण्येन

वंशवृद्धिश्चमंगलं पत्नीसौख्यविशेषेणशुभकार्यंधनंव्यय सत्यवक्तासुबुद्धिश्चसुमार्गेवर्ततेसदा पदोच्चप्राप्यतेलोके नीचसंगतिपरित्यजः धन

हानिकदाकालेवन्हिचौरभयंपशु अल्पेप्राणभयंदीर्घपुनश्चपूर्णतावय व्ययलाभविशेषेणसुकार्यंमोदितोसदा रोगार्तोप्रथमेवर्षेद्वितीयेदंतपीडनं

शिशुवृद्धिनसंदेहोदिवेमासेचक्रीडनं तृतीयेपञ्चमेवर्षेषष्टवर्षादिसप्तमे तातप्राप्तिनसंदेहोक्षत्रचिंताचगुप्तता विद्या[illegible]रंभकृतोबालमंगलंजायतेकुले

भ्रातभग्निसमायुक्तोक्रीडनंबहुतत्परः शरीरेदारुणंकष्टंतातचिंताविशेषतः महामृत्युञ्जयोजाप्यंछायादानसुयत्नतः सर्वरोगविनश्यंतिगतौ

सौदारुणंभय अष्टमेद्वादशेवर्षेविद्याप्राप्तिश्चमंदिता भयभीतोहृदेगुप्तंक्रीडनमतितत्परः चित्तोसाधारण[illegible]बुद्धितातसौख्यविशेषतः विवाहादि

महोत्साहोसुखस्तत्रप्रवर्तते वन्हिचंद्रकवेप्राप्यअष्टादशमितेतथा विद्याप्राप्तिभवेच्चादौपुनरंतेचमनंदिता मित्रप्री[illegible] सर्वेच्छ[illegible]षेणतस्यध्यानोति

चिंतनं गुप्तक्रीड़ामनोद्वेगंसुसंगातप्राप्यतेसुखं उरपीड्यंज्वरंतप्तंपुनरंतेसुखागम ऊनविंशात्रिविंशाब्दे[illegible]कामक्री[illegible]डाविशेषता [illegible]त्तचिंतान्वितो

भूयनिशानिद्राचमंदिता महर्घौभूषणंवस्त्रप्राप्यतेशुभदर्शन सुन्दरंचेष्टयायुक्तोलुभ्यतेललनाजनैः त[illegible]पिविशेष[illegible]हानद्रश्यते

निजकृत्यधनंप्राप्यआनंदहिदिनेदिने पत्नीगर्भान्वितोभूयकन्यकाजन्मभूवितले अतिकष्टान्वितोभार्यान[illegible]तंजन्ममन्यते वे[illegible]लनेत्राब्दे

सुमित्रंप्रीतिसंभव पुत्रजन्ममहोत्साहोमानकीर्तिविवर्द्धनं स्वकुलेसुप्रतिष्टोपिनानाचिंतासमन्वितः [illegible]र्यवृद्धिभवेच्चापिव्ययलाभविशेषता

मासेवर्षेसुखंज्ञात्वापुण्यकर्मफलप्रदा नगविंशगतेवर्षेवन्हिरामांतरोतथा सुतापुत्रसुखंप्राप्यचंद्रगर्भ[illegible]निस्फल राजद्वारेमहल्लाभंतेजस्वीच

प्रतिष्ठिते विवाहादिमहोत्साहोव्ययदीर्घमनंदिता पुनःकष्टविशेषेणज्वरतप्तोतिदारुण औषधीसेवनंकृ[illegible]वावैद्योपायकृतंतथा मंत्रजाप्येमहादानं

सर्वारिष्टनिवारणं ताम्रपात्रवृतंगुप्तंस्वर्णदानयथाविधि चित्तचिंताविनश्यंतिधनलाभदिनेदिने वेदत्रिंशाद्वमागत्य व्यालत्रिंशांतरोतदा
भाग्यवृद्धिवलंदीर्वगुप्तकष्टविनाशनं द्विपुत्रंयुग्मकन्याचसंस्थितोसुखवर्द्धनं शेषवन्हिविनश्यंतिहर्षशोकसमोभव मासेवर्षेसुखंजातंभूमिमंद्रञ्च
नूतनं नंदवन्हिगतेवर्षेवेदचत्वारियत्क्रमं गुप्तशत्रुमनोद्वेगंचिंतनीयंविशेषता राजद्वारेउपाधीच[illegible]ख्यातोपिपराजय चौरभीतिभवेद्रामेरात्रो
निद्रानलभ्यते आपदुद्धारणोजाप्यतेनशांतिप्रजायते विवाहोमंगलंचापिभाग्यवृद्धिभविष्यति पञ्चवेदाद्वमारभ्यव्योमबाणांतर[illegible]नथा जाया
कष्टविशेषेणरोगवृद्धिदिनेदिने दानपुण्यविशेषेणगोदानतत्रकारयेत् गुप्तचिंताविशेषेणव्ययदीर्घोभिजा[illegible]पुनश्चकुशलंभूयपुण्[illegible]यकर्मप्रभावत
पौत्रजन्ममहोत्साहोगृहनारिसुमंगलं गुप्तभूमिधनंलब्ध्वाचित्तमोदेनपूरिता नानामंगलंकार्यंकार्यसिद्धि[illegible]सर्वदा पुत्रपौत्र[illegible]सुखंसर्वमानवृद्धि
मनंदिता चित्तचिंताविनश्यंतिभजनानंदसर्वदा शशिपञ्चत्रिपञ्चाब्देसर्वआशाप्रपूजिता कुलवृद्धिसुकी[illegible]पुण्यप[illegible]सिता अतः परिसुख
सर्वेसुजनेभ्योप्रशंसिता वेदपञ्चगतेकाव्यशून्यषष्टांतरोतथा वातरोगेणपीड्यंतेनिर्बलत्वञ्चकृष्यता औषधीभक्षणं[illegible]नित्यंशीघ्रशांतिभवेततः
आज्ञाकारीसुतंभृत्यदासदासीश्चवाहनं भूमिमन्द्रधनाप्तिंचदेवागारेरतोभवः शशिषष्टगतोवत्सबाणषष्टांतरोतथा ग्रहसौख्यविशेषेणसर्वआज्ञा
प्रपालित पुत्रपौत्रप्रपौत्रश्चयत्रकुत्रप्रशंसिता वन्हिसप्ताद्वमारभ्यआयुपूर्णोपिजायते फाल्गुणेशुक्लपक्ष्म्यांनिधनंतस्यनिश्चितः ।। भाषा ।।

इस कुण्डली का फल यह है दो ग्रह बड़े बलवान तेज प्रताप के बढ़ाने वाले हैं सो किसी अवस्था में भारी फल दिखावेंगे इज्जत बढ़ावें और मंत्र जाप्य कराने से धन पुत्रादि का सुख मिले इतने क्रूर ग्रहों का दान मन्त्र न बने मध्यम लाभ हो गुप्त चिंता और फिक्र बना रहे अनेक प्रकार के यत्न सोचे वृथा जाय पीड़ा क्लेश हो और शुभ काम में धन खर्च हो सारी अवस्था नेक चलन श्रेष्ठ मति और सत्यता से व्यतीत करे उच्च पदवी पावे नीच की संगति त्यागे एक समय धन का नुकसान हो अग्नि चोर पशु का भय अल्प आवे [illegible] आयु पूर्ण भोगे हे शुक्र पहिले जन्म में यह जीव ब्रह्मभाट था राजाओं की कीर्ति और गुणानुवाद करता सो प्रसन्न करके बहुत द्रव्य संचय [illegible] या संतान न थी इष्ट पुत्र मान बड़ी लिया पूजन दान करता एक समय अयोध्या जी के दर्शन को गया पंडा से तकरार हो गया उसने को [illegible] वश हो फेंक दिया इसने और [illegible] मान हो [illegible] को दे दिया तिससे पंडा ने क्रोध कर शाप दिया तिस निमित्त ब्राह्मण जिमाय [illegible] दे तो मनोकामना [illegible] पूर्ण होवे ।।

।। समाप्तम् ।।

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता :—

श्री भृगु संहिता महाशास [torn] फलित खंड

समाप्तम्

पं० लक्ष्मी भूषण शिव भरोसे ज्ञान सागर प्रेस, ५२ [torn] हाजन पाड़ा मेरठ शहर ।